सूची

वक्तव्य

हमने त्रयोदश त्रैवार्षिक विवरण (सन् १९२६-२८ ई०) में दिए गए वक्तव्य में बताया है कि सौर मिति २० श्रावण २०१० वि० (५ अगस्त १९५३ ई०) की खोज उपसमिति ने उत्तरप्रदेशीय शासन की १००००₹०की सहायता को—जो खोज विवरणों के छापने के निमित्त दी गई है—दृष्टि में रखकर एक एक हजार पृष्ठों की तीन जिल्दों में अधिक से अधिक विवरणों को छापने का निश्चय किया था। तदनुसार प्रथम जिल्द छप चुकी है जिसमें उक्त त्रयोदश त्रैवार्षिक विवरण है। दूसरी जिल्द पाठकों के सामने प्रस्तुत है। इसमें सन् १९२९-३१ ई० का त्रैवार्षिक विवरण है। इसका कलेवर बड़ा न होने से इसका संक्षेपीकरण भी कम हुआ है। जहां कहां संक्षेपीकरण आवश्यक समझा गया है वहाँ उक्त विवरण के ही समान किया गया है। प्रस्तुत विवरण को भूतपूर्व निरीक्षक स्व० डा० पीतांबर दत्त बड़थ्वाल ने खोज विभाग के साहित्यान्वेषकों की सहायता से अंगरेजी में संपादन किया था। हिंदी में इसका रूपांतर खोज के वर्तमान साहित्यान्वेषक श्री दौलतरामजी जुयाल ने बड़ी सावधानी से किया है। रूपांतर में ग्रंथों और ग्रंथकारों का अनुक्रम अंगरेजी लिपि के ही अनुसार है। इसको परिवर्तित न करने का कारण पूर्वोक्त विवरण में पं० विश्वनाथ प्रसाद जी मिश्र द्वारा लिखित 'पूर्वपीठिका' में दिया गया है।

ऊपर यह उल्लेख किया गया है कि प्रत्येक जिल्द में एक एक हजार पृष्ठ रहेंगे परंतु प्रस्तुत जिल्द में लगभग सात सौ पृष्ठ हैं। व्यवहार करने वालों की सुविधा की दृष्टि से एक जिल्द में एक ही त्रैवार्षिक विवरण छापा जा रहा है जिससे पृष्ठों की संख्याओं का न्यूनाधिक हो जाना स्वाभाविक है। किंतु अंत में जितने पृष्ठ बच जाएंगे उनका उपयोग आगे के विवरणों को छापने में किया जाएगा।

दीर्घ व्यवधान के पश्चात् खोजविवरण प्रकाशित हो रहे हैं। इनके लिये हम उत्तर प्रदेश राज्य शासन के आभारी हैं जिसकी सहायता से यह संभव हो सका है और जिसे इस कार्य के संरक्षण का श्रेय प्राप्त है। हमें पूर्ण आशा है कि राज्य शासन की सहायता से अप्रकाशित सभी विवरण शीघ्र ही छप जाएँगे।

मैं सभा के प्रधान मंत्री डा० राजबली पांडेय के प्रति आभार प्रकट कर देना अपना कर्तव्य समझता हूँ जिन्होंने इस कार्य में पूर्ण रुचि लेते हुए इस विवरण को नागरी मुद्रणालय में छपवाने का शीघ्र प्रबंध कर दिया। मुद्रणालय के मैनेजर बाबू महताबराय जी का मैं विशेष अनुगृहीत हूँ जिन्होंने प्रस्तुत विवरण को समय पर छापने के अतिरिक्त प्रूफ संशोधन के कार्य में बड़ी सहायता पहुँचाई है। खोज विभाग के अन्वेषक श्री दौलत राम जुयाल के परिश्रम और लगन से ही यह कार्य शीघ्र संपन्न हो सका है। उन्होंने ही इस विवरण का हिंदी में रूपांतर किया है। अतः वे और उनके सहायक श्री रघुनाथ शास्त्री भी हमारे विशेष धन्यवाद के भाजन हैं।

हजारीप्रसाद द्विवेदी
निरीक्षक,
खोज विभाग

काशी,
३ अप्रल, १९५४

प्रस्तावना

इस रिपोर्ट को आरंभ करने के पहले मुझे खोज विभाग के भूतपूर्व यशस्वी निरीक्षक डा० हीरालाल के स्वर्गवास का उल्लेख बड़े खेद के साथ करना पड़ता है। डाक्टर साहब की मृत्यु से सभा के खोजविभाग की बड़ी क्षति हुई है। आप विगत १७ वर्षों से खोज के कठिन कार्य का निरीक्षण बड़े उत्साह और योग्यतापूर्वक करते आ रहे थे। वे बड़े उदार सज्जन और कृपालु थे। क्या छोटे, क्या बड़े, सब उनका एकसा सम्मान करते थे। उनकी सेवाओं का आदर सरकार और जनता दोनों करती थी। बड़ संस्थाओं को उनका सहयोग प्राप्त था और वे लगन से साहित्य की श्री वृद्धि किया करते थे। वे एक अवकाशप्राप्त ज़िलाधीश थे। यदि चाहते तो अपने जीवन का शेषकाल सुख पूर्वक बिता सकते थे, किंतु वे अंत तक कर्मण्य रहे। परमात्मा उनकी आत्मा को शांति दे।

सामान्यतया यह रिपोर्ट डा० हीरालाल जी के ही द्वारा लिखी जाती किंतु दुर्दैव ने उन्हें बीच ही में उठा लिया। परिशिष्ट १ को उन्होंने यत्र-तत्र सरसरी दृष्टि से देखा था किंतु उसे भी वे अच्छी तरह नहीं देख पाये थे। रिपोर्ट का काम उन्हीं के समय में, समय से बहुत पिछड़ गया था।

सन् १९२६–२८ ई० की त्रैवार्षिक रिपोर्ट उन्होंने ता० १–१० ३१ को लिखकर समाप्त की थी। ता० ६–८–३४ को जब निरीक्षण का कार्य मुझे सौंपा गया तब १९२९ ३१ ई० की रिपोर्ट अभी लिखी जाने को थी। सन् १९२६ २८ ई० की बृहत्काय रिपोर्ट गवर्मेंट प्रेस से लौट आई थी क्योंकि तबतक सन् १९२३ २५ की रिपोर्ट को गवर्मेंट प्रेस छाप नहीं सका था। इस रिपोर्ट को भी यथासाध्य छोटा करना आवश्यक समझा गया। इधर मेरे कार्यकाल का भी काम जमा होता गया। इसी से यह रिपोर्ट इतनी देर में पूरी हो रही है। परंतु यह प्रकाशित भी हो सकेगी या नहीं, यह बात संदिग्ध है। इन रिपोर्टों को गवर्मेंट प्रेस छापता है। सन् १९२३ २५ ई० की रिपोर्ट का छपना सन् १९३० में आरंभ हो गया था और सन् १९३३ ई० में उसकी छपाई का काम समाप्तप्राय था, किंतु अब तक वह प्रेस ही में है। यह अवस्था बड़ी खेदजनक है। आशा है गवर्मेंट इधर ध्यान देगी और रिपोर्टों को छापने की अच्छी व्यवस्था करने की कृपा करेगी।

साधु कवि रतिभान के संबंध में उनके ग्रंथ से बाहर की सूचनाएँ मुझे काल्पी के श्रीयुक्त 'रसिकेन्द्र' से प्राप्त हुई हैं। इसलिये वे मेरे धन्यवाद के पात्र हैं।

पाली, लैंसडौन,
ता० १५ ५ ३९ ई०

पीतांबरदत्त बडथ्वाल
निरीक्षक, खोजविभाग

प्राचीन हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों की खोज का चौदहवाँ त्रैवार्षिक विवरण

(सन् १९२९, १९३० और १९३१ ई०)

इस रिपोर्ट की कार्यावधि में खोज का काम लखनऊ, हमीरपुर, आगरा, हरदोई, उन्नाव, एटा और अलीगढ़ जिलों में हुआ। प० बाबूराम बित्थरिया तथा प० छोटेलाल त्रिवेदी ने पहले अन्वेषण का काम किया। परंतु बीच में ही बित्थरियाजी दिल्ली प्रांत में शोध का काम करने के लिये भेज दिए गए और उनके स्थान पर श्री सुखदेव शास्त्री की नियुक्ति हुई। उनके चले जाने के पश्चात् प० लक्ष्मीप्रसाद त्रिवेदी उस स्थान पर नियुक्त किए गए।

इस अवधि में १५२१ हस्तलिखित ग्रंथों के विवरण प्राप्त हुए। इनमें से ४६ ग्रंथ सन् १८८० ई० के पश्चात् के रचे होने के कारण नियमानुसार अस्वीकृत कर दिए गए और ५ ग्रंथ अन्य भाषाओं के होने के कारण रिपोर्ट में सम्मिलित नहीं किए गए। इन्हीं विवरणों की संख्या में आगरा नागरीप्रचारिणी सभा के एजंटो—श्री श्रीनिवास तथा श्री अवधविहारी लाल और जिला रायबरेली के श्री त्रिभुवनप्रसाद के भेजे क्रम से ५० और ३९ समस्त ८९ ग्रंथों के विवरण भी सम्मिलित हैं। अस्वीकृत काम को छोड़कर शेष कार्य तीन वर्षों में इस प्रकार विभक्त है —

सन् ईसवी	विवरण लिए हुए ह० लि० ग्रंथों की संख्या
१९२९ ,,	३८३
१९३० ,,	५८८
१९३१ ,,	५११

४९९ ग्रंथकारों के बनाए हुए ८८४ ग्रंथों की १२०३ प्रतियों के विवरण लिए गए हैं, जिनके अतिरिक्त २६७ ग्रंथों के रचयिता अज्ञात हैं। २७४ ग्रंथकारों के रचे हुए ४०८ ग्रंथ खोज में बिलकुल नवीन हैं। इनमें ६३ ऐसे नवीन ग्रंथ सम्मिलित हैं जिनके रचयिता तो ज्ञात थे किंतु उनके इन ग्रंथों का पता नहीं था।

नीचे दी हुई सारिणी द्वारा ग्रंथों और उनके रचयिताओं का शताब्दि क्रम दिखाया जाता है —

शताब्दि	१४ वीं	१५ वीं	१६ वीं	१७ वीं	१८ वीं	१९ वीं	अज्ञात एवं संदिग्ध	योग
ग्रंथकार		४	३१	७६	८२	१७२	१३४	४९९
ग्रंथ		१६	१५३	२०२	२४८	४०८	४४३	१४७०

ग्रथो का विषयानुसार विभाग नीचे दिया जाना है:—

१—साधारण काव्य और संग्रह	९३
२—प्रेम और श्रृंगार	१०४
३—सगीतशास्त्र और गीत-काव्य	३५
४—कथा कहानी	१४२
५—नाटक	४
६—रीति और पिंगल	२५
७—भक्ति और स्तोत्र	९६
८—पौराणिक	२२९
९—धार्मिक तथा सांप्रदायिक	२६४
१०—नीति	५
११—उपदेश	५४
१२—ज्योतिप और रमल	८९
१३—जंत्र मंत्र और स्वरोदय	३०
१४—वैद्यक	१४०
१५—कोक	१५
१६—विविध	१४५

अन्य भाषा के जिन ग्रंथो के नोटिस लिए गए और जो रिपोर्ट में सम्मिलित नही है उनकी तालिका यहाँ दी जाती है:—

क्र०सं०	रचयिता	ग्रंथ	विषय	रचना-काल	लिपि-काल	गद्य या पद्य	भाषा
१	चिंतामणि	दोषावली	ज्योतिप	×	१८५१	गद्य	
२	नरोत्तम-दास	वैष्णव वंदना	स्तुति	१८६४	१८६४	पद्य	बॅगला
३	"	"	"	"	"	"	"
४	"	स्मरण मगल	गौडीय सम्प्रदाय के वैष्णवो का मंगलगान	१८५४	१८५४	"	"
५	स्छल	उदीच्य-प्रकाश	उदीच्य ब्राह्मणो के गोत्रादि का वर्णन	...	...	गद्य	गुजराती

इस खोज में निम्नलिखित १४ मुसल्मान ग्रंथकारों की कृतियाँ भी उपलब्ध हुई हैं। इनमें से तारांकित ग्रंथकार और ग्रंथ खोज में नवीन मिले हैं।

क्र०सं०	ग्रंथकार	ग्रंथ	रचना काल	लिपि काल
१	अब्दुल मजीद	क्लेशभंजनी	×	×
२	आलम	माधवानल कामकंदला	×	१७६४ ई०
३	असगरहुसेन	यूनानीसार	१८७५ ई०	१८८७ ,,
४	भुलन शेख	महाराज भरतपुर और लार्ड साहब का मिलाप	१८७६ ,,	×
५	फरासीसी हकीम	१—इलुल पुरान	×	१८४० ,,
		२—वैद्यक फरासीसी*	×	१७६० ,,
६	हैदर	कासिदनामा	×	१८४३ ,,
७	करमअली*	निज उपाय*	१७९० ,,	×
८	मल्लिक मोहम्मद जायसी	पद्मावत	१५४० ,,	१८०१ ,,
९	नजीर	१—कन्हैयाजन्म*	×	×
		२—वंशी*	×	×
		३—बंजारानामा*	×	×
		४—हंसनामा	×	१८५३ ,,
१०	कुदरतुल्ला*	१—रागमाला*	×	१८८० ,,
		२—खेल बंगाला*	×	१८५२ ,,
११	ताहिर	गुणसार कथा	१६२१ ,,	×
१२	मीरमाधो*	सुदामाचरित्र*	×	१७७५ ,,
१३	वहाब	बारहमासा	×	१८५१ ,,
१४	वजहनशाह	अलिफनामा	×	×

इसी प्रकार नीचे लिखे हुए १० जैन ग्रंथकारों की रचनाएँ प्राप्त हुई हैं। इनमें से भी तारकांकित ग्रंथकारों और ग्रंथों का पता पहले ही पहल चला है —

क्र० सं०	ग्रंथकार	ग्रंथ	रचनाकाल	लिपिकाल
१	भागचंद*	श्रावकाचार*	१८५५ ई०	×
२	भूधरदास	१—भूधरविलास*	×	१८७७ ई०
		२—चर्चासमाधान*	×	१८४७ ,,
		३—पार्श्वपुराण*	१७३२ ,,	×
३	बुधजनदास	देवानुरागशतक*	×	१८४० ,,
४	गोकुल गोलापूरब*	सुकुमालचरित्र*	१८१४ ,,	१८६१ ,,
५	झुनक्लाल*	नेमीनाथ के छंद*	१७८६ ,,	१८५६ ,,
६	मुनींद्र*	रविव्रतकथा*	१६८६ ,,	१७९८ ,,

क्र०सं०	ग्रंथकार	ग्रंथ	रचनाकाल	लिपिकाल
७	परसलदेव (आगरा)	श्रीपालचरित्र	१५९४ ,,	×
८	रग्घू कवि*	दशलाक्षणिक धर्मपूजा*	×	×
९	सदासुख कासि-लीवाल*	रत्नकांड श्रावकाचार की भाषामय वचनिका*	१८६३ ,,	१९०१ ,,
१०	सुरति सिद्धि*	जैनबारहखड़ी*	×	×

इस त्रिवर्षी में कुछ नवीन लेखकों का पता लगा है, कुछ ज्ञात लेखकों के नए ग्रंथ मिले हैं और कुछ के समय और स्थान के विषय में नवीन प्रकाश पड़ा है जिनका यहाँ उल्लेख करना आवश्यक जान पड़ता है।

नवीन लेखकों में से जवाहरदास, रतिभान, रामप्रसाद (निरंजनी), रूपराम सनाढ्य और हरीराम मुख्य हैं।

१—जवाहरदास के "महापद" नामक एक सुंदर ग्रंथ का पता चला है। यह ग्रंथ अब तक अज्ञात ही था। ग्रंथकार फीरोज़ाबाद (आगरा) के निवासी और किन्हीं बाबा रामरत्न के शिष्य थे और जाति के शूद्र थे।

"हरिदास के जे दास हैं तिनको जवाहिरदास।
वासी फिरोजाबाद को लघुवरन सूद्र उदास॥"

शायद "उदास" शब्द इस बात का द्योतक हो कि जवाहरदास विरक्त हो गए थे। उनका निवासस्थान किसी निरहवन टीले पर था। वहीं बैठकर ग्रंथकार ने अपने ही हाथ से मिति ज्येष्ठ वदी ७ मंगलवार संवत् १८८९ वि० (१८३२ ई०) को ग्रंथ लिखकर समाप्त किया था। फीरोजाबाद में 'टीला' नामक एक मोहल्ला अब तक है। ग्रंथ का रचनाकालः—

"अट्ठासिया दस अष्ट समत पुनीत।
पूस मास अरु तिथि अमावस वास(र ?) चंद्र विनीत॥
निज जीव के समझायवे को कियो पूरन गिरथ।
आसक्ति जाकी छोडि कै यह चलै हरि के पथ॥"

मिती पौष कृष्ण ३० चंद्रवासरे संवत् १८८८ वि० (१८३१ई०) कहा गया है। यह बड़े विनीत भाव के साधु थे। इन्होंने अपने आपको बिना पढ़ा लिखा, पापी, अति पतित, अधम, कुटिल और कामी कहा है। केवल पतितपावन के नाते हरि से तरने की आशा की है। वे इतना सुंदर ग्रंथ लिखकर भी अपने में उपदेश की शक्ति नहीं समझते थे। अतएव उन्होंने ग्रंथ-निर्माण का उद्देश्य एकमात्र अपने जीव को समझाना ही लिखा हैः—

"निज जीव के समझायवे को कियो पूरन ग्रंथ॥"

फिर यदि चाहे तो अन्य जीव भी समझ लेः—

"सो कहत निजु जीव सो सब जीव यामे समझियौ"॥

यद्यपि वह अपने को काव्य, कोष तथा व्याकरण के ज्ञान से रहित अपठित कहते

हैं तथापि उनकी प्रौढ़ विषय प्रतिपादन शैली, भाव गाभीर्य, सरल शब्दयोजना आदि गुणो को देखते हुए यह बात केवल उनके विनीत भाव को ही प्रदर्शित करती है।

२—**रतिभान** और उनका 'जैमिनीपुराण' भी खोज में बिल्कुल नवीन हैं। 'विनोद' में भी इनका उल्लेख नहीं है। यह ग्रथ सवत् १६८८ वि० (१६३१ ई०) में बना था, जैसा कि नीचे के दोहे से प्रकट है —

"सवत सोरह सा अट्ठासी अति पवित्र बैसाख ॥
सुक्ल सोम त्रयोदसी भए पूरन कथाऽभिलाष ॥"

कवि ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है —

'देस **नोरठो** उत्तम ठाऊँ। बस्यो जहा **इटोरा** गाँऊँ ॥
कालपक्षेत्र **कालपी** पासा। सिद्धिसाध पडित सुपवासा ॥
कलि गगा बेतवै इत बहै। न्हाए जहा पाप नहीं रहै ॥
मध्य सुदेस इटोरा गाँऊँ। तहाँ सत्य गुरु रोपन तिहि नाऊँ ॥
प्रगट प्रनाम पथ है जाको। निगुन मत्र जपै जग ताको ॥
कीरति विदित कहै सबु कोई। हमरे करे बडे नहिं होई ॥
मैं आय बढाइ काज बखानी। जाते नाउ हमारो जानी ॥
तासु पुत्र कुल मडन दास। भगति भागवत प्रेम हुलास ॥
ज्ञानराय जगनाम कहायो। छोटे बडे सबनि मन भायो ॥
ऐसो प्रगट जगत जसु जाको। **श्रीपरशुराम** पुत्र है ताको ॥

× × × ×

श्रीपरशुराम गुरु पिता हमार। ताकी स्तुति करत पुकारे ॥
ताके भए पुत्र पुनि चारि।
जेठे तीनि सबहि विधि लायक। सुत साधु सबहि सुखदायक ॥

× × × ×

अपनी बात कहौं परवान। सब कोउ कहै नाम **रतिभान** ॥"

इससे प्रकट होता है कि ग्रथकार (कलियुग की गगा) बेतवा नदी के किनारे पर बसे इटौरा गाव का निवासी, प्रणाम पथानुयायी किसी परशुराम का शिष्य था। इटौरा गाव कालपी से चार पाच कोस पर है। वहाँ रोपन गुरु का मन्दिर प्रसिद्ध है। प्रतिवर्ष कार्तिकी पूर्णिमा से १५ दिन तक वहाँ मेला लगता है। यह स्थान 'निवट्टा' मडल में है। बेतवा नदी के उस पार राठ तहसील है। इटौरा भी राठ का ही एक अग माना जाता है। सभवत 'निवट्टा ही रतिभान का नौरठा' है और दोनों एक ही शब्द 'नवराष्ट्र' के अपभ्रंश रूप हैं, जो इस मडल का प्राचीन नाम जान पडता है। प्रणाम पथ जिसे अब लोग परनाम पथ कहते हैं, कबीर पथ की तरह निर्गुण सिद्धात को ही माननेवाला जान पड़ता है, जैसा कवि के लिखे—"प्रगट प्रनाम पथु है जाको। निगुण मत्र जपै जगु ताको ॥" इस पद्यांश से प्रकट होता है।

इस पथ के आदि-संस्थापक गुरु रोपन थे। रोपन गुरु का मंदिर कालपी में अब तक विद्यमान है। अब भी वहाँ के महंत प्रणाम पथ की दीक्षा देते है। पथ में जाति का भेद-भाव विशेष नही है। सूत्र की कंठी दी जाती है। अधिकतर वैश्य ही शिष्य हैं।

रतिभान इन्ही गुरु रोपन की शिष्यपरंपरा में हुए है। और इटौरा में उनकी गद्दी के अधिकारी थे। रोपन गुरु के मदिर मे एक श्लोक का पता लगा है जिसमें रतिभान का उल्लेख है।

ऊपर के उद्धरण में रतिभान ने अपनी गुरु-परंपरा यह बताई है·—

सतगुरु रोपन
|
जानराय
|
परशुराम
|
रतिभान (ग्रंथकार)

"तासु पुत्र कुल मंडनदास" में कुल मंडनदास जानराय के विशेपण के रूप में आया हुआ जान पडता है, पृथक् नाम नही। यदि यह नाम हो तो एक पीढी और बढ जायगी।

३—रामप्रसाद "निरंजनी" अब तक अज्ञात लेखक ही नहीं, उनका यह महत्त्व भी है कि वे खडी बोली के काफी पुराने गद्य-लेखक है। उनके रचे योगवासिष्ठ (पूर्वार्द्ध) की चार प्रतियो के विवरण इस खोज रिपोर्ट में आए है। ग्रंथ का रचना-काल सवत् १७९८ वि० (१७४१ ई०) और लिपि-काल पहली प्रति का सवत् १८८० वि० (१८२३ ई०); दूसरी का १८७५ वि० (१८१८ ई०), तीसरी का १८५६ वि० (१७९९ ई०) और चोथी का संवत् १९१२ वि० (१८५५ ई०) है। रचियता पटियाले के रहनेवाले थे। अन्वेपक का कहना है कि वह तत्कालीन महारानी पटियाला को कथा बांचकर सुनाया करते थे। अन्वेपक के अनुसार यह बात उनकी जीवनी में लिखी है। किंतु विवरण से विदित नही होता कि उन्हे यह जीवनी कहाँ देखने को मिली। यह पृथक् ग्रंथरूप में उन्होने देखी है अथवा इसी ग्रंथ का कोई अंश है ? इसी प्रकार रचना-काल के विपय में अन्वेपक ने एक विवरण लिखा है—"तीसरे प्रकरण के अंत मे इस प्रकार लिखा है कि साधु रामप्रसाद ने पटियाला में संवत् १७९८ वि० कार्तिक पौर्णिमा को ग्रथ संपूर्ण किया।" इससे जान पडता है कि उनका लिखा यह उद्धरण उक्त ग्रंथ से ही उद्धृत किया गया है। दो अन्य विवरणो मे भी यह संकेत किया गया है कि तृतीय प्रकरण उत्पत्ति के अंत में रचनाकाल सं० १७९८ दिया है और शेष एक विवरण में इस संबंध मे लिखा है—"निर्माणकाल १७९८ वि० इनके जीवनचरित्र में लिखा है। जब तीन प्रतियो में निर्माणकाल का संवत् एक ही दिया हुआ है और ग्रथकार की जीवनी भी इसी बात को पुष्ट करती है तो ग्रथ का निर्माणकाल यही मानने में कोई आपत्ति नही जान पडती। अब तक गद्य के जो चार आचार्य सर्वप्रथम गद्य-लेखक माने गए है उनमे सबसे पुराने दिल्लीनिवासी

मुशी सदासुखलाल "नियाज" ह। उनका ज म सवत् १८०३ वि० माना गया है। प्रस्तुत शोध में मिला यह ग्रथ उक्त मुशीजी के जन्मकाल से पॉच वर्ष पूव की रचना है। इसमे यह ज्ञात होता है कि गद्य का जो प्रारभकाल अब तक कल्पित किया जाता है उससे बहुत पूव ही हिंदी गद्य विकसित होकर अपना परिमार्जित रूप ग्रहण कर चुका था।

इशाअल्ला के गद्य की भॉति उसमें फारसीपन नहा है। "समझाय के कहौ," "जान नेहारे हौ," "तैसे ही," "वह जो करता ह सो बधन का कारण नहीं होता" आदि पुराने प्रयोगो से उनकी भापा मुशी सदासुखजी की भापा से समता रखती है। उन्हा की भॉति शुद्ध तत्सम सस्कृत शब्दों का इन्होंने भी स्थल स्थल पर प्रयोग किया है। इनकी रचना में "बाद" आदि कुछ ही विदशी श द मिलते हैं जो घुल मिलकर हिंदी की निजी सपत्ति हो गए है। इस गद्य का महत्त्व यह ह कि यह मुशी सदासुखलाल के गद्य से कम से कम आधी शताब्दी पहले का तो अवश्य है। मु शीजी के "भागवत" के अनुवाद का तो समय नहीं ज्ञात ह किंतु उनके बनाए "मुतखबुत्तवारीख" का रचनाकाल स० १८७५ वि० विदित है ओर रामप्रसाद 'निरजनी' का "योगवासिष्ठ" भापा इससे सत्तर वप पहले का ह। इशाअल्ला की "रानी केतकी की कहानी" और लल्लूजीलाल के "प्रेमसागर' (लगभग १८६० वि०) से वह लगभग ६२ वप पहले का ह।

४—रूपराम सनाढ्य और उनका ग्रथ "कविरासग्रह' खोज में पहले पहल प्रकाश में आ रहे हैं। यह आगरा जिले की तहसील बाह में कचौराघाट के निवासी थे, जहॉ जमुना आगरे से इटावा के जिले को अलग करती है। ग्रथ में रचनाकाल तथा लिपिकाल नहीं हैं परतु अनुसधान से पता चलता है कि उनको हुए ५०–६० वप से अधिक नहीं हुए। कहते हैं कि उन्हें साहित्य और सगीत दोनों का पर्याप्त ज्ञान था। वे अच्छे वक्ता तथा कथावाचक थे।

५—'हरीराम' का 'मृगयाविहार" नामक ग्रथ इस खोज में प्राप्त हुआ है। पिछली रिपोर्टें एव मिश्रबधुविनोद में कइ हरीरामों के नाम आए हैं। उन सबसे यह 'हरीराम' भिन्न हैं। इस ग्रथ में महेंद्रसिंहजी महाराज भदावर की मृगया का वणन है। ग्रथ सवत् १९१५ वि० तदनुसार १८५८ ई० का बना और उसी सन् का लिखा हुआ है। ग्रथकार का कथन ह —

"सुनि सुनि जस रसदान प्रति जोजन प्रगट पचीस।
चलि प्रहते हरिराम जू आए अहा नृप ईस॥
नवगाये में नवल नृप श्रीमहेन्द्र हरि नाम।
दरसि परम आनँद भयो मदनरूप अभिराम॥'

नवगाये (नौगवॉ) आगरा जिला की बाह तहसील में अवस्थित है और भदावर राज्य की वतमान राजधानी है। उस समय वहॉ महन्द्रसिह गद्दी पर थे। उनके दान की कवि ने काफी प्रशसा की है —

"दोहा सुनि कै एक, यह पुरानो है रच्यो।
चही तासु की टेक, वलि चोई कीरतिलना ॥
जाके कवि पंडित गुणी निगुन न एको जान।
बालापन ते हरिकथा सुनत प्रफुल्लित गात ॥"

ग्रंथ का रचनाकाल इस प्रकार है.—

"पांडुपुत्र[५] प्रति चन्द्रमा[१] भूमिगत[९] मुनि पद[१]।
सवत् मे मृगया रची हरीराम हरि टेर।"

अर्थात् ग्रथ संवत् १९१५ वि० (१८५८ ई०) मे बना। ग्रथकार ने केवल संवत का ही उल्लेख किया है तिथि, मास, पक्ष और वार का नहीं किया।

ज्ञात लेखकों में से कबीर, चरणदास, छत्रपति, देवदत्त (देव), नजीर (अकबराबादी), नंददास, पद्माकर, रामचरण, रैदास और वाजिद आदि के कुछ नए ग्रंथ प्रकाश मे आए हैं। अतः इनका उल्लेख यहाँ किया जाता है।

६ **कबीर**—के रचे कहे जानेवाले १६ ग्रथो की २२ प्रतियां इस खोज में प्राप्त हुई हैं, इनमें सात ग्रथ ऐसे हैं जिनके विवरण पिछली रिपोर्टों में नहीं लिए गए हैं और न विनोदकारों ने ही उनका उल्लेख किया। 'झूलना' का उनकी दी हुई कबीर के ग्रथो की सूची में उल्लेख तो है, परतु उसका नाम किसी भी पूर्व रिपोर्ट मे नहीं मिलता। सन् १९-२९-३१ ई० की खोज में इनके जिन ग्रन्थों के विवरण लिए गए हैं, उनकी सूची नीचे दी जाती है:—

क्र०सं० नाम ग्रंथ	लिपि-काल	विषय
१—अखरावत	१८१७ ई०	गुरुमाहात्म्य, शब्दमाहात्म्य, नाममाहात्म्य, तथा ज्ञान का वर्णन।
२—क-कबीर बीजक	१८२८ ,,	ब्रह्मविद्या, माया, एव जीव विषयक भजन।
ख-बीजक रमैनी	१८५० ,,	साखी आदि द्वारा ईश्वर, माया, एव ब्रह्म का वर्णन।
३—दत्तात्रय गोष्ठी	×	दत्तात्रेय के जप, तप तथा साधनादि क्रियाओं का खडन।
४—ज्ञानस्थित ग्रथ पहला दूसरा	१८७० ,, १८१३ ,,	नाममाहात्म्य, तत्वनिरूपण, अजपाजाप तथा मंत्र।

क्र०सं० नाम ग्रंथ	लिपि-काल	विषय
५—झूलना	×	कठी माला छाप-तिलकादि का खडन और निज मत मंडन।
६—कबीर गोरख गोष्ठी	×	कबीर-गोरख का आध्यात्मिक विषय पर वाद-विवाद।

क्र०सं०	नाम ग्रंथ	लिपि-काल	विषय
७—कबीरजी के पद और साखियाँ		१६५३ ई०	मायादि की निस्सारता और ब्रह्मज्ञान संबंधी पद।
८—कबीरजी के वचन		×	ईश्वर की सत्ता, भक्ति तथा आत्मोपदेश।
९—कबीर सुरतियोग		×	कृष्ण तथा युधिष्ठिर के संवाद के मिस भक्ति का यथार्थ रूप प्रकाशन।
१०—गुरुमहावली		×	सृष्टि की उत्पत्ति, कृष्णावतार और उसका विस्तार तथा प्रलयादि के साथ उद्धार का वर्णन।
११—रमैनी		×	कबीर मत-संबंधी उपदेश।
१२—रमता		×	कबीरपंथ संबंधी उपदेश।
१३—साधु-माहात्म्य		×	साधु-माहात्म्य, पारखी, गुरुनिष्ठारिक, गुरु-माहात्म्य आदि १३ अंगों का वर्णन।
१४—सुरति-शब्द संवाद		×	भव बंधनों का कथन, ब्रह्मज्ञान एवं आत्मनिरूपण।
१५—कबीर शृंगार		×	इल्मों का वर्णन और साधु उपदेश।
१६—वशिष्ठ गोष्ठी		×	जीव, माया, ब्रह्म तथा शब्दादि के संबंध में वशिष्ठ की अनभिज्ञता दिखाकर निज मत की महत्ता प्रदर्शित करना।

इनमें से संख्या ३,४,५,८,९,१३ तथा १६ के सात ग्रंथ खोज में नवीन हैं।

संख्या २ (क-बीजक, ग-बीजक रमैनी), ११ (रमैनी) और ७ (पद) को छोड़कर अन्य ग्रन्थों में कुछ भी कबीर की रचना है इसमें संदेह है। कबीर के नाम पर उनके अनुयायियों ने खूब ग्रन्थों की रचना की है। दत्तात्रेय पौराणिक व्यक्ति हैं, उनका कबीर के साथ शास्त्रार्थ (दत्तात्रेय गोष्ठी) गढ़ंत ही है। वैसे ही गोरखगोष्ठी भी। क्योंकि गोरख और कबीर के समय में शताब्दियों का अंतर है। बहुधा इस शाखा के रचयिता लोग अपने समय तक के महंतों की 'दया' ग्रन्थ के आदि में पुकारते हैं। संख्या ५ "हुल्लास" में आदि से लेकर हक नाम साहब (लगभग ई० सन् १८१९—१८४४ तक) के महंतों की दया पुकारी गई है। संख्या १० गुरुमहावली में धर्मदासी शाखा के महंत अमोलनाम सुरतसनेही साहब की (लगभग ई० सन् १७९४ से १८१९ तक) दया पुकारी गई है। संभवतः यह उन्हीं के समय की रचना होगी। ये ग्रंथ १८ वीं शताब्दी से पहले के नहीं जान पड़ते। संख्या ७ 'कबीरजी के पद और साखियां' बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसकी प्रतिलिपि किसी कैसोदास ने संवत् १७१० वि० अषाढ़ पूना की की है। परंतु नोट में अन्वेषक ने लिपि काल न जाने किस आधार पर संवत् १६६६ वि० बताया है। संभवतः ग्रंथ के किसी अंश में यह तिथि भी दी गई

हो या ग्रन्थ आरंभ किया गया हो सवत् १६९६ वि० मं और समाप्त हुआ हो संवत् १७१० वि० में।

इसका जितना अश विवरण-पत्र में आया है, उससे पता चलता है कि वह कवीर-ग्रंथावली की पदावली और साखी से मेल खाता है। कवीर-ग्रथावली के प्रधान आधार 'क' प्रति की सत्यता पर संदेह करने के लिये स्थान है। उसकी पुष्पिका मे लिपि-काल सवत् १५६१ वि० दिया गया है। परंतु पुष्पिका की लिपि शेप ग्रथ की लिपि से भिन्न जान पडती है। डाक्टर जूलसब्लाश ने इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट किया है (बुलेटिन ऑव दी स्कूल ऑव ओरियंटल स्टडीज लंडन इस्टीट्यूशन, भाग ५-६ पृष्ठ ७४९—'सम प्रॉब्लेम्स ऑव इंडियन फिलॉलॉजी)। मैने स्वय इस हस्तलेख की जॉच की जिसका परिणाम मैने अपने ॲगरेजी ग्रथ 'निर्गुण स्कूल ऑव हिंदी पोयट्री' के पृ० २७६-७७ पर दिया है। यद्यपि मुझे उसका १५६१ का लिखा होना असंभव नही मालूम होता, फिर भी मेरी जॉच से भी जो तथ्य प्रकाश मे आए है वे कम संदेहोत्पादक नही है। क्योकि पुष्पिका, जिसमें संवत् दिया गया है, गोडी हुई है। मैने इस 'क' हस्तलेख को जॉच के लिये प्रयाग के डॉकुमेंट इक्स-पर्ट श्री चार्ल्स ई० हार्डलेस के पास भेजा था। उनके अनुसार भी पुष्पिका और शेप ग्रथ अलग अलग व्यक्तियो के लिखे हुए है। प्रस्तुत हस्तलेख कवीर ग्रंथावली के ढग का कवीर-ग्रंथावली के अतिरिक्त सबसे पुराना हस्तलेख है और उसका बहुत कुछ समर्थन करता है।

७ **चरणदास**—के वाललीला, व्रजचरित्र, धर्मजिहाज, और योग नामक ग्रथ नये मिले है। इनके विवरण पहले नही लिए गए थे।

बाललीला मे कृष्ण के बाल चरित्र का वर्णन है, व्रजचरित्र कृष्ण की प्रेमलीला का गान है; धर्मजिहाज में गुरु-शिष्य-सवाद के रूप में सांसारिक दुख-सुख तथा ऊँच-नीच आदि विभिन्नताओ के कारणो का विवेचन किया गया है और जैसा नाम से प्रकट है 'योग' योग का ग्रंथ है। इस अंतिम ग्रथ से चरणदास के एक शिष्य (नदराम) के नाम का पता चलता है, जिसकी जिज्ञासा की पूर्ति के लिये उन्होने इसका निर्माण किया थाः—

"नंदराम विनती करै सुनो ईश गुरुदेव।
तुमही दाता भगति कै जोग जुगति कहि देव॥"

उनके और कई ग्रंथ गुरु-शिष्य-सवाद रूप में लिखे गए है, परंतु किसी में भी शिष्य का नाम नही आया है।

एक और बात है—गुरु-शिष्य-संवाद रूप मे लिखे गए ग्रथ कभी कभी गुरुओ के स्थान पर शिष्यो के बनाए होते है। परन्तु इस ग्रंथ के आदि के अंश मे बार बार इस बात का उल्लेख हुआ है कि इसका लेखक चरणदास ही है। जैसे—"अथ श्री सुखदेवजी का दास चरणदास कृत जोग लिख्यते"॥ "गुरु जनक को शिष्य तासु को दास कहाऊँ।" "चरणदास को हरिभक्ति कृपा करि दीजै।" "चरणदास यह जानि के सतसंगति हरि को भजो। सुखदेव-चरण चित लाय के सो झूँठ कान दुविधा तजो।"

"षट्कर्म हठयोग" नामक एक और ग्रंथ प्रकाश मे आया है जिसका नाम तो नया

है किंतु संदेह होता है कि यह दूसरे नाम से उनका ग्रंथ अष्टांगयोग (दे० खो० रि० सन् १९०५ न० १७) ही या उसका एक अंश तो नहीं है। प्रस्तुत ग्रंथ का आरंभ यों होता है —

"श्रीगणेशायनम ॥ अथ षट्कर्म हठयोग लिख्यते"

शिष्यवचन

"दो० अष्टांगजोग वर्णन किया जाके भेद बहिचान।
छहों कर्म हठयोग के वर्णौं कृपानिधान॥"

और उल्लिखित अष्टांगयोग का इस प्रकार —

"श्रीगणेशायनम अथ गुरु चेल का संवाद अष्टांग योग लिख्यते।"

सिष्यवचन

"दो० स्यामसुन्दर धन धन गुरु धन धन यह स्थान।
मम आसा पूरी भई धन धन यह भगवान॥"

दोनों के अंत में थोड़ा सा पाठ भेद के साथ निम्नांकित छप्पय आया है —

छप्पय

"गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवन के देवा।
मंत्र सिद्धि फलदा गुरु तुमही भक्ति करवा॥
गुरु वचन तुम होय करि करौ भवसागर पारी।
जीव ब्रह्म करि देत हरौ तुम व्याधा सारी॥
श्रीशुकदेव दयाल गुरु चरणदास के सीस पर।
किरपा करि अपना किया सबही विधिसौं हाथ धर॥"

पुरानी रिपोर्ट में इस छप्पय के अतिरिक्त और कोई उद्धरण नहीं है जिससे अधिक मिलान किया जा सके। परंतु प्रस्तुत विवरणों में भी एक अष्टांग योग का विवरण लिया गया है जिसमें यह छप्पय नहीं है। शेष बातों में वह उपर्युक्त अष्टांगयोग से मेल खाता है। हो सकता है, इस छप्पय का अष्टांगयोग ग्रंथ से कोई संबंध न हो और किसी लिपिकार ने चरणदास के ही इस छप्पय को ग्रंथांत में लिख दिया हो। ऐसी दशा में षट्कर्म और अष्टांगयोग एक ही ग्रंथ के दो रूप नहीं माने जा सकते पर एक ही ग्रंथ के अंश होने की संभावना फिर भी बनी ही रहती है।

८ छत्रकवि—का "सुधासार" ग्रंथ इस खोज में नवीन मिला है। 'विनोद' में भी इसका उल्लेख नहीं है। इसमें उन्होंने भागवत दशम स्कंध का अनुवाद किया है। इसकी रचना इनके सुप्रसिद्ध और प्रकाशित ग्रंथ "विजयमुक्तावली" से १९ वर्ष पश्चात् सन् १७१९ ई० में हुई है —

"संवतु सत्रह सै बरष, और छिहत्तरि तत्र।
चैत्रमास सित अष्टमी, ग्रंथ कियो कवि छत्र॥"

इस दोहे में ग्रंथ का रचनाकाल मि० चैत्र शुक्ला अष्टमी सं० १७७६ वि० (१७१९ ई०) है। वार दोहे में नहीं दिया गया है। विजयमुक्तावली की भांति इसमें भी छत्रकवि ने अपना और अपने आश्रयदाता का संक्षिप्त परिचय दिया है —

"श्रीवास्तव कायथ कुल, छत्रसिंह इहि नाम।
गाइ विप्र के दास नित, पुर अटेर सुखधाम ॥
सोहति सिंह गुपाल की, कीर्ति दिसा विदिसानि।
भूतल पलभल अरिन के, गहतु पगं जब पानि ॥
भूपति भानु भदोरिआ, किरनि क्रांति जुग छाइ।
सुहृद सकल नृप के सुखद, तम अरि गए विलाइ ॥
ताको सुखद अटेर पुर, मुलुक भदावर माँहि।
चारि वर्ण युत धर्म तहँ, रहत भूप की छाँह ॥"

उपर्युक्त अवतरण प्रकट करते है कि वह तत्कालीन भदावर नरेश "गोपालसिंहजी" के आश्रित थे, किंतु इससे १९ वर्ष पहले रचे जानेवाले "विजयमुक्तावली" ग्रंथ में इन्होंने भदावरनरेश "कल्याणसिंह" को अपना आश्रयदाता बतलाया है। यहाँ इस ग्रंथ की वर्तमान शोध मे मिली हुई प्रति से कुछ अवतरण देते हैं जिनमें भदावर की स्थिति का भी कुछ वर्णन है:—

"मथुरा मंडल में बसे, देस भदावर ग्राम।
डगलतत (?) प्रसिद्ध महि, छेत्र वटेश्वर नाम ॥
सुजस सुवास सुनिकट ही, पुरी अटेर हि नाम।
जग्य जाप होमादि वृत, रचत धाम प्रति धाम ॥
नगर आदि अमरावती, वासी विवुध समान।
आखंडल सौ लसत तहँ, भूपतिसिंह कल्यान ॥"

इसी भदावर-राज्यांतर्गत अटेर नगर था। यह नगर अब रियासत ग्वालियर में है। विस्तृत भदावर राज्य अत्यत संकुचित रह गया है और अब महाराज भदावर के पास रियासत का अंशमात्र है। अटेर भिंड से हटकर उनकी राजधानी आगरा जिले की बाह तहसील के नौगवाँ नामक गाँव में आ गई है। विवरण के पृष्ठ ४६ में तथा खोज रिपोर्ट सन् १९०६-८ संख्या २३ और खो० रि० स० १९०९-११ ई०, स० ४८ पर कल्याणसिंह संभवतः विजय-मुक्तावली के उपर्युक्त आधार पर ही अमरावती के राजा कहे गए है जो स्पष्ट अशुद्ध है। नगर का नाम "अटेर" तो इससे ऊपरवाले दोहे में ही दिया गया है जिस पर अमरावती का आरोप किया गया है।

६ देव—के अन्य ग्रंथो के अतिरिक्त, नायिका-भेद-संबंधी, "श्रृंगार-विलासिनी" नाम का उनका एक और ग्रंथ प्राप्त हुआ है। यह संस्कृत मे लिखा गया है। ग्रंथांत मे उनका निवास स्थान इष्टिकापुरी (इटावा) दिया गया है। यथा:—

दोहा

"देवदत्त कवि रिष्टिका, पुरवासी स चकार।
ग्रथ मिम वंशीधर द्विजकुल धुरं बभार ॥

इससे आगे के छप्पय में ग्रंथ निर्माण काल इस प्रकार दिया है—

"स्वर[७] भूत[५] स्वर[७] भूमि[१] मिते वत्सर यदाऽयं ।
दिल्लीपति नरंगसाहि राज्यस्मदुपाय ॥
दक्षिण दिशि च तदेव कुकुण नाम विदर्भे ।
कृष्णावेणीनाम नदी संगम प्रदेशे ॥
श्रावणे बहुल नवमी तिथौ रवानो रेवती धृतियुते ।
रवि दयदत्त उदिते ग्रावगमपय दहहिम्नुते ॥'

इससे प्रकट है कि उक्त ग्रंथ दयदत्त ने भारत के दक्षिण कोंकण देश में, जिसे वह विदर्भ कहते हैं और जो कृष्णावेणी नामक नदी-संगम पर स्थित है संवत् १७५७ वि०(१७०० ई०) के श्रावण की बहुला नवमी को सूर्योदय के समय पूर्ण किया था। वार और पक्ष स्पष्ट ज्ञात नहीं होते। उस दिन रेवती नक्षत्र और धृति योग था। ना०प्र० सभा में नायिका भेद-संबंधी दयदत्त का संस्कृत ग्रंथ रचा बताया जाता है (दे० मिश्र बं० वि०, द्वि० सं० पृ० ५१९)। उसका रचना-काल संवत् १८५१ वि० (१७९४ ई०) कहा गया है। किंतु प्रस्तुत ग्रंथ का रचनाकाल सं० १७५७ वि० (१७०० ई०) है। इसकी विशेषता यह है कि संस्कृत में होने पर भी यह ग्रंथ छप्पय सवैया और दोहा आदि छंदों में लिखा गया है जो हिंदी के खास अपने छंद हैं। हिंदी पिंगल के नियमों के अनुसार उनमें तुक भी मिलाई गई है। इन्हीं विशेषताओं के कारण इस ग्रंथ का विवरण रिपोर्ट में सम्मिलित किया गया है। सामान्यतया संस्कृत ग्रंथों के विवरण स्वीकार नहीं किए जाते। विवरण पत्र में दो सवैये, एक दोहा और एक छप्पय आया है।

ग्रंथकार उस समय दिल्ली की गद्दी पर मुगल सम्राट् औरंगजेब का आधिपत्य बतलाता है। औरंगजेब की मृत्यु ग्रंथरचना काल के सात वर्ष पश्चात् सन् १७०७ ई० में हुई थी। पिछली रिपोर्टों और मिश्रबंधुविनोद में देवरचित ग्रंथों की नामावली में इस ग्रंथ का नाम नहीं आया है। खेद है कि यह ग्रंथ खंडित अवस्था में मिला है, और लिखा भी अस्पष्ट अक्षरों में है।*

१० नजीर—की कविता खड़ी बोली में बड़ी लालित्यपूर्ण है। इस खोज में उनके रचे हुए चार छोटे छोटे ग्रंथ "कन्हैया जन्म", "वंशा" "बनजारानामा" तथा "हंसनामा" मिले हैं। पहले तीन हमारी खोज में नवीन हैं। रचनाकाल किसी में नहीं दिया है। अंतिम ग्रंथ का लिपिकाल संवत् १९१० वि० (१८२३ ई०) है। उनका हंसनामा खोज रिपोर्ट सन् १९२६-२८ ई० के नं० ३३३ पर (रिपोर्ट अप्रकाशित है) विवरण में आ चुका है। डा० ग्रियर्सन ने अपने माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ हिंदुस्तान में इनका रचनाकाल सन् १६०० ई० से पूर्व माना है। कविताकौमुदी के भाग ४ में पं० रामनरेश त्रिपाठी इनका जन्म १७४० ई० में और मरण १८२० ई० के लगभग लिखते हैं। आगरे के बाबू

---

* यह ग्रंथ अब एस० एल० ऐंड को० भरतपुर (स्टेट) द्वारा प्रकाशित हो गया है—नी० द० न०।

रामप्रसाद गर्ग ने "रूहेनजीर" के नाम से इनकी कविताओं का एक संग्रह भी प्रकाशित किया है। उनका बंजारानामा वर्नाक्युलर स्कूलों की लोअर प्राइमरी कक्षा एक में पढ़ाया जाता था, जो मौलवी मोहम्मद इस्माइल द्वारा संपादित "उर्दू" की दूसरी किताब में संगृहीत है। इसमे संदेह नहीं कि कविता सरस एवं प्रसाद गुण-संयुक्त है। यही एक मुसलमान कवि है जिसने दिल खोलकर हिंदुओं के देवी-देवताओं और मेलों तथा त्योहारों पर सहृदयतापूर्वक कविता की है। इसका कारण यह है कि उनका संपर्क मुसलमानों की अपेक्षा हिंदुओं से अधिक रहा। वह आगरे में पेशवा के लड़कों को पढ़ाते थे और वहाँ माईथान मुहल्ले में सेठों और महाजनों के लड़कों को भी पढ़ाने जाया करते थे। उपर्युक्त पुरानी रिपोर्ट में हंसनामा का रचनाकाल संवत् १९१८ वि० (१८६१ ई०) दिया गया है। जान पड़ता है कि उसमें लिपिकाल के स्थान पर रचना-काल लिखा गया है।

११ **नंददास**—रचित ८ ग्रंथों की १४ प्रतियाँ प्रस्तुत खोज में मिली हैं। इनमें से "फूल मंजरी" तथा "रानी माँगौ" नवीन है। उनके नाम मिश्रबंधुओं की दी हुई इनके रचित ग्रंथों की सूची में भी नहीं आए हैं। पहले ग्रंथ में केवल ३१ दोहे है। उनमें नई दुलहिन के रूप सौंदर्य के वर्णन के साथ साथ प्रत्येक दोहे में एक फूल का नाम आया है। जैसे.—

सीस मुकुट कुंडल अलक सँग सोहे ब्रजबाल।
पहरै माल **गुलाब** की आवत है नँदलाल ॥ १ ॥
चंपक बरन सरीर सब नैन चपल हैं मीन।
नव दुलहनि को रूप लपि लाल भए आधीन ॥ २ ॥

"रानीमाँगौ" भी छोटा सा ही ग्रंथ है। इसके आदि में—"मैं जुवती जाँचन व्रत लीन्हो" की प्रतिज्ञा से ग्रंथ का उठान हुआ है और दान माँगने के रूप में कृष्ण-राधिका के प्रेम का वर्णन किया गया है। कूबरी को ध्यान में रखते हुए कवि ने राधिका के द्वारा कृष्ण पर बड़े मनोहर उपालंभ कराए हैं। दोनों ग्रंथों के रचना-काल और लिपिकाल अज्ञात है।

१२ **पद्माकर**—इस खोज मे 'जगद्विनोद' और 'गंगालहरी' के अतिरिक्त एक नवीन, किंतु छोटी सी केवल ८ सवैयों की ''लिलहारी लीला" नामक रचना और प्रकाश में आई है जो पद्माकर की बताई गई है। इसके पूर्व की रिपोर्टों में इसका उल्लेख नहीं है। 'विनोद' में भी इस ग्रंथ का नाम नहीं आया है। इसका कथानक यह है—श्रीकृष्ण लिलहारी का भेष बनाकर राधा के यहाँ पहुँचकर, "कोई लीला गुदवा लो" की आवाज लगाते है। राधा अपनी सखी द्वारा लिलहारी को बुलवाती है। लिलहारी के भीतर पहुँचने पर राधा नख से शिख तक सारे अंग में कृष्ण के अनेक नाम गोद देने की उससे प्रार्थना करती है। लिलहारी उसके प्रस्ताव को स्वीकार कर पारिश्रमिक ठहराती है। राधा ऐसा इच्छित कार्य कर देने के बदले मूल्यवान् आभूषण दुलरी तिलरी आदि देना स्वीकार करती है। लिलहारी इस पर सहमत होकर राधा का हाथ अपने हाथ मे लेती है किंतु उसी समय राधा श्रीकृष्ण के छद्म वेश को पहचान लेती है:—

"हाथ पै हाथ धरयौ जबही तब चौंकि उठी वृषभानु दुलारी।
श्याम सिरे छल छद बडे तुम काहे को भेष बनायत नारी॥"

बात खुल जाती है और राधिका—"हम हैं हरि की पग धोवनहारी" कहकर लीला समाप्त कर देती है। इस ग्रथ में रचनाकाल नहीं है। उसकी प्रतिलिपि चैत्र बदा अष्टमी संवत् १६१४ वि० (१८५७ ई०) में किन्हीं बालदीन पाडे ने की है। रचना रोचक होने के साथ साथ छोटी है।

यह रचना पद्माकर की है या नहीं, निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। इसकी भाषा उतनी मँजी हुई नहीं जितनी पद्माकर की अन्य रचनाओं की है। पद ढीले ढाले हैं। केवल अतिम सवैये के अतिम चरण में पद्माकर का नाम आया है। वह भी छद में बाहर से जोड़ा हुआ जान पड़ता है। यदि यह पद्माकर की ही रचना है, तो सभवत आरभिक रचना होगी।

१३ रामचरण—रामसनेही पथ के सस्थापक और नवलराम महाजन मेहरी के गुरु थे, जिसका नवलसागर नाम का ग्रथ १९०१ ई० की खोज रिपोट के न० ६४ पर नोटिस में आ चुका है। नवलदास ने स्वय कहा है—

"अनतकोटि जन सिरन पै, रामचरण उर माँहि।
आन भरोसो आन बल नवलराम के नाँहि॥"

प्रस्तुत रिपोट में उनके रचे ९ ग्रथों के विवरण लिए गए हैं—१—जिज्ञासबोध (नि० का० १८४७ वि०) - विश्रामबोध (नि० का० १८५१ वि०) ३—समतानिवास ग्रथ (नि० का० १८५२ वि०) ५— विश्वासबोध ग्रथ (नि० का० १८४९ वि०) ५—अमृत उपदश (नि० का० १८४४ वि०) ६—रामचरण के शब्द ७—अणभै विलास (नि० का० १८४५ वि०) ८—रामरसायनि और ९ सुखविलास (नि० का० १८४६ वि०)। इनमें से अब तक कोई भी ग्रथ खोज में नहीं मिला था। हाँ, 'विनोद' के न० १०७५ पर इनके रचे ५ ग्रथों का उल्लेख मात्र हुआ है, जो इस रिपोट की स० १, २, ४, ६ तथा ७ पर आए हैं। प्राप्त ग्रथों के न० ६ का नाम 'रामचरण के शब्द' है और 'विनोद' की सूची में एक ग्रथ का नाम "वाणी" लिखा है। सामान्यतया 'वाणी' किसी सत की समस्त रचनाओं के सग्रह को और "शब्द" उसके एक अश अर्थात् पदावली के सग्रह को कहते हैं। ऐसी अवस्था में 'शब्द' एक स्वतत्र ग्रथ न होकर "वाणी" का अग भी हो सकता है। परतु किसी निश्चय पर पहुँचन के लिये यहाँ पर्याप्त उपकरण प्रस्तुत नहा है। विनोद में इनके एक और ग्रथ "रसमालिका" का भी उल्लेख है परतु खोज में यह ग्रथ अयोध्या के महत रामचरण की रचनाओ में सम्मिलित किया गया है जो ठीक भी जान पड़ता है (दे० खो० रि० १९०३ न० ४४)। ग्रथ न० ६ तथा ८ के अतिरिक्त शेष सभी ग्रथों में रचनाकाल दिए गए हैं, जो उनके नामों के साथ कोष्ठकों में लिखे हैं।

इनके सभी ग्रथों में आरभ का स्तुति सबधी दोहा एक ही है जो यहाँ दिया जाता है —

"रामतीत (राम) गुरु देवजी (पुनि) तिहूँकाल के संत ।
जिनकूँ रामचरण की वदन वार अनत ॥"

यह राजपूताने के शाहपुरा नामक स्थान के निवासी थे । इनके गुरु का नाम कृपा-राम या कृपालराम था, जैसा उन्होंने अपने अमृत उपदेश नामक ग्रंथ में बताया है—

सिर ऊपर सतगुरु तपै कृपारामजी संत ।
रामचरण ता सरणि मे ऐसो पायो तत ॥"

इसी प्रकार शब्द मे लिखा है—

"सतगुरु संत कृपालजी रामचरण सिष तासु के ।
कारिज करि कारण मिले तुम गुरु रामजन दास के ॥"

कही कहीं इन ग्रंथो के एक ही व्यक्ति के रचे होने के विषय में कुछ संदेह हो जाता है । 'रामरसायनि' में लिखा है—

"सवद एक महराज का नग मोताहल जोड़ ।
ग्रथ जोटकर रामजन पानाजाद सु होइ ॥" ॥ १ ॥
ए वाहक उधार करिणकूं रामचरण जी भाषे ।
राम रसाइनि रस का भरिया आप सवन कूँ दाषे ॥ २ ॥
ताकी जोड ग्रथ या परगट राम जन वणवायो ।
ज्ञान भगति वैराग जुगति मुकती पथ वतायो ॥ ३ ॥

पहले मे ग्रथ का जोडनेवाला रामजन है, दूसरे में रस का भरनेवाला 'रामरसा-इनि' "ए वाहक उधार करण कूँ" रामचरणजी ने 'भाषा' है और तीसरे दोहे मे "ताकी जोड"—उसी टक्कर का या (यह) ग्रथ रामजन ने "वणवायो" है । किंतु ग्रथ के अंत मे—"इति श्री रामरसाइनि ग्रंथ रामचरणकृत संपूर्ण समाप्तः" ही लिखा है ।

ग्रथकार ने अपना मृत्यु-काल कैसे लिख दिया होगा ? यह संदिग्ध है । अनुमान होता है कि किसी शिष्य तथा प्रतिलिपिकर्त्ता ने पीछे से इस या इसी प्रकार की अन्य प्रतियो में इसे अपनी ओर से जोड दिया होगा ।

'अनुभवविलास' में भी—"ग्रथ जोड कही रामजन" इसी प्रकार का पद आया है । रामचरण के शिष्य उनको 'राम' कहा करते थे, जैसा इनके शिष्य नवलदास ने अपने नवल-सागर में कहा है:—

"रामगुरु उर में वसे अनत कोटि जन सीस ।
नवलौ अनुचर रावरौ मानूँ विसवा वीस ॥"

अनुभवविलास में रामचरण के गुरु कृपाराम की मृत्युतिथि—"बत्तीसै कृपाल छठि भाद्रपद सुदि सुकर । छोड़े आप सरीर परम पद पहुंचे मुकर ॥" और इससे पूर्व रामचरण का जन्मकाल—"अठारै सै षट वर्ष मास फागुन वदि सातै । सत पधारै धाम सनीचर वार विष्यातै ॥" इस प्रकार दिया है ।

'रामरसाइनि' के अंत में रामचरण की मृत्यु का इस प्रकार उल्लेख है:—

"ये वाहक पुर माह पधार धाम कू
ररकार में लान उचारे राम कूँ॥
अठारह से पचपन जुधि पाचै परी।
परिहा वेसाप मास गुरवार दह त्यागन करी॥"

इनसे पता चलता है कि वि० १८०६ में रामचरण का जन्म हुआ, वि० १८३२ में उसके गुरु कृपाराम का निधन हुआ और १८५५ वि० में स्वय रामचरण का। उनके 'शब्द' ग्रथ में भी 'जन्म सवत्' वि० १८०६ (१७४६ ई०) दिया है।

इनकी भाषा में राजस्थानी शब्दों के अतिरिक्त फारसी, अरबी के शब्द भी बहुत आए हैं—जैसे, "मुरसदकूँ सजदा करै", "आलम औरत जुलम रहै", "तू सिर गजब चलि आई जुरा की फौज", "गाफिल होइ मति भाइ" आदि। इनकी रचना का सार गुरु महिमागान, ससार से विरक्तता और केवल राम से नाता रखना है। कविता साधारणतया अच्छी है।

१४ रैदास—के नाम से दो ग्रथ "प्रह्लादलीला" और "रैदास के पद" इस खोज में प्राप्त हुए हैं। दूसरा ग्रथ तो निस्सदेह प्रसिद्ध रैदास का ही है। असभव नहीं कि पहला भी उन्हीं का हो पर यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। दूसरे ग्रथ का लिपिकाल सवत् १६९६ वि० (१६३९ ई०) है। खोज विवरण सन् १९०२ ई० के स० ९७ पर भी आ चुका है, किंतु यह प्रति उससे १० वर्ष पुरानी है। प्रह्लाद लीला में निर्माणकाल तथा लिपिकाल नहीं दिया गया है। ग्रथ छोटा ही है। इसमें नरसिंह भय तारातगत भक्त प्रह्लाद की अनन्य भक्ति का दिग्दर्शन कराया गया है। ग्रथ की प्रतिलिपि अशुद्ध हुई जान पड़ती है। इस ग्रथ में प्रह्लाद का जन्मस्थान मुलतान (पजाब) बताया गया है—

"सहर बड़ो मुलतान जहाँ एक कुलवँत राजा।
यहँ जनमे प्रह्लाद सर सुर सुधि (? शुचि) के काजा॥
पूछौ विप्र बुलाय कै जन्म्यौ राजकुमार।
या लक्षण तो कोइ नहीं असुर सहारणहार॥'

यहाँ सर' शब्द सभवत सरे के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। प्रह्लाद के जन्म लेते ही उनके लक्षण पूछे गए हैं। जोर देकर यह भी पूछा गया है कि उसका कोई लक्षण "असुर सहारणहार" तो नहीं है? इससे आगे कथाक्रम भंग हो गया है। पूछी बात का कोई उत्तर नहीं दिया जाता, उसकी पढ़ाई लिखाई आरभ हो जाती है। 'सुण **धौरो** प्रह्लाद की रणगुण तें पढैये। म पढाए राम को नामा और जान ही जानों॥' "राम मैं छोड़ि तीसरो अक न आनौं॥" ज्ञात होता है, यहाँ 'धौरो' शब्द पास के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। 'सुण धौरो' पास जाकर सुन। पडित से कहा गया है, "रणगुण तैं पढ़ैव" तू इसे रण विद्या की शिक्षा देना। पास आकर कही हुई बात को भी प्रह्लाद सुन लेता है और उत्तर देता है —

"कहा पढावै बावरै और सकल जजार।
भौसागर जमलोक ते मुहि कौन उतारे पार॥"

इस प्रकार राम नाम को ही सार कहकर प्रह्लाद ने पढ़ा। इससे आगे भक्त की दृढ़ प्रतिज्ञा की परीक्षाओ का वर्णन समाप्त होकर, अत मेः—

"अस्त भयौ तब भानु उदे रजनी जब कीन्हा।
खभा में ते निकरि जॉघ पर जोधा लीन्हा॥
नप सौ निझप बिडारिया तिलक दिया महराज।
सप्तलोक नव पड मे तीनि लोक भई राज॥"—

इस पद्य से विषय समाप्त हो जाता है। और ग्रथकार भगवान् की वत्सलता का वर्णन करके ग्रंथ को समाप्त कर देता हैः—

"जहाँ भक्त को भीर तहाँ सब कारज सारे।
हमसे अधम उधारि किए नरकन से न्यारे॥
सुर नर मुनि मंडल कहै पूरण ब्रह्म निवास।
मनसा वाचा कर्मणा गावै जन रैदास॥"

१५ **वाजिद**—का राजकीर्तन नामक ग्रंथ पहले नोसिट मे आ चुका है (दे० खो० वि० १९०२ ई० संख्या ७९)। इनका रचना-काल १६०० ई० माना गया है। इस खोज मे बिना सन् सवत् के दो ग्रथ "अरिल्ल" और "साखी" नाम से मिले है। दोनो ग्रंथ प्रायः संत सम्प्रदाय से संबंध रखते है। "अरिल्ल" की लिखावट अस्पष्ट और अशुद्ध है, अतएव पढने मे कठिनता से आती है।

इसमें विरह, सुमिरण, काल, उपदेश, कृपण, चाणक, विश्वास, साध तथा पतिव्रता इन नौ अगो पर रचना की गई है। ग्रंथ के आरभ मे "संतसाहिब सत सुकृत कबीर" लिखा हुआ है जिससे पता चलता है कि या तो लेखक या प्रतिलिपिकर्त्ता कबीरपंथी था। परंतु अब तक परंपरा से जो कुछ ज्ञात है, उससे वाजिद या वाजिंदा दादू के चेले प्रसिद्ध है।

'साखी' बडा उपदेश-पूर्ण ग्रंथ है—किंतु अपूर्ण मिला है। इसमे भी सुमिरणादि विषयो के अनुक्रम से रचना की गई है।

इनके अतिरिक्त दो हस्तलिखित ग्रथ और है जिनका उल्लेख करना आवश्यक है। एक तो प्रपन्नगणेसानद का "भक्तिभावती" ग्रंथ और दूसरा "रामरक्षा" ग्रंथ।

१६ **'भक्तिभावती'**—पिछले एक विवरण में भी आ चुकी है, (दे० खो० वि० सन् १९०१ सं० १३६)। उसमें इसका रचनाकाल नीचे लिखी हुई चौपाई के अनुसार सवत् १६११ वि० ठहरता है :—

"संवत् सोले से भवसालै। मथुरापुरी केसवा आलै॥
असुन पेहल ग्यारसि रिविवारी। तह पट पहलीहि विसतारी॥"

परतु प्रस्तुत खोज में इसकी जो प्रति प्राप्त हुई है उसमें रचनाकाल संवत् १६०९

वि० (१५५२ ई०) और लिपिकाल सवत् १८१० वि० (१७५३ इ०) दिया हुआ है। रचनाकाल की चौपाइ इस प्रकार हे —

'सवद सोलह सें नवसाले। मथुरापुरी केसव आले॥
आइवनि पहल ग्यारसि रविवारी। तहँ पट् पहर माहिं विसतारी॥

कवि ने सवत् को आधा सख्या में और आधा सकेत में न लिखा होगा जैसा पुरानी रिपोटवाली प्रति में है। यह असभव तो नहीं पर अस्वाभाविक सा अवश्य लगता है। पुरानी रिपोटवाली प्रति में सभवत लिपिकार ने 'नव के स्थान में गलती से 'भव' (रुद्र = ग्यारह) लिख दिया है। अत-रचना काल १६०९ वि० ही माना जाना चाहिए जैसा वतमान प्रति में है।

१७ रामरक्षा'—इस बार के विवरण में रामानुजाचाय के नाम से आई है। हस्तलेख के अत में लिखा है—"इति श्री रामानुजाचार्य कृत श्रीरामरक्षा स्तोत्र सपूणम्॥" इसके अतिरिक्त ग्र थ के उद्धरणो में रामानुज का नाम कहीं नहीं है जिससे यह प्रकट हो सके कि इसके रचयिता वही हैं। खोज विवरणों में अवतक यह रामरक्षा कइ बार आ चुकी है (दे० खो० वि० सन १९०० इ० स० ७६ खो० वि० सन् १९०९—११ इ० स० २५० ए और दिल्ली विवरण सन् १९३१ के पृष्ठ ८)। कभी यह सुप्रसिद्ध स्वामी रामानद की मानी गइ है और कभी रामानददास का। किंतु रामरक्षा थाड़े से हेर फेर के साथ प्रत्येक दशा में मूलत एक ही ग्रंथ है। उसके रचयिता अलग अलग नहीं समझे जाने चाहिएँ। स्वय रामानद इसके रचयिता हों या न हो, किंतु प्रस्तुत प्रति को छोड़कर अन्य प्रतियों में लिखनेवाला का अभिप्राय प्रसिद्ध रामानद से ही जान पड़ता है। उनके शिष्य कबीर के नाम से भी एक रामरक्षा मिलती है (दे० खो० वि० सन् १९०६—८ स० १७७ एस) जिससे इस बात की पुष्टि होती है। प्रस्तुत रामरक्षा भी रामानंद के नाम से मिलनेवाली रामरक्षा ही है। उसमें रामानद का नाम तक आया है। तुलना के लिये हम सन् १९०३ इ० के खोज विवरण वाली तथा प्रस्तुत रामरक्षा के कुछ अशों को नीचे उद्धृत करते हैं —

(अ) खोज विवरण सन् १९०३ इ० से—

ओं सध्या तारणी, सव दोष निवारणी।
सध्या करे विध्न टरें पिंड प्राण की रक्षा नाथ निरजन करें॥
ज्ञान धन मन पहुपे पचहुताशन। क्षमा जाय समाधि पूजा नमो देव निरजन॥१॥

गर्जत गयन बाजत बेयण शब्दसवद ले त्रिकुटी सार। दास रामानद निजु तत्त्व विचार। निजु तत्त्व तें होते ब्रह्मज्ञानी। श्रीरामरक्षादीय उधरे प्राणी। राजद्वारे पथे घोरे सग्रामे शत्रुसकटे। जायलागा धीर। श्रीरामचद्र उचरेते लक्ष्मणजी सुनते जानकी सुनते। हनुमान सुनते पाप न लिपते। पुन्य ना हरते। सध्याकाले प्रात काले जे नरा पठते सुनते मोक्ष मुक्तफल पावते। इति श्री रामरक्षा रामानंद की॥

(ब) प्रस्तुत खोज विवरण के विवरणपत्र से —

ओ सध्या तारणी सर्व दुःख निवारनि ।
संध्या उचरे विघ्न टरे । पिंड प्राण की रक्षा श्रीनाथ निरंजन करे ॥ १ ॥

ज्ञान **धूप** मन **पहुप** इंद्रिय पचहुतासन । क्षिमाजाप समाधि पूजा नमोदेव निरंजनं ॥ २ ॥

गाजंत गगन बाजत वेनु संख धुनि सब्द त्रिकुटी मार्ग । गुरु रामानंद इनको **चिन्हंते सो ज्ञानि पते रामरक्षा चादिये** उचरंत प्राणी ॥ राजद्वारे पथे घोरे संग्रामे शत्रु **संकटेश्रीरामरक्षास्तोत्रमंत्र** राजारामचंद्र उचरते लक्ष्मणकुमार सुनत **धर्म्मनिहारं ततयो पुण्य लभ्यते । सीता सुनंत** हनुमान सुनत । चौज त्रिकाल जपते सो प्राणी परांगता ॥ इति श्री रामानुजाचार्यकृत श्रीरामरक्षा स्तोत्र सम्पूर्ण ॥

दोनों प्रतियो के पाठभेद मोटे अक्षरों द्वारा दिखाए गए हैं । पिछली विवरण वाली प्रति में जहाँ दोष, करे, पिंग्न, धन, पहुँपे, गर्जंत, गवन आए हैं वहाँ प्रस्तुत प्रति में क्रमशः दुःख, उचरे, पिड, धूप, पहुप, गाजत, गगन आदि शब्द हैं । 'पिंग्न' तो जान पड़ता है 'पिंड' ही है जिसे लिपि की प्राचीनता के कारण विवरण लेनेवाले ने गलती से ऐसा पढ़ा है । कही साधारण मात्रादि का ही भेद है, कहीं शब्दों का भी भेद हो गया है और कहीं-कहीं कुछ अंश घट बढ भी गया है । परतु इतना होने पर भी दोनों ग्रंथ एक दूसरे से अभिन्न ही हैं । रामानंद-संप्रदाय रामानुज के श्री संप्रदाय की एक शाखा है । इसलिये रामानंदियों मे भी रामानुजाचार्य का बड़ा मान है । कभी कभी इनके ग्रंथ 'श्रीमते रामानुजाचार्याय नमः' से आरंभ होते है । सभवतः किसी प्रतिलिपिकर्त्ता ने इसी कारण गलती से रामानुज को ग्रंथकार समझ लिया हो ।

पीतांबर दत्त बड़थ्वाल
निरीक्षक,
खोज-विभाग

प्रथम परिशिष्ट

उपलब्ध हस्तलेखों के रचयिताओं पर टिप्पणियाँ

प्रथम परिशिष्ट

रचयिताओं पर टिप्पणियाँ

१ अब्दुल मजीद—इनका रचा हुआ 'क्लेश भजनी' नामक एक वैद्यक ग्रंथ मिला है। इसकी प्रस्तुत प्रति में न तो रचनाकाल का ही और न लिपिकाल का ही उल्लेख हुआ है। यह इसी विषय के फारसी ग्रंथ 'तोहफतुल गुरबा' का हिंदी अनुवाद है। परंतु इसकी भाषा अव्यवस्थित है। खोज में ग्रंथ प्रथम बार मिला है।

२ आधार मिश्र—इस शोध में इनके बनाये वैद्यक संबंधी चार ग्रंथ (१) धातु मारन निधि, (२) कठिन रोगों की औषधि, (३) वैद्यक विलास तथा (४) तिब्ब सिकन्दरी (मदनुस्सफा) हैं। खोज विवरणिका १९२३–२५ में सं० १ पर यह ग्रंथकार उपरोक्त विषय के अपने एक अन्य ग्रंथ 'वैद्यक योग संग्रह' के साथ उल्लिखित है। प्रस्तुत सभी ग्रंथ शोध में नवीन हैं। पहला ग्रंथ संवत् १८६० (१८०३ ई०) में तीसरा १८९६ (१८३९ ई०) में और चौथा १९०९ (१८५२ ई०) में लिपिबद्ध हुए हैं। दूसरे ग्रंथ का लिपिकाल नहीं दिया है। रचनाकाल चौथे ग्रंथ में पाया जाता है जो सन् ९१६ हिजरी (सन् १६०८ ई०) है। उसमें यह भी लिखा है कि उक्त ग्रंथ किसी चेतसिंह भदौरिया की प्रार्थना पर रचा गया है जिससे पता चलता है कि रचयिता चेतसिंह भदौरिया के आश्रित था। इस ग्रंथ की प्रतिलिपि स्वयं चेतसिंह भदौरिया ने जो रचयिता का आश्रयदाता था सं० १९०९ (१८५२ ई०) में क्वार मास, पूर्णिमा बुधवासर को की। इससे स्पष्ट है कि उपरोक्त रचनाकाल मूल ग्रन्थ का है, प्रस्तुत हिन्दी रचना का नहीं। इसका रचना काल तथा रचयिता और उसके आश्रयदाता का समय उपर्युक्त लिपिकाल संवत् १९०९ (१८५२ ई०) के लगभग होना चाहिये।

३ अग्रदास—ये गलता (जैपुर) गद्दी के अधिकारी थे और सन् १५७५ ई० के लगभग वर्तमान थे। इस बार इनके प्रसिद्ध ग्रंथ 'ध्यान मंजरी' की तीन प्रतियाँ मिली हैं। रचनाकाल इनमें से किसी में नहीं दिया है। लिपिकाल केवल एक प्रति में है जो सं० १९०२ (१८४५ ई०) है। यह पहले मिल चुकी है, देखिये विवरणिकाएँ (१९२०–२२, सं० १, १९२३–२५, सं० ४ १९२६–२८ सं० ४)।

४ अजयराज—इस ग्रंथकार के दो ग्रंथ मिले हैं, एक भाषा सामुद्रिक' और दूसरा 'विजय विवाह'। पहले का विषय उसके नाम से ही प्रकट है। दूसरे में कृष्ण रुक्मिणी के विवाह का वर्णन है। यह बहुत अशुद्ध लिखा है। पहला ग्रंथ संवत् १९२४

(१८६७ ई०) का और दूसरा सं० १८१३=१७५६ ई० का लिखा हुआ है। ग्रथकर्त्ता शोध में नवीन है। रचनाकाल किसी ग्रंथ मे नही दिया हे। ग्रंथो की शैली से ऐसा विदित नही होता कि वे एक की ही रचनाएँ है। पहले ग्रथ के अन्तिम दो दोहों और पुष्पिका द्वारा उसके रचयिता भी संदिग्ध जान पडते हैं।

५ अजीतसिह (मेहता)—इनकी 'शिक्षा-बत्तीसी' और 'विद्या बत्तीसी' नामक दो रचनाओ के विवरण लिये गये है। पहली रचना की दो प्रतियाँ मिली हैं जिनमें से एक में लिपिकाल सवत् १९२७ (१८७० ई०) ह। रचनाकाल दोनों का सवत् १९१८ (१८६१ ई०) है। रचयिता जैसलमेर के रावल रणजीतसिंह के दीवान और वल्लभ सम्प्रदाय के वैष्णव थे। खोज में ये नये मिले हैं।

६ अक्रूरपुरी—इनके रचे 'ब्रह्मपिंड' नामक ग्रंथ के विवरण लिये गये हैं जिसमें हित हरिवंश जी की 'चौरासी' के दस पद और कुछ मत्र संगृहीत हैं। रचनाकाल एव लिपिकाल ग्रथ की प्रस्तुत प्रति में नही दिये हे। इसके अनुसार रचयिता काशी के कोई गुसाईं विदित होते हैं। खोज में ये नवीन है।

७ अक्षर अनन्य—ये पिछली खोज विवरणिकाओं में उल्लिखित है, देखिए विवरणिकाएँ (१९२०–२२, स० ४; १९२३–१९२५ स० ७)। इस बार इनके पाँच ग्रंथो की ६ प्रतियाँ खोज में मिली है। रचनाकाल किसी ग्रथ में नहीं दिया है। इनका ब्यौरा इस प्रकार है:—

(१) राजयोग—३ प्रतियाँ, लिपिकाल सं० १९१७ (१८६० ई०) दूसरी का सं० १९४७ (१८९० ई०) और तीसरी का स० १९२७ (१८७० ई०)।

(२) अनुभव तरग - १ प्रति, लिपिकाल सं० १८२० (१७६३ ई०)।

(३) ज्ञानयोग सिद्धान्त—१ प्रति, लिपिकाल नहीं दिया है।

(४) प्रेम दीपिका - ३ प्रतियाँ, लि० का० प्रथम दो का क्रमश: स० १८४६ (१७८९ ई०) और १८७० वि० (१८१३ ई०) हैं।

(५) दुर्गापाठ—१ प्रति, लिपिकाल १८७० वि० (१८१३ ई०)। संख्या ३ और ५ के ग्रंथ खोज में नये मिले है। रचयिता संवत् १७१० के लगभग वर्तमान थे।

८ आलम—प्रस्तुत खोज में इस कवि का रचा हुआ "माधवानलकाम कन्दला" नामक ग्रथ मिला है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल नही दिया है, पर इसका विवरण पहले लिया जा चुका है, देखिए विवरणिकाये (१९०४, सं० ९, १९२३–२५, स० ८) जिनके अनुसार रचना काल हिजरी सन् ९९१ (१५८३ ई०) है।

रचयिता प्रसिद्ध कवि आलम (शेख के प्रेमी) से भिन्न प्रतीत होते है। माधवानल की निवासभूमि पुष्पावती नगरी को आजकल कटनी से ९ मील दूर बिलहरी बतलाते है जहाँ उसने कामकदला को कामसेन के पास ले लाकर अपना जीवन बिताया था।

यहाँ से २ मील पर एक महादेव का मदिर है जो काम कंदला नाम से प्रसिद्ध है।

धामसैन राजा का नगर डूंगरगढ़ बतलाया जाता है जो आजकल गैरावाद राज्य में है।

९ अमरदास—इनकी रची 'भक्त विरुदावली' नामक रचना की दो प्रतियाँ मिली हैं। इनमें से एक में न तो रचनाकाल ही दिया है और न लिपिकाल ही। दूसरी प्रति में रचनाकाल सं० १७५२ (१६९५ ई०) और लिपिकाल सं० १७६४ (१७०७ ई०) दिये हैं। प्रस्तुत रचना का उल्लेख पिछली खोज विवरणिका (१९०६–८, सं० १२३) में हो चुका है।

१० अमरसिंह—इनका प्रस्तुत ग्रंथ 'अमर विनोद' पिछली खोज में मिल चुका है, देखिये विवरणिका (१९२३–२५, सं० १०)। इसबार इसकी तीन प्रतियाँ मिली हैं जिनमें लिपिकाल क्रमश: सं० १८६० (१८०३ ई०), १९०९ (१८५२ ई०) और सं० १९१९ (१८६२ ई०) हैं। रचनाकाल किसी में नहीं दिया है।

११ आनंद कवि—इस ग्रंथकार की रची हुई प्रसिद्ध पुस्तक 'कोकसार' या 'कोक मंजरी' अथवा 'आसन मंजरी' की सात प्रतियाँ मिली हैं।

सबसे प्राचीन प्रति संवत् १८१० वि० (१७५३ ई०) की लिखी हुई है। 'कोक मंजरी' की दो प्रतियाँ, 'कोकसार' की चार प्रतियाँ और 'आसन मंजरी' की एक प्रति है। अन्तिम नाम नवीन है। इस ग्रंथ की इतनी अधिक प्रतियाँ हुई हैं कि एक ही ग्रंथ होते हुए भी उसकी विभिन्न प्रतियों में अनेक पाठभेद हो गए हैं जिससे उनके अलग अलग ग्रंथ होने का भ्रम उत्पन्न होता है। यह पहले कई बार विवरण में आ चुकी है।

देखिये विवरणिका (१९२०–२२, सं० ६)।

१२ आनंदराम—इस कवि के 'गीता, के अनुवाद की १० प्रतियाँ प्रस्तुत शोध में प्राप्त हुई हैं। एक प्रति में रचनाकाल सं० १७६१ दिया है। सब से पुरानी प्रति का लि० का० सं० १८१७ (१७६० ई०) है। यह ग्रंथ पहले कई बार मिल चुका है, देखिये विवरणिकाएँ (१९०१, सं० ८४, १९०६–८ ई०, सं० १२७, १९१२–१४ ई० सं० ५, १९१७–१९, सं० ६)। उक्त विवरणिकाओं की कुछ प्रतियों में रचयिता का नाम हरिवल्लभ दिया है, परन्तु इस बार किसी में भी यह नाम नहीं मिलता।

१३ आनंदी—इनका एक ग्रंथ 'गीत संग्रह' (अनुमान से) प्राप्त हुआ है, जिसके रचनाकाल तथा लिपिकाल दोनों अज्ञात हैं। इसमें साहित्य और संगीत दोनों का समन्वय है। विषय भक्ति और उपदेश है। ग्रंथकार शोध में नवीन है।

१४ आनंद सिद्धि—अंजन निदान नाम से इनका एक वैद्यक ग्रंथ उपलब्ध हुआ है जो इस नाम के मूल संस्कृत ग्रंथ का अनुवाद जान पड़ता है। रचनाकाल नहीं दिया है। लिपिकाल सं० १८८५ (१८२८ ई०) है। अनुवाद प्राय गद्य में है। परंतु कहीं कहीं सवैया तथा छप्पय का भी व्यवहार हुआ है। "इससे पहले इस ग्रंथ का संग्रह (संगठन) किन्हीं दयाचार्य ने किया था" ऐसा इस ग्रंथ के अंत में लिखा है। प्रमाण के

लिये लोलिम राज, हंसराज तथा हेमराज के मतों को भी उद्धृत किया है। रचयिता शोध में नवीन है।

१५ अनाथदास—इनके बनाये 'विचारमाल' की ७ प्रतियाँ और 'सर्वसार' की एक प्रति प्राप्त हुई है। दोनो ही ग्रंथो का रचनाकाल संवत् १७२६ (१६६९ ई०) है। 'विचार माल' की सबसे पुरानी प्रति सं० १९०० (१८४३ ई०) की लिखी है और एक स० १९१८ (१८६१ई० ,की। शेष चार सं० लि० का० नहीं दिया है। 'सर्वसार' की प्रति संवत् १९३१ (१८७४ ई०) की लिपिबद्ध है। दोनों ग्रंथ पहले कई बार मिल चुके हैं। देखिये विवरणिकाएँ (१९०६–८, स० १२६ बी; १९०९–११, सं० ७. १९२०–२२, सं० ८)। सन् १९०९–११ की त्रैवार्षिक विवरणिका में "सर्वसार" के रचयिता को विचार माल के रचयिता से भिन्न माना है जिसका आधार अनाथदास की अशुद्ध जन्मतिथि देना है। 'सर्वसार', 'प्रबोध चन्द्रोदय' का दूसरा नाम है जो पहले विवरण में आ चुका है। इस प्रकार दोनो ग्रंथो के रचयिता एक ही हैं।

१६ अर्जुनदेव—गत विवरणिकाओं में नानक को भूल से सुखमनि का रचयिता मान लिया गया है। परंतु वह वास्तव में गुरु अर्जुनदेव = (१५८१–१६०६ ई०) की रचना है जो पाँचवें गुरु थे। सभी सिख गुरुओं को स्वरूप से एक ही माना जाता है। अतः यही कारण है कि अधिकांश रचनाओं में उनका उपनाम 'नानक', भी मिलता है। ,सुखमनि के संबंध में यही बात है। इस बार भी इसकी एक प्रति मिली है जिसमें कोई मिति नहीं दी हुई है। विगत विवरणिकाओं (१९०९–११, सं० २०७, १९२३–२५, सं० २९३) में यह उल्लिखित है।

१७ अरुभद्र—इनका बनाया 'कोक सामुद्रिक' मिला है जिसका रचनाकाल स० १६७८ (१६२१ ई०) है। इसमें इन्होंने जहाँगीर बादशाह का उल्लेख किया है, जिसके राजत्व काल में इसकी रचना हुई।

१८ असगर हुसेन—इनका बनाया हुआ 'यूनानी सार' नामक वैद्यक ग्रंथ प्राप्त हुआ है जिसका रचनाकाल संवत् १९३२ (१८७५ ई०) और लिपिकाल संवत् १९४४ (१८८७ ई०) है। ये फर्रुखाबाद के रहनेवाले थे।

कुछ दिन पहले जिस हिन्दुस्तानी भाषा का आन्दोलन उठा था और जो राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ने अपने ग्रंथो में लिखी है, उसी में प्रस्तुत ग्रंथ भी लिखा गया है। परन्तु भाषा इसकी परिमार्जित है। इसमें संस्कृत, फारसी एवं अर्बी के प्राय. बोल चाल के शब्दों का व्यवहार स्वतंत्रता से किया गया है। यह यूनानी ग्रंथो से उलथा होकर ही इस रूप में आया है। रचयिता खोज में नवीन है।

१९ बादेराय—इस ग्रंथकार का पता पहली बार लगा है। इन्होंने गदर (सन् १८५७) के दिनो में रामायण की रचना की जिसके विवरण इस बार लिये गये है। ये तिलोई राज्य के दीवान थे। पिता का नाम रामगुलाम बतलाते है। यद्यपि इन्हो ने अपनी जाति पाँति का पता स्वयं कुछ नहीं दिया है तथापि लिपिकर्ता ने इन्हें 'लाला बादेराया'

लिखा है, जिससे प्रतीत होता है कि ये कायस्थ थे। लिपिकर्त्ता का यह भी कथन है कि ये रहनेवाले तो तिलोइ रियासत के थे, किन्तु दुर्भिक्ष से जफरपुर चले गये थे। वहीं यह पोथी पाँच दिन में लिखी गयी थी। पोथी लिखने का स्थान जफरपुर परगना देवा, जिला बाराबकी (अवध) है। इसकी प्रस्तुत प्रति फारसी लिपि में है।

७० बैजनाथ कूर्मी—ये मानपुर डेहवा जिला बाराबकी के रहने वाले थे और तुलसी के विशेषज्ञों में गिने जाते हैं।

इन्हों ने तुलसी के प्राय सभी ग्रंथों पर टीकाएँ रची हैं। इनकी लिखी रामायण की टीका प्रामाणिक मानी जाती है। प्रस्तुत विवरणिका में इनका 'काव्य कल्पद्रुम' नामक ग्रंथ आया है जिसका रचनाकाल सं० १९३५ (१८७८ ई०) और लि० का० सं० १९४७ (१८९० ई०) है। विषय इसका पिंगल है और यह बोपदेव कृत इस नाम के संस्कृत ग्रंथ का पद्यानुवाद है। रचना काल में सूक्ष्म से सूक्ष्म समय का भी निर्देश किया गया है जिससे पता चलता है कि ये ज्योतिषी भी थे।

७१ बकसकवि—इनके 'भागवत दशम स्कन्ध' के पद्यात्मक अनुवाद की दो प्रतियाँ इस शोध में मिली हैं। रचनाकाल किसी प्रति में भी नहीं है। लिपिकाल दोनों में संवत् १८८६ (१८२९ ई०) दिया है। ग्रंथकार शोध में नवीन है।

७२ बलबीर—इनके रचे हुए 'रस सागर' या 'दंपति विलास' की दो प्रतियाँ तथा 'उपमालंकार' (नखशिख) की एक प्रति इस शोध में प्राप्त हुई है। पहला ग्रंथ सं० १७५९ (१७०२ ई०) का रचा हुआ है। इसकी प्राप्त प्रतियों में लिपिकाल क्रमश १८५६ (१७९९ ई०) और सं० १८८० (१८२३ ई०) है। दूसरे ग्रंथ में रचनाकाल नहीं दिया है। वह सं० १८५६ (१७९९ ई०) का लिखा हुआ है। प्रथम ग्रंथ पिछली खोज विवरणिका (१९०२ सं० २७,२८) पर उल्लिखित है। रचयिता हिम्मत खां के आश्रित कन्नौज के अधिवासी और द्विवेदी (कान्यकुब्ज) ब्राह्मण थे। रचनाकाल का पद्य इस प्रकार है —

> पहचान मुनि रवि रथ-चकै। संवत् नाम लोक तिथि यकै।
> माधव सुकुल पक्ष लिपुरा में। अदित वार प्रगट किय नामैं॥

७३ बलभद्र—ये सुप्रसिद्ध महाकवि केशव के भाई थे और अपने 'नखशिख' ग्रंथ के साथ पिछली कई विवरणिकाओं में आ चुके हैं, दखिये विवरणिकाएं (१९००, सं० १११, १९०२, सं० ४५ १९०९-११, सं० १५, १९१२-१४, सं० ९, १९२३ २५, सं० २८)। इस ग्रंथ की एक प्रति के विवरण इस बार भी लिये गये हैं जिसमें रचनाकाल और लिपिकाल आदि का कोई उल्लेख नहीं मिलता। रचयिता का समय संवत् १६४१ (सन् १५८४) के लगभग है।

७४ बालदास—इनके बनाये हुए दो ग्रंथ 'मैनगो' (मयन गो) तथा 'अहोरवा अष्टक' प्राप्त हुए हैं। रचनाकाल किसी ग्रंथ की प्रति में नहीं दिया है। कहा जाता है कि ये सं० १८८५ (१८२८ ई०) के लगभग रची गयी थी, पर इस कथन की प्रामाणिकता

फिर भी अपेक्षित है। ग्रंथों का लि० काल बहुत नया है। एक प्रति संवत् १९८० (१९२३ ई०) की लिखी हुई है और दूसरी सं० १९४० (१८८३ ई०) की। रचयिता खोज में नवीन है। इनका निवास स्थान जैनगरा (जिला रायबरेली) है। जाति के ये कान्यकुब्ज त्रिपाठी ब्राह्मण थे तथा पिता का नाम चिरंजीवप्रसाद था। इनके रचे ८१ ग्रंथ बतलाये जाते हैं।

२५ बलदेवदास—ये ग्रंथकार शोध में नवीन हैं। इनका रचा हुआ 'जानकी विजय' नामक ग्रथ मिला है जिसका र० का० स० १८९१ (१८३४ ई०) और लि० का० सं० १९३५ (१८७८ ई०) है। ये जाति के श्रीवास्तव कायस्थ थे और इनके पिता का नाम दीनदयाल था। जिला फतेहपुर के कल्याणपुर परगने में स्थित दौलतपुर ग्राम के निवासी छीतूदास इनके मंत्र गुरु थे।

२६ बालकृष्ण—इनका बनाया हुआ 'भागवत एकादश स्कन्ध' का पद्यानुवाद मिला है जिसका रचनाकाल सं० १८०४ (१७४७ ई०) और लिपि काल स० १८८० (१८२३ ई०) है। शोध में ये नवीन हैं। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति बहुत अशुद्ध लिखी है।

२७ बालमुकुन्द—'बारहमासा' नामक इनकी एक रचना के विवरण लिये गये हैं जिसमें रचनाकाल तो नही दिया है पर लि० का० स० १९२६ (१८६९ ई०) है। इस नाम के कई रचयिता विगत विवरणिकाओं में उल्लिखित है पर नहीं कहा जा सकता कि उनमें से ये कोई एक हैं या नहीं।

२८ बालमुकुन्द—खोज में इनका पता पहली बार लगा है। इनका बनाया हुआ 'निघन्ट भाषा', नामक एक वैद्यक ग्र थ मिला है। जिसमें रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही है। ये जगनेर (आगरा) के रहनेवाले थे। इससे अधिक इनके संबंध में कुछ ज्ञात नही।

२९ बंशीधर—इनके बनाये हुए पाँच ग्रंथो की १२ प्रतियाँ इस शोध में हस्तगत हुई हैं। ये चिंता खेडा (राय बरेली)के निवासी थे और पश्चिम देशीय (पश्चात् सयुक्त प्रदेश, अब उत्तर प्रदेश) शिक्षा विभाग मे पाठ्य-पुस्तकें तैयार करने के कार्य पर नियुक्त थे। इनकी प्रस्तुत पुस्तकें उक्त शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित की गयी थी और वे न केवल उस प्रदेश की हिन्दी पाठशालाओ में ही वरन मध्य प्रान्त की पाठशालाओं में भी पढ़ाई जाती थी। ये उर्दू भी जानते थे और उसमें भी पाठ्य पुस्तकें लिखते थे। पीछे ये आगरा के नार्मल-स्कूल में दूसरे अध्यापक के पद पर नियुक्त हुए जहां इन्होंने संवत् १९३१ में 'अंजन निदान' की रचना की।

ग्रथो का विवरण इस प्रकार है:—

(१) अंजन निदान की ४ प्रतियाँ रचना काल संवत् १९३१, सबसे प्राचीन प्रति का लि० का० स० १९३२ (१८७५ ई०) है।

(२) भारतवर्ष का इतिहास २ ,, सब से प्राचीन प्रति का लि० का० सं० १९११ = १८५४ ई०।

(३) भाषा चन्द्रोदय	१ ,,	,,	,,	१९११ = १८५४ ई०।
(४) सूर्य वंशी राजा	३ ,,	,,	,,	१९११ = १८५४ ई०।
(५) भोज प्रबध सार	२ ,,	,,	,,	१९१२ = १८५५ ई०।

३० वासुदेव सनाढ्य—खोज में इनका पता पहली बार लगा है। इनके रचे सात ग्रंथों की ८ प्रतियां इस शोध में प्राप्त हुई हैं। ये रामानुज सप्रदाय के वैष्णव गुधेनिया अल्ल के सनाढ्य ब्राह्मण और वाह (आगरा) के निवासी थे। ये उद्भट टीकाकार, साहित्य, वेदान्त, ज्योतिष, रमल वैद्यक तथा सामुद्रिक आदि अनेक विषयों के अच्छे पडित थे। सस्कृत और हिन्दी दोनों ही भाषाओं पर इनका पूर्ण अधिकार था। इनके ग्रंथों की भाषा वैसी ही है जसी कथावाचक पडितों की प्राय हुआ करती है। इनके भ्राता भगवानदास सनाढ्य और चचेरे भाई बिहारी लाल अच्छे ग्रंथकार और वैद्य थे। ये भी इस विवरणिका में उल्लिखित हैं, देखिये सख्या ३७ और ५४। इनके ग्र थ जिस सवत् में रचे गये हैं प्राय उसी में इनके द्वारा लिपि भी गये हैं। दो एक ग्रथों में इन्हों ने अपना नाम नहीं भी दिया है और दो एक में अधूरे होने के कारण अपने रचयिता होने के विषय में मौन हैं। परन्तु उनकी शैली ही उनके रचयिता होने का साक्ष्य है। उन्हों ने अपनी अल्लका परिचय इस प्रकार दिया है—

भारद्वाज गोत्र के भारद्वाज अगरिसि बाहस्पत्य तीनिप्रवर सामवेद जानिये।
नारायणी साखा सात्यायन सूत्र जिनको प्रथम ही सनाढ्य वेद मध्य मानिये॥
जिनके त्रैलोक्यनाथ आवुन चरन पूजे तिनके समतुल्य विप्र और को न मानिये।
जा दिन श्रीकृष्ण चन्द्र पूजी गिरिराज तबै पूजे जे विप्र ते गुधेनिया बखानिये॥

ग्रथों का ब्योरा निम्नलिखित है —

(१) सत्यनारायण व्रत कथा की टीका	१ प्रति	र० का०	स०	१८९९ (१८४२ ई०), लि०का० वही
(२) अध्यात्म गर्भसार स्तोत्र	,,	१ ,,	×	१८९४ (१८४७ ई०)
(३) मुहूर्त सचय	,,	२ ,,	×	×
(४) भगवत् गीता	,,	१ ,,	×	×
(५) आलमन्दार स्तोत्र	,,	१ ,,	×	१९०९ (१८५२ ई०)
(६) एकादशी महात्म्य	,,	१ ,,	×	×
(७) रामाश्वमेध की टीका	,,	१ ,	×	×

इनका वृहद् पुस्तक भडार जिसमें सस्कृत तथा हिन्दी आदि के अनेक ग्रथ सुरक्षित , इनके प्रपौत्र प० लक्ष्मीनारायण जा वैद्य के पास हैं।

३१ वेनीप्रसाद 'बेन'—इनके द्वारा रचे 'लोलम राज' नामक सस्कृत वैद्यक ग्रथ के अनुवाद की दो प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं। ग्रथ का रचनाकाल स० १८९९ (१८४२ई०) है। लिपि-काल केवल एक प्रति में स० १९२२ (१८६५ ई०) दिया है। रचनाकाल का दोहा इस प्रकार है:—

"सवत् रस[९] रस[९] वसु[८] ससी,[१] मारग पूरन मास।
बेन वैद्य जीवन रच्यो, भाषा सुमति विलास॥"

इससे ज्ञात होता है कि ग्रथ का दूसरा नाम "वैद्य जीवन" भी है। संभवतः रचयिता भिड (गवालियर) के रहने वाले थे जिन्हो ने शालिहोत्र भी लिखा है, देखिये विवरणिका (१९०६-८, सं० १३५)।

३२ भद्रनाथ—इनका रचा हुआ "छन्दशिरोमणि" नामक पिङ्गल-ग्रथ मिला है जिसमें रचनाकाल सं० १८८० (१८२३ ई०) दिया है और लिपिकाल स० १८९० (१८३३ ई०)।

ये दीक्षित ब्राह्मण थे और इनका निवास-स्थान विल्हौर (जिला, कानपुर) था। खोज मे ये नवीन हैं।

३३ भागचंद्र—इनका रचा हुआ 'श्रावकाचार' ग्रंथ का विवरण लिया गया है जो अमित गति रचित मूल संस्कृत ग्रथ का अनुवाद है। इसमें जैन धर्मानुसार आचार विचार का उपदेश किया गया है। रचना काल स० १९१ (१८५५ ई०) है। लिपिकाल का उल्लेख नही। रचयिता गवालियर निवासी ओसवाल जैन थे। इन्होंने प्रमाण परीक्षा, नेमिनाथ पुराण तथा ज्ञान सूर्योदय नाटक आदि कई ग्रंथ रचे हैं। खोज में ये नवीन है।

३४ भगवान—इनके बनाये 'गुरु गैवीग्रंथ' तथा 'तमाँचा' नामक दो ग्रथ शोध में मिले है। पहले ग्रंथ में 'हनुमान की विनय और दूसरे में उनकी महत्ता का वर्णन है। रचयिता अजबदास जी के शिष्य थे। अन्य परिचय नहीं दिया है। ग्रथों का रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

३५ भगवानदास—इनकी रची गीता की गद्यात्मक टीका "गीतावार्तिक" नाम से मिली है। इसकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल संवत् १९१३-१८५६ ई० है। ग्रंथ शोध में पहले प्राप्त हो चुका है, देखिये विवरणिका (१९००, स०६९)। उसके अनुसार ग्रंथ का रचनाकाल सं० १७५६ (१६९९ ई०) है।

३६ भगवानदास निरंजनी—अब की बार इनके रचे 'कार्तिक महात्म्य' की २ प्रतियो और 'अमृत धारा' की एक प्रति के विवरण लिये गये हैं। पहला ग्रंथ सं० १७४२ (१६८५ ई०) का और दूसरा, सवत् १७२८ (१६७१ ई०) का रचा हुआ है। पहले की एक प्रति सं० १९०६ (१८४९ ई०) में और दूसरी सं० १९२६ (१८६९ ई०) में लिखी गयी। तीसरी प्रति में लिपिकाल नही दिया है। दूसरे ग्रथ की प्रति में भी लिखने का समय नही है। यह ग्रथ पहले मिल चुका है, देखिये विवरणिका (१९०६-८ सं० १३६)।

३७ भगवानदास सनाढ्य—इनके रचे हुए "शीघ्रबोध की टीका" की दो प्रतियाँ मिली हैं जिनमे से केवल एक में लि० का० स० १८८५ (१८२८ ई०) दिया है। रचनाकाल अज्ञात है। परंतु उक्त लिपिकाल वाली प्रति स्वय टीकाकार की लेखनी से लिखी गयी है इसलिये रचनाकाल भी प्रायः लिपिकाल के लगभग ही होगा। रचयिता वासुदेव सनाढ्य (इस विवरणिका के स० ३०) के भाई थे और कई विषयो के अच्छे पण्डित थे। जाति के गुधैनिया सनाढ्य ब्राह्मण तथा बाह (आगरा) के निवासी थे। इनकी शैली से

ज्ञात होता है कि इनके भंडार में सुरक्षित वे टीका ग्रंथ जिनमें रचयिताओं का नाम नहीं, अधिकांश इनकी रचनाएँ हैं, (दे० टिप्प०, सं० ३०) । ये खोज में नवीन हैं ।

३८ विप्रभगवती दास—इनकी रची हुई 'पोथी नासकेतु' मिली है जिसमें रचनाकाल सं० १६८८ (१६३१ ई०) और लि० का० सं० १९१६ (१८५९ ई० दिये हुए हैं । खोज में ये नवीन हैं । रचनाकाल का दोहा इस प्रकार है —

सवत् सोरह सै अट्ठासी । जेठ मास द्वितीया परकासी ॥
शुक्ल पक्ष औ सोम क वारा । मृगसिर नखत कीन्ह उपचारा ॥

३९ भारामल्ल—इनके बनाये 'दर्शन कथा' और 'मुक्तावली वृत्त कथा' दो ग्रंथ मिले हैं । 'मुक्तावली वृत्तकथा ग्रंथ' सं० १८३२ (१७७५ ई०) का रचा और सं० १८५५ (१७९८ ई०) का लिखा है । 'दर्शन कथा' का रचनाकाल नहीं दिया है, पर वह सं० १९३६ (१८७९ ई०) का लिखा हुआ है । दोनों ही ग्रंथ जैन धर्म विषयक हैं । रचयिता 'निशि भोजन कथा' और 'शीलकथा' नामक दो ग्रंथ थो ये साथ पहले विवरण में आ चुके हैं, देखिये विवरणिका (१९२३ २५, सं० ५१) । ये फरुखाबाद के रहनेवाले थे ।

४० भट्टाचार्य—इनके रचे 'जुगलसत' और 'वाणी' इस बार विवरण में आये हैं । इनकी प्रस्तुत प्रति में समय सं० १९११ दिया है । परंतु ये रचनाएँ पूर्व विवरणिकाओं में आ चुकी हैं, देखिए विवरणिकाएँ (१९००, सं ३६ ११०६ ८, सं० २३७ सं १९०९–११, सं० २९९) जिनमें सब से प्राचीन प्रति का लिपिकाल, संवत् १८४३ (१७८६ ई०) है । ऐसी दशा में उपरोक्त समय रचनाकाल न होकर लिपिकाल विदित होता है ।

४१ भाऊ कवि—इनकी रची एक रचना 'आदित्य कथा' नाम से मिली है । जिसमें रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिये हैं । यह पहले मिल चुकी है, देखिये विवरणिकाएँ (१९००, सं० ११४) जिसमें इसका र० का० सं० १६७८ (१६२१ ई०) दिया है ।

४२ भवानी प्रसाद—इनका रचा सटीक गोपाल सहस्रनाम ग्रंथ इस शोध में प्राप्त हुआ है । ये शोध में नवीन हैं । ग्रंथ द्वारा इनके और ग्रंथ के विषय में कुछ भी विदित नहीं होता । परंतु पूछ ताछ करने से पता चला कि ये जाति के ब्राह्मण और नौपुरा (सदर तहसील आगरा) के निवासी थे । प्रस्तुत ग्रंथ इन्होंने संवत् १९२१ में रचा ।

४३ भेदीराम—इनके बनाये दो ग्रंथों "चक्रेश्वरी" और "सालिगा सदा वृक्ष" के विवरण लिये गये हैं । रचनाकाल दोनों ग्रंथों के अज्ञात हैं । पहला ग्रंथ सं० १९१६ (१८५९ ई०) में और दूसरा सं० १९३० (१८७३ ई०) में लिखा गया । रचयिता आगरा के रहनेवाले थे । अन्य वृत्त अनुपलब्ध है । पहला ग्रंथ ज्योतिष विषय से संबंध रखता है और दूसरे में एक रोचक कहानी है जो ग्रामों में अधिक प्रचलित है ।

४४ भिखारी दास—ट्योंगा (प्रतापगढ़ अवध) निवासी ये हिंदी के बहुत प्रसिद्ध कवि हैं । पिछली कई विवरणिकाओं में इनका उल्लेख हो चुका है, देखिये विवरणिकाएँ (१९२०–२२, सं० १७, १९२३–२५, सं० ५५) । इसबार इनका रचा सुप्रसिद्ध

रीतिग्रंथ "काव्य निर्णय" मिला है जिसकी प्रस्तुत प्रति में र० का० स० १८०३ (१७४६ ई०) और लि० का० स० १८९९ (१८४२ ई०) दिये हैं।

४५ भीषजन—इनका बनाया 'सर्वज्ञ वापनी' नामक ग्रंथ इस शोध में प्राप्त हुआ है जिसका र० का० सं० १६८३ (१६२६ ई०) और लि० का० सं० १८९६ (१८३९ ई०) है। ग्रंथ का र० का० इस प्रकार है:—

"सवत् सोलह सै वर्ष जब हुते तियासी।
पौषमास पष सेत हेत दिन पूरन मासी॥
सुभ नक्षत्र गुन कह्यो धरयो अक्षर जो आरिज।
कथ्यौ भीषजन साति जाति द्विज कुल आचारज॥"

इसमें ससार की अस्थिरता और ईश्वर की सत्ता का विवेचन किया गया है। रचयिता का पता प्रथम बार लगा है।

४६ भीष्म—इनके बनाये भागवत के तीन स्कन्ध (प्रथम और दशम) के विवरण लिये गये है जिनमें से पहले की दो और दशम की चार प्रतियां है। रचनाकाल किसी प्रति में नही दिया है। लिपिकाल प्रथम स्कन्ध की एक प्रति में सं० १८९२ (१८३५ ई०) और दूसरी में सं० १९००(१८४३ ई०) है। दशम की एक प्रति सं० १८९५ (१९३८ ई०) की दूसरी सवत् १८९८ (१८४१ ई०) की और तीसरी सं० १९१८ (१८६१ ई०) की लिखी है। चौथी में लि० का० नहीं दिया हैं। ये ग्रथ पिछली एक विवरणिका में आ चुके है, देखिये विवरणिका (१९१७-१९, स० २५)। 'विनोद' में इनका र० का० सं० १७२० (१६५३ ई०) लिखा है।

४७ भोलानाथ—प्रस्तुत खोज में इनके बनाये ९ ग्रंथो का पता चला है—(१) शिव पार्वती संवाद, (२) जोगीलीला लि० का० सं० १९३२ (१८७५ ई०), (३), राधाकृष्ण लीला लि० का० स० १९३५ (१८७८ ई०), (४) बारहमासा विरह (लि० का० स० १९३२ = १८७५ ई०), (५) पथरीगढ की लडाई (र० का० सन् १८५० ई० लि० का० १८५६ ई०)। (६) बारहमासा कृष्ण जी (लि० का० स० १९३२ = १८७५ ई०), (७) शिवस्तुति (लि० का० १९३२ = १८७५ ई०), (८) ख्यालसंग्रह (लि० का० सं० १९३२ = १८७५ ई०) और (९) बारहमासा लावनी (लि० का० सं० १९३६ = १८७९ ई०)। ऊपर की सूची से पता चलता है कि केवल संख्या ५ में ही रचनाकाल दिया है जो स० १९०७ है। अतएव इसी संवत् के इधर उधर इनकी सब रचनाएं होगी। रचयिता जहानगंज फतेहगढ (फर्रुखाबाद) के निवासी और जाति के श्रीवास्तव कायस्थ थे। गणेशप्रसाद फर्रुखाबादी के समकालीन थे। खोज में ये नवीन है।

४८ भूधरदास—इनका रचा 'सुदामा चरित्र' प्राप्त हुआ है जिसकी प्रस्तुत प्रति में र० का० तो नही दिया है पर लिपिकाल स० १८३९ = १७८२ ई० है। रचयिता का अन्य कोई विवरण नही मिलता। ग्रंथ की प्राप्त प्रति बहुत अशुद्ध लिखी है।

४९ भूधरदास—इनके बनाये 'भूधर विलास' 'चर्चासमाधान' तथा 'पार्श्व पुराण' नामक तीन ग्रथ प्राप्त हुए हैं। इनमें से केवल पार्श्व पुराण में ही रचनाकाल दिया है जो स० १७८९ वि० (१७३२ ई०) है, परतु इसकी प्रति में लिपिकाल नहीं है। शेष दो ग्रथों में से पहले ग्रथ की प्रति में लिपिकाल स० १९३४ (१८७७ ई०) और दूसरे ग्रथ की प्रति में स० १९०४ (१८४७ ई०) दिये हैं। रचयिता 'जैन शतक' ग्रथ के साथ पिछली खोज विवरणिका (१९२३–२५, स० ७८) में उल्लिखित है।

५० भुल्लन शेख—इन्होंने "महाराज भरतपुर और लाट साहब का मिलाप' नाम से एक छोटा ग्रथ स० १८७६ वि० (१८१९ ई०) में ब्रजभाषा मिश्रित खड़ी बोली में लिखा। उस समय महाराजा रणधीरसिंह भरतपुर की गद्दी पर थे। इसमें सन्देह नहीं कि रचना अपने ढग की नवीन और एकाकी है। इसमें नगर की सजावट और प्रकाश का बड़ा भव्य वर्णन किया गया है।

५१ भूप या भूपति—इनके रचे 'वेद स्तुति' नाम के एक छोटे से ग्रथ का पता लगा है। इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं, पर रचनाकाल किसी में नहीं दिया है। लिपिकाल केवल एक प्रति में स० १९३१ (१८७४ ई०) है। रचयिता के विषय में अधिक कुछ नहीं ज्ञात होता परतु ये इटावा वाले भूपति कवि ही हैं जो सवत् १७४४ (१६८७ ई० में वर्तमान थे, देखिये विवरणिकाएँ (१९२३–२५, स० ११५ आदि)। दोनों की भाषा और शैली समान है।

५२ विहारनदास—इनकी 'विहारन दास की वाणी' नाम से एक रचना का विवरण लिया गया है जिसकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिये हैं। ये इस ग्रथ के साथ पहले मिल चुके हैं। देखिये विवरणिकाएँ (१९०५, स० ६१, १९१७–१९ स० ३१, १९२३–२५, स० ६४) इनका रचनाकाल सवत् १६३० (सन् १५७३) के लगभग है।

५३ महाकवि विहारीदास—इनकी प्रसिद्ध रचना 'सतसई' की तीन प्रतियाँ इस खोज में प्राप्त हुई हैं, पर ये तीनों ही खडित हैं। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल केवल एक प्रति में है जो सवत् १७६२ (१७०५ ई०) है। इनका उल्लेख पिछली कई विवरणिकाओं में हो चुका है देखिये विवरणिकाएँ (१९२०–२२ स० २०, २३–२५, स० ६२) आदि। ये नवरत्नों में गिने जाते हैं।

५४ विहारीलाल सनाढ्य—वैद्यक विषयक इनकी एक रचना 'रस प्रक्रिया' नाम से मिली है। इसकी प्रस्तुत प्रति में र० का० नहीं दिया है। लिपिकाल स० १८०२ है। रचयिता बाह (आगरा) के रहनेवाले गुधेनिया अल्ल के सनाढ्य ब्राह्मण थे। हिन्दी सस्कृत के ये उद्भट विद्वान रहे।

ये इस विवरणिका में आये वासुदेव सनाढ्य और भगवानदास सनाढ्य के समकालीन थे। इनके ग्रथ की प्रस्तुत प्रति का लिपिकाल अशुद्ध जान पड़ता है, क्योंकि इनकी विधवा पत्नी अभी तक जीवित हैं। अत यह स० १९०२ होना चाहिये।

५५ बोधीदास—इनके रचे हुए 'भक्ति विवेक' नामक ग्रथ की दो प्रतियाँ इस खोज मे प्राप्त हुई है जिनमें से एक संवत् १९३० (१८७३ ई०) की और दूसरी संवत् १९३६ (१८७९ ई०) की लिखी हुई है। रचनाकाल किसी मे नही दिया है। रचयिता के विषय मे अधिक कुछ ज्ञात नही होता। ये मिश्र बन्धु विनोद के सं० $\frac{२४१४}{२}$ पर उल्लिखित है उसमे खोज की चतुर्थ त्रैवार्षिक रिपोर्ट का उल्लेख दिया गया है, पर उससे न तो इनका ही उल्लेख है और न इनके ग्रथ का।

५६ ब्रह्मदास—इनके नाम से 'मंत्रो' के एक ग्रथ का पता लगा है। जिसमे न तो रचनाकाल और लिपिकाल का ही ब्योरा है और न कवि के विषय मे ही कुछ लिखा गया है। केवल अन्तिम मंत्र मे 'सिकन्दरा वाला' शब्द आया है जिससे पता चलता वै कि ये सिकन्दरा (आगरा) के निवासी थे। शोध मे ये नवीन है।

५७ ब्रजवासी दास—इनके रचे प्रख्यात ग्रथ 'ब्रज विलास' को तीन प्रतियाँ और उसकी चार लीलाओ काली-लीला, माखन-चोरी लीला, अघासुर वध तथा मान चरित्र लीला की एक एक प्रति प्राप्त हुई है। केवल एक प्रति में र० का० स० १८०९ (१७५२ ई०) दिया है। इसका लिपिकाल सं० १८९४ (१८३७ ई०) है।

'मान चरित्र लीला' की प्रति सं० १९०१ (१८४४ ई०) की और शेष सवत् १९१७ (१८६० ई०) की लिखी है। रचयिता ग्रंथ के साथ पिछली खोज विवरणिकाओ मे उल्लिखित है; देखिये विवरणिकाएँ (१९२०-२२, सं० २२; १९२३-२५, सं० ६९ आदि)।

५८ वृन्दावनदास—इनके दो ग्रथ 'सगल विनोदवेली' तथा 'गुरु महिमा—प्रसाद वेली मिले है। दोनो ग्रंथ सवत् १८२२ (१७६५ ई०) के रचे हुए है। पहले का लिपिकाल नही दिया है। दूसरा सं० १८९७ (सन् १८४०) का लिखा हुआ है। रचयिता कई ग्रंथो के साथ पहले विवरण मे आ चुके है, देखिये विवरणिका (१९०६-८, स० २५०)। ये सवत् १८०३ (१७४६ ई०) के लगभग वर्तमान थे।

५९ वृन्दावन दास—इनके बनाए हुए 'रामायणी ककहरा' का विवरण लिया गया है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल नही दिया है। यह १९०९ (१८६२ ई०) की लिखी हुई है। इसमें सक्षेप मे रामायण का वर्णन है। रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता, परंतु ये पूर्व रचयिता से अभिन्न विदित होते है।

६० वृन्दावनदास—जैसा कि इनके गद्य से प्रकट होता है—ये आधुनिक समय के रचयिता विदित होते है। इनके बनाए हुए 'विहार वृंदावन' नामक ग्रंथ का विवरण लिया गया है जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई ब्यौरा नही पाया जाता। ये आगरा के निवासी थे। ग्रंथ में इन्होने वेदान्त का सार सक्षेप मे किंतु बडे आकर्षक ढग से समझाया है।

६१ बुधजनदास—यह जैन कवि पहले अपने रचे 'योगीन्द्रसार' नामक ग्रंथ के साथ विवृत्त है, देखिये विवरणिका (१९००, स० ११८)। यह सं० १८९५ (१८३८ ई०) के लगभग वर्तमान थे। प्रस्तुत शोध मे इनका रचा 'देवानुराग शतक' मिला

ह। रचनाकाल इनका अज्ञात है। लि० का० सं० १८६७ (१८४० ई०) है। इसमें देव स्तुतियां, जैनधर्म सिद्धान्तानुसार वर्णित हैं।

६२ चक्रपाणि—'क्षमा षोडशी" के रचयिता के रूप में इनका पता खोज में पहली बार लगा है। वेदाचार्य्य जी ने सोलह श्लोकों द्वारा रंगाचार्य्य जी की स्तुति की है जिनकी कान्यकुब्ज श्रीसुखाथ मिश्र ने अन्वय सहित संस्कृत व्याख्या की। इसी व्याख्या की प्रस्तुत रचयिता ने भाषा टीका की है। व्याख्या विस्तृत और सुबोध है। अंत में एक श्लोक द्वारा टीका का रचनाकाल संवत् १८८२ (१८२५ ई०) दिया है जो इस प्रकार है —

दृग्दति दति विधु समित विक्रमार्के, भूपेंद्र हायन वर द्विप वर्गिके।
मासेनभस्य मलपक्ष रमशतिथ्या, था चक्रपाणि बुधराट् विदध सुटीकाम् ॥

विनोद में संख्या १४२८ पर एक लेख चक्रपाणि मैथिल के नाम से आता है (डा० ग्रियर्सन इत्यादि इसका उल्लेख नहीं करते)। परन्तु प्रस्तुत ग्रंथकार उससे भिन्न है।

६३ चन्द्रकवि—इनका बनाया 'कवित्त रामायण' नामक ग्रंथ शोध में मिला है। ग्रंथ का र० का० नहीं दिया है। इसको सं० १८६० (१८०३ ई०) में किन्हीं ठाकुर शाम (श्याम ?) ने नन्हा नागर के पढ़ने के लिये लिखा। उसका कथन है कि उसने ग्रंथकार के मुख के शब्द स्वयं अपने कानों से सुनकर लिखे हैं —

'ये चरित्र रघुनाथ के, बरने हैं कवि चन्द।
नागर नन्हा पठन को, ठाकुर शाम लिषत ॥
मुख ते जु बाहर चन्द के, जैसे निकसे बैण।
तैसे ही शामा लिषो, सुन्यो जे अपने कण ॥"

इससे स्पष्ट है कि ग्रंथकार उक्त संवत् में जब यह ग्रंथ लिपिबद्ध हुआ वर्तमान था। संभव है ग्रंथकार पिछली खोज विवरणिका (१९२०-२२, सं० २६) पर उल्लिखित चन्द्रदास हैं जिन्होंने सातांखण्ड रामायण की रचना की। उनका समय भी इसकी पुष्टि करता है। इस नाम का दूसरा रचयिता खोज विवरणिका (१९१७-१९, सं० ३६) पर भी उल्लिखित है।

६४ चन्द्रमणि—ये ओड़छा के महाराज उदोत सिंह सं०१७८९(सन् १७३५ ई०) और पृथ्वीसिंह (१७३५ ई०—५२ ई०) के आश्रित थे। इनके रचे दो ग्रंथ 'राजभूषण' और 'हितोपदेश' पहले खोज में मिल चुके हैं देखिये विवरणिका (१९०६-८, सं० ६२ ए, बी)। इस बार इनका 'महूर्तदर्पण' नामक ज्योतिष ग्रंथ प्राप्त हुआ है जो इस नाम के मूल संस्कृत ग्रंथ का पद्यानुवाद है। इसमें रचनाकाल नहीं दिया है। लिपिकाल सं० १८३९ (१७८२ ई०) है। इस ग्रंथ में महाराज उदोतसिंह का उल्लेख किया गया है।

६५ चरणदास—ये चरणदासी सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक और प्रसिद्ध संत थे। प्रायः सभी गत विवरणिकाओं में किसी न किसी ग्रंथ के साथ इनका उल्लेख पाया जाता है,

देखिये विवरणिका (१९२०–२२, सं० ३९) इस वार इनके १४ ग्रंथों की २६ प्रतियों के विवरण लिये गये हैं—

क्र० सं०	नाम ग्रंथ	प्रतियां	सबसे प्राचीन प्रति का लिपिकाल
(१)	बाललीला	१	×
(२)	ब्रजचरित्र	१	सं० १८८५ (१८२८ ई०)
(३)	धर्म जहाज	१	" १९०१ (१८३४ ई०)
(४)	जोग (योग)	१	× ×

रचयिता का विस्तृत विवेचन भूमिका भाग सख्या ७ में किया गया है।

६६ चतुरदास—इनका "एकादश कथा" नाम से भागवत एकादश स्कन्ध का पद्यानुवाद मिला है। इसकी प्रस्तुत प्रति मे ग्रथ का रचनाकाल ("संवत् सोरह में नवा जेठ सुकुल पष्ठी कुजदिवा") सवत् १६०९ (१५५२ ई०) दिया है जो अशुद्ध है। शुद्ध दोहा यो है—"संवत सोरह से बावनवा, जेठ सुकुल पष्टी कुज दिवा–", देखिये विवरणिका (१९२३–२५, सं० ७६)। इस ग्रंथ की प्रस्तुत प्रतिलिपि संवत् १८७४ (१८१७ ई०) में हुई।

६७ छन्दुराम—इनकी 'लग्न सुदरी' नामक ज्योतिष ग्रथ की तीन प्रतियाँ मिली हैं। जिनमें से एक मे लि० का० नही है। अन्य दो में क्रमशः संवत् १८९३ (१८३६ ई०) और सं० १९३१ (१८७४ ई०) है। रचनाकाल सं० १८७० (१८१३ ई०) है। यह ग्रंथ पहले मिल चुका है, देखिये खोज विवरणिका (१९२३-२५, स० ७८)।

६८ छत्रकवि—इनकी रची 'विजय मुक्तावली' की पांच प्रतियां और 'सुधासार' की एक प्रति के विवरण लिये गये है। पहला ग्रथ पिछली कई विवरणिकाओ मे आ चुका है। इसका रचना काल स० १८५७ (१८०० ई०) है और इसकी प्रस्तुत प्रतियों में से एक में लि० का० सं० १८५७ = १७९२ ई० है। दूसरा ग्रथ "सुधासार" नया मिला है और यह श्रीमद्भागवत के दशमस्कन्ध का पद्यानुवाद है। इसका र० का० इस प्रकार दिया है—

"संवतु सत्रह से वरप, और छिहत्तरि तत्र।
चैत्र मास सित अष्टमी, ग्रथ कियो कवि छत्र॥

अर्थात् सवत् १७७६ (१७१९ ई०) लि० का० सं० १८५३ (१७९६ ई०) है। इसकी प्रतिलिपि किन्ही 'मोहनलाल मिश्र' ने की है। रचयिता का विशेप विवेचन भूमिका भाग सख्या ८ मे किया गया है।

६९ चेतनचन्द—शालिहोत्र विपय पर संवत् १६१६ (१५५९ ई०) का रचा हुआ इनका "अश्वविनोद" मिला है जिसकी प्रस्तुत प्रति मे लिपिकाल सं० १८५० (१७९३ ई०) दिया है। यह पहले शोध में मिल चुका है, देखिये खोज विवरणिकाएं (१९०९-११, स० ७७)। किन्तु इसका रचनाकाल अभी तक विवादास्पद है। उक्त विवरणिकाओं में उल्लिखित रचनाकाल से प्रस्तुत प्रति मे दिया हुआ रचनाकाल भिन्न है जो इस प्रकार हैः—

"संवत् सोरह सै अधिक, चार चौगुने जानि।
ग्रंथ कह्यो कुशलेशहित, रक्षक श्रीभगवान ॥"

कवि ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है —

"घुरहा पांडे गोपीनाथ। कान्यकुब्ज में भये सनाथ ॥
जिनके सुत चारों अधिराइ। इन्द्रजीत, लछिमन, जदुराय।
चौथो तारा चंद कहायो। तिहि यह ग्रंथ विनोद बनायो ॥

इससे ज्ञात होता है कि इनका वास्तविक नाम ताराचंद था। पिता का नाम गोपीनाथ और तीन बड़े भाइयों का नाम क्रमशः इन्द्रजीत, लछिमन और जदुराय था। जाति के कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। आश्रयदाता का नाम कुशल सिंह था।

७० छोटेलाल—इनके रचे 'व्यंजन प्रकार' या "व्यंजन प्रकाश" की तीन प्रतियाँ शोध में प्राप्त हुई हैं। रचना काल संवत् १९२३ (१८६६ ई०) है —

राम[3] नेत्र[2] ग्रह[9] इंदु[1] मित, संवत् विक्रम जानि।
चैत्र मास सित सप्तमी, सुन्दर ग्रंथ बखानि ॥

उक्त दोनों प्रतियों का लिपिकाल एक ही संवत् १९३६ (१८७९ ई०) है। ग्रंथ के आदि में लिखा है—"अथ व्यंजन प्रकार छोटेलाल विट्ठलनाथ के पुजारी अवदीच ब्राह्मण जयशंकर के पुत्रकृत लिख्यते।"

इससे रचयिता की जाति आदि का आभास मिलता है। खोज में ये नये हैं।

७१ चिन्तामणि—इनके रचे दो ग्रंथ 'गीतगोविन्द का पद्यानुवाद' और "संगीत चिन्तामणि" मिले हैं। पहले ग्रंथ का विवरण गत विवरणिका (१९२०–२२, सं० ४१) में आ चुका है।

दूसरा ग्रंथ नया मिला है। रचना काल दोनों ग्रंथों की प्राप्त प्रतियों में नहीं दिया है, परन्तु पहले ग्रंथ का समय उक्त विवरणिका के अनुसार सं० १८१६ (सन् १७५९ ई०) है। लिपिकाल क्रमशः संवत् १९१६ (१८५९ ई०) और सं० १८९६ (१८३९ ई०) हैं।

७२ चिरञ्जीव कवि—इनका रचा हुआ 'वणार्र पिंगल' नामक ग्रंथ का विवरण लिया गया है जिसकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नहीं पाया जाता। शोध में ये नवीन हैं। 'मिश्र बन्धु विनोद' के संख्या ५६७ पर इस नाम का एक कवि आया तो है, पर उसमें उसके किसी ग्रंथ का उल्लेख नहीं। उसमें उसका समय सं० १७५४ (१६९७ ई०) से पूर्व माना है। सूदन के 'सुजान चरित्र' में इनका नाम लिया देखकर ही ऐसा किया गया जान पड़ता है। इसी नाम का एक दूसरा बैसवाड़े का कवि जो महाभारत का अनुवादक है विनोद के संख्या १२०१ (रचनाकाल १८७० वि०) और ग्रियर्सन के माडर्न वर्नाक्यूलर आफ हिंदुस्तान के संख्या ६०७ पर अंकित है। परंतु प्रस्तुत रचयिता इससे भिन्न है या अभिन्न, निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

७३ दादू—ये दादूपंथ के प्रवर्तक सुप्रसिद्ध सन्त हैं जिनका उल्लेख गत कई खोज विवरणिकाओं में हो चुका है, देखिये विवरणिकाएँ (१९०१, सं० ३७ १९१७–१९,

सं० ५२; २३–२५, स० ८१)। इस वार इनकी 'वानी' का एक और हस्तलेख प्राप्त हुआ है। उसमे रचनाकाल नही दिया गया है, पर लिपिकाल उसका सं० १८१० (१७५३ ई०) है।

७४ दामोदर—इनकी वनाई हुई 'नेम वत्तीसी' का जिसका र० का० स० १६८७ (१६३० ई०) है। विवरण लिया गया है। यह पहले मिल चुकी है, देखिये विवरणिका (१९१२–१६, सं० ४६ डी) इसकी प्रस्तुत प्रति मे लिपिकाल का उल्लेख नहीं है।

७५ दामोदर दास—इनकी वनाई 'मोहविवेक' नामक पोथी की दो प्रतियां मिली है जिनमे से एक प्रति में लिपिकाल संवत् १८६१ (सन् १८०४) है। इस नाम के कुछ रचयिता 'मिश्र वन्धु विनोद' और 'माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर आफ हिन्दुस्तान' (ग्रियर्सन) में भी आये हैं पर नही कहा जा सकता कि प्रस्तुत रचयिता उनमें से कोई एक है या नही।

७६ दामोदर—ये खोज की गत विवरणिकाओं में आये इस नामके सभी रचयिताओ से पृथक जान पडते है। प्रस्तुत शोध में उनका एक "वैद्यक" ग्रंथ मिला है जो मूल संस्कृत ग्रथ शार्ङ्गधर संहिता का अनुवाद है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही। यह अधूरा प्राप्त हुआ है जिससे रचयिता के विषय में कुछ भी पता नहो चलता।

७७ दरियाव दौवा—इनकी एक रचना 'जनक पचीसी' के विवरण लिये गये हैं। यह पहले भी मिल चुकी है, देखिये विवरणिका (१९०६–८, सं० ७२ ए)। रचयिता बुंदेलखंडी जान पडते हैं, क्योंकि इनकी प्रस्तुत रचना में बुंदेलखंडी शब्दों का प्रयोग काफी हुआ है। रचनाकाल स० १८८१ (१८२४ ई०) है और लिपिकाल सं० १९५० (१८९३ ई०)। ये दौवा जाति (बुंदेलखड में एक जाति जो बुंदेल ठाकुरो और अहीरो के मिश्रण से बनी है) के थे और शाहनगर मे निवास करते थे। इस ग्रंथ का रचनाकाल सवत् १८८१ (१८२४ ई०) है और लिपिकाल स० १८५० (सन् १८९३)।

७८ दरियावसिंह—इनके रचे दो ग्रंथो—वैद्यक विनोद और कोकशास्त्र के विवरण लिये गये हैं। पहला ग्रथ सं० १८९० (१८३३ ई०) में रचा गया। इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं जिनमें से एक संवत् १९१७ (१८६० ई०) की और दूसरी सं० १९१० (१८५३ ई०) की लिखी हुई है। दूसरे ग्रंथ की प्रति मे रचनाकाल–लिपिकाल नही दिये हैं। रचयिता जाति के कुरमी और बीबीपुर (जिला, कानपुर) के निवासी थे।

७९ दत्तराम या रामदत्त माथुर—इनके वनाये 'अजीर्ण मजरी' एवम् 'नाडी परीक्षा' नामक दो ग्रंथ इस शोध में प्राप्त हुए हैं। पहला ग्रथ सं० १९२१ (१८६४ ई०) का बना और संवत् १९३० (१८७३ ई०) का लिखा हुआ है। दूसरे का रचनाकाल सं० १९३७ (१८८० ई०) और लि० का० सं० १९४८ = १८९१ ई० हैं। संभवत· रचयिता आगरे के रहनेवाले थे। खोज मे ये नये है।

८० देवदत्त (देव)—ये हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि हैं और खोज की अधिकांश विवरणिकाओं में उल्लिखित हैं, देखिये विवरणिकाएँ (१९२०–२२, सं० ३९, १९२३–२५, सं० ८९ आदि)। इस बार इनके चार ग्रंथों की सात प्रतियाँ मिली हैं जिनका विवरण निम्न लिखित है —

क्र० सं०	नाम ग्रंथ	प्रतियाँ	सबसे प्राचीन प्रति का लि०का०
(१)	अष्टयाम	४	सं० १८८३ (१८२६ ई०)।
(२)	भाव विलास	१	सं० १९१२ (१८५५ ई०)।
(३)	देवमाया प्रपंचनाटक	१	सं० १८८३ (१८२६ ई०)।
(४)	श्रृंगार विलासिनी	१	×

उक्त चारो ग्रंथों में अंतिम ग्रंथ 'श्रृंगार विलासिनी' खोज में नवीन प्राप्त हुआ है। हिन्दी संसार में इसकी ख्याति नहीं है। इसके लिए देखिये भूमिका भाग में संख्या ९।

८१ देवकीनंदन—ये मकरन्द नगर (फरुखाबाद) के निवासी और अपने तीन ग्रंथों के साथ क्रम से खोज विवरणिका (१९०१, सं० ५७ १९०९–११, सं० ६५ और १९१७–१९, सं० ६५ बी) पर उल्लिखित हैं।

इसबार इनकी 'ससुरारि पचीसी' की दो प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं। रचना खोज में पहली बार मिली है। इसका रचनाकाल संवत् १८३२ (१७७५ ई०) दिया है। लिपिकाल क्रमश सं० १८६९ (१८१२ ई०) और संवत् १८७९ (१८२२ ई०) हैं।

८२ देवीदास—इनके बनाये 'लीला' तथा 'विनोद मंगल' नामक दो ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। पहले में रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नहीं। दूसरे में रचनाकाल सं० १८३८ (१७८१ ई०) और लिपिकाल संवत् १८५० (१७९३ ई०) दिए हैं।

रचयिता सत्यनामी सम्प्रदाय के संस्थापक स्वा० जगजीवन दास (कोटवा, बाराबंकी) के शिष्य थे। विशेष के लिये देखिये खोज विवरणिकाएँ (१९२०–२२, सं० ४०, २३–२५, सं० ९५)।

८३ देवीदास—प्रस्तुत खोज में इनका बनाया 'बाल चरित्र' ग्रंथ प्राप्त हुआ है जिसमें रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नहीं। पिछली खोज विवरणिका (१९०९–११, सं० ६८) पर इनका उल्लेख हो चुका है जिसमें इन्हें सतनामी सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध देवीदास से भिन्न माना है। परंतु इनकी रचना शैली संतों की रचना शैली की तरह ही है। अत ये उक्त सतनामी देवीदास ही, जिनका उल्लेख प्रस्तुत विवरणिका में इससे पूर्व हो चुका है, विदित होते हैं।

८४ देवीप्रसाद—इनकी चार रचनाएँ 'बारहमासी', 'राग फुलवारी', 'राग विलास' और 'संगीतसार' मिली हैं जो क्रमश संवत् १९०५ (१८४८ ई०), सं० १९०२ (१८४५ ई०), सं० १८९६ (१८३९ ई०) तथा सं० १९०० (१८४३ ई०) की रची हुई हैं। इनकी प्रस्तुत प्रतियों में लिपिकाल क्रमश सं० १९१२ (१८५५ ई०), संवत्

१९३२ (१८७५ ई०), संवत् १९१० (१८५३ ई०) और संवत १९५२ (१८९५ ई०) दिये है। रचयिता बेला (इटावा, उत्तर प्रदेश) के निवासी और बैजनाथ वैश्य के पुत्र थे। शोध मे ये नवीन है।

८५ देवीसहाय—इनका रचा 'बाबा देवी सहाय कृति' नाम से एक ग्रंथ प्राप्त हुआ है जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिये है। ये खोज विवरणिका (१००९–११, सं० ६९) पर उल्लिखित हैं। ग्रंथ में शिव विषयक भजनो का संग्रह है। ये शिव के भक्त थे। कहा जाता है कि एकबार ये छ: वर्षों तक लगातार अंधे रहे, परंतु पीछे शिवपूजन करते समय इनकी आँखे अकस्मात् खुल गई। ये बाजपेयी ब्राह्मण थे और इनके पिता का नाम मक्खन लाल था।

८६ देवकीसिंह—ये चन्देरी के राजा के आश्रित थे और सं० १७३३ (१६७६ ई०) के लगभग वर्तमान थे। पिछली खोज विवरणिका (१९०६–८, सं० २८) में इनका उल्लेख हो चुका है। इस बार इनकी 'बारहमासी' की एक प्रति मिली है। उसमे रचनाकाल तो नहीं दिया है, पर लिपिकाल दिया है जो स० १९१९ (१८६२ ई०) है।

८७ धीरजराम—इनका बनाया 'चिकित्सा सार' नाम का ग्रंथ पहले पहल प्राप्त हुआ है। इसका र० का० स० १८१० (१७५३ ई०) और लि० का० स० १८६८ (१८११ ई०) है। रचयिता अपने को जाति का सारस्वत ब्राह्मण तथा कृपाराम द्विज का पुत्र बतलाता है।

८८ ध्रुवदास—इनकी तीन रचनाएँ 'वाणी', 'ब्यालीस लीला' और 'वृन्दावन शत' मिली है जिनमें रचनाकाल नहीं दिये हैं। प्रथम दो ग्रंथो की प्रतियाँ क्रमशः सं० १८१० (१७५३ ई०) और स० १८३६ (१७७९ ई०) की लिखी हैं। तीसरे ग्रंथ की ६ प्रतियाँ प्राप्त हुई है, जिनमे से प्राचीन प्रति सं० १७९० (१७३३ ई०) की लिखी है। ये सभी ग्रंथ केवल नाम और कथाक्रम के भेद को छोडकर एक ही विदित होते हैं और कई बार पिछली खोज विवरणिकाओं मे आ चुके है, देखिये विवरणिका (१९१७–१९, सं० ५१ आदि)।

८९ ध्यानदास—इनका बनाया 'सत हरिश्चंद्र कथा नामक ग्रंथ इस बार फिर मिला है। इसका र० का० ज्ञात नहीं लिपिकाल सं० १८९० (१८३३ ई०) है। इसके लिये देखिये पिछली विवरणिकाएँ (१९०१, सं० १०७, १९०६–८ सं० ९)।

९० दीनादास—ये 'गोकुल कॉड' ग्रंथ के साथ पिछली खोज विवरणिका (१९०६-८, स० १६१) में उल्लिखित है। इस बार इनके चार ग्रंथ 'संग्रहीत-लतिका', 'मदचरित्र', 'प्रेम बिहारी' तथा 'गोपी विरह महात्म्य' मिले है। रचनाकाल केवल अंतिम दो ग्रंथो में दिया है जो एक ही संवत् १९३२ (१८७५ ई०) है। मदचरित्र की प्रति में लिपिकाल स० १९३४ दिया है और शेष ग्रंथो की दो प्रतियो में सं० १९३६ (१८७९ ई०)। रचयिता चतुरनगर (परगनै, चाइल, जिला, इलाहाबाद) के निवासी और बादल शुक्ल के पुत्र थे।

ये अपने पिता को बडा साधु लिखते हैं। इनका असली नाम दाताराम था। वेजनाथ इनके गुरु थे।

९१ दीनानाथ—खोज में इनका पता प्रथम बार चला है। इनका बनाया 'विजय दर्शन' नामक ग्रथ प्राप्त हुआ है। ग्रथ अपूर्ण है, अतएव उसमें काल क्रम सबधी विवरण उपलब्ध नहीं। इसका विषय 'वाममार्ग' से सबध रखता है। अब तक इस विषय का कोई ग्रथ उपलब्ध नहीं हुआ था इसलिये इसका महत्व है। इसके अत के पत्रे त्रुटित और खडित हैं जिसके कारण रचयिता के सबध में केवल इतना ही कि इनके गुरु का नाम ज्ञाना नद था, अन्य कुछ पता नहीं चलता।

९२ दीप कवि—इनका बनाया "अनुभव प्रकाश" नामक ग्रथ मिला है जिसमें रचनाकाल का उल्लेख नहीं पाया जाता। लिपिकाल सवत् १९५८ (१९०१ ई०) है। पहले इसके विवरण लिये जा चुके हैं, देखिये खोजविवरणिका (१९१७–१९, स० ५२)। इसका विषय जैन धर्म से सबधित है।

९३ दूलनदास—इनके बनाये तीन ग्रथो 'कवितावली', 'मगलगीत' और 'दोहा वली' के विवरण लिये गये हैं। इन सबका लिपिकाल स० १९८५ (१९२८ ई०) है। ग्रथकार पिछली खोज विवरणिकाओं में आ चुके हैं देखिये विवरणिकाएँ (१९२० २२, स० ४६, १९२३ २५, स० १०८)।

९४ दुर्गाप्रसाद—इनके दो ग्रथ "वाराह पुराण" और "लीला नरसिंह औतार" नाम से मिले हैं। पहले ग्रथ का र० का० स० १९२७ (१८७० ई०) है। इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं जिनमें लिपिकाल क्रम से स० १९२७ और २८ वि० (१८७०–७१ ई०) हैं। दूसरा ग्रथ सवत् १९२६ (सन् १८६९) का लिखा है। रचनाकाल उसका दिया नहीं। ग्रथकार हमजापुर (अलवर) के रहनेवाले थे।

९५ द्वारिकादास—इनकी 'तत्वज्ञान की बारहमासी' नामक रचना मिली है। यह स० १९३१ वि० (१८७४ ई०) की रची हुई है। इसकी तीन प्रतियाँ मिली हैं जिनमें से एक उक्त सवत् की लिखी है। शेष दो प्रतियों में लिपिकाल क्रम से स० १९३४ और १९३७ वि० १८७७ व १८८० ई० हैं। रचयिता मुहम्मदपुर (कानपुर) के रहनेवाले कहे जाते हैं। खोज में ये नये हैं।

९६ द्वारिकाप्रसाद—वैद्यक विषयक इनकी 'रस मजूषा' नामक रचना की दो प्रतियाँ मिली हैं। र० का० अज्ञात है। लिपिकाल केवल एक प्रति में स० १९०७ (१८५० ई०) दिया है। रचयिता खोज में नया है।

९७ फकीरदास—इनके 'शब्द होरी' वाणी' और 'शब्द कहरा' नाम से तीन ग्रथो के विवरण लिये गये हैं। ये अपने दो ग्रथों 'बीजग्रथ' और 'आनन्द वर्द्धिनी' के साथ पिछली खोज विवरणिका (१९२३–२५, स० १११) में आ चुके हैं। प्रस्तुत ग्रथो में से प्रथम दो का रचनाकाल क्रमश १२३८ फसली १८३१ ई०) और १२२५ फ (१८१८ई०) हैं। तीसरी का रचनाकाल अनुपलब्ध है। इनकी दो प्रतियाँ स० १९३० (१८७३ ई०) की लिपिबद्ध है।

६

९८ फकीरेदास—'ज्ञान उद्योत' नाम से इनका एक ग्रंथ मिला है जिसका र० का० स० १८५२ (१७९५ ई०) और लि० का० स० १८९२ वि० (१८३५ ई०) हैं। ये दुबे के पुरवा (मुसाफिर खाना जिला सुलतानपुर) के निवासी, सरयूपारीण ब्राह्मण (कुड वरिघा दुबे गर्गगोत्रीय) थे। सत्यनामी सम्प्रदाय के महंत माधोदास इनके गुरु थे। ६५ वर्ष की अवस्था में स० १८५७ (१८०० ई०) के चैत्र शुक्ल अष्टमी शनिवार को ये गो-लोकवासी हुए। इनके वशज जो महत है अव भी उक्त गांव में रहते है। प्रस्तुत ग्रथ के अतिरिक्त इनकी फुटकर रचनाए भी पाई जाती हे।

९९ फरासीस हकीम—इनके दो ग्रथो 'ईजुल पुराण' तथा 'वैद्यक फरासीसी' के विवरण लिये गये है। र० का० किसी मे नही दिया है। लि० का० क्रमशः स० १८९७ (१८४० ई०) और सं० १८४७ (१७९० ई०) है। प्रथम ग्रंथ पहले कई वार मिल चुका है, देखिये विवरणिका (१९०६–८, स० १६६ आदि)।

१०० गदाधर भट्ट—इनकी प्रस्तुत रचना 'गदाधर भट्ट की वाणी' पहले मिल चुकी है, देखिये खोज विवरणिका (१९००, सं० ३, १९०९-११, सं० ८१)। उक्त विवरणिका मे इनका संवत् १५७५, (१५१८ ई०) के लगभग वर्त्तमान रहना लिखा है।

१०१ गौरीशंकर—इनके रचे हुए प्रायः छै ग्रंथ—(१) 'होली संग्रह' (२) 'काव्यामृत प्रवाह' (३) 'ऋतुराज शतक' (४) 'संगीत की पुस्तक' (५) 'संगीत विहार' और (६) 'वीर विनोद' मिले है। इनमे से संगीत की पुस्तक की दो प्रतियाँ है और शेष की एक एक। रचयिता का पता नया ही चला है। विनोदादि मे भी इनका परिचय नही दिया है। ये मसवानपुर (कानपुर) के निवासी थे।

पितामह का नाम मन्नालाल और पिता का नाम लालताप्रसाद था। पहले ग्रंथ की प्रति मे लिपिकाल सं० १९३० (१८७३ ई०), दूसरे तीसरे की प्रति मे सं० १९३९ (१८८२ ई०), चौथे की एक प्रति मे सं० १९४० (१८८३ ई०), पाँचवे की प्रति मे संवत् १९३६ (१८७९ ई०) और छठवे ग्रंथ की प्रति मे सं० १९४० (१८८३ ई०) दिये है। सभी ग्रंथ लगभग संवत् १९३० (सन् १८७३) के रचे जान पडते है।

१०२ गौरीशंकर—इनकी पाँच रचनाएँ (१) 'चीरहरण लीला' (२ 'गोवर्द्धन लीला' (३) 'मनिहारिन लीला' (४) 'रहस पचासा' तथा (५) 'श्यामा विलास' नाम से मिली है। रचनाकाल केवल तीसरी रचना में दिया है जो सवत् १९३१ (१८७४ ई०) है। लि० का० दूसरी रचना की प्रति में सं० १९३० (१८७३ ई०), तीसरी की प्रति मे सं० १९३४ (१८७७ ई०), चौथी की प्रति मे स० १९३६ (१८७९ ई०) और पाँचवी रचना की प्रति में स० १९३३ (१८७६ ई०) है। शेष मे रचनाकाल तथा लि० का० नही दिये है। रचयिता खोज विवरणिका (१९१२-१४, स० ६३) मे आ चुका है। ये कपनसराय (शाहजहाँपुर)। के रहने वाले एक ब्राह्मण थे।

१०३ गल्लूजी महाराज—इनकी दो रचनाओ 'मंगल आरती' एवम् 'सुरसा वारी' के विवरण लिये गये हैं। ये शोध में नवीन है। विनोद मे भी इनका नाम नही

आया है। पहले ग्रथ का र० का० नहा दिया है। उसका लिपिकाल सवत् १८७७ (१८२० इ०) है। दूसरे ग्रथ में र० का० का दोहा इस प्रकार है —

"गौर पक्ष की पचमी, भृगुवासर वैसाष।
सवत नभ, ससि[१] षड[९] जुग[४] (?), फली चित्त तर साष॥"

इससे वैसाख शुक्ला पचमी सवत् १९१० रचनाकाल आता है। जाँच करने पर उस दिन १३ मई सन् १७५३ इ० (शुक्र दिन) निकलता है। अनुसधान से पता लगा है कि रचयिता वृदावन के प्रसिद्ध कवि और गौडीय सम्प्रदाय के आचार्य थे। इनका उपनाम गुणमजरीदास था। ये प्रसिद्ध पडित गोस्वामी राधाचरण के पिता थे। गो० राधाचरण का जन्म 'विनोद' स० १९१५ (१८५८ इ०) मानता है (दे० मि० व० वि० स० २१११)। ऐसी दशा में उक्त ग्रथ का सवत् १९१० में रचा जाना अनुचित नहा। विनोद राधाचरण जी को वल्लभी सम्प्रदाय का गोस्वामी कहता है' जो ठीक नहीं।

१०४ गन्नाराम—इनकी बनायी 'बारहमासा' की तीन प्रतियाँ प्राप्त हुइ हैं। र० का० अज्ञात है। लि० का० इनका क्रमश सवत् १८९०, १८९७ तथा १९३६ (सन् १८३३, १८४०, १८७९ इ०) है। इनके सबध में कुछ भी ज्ञात नहा।

१०५ गणेश—इनके वेदान्त विषयक 'परतत्व प्रकाश' नामक ग्रथ की दो प्रतियाँ मिली हैं। पहली प्रति में रचनाकाल नहीं दिया है। वह सवत् १९१० (१८५८ इ०) की लिखी हुइ है। किंतु दूसरी प्रति में रचनाकाल स० १९२१ (१८६४ इ०) स्पष्ट दिया है। अत पहली प्रति का लिपिकाल अशुद्ध है क्योंकि वह रचनाकाल से पहले का लिखा है जो सभव नहा। दूसरी प्रति का लि० का० स० १९३२ १८७५ इ०) है। रचयिता अपने गुरु का नाम रामचद्र और पिता का नाम जगन्नाथ बतलाता है। ये आगरे के निवासी थे और इन्होंने प्रस्तुत ग्र थ को सावलदास माहार के पुत्र नथामल के लिये रचा था।

१०६ गणेशदत्त—इनके द्वारा दोहा चापाइयों म अनुवादित 'सत्यनारायण की कथा' मिली है। रचनाकाल इसमें नहीं दिया है। लि० का० स० १९४० (१८८३ इ०) है। रचयिता का कोइ वृत्त नहा मिलता। इस नाम के जिन कवियों का पता लगा है यह उन सबसे भिन्न जान पड़ता है।

१०७ गणेशप्रसाद—यह फरखाबाद के रहनेवाले ऐश्वराज के पुत्र थे। इनकी रचना अच्छी है। लावनियाँ तो सव साधारण में आदर प्राप्त कर चुकी हैं। ये मि० व० वि० के स० १७९४ पर उल्लिखित हैं। वहाँ इनके कइ ग्रथों की सूची देकर इनका रचनाकाल स० १९०० से १९३० (१८४३–१८७३ इ० तक बतलाया है। प्रस्तुत खोज में इनके १२ ग्र थ मिले हैं जो सभी प्रकाशित कहे जाते हैं, पर हमारी शोध में इनका पता अभी चला है। ग्र थो की सूची इस प्रकार है —

क्र० स०	नाम ग्रथ	र० का०	लि० का०
१	बारहमासा	×	१९२५ (१८६८ इ०)
२	भ्रमर गीत	×	×

३	दानलीला	×	१९२२ (१८६५ ई०)
४	देवस्तुति	×	१९०८ (१८६१ ई०)
५	गायन संग्रह	×	१९३६ (१८७९ ई०)
६	हिंडोला	×	,, ,,
७	दरबार देहली मलका रू०	×	१९३४ (१८७७ ,,)
८	प्रेम गीतावली	×	१९२४ (१८६७ ,,)
९	रागमनोहर	×	१९२२ (१८६५ ,,)
१०	रागरत्नावली	×	१९२० (१८६३ ,,)
११	रामकलेवा	×	१९२६ (१८६९ ,,)
१२	रुक्मिणीमंगल	×	१९२४ (१८६७ ,,)

१०८ गंग—इनकी रची 'गंग पचीसी' नामक रचना के विवरण लिये गये हैं जिसकी प्रस्तुत प्रति में र० का० नहीं दिया है। यह संवत् १८६० वि० (१८०३ ई०) की लिखी हुई है। रचयिता खोज विवरणिका (१९००, सं० २६) में उल्लिखित गंग से भिन्न सुप्रसिद्ध गंग हैं जो अकबर बादशाह के दरबार में रहते थे।

१०९ गंगाधर—इन्होंने संवत् १८६० (१८०३ ई०) में 'नागलीला' की रचना की जिसकी संवत् १९०६ (१८४९ ई०) की लिखी एक प्रति के विवरण लिये गये हैं। इनका कोई परिचय उपलब्ध नहीं। पिछली विवरणिकाओं में आये इस नाम के रचयिताओं से ये भिन्न हैं।

११० गंगाप्रसाद वैश्य—ये शोध में नवीन हैं। आगरा जिले के बाह नामक स्थान के ये निवासी थे। वासुदेव सनाढ्य गुरु का नाम था। इनके बनाये तीन ग्रंथ पहला 'रामाश्वमेध', दूसरा 'वटेश्वर महात्म्य', तीसरा 'क्षत मुक्तावली' प्राप्त हुए हैं। पहला ग्रंथ बिना सन् संवत् का है, पर दूसरे का र० का० सं० १९०३ (१८४६ ई०) और लि० का० सं० १९१० (१८५३ ई०) हैं। तीसरे का र० का० संवत् १९०० है। इनके पिता का नाम ऊधव था और ये जाति के मुखारिया गोत्र के माथुर वैश्य थे। इन्होंने दूसरे ग्रंथ में महाराज भदावर महेन्द्र महेन्द्रसिंह का संक्षिप्त परिचय भी दिया है।

१११ गंगेश—इनके बनाये 'विक्रम विलास' नामक ग्रंथ की दो प्रतियाँ मिली है। रचनाकाल किसी प्रति में नहीं दिया है। लि० का० क्रमशः सं० १८२० (१७६३ ई०) और सं० १८६१ (१८०४ ई०) है। यह ग्रंथ पहले विवरण में आ चुका है, देखिये (१९१७–१९, सं० ८६, १९२३–२५, सं० १२५ आदि) की विवरणिकाएँ।

११२ गौरंगनदास—इनके बनाये दो ग्रंथ 'शृंगार मझावली' तथा 'गौराङ्ग भूषण विलास' प्राप्त हुए हैं। पहले में वृंदावन और दूसरे में राधा आदि की शोभा का वर्णन है। इसमें खड़ी बोली और ब्रजभाषा दोनों ही में रचना की गई है। दूसरे ग्रंथ में साम्प्रदायिक सिद्धान्तों के साथ साथ गौराङ्ग महाप्रभु की महिमा का वर्णन है। रचयिता

वृन्दावन के प्रसिद्ध महात्मा कवि और गौड़ीय सम्प्रदाय के वैष्णव थे। इनकी रचनाओं में फारसी और अरबी के शब्दों का व्यवहार स्वतन्त्रता से हुआ है।

११३ गयाप्रसाद—इनकी 'भजनावली' की सं० १९४६ (१८८९ ई०) की लिखी एक प्रति मिली है। खोज में यह अब तक अज्ञात थी। रचयिता दाऊद ग्राम (तहसील, अलीगंज, जिला, एटा) के निवासी थे, और प्रस्तुत रचना करते समय जबलपुर (सी० पी०) में रहते थे। मिश्र बंधु विनोद में संख्या १३९८ पर इस नाम के एक रचयिता का उल्लेख है, पर ये प्रस्तुत रचयिता हैं या कोई अन्य, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता।

११४ गेंदीराय—इनके रचे 'सूरज पुराण' की एक प्रति मिली है जिसमें रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिये हैं। अन्य वृत्त इनका अज्ञात है। खोज में ये नवीन हैं।

११५ घनानन्द—ये हिंदी के प्रसिद्ध कवि हैं। पिछली खोज विवरणिकाओं में कई बार आ चुके हैं। इस बार इनके रचे निम्नलिखित चार ग्रंथ प्राप्त हुए हैं जिनमें रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिये हैं—(१) प्रीतिपावस, (२) सुजानहित प्रबन्ध (३) वियोग वेली और (४) कवित्त। विशेष विवरण के लिये देखिये विवरणिका (१९१७ १९, सं० ९)।

११६ दासगिरन्द—इनका 'हरि भजन' नामक ग्रंथ मिला है जिसमें उपदेश और भक्ति सम्बंधी रागिनियां संगृहीत हैं। इसकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल लिपिकाल नहीं दिये हैं। रचयिता नवाब रामपुर (मुरादाबाद) के अधिवासी बतलाए जाते हैं। खोज में ये नवीन हैं।

११७ गिरधारी—'श्याम श्यामा चरित्र' नामक ग्रंथ के ये रचयिता हैं। सातनपुरवा (बैसवाड़ा) में इनका निवास स्थान था। विनोद में इनका जन्म काल सन् १७९० दिया है। प्रस्तुत ग्रंथ के साथ ये पिछली खोज विवरणिका में उल्लिखित हैं, देखिये विवरणिका (१९१२–१६ सं० ६१)। ग्रंथ का प्रस्तुत प्रति के आरंभ में संवत् १९०४ दिया है, पर यह रचनाकाल है अथवा लिपिकाल, कुछ पता नहीं चलता।

११८ गिरिधारीलाल—इनका बनाया 'पिङ्गल सार' नामक ग्रंथ प्राप्त हुआ है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल नहीं दिया है। लिपिकाल सं० १७६६ (१७०९ ई०) है। रचयिता आगरा का रहने वाला था। औरङ्गजेब के समय (सन् १६५८–१७०७ ई०) में प्रस्तुत ग्रंथ की इन्होंने रचना की। खोज में ये नवीन हैं। ग्रंथ की प्रति औरङ्गजेब की मृत्यु के दो वर्ष पश्चात् लिखी गई। इस दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है।

११९ गिरिधारीलाल—इनके शालिहोत्र विषयक ग्रंथ 'अश्व चिकित्सा' के विवरण लिये गये हैं जिसकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल एक ही संवत् १९२७ (१८७० ई०) दिया है। अतः यह मूल प्रति है। ग्रंथकार शोध में नवोपलब्ध हैं। ये आगरा जिले के कोटला ग्राम के निवासी थे और किसी रियासत में कार्य करते थे। उनके प्रपौत्र जिनके पास प्रस्तुत ग्रंथ विद्यमान है उक्त ग्राम में अद्यावधि निवास करते हैं।

१२० गिरिधारी लाल—इनका बनाया 'माप माग' नामक ग्रंथ प्राप्त हुआ है जिसमें रेखागणित की कुछ परिभाषाओं और खेतों की मापन तथा उनके क्षेत्रफलादि निका

लने का वर्णन है। पुस्तक संवत् १९३० (१८७३ ई०) की रची और संवत् १९३१ (१८७४ ई०) की लिखी है। रचयिता समायूँ के निवासी थे। शोध में ये नवीन हैं।

१२१ गोकुलनाथ—ये वल्लभाचार्य के पौत्र और विट्ठलनाथ के पुत्र थे। 'चौरासी वैष्णवो' तथा 'दो सौ बावन वैष्णवो की वार्ता'-के ये लेखक है। इनका र० का० सं० १६२५ (१५६८ ई०) है। इन्ही की रची 'गोवर्द्धन जी के प्रगटन समय की वार्ता' और 'वन यात्रा' के इस बार विवरण लिये गये हैं। प्रत्येक की दो दो प्रतियां मिली है जिनमें से प्रथम रचना की एक प्रति में लिपिकाल संवत् १९२५ (१८६८ ई०) दिया है।

१२२ गोपाल—इनकी बनाई "भड्डई विलास" की पोथी मिली है जो संवत् १९०२ (१८४५ ई०) की रची और सं० १९२७ (१८७० ई०) की लिखी है। यह केवल मनोरंजन विषयक रचना है जिसमे अनेक हँसानेवाली कथाएं है। शोध में यह नवीन है। लेखक फतहपुर सीकरी (आगरा) का रहने वाला ब्राह्मण था।

१२३ जनगोपाल—इनके बनाये 'मोहमर्द राजा की कथा', ध्रुव चरित्र' और 'प्रह्लाद चरित्र' मिले है। रचनाकाल तीनो ग्रंथो का अज्ञात है। लिपिकाल दूसरे और तीसरे ग्रंथो की प्रतियो का एक ही संवत् १८०६ (१७४९ ई०) है। रचयिता प्रसिद्ध महात्मा दादू के शिष्य थे और सन् १६०० ई० के लगभग वर्तमान थे। इनके लिये देखिये पिछली खोज विवरणिका (१९००, स० २५, १९१२-१६, स० २३)।

१२४ गोपाल लाल—इनका बनाया हुआ "चारो दिशाओं के सुख दुःख" नाम से एक ग्रंथ मिला है जिसकी प्रस्तुत प्रति स० १८९६ (१८३९ ई०) की लिखी है। इसमें रचनाकाल नही दिया है। ग्रंथकार और उसके ग्यारह ग्रंथो का पता पहले लग चुका है देखिये विवरणिका (१९१२-१४, स० ६२) और मिश्र बन्धु विनोद स० १९६३। ये उक्त विवरणिका के अनुसार वृंदावन वासी, सङ्गराय के पुत्र और सं० १८८५ (१८२८ ई०) के लगभग वर्तमान थे।

१२५ गोविंदलाल—इनकी बनाई 'कलजुग लीला' या 'कलजुग के कवित्त' की दो प्रतियाँ प्राप्त हुई है। र० का० अज्ञात है। प्रतियो का लिपिकाल क्रमश. संवत् १९३० (१८७३ ई०) और सं० १९३६ (१८७९ ई०) है। रचयिता के संबंध में कुछ ज्ञात नही।

१२६ गोकरन नाथ—इनके रचे 'नैमि पारण्य महात्म्य' के विवरण लिये गये है। ग्रंथ सं० १९११ (१८५४ ई०) मे रचा गया और इसकी प्रस्तुत प्रति सं० १९१८ (१८६१ ई०) मे लिखी गई। रचयिता के संबंध मे अधिक कुछ ज्ञात नही।

१२७ गोकुलचंद—इनकी 'सगुन परीक्षा' मिली है जिसमे रचनाकाल तो नही दिया है, पर जिसकी प्रस्तुत प्रति संवत् १९२७ (१८७० ई०) की लिखी हुई है। रचयिता मथुरा के निवासी थे। पिता का नाम हकीम रामचंद्र था। खोज में ये नवीन है।

१२८ गोकुल गोला पूरब—शोध में इनका प्रथम बार ही पता चला है। इनका रचा 'सुकमाल चरित्र' प्राप्त हुआ है जिसका र० का० १८७१ (१८१४ ई०) और

लि० का० सं० १९१८ (१८६१ ई०) है। उसमें जैन धर्म का वर्णन है। यह गद्य में है जो प्राचीन कथा वाचकों की गद्य शैली से मिलता है।

१२९ गोपीनाथ—इनका रचा भागवत दशम पूर्वार्द्ध' का पद्यानुवाद मिला है। र० का० इसका सं० १६३९ (१५८२ ई०) है। लि० का० दिया नहीं। रचयिता के गुरु का नाम मिश्र चतुर्भुज था जिनसे पुराण सुनते समय इन्हें ज्ञान की उपलब्धि हुई। इनके पूर्वजों का निवास स्थान दिहुली (तहसील करहल जिला मैनपुरी) था, पर ये आगरा में रहते थे। शोध में ये नवीन हैं।

१३० गुलाबदास—इनकी 'शीघ्रबोध की टीका' मिली है जिसका र० का० संवत् १८०२ (१७४५ ई०) और लि० का० सं० १८२३ (१८३८ ई०) है। ये शोध में नवीन हैं और इनके विषय में अधिक कुछ ज्ञात नहीं।

१३१ गुलजारीलाल—इनकी बनाई 'रसाल तरंग' की एक प्रति शोध में प्राप्त हुई है जो सं० १९२८ (१८७१ ई०) की रची और सं० १९३२ (१८७५ ई०) की लिखी हुई है। इसमें रामचरित्र का वर्णन है। रचयिता जाति के प्रधान और नरवर (जिला कानपुर) के रहने वाले थे। शोध में ये नवीन हैं।

१३२ गुरुदीन—इनका बनाया 'रामचरित्र' मिला है जिसका र० का० अज्ञात है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति सं० १८७८ (१८२१ ई०) की लिखी हुई है। इसके विवरण पहले लिये जा चुके हैं, देखिये खोज विवरणिका (१९०५, सं० २५)। रचयिता मनोहर नाथ के शिष्य थे। डाक्टर ग्रियर्सन इस नाम के एक कवि का सन् १८८३ में होना बतलाते हैं।

१३३ गुरुप्रसाद—इनका बनाया कवि विनोद नामक ग्रंथ (र० का० सं० १७४५=१६८८ ई० और लि० का० सं० १८९१ (१८३४ ई०) शोध में मिला है जो वैद्यक से सम्बन्ध रखता है। संभव है, यह "रत्नसागर' के रचयिता से, जो सं० १७५५ = १६९८ ई० के लगभग वर्तमान था, अभिन्न हो। इसी विषय का एक दूसरा ग्रंथ 'वैद्यकसार संग्रह' और मिला है जो इन्हीं का रचा जान पड़ता है।

१३४ गुरुप्रसाद—प्रस्तुत शोध में इनका बनाया 'याज्ञवल्क्यस्मृति भाषा' नामक ग्रंथ, जो सं० १९३० (१८७३ ई०) का लिखा है पर जिसका रचनाकाल अज्ञात है, मिला है। रचयिता के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं होता। शोध में ये नये हैं।

१३५ ग्वालकवि—यह हिन्दी का सुप्रसिद्ध कवि है और पिछली विवरणिकाओं में कई बार आ चुका है, देखिये विवरणिका (१९२०-२२ सं० ५८)। इस बार इस कवि के तीन ग्रंथ मिले हैं जिनके नाम क्रमशः "गोपी पचीसी", 'कवि हृदय विनोद' और 'नख शिख' हैं। ये सब प्रायः पिछली विवरणिकाओं में आ चुके हैं। इनकी प्रस्तुत प्रतियों में रचना काल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नहीं पाया जाता।

१३६ हैदर—इनका बनाया 'कासिद नामा' प्राप्त हुआ है। इस नाम का न तो कोई कवि पहले शोध में प्राप्त हुआ और न हिन्दी के इतिहास ग्रंथ 'सरोज' आदि में इसका

कुछ पता है । ग्रथ मे प्रेमी के वियोग दशा का वर्णन है । इसकी दो प्रतियाँ मिली है जो संवत् १९०० वि० (१८४३ ई०) की लिखी हुई है ।

१३७ हंसराज—इनके बनाये 'सनेह सागर' नामक ग्रथ की दो प्रतियां एक संवत् १८६१ (१८०४ ई०) की और दूसरी सवत् १८९४(१८३७ ई०) की लिखी हुई मिली है । रचनाकाल उनमे से एक में भी नहीं दिया गया है । यह पहले मिल चुका है, देखिये विवरणिका (१९०६-८ स० ४५ सी) । कवि पन्ना नरेश हृदय साहि सभासिह और अमानसिह के आश्रित था एव सं० १७८९ (१७३२ ई०) के लगभग वर्तमान था ।

१३८ हरनाम—इनका बनाया एक बारह मासा मिला है जिसका र० का० सं० १९१० (१८५३ ई०) है । इसकी प्रस्तुत प्रति का लि० का० अज्ञात है । रचयिता के सबन्ध मे कुछ ज्ञात नही । शोध में ये नवीन है ।

१३९ हरिचन्द्र—इनका बनाया 'राधिका जी की वधाई' नामक ग्रथ मिला है । इसकी प्रस्तुत प्रति में न तो रचनाकाल ही दिया है और न लिपिकाल ही । कवि के विषय में भी कुछ पता नहीं चलता । पिछली कई खोज विवरणिकाओं में इस नाम के कवियों का उल्लेख है, पर प्रस्तुत कवि उनमें से कोई एक है या नहीं, नहीं कहा जा सकता ।

१४० हरिदास—इनके रचे सात ग्रथों की प्रतियाँ मिली है । ये पहले विवरण में आ चुके है, देखिये खोज विवरणिकाएं (१९२०-२२, सं० ६०; १९२३-२५, सं० १५५) । ग्रथो का विवरण इस प्रकार है :—

क्र० सं०	नाम ग्रंथ	प्रतियाँ	र० का०	लि० का०
१	हरिप्रकाश	१	×	×
२	वर्षोत्सव	१	×	१८४७ (१७९० ई०)
३	गुरु नामावली	१	×	×
४	रस के पद	१	×	×
५	वाणी	२	×	×
६	पदनामावली	१	×	इन दोनो मे भिन्न भिन्न पद है ।
७	हरिदास जी का पद	१	×	

पाँचवे ग्रंथ की दो प्रतियाँ उपलब्ध हुई है ।

१४१ हरिदास—इनके 'कवित्त रामायन' के विवरण लिये गये है, जो सं० १८९६ (१८३९ ई०) में रचा और उसी समय का लिखा हुआ है । इनका मुख्य नाम सूर्य बख्श सफाई था , और ये जायस (रायबरेली) के रहने वाले थे । प्रस्तुत ग्रथ इन्हो ने महात्मा तुलसीदास जी के अनुकरण पर 'कवित्त' 'सवैयो ' में रचा है । कही कही दोहे सोरठे भी रखे है, परन्तु रामचरित मानस की अपेक्षा इसकी रचना साधारण है । भाषा की दृष्टि से यह जायसी की भाषा से मेल खाता है ।

१४२ हरिदेव—ये गोकुल मे निवास करते थे । इनके बनाये दो ग्रंथ 'रंगभाव माधुरी' एवम् 'केशव जस चन्द्रिका' प्राप्त हुए है । पहला सवत् १८७३ (१८१६ ई०) का

लिपिबद्ध और दूसरा संवत् १८६९ (१८१२ ई०) का रचा हुआ है। पहले ग्रंथ में शृंगार वर्णन है। दूसरे में कृष्ण स्वामी के शिष्य और सखी सम्प्रदाय के अनुयायी 'केशवजी (मिश्र मोहन लाल जी के पुत्र) का यश वर्णन किया गया है।

१४३ हरिप्रसाद—इनका सं० १८६० (१८०३ ई०) का रचा और संवत् १९०२ (१८४५ ई०) का लिखा 'लघुति-त्र निघण्टु' मिला है जिसमें ३३६ विविध वस्तुओं के गुण दोषों का वर्णन है।

१४४ हरिराम (कविराज)—इनका बनाया हुआ 'मृगया विहार' नामक ग्रंथ शोध में मिला है जिसका रचनाकाल और लिपिकाल एक ही संवत् १९१५ (१८५८ ई०) है। इसमें महाराज "महेन्द्र महेन्द्र सिंह जू" भदावर नरेश के शिकार का वर्णन है। विशेष विवरण भूमिका भाग ५ में दिया गया है।

१४५ हरिराय—इनकी बनाई 'शिक्षा पत्र' नामक पुस्तक शोध में मिली है जिसका रचनाकाल तो अज्ञात है, पर लि० का० सं० १९२३ (१८६६ ई०) है। रचयिता के संबंध में देखिये खोज विवरणिका (१९२३ २५, सं० १६०)। ये वल्लभाचार्य के शिष्य और सं० १६०७ (१५५० ई०) के लगभग उपस्थित थे।

१४६ हरिश्चन्द्र (भारतेन्दु)—ये हिन्दी के वर्तमान युग के महाकवि प्रसिद्ध हैं। इनके एक ग्रंथ 'सुन्दरी तिलक' का, जिसमें देव इत्यादि कई कवियों की कविता संगृहीत है विवरण लिया गया है। यह ग्रंथ प्रकाशित हो चुका है। कुछ लोगों का कथन है कि इस ग्रंथ का संग्रह भारतेन्दु जी की आज्ञा से पुरुषोत्तम शुक्ल ने किया था, देखिये, माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर आफ हिन्दुस्तान में संख्या ५८१।

१४७ हरिवल्लभ—इनके 'भगवद्गीता' के अनुवाद की ९ प्रतियाँ तथा 'राधा नाम माधुरी' ग्रंथ की एक प्रति के विवरण लिये गये हैं। पहला ग्रंथ संवत् १७०१(१६४४ ई०) का रचा हुआ है और उसकी सबसे पुरानी, प्रति सं० १८२४ (१७६७ ई०) की लिखी हुई है। दूसरे ग्रंथ का र० का० ज्ञात नहीं। लिपिकाल सं० १८७३ (१८१६ ई०) है। इसमें राधा के अनेक नाम दिये गए हैं। पहला ग्रंथ प्रायः सभी खोज विवरणिकाओं में आया है देखिये विवरणिका (१९२३ २५ सं० १५० आदि)।

१४८ हरिवंश—इनके बनाये 'रसिक विनोद', 'सुनारिन लीला', 'अनन्त व्रत कथा' तथा 'पछी चेतावनी' नामक ग्रंथों की ७ प्रतियां प्राप्त हुई हैं। रसिक विनोद संवत् १८२३ (१७६६ ई०) का बना हुआ है। शेष ग्रंथों का र० का० दिया नहीं। पहले ग्रंथ की सब से प्राचीन प्रति सं० १८४० (१७८३ ई०) की दूसरे ग्रंथ की सं० १९२६ (१८६९ ई०) की और तीसरे ग्रंथ की सं० १८३४ (१७७७) ई० को लिखी हुई हैं। ग्रंथकार पहले मिल चुका है, देखिये विवरणिका (१९०६ ८, सं० २६१)।

१४९ हरिविलास—इनकी तीन रचनाएँ मिली हैं जिनमें से 'गाने की पुस्तक' की दो प्रतियाँ और 'रागसार' एवं 'रोगाकर्पण' की एक एक प्रति के विवरण लिये गये हैं।

र० का० तीसरे के अतिरिक्त और किसी रचना में नहीं दिया है। पहली में लिपिकाल भी नही। दूसरे की पुरानी प्रति स० १९३२ = १८७५ ई० की लिखी है।

तीसरी का र० का० तथा लिपिकाल क्रम से १९१९ (१८६२ ई०) तथा सं० १९३० (१८७३ ई०) है। अंतिम ग्रथ में रचयिता के पिता का नाम दामोदर लिखा है। वे लखनऊ के निवासी थे। ग्रंथकार शोध में नवीन हैं।

१५० हजारीदास—इनका रचा 'शब्दसागर' ग्रथ पहली वार मिला है। ये टेरमऊ (जिला बाराबकी) के रहनेवाले थे। ग्रंथ में वेदान्त का विषय वर्णित है। इनका र० का० स० १८९५ = १८३८ ई० और लि० का० स० १९६७ = १९१० ई० है।

१५१ हजारीलाल—इनका बनाया 'उपदश चिकित्सा' नामक वैद्यक ग्रथ जो पहले विवरण में नही आया था, इस वार की खोज में मिला है। रचयिता इटावे के रहने-वाले थे। इससे अधिक इनके विषय में कुछ ज्ञात नही। ग्रंथ का र० का० नहीं दिया है। लि० का० स० १९१६ = १८५९ ई० है।

१५२ लाला हजारीलाल—फर्रुखाबाद निवासी का वनाया "आल्हखण्ड आल्हा निकासी" ग्रंथ का पता प्रथम वार चला है। इसकी प्रस्तुत प्रति द्वारा न तो कवि के विषय में ही कुछ ज्ञात होता है और न ग्रथ का रचनाकाल और लिपिकाल का ही पता चलता है।

१५३ हीरालाल—इनका 'सर्व संग्रह' नामक एक वैद्यक ग्रंथ सवत् १९०० (१८४३ ई०) का बना और सवत् १९२४ = १८६७ ई० का लिखा इस शोध में मिला है। इसकी दो प्रतियाँ है, पर दूसरी मे सन् सवत् का व्योरा नही। यह पहले विवरण मे आ चुका है देखिये खोज विवरणिका (१९२३–२५, सं० १६६)।

१५४ हीरामणि—इनकी 'रुक्मिणी–मगल' नामक रचना मिली है जिसमें रचना-काल का उल्लेख नहीं, पर इसकी प्रस्तुत प्रति में लि० का० स० १८७८ (१८२१ ई०) दिया है। ये 'एकादशी-महात्म्य' के साथ पिछली खोज विवरणिका (१९२३–२५, सं० १६७) पर उल्लिखित हैं। कहा जाता है कि प्रसिद्ध हिन्दी-कवि 'सेनापति' के ये गुरु थे। इनका समय १७ वी शताब्दी का मध्य है।

१५५ हित हरिवंश—ये राधा वल्लभी सम्प्रदाय के संस्थापक और हिन्दी के उत्तम कवि थे। वृंदावन निवास स्थान था। इनका समय १६ वी शताब्दी है। इनके रचे "चौरासी पदी" नासक ग्रंथ की दो प्रतियाँ और 'प्रेमलता' की एक प्रति के विवरण लिये गये है। पहला ग्रंथ कई बार विवरण में आ चुका है। देखिये खोज विवरणिकाऐं (१९००; सं० ८, १९०६–८, सं० १७४, १९०९–११, सं० १२०) और (१९२३–२५ सं० १६८)। र० का० किसी में नही दिया है। लि० का० केवल दूसरे ग्रथ की प्रति मे सं० १८२४ (१७६७ ई०) दिया है। वास्तव में ये दोनो ग्रंथ भिन्न नहीं है। उनके पद और क्रम मिलते है केवल नाम में अन्तर कर दिया गया है।

१५६ हुलास पाठक—इनके "वैद्य विलास" नासक वैद्यक विषयक ग्रंथ के विव-रण प्रथम बार लिये गये हैं। इनका अन्य विवरण अनुपलब्ध है।

१५७ इच्छाराम—इनकी रची 'गोविन्द चन्द्रिका' (र० का० १६८४ = १६२७ इ० और लि० का० सं० १९१७ = १८६० इ०) मिली है जो गत विवरणिकाओं में आ चुकी है, देखिये खोज विवरणिकाएँ (१९०६–८ सं० २६३ ए १९२३–२५ सं० १७१)। उक्त विवरणिकाओं में उल्लिखित रचनाकालों में अन्तर था जो दूसरी में शुद्ध कर दिया गया। यही शुद्ध किया गया रचनाकाल वर्तमान प्रति में भी दिया हुआ है।

१५८ ईश्वर कवि—यह कवि शोध में नवोपलब्ध है। इसके रचे दो ग्रंथों 'भक्ति रत्नमाला' और मानव प्रबोध की तीन प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं। पहला ग्रंथ सं० १९३० = १८७३ इ० में और दूसरा संवत् १९१२ = १८५५ इ० में रचा गया। लि० का० किसी प्रति का नहीं दिया गया है।

१५९ ईश्वरदास—इनका बनाया 'ग्रहफल विचार' नामक ज्योतिष ग्रंथ मिला है जिसकी प्रस्तुत प्रति में र० काल सं० १७५६ (१६९९ इ०) और लि० का० सं० १९०२ (१८४५ इ०) दिये हैं। ये अपने को जाति के खरे सक्सेना कायस्थ, लोकमणि का पुत्र तथा आगरे का रहनेवाला बतलाते हैं। इनका कथन है कि प्रस्तुत ग्रंथ इन्होंने गोपाचल (गवालियर) में लिखा था। ये खोज में नवोपलब्ध हैं।

१६० ईश्वरनाथ—इनका रचा "सत्यनारायण की कथा" का दोहाबद्ध अनुवाद मिला है। इसकी प्रस्तुत प्रति में रचना-काल नहीं दिया है, लिपिकाल संवत् १९११ (१८५४ इ०) है। रचयिता नवोपलब्ध है।

१६१ ईश्वरीप्रसाद—इनकी 'रामविलास' रामायण की चार प्रतियाँ मिली हैं। र० का० सं० १९१६ = १८५९ इ० है। इसकी सबसे प्राचीन प्रति का लि० का० सं० १९१८ (१८६१ इ०) है। रचयिता, पीरनगर (लखनऊ) निवासी कश्यपकुलोद्भव त्रिपाठी ब्राह्मण था। प्रस्तुत ग्रंथ वाल्मीकि का रामायण पद्यानुवाद है।

१६२ जगजीवन दास—ये प्रसिद्ध सत्यनामी सम्प्रदाय के संस्थापक थे। इनके रचे १९ ग्रंथों का पता लगा है जो पहले मिल चुके हैं, देखिये खोज विवरणिका (१९२३–२५ संख्या १७५)। प्राप्त ग्रंथों में से कुछ तो बड़े ग्रंथों के अंश मात्र हैं और कुछ स्वतंत्र हैं। ग्रंथों की सूची नीचे दी जाती है —

क्र० सं०	ग्रंथ	लि० का०
१	मनपूरन	१९४० (१८८३ ई०)
२	बुद्धि वृद्धि	१९४० (१८३८ इ०)
३	दृढ़ ध्यान	१९४० (१८८३ इ०)
४	विवेक मंत्र	" "
५	कहरानामा	" "
६	कहरानामा दोसर	" "
७	कहरानामा तीसर	" "
८	चरन बंदगी	" "

क्र० सं०	ग्रंथ	लि० का०
९	सरन बंदगी	" "
१०	विवेक ज्ञान	१९८७ (१९३० ई०)
११	उग्रज्ञान	" "
१२	छंदविनती	" "
१३	बारहमासा	१९४० (१८८३ ई०)
१४	स्तुति महावीरजी या जन्म चरित्र	" "
१५	स्तुति महावीर दूसरी	" "
१६	परम ग्रंथ	" "
१७	महाप्रलय	" "
१८	ज्ञान प्रकाश	" "
१९	दृष्टांत की साखी	१८५० (१७९३ ई०)

१६३ जगन्नाथ—इनके बनाये "गुरुमाहात्म्य" की दो प्रतियाँ और "मोहमर्द राजा की कथा" की तीन प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं। यह दोनो ही ग्रंथ पहले विवरण में आ चुके हैं, देखिये खोज विवरणिकाएँ (१९०९-११ सं० १२६, १९२३-२५ सं० १७६)। उक्त विवरणिकाओं में इन ग्रंथो के रचयिता भिन्न भिन्न ठहराये गए हैं। विनोद के सं० ६७६ और 'सरोज' के सं० ३० पर प्राचीन जगन्नाथ कहकर उनको गुरु चरित्र के लेखक से भिन्न माना है, देखिये विनोद सं० (६३२)। दोनो के रचनाकालो में अधिक अन्तर नहीं है। गुरु चरित्र सं० १७६० में रचा गया और मोहमर्द की कथा सं० १७७६ में। एकी रचयिता की दो रचनाओ के समय में इतना अन्तर होना असंभव नही है। इसके अतिरिक्त इन दोनो लेखको के अभिन्न होने का पुष्ट प्रमाण यह भी है कि अपने को किसी तुलसीदास का सेवक बतलाते हैं। साथ ही दोनो की रचना-शैली अभिन्न है। प्रमाण के लिये दोनों ग्रंथो से एक एक उदाहरण दिया जाता है।

स्वामी तुलसी दास के, सेवक अति ही हीन।
जगन्नाथ भाषण रचन, गुरु चरित्र गुन कीन॥

—गुरु चरित्र

स्वामी तुरसी दास जु धरयो सिर हाथ।
यह मोहमरदन कथा कही जन जगन्नाथ॥

—मोह मर्द राजा की कथा

यद्यपि लिपि कर्त्ताओ की असावधानी से दूसरा दोहा कुछ अशुद्ध हो गया है, फिर भी उनके तात्पर्य में कोई अन्तर नही पडता। गुरु चरित्र की सबसे प्राचीन प्रति सं० १७८६-(१७२९ ई०) की लिखी है और मोहमर्द राजा की कथा की सं० १८६० (१८०३ ई०) की।

१६४—जगन्नाथ भट्ट—सार चद्रिका' नामक ग्रथ के ये रचयिता हैं। ग्रथ की दो प्रतियां मिली हैं जिनमें रचनाकाल नहा दिया है। ग्रथ में बशी, किशोरी, और रली आदि सखी सम्प्रदाय के कुछ महात्माओं के पदों का सग्रह किया गया है। ग्रथकार 'रस प्रकाश' ग्रथ के साथ पिछली एक खोज विवरणिका में आ चुका है, देखिये विवरणिका (१९१७–१९, स० ७९)।

१६५ जगन्नाथ दास—इनके रचे 'धम गीता' देवीपूजनादिमत्र' तथा 'वैदिक मत्र नामक तीन ग्रथ शोध में मिले हैं। तीनों ग्रथ गद्य में हैं। रचनाकाल किसी भी ग्रथ का नहीं दिया है। लि० का० दो प्रतियों में क्रम से स० १८७२=१८१५ ई० और स० १९३२=१८७५ ई० हैं। रचयिता फैजाबाद के निवासी थे। इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

१६६ जगतमणि—इनके रचे "जैमिन पुराण' की तीन प्रतियां मिली हैं। ग्रथ का र० का० स० १७२४ १७२७ ई० है। लि० का० सबसे प्राचीन प्रति का स० १८६८ (१८११ ई०) है। रचना साधारण है। रचयिता के विषय में और कुछ ज्ञात नहीं।

१६७ जनदयाल—इनके बनाये 'धर्मसवाद के विवरण लिये गये हैं जिसकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नहीं है। रचयिता 'प्रेमलीला ग्रथ के साथ पहले विवरण में आ चुके हैं, देखिये खोज विवरणिका (१९०६–८, सख्या २६८)।

१६८ जनार्दन भट्ट—इनके रचे 'वैद्य रत्न" की चार प्रतियाँ मिली हैं। र० का० उनमें से एक में भी नहीं दिया है। सबसे प्राचीन प्रति स० १८८७=१८३० ई० की लिखी हुई है। इस ग्रथ के पहले भी विवरण लिये जा चुके हैं, देखिये खोज विवरणिकाएँ (१९०२, स० १०५ १९०६–८ स० २६७ आदि)।

१६९ 'जसवतराय—इनका बनाया हुआ "सागीत गुलशन' (र० का० १८९९=१८४२ ई० और लि० का० १९१८=१८६१ ई०) मिला है। ये जाति के सकसेना कायस्थ और एटा के निवासी थे। खोज में ये नवोपलब्ध हैं। ग्रथ में राग रागिनियाँ सगृहीत हैं।

१७० (राजा) जसवत सिंह—भाषाभूषण के रचयिता के रूपमें ये प्रसिद्ध हैं, देखिये खोज विवरणिकाएँ (१९२० २२, स० १०० १९२३ २५, स० १८३)। उक्त ग्रथ की एक प्रति और मिली है जिसमें र० का० एवम् लिपिकाल नहीं दिये हैं।

१७१ जवाहरदास—इनका 'महापद' नामक ग्रथ मिला है। खोज में ये नवोपलब्ध हैं। विनोद और सरोज में इनका उल्लेख नहीं तथा डा० ग्रियुसन ने भी इनके विषय में कुछ नहीं लिखा है। ये आगरा जिले में स्थित प्रसिद्ध कस्बा फिरोजाबाद के निवासी थे। अपने को शूद्रवश का भूषण बतलाते हैं। गुरु का नाम राम रत्न था।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति स्वय रचयिता की हस्तलिपि में है। यह स० १८८८ (१८३१ ई०) और स० १८८९ (१८३२ ई०) की लिखी है।—रचयिता के विशेष वृत्त के लिये देखिये भूमिका भाग सख्या० १।

१७२ जयदयाल—इनके रचे 'प्रेमसागर' ग्रंथ के नौ खण्डों यथा विज्ञानखण्ड, बलभद्रखण्ड, विश्वजितखण्ड, द्वारिकाखण्ड, मथुराखण्ड, माधुर्यखड, गोवर्द्धनखण्ड, वृन्दावन-खण्ड, और गोलोकखण्ड के विवरण लिये गये हैं। ग्रथ का रचनाकाल संवत् १९०६ (१८४९ ई०) है और इनकी प्रस्तुत प्रतियाँ १९०९ (१८५२ ई०) की लिखी हैं। रचयिता पहले खोज मे मिल चुका है, देखिये खोज विवरणिका (१९१७-१९, सं० ८६)।

१७३ जयजय राम—इस खोज में इनका बनाया "ब्रह्म वैवर्त्य पुराण" जिसका रचनाकाल सं० १८६७ (१८१० ई०) है, मिला है। पिछली खोज विवरणिका (१९१७-१९, सं० ८७) में यह उल्लिखित है।

१७४ जयलाल—ये किसी पुरुषोत्तमदास के शिष्य थे। इनके रचे निम्नलिखित ग्रंथ मिले हैं जिनमे से किसी में भी र० का० नहीं दिया है:—

क्र० सं०	ग्रंथ	प्रति	सबसे प्राचीन प्रति का लि० का०
१	गर्भचिन्तामणि	१	सं० १९०४ (१८४७ ई०)
२	जैलालकृति	२	„ १९०१ (१८४४ „)
३	जैलालकृत ख्याल	१	„ „ „
४	कठिन औषधि संग्रह	१	„ १८५५ (१७९८ „)
५	श्रीकृष्णजी की विन्ती	२	„ १९०४ (१८४७ „)
	कुल	८	

कवि के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नही। वह खोज में नवीन है।

१७५ जेठमल—इन्होने संवत् १७१० (१६५३ ई०) में "नरसी मेहता की हुंडी" की रचना की जिसकी एक प्रति मिली है। लि० का० केवल एक प्रति में सं० १८५६ (१७९९ ई०) दिया है। ग्रंथ पहले मिल चुका है, देखिये खोज विवरणिका (१९०१ स० ७७)।

१७६ झुनकलाल जैन—इनके बनाये "नेमिनाथ जी के छन्द" मिले है जिनकी रचना सवत् १८४३ (१७८६ ई०) में हुई। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में लि० का० स० १९१३ (१८५६ ई०) है। रचयिता जैनी थे। इनका विशेष परिचय नही मिलता।

१७७ जुगतराय—इनकी "छन्द रत्नावली" मिली है जो सं० १७३० = १६७३ ई० की रची और जिसकी प्रस्तुत प्रति सं० १९०८-(१८५१ ई०) की लिखी है। ये खोज में नवोपलब्ध है। ये आगरा के निवासी और इन्होंने किसी हिम्मतखान (हिम्मत खाँ) की आज्ञानुसार इस ग्रंथ की रचना की। ग्रंथ पिंगल विषय का है। इसमें कुल सात अध्याय हैं। छठे अध्याय मे फारसी के छन्दो पर भी प्रकाश डाला गया है। अन्य पिंगल ग्रथो से इसमें यही विशेषता है।

१७८ कबीरदास- ये प्रसिद्ध महात्मा पिछली कई खोज विवरणिकाओ में अनेक ग्रंथो के रचयिता के रूप में उल्लिखित है, देखिये खोज विवरणिकाएँ १९१७-१९, स० ९२,

१९२० २२, स० ७४, १९२३ २५, स० १९८)। इसबार इनके १६ ग्रथों की २२ प्रतियाँ हस्तगत हुई हैं जिनका विवरण नीचे दिया जाता है —

क्रम सख्या	ग्रथ का नाम	प्रतियों की गणना	सबसे प्राचीन प्रति का लि०का०
१	अखरावत	३	स० १८७४=१८१७ इ०
२	बीजक तथा बीजक रमैनी	३	„ १८८५=१८२८ „
३	दत्तात्रय की गोष्ठी	१	, ×
४	ज्ञान स्थित ग्रथ	२	, १८७० = १८१३ „
५	झूलना	२	„ ×
६	कबीरगोरख गोष्ठी	१	, ×
७	कबीर के पद	१	„ १६९६ = १६३९ „
८	कबीर के वचन	१	„ ×
९	कबीर सुरति योग	१	×
१०	कुरम्हावली	१	×
११	रमैनी	१	×
१२	रेख्ता	१	×
१३	साधु महात्म्य	१	×
१४	सुरति श द सम्वाद	१	×
१५	स्वाँस गुजार	१	×
१६	वशिष्ठ-गोष्ठी	१	×

रचयिता का विस्तृत विवेचन भूमिका भाग सख्या ६ में किया गया है।

१७९ कालिका चरण—इनकी स्तुति विषयक 'कृष्ण क्रीडा" नामक रचना की दो प्रतियाँ मिली हैं। र० का० अज्ञात है। लि० का० एक प्रति का स० १९११ (१८५४ इ०) है और दूसरी का स० १९२० (१८६३ ई०)।

१८० कालीप्रसन्न—"नरकों के पापी" नाम से इनका एक ग्रथ मिला है जिसमें पापियों के नरक में जाने पर उनके पापों के फलस्वरूप भिन्न भिन्न यातनाओं का वणन है। नैतिक बातों का पालन करने की दृष्टि से ग्रथ उपयोगी है। इसकी प्रस्तुत प्रति में रचना काल और लिपिकाल नहीं दिये ह। रचयिता का भी कोइ वृत्त नहीं मिलता। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

१८१ कमलाकर—इनके "भृगुगण-गोत्र" और "गोत्रप्रवर" नामसे एक ही विषय के दो ग्रथ मिले हे। अन्य वृत्त इनका उपलब्ध नहीं। विनोद के सख्या १९१५ पर इस नाम का एक ग्रथकार है, परन्तु उससे इनको अभिन्न मानने के लिये कोइ प्रमाण नहीं। ग्रथों का र० का० अज्ञात है। लिपिकाल पहले में स० १९२६ (१८६९ ३०) और दूसरे में स० १९२७ (१८७० ई०) दिये हैं।

१८२ कनकसिह—'दशम स्कन्ध भाषा' नाम से इनके एक ग्रथ के विवरण लिये गये हैं। ग्रंथ का रचनाकाल ज्ञात नही। इसकी प्रति संवत् १८५५ (१७९८ ई०) की लिखी हुई है। ग्रथकार जाति के कायस्थ थे। इससे अधिक कुछ ज्ञात नही।

१८३ कान्ह् कवि—शृगार विषय पर लिखा हुआ 'रसरंग-नायिका' ग्रंथ मिला है। इस नाम के एक कवि की 'नखशिख' और 'देवी विनय' नामक रचनाएँ पहले विवरण में आई हैं, देखिए खोज-विवरणिकाएँ (१९०३, सं० ९०, १९०६-८, सं० २७७) परन्तु प्रस्तुत कवि से उसकी एकता स्थापित करने के लिये कोई प्रमाण नही। ग्रथ का र० का० स० १८०४ (१७४७ ई०) तथा लि० का० स० १८८१ (१८२४ ई०) हैं। रचनाकाल का दोहा इस प्रकार है:—

"संमत धृति[१८] सत जुग[४] बरष, कान्हा सुकवि प्रसंग
क्वार सुदी तेरसि ससि, रच्यो ग्रंथ रस रंग॥"

जाँच करने पर चन्द्रवार, ५ अक्टूबर सन् १७४७ ई० को ठहरता है। पिछली विवरणिकाएँ, उनमें उल्लिखित, कवि का जन्म-काल सं० १९१४ (१८५७ ई०) मानती है। डा० ग्रियर्सन इस नाम के दो कवियो का उल्लेख करते है और उनमें से एक का जन्म काल सन् १७९५ और दूसरे का उक्त विवरणिकाओं के अनुसार १७५७ ई० मानते हैं; परन्तु प्रस्तुत कवि इन सबसे पुराना है।

१८४ करमअली—इनका रचा हुआ 'निज उपाय' नामक वैद्यक ग्रथ पहले पहल मिला है। इसका र० का० १०९८ हि० १७९० ई० है। ग्रंथ के आरभ में कवि ने मोहम्मद की वन्दना की है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति बहुत अशुद्ध लिखी है।

१८५ करनीदान—इनके रचे 'बृहद्शृंगार' ग्रथ प्राप्त हुआ है जिसके विवरण लिये गये है। ग्रथ का र० का० नही दिया है। लि० का० स० १८२८ वि० = १७७१ ई० है। यह पिछली शोध मे मिल चुका है, देखिये खोज विवरणिका (१९०१, स० १०५)। कवि का र० का० सवत् १७८५ (सन् १७२८ ई०) माना गया है। ये जोधपुर नरेश अभयसिंह के आश्रित थे जिन्होने इनको जागीर तथा कविराज की उपाधि से विभूषित किया था।

१८६ कर्त्तानन्द—इनके रचे 'एकादशी महात्म्य' की चार प्रतियाँ प्राप्त हुई है जिनमें सबसे प्राचीन प्रति सं० १९०० (१८४३ ई०) की लिखी है। ग्रंथ का र० का० स० १८३२ (१७७५ ई०) है। ग्रथकार अपने को फरुखाबाद का निवासी और स्वा० 'चरणदास' की शिष्या सहजोबाई का शिष्य बतलाता है।

१८७ काशीगिरी बनारसी—इनका बनाया 'ख्याल मराठी' नामक रचना प्राप्त हुई है जिसका रचनाकाल अनुपलब्ध है। लि० का० स० १९४० (१८८३ ई०) है। इसमें अरबी फारसी मिश्रित खडी बोली का व्यवहार हुआ है।

१८८ काशीनाथ—इनका 'भरतरी चरित्र' मिला है जिसकी प्रस्तुत प्रति में र० का० नही दिया है। लिपिकाल सं० १९१६ (१८५९ ई०) है। रचयिता नवोपलब्ध है।

१८९ काशीराज—इनके दो ग्रथ 'चित्र चन्द्रिका' और 'मुष्टिक प्रश्न' मिले है। पहले ग्रथ का र० का० स० १८८९ = १८३२ ई० है और वह पिछली शोध में मिल चुका है, देखिये खोज विवरणिकाए (१९०९ ११, स० १४५ १९२३ २५, स० २०५)। दूसरे ग्रथ का र० का० विन्ति नहा। उसकी प्रति स० १८०२=१७४५ ई० की लिखी है। यह ज्योतिष विषय का है। रचयिता बनारस के महाराजा चेतसिह के पुत्र थे। इनका वास्तविक नाम बलवान सिंह और उपनाम 'काशिराज' था।

१९० कवीन्द्र—इनके 'योग वाशिष्ट सार' अथवा 'वसिष्टसार' की दो प्रतियों के विवरण लिये गये हैं जिनके अनुसार ग्रथ का र० का० स० १७१४ = १६५७ ई० है। लि० का० किसी प्रति में नहा दिया है। ग्रथ पहले मिल चुका है, देखिये खोज विवरणिकाए (१९०६ ८, स० २७६ १९२० २२, स० ७९)।

१९१ केशवराय कायस्थ—इनके (गणेशवृत्त कथा) की चार प्रतियों के विवरण लिये गये हैं। र० का० किसी प्रति में नहा दिया है। लि० का० सबसे प्राचीन प्रति का स० १८४० (१७८३ ई०) है। रचयिता 'जैमुनी की कथा' वाले केशव राय से अभिन्न जान पडते है, देखिये खोज विवरणिका (१९०५, स० ८४)। ये सवत् १७५३ (१६९६ ई०) के लगभग वर्तमान थे। पिता का नाम माधवदास और भाई का नाम मुरलीधर था। ओडछा नरेश महाराज छत्रसाल से इन्हें एक ग्राम प्राप्त हुआ था। बुदेलखड के इतिहास में दी हुई कवियों की सूची में प्रस्तुत ग्रथ के साथ इनका नाम अकित है।

१९२ केशवदास मिश्र—ये ओरछा निवासी थे और इनके रचे ग्रथ पिछली कई खोज विवरणिओं में उल्लिखित है। ये भाषा साहित्य के सर्वप्रथम आचार्य एव हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि है। इस शोध में प्राप्त इनके ग्रथों की सूची नीचे दी जाती है —

क्र० स०	ग्रथ का नाम	प्रतियों की गणना	सबसे प्राचीन प्रति का लि० का०
१	रामचन्द्रिका	३	स० १८४९ = १८९२ ई०
२	कविप्रिया	२	,, १८८२ = १८२५ ,,
३	रसिकप्रिया	१	,, १९०८ = १८५१ ,,
४	विज्ञानगीता	१	,, १८४९ = १७९२ ,,

प्राय सभी ग्रथ पहले मिल चुके हैं, देखिये खोज विवरणिकाए (१९२० २२ स० ८२ १९२३–२५, स० २०७)।

१९३ केशवप्रसाद—यह ग्रथकार शोध में नवोपलब्ध है। इनके बनाये निम्न लिखित ५ ग्रथ प्राप्त हुए हैं। ये राघन ग्राम (कानपुर) के निवासी और आगरा कालिज में सस्कृत के प्रधान पण्डित थे। काव्य, कोश तथा वैद्यक आदि में निपुण थे। इनके पितामह का नाम देवकी राम द्विवेदी पिता का नाम परमसुख और भाई का नाम बलदेव था। अपने पिता के साथ ही आगरा आये और प० हीरालाल नामक एक अध्यापक की सहायता से वहाँ रहे —

क्र० स०	ग्रंथ का नाम	प्रतियाँ	र० का० स० = ई० सन्,	लि० का० ई० सन्
१	अंगस्फुरण ग्रथ	१	१९२६ = १८६९	„ १९३१=१८७४ ई०
२	होरा व शकुनगमन	१	×	१९३० = १८७३ „
३	ज्योतिप भाषा	१	×	१९३९ = १८८२ „
४	ज्योतिपसार	२	१९३० = १८७३	„ १९३३ = १८७६ „
५	वैद्यकसार	३	१९२७ = १८७०	„ १९३० = १८७३ „

१९४ केशवसिह—'इनके पशुचिकित्सा' ग्रथ की चार प्रतियाँ प्राप्त हुई है। र० का० स० १९३१=१८७४ ई० है और सबसे प्राचीन प्रति में लि० का० सं० १९३६=१८७९ ई० दिया है। रचयिता नवोपलब्ध है। विनोदादि ग्रथो मे भी इनका पता नही चलता। ये जाति के अहीर और उन्नाव जिले के पियरी ग्राम के निवासी थे।

१९५ खेमदास - यह मधनापुर (ज़िला बाराबंकी) के निवासी और कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। एक ब्रह्मचारी से उपदेश लेकर इन्हों ने दस वर्ष तक कठिन तपस्या की, परन्तु उससे ज्ञान मे कुछ वृद्धि न देख कर (सत्यनामी सम्प्रदाय के सस्थापक जगजीवन दास के शिष्य हो गये। तदोपरान्त हरिसकरी नामक स्थान पर रहकर भजन करने लगे। इन्होंने अपने स्फुट भजनो के अतिरिक्त, (काशीकाण्ड), (शब्दावली) तथा (तत्तसार दोहावली) नामक तीन ग्रथ रचे जिनमें भक्ति एवम् ज्ञान का वर्णन है। पहली पुस्तक संवत् १८२७ (१७७० ई०) मे रची गई। लिपिकाल तीनो ग्रथो का एक ही सवत् १९५६ (१८९७ ई०) है।

१९६ खेतसिंह—इनके बनाये "वैद्य-प्रिया" नामक ग्रंथ का पता लगा है। इसका र० का० सं० १८७२ (१८१५ ई०) और लि० का० स० १९०३ (१८४६ ई०) है। यह ग्रथ पहले खोज में मिल चुका है। देखिये खोज विवरणिका (१९०६–८,सं० ६०सी)।

१९७ खुशीलाल—इनकी एक बारहमासी 'रसरंग' नाम से मिली है जो सं० १९२५ (१८६८ ई०) में रची गयी। इसकी प्रस्तुत प्रति का लि० का० स० १९४० (१८८३ ई०) है। रचयिता बरजीपुर (कानपुर) के निवासी थे। जाति के ये कायस्थ, (श्रीवास्तव दूसरे) थे, और इनके पिता का नाम देवीदयाल था।

१९८ किशोरीदास—इनकी 'वाणी' के विवरण लिए गये है। कहा जाता है कि ये गौडीय संप्रदाय के अनुयायी और दो सौ वर्ष पूर्व वृन्दावन में निवास करते थे। संभवतः ये मि० ब० वि० के सं० ६०५/१ वाले कवि है। वहाँ इनका काल स १७५७ = १७०० ई० माना है।

१९९ कोक—इनके बनाये "सामुद्रिक या नारीदूषण" की दो प्रतियाँ और "कोक विद्या" की एक प्रति के विवरण लिये गये है। र० का० दोनो ग्रथो का अज्ञात है। इनकी प्रस्तुत प्रतियो मे पहली का लि० का० स १७१० (१६५३ ई०) है और दूसरी का स० १८९० = १८३३ ई०। रचयिता के नाम पर उक्त विषयो के छोटे मोटे ग्रथ बहुत से पाये गये है जिनके विषय मे देखिये खोज विवरणिका (१९२३–२५, सं० २१५)।

२०० कृष्णदत्त—इनका "कवि विनोद" नामक ज्योतिष ग्रंथ का, जो सं० १९२८ = १८७१ ई० में रचा गया, विवरण लिया गया है। यह ग्रंथ महाभट्ट त्रिलोकीचन्द्र की आज्ञा से "लावनी" चाल में संस्कृत से भाषा में अनूदित हुआ है। कवि जाति का ब्राह्मण था। इससे अधिक उसके विषय में कुछ ज्ञात नहीं।

२०१ कृष्णदास—ये सुप्रसिद्ध स्वामी 'हित हरिवंश जी' के द्वितीय पुत्र थे। इनके रचे पदों का एक संग्रह जिसमें रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नहीं इस शोध में प्राप्त हुआ है। इनके "पद सिद्धांत" का उल्लेख पिछली खोज विवरणिका (१९१२–१४, सं० ९५) में हो चुका है जिसके अनुसार रचयिता सं० १६२६ (१५६९ ई०) के लगभग वर्तमान था। मिश्रबन्धु विनोद के सं० $\frac{१३१}{१}$ पर भी इनका नाम 'कृष्ण चंद्र गोस्वामी हित' के नाम से आया है।

२०२ कृष्णदास आदि 'मंगल संग्रह' नाम से एक संग्रह ग्रंथ इस शोध में मिला है जिसमें कई महात्माओं के मंगल संबंधी पद संगृहीत हैं। ग्रंथ का मुख्य रचयिता कृष्णदास माना गया है। संभव है वही संग्रहकर्त्ता भी हो। उसकी प्रस्तुत प्रति में कोई संवत् नहीं दिया है। यह पहले विवरण में आ चुका है, देखिये खोज विवरणिका (१९१२—१४, सं ९७)। उसके अनुसार रचयिता का समय संवत् १८५३ = १७९६ ई० के लगभग ज्ञात होता है।

२०३ कृष्णदास—यह इस नाम के प्रायः सभी ग्रंथ कर्ताओं से भिन्न प्रतीत होते हैं। इनके रचे हुए "ज्ञान प्रकाश" ग्रंथ की दो प्रतियाँ मिली हैं जिनमें से केवल एक में ही लिपिकाल संवत् १९१० = १८५३ ई० दिया है। रचनाकाल ज्ञात नहीं। ग्रंथ में, जो गुरु शिष्य संवाद के रूप में है, वेदांत का सार दिया है।

२०४ कृष्णदास—यह कवि शोध में नवोपलब्ध है। इसका रचा "पंचाध्यायी" ग्रंथ पहले पहल मिला है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति फारसी लिपि में है जिसमें लिपिकाल सं० १९१० (१८५३ ई०) दिया गया है। रचनाकाल अस्पष्ट है—

'शुक्लपक्ष तिथि पूर्णिमा, अश्वनिमास पुनीत।
बनछाभूलन विविध, अरननील सुतपीत ॥'

कवि अपने को सनाढ्य ब्राह्मण, खेमकरण मिश्र का शिष्य, सक्सेना कायस्थ तथा रामपुर शमशाबाद का निवासी बतलाता है।

२०५ कृष्णकवि—इनकी रची "बिहारी सतसई" और 'विदुर प्रजागर' की टीकाओं की तीन प्रतियाँ इस शोध में मिली हैं। पहले ग्रंथ की प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नहीं। दूसरे की प्रति में १७९२ (१७३५ ई०) रचना काल और सं० १९११ (१८५४ ई०) लिपिकाल दिये हैं। ये दोनों ग्रंथ पिछली खोज में आ चुके हैं। देखिये खोज विवरणिकाएँ (१९२०–२२, सं ८६, १९२६–२८, सं० २४८)।

२०६ कुद्रतुल्ला (फर्रुखाबादी)—इनकी 'रागमाला' एवम् 'खेल बंगाला' का पता प्रथम बार लगा है। इनके संबंध में विशेष कुछ ज्ञात नहीं। ग्रंथों का रचनाकाल

अज्ञात है। लिपिकाल क्रमशः स० १९३७ (१८८० ई०) और स० १९०९ (१८५२ ई०) हैं।

२०७ कुन्दनदास—इनके रचे 'उपदेशावली' और 'रामविलास' नामक दो ग्रंथ मिले हैं। पहले का विषय भक्ति और उपदेश है, दूसरे में रामचरित्र का वर्णन किया गया है। र० का० किसी ग्रंथ का नही दिया है। लिपिकाल केवल पहले ग्रथ की प्रति में स० १८९३ (१८३६ ई०) दिया है। कवि ने अपने गुरु का नाम 'हीराराम' बतलाया है जिनकी मृत्यु स० १९९१ में हुई थी।

२०८ लाड़िली प्रसाद—इनके बनाये 'लघुतिब्ब निघण्टु' की दो प्रतियाँ शोध मे प्राप्त हुई है, अन्य विवरण इनका अप्राप्त है। ग्रंथ की प्राप्त प्रतियों में रचनाकाल नहीं दिया है, लि० का० क्रमशः सं० १९३२ (१८७५ ई०) और सं० १९३६ (१८७९ ई०) है।

२०९ लघुलाल—इनका 'रासगोल दैयकी सार' ग्रथ मिला है। अन्य वृत्त अप्राप्त है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में न तो रचनाकाल ही दिया है और न लिपिकाल ही।

२१० ललितलाल—इनका 'भगवतभूषण' नासक ग्रंथ के जो १९०१ १८४४ ई० का रचा हुआ है विवरण लिये गये हैं। ग्रंथ धौलपुर नरेश भगवतसिंह के लिये रचा गया। इसमे उक्त राज्य के सभी स्थानो के विवरण देने के अतिरिक्त वहाँ के सामाजिक उत्सवों, मेलो और राजके कार्यो के विषय में वर्णन किया गया है। रचयिता नवोपलब्ध है।

२११ लल्लूभाई—'उदाहरणमंजरी' नामक ग्रंथ के ये रचयिता है। ग्रथ का र० का० स० १८३३ (१७७६ ई०) और लिपिकाल सं० १८३६=१७७९ ई० है। इसमें 'भाषा भूषण' मे वर्णित अलङ्कारो के उदाहरण दिये गये हैं। रचयिता भृगुपुर (वर्तमान भडोच रियासत गवालियर) का निवासी था।

२१२ लल्लूजी लाल—इनके रचे तीन ग्रथ 'प्रेमसागर', 'राजनीति' और सभा-विलास' मिले है। पहले ग्रथ का र० का० स १८६० = १८०३ ई० और लि० का० स० १९१० = १८५३ ई० है। दूसरे का रचना काल सं० १८५९ (१८०२ ई०) और लि० का० स १८६७ = १८१० ई० है तथा तीसरे ग्रथ का रचनाकाल सं० १८७० (१८१३ ई०) है और लिपिकाल स० १८७३ = १८१६ ई० ह। ये सभी ग्रथ पिछली खोज में मिल चुके है देखिये खोज विवरणिकाएँ (१९०९–११, स० १७४, १९२६-२८, सं० २६६)।

२१३ लोककवि—इनके रचे 'कन्दुक क्रीडा' नासक ग्रंथ की एक प्रति के विवरण लिये गये है जिसमे 'श्री कृष्ण की गेद लीला' तथा कुछ अन्य लीलाओ का वर्णन है। कविता साधारण है। रचनाकाल ज्ञात नहीं। लि० का० सं० १८०५ = १७४८ ई० है।

२१४ माधव—इन्हो ने 'भगवद्गीता' पर "सुबोधिनी" नामक टीका रची है टीका का रचनाकाल अज्ञात है। लि० का० स० १९१८ = १८६१ ई० दिया है। कवि के सम्बन्ध में कुछ ज्ञात नही है। सभव है खोज विवरणिका (१९२२–१४, सं० १०४, १९२३–२५ स० २५४) पर उल्लिखित इस नाम के रचयिता यही हो।

२१५ माधवदास—प्रस्तुत खोज मे इनके रचे "जन्म-कर्म-लीला" की एक प्रति और "करुणा बत्तीसी" की चार प्रतियो के विवरण लिये गये है। रचनाकाल दोनो ग्रंथो

का अज्ञात है। ग्रंथ पिछली खोज में आ चुका है। देखिये खोज विवरणिका (१९०१, सं० ७८, १९२६-२८ सं० २७५)।

७१६ माधव—इनके रचे 'नासिकेतुकथा' की दो प्रतियाँ मिली हैं। र० का० अज्ञात है लि० का० केवल एक प्रति में सं० १८८७ = १८३० ई० दिया है। कवि के सम्बन्ध में कुछ ज्ञात नहीं। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

७१७ माधवदास कत्थक—यह रीवां नरेश महाराज विश्वनाथसिंह के आश्रित थे। उन्होंने ही इनको सिखाया पढ़ाया एवं इनका पालन पोषण किया था। प्रस्तुत खोज में इनकी 'आदि रामायण' नामक रचना पहले पहल मिली है जिसमें रामायण की पद्यबद्ध टीका है। ये रीवाँ के निवासी गंगाप्रसाद के नाती और काशीराम के पुत्र थे। ग्रंथ का दूसरा नाम 'माधव मधुर रामायण' भी है।

७१८ मधूसूदनदास—इनका रचा "हृत प्रकाश" नामक वेदान्त ग्रंथ मिला है। उसका र० का० सं० १७४९ (१६९२ ई०) और लि० का० सं० १८७२ (१८१५ ई०) है। रचयिता 'कृष्णदास' रामानुज वैष्णव को अपना गुरु बतलाते हैं। इस नाम के दो कवि "सरोज" और "विनोद" में आये हैं किन्तु ये इनसे भिन्न हैं।

७१९ महादेव—इनकी रची ध्रुवलीला की एक प्रति और 'बारहमासा' की दो प्रतियां प्राप्त हुई हैं। रचनाकाल किसी भी प्रति में नहीं है। लि० का० दो प्रतियों में क्रमशः सं० १९५० और सं० १९३९ है। रचयिता जाति का "अयोध्यावासी वैश्य" और मैनपुरी का निवासी था। पहला ग्रंथ पिछली खोज में आ चुका है (देखिये खोज विवरणिका १९२६-२८, सं० २८०)।

७२० महेशदत्त शुक्ल धनोली (बाराबंकी)—इनके रचे निम्नलिखित दस ग्रंथों की १२ प्रतियों के विवरण लिये गये हैं जिनमें सं० २ की ३ प्रतियां हैं और शेष की एक एक। र० का० संख्या १ का सं० १९३० (१८७३ ई०), संख्या ६ का सं० १९२९ (१८७२ ई०) तथा सं० ७ का १९३० (१८७३ ई०) है। शेष में र० का० दिया नहीं। रचयिता अपने दो ग्रंथों 'अठारह पुराण' और 'पच्चीस अवतारों के नाम' के साथ पिछली खोज विवरणिका (१९२६-२८, सं० २८७) में उल्लिखित है—

क्र० सं०	ग्रंथ	लि० का०	क्र० सं०	ग्रंथ	लि० का०
१	अमरकोश भा० टी०	१९४० = १८८३ ई०	२	नरसिंह पुराण	१९३६ = १८७९ ई०
३	वाल्मीकीयरामायण बालकांड	१९३६ = १८७९ ,,	४	वाल्मीकीय रा० अयो०	१९३४ = १८७७ ,,
५	,, ,, अरण्य	,, ,,	६	कि० का०	१९४० = १८८३ ,,
७	,, ,, सुन्दर	१९४० = १८८३ ,	८	लं० का० सं०	१९३८ = १८८१ ,,
९	,, ,, उत्तर का०	,	१०	विष्णुपुराण	१९३० = १८७३ ,,

७२१ महेशदत्त त्रिपाठी—इनका हिन्दू व्रतों के विषय में 'व्रतार्क भाषा' नामक ग्रंथ मिला है। यह नीलकण्ठात्मज शङ्करभट्ट प्रणीत 'व्रतार्क' नामक संस्कृत ग्रंथ की टीका है। अनुसंधान से ज्ञात हुआ है कि लेखक [illegible] (सुलतानपुर) का निवासी था। प्रस्तुत ग्रंथ पहले नवलकिशोर प्रेस लखनऊ में छपा था।

२३६ मुकुंदराय—इनका रचा 'ज्ञानमाला' नामक ग्रंथ मिला है जिसमें 'कृष्णार्जुन सवाद' के व्याज से जनता को सुकर्मों और कुकर्मों का भेद समझाते हुए व्यावहारिक शिक्षा दी है। अन्य वृत्त अप्राप्त है। ग्रथ का रचनाकाल दिया नहीं। इसकी प्रस्तुत प्रति का लिपिकाल सवत् १९०० (१८४३ ई०) है।

२३७ मुनींद्र जैन—इनका रचा 'रवि व्रत-कथा' नामक जैन धर्म विषयक ग्रथ का पहले पहल विवरण लिया गया है। इनका र० का० स० १७४३ (१६८६ ई०) और लि० का० स० १८५५ (१७९८ ई०) है।

ग्रथकार विगथरा ग्राम के निवासी थे और गोपाचल में जाकर रहते थे। इनका पूरा नाम सुरेन्द्र कीर्ति मुनीन्द्र था। इन्हे गोपाचल के देवेंद्र कीर्ति मुनीन्द्र का पद प्राप्त हुआ था। गोपाचल के जैसवाल वंशोद्भव साहि जसवत के भ्राता भगवंत की धर्मपत्नी की प्रार्थना पर प्रस्तुत ग्रंथ की रचना हुई।

२३८ मुन्नूलाल—इनकी बनाई 'चित्रगुप्त की कथा' के विवरण लिये गये हैं। र० का० स० १८५१ (१७९४ ई०) है। लि० का० १२४६ हि० (१८८५ वि० या १८२८ ई०) दिया है। रचयिता सैर कोट (प्रयाग) के रहनेवाले माथुर कायस्थ थे। इनके पिता का नाम इंद्रजीत और अल्ल 'माउले' थी। इनकी रचना प्रायः दोहा-चौपाइयों मे साधारण-श्रेणी की हुई है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति अरबी लिपि में है।

२३९ मुरली—इनका बनाया 'प्रियव्रत व ध्रुवचरित्र' नामक ग्रंथ मिला है। ग्रथारंभ मे 'मंत्र' की तरह कुछ वाक्य लिखे हैं और कुछ ग्रामों एव नदियों आदि के भी नाम दिये है। इनसे ग्रंथ का कोई संबध नही जान पडता। रचयिता संभवतः खोज-विवणिका (१९२६-२८, सं ३१२) पर उल्लिखित मुरली ज्ञात होते है जिन्होंने 'गुरु महिमा' लिखी है। उनका भी परिचय अज्ञात है।

२४० मुरलीधर (मिश्र)—इनका बनाया "श्रृगार-सार" मिला है जिसमे श्रृगार रस का विवेचन किया गया है। यह माथुर चौबे थे और 'रस सग्रह' 'पिङ्गल-विषय' एव 'नखशिख' के साथ पिछली खोज विवणिकाओ में उल्लिखित है। देखिये खोज विवरणिका (१९२३-२५, स० २८८)। ये सवत् १८१८ (१७६१ ई०) के लगभग वर्तमान थे।

२४१ नागरीदास—इनका बनाया 'भागवत दशम स्कंध' का पद्यानुवाद मिला है जिसके विवरण लिये गये है। इसकी एक अपूर्ण प्रति पहले खोज में आ चुकी है, देखिये खोज विवरणिका (१९१७-१९, सं० ११८)। विशेष विवरण के लिए देखिये विवरणिका (१९२६-२८ स० ३१३)।

२४२ नहसूर—ये खोज मे नवोपलब्ध है। इनके नाम से कामशास्त्र विषयक ग्रथ 'कोक-मजरी' के विवरण लिये गये है। ग्रथ का विषय और पाठ सुप्रसिद्ध कवि आनंदकृत 'कोकसार' से मिलता है। इस दृष्टि से रचयिता ने प्रस्तुत ग्रथ की रचना करके

कोई विशेष महत्व का काम नहीं किया। ग्रंथ में न तो रचनाकाल और लिपिकाल दिये हैं और न रचयिता का ही उसमें कुछ परिचय मिलता है।

२४३ नामदेव—इनके रचे पदों का एक संग्रह प्राप्त हुआ है जिसकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल नहीं है, पर लि० का० सं० १७६० (१७०७ ई०) दिया है। ये जाति के छीपी थे। पिछली खोज विवरणिका (१९०२ सं० २१७) में भी इनका उल्लेख है।

२४४ नन्ददास—ये प्रसिद्ध अष्टछाप के कवि हैं जो प्रायः पिछली खोज विवरणिकाओं में उल्लिखित हैं, विशेष विवरण के लिए देखिये खोजविवरणिकाएं (१९२० २२, सं० २१३ १९२३ २५, सं० २९, १९२६ २८, सं० ३१६)। इसबार इनके निम्नलिखित ८ ग्रंथों की १४ प्रतियां देखने में आई हैं —

सं० सं०	नाम ग्रंथ	प्रतियां	सब से प्राचीन प्रति का लि० का०
१	अनेकार्थ मंजरी	३	सं० १८१४ = १७५७ ई०
२	भँवरगीत	१	,, १८६३ = १८०६ ,,
३	नाम मंजरी या मानमंजरी	३	,, १८१४ = १७५७ ,,
४	फूल मंजरी	१	×
५	रानी मंगौ	१	×
६	रास पंचाध्यायी	२	,, १८८२ = १८२५ ,,
७	रुक्मिणी मंगल	१	,, १८७८ = १८२१ ,,
८	विरहमंजरी	२	,, १८१४ = १७५७ ,,

सं० ४ और ५ के अतिरिक्त सभी रचनाएँ पहले मिल चुकी हैं। रचयिता का भूमिका में विवेचन है, देखिये भूमिका संख्या ११।

२४५ नन्दलाल—इनके बनाये "जैमुनी अश्वमेध" की ३ प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं। ग्रंथ का र० का० अज्ञात है। इसकी उक्त प्रतियों में से सब से प्राचीन प्रति सं० १८७२ (१८१५ ई०) की लिखी हुई है। ग्रंथकार के विषय में कुछ पता नहीं चला। पिछली खोज विवरणिकाओं में आये इस नाम के कवियों से यह भिन्न प्रतीत होता है।

२४६ नरसिंह—इनका बनाया कौतुक विषयक ग्रंथ 'भानमती कबूतर कला चरित' मिला है जिसकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिये हैं। रचयिता के सम्बन्ध में कुछ भी विवरण नहीं मिलता।

२४७ नारायण—प्रस्तुत खोज में इनके रचे ५ ग्रंथों की ६ प्रतियाँ मिली हैं। र० का० का उल्लेख किसी ग्रंथ में नहीं है। दो ग्रंथ—'अनुराग-रस' जिसका लि० का० संवत् १९२८ (१८७१ ई०) है और 'पदों का संग्रह' पिछली खोज में मिल चुके हैं, देखिये खोज विवरणिका (१९२३ २५, सं० २९९)। रचयिता वृन्दावन के निवासी थे। इससे अधिक इनके विषय में कुछ ज्ञात नहीं। शेष चार ग्रंथों का विवरण इस प्रकार है —

क्र० सं०	ग्रंथ का नाम	लि० का० = ई० सन्।
१	गायन संग्रह	स० १९३२ = १८७५ ,,
२	गोपाल अष्टक	,, १९२८ = १८७१ ,,
३	नारायण संग्रह	,, १९१६ = १८५९ ,,
४	ब्रज—विहार	,, १९२८ = १८७१ ,,

२४८ नरोत्तमदास—इनका 'सुदामा चरित्र' प्रसिद्ध है जिसकी एक प्रति के विवरण इस बार भी लिये गये हैं। र० का० अज्ञात है। लि० का० संवत् १९६० = १८५७ ई० दिया है। ग्रंथ पहले कई वार मिल चुका है, देखिए विवरणिकाएं (१९००, स० २२; १९०६-८, सं० २०१; १९१७—१९, स० १२४, १९२०—२२ सं० ११७, १९२६—२८, सं० ३२४ आदि)।

२४९ नवलदास—इनके रचे 'शब्दावली' तथा 'ककहरा' नामक ग्रंथ मिले हैं जिनमे रचनाकाल नही दिये हैं। इनकी एक प्रति जो स० १९८२ (१९२५ ई०) की लिखी है बिल्कुल नई है। रचयिता के कुछ ग्रंथ 'भागवत पुराण-(सुरसागर कथा), रत्नज्ञान और ज्ञान सरोवर पिछली खोज में मिल चुके हैं, देखिये खोजविवरणिकाएं (१९२३-२५, स० ३०१; २६-२८, स० ३२७)। ये सत्यनामी सम्प्रदाय के महात्मा थे। लखनऊ जिले के धनेसा नामक ग्राम के निवासी और संवत् १८०७ (१७५० ई०) के लगभग वर्तमान थे।

२५० नवनदास—इनका बनाया 'भक्तसार' ग्रंथ प्राप्त हुआ है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति मे र० का० का उल्लेख नही है। लि० का० सं० १८१७ (१७६० ई०) है। रचयिता साधु थे और किसी गंगादास के गुरु थे। ये 'गीता सागर' ग्रंथ के साथ पिछली खोज में मिल चुके है। देखिये खोज विवरणिका (१९०६-८, स० ३०४)।

२५१ नजीर (अकबराबादी)—इस प्रसिद्ध मुसलमान कवि के रचे हुए चार ग्रंथ, 'कन्हैया का जन्म,-, 'बाँसुरी' 'बंजारानामा' तथा 'हंसनामा'—मिले हैं जिनमें रचनाकाल का कोई उल्लेख नही किया गया है। लि० का० भी अन्तिम ग्रंथ का ही दिया है जो संवत् १९१० (१८५३ ई०) है जो पहले आ चुका है, देखिये खोज विवरणिका (१९२६-२८, स० ३३३)। इनके विशेष विवरण के लिये देखिये भूमिका में संख्या १०।

२५२ निम्बकवि—इनके रचे 'रस रत्नाकर' एवं 'अजीर्ण मंजरी' नाम से दो वैद्यक ग्रंथो के पहले पहल विवरण लिये गये है। र० का० दोनो का अज्ञात है। लिपिकाल केवल दूसरे ग्रंथ की प्रति में स० १८२५ (१७६८ ई०) दिया है। रचयिता अपने को "ग्वाल" कवि का शिष्य बतलाता है।

२५३ निपट निरंजन—इनका बनाया वेदान्त विषयक विना नाम का तथा आद्यन्त से खण्डित ग्रंथ मिला है। इसकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही मिलता। 'शान्तसरसी' नामक रचना के साथ रचयिता का उल्लेख पिछली खोज विवरणिका (१९२३-२५, सं० ३०६) में हो चुका है। सभव है प्रस्तुत ग्रंथ भी वही हो।

२५४ निश्चलदास—प्रस्तुत खोज में इनका रचा 'विचार सागर' नामक वेदान्त ग्रंथ का पता पहले पहल लगा है यद्यपि इसकी ख्याति बहुत पहले से है। वेदान्त के विद्यार्थी इसी ग्रंथ से अपना अध्ययन प्रारम्भ करते हैं। यह व्यंकटेश्वर प्रेस बम्बई से प्रकाशित हो चुका है। रचयिता की वेदान्त पर दो अन्य कृतियाँ—'वृत्ति प्रभाकर' और 'युक्तिप्रकाश' भी हैं जिनमें विषय का प्रतिपादन अत्यन्त वैज्ञानिक ढंग पर हुआ है। ये कृतियाँ भी क्रमश व्यंकटेश्वर प्रेस और जगदीश प्रिंटिंग वर्क्स, अहमदाबाद से छप गयी हैं। रचयिता दादूपंथी था। प्रस्तुत ग्रंथ में रचनाकाल नहीं दिया है पर उसका लिपिकाल सं० १९०५ (१८४८ई०) है। इसकी रचना किहडाली ग्राम (दिल्ली से १८ कोस पश्चिम) में हुई।

२५५ नित्यनाथ (पार्वती पुत्र)—इनके रचे 'महा साबर', 'वीरभद्र', 'रस रत्नाकर' (दो प्रतियां) तथा उड्डीस ग्रंथ प्राप्त हुए हैं। रचनाकाल किसी ग्रंथ में नहीं दिया है। लि० का० क्रम से सं० १९५६ (१८९९ ई०), सं० १९१५ (१८५८ ई०) तथा सं० १८५६ (१७९९ ई०) हैं। ये सभी ग्रंथ तंत्र मंत्र से संबंधित हैं। तीसरा और चौथा ग्रंथ क्रमश पिछली खोज विवरणिका (१९०३, सं १५७ १९१७ १९ सं० १२९) में उल्लिखित हैं।

रचयिता वास्तव में संस्कृत के रचयिता हैं। हिन्दी में उनकी रचनाएँ अनुवाद मात्र है। परन्तु इन हिन्दी रचनाओं में अनुवादक का नाम न रहने के कारण इन्हीं को रचयिता मान लिया है।

२५६—पद्मैया (पद्म भगत)—इनका बनाया हुआ "रुक्मिणी मंगल" नामक ग्रंथ प्राप्त हुआ है। रचनाकाल अज्ञात है। लि० का० सं० १९४२ (१८८५ ई०) है। यह ग्रंथ पहले शोध में प्राप्त हो चुका है, देखिये खोजविवरणिका (१९००, सं० २४ और ९२)। इसके अनुसार पुस्तक का रचनाकाल संवत् १६६९ (१६१२ ई०) है। रचयिता जाति के तेली थे। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति बहुत अशुद्ध लिखी है। इसमें रुक्मिणी के विवाह का वर्णन है। ग्रंथ की भाषा मारवाड़ी (राजस्थानी) हिन्दी है। अबतक ग्रंथ की जितनी प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं उन सब में कुछ न कुछ पाठ भेद पाया जाता है। परंतु इसमें सन्देह नहीं कि ये सब एक ही ग्रंथ की प्रतिलिपियाँ हैं। पंजाब खोज विवरणिका के संख्या ८० पर भी यह ग्रंथ आया है। उसमें रचयिता को जैन बताया गया है क्योंकि उसमें उल्लिखित प्रति में श्रीकृष्ण अपने विवाह के अन्त में नेमनाथ जी का धन्यवाद करते हैं। प्राप्त प्रति में इस प्रकार कुछ नहीं लिखा है। पता चलता है, पंजाब की खोज विवरणिका में आई प्रति की किसी जैन धर्मानुयायी ने नकल की है।

२५७ पद्माकर भट्ट—इनका उल्लेख पिछली कई खोज विवरणिकाओं में हो चुका है, देखिये विवरणिकाएँ (१९२० २२, सं० १२३ १९२३—२५, सं० ३०७ १९२६—२८, सं० ३३८)। इस बार इनके तीन ग्रंथ जगद्विनोद, गंगालहरी, और लिलहारी मिले हैं। प्रथम दो का उल्लेख उपर्युक्त खोज विवरणिकाओं में हो चुका है जिनकी प्रस्तुत प्रतियों में से केवल गंगा लहरी की एक प्रति में लिपिकाल संवत् १९०८ (१८५१ ई०) दिया है। तीसरा

ग्रंथ नया मिला है। इसकी प्रति में रचनाकाल नहीं दिया है। लिपिकाल संवत् १९१४ (१८५७ ई०) है। इसका विशेष विवेचन भूमिका में किया गया है, देखिये भूमिका संख्या—१२।

२५८ पद्मरंग—इनका वैद्यक विषय पर रचा हुआ 'रामविनोद' ग्रंथ मिला है जिसके विवरण लिये गये है। अन्य विवरण इनका अज्ञात है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल का उल्लेख नहीं है। लि० का० सं० १९२८ (१८७१ ई०) है।

२५९ पहाड़ कवि—रामदास कवि कृत 'उषा चरित्र' ग्रंथ में केवल चौपाई देखकर इन्हें उसमे फीकेपन की झलक दिखाई दी। अतएव आपने बीच बीच में अपने रचे कुछ विश्राम-छन्द रख कर उक्त ग्रंथ को सरस बनाने का उद्योग किया है। ये अपने को जाति का कायस्थ और सुलतॉपुरी (चँदेरी वाला) लिखते है। इससे अधिक इनके विषय में कुछ पता नहीं चलता। हस्तलेख मे रचनाकाल नहीं दिया है। लि० का० स० १९१८ (१८६१ ई०) है।

२६० द्विज पहलवान—इनके बनाये 'भजन-पचासा' एव 'ख्याल पचासा' मिले हैं। रचनाकाल किसी ग्रंथ का नहीं दिया है। लि० का० पहले का सं० १९३० (१८७३ ई०) है। रचयिता सत्यनामी सम्प्रदाय के पहलवान दास से जिनके कई ग्रंथ पहले शोध में मिल चुके है अभिन्न जान पडते है, देखिये खोज विवरणिका (सं० १९२६–२८ सं० ३४०)।

२६१ परमल्लदास (आगरा निवासी)—इनका संवत् १६५१ (१५९४ ई०) का रचा हुआ 'श्रीपाल-चरित्र' मिला है जो इसी नाम के संस्कृत ग्रंथ का अनुवाद है। यह ग्रंथ पहले शोध में आ चुका है, देखिये खोज विवरणिका (१९२३–२५, सं० ३०९)।

२६२ परमानंद—इनका 'कबीर भानु प्रकाश' नामक सं० १९३५ (१८७८ ई०) का रचा हुआ, एक ग्रंथ का प्रथम बार पता लगा है। इसके हस्तलेख में लि० का० नही दिया है। 'रचयिता ने कबीर को नायक, भक्ति को नायिका एवं 'सुरति' को दूती कल्पना करके संसार के अन्य धर्मों की तुलनात्मक आलोचना करते हुए अपने मत को स्थापित किया है। ग्रथ महत्वपूर्ण है, इसमें संदेह नही। रचयिता मुक्तसर (पंजाब) के निकट दौदा ग्राम में रहता था।

२६३ परमानंद—इनके रचे 'बहुरंगी सार' नामक-पदो के एक संग्रह के विवरण लिये गये है। इसकी दो प्रतियो में से प्राचीन प्रति सं० १९०० (१८४३ ई०) की लिखी हुई है। रचनाकाल सं० १८९० (१८३३ ई०) है। यह ग्रंथ पहले खोज में मिल चुका है, देखिये खोजविवरणिका (१९२६ २८, सं० ३२२)। उसमे रचयिता का निवास स्थान 'संभल' (मुरादाबाद) निम्नलिखित पक्तियो के आधार पर माना है:—

दोहा—"सभल मुरादाबाद मेरा, मिश्र कलंकी रूप।
कछू दिना में प्रगटि है, परमानंद अनूप"

परतु यह धारणा निराधार है । उक्त दोहे में रचयिता के निवासस्थान का उल्लेख न होकर भविष्य पुराण के आधार पर कल्की अवतार के स्थान का उल्लेख है । अत उसे रचयिता का निवास स्थान बतलाना भूल है । प्रस्तुत प्रति के विवरण लेनेवाले अन्वेषक ने इटावा को रचयिता का निवासस्थान माना है जिसका कोई आधार नहीं दिया है । ऐसी दशा में रचयिता का निवासस्थान अभी अज्ञात ही समझना चाहिये । खोज में ये नवोपलब्ध हैं ।

३६४ परशुराम—इनका रचा हुआ 'उषा चरित्र' नामक ग्रथ मिला है जिसकी प्रस्तुत प्रतियों में एक स० १८७२ (१८१५ ई०) की लिखी हुई है । उसमें रचनाकाल नहीं दिया है । ग्रथ पिछली खोज में मिल चुका है देखिये पिछली खोज विवरणिकाएँ (१९१२–१४, स० १२७, १९२३–२५ स० ३११ १९२६–२८, स० ३४४) जिनके अनुसार रचनाकाल संवत् १६३० (१५७३ ई०) है ।

३६५ पर्वतदास—इनके बनाये निम्नलिखित ग्रथों के विवरण लिये गये हैं जो पहले विवरण में आ चुके हैं, देखिये विवरणिकाएँ (१९२० २२, स० १२५ १९२३ २५, स० ३१२ १९२६–२८, स० ३४५) । इनका समय १७ वी शताब्दी है ।

ग्रंथों की सूची —

स० स०	ग्रथका नाम	प्रतियाँ	रचनाकाल	लिपिकाल
१	पद रहस्य निरूपण	२	स० वि० १७४० = १६८३ ई०	१८९८ = १८४१ ई०
२	जानुकी विवाह (च० रह०)	१	×	१९०० = १८४३ ,,
३	राम कलेवा रहस्य	१	×	,, ,

ये सब ग्रथ प्रथम ग्रथ के भाग मात्र हैं ।

३५६ पातीराम—इनके बनायें 'रण सागर' एवम् 'पाती राम के भजन' मिले हैं जिनके विवरण लिये गये हैं । उक्त दोनों ग्रथों का पता खोज में प्रथम बार लगा है । प्रथम ग्रथ की प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल नहीं दिये हैं । दूसरा ग्रथ स० १९३० (१८७३ ई०) का रचा हुआ है, पर लि० का० उसका भी विदित नहीं । रचयिता जाति के ब्राह्मण और आगरा जिले के सरेंधी नामक ग्राम के निवासी थे । इनका जन्म काल स० १९०० के लगभग है । उनके वशज (पुत्र ज्वाला प्रसाद और पौत्र धनपाल) आगरा जिले की किरावली तहसील के "बछरा" ग्राम में रहते हैं । पहला ग्रथ, महाभारत सभापर्व का पद्यानुवाद है और दूसरा भजनों का सग्रह ।

३६७ पतितदास—इनका रचा 'रजस्वला वैद्यक' ग्रथ इस शोध में मिला है जो स० १८९०=१८३३ ई० का रचा हुआ है । इसकी दो प्रतियाँ मिली हैं जिनमें लि० का० क्रमश स० १९१२ (१८५५ ई०) और स० १९३९ (१८८२ ई०) दिये हैं । ग्रथ पहले मिल चुका है, देखिये विवरणिका (१९१७–१९ सख्या १३३ १९२३–२५, स० ३१४, १९२६–२८ स० ३४६) ।

२६८ पतितदास, दास पतित पतितानंद अथवा पतितपावन दास—इनके दो ग्रंथो 'विवेकसार' एवम् 'पतित पावनदास की कविता, का पता चला है जिनके, विवरण लिये गये है। केवल पहले ग्रथ की प्रति में लि० का० सं० १९३९ (१८८२ ई०) दिया हुआ है। रचनाकाल दोनो ग्रंथो का अज्ञात है। इनका विषय भक्ति और ज्ञानोपदेश है। रचयिता अपने को क्षत्रिय कुल का वतलाते है। इनका निवासस्थान 'चकौली' मे, ननिहाल अशरफपुर मे और गुरु द्वारा 'रिठुरी-ग्राम में था।

२६९ प्राणनाथ (पन्ना)—ये प्रसिद्ध धामी संप्रदाय के संस्थापक थे। इनके रचे निम्नलिखित ग्रथ मिले हैं। विशेष विवरण के लिये देखिये खोज विवरणिका (१९२३-२५ संख्या ३१८)।

क्र० सं०	नाम ग्रथ	लि० का० = सन् ई०
१	प्रेम पहेली	×
२	श्री,धाम पहेली	×
३	प्रगट वाणी	×
४	तारतम्य	×
५	वेदांत के प्रश्न	×

२७० प्रपन्न गणेशानंद—इनके भक्ति भावँती ग्रंथ के जो संवत् १६०९ (१५५२ ई०) का रचा हुआ है विवरण लिये गये हैं। इसकी प्रस्तुत प्रति संवत् १८१० (१७५५ ई०) की लिखी हुई है। ग्रथ का उल्लेख खोज विवरणिका (१९०१, सं० १३६) पर भी है जिसमें रचनाकाल संवत् १६११ माना है। विशेष के लिये देखिये प्रस्तुत विवरणिका का भूमिका भाग संख्या १६।

२७१ प्रतापराय—प्रस्तुत खोज में इनका "वैद्यक-विधान" ग्रथ प्रथम वार मिला है। इसका र० का० सं० १७७२ (१७१५ ई०) और इसकी प्रति का लि० का० सं० १९०० वि० (१८४३ ई०) है। यह अनुवाद ग्रंथ है। रचयिता के संबंध में कुछ ज्ञात नही।

२७२ प्रताप सिह (जैपुर-नरेश)—का रचा "अमृत-सागर" नामक ग्रथ का विवरण लिया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रति में र० का० सं० १८६६ (१७७९ ई०) और लि० का० सं० १९०० (१८४३ ई०) दिये हैं। ग्रंथ पहले शोध में मिल चुका है, देखिये खोज बिवरणिकाएँ (१९२३-२५ सं० ३२२, १९२६-२८, सं० ३५२)

२७३ प्रियादास—इनके रचे निम्नांकित ग्रंथो का विवरण लिया गया है—

क्र० सं०	ग्रंथ का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल
१	अनन्य मोदिनी	×	×
२	भागवत सम्पूर्ण द्वादश स्कन्ध	×	सं० १९२४=१८६७ ई०
३	,, प्रथम स्कन्ध	×	स० १८३७=१७८० ई०
४	,, अष्टम ,,	×	×

५	,,	द्वि० अ०	×	सं० १९१४=१८५७ ,,
६	भक्तमाल की भक्ति रस बोधिनीटीका	स० १७६९=१७१२ ई०		स० १९०२ = १८४५ ई०
७	पीपा जी की कथा	,, ,,		,, १८७६ = १८१९ ,,
८	रसिक मोदिनी		×	,, १८९६ = १८३९ ,,
९	सगीत रत्नाकर		×	,, १८३५ = १७७८ ,,
१०	सग्रह प्रियादास कृत		×	,, १९१० = १८५३ ,,

इनमें स० ९ की दो प्रतियाँ हैं। शेष की एक एक प्रति है। स० ६ के विवरण पहले कई बार लिये जा चुके हैं, देखिये खोज विवरणिकाएँ (१९२० २२ स० १३५, १९२३ २५ स० ३२३, १९२६ २८, स० ३६१)।

२७४ पुरुषोत्तम—इनके रचे "जैमुनी पुराण" का पता लगा है जिसका र० का० स० १५५८ (१५०१ ई०) है। रचयिता दादरपुर का निवासी था जो अयोध्या से चार योजन दक्षिण में बताया गया है। यहाँ के राजा का नाम रघुमल्ल वैश्य लिखा है। ये क्षेमानद के पुत्र थे और इनके व्याकरण गुरु का नाम रघुनाथ था। अपने गुरु द्वारा ये अम्बकपुर में बतलाते हैं। इनका प्रस्तुत ग्रथ पहले मिल चुका है, देखिये खोजविवरणिका (१९२६–२८, स ३६३)।

२७५ पुरुषोत्तम (मिश्र)—इनके बनाये "वैद्यकसार" ग्रथ के विवरण लिये गये हैं जिसका र० का० अज्ञात है। इसकी प्रति का लि० का० स० १९०२ (१८४५ ई०) है। यह पहले विवरण में आ चुका है, देखिये खोजविवरणिका (१९२३ २५, स० ३२५)।

२७६ प्यारेलाल (काश्मीरी)—के रचे 'योग वाशिष्ट' की एक प्रति और "शिव पुराण' की दो प्रतियाँ पहले पहल मिली हैं। पहले ग्रथ का र० का० सं० १९२२ (१८६५ ई०) और लि० का० स० १९३३ (१८७६ ई०) हैं। दूसरे ग्रथ का रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल केवल एक प्रति में स० १९३२ = १८७५ ई० दिया है। रचयिता के सम्बन्ध में कुछ ज्ञात नहीं है। 'योग वाशिष्ठ' की पुष्पिका से पता चलता है कि उसके प्रतिलिपिकार भैरवलाल ने पारिश्रमिक के रूप में रुपये लिये थे—"स० १९२२ में भाषा समाप्त हुई लिखा भैरवलाल ब्राह्मण भाद्रपद स० १९३३ लिखाइ का साढ़े सात ७।।) रु० पाये।"

२७७ रघूकवि—यह जैन धर्म के अनुयायी थे। 'दश लाक्षणिक धमपूजा' नामक ग्रंथ के ये रचयिता हैं जिसके इस बार विवरण लिये गये हैं। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति में न तो रचनाकाल ही दिया है और न लिपिकाल ही। रचयिता का परिचय भी अज्ञात है। मूल ग्रथ प्राकृत में है जिसके साथ साथ हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है। पता नहीं कि ये दोनों कृतियाँ प्राकृत मूल और हिन्दी रूपान्तर रघू कवि की ही हैं अथवा अलग अलग रचयिताओं की।

२७८ (सत) रघुनाथ रामसनेही—इनके रचे निम्नाकित ग्रथ इस शोध में मिले हैं —

क्र० सं०	ग्रंथ का नाम	लिपिकाल = ई० सं०
१	मानस दीपिका शंकावली	सं० १९३० = १८७३ ई०
२	,, ,, विश्राम	,, ,,
३	विश्राम—सागर	,, १९०१ = १९४४ ई०
४	प्रश्नावली	,, ,,

रचना-काल किसी का नहीं दिया गया है। रचयिता का कई ग्रंथों के साथ पहले उल्लेख हो चुका है, देखिये विवरणिकायें (१९२०-२२ सं० १३६; १९२६-२८ सं० ३७०)। संभवतः उपरोक्त सभी ग्रंथ 'मानस दीपिका' के ही खण्ड हैं। रचयिता का समय उनके 'भक्त माल महाकाव्य' के आधार पर सं० १९१४ (१८५७ ई०) के लगभग ठहरता है।

२७९ रैदास—जाति के चमार और प्रसिद्ध भक्त। इनके रचे 'प्रह्लाद लीला' और 'रैदास के पद' मिले हैं जिनका रचनाकाल विदित नहीं। लिपिकाल केवल दूसरे ग्रंथ की प्रति में सं० १६९६ (१६३९ ई०) दिया है। इस दृष्टि से यह प्रति महत्वपूर्ण है। दूसरा ग्रंथ पहले मिल चुका है देखिये खोज विवरणिका (१९०२, स० ९७)। 'प्रह्लाद चरित्र' खोज में नया मिला है। विशेष विवेचन के लिये देखिये भूमिका भाग संख्या १४।

२८० रामचन्द्र (ज्योतिषी)—इनकी स० १८५८ (१८०१ ई०) की रची और इसी समय की लिखी 'ज्योतिष पद्धति' नामक पुस्तक शोध में पहले पहल मिली है। रचयिता मेवाड़ निवासी था। उसने प्रस्तुत ग्रंथ को मारवाड़ के बहादुर सिंह दीवान की आज्ञानुसार लिखा था। ग्रंथ की भाषा में राजस्थानी का मिश्रण है।

२८१ रामचरण (साहपुर निवासी)—इनके रचे निम्नलिखित ९ ग्रंथ शोध में सर्वप्रथम प्राप्त हुए हैः—

क्र० सं०	ग्रंथ का नाम	र० का० = ई० सन्	लि० का० = ई० सन्
१	जिज्ञासा बोध	सं० १८४७ = १७९० ई०	स० १९०४ = १८४७ई०
२	विश्राम बोध	,, १८५१ = १७९४ ,,	,, १९०३ = १८४६ ,,
३	समतानिवास ग्रंथ	,, १८५२ = १७९५ ,,	,, १९०० = १८४३ ,,
४	विश्वास बोध ग्रंथ	,, १८४९ = १७९२ ,,	,, १९०४ = १८४७ ,,
५	अमृत उपदेश	,, १८४४ = १७८७ ,,	,, १९०० = १८४३ ,,
६	रामचरण के शब्द	,, ×	,, ,,
७	अणभै विलास	,, १८४५ = १७८८ ,,	,, १९०३ = १८४६ ,,
८	राम रसायनि	,, ×	,, १९०० = १८४३ ,,
९	सुखविलास	,, १८४६ = १७८९ ,,	,, १९०५ = १८४८ ,,

रचयिता नवल राम के गुरू और रामसनेही पंथ के संस्थापक थे, देखिये खोज विवरणिका (१९०१, सं० ६४)। मिश्र बन्धु विनोद के संख्या १०७५ पर भी इनका नाम आया है जिसमें इनके छः ग्रंथों का उल्लेख है जिनमें से पाँच ग्रंथ (संख्या १,२,४,६ और ७)

प्रस्तुत खोज में मिले हैं । रस मालिका ग्रंथ इनका न होकर अयोध्या के रामचरन दास का है । विशेष विवेचन के लिये देखिये भूमिका भाग सं० १३ ।

२८२ रामचरण (शाहजहाँपुर के वैश्य)—इनके रचे 'संगीत मनोहर' नामक ग्रंथ के विवरण लिये गये हैं । ग्रंथ का र० का० अज्ञात है । इसकी प्रति में लि० का० सं० १९१६ (१८५९ ई०) दिया है । रचयिता जाति के वैश्य थे । ये खोज में नवोपलब्ध हैं ।

२८३ रामहरी (वृन्दावन निवासी)—इनके रचे हुए निम्नलिखित ६ ग्रंथ शोध में पहले पहल मिले हैं —

क्र० सं०	ग्रंथ का नाम	र० का०	लि० का०
१	रस पचीसी	सं० १८३५ = १७७८ ई०	सं० १८३५ = १७७८ ई०
२	बोध बावनी	,, ,, ,,	,, ,,
३	लघुशब्दावली	,, १८३४ = १७७७ ,,	,, ,,
४	लघु नामावली	,, ,, ,,	×
५	सत हंसी	,, १८३३ = १७७६ ,,	×
६	बुद्धि विलास	,, १८३२ = १७७५ ,,	×

कवि के विषय में कुछ ज्ञात नहीं ।

२८४ रामहित—इनके "गणक अह्लादिका" जोतिष ग्रंथ की दो प्रतियां मिली हैं । ग्रंथ संवत् १८८४ (१८२७ ई०) में रचा गया था । प्रस्तुत प्रति में कोई लिपिकाल नहीं दिया है । रचयिता के सम्बन्ध में कुछ ज्ञात नहीं । ग्रंथ की एक प्रति में रचनाकाल का केवल पहला ही दोहा अंकित है ।

२८५ रामकवि—इनके रचे 'गायन संग्रह' ग्रंथ का पता लगा है । र० का० अज्ञात है । इसकी प्रति का लि० का० सं० १९२७ (१८७० ई०) है । रचयिता का परिचय अप्राप्त है । इस नाम के कई कवि हैं पर नहीं कहा जा सकता कि ये उनमें से कोई एक हैं अथवा नहीं ।

२८६ राम औतार—इनके द्वारा रचे गए 'शिवपार्वती विवाह' अथवा 'शिव विवाह कवितावली' ग्रंथ की दो प्रतियाँ मिली हैं । र० का० सं० १९१९ (१८६२ ई०) है । प्राप्त प्रतियों का लि० का० एक ही संवत् १९४९ (१८९२ ई०) है । रचयिता नवोपलब्ध हैं ।

२८७ रामबकस (विप्र)—इनके रचे तीन ग्रंथ 'कवित्त' 'विप्रकरणा सागर' तथा 'रामबकस के कवित्त' मिले हैं जिनके विवरण लिये गये हैं । इनकी प्रतियों में र० का० नहीं दिये हैं । कवि के सम्बन्ध में भी कुछ ज्ञात नहीं होता । विनोद के सं० १६७९ पर इस नाम का एक कवि अवश्य है । परन्तु यह उससे भिन्न है अथवा अभिन्न प्रमाणाभाव के कारण कुछ नहीं कहा जा सकता । पहले ग्रंथ में बुढ़ापे से छुटकारा पाकर शरण में लेने की ईश्वर से प्रार्थना है । दूसरे में ब्राह्मणों की रक्षा की प्रार्थना है और तीसरे में राम कृष्ण के चरित्रों का संक्षिप्त दिग्दर्शन कराया गया है ।

२८८ रामकृष्ण—इनके बनाये 'कार्तिक महात्म्य' की तीन प्रतियाँ प्रस्तुत शोध में पहले पहल मिली है जिसका र० का० सं० १९४२ (१६८५ ई०) है। लिपिकाल केवल एक प्रति में दिया गया है जो संवत् १९०६ (१८४९ ई०) है। रचयिता के सम्बन्ध मे कुछ ज्ञात नहीं। खोज में ये नवोपलब्ध है।

२८९ रामानुजाचार्य—इनके नाम से 'राम-रक्षा' नामक स्तोत्र की एक प्रति के विवरण लिये गये हैं। विस्तृत विवरण के लिये देखिये विवरणिका की भूमिका सख्या १७।

२९० रामप्रसाद—इनका रचा 'सुखजीवन प्रकाश' नामक एक वैद्यक ग्रंथ का पता पहले पहल लगा है। उसका र० का० सं० १९३२ (१८७४ ई०) है रचयिता जहान-गज का निवासी था। अन्य वृत्त अप्राप्त है। पुस्तक की प्रस्तुत प्रति का लि० का० स० १९३६ (सन् १८७९ ई०) है।

२९१ रामप्रसाद (निरंजनी)—इनके रचे 'योगवाशिष्ठ सार' की चार प्रतियाँ पहले पहल मिली है। ग्रथ का र० का० सं० १७९८ (१७४१ ई०) है। इसकी सबसे प्राचीन प्रति का लि० का० स० १८५६ (१७९९ ई०) है। रचयिता पटियाला के निवासी थे और वहाँ की महारानी को प्राचीन धार्मिक ग्रथ सुनाया करते थे। इनके विस्तृत विवरण के लिये देखिये भूमिका का अश संख्या ३।

२९२ रामसेवक—इनकी बनाई 'अखरावटी' की एक प्रति इस में प्राप्त हुई है। उसका र० का० अज्ञात है। हस्तलेख में लि० का० स० १९३८ (१८८१ ई०) दिया है। इस ग्रंथ के विवरण पहले लिये जा चुके है, देखिये खोज विवरणिका (१९०९-११, सं० २५८)। उक्त विवरणिका में रचयिता के संबध में कुछ नहीं दिया है। अब पता लगा है कि ये सं० १८५० (१७९३ ई०) के लगभग वर्तमान थे। हरचन्दपुर (बाराबंकी अवध) के निवासी और सत्यनामी सम्प्रदाय के साधु देवीदास के शिष्य थे।

२९३ रंगीलाल (माथुर)—इनके रचे 'कार्तिक महात्म्य' और 'जर्राहीप्रकाश' (वैद्यक-ग्रथ) की दो-दो प्रतियाँ मिली हैं। पहले ग्रंथ का र० का० अज्ञात है। दूसरे का सं० १९२७ (१८७० ई०) है। पहले ग्रथ की दोनो प्रतियो और दूसरे ग्रंथ की एक प्रति मे लिपिकाल सं० १९४० (१८८३ ई०) दिये है।

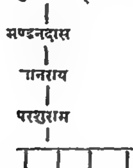
२९४ रसजानि—इनके बनाये भागवत महापुराण का पूरा अनुवाद एवम् उसके आठ खण्ड (प्रथम स्कन्ध से अष्टम स्कन्ध तक पृथक पृथक) मिले हैं जिनके विवरण लिये गये है। ग्रंथ का र० का० सं० १८०७ (१७५० ई०) है। सबसे प्राचीन प्रति का लिपि काल सं० १८६३ है। इसका उल्लेख पिछली दो खोज-विवरणिकाओ (१९०१ सं० ९४; १९१२-१४, सं० १५०) मे हो चुका है।

२९५ रतिभान—इनके रचे 'जैमुनी पुराण' की दो प्रतियाँ मिली हैं जिनका विवरण पहले पहल लिया गया है। ग्रथ का र० का० सं० १८८८ (१८३१ ई०) है। लि० का० केवल एक प्रति में सं० १८४४ (१७८७ ई०) दिया है। रचयिता अपने को परशुराम कापुत्र बताते है। इनका निवास स्थान मध्य प्रदेशान्तर्गत 'इटौरा' नासक ग्राम था जो

'नौरटौ या नौरटा' नामक (काल्पी के समीप) ग्राम के पास ही बेतवे नदी के तीर पर बसा है। ये प्रणामी पंथ के संस्थापक सतगुरु रोपन के अनुयायी थे।

वंश वृक्ष इस प्रकार है —

सतगुरु रोपन (प्रणामी पंथ का संस्थापक)



(इनके चार पुत्र-सब में छोटे रतिभान ग्रंथ लेखक)

[रचयिता का विशेष विवेचन भूमिका भाग संख्या २ में है ।]

२९६ रतीराम—इनका बनाया 'वैद्यसुधा निधि' ग्रंथ प्रथम बार मिला है जिसकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नहीं मिलता। प्रति अशुद्ध और अपूर्ण है। ग्रंथकार अपने पिता का नाम हरदेव बताता है। ग्रंथ बड़े परिश्रम से चरक, सुश्रुतादि प्राचीन संस्कृत ग्रंथों के आधार पर लिखा गया है। चीड़, फोड़ और फोड़ा फुंसी आदि कुछ विषयों को छोड़ कर इसमें सभी रोगों पर प्रकाश डाला गया है। इसमें मंत्रादि का भी समावेश है। रचयिता के संबंध में अधिक कुछ ज्ञात नहीं।

२९७ रत्नदास—इनके रचे 'प्रेमरस' नामक ग्रंथ की दो प्रतियाँ इस शोध में मिली हैं। ग्रंथ का र० का० सं० १८४४ (१७८७ ई०) है। इसकी प्राप्त प्रतियों में से केवल एक में ही लि० का० सं० १८७२ (१८१५ ई०) दिया है। इसके विवरण पहले भी आ चुके हैं, देखिये खोजविवरणिकाएँ (१९०९–११, सं० २६७; १९२३-२५, सं० ३५९)। इन दोनों विवरणिकाओं में रचयिता का नाम "रत्न कुँवरि बीबी (राजा शिवप्रसाद की दादी) दिया हुआ है जो प्राचीन शोध से अशुद्ध सिद्ध हो चुका है।

२९७ रत्नसिंह—इनका रचा 'विग्रह वर्णन' नामक बिना सन् संवत् का एक ग्रंथ इस शोध में पहली बार मिला है। यह मूल संस्कृत ग्रंथ पंचतन्त्र का पद्यानुवाद है। रचयिता के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं। काशी के राजा राजसिंह के पुत्र ने भी इसी नाम (रत्नसिंह) से ग्रंथ रचना की है। वह संवत् १८४३ ई० के लगभग वर्तमान था। परन्तु प्रमाणाभाव के कारण यह नहीं कहा जा सकता कि प्रस्तुत लेखक वही है या उनसे भिन्न।

२९९ रूपराम सनाढ्य—आगरा और इटावा जिलों को जहाँ यमुना प्राकृतिक रूप में पृथक करती है वहाँ एक प्राचीन स्थान बचौरा घाट (आगरा) है जहाँ प्रस्तुत रचयिता का निवास स्थान था। इनके रचे कुछ फुटकर छन्द 'कवित्त संग्रह' के नाम से इस शोध में प्राप्त हुए हैं जिनका र० का० और लि० का० अविदित हैं। रचयिता का विशेष विवेचन भूमिका भाग संख्या ४ में किया गया है।

३०० सदासुख लाल (कासिली वाल)—इनका रचा "रत्नकरंड श्रावकाचार की देश भाषा मय वचनिका" नामक ग्रंथ मिला है जिसके विवरण लिये गये हैं। मूल ग्रंथ संस्कृत मे स्वामी समंतभद्र का रचा हुआ है जो सूत्रो में है। प्रस्तुत लेखक उसके टीकाकार है। ग्रंथ की रचना संवत् १९१९ में आरंभ हुई और संवत् १९२० में पूरी हुई। इसकी प्रस्तुत प्रति में लि० का० सं० १९५८=१९०१ ई० दिया है।

३०१ सहाई राम—इनका संवत् १९०७ (१८५० ई०) का रचा हुआ "अयोध्या महात्म्य" नामक ग्रंथ मिला है जिसकी प्रस्तुत प्रति का लि० का० सं० १९३६ (१८७९ई०) है। यह इस नाम के संस्कृत ग्रंथ का अनुवाद है और शोध में नवीन है। रचयिता के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं है।

३०२ शक्तधर (शुक्ल)—इनका रचा 'रामायण महात्म्य' मिला है जो मूल संस्कृत ग्रंथ का भाषा मे अनुवाद है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल नहीं दिया है। लिपिकाल संवत् १९४० (१८८३ ई०) है। रचयिता के सबंध में कुछ भी ज्ञात नहीं।

३०३ शंकरदास—इनका बनाया 'महाभारत गदापर्व' का अनुवाद मिला है जो खंडित है। इसका र० का० अज्ञात है। इसकी प्रस्तुत प्रति का लि० का० सं० १८७६ (१८१९ ई०) है। रचयिता के संबध में कुछ ज्ञात नहीं।

३०४ सेवादास पाँडेय—इनका बनाया हुआ 'करुणा-विरह प्रकास' नामक ग्रंथ मिला है। इसका रचनाकाल सं० १८२४ (१७६७ ई०) है जिसकी प्राप्त प्रति में लि० का० सं० १८६२ (१८०५ ई०) दिया है। ग्रंथ के विवरण पहले लिये जा चुके है, देखिये खोज विवरणिका (१९१२–१४, सं० १७३)। उक्त विवरणिका में रचनाकाल सं० १८२२ (१७६५ ई०) दिया है:—

"संवत् अष्टादश भये विधि विंशति गुरुवार।
कातिक सुदी एकादशी, लियो ग्रंथ अवतार ॥"

विचार करने पर विदित होता है कि रचनाकाल संवत् १८२२ ही ठीक है। क्योकि विधि विंशति मे आधी संख्या सांकेतिक शब्द मे और आधी संख्या संख्यावाचक शब्द में है जो उचित नही जँचता। रचयिता ने दोनो संख्याओ को संख्यावाची शब्दो में ही दिया होगा। अतः स्पष्ट है कि 'विवि' का 'विधि' हो गया।

३०५ शीतल प्रसाद—इनका बनाया "राधा रहस्य" नामक विनय संबधी ग्रंथ मिला है जिसका र० का० सं० १९०६ (१८४९ ई०) है। इसकी प्रति मे लि० का० सं० १९१८ (१८५१ ई०) दिया है। रचयिता का निवास स्थान रहीमाबाद के अन्तर्गत जुरिया नामक स्थान था। उस समय यह स्थान सूबासिह—के गोवत्सगोत्रीय क्षत्रिय—के अधिकार में था। ये त्रिपाठी ब्राह्मण और उक्त सूबासिह के आश्रित थे।

३०६ सीतराम—इनके "दिल लगन चिकित्सा" नामक ग्रंथ की तीन प्रतियाँ मिली है जिनमें र० का० सं० १८७० (१८१३ ई० दिया है। लि० का० सब से प्राचीन

प्रति का स० १८९० (१८३३ ई०) है। ग्रंथ पहले मिल चुका है, देखिये खोज विवरणिकाएँ (१९२३ २५, स० ३८९) (१९२६–२८, स० ४३७)।

३०७ सीताराम—इनके रचे 'कवि तरंग' नामक वैद्यक ग्रंथ की तीन प्रतियाँ मिली हैं। र० का० स० १७६० वि० (१७०३ ई०) है और प्राचीन प्रति का लि० का० स० १८६९ (१८१२ ई०) है। इस ग्रंथ के विवरण पहले भी लिये जा चुके हैं, देखिये खोज विवरणिका (१९२६–२८, स० ४४०)।

३०८ सीताराम—इनके बनाये "प्रभाती-भजन' की एक प्रति मिली है जिसकी प्रस्तुत प्रति में रचना काल नहीं दिया है पर इसका लि० का० स० १९३० (१८७३ ई०) है। इनके बनाये 'कवित्त सग्रह' के विवरण पहले लिये गये हैं। उसका र० का० स० १९३० (१८७३ ई०) था। यही या इसी समय के लगभग इनका भी रचनाकाल समझा जाता है। देखिये खोज विवरणिका (१९२६—२८, स० ४३८)।

३०९ शिवगोपाल—इनका रचा "औषधि यूनानीसार" नामक ग्रंथ खोज में पहले पहल मिला है। र० का० स० १८८० (१८२३ ई०) है। इसकी प्रति में लि० का० स० १९०२ (१८४५ ई०) दिया है। रचयिता दिल्ली निवासी था। इससे अधिक उसके विषय में कुछ ज्ञात नहीं है।

३१० शिवगुलाम—इनका सगृहीत 'शृंगार सार' ग्रंथ मिला है इसकी प्रस्तुत प्रति में सन् संवत् का उल्लेख नहीं है। यह पहले पहल विवरण में आ रहा है। सग्रह अच्छा है। सग्रहकार बेथन (उन्नाव) के निवासी थे।

३११ शिवनाथ—इनका रचा 'रस रंजन' नामक ग्रंथ शोध में मिला है जिसका र० का० अज्ञात है पर लि० का० स० १८४६ (१७८९ ई०) दिया है। ग्रंथ पहले विवरण में आ चुका है, देखिये खोज विवरणिका (१९२६–२८, स० ४४८)। 'विनोद' के स० ७६७ पर इनका र० का० १७९८ (१७४१ ई०) और डा० ग्रियर्सन के ग्रंथ में स० १५२ पर १६६० ई० माना गया है। विनोद इन्हें पन्ना का निवासी बतलाते हैं और उक्त डाक्टर महोदय जसवंतसिंह बुँदेला के आश्रित लिखते हैं। हमारी पिछली रिपोर्ट में भी लि० का० स० १८४६ (१७८९ ई०) ही दिया है। परतु मैं समझता हूँ उसे भौलिक रूप से रचनाकाल मान लिया है।

३१२ राजाशिवप्रसाद—इनके द्वारा अनुवादित ग्रंथ 'मनुधर्म सार' जिसका र० का० अज्ञात है और लि० का० स० १९१३ (१८५६ ई०) है, इस त्रिवर्षी में प्राप्त हुआ है। इसके विवरण पहले नहीं लिये गये।

३१३ शिवराम शास्त्री—इनके रचे 'वैद्य सग्रह' नामक ग्रंथ की दो अपूर्ण प्रतियाँ मिली हैं। कहा जाता है कि इनमें से एक प्रति को स्वयम् रचयिता ने स० १९२७ (१८७० ई०) में अपने हाथ से लिखा। अतएव ग्रंथ का यही रचनाकाल भी होता है। रचयिता के संबंध में कुछ ज्ञात नहीं।

३१४ शिवरत्न मिश्र—इनका बनाया "वैताल पचीसी" नामक ग्रथ का इस त्रिवर्षी में पहले पहल विवरण लिया गया है। ग्रथ का र० का० सं० १८५६ (१७९९ ई०) और लि० का० १८९६ (१८३९ ई०) है। यह खड़ी बोली में लिखा गया है।

३१५ श्रीधर स्वामी—इनके 'भागवत भावार्थ दीपिका' नामक भागवत के अनुवादित ग्रंथ के चौथे स्कंध से नवे स्कंध तक (सातवाँ स्कध छोड कर) पृथक पृथक पाँच प्रतियाँ उपलब्ध हुई है। इनमें सन्-संवत् का कोई उल्लेख नही हुआ है। रचयिता के संबंध में भी कुछ ज्ञात नही है।

३१६ श्रीलाल—इनके रचे 'गणित प्रकाश' के तीन भाग तथा 'महाजनी सार' की दो प्रतियाँ शोध में मिली है। पहले भाग (गणितप्रकाश) का र० का० सं० १९०७ (१८५० ई०), दूसरे भाग का (सन् १८५६ ई०) और तीसरे का सं० १९११ (१८५४ ई०) है। लि० का० इनका क्रमशः सं० १९१० (१८५३ ई०), १८६० ई० और १९१३ (१८५६ ई०) है। दूसरे ग्रंथ का र० का० एक प्रति के अनुसार सं० १९०३ (१८४६ ई०) और दूसरी के अनुसार सं० १९१३ (१८५६ ई०) है। लि० का० क्रमशः स० १९१३=१८४६ ई० और १९२० (१८६३ ई०) हैं। सभवतः महाजनी सार के भी पृथक-पृथक भाग हैं। यह उत्तर प्रदेश (तब युक्त प्रांत) के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर के कार्यालय मे काम करते थे और पाठ्य पुस्तके भी लिखते थे।

३१७ श्रीपति भट्ट—इनका रचा 'हिम्मत प्रकाश' नामक वैद्यक ग्रंथ मिला है जिसके विवरण लिये गये हैं। इसकी प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल का उल्लेख नही है। लि० का० सं० १८९८ (१८४१ ई०) है। यह पहले विवरण में आ चुका है, देखिये खोज विवरणिका (१९०६-८ स० २३८)। प्रस्तुत प्रति अधूरी है। उक्त विवरणिका के अनुसार रचनाकाल स० १७३१ (१६७४ ई०) है। रचयिता इलाहावाद के नवाव सैयद हिम्मत खाँ के आश्रित थे जो औरगजेब के समकालीन थे।

३१८ सुन्दरलाल—इनके रचे 'ध्रुव लीला', 'हरिश्चन्द्रलीला' और 'ऊपालीला' नामक तीन ग्रंथ मिले है। पहले ग्रंथ का र० का० सं० १९०१=१८४४ ई० और लि० का० १९१८ (१८५१ ई०) है। शेष दोनो ग्रथो का रचनाकाल अज्ञात है। लि० का० सं० १९३२ (१८७५ ई०) तथा सं० १९४० (१८८३ ई०) दिये है। रचयिता मथुरा जिले के करहल्ला ग्राम के निवासी थे। गत विवरणिका (१९२६-२८, सं० ४६८) में इनका पहला ग्रथ 'सुन्दर श्रृंगार' के रचयिता सुन्दरदास के नाम पर उल्लिखित है। परन्तु इस बार प्रमाण मिल जाने के कारण यह सुन्दर लाल नामक एक अलग रचयिता की कृति विदित हुई। शेष दोनो ग्रथ नवीन हैं।

३१९ सूरदास—ये प्रसिद्ध कवि और महात्मा है। अष्टछाप के ये प्रथम कवि थे और पिछली कई खोज विवरणिकाओ में इनका उल्लेख हो चुका है, देखिये खोज विवरणिकाएँ (१९१२-१४ सं० १८५, १९२०-२२, सं० १८६, १९२६-२८, सं० ४७०)। इस बार इनके निम्नलिखित ग्रंथ और मिले है:—

क्र० सं०	नाम ग्रंथ	प्रतियाँ	लि० का० = सन् ई०
१	सूर सागर	२	स० १७९७ = १७४० ,
२	भागवत (दशम)	३	स० १९१७ = १८६० ,
	,, (एकादश स्कन्ध)	१	,, ,,
	, (द्वा० स्क०)	१	,, ,,
३	सूर रतन	१	,, १८७४ = १८१७ ,
४	राग माला	१	×
५	विसोतन लीला	२	,, १८३१ = १७७४ ,,

ये सभी ग्रंथ लगभग उपर्युक्त विवरणिकाओं में आ चुके हैं । रागमाला इस खोज में विशेष उल्लेखनीय है । इसमें सूरदास जी के १००० पद संगृहीत हैं और ग्रंथ चित्रों से भूषित है । इसका लेख भी सुन्दर है ।

३२० सूर्यनारायण—समस्या पूर्तियों के विचार से लिखा गया इनका 'कविता वली पूर्ति प्रभाकर' नामक ग्रंथ पहले ही पहल मिला है । ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल नहीं दिया है । लि० का० स० १८५४ (१७९७ ई०) है । रचयिता कोढ़ (मिर्जापुर) का निवासी था ।

३२१ श्यामलाल (गौरी लावा निवासी)—के बनाये 'नवरस' नामक कृष्ण चरित्र संबन्धी एक ग्रंथ की दो प्रतियां शोध में प्राप्त हुई हैं । ग्रंथ का रचनाकाल अज्ञात है । इसकी प्रस्तुत प्रति में लि० का० १९०८ (१८५१ ई०) दिया है । रचयिता गौरी लावा (तहसील, शिवराजपुर, जिला कानपुर के निवासी थे । इससे अधिक इनके विषय में कुछ ज्ञात नहीं ।

३२२ श्यामलाल (माथुर)—इनके रचे 'सैर वाटिका' और "दान लीला" नामक दो ग्रंथ पहले पहल प्राप्त हुए हैं । पहला ग्रंथ स० १८९४ (१८३७ ई०) और दूसरा स० १८९१ (१८३४ ई०) के रचे हुए हैं । लिपिकाल दोनों का एक ही अर्थात् स० १९०० (१८४३ ई०) है । रचयिता के सम्बन्ध में कुछ ज्ञात नहीं ।

३२३ टिकैतराय—इनकी बनाई 'गाजर की लड़ाई' के जो आल्हा छन्दों में लिखी गई है विवरण लिये गये हैं । ग्रंथ का र० का० अज्ञात है । इसकी प्राप्त प्रति में लि० का० स० १९१२ = १८५५ ई० है । अन्य सूत्रों से पता चला है कि रचयिता स० १९०० = १८४३ ई० के लगभग वर्तमान थे । इनके सम्बन्ध में अधिक कुछ ज्ञात नहीं ।

३२४ टीकाराम (अवस्थी)—इन्होंने वाराहमिहिर कृत संस्कृत ग्रंथ लघुजातक' का पद्यबद्ध अनुवाद किया है जिसकी एक प्रति जिसमें सन् संवत् का विवरण नहीं दिया है इस शोध में प्राप्त हुई है । रचयिता के पिता का नाम भवानीप्रसाद था । इससे अधिक इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं ।

३२५ गोस्वामी तुलसीदास—ये हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं और इस बार इनकी कई रचनाओं की ६५ प्रतियाँ मिली हैं जिनका विवरण नीचे दिया जाता है —

क्र० सं०	ग्रथ का नाम	प्रतियाँ	लि० का० (पुरानी प्रति का)
१	रामचरित मानस	१	×
२	,, , बालकाण्ड	५	१८३४ = १७७७ ई०
३	,, ,, अयोध्या ,,	३	१७९० = १७३३ ,,
४	,, ,, आरण्य ,,	६	१७६० = १७०३ ,,
५	,, ,, किष्किन्धा ,,	७	१८६२ = १८०५ ,,
६	,, ,, सुन्दर ,,	७	१७९० = १७३३ ,,
७	,, ,, लङ्का ,,	३	१८७८ = १८२१ ,,
८	,, ,, उत्तर ,,	६	१७६० = १७०३ ,,
९	,, ,, लवकुश ,,	२	१७६० = १७०३ ,,
१०	विनय पत्रिका	२	×
११	कवितावली	१	×
१२	गीतावली	१	१९०७ = १८५० ,,
१३	कृष्ण गीतावली	३	१७८८ = १७३१ ,,
१४	दोहावली	१	×
१५	विजय दोहावली	१	१८३२ = १७७५ ,,
१६	हनुमान चालीसा	१	१९२६ = १८७० ,,
१७	हनुमान बाहुक	१	×
१८	विराग संदीपनी	१	×
१९	जानकी मंगल	२	१८०२ = १७४५ ,,
२०	रामाज्ञा प्रश्नावली	३	१८०३ = १७४६ ,,
२१	चेतावनी दोहा	१	१८९८ = १८४१ ,,
२२	हनुमान त्रिभंगी छन्द	१	×
२३	बारह मासी(रा० च०की)	१	×
२४	श्रीरामजी स्तोत्र	१	×
२५	त्रिदेव स्तुति	१	×
२६	ज्ञान दीपिका	२	१८४५ = १७९७ ,,

३२६ तुलसी साहब (हाथरस वाले)—इनके बनाये चार ग्रथ 'घटरामायण' संवाद फूलदास कबीर पंथी (संवाद फूलदास कबीर पंथी से तुलसी साहब का), संवाद पलक राम नानक पंथी (संवाद पलक राम नानक पंथी से तुलसी साहब का) और रत्नसागर प्राप्त हुए है । र० का० किसी ग्रंथ का नही दिया है । लि० का० प्रथम दो ग्रथो की प्रतियो का स० १९११ = १८५४ ई० और तीसरे ग्रथ की प्रतिका स० १९१९ = १८६२ ई० है । चौथे ग्रथ की प्रति में लिपिकाल नही दिया है । घट रामायण के विवरण पहले हो चुके है , देखिये खोज-विवरणिका (१९१२-१४ सं० १९०) । उक्त सभी ग्रथ बेलवेडियर प्रेस प्रयाग से प्रकाशित हो चुके है ।

३२७ वाजिद—इनके बनाये 'आरिल्ल' और 'साखी' नामक दो ग्रथ पहले पहल मिले है। इनसे पूव इनका 'राजकीतन' नामक ग्रथ मिला था, देखिये खोज विवरणिका (१९०२, स० ७९)। इनका र० का० स० १६५७ = १६०० ई० माना गया है। ये जन्म के मुसलमान और दादूपथी सन्त थे। इनके प्रस्तुत ग्रथों की प्रतियों में सन् सवत् का व्योरा नहीं है। विशेष विवेचन के लिये देखिये भूमिका भाग सख्या १५।

३२८ विष्णुदास—इनके लिखे निम्नलिखित तीन ग्रथ प्राप्त हुए हैं जिनका र० का० अज्ञात है।

क्र० स०	ग्रथ का नाम	प्रतियाँ	लि० का० = सन् ई०
१	महाभारत	१	×
२	रुक्मिणी मगल	१	×
३	स्वर्गारोहण	४	१८०६ = १७४९ ई०

रचयिता का समय स० १४९२ = १४३५ ई० के लगभग है और वह गवालियर (गोपाचल) नरेश राजा डूँगर सिंह के आश्रित थे। इनके प्रस्तुत ग्रथ पहले मिल चुके हैं देखिये खोज विवरणिकाए (१९०६ ८, स० २४८ १९१२ १४, स० १९३, १९२६–२८, स० ४९६)।

३२९ यमुनाशकर—इनके रचे तीन ग्रथ—१ अवतार सिद्धि (२) रामगीता की टीका और (३) माँडूकोपनिषद भाषा टीका—पहले पहल मिले हैं। दूसरा ग्रथ स० १९२९= १८७२ ई० में रचा गया और यही इसका लि० का० भी है। शेष ग्रथों में र० का० का उल्लेख नहीं है। प्रथम ग्रथ की प्रति का लि० का० स० १९३२ = १८७५ ई० है। तीसरे ग्रथ की प्रति में लिपिकाल नहीं है। परन्तु यह गद्य में होने के कारण महत्व की है। *माँडूकोपनिषद् पर सस्कृत में जगद्गुरु जी के भाष्य का और उनके पूज्य गुरु* श्रीगौड़पादाचार्य जी की कारिकाओं का भी उल्लेख इस ग्रथ में है। रचयिता गुजर नागर ब्राह्मण था, और स्वामी ब्रह्मानद का शिष्य था। ये काशी में रहते थे।

द्वितीय परिशिष्ट

प्रथम परिशिष्ट में वर्णित रचनाकारो की कृतियो के उद्धरण

द्वितीय परिशिष्ट

रचनाकारों की कृतियों के उद्धरण

संख्या १ कलेश भंजनी, रचयिता—अब्दुल मजीद, कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९०८, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० भागदत्त दुबे, ग्राम—सिकंदरपुर, डाकघर—बेनीगंज, जिला—हरदोई।

आदि—ॐ श्री गणेशायनमः ॥ पोथा को इलाज कै दूषण का दूरि कराये को इलाज ॥ अफला तूण हकीम सकराती हकीम, जाली नूस हकीम लाकमान हकीम अरस्ता तालास हकीम सकराती हकीम सबकी मन मिलिकै इलाज दूषण का समझ पोथा मे जो जो अजमाइस यांच आया सो एक जगह कै कै पोथी ईजद बनाइ। ईजद बनाइ के नाम, तोफतुल गुवा फारसी मेंह और हिन्दू मह कलेस भंजनी रखा ॥ परवस उस नाम की सै मैं यह अदान फकीर हूं। मैं न उरफ अब्दुल मजीद अनुसार लिखण पोथा का की गैर आ फयत सो तमाम होतीम पाठ इलाज सव दुषण का बनाइ दिया कि दुखिण के काम आवे और इलाज औरति मरद का अंव दुजार आरसटु का तरकीव होली नवा माजून का और दाद कुवत बाह मद का कि काम दव जियादा होइ। और गुरदा गरम होइ। तरकीव दूसरी। एन्हा पावना बगत माह के मरद और आरति क औ मायल करण औरति को समझ मो ॥

अंत—इलाज मंतर था इल का आजमूदा है ॥ जो किसी औरति का थन इल हो ता क्या करे। इम आतिना उस औरति की पूंछ मागे औ थारन वाले का नाव उस आरति के कान में कहि आवै कि फलाना तुम्हारा थनइल करता है जो दहिनी चूची मह होइ तो अपनी बाईं चूचा पकरि कै कारै औ फूंक जो बाय मह हाइ तौ अपनी दाहिनी चूची पकरि कै फूंकै तौ साम माह मोर बाह फुरसति होय ॥ मंतर यहि है पढ़ि के फूंकने को जानना ॥ पाकरि येक आये मानी नागिन टूहै गाय फलानी का थनइल कारौ पानी बध होइ जाइ सात बेर फूंकै फुरसति होइ। मंतर धनिही का है सात बेर पढ़ि के फूंकना और मंतर अध कपारी का भी यही है। नदी किनारे रुखवा तेहि पर चढ़ डकिनी इसीनी भखिनी संखिनी मखिनी है हा। इश्वर महादेव गौरा पारवती को भीतर ही जरि होइ जरि होइ छार होइ नरदै नरदै नरदै ॥ अपूर्ण।

विषय—वैद्यक।

टिप्पणी—इस ग्रंथ को अब्दुल मजीद ने फारसी तुहफतुल गुरबा से हिन्दी में लिखकर कलेश भंजनी नाम रखा।

संख्या २ ए. धातु मारन विधि, रचयिता—आधार मिश्र, कागज—देशी, पत्र—२०६, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६० = १८०३ ई० । प्राप्तिस्थान—लाला स्वामीदयाल, ग्राम—ताहरपुर, डाकघर—सुम्नान, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ धातु मारन विधि ग्रन्थ लिख्यते ॥ अथ फौलादि मारन विधिः—लोह चूर्ण भुरकी में करे । अर्क दुग्ध ऊपर ते भरे ॥ गधक नैनुवां देइ डारि । गज पुट आंच दे लेइ निकारि ॥ पुनः लोह मारन—लोह चूर्ण भुरकी मे करे । अपामार्ग रस ऊपर भरै ॥ तीनि वेर दृढ गज पुट करे । रस फौलादि तब निश्चय मरे

अंत—अथ पाह मारन विधिः—अर्क दूध पाह दुगुन भुरकी में भरे दीपक ते मुंह मूदि गज पुट में भरे ॥ जो भरि जो खाइ प्रात तिगुन भूख लागे ॥ पुष्टक अधिकार है प्रमेह बीस भागै ॥ पुनः पाह मारन विधि.—अमलोना की भार्जी सों चोटि के धरीजै ॥ ताके बीच पाह भरै गज पुट आच दीजै ॥ अमिली को मुर्चा तर ऊपर धरि दीजै ॥ अमिली ना मिलै तो पीपर को लीजै ॥ ऐसी दृढ भट्टी सों तीनि दिवस प्रचै । चौथे दिन रस निकारि रोगी लपि प्रचै ॥ कोता दम छर्द कास बाई को मारे ॥ चारि प्रकार जूडी रस पहुचत मे टारै इति श्री आधार मिश्र विरचिते धातु मारन विधि ग्रंथ सपूर्ण समाप्तः लिखत दुरगा परसाद मिश्र अश्वनि सुदि प्रतिप्रदा सवत् १८६० वि० ॥

संख्या २ बी. वैद्यक (कठिन रोगों की औषधि), रचयिता—आधार मिश्र, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००८, रूप—प्राचीन, नागरी, प्राप्तिस्थान—रामशंकर वैद्य,—ग्राम—धनराजपुर, डाकघर—मह्लावाँ, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ वैद्यक आधार मिश्र कृत लिख्यतेः—अथ सर्व ज्वर को धूरा वत्तीसा, चिरैता कुटकी मिर्च पीपरि, सोठि, वहेरा, हर्रा, अवरा, देवदारु, हींग, मजीठ, सोफ, मगरैल, अजमोद, जवाइन, कचूर जेठी मधु, कुलथी अगर कैपूरा, अतीस वटी वच, अरहरी, या रसानि, जेवासा सरसों- वाय भिडग सेधौ सहि जेन की पाती खुरा जुवाइनि विया रासनि भरगी, पुहकर मूल सब सम लेव धूरा करे सर्व ज्वर हरे ॥

अत—अथ जावत्री पाग—जावत्री पाव भरि दूध सेर पांच गौ घ्रत पैसा १२ सव मिलाइ खोवा दाना दार करव खाड पैसा अठारह पाग में मिलावै पत्रज अकर करह इलायची नाग केशरि मूसरि के वीच के वीज उटंगन माल काकुनि वरियारा के वीज अज मोद सौंफ तेज वल गुखरू सतावरि वश लोचन जेठी मधु त्रिकुटा कचूर कवाव चीनी सोच रस प्रति टंक २ चूर्न कें अभ्रक तोला १ सोरा तोला १ कस्तूरी मासे १ कपूर मासे १ सव मिलाइ खाइ टंक दो दूनौ जून पुष्ठ करै रोग वहि जाइ धातु वृद्धि होइ लिंग दृढ़ होइ ॥

इति श्री आधार मिश्र विरचिते वैद्यक कठिन रोगो की औषधि संपूर्ण समाप्त।

सख्या २ सी वैद्यक विलास सग्रह, रचयिता—आधार मिश्र, कागज—देशी, पत्र—१००, आकार—१२ × ४ इन्च, पक्ति (प्रति पृष्ठ) —१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००४, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९६ = १८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला कन्नूमल पटवारी, ग्राम—बल्देवपुर, डाकघर—उम्मरगढ, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ वैद्यक विलास सग्रह आधार मिश्र कृत लिख्यते ॥ जीण ज्वर लक्षण—उदर पीडा छर्दि होइ गरो जरे विरोचन हुकार ॥ अथ मल ज्वर लक्षण—कट सोप दाह अग अग पीडा भम सिर पीडा ॥ अथ पित्तज्वर लक्षण—सिर पीडा भर्म मूर्च्छा अस्ति पीडा ॥ दाह रक्त मुख कटुक ॥ अथ पेद ज्वर लक्षण—देह पीडा निद्रा आलस स्वेद जम्भ नेत्र पीड़ा—अथ वात ज्वर लक्षण—सीत कप महा दाह तृषा चित्त भम विकरता जीभ कटक फटी ॥

अन्त—पुरा पाह मारन विधि —अमिल्ना की भाजी सों घोटि ये धरीने। ताके बीच पाह धरै गज पुट आच दीजै ॥ अमिली को मुचा तर उपर धरि दीजै। अमिली न मिलै तौ पीपर को लीजै ॥ ऐसी दृढ भट्ठी सो तीन दिवस पचै। चाये दिन रस निकारि रोगी कपि खरचै ॥ कोता दम छह कास बाई को मारे ॥ चारि प्रकार जूड़ी रस पहुँचत मारै ॥ इति श्री आधार मिश्र कृत वैद्यक विलास समह तृतीय अध्याय सपूर्ण समाप्त लिखत वेनीराम कायस्थ शिवपुर सवत् १८९६ वि० ॥

विषय—वैद्यक

सख्या २ डी मदनुस्सफा या किताब सिकदरी, रचयिता—आधार सिंह, कागज—साधारण, पत्र—६०७, आकार—१४ × १२ इ०, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९२८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०९=१८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० कृष्णकुमार शास्त्री, ग्राम—अलीगज, डाकघर—अलीगज, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नम । दो०—आदि वद करता धनी प्रथमैं विनवौं ताहि। जाके भजन प्रताप ते सकल रोग मिटि जाहि ॥ सुमिरि देवगुरु काज करि बन्दौ दानव राज। विघन न कोऊ लाइयो यह परमारथ काज ॥ ता पाछे आरभ रच्यो करन वचनिका ताहि। सिकन्दरी पारसी वैद्यक शास्त्र जु आहि ॥ पुराचीन जे पुस्तकें हती जो जेहि जेहि ठौर। तिनके वकला सहित ते जोरी आनि वटोरि ॥ परच्यो द्रव्य जु साहि तन लाख डेढ परिमान। यह वैद सवराह करि रची पारसी आनि ॥ ता पारसि के पढन कौ मनमें करो विचार। सो यह है दुस्तर नदी क्यों करि उतरौ पार ॥ महा गूढ है पारसी महा कष्ट सौं जानि। ताते उर्दू है भली तुरतहिं होवे ज्ञान। ऐसी हिये विचारि चेत सिंह भदौरिया बोल्यो वचन रसाल अधार सिंह सो हेतु निज। सब ग्रन्थन को सार ले वैदनि पारसि करौ ॥ पात साहि के हेत सोहै तिब्ब सिकदरी ॥ सुनिये दादा राउ सोइ तिब्ब सिकदरी मोपै दया विचारि मेरे हित भाषा करौ ॥ ग्रन्थ वणन ॥ शुश्रुत, चरक, वाग्भट, भोज, भेद, सारग भट्ट व रस

रतना कर सारंगधर, वग सैन चिन्ता मनि माधौ निधान वैदक के ग्रन्थ जे जे मालूम भये तिन सब का सार पैचि इकट्ठा करा तिव्व सिकदरी का नाव मदन नुस्तफा रखा आनद की खानि बीच सन नौसै सोलह हिजरी ऊपर तैयार की ॥

अन्त—वास्ते दूरि करन प्रमेह—वाह रतन माला की जड़ उसकी लाल होती है लाये बीच छाह के सुखाये और परछावा औरति नापाक से बचाये रखे और बीच मकान पवित्र के ॥ चूर्ण वारीक करिके कपड़े से छानि राषै तिस पीछे एक टंक चूना सुफेद कि जो पान के सग खाते है और दो आंवले सूखे वारीक पीसकर जु देवे। जब चाहै कि औषदि को ऊपर फोडो फिरंग के लेप करें। पारा सोधा हुआ तीन टक लेवे ॥ तिसको हाथ की हथेली पर डालै आधी टंक वाह रतन माला और एक रत्ती उस चूने को और आवले पिसे से भी डाले और अगूठे से मलै तो वह पारा छार हो जावेगा ॥ तिस पीछे औषधि हथेरी पर से लैकरि और रोगी को लिटाइ करि उसके पकाऊ फोडे को मलै और सुलाय देवै औषधि सोषि जावेगी। जब पसीना सूखि जावे ति पीछे उसको कहै तौ उठै और पथ्य अपना चावल माटी और दूध करै ऐसे ही तीनि टक पारो हर रोज जिस तरह कि कहि आये है ऊपर पकाऊ फोडे के लगाये ऐसा कि १५ रोज तक पांच टक पारा काम में लावै अच्छा होवे ॥ इति श्री किताब सिकदरी कि जो मदनुस्तफा नाम है यामे आनंद की खानि है तिसका टीका सपूर्ण क्रिया। क्वार मासे शुक्ल पक्षे पूर्णिमा बुद्ध वासरे इदं पुस्तक लिखत चेत सिंघ भदौरिया संवत् १९०९ वि०

विषय—वैद्यक

संख्या ३ ए ध्यान मजरी, रचयिता—अग्रदास, पत्र—१६, आकार—७ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९०२ = १८४५ ई०। प्राप्तिस्थान—प० बांकेलाल शास्त्री, डाकघर—खैरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—अथ लिख्यते ध्यान ध्यान मंजरी की पोथी सुमरौ श्री रघुवीर धरि रघुवस विभूषन, सरन गहे सुपरास हरत अघ सागर पुषन, सुदर राम उदार, वान कर सारंग धारी, हिय धर प्रभु को ध्यान, विद्वजन आनदभारी अवध पुरी निज धाम, प्रेम-अत सुदर राजै, हाटक मन मय सदा नगन की विराजै ॥ पौरी द्वार अत चारु चारु सुहावन चित्रन सोहे, चच नार मदार कल्पतरु देषत मोहे।

अंत—ध्यान मजरी नाम सुनत मन मोद पढ़ावौ ॥ श्री रघुवरि भो दास मुदित जन अग्र सु गावौ ॥ इति श्री अग्रदास कृत ध्यान मजरी सपूर्ण समाप्त सुभ मस्तु मिती चैत्र सुदी को सं० १९०३ की साल में यथा प्रती उतारी विषयः—रामचंद्र जी की भक्ति के भजन है।

सं० ३ बी. ध्यान मंजरी, रचयिता—अग्रदास, कागज—बाँसी कागज, पत्र—१०, आकार—७ × ४ इंच, पंक्ति प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० देवकीनंदन झम्मनलाल जी, डाकघर—कागारोल (उप०—खैरागढ), जिला—आगरा।

आदि—श्री मते रामानुजायन्म । सुमिरौ श्री रघुवश विभूषण 'सरण गहे सुख रासि हरत अघ सागर दूषण । सुदरराम उदार बाण कर सारग धारी । हाय धरि प्रभु को ध्यान विधै जन आनंद कारि ।

अत—इति श्री स्वामी अग्रदास कृत श्री रामध्यान मजरी समाप्त सपूरन प० श्री रामध्यान धरत ६ सतजन ॥ राम ॥

स० ३ सी ध्यान मजरी, रचयिता—अग्रदास, पत्र—१४, आकार—१० × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप)—१२६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पडित लक्ष्मीनारायण, ग्राम—पचवान, डाकघर—फिरोजाबाद जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ श्री गुरचरणेभ्यो नम श्री सरस्वत्यै नम ॥ सुमिरौं श्री रघुवीर धीर रघुवश विभूषण । शरण गहे सुख राशि हरत अघ सागर दूषण ॥ १ ॥ सुदर राम उदार बाण कर सारग धारी । हिय धरि प्रभु को ध्यान विदुष जन आनदकारी ॥ २ ॥

विषय—श्री रामचंद्र जी की स्तुति वर्णन ।

सख्या ४ ए भाषा सामुद्रक, रचयिता—अजयराज, कागज—साधारण, पत्र—१०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप)—३२५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई० । प्राप्तिस्थान—प० राम लाल, ग्राम—तुरकीया, डाकघर—अछरेरा, जिला—आगरा ।

आदि—अथ भाषा सामुद्रकलिख्यते । दोहा । प्रथमहिं दखो आयुबल, लक्षिणत दिन विचार आयु विना लक्षिण विथा यहै ग्रथ विवहार ।

अंत—दोहा—सुभग सुलक्षिन सुनि सुभ सज्जन के सुखदेत भाषा सामुद्रक रची अजै राज के हेत । सोरठा । जो याने सोजानि धता होइ आजान पुनि । ज्ञानपगों अरुदार अजैराज बुधविधि निपुनि । इति श्री अजैराज विरचितायां भाषा सामुद्रक पुरुष स्त्री लछन सपूर्ण । मिति माघ कृष्णा ६ बुधे सवत् १९२४ लिषत चुन्नीलाल मु० कोन्टिा । जदुपती महाराज तुम अपनो विद समारि । हमको सरने राखियो, अपनी ओर निहार ।

विषय—सामुद्रिक वर्णन ।

सख्या ४ बी विजय विवाह, रचयिता—अजयराज, पत्र—२०, आकार—८ × ५१/२ इच, परिमाण (अनुष्टुप)—६४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८१३ = १७५६ ई०, प्राप्तिस्थान—वटेश्वर दयाल जी दीक्षित, प्रधानाध्यापक ग्राम—गुररौठा, डाकघर—फतहाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्री रामाय नम ॥ अथ विजय विवाह लिषिते ॥ ऊ वदन अग आभूषण, परमल निरमल पूरणा पहरणं ॥ वाघी साज साज वाहरण, प्रणम स्वर सति उकीत समपणं ॥ १ ॥ लबोदर गुण वेसा, अणक दिगै आप गणेसा ॥ आयो सुधि आछर उपदेसा, कीरति कँवला गाऊँ केसा ॥ २ ॥ आनन च्यार वेद उपासी, वुधि प्रकासी काशी वासी ॥

नमो न्यारा नारद निवासी, आदि पुरुष गाऊ अभिनासी ॥ ३ ॥ लछिमी पति लिपि मीरा लीला लप लाप कोडि गधरप समनीला ॥ लहे न चतुर सुप वासिग नीला, लायक को गावक समनीला ॥ ४ ॥—अथ छंद त्रोटिका—नीला घन स्याम तणी लहणी, किय जाय नकाय वसौ कहेणी ॥ दिपणा ददि सायक राज दिपे, छवि देखत इन्द्र पुरिद छिपे ॥ कुणपुर भीपम राज करै धर सारिय ऊपर छत्र छरै ॥ तिणरै सह गदिर हे मतण, धरणा मोलाइ नग जहाव घणा ॥

अत—वुधि सारु सगू कीयो मैं व्याह विजय, अरदासि सहच वाधा उपजे ॥ जुध जीययो काम वध कीयो, दामोदर दान भगति दीयो ॥ जादू राय सहाय करो जनकी, महाराज हरो ममता मन की ॥ क्रणां करिहो करुणा करि ज्यो कवित्त तु गुण नागर परम । तूही निरगुण पणमेश्वर । तू अकरण सब करण कृष्ण तू ही करणा कर ॥ तू ही निरजन निराकार ॥ तू ही जरजण रुक मारे, तू निकला नि॰धार तु हीज आधार कह मोरे ॥ विरज राजकुमार ये वीनती, अजेराज सोभलि इति ॥ सुभरारि टेपि मुरारि दिसि पेम भगति छोह जगत पीत ॥ इति श्री गुण विजे व्याह सम्पूर्णम् समाप्तं ॥ शुभ भूयात्—सवत् १८१३ वपे ॥ पौप मासे शुक्ल पक्षे २ जीव वासरे लिपितं ॥ मिद मिश्र अमर दासेन पठनार्थ देवी सिह जी ॥ श्री श्री

विपय—रुक्मिणी कृष्ण का विवाह

टिप्पणी—इस पुस्तक में अशुद्धियाँ वहुत है । अपभ्रश शब्दों और मारवाड़ी शब्दों का पयोग अधिक है ॥ कुडनपुर के राजा के वैभव, कन्या के सौंदर्य और युद्धादि कई विपयो पर प्रकाश डाला गया है ॥ अशुद्ध लिपि एवम् मराठी तथा मारवाड़ी भापाओं के प्रयोगो के कारण कही कहीं ऐसी भापा वन जाती है जो वर्तमान हिन्दी के रूप से कहीं अधिक दूर पहुँचती हुई सी दिखलाई देती है ।

संख्या ५ ए. शिक्षा वत्तीसी, रचयिता—अजीत सिंह महता (जैसलनगर) कागज—देशी, पत्र ३, आकार - ६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप)—३६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९१८ = १८६१ ई०, लिपिकाल—स १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—लाला छीतरमल, ग्राम—रायजीत का नगला, डाकघर—लखनऊ, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ शिक्षा वत्तीसी लिख्यते ॥ श्री वल्लभ विट्ठल प्रभू गिरधर गोविद राय । वाल कृष्ण गोकुल रघू यदू स्याम धन साय ॥ गढ़ जैसाणो पै तपै रावल श्री रणजीत । यहि शिक्षा वत्तीस को मेहिता करी अजीत ॥ मन्त्री सेवन कीजिये नृप सेवन के काज । केवल नृप नहिं सेइये सेवे होय अकाज ॥ पहिलो भय भगवान को दूजो भय भुव पाल । तीजो भय लोकान को राखौ विन मत चाल ॥ देख इष्ट अरि गुण परम पैदा खरच सम्हार ॥ हर यक कारज कीजिये सबै विचार विचार ॥ सब दिन होय न एक से समुझि विचक्षण बात । बरतन ऐसी वरतिये आदि अंत जो जात ॥ खावो पीवो खरच लो कर लो सुकृत सुकाम ॥ तन मन धन थिर नहि रहै थिर रहै गोविद नाम ॥

अत—भक्त किये भगवत मिले सक्ति किये सिधि काम ॥ उक्ति किये आदर मिलै युक्ति किये जग नाम ॥ राख सुसील साच वड़ रख लिहाज रख रीति । क्षमा दया रख शील शत रख सतोष सुधि प्रीति ॥ जुरत फुरत अरु सुरत से सिधि कारज सब होय । म्हेता अजीत को कियो निश्चय यह करि जोय ॥ भूल चूक सब समझ कै करि कवींद्र सुध सोध । सुन अजीत की बानती मोमें नहिं चतु बोध ॥ सत ऊनीस अठारवें आश्विन सुदि दश राव । भयो समापत ग्रथ यह करि अजीत सिंह चाव ॥ इति शिक्षा बत्तीसी म्हेता अजीत सिंह कृत सपूण शुभ मस्तु लिखा चाद मल मुनीम स्वपठानाथ सवत् १९२७ जेठ सुदि दसमी ।

विषय—शिक्षा संबधी दोहे ।

सख्या ५ बी शिक्षा बत्तीसी, रचयिता—महता अजीत सिंह (जैसलमेर), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८३⁄४ × ६३⁄४ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—७२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० लक्ष्मीनारायण, ग्राम—जसरथ पुर, डाकघर—फिरोजाबाद जिला—आगरा ।

आदि अत—५ ए के समान ।

पुष्पिका—इति शिक्षा बत्तीसी मेहता अजीत सिंह कृत सम्पूर्णम् ॥—

सख्या ५ सी विद्या बत्तीसी, रचयिता—महता अजीत (जसलमेर), कागज—देशी, पत्र— , आकार—८३⁄४ × ६३⁄४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० लक्ष्मीनारायण, ग्राम—जसरथपुर, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि श्री गणेशाय नम ॥ अथ लिख्यते म्हेता अजीत सिह कृत विद्या बत्तीसी ॥ दोहा ॥ श्री कृष्ण की शरण हूँ । सुध बुधि दे तत्काल । विघ्न हरण सब सुख करन । नमो नमो गोपाल ॥ १ ॥ गादी जैसल नगर की । राजेश्वर रणजीत । यह विद्या बत्तीस को । म्हेता करी अजीत ॥ २ ॥ प्रातहि उठि गुरू ध्यान धर । प्रभु के चरण सम्हार । सादर गणपति सुमिरि कै । कर विद्या उपचार ॥ ३ ॥ काना सू गुरू वाक्य सुन । मुखसौं करो उचार फेरि हृदय धरि कर लिखा । अक्षर नयन निहार ॥ ४ ॥ अक्षर मात्रा अक लिख । फिरि सजोग विचार । इन विद्या को पार नहिं । होय अपार पार ॥ ५ ॥

अत—धन धन है गुरु दव कू । धन है उनकी जात ॥ ३४ ॥ अरज करत अगजीत ये । भाइन मीमें बोध । चूक भूल को जान कर । शुद्ध करो कवि शोध ॥ ३५ ॥ उगनी सौ अठारवें । दीप मालि शनि दिन । किय पूरण यह ग्रन्थ कू । पढ़ मन होय प्रसन्न ॥ ३६ ॥ इति विद्या बत्तीसी मेहता अजीत कृत ॥ सम्पूर्ण समाप्त ॥

विषय—विद्या की महत्ता और उसके ग्रहण करने का उपदेश ।

सख्या ६ ब्रह्मपिंड, रचयिता—अक्रूरपुरी (काशी), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८३⁄४ × ४३⁄४ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप)—८१,

रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुंशी मन्नालाल, ग्राम—बच्छगांव, डाकघर—हिम्मतपुर, जिला—आगरा।

आदि—काशी बसत कबीर जू एक। तिन पकरी नाम भगति की टेक॥ निरबान बानी बोलैं यौं। भगति बिना दरसन न त्यौं॥१॥ हरि बस कलष्ट काचविमृ आमन विष्णु॥ मंगल सिंगार धूप॥ सेन संध्या स्थापन राज। गात समैं राधा वल्लभ॥ जोई जोई प्यारो करै॥ सोई सोई करै प्यारो मोको तो भावती ठौर प्यारे के नैन में॥ प्यारो भयो चाहैं मेरे नैनन के तेरे॥ मेरे तन्मन प्राण प्राणहु तो पीतम प्रिय॥ अपने कोटिक प्राण प्रीतम मोस्यो हारे॥ जयश्री हरिवंस अस हसनी सावल गौर कहौ कोनु करे जल तरंगण न्यारे॥ १॥ प्रात सम्यें दोऊ रस लपट छति युद्धाजग पुत अति फूल॥ श्रम वारिज घन विन्दु बदन पर भूषण अग ही अंग विकूल॥ कछु रयौ तिलक शिथिल अलकावलि वदन कमल मानौं आली भूल॥ जय श्रीहित हरि वस मदन रंग रँगि रहे नैंन दैंन कटि शिथिल दुकूल॥ २॥

अंत—अर्यला शिखरी राज वखाण। महमदरस्तु भागी रथ भजन टानि॥ ॐ काले ब्रह्मा शंकरे विष्णु आदि निरंजन मध्य निरंजन तत्त्व पद निपरुप आकार निराकार अविनासी अखडयत सोहं मन विसराम काया क्षेत्र तारक राम साटिया वृजिभावा मान सिद्धि सव सुख जाज्ञा परे दास श्री मन हरे जय जय हित कल्यान वाय जीय धरे काशी अक्रूर पुरी कृत ब्रह्मापिंड परी देव्या ईश्वरी॥ यदक्षर पद भ्रष्ट मात्रा हीन पद भुवे तत्सर्वं-क्षम्यतां देव मह मदस्तं भागी रथ त्रेता द्वापर के

विषय—दस पद, मंत्र तीसा, चौंतीसा गायत्री। आसा गोरी, मंत्र साठिया। नरयाजी अष्ट चक्र॥

संख्या ७ ए राजजोग, रचयिता—अक्षर अनन्य, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९१७ = १८६० ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा रामदास, ग्राम—सीतामऊ, डाकघर—मलावा, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ राज जोग लिख्यते॥ सवैया॥ आतम ज्ञान सो ज्ञान वहै परमातम ध्यान सो ध्यान सुरे सुर॥ वेद विधान विधान वहै सत पात्रहि दान सो दान धनेश्वर॥ अंतर भक्ति सो भक्त वहै उर अंतर की परखै परमेश्वर॥ वेद प्रमान अनन्य भनै यह भेद सुनौ पृथि चन्द नरेश्वर॥ छंद पाधरी—यह भेद सुनौ पृथ्वी चंद राउ। फल चारिउ को साधन उपाव॥ एक लोक साध लोकीक लोग। पातहु कमात रचि काम भोग॥ यह लोक सधै सुख पुत्र वाम परलोक परे बस नर्क धाम॥ परलोक लोक दोऊ सधै जाइ। सोइ राज जोग सिघात आइ॥

अंत—करि प्रतिमा पूजन दरस नित्त। सोई मूरति राखै ध्यान चित्त॥ यहि भांति ध्यान उर बसै आनि। यह ध्यान रहे नर नाह जानि॥ जो ध्यान सधै नहि लगै चित्त। तौ नेम सहित जप मत्र नित्त॥ जो मत्रन विधि सो सधै राउ। तौ पावन प्रभु को लेइ

नाउ ॥ तन सुद्ध होय सुख सुद्ध थानि । मन सुद्ध होइ सर विम जानि ॥ मन को सुभाव भ्रम को अक्कथ । तौ सुमिरन साधन ज्ञान गथ्थ ॥ सुन को सुभाव धरयो नरस । तौ नाम भजन धर कर सुदस ॥ कर भान सुद्ध सुमिरन सुबुद्धि । मिटि है मन की भरमना कुबुद्धि जित तित मनसा भरमै अनत । तित तित सुमिरन साधन तुरन्त ॥ कछु दिन साधन करने उपाइ । परिजात बहुरि मनसा सुभाइ ॥ मनसा सुभाउ पुनि ध्यान लान । यह राज जोग आनहु प्रवान ॥ जो राज जोग यह सधे राज । मन वछित ते सब होहि काज ॥ अरु कम लिस कबहू न होत । जग जीवन मुक्ति सदा उदोत ॥ यह ज्ञान भद अरु वेद भाषि । अक्षर अनन्य सिधात भाषि ॥ दोहा—राज जोग सिधात यह जानु राज पृथि चद ॥ यह सम मत नहि दूसरो पीजेहु सापटु वृद ॥ जो चाह ससार सुप अरु सिधांत प्रकास । तौ साधौ सवण यह राज जाग का पास ॥ इति श्री राज जोग समाप्त लिखो विहारी लाल निज हत मिती चैत्र सु. ो १३ सवत् १९१७ रोज वृहस्पति ॥ राम श्री राम राम राम

विषय—राज धम का वणन ६ ।

सख्या ७ वी राजयोग, रचयिता—अक्षर अनन्य, कागज—देशी, पत्र—६ आकार—८ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१६२, रूप—नवीन, लिपि—नागरी लिपिकाल—स० १९४७ = १८९० ई०, प्राप्तिस्थान—प० भोजराज शुक्ल, अवसर प्राप्त सब डिप्टी इसपेक्टर, शिक्षा विभाग, ग्राम—इतमादपुर, जिला—आगरा ।

आदि—श्री परमात्मने नम । अथ राज योग्य लिख्यते । आत्म ज्ञान सुज्ञान यही परमात्म ध्यान सो ध्यान धनेश्वर । सब वेद विचार विधान यही सत पावहिं दान सुदान दुनेश्वर । अतर भक्ति सो भक्ति यहां गति अतर की परखें परमेश्वर । वेद प्रमान अनन्य भने यह भेद सुना पृथ्विचद नरेश्वर ।

अत—कछू दिना साध करो उपाव, पर जात बहुर मनसा सुभाव । मनसा स्वभाव धुनि महज लीन, यह राज जोग जानत प्रवीन । जब राज योग यह सधे राज, तौ मन वाछित सब होइ काज । और कम विपत कबहूँ न होत, जग आवन मुक्त सदा उघोत । यह ज्ञान भेद अरु वेद सार, अक्षर अनन्य सिद्धात भार । इति श्री राज योग अनन्य कृत राजा पृथ्वीचद बोध समाप्त ।

विषय—राजयोग वणन ।

सख्या ७ सी राजजोग, रचयिता—अक्षर अनन्य, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—६¾ × ५ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ) ६, परिमाण (अनुष्टुप)—६३, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—मुशी सुखरासी लाल, अध्यापक प्राइमरी स्कूल, ग्राम—टूडल, डाकघर—टूडला, जिला—आगरा ।

आदि अत—७ ए के समान । श्री गणेशाय नम अथ राज जोग लिखते । कवित आत्मा ज्ञान सुज्ञ ना वहै परात्मा ध्यान सुध्यान धने स्वर । आतम भक्ति सुभक्ति कहै गति अतर की परपे मनमें सुर वेद प्रमान अनन्य भने यह चद सुनौ पृथीराज नरेसुर ।

पुष्पिका—इति श्री राज जोग सपूण शुभम वल्लभ लाल चोपेलाल पटवारी ।

विषय—राजयोग वर्णन ।

संख्या ७ डी. अनुभव तरंग सिद्धात, रचयिता—अक्षर अनन्य, पत्र—१४, आकार—६¾ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६२, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२० = १७६३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० गोकुलप्रसाद, ग्राम—मिहावा, डाकघर—इरादतनगर, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः। श्री गुरुभ्यो नमः। श्री गणपाटपतये नम.। पोथी अनुभव तरंग की लिखते श्री लक्षमण जू शाहि। एक कहै सत्यारुप एक कहै स्वरुप एक कहै ज्योति नूप नूप कव हाण सो। एक कहे निरकाल एक कहै महाकाल एक कहे महादेव महातम हान सो। एक कहै ब्रह्मा विष्णु एक कहै राम क्रिष्ण नाम गुन भिर्न लोग गुनत अहान सो। कोऊ कछु कहो सव कछु सो अनन्य भनै हौं न कछू कहौ ऐसो अरु वहान सो। सोई नामु कहौ सोई नाम वाके नामु निरनामु कहा वहनो अनूप को। जोई गुन गनै सोई गुन गुन सागर के निर्गुन हू सर्गुन सुभाव भव भूप को। जोई क्रितु करौ सोई क्रितु करता रही को सुकृत अकृत भेद मिटे भ्रम कृप को। जोई अनिभागे अनुभौ अनन्य भनै जेहि रूप देषौ सोई रूप जगरूप को।

अत—नाना अर्थ वर्नन में चतुर उरझि रहै नाना राग रागनि में रागी गुन अटकै। नाना ग्रथ कथानि में पडित भ्रमतभूले नाना उकति जुगतिन में कवि वुधि भटके। नाना रिद्धि सिद्धिन में सिद्ध ललचाय रहै माया की झकोरिन मे जहा तहा झटकै। अछिर अनिन एक सार निरधार करि विरले पुरुप एक धारन सो अटकै। दोहा—सो मत कौ मतु एक यह करके वलगुर भागो। देषि सवै सव दिस्टि धरि सर्व रुप शिवसक्ति। ऐते श्री अनुभव तरंग सिद्धात समापत सुभमती जैसी पाई तैसी लिखी सवत १८२० माण ३ वुद्ध को लिपि चुकौलि मोतीलाल की नगर में लिखी श्री राम जू सहाई रहैं—१००

विपय—आध्यात्मिक अनुभव।

संख्या ७ ई. ज्ञानयोग सिद्धात, रचयिता—अक्षर अनन्य, पत्र—३०, आकार—७¾ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—३६०, रुप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर जगन्नाथसिंह, ग्राम—चंद्रावल, डाकघर—विजनौर, जिला—लखनऊ।

आदि—ज्ञान योग अनन्य कृत सिद्धान्त ॥ दोहा ॥ श्री गुरु चरण सरोज रज। धरि अनन्य उर सीस। ज्ञान योग सिद्धान्त मत। जिन कीनि वक्सीस ॥ १ ॥ ज्ञान कहावै जानिबो। युक्ति कहावै योग। दधि घृत जाननि युक्ति मथि। तव पावै रस भोग ॥ २ ॥ ज्ञान बिना लघु योग है। योग विना लघु ज्ञान। ज्ञान योग सिद्धान्त करि। यह सिद्धान्त प्रमान ॥ ३ ॥ मूढन को हठ योग है। देह कर्म उरझाव। ज्ञान योग ज्ञानिन कहा। साधन सहज स्वभाव ॥ ४ ॥ अलख कर्म यासो कहत। कृपा लखै नहि कोय। ज्यो मछरी जल कव पियै। युक्ति न जाने लोय ॥ ५ ॥ ज्ञान योग निज युक्ति मत। अनुभव सिद्ध विचार। अगम निगम पुराण मत। मथि काढो सार ॥ ६ ॥

अंत—विघन को सिरे ब्रह्म विद्या है स्वतः सिद्ध। विघन के सिरे वेद विध लीन और है ॥ गुणन के सिरे तत्त्व साधन महान गुण। धर्मन के सिरे तत्त्व भाखौ सव ठौर है ॥

सिद्धन के सिर ग्यान सिद्ध है अनन्य भनै। सिद्ध ही असिद्ध वी न पाते भ्रम भोर है ॥ कमन के सिरे भक्ति योग हठ योग जान। ग्यानिन के सिर ग्यान योग सिर मौर है ॥ ८६ ॥ दोहा—भक्त जुद जोगी जुदे। ग्यानी जपहिं महत ॥ तीनों मत सयुक्त यह। ज्ञान योग सिद्धान्त ॥ ८७ ॥

सख्या ७ एफ प्रेमदीपिका, रचयिता—अक्षर अनन्य कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—८ × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप)—७००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८४६ = १७८६ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिव कठ गौड़, ग्राम—अवागढ़, डाकघर अवागढ़, जिला एटा।

आदि—श्रीगणेशाय नम ॥ अथ प्रेम दीपिका ग्रन्थ लिख्यते ॥ कवित्त ॥ जाकी शक्ति पाइ ब्रह्मा विष्णु शिव विश्व रचै, जाकी शक्ति पाइ शेष धरनी धरत है ॥ जाकी शक्ति पाइ अवतार करतूति करै, जाकी शक्ति पाइ भानु तम को हरत है ॥ जाकी शक्ति पाइ शारदा हूं गन पति गुनी, जाकी शक्ति पाइ जगत जीवत मरत है ॥ अक्षर अनन्य आनि अमर उपाय छाड़ि, ताही आदि शक्ति को प्रनामहि करत है ॥१॥ दोहा—करि प्रनाम श्री मात को ग्यान सुमति अति पाइ। प्रेमदीपिका हरि कथा कहीं प्रेम समुझाइ ॥२॥ कुन्डलिया—माधौ जू एक दिन कह्यो मधुरर सों सत भाउ। गोपिन गोप प्रबोध कौं तुम ब्रज मडल जाउ ॥ तुम मन मदिल जाउ प्रेम अति ही उन कीन्हो ॥ जब ते भयो बिछाह सोध हम कबहू न कीन्हों ॥ तुम ममता दरसाइ हरौ दुख सिन्धु अगाधौ ॥ कहियो सब सौं यहै दूरि तुमते नहिं माधौ ॥३॥

अत—सवैया—दुंदुभि दीप बजी हरि द्वारिका गोकुल प्रेम नदी जु बही ॥ जिन राधिका प्रान तजे बिछुरे तिन की न कथा बहु जात कही ॥ जिमि दीप पतगहि यों मछरी जल प्रीति इकग अंगै तबहीं। जग की यह रीति अनन्य भनै अपने सुख लौ सुख है सबही ॥ छप्पय—प्रीति इकगी नम प्रेम गोपिन को गायो ॥ हाला विरह विहार तरकि सन्दनि रसु छायो ॥ ज्ञान जोग्य वैराग्य मधुप उपदश्न भाख्यौ ॥ भक्ति भाव अभिलाष मुख्य वनितन मनु राख्यो ॥ बहु विधि वियोग से जोग सुख सकल भद समुझौ भगत। यह अद्भुत प्रेम सो दीपिका कहि अनन्य उदित जगत ॥ इति प्रेम दीपिका सपूर्ण समाप्त लिखत रामदास स्वामी राधा कृष्ण का मदिर सवत १८४६ वि० ॥

विषय—गोपियों और श्री कृष्ण का प्रेम वर्णन।

सख्या ७ जी प्रेमदीपिका, रचयिता—अनन्य कवि, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७० = १८१३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० राम भजन मिश्र, ग्राम—चौगवा, डाकघर—मलावा, जिला—हरदोई।

आदि अत—७ एफ के समान।

पुष्पिका—इति श्री प्रेम दीपिका सपूर्ण समाप्त मिती बैसाख शुक्ल सवत् १८७० वि० ॥ कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण

विषय—श्री कृष्ण राधिका का प्रेम वर्णन।

संख्या ७ एच. प्रेमदीपिका, रचयिता—अक्षर अनन्य, पत्र—४८, आकार—५ × ४ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—२८४, खंडित । रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० शिवकुमार शर्मा, ठि० पं० बद्री प्रसाद प्लीडर, स्थान—बाह, डाकघर—बाह, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । लिष्यते प्रेम दीपिका । कुडरिया । माधो जू एक दिन कह्यो, मधुकर सो सति भाउ । गोपी गोप प्रवोध कौ तुम व्रज मंडल जाउ । तुम व्रज मंडल जाउ प्रेम अति ही उन कीन्हो । जवते भयो विछोहु सोउ हम कवहु नहि लीन्हो । तुम मम मनु दरसई हरौ, दुष सिंध अगाधौ, कहियो सवन्हे यह दूरि तुमते नहिं माधौ ।

अंत—यह तो करम योगु आपुहि करत रहो, भस्म लगौरी ले तजन कहै दुनियै । चहिहै नई हा हम व्रज की चतुरचाल, चापि मुष सुधा तजि कहु क्यो सुनिये । अक्षर सु अक्षनि मे देपत प्रत्यक्ष जोति, स्वक्ष क्षिति छाडि कहा धर्मनि कौ धुनि । सकल रसागर है सागर गुपाल ऐसे, नागर विसारि कहा निर्गुन कौ गुनिये । ऊधो जू तिहारे उह निर्गुन मैं सार कहा । पानी में मथैते कहू मापन कढतु है । देपौ धौ विचारि विना भीति ° ।

संख्या ७ आई. दुर्गापाठ भाषा, रचयिता—अनन्य कवि, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप)—१०००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७०=१८१३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा बैजनाथ सहाय, ग्राम—रामनगर, डाकघर—नौरोटा, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दुर्गा पाठ भाषा लिख्यते ॥ दोहा ॥ सुन्दर पट गुरु नाथ के सुन्दर गुरु उपदेश । सुन्दर चरित भवानि के सुन्दर सुरथ नरेश ॥ सुरथ धर्म राजा भयो केवल धर्म निधान ॥ सकल नगर कुल जन प्रजा पालहि पुत्र समान ॥ नृपति भार मन्त्रिन दियो आपु करत सुष मोद ॥ कै नित नेम शिकार को कै रस वाम विनोद ॥ तव शत्रुन व्यौहार लहि जान्यो नृपति अचेत । देश मारि उघरो नगर सव परिवार समेत ॥ राजा मन्त्रिन वल रहे मन्त्रिन कियो विश्वास ॥ जाइ मिले सव शत्रु लहि नृपति भाग वनवास ॥ मन मह राउ विसूर ही करि करि सवको शुद्धि ॥ अपने दुख तन खवरि नहि परी मोह वस वुद्धि ॥

अंत—अनन्यै भनै एक को एक दाता सदा सर्वदा सर्व दाता भवानी ॥ ३ ॥ सदा सर्व दाता सदा सर्व कर्ता सदा सर्व रूपक कहै वेद वानी ॥ न आदे न अन्ता कहावै अनंता निश्रंता सवै लोक की लोक रानी ॥ हरी शंभु ब्रह्मा करै भक्ति जाकी धरे ध्यान जोगी तपी सिद्धि ज्ञानी ॥ अनन्यै भनै जो रहै गुप्त रूपा कहै ज्योति जासो वहे है भवानी ॥ ४ ॥ दोहा—गुप्त वहै प्रगटै वहै निकट वहै अरु दूरि । श्री भवानि त्रिभुवन विषै रही सवनि भरि पूरि ॥ ५ ॥ जो जेहि भांति भजै जहां ताको तहां प्रतक्षि । त्रिभुवन व्यापक शक्ति निज श्री भवानि शुभ लक्षि ॥ ६ ॥ श्री भवानि शुभ लक्षिनी परम सुन्दरी जानि । ताको सुन्दर चरित यह अक्षर अनन्य वखानि ॥ ७ ॥ जो यह सुन्दर चरित को पढै सुनै मन लाय । मन वाछित फल देति तेहि श्री भवानि जग माय ॥ ८ ॥ इति श्री मारकाडे पुराणे देवी माहात्म्ये

सुरथ वेश्य वर प्रदान तेरहवा अध्याय सपूणम् समाप्त लिखा देवी प्रसाद वश्य स्वपठनाथ अषाढ़ सुदी ९ नौमी सवत् १८७० वि०

विषय—दुर्गासप्तशती का पद्यानुवाद

सख्या ८ माधवानल कामकदला, रचयिता—आलम, कागज—बाँसी, पत्र—२४, आकार—८३/४ X ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ —२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००८, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८२१ = १७६४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गोविंदराम ब्राह्मण, ग्राम—हिगोट खिरिया, डाकघर—चमरोली कटरा, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशाय नम श्रीगुरुभ्योन्म । अथ माधवानल भाषा ग्रथ लिख्यते। प्रथम पार ब्रह्म परणाम, पुनि कछु युगति रीति बरनाम। घट घट बसें सुअन्तर गामी। ताका भेद पार नहिं पामी। घटें घट रह लखे नहिं कोई। जल थल रहें सब में सो२। जाकि आदि अन्त नहिं जानी। पडित कथा ग्यान सोइ मानी। ग्याना होइ सुगुरु मुख धावें। खोजी हेरू सो खोजें पावें॥

अत—माधवानल कन्दला मिलाई। फिर विक्रम सुनै न जाइ। सग विप्र माधव तल लीन्हा, जिन यह प्रेम पसारा कीन्हा। राजा नगर उजैन कु गयऊ। तब ही अन्त कथा को भयऊ। माधवानल अरु कन्दल नारी, विधना जोरी दइ सवारी। सुना कथा जो श्रवन सुहाइ, अति रिसाल पडित चतुराइ। प्रीतम होइ सुनै जो कोई॥ बाढ़ें प्रीत नैन सुख होइ॥ दोहा—पडित उभयन्ता चतुर, गुन जन अक्षर टेक। नाम नमित अक्षर सरसा, करि करि कथा अनेक। ग्रथ सख्या ण्ती कही, एक सहस इक बीस। माधवानल काम कन्दला बडी प्रीत सुखराश॥ इति श्री माधवानल काम कन्दला भाषा कथानक शास्त्र सम्पूर्ण॥ श्रीकृष्ण॥ सवत् १८२१ वर्षे मासोत्मासे चैत्र मासे शुक्ल पक्षे प्रति पदाया तिथौ सोम वासरे एतत पुस्तिका सम्पूर्ण मस्का॥ यादृश पुस्तक दृष्ट्वा तादृश लिखितमया। यदि शुद्धम शुद्धवा। मम दोखो न दीयते। लेखणी पुस्तक रामा। पर हस्ता गता यदि। आवते दैव यागन धृष्टा पृष्टा चन्महिता॥२॥ इति लिपि कृता कुभेर नगर मध्ये राज श्री जवाहिर सिंघ जादु राज्ये लिखिता जती माणक चन्द्र आज्ञार्थे॥

विषय—माधवानल और कामकदला की प्रेम कथा।

सख्या ९ ए भक्त विरुदावली, रचयिता—अमरदास, कागज—पुराना, पत्र—६, आकार—६ X ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस, स्थान—बनारस, डाकघर—बनारस, जिला—बनारस।

आदि—श्री गणेशायन्म श्री सीतारामाभ्यांन्म श्री महावीरायैन्म अथ लिख्यते भक्त बिरदावली॥ की पोथी॥ श्री रघुनाथ था जस लाजियो, मोहि भक्ति पद वर दीजये॥ तुम दीन बन्धु दयाल हौ, त्रलोक के प्रतिपाल हौ॥

अत—तुम गोपी गोपिन में बच। तुम हरि कमडल में पचें। तुम जनम धरें अवधपुरी। जहा पूतना तुम छाडि कर छोडी जी। तुम भये नद किशोर जी॥ जमिके लीन्ही जो श्री पति प्राति कै॥ वह भक्त हेत बिरदावली गाव सुनै जो हालजी॥ वैकुठ जिनके वास है॥ जिन भजत अम्या दास है॥ इति श्री भक्त बिरदावली

विषय—भक्तो का गुणगान ।

संख्या ६ बी. भक्ति विरुदावली, रचयिता—अमरदास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५२ = १६६५ ई०, लिपिकाल—सं १७६४ = १७०७ ई० । प्राप्तिस्थान—बाबा रामदास, ग्राम—दही नगर, डाकघर—टेढा, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ भक्ति विरुदावली लिख्यते—तुम भली होय सो कीजिये । रघुनाथ यह जस लीजिये ॥ मोहि भक्त पदवी दीजिये । जन आपनो करि लीजिये ॥१॥ तुम दीन बन्धु दयाल हौ । तिहु लोक के प्रति पाल हौ । तुम राधिका पति रमण हौं । परगास चौदह भुवन हौ ॥२॥ तुम ज्ञान गोकुल चद हौ । हरि वंश कंस निकंद हौ ॥ हम पतित पावन सुनत हैं । नित नाम निर्मल भजत हैं ॥३॥

अंत—जुग चार पूरन ब्रह्म हौ । महि मड मंडल खभ हौ ॥ कहं लगि वरणो अनंत गुण । जेहि चरण श्री पति के गेह ॥ कहौ कौन तेरे तेरी आस सो । हरि भजन नित परगास सो ॥ गुरु परम परमा नदन । श्री परस राम मन रंजनं ॥ भगत छद सिरावली । गावै सुनै वरदावली ॥ ते मुक्ति फल नर पावही । दुख पाय जल भव भाजही ॥ बैकुन्ठ उनको बास है सो कहत अम्मर दास है ॥ जो नैन[२] सर[५] रिपि[७] चन्द[१] है सो जानु सवत् छद है ॥ मधु मास उजरो पाख है । तिथि सत्तमी की साख है ॥ इति श्री अम्मर दास कृत भक्त विरदावली संपूर्णम् लिखतं रामलाल शुक्ल शिवभजन के पुत्र ग्राम असोकापुर सवत् १७६४ वि० ॥

विषय—भक्ति की महिमा और मनुष्य जीवन के लिये उपदेश ।

संख्या १० ए. अमर विनोद, रचयिता—अमर सिह, कागज—देसी, पत्र—६०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४००, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६० = १८०३ ई०, प्राप्ति-स्थान—पं० रामदुलारे वैद्य, स्थान—मलीहाबाद, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ अमर विनोद लिख्यते दोहा—परमा नंद पद वदि कै श्री शाकभरि ध्यान । गुरु गणेश अरु शारदा ईश्वर जगपति भान ॥ विविध शास्त्र को देखि कै समय करौ अधिकार ॥ अमर विनोद जो ग्रन्थ ही सकल जीव सुख सार ॥ श्री धन्वतर चरण जुग प्रणम धरो आनद । शेष फूट इस ग्रन्थ को उपज्यो आनन्द कद ॥ इति ॥ निघट मते द्रव्य गुणं ॥ अथ जल अष्ट प्रकार लिख्यते ॥

अंत—अथ वृहल्लक्ष्मी विलास—जायफल ३, नख २, लौंग ३, इलायची ४, केशर ५, नाग केशर ६, तज ४, पत्रज ४, त्रिकुटा ९, पीपला मूल तीन, उटगड ३, धतूरे के बीज ३, खुरासानी अजवाइन २, छड ३, अफीम ३, अकरकरा ३, बहुफली ३, मोथा ३, विडंग ३, मलियागिरि चंदन ३, समुद्र सोख ३, खदिर ३, सिघाडे ३, वग २५, अभ्रक १५, सार १५, विजया १५, मिसरी सवते दूनी गुलकंद दूणा वदरी प्रमाण भुक्तव्य । पुष्ट करै स्तंभन होइ ॥

जायफल जाविश्री लौंग केशर इलायची लघु अफीम अकर करा प्रत्येक कप प्रमाण कपूर सानैं पाचौं क रस में वही बाध चणा के समान बल पुष्टि करै ॥ इति श्री अमर सिंह विरचिते अमर विनोदे भाषाया सपूर्ण समाप्त लिखत शिव दान पाडे चैत्र शुक्ला त्रयोदशी सवत् १८६० वि० ॥

विषय—वैद्यक।

संख्या १० बी अमर विनोद, रचयिता—अमर सिंह, कागज—देशी, पत्र—९६, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९०४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०९ = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला भगवती प्रसाद वैद्य, ग्राम—बकौठी, डाकघर—सिकंदरापुर, जिला—सीतापुर।

आदि—१० ए के समान।

अंत—द्वितीय बन्ध्या चिकित्सा। कलौंजी हाथ का नख बत्ती कर जोन में राखै ॥३॥ साबुन टक ३ त्रिफले का पानी रुई की वत्ती भिगोय दिन ३ भग में धरै ४, ५ अनार की कली का पानी असली तेल गुलाब सम औषधिन में बाती कर जो में राखै दिन ३ ॥ ५ वच काली जारे बावची कलौंजी तिल का तेल बाती करके दिन तीन जोन में बाती करके राखै पश्चात सगम करै गभ रहे सप्तम दोष में यत्र लिपि पच माहि नख मोर पाख हलद मेंहदी हाथी डाढ़ के रस को लिखै स्त्री का मध्य में नाम लिखै यत्र के बीच फिर कमर से बाधै सप्तम दोष मिटै ॥

७।	७॥	७	३४	।९	४॥	६	१	३॥
९	७	।७	१॥	७४।	९२।	१	४	४०
७	०।	७	६३	६	३	७	७	६
॥।	७	७	६	६	६	७	०	३
१४	६	७।	७	७	४७	७	०	६

इति श्री अमर विनोद नाम ग्रन्थ अमर सिंह कृतौ सपूर्णम् समाप्त सवत् १९०९ वि० लिखत शिव बिशुन हरीपुर ॥

विषय—वैद्यक

संख्या १० सी अमर विनोद, रचयिता—अमरसिंह कागज—देशी, पत्र—८८, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४ परिमाण (अनुष्टुप)—१६२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१९ = १८६२ ई० प्राप्तिस्थान—लाला कन्हैयालाल, ग्राम—बहुराजपुरा, डाकघर—कासगंज, जिला—एटा।

आदि—१० ए के समान।

अंत—सप्तम दोप में यंत्र लिखै यत्र मांहि नख मोर का पांख हलद मेंहदी हस्ती डाढ की रस की लिखे स्त्री का मध्य मे नाम लिखै यत्र के वीच फिर कमर से वांधे सप्तम दोप मिटै गर्भ रहै। इति श्री अमरसिह विरचिते अमर विनोद भाषाया पुरुप स्त्री वन्ध्या प्रयोग विधि संपूर्ण समाप्तः लिखत गुलजारी लाल कायस्थ सवत् १९१९ मार्ग शीर्ष कृष्ण १२॥

विषय—वैद्यक।

संख्या ११ ए. कोकसार, रचयिता—आनंद कवि, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप)—४१६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१८=१८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—ज्योतिपी रामभज्ञ, ग्राम—विजयगढ़, डाकघर—विजयगढ़, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ कोकसार आनन्द विरचिते लिख्यते ॥ दोहा ॥ ललित सुमन अलि पवच छवि आभूपण कद। रति विनोद मन अति वढे तीजे मदन अनंद ॥ वरण काम अभिराम छवि वरणो भामिनि भोग। सकल लोक दधि मथन करि रच्यो सार सुख जोग॥ मनुप रूप नहिं अवतऱ्यो तीन वात के जोग। द्रव्य उपावन हरि भजन अरु भामिनि के भोग॥ भगति एक भगवत की भोग सुभामनि भोग। वह सकट में सुख करन वह दुख हरण वियोग। पिंगल विन छन्दहिं रचे अरु गीता विन ज्ञान। कोक पढ़े विनु रति रमें तिहुन रचि समान॥ कोक पढ़े विन रति रमें ज्यो विन दीपक धाम। ता कारण विधना रच्यो कोक सार जे नाम॥

अंत—अथ मरति सख्या—कवित्त—प्रथम जोग रति जानि पुनि काम करत ही जानि, इन्द्र को नाम जानि लालम की वरत ही। पुनि सुजानि विपरीति प्रीतें जानि अंवुज आसन पर रीति पोपत परवान जान हिरन परसपर॥ अति सरस तमाल त्रिनाल पुनि सुप वल, और महावली पुनि सूरत वत इमि जानिये॥ ये पोडस आसन रुचि भले। रति सख्या॥ आरस अरु संकोच कहि सिथिन सुनिहु दे कान। पांचौ आसन देत रति सोजे टुक परिमान॥ दोहा—वे पोडस ये पांच करि सकल भेद इक ईस। सुख उपजावत दुख हरत द्रावण रति को ईस। चौरासी आसन सकल कहे कोक सुख कंद। ता मधि नसत अति कठिन करन जान आणद॥ इति श्री कोक सार भैरव विरचिते भेद अस्तरी पुरुप की चोपदी मंत्र का संपूरण सवत् १९१८ वि०

विषय—कोकशास्त्र

संख्या ११ बी. कोकमजरी या कोकसार, रचयिता—आनंद कवि, कागज—देशी, पत्र—३४, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप)—४५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८१०=१७५३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामभजन मिश्र, ग्राम—चौगवा, डाकघर—मल्लावा, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ कोक मंजरी (कोकसार) लिख्यते ॥ दोहा॥ ललित सुमन धनु अलि पनिच तन छवि अभिनव कंद। मधु रति रांग जो रति खन जै जै

मदन अनद ॥ वरनों काम अभिराम छवि वरनौं भामिनि भोग। सकल कोक दधि मथन करि रचौं सार सुष जोग ॥

अत—प्रथमहि हो अमरा पुर कोक। को जानत है या मृत लोक ॥ ये कहते यद राइक मुकतेस। तिन प्रगट करी क्रीड़ा रतेस ॥ ता पाछे भये सुकवि अनेक। तिन रचे काव्य करि करि विवेक ॥ मदनोदित आनग रग रति रजन समास रति रग ॥ छद—पढि सकल काव्य करि करि विचार। वरन्यो आनंद कवि कोकसार ॥ दो०—सग जो द्वादश सरित सर सव जे जुते यहु छद ॥ पढत यढत रति रग नव विनिचित आनद ॥ इति श्री सार (कोक सार) आनन्द कवि कृत सपूण समाप्त सवत् १८१० जेष्ठ शुक्ला सप्तमी ॥ जै श्री रसिक विहारी की ॥

विषय—स्त्री पुरषों के भेद गुप्त आसन गुप्त रोगों की औषधिया आदि वर्णन हैं ॥

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता आनन्द कवि थे। इनका इस ग्रन्थ से कुछ भी पता नहीं चलता। केवल लिपिकाल सवत १८१० वि० है ॥

सख्या ११ सी कोकमजरी, रचयिता—आनद कवि, पत्र—२०, आकार—८ × ६ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८०, रूप—प्राचान, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२३ = १८६६ ई०, प्राप्तिस्थान—प० छज्जूराम, ग्राम—वियारा, डाकघर—अछनेरा, जिला आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम। अथ कोक मजरी लिख्यते। भक्ति एक भगवान की भोग सु भामिन भाग। वह सकट में सुप करन यह दु ख हरन वियोग। सोरठा। वरनो काम अरु भोग, सकल कोक दधि मथन करि। रच्यो सु भामिनी भोग सकल सार दधि मथन करि। (इसके बाद ११ ए के समान)।

अत—सुरति आसन—प्रिय के चरन कध पर धरै कटिकर गहि क्रीड़ा विस्तर। सुरति अग आसन को नाम, जाही मैं सो हुवै काम। षोडस आसन करावै तव कामिन को मनमथ दावै। इति श्री कोक मजरी सपूण। सवत् १९२३ मिती भाद्र पद वदी १३ वृहस्पति वासर लिषत चौवे चुन्नीलाल मदसह कोटिला में।

विषय—पूर्ववत्

सख्या ११ डी कोकसार, रचयिता—आनद कवि, पत्र—४३, आकार—७½ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप —६०२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५१ = १७९४ ई०, प्राप्तिस्थान—मुशी जोरावरसिंह, मेथड टीचर ट्रेनिंग स्कूल, ग्राम—मिढ़ाकुर, डाकघर—मीढ़ाकुर, जिला—आगरा।

आदि—११ ए के समान।

अत—प्रथम अमर पुर हतौ जु कोक। कोइ जानतु नहिं मृत लोक हुतौ शान्तिन नाम नरश। जिन प्रगट कियौ कलि आनि तेस ॥ ५५ ॥ ता पाछें कविता भये अशेष। जिनि रचे कवि कवित अशेष ॥ कामा प्रदीप अरु पच वान। पुनि रति रहस्य जाने सुजान ॥५६॥ उर मडन सिव अदिक अनग। अति रजन समत अग रग। पढि सकल कवि करि करि

विचार । वरन्यों आनद कवि कोकसार ॥५७॥ दोहरा—पड जु द्वादग अति सरस । वरने वहु विधि छंद । पढत पढ़त रति रंग । अति विचिचित हित आनंद ॥५८॥ इति श्री कोक सारे आनन्द कृते सप्तदशो पंड संपूर्ण मिती मार्ग वदि ॥१०॥ सवत् १८५१ ॥ राम राम राम

विषय—स्त्री तथा पुरुषों के लक्षण । वीर्य निवासादि वर्णन । चुम्बन आलिंगनादि वर्णन आसन तथा कुछ वीर्य वृद्धि और सतान सम्बन्धी ओषधियों का वर्णन ॥

संख्या ११ ई. कोकसार, रचयिता—आनंद कवि, पत्र—३४, आकार—६ × २½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६, रूप—बहुत प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९४३ = १८८६ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० तिलकसिंह जी, ग्राम—लतीफपुर, डाकघर—कोटला, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । जो ना जाने कोक पढ करें सुजतन विचार । अति रुचि उपजे तरुन तन अति रुप मानै नार । अथ मदन निवास वर्णनो । दोहा । मदन भाम के नाम इव सत सदा इन अग । सोचत मदन जगाइ के पिय विलसे पिय मग । अमावस वडुवा विमल तिथि पढ अगुष्टि अनग । तिह भग उतस्यो रत खल चढ़ चल्यो तिहि अंग कृष्ण पक्ष को आदि दे अरुविच शुक्ल जान । यंत्र से तिथि निरखि के तिया अग पहिचानि । अडल । काम चरण वरनाम इकठा धरतहु सकल कोक विचार सुक्ल पक्ष का कृष्ण पक्ष को आदि सुपुनि मनावहि । वाम अगना अंग अनेक वरण नहि । चौपाई, पडवो पूनो जान माग नव दीजिये । के अछत कछु केश नतन वहु कीजिये । कै छूवत ललाट घाट सम पाइये । इहि विधि सोवत काम अनग जगाइये ।

अत—अथ चित्रनि रूप आसान । दोहा । मृग तमाल नट जानियो सुख वल्लभो जो विचार चित्रनी को अति रुचि वढ़े कहत कोक निरधार । अथ सखनी आसन । विपरीत सुरत तसु न सिथल सकोच न लेह । सखनी सुरत सुहाय अति इह विधि ते सुख देह । अथ हस्तनी रूप आसन । उध्यम आसन लखे रूप पोषित आनद । हस्थनी रत अति रुचि वढे मिटे तरुन तन द्वद ।२१। पिय धोवे ताते उदक तरुनी सीतल होय । वह द्रढ को द्रढ ही रहे भग संकोचन होय । सुनो रसिक जन श्रवण धन कोक सुखद परकारा । चाहत चतुर तिय प्रीति दे असि करत मुदित इतिहास । खड पांच दस अति सरस स्वेसु वहु विधि छंद । पढ़त सुनत चौप चित्त वाढ़त अति आनद । एक ही तो कवि आनद हीस निज प्रकट कियो जगदीश सीस । ता पाछे के भये अनेक तिन रचो आप भाव कर विवेक । इति श्री कोकसार आनद कृत आसन विधान वर्नन नाम पच, दशोपड ।१५। सम्वत् १८४५ लिखितम फूलसिंह लतीफपुर के सम्वत् १९४३ ।

विषय—पुरुषों तथा स्त्रियो के भेदो उनके लक्षण, वन्ध्या व्यभिचारिणी, दूती आदि स्त्रियो की पहिचान, वशीकरण यन्त्र मन्त्र काम सम्बन्धी विषयों का सविस्तृत उल्लेख अत में आसनो का संक्षिप्त उल्लेख ।

टिप्पणी—यह अपने विषय की उत्तम पुस्तक है । भाषा सरल एव हृदय ग्राहिणी है । विषय का विवेचन तो बडी बुद्धिमत्ता से क्रमशः किया गया है । किन्तु पुस्तक की दशा इतनी खराब है कि पन्ने विलकुल फटे है प्रथम २ हो रहे है इसी लिये पुस्तक का पढना भी बडा कठिन हो जाता है ।

सख्या ११ एफ कोकसार, रचयिता—आनंदकवि, कागज—देशी, पत्र—३६ आकार—७½ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री चिरजीलाल वैद्य, ग्राम—बाल्गज, डाकघर—बाल्नगज जिला—आगरा।

आदि—अथ पद्मिनी लक्षण दोहा पद्मिनी चपक वरण वन, अति कोमल सब अग, चहुँ ओर गुजत भ्रमर, निमिष न छाडत सग, अति कोमल तन अतिहिमन, पाउरता मुख क्षीन, उजल चरि पर भल धरैं, लाजवन्त है नैन ॥३॥ छप्पै—दग अजित जिय लाल नैन, मृग कुटिल भृकुटिवर तिल प्रसून सम नासि त्रिविल जहि कठ सर वचन गमन तिहि हान अग कोमल विचित्र अति तनु सुछम करि छान प्रगट दामिनी दह दुत ससि सपूण बदन छवि अग सदा निरमल रहै आहार निमिष अछत अमल विमल छौर दैठी चहे।

अत—चौपाइ प्रथम आरा दिहु तो लोक। प्रथम कोऊ जानत नाहि मृत्यु लोक। येकहु तौ पातसाह जन मुनीस। तिहि प्रगट करी कर विप्र अनीस। तापछे भये जो कवि अनेक तिन रचे काव्य कर विवेक। काम प्रतात अरु पच बान। पुनि रति रहस्य जानहु सुजान। अमोद विनोद अनेक रग। रति रजन मसम रत तरग॥ पढि सकल काव्य कर २ विचार। बरनो आनद कवि कोकसार॥ दोहा—सगा द्वादस अति सारि रचे जु बहु विधि छन्द। पठति पठति रति रग नव विवचित हित आनद।

विषय—पद्मिनी, चित्रणी, संखिनी, हस्तिनी, लक्षण ७ तक। पद्मिनी वशी करन, वासक सज्जा भेद उत्कठा, अष्ट नायिका, स्वाधीन पतिका, नायक दूषण, सात्विक दुरत ससा लक्षण, कुरग लक्षण, वृषभ लक्षण अश्व लक्षण, सठ, दक्षिण अनुकूल, नीचरता, विशेष चद्र कला, लिंग मदन सदन, कन्या, गौरी, बाला, तरणी, प्रौढ़ा, वृद्धा लक्षण वर्णन १७ पृष्ठ तक। प्रीत हरण, विरक्त, अवश्य कामिनी, अनुरागवती, कामवती, प्रवती, दूती प्रास्या, वर्णन, पुरुष सिंगार, २१ पृष्ठ तक। बाजी करण, थभन, मदन मोद केसर, रति, प्रमोद, स्थूल करण, सकोचन, आदि दवाएँ पृष्ठ ३२ तक। भिन्न २ आसनों का वर्णन ४१ पृष्ठ तक।

टिप्पणी—इस पुस्तक में कवि का परिचय नहीं दिया है अध्याय समाप्त करते वक्त लेखक ने 'आनद कवि" विरचित ऐसा लिखा है।

सख्या ११ जी कोकसार, रचयिता—आनद कवि, कागज—बासी, पत्र—३६, आकार—६½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५९४, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५९ = १८०२ ई०। प्राप्तिस्थान—प० गोविंद प्रसाद, ग्राम—हिंगोटु सिसिया, डाकघर—हिंगोटु सिसिया, जिला—आगरा।

आदि—११ ए के समान।

अत—ता पाछे भए जुक्ति अनेक, जे है रचे कवि करि विवेक। काप पर दीप अरु पच बान, सुनि रति करहिं जानिहिं सुजान। अस मदन विनोद अनेक रग, इति रजन सन्य मूरति तरग। पढ़े सकल कवि करि विचारि। बरनौ अनद कवि कोकसार। दोहा—पट पच दस अति सरस रचे जो बहु विधि छद। पढ़त सुनत अति चोप चित, बाढ़त अधिक अनद। टूटौ शब्द समारियौ विनती करौ अनद। चातुर कवि पडित सरस जो जानो छवि

छन्द । इति श्री कोकसार आनन्द कृत पंचदमोस्वर्ग १५ सम्पूर्ण सवत १८५७ लिखितं दुलीचंद पडित अस्थान नौगुरा में बसई को बासु ॥

संख्या ११ एच. आसन मंजरीसार, रचयिता—आनंद कवि, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्) —४८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२८ = १७७१ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला ज्ञानी-राम, पटवारी, ग्राम—दयानगर, डाकघर —सिकंदरा राऊ, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—अथ आसन मंजरी सार आनन्द कवि कृत लिख्यते ॥ दोहा ॥ प्रथम चतुर जो कामिनी पति को आसन देत । अति अनंद चित ऊपजै बाढ़ै विवि चित हेत ॥ अथ जोग आसन भुजंग प्रयात छंद– पौढ़ि कै बालिथ आपु करै जुग जंघ दुहूं कर बीच धरै ॥ पति बैठि भुजा गहि केलि मचै ॥ अथ रति नाम आसन ॥ भुज ऊपर नारि को पाइ धरै पिउ बैठि भुजा गहि कलि करै ॥ रति नामक होइहि आसन को । अति काम कलोल प्रकासन को ॥ अथ मद मोदित आसन ॥ कटि ऊपर नारि को पाउ धरै पिउ बैठि गहै कुच केलि करै ॥ मदनोदित नामहि यो चरिकै रति होत नही दिढता करि कै ॥

अंत—हित अबुज रति पोषिता अरु विपरीति बखान । ये तमाल मृनाल पुनि उथ्थित विधिहि सुठानि ॥ नारी आसन—अबुज रति पोषित विपरीति लाल सहित सो जिय -धरि प्रीति ॥ आसन पाच तरुनि सुख करै । कोक चारि निहचै उच्चरै ॥ आसन जानु परस्पर नाम ताको करत पुरुष अरु वाम । सेष पंच दस आसन रहे ते पुरपहिं करिवे को कहे ॥ इति श्री आसन मजरी सार आनद कवि कृत संपूर्ण समाप्तः सवत् १८२८ वि० आश्वनि शुक्ला सप्तमी ॥

विषय—स्त्री पुरुषो के काम केलि संबंधी आसन ॥

संख्या १२ ए. गीता भाषाटीका, रचयिता—आनदराम, पत्र—१०५, आकार—१२$\frac{3}{4}$ × ७$\frac{1}{4}$ इंच; परिमाण (अनुष्टुप्)—४४१०, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६१ = १७०४ ई०, लिपिकाल—सं० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—बौहरे परसुराम, ग्राम—नगला धोर, डाकघर—बरहन, जिला—आगरा ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः । श्रीराधाकृष्णाय नमः । अथ भगवद्गीता भाषाटीका सयुक्त लिषते । दोहा । ॐ हरि गौरीश गणेश गुर प्रनवो सीस नवाय । गीता भाषा रथ कर्‍यौं दोहा सहित बनाय । सुथिर राज विक्रमनगर नृपमनि नगर अनूप । थिर थाप्यौं परधान यह राज सभा कौं रूप । नाजर आनद राम कै यह उपज्यौ चित चाउ । गीता कौ टीका कर्‍यौं सुनि श्रीधर कौ भाउ । आनद राम अनूप कौं नाजर अति परवीन । सुघड सुधारि विचारि कै जन हित करी नवीन । आपुहि आनद राम यह टीका रची बनाइ । निसि दिन हरि हिरदै बसो गिरधर कृष्ण सहाय । गीता ज्ञान गभीर लषि रची जु आनद राम । कृष्ण चरन चित लगि रह्यौ मन में अति आराम । आनंद मन ऊछव भयौ हरि गीता अवरेषि । दोहारथ भाषा लिषी वानी व्यास विसेषि । जो यह गीता समुझि कै हिरदैं धारैं सोय । ब्रह्म मगन निस दिन रहे कर्म लिपे ननि कोय । इति आदि दोहा सपूर्ण । धृतराष्ट्रउवाच. ॥ ऽश्लोक ॥ धर्म क्षेत्रे कुरु क्षेत्रे समवेता युयुत्सव. ॥ मामकः पाडव श्चैव

किम कुवत सजय ।१। टीका ॥ धृतराष्ट्र पूछत हैं सजय सौं कि हे सजय धर्म क्षेत्र ऐस जो है कुल क्षेत्रता विपै येकत्र भयो हे । अरु युद्ध की इच्छा धरत है । ऐसे जो मेर ओर पाड के पुत्र ते कहा करत हे । दोहा । धम क्षेत्र कुर क्षेत्र मै मिले युद्ध के साज । सजय मो सुत पाडवनि कीने कैसे काज ।

अत—कृताथ के लिये सबै ज्ञान को सोध, आनद रामहि यह कन्यौ परमानद प्रबोध । परमानद प्रबोध यह, कान्यौं आनद राम, पढ़ै गुनैं याको सुनै सो पावै प्रभु धाम । नारायन निज नाम कौं धर्यौ देषि के ध्यान, आपुनि आनद राम कौ, भक्ति दई भगवान । जब लगि रवि ससि मेर महि अगनि उदधि थिर होइ, परमानद प्रबोध यह, तब लगि जग में जोइ । तब लगि दीपति भानुकी, तापत है सब देस, जब लगि दिष्ट परौं नहीं, हरि गीता राकेस । ससि रसि उदधि धरा समित कातिक उजिल मास, रवि पान्चौं पूरन भयो, यह गीता परगास । इति श्री भगवद्गीता सूपनीसत्सु ब्रह्म विद्याया योग सास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे दोहा सहित भाषा टीकाया आनदराम कृत परमानद प्रबोधे मोक्ष सन्यास योगोनाम अष्टादसोध्याय । १८ । यदस पुस्तक दृष्टा तादस लिपित मया मम दोषो न दीयते । १ । सवत् १९१८ मागसिर मासे सुक्ल पक्षे तिथौ १३ रवि वासर लिखना मिश्र हरिनारायण मौजे मितावली पठनाथ रूपराम अजाची ब्राह्मन मौजे बरहन मगराधीर दसषत हरिनारायन ।

विषय—श्रीमद्‌भगवद्गीता का दोहों में अनुवाद तथा गद्य में टीका ।

सख्या १२ घी भगवत गीता, रचयिता—आनद, कागज—स्यालकोटी, पत्र—९४, आकार ६½ × ३¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११७५, रचना—बहुत प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० केदारनाथ, ग्राम—कुन्नेल, डाकघर—दौकी, जिला—आगरा ।

आदि—१२ ए के समान ।

अत—गीता प्रति दिन उचरै, सदा सुछिम जगमाह मनसा वाचा कमना तेहि समान को नाहि । जो कोउ चाहे भव तरन, कृस्न कमल को पास । अवर सकल श्रम छाड़ि कै, गीता करै अभ्यास । लोक कृतारथ के लिये, सबे सार को सोध । आनन्द रामहि यह कन्यो, परमानन्द परबोध । परमानन्द परबोध यह कीनो आनन्द राम । पढ़ै सुनै याको सुनै, सी पावै प्रभु धाम । नारायण निज नामको, धरयो देखि के ध्यान । अपनी आनन्द राम को भक्ति दहु भगवान ।

सख्या १२ सी भगवत् गीता सबोधिनी टीका, रचयिता—आनदराम, पत्र—२२२, आकार—६½ × ३¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्) ४६६२, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८१७ = १७६० ई०, प्राप्तिस्थान—प० छिगामल जी, पुजारी राधाकृष्ण मदिर, ग्राम—फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्रीगणेशाय नम । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । ॐ नमो गुरवे । ॐ अस्य श्री भगवद्गीता मालामत्रस्य । धृतराष्ट्र उवाच । धम क्षेत्रे कुर क्षेत्रे समावेता युयु

त्सवः ॥ मामकाः पांडवाश्चैव किमकुर्वत संजय ।१। संजय उवाच । दृष्ट्वातु पांडवानीक व्यूढ दुर्य्योधनस्तदा । आचार्य्यमुपसंगम्य राजावचनमब्रवीत ।२। भाषा । राजा धृतराष्ट्र कहते है—संजय प्रति । संजय तोकु व्यास जी को प्रसाद है । तातें दिव्य चक्षु तेरे । अब इहि बिरिया में मेर पुत्र दुर्योधनादिक । अरु पाडव युधिष्ठिर आदि संग्राम के विषें मिले हैं । सु इन दो ऊनि कौ कियौ तू मोसो कहि ।१। राजा धृतराष्ट्र को पुण्ण सुनिकै संजय कहतु है । अहो राजा सुनि । पांडवनि के सेना के व्यूह कौं भलौं रच्यौं देषिकै । तब दुर्योधन द्रोणाचार्य के रानिकट जाइकें वचन कहतु है ।२।

अत—कदाचित् कोऊ अपनी पटिताई केवल गीता विचारै तौ गीता के अंतर जो तत्व है । सु कबहू न पावै । गुर कृपा अमृत दृष्टि विना । सोई दृष्टान्त करि कहत है । जो कोऊ समुद्र को अजुली निकरि छांडे । अरु नगलीयौं चाहै । तौंन हाथ न आवै । लहरितु ही में डूवै । अर्जुन युद्ध करि करि यही समझे ॥ इति श्री भगवद्गीता संबोधिनी टीका श्री एकं शास्त्र देवकी पुत्र गीतं । देवश्चै को देवकी पुत्र एव । धर्मश्चै को देवकी पुत्र सेवा । मंत्रश्चै को देवकी पुत्र नाम ।१। इति सत्य । लेखक पाठकयो. शुभमभूयात । सवत् १८१७ शाके १६८२ चैत्र मासे शुक्ल पक्षे तिथौ १५ ॥ लिषायत धर्म मूर्ति गत ब्राह्मण प्रति पालक राजि श्री श्री श्री उमेदस्यह जी ।

विषय—श्री मद्भगवद्गीता की टीका ।

संख्या १२ डी. भगवत् गीता सटीक, रचयिता—आनदराम, पत्र—१०३, आकार—९$\frac{1}{2}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७०४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१६ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० वेदनिधिजी चतुर्वेदी, ग्राम—पारना, जिला—आगरा ।

आदि—श्रीगणेशाय नम. ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ धर्म क्षेत्रे कुरु क्षेत्रे समवेताय युयुत्सव. । माम काः पांडवाश्चैव किम कुर्वत संजय ॥१॥ टीका ॥ राजा धृतराष्ट्र सजय प वास ताको पूछत भये कै धर्म क्षेत्र जामै धर्म उगे रो कुरु क्षेत्र तामें हम रे वेटा और राजा पान्डु ताके वेटा ते युद्ध करिवे कौ एकत्र भये है सो वे कहा करें हैं सो कहो ॥१॥ संजय उवाच -- द्रष्टातु पाडवानीक, व्यूढ दुर्जोधनस्तदा । आचार्यमुप संगम्य राजा वचनमब्रवीत ॥२॥ टीका ॥ सजय राजा सौं कहै है तिहारे वेटा दुर्जोधन पांडवन की सेना की समूह देषि करिकै आचार्य्य श्री द्रोणाचार्य्य श्री द्रोणाचार्य तिनके निकट जायकैं पूछी ॥२॥

अत—तच्च सस्मृत्य सस्मृत्य रुप मद्भुत हरे । विस्मयो मे महाराज हृस्यामिच पुनः पुन. ॥७७॥ टीका—ता सवाद हूते अधिकतर वह श्रीकृष्ण कौ रूप महा विकराल जो अर्जुन को वतायौ अति अद्भुत ताकौ स्मण करिके वड़ो आश्चर्य मोको है । वारंवार यादि करि हर्ष होत हे ॥ ७७ ॥ इति श्री भगवद्गीता सूप विषत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे सन्यास योगो नाम अष्टो दशोध्याय १८ स० १९१६ लिखितं पंडित भमानी प्रसाद सुस्थान कुदौना मध्ये चर्मन्वत्या · ण तटे मास मावरुणसापक्षे तिथौ १३ भृगुवासरे ।

विषय—श्रीभगवद्गीता की टीका ।

संख्या १२ ई, भगवद्गीता, रचयिता—आनदराम, पत्र—३२५, आकार—४ × ३$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८३५, रूप—प्राचीन,

पद्य और गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५७ = १८०० ई० । प्राप्तिस्थान—पुजारी बनारसीदास, ग्राम—चमनचोक मोहल्ला, समाइ डाकघर—समाइ, जिला—आगरा ।

श्री गणेशायनमः । ॐ ॥ धर्म क्षेत्र कुरु क्षेत्र में मिले युद्ध में साज । सजय मो सुत पाडवन, कीने कैसे काज । टीका । धर्म को क्षेत्र ऐसो जो कुरु क्षेत्र । ता विषै सम वेत । एकत्र भए ऐसे जो कैरु अरु पाडु के पुत्र कैसे हैं । युध की इछ धरतु है । हे सजय ते कहा करत भए । सजयउ । दृष्ट्वातु पाडवा नीकं व्यूढं दुर्योधन धनस्तदा । आचार्य मुप सगम्य राजावचनम ब्रवीत । दोहा । पाडव सेना व्यूह लपि दुर्योधन दिग आइ, निज आचार्ज द्रोन सों, बोल्यो ऐसे भाइ । टीका । दुर्योधन पाडवन की सेना देखि । द्रोणाचार्य पास जाइ । अरु वचन बोल्यो ।

अत—श्लोक—यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर तत्र श्रीरपि जयोभूतिध्रुवानीति मतिमम । ७८ । दोहा । योगीश्वर श्री कृष्ण जू अर्जुन है जा ठौर । तहा विजय अरु नीति है अष्ट सपदा और । ७८ । टीका । हे राजन यह मोकु निश्चै है जहा जोगेश्वर श्री कृष्ण है । अर जहा धनुर्द्धर अर्जुन है तहा सर्वथा लक्ष्मी है विजै है विभूति है अरु नाति है । मेरी मति यों कहे है । ७९ । इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्या या योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवाद मोक्ष सन्यास योगोनामाष्टादशोध्याय । सवत् १८५७ समिति वैशापमासे शुक्ल पक्षे तिथौ दशम्यायां रवि दिन । लि० भट गगाधरेण ॥ श्री रस्तु ॥ शुभ भूयात् लेपक पाठक यो ।

सख्या १७ एफ. भगवद्गीता, रचयिता—आनदराम पत्र—६८, आकार—८ × ५३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० गगाप्रसाद तिवारी, प्रधानाध्यापक, टाउन स्कूल, ग्राम—फतहाबाद, डाकघर—फतहाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्रीगनेशायनम श्री सरस्वती नम , श्री गुरुचरणभ्यो नम अथ भगवत् गीता लिप्यते । धृतराष्ट्र वाच । धर्म क्षेत्र कुरु क्षेत्र में, मिले जुद्ध के काज । सजय मो सुत पाडवनि, कीन्हे कैसे काज ॥ सजय उवाच ॥ दोहा ॥ पाडव सेना व्यूह लपु दुर्जोधन ढिग आइ । निज आचारज द्रोन सों, बोलो ऐसे भाइ ॥ २ ॥ दोहा ॥

अत—जोगेस्वर श्रीकृष्ण जू, अर्जुन हैं जा ठौर ॥ तहा विजय अरु नीति है, अटल सपदा और ॥८०॥ दोहा—यह गीता अद्भुत रतन, श्रीमुष कियो बषान । बार बार निरधार कीय, पराभक्ति को ज्ञान ॥८१॥ भक्तिरहस्य श्रीकृष्ण जू, यह कियो निरधार । कर भक्ति रिछा समैं, यह वेद को सार ॥ ८२ ॥ इति श्री भगवत् गीता सूपनिषद्सु ब्रह्म विद्याया जोग सास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवाद मोक्ष सन्यास योगो नाम अष्टा दशो अध्याइ ॥ १८ ॥ सम्पूर्न समाप्त ॥ सिद्धि श्री महाराज कुमारि श्री महारानी चारुमती दया जू साहब के पठनारथ लिषत माडन सींघ कनौजीआ चौधरी मोने सिरसा के सुभ मिती वैसाष सुदी १५ चन्द्र सवत् १९१५ ॥ श्रीराम जी ॥

विषय—गीता का पद्यानुवाद ।

संख्या १२ जी. श्रीमद्भगवद्गीता, रचयिता—आनंदराम, पत्र—१९०, आकार—६ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६४, रूप—बहुत प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६१ = १७०४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० गौरीशंकर जी गौड, ग्राम—नगला धौकल, डाकघर—बरहर, जिला—आगरा ।

आदि-अंत—१२ एफ के समान ।

संख्या १२ एच. श्रीमद्भगवद्गीता, रचयिता—आनंदराम, पत्र—१००, आकार—६ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—८७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६१ = १७०४ ई०, लिपिकाल—सं० १८७५ = १८१८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० बिहारीलाल, प्रधानाध्यापक, ग्राम—नौगवां, डाकघर—नौगवां, जिला—आगरा ।

आदि-अंत—१२ एफ के समान । पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यास योगो नाम अष्टादसोध्यायः ।१८। संवत् १८७५ श्रीमते रामानुजाय नमः ।

संख्या १२ आई. भगवद्गीता, रचयिता—आनंदराम, पत्र—४५, आकार—६७५, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६१ = १७०४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० बद्रीप्रसाद, ग्राम—मूसेपुरा, डाकघर—फतहाबाद, जिला—आगरा ।

आदि-अंत १२ एफ के समान ।

संख्या १२ जे. श्रीभगवद्गीता, रचयिता—आनंदराम, कागज - बाँसी कागज, पत्र—५४, आकार—८१/२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—८१०, रूप—प्राचीन, लिपि - नागरी, रचनाकाल—सं० १७६१ = १७०४ ई०, लिपिकाल—१८७७ = १८२० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० जयगोविंद मिश्र, ग्राम—सरेंहेंढी, डाकघर—जगनेर, जिला —आगरा ।

आदि—अंत— १२ एफ के समान । पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्रीभगवतगीता रूप ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे कोक्ष सन्यास योगे नाम अष्टदशोध्याय ॥ १८ ॥ लिखित मनुलाल ब्राह्मन ॥ पठनार्थ केसरी सिंह । शुभंभवतु ॥ मिति भाद्र वदी एकादशी । मगलवार । सवत—१८७७ शुभमस्तु कल्याणमस्तु ।

संख्या १३. गीत संग्रह, रचयिता—आनंदी कवि, पत्र—९२, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५२, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान - पं० जगन्नाथप्रसाद तिवारी, ग्राम—निगोहा, डाकघर—निगोहा, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री जानकी वल्लभो जयति ॥ राग आसावरी ॥ श्री गणपति शुभ सिद्धि के दानी । गावत सुर नर मुनि विज्ञानी ॥ प्रथम पूजि जग होत अनंदित । गिरिजा सहित सकल जग वंदित ।। लंबोदर गज वदन विनायक । मंगल दानि अरिष्ट नसायक ॥ शिव के

सुत समस्त गण स्वामी। मन वाछित तव चरण नमामी ॥ आनदी मागत कर जोरे। श्री गुर चरण वसे हिय मोर ॥१॥ भजन ॥ रघुकुल प्रगट धरम धुर धारी। गुर पित मात चरण सेवा रत खल वन कमल तुपारी ॥ १ ॥ मुनि मप हेतु सुवाहु ताड़का प्रवल पिशाचर मारी ॥ गौतम नारी साप के नाशक त्रिभुवन जस विस्तारी ॥ २ ॥ जनक राय प्रण के प्रति पालक परसराम मदहारी। सीता व्याहि अवध पुर आयो परिजन सुख महतारी ॥ ३ ॥ आयसु सीस मातु कर लीन्हों वचन को गमन विचारी। चित्र कूट छाये रघुनदन कामद गिरि सुपभारी ॥ ४ ॥ सानुज भरत पर चरणन्ह मह आरत सरण पुकारी। करि सनमान पादुका दीन्हीं भरत प्राण रखवारी ॥ ५ ॥

अत—घनाक्षरी—गाधि तने सजुत अनन्ति लखन राम धनुप जग्य प्राप्ति भये सोभा वहुते भइ ॥ मानहु प्रभा करके सग सोहे मोद भरे काम औ वसत दरि सभा सव मोहई ॥ जनक जू प्रणाम कीन्हों आपु को धन्य मानि जा को रचित सकल मुनिहि दिखा वइ ॥ कौशिक अशीसदइ नृपति मराही अति कहत अनदी रघुनाथ जू सही दइ ॥ ३४ ॥ इ भाइ देखत नृपति वलहीन भये। रजनी के विगत जैसे तारेगन सोहइ ॥ शेप लुप्त]

विपय—(१) पृ० १ से १० तक—मगल चरण। रामचन्द्र की धर्म धुरणता और उनका महत्व (२) पृ० ११ से ८५ तक—पापियों के तारने का प्रमाण देकर अपने तारने की प्राथना। श्री राम की दयालुता और वत्सलता। राम चन्द्र जी के अनुपम काय। चेतावनी। भक्ति का उपदेश राम के सौंदर्यादि का वर्णन। कुछ कृष्ण सवधी गीत। सीता राम विवाह का सूक्ष्म वणन। वधाइ। प्रेम। राम के गुणानुवाद का फल। (३) पृ० ४६ से ६४ तक—राम भजन का घेरा। उसका वस तथा वसत वर्णन। होली राधा कृष्ण की शोभा और वस्त्र भूपण का वर्णन। प्रेम। उपालभादि वर्णन। राम चन्द्र जी की कुछ कृतिया। (४) पृ० ६५ से ९२ तक—उपदेश के कवित्त। पचर। चेतावनी। राम नामका महत्व। राम के जनकपुर सवधी कुछ छन्द ॥ —आगे लुप्त ॥

टिप्पणी—प्रस्तुत पुस्तक के आदि में उसका कोइ नाम नहीं दिया गया है और अन्त से वह लुप्त है अतएव उसका नाम कल्पित कर लिया गया है। इसमें सगीत और कविता दोनों ही का समावेश हुआ है और दोनों ही में प्राय सीता राम अथवा राधाकृष्ण का गुणानुवाद हुआ है। इसके अतिरिक्त उसमे भक्ति, विनय, उपालम्भ, उपदेश और चेतावनी विपयों का वणन है। कविता साधारणतया अच्छी है ॥

सख्या १४ भजननिदान, रचयिता—आनंदसिंह, पत्र—१५७, आकार—९¾ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२३९, रूप—प्राचीन पद्य और गद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८५ = १८२८ ई०, प्राप्तिस्थान—गिरिधारीलाल चौवे, ग्राम—चदवार, डाकघर—फिरोजावाद, जिला—आगरा।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः। नमामिधन्वन्तरि मादिदेव सुरासुरै वदित वाद पद्म। लोके जरासमय मृत्युनाश। धातार मीश विविधौपदीना। पानी य नतु पानी य

पानी येन्ये प्रदेशय। अजीर्णे क्वचित्ते चामयेक्वे जीर्णे चनेतरं। नाना शोभ वंवारिस विषं भवति ध्रुव। स्वक्षं केतक मक्ता धैशीत दोपायन क्वचित। वर्ष वसंत समये कूप वारि प्रशस्य। शरदकाल तालका जल उत्तम। श्लोक। पानीयं प्राणिनां प्राणं निश्चये न च तन्मय अत्योपति निषेधेक्र न क्वाचिद्वारि वर्यते। टीका। ज्वरस्य प्रथमेरूपे भपंजन दिनत्रयं। नोदेय क्वथित तोय वदती न क्वचि द्वारि वर्यते। ८। टीका। ज्वरके प्रथम लछिन विषै औषदि तीनि दिन ताईं न दीजै। काढो न दीजे सर्व वैद्य मतहे।

अंत—अथ विस्तरपुस्तक पाटह्ढा हस्तधिया धृतिभूरिभया नवानानल दमित् पद्य कृतं। भिषजा मिदसंजन मरतुमुदे। अग्निवेश.। सुधन्यो यं कूटात्कूटं। परकृत शतवान्थेषु पचानि रहस्यानि शत स्ततु ॥ २ ॥ अजनेन कृत सर्वे किंचित् ग्रथा तरादपि। देवाचार्येण ग्रथित तद्वृंत तत्व बुद्धिभि ॥

इति श्री अजन निदानः संपूर्णः सवत् १८८५ भाद्रशुक्ल १ लिः झुनीलाल चौवे सुपठनार्थ ॥ श्री राम जयति।

विषय—क्वाथ वर्णन, चूर्ण, लेप तथा अवलेहादि, घृत, तैल, स्त्री चिकित्सा, घृतपान, धातुसोधन तथा मारन विधि, कुछ वस्तुओं के गुण और रसों का वर्णन। परिभाषाएं, परीक्षाएं, साध्यासाध्यज्ञान, द्रवनिरूपण अर्क आदि, दुर्गंध निवारण, तथा हसराजकृत नाडी परीक्षा। हेमराजकृत पाग, निदान आदि, बालरोग, सूतिका प्रदरादि और विष रोग वर्णन।

संख्या १५ ए. विचारमाल, रचयिता—अनाथदास, पत्र—८, आकार—१० × ६$\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२६ = १६६९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामजति, ग्राम—बडा गाँव, डाकघर—कमतरी, जिला—आगरा।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ दोहा ॥ नमो नमो श्री रामजू। सतचित आनंद रूप। जिआनि अग्नि जग स्वप्नवत्। नसि भ्रम तम कूप ॥ १ ॥ राम मया सत गुरू दया। साधु संग जब होय। तब प्राणी समझे कछू। रह्यो विषय रस भोय ॥ २ ॥ पद वदन आनद जुत। करि श्री देव मुरारि। विचार माल वरनन करूं। मुनिजू को उर धारि ॥ ३ ॥ कि मुनि ॥ यह में यह मम नाहि मम, सब विकल्प भय छीन। परमात्मा पूरण सकल, जानो मुनि तालीन ॥ ४ ॥

अंत—लिखै पढे अति प्रीति करि। अरु पुनि करे विचार। क्षण क्षण ज्ञान प्रकास तहँ। होइ सुरति प्रकार ॥ ४० ॥ गीता भरथरि कौ सतौ। एकादस की उक्ति। अष्टावक्र वशिष्ट मुनि। कछू वेद की उक्ति ॥ ४१ ॥ मूरष कौ न सुनाइयै। नहि जारो जिज्ञारा। कै करे विषाद कछु। कै मन होइ उदास ॥ ४२ ॥ आस्तिक बुधि गुरु गुनि विषैं। हृदय सुदृढ जिज्ञास। अभिमान रहित धर्म हिते, प्रति का होइ प्रकास ॥ ४३ ॥ सोरठा ॥ सत्रह सै छब्वीस, सवत माधव मास शुभ। सोमति जेइ तीस, विचारि मति दिय प्रगट करि ॥४४॥ इति श्री विचार मालायां आसवान स्थिति वर्णनो नाम अष्टमो विश्राम ॥ ८ ॥ इति श्री विचार माला संपूर्णन ॥ समास ॥

विषय—संतों के लक्षण, सत्सङ्ग, ज्ञान भूमि, ज्ञान साधन, आत्मोपदेश, जगत मिथ्यात्व, अनुभव तथा आत्मवान की स्थिति वर्णन।

टिप्पणी—ग्रंथकार अपने को नरोत्तमपुरी का मित्र बतलाता है। प्रस्तुत ग्रंथ गीता, भर्तृहरि शतक, भागवत एकादश स्कंध, अष्टावक्र एवम् वाशिष्ठ आदि ग्रंथों और वेदों के आधार पर लिखा गया है।

संख्या १५ बी विचारमाल, रचयिता—अनाथदास, पत्र—४०, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४३६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९४ = १८३७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्रीमहंत दाताराम जी, कबीर पंथी, ग्राम—मेराली, डाकघर—जगनेर, तहसील—खैरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—संत कबीर साहब की दया। धनी धर्मदास की दया। अथ लिख्यते ग्रंथ विचार माला। श्री दोहा। नमो नमो श्री राम जी, सतचित आनंद रूप। जिह जाने जग स्वप्न वत् नासत भूत तम कूप। राम दया सतगुर दया, साधु संग जब होय तब प्रानी जानै कछू रहै विपैरस भोय। पद वन्दन आनन्द सुत करि श्री देव मुरारि। विचार माल वरनन करू मौनी जी उर धारि। किं मौन यहुंवै मम, यहु नाहि मम। सब विकल्प भये लीन। परमातम पूरन सकल जानि।

अंत—सत्रह सै छब्बीस सम्मत, माधवमास सुभ ॥ सोमतिथि जिती कहती सु ॥ तिन्ती बरनि प्रगट करी। गीता भरथर की मतौ, एकादश की जुक्ति। अष्टाव बसिष्ठ मुनि, कछुक वेद की उक्ति। मूरिख कौं न सुनाइये, नहीं ताकै अभ्यास। वैतो करै विषाद कछु, कै मन होत उदास। इति श्री विचारमाला आत्मावान की स्थित मोती नृकृत अष्टमो विश्राम ॥ ८ ॥ समाप्त। मिती अगहन वदी ॥ ४ ॥ संवत् १८९४ श्री श्री श्री

विषय—वेदान्त के विषय का निवेचन तथा आत्मज्ञान का महत्व

संख्या १५ सी विचारमाल, रचयिता—अनाथ पत्र—७०, आकार—७ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—३१, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२६ = १६६९ ई० प्राप्तिस्थान—जैदामल पसारी, स्थान—फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—टेरत सतगुर दयाकर मोह नाद सोयत। नग्यो ग्यान लोचन खिले दसो भ्रम विसरत। गुरबिन भ्रम लगि भरम्यो भेद लई बिन ग्यान। केहर ज्यु छाइ निरख पड्यो कूप अग्यान। प्रगट अवनि करणार नव रतन ग्यान निग्यान। वचन लहरि तन पर सबै अग्य होत सुग्यान। सूरदस आदम जो होत आनि उद्योत। तैसा गुरु प्रसाद तें अनुभव निमल होत। जिमिचन्द हिलाहि चन्द्रमा अमी द्रवै तिहि काल। गुरुमुख निरखत सिष्य को अनुभव होत विलास। अथ सिष्यो पश्न किं मौन। इह म मम इन नाहि मम सब विकल्प भये छीन। परमातम पूरन सकल जानि मौताता लीन। अथ गुरु अस्तुति। भरत तात भ्राता सुहृत इष्टदेव नृप प्रान। अनाथ सुगुर सबते अधिक दान ग्यान विग्यान। प्रगट पोहम गुर सुरदुत कमनि ललित प्रकास अनाथ रन दिनि विमुख जन कबहुं न होत उलास।

अंत—पूरी निरतम मित्रवर खरो अतित भगवान बरनी माला विचार में तिहि आग्या परमान। लिखै पढै अति प्रीत जुत अरुपन करै विचार। क्षिन २ ज्ञान प्रकास तें होई सुख प्रकार। गीता भरथर को मतो एकादस की जुग्त। अष्टा वक्र वशिष्ट पुन कछु वेद की युग्त। मूरख को न सुनाइये नहि जाके जग्यान। कै तो करै विपाद कछु कै मन होइ उदास। अस्थित मत गुरू श्रुत विषे हृदे दृड जग्यास। अभिमान रहित धर्मग्य युत ताहि करौ प्रकास। युक्त विषे वैराग जो वन्धन विषै सनेह। सब ग्रन्थन को यह मतौ मन माने सो करेह। ४४। सोरठा। सत्रह सै छब्बीस माधव मास सुभ जानिये। ताकी ही सुदि तीज ता दिन वरन प्रकट करी। इति श्री विचार माला सपूर्णम। शुभ भूयात् श्री रामजी।

विषय—पुस्तक शिष्य की शंका लेकर सामने आती है पुस्तक प्रणेता गुरु को मार्ग का दिखाने वाला ज्ञान का दाता मोक्ष के समीप ले जाने वाला आदि बतला कर उसकी स्तुति करता है। तदनन्तर साधु को किस प्रकार जितेन्द्रिय, निरभिमानी औ राग द्वेप रहित होना चाहिये इसका वर्णन है। पुनः सत्सगति की महिमा उसकी उत्कृष्टता का दिग्दर्शन बडे अच्छे शब्दों में कराया गया है।

संख्या १५ डी. विचारमाल, रचयिता—अनाथपुरी, पत्र—३६, आकार—८$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८८, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७२६ = १६६९ ई०, लिपिकाल—स० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—बैजनाथ ब्रह्मभट्ट, ग्राम—असौसी, डाकघर—बिजनौर, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ बिचार माल॥ अनाथपुरी कृत लिष्यते॥ दोहा॥ नमो नमो श्री राम जू। सत चित आनद रूप। जेहि जानत जग स्वप्नवत। नासहि भ्रम तम कूप॥ १॥ राम मया सत गुरु दया। साधु संग जब होय। तब प्रानी जानै कछू। रह्यौ विषे मति भोय॥ २॥

अत—मूरपन नही सुनाइये। नही जाके जिज्ञास। कै तो करै विषाद कछु। कै मन होइ उदास॥ आस्तिक मति गुरु श्रुति विषै। हृदय सुदृढ जिज्ञास॥ अभिमान रहित धरमात्मा। तिहि प्रति करिय प्रकास॥ इति श्रीविचारमाल आतम वान की अस्तुति॥ अष्टमो विश्राम॥ ९॥ इति श्री विचार माल, समाप्त सपूरणम् सुभ मस्तु॥ श्री जेठ मासे शुक्ल पक्षे तिथि पंचमी॥ वेशवन व सवत् १९१८ विक्रमादिती॥

विषय—मंगला चरण, गुरु वंदना, गुरु की महत्ता तथा शिष्य की आशका का वर्णन (१ अध्याय) साधुलक्षण वर्णन। सत्सग की महिमा (२ अ०) ज्ञान की सप्त भूमिकाओ का वर्णन (३ अ०)। ज्ञान साधन वर्णन (४ अ०) आतम जगत उपदेश वर्णन [५ अ०] जगत मिथ्यात्व वर्णन [६ अ०] शिष्य अनुभव वर्णन [७ अ०] गुरु परीक्षा वर्णन ग्रन्थकार तथा ग्रन्थ परिचय।

ग्रन्थ निर्माण काल—सत्रह सै छब्बीस। सवत् माघ मास सुभ। मोमति जेति काहती। सो तेतिक वरनी प्रगट करि

संख्या १५ ई विचारमाल, रचयिता—अनाथदास, पत्र—८, आकार—१३$\frac{3}{4}$ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५५, रूप—प्राचीन, लिपि—

नागरी, रचनाकाल—स० १७२६ = १६६९ ई०, प्राप्तिस्थान—लक्ष्मीनारायण श्रीवास्तव्य, अध्यापक, ग्राम—चद्वार, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्रीमते रामानुजायनम ॥ दोहा ॥ नमो नमो श्री राम जू सत चित आनद रूप। राममया सत गुर दया, साध सग जब होय। तब प्राणि समझे कछु रह्यो विसे रस भोय। पद वदन आनद जुत, करी श्री देव मुरारि। विचार मल वरनन करू, सुनि जु उरधारि। किंमुनि। यह मैं यह मम नाहि, मम सब विकल्प भयेछीन, परमात्मा पूरण सकल, जानि मुनतालीन।

अत—माधव मास सुभ। मोमती जेठु तीसर्ते प्रतीप्रगट करि। इति श्री विचार मालाया आत्मवान स्थिति वर्णनोनाम अष्टमो विश्राम ॥ १८ ॥ इति श्री विचार माला। सपूण समाप्त। श्री रामायनम ।

विषय—साधुलक्षण, सत्सग, ज्ञानभूमि, ज्ञान साधन, आत्मोपदेश, जगतमिथ्यात्व अनुभव तथा आत्मावान स्थिति वर्णन।

सख्या १५ एफ विचारमाल, रचयिता—अनाथदास, पत्र—२१, आकार—९ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—२२५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल स० १७२६ = १६६९ ई० प्राप्तिस्थान—लक्ष्मीनारायण गौड़, ग्राम—चद्वार, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि-अत १५ ए के समान।

सख्या १५ जी विचार माल, रचयिता—अनाथदास, पत्र—३४, आकार—६ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७२६ = १६६६ ई० लिपिकाल—स० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—बदन सिंह शर्मा, अध्यापक, ग्राम—खाण्डा, डाकघर—बरोहन, जिला—आगरा।

आदि-अत १५ ए के समान।

सख्या १५ एच सबसार उपदेश, रचयिता—अनाथदास, कागज—बाँसी, पत्र—८०, आकार—९½ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७२६ = १६६९ ई०, लिपिकाल—स० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री श्रवणलाल हकीम वैश्य, ग्राम—बसई, डाकघर—तातपुर तह—खैरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—श्री परमात्मने नम । श्री गुरुचरणकमलभ्यो नम ॥ अथ सबसार लिख्यते ग्रथ भाषा। दोहा। श्री। गग यमुन गोदावरी सिंधु सरस्वतीसार। आरज सब तीथ जहाँ सुर रघुवर विस्तार। श्री गुण सुखमगल सबै, आनन्द तहाँ बसन्त कीर्ति श्री हरिदेव की भद भरि सन्त कहन्त। भक्ति युक्ति वन्दन करौं, श्री गुर परम उदार। जिनकी कृपा उदार ते गोपद सब ससार। गुर सुवैद दाता सुघर मुक्ति पच दगदन्त। जो जुगादि जड़ता सघन, सो छिन में हरि लेत। हृदय कमण प्रफुल्लित करै श्री गुरु सुर अनूप। कोटि कोटि वन्दन करौं, धरो चित्त निज रूप।

अंत—द्वादस दिन में ग्रंथ यह, सर्वसार उपदेश। भाषा कियो अनाथ जन, कृपासु अवध नरेश। सोधत लागे मासद्वै सिद्ध भये रुचि ग्रंथ। पकरि बांह निज लै चलै, अगम मुक्ति को पथ। सोधतउ भस तरा, जुगल छाप नव और। जनु अनाथ श्रीनाथ के सग ले पायौ ठौर। सम्वत सत्रहसै अधिक षट ब्रीस निरधार अश्वनि मास रचना रची, सार असार विचार। कृष्णपक्ष सुचि मार्ग सिर, एकादश रविवार, पोथी लिखी पूरण भई, रमारमण अधार।

इति श्री सर्वसार उपदेश शिष्य आशका निवृति अनाथदास विरचिते चतुर्विंशतिको विश्रास ॥ २४ ॥ श्री ता दिन यह पूरी भई तन भयो हुलास। लिख्यक को यह नाम है श्रीकृष्ण कौ दास। यादृश पुस्तकं दृष्टा तादृश लिखित मया। यदि शुद्धिम शुद्धिवा मम दोषो न दीयते। श्री जगदीश कृपाल है, दास गरीब निवाज। तिनमो पर ऊदार हैं देवदास सुभ आज। हरिहर जन जब ही अवैं तबही होत × × × मिती वैशाख शुक्ला प्रथमा भृगुवार स० १९३१।

विषय—गुरु शिष्य संवाद प्रारंभ, मनुष्य की प्रवृत्ति निवृत्ति के परिवार, मनसा कर्म्मणा का उपदेश, क्षमा और क्रोध का सवाद, लोभ और सतोष का संवाद, दंभ और सत्य का युद्ध वर्णन, गर्व और शील; धर्म और अधर्म, न्याय और अन्याय, मोहदल; विवेक रूपो नृपदल, मोह-विवेक; शास्त्र एक्यता, वैराग्य और मन, जिज्ञासा उत्पत्ति, अपरोक्ष और परोक्ष; तत्वलक्षण; मन संकल्प वर्णन, आशंका-निवृत्ति करण आदि का उल्लेख।

संख्या १६. सुखमनी, रचयिता—अर्जुनदेव गुरु, पत्र—५८, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्) ८१२, रूप—प्राचीन, लिपि—फारसी, प्राप्तिस्थान—ठा० शिवनाथ सिंह जी रईस, स्थान—इतमादपुर, डाकघर—इतमादपुर, जिला—आगरा।

आदि—प्रभु के सुमरन जप तप पूजा, प्रभु के सुमरन न वसे दूजा। प्रभु के सुमरन तीरथ अस्नाने, प्रभु के सुमरन दरगह माने। प्रभु के सुमरन होय सो भला, प्रभु के सुमरन सो फल फला। से सुमिराजिन आप सुमिराये, नानक ताकी लागू पाये। प्रभु का सुमरन सबते ऊँचा। प्रभु के सुमिरन उधरी भूचा। प्रभु के सुमिरन तृष्णा बूझी, प्रभु के सुमरन सबको भय सूझी। प्रभु के सुमरन नहीं जम नासा, प्रभु के सुमरन पूरन आसा। प्रभु के सुमरन मन का मल जाय, अमृत नाम रिध माहिं समाय। प्रभु जी बसे साध की रसना, नानक जिनका दासन दसना।

अत—जिस मन से सुनि लाये प्रीति, जिस जम आवे हरि पर चीत। जन्म मरन ताका दुःख निवारे, दुलभ देह ततकाल उधारे। निर्मल सोभा अमृतता की बानी, एक नाम मन माहि समानी। दुख रोग विनसै यह भरम, साधनाम निरमल ताकी करम। सबते ऊँच ताकी सोभा बनी, नानक इह को नाम सुखमनी। बखत सूरजभान खत्री वल्द मन सुख व मुकाम पिनाहट पुनि सुखमनी जो तमाम शुद्ध फूल जोक बख्शी तारीख ३१ मार्च सन् १८७४ ई० मुताबि चैत्र सुदी पचमी सवत् १९३० तमाम शुद हस्ब फरमायश ठाकुर वेनी प्रसाद साहब तहसीलदार।

विषय—ईश्वर का स्मरण, भक्ति महात्म्य, सत्संग प्रभाव तथा ब्रह्म ज्ञान का उपदेश वर्णन।

संख्या १७ कोक सामुद्रिक, रचयिता—भरभद्र, पत्र—४८, आकार—७ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२ परिमाण (अनुष्टुप्)—३६६, रूप—प्राचीन, लिपि—कैथी, रचनाकाल—सं० १६७८ = १६२१ ई०, लिपिकाल—सं० १८५० = १७९३ ई०, प्राप्ति स्थान—पं० लक्ष्मीनारायण वैद्य, स्थान—बाह, डाकघर—बाह जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशायनम । श्री सरस्वती नम । अथ कोक सामुद्रिक लिख्यते । दोहा। च्यारि च्यारि सुख जातिके कीनो जगत बनाया । त सुभाइ तें चतुर नर दीना चारि गिनाय। चारि चक्र विधना रचै जैसे समुद्र गंभीर । छत्र धरै अविचल सदा राज माहि जिहागीर। धनि जीवन जननी सुफल मिटै जगत की पीर। सुथिर सदा रहौं छत्रपति नर दीन जिहां गीर। चारि वेद चित्त में धरै करें वेद दिनु रैनि। मथन दुरजन दरिद्र हैं सदा जगत सुख दैन। एक दात अरु सूरवा तें जगत कलेस। अष्ट सिधि नव निधि हैं गाढ़ धरत आदेस। जोग भोग पूरन सकल पूरे करम समाय। चारि चक्र सधै सदा रह जन जार हाय। को राजा साधै जुगति कोउ भाग रस भाग। अपन अपन प्रेम वश करत कुलाहल लोग। सम्वत सोरह सै समै अठहत्तरि अधिकाय। वदी असाढ़ तिथि पचमी कही कथा समुझाय। चारि पुरुष अरु कामिनी कहे वेद मुख चार। कही सुलच्छन चारिके एक २ निरधार। सारठा। रचै जु विधना नारि कम थक ता दिन दिये। सोइ भुगतन हार। जो कछु लिखि ललाट मधि अतुल समुद्र उपाचिये नख सोंके सुमेर क्योंहू हाय न आवहि वाट कर्म को फेर।

अंत—अथ नाम लछिनम्। पै सालिता के वन परत भरदव काहू भाय। धन के आगे पिय भरे वेद बताव ठाय। ज तीरथ के नाम त्रिया वंस बरधिनी जानि। सुरत विलास गृह में फर वृधि होइ सो जानि। महा पापनी दुष्टनी। सकल अंग आलस भरा हाये भरि रहे रोष। रहै नैन भरि नीद सो। यह बरूनी सत दास। नख सिख ता लछिन कहे। अग अग नर नारि तिसका गुन औगुन सकल लीज्यो चित्त विचार। जेते औगुन पुरिष के तन सब गुनि कर भए। जैसो भागिन कामिनी औगुन कर्म विसेष। इति श्री कोक सामुद्रिक भरभद्र कृत सपूरन समस्त। शुभ भूयात्। लिखितम् मिश्र दौलति राम मिति चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी स० १८५० (यहा पर हस्त रेखा की जानकारी के निमित्त हस्त चित्र बना है)

विषय—पुरुष लक्षण, जाति वर्णन, चरण, नख, इन्द्री, टाग, पिंडी, रोमावली, जानु पिंजर, पीठ, कंधा, भुजा, नेत्र, गुदा, उपस्थ आदि अङ्गों के लक्षणों का वर्णन।

संख्या १८ यूनानी सार, रचयिता—असगर हुसेन (फर्रुखाबाद), पत्र—८७, आकार ८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३२७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३२ = १८७३ ई०, लिपिकाल—सं० १९४४ = १८८७ ई०, प्राप्तिस्थान—वैद्य रामभूषण, ग्राम—रामुनिया, डाकघर—हरदोई, जिला—हरदोई।

आदि—श्रीगणेशाय नमः । अथ यूनानी सार लिख्यते । दोहा—अलह नाम छवि देत ज्यो ग्रन्थन के सिर आइ । ज्यो राजन के मुकुट ते अति सोभा सरसाइ ॥ परमेश्वर को प्रणाम करके असगर हुसेन रहने वाला फरुखाबाद का वास्ते बेहतरी और फायदे हिन्दुस्तानी भाइयों के यह सूक्ष्म ग्रन्थ रचता है इस कारण कि वैद्यक की विद्या तो पृथ्वी पर से अब अलोप हो गई क्योकि यह विद्या तो परीक्षा की है और सैकडों वर्ष से वैद्यो में कोई ऐसा बुद्धिमान मनस्वीं तेजस्वी पैदा नही हुआ कि वह तजुरबा करके इस विद्या को बढ़ाता वल्कि जब से मुसलमानो की अमलदारी हिन्दुस्तान में हुई तब से तो इसका नाम ही मिट गया पुराने और मातवर ग्रन्थों का तो नाम भी बाक़ी नही रहा दो चार ग्रन्थ जैसे श्रुश्रुत और चरक बहार करन, बभोज, भेड, वागभट्ट, रस रत्नाकर, शारगधर, बंगसेन, चिन्तामणि माधौ निदान चक्र दत्त, रह गये थे उनका अब कोई पढने पढाने वाला नहीं है ॥

अत—इसी तरह हुम्माइ योम की बहुत सारी किस्में है । जब तक हर क़िस्मो का बयान न किया जाय और निदान ग्रन्थ के और इलाज सबका न कहा जावे तब तक फायदा नही है इस कारण ज्वरो के बखान में दूसरी पुस्तक विस्तार पूर्वक लिखी जायगी इसी तरह जुदरी अर्थात चेचक का इलाज अलग दूसरी पुस्तक मे लिखेगे । अब इस पुस्तक को हम समाप्त करते हैं । जान लेना चाहिये कि जो कुछ रोगो का हमने वरनन ऊपर कहा है वह बहुत थोडा है ॥ इससे दसगुना यूनानी किताबों में मौजूद है । इसी तरह सैकटों रोग हजारो दवाइयां इस पुस्तक में लिखने से रह गई हैं । अगर हमारी जिदगी रही तो बहुत सारी तिब यूनानी का उल्था करेगे ॥ और हमने यह ग्रन्थ अपनी नेक़ नियती से वास्ते फायदा पहुंचाने अपने भाई वैदो के लिखा है ताकि इनकी रोटिया भी चलैं और खुदा के बन्दो की जान भी बचे ॥ इति पोथी यूनानी सार चैत्र शुक्ला दिन सुक्रवार सवत् १९३२ में खत्म करते हैं । लिखा गुलाब चद पसारी माधो नगर सवत् १९४४ वि० जै रामज की कृष्ण ॥

विषय—यूनानी वैद्यक ।

संख्या १९. रामायण, रचयिता—बादेराय (तिलोई राज्य), पत्र—५९२, आकार—९½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट —१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२४८, रूप—प्राचीन, लिपि—फारसी, रचनाकाल—स० १९१४ = १८५७ ई०, लिपिकाल—हिजरी सन् १२६६ = स० १९१६ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा शिवकुमार, प्लीडर, स्थान लखीमपुर, डाकघर—लखीमपुर, जिला —खीरी ।

आदि—बाल कांड—श्री गणेशाय नमः दोहा । विनती करहुँ कर जोरि के । गन पति पद धरि शीस । जाकी कृपा कटाक्ष ते । बरनौ गुन जगदीस ॥ सोरठा ॥ दीजै मोहिं वरदान । मागौ यह करिवर वदन । प्रेम प्रीति जिय आन । कहूँ चरित भगवान को ॥ ॥ चौपाई ॥ गुरु पद बन्दौ अति अनुरागा । जासु चरन जस विदित परागा ॥ गुर चरनन को ध्यान लगाऊँ । गुरु की महिमा कछु में गाऊँ ॥

अंत—कृपा करौ रघुवीर । तो गति में जानो नही । हरिये मन की पीर । दास आपनौं जानि के ॥ पोथी रामायन तफनीस लाला बादीराय साहब साकिन तिलोइ हाल

वारिद दर मुकाम जफर पुर जमींदारी लाला मक्खन लाल कानूनगो अज इत्तिफाकात वक्त रफ्त न सुद दरमुकाम मजकूरह सुद पोथी रामायन या मुआइना सुद आमदा व खयाल आमफ सुदन नकल तहरीर करद व मुआविनत साहिबान आ।। दर पंज रोज जुमला पोथी समाप्त करदीद दरसन् १२६६ फसली सुर माह पूस दर मुकाम जफर पुर मुत अल्लि के परगने देवा जमींदारी ला० मक्खन लाल साहब कानून गो कथारामायन समाप्त ॥

विषय—रामचन्द्र का जीवनचरित्र

टिप्पणी—ग्रन्थ निर्माण काल संवत् की परगास। नौ दस सत चौदह रयो। राम चरन धरि आस अथ कियो तब यह कथा ॥ कवि परिचय—नगर तिलोई मेरो धामा। नाम पिता को रामगुलामा ॥ राज तिलोइ बहुत बखानी। बहुत काल तक कीन्ह दीवानी ॥ अतकाल हरि पद चित लायो। राम कृपा से धाम सिधायो ॥

प्रस्तुत ग्रन्थ तिलोइ राज्य के दीवान बादराय जी का रचा हुआ है। इन्होंने अपने पिता का नाम रामगुलाम' बताया है। इन्होंने अपनी जाति पाँति का कुछ पता नहीं लिखा है किन्तु ग्रन्थ के प्रति लिपि कर्त्ता ने इन्हें "लाला बादी राय" लिखा है इस से ज्ञात होता है कि यह जाति के कायस्थ थे। इसके अतिरिक्त उनका यह भी कथन है कि यह वास्तव में तिलोइ निवासी थे किन्तु इत्तफाक से मुजफ्फर पुर जहाँ लाला मक्खन लाल की जिमींदारी थी आगये थे। यहीं उनकी देख रेख में यह पोथी केवल पाँच दिन में लिखी गई थी। पोथी लिखने का स्थान मुजफ्फरपुर बाराबकी प्रान्त के देवा परगने में है ॥

संख्या ७० काव्य कल्पद्रुम, रचयिता—बैजनाथ कूर्म (मानपुर, दोहवा, बाराबकी) पत्र—१९६, आकार—१० × ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६१७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३५ = १८७८ ई०, लिपिकाल—सं० १९४७ = १८९० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० भगवत प्रसाद, ग्राम—सराय नूरमहल, डाकघर—टुडला, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ काव्य कल्पद्रुम सटीक लिख्यते ॥ कला वर्ण विश्व स्थिति पालि यावे गुणो निगुणात्मास ऐ वेद गावे तमे के विभुसार स्वच्छंद नामी स श्री राम पदाबुजत्तिनमामी ॥१॥ अथ गुरु विचार विसर्गादि संजोगि दीर्घोच्चारो चतुर्भाति प्लुतांसदर्वेधधारें लवौं गुरु ही पाद अंते कहे जनम सत्य सीता परम्या रहे ज ॥ २ ॥ श्री गनेशायनम स श्री सहित श्री जानकी जी श्री रघुनाथ के पद कमल को नमस्कार है कैसे हैं श्री रघुनाथ जी जिनकी कला वर्ण कहे चेष्टा है विराट रूप की अर्थात् विश्व की उत्पत्ति पालन सहार गुणों कहे यावत सगुन रूप है निरगुनात्मक है निगुन रूप सो जो जिनको अंश हैं ऐसा वेद गावत है ते कहे तौन जो श्री रघुनाथ जो है एक कहे एक आपु ही विभुक हैं समथ है सब को साराश हैं स्वच्छंद कहे स्ववश हैं नामी कहे जिनको राम ऐसो नाम ब्रह्माड में प्रसिद्धि है अथवा श्री आदि चन्दन को नमस्कार है कैसी हैं छन्दें कला जो मात्रा वर्ण जो अक्षर कहे दोऊ जाके स्थिति कहे।

अंत—परतापगज परगना धकी में पूव दसाऊ योजन दोइ ग्राम मानपुर बैजनाथ वसि जमींदार के रातो सोई ॥ २६० ॥ कातिक असित मौम पचमी निशादि याम रोहिनी

नक्षत्र वरिया नगर कर नाथ पैंतिस अधिक उन्नविंस सत संवतार्क सुतांश कराति पाइ वृष लग्न निशि नाथ लाभ शनि तीजे केतु धर्म्म वुरुत्तम पाइ पच में सुवुध मृग भौम ताहि रवि साथ पांच पल गत दंड पैंतिस को ६ए काल काव्य कल्पद्रुम को समाप्त कीन बैजनाथ ॥ २६१ ॥ इति श्री वैजनाथ विरंचिते काव्य कल्पद्रुम समाप्तम् ॥ इति शुभम् ॥ मिती चैत्र शुक्ल पक्षे तृतीया संवत् १९४७ विक्रमे ॥

विषय—पिंगल-गणागणादि तथा नष्ट उद्दिष्टादि का वर्णन कविमाल (प्राचीन कवियों की नामावाली) तथा कवि परिचय और ग्रथ निर्माण कालादि वर्णन ॥

संख्या २१ ए. भागवत दशम स्कंध, रचयिता—वकस कवि, कागज—देशी, पत्र—२६६, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८६ = १८२९ ई०। प्राप्ति-स्थान—प० विष्णुभरोसे शुक्ल, ग्राम—जनगांव, डाकघर—उतरौली, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ दशम स्कन्ध भागवत भाषा लिख्यते ॥ सो० प्रणवौ गणपति ईश ब्रह्मादिक जे सकल सुर। वरदा व्यास फणीस करौ अनुग्रह परस पर ॥ वरनौं दशम स्कन्ध क्रम नवे अध्यायधरि। अच्युत चरित प्रवंध निर्मल जगत् वितानकरि ॥ दोहा—प्रथम परीक्षित प्रश्न अरु देव क्या उपजाम ॥ कंस भयंकर नभ गिरा वसुदेवा रक्षे वाम ॥ चौपाई—श्री पत्ति चरिता मृत वहुपीन्हें। राज परीक्षित तृपित कीन्हे ॥ सोरठा अस विचारि वहु भूप, राजकोप तजि वन गये। लहि तिन मोछ अनूप, भक्ति प्रभाव न जाहि कहि ॥ दोहा—भक्त मनोहर कल्प तरु कारण रहित कृपाल। वकस विचारि अस ईस भजु छाँडि कपट जंजाल ॥ अक्षर आंकरु भृष्ट पद रेफ मात्राहीन। छम्यो मोर अपराध सो कृष्ण दया करि दीन ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कन्धे कृष्ण लीला चरित नाम नवे सीति तमोध्याय ९० ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कन्धे समाप्त शुभ मस्तु कुंवार वदी १५। रविवासर संवत् १९८० वि० ॥

विषय—श्री कृष्ण जी का चरित्र।

संख्या २१ बी. भागवत दशम स्कध, रचयिता—वकस, कागज—देशी, पत्र—३१६, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६९८२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८६ = १८२९ ई०, प्राप्ति-स्थान—हरिवल्लभ मिश्र, ग्राम—झाझन, डाकघर—पिहानी, हरदोई।

आदि—श्रीगणेशायनमः अथ हरि चरित्र भागवत लिख्यते। अथ दशम स्कन्ध ॥ सोरठा ॥ प्रणवों गणपति ईश ब्रह्मादिक जे सकल सुर। वरदा व्यास फणीश करौ अनुग्रह परसपर ॥

अंत—दोहा—भक्ति मनोरथ कल्प तरु कारण रहित कृपाल। वकस विचारि अस ईशु भजु छांडि कपट जंजाल ॥ अक्षर आंकर भृष्ट पद रेफ मात्रा हीन। छम्यो मोर अपराध सो कृष्ण दयाकरि दीन ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कन्धे कृष्ण लीला चरित नाम नवे सीत मोध्याय ९० ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कन्धे समाप्त शुभ मस्तु कुवांर वदी १५ रविवासर संवत् १८८६ वि०।

विषय—श्री कृष्णलीला।

संख्या ७२ ए. रससागर (दंपतिविलास), रचयिता—बलबीर (कन्नौज), कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५९ = १७०२ ई०, लिपिकाल—सं० १८८० = १८२३ ई०, प्राप्तिस्थान—शिवदयाल महमद, ग्राम—मुहम्मदपुर, डाकघर—बैनीगंज, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशायनम अथ रस सागर दंपति विलास लिष्यते॥ छंद मात्रा सवैया॥ सिद्धि सदन गुन वृद्धि करन पुनि विघन हरन सुख देत अनंत॥ गिरिजा नंदन जगबंदन शत्रु निकंदन गन वर कंत॥ सब सुख दायक सदा सहायक है सब लायक जपत सुरेस। सत्य के सदना एकै रदना गज वर वदना नमो गनेस॥ दो०—कर जोर विनती करौं काली कों सिर नाइ। रस सागर के तरन को तरनि तिहारे पाइ॥ प्रथमहिं बरनौं ताहि गुन जो मति करै सहाइ। चित्तु चहै बल बीर की कृपा रावरी पाइ॥ फूलि फलित अभिलाष है। जे सेवत हैं ताहि॥ जिंद पीर नौ रंग बली ताको सदा सहाइ॥ कवित्त। पूरन मनोरथ औ स्वारथ भरे हैं, बीर पूजत जो कोऊ सूधा एक चित्त ताहि को॥ ताहि रिद्धि सिद्धि अति वृद्धि नव निद्धि की, सो इन्द्र सम पदवी मिलति पुनि वाहि को॥ पावै सुभ दाइ औ बड़ाइ बकी ठौरनि में, खानन में खानी औ बहादुरी सराहि को॥ हिन्दूपति परम सु इन्द्र पथ पति किधौं। जाहिर जगत जोति दरसन जाहि कौं॥

अंत—मीरा बाइ छन्द मदिरा—जे सिव शंकर औ सनकादिक आदिक वेद पुरानन गायो। सेस गनेस गिरा गिरिजा गिरि में जपि कै जग में जसु पायो॥ जे मुनि गंधर्व किन्नर जक्षनि साध समाधिनि सौं चितु लायो। सो बलबीर कहा कुबरी जिन चंदन दै नंद नन्द रिझायौ॥ दो०—दया धर्म अरु दान को साधन धरौ सरीर। सात रस सेवे सदा साचे हैं रघुबीर॥ ७४०॥ स्वारथ सब यामें कह्यौ मैं परमारथ बूझि। दोष न दीजौ बिनु गुनै घट घट अपनी सूझि॥ छंद बंद रस नाइका नाइक श्री गोपाल। पूजो एरी॥ दृष्टि भरि कवि बलबीर रसाल॥ दंपति कह्यो विलास मैं राधे श्री ब्रजराज। देह धरी जिन जगत में बीर भक्त के काज॥ इति श्री रस सागर दंपति विलास संपूर्ण समाप्त संवत् १८८० जेष्ठ शुक्ला नवमी शिवपुर मध्ये लिखा रामा भगत॥

विषय—नायक नायिका लक्षण, भेद तथा रसों का वर्णन।

टिप्पणी—कवि परिचय सो बलबीर कन्नौज को वासी। सदा चित्त जाके अविनासी। ब्राह्मन बरन दुबेद बखानौ। सो कवि हिम्मत खा को जानौ॥ निर्माण काल ५७९ बान[५] मुनि[७] रवि[१] रथ चक्र। संवत् नाम लोक तिथि वर्के॥ माधव सुकुल पक्ष लिषु वामैं। आदित वार प्रगट किय नामैं॥

संख्या ७२ बी. रससागर, रचयिता—बलबीर, कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५९ = १७०२ ई०, लिपिकाल—सं०

१८५६ = १७९९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामभजन मिश्र, ग्राम—चौगाँव, डाकघर—मल्लावाँ, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रस सागर दंपति विलास लिख्यते ॥ छन्द सवैया ॥ सिद्धि सदन गुन बृद्धि करन पुनि विघन हरन सुख देत अनत । गिरिजा नन्दन जग के वन्दन सत्रु निकदन गनवर कंत ॥ सब सुख दायक सदा सहायक है सब लायक जपत सुरेस । सत्य के सदना ये कै रदना जग वर वदना नमो गनेस ॥ १ ॥

अत—दोहा—दया धर्म अरु दान को साधन धरो शरीर । सात रस सबै सदा साचे हैं रघुवीर ॥ स्वारथ सब यामे कह्यो मैं परमारथ बूझि ॥ दोप न दीजौ विनु गुनै घट घट अपनी सूझि ॥ छंद बद रस नाइका नाइक श्री गोपाल । दूजो लखौ न दृष्टि भरि कवि वर वीर रसाल ॥ दपति कह्यो विलास में राधे श्री व्रज राज । देह धरी जिन जगत में वीर भक्त के काज ॥ इति श्री दपति विलास रस सागर संपूर्ण समाप्तः ॥ सवत १८५६ क्वार मास शुक्ल पक्ष दशमी ॥

विषय—नायक नायिका भेद, रस, हाव भाव आदि

संख्या २२ सी. उपमालंकार-नखशिख, रचयिता—वलवीर, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—१० × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, खडित, रूप प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५६ = १७९९ ई० प्राप्तिस्थान—पं० वसगोपल्ल, ग्राम—दीनापुर, डाकघर—उमरगढ, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वलवीर कृत उपमालंकार नख सिख लिख्यते ॥ दोहा ॥ कछुक भेद कवि कहत है उपमा समता कीन । मेहदी जुत कर वीर यो जावक पगनि प्रवीन ॥ १ ॥ अथ अरुणोपमालकार ॥ दोहा ॥ पल्लव से कोमल कमल अंगुरी कोस समान । जावक पावक राज गुन भूपन भेद वखान ॥ २ ॥ यथा ॥ दिन मनि मित्र पितु पावन विरंचि जू के । सुन्दर सुमन सोभ सोभित जमल से ॥ ललित अरुन पर जावक रजो को गुन । पावक अरुन सुख छम सोसमल से ॥ अंगुली अरुन कोस भूपन अरुन नप । वरनत कवि रवि द्वादस अमल से ॥ पल्लव नवीनता रूप रमा परम सारु, प्यारी के चरन कोमल कमल से ॥

अत—दोहा—द्रग पुतरिन की किरनि सम कहै कसौटी धीर । मधु कुर माला रैनि सी मछु ससी वलवीर ॥ यथा ॥ किधौ है मयूख द्रग तारन की राही धौ ॥ कनक कसौटी पै कसौटी लीक कसी है ॥ किधौ मार मधुकर कज कमनीय पर । हाटक घटित सी किधी मधु मासी है ॥ किधौ वलवीर व्याली वलित पयूप काज । उपमा न आवै और याही मति उसी है ॥ प्यारी के वदन पर अलक सुमिल किधौं, कला निधि ऊपर ते तमी धारधसी है ॥ अपूर्ण ॥

विषय—उपमालंकार को लेकर नखशिख का वर्णन ।

संख्या २३. शिखनख वर्णन, रचयिता—बलभद्र (वृंदावन), कागज—देशी, पत्र—३४, आकार—७ × ५ इच, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, रूप—प्राचीन, लिपि—

नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री अद्वैतचरण गोस्वामी, स्थान—घेरा श्री राधारमण जी, वृंदावन, डाकघर—वृंदावन, जिला—मथुरा।

आदि—श्री राधा रमणे जयति। अथ बलिभद्रकृत शिख नख वर्णन लिख्यते। कवित्त। केश मरकत पै सूतकिधौं पन्नग के पूत किधौं राजत अभूत (तमराज) केसे तारहैं। सरसमूल गुन ग्राम सोभित सरसस्याम काम मृग कानन की कुहुके कुमार है। कोय की किरन किधौं नीलक जरी तत उपमा अनत धार चमर सिंगार है। कार सत्कार भीने सौंधे सौं सुगध वास ऐसे वलिभद्र नव वाला तेर वार हैं। १।

अत—नाजुकता वरणन। पालिक तै पाय जा धरत धन धरनी में छाले पर पग माहि पद राग गमनते। लीलैं जो तमोह्लाव ताप आवै वलिभद्र होति है अरचिपान पीक अचवनते॥ हार हूके भार और तन हूकू चीर भार यातें नहीं होत धाम बाहिर भवनतें। लागे जो समीर तौं तौ पूरे पर सौं तिनके फूल ज्यौं उड़त आली परा के पवनते। ६५। छप्पै। सज्जनता सीलता सुजलता सुंदरताई। उज्जलता सुचि अग धीरता चित अचलाई। क्षरपमान मन विमल कमल सुचि पिय सुपदाइ। मीठे सुवयन प्रफुलित वदनपट परि मल भूपणि धरनि। सौभाग्य भाग्य शोभित सरस सब विधि कैं शिखनख वरण।

विषय—राधाजी के शृंगार का वर्णन।

संख्या ७४ ए मयनगी, रचयिता—बालदास महात्मा (जयनगरा, रायबरली), पत्र—१७, आकार—११×९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८५=१८२८ ई०, लिपि काल—सं० १९८०=१९२३ ई०, प्राप्तिस्थान—त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे प्राण पाडेय, डाकघर—तिलोइ, जिला—रायबरेली।

आदि—दो० प्रथमहि बरनौ गुर चरन, हरन दोष दुख दुग। यथा अमी को असन करि डसन करत है। उग। चौ०—प्रथमहिं बरनौ गुर के चरना। सुख समुद्र दुख दारन हरना। आदि अवाज आदि पद गाइ। नि अक्षरा तीत प्रभुताइ। तेहि के परे नि अक्षर वरना। अक्षर आदि ताहि की सरना। तेहि आगे छर शब्द बखानी। आगे अलख अखंडित जानी। परे अनादि यादि सब होइ। तन मन धन सरनागत होइ। तेहि आगे आदेस बखानी। तेहि के पर अचिंतहि जानी। पुनि बरनौं चित को विस्तारा। जेहि चित ईश्वर कीन हजारा। तेहि ते प्रकृत पुरुष भे भाइ। इदनर प्रति चौदह पुरगाइ।

अंत—मूठी डीठ पिसाची होइ। पढ़ते पाठ रहे ना कोई। पूरुष नारि विरोध मिटावे। सेवक सिद्धि सदा दरसावे। पेट पाव के रोग नसावैं। तीन काल नित पाठ करावे। शीस रोग अरू फूल नसावै। तीन काल नित अस्तुत गावैं। कछुइ रक्त पेट को गोला। पाठ किये सपनेहु नहि होला। देह भरे के रोग नसावै। तीन काल नित अस्तुत गावे। दौलत भूमि मिलै अधिकारी। तीन काल कहे अस्तुति झारी। इष्ट सकल औ कीमिया आव। तीन काल नित पाठ सुनावे। जो २ सकल भावना भाइ। पाठ करें मागै सिर नाइ। नारि पुरुष पूरुष को नारी। पाठ किहे हरि देहि विचारी। अनिमा, महिमा गरिमा सिद्धी। लक्ष्मी प्रापत औ नव निद्धी।

विषय—गुरु वंदना के पश्चात् निराकार ब्रह्म का वर्णन और प्रसंगानुसार निः अक्षर क्षर आदि के स्थान और पुरुष प्रकृति आदि का वर्णन। तत्पश्चात् स्थूल शरीर और देवताओ तथा उनकी शक्तियो की वंदना फिर गुरु प्रणाली मे प्रथम श्री रामानुज स्वामी की वंदना एव राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुहन और संपूर्ण सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग के महात्माओ की वंदना तथा संपूर्ण ब्रह्मांड की वंदना अत में पाठ करने का माहात्म्य।

संख्या २४ बी. अहोर्वा अष्टक, रचयिता—बालदास बाबा (जयनगरा, रायबरेली), पत्र—७, आकार—५½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४१, रूप—नवीन, रचनाकाल—स० १८८६ = १८२९ ई०, लिपिकाल—स० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे प्राण पाडेय, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली।

आदि—जै २ जग तारणि संत उवारणि राक्षस मारणि तारणि है। जे २ मधु खंडनि दुष्टिनि। दंडनि मदर नन्दनि-तारणि है। जे २ जग पावनि शोक नसावनि, वेदन गावनि वेन सखा। जै २ मरु मारणि शंभु विहारणि-खप्पर धारनि रुपरेखा। जै २ अविनासिन मन्दिर वासिन वेद विलासिन खडग धरी। विन्ध्याचल धोखा तजि यह बेखा ग्राम अहोरवा वास करी। जै २ मधु मर्दनि दुष्टनि गर्दनि-नूरि विपर्दनि धूत भरी। जे २ अति भापणि त्रैगुण-रापणि-परलै शापनि पूरि करी। जै २ विश्वकरणी, संशय हरणी-वेदन वरणी तृषित हरी। जै २ कैलाशिनि विन्ध्य निवासिनि सब सुख राशिनि धीर धरी। विन्ध्याचल धोखा तजि यहि बेखा ग्राम अहोरवा पीर हरी।

यन्होना पश्चिमें भागे अर्द्धं क्रोशं विचारयत्। अहोरवा शक्ति स्थानं बालदास नमाम्यहम्।

विषय—अहोरवा देवी की प्रार्थना जो शुंभ निशुभ मधु कैटभ आदि दैत्यो का नाश करने वाली काली, पार्वती और विन्ध्यवासिनी देवी का अवतार बतलाई गई है।

संख्या २५. जानकी विजय, रचयिता—बलदेवदास (खटवार, जिला, बाँदा), पत्र—२४, आकार—८ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९१ = १८३४ ई०, लिपिकाल—स० १९३५ = १८७८ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा रामदास करौंधा, ग्राम—करौधा, डाकघर—शाहाबाद, जिला—हरदोई।

आदि—श्रीगणेशाय नम.॥ अथ श्री जानकी विजय लिख्यते दो०—श्रीवास्तव कायस्थ कुल दीन दयाल प्रवीन। तेहि सुत सत जन सहज रत नाम संकठा दीन॥ जिला फतेपुर परगना है कल्यानपुर नाम। तह दौलतपुर ग्राम यक तहां सो तिनकर धाम॥ श्रीगुरु छीतू दास पुनि भक्तराज गुन गेह। दीन सुमजुल मन्त्र तेहि उर उपज्यो सिय नेह॥ तेहि हित तेहि उपदेश सुनि तेहि सहाया पाय। तन्यो चहत भव सिन्धु जन विनु श्रम सिय गुन गाय॥ राजापुर श्री जमुन तट तासु निकट खटवार। तह लघु मति बल्देव जन कीन्ह ग्रन्थ अवतार॥ जानै कौन कवित्त गति सिय गुन गावन साधु॥ साधन सुनहहि साधु जन छमि अपराज अगाधु॥ भक्तन नित नित सुनत सिय प्रेम मुदित चित लाय।

जिमि बालक तोतर वचन जननि सुनै सुख पाय ॥ ग्रन्थ जानकी विजय वर पढ़हि सुनहिं जन जोन ॥ विजय विवेक विभूति गति अवशि लहैंगे तौन ॥

अंत—कवित्त—पूरन पवित्र औ विचित्र हैं चरित्र यामें ॥ माया का प्रभाव आदि मध्य अवसान है ॥ जासु के पढ़े ते औ सुने गुने ते भारी। मोह मिलत अथ धर्म काम निर्वान हैं ॥ मुशी सकटा प्रसाद चह्यो है सप्रेम जय, दास बल्देव तब कीन्हों गुन गान है ॥ जानुकी विजय है नाम परमपुनीत ग्रन्थ, सीता के उपासक को गीता के समान है ॥ इति श्री अद्भुत रामायण मते श्री जानकी विजय ग्रन्थ बल्देव कृत सपूर्ण समास सवत् १९३०

विषय—श्री जानकी जी का विजय वर्णन।

निर्माणकाल सवत शशि निधि सिद्धि शशि आश्विन सित शनिवार। पूरन कवि बल्देव करि सीय सुयस विस्तार ॥

सख्या २६ भागवत एकादश स्कध, रचयिता—बालकृष्ण, पत्र—१६८, आकार—१०×६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६९६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८०४ = १७४७ ई०, लिपिकाल—स १८८० = १८२३ ई०। प्राप्तिस्थान—बनवारी दास पुजारी, यमन थोक मदिर, ग्राम—समाई, डाकघर—इतमादपूर, जिला—आगरा।

आदि—ॐ श्री राधाय कृष्णाय नम ॐ श्री परम गुरुभ्यो नम । ॐ नमो भगवते वासुदेवायनम । सोरठा। वदौं श्री रघुवीर कृपा सिधु सतत सुखद। प्रणत पाल रणधीर दुख हरण दासि प्रदमन।—दोहा—हरण मोह तम द्वद सब, श्री गुरपद करि ध्यान। कृष्ण कथा वरणे विमल, अघहर कर कल्यान। सोरठा। मैं मतिमद मलीन पूर कपट पकज परसि करि। सरस कृपा जगजानी देव गिरा समझ नहीं। भाषा ही सुख मानि। रमा रमन विधि सों कहि। तिन्ह नारद को दीन्ह। व्यास मुनि तिनप सकल शुक तिनपे पढि लीन्ह। कृष्ण कथा कलिमल हरनि। ऋषि विसद सुख भूरि। कृष्णकृपा जेनर सुनहिं तिन कहभय रजदूरि। ऐसे कृष्णकृपाल प्रभु, सब घट पूरण काम सोइ मम श्री गुर मैं प्रगट बालकृष्ण अस नाम। श्री गुर बालकृष्ण मम स्वामी किंकर कृपा तासु अनुगामी।

अत—वरष अठारह सौ पुनि चारी। सरद शुक्ल सब कहँ सुपकारी। तथि पुनि लग्न वार भल योगा। ता दिन कथा कीन उपजोगा। जो कोउ सुन कहै मन लाई। कृष्णचंद्र तेहि सदा सहाई। सुनै सुनावे पुनि कहै कृष्ण कथा सुपकद। उपजे भक्ति अनन्य तेहि मिट जगत दुख द्वद। ध्यान योग तपदान, मख पूजा अरु व्रत नेम। सकल सिद्धि फल होइ तेहि कृष्ण कथा जेहि प्रेम। इति श्री भागवत महापुराणे एकादश स्कधे श्रीशुक परीक्षित सवाद भाषाया श्री भगवान स्वधाम गवनो नाम एक त्रिंसोध्याय॥३१॥ शुभमस्तु श्री रस्तु सवत १८८० कातिक मास शुक्ल पक्षे तिथौ सत्तमी सनिवारे मथुरा मध्ये यमुना तटे लिखित लालदास।

विषय—भागवत एकादश स्कध का भाषानुवाद।

टिप्पणी—ग्रथ के रचयिता का नाम भी सदिग्ध है। एक स्थान पर वह स्पष्ट 'बालकृष्ण अपना नाम बतलाता है और दूसरे स्थान पर यही नाम अपने गुरु का लिखता

है। और वही अपने नाम का संकेत 'किंकरकृपा' करता है। इससे यह ठीक समझ मे नही आता कि उसका नाम वास्तव में क्या था। ग्रंथ की रचना साधारण श्रेणी की है।

संख्या २७. बारहमासा, रचयिता—बालमुकुंद, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२६ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० शिव-राम वैद्य, ग्राम—बिजौलिया, डाकघर—नौखेड़ा, जिला—एटा।

प्रारम्भः—श्री गणेशाय नमः। अथ बाल मुकुंद कृत बारहमासा लिख्यते॥ शुरू आषाढ़ ऐ प्यारे। छवै बंगले जगत सारे। भरे आकाश घन कारे॥ अजहूं आया न निर्मोही। मिलावै मेरे दिलबर से है ऐसा जक्त में कोई॥ १॥ हुआ सावन शुरू जब से जले दूना जिगर तब से न पाया वो किसी ढब से। वयस योंही सभी खोई॥ मिलावे मेरे दिलबर से है ऐसा जक्त में कोई॥ २। ये भादों ने दिखाया खो। करैं विरहन से दादुर जंग। जो होती प्राणपीतम संग। न डर पाता मुझे कोई। मिलावे मेरे दिलबर से है ऐसा जक्त में कोई॥ ३॥ महीना क्वार का आया। पिया ने नेह बिसराया। करैं अब सौत मन भाया जलन तो है मुझे सोई॥ मिलावे मेरे दिलबर से ऐसा जक्त में कोई॥ ४॥ महीना कातिक के आली। पुजै घर घर में दीवाली। हमैं यह रितु गई खाली। यों ही बर-सात भर रोई॥ मिलावै मेरे दिलबर से है ऐसा जक्त में कोई॥ ५॥

अंत—महीना पूष ओ साजन। बहुत ढूंढ़ा मैं बन जोगन। न पाया पर तेरा दर्शन। मिलो अभिलाष है योई॥ मिलावे मेरे दिलबर से है ऐसा जक्त में कोई॥ ७॥ आय माह ने घेरा। न प्रीतम का हुआ फेरा। लिया तरसाय बहुतेरा। दिखा अब आय मुख लोई॥ मिलावै मेरे दिलबर से है ऐसा जक्त मे कोई॥ ८॥ मस्त फागुन महीना है। ध्यान तै कुछ न कीना है। उन्ही का सत्य जीना है जो सोवै मिल जने दोई॥ मिलावे मेरे दिलबर से है ऐसा जक्त में कोई। ९॥ चैत चिंता हुई भारी। न आया प्राण आधारी॥ रही रोती विरह मारी। कवन अघ दुख अस होई॥ मिलावै मेरे दिलबर से है ऐसा जक्त में कोई॥ १०॥ लगा वैसाख ऐ प्यारे। विरह लूने जिगर जारे। खबर ले प्राण आधारे। प्रीत क्यो चित्त से धोई। मिलावै मेरे दिलबर से है ऐसा जक्त में कोई। ११। जेठ में मिल गया दिलदार। सलूनो पायता उजियार। सजन सग सब करूं त्योहार। कथन नहिं बाल की नोई। मिलावे मेरे दिलबर से है ऐसा जक्त मे कोई। १२॥ इति श्री बारहमासा बाल-मुकुन्द कृत सपूर्ण समाप्तः लिखा राम दीन पाठक, माधौ गज निवासी जेठ बदी तेरस संवत् १९२६ वि० राम राम राम

विषय—विरहनी ने अपनी दशा ११ महीनो की वर्णन की है बारहवे मास में उसका पति मिला जिससे विरहाग्नि शांति हो गई।

संख्या २८. निघंट भाषा, रचयिता—बालमुकुंद ब्राह्मण (जगनेर), कागज—बाँसी, पत्र—६८, आकार—७ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१४२, खंडित। रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ललिताप्रसाद दीछित, स्थान—जगनेर, तह०—खेरागढ़, डाकघर—जगनेर, जिला—आगरा।

आदि—श्री राम जी ॥ श्री राम जी सहाय ॥ श्री गणेशाय नम ॥ निघंट भापा ॥ प्रथम हाड के नाम शिवा और हत की । और पथ्या ॥ चैन की ॥ विजया ॥ और गया ॥ धूमस्यो ॥ प्रथमा अमोघ ॥ कायस्था ॥ प्राणदा ॥ अमृता ॥ जावे नीधा ॥ हेम ॥ पूतनीया ॥ चनता ॥ लमया ॥ जवस्था ॥ नदिनी ॥ प्रेयसी ॥ रोगेणो यह इक्कीस नाम हड़ के हैं ॥ हड़ के गुण ॥ हरड़ में गुण ॥ है मीठी कसेला खट्टा कडुआ वेल सूखी है और गरम हैं दीपनी है बुद्धी को बढ़ाने वाली हैं और पचने के समय मीठी है रस भरी हैं बुद्धि की दाता है और शकरी को बढ़ाती है बल को बढ़ाती है हलकी है और दभी खासी को दूर करे हैं । कवज और विषम ज्वर गोला वेषेट आफरे को ओर फोड़े छिदि हिचकी और खाज होता वाम कवल वाय मूल ताप तिल्ली मीठे खटे स्वाद से वाय को हरती है और चरो के स्वास सो पित को हरती हैं कड़वे आर वेज सो कफ को हरती हैं ।

अत—अथ मध नाम ॥ वक सवनि हुणे स्वरन नतला गुण ठंडा है काविज है कफ को पित को हरे हैं । हलकी है पची में मीठे है खुराक है और हरेण भी उसी के समान है ॥ कलावज सोठ ॥ वलाम खडिक लिपुट तुप्रवडिक गुण ॥ वण्णम के कफ पित को हरता है । काविज है ठंडा है खुश्क है पित को लोई कफ को हरे हें हल्का है उसेला है बादी हैं । पुरुस्व को दूर करता है । प्रथम पडरा ॥ गुण ॥ मीठी पचने में काविज ठंडी है कफ पिति को तीन रग अच्छा कर हैं ।

विषय—निघण्टु वैधक का वर शास्त्र है जिसमें सब खाद्य तथा दवाइयो के नाम वा गुण वर्णन हैं । १ पार्धो तथा दवाइयों के नाम गुण । २ काष्ठादिक दवाओं के नाम गुण । ३ सब खाद्य फलों के नाम तथा गुण । ४ साग तरकारियों के नाम गुण । ५ भिन्न २ प्रकार के जामों के नाम तथा गुण । ६ सब प्रकार के दूधों का गुण । ७ घृतो तथा तेलों के नाम तथा गुण । ८ सब प्रकार के तथा दाल आदि के नाम व गुण ।

टिप्पणी—संस्कृत के प्रसिद्ध मदन पाल के मदन विनोद निघण्टु का यह पद्यानुवाद बालमुकुन्द जगनेर वाले ने किया है ।

संख्या २९ ए अंजन निदान, रचयिता—वंशीधर ब्राह्मण (आगरा), पत्र—६०, आकार—६ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८५६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं १९३१ = १८७४ ई०, लिपिकाल—सं० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—वेनीदीन तिवारी, ग्राम—माधौंपुर, डाकघर—बिलराम, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनम अथ अंजन निदान अथ भाषा लिख्यते ॥ जिन वैद्यो के नेत्र अज्ञान रूपी अंधकार से घिर हैं ॥ इसलिये ग्रन्थकर्ता अग्निवेश बहुत सूक्ष्म अंजन नाम ग्रथ को करता है । वात पित्त अर कफ रूपी दोषों का कोप रोग का कारण होता है ॥ और तीनों के कोप का कारण काल द्रव्य और क्रिया तीनों की भिन्न भिन्न न्यूनता अभाव अधिकाई है । कटु वस्तु चिरपरी वस्तु के सेवन से वायु कुपित होता है । कसैली वस्तु के सेवन से बादल के होने से चोट लगने से श्रम से और मल मूत्र के अवरोध से

वायु कुपित होता है। वासी अन्न खाने से भय से उपास करने से जागने से शोक करने से तैरने से वायु कुपित होता है ॥

अत—वैद्यक के जो वडे वडे ग्रन्थ हैं वे न पढ़ने पडे इस हठ से वैद्यों के विनोद के लिए ग्र थकर्त्ता अग्निवेप ने अति लघु अजन निदान यह ग्र ंथ वनाया है जिसमें मुख्य श्लोक १००८ विस्तार के भय से रखे हैं। आगरे में रह कर वंशीधर पंडित ने संवत् १९३१ के भीतर अंजन निदान ग्रथ का उल्था सव लोगों के अर्थ ज्ञान के लिये देशी बोल चाल में किया है। इसको पढ़ कर वैद्य लोग देशी इलाज करने में अति प्रसन्न होंगे। इति अजन निदान ग्रंथ समाप्तः लिखा रामसेवक शुक्ल संवत् १९३४ वि०।

विपय—वैद्यक।

संख्या २९ बी. अजननिदान, रचयिता—वंशीधर (आगरा), कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८४०, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, लिपिकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान - ठा० पीतमसिंह, ग्राम—वेहनाका नगरा, डाकघर—अलीगंज, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ अंजननिदान भापाग्रन्थ लिख्यते ॥ जिन वैद्यो के नेत्र अज्ञानरूपी अंधकार से घिरे है इस कारण ग्रन्थकर्ता अग्निवेश वहुत सूक्ष्म अंजन नाम ग्रन्थ को करता है। वात पित, अरु कफ रूपी दोपो को कोप रोग का कारण होता है। और तीनो के कोप का कारण काल द्रव्य और क्रिया तीनों की भिन्न २ न्यूनता अभाव अधिकाइ है।

अंत—विनोद के लिये ग्रन्थकर्ता अग्निवेश ने अति लघु अजन निदान यह ग्रन्थ वनाया है जिसमें मुख्य श्लोक १००८ विस्तार के भय से रखे है आगरे में रहकर वंशीधर पंडित ने संवत १९३१ के भीतर अजन निदान ग्रन्थ का उल्था सव लोगों के अर्थ ज्ञान के लिये देसी वोल चाल में किया है। इसको पढ़ कर वैद्य लोग देशी इलाज करने में अति प्रसन्न होगे। इति अजन निदान ग्रन्थ संपूर्ण समाप्तः लिखा गंगा राम वैद्य स्वपठनार्थ मार्ग शीर्ष संवत् १९३२ वि० तृतीया कृष्णपक्ष ॥

विपय—वैद्यक।

संख्या २९ सी. अंजन निदान, रचयिता—वंशीधर (आगरा), कागज—देशी, पत्र—६४, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९०७, रूप—फटी, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३१ = १८७४ ई०, लिपिकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवशर्मा वैद्य, ग्राम—वासुपुर, डाकघर—फरौली, जिला—एटा।

आदि-अंत—२९ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है:—इति अंजन निदान ग्रंथ संपूर्ण समाप्तः लिखा देवी लाल पडित वैद्य स्वपठनार्थ संवत् १९३६ वि० ॥ फरौली निवासी जाति के चौबे माथुर ॥

सख्या २६ डी अजन निदान, रचयिता—यशोधर ब्राह्मण (आगरा), कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्) १९२९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३१ = १८७४ ई०, लिपिकाल—स० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० मानसिंह, ग्राम—पाली, डाकघर—पाली, जिला—हरदोई ।

आदि-अत-२९ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है —इति अजन निदान ग्रथ समाप्त लिखा रामसेवक शुक्ल सवत् १९३४ वि० ।

सख्या २९ ई भारतवर्ष का इतिहास, रचयिता—यशोधर, कागज—देशी, पत्र—१२०, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४ परिमाण (अनुष्टुप्)—१६२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०९ = १८५२ ई०, लिपिकाल—स० १९११ = १८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० हरिहर सिंह, स्थान—एटा, डाकघर—एटा जिला—एटा ।

आदि—श्रीगणेशाय नम अथ भरत खड का इतिहास लिख्यते । पुराने इतिहासों के ठीक न मिलने के कारण निश्चय नहीं होता है कि आदि में कौन से लोग भरत खड के निवासी थे । परन्तु इसमें भी कुछ सदेह नहीं है कि प्राचीन काल से हिन्दू जाति के लोग बसे हैं और उन्हीं के नाम से भरत खड का दूसरा नाम हिन्दुस्थान भी ठहरा है । कभी ये लोग मिसर देश से आये होंगे और मुख्य निवासियों में से जो शेष रह गये उन सबने पहाड़ और जगल में जाकर निवास किया फिर पच्छिम से वेद पढ़े हुए लोगों ने भरत खड में आकर जो लोग पहिले से इस देश में बसते थे उनको आधीन कर लिया । भरत खड में चारों वर्ण पहिले इतने विस्तार के बीच में न बसते थे जितने में अब बसते हैं वरन उस समय में उनके निवास करने का केवल एक छोटा सा देश था ।

अत—कौंसिल के अधिकारी साहिब हिन्दुस्तान के बड़ी पदवी वाले साहिबों से चुने जाते हैं और माली और मुल्की कामों में विलायत से बड़े घराने के और विद्यावान नौ योवन साहिब आन कर नियत होते हैं और वे क्रम क्रम से बड़े बड़े अधिकारों पर पहुचते हैं और यही रीति सेना वाले साहिबों में भी जारी है और बगाला और मद्रास और बम्बई इन तीनों प्रेसीडेन्सियों अर्थात् हातों में न्यारी न्यारी फौज नियत है उनमें कुछ फरगस्तानी और बहुत से हिन्दुस्तानी हैं । परन्तु हिन्दुस्थानी सिपाही के भी सर्दार अंग्रेज हैं और हिन्दुस्तान में सारी फौज लगभग दो लाख आदमियों के होगी । इति श्री भारतवर्ष का इतिहास सपूर्णम् लिखा छेदीलाल अवस्थी अपने पढने के लिये । सन् १८५४ ई० सवत् १९११ वि०

विषय—इस ग्रथ में भारतवर्ष का इतिहास सन् १८४७ ई० तक का है ।

सख्या २९ एफ भारतवर्ष का इतिहास, रचयिता—यशोधर, कागज—देशी, पत्र—१२० आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४ परिमाण (अनुष्टुप)—२१६०, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०९ = १८५२ ई०, लिपिकाल—स० १९१४=१८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामदयाल, ग्राम—राजनगर, डाकघर—नौखेड़ा, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ भारत वर्ष का इतिहास प० वशीधर कृत लिख्यते ॥ भरत खड के भूगोल का वर्णन ॥ भरत खंड के उत्तर में हिमालय पहाड है और पूरब में ब्रह्मपुत्र जिसकी दूसरी ओर ब्रह्मा देश है और आग्नेय और नैऋत्य और दक्षिण में समुद्र है इस देश की लम्बाई काश्मीर से कन्या कुमारी अंतरीप तक अर्थात् उत्तर और दक्षिण के बीच १९०० मील है और चौडाई अटक के दहाने से उन पहाड़ों तक जो ब्रह्मपुत्र के पूरब में है १५०० मील है। भरत खड के बीच में पूर्व से पश्चिम तक विन्ध्याचल पहाड है उससे भरत खंड के दो भाग हो गये हैं एक उत्तरा खंड दूसरा दक्षिण भरत खड है।

अत—वंगाला और मद्रास और वम्बई इन तीनों हातो में न्यारी न्यारी फौज नियत है। उसमें कुछ फरंगस्तानी और वहुत से हिन्दुस्तानी हैं। परन्तु हिन्दुस्तानी सिपाही के भी सर्दार अंग्रेज है और हिन्दुस्तान में सारी फौज लगभग दो लाख आदमियो के होगी लिखा चैन सुख विद्यार्थी दर्जा ४ मदरसा सोरों जिला एटा चेत्र सुदी दशमी संवत् १९१४ वि०

विषय—भारतवर्ष का इतिहास

संख्या २९ जी. भाषाचद्रोद्रय, रचयिता—वशीधर, कागज—देशी, पत्र—७२, आकार—८ X ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६९०, लिपि—नागरी। रचनाकाल—स० १९११ = १८५४ ई०, लिपिकाल—सं० १९११ = १८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामभरोसे, ग्राम—देवकली, डाकघर—मारहटा, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ भाषा चन्द्रोदय लिख्यते ॥ हिन्दी भाषा का व्याकरण—व्याकरण विद्या से लोगों को शुद्ध और अशुद्ध शव्द की विवेचना और शव्दों की योजना का ज्ञान होता है ॥ शव्द मात्र वर्णों से वनते हैं इसलिये पहिले शव्दो के मूल वर्णों का लिखना उचित है वर्ण अर्थात् अक्षर बुद्धिमानो के बनाये हुये सकेत हैं। वे देश भेद से नाना प्रकार के है उनमें से देव नागरी को वर्णमाला लिख्यते हैं ॥

अंत—दोहा—भाषा चन्द्रोदय भयो जग के वीच अनूप। ता प्रकाश सूझे परै छोटे मोटे रूप ॥ १ ॥ बिना पढ़े व्याकरण के हुओ चहै परवीन। पंडित मंडल बीच जा सो नर हो छबि छीन ॥ २ ॥ शाब्दिक के मुख बचन को कैसे कोउ डुलाय। जस दृढ़ जड तरुना हले पवन झकोरे पाय ॥ ३ ॥ यह मै निश्चय करि कहौ सुनौ जु तुम दै कर्ण। विद्या वारिध तरण को लखो नांव व्याकर्ण ॥ ४ ॥ तजि के सबही काम को धरु विद्या में ध्यान। विद्या ते नर जग लहै विषद कीर्तिधन मान ॥ ५ ॥ इति श्री भाषा चन्द्रोदय ग्रन्थ संपूर्ण समाप्त. लिखतं छेदीलाल विद्यार्थी दर्जा ४ पाठशाला कासगज जिला ऐटा ता० २२ फरवरी सन् १८५४ ई० ॥ राम राम ॥

विषय—हिन्दी व्याकरण।

संख्या २९ एच. सूर्यवशी राजा, रचयिता—वंशीधर, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०, रूप—

प्राचीन, लिपि—नागरी । रचनाकाल—सं० १९०७ = १८५० ई०, लिपिकाल—सं० १९११ = १८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामऔतार, ग्राम—नगला बीरसिंह, डाकघर—मारहटा, जिला—एटा ।

आदि—अथ सूय वशी राजाओं की नामावली लिख्यते ॥ सूय वशी राजा ॥

इक्ष्वाकु	दृढ़ाश्व	त्रिधन्वा	अशुमान
विकक्षी	हर्यश्व	त्रयारुण्य	दिलीप
पुरजय	निकुभ	त्रिशकु	भगीरथ
काकुस्थ	सकटाश्व	हरिश्चन्द्र	श्रु ग
अनेनास	प्रसेनजित	रोहिताश्व	नाभाग
पथु	युवनाश्व	हरिति	अबरीष
विश्व गश्व	मान्धाता	चुचु	सिन्धु द्विप
आद्र	पुरु कुत्स	विजय	अयु ताश्व
भाद्र आद्र	त्रिश दश्व	रुरुकु	ऋतुपर्ण
भुवनाश्व	अनारण्य	वृक	सब काम
श्रवस्थ	पृश दश्व	बाहु	सुदास
मह दश्व	हयश्व	सगर	कल्माष पाद
कुवलयाश्व	वसुमान	असमजस	असमक
अत —			हरि कवच
दशरथ	अहनिज	सुसधि	भानु रत्न
इलियथ	कुरु	आमष	सुप्रतीक
विश्वासह	परिपात्र	महाश्य	मरुदेव
खट्वाग	दल	बृहदवाल	सुनक्षत्र
दीघ बाहु	छल	बृहद शान	केशी नर
रघु	उकथ	उरू क्षेप	अतरीक्ष
अज	वज्रनाभि	वत्स	सुवण
दशरथ	शखनाभि	वत्स व्यूह	अमित्र जित
श्री राम	"युषिनाभि	प्रति व्योम	बृहद्राज
कुश	विश्वासह	देव कर	धम
अतिथि	हिरण्य नाभि	सहदेव	कृतजय
निषमध	पुष्प	बृहदश्व	रणजय
नल	ध्रुव सधि		सजय
नाभ	अपवग		शाक्य
पुडरीक	शीघ्र		क्रोध
क्षेम	मरु		दान
धन्वा	प्रशवश्रुत		अतुल

द्वारिका प्रसेनजित

क्षुद्रक

कुंदक

सुरथ

सुमित्र ॥

इति श्री सूर्य वंश के राजाओं की नामावली सपूर्ण समाप्तः संवत् १९११ वि०

विषय--केवल सूर्य वंश के राजाओ के नाम इक्ष्वाकु से लेकर श्री रामजी तक व कुश से लेकर सुमित्र तक ५७ राजा अर्थात् कुल १२० राजा लिखे हैं ॥

संख्या २६ आई. सूर्यवंशी, चंद्रवंशी राजाओ के नाम, रचयिता—यशीधर, पत्र—३, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, रूप--प्राचीन, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--लाला स्यामसुंदर पटवारी, ग्राम—सराय रहमत खाँ, डाकघर--विजयगढ, जिला--अलीगढ़ ।

आदि--श्री गणेशायनमः अथ सूर्यवशी चंद्रवशी राजाओं के नाम लिख्यते ॥ १ इक्ष्वाकु २ विकुक्षी ३ पुरजय ४ काकुस्थ ५ अनेनारा ६ प्रथु, ७ विश्वगश्व ८ आर्द्र ९ भार्द्र आर्द्र १० युव नाश्व ११ श्रवस्थ १२ बृहदश्व १३ कुवल याश्व १४ दढ़ाश्व १५ हर्यश्व १६ निकुंभ, १७ शकटाश्व १८ प्रसेन जित १९ युवनाश्व २० मान्धाता २१ पुरुकुत्स २२ त्रश दश्व २३ अनारन्य २४ पृप दश्व २५ हर्यश्व २६ वसुमान २७ त्रिधन्वा २८ त्रयारुण्य २९ त्रिशकु ३० हरिश्चन्द्र ३१ रोहिताश्व ३२ हारीति ३३ चुंचु ३४ विजय ३५ रुरुक ३६ वृक ३७ वातु ३८ सगर ३९ अस मजस ४० अंशुमान ४१ दिलीप ४२ भगीरथ ४३ श्रुत ४४ नाभाग ४५ अंबरीष ४६ सिंधु द्विप ४७ अयुताश्व ४८ रितुपर्ण ४९ सर्वकाम ५० सुदामा ५१ कल्माप पाद ५२ असमक ५३ हरिकवच ५४ दशरथ ५५ इलिव्रथ ५६ विश्वासह ५७ खट्वांग, ५८ दीर्घवाहु ५९ रघु ६० अज ६१ दशरथ ६२ श्री राम ६३ कुश ।

अंत—यदु का वश—यदु, कीप्टा, वजीन वान, स्वही, रूस दय, चित्रारथ, सर बिन्दु, प्रथु श्रवस, तमस उस नस, सितेयशु रुक्मा, कवलह, पारा वृत्त, जैमध, विदर्भ क्रथ कुति वृष्णि निरवृत्ति, दशार, विजामन् जीमूत, विकृति भीमरथ, नवरथ दशरथ, सुकुनि, कुसभ देव रथ देव क्षेत्र मधु अनवरथ कुरुवत्स अनुरथ पुरुहोत्र अंगस, सात्वत, भजमान विदूरथ, सुर ससन प्रति क्षेत्र स्वायंभुव हरि दोक देव मेधस, सुर वसु देव । श्री कृष्ण पाडु, कुल, शांतनु, विचित्रिवीर्य, पांडु, युधिष्ठिर परीक्षित, जन्मेजय, सतानीक, अश्वमेघ घात, उष्ण, चित्तारथ, धृतमान, निचत्र सुसेन सुनीथ, रिच, नृचक्षु सुखवत, पारि, प्लव, सुनय, मेधावी, नृपजय मृदु तिग्म, वृहद्रथ, वसुदान सतानीक, उद्यान अहीनर निर्मित्र । इति श्री सूर्यवंसीचद्रवंशी राजाओं की नामावली संपूर्ण समाप्तः ।

विषय—प्रथम सूर्यवंशी राजाओं के नाम जो इक्ष्वाकु से प्रारंभ होकर सुमित्रतक लिखे है चन्द्रवंशी राजा पुरुरवा से प्रारंभ होकर ययाति के दो पुत्र पुरु और यदु फिर पुरु का कुल जन्मेजय से प्रारम्भ होकर दुर्योधन तक और पांडु का कुल शांतनु से प्रारभ

होकर निमित्र तक और यदु का कुल यदु से प्रारम्भ होकर श्री कृष्ण तक सब राजाओं के नाम लिखे हैं ॥

संख्या २९ जे सूर्यवंशी और चंद्रवंशी राजा, रचयिता—वंशीधर, पत्र—१२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०७ = १८५० ई०, लिपिकाल—सं० १९१३ = १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला भोलानाथ हकीम, ग्राम—जगरावा, डाकघर—कादिरगंज, जिला—एटा।

आदि–अंत—२९ आइ के समान। पुष्पिका इस प्रकार है —

इति चंद्र वंशी राजा समाप्त ॥ इति श्री सूर्यवंशी राजा संपूर्ण समाप्त संवत् १९१३ वि० लिपत सालिग्राम-आगरा नाइ मंडी ॥

संख्या २९ के भोज प्रबंध, रचयिता—वंशीधर, कागज—विदेशी, पत्र—१२०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११५५, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचना काल—सं० १९०७ = १८५० ई०, लिपिकाल—सं० १९१२ = १८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रामसिंह, ग्राम—मझगवां, डाकघर—बेनीगंज, जिला—हरदोई।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ भाषा भोजप्रबन्ध लिख्यते—राजा विक्रमादित्य के वंश में एक राजा सिन्धुल हुआ उसके बुढ़ापे में भोज नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ जब वह पांच वर्ष का हुआ तब उसके बापने मरने के समय अपने मंत्री बुद्धि सागर को बुलाया और कहा कि जो मैं भोज को राजगद्दी देता हूं तो मेरा भाई मुंज जो बलवान है मेरे पुत्र को वृथा मार डालेगा और आप राज भोगेगा क्योंकि लोभ बुरी वस्तु है।

अंत—हरएक चौकीदार अपनी अपनी गली के ऐसे धनवान मूर्खों को लेकर दो घंटे निरंतर बराबर टहलाने में रखें और १२ दिन में हर रोज चार चार अक्षर सिखावैं ॥ और जो चौकीदार के कहने से न आवैं वे एक महान सर्कारी कैद में रहैं ॥ इस दंड के सुनते ही सब के कान खड़े हो गये और उन्होंने थोड़े ही दिनों में बारह खड़ी पूरी की। इस प्रकार राजा भोज और रानी लीलावती ने धीरे धीरे उज्जैन नगरी में विद्या का प्रचार किया और नाम पाया ॥ इति श्री भोजप्रबंध भाषा प० वंशीधर कृत संपूर्ण शुभ मस्तु लिखा ज्ञानी राम शुकुल स्वपन्नाथ संवत् १९१२ वि० श्री शंकराय नमः ॥

संख्या २९ एल भोज प्रबंध सार, रचयिता—वंशीधर, कागज—देशी, पत्र—१२०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—११००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी। रचनाकाल—सं० १९१४ = १८५७ ई०, लिपिकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० शिवमंगल सिंह, ग्राम—जयखेड़ा, डाकघर—ऊमरगढ़, जिला—एटा।

आदि—श्रीगणेशाय नमः अथ भोज प्रबंध सार प० वंशीधर कृत भाषानुवाद लिख्यते विक्रम के वंश में एक राजा सिन्धुल भया उसके बुढ़ापे में भोज एक पुत्र भया।

अंत—इस प्रकार राजा भोज और रानी लीलावती ने क्रम क्रम से उज्जैन नगरी में विद्या का प्रचार किया और नाम पाया ॥ इति श्री भोजप्रबन्ध सार का प्रथम खंड संपूर्ण समाप्त हुआ लिखा जैलाल वैश्य खजुहा निवासी संवत् १९२३ वि० ॥

विषय—राजा भोज के विद्या प्रचार का प्रबन्ध।

संख्या ३० ए. सत्यनारायण व्रत कथा, रचयिता—वासुदेव सनाढ्य (बाह, आगरा), पत्र—३२, आकार—१३ X ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८९६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८९९ = १८४२ ई०, लिपिकाल—स० १८९९=१८४२ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० नरोत्तामदास और लक्ष्मी नारायण वैद्य, ग्राम—बाह, डाकघर—बाह, जिला—आगरा।

आदि—श्रीमते रामानुजायनमः ऋषयः ऊचुः वृतेन तपसा किंवा वां छते फलम्। तत्सर्वम् श्रोतु मिच्छामि कथयस्वमहामुने। के ऋषि जे हैं ते नैमसारण्य के विषैं श्री सूत जी जो है तिनहि पूछत हैं कि हे महामुने हे सूत जी वृतेन वृत करिके वा तपसा तप करिकैं कि वाच्छत फलं कौन ऐसो मनोवाछित फल जो है ताहि प्राप्यते प्राप्त होतु हैं। तत्सर्वं तौन सब श्रोतुमिच्छामि हम सुनवे की इच्छा करत है। ताहि कथयस्व हमसों कहौ।

अंत—इद पठते नित्यं श्रुणो तिमुनि सत्तमः। तस्यन श्यन्ति पापानि सत्य देव प्रसादतः। हे मुनि सत्तमः हे श्रेष्ठ ऋषि मुनि हो यह जो पुरुष नित्यं नाम दिन दिन प्रति इदम् जह कथा जो है ताहि पठते पढ़े बांचै और श्रणोति भक्ति पूर्वक सुनै तो सत्य देव प्रसादत' सत्य देवनारायण के प्रसाद तें भक्त जन के पापानि सम्पूर्ण पाप जे हैं ते नश्यन्ति नास है जाइगे। १६। इति श्री स्कध पुराणे देवा खण्डे सूत ऋषि सम्वादे सत्यनारायण वृत्त कथाया सनाढ्य कुलोद्भव वासुदेव रामानुजदासेन् अन्वयार्थ प्रकाशिका विरचितियकायम् पचमोध्याय ॥ ४ ॥ मधुमास सिते पक्षे प्रतिपत्त चन्द्र वासरे नव नन्दाष्ट भू संवत लिखि पूर्णाकृतः इदंम् सवत् १८९९।

विषय—श्री सत्यनारायण कथा का व्रजभाषा मे शाब्दिक अर्थ

संख्या ३० बी. योगसारार्थ दीपिना (अध्यात्मगर्भसार स्तोत्र), रचयिता—वासुदेव सनाढ्य (बाह, आगरा), पत्र—२०, आकार—१३$\frac{3}{4}$ × ७ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९४ = १८३७ ई०, प्राप्तिस्थान—पडित लक्ष्मीनारायण जी वैद्य, स्थान—बाह, डाकघर—बाह, जिला—आगरा।

आदि—श्रीपद्म पुराणे उत्तर खंडे माघ महात्म्ये वशिष्ठ दिलीप सवादे एकोनविंशोध्यायः ॥ ९ ॥ देव द्युति स्तदारभ्य नारायण प्रभोभवत् ॥ सुमित्र ब्राह्मण के पुत्र देव द्युति जो है सो तदारभ्य ता दिन तें आरम्भ करिकै नारायण परः श्री मन्नारायण ही की भक्ति में तत्पर ऽ भवत् होत भये ॥ १ ॥

अंत—इति ते कथितं स्तोत्रं गुह्यंपाप प्रणाशनं ॥ अत उर्द्ध प्रवक्ष्यासि पिशाचस्य विमोक्षण ॥ इति जा प्रकार हे वेद निधि ते तुमसो पाप प्रणाशनं प्रकर्ष करिके पाप को नाश करिवे वाए गुह्य छिपाइवे को जोग्य स्तोत्र असो जो स्तोत्र सो कथितं कहियतु भयो अतः

उर्द्ध जा उपरान्त विशाचस्य पिशाचत्व को प्राप्त ने इ गधवनि की पाचो कन्या अरु मुनि को पुत्र तिनको विभीक्षण पिशाचत्व ते छुटियो ताहि प्रवक्ष्यामि प्रकष करिकें कहूगी ॥ ८०॥ इति श्री सनाढ्यन्वयेऽवतीण वासुदव रामानुज दासन कृत योग साराथ दीपिना समाप्त ॥ फाल्गुणे कृष्ण पक्षेणु सप्तम्या भृगुवासर ॥ वेदा काण्कु यपयु कृताथ दीप समाप्ता ॥ १ ॥ सवत् १८९४ ॥

विषय—अध्यात्म गभ सार स्तोत्र

सख्या ३० सी मुहूत सचय मुल्भार्थ प्रकाशिका टीका, रचयिता—वासुदव सनाढय (बाह, आगरा), पत्र—४९, आकार—१० X ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४७०, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० लक्ष्मीनारायण वैद्य, स्थान—बाह, डाकघर—बाह, जिला— आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ विवाह प्रकरणं व्याख्यायते ॥ तत्रऽनाश्रमी पुरप न तिष्ठेत इत्यादि वचनात् समावतनकर्मानतर सवा श्रमाण उपकार करवात् गृहस्थाश्रम एव मुख्य सच सुशील स्त्रिया धाधीन शार्ल तु सुलग्ना धान अत लग्न शुद्धि कथन प्रति जानीते भार्यात्रिवर्गेति शुभ शोल युक्ता मर्यादिक मे अनुकूल है शुभ शील स्वभाव जाको असी जो भार्या स्त्री तस्या ताको लग्न वरोन शुभ लग्न (मुहूत चिन्ता करने) ॥

अत—अथ ज्योतिर्निबधे ॥ क्षौर प्रवेशे प्रस्थान वनयेन्निशि सध्ययो ॥ सागनदर्शे पौर्णिमासे निशायाम् विकारयेत् ॥ ५ ॥ अरु ज्योतिर्निबधग्रथ के विषें कहत है प्रवेशे गृह प्रवेश के विषे प्रस्थान प्रस्थान यात्रा के विषें निशि रात्रि के विषें सध्ययो प्रात सध्या अरु साय सध्या इन दोऊ सध्या समय के विषें क्षौर बार वनवाइबो औ ६ सो वर्जयेत् वर्जित कहो है । अरु सागन काय के विषें मुद्दा के दाहिक के विषें दर्शे अमावसदिनु के विषें पौंणमासे पूर्नों के दिन विषे निशाया अपि राति हू के विषें क्षौर क्षौर कम जो है वारनि को बनवेयो ताहि करियत् करावै ॥

विषय—अनेक काय सबधी मुहूर्तों का वणन—(१) विवाह प्रकरण [पृ० १—३९ चतुथ प्र०] (२) दुरागमन प्रकरण [४०—४४ पचम प्रकरण] (३) वस्त्र भूषणादि धारण प्रकरण [४५—४७ षष्ट प्रकरण] (४) क्षौर कम के मुहूत वणन [४८—४९] शेष लुप्त ।

सख्या ३० डी, मुहूर्त सचय, रचयिता—वासुदेव सनाढय (बाह, आगरा), पत्र—६७, आकार—१० X ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८७६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान – प० लक्ष्मीनारायण वैद्य, स्थान—बाह डाकघर– बाह, जिला—आगरा ।

आदे—श्री मते रामानुजाय नम ॥ विष्वक्सेनं नमस्कृत्य हय ग्रीव तथैवच ॥ मुहूत सचयों टीका यथा मति करोम्यह ॥ १ ॥ क्षेमरायेण क्षेमराम जो है ग्रन्थकार ता करिकें मुहूत सचय मुहूतनि को जो सग्रह सो यथा क्रियेत यथा स्यात् जैसे है तथा तैसेई क्रियते करि यतु भयो किं कृत्य कहा करिकें श्री गणेश नमस्कृत्य श्री गणेश जी है तिनहि नमस्कार

करिकैं च पुनः कहे ओर ज्योतिः शास्त्र विलोक्य ज्योतिस शास्त्र जो है ताहि देख करिकैं ॥१॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशं नमस्कृत्य ज्योतिः शास्त्रं विलोक्यच । क्रियते क्षेम रामेण मुहूर्त संचयो यथा ॥ १ ॥ अथ तिथीशा. मु चि ॥ तिथि शावन्हि को गौरी गणेशोऽहि र्गु होरविः ॥ शिवो दुर्गति को विश्वे हरिः कामः शिवः शशी ॥ २ ॥

अंत—विचैत्रेति ॥ विचैत्र एक चेत को छोडिके व्रतमासा दौ यज्ञो पवीत करिवे कों जो न्म कहे जे माघ फाल्गुण वैशाख ज्येष्ट आदि शब्द करिकें तिथि वार नक्षत्र लग्न जे कहे इनके विषें इनके विषे की देश व्रतमासादौ कैसे हैं यज्ञोपवीतोक्त मासादिक विभौमास्ते नाही भयो हे मंगल को अस्ता जे के विषे विभूमिजे भौम वाररहिते मंगल को छोडिके और जे रहे सूर्यादिक वार तिनके विषें नृपाणां क्षत्रियाणा क्षत्री जे हैं तिनकों विवाहतः विवाह जेहि ताते प्राक् येह ले छरि का वंधनं छुरि काया आल्प शास्त्र विशेष जो हे छुरी ताको कण्यां कध्या कटि के विषे वंधनं वाधिवे जो हे सो शस्त शुभ हे ॥६३॥ इति श्री मुहूर्त सचये संस्कार प्रकरणे सनाढ्य कुलोद्भव श्री वासुदेव रामानुजदासेण विरचिता सुलभार्थ प्रकाशिका टीकायां तृतीय प्रकरणं ॥ ३ ॥

विषय—(१) शुभा शुभ योगादि वर्णन प्रथम प्रकरण १–१७ (२) गोचरादि प्रकरण द्वितीय प्रकरण १८–४६ (३) सस्कार प्रकरण तृतीय प्रकरण ४६–६७

सं० ३० ई. भगवद्गीता की टीका, रचयिता—वासुदेव सनाढ्य (वाह, आगरा), पत्र—२४, आकार—१२३/४ × ७ इंच, पंक्ति प्रति पृष्ट—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—९००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० लक्ष्मीनारायण वैद्य, स्थान—वाह, डाकघर—वाह, जिला—आगरा ।

आदि—श्री मते रामानुजाय नमः ॥ संचितं ये भगवतश्चरणारविंद वजां कुशध्वज सरोरुह लांछनाढ्य ॥ उत्तुंगरक्त विलसन्नख चक्रवाल ज्योत्स्ना भिराहतम्ह हृदयांश्च कार ॥ × × य ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुतः स्तुत्वति दिव्यैः सतवैर्वेद, सांग पदक्रमोपनिषदे गायपिय सामगाः ॥ ध्यानावस्थित तद्गते न मनसा पश्यतिय योगिनो यस्यांतं न विदुः सुरासुर गणा. देवाय तस्मै नमः ॥ १३ ॥ तस्मै देवाय नमः तौन जो देव है लक्ष्मीनारायण तिन कह नमस्कार है तस्मैं कस्मै तौन को नय नाम जिनीह ब्रह्मा वरुण इन्द्र रुद्र जो हे शिव मरुत. मरुद्गता देवता जे है दिव्यैः वेदै· दिव्य जे हैं मगल स्तोत्र तिन करिके स्तुत्वति स्तुति करै है अरु सामगाः सामवेद के गाइवे वारे जे है ते अंग पदक्रमेण सह अंग पद क्रम करिकै सहित जे उपनिषदै उपनिषद तिन करिके यं जिनहि गायति गा में हैं अरुध्यानावस्थित योगिनः ध्यान करिके स्थित जे जोगेश्वर ते तद्गते न मनसा श्री मन्नारायण ही के विषै प्राप्त जो मन ता करिके यं जिनहिं पश्यति देखे है अरु सुरा सुर गणाः सुरजे है देवता असुर जे है दैत्य तिनके जे गुण कहै समूह ते यस्य जिन श्री मन्नारायण को अंत । अंत जो है परिणाम ताहि न विदु· नही जाने है तस्मै देवाय ताने जे देव हैं तिनको नमस्कार है ॥ १३ ॥

अत हे पार्थ हे अर्जुन एषा आत्मज्ञान पूर्विका आत्मज्ञान पूर्वक ब्राह्मी ब्रह्म प्रदीपिका ब्रह्म का प्रकाशित करिबे वारी स्थिति ज्ञान नेष्ठा जामें एसी स्थितिर्नास्थिति जह जो स्थिति ज्ञान नेष्ठा ताहि प्राप्य प्राप्त हो करिकें पुमान् पुरुष जो है सो मुह्यतिपुन ससार नाप्नोति फेरि ससार जो है ताहि नहीं प्राप्त होत है अस्या निष्टाया जाहा नेष्ठा के विषें अत काले प्रयाण कालेपि देहावसान जाजाए के विषें स्थित्वा प्राप्त हो करिकें निर्वाण सुख रूप सुख हो के अनुरूप ब्रह्म स्वात्मा अपनो जो आत्मा ताहि ऋछीत प्राप्नोति प्राप्त होत है ॥ ७२ ॥ इति श्री भगवद्गीतायां श्री कृष्णार्जुन सवादे सांख्य योगो नाम द्वितीयोध्याय ॥ २ ॥

विषय—गीता के प्रारंभिक दो अध्यायों की व्याख्या ।

संख्या ३० एफ आलुमदार स्तोत्रस्य गूढ शब्द दीपिका, रचयिता—वासुदेव (बाह, आगरा), पत्र—२१, आकार—१२ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०९=१८५२ ई० प्राप्तिस्थान—पं० लक्ष्मीनारायण वैद्य, स्थान—बाह, डाकघर—बाह, जिला—आगरा ।

आदि—श्री मते रामानुजाय नम स्वाद यन्निह सर्वेषां त्रय्यर्थाथ सुदग्रह ॥ स्तोत्र यामास योगींद्र स्त वद यामुना ह्वयम् ॥ १ ॥ नमो नमो यामुनाय नमो नम ॥ नमो नमो यामुनाय यामुनाय नमो नम ॥ २ ॥ त यामुनाह्वय तोन जे यामुनाचार्य स्वामी जो हैं त तिनीह वद मैं दडवत करतु हों । तक ते कौन जो यामुनाचार्य स्वामी सुदुग्रह सुतरां अतिसय करिकें दुग्रह कठिन जो ग्रंथ त्राथ ऋग् यजु सामवेद को जो अर्थ ताहि इह जा लोक के विषे सर्वेषा चारौं वर्ण चारौ आश्रम मनुष्य स्वाद यन् स्वाद करवाइबे की इच्छा करत सते स्तोत्र यामास स्तोत्र रूप करि देत भये सो कैसे हैं यामुना चार्य स्वामी योगींद्र योगी जे सरणागत योगी तिनके विषैं इन्द्र कहैं श्रेष्ट जो हैं ॥ १ ॥

अत—यत्पादां भोरह ध्यान विध्वस्ता शेष कल्मष ॥ वस्तुता मुप यातो हे यामुनेयेनमामित ॥ ६९ ॥ जाके अव वस्तु ता उपयात वस्तु ता जो है अभयता भय करिकें रहित जो पद ताहि उपयात प्राप्त भयो जो अह मैं सो तं यामनेय तोन जे यामुनाचार्य तिनहि नमामि नमस्कार दडवत करतु हौं ॥ ६९ ॥ इति श्री आलुमदार स्तोत्र व्याख्यान सपूर्णम् ॥ सवत् १९०९ ॥ आलु मदार स्तोत्रस्य गूढ शब्दार्थ दीपिका रामानुजस्य दासेन वासुदेवेन कीर्तिता ॥ ७० ॥

विषय—आलुमदार स्तोत्र की टीका

संख्या ३० जी एकादशी महात्म्य, रचयिता—वासुदेव सनाढ्य (बाह, आगरा), पत्र—९२, आकार—१४ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४ परिमाण (अनुष्टुप्)—२५७६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० लक्ष्मीनारायण वैद्य, स्थान—बाह, डाकघर—बाह, जिला—आगरा ।

आदि श्री हय ग्रीवाय नम ॥ ॐ नम श्री परमात्मने पुराण पुरुषोत्तमाय ॥ सूत उवाच ॥ कदाचिदर्जुन श्री मान विष्णु भक्ति परायण ॥ भक्तिजिज्ञासया प्रछद्वासुदेव महा

मीत ।। सूत जो है सो नैमिषारण्य के विषे शौनकादिक ऋषि जे है तिन प्रति जह कथा वरनन करत है के ह शौनक सुनो कदाचित् एक समय के विषें विष्णु भक्ति परायण विष्णु की भक्ति में तत्पर श्रीमान अर्जुनः श्री शोभा करिकें शोभित ऐसे जो अर्जुन सो भक्ति जिज्ञासया भक्ति मार्ग के पूछवे की इच्छा करिके महामतिं वासुदेव वडी उदार हे बुद्धि जिनकी असे जो श्री कृष्ण तिनहि आप्रछत् नीकी प्रकार पूछत भये ॥ १ ॥

अंत—इष्ट्वा ऋतु शतैर्पुण्यं दत्वारत्नान्य नेकशः । तुलसी दलै स्तुतत्पुण्यं प्रापरी केशवार्चनात् ॥ ऋतु शतै इष्ट्वा सो यज्ञ करिके अरु अनेकशः रत्नानि दत्वा और अनेक रतन के दान करिके यत् पुण्यं जो कछु पुण्य प्राप्त हो तुम्हे तत पुण्यं तौन वह पुण्य तुलसी दलैस्तु तुलसी के दल जे हैं तिनहीं करिके केशवार्चनात् शालिग्राम के पूजन से प्राप्यते प्राप्त होतु हे ॥ ८१ ॥ इति श्री पद्म पुराणे श्रीकृष्णयुधिष्ठिर संवादे कीर्तिकस्य शुक्ले हरेः वोधनी एका दश्यायाः माहात्म्यं कथितम् ॥ २४ ॥

विषय—साल भर में पडनेवाली चौवीसो एकादशियो के उपवास का माहात्म्य और फलादि का वर्णन ।

संख्या ३० एच. रामाश्वमेध की टीका, रचयिता—वासुदेव सनाढ्य (वाह, आगरा), पत्र—९२, आकार—१४ × ६३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्) २७९०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं लक्ष्मीनारायण वैद्य, स्थान—बाह, डाकघर—वाह, जिला—आगरा ।

आदि—श्री मते रामानुजायनमः ॥ श्री मते हय ग्रीवाय नमः ॐ नमः ॥ श्री परमात्मने श्री रामचन्द्राय ॥ नारायण नमस्कृत्य नरं चेव नरोत्तमम् ॥ देवीं सरस्वती व्यास ॥ ततो जय मुदीरयेत् ।। १ ।। नरोत्तम नरनि के विषे उत्तम नर कहे नर ऐसे जो नारायणं कहैं श्री मन्नारायण तिनहि नमस्कृत्य नमस्कार करिके एव व्यास श्री वेदव्यास जे हैं तिनहि नमस्कृत्य नमस्कार करिके ततः ता उपरान्त. जय नाथा कथा जो है सो उदीरयेत् गाइये हे ॥ १ ॥

अत—सर्व शोभा समवितः संपूरण युद्ध करिवे की जे सामग्री तिनि करिकें सहित सीत मान वीर बुद्धिमान जो वीर शत्रुध्न सो उवाच वोलत भये हे. राम हे श्री रामचंद्र अनुज्ञया तुम्हारी आज्ञा करिके आयो ता मो कहँ हयस्य रक्षार्थ यज्ञ के घोडा की रक्षा करिवे के अर्थ आज्ञा पय आज्ञा देउ रघुनाथो पित्तच्छुत्वा भद्र भास्त्वतिचापब्रवीत् वाल स्त्रिय प्रमत्तं वामा हन्या शस्त्र वर्जितं ।। ५६ ।। तत् तस्य शत्रुध्न को जो कहिवो ताहि श्रुत्वा सुनिके रघुनाथोपि श्री रामचद्र जो है सोउ इति ।। शेष लुप्त ।।

विषय—श्री रामाश्वमेध की टीका ।

संख्या ३१ ए. लोलिमराज (वैद्यजीवन), रचयिता—बेणीप्रसाद त्रिपाठी 'बेन वैद्य', पत्र—६४, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८९९ = १८४२ ई०, लिपिकाल—

स० १९२२=१८६५ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० शिवपरशन सिंह, स्थान—रान शिवगढ़, डाकघर—अमेठी, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ लोलिम राज लिप्यते ॥ छप्पै ॥ दुरद वदन छवि रदन अद्भुत यक राजत। डिम डिम धुनि विविध भाँति डमरू धुनि बाजत ॥ पुरष पुरान पुरान वेद तुमको ठहरावत। याही ते जग सकल राउर गुन गावत ॥ हियकै प्रसन्न करिके किया मम हृदय धर कीजिये। तुव चरण कमल रति अति वढ़ै गणपति यह वर दीजिये ॥१॥ दोहा ॥ निसि बासर नर जो करे। श्री गणपति गुण गान। सुर भूप पुर नाग सुर। ताको करत विचार ॥ २ ॥ दंडक ॥ पच सम जाके बीन दंड वर मंडित है। अमल कमल जाको असन विराज मान। कुंद चन्द हूते महा धवल सिंगार जाको। सुभ्र वस्त्र आवत परम तेज पुंज वान ॥ वेधा विष्णु शंकरादि देव प्रनामस जाको। नित ही करत गुन आगम निगम गान। बानी जगरानी बुद्धि बल की निसानी येन सुभ सरसानी मोहि रक्षा करें सावधान ॥ ३ ॥

अंत—दंडक ॥ हिंग घृत युक्त सूल मूल को कदन कारी। चपल समधु पुरान रजर हरत है। भूपन समधु हरे स्वास रज सेवत ही लसुन स घृत वात सिगरो हरत है। होय जो त्रिदोष आदि अरु मधु सग दीने चतुर विचार अनोपान वितरतु है। त्रिफला सिला समत मेह रज दूरि करें मिरिच समूल सीत अति ही हरतु है ॥ समापो ॥ मोरण ॥ सोंठि ॥ ॥ पिपरी ॥ मिरच ॥ अवरहिर वहेरा नास ॥ ३६ ॥ सिलाजीत प्रमेह ॥ दोहा ॥ ज्वर मेचन पथ्यट कह्यो। ग्रहणी चम मिलाइ। सुवरन जल गुद रोग में। कहत वैद्य समुदाय ॥ ३७ ॥ राज सग चम रोग को। कुन्ज सग अतिसार। रक्त पित्त धूप दीजिये। अनोपान निरधार ॥ ३८ ॥ गुदज रोग पावक मिले। क्रमि क्रमि शत्रु बखानि। सुनु सुन्दर मुनि जन कहैं। अनोपान अनुमानि ॥ इति श्री मति त्रिपाठी वेणी प्रसाद विरचित वैद्य जीवन काव्ये इसा विधि नाम पचमो विलास ॥ ५ ॥

विषय—(१) पृ० १ से ३० तक—मंगला चरण। निदान तथा वैद्य की पहिचान। ज्वर की पहिचान तथा उसका उपचार। ज्वर भेद सन्निपात आदि की औषधियाँ। विष रोग संबंधी औषधियाँ। संग्रहणी आदि का उपचार (संग्रहणी प्रतिकार) प्रथम वा द्वितीय प्रकाश। (२) पृ० ३० से ४० तक—कास स्वास। नेत्र रोग। भग शूल। कमल रोग प्रदर तथा गर्भ हरणादि स्त्री रोग वर्णन-तृतीय प्रकाश ॥ (३) पृ० ४० से ५४ तक—चतुर्थ प्रकाश राज रोग। महाव्रण। प्रमेह हिम तृषा। त्रिदोष। अमल पित्त आदि। हिचकी। मूत्र कृच्छ (सवरोग प्रतीकार) (४) पृ० ५४ से ६४ तक—वीर्य वर्धक औषधियाँ। घु घची आदि सोधन संग्रहणी आदि चिकित्सा और रस विधि। पचम प्रकाश। ग्रन्थ निर्माण काल —सवत् रस रस वसु ससी। मारग पूरन मास। वैन वैद्य जीवन रच्यो। भाषा सुमति विलास ॥ ग्रन्थ लिपि काल —सवत् उनइस सै चाइस में। पूस मास सुक्ल पछ। तिथि आठें खीची लिख्यौ राम अधार सुभ अछ ॥

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रन्थ विविध छन्दों में स्त्री पुरुष सवाद के व्याज से लिखा गया है। इसकी रचना अच्छी है। वर्णनों को रोचक बनाने और पाठकों के चित्ताकर्षित करने के

लिये बहुधा अच्छे अच्छे उदाहरणो का प्रयोग किया गया है। ग्रन्थ के प्रायः अधिकांश वर्णन सरस है और उसमें उत्तमोत्तम औषधियाँ भी लिखी है॥

संख्या ३१ बी. लोलिमराज, रचयिता—वेनीप्रसाद (वेन वैद्य), पत्र—१६, आकार—१० × ६३/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९९ = १८४२ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० हीरालाल वैद्य, उपाध्याय, ग्राम—पचवान, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—३१ ए के समान।

अत—सुनु सुदर मुनि जन कहै अनो पान अनुमानि॥ संवत् रमरस वसु ससी मारग पूरन मास। वेन वैद्य जीवन रच्यौ भाषा सुमति विलास॥ इति श्रीमद् वेन वैद्य विरचिते वैद्य जीवन काव्ये रस विधि नाम पचमो विलास॥

विषय—(१) निदान सम्बन्धी विचार। ज्वर ज्वर भेद। विषैले रोग सम्बन्धी वर्णन—प्रथम प्रकाश। (२) सग्रहणी आदि रोगो का उपचारादि। द्वितीय प्रकाश॥ (३) नेत्र रोगादि वर्णन। तृतीय प्रकास। (४) प्रमेह। पिपासा। त्रिदोषादि सर्व रोग प्रती कार चतुर्थ प्रकाश॥ (५) पुष्टि सबधी औषधियाँ तथा रसो का कथन। ग्रन्थ निर्माण काल तथा ग्रन्थ समाप्ति॥ पंचम प्रकाश॥

संख्या ३२. छद शिरोमणि, रचयिता—भद्रनाथ दीक्षित (विल्हौर, कानपुर), कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—१० × ८ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८० = १८२३ ई०, लिपिकाल—सं० १८९० = १८३३ ई०, प्राप्तिस्थान ठा० गनेश सिह, ग्राम—आदमपुर, डाकघर—टाडियाव, जिला—हरदोई।

आदि—श्रीगणेशाय नमः—श्रीगणपति श्री शारदहि वन्दौ गुरु पद कंज। विघ्न हरण मगल करन हरण मोह तम पुज॥ जै जै पिंगल नाग जिन प्रगटो छन्द प्रकास। याहि मिले वाणी लहै वहु विधि विमल विलास। जद्यपि दृष्ट सपुष्ट मति जोरि कहै कछु छंद॥ पिगल पाठी बाल लौ हंसै ताहि कहि मंद॥ पुण्य पाठ श्रुति अंग है ज्ञान पदारथ खानि॥ दृग ज्योतिष मुख व्याकरण छद पाद पहिचान॥ भद्रनाथ यह आपने मन कीन्हो अनुमान॥ छन्द शिरोमणि नाम कहि करिये ग्रन्थ प्रधान॥ जद्यपि प्राकृति सस्कृत भाषाहू वहु ग्रन्थ। तदपि मतो लै ग्रन्थ को मै कीन्हो ऋजु पंथ॥ छद शिरोमणि प्रेम कै कंठ धरै जो कोइ। आदर पावै नृप सभा मूरप लौ कवि होइ॥ छंद सकल द्वै भांति के गद्य एक एक पद्य। कला रचित सो गद्य है वरण रचित सो पद्य॥ गद्य पद्य के भेद तहं तीनि भांति के जानु। इक सम दूजे अरध सम तीजे विषम प्रमानु॥ चारि चरण समकल वरण सो कहिये सम वृत्त। कोउ पद औरहि और कोउ कोउ विषम कहत उद्वत्त॥

अंत—रूप घनाक्षरी छंद—सोरह वरण पर विरति करिये जह लघु करि पदंत, सब वत्तिस वर्ण पग॥ और गुरु लघु को कछु नियम न मानिये, आनिये सुद्ध कल वरण सब चारि पग॥ होत सुकवि नाथ छंद रूपक घनाक्षरी, परम सुहायो मन भायो है प्रसिद्धि

जग सबै हरण सब महा मोद भरण यह छदन को आभरण कविन कीसो सुभग ॥ इति वृत्ति मे—गद्य पद्य रचना सकल कही स्वमति अनुसार। पिगल को मत देखिकै नाना छद विचार ॥ सज्जन पर कृत श्रवन लौ दपि स्वमति सुधारि ॥ दुजन हठि निदा करें विहसी वदन विदारि ॥ सवत् ठारह सै असो चैत्र शुक्ल छठि बुद्ध। मृग सिर की रजनीस सुभ भयो ग्रन्थ यह सुद्ध ॥ भद्रनाथ दीक्षित प्रगट वासी बल्हुर ग्राम। सुलभ ज्ञान प्रद कविन हित कियो ग्रन्थ सुख धाम ॥ छद सकल दुइसे अधिक तिरसठि जह निरधारि। कला वरण युत आभरण कान्हें ग्रन्थ विचारि ॥ इति श्री भद्रनाथ दीक्षित विरचिते छन्द शिरोमणौ वरण वृत वरणन तृतीयो प्रकास समाप्तयो य ग्रन्थ सुभ भूयात सवत् १८९० माघ सुदी ३ श्री कृष्णाय नम।

विषय—इस ग्रन्थ में छन्दों का भेदोपभेद वर्णन है ॥

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता प० भद्रनाथ दीक्षित जाति के ब्राह्मण, बिल्हौर जिला कानपुर निवासी थे। इनके भाइ रुद्रनाथ दीक्षित भी अच्छे कवि हो गये हैं। निर्माण काल संवत् १८८० लिपि काल सवत् १८६० वि० है। उपरोक्त लेख को इस प्रकार वर्णन किया है ॥ सवत् ठारह सै असी चैत शुक्ल छठि बुद्ध ॥ मृगसिर की रजनीस सुभ भयो ग्रन्थ यह सुद्ध ॥ भद्रनाथ दीक्षित प्रगट वासी बल्हुर ग्राम। सुलभ ज्ञान प्रद कविन हित कियो ग्रन्थ सुख धाम ॥

सख्या ३३ श्रावकाचार, रचयिता—भागचद्र, पत्र—४०२, आकार—१३ × ६½ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२३६, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९१२=१८५५ ई० प्राप्तिस्थान—लाला रिषभदास जैन, ग्राम—महोना, डाकघर—इटौजा, जिला—लखनऊ।

आदि-श्री वीतरागाय नमो नम ॥ अथ श्री श्रावकाचार भाग चन्द्र जी कृत वचनिका सहित लिप्यते ॥ दोहा सिद्धारथ प्रिय कारणी। नदन वीर जिनेश। शिव कर वदू अमित गीत। कर्त्ता वृष उपदेश ॥ १ ॥ पच परमेष्ठी की स्तुति ॥ गीता छन्द ॥ मनुज नाग सुरेन्द्र जाके उपरि छत्र त्रय धरे। कल्यान पचक मोद माला पाय भव भ्रम तम हरे ॥ दर्शन अनत अनत ज्ञान अनत सुख वीरज भरे। जय वत ते अर हत शिव तिय कत मो उर सचरे ॥ १ ॥ जिन परम ध्यान कृशानु थान सुतान तुरत जला दये। युत मान जन्म जरा मरण भय त्रिपुर फेर नहीं भये ॥ अविचल शिवालय धाम पायो स्वगुण तै न चलै कदा। ते सिद्ध प्रभु अविरुद्ध मेरे शुद्ध ज्ञान करो सदा ॥ २ ॥ जे पच विध आचार निमल पंच अग्नि सु साधते। पुनि द्वादशाग समुद्र अवगाहत सकल भ्रम बाधते ॥ वर सूरि सत महत विधि गण हरण को अति दक्ष हैं। ते मोक्ष लक्ष्मी देहु हमकौं जहाँ नाहिं विपक्ष हैं ॥ ३ ॥

अत—॥ का य ॥ यावत्तिष्ठति शासन जिन पते पापापहारोद्यत। यावद्धव सयते हिमेतर रविर्विश्व तम शावरम् ॥ यावद्धारयते महीध्र भर वर्चित वात त्रयी विष्टप। ता वच्छास्त्रमिद करोतु विदुषा मभ्यस्य मान मुदम् ॥ अथ—पाप के हरने में उद्यमी जो जिनराज का मत सो जहाँ ताइ तिष्ठै है अर जहाँ ताईं सूर्य रात्रि सबधी सकल अधकार

कौ हरै है वहुरि जहाँ ताईं पर्वत निकरि जडित जो लोक ताहि तीनौ वात वताप धारै है तहाँ ताईं यह श्रावकाचार शास्त्र अभ्यास किया संता ज्ञानी जीवन कौ आनंद करहु। ऐसे आचार्य ने आशीर्वाद दिया है॥ × × × भजूं देव सर्वज्ञ अज्ञ जन भ्रम तम नाशक। ध्याऊँ सिद्ध समूह ध्यान जिस स्वपर प्रकाशक॥ आचारज मुनि राज तने पद वारिज वदूं। उपाध्याय गुण गाय पाप तरु मूल निकदू॥ पुनि सर्व साधु यह लोक में तहे नित प्रति चितवन करू। यह मंगल उत्तम शरण लखि वार वार जिन चित धरु॥

× × × ×

इति श्री आचार्य अमितिगति कृत श्रावकाचार की वचनिका समाप्त भई।

विषय—(१) पृ० १ से २० तक—प्रथम परिच्छेद। मगला चरण। देव वंदना तथा ग्रन्थ प्रतिज्ञा। मनुष्य भव की प्रधानता और उसके कर्त्तव्य कर्म। (२) पृ० २५ से ४० तक—द्वितीय परिच्छेद। मिथ्यात्व तथा उसके सातो भेदों के स्वरूप मिथ्या दर्शन। मिथ्या ज्ञान वा मिथ्या चरित्र के छः प्रकार के अनाय तन। सम्यक्त होने का विशेष स्वरूप। (३) पृ० ४१ से ७५ तक—तृतीय परिच्छेद। सम्यग्दर्शन के विषय जीवादिक पदार्थों का वर्णन (सम्यग्दर्शन के विषय सप्त तत्व के अंक का निरूपण) (४) पृ० ७६ से १०९ तक—चतुर्थ परिच्छेद—अन्यमतावलंबियो के एकान्त पक्ष का निराकरण। (५) पृ० ११० से १४० तक—पंचम परिच्छेद। व्रतों का वर्णन मदिरा व मांस का त्याग। रात्रि भोजन का निषेध। (६) पृ० १४० से १५५ तक—प० प०—द्वादस अणु व्रत (जीव दया की प्रधानता हिंसा का निषेध तथा अन्य अणु व्रतों का वर्णन) (७) पृ० १५६ से १७८ तक—(स० प०) व्रतो की महिमा। सत्य अणु व्रत अतीचार। अन्य दिग्विरति आदि के अती चार। शल्यनि का निषेध निदानादि वर्णन। जीव कर्म का सबंध। एकादश प्रति मान का वर्णन। (८) पृ० १७९ से २२५ तक—(अ० प०) षट आवश्यको का वर्णन (९) पृ० २२६ से २५० तक—(न० प०) दान पूजा शील तथा उपवास इन चार धर्मो का वर्णन। (१०) पृ० २५१ से २७० तक—(द० प०) पात्र कुपात्र और अपात्र का वर्णन (११) पृ० २७१ से ३०५ तक—(ग्या० प०) दोनो का फल कथन। (१२) पृ० ३०५ से ३३० तक—(वा० प०) पूजा तथा शील का वर्णन। घूतादिक व्यसनो का निषेध। चार प्रकार के व्रतो का वर्णन। (१३) पृ० ३३१ से ३५५ तक—(ते० प०) महाव्रत भाव। तथा आत्मध्याय भावादि का वर्णन। (१४) पृ० ३५६ से ३८७ तक—(चौ० प०) द्वादश अनुप्रेक्षाओं का वर्णन (१५) पृ० ३८८ से ४०२ तक—(प० प०) ध्यान का सामान्य स्वरूप साध्य तथा साधनादि का वर्णन। टीकाकार का संक्षिप्त परिचयः—गोपाचल के निकट सिंधिया नृपति कटक वर। जैनी जन वहु वसैं जहाँ जिन भक्ति भार भर॥ तिनमें तेरह पथ गोष्ठि राजत विशिष्ट अति। पार्श्व नाथ जिन धाम रच्यो जिन सुभ उतग अति॥ तहाँ देश वचनिका मय भली भाग चंदा रचना करिय। जय वंत होउ सत संग यह जा प्रसाद वुधि विस्तरिय॥ × × × साधर्मिन की प्रेरणा वा जिन श्रुत अनुराग। उभय हेतु वस मै लिख्यो कि मापे अर्थहि त्याग॥

ग्रन्थ निर्माण काल —सवत सर उगणीस सौ द्वादशि ऊपरि धार। अष्टान्हिक असाढ़ की। पूण वचनिका सार ॥

टिप्पणी—प्रस्तुत टीका अमित गति रचित श्रावकाचार की है। टीकाकार भागचन्द्र जी ग्वालियर राज्य के अन्तगत ईसागढ़ के निवासी ओसवाल जैन हैं। इन्होंने प्रमाण परीक्षा नैमिनाथ पुराण तथा ज्ञान सूर्योदय नाटक नाम वाले कई ग्रन्थों की रचना की है। इन्होने टीका को यथाशक्ति उपादेय बनाने की चेष्टा की है। ज्ञात होता है, ये पद्य और गद्य दोनों ही में रचना करते थे और सस्कृत एवम् हिन्दी दोनों ही भाषाओं के पण्डित थे ॥

सख्या २४ ए गुरु गैबी ग्रथ, रचयिता—भगवान, पत्र—१०, आकार ८ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२५, रूप—नवीन लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री दुर्गादास साधु, ग्राम—हाजी गुज, डाकघर—नगराम पूरब, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गुरु कृपा कटाक्ष ते। निरखौं मम हिय प्रीति। सो विचारि धर बकसि दव। उपज उत्तम रीति ॥ क० ॥ मांगत हौं कर जोरि बहोरि करौ गुरदेव अजब जी दाया। तब सुधरें मम बात सबै बिगरे न बचो न कर न कर कछु माया ॥ भागि चले भ्रम भूल सब हिय होइ विशुद्ध अनूपम काया ॥ भगवान भने वर देव यहै सोइ रूप करा मैं निरतर ध्याया ॥ १ ॥ श्री गुरदेव अजब के अंश तुम्हें परसग करे श्रुतिगाया। ज्ञान गजानन से दरसे दृढ़ ध्यान मनो वृष केतु दिखाया ॥ तेज मनो शशि सूरज को तनि तूल मनोज नो मनो लजाया, भगवान भने वर दव यही सोइ रूप करों मैं निरतर ध्याया ॥

अत—श्री गुरु गैबी ग्रथ यह। पढ़ै जो मन चित लाय। तेहिका सर्व वस्तु की। तत्त्व पर दरशाय ॥ १ ॥ जे पर ससय हसते। जे निन्दा हैं ते काग। गान कर ते विमल विंदु। जे त्यागे ते नाग ॥ २ ॥ सुनि समुझैं ते विप्र वर। ना समझहिं ते जाग। जे ध्यावहि ते कल्पतरु। रहि बबूर के बाग ३ ॥ पढ़े पढ़ाव गुन कथ। तेहि होवैं अनुराग। छूटहि तेहिकर शीघ्र ही। सकल दोष दुष दाग ॥ ४ ॥ जे बूझें ते दुख लहैं। सुख से रहे विभाग। होय निरादर जक्त में। ज्यों द्विज बध अघ लाग ॥ ५ ॥ × × × इति ॥

विषय—हनुमान विनय।

सख्या २४ बी तमाचा, रचयिता—भगवान पत्र—१०, आकार—८ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२५, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री दुर्गादास साधु, ग्राम—हाजीगुज, डाकघर—नगराम पूरब, जिला—लखनऊ।

आदि—तन द्विवि दीर्घ से सुमेर ते विसाल अति। शीश आत उदित ऊँचाई आसमान के ॥ भुज बल प्रबल प्रचड काल दंड सम। अग सब वज्र अति जोर जगपान के ॥ लंगी लूम लफत हहा स होत तेहूं पर। तेहु पर दास भगवान लखि होत सक भानु क ॥ महाबीर बाके अति घोर हाके जाके कोइ। असुर न बाचे सो तमाचे हनुमान के ॥ १ ॥ धक लक करत कपीस केस अग पर। नख दत सत जैसे श्री नग हिमवान के ॥ पिंग पिंग

अत—हे राजा जो यह केशव जी ॥ अर अजुन का सवाद गोष्ट ॥ तिसको सुमर सुमर विचार विचार पम हप को प्रापति होता है ॥ अर जो अजुन को हरि जी विश्वरूप दिपाया हे ॥ तिस रूप कौं विचार विचार हे राजा जी हों घिसै भी होय जातों ॥ अर वार वार पम हप भी होता है । अर हे राजा जी मेरी निश्चे कर वात सुण ॥ जिस ओर जोगीस्वरों के ईश्वर श्री कृष्ण भगवान जो विराजमान हैं और जिस ओर गाडीव धनुस का धारणा हारा पारथ अर्जुन हे सो तिसी ओर श्री लक्ष्मी ह सो तिसी ओर जै है मेरे मत विपें यह यात निश्च कर है ॥ और यह वात तुम भी निश्चै कर जाणों ॥ जिन्के हस्त कमल माथे पर श्री कृष्ण भगवान जी पार ब्रह्म विराजमान हैं । ऐसे हैं जो यह भागी पाँडव तिनकी जै होवैगी पाडव जीतेंहगे ॥ अर तुम्हारे पुत्र अधरम हीते हारेंगे । सत्य रघुनाथ जी हैं । अर सत्य श्री कृष्ण भगवान् पारब्रह्म परमेश्वर जी हैं । इति श्री भगवत् गीता सूपणापत सु ब्रह्म विद्यायों जोग शास्त्रे ॥ श्री कृष्णाजुन सवादे सूक्ष्म योगोना अष्ट दशो ध्याय ॥ १८ ॥ इति श्री भगवत गीता सपून दसपत नदादास सवत् १९१३ ॥

विषय—गीता का अनुवाद ।

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रथ भगवत् गीता का भाषानुवाद है । इसका गद्य पुराने ढरे का है और उसमें कहीं कहीं इलोक" हेडिंग देकर कुछ दोहे भी लिखे गये हैं । ये टीकाकार के ही रचित अनुमान किये जाते हैं ॥ टीकाकार के नामादि का कुछ पता नहीं इसके प्रति लिपि कर्ता ने अपना नाम "नदीदास" बताया है और उसे सवत् १९१३ वि० में लिखा है ॥

सख्या ३६ ए कातिक माहात्म्य, रचयिता—भगवानदास निरजनी (वारलवेहट), पत्र—३६, आकार—१४½ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२६८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७४३ = १६८६ ई०, लिपि काल—स० १९२६ = १८६९ ई० प्राप्तिस्थान—पं० लखमीचद गौड़, ग्राम—चदवार, डाकघर—फिरोजाबाद जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नम । अथ कातिक महात्म्य लिख्यते । दोहा । प्रथमहिं गुरगोविन्द को, सुमिरन करों बनाई वागयंत गणपति सहित, कवि जन भला मनाय । प्रथम मगल चरनते सबको मगल जोइ । कहत सुनत सुख उपजै अर परमारथ होइ । यह कातिक महिमा विपुल, भक्ति धर्म परनाम । रामकृष्ण की सुरति सों प्रगट करौं तुम राम । सत्रह से सवत् सरिस, ब्यालीस पुनि नाम । पौष पक्ष्मी ती प्रापति सहित, आरभ करौं दिन जान । सतिभामा श्रीकृष्ण की नारद प्रभु सवाद । सूत सहित सब रिपिन मिलि, कहि सुनि पायो स्वाद । कहत सुनत सरधा वढ़ पद ढढ़ मन लाइ । असनान दान सो सुनियो, जब सागर तरि जाइ ।

अत— लघु बुद्धि के कारनें, भाषा करी सुअन । जाको कछु सूझे नहीं ताकों भाख्यौ नैन । भाषाकृत को नाम यह सबै कहैं भगवान । वराग वसन प्रगटाइ इष्ट निरजन जानि । तो बालक रोटी कहै माता रोटी देय । समझायो सोइ जानवी अथ समझि सुख लेय । सवत सत्रह सै प्रगट, तैतालीस पुनि और । फागुन कृष्ण अष्टमी बुधवार सिरमौर । वारल

वहट अस्थान है, सुभावि पुनुको वास । तहां ग्रथ पूरण भयौ, निर्मल धर्म विलास । सुनै सुनावै याहि जो, लहे प्रगट फलु होय । भक्ति मुक्ति निज जानीये ईश्वर कृपासु गोय । जामें कछु धोपो नहीं, सत्य वचन मो मानि । ईश्वर वामी वेद है, कयौ लागि भगवान । प्रान ग्रथसो मूल है सुन्यौ उनतीसै अध्याय । नामे ओर तिरानवे, भाषा रूपक गाय । इति श्री पद्म पुराने कार्तिक महात्मने पृथुनारद सवादे अति लिपी उपाख्या नो नाम नव विंशोध्याय २९ । पष्ट जुगल नव चद्र नित । विक्रम संवत मानि क्वार कृष्ण तिथि सप्तमी । शुभ गुरुवार वपानि । जैसी प्रति पाई हुती, तैसी लिखी सुवारि । जोरि पाणि विनती करैं । वैष्णव देवीदास । भूल चूक जो कछु परी, ताको लेउ सुधारि । मो से अधम गरीब को सज्जन लेउ उधारि । रवि तनया के तीर पर रहैं हैं चदवारि । वैष्णव देवीदास ने यह प्रति लिपि सुधारि । विप्रमथुरियन वोन में सदां हमारो वास । इनकी कृपा पाइके पुस्तक करी सुपास । इति श्री कार्तिक महात्म कथा सपूर्णम् मिती आश्विन कृष्ण ६ सवत १९२६ । लिखित वैष्णव देवीदास चदवार मध्ये शुभ ।

विषय—कार्तिक माहात्म्य वर्णन । मगलाचरण, सत्यभामा के पूर्व जन्म की कथा, सत्यभामा जन्मकर्म कार्तिक की एकादसी, पूजा विधि, व्रत—विधान व्रत नेम, तुलसी माहात्म्य, इन्द्र अमरपुरी त्याग, जालंधर उपाख्यान, रुद्र कैलाश आवागमन, देवदानव युद्ध, वृन्दा अनल प्रवेश, जालंधर कथा, तुलसी तथा आवले का माहात्म्य कलहा उपाख्यान, कलह मुक्ति वर्णन, विष्णुदास भक्ति वर्णन, विष्णुदा चौला राज वैकुंठ सिधारना, जय विजय मोक्ष वर्णन, सुरा गायत्री कृष्णवेना, नदी वर्णन, पाप पुण्य वर्णन, देव वृक्ष वर्णन, उलिपिमी उपाख्यान ।

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रंथ भगवानदास निरजनी ने संवत् १७४२ में आरंभ करके १७४३ में पूर्ण किया है ।

संख्या ३६ वी. कार्तिक महात्म्य, रचयिता—भगवानदास निरजनी (वरहल, वैहटा), पत्र—६३, आकार—१०३/४ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११५२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७४३ = १६८६ ई०, लिपिकाल—स० १९०६ = १८४९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० प्यारेलाल शर्मा, ग्राम—वसई मुहम्मद पुर, डाकघर—वसई मुहम्मदपुर, जिला—आगरा ।

आदि–अंत—३६ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है :—

इति श्री पद्मपुराणे कार्तिक माहात्मे प्रथु नारद सवादे अलिपिमी उपख्यानो नाम उनतिसमोध्याय । २९ ॥ सिति माघ वदी ७ भृगौ संवत् १९०६ सम्पूर्ण

विषय–प्रथम अध्याय—मंगला चरण ग्रन्थ निर्माण काल (दे० प्रारम्भिक नमूनां) । सतभामा पूर्व जन्म निरुपण (पत्रा ३ तक)

द्वितीय अध्याय	—सतिभामा जन्म वर्णन	प० ६ तक
तृतीय ,,	—एकादशी कार्तिक वर्णन	,, ७ ,,
चतुर्थ ,,	—प्रभु का जन्म कर्म	,, ९ ,,
पचम ,,	—पूजा विधि	,, १२ ,,

संख्या ३६ सी कार्तिक महात्म्य, रचयिता—भगवानदास, कागज—बाँसी, पत्र—६०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८०, रूप—बहुत प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५२ = १६८५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री भगवती प्रसाद उपाध्याय, ग्राम—लरावली, डाकघर—ताजगंज, जिला—आगरा।

आदि अंत—३६ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है —इति श्री पद्म पुराणे कातिक महात्मे प्रथम नारद संवाद लक्ष्मी उपाख्यानो नाम नव विंशमोध्याय २९ ॥ तत्र वर्षे मास कृष्ण पक्षे तिथौ अष्टाम्या आठ बुधवासरे लिखी हरिदास ब्राह्मण भवानी प्रसाद पठनाथ पुजारी राधिकादास जी संवत् १९७३ शाके १७६८।

विषय—कार्तिक माहात्म्य।

संख्या ३६ डी अमृतधारा ग्रंथ, रचयिता—भगवान 'निरंजनी' कागज—बाँसी, पत्र—१४४, आकार—६ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—

११५२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२८=१६७१ ई०, प्राप्ति स्थान—श्री वासुदेव वैश्य हकीम, ग्राम—बसई, डाकघर—तातापुर, तह०—पैरागढ़ जिला—आगरा।

आदि—अथ अमृतधारा ग्रंथ लिषत ॥ दोहा ॥ मगल रूप सरूप मम, निजानंद पद आस। लह्यो मगला चरन यह सोह रूप प्रकास। कवित्त—जीव गीव रोक करों। अमी असी भाव भरों। अहपाप्य वास हरों। अमृत प्रमानिये ॥ मरन को भै नसावों। अव रूप रास पापा। वदि २ जो लषण। पों गुरू ग्यान जानियो ॥ मान तजि आन लेरे। तेरो ही सरूप हेरे। सबै अभेदान देरे। रेहे अभी पानिये ॥ भगवान मग्या मान। मो विना नहीं है आन। विपीय लिखै समान विद्वत वखानिये।

अंत—सत्रह से अट्ठाईसा, संवत मित्र्य सुजान। कातिक तृतीया प्रथमही, पूरन ग्रन्थ प्रमान। यान मुकाम प्रमान यह, क्षेत्र वास सुनान। तहा ग्रंथ पूरन प्रगट यों भाषै भगवान। अरथनाहि भरम कछु, असमानै भ्रम सोइ। सुध मांने सो पाढ़के, सो सुफल सिधि होइ। छन्द भंग अक्षर कटित, अरथ निरखने होइ दुषन को भूषन करे, कोविद कहिये सोइ। अहकार पुनि पढि के, देह सुधि करि नास। हेय भाव परभाव लहि, तिनको ज्ञान प्रकास। अंकु सपुत्रे जानि यह, सरव ग्रंथ कौ नाम। वाहुन प्रकुते अंक है, पाचौं मन्त परमान। इति श्री अमृतधारा ग्रंथ सकल विवेक ज्ञानी को स्वरूप वर्णनो नाम भगवानदास निरजनी कथिते चतुर्थो प्रभाव।

विषय—इस ग्रंथ में ज्ञान वैराग्य का विचार है। ज्ञान का अधिकारी वर्णन, जिते-मान को भेद, विवेक वर्णन, अनवरध वर्णन, पट्प्रकार श्रवन वर्णन, लिंग देह, पट्विधि श्रवन, तत्पद वाचि लक्षि के नौ नाम, तत्पद निरूपण, तत्वज्ञान तथा अवस्था भेद, ज्ञान अज्ञान की भूमिका, वासनाओं का वर्णन अष्टांग योग, योग, जीवन मुक्ति, और विवेक तथा ज्ञानी का स्वरूप वर्णन।

टिप्पणी—अपना परिचय कवि ने विशेष नहीं दिया केवल गुरु का नाम अर्जुन बतलाया है, जैसा कि निम्नांकित दोहे से प्रकट है—दोहा—अमृतधारा ग्रंथ यह, कह्यो वेद परमान। अरजुनदास प्रकास युत, तत सेवक भगवान। साधु सग परताप ते, श्री गुरू ज्ञान प्रकास। सुध निरजन ग्यान यह, कीनो वचन विलास।

संख्या ३७ ए. शीघ्र बोध सटीक, रचयिता—भगवानदास (बाह आगरा), पत्र—२९, आकार—९ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८५=१८२८ ई०। प्राप्तिस्थान—प० लक्ष्मीनारायण जी वैद्य, ग्राम—बाह, डाकघर—बाह, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। श्री लक्ष्मी जी सहाइ ।। मास यंतं जगद्भाशा नत्वा धास्वत भव्यय ।। क्रियते काशि नाथेन शीघ्र बोधाय संग्रहः रोहिण्युत्तर रे वत्यो मूलं स्याति मृगो मघा ।। अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मगल प्रदा. ।। २ ।। इति विवाह नक्षत्राणि ।। माघे धनवती कन्या फाल्गुने शुभाग भवेत् ।। वेशाखेच तथा ज्येष्ठे यत्युरत्यत वल्लभा ।। ३ ।।

अत—कार्तिक की अमावस इतवार मगलवार सनीचर जो होइ आयुष्मान योग स्वाति नक्षत्र जो होइ तो राजा पशु की क्षय होइ इति दीपावली फल × × × अतीचारे गते साम क्रूर वक्रत्व गागने हाहाकार जगत्मेव रड मुडच जायन ॥ ७२ ॥ इति श्री काशीनाथ कृतौ सीघ बोध चतुर्थ प्रकरन सम्पूर्ण समाप्त सवत् १८८५ मिती इताय असाढ़ शुक्ल ११ भौमे लिखित मिश्र वाहि मध्ये भगवान दास श्रीराम श्री श्री ।

विषय—शीघ्र बोध की टीका ।

सख्या ३७ बी शीघ्रबोध की टीका, रचयिता—भगवानदास (वाह, आगरा), पत्र—१७, आकार—१०३/४ × ४३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप)—३५७, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० कैलाशपति जी हैनगुरिया पुरोहित, ग्राम—रिजौली, डाकघर—वाह, जिला—आगरा ।

आदि—[पृ० १ से ११ तक लुप्त] च द्वादशो च दिवाकरै विवाह तो धरो मृत्यु माप्नोतर ससय । ४३ । टीका । आठें होई चौथें होइ द्वादश कैप वारेंह होइ सूय होइ तों विवाह के विसें मैं मृत्यु जानियें मृत्यु प्राप्ति होइ जामें ससे नही × × × । ४३ जन्म कों होइ द्वितीये वा क ये दूसरे होय पच में कये पाचें हाइ सप्न में कैये सातें होय दिवानाथ कये नौंये सूय हाइ पूजादि के पाणि पीडन विवाह करें । ४४ । एकादश कपें ग्यारह तृतीये वाकयें तासर पष्टेवा कथै छठे दसमें विवाकै दसमें होइ जेवर कों शुभ कये जे विवाह क विसें दिन नायक सूर्य ह सों सुभह जानियें ।

अत—स्वाति विस और सतिभिषानि सैं वेध जानयें चित्रन सा ओक्ष पूर्वाभाद्र पदनि सें वेध जानियें जेजोनय हे सो यजनीक जानियें कोविद जो पडित हैं सो कहते हैं × × × । टीका । रविकप सूय को वेध लगे तो विधवा होइ । कुजरेयें मगल को वेध लगे तो कुल की क्षय होइ बुध कों वेध लगें तो वध्या होइ गुरकैयें बृहस्पति कों वेध लगें तो अवर्जा होइ । ७३ । मूल अपुत्र शुभ नधे च शौरें चाम्यी च दुषितो परपुरपर तारा ह । के तौ स्वक्षद चारिणी । ७४ ।

विषय—काशीनाथ रचित शीघ्रबोध की टीका ।

सख्या ३८ पाथी नासकेत, रचयिता—भगवती दास 'मिश्र', पत्र—५२, आकार—१० × ७३/४ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०५, रूप—प्राचीन, लिपि—फारसी, रचनाकाल—स० १६८८ = १६३१ ई०, लिपिकाल—स० १९१६ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबू शिवकुमार प्लीडर, स्थान—इस्लामपुर, डाकघर—इस्लामपुर, जिला—सारी ।

आदि—पाथी नास केत ॥ श्री गनेशायनम श्री गति पति है मति कर दाता । जेहि सुमर सत्र पाप निपाता ॥ एक दन्त करि शकर लीना । सतन सदा अभय पद दीना ॥ सुर नर मुनि गधव मनाव । निभर सुमिरत तोार पावै ॥ सिर सिन्दुर गज वदन विराजा । क्षुद्र घटिका सुदर बाजा ॥ भुजा चारि सोभित तनुसुदर । वाहन जात विराजत उर उर ॥ कर फरसा अकुस ध्वज सोहे । गान करत सुदर सुर मोहे ॥ दोहा—मन मोदक द पुरुष ही । सिद्धि बोध भय देहि । नाम केत गुन वरनौ । जे मति अक्षर देहि ॥

अंत—नास केत संस्कृत जो सुनै। निस भापा छाया लै गिनै ।। यहि कर मन अपमान न कीजै। सहज सुभाव मान कछु लीजै ॥ मानहु वदरी वरस किदारा। शिव मथि पूजा जल धारा ।। गंगा महा त्रिवेनी कीन्हा। गाँऐं सहस दान तहँ दीन्हा ॥ काशी परसि गया हुइ आई। पितृ तृप्ति कै श्राद्ध दिवाई ।। पोहकर पुनि कीन्हे असनान। गहन समय कुल क्षेत्र प्रमाना ।। हरिद्वार हरि गाय मनाई। सव तीरथ मन गरम छिराई ॥ अमिथा फल पुनि पावहि सोई। नास केतु श्रद्धा सुनि जोई ।। दोहा—नासकेत अमृत कथा। सुनहि सो होय हुलास। पापविवर्जित सुनहि से। कत भगवती दास ॥ इति श्री गरुड पुराणे नास केत कथा प्रसंग सकल" सावन वदी १३ सवत १९१६। वन्दे खाम वन्दा रामनारायण कानूनगो परगना काकोरी हस्वईसाम प० महानन्द दुवे साकिन मैनासी इलाका रामकोट...

विषय—(१) पृ० १ से ६ तक—मंगलाचरण भूमिका तथा कवि परिचय ग्रन्थ निर्माण कालः—सम्वत् सोलह से अट्ठासी। जेठ मास द्वितीया प्रकासी। शुक्ल पक्ष औ सोमक वारा। मृगसिर नखत कीन्ह उपचारा ॥ सन्त भक्ति करि सेवा। हरिचरनन की आस। नासकेत गुन गावही। विप्र भगौती दास ॥ प्रारंभिक कथा ॥

(२) पृ० ७ से १२ तक—चन्द्रावत का वनवास वर्णन
(३) पृ० १३ से १५ तक—उद्दालक सुत का व्रत पालन।
(४) „ १६ „ २३ „—उद्दालक मुनि वा चन्द्रावति विवाह
(५) „ २४ „ २७ „—नासकेतु का यमपुरी गमन
(६) „ २७ „ ३० „—नास केतु का मातापिता से मिलना
(७) „ ३१ „ ३४ „—यमपुरी वर्णन
(८) „ ३५ „ ३६ „—पापीजन वर्णन
(९) „ ३६ „ ३७ „—कर्मवखान
(१०) „ ३७ „ ३८ „—धर्म न्याय वर्णन
(११) „ ३८ „ ३९ „—जम्का भय वर्णन
(१२) „ ४० „ ४१ „—राजा यम तथा अज्ञान प्रसंग
(१३) „ ४२ „ ४४ „—पूर्वद्वार दिशि वर्णन
(१४) „ ४४ „ ४५ „—असन खोह वर्णन।
(१५) „ ४५ „ ४५ „—धर्म विज्ञान
(१६) „ ४५ „ ४६ „—यममार्ग विस्तार
(१७) „ ४६ „ ४९ „—राजा जनक वखान
(१८) „ ४९ „ ५२ „—ग्रन्थ समाप्ति

संख्या ३९ ए. दर्शन कथा, रचयिता—भारामल्ल, पत्र—३२, आकार—१०¾ × ८½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९९०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रघुनाथ प्रसाद जी जैन, ग्राम—नहटौली, डाकघर—फंतरी, जिला—आगरा।

आदि—अथ दसन कथा लिख्यते—चौपाई। रिषभ नाथ जिन मन में लाय, अजर अमर यह दाज माय। अति तजन्त यदन करों वम कर्म इन में परि हरा। पन्न मन्मथ जिनके पाँय, अभिनन्दन सुनियं मन लाय। सुमति जिन मनम करि नार, अव पासा जिन दारा तोर। चन्दा प्रभु प्रभु पायँ, नाव सुमिरत पाप नमाय। नमामि पारस नाथ जिनश जाऊँ सुमिरत करत बरन। य श्री चन्द्र प्रभु जिन द्व इन्द्र नरन्द्र कर जित सव। पुष्प दन्त शातल जिन राय, नमो श्री श्रा नमिनिश्वर पाय। नाम पूज्य महाराज कुमार, भवदधि तारण तरन जहाज। दन्ता विमल नाम क पाय, ताता नाम नरा मिटि जाय। नमहुँ अनंत जिनवर पार्य, सुमिरत पद वम दुख हाय। धर नाथ पदा सुखकार भवदीध पार उतारन हार।

अंत—दसन अष्ट महा सुख पावैं, यह भव सुख पाव। और कहो ए कविजन भाषैं, यहु दृष्ट भोगि यही तन मापैं। दसन कथा नंद पूरन भई भाषा मझ प्रगट करि मही। नूर पूर अम्बिर जु दाह पंडित सुद्ध करौ सब बाह। म मति हीन जु हो अधिकार, छमियो बुधिजन सब सिरदार पद सुनि नर ना मन लाइ नाम २ क पातक जाइ। दुख दलिद्द सब जाइ नसाइ जो यह कथा सुनै मन लाइ। पुत्र कलित्र वढ़ै परिवार जो यह कथा सुनै नर नारि। इति श्री दसौंन कथा सपूर्ण। मिति आश्विनि सुदी १ ॥ संवत ॥ १९३६ ॥ शुभ भवतु लिखित लाला छदामालाल अग्र के। श्री श्री।

विषय—भगवान तीर्थंकरों के दर्शनों का फल।

संख्या २९ जी. मुक्तावली व्रत की कथा, रचयिता—आरामल्ल जी, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—६×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३२ = १७७५ ई०, लिपिकाल—सं० १८५५ = १७९८ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा नरसीराम पुजारी, स्थान—भलागाम, डाकघर—अलीगढ़, जिला—एटा।

आदि—श्री मतिरामायनम ॥ अथ मुक्तावली व्रत की कथा लिख्यते ॥ रिषिभ नाथ क पद नमों नाभिराय सुख दाय। मुक्तावलि व्रत की कथा कहौं सुनो भव जाय ॥ चौ०—जंबू दीप सुदरसन मेर—लवन दधि ताहि रहा घेरि ॥ मगध देश देशन परधान। तामधि राज ग्रह सुभ थान ॥ राज कर जह श्रेनिक राय। धम घत सबको सुख दाय ॥ चामह नारि चलेना सती। धर्म कर्म साधन गुणवती ॥ इक दिन सेमा सण महवीर। आयो विपुल चल परधीर ॥ सुनि नृप रोम चित तन भयो। परिजन सहित सु वंदन गयो ॥ पूजा करि कीनो सुख पाय। जुग कर जोरि सु अरज कराय ॥ हे प्रभु मुक्तावलि व्रत कहो। कौन करयो कहा फल लहो ॥ तब गौतम बोल हरषाय। सुनो कथा मुक्तावलिराय ॥ याही जंबू दीप मझार। भरत क्षेत्र दक्षि दिस सार। अग देस सो है रमनीक। रथ जू चाप पीलपुर ठीक ॥ नगर मध्य ब्राह्मण वर बसे। नाम साम समति सु लसे ॥

अंत—श्रीधर राय तहा राजत। ताके सुत उपज्या गुन वत ॥ नाम पदम रथ पंडित ठयो। एक दिवस वन क्रीड़ा गया ॥ गुफा माहिं मुनिवर एक देखि। वंदन करि सुनि धर्म विसेखि ॥ पुनि पूछ मुनिवर सो मोह। तुमते और बड़ो प्रभु कोह ॥ तब रिषि बोले हे सुत सुनो वास पूज्य सबके गुर गुनी ॥ यह सुनि धर्म विषै चितु दयो। समो सण जिन वर पै गयो ॥ नमस्कार करि दिच्छा लइ। तप कर मन धर पदवी लइ ॥ अष्ट कर्म या विधि पर

जारि । पहुंचो सिवपुर सिद्धि मझार ॥ देखो भवि व्रत के परभाव । राज भोग करि सिव तिय पाव ॥ जो नर नारि करैं वृत सार । सुख संपति पावै भव पार ॥ भाव महित सो सिव सुख लहै । सखई भारा मल यह कहै ॥ दोहरा—लाभ तीनि वस एक धरि सवत भादौ मास सुक्ल पंचमी वार सुभ करी कथा परकास ॥ इति श्रीमुक्तावली व्रत की कथा संपूर्ण समाप्तः ॥

विषय—मुक्तावली व्रत कथा मे मुक्तावलि राय का हाल वर्णन है ॥

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता भारा मल जैन धर्मावलम्बी थे । निर्माण काल संवत् १८३२ वि० और लिपिकाल संवत् १८५५ वि० है । इसको इस प्रकार वर्णन किया गया है—जो नर नारि करैं व्रत सार । सुख संपति पावै भवपार ॥ भाव सहित सो सिव सुख लहै । सखई भारामल यौ कहै ॥ निर्माण काल का दोहा इस प्रकार है—लाभ तीन वसु एक धरि सवत भादव मास । शुक्ल पचमी वार शुभ करी कथा पर कास ॥ संवत् १९३२ वि० लिपिकाल सवत् १८५५ वि० है ।

संख्या ४० ए. जुगल सत. रचयिता—भट्टाचार्य (वृंदावन), कागज—देशी, पत्र—५४, आकार—१२ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, रूप—बहुत प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३६ वि०, लिपिकाल—स० १९३६ वि०, प्राप्तिस्थान—अद्वैतचरण जी गोस्वामी, स्थान—घेरा श्रीराधारमण जी, वृंदावन, डाकघर—वृंदावन, जिला—मथुरा ।

आदि—श्री राधारमण छप्पै कलपविटप श्रीभट प्रगट कलिकल्मप दुप दूरिकर जेनह आवै शरन ताप्त्र पतिन की हरहीं । तत्दरसी जे होय हस्त जा मस्तक धरंही गुन निधि रसिक प्रवीन भक्ति दसधाकौ अगर । राधाकृष्ण स्वरूपललित लीला रस सागर कृपा दृष्टि सतन सुखद भक्त भूप दुजवसवर कल्पविटप श्री भट प्रभेगट कलिकलाप दुप दूरिकर । अथ आदि वाणी श्री जुगल सतलिप्यते तत्र प्रथम सिद्धान्त सुख पद आभा सज्जत राग दारो आभास दोहा । चरण कमल की दीजिये सेवा सहज रसाल । वर जायो मोहि जानिकै चेरो मदन गोपाल पद इक ताला मदन गोपाल शरन तेरी आयो चरण कमल को दीजियै चेरो करि रापौ घरनापै । टेक धनि धनि मात पिता सुत वंधू धनि जननी जिन गोद पिलायौ । धनि धनि चरन चलत तीरथ को धनि गुर जनहरिनाम सुनायो । जेन रविमुख भये गोए गोविद सौजन्य अनेक महा दुख पायौ ।

अंत—राग विहागटी आभास दोहा । जिहि छिनकी वलि जाऊ सखि तिहि छिन वारि लेत लाल विहारी । सामरे गौर विहार निहेत पदताल चपक गै श्री विहारनि गौर विहारी लाल सामरे जिहि छिन की बलि जाऊं सखी री परत तिहि छिन भावरे टेक कचन कनि मरकत मनि प्रगटे वसनि नद गामरे विधना रचित न होय जै श्रीभट राधा मोहन नामरे १।१९।१०० संपूर्ण । दोहा । श्री भट प्रगट जुगल सत पठै कंठ त्रय काल । जुगल केलि अवलोक तै मिटै विषम जंजाल ।१। राग छप्पे एक दोहरा आदि अंतमधिमान । सत पत आभासनि सहित जुगल शतहद परिमान २ छप्पै रूप रसिक सव सत जन अनुमोदन याकौ करौ दशपद है सिद्धान्त वीस लीला पद सेवा सुख सोलह सहिज सुख एक बीसहद आठ सुरन राक उनत बीस उछव सुखल होय श्री जुत भटदैव रच्यौ सत जुगल सो कहिये निज भजन भाव रुचिते कीये इते भेद वेंडर धरै । रूप रसिक सब सत जन अनुमोदन याकौ करौ । इति श्री सतभट्टाचार्य्य विरचितं जुगल सत आदि वाणी सपूर्ण ।

विषय—आदि वाणी श्री जुगल मत वृजलीला के पद सेवा सुखपद सुरत सुख पद, उत्साह सुख पद सपूर्ण ग्रथ में श्री राधाकृष्ण की उपासना, विहार आदि वर्णन है।

संख्या—४१ आदित्य कथा, रचयिता—भाऊ कवि, कागज—सादा, पत्र—८, आकार—५३/४ × ४ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८ परिमाण (अनुष्टुप्)—६४ रूप—पुराना। लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६७८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री० प० शिवकुमार जी उपाध्याय स्थान—बाह, डाकघर बाह जिला—आगरा।

प्रारम्भ—श्री सुख दाइक पास जिनेस। प्रनवौं भय पयान दिनस॥ सुमिरौ सारद पद अरविंद॥ दिनकर मत प्रगटौं सुखकंद॥ मति सागर तहा सेठ सुजान। ताको भूप करें सनमान॥ तासु प्रिया गुन सुन्दर नाम। सातपुत्र तासुं अभिराम॥ १॥ पच सुत भोग कर परनीत। बाल रूप गुन पर सुभनीत॥ सहस्र कोटि सोभित जिनधाम। आया जती अति पडित काम॥ ३॥ मुनि मुनि आगम हर्षित मण। सर्व लोग वन्दन कों गण॥ गुरवानी सुनिकें गुनवता। सठनि तवहि करी बीनती॥ ४॥

अत—मात पिता के परम पाइ। अति आनन्द हार्ष न समाय॥ विघट्या विधना विषम वियोग। भयो सरस परजन संजोग॥ २३॥ आठ सात सारह से अक। रवि दिन कथा रची अकलक॥ थार ग्रथ अथ विस्तार। कर्यो भाव ठयो गुर सार॥ २४॥ यह मत जो वर नारी कर। सो नर हूं नहीं दुगत परं॥ भाव सहित श्रवनन सुख एह। भानु कीर्ति मुनिवर यौं कह॥ २५॥ इति श्री इतवार कथा संपूरनि॥

विषय—आदित्य वार के व्रत का विधान तथा उसके फलादि का वर्णन।

संख्या ४२ गोपाल सहस्रनाम सटीक रचयिता—भवानीप्रसाद ब्राह्मण (नागुरा, आगरा), कागज—बासी कागज, पत्र—२८, आकार—१३ × ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—११७६, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२१ = १८६३ ई०, लिपिकाल—स० १९२१ = १८६४ ई०, प्राप्तिस्थान—प० गोविंद राज, ग्राम—हिंगोट खिरिया, डाकघर—समशाली कटरा, जिला—आगरा।

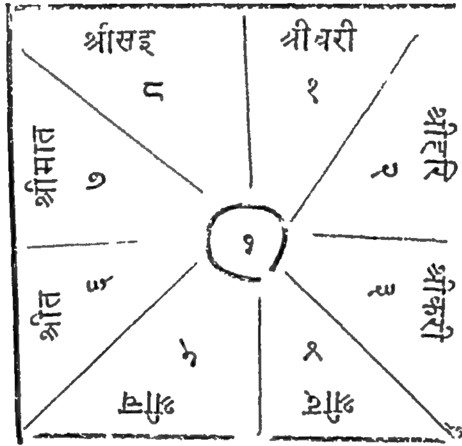
आदि—श्री रामचन्द्रायनम। कैलास पर्वत है सब पर्वतन के विषै महा सुन्दर है। सहस्र जोजन उचो है सहस्र जोजन विस्तार है तहाँ सो नाको है। बीच में नील मणि की है। ऊपरली रूपा को है। सोना के बीच नील कमल है। नील मणि के बीच श्वेत कमल है। तहा सिद्ध मुनीश्वर रिषीश्वर तप करत हैं। श्री कृष्ण को ध्यान करत हैं। तहा अनेक पसु हैं। पक्षी हैं। गधर्व गान करत है। अपछरा निरत करत है। पार जात कल्प वृछन की वह। ता वन में काम धेनु चरत है। श्लोक—ॐ कलाशी शिखरे रम्ये गौरी पृछति शकर। ब्रह्माड शिल नाथ स्तव सृष्टि सहार कारक॥ १॥ त्वमेव पूज्य से लोके ब्रह्मा विष्णु सुरा दिभि नित्य पठति दवेश कस्य स्तोत्र महश्वर॥ २॥

अत—श्री वृन्दावन चंद्रस्य प्रसादतः सर्व माप्नुयात॥ यहे हे पुस्तक देवी पूजित दैव तिष्ठिति॥ ३१॥ न मारी न दुर्भिक्ष तोप स्वर्ग भय क्वचित॥ सर्पादि भूत पक्षा धान स्यते नात्र ससय॥ ३२॥ हे पार्वती जाके ग्रह में सहस्र नाम की पोथी है तहा कहु असुभ वस्तु प्राप्त न होइ कबहू मरी पड़े नहीं भूत प्रेत कोउ डर नहीं होय नहि पर सहस्र नाम सुनिकर दूर भजि जाहि यामे ससय नहीं॥३१॥ हे पार्वती जो या सहस्र नाम को पठे है सुनै है पूजै है अस जोर घर में सहस्र नाम की पोथी रहे है तहा गोपालजी सदा वसंत॥३२॥

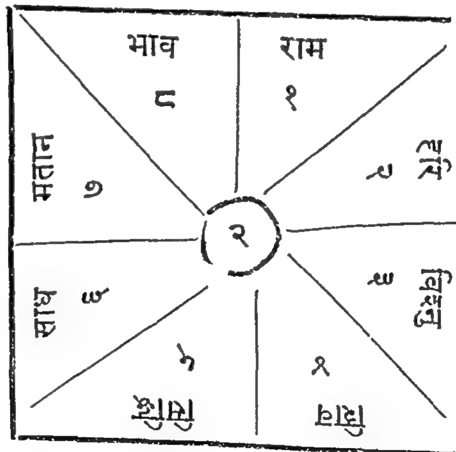
विषय—कृष्ण जी के एक हजार नामों का उल्लेख उनकी स्तुति में कहे गये हैं। यह संस्कृत के गोपाल सहस्र नाम का भाषानुवाद है।

संख्या ४३. चक्र केवली, रचयिता—भेदीराम (आगरा), कागज—देशी, पत्र—१७५, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४९७५, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१६ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० भूदेव, ग्राम—सेवापुर, डाकघर—बेसवा, जिला—कानपुर।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ चक्र केवली पंडित भेदीराम आगरा निवासी कृत लिख्यते ॥



गर्भिणी के गर्भ है वा नहीं इसकी परीक्षा का चक्र है।



गर्भ रहने व न रहने की परीक्षा का चक्र है॥

अंत—बया पालने की परीक्षा

१—शौकीनो का काम है तुम्हे दीखै सो करो॥
२—इसे मत पालो बिल्ली मारेगी पाप होगा॥
३—बया पालो तो सीखी साखी पालो॥

४—यह नगर गुप्त है तुम्हारे मनुष्य में नहीं हुआ ॥
५—जो पदार्थ गया है सो मुश्किल पावे ॥
६—यथा नदर पानी पर लिखा पड़गी ।
७—इस काम में तुझ दश आदमी काम धरेंगे ।
८—यथा मन पावे ॥ नाव का ठिकाना नहीं है ।

इति श्री पास कवली चारों मन मधुरा गुप्त लिखा पीतांबर राम ब्राह्मण आगरा निवासी कार्तिक दसमी नाग शाप कृष्ण तिथि संवत् १९१६ वि० ॥

विषय—इस ग्रन्थ में नाना प्रकार के प्रश्न और उत्तर शुभाशुभ अक्षर लिखे हैं।

संख्या ४३ बी, सालिंगा सदा वृक्ष, रचयिता—जैराम, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६०, रूप—प्राचीन, पद्य-गद्य। लिपि—नागरी। लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला हरचंद साह, ग्राम—शाहपुर कुन्दन, डाकघर—अतरौली, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ सालिंगा सदा वृक्ष भजन राम हेत लिखते ॥ दोहा ॥ गौरी श्री गणेश जो सारद मातु मनाय । चरण नीर नारद सुमिरि गुरु चरणन चित्त लाय ॥ कवि कोविद गुणगान मधुर तिनको माथ नवाय । सालिंगा सदा वृक्ष की कथा कहूं समझाय । वार्ता ॥ कहते हैं कि एक दिन गुरु गोरख नाथ चन्द्र नगर में जा निकले और वहां डेरा बाग में किया कि एक चेला राम गिरि उनका भिक्षा करने बस्ती में गया परन्तु नगर में किसी ने आदर सत्कार न किया तब एक कुम्हार कुम्हारी जो वहां बसते थे उन्होंने राम गिरि को सुन्दर सी भिक्षा दी। तब राम गिरि को गुस्सा आया कि ऐसा नगर उजड़ जाय तो अच्छा है। अपने मन में विचार उस गुरु से जा कह दिया कि गुरु इस नगर के निवासी नहीं तो भला न होगा यह सुन के ही कुम्हार कुम्हारी वहाँ जा बसे दिये ॥

अंत—बादशाह का लड़का वाला ऐसी बात क्या है जो अपने प्राण तजोगी उसने कहा कि ये बादशाह जिनके साथ मैं आई हूं उनने मेरा धर्म बिगाड़ दिया है अब तुम्हारे पास क्यों रहूं इससे बहतर है कि उसको मरवाय डालो तब मैं अपने प्राण रखूं और सिपाही से यह कहला भेजा कि तुमको बादशाह मरवाना चाहता है इस प्रकार दोनों में अदावत डलवा दी कि पहिले राजा के कुंवर को उसी सिपाही ने मार डाला और सालिंगा ने खबर सुनकर उसी वक्त पेट में डाल दिया और फांसी लगवा दिया दोनों को जान से सालिंगा सदा वृक्ष घर बाहर निकली और तबेले से दो घोड़े ले और दोनों चढ़ के सदा वृक्ष समेत चले अब चलते चलते वहीं पहुंचे जहां सदा वृक्ष की राजधानी थी। वहां पहुंच करके आनन्द से रहने लगे ईश्वर अपनी कृपा करें और इस जमाने के दुःख से बचावें। सत्य है किसी कवि ने कहा है यह ध्यान देकर सुनो ॥ दोहा ॥ पुरुषन ते दूनो क्षुधा बुधि चौगुनी होय। काम अष्ट गुनो षटगुनो यहि विधि कहि सब कोय ॥ उसके आने की खबर नगर में सुन कर सब आनन्द मनाने लगे सालिंगा पूरन भया दोहा। अति रस मान। रसिकन के हित यह रच्यो जैराम सुजान ॥ इति श्री सालिंगा सदा वृक्ष ग्रन्थ सम्पूर्ण समाप्त ॥ दो०—जैसी प्रति हमको मिली वैसी लिखी बनाय ॥ भूल चूक जो होय सो गुणिजन लेहु बनाय ॥ मिती बैसाख सुदी दसमी संवत् १९३० वि०। लिखी रामदास वैश्य नर पुर निवासी ॥

विषय—इसमे सालिगा और सदा वृक्ष की कहानी वर्णित है।

संख्या ४४. काव्यनिर्णय, रचयिता—भिखारीदास (प्रतापगढ़), पत्र—२४४, आकार—११ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८०६, रूप—प्राचीन, लिपि - नागरी, रचनाकाल—सं० १८०३ = १७४८ ई०, लिपिकाल—सं० १८९९ = १८४२ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० गुरुदेव बक्श सिंह, ग्राम—अड़मा गऊ, डाकघर—गोसाईंगंज, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ काव्य निर्णय लिष्यते ॥ छप्पय। एक रदन द्वै मातु त्रिचप चौ बॉहु पंच कर। षट आनन वर बन्धु सेव्य सप्तार्चि भाल धर ॥ अष्ट सिद्धि नव निद्धि प्रदानि दश दिसि जस विस्तर। रुद्र एगाहह सुपद द्वादशादित्य वोज वर। जो त्रिदश वृंद वंदित चरण चौदह विद्यनि आदि गुरु। तिहि दास पंच दसहू तिथिन धरिय षोडसी ध्यान उर ॥ १ ॥ दोहा ॥ बूझि सो चन्द्रा लोक अरु। काव्य प्रकास सु ग्रन्थ। समुझि सुरुचि भाषा कियो। लै औरो कवि पंथ ॥ ५ ॥ वही बात सिगरी कहे उलथो होत एकाक। कवि निज उक्ति बनायहू। रहैं सुकरिपत सक ॥ ६ ॥ याते दुहु मिश्रित संज्यो छमि है कवि अपराधु। बन्यो अन बन्यो बूझि कै सोधि लेहिगे साधु ॥ ७ ॥

अंत—रामको दास कहावे सबै जगदास है रावरो दास निनारो। भारी भरोसो हिये सब ऊपर ह्वै है मनोरथ सिद्धि हमारो ॥ राम अदेवन के कुल वाले भये रहे देवनि को रख वारो दारिद घालिवो दीन को पालिवो राम के नाम है काम तिहारो ॥४५॥ क्यों लिये राम के नाम तुम्हे कहा कागद कैसो पुनीत मैयाऊ। आखर आछे अनूठ तिहारे क्यों झूठी जुवान सो हौ रह लाऊ ॥ दास जो पावनता भरे पुज हौ मोह भरे हिय में क्यो वसाऊ। काम है मेरो तमाम इहै सब जामतिहारो गुलाम कहाऊ ॥ ४६ ॥ जानो न भक्ति न ध्यान की शक्ति हौ दास अनाथ के अनाथ के स्वामी जू। मांगो इतो वर दीन दयानिधि दीनता मेरी चितै भये हामि जू ॥ ज्यो विच नेह को व्योर है अंतर जामी निरंतर नासिजू। सो रसना को रुचै रसना तजि राम नमामि नमामि नमामि जू ॥ ४७ ॥ इति श्री कलाधर कलाधर वंशावतंश श्रीमन्महाराज कुमार बाबू हिन्दु पति विरचिते काव्य निर्नये सदोषे दोषोद्धार वर्ननं नाम पंच विंसमोल्लासः ॥ २५ ॥ माघ मासे कृष्णपक्षे सप्तम्या रविवासरे लिखित मिद पुस्तकं जवाहर लाल कायस्थेन श्री लालविहारी पठनार्थवे संवत १८८९ ॥ श्रीराधा कृष्णाय नमो नमः ॥ श्री राम ॥

विषय—(१) पृ० १ से ५ तक—मंगला चरण कवि आश्रय दाता तथा ग्रन्थ निर्माण कालादि वर्णनः—

जगत विदित उदयाद्रिलौ। अर वर देश अनूप। रविलौ पृथ्वीपति उदित। तहां सोमकुल भूप सोदर ताको ज्ञान निधि। हिन्दू पति शुभ नाम। जिन्हकी सेवा सो लह्यो। दास सकल सुख धाम ॥ अट्ठारह सै तीन ही संवत्। आश्वनि मास। ग्रन्थ काव्य निर्णय रच्यौ। विजै दशौ दिन दास काव्य प्रयोजन भाषा लक्षण (प्रथम उल्लास)।

(२) पृ० ५ से १७ तक—पदार्थ निर्णय। अर्थ की शक्तिया। लक्षणाभेद व्यंजना शक्ति निर्णय। प्रस्ताव विशेष। देश विशेष वर्णन काल विशेषादि वर्णन (द्वि० उ०)।

(३) पृ० १७ स ३६ तक—(तृ० उ०) कव्यार मूल तथा रसांगादि वर्णन।
(४) „ ३६ से ४२ तक—(च० उ०) रसभाव के अपरागादि।
(५ ६) , ४३ स ५७ तक—(पं० उ०) ध्वनि भदादि वर्णन।
(७) „ ५८ „ ६३ „—(स० उ०) गुणी भूत व्यंगादि वर्णन।
(८) „ ६३ „ ७९ „—(अ० उ०) उपमादि अलंकार वर्णन।
(९) „ ७० „ ८८ „—(न उ०) उत्प्रेक्षादि अलंकार।
(१०) „ ८८ „ ९८ „—(द० उ०) व्यतिरेकादि अलंकार।
(११) , ९७ „ १०६ „—(ए० उ०) अप्रस्तुत आदि अलंकार।
(१२) „ १०६ „ ११७ „—(द्वा० उ०) अन्योक्त्यादि अलंकार।
(१३) „ ११८ „ १२६ „—(तृ० द० उ०) विरुद्धादि अलंकार।
(१४) „ १२७ „ १३५ ,—(च० द० उ०) मुद्रा आदि विविध अलंकार।
(१५) „ १३५ „ १४६ „—(प० उ०) समाधि अलंकार।
(१६) , १४७ „ १५० „—(ष० द० उ०) सूक्ष्मालंकार वर्णन।
(१७ „ १५३ „ १६६ ,—(स० द० उ०) स्वभावोक्ति अलंकार।
(१८) „ १६७ „ १७० „—(अ० द० उ०) रीतिभेदादि अलंकार।
(१९) „ १७० „ १८० „—(न० द० उ०) गुण नियमादि अलंकार वर्णन।
(२०) „ १८० „ १८६ ,—(वि० उ०) इत्यादि अलंकार।
(२१) „ १८० „ २०७ „—(ए० वि० उ०) चित्र काव्य।
(२२) „ २०७ „ २११ „—(द्वा० वि० उ०) गुणादि वर्णन।
(२३) , २११ „ २२७ „—(त्र० वि० उ०) शब्दार्थ दोष वर्णन।
(२४) „ २२७ „ २३२ „—(च० वि० उ०) अर्थ दोष वर्णन।
(२५) „ २३३ „ २५४ ,—(प० वि० उ०) सदोष दोषोद्धार वर्णन।

टिप्पणी—यह प्रतापगढ़ के सोमवंशी राजा पृथ्वीसिंह के अनुज बाबू हिन्दूपति के आश्रित रहनेवाले प्रसिद्ध कवि भिखारीदास जी, उपनाम, "दास" की रचना है। इसमें प्रायः काव्य के सभी अंगों का वर्णन है। और चन्द्रालोक तथा काव्य प्रकाशादि ग्रन्थों के आधार पर लिखा गया है।

संख्या ४५ अमर वानी, रचयिता—भीषण, कागज—देशी। पत्र—१६, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४० पूर्ण, रूप प्राचीन। लिपि—नागरी। रचनाकाल—१६८३ वि०। लिपिकाल—१८६६ वि०। प्राप्तिस्थान—लाला माधौराम, स्थान—पारिया, डाकघर—इगलास, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ सवज्ञ वानी भीषण कृत लिख्यते॥ ॐकार अपार आद अनादि जगतगुर। अति अगोचर सुप बेद हद दुप हरन सेव सुर सकल साग सरवग अगनि श्रम अमित अति। दीन बंधु सुप सिंधु प्रभु वर प्रेम विमल मति॥ भुव नाहक नाहक सिमपुर बुद्धि वार वरनन करन। वदत भीष नर नग विदित नमो देव असरन सरन॥ १॥ नमो परम गुरचरन गरन तिमिर हरन बुधि वर अति प्रवीन गुन लीन दीन

पर परम दया कर। गीत गुनग्य वुधि पगि अग्य मति कहा बषानं ॥ दधि अथाह को थाह तिर पावे गीह जान।' वह अति ऊधम अगम कहि उद्यम उपजै त्रिया कछु वषानत भीष जन संत दास सत गुर क्रिया ॥ २ ॥

अंत—सवत सोलह सै वरष जव हुते तियासी पोस मास पप सेत हेत दिन पूरन मासी। सुभ नक्षत्र गुन कह्यौ धरयौ अक्षर जो आरिज। कथ्यो भीप जन ग्याति जाति दिज कुल आचारिज ॥ सव संतन सूं वीनती औगुन मोह निवारि यह मिलते सु मिलते रहो अनमिल अक सवारियहु ॥ हरिगुन सकल सजुक्त अगम अति वषानू। सर्व अंग गुनद कथी वावनी विवधि परि ॥ संतदास सतगुरु प्रसाद भाष्यो रसना ग्यान कर परम वानि जोटे जुगुल सुनन भषि विनती कही इति श्री भीषजन की वावनी ग्रंथ कवित संपूरन भवत इति लिपि कृत राम दास स्व पठनार्थं सवत् १८९६ वि०

विषय—इसमे ईश्वर व गुरु आदि की भक्ति उससे भवसागर पार होने आदि का वर्णन किया है।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के रचयिता 'भीषजन' साधू थे। निर्माण काल संवत् १६८३ वि० है। इसको इस प्रकार लिखा हे संवत् सोलह सै वर्ष जव हुते तियासी। पौष मास पप सेत हेत दिन पूरन मासी सुभ नक्षत्र गुन कह्यो धरयो अक्षर जो आरिज। कथ्ये। भीप जन ज्ञाति जाति द्विज कुल आचारिज। लिपिकाल संवत् १८९६ वि० है ये जाति के ब्राह्मण आचार्य थे।

संख्या ४६ ए श्रीमद्भागवत (प्रथम स्कध), रचयिता—भीष्म, पत्र—३५, आकार—१३ × ७$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९२ = १८३५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० ज्वालाप्रसाद वैद्य, ग्राम—सेमरा, डाकघर—सेमरा, जिला—आगरा।

आदि श्री गणेशाय नम. । श्री गुरुभ्योनम । श्री सरस्वत्यै नमः। श्री राधा कृष्णाभ्यो नम. । श्री छप्पे छद। परम ब्रह्म चित धारि परम आनद रूप रस, करिगुर कौ उर ध्यान ज्ञान की जोति होति द्रस। संतनि कौ कर जोरि रहौ···आगे। तन मन वचन प्रनाम कर भय भ्रम सब भागे। इहि भांति सगला चरन करि भीषम लघुता भाषियाँ, पडित प्रवीन सुनि जन गुनी कृपा आपनी राषियो। १। कर्ता की संपदा वर्ननं ॥ प्रथम अणतानंद जानि द्वितीय भावानद। त्रतीय सुरसुरी नद चतुर्थे जानि सुवानद। पंचम नर हरि नंद षष्टम पद्मावति जानो, धना सप्त रैदास अष्टा सैना नव मांनौ। दिगसूर सुरा एकादश कवीर द्वादश पीपाजुण लये। श्री रामनद भागवत भुव लिपि द्वादश असकद भए। २। भाष्य कर्ता वंश वर्णन—भए कवीर कृपाते नीर जगमध्य उजागर। नीरद यासे जत्र लोक भए गुन के सागर। जत्र लोक के ध्यान भए पीतंबर दासा। राजदास गुरध्यान धरि जग भए प्रगासा। पुनि दयानंद जिनके भये, हरीदास लिप तासु कौ, प्रभु स्याम दास उर नित वसौ सुभीषम चेरो तासु कौ।

अत—मरण समय हमको यह ठाही, और भांति दरसन कहु नाही। जोगेश्वरनिके गुर तुम आही, उतर प्रश्न सो कहो अब गाई। मरन रुसै को जतनु है सोही, सो विचारि

कहीं अब माहा। तुमम सुदिय प्रेहि। क प्रहा, गो दोहण सम कृतण येहा। ४५। दोहा। ऐसे मधुर बैन कहि प्रदान किया प्रसाद, तब चाले सुर मुनि गुनी, भीसम हृदय उछाह। ४६। इति श्री मद्भागवत महा पुराण प्रथम स्कंध भीष्मकृत भाषा नाम उन्नीसाध्याय। १४। श्री रस्तु। कल्याण मस्तु। मिति आश्विन शुक्ल चतुर्थ्यां शनि वासरा दसखत दवीं प्रसाद ब्राह्मण वासी समरा का। यादृश पुस्तक दृष्टा तादृस लिख्यते मया। यदि शुद्ध मशुद्ध वा मम दोषो न दीयते। संवत् १८९२। शाके शालिवाहन १७५७ प्रथम स्कंध। श्री।

विषय— भागवत प्रथम स्कंध का पद्यानुवाद।

विशेष ज्ञातव्य—कवि ने अपनी वन्दना और गुरु प्रणाम स्पष्ट रूप से दी है।

संख्या ४६ बी. भागवत (प्रथम अध्याय), रचयिता—अज्ञात, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—१०¾ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० नन्दन मिश्र, ग्राम—सरधी, डाकघर—नगौर, सद०—शाहगढ़, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वती नमः। श्री गुरुभ्यो नमः॥ श्री राम। प्रथम मंगला चरण॥ छप्पय॥ पार ब्रह्म चित्त धरि, परम आनन्द रूप रम। धरि गुरु कौ उर ध्यान ज्ञान की ज्योति होमि भ्रम। गन्नाथ को वर नारि हो मन्गुरु तिहारे। तामन पद प्रनाम करत कप भूप मम भार। इहि भांति मंगला चरण करि आपा लघुता भाखियो। पंडित प्रवीन मुनि जन गुनी कृपा, आपनी राखियो।

अंत—दोहा—अस मधुरे बैन कहि प्रेम न पीयो नर नाहि। तब बोले सुर मुनि गण, भीम सर्व उछाहि। इति श्री भागवत महा पुराणे श्री सूत सनकादि सवाद श्री सुक आगम नोनाम प्रथम अध्याय सम्पूर्ण॥ संवत १९०० बैसाख बदी १० शनि वासर दसखत जवाहर मिसुर के सुभ अस्थान सरधी।

विषय—प्रथम अध्याय भागवत का अनुवाद।

टिप्पणी—"कर्ता सम्प्रदा वर्णन" "प्रथम अनन्ता नन्द नाथि। द्वतीय भावानन्द सुर सुरानन्द चतुर्थ ५ सुखानन्द। पचम नर हरि नन्द षष्ठम पद्य बखानौ। धना सप्तम रैदास अष्ट सना नव मानौ। दिगसुर सुर दसवाद्स कबीर द्वादस कीया गुण ज्यो। श्री रामानन्द भागवत शुध सिवि द्वादस स्कन्ध मतो।' "भाषा कर्ता वंश वर्णन" भये कबीर कृपालें नार नाग में पातालधर, दास रामदास गुरु ध्यान, धारि नाम भये प्रकास। पुनि दयानन्द जिनके भये हरीनाद शिष्य तास को प्रभु स्याम नाम उर लिन धरयो। सीतम चरन तर दास को।" उपर्युक्त अशुद्ध तथा अस्पष्ट भाषा में कवि ने अपना परिचय दिया है।

संख्या ४६ सी. भागवत (दशमस्कंध), रचयिता—अज्ञात, कागज—बासी, पत्र—१९८, आकार—१० × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६२५१, खण्डित। रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१८ = १८६१ ई०

प्राप्तिस्थान—श्री जानकी प्रसाद जी, स्थान—वमरौली कटरा, डाकघर—वमरौली कटरा, जिला—आगरा।

आदि—देव वचन की वानी होई। अपने कान सुनै सब कोई। वाहनी टेर कहे समुझाई। सुन हो वचन कसादिक राई। ताहि चल्यो परो चावन साथा। तेरी मीच तासु के हाथा॥ आटौ गर्भ देवकी होई महावली जानै सब कोई। सो मेरी वैरी अब तरयो। असुर दैत्य दानव संहरयो। तेरी कंस भई मन भंगा। ताहि चल्यो पहोचावन संगा॥ सुनके कस उर भर हाभयो। देवी को झोटा जाय पकरयो। गहि रथ पर से लई उतारी। काटि खड़क नै भरै हकारी। पीसत दसन भई रिसि घजी लीन्ह मीच तवै आपनी। करू उवाच। साषी। ज्योंकर वृहत उखारि कै, ठारैं जर तौ खोई॥ पड़े गये पाले नही। सो कहा कल फूल फल होई।

अंत—दाने दैत्य असुर संघार। जे मनसा करिके अनतार। आठौ गर्भ अधिकारी भरा। प्रभु ने जन्म ता कारन टारा। तिनि सेवा ऐसी अनुसरी। तिनकी प्रभु ने रछया करी। ते तब संग कृष्ण के फिरैं। भोगन सग कीला विस्तरैं। जैसी हरि की कीरति जानी। तीरथ तैसे अधिक वखानी। रात्र रित्र को वे गति देही ताते नर श्रवनन सुनि लेही। अलख अगोचर है अविनासी। घरि घरि याही ज्योति घवासी। देवै सदा धर्म रखवारे। सर्वा चर दुप मेटन हारे। श्री भगवत कथा जो कहाये। श्रवन सुनत परम सुख भये। कीजो दोस चरित्र अघ हरना, गोपीनाथ तुम्हारे सरना। हरन करन सवही के नाथा। जन वृन्दावन रे हाथा। इति श्री भागवते पुराणे दसरकन्ध कृष्ण चरित्रे। अंन्तरध्यान सम्पूर्ण शुभ॥ मिती वैसाख कृष्ण ७ स० १९१८ श्री श्री।

विषय—कृष्ण भगवान का चरित्र दिया गया है।

संख्या ४६ डी. भागवत दशम भाषा, रचयिता—भीष्म, पत्र—८४, आकार—१०२ X ६३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८५६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९५ = १८३८ ई०, प्राप्तिस्थान—प० हरीनारायण, ग्राम—चंदवार, डाकवर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्री राधावल्लभोजयन्ति॥ श्रीपरमात्मने नमः॥ अथ दस्मस्कध भागवत् लिष्यते॥ छपय छंद॥ परसम्ब्रह्म को ध्यान हृदयमय कीजियै। सत गुरुकौ शीश समर्पि सुदीजिऐ॥ गोकुल मथुरा आदि द्वारिका की कथा। है हरि चरित्र अगाध पै वरनौ मति जथा॥ नप शिप सो पुनिय कथा है कौ ऐसो वरने सवे। कहि भीपम गुरु परताप सौभावै अरथ वरनौ अवै॥ राजो वाच॥ रवि शशि वंस विस्तार करि गायौ उभय वंश नृप-चरित सुनायौ॥ १॥धर्मात्मा सील जदुराजा। ताके वस को कहौ समाजा॥ तिहि कुल कृष्ण लियो अवतारा। कृष्ण कथा अव करौ विस्तारा॥ जादु के वस औतरे हरी। कहा कहा लीला तिहि करी॥ सो हमसो विस्तारि के कही। जगभावन हरि के गुण गहौ॥३॥ पसु घाती विनु हरि कथा। को विरास ह्वै है पशु जथा। सुक्ति भये गावत चितलाई। भव औपद सन श्रवन सुहाई॥४॥ कौरौ दल सागर सागर की नाही। भीष्म द्रोण अहि जिहि माही॥ ताहि तरे पुरुषा जु

हमार गोसुत सोज मनी उर धारे ॥ हरिके चरण जिहाजहि दीन्हे । सहजे पार भय रस भान ॥ ५ ॥ द्रोण पुत्र कर अस्त्र जब लीनो । गभ माझ माहि महा दुख दीना । जननी कुक्ष गत रक्ष्या करी । चक्र चलाय पीर सव हरी ॥ ६ ॥

अंत—धृतराष्ट्र उवाच । जो तुम कही भान धन वानी । यथा जोग्य सत्य है विनानी ॥ २५ ॥ तथापि मोको रुचे नहीं प्रेमी । मरण समै अमृत पुनि तै सैं ॥ २६ ॥ जदु कुल मध्य कृष्ण अघहारण । आये भूमि को भार उतारण ॥ २७ ॥ जो अपनी माया करि ढ्रुश । सकल विश्व को रचे जगदीस ॥ २८ ॥ शुक उवाच ॥ असे सुनी धृतराष्ट्र की वानी । करि प्रणाम उठि चले विनानी ॥ वायु वग रथ पै चढि धाये । फिरि अक्रूर मधुपुरी आये ॥ २९ ॥ श्री हरि क पग परसि कै । नमन करी अक्रूर ॥ दोहा ॥ समाचार धृतराष्ट्र पै । भीपम कहे भर पूर ॥ ३० ॥ इति श्रीमद्भागवते महापुराणे दशम स्कन्धे भीपमकृत भाषाया पाण्डवा सासनो नाम उनचासमोध्याय ॥ ४९ ॥ इति दशम पूर्वार्द्ध समाप्तोय सवत् १८९१ शाके १७६० मिति श्रावण शुक्ल सप्तमि ७ श ॥ लिष्यते मिश्र मोतीलाल द्विज द्रव भक्त मध्ये चदवार यमुना तटे श्री रामा जयति ॥

विषय—भागवत दशम स्कन्ध का भाषा पद्यानुवाद—पूर्वार्द्ध (हरिचरित्र से लेकर अक्रूर के ब्रज आगमन तक का वर्णन)।

संख्या ४६ ई. भागवत दशम स्कंध, रचयिता—भीषम, पत्र—४०, आकार—१२¾ × ३¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३० परिमाण (अनुष्टुप)—१८००, खंडित। रूप—बहुत प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ईश्वरी प्रसाद शर्मा, ग्राम—सैमरा, डाकघर—खंदौली, जिला—आगरा।

आदि—सनकादिक के श्राप ते भये असुर परचड । जन्म धम कृत मेटि के जीति लीनि नवखंड । चौपाई । तब ब्रह्मा की सेवा कीन्ही, ब्रह्मा दय आदिका दीन्ही । घर बाहर मरौ नहिं मारा, काटे कटै जर नहि जारा । शीत धाम व्यापै नहि शीसा, निर्भै होउ अवनि छत्तीसा । ऐसो वर हरनाकुश भयौ त्रिभुवन जीति तासु ले गयो । सुर अरु असुर सकल सुख पाला । छाडि ऐक निज भए बेहाला । धर्म जज्ञ तप करै न कोइ, महा प्रचड पाप छिति होइ । चारि पुत्र ताके परमाना, जेठो सुत प्रहलाद सुजाना । राजा मोह बहुत विधि कीन्हा, चारों पुत्र पढ़ावन दीन्हा । संडा मर्क कह लियौ बुलाइ, तुम प्रहलाद पढ़ावहु जाइ । अति सुदर सब राज कुमारा, पढ़िबे को आये चट सारा । शिव शिव लिखि पाटी पर दीन्हा, बाचत कुंवर महा दुष कीन्हा । शिव अक्षर सब मेटि कुमारा, पढ़िबे को आये चटसारा । लिषे कृष्ण जदुपति सुष दाता, हरि के चरन कमल मन राता । लिपि पाडे की पाटी दीन्हा, बाचत विप्र महा रिस कीन्हा ।

अंत—नष सिष से सिंगार करि, सबै सषी यक सारि । मडप मैं ठाढ़ी भइ, राजत राज कुमारि । चौपाइ—सब मिलि गावत मगल चारा, विधिवत सब सब कीन्हो व्यौहारा । कुंवरि देषि सबहा सुष माना, बरात भाट विरद अरवाना । अरघ द दुलिहिन पहु चाइ, सब बरात को डेरा कराइ । तब बानासुर चौक सराए । मलया गिरि चदन छिरकाये । मडप

आए श्री जदुराई, इंद्र कुवर नृपति वलि भाई। चरन धोइ चरनोदक लीना, जीवन जन्म सुफल सम कीन्हा। गधर्व गावै गुनी अपारा, बाजे बजै अनेक प्रकारा। दोहा। सिहासन बैठारि कै, जथा जोग ज्योनार। गारी गावत नारि सब, जो जैसो व्योहार। चौ०—करि भोजन सब डेरन आए, भांवरि को दूलह पहुंचाये। वहुत रूपी दुलहिन तब गावा, अनुरूप कुवर देपि सुष पावा। उपा दुलहिन मंडप ठाढी, कनक वेलि रतनन पचि ठाढ़ी। ब्रह्मा वेद पढ़ै सुष चारी, बहु विधि सोगावै नर नारी। इंद्र सहित भूव पति…।

विषय—भागवत दशम (उत्तरार्द्ध) का पद्यानुवाद।

संख्या ४६ एफ. भागवत दशमस्कध भाषा (उत्तरार्द्ध), रचयिता—भीष्म, पत्र—७२, आकार—१० × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३०४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९८ = १८४१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० हरीनारायण, ग्राम—चंदवार, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला आगरा।

आदि—शुक उवाच॥ और सुणो श्री कृष्ण की कथा। जुरासध सौं जुद्ध भयौ जथा॥ हुती कस कै उभै पटरानी। अस्ति प्राप्ति जिहि नाम बखानी॥ मरौ कस अति भयौ दुष भारी। अपने पिता पै जाय पुकारी॥ १॥ कृष्ण अनीति करी पुनि जितनी। विथा तात सौं कहि सब तितनी॥ निज दुहिता विधवा जब देखी। भूपति ने मन में अब रेखी॥ २॥ भूप कहि अवधौ कहा कीजै। निजु द्रव धरणी करि दीजै॥ ३॥ तेईस अक्षौहणी वाहिणी नेरी। रैनी ही मे जाय मथुरा घेरी॥ भयो प्रभात जागे सब लोगा। लिपि विपरीत बढ्यो अति रोगा॥ ५॥ श्री पति जू ने लपी यह वाता। आजु असुर दल करौं निपाता॥ ६॥ हरि जू मनोरथ किये मन भाये। नभ तै उतरि उभय रथ आये॥ ७॥ सहित सारथि इन्द्र ने पठाये। परि पूर्ण सव शस्त्र मन भाए॥ ८॥ तिन्है देखि कै श्री हरिराई। वलि सो वैन वोले अकुलाई॥ ९॥ द्वे रथ देष्यौ शस्त्र परि पूर्ण। सुर पति भेजे आपके हजूर॥ १०॥ जरासध कौ हनौ क्षिणि माही। क्षिण ईक ढील कीजियति नाही॥ यहि कहि पहिरे कवच है सोऊ। चढे रथनि पर निकसे दोऊ॥ ११॥

अंत—स्वर्गवासी देवता है तेते॥ प्रगट भयो जउ वश में तेते॥ ४४॥ ताते वश वढ्यौ अति भारी॥ को गनि सकै तास नर नारी॥ ४५॥ सेस महेस विरचि विनानी॥ सख्या करण असमर्थ सव ज्ञानी॥ ४६॥ पूरण ब्रह्म कृष्ण है जोऊ॥ पुनि संख्या करि सकै न सोऊ॥ ४७॥ चित दै सीषै सुनै जो कोई॥ हरि पद पंकज पावै सोई॥ ४८॥ दिन प्रति सुनौ कृष्ण की कथा॥ मन मै ध्यान करै पुनि तथथा॥ ४९॥ जम की फासि कटै छिण माही॥ फिरि संसार में आवत नाही॥ ५०॥ प्रवर दसम लीला यह गाई॥ नर नारिन को सदा सुखदाई॥ ५१॥ दोहा॥ भीपम दशम स्कंध की कथा सुनौ चित लाय। भव सागर तरि पलक में अमर लोक कौ जाय॥ ५२॥ इति श्री मद्भागवत् महापुराणे पारम हंस सहिताया वैयासिक्यां अष्टादस सहस्रा दशम स्कन्धे भीपम कृत भाषायां लीला चरित वर्णनो नाम नव तितमो ध्याय.॥ ९०॥ लीपत श्री मिश्र पूजारी मोतीलाल मध्ये चदवार श्री जमुना तटे संवत् १८९८ शाके १७६३ शुभ मस्तूय दश पुस्तक दृष्टा तादृश

लिखिते मया यदि शुद्धानि शुद्ध गन मम दापो न दीयते ॥ अथ सवत १८९८ शाके १७६३ अश्वन कृष्ण पक्षे तिथि ५ चन्द्रे पुस्तकऽस्कध दशम पत्रा सख्या १०७२ ॥

विषय—भागवत दशम स्कध का पद्यानुवाद (उत्तरार्द्ध) जरासिन्धु की मथुरा पर चढ़ाई से लेकर द्विज बालकों के लाने तथा अन्य लीला चरित्र वर्णन ॥

सख्या ४७ ए शिवपारवती सवाद, रचयिता—भोलानाथ, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ४ इञ्च, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० लेजन सिंह, डाकघर—सिकदरा राऊ, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्रीगणेशाय नम अथ शिव पारवती सवाद लिख्यते ॥ दोहा ॥ अपार निकर दोउ सेन वर देखन समर अपार । चढ़ि चढ़ि निज निज वाहना आये गगन मझार ॥

चौ०— आये यक्ष गुह्य गधर्वा । किनरादि विद्याधर सर्वा ॥ हसा रूढ़ विधाता आये । ऐरावत पर इन्द्र सुहाये ॥ मकरा रूढ़ देव वाराशा । बली वद साहत गौरीशा ॥ सिंह सोहि गिरि राज कुमारी । जगत जानि त्रिपुरारि पियारी ॥ रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारी । जयति जयति सुर वृन्द उचारी ॥ वाद्य बजाय विविधि विधि सुन्दर । करहिं गान विद्याधर किन्नर ॥ आनद पूरि रहेउ चहु ओरी । पर मोधित गिरि राज किशोरी ॥ दो०—कहन लगा तव शभु सों मातुलानि धरि पान । ब्याल अग भूपित किये भरमत फिरत मशान ॥

अत—दो०—शभु भवानी विषाद सुनि वरपि सुमन सुर वृन्द । रामण मरण प्रतीत करि मूलहिं सहित आनद ॥ युद्ध राम रामण लखत शोभित देव अकास । शिव गौरी सवाद यह वरणेउ कवि कृत वास ॥ इति श्री शिव पारवती सवाद संपूर्ण समाप्त ॥

विषय—शिव पारवती सवाद लिखा है ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता कृत्तिवास (बगाली) थे । इसका अनुवाद हिन्दी भाषा में भोलानाथ सुत कालीप्रसादने किया है । लिपिकाल और रचनाकाल का पता नहीं है ।

सख्या ४७ बी जोगीलीला, रचयिता—भोलानाथ (जहानगज, फर्रुखाबाद), पत्र—४, आकार—८ × ६ इञ्च, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामदीन गौड़, ग्राम—सिरहपुरा, डाकघर—सिरहपुरा, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ जोगी लीला लिख्यते ॥ रगत वसीकरन ॥ टेक ॥ अद्भुत लीला व्रज लगे कृष्ण दर्शाने । धरि जोगी रूप अनूप चले बरसाने ॥ करि मणि माणिक की भस्म वदन में मेली । कानों में मुद्रा पड़ी वदन में सेली ॥ मृग छाला वाला जोग सकल अलबेली । तोवी तुलसी की माल हाथ में थैली ॥ दिलवर के दर पर चले हैं अलख जगाने । धरि योगी रूप अनूप चले वरसाने ॥ १ ॥ दोहरफ नाग के पलटि महा मुनि ज्ञानी । धारा धारा का ध्यान धुरधर ध्यानी ॥ विद्याधर वेद पुरान कठ गुन खानी ॥ कहै भूत भविष्यत वर्तमान मृदुवानी ॥ शशि रवि जिनके तप तेज निरखि सकुचाने ॥ धरि

जोगी रूप अनूप चले बरसाने ॥ २ ॥ वृषभान भूप के द्वार महा मुनि चलके। आसन जिन किया चकेत जोग तन झलके ॥ लोचन विशाल सम तुल्य कमल के दलके। खोलै मूदै मुनि वार वार जुग पलकै ॥ दरसन के जिनके लगे लोग अति आने। धरि जोगी रूप अनूप चले बरसाने ॥ ३ ॥ जोगी ने अपनी जोग जुक्ति फैलाई ॥ बैठे मुनि साधि समाधि भीरि जुरि आई ॥ राधे ने जोगी खबर श्रवन सुनि पाई। दरशन को कीरति सुता सखिन सग धाई ॥ श्यामा लखि साधी मौन कपट दावा ने। धरि जोगी रूप अनूप चले बरसाने ॥ ४ ॥

अत—ललिता कहै जोगीनाथ वचन कछु बोलो। तुम तौ दर दर पर काज करन को डोलो ॥ औरन सो अति बतरात सुधारस घोलौ। प्यारी जी करत प्रनाम पलक पट खोलौ ॥ दे तीन ताल मुनि किया विसर्जन ध्याने ॥ धरि जोगी रूप अनूप चले बरसाने ॥५॥ पूजै मुनिके पद कमल सकल ब्रजनारी ॥ मिसिरी माखन धरि भेट करै लाचारी ॥ पूछै राधे शशि वदन सुनौ ब्रह्मचारी ॥ है कौन जाति क्या नाम जगत हितकारी ॥ हैं कौन अष्ट का ध्यान हमैं बतलाने ॥ धरि जोगी रूप अनूप चले बरसाने ॥ ६ ॥ है जोगेश्वर मम नाम तपोधनधारी। सरवस योगिन को जाति फिरै दिन चारी ॥ है अचल लोक मम नाम भक्ति हे प्यारी ॥ पुनि दो अक्षर का मन्त्र परम शुभ कारी ॥ हर दम दिलवर का हमे विमल गुन गाने ॥ धरि जोगी रूप अनूप चले बरसाने ॥ ७ ॥ राधे रानी का हाथ नाथ ने देखा। फल अष्ट रिद्धि नव निद्धि करम सुभ रेखा ॥ प्यारी वर सुन्दर स्याम भाग में लेखा ॥ धावैं विरचि सुर सनकादिक शिव शेषा ॥ हौ भाग वान सब भाति रूप गुन खाने। धरि जोगी रूप अनूप चले बर्साने ॥ ८ ॥ राधे कहै मुनि कुछ करामात दिखराओ। जिनसे हमसे अति नेह उन्हे दरसाओ ॥ मुनि कहै सखी धरि ध्यान समाधि लगाओ। मै पढ़ो मन्त्र तुम दरस प्रान पति पाओ ॥ दृग मूदि धरो उर ध्यान सखिन स्यामा ने ॥ धरि जोगी रूप अनूप चले बर्साने ॥ ९ ॥ प्रभु पलट रूप पुनि नटवर भेष धरो है ॥ मकराकृत कुडल श्रवन मुकुट सिर सोहै ॥ शशि वदन कमल दल नैन सैन मन मोहै ॥ उर में अनूप भृगु चरन चिन्ह दर सोह ॥ छवि निरखि श्याम घन कोटि काम सरसाने। धरि जोगी रूप अनूप चले बरसाने ॥ १० ॥ धरि अधर बासुरी बसी करन झनकारी तिहुं लोक चतुर्दश भुवन मोहनी डारी ॥ राधे राधे धुनि गाय रागिनी रारी ॥ भेटे पुनि श्यामा श्याम सखिन सुख भारी ॥ वदिश गनेश कहै भोलानाथ बखाने। धरि जोगी रूप अनूप चले बर्साने ॥ ११ ॥ इति श्री जोगी लीला सपूर्ण समाप्त. लिखा श्याम लाल कायस्थ भोजीपुरा सवत् १९३० वि० श्रावणवदीचौथ ॥

विषय—श्री कृष्णचन्द्र जी ने जोगी का रूप धारण कर राधिका जी को छलने के लिये उनके निकट जाकर वार्तालाप किया राधिका जी ने उनको जोगी ही समझा पर कई कारणों से उन्हो ने श्री कृष्ण जी को पहिचान लिया और उनसे क्षमा प्रार्थना की ॥

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता लाला भोलानाथ जहान गज जिला फरुखाबाद निवासी थे। जाति के श्रीवास्तव कायस्थ थे। ये सवत् १९०५ में वर्तमान थे। लिपि-काल सवत् १९३० वि० है ॥

संख्या ४७ सी राधाकृष्ण लीला रचयिता—भोलानाथ (जहानागंज, फरुखाबाद), कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७३२, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३५ = १८७८ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामनारायण, ग्राम—भीष्मपुर, डाकघर—जलेसर, जिला—एटा।

आदि—भजन—मेरे मन हरि का नाम सम्हारो ॥ तीरथ बरत सग संतन का निस दिन नाम पुकारो ॥ दंभ कपट पाखंड बिसारौ सो साहिब को प्यारो ॥ मेरे मन हरि० ॥ भजिये राम रमा पति शंकर गिरिजा नाम उदारो। सुत परिवार मित्र स्वारथ के को जम पुर संग धारो ॥ मेरे मन० ॥ गणिका वधिक अजामिल गज नाम लेत निरधारो ॥ ध्रुव को धाम दियो करुणा निधि चूनरि आप सम्हारो ॥ मेरे मन० ॥ कंस मारि नृप उग्र सेन कियो काल जाल कियो छारो ॥ भोलानाथ विनय सुनौ कवि जी तुम विन कौन हमारो ॥ मेरे मन० ॥

अंत—बारह मासा ॥ विरह ॥ श्याम सखी मधुपुर को सिधार के मेरी विपति हरैं सजनी रे ॥ मास असाढ़ घन घिरि आइ उमडि घुमडि घन गरजत है री ॥ दादुर मोर पपीहा बोलें कोयल कूक रही बन में री ॥१॥ सावन श्याम सखी घर नाहीं रिमिकि झिमिक झर लाग रही री ॥ घर घर में सखि झूलें झि लेला गावैं राग मलार अहोरी ॥ २ ॥ भादों मास रैन अधियारी दामिनि चमक रही घन में री ॥ सूनी सेज डसी मानो नागिनि विरह व्यथा तन व्यापत है री ॥ ३ ॥ क्वार मास जल नाहीं परत है जल पति मीन नीर बिन हारी ॥ सो गति श्याम बिना सखा हमरी दारुण दुख सहो जात नहीं री ॥ ४ ॥ कातिक कामिनि काग उडावैं विरहा भय कछु नाहीं पर री ॥ निस दिन याद रहे उन हरि की हरि बिन दुख मेरो कौन हर री ॥ ५ ॥ अगहन अगर अदश सखी री पाती न आइ कोइ मधुरा सेरी ॥ ठाढ़ी में हेरों बाट पिया की तन मन की सुधि नाहीं रहा री ॥ ६ ॥ पूस मास अति सीत परति है मीत बिना कछु नाहीं पर री ॥ पाला जोर मोर तन घाटे निस दिन विकल रही सजनीरी ॥ ७ माघ मास जब लाग्यो सखी री रितु बसंत री आइ गई री ॥ बिन पी कैसे बसंत मनाऊ पी बिछुरन सह जात नहीं री ॥ ८ ॥ फागुन अबिर गुलाल उड़त है डफ मृदंग धुनि बाजि रहीरी ॥ बिन बालम सखी हमें न सुहाय कैसे कट दिन आ रजनी री ॥ ९ ॥ चैत वियोगिन भेष किया है लट छुट काय फिरौ बैरी री ॥ म जोगिन बन बन फिरूं ॥ दरस नहिं पाय श्याम वृन्दावन म री ॥ १० ॥ मास बैसाख धूप अति लागी विरह अगिन तन जारत है री ॥ निस दिन व्याकुल फिरति वियोगिन बाते मास अवधि गुजरी री ॥ ११ ॥ जेठ मास पूरन भई आसा पिय आवन की मैं जो सुनी री ॥ भोला नाथ सखी पी पाये पूरन सेज बिछाय रही री ॥ श्याम सखी मधुपुर को सिधारे को मोरी विपति हरे सजनी री ॥ इति श्री बारह मासा विरह संपूर्ण समाप्त ॥ लिपत गंगा राम दैश्य कातिक दीप मालिका अमावस्या संवत् १९३५ वि० ॥

विषय—राधाकृष्ण की लीला लावनी, भजन बारामासी, मलार आदि में लिखी है ॥

संख्या ४७ डी. वारहमासा विरह का, रचयिता—भोलानाथ (जहांनगंज, फरुखाबाद), कागज—सफेद, पत्र—४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा नरायणाश्रम, कुटी—मोहनपुर, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ वारह मासा विरह का लिख्यते ॥ टेक ॥ श्याम सखी मधुपुर को सिधारे को मेरी विपत हरै सजनी री ॥ आषाढ़—मास असाढ़ घटा घिरि आई उमडि घुमडि घन गरजत है री ॥ दादुल मोर पपीहा वोलै कोयल कूक रही वन में री। स्याम० ॥ १ ॥ सवन—सावन स्याम सखी घर नाही रिमिकि झिमिक झर लाग रही री ॥ घर घर में सखी झूले हिन्डोला गावै राग मलार अहोरी ॥ २ ॥ स्याम ॥ भादौं—भादो मास रैन अधियारी दामिनि दमक रही घन मे री ॥ सूनी सेज डसै मानौ नागिनि विरह विथा तन घालति है री ॥ ३ ॥ श्याम ॥ क्वार—क्वांर मास कल नाही परति है तलफति मीन नीर विन ही री ॥ सो गति श्याम विना सखि हमरी दारुण दुख सहो जात नही री ॥ ४ ॥ कातिक—कातिक कामिनि वाग उडावै विकल भई कल नाही परै री ॥ निस दिन याद रहै उन हरि की हरि विन दुख मेरे कौन हरै री ॥ ५ ॥ अगहन अगर अदेशो सखी री पाती न आई कोई मधुदन सेरी ॥ ठाढी मै हेरो वाट पिया की तन मन की सुधि नाही रही री ॥ ६ ॥ श्याम० ॥

अंत—पूस—पूस मास अति सीत परति है मीत विना कल नाही परै री ॥ पाला जोर मोर तन घालै निस दिन विकल रहौ सजनी री ॥ ७ ॥ माघ—माघ मास जब लाग्यो सखी री रितु वसंत की आय गई री ॥ विन पी कैसे वसत मनाऊ पी विधुरन सहि जात नही री ॥८॥ फागुन फागुन अविर गुलाल उडत है डफ मृदग धुनि वाज रही री विन वालम सखि हमै ना सुहावै कैसे कटै दिन औ रजनी री ॥९॥ चैत—चैत वियोगिन भेष कियो है लट छुटकाय फिरौ वौगी री ॥ मै जोगिन रन वन फिरौ ढूंढत नहि पाये श्याम वृन्दावन में री ॥ १० ॥ वैसाख—मास वेसाख धूप अति लागै विरह अगिन तन जारत है री ॥ निस दिन व्याकुल फिरति वियोगिनि वीते मास अवधि गुजरे री ॥ ११ ॥ जेठ—जेठ मास पूरन भई आसा पिय आवन की मै जु सुनीरी ॥ भोलानाथ सखी पीपाये फूलन सेज विछाय रही री ॥ १२ ॥ स्याम सखी मधुपुर को सिधारे को मोरी विपति हरै सजनी री ॥ इति विरह का वारह मासा सपूर्णम् लिखा लिछ्दीन पांडे चैत संवत् १९३२ वि० ॥

विषय—श्री कृष्ण जी के चले जाने पर श्री राधिका जी का विरह वर्णन ।

संख्या ४७ ई पथरीगढ की लड़ाई मलिखान का ब्याह, रचयिता—भोलानाथ (फतेगढ़), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६२५, खडित, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् १८५० ई०, लिपिकाल—सन् १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला गेदनलाल, स्थान—सोरो, डाकघर—सोरो, जिला—एटा।

आदि—इतनी सुनिके रानी वोली हो वच्छराज के राजकुवार मै हूं व्याह करौ तेरे संग नहि तो जहर खाय मरि जाऊं ।। तुमहूं याद रखौ कुछ मेरी भूलि न जै औ

कुमार ।। इतनी सुनिके मलिखे चलिये अरु घोड़ा पर बैठे जाय ।। घोड़ा उड़ायो जब बागन से पहुचे नगर महोवे आय ।। उत में गज मोतिन चलि दीनों अपने महिलन को चलि जाय ।। खट पाटी ले परी महल में अन्न जल दिया सब छोड़ ।।

अंत—लाज राख लइ परमेश्वर न पजा धरों गुसेया नाय ।। फतह करा जग दवे ने मलिखे व्याह लाये करिवाय ।। जैसें व्याह भयो मलिख का भोलानाथ ने दीन्हों सुनाय ।। भूल चूक जो इसमें दखो भाइ लाजो ताहि सम्हारि ।। इति श्री पथरीगढ़ की ल ा मलिखान का व्याह सपूर्ण समाप्त तारीख १० नवम्बर सन १८५० इ० ।।

विषय—विसहन के राजा की पुत्री गजमोतिन और महोब क राजा परिमाल के पोष्य बाल वीर मलिखान का विवाह वर्णन ।।

संख्या ४७ एफ श्रीकृष्ण जी का बारहमासा, रचयिता—भोलानाथ (फरुखाबाद), पत्र—८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३२ = १८७५ इ० । प्राप्ति स्थान—प० रामदान गौड़, ग्राम—सिरह पुरा, जिला—एटा ।

श्री गणेशाय नम ।। अथ श्री कृष्ण जी का बारहमासा लिख्यते ।। असाढ़ घनघोर घुमडि असाढ़ आये मेघ आद्रन गरज रा ।। चहुओर चातक बोल दादुर मोर कुहुक सुनाव हीं ।। पापी पपाहा पिउ रटति अरु कोयल कूक मचाव हा ।। सखि श्याम अस निठुर जियके मास असाढ़ न आवहीं ।। १ ।। सावन ।। सावन में रिम झिम मेघ बरस जोर से झर लावही घर घर में सखिया सावन गाय अपने पिउ को रिझावहा ।। हम टुह वियोगिन श्याम बिन घर बार कछुना सुहावहा ।। पीतम बिना कल ना परै जिय मान विधि समुझावहीं ।। २ ।। ।। भादों ।। भादा अधेरी रैनि सजनी जोर दमकै दामिनी ।। श्री कृष्ण बिन मेरी सेज सूनी दपि तरपै कामिनी ।। काली घटा चहु ओर छाइ पी बिना न सुहावनी ।। सूनी अटारी सेज खाली पी बिना मानों नागिनी ।। ३ ।। क्वार ।। क्वार लागे कास फूले पथ जल घट जावहा ।। पाती न पठइ श्याम न अब कौन खबरि ले आवहीं ।। पठवा म काके हाथ पतिया कान पिय को सुनावहा ।। कुवरि सौति विलमाय राखे हाय हम दुख पावहीं ।। ४ ।।

अंत—माघ—माघ लागे सुन सखी घर घर बसत मनावहीं ।। ओढे बसती चीर सखिया अपन पी को रिझावहा ।। मालिन बसत बनाय लाई पी बिना न सुहावहीं ।। उन कूबरी सग स्याम रीझे दिल मेरा अकुलावहा ।। ८ ।। फागुन ।। फागुन में सखियाँ फाग खेलें अबिर धुधि उडावहीं ।। पिचकारिया चलने लगी बजार की कीच मचा वहीं ।। डफ झाझ अरु मिरदग बाजे फाग सखिया गावहा ।। हम पी बिना मन मार बेठी राग रग न भावहीं ।।९ ।। चैत चेत जोगिन भेष करिके ढूढो पिय को चली ।। बन बीच जोगिन भेश खोले ढ ढती बन की गली ।। सखि स्याम का नहि ख्याज पाती विरह तन आगी जली ।। मन मन वियोगिन सोच करती हाय किस्मत ना भली ।। १० ।। वैसाख ।। वैसाख माधव मास लागा आस पी मिलने म ।। गरमी अधिक पड़ने लगी फूलन की सेज बिछावहीं ।। सखि श्याम मेरे आमिलें ता तन की तपति बुझावहा ।। नहि खाय विष मर जाउगी सब सोच फिर

मिट जावई ॥ ११ ॥ जेठ ॥ जेठ मे सखि स्याम आये सब विथा तनकी गई ॥ फूलों की सेज बिछाय सोई खुशी मन कामिन हुई ॥ फूली न अग रामाय गोरी विरह दुख मिटि जावई ॥ यह कहत भोलानाथ हरि जस गावै ते सुख पावई ॥ इति श्री बारह मासी श्री कृष्ण जी की सपूर्ण रामाइः लिखा गंगा राम वानिया ॥ देवपुर निवासी ॥ मिति जेठ सुदी पूरन मासी सवत् १९३२ वि० ॥ राम राम राम

विषय—श्री कृष्ण जी के वियोग में राधा और गोपियों का विरह वर्णन।

संख्या ४७ जी. शिव अस्तुति, रचयिता—भोलानाथ (जहांनागंज, फरुखाबाद), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८ × ६ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामदीन गौड, ग्राम—सिरहपुरा, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ शिव अस्तुति लिख्यते ॥ लावनी—भाल ससि चिताभस्स चोला। अगड बंम बम बम बंम भोला ॥ सीस पर सोहै जिनके गग। सुधा से जाकी सरस तरंग ॥ विराजत शैल सुता अर्धंग। अग में लपिटे अधिक भुजग ॥ दो०—जटा मुकुट भृकुटी कुटिल लोचन लाल विशाल ॥ नील कठ यज्ञो पवीत उर राजत माल कपाल ॥ सग से भरे भग झोला। अगड बंम बम बम बंम भोला ॥ पौरि सोहै लिलाट चंदन। वदन दुति अमित प्रगट चदन ॥ चतुर्भुज भक्तन भय भजन। मदन मर्दन मुनि मन रंजन ॥

अंत—दो० शिव अस्तुति जो ध्यान धरि कहिहैं प्रेम लगाय ॥ ताके सकल मनोरथ ह्वै है कहि है गणपति राय ॥ भाल ससि चिता भस्म चोला। अगड बंम बंम बम बम भोला ॥ इति श्री भोलानाथ रचित शिव अस्तुति संपूर्ण शुभम् स्वत् १९३२ वि० राम राम राम ॥

विषय—श्री शंकर जी की स्तुति वर्णन।

संख्या ४७ एच ख्याल संग्रह, रचयिता—भोलानाथ (जहानागज, फरुखाबाद), पत्र—२८, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७१०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवविहारी गौड़, ग्राम—जैतपुर, डाकघर—पिलवा, जिला—एटा।

आदि—अथ ख्याल श्री कृष्ण राधिका का लिख्यते। जसोधा दुलरी तेरे कान्ह। लई मन मोहन मेरी जान ॥ मेरी दुलरी लाखन परमान। रतन जडे कचन मोती खान ॥ चुराई मन मोहन ने आन। बहुत कुछ कियो मेरो नुकसान ॥ कृष्ण ने कियो मेरो अपमान। मागते हमरो जोवन दान ॥ दो०—ग्वाल बाल डोलत लिये वेरि करैं अपमान। हम ब्रज को बसिबो ही तजिहै। जहां नही सनमान ॥ सहरि सुन तेरो सुत नादान। लई मन मोहन मेरी जान ॥ जसोदा कहति सुनौ ब्रज बाल। घरै आने देउ मदन गुपाल ॥ डाटिहौं मै उनको ततकाल।

अंत—माशूक जात वेदफा कहैं ससारी। फिर आशक तौ तडफा करता हरवारी ॥ अब करो रहम मेरी हालत पर प्यारी ॥ नहि मिलौ जान तो मरने की अब त्यारी ॥ कहते यह भोला नाथ लावनी ख्याली ॥ तिरछी चितवन की नोक कलेजे साली ॥ ४ ॥ इति श्री

ख्याल लावनी संग्रह भोलानाथ कृत संपूर्ण समाप्त लिखा भाऊ लाल वैश्य ओमर हटिगारी जिला अलीगढ़ तिथि पौष सुदी पंचमी संवत् १९३२ वि० राम राम राम

विषय—तुलसी चोरी चली जाने के कारण श्री कृष्ण राधिका का झगड़ा।

संख्या ४७ आई. बारहमासा लावनी, रचयिता—भोलानाथ (जहानगंज, फतेहगढ़), पत्र—४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० विश्रामसिंह, ग्राम—रहीमपुर, डाकघर—बारहद्वारी, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ भोलानाथ कृत बारह मासा लावनी लिख्यते ॥ टेक ॥ मैं तलफति हौं दिन रैन चैन नहिं आइ ॥ नर उठति विरह की आगि सही ना जाइ ॥ आया असाढ़ घन घार घटा रहि छाइ। दादुर बोल सखि लगत महादुख दा ॥ काली कोयल की कूक हूक निय माइ ॥ मोरे उठत विरह की हूक पिया घर नाहीं ॥ सखि चाते मास असाढ़ खबर ना पाइ ॥ मेर उठत विरह की आगि सहीना जाइ ॥ १ ॥

अंत—लगि रही आस पीतम की जेठ अब आया ॥ पीतम मिलने यों खुशी मना मिल माया ॥ आ मिला सनम विरहिन ने पलंग विछाया ॥ फूलों की सेज बिछाय किया मन भाया ॥ यह कहत भोलानाथ मगन मन माइ ॥ मेर उठत विरह की आगि सही ना जाई ॥ १२ ॥ इति श्री बारह मासा लावनी संपूर्ण संवत् १९३६ वि० लिखा भोरैया बनिया, साक्षी दउआ ॥

विषय—विरह वर्णन।

संख्या ४८. सुदामा चरित्र, रचयिता—भूधरदास, पत्र—१२०, आकार—११ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८०, रूप—प्राचीन, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सन् १२४९ (?) प्राप्तिस्थान—पं० रामनारायण, ग्राम—अमौसी, डाकघर—बिजनौर, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गनेश जी सहाय नम ॥ श्री रामजी सहाय नम श्री पोथी सुदामा चरित्र ॥ आचकइ प्रभु दायनमो। टेर सुनाएवो वैन। जासु जासु र भूधरा। चन्द्र चूड़ पद रैन ॥ चन्द्र चूड़ पद जपन कर। जग सपने को ऐन। और कछुक तुव कान धर। सुधा सर समा वेन ॥ कलऊ के कवि गन बहुत। बरना चरित अनंत। कहा लु सुरस बखानो। सभी सलोनो संत ॥ तुव चरित्र मो मित्र को। पर प्रसद्ध संसार। जासु बाहुरी प्रेम ते। हम कान्हों उद्धार ॥ उठउ ततछन सब्द सुनि। भग के रन गुन ग्यान। प्रथम पई उच्चार भौ। गुन पूरन ब्रह्म समान ॥

अंत—॥ छप्पै ३६० ॥ कृश्न कृपा ते दंपति अचल राज बसुधा करें। सुरपुर नरपुर नागपुर तिहु पुर रूप कर भर ॥ दाऊ मूरति के धम ते मधुकर लग मया करन। सप्त दीप नव षड भरि सदा वृत्त लागे परन ॥ हरि चरित्र हरि मित्र सुनि कह नियरे कवि कान। जाइ दिया विधि सहस मुख सोउ समुझि कै मौन ॥छप्पै ३६१॥ महा कीत रवि कृष्ण जस जदपि न कों पावै पार। जदपि कीन रहुके कहे ग्यान भवन उजिआर ॥ अस विचारि कहे भूधरा कछुक सुजस बरनन कियो। मानो मधुप समुद्र ते रता भरि जल का छाइ लियो ॥ प्रभु

सहस्त्र शिव विश्नु कुगमा कशुरि पगु दश। संपूरन पोथी वनी दीन उधारन प्रेमरस ॥ इति श्री पोथी सुदामा चरित्र सम्पूर्णम् ता० १० माह माघे सं० १२३९ सन मुलकी

विषय—(१) पृ० १ से पृ० ३० तक—मंगला चरण एवम् प्रस्तावना और वदनाएँ। सुदामा की दीन दसा का वर्णन। सुदामा तथा उनकी पतिव्रता स्त्री का संवाद। स्त्री का अपने पति को कृष्ण के पास भेजने का आग्रह और उसका सशंक हो पत्नी को समझाना सुदामा का वहुरी लेकर कृष्ण के पास जाना और भेंट को तदुल लेना। (२) पृ० ३१—६२ तक—सुदामा का स्त्री को बुरा भला कहते मार्ग लेना। सुदामा का नगारादि के ठाठ को देख कर स्तम्भित हो जाना। कृष्ण की ड्योढ़ी पर उसका पहुँचना। कृष्ण द्वारा उनका हार्दिक स्वागत। पाद प्रक्षालनादि के पश्चात् कृष्ण द्वारा अपने मित्र सुदामा की वडाई पूर्वक कथा एवम् हास्य विनोद वर्णन। कृष्ण का वहुरी लेकर खाना। लक्ष्मी आदि का शंकित होना। मित्र का विदा होना॥ (३) पृ० ६३—१२० तक—सुदामा का सकल्प विकल्प करते निज नगर को गमन। कृष्ण की कृपा से सर्व सुख सपत्ति का होना और उसको देख कर सुदामा का खेद। स्त्री मिलन। प्रमोद। आनन्दपूर्वक कृष्ण की कृतज्ञता प्रकाशन और समोद जीवन व्यतीत करना।

संख्या ४९ ए. भूधर विलास, रचयिता—भूधरदास, पत्र—११४, आकार—१३३⁄४ × ७३⁄४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८८१, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रिषभदास जैन, ग्राम—मोहना, डाकघर—इटौंजा, जिला—लखनऊ।

आदि—ॐ नमः सिद्धेभ्य. अथ भूदलि विलास (भूदर विलास ?) लिष्यते॥ अस्तुति॥ कवित्त॥ ज्ञान जिहाज वैठि गनपत से गुन पयोध जरा नाहि तरे हैं। अमर समूह आइ अविनी सो घिसि घिसि शीस प्रनाम करे हैं॥ किधो भाल कुकरम की रेखा दूरि करन की वुद्धि धरे है। ऐसे आदि नाथ के अहिनिस हाथ जोरि हम पांय परे हैं॥ १॥ कायोत्सर्ग मुद्रा धरि वन में ठाडे रिखिग रिद्धि तजि हीनी। निह चैल अग मेरु है मानों दोनो भुजा छोरि जिन दीनी॥ फसे अनंत जत जग चहलें दुखी देखि करुना चित लीनी। काढन काज तिन्हे समरथ प्रभू किधौं बांह दीरघ ये कीनी॥ २॥ करनो कछू करन तैं कारज जाते पॉइँ प्रलंब करे है। रह्यो न कछू पाइन तैं पै वो ताही तै पद नाइ टरे है॥ निरखि चुके नैननि सब याते नेत्र नासिका अनी धरे हैं। कानन कहां सुने कानन यो जोग लीन जिन राज करे है॥ ३॥

अंत—॥ ष्याल॥ अरेहां अब चेतो रे भाई॥ मानुष देह लही दुलही सुघरी। उघरी सत सगति पाई॥ १॥ जे करनी वरनी करनी नही। ते समझी समझाई॥ २॥ अरहां॥ यों सुभथान जगे उरग्यान। विष विष पांन त्रपान वुझाई॥ ३॥ पारस पाइ सुधारस भूधर। भीख न मांगत लाजन आई॥ अरेहां॥ राग सोरठा॥ साधो सो गुरुदेव हमारा है। जो अगिनि में जो थिर राषे यह चित चंचल मारा॥ साधो॥ १॥ करन कुरंग खरे मदमाते। जप तप खेत उजारा है॥ सा०॥ २॥ जम डोरि जोरि वस कीनो। औसर

ज्ञान विचारा है ॥ साधो जा लछमी को सब जग चाहै ॥ दास हुआ जगमारा ॥ साधो सो प्रभु के चरण की चेरी ॥ देखो अचिरज भारी है ॥ ३ ॥ लोभ सरफ के कहर जहर की ॥ लहर गई दुख यारा है ॥ साधो भूधर तारि वरिष के सिष हूजौ ॥ तब कछु होइ समारा है ॥ सोधो सो गुर देव हमारा है ॥ ४ ॥ पुन ॥ स्वामी जी शरण तुम्हारी है समर्थ शांति सकल गुण पूरे ॥ भयो भरोसो भारी ॥ स्वामी ॥ १ ॥ जनम जरा रोग दैश जीतिकैं ॥ टेव मरन की टारी ॥ हमहू को अजरा मर करियौ हो ॥ भरिहौ श्रास हमारी ॥ स्वामी ॥ २ ॥ जनमे मरे धर फिरि जो ॥ सो साहिब संसारी ॥ भूधर पर दारिद्र कीम । दलिहै जो है आपुभिखारी ॥ स्वामी ॥ इति भूधर विलास सम्पूर्ण ॥ समाप्त ॥ श्री मिती मासोत्तमें मासे शुक्ल पक्षे ॥ बसत पचमी ॥ गुर वासरे ॥ सवत् १९३४ ॥ लिखत ॥ वृन्दावन चद्र सुदर्सिंस मदसह पारना ॥ इति ॥

विषय—(१) पृ० १ से २७ तक—जैन शतक ॥ आदिनाथ आदि देवों की स्तुतियाँ । कुछ नमस्कार ॥ भोग निषेध ॥ वट् निरूपण, ससारी दशा निरूपण । ससारी जीव चिंतन । अभिमानी निंदा व्यवस्था । वृद्धदशा । कर्तव्य शिक्षा । यज्ञ में पशुओं के वध का विरोध तथा सत वमन का वर्णन कुकवि की निंदा । मन हस्ती । काल समय और अज्ञानता का वर्णन । धैर्य तथा आशादि का वर्णन । चौबीस तीर्थंकरों के चिन्ह तथा अनुभव आदि का निर्णय । ग्रन्थकार परिचय—आगरे में बाल्बुद्धि भूधर खडेलवार बाल के ख्याल से कवित्त जे बनाये हैं । ऐसैं ही करत भो जैसिंह सवाइ सूबा हाकिम गुलाब चदर है तिस थान है ॥ हरी सिंह साहि के सुबंश धरम रागी नर तिनि कहैं तैं जोड़ कीनों एक ठाठ है । फेरि फेरि परे मेरे आलस को अत भौ उनको सहाय यह मर मन माने है ॥ ग्रथ निर्माण काल—सत्रह सौ इक्कीस ये । पौंप मास मत लीन । तिथि तेरस बुधवार को । सतक सँपूरन कीन ॥ (२) पृ० २८ से ३२ तक—भूपाल चौबीसी, (३) पृ० ३२ से ३५ तक—दर्शन स्तोत्र (४) पृ० ३६ से ३६ तक—दर्शन स्तवन, (५) पृ० ३६ से ३७ तक—करुणाष्टक, (६) पृ० ३८ से ४१ तक—अष्टक, (७) पृ० ४१ से ४२ तक—विनती जिन राज की, (८) पृ० ४२ से ४५ तक—परमारथ जकड़ी, (९) पृ० ४५ से ४६ तक—शिष्यादि जकड़ी । (१०) पृ० ४६ से ४६ तक—गुर विनती (११) पृ० ४६ से ७० तक—रिषभ देव जीके दशभवांतर । नव कार महात्म्य । हुक्का निषेध । आर्ती । प्रभाती ॥ सोरठ ख्याल तथा अन्य रागों में उपदेशात्मक गीत, (१२) पृ० ७१ से ९८ तक—अष्टक विनती । गुर विनती । विवाह समय के मगल । जैन की मगल । चौबीस तीर्थकर विद्धि माला । जिन गुर मुक्तावली । प्रतिहार्य । एकी भाव स्तोत्र । प्रस्तावी शतक । (१३) पृ० ९९ से ११४ तक रात्रि भोजन की कथा । अष्ट चाल धमाल की । देह वृक्ष वर्णन । देह दशा (वृद्धादि) वर्णन तथा कुछ उपदेशात्मक गीत ॥

टिप्पणी—प्रस्तुत पुस्तक में भूधर दास जी की छोटी बड़ी कुछ रचनाओं का सग्रह है । इसमें काव्य तथा सगीत दोनों ही प्रकार की रचनाएँ हैं । प्राय सभी रचनाएँ

सांप्रदायिक हैं और उनका संबंध जैन धर्म से है। कुछ थोडी सी कविताएँ ऐसी है जो विशुद्ध साहित्यिक है। भूधरदास जी की इन रचनाओ में कुछ तो स्वतन्त्र है और कुछ अनुवाद हैं। भाषा से यद्यपि कवि का लक्ष्य ब्रज भाषा की ओर झुका हुआ है फिर भी उन्होंने कही कही स्वतंत्रता से खडी बोली का भी प्रयोग किया है। थोडा सा प्रयोग गुजराती का भी है। इनकी रचनायें उपदेशपूर्ण है।

संख्या ४९ बी. चरचा समाधान, रचयिता—भूधरदास, पत्र—१६४, आकार—१३½ × ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९५२, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०४ = १८४७ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रिषभदास जैन, ग्राम—मोहना, डाकघर—इटौंजा, जिला—लखनऊ।

आदि—॥ ६० ॥ ॐ नमः सिद्धं ॥ अथ चरचा समाधान लिष्यते ॥ दोहा ॥ जयौ वीर जिण चन्द्रमा। उदौ अपूरव जाउ। कलियुग कारे पाप मै। कीनो तिमिर विनास ॥१॥ वंदौ वानी भगवती। विमल जौन्ह जगमाहि। भरम ताप जासौ मिटे। भवि सरोज विग-साहिं ॥ २ ॥ गौत्तम गुरु के पद कमल। हृदय सरोवर आन। नमौ नमौ हित भाव सौ। करि अष्टांग विधान ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ जुगल पानि जुग पाँइ। पचम सीस स्पर्स भुव। विमल मनोवच काय। यह अष्टांग प्रणाम हुव ॥ ४ ॥ नदुक्त ॥ हस्तौ पादौ तथा द्वौ द्वौ। शिरो भूमौच पचम। मनो वक्काय शुद्धिश्च। प्रणामोऽष्टांग उच्यते ॥ आदि मधुर अवसान कटु। काम भोग सब जान। आदि मधुर अवसान मधु। तप कारज परधान ॥ ५ ॥ आदि अंत मे विरस है। वैरभाव दुख रूप। आदि मधुर आगें मधुर। मैत्री भाव अनूप ॥ ६ ॥

अत—सर्व कथन को मथन यह। जिन मन परम पिछान। जैन धरम जग कल्प तरु। सेवौ सत सुजान ॥ १३ ॥ सेवा श्री जिन धर्म की। करै सकल सुभ श्रेय। पय की दाता गाय ज्यौ। दुहत दुग्ध को देय ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ जेन धरम दुल्लभ जगमाही। विनसै अै सिव दायक नाही ॥ समुझि सोचि देख्यौ उर भलै। कोठा धरे धान नहि फलै ॥ १५ ॥ दोहरा ॥ देव राज पूजत चरन। असरन सरन उदार। चहूँ संघ पह मगल करहु। प्रिय कारिणी कुमार ॥ १६ ॥ इति श्री चर्चा समाधान भूधर दास कृत सम्पूर्ण मिती वैसाप वदी ॥ १ ॥ प्रतिपदा ॥ गुरु वासरे ॥ सवत् १९०४ ॥ लिपित कन्हीलाल सघई पात्रे मध्ये ॥ शुभं भूयात् ॥ अपर मपीद मस्तु ॥ सुभं रस्तु ॥ आर्या ॥ तैलानल चौरेभ्यो। सद्वेष्टन तोय दायते यस्तु ॥ यत्नेन रक्षणीयं ॥ दुर केन ॥ लिख्यते यस्मात् ॥ यादृश पुस्तकं दृष्टा तादृश लिपित मया यदि शुद्ध विशुद्धं वा मम दोषे न दीयते ॥

विषय—(१) पृ० १ से ६ तक—मंगला चरण। जैन धर्म का महत्व, अध्ययन के भेद। ग्रन्थ चतुष्टय। (२) पृ० ७ से ४० तक—सम्यग्दर्शन का स्वरूप। व्यवहार की परिभाषा। सम्यक्त की उत्पत्ति। लब्धि का स्वरुप। सम्यक्त के भेद तथा उनके स्वरुप। वुद्धिलना तथा विसजोजना का अन्तर गुण स्थान वर्णन। निर्जरा वालो का स्वरुप। केवली तथा परमौदारिक सरीर का स्वरुप ॥ (३) पृ० ४१ से ९४ तक—केवली तथा परमो-दारक का विभेद। वर्णन। वाणी का पसग। अर्द्ध मागधी का विवरण। सम वसरण का

वणन। (अशोक वृक्ष का वणन समव शरण के स्तूपादि का कथन) अष्टम पृथ्वी (इषत्प्रभा) का वणन। मोक्ष माग। आचार्य। उपाध्याय और साधु के पदों में किसकी महानता है ? मुनियों के कर्तव्य कम। आहार दानादि का विधान तीथ कणादि का वर्णन। पाश्व जी के सबंध की कुछ बातें। तीथकरों के प्रतिमाओं के चिन्हों का वणन। (४) पृ० ९५ से १४० तक—प्रतिमा के पूजनादि का विधान नदी श्वरादि के उत्सवा का कथन। द्वीपा के विस्तारादि का वर्णन। पर्याप्त और प्राण का विभेद नरकादि का वर्णन। सूक्ष्मवाद जीवनादि की आयु का प्रमाण। नाराच आदि का वणन। जाती स्मरण का स्वरूप। उल्का पात। पट कोण। सुमेर पवत। और कालादि का भेद। भक्ष्या भक्ष्य का विवरण। (५) पृ० १४१ से १६४ तक—इतिहास धम। समाज नीति तथा अथ शास्त्रादि सबधी कुछ शकाओं का निवारण ग्रन्थ निमाण काल—अठारह शत पट होतरा माघ मास अरमान। सुकुल पच तिथि पचमी ग्रथ समापित जान॥ ग्रन्थ के पठन पाठन का फल। जैन धर्म की महत्ता तथा अवसान मगल।

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रन्थ के कर्ता कवि भूधर दास ने एक सौ चालीस जैन धम सबधी चर्चाओं का वणन किया है। प्रत्येक चर्चा के अन्तगत कोई न कोई शका उठा कर विविध युक्तियों के साथ उसका निवारण किया है। प्रमाण स्वरूप गोमट सारादि कई ग्रन्थों के वाक्य भी उद्धृत किये हैं। कुछ गाथाओं आदि का उल्लेख करके भी विषय को स्पष्ट किया गया है। प्राचीन विद्वानों के मतों के साथ साथ गो० तुलसीदास जी के समकालीन आगरा निवासी कविवर बनारसी दास जी के मत को भी माना है। ग्रन्थ से जैन धम सबधी अनेक ज्ञातव्य बातों का पता चल सकता है। रचयिता का जैन संसार में अच्छा मान है।

संख्या ४९ सी पारस पुराण, रचयिता—भूधरदास (आगरा), पत्र - २२०, आकार—१०३/४ × ५१/२ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७८९ = १७३२ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रिषभदास जैन, ग्राम—माहना, डाकघर—इटौंजा, जिला—लखनऊ।

आदि—६०॥ सिद्धि श्री जिनो जयति ॥ अथ पारस पुराण भाषा लिख्यते ॥दोहरा॥ मोह महातम दलन दिन। तप लक्ष्मी भर तार॥ ते पारस परमेस मुझ। होहु सुमति दातार ॥ १ ॥ बामा नदन कल्प तर। जयो जक्त हितकार। मुनि जन जाकी आसि करि। जाचें सिव फल चार ॥ २ ॥ छप्पय ॥ भुवण तिलक भगवत सत जन कमल दिवाकर। जगत जीव बधन अनत अनुपम गुन सायर ॥ राग राग गमय मत दल उथ पन चली अति। रमा कंत अर हत अतुल जस वत जगत पति ॥ महिमा अनत मुनि जन जपत आदि अत सबकी सरण ॥ सो परम देव मुझ मन बसो या सनाह मगल करन ॥ ३ ॥

अत—जो भगवान बखान करी। सो गुणोत्तम नैकर आनी। आपर आप उदीप। विघन आपदा दुख हरैं रोग सोग नहिं जास। प्रीति दान कर यह सुनें ॥ कथा जिनेश्वर पास ॥ २९ ॥ पार्श्व नाथ शिव सुख करैं ॥ नाम लेय सुख होय ॥ महिमा यह की को कहै ॥ आनद मगल सोय ॥ ३० ॥ अन्तर रुचि की चाह सो ॥ सुनै जैन वचनम् ॥ उपदेशक

को दान दे। मान करें बहु बार ॥ ३१ ॥ सारा जनम जग में नहीं। सुर में सु जैन पुरान ॥ पूजा साधरमी करे। जय जय मगल गान ॥ ३२ ॥ इति श्री पार्श्व पुरान भाषा मा भगवंत निर्वानो गम वर्नन नाम संधि सम्पूर्ण समाप्त ॥ पत्र एक सौ दस ॥ चौपाई सोलह से बत्तीस ॥ छप्पै छन्द कवित तेईस ॥ सवैया इकतीस ॥ अरिल्ल दोहा सोरठा चालीस सर्व संख्या सोरह से बत्तीस ॥ सवैया तेईस

विषय—(१) पृ० १ से २० तक—भक्त भूत मत वर्णन। (२) पृ० २१ से ३३ तक—गज स्वर्ग गमन। विद्याधर विरत प्रभु ... वर्णन (३) पृ० ३४ से ६३ तक—... रतन नाम। सामान्य नर्क दुख वर्णन। ... पद प्राप्त नर्क अवस्था का वर्णन। (४) पृ० ... से ९८ तक—... सुर स्त्री वर्णन। आनंद मुनि ... प्राप्त वर्णन। (५) पृ० ९९ से १२० तक—पंच कल्यान सार। प्रात वर्णन। देवागमन। प्रश्न बात उत्तर तथा गर्भावतार वर्णन ॥ (६) पृ० १२१ से १३७ तक—नागदत्त वर्णन। भगवान जन्म। ... का वर्णन ॥ (७) पृ० १३८ से १७४ तक—अष्टसिद्धि प्राप्ति आदि का वर्णन तथा भगवान वैराग्य ज्ञान वर्णन (८) पृ० १७४ से २२० तक—... प्रश्न। सामान्य ... ज्ञान और ... ज्ञान ... रूप। जीव निरूपण। समुद्र बात वर्णन। सिद्ध वर्णन। अजीव तत्व वर्णन पंच गुनान भेद ॥ धर्म वर्णन। द्रव्य वर्णन। तत्व वर्णन प्रतिमा भेद। ... । ... । तथा भगवान निर्वाण वर्णन। ग्रन्थ निर्माण काल—संवत सत्रह से ... । और नवासी ... ॥ सुदि असाढ़ तिथि पचमी। ग्रन्थ समापति कीन ॥ ग्रन्थ पठन पाठन फल ॥

संख्या—५०. महाराजा भरतपुर और लाट साहब का मिलाप, रचयिता—सुल्तान-शेख, (नि० स्था० भरतपुर), कागज—देशी, पत्र—३७, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८७६ वि०, लिपिकाल—१८७६ वि०, प्राप्तिस्थान—प० शिव कंठ दुबे, स्थान—विगहापुर, डाकघर—ग्राम, जिला—उन्नाव (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ मिलाप श्री श्री श्री श्री श्री महेन्द्र महाराजा रणधीर सिंह और लाट साहब का लिष्यते ॥ दोहा ॥ बिना कृपा भगवत की कलम न पकरी जाय ॥ सदा भवानी दाहिनी सुकंठ सुरसती माइ ॥ मिलाप श्री महाराज को ॥ हुई सहर में पवरी यह सुरू साम से जारी। सरकार से अंगरेज से मिलने की तयारी और सहर भरत पुर में यही सोर है जारी ॥ करते हैं सबी साथ के लसकर की तयारी ॥ सरकार ने लसकर को हुकुम डेरो का दिया। सेष इनाम विश्राम को उनके साथ कर दिया ॥ दीवान जवाहर लाल और फौजदार मोतीराम ॥ उनपास जो सरकार के रहते हैं सबके काम ॥ महराज का उकील है जानी जी साहूकार ॥ जिसका सु लाठ साहेब से सु हैगा बड़ा प्यार ॥ लीक कू देषा है जिसने गवर लाठ कू ॥ देषा है जिसने सबली फिरंगी की जाति कू ॥ सबसे अव्वल जो राव साहब भिजाये ॥ और गुड की मंडी पे डेरे पडे कराए ॥

अंत—सुदामा के सु हियरा ही थे वे ऐसे कृष्णचंद ॥ एक पल में दल दरके सब काट दिये फंद ॥ मै उसकी सनै पानी से कहता हू न ये छंद ॥ तुम ऐसे श्री महाराज हो

मेटेगो मेरे दद ॥ ऐसो मिलाप जग में हमने कहा न देषा ॥ २७ ॥ जिन पावों में पनही नही विनकू दिये गज राज ॥ करि देव राउ रहै में में तुम ऐसे हो महाराज ॥ दुनिया जहान खलक के सिद्ध करते होगे काज । हमारी इसी अरज की है आप को यह लाज ॥ ऐसा मिलाप जग में हमने कहा न देषा ॥२८॥ बुड्ढे जवान लरके दिल भरब यार जानी ॥ राजा अमीर बकसा हो मुलक अवा दानी ॥ कगाल और अदना यह सबकू है कहानी ने सुखी रहें वे मुलुन जब तक नहर में पानी ॥ ऐसा मिलाप जग में हमने कही न देषा ॥ २९ ॥ इति श्री मिलाप महाराज श्री ब्रजेन्द्र श्री श्री श्री श्री श्री रणधीर सिंह जी भरतपुर और अग्रेज की मिलाप सपूणम श्री राधा रमन जी सहाय श्री हरये नमः मिति फाल्गुन सुदी ६ सवत् १८७६ वि० शुभ भावत् ॥

विषय—भरतपुर के महाराजा रणधीर सिंह और अगरेजों के लाट साहब के मिलाप का वणन है ।

सख्या ५१ ए वेदस्तुति, रचयिता—भूपति पत्र—५ आकार—७ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्) – १२८ रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामकृष्ण जी, ग्राम—फतेहाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्री परमात्मने नम । अथ वेद अस्तुत भोपतिकृत लिख्यते ।१। राजा कहै सुनो रिषि राइ हरि अस्तुति जो वेदन गाइ । निगुन अस्तुति सगुण नाहीं, मो मन में आवत कछु नाहीं । तिहि कारन यह पूछत भेवा सो समझाय कहरे सुपदेवा । यह सुनके बोले रिषि राइ, राजा सुनो कथा मन भाइ । हरि इच्छा ते सिछा पाइ, तब यह अस्तुत वेदन गाई । एक दिवस नारद मुनि ज्ञाना, हरि भक्तन में बडे निनानी । दोहा । अस्तुत श्री भगवान की वेदन कही सुनाय । सो विधि हो जानत नहीं कहौं प्रघट समुझाय । चौ० । श्री नर नारायण सुर ज्ञानी, नारद प्रति बोले मृदु बानी । एक दिवस सनकादिक ज्ञानी सुत विरच के परम विनानी । बैठे हुते दव पुर माहा, चार चद ज्यों उटगन माहीं । तहा चली यह बात सुहाइ जिहि विधि अस्तुत वेदन गाई ।

अत—या विधि नारायन सुर ज्ञानी, श्री नारद प्रति कथा बषानी । तबै रिषिन मिलि पूजा कीनी, वेद अस्तुत चित में धारलीनी । श्री नारद वह कथा सुहाई, वेद वियास को आय सुनाई । तिनसो सुनी हती हम जसी तुमको बरन सुनाई तेसी । यह वेद अस्तुत कथा सुहाद सकल रिषिन को सनक सुनाइ । दोहा । यह अस्तुत जो रैन दिन कहे सुने चित लाय । तिनको पाप रहै नही विश्व लोक बोह जाय । इति श्री वेद अस्तुत भोयात कृत सम्पूण । सम्वत् १९३१ लिखत हरदव दास चौबे ।

विषय—वेद में वणित भगवान की स्तुति ।

सख्या ५१ बी वेदस्तुति, रचयिता—भूप, पत्र—६, आकार—८½ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—मधुसूदन लाल, स्थान—गुरकी मडी, फतेहपुर सीकरी, डाकघर—फतेहपुर सीकरी, जिला—आगरा ।

आदि-अंत—५१ ए के समान।

संख्या ५२. बिहारनदास जी की वानी, रचयिता—विहारनदास जी (वृंदावन), —देशी, पत्र—१४८, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण ुप्)—१५९, रूप—बहुत प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—अद्वैतचरण जी, —घेरा राधारमण, वृंदावन, डाकघर—वृंदावन, जिला—मथुरा।

आदि—श्री वृन्दावन सहज सुहावनो। नवलन व नागरि। रानव नागर नेह वनहवै। होरी खेलन के मते न वलन नागरि रावनि बैठ करि ान वनाहंवे। ै कुज विराजही॥ रा॥ रवितन याके तीर। व। अंग विहंग कुलाहली। रा। नव २ जुवनिन की भीर। व॥ ३०॥ स्याम ओर की सांवरी। रा। गोरी के ात॥ उमगि चली चित चोप सौ। रा। अपनी २ गहि घात। वनाहंवे॥ ४॥ सव ान अनुसारनी। रा। उनि सजिलई लीनी सब सोज। वन।हंवे। लाल रतन मनकी ंसरि की ओज। वनाहवे। ५। कस्तूरी कपूंर सौं॥ रा। साखि कुनकुमा आदि। ्लयो गिरि धरौ गोरासेद जिवादि॥ ६॥

अत—कृतघन उपगार हिन मानतु रापत तन मन गोई। कपट प्रीति परतीति न हला भला दिन दोई। कांचौ कटुक सुभाव वा कसौ तजै याजै नींवौं मीठौ होई। मधि अवसान विसुपई रह्यौ विपौ विप भोई। जैसे जरि अग्नि कौ अगनेमी तलफ ई। श्री विहारी दास औझन पाउ अब श्री गुरु चरन सजोई। इति।

विपय—कृष्ण भक्ति।

सख्या ५३ ए. विहारी सतसई, रचयिता—विहारी लाल, पत्र—५७, आकार— ५३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५६, खंडित, रूप— ा, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० कैलाशपति जी सैंगुरिया, ग्राम—विजौली, र—वाह, जिला—आगरा।

आदि—मोहन मूरति श्याम की अति अद्भुत गत जोइ। वसति सुचित अन्तर ति विम्वित जग होइ। तजि तीरथ हरि राधिका तन दुति करि अनुराग। जिहि लिनि कुज मग पग पग होत प्रयाग। सघन कुज घन घन तिमिरि अधिक अंधेरी। तऊ न डरिये है श्याम यह दीप सिखा सी जाति। सघन कुंज छाया सुखद शीतल समीर। मनहूं जात अजौ वहे वा जमुना के तीर।

अंत—चित मैं तो कछु चोपसी निवटन लागे नेह। कहूं दुरै देखै कहूं कहू दिखावै सोरठा—हौं रीझी यह भाव सुदत खुलत हम तीय के। मानौं ठोर तवाव श्रीमति ेय जानिके। दोहा। मलहम यो वासो रहत वाही सो दुति रंग मनमासो मानिय ाही तिय के सग। होत कहा कहि हे सखी दम्पति की रस रीति। वास मये की वि गयो मदन मोहि जीति। जद्यपि है शोभा सहज मुकृत नीत उस देखि। गुहे ठौर नरमें होत विशेप।

इति श्री विहारी सत्सैया सम्पूर्ण शुभमस्तु।

विपय—श्रृंगार रसके ७०० दोहे।

संख्या ५३ वी सप्तसतिका, रचयिता—विहारीलाल, कागज—बासी कागज, पत्र—२८, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११७६, खंडित, रूप—बहुत प्राचीन, पद्य-गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री गोविंदराम ब्राह्मण, ग्राम—हिंगोट खिरिया, डाकघर—बमरौली कटरा, जिला—आगरा।

आदि—॥ ११ ॥ नायक नायका को परदेस क चलते । ग करि रह्यो अनावत है ॥ दोहा ॥ कागद परि लिखितन बनै, कहत सदेस लजात । कहि है सब तेरी हियो, मेर हिय की बात । राधिका को वचन श्री कृष्ण सों ॥ दोहा ॥ कुंज भवन तजि भवनकु, चलिये नद किशोर, फूली कली गुलाय की, चटकाहट चहुओर ॥ सखी को वचन सखी सौं ॥ कइ तन देवर की कुसत, कुलतिय कलह मरात । पजिर गत मजार ढिग, सुक ज्यों सूकत जात ।

अत—॥ सखी वाक्य ॥ होय वढ़ाति सजगन की रूप की लख्यो न जात । पीप तमचारी ये करी मतवारी अखियान । ग्रन्थान्ते कवि वचन ॥ हुकुम पाय जय सहि को, लहि राधिका प्रसाद । करी विहारी सत सया भरी अनेक सवाद । १६ । अथ पूव पीप का अकारादि वचन ताके ॥ दोहा ॥ प्रथम अकारादि आदि दे अबरह कार अन सरन ॥ मसि फत्त करि एकत्र किय, अति प्रवध इह जान । जाकों जासु वचन है सोइ कोइ प्रवान ॥ जहा होइ अनमिल कछू, लेहु सुधारि सुजान ॥ इति श्री कवि श्री विहारीदास कृता सप्त सतिका समाप्ता टका कगैरो वागसी, कागद करत कमान । कताए मति छाडियो जब लग छडै प्रान ॥ श्री । श्री । श्री । श्री । श्री ।

विषय—इसमें बिहारी के ५०० से अधिक दोहों का सग्रह है ।

संख्या ५३ सी बिहारी सतसइ, रचयिता—बिहारीलाल, कागज—बाँसी, पत्र—२०, आकार—१० × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—९१०, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स १७६२ = १७०५ ई०, प्राप्ति स्थान—श्री ललिता प्रसाद जी दीक्षित स्थान—जगनेर, डाकघर—जगनेर, तह०—खैरागढ़, जिला—आगरा ।

आदि—केनेपट में मिल मिल, झलकत ओप अपार । सुर तर की मानु सिंह में, एसी सपल्लव डारि ॥ मारठोभी गाह गहीं, नैन बटोही मारि । चनक चौंध में रूप हासी कासी मारि । भीनऊ कोरक जलन अब कहाँ काढ़ कौन । मोमन मोहन रूप मिल पानी में को लौन । लग सुमन ह्व हैं सुफल, आतप रोष निवारि ॥ वारी वारी आपनी, साच सुरदता वारि ॥ अजों तरनाइ रहैं श्रुति सेवति इकरंगि ॥ नाक बास बेसर लसो बसि मुगनिन के संग ॥ जम करि मुह नरि हरि परचो इति विधि हरि चित लाऊ ॥ विसम त्रिखा परि हरि आओ नर हरि के गुन गाऊ ॥

अत—दोहा करउ गई घूँघट करक उसर ऊपर कु करोट । सुख मेटै टूटी ललन लखि ललना की ओट ॥ परपन पोधनि लखि रहुहु लगी कपोल के ध्यान । करे लेप्यो पाटलु विमल प्यारी पवन घन ॥ तर कुच कए नो कहा, पावस के अवि सार । जानि परेगी देखियो छामि न धन अधिकार ॥ केवा आवन दृष्टि गली । वही चलाई चलेन । दरसन की

साधे रहे सूधो परहित नैन वेसर मोती धन कही को चूके कुल जानि । पीवा भेरनि अमो की रस निधरक दिन रात ॥ निय मुख करव हीर । जरी नरी वेटी वदे विनोद—सुत सनेह मान लियो बुध पोरन विध गोद ॥ इति श्री कृति विहारीकृत दोहरा सप्त सतक संपूर्ण ॥ श्री ॥ लिखतं प० राम विजय गणित सवत् १७६५ (?) विसाख १ दिन ।

विषय—श्रृंगार रस वर्णन ।

संख्या ५४. रस प्रक्रिया, रचयिता—बिहारीलाल (बाह, आगरा), पत्र—५१, आकार—८ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०६१, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८०२ = १७४५ ई०, प्राप्तिस्थान—प० लक्ष्मीनारायण वैद्य, स्थान—बाह, डाकघर—बाह, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । अथ रस प्रक्रिया लिख्यते । तत्प्रयोगी पदार्थान्याह प्रथम स्वर्णा दिधातवः स्वर्णातारं नागवं गौ ताम्रं कान्त च तीक्ष्णकं मुडक त्राणधा लोहं काश्यार वर्तल त्रिधा उपलोह समाख्यातम् । सोना चांदी सीसा रांग तामो कान्तिसार पोलादि खेरी ए आठ धातु है कासी पीतरी तोर ए तीन उप धातु हे और गडूर लोह किटी ।

अत—अथ जेणल के संवधते और हू हत्य को तैल को विधान कहे है । आजाहारे के क्वाथ में सिगिया पीसि के तेल निकासे लाल आजाहारे के क्वाथ में पीसि वकुचि वकुची को तेल निकासे । इति श्री रस प्रक्रिया समाप्तम् । प० विहारीलाल कृत वाह नग्र मध्ये सम्वत् १८०२ । श्री राम

विषय—धातुओ को मारकर सर्वरस तयार करने की शास्त्रीय विधि ।

संख्या ५५ ए. भक्ति विवेक, रचयिता—बोधीदास, कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—१२ × ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० परसूसिह, ग्राम—रामनगर, डाकघर—वारा, जिला—सीतापुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ भक्ति विवेक लिख्यते दोहा ॥—श्री गुरु चरण सरोज रज निज मन मुकुर सुधार ॥ वरणो रघुवर विमल जस जो दायक फल चार ॥ चौ०—प्रथमहि वंदौ चरण गुरु देवा । जिनते पाओ साहेब सेवा ॥ साहिब सत और सब देवा । सर्व लोक जाकी करै सेवा ॥ देव दनुज सत अधिकारी । पुरुप संत और सब नर नारी ॥ जीव चराचर चारौ खानी । सब घट पूरण अतर जामी ॥ गन गधर्व सुर नर मुनि देवा । सब पर अमल करै वसु देवा ॥ सरब लोक जाकी फिरै दोहाई । डर माने ताको जम्ह राई ॥ सब परजा एक पति एह सोइ । इनके ऊपर दूसर नहि कोई ॥ पर बल सकल स्वामि भगवाना । नहिं कोई इन पर साहेब आना ॥ सब कोई कृतभ आपै पाना । नहिं कोई इतने पुरुप पुराना ॥दो०—नहिं कोइ इनते अचल है नहिं कोई इनते पार । नहि कोई इनते संत है नहि कोई इनते सार ॥

अंत—दोहा—यह भग्ती अनुराग को भक्ति विराग विज्ञान । सो सब नृप पै प्रीति करि कहा बखानि वखानि ॥ छंद ॥ गावहि वोधी दास जो हिये वसावही । होय

विषे भौनास सुनि जो मध्य वसावहा वाढ़े उर अनुराग ज्ञान विराग मन आवहा ॥ कथा सरिस अनूप भक्ति विवेक भेप प्रतात के । हरि सुजस तारन तरन सुनि मिटे दुख जम त्रास । राम जस जाके हिये ताहि सम नहि जग कोय । कहै वेद पुरान तिहु लोक मह पावन सोय ॥ महिमा कह लगि राम जसके कहीं मैं वखानि के ॥ सहस्र मुखते शेष न पावहिं पार निगुन ज्ञान के ॥ सकल सुख जाते मिले अरु अत हरि पद पावहीं ॥ पूजे सब मन कामना दास वोधी गावही ॥ भक्ति विवेक साग्र कथा ज्ञान विज्ञान जोग रस । सुनत बढ़े अनुराग होय जोगी जाहि जस ॥ इति श्री ग्रन्थ भक्ति विवेक समापत सुभ जो देखा सो लिखा मम दोष न दीयते श्री सवत् १९२६ मिती वैसाख सुदी ७ रोज रविवार ॥

विषय—राम नाम महिमा वणन ।

सख्या ५५ वी भक्ति विवेक, रचयिता—बोधी दास, कागज—देशी, पत्र—७४, आकार—१२ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० स्याम मनोहर शुक्ल, ग्राम—मानपुर, डाकघर—हरदोई, जिला—हरदोई ।

आदि-अत ५५ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है —इति श्री ग्रन्थ भक्ति विवेक समाप्त शुभ जो देखा सो लिखा मम दोष न दीयते श्री सवत् १९३० माघ शुक्ला पचमी ॥

विषय—राम नाम महिमा वणन ।

सख्या ५६ मन, रचयिता—प्रह्लादास (सिकदरा), पत्र—३, आकार—८ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुम)—३०, खडित, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुशी जोति प्रसाद, ग्राम—नगला सिकंदर, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ कहत वेग जागारि माई जनमइ जिन लियो जादों पति राइ भरि भादों ॥ आए अधियारी रोहनी नक्षत्र जनम अधिकारी लाउ दीपक जोरि मदिल सुख देखव सक चारि भुज जाके मुकुट माथ राज लह कस को सिग आग सेस पाछ जमुना उमगत रनी भइ वृक्ष जम चरन छे पपार गहली ॥ हो गइ भइ सुनि वसु देव घर वेटी पकर मागइ नास लपेटी सुन कस हम को भारों जिव तुर तेरी मारन हाउस धोवी फिरक अरि उरन को जव मनु हयो वाकी पकरि भुजा उखार ले गइ ॥ दरिद्र दाउनिकों हाउ नाँद घरा सुनि कसर हो हमाथा धनक का असुत पूत नाय पाइ आवर विप लगाइ आइ तु मारो जगाइ राज अधिकारी हमतो लाल हिल वन हरि जव दई वताइ वति सीथ चारि पर सग पान पियो पुतन जमुइ सुनि कै कस के घड़ा के

अत—हियो कौन पूती को न सूती को न पिंड पान परितुवि नाम मरि मरि गइ मरे कानके सिर को परि महाराज राजा होग राइ के समरि हजा की जत्र लिपि मेरो कान कवन हरइ वाज वचइ गुल न चकिनिक सुवर्न जगरच जाइ भार सोइ मरजाइगो सुदिन वावा नद का कह गुल हम छोटे मोटे सव सतन मन भाइयो प्रह्लादास सिकदरों को जनम ला लगाइ ॥

विषय—मंत्र तथा जत्र।

संख्या ५७ ए. व्रज विलास, रचयिता—व्रजवासी दास, पत्र—५३२, आकार—१३½ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१८७, खंडित, रूप— प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० लक्ष्मीनारायण जी आयुर्वेदाचार्य, ग्राम—सैगई डाकघर सैगई (फिरोजाबाद), जिला—आगरा।

आदि—व्रज वीथिन खेलत मन मोहन। हलधर सुवल सुदामा गोहन॥ और गोप वालक वहु वारे। एक वैस सव हरि के प्यारे॥ वाल विनोद मोद मन दीने। नाना रग करत रस भीने॥ तारी मारि हाथ सव भाजै। धावत धरत होढ़ कर वाजे॥ वरजत वलि हरि तू मति दौरै। लगि है चोट गोड कहुँ तोरै॥ तव हरि कह्यौ दौरि में जानौ। मेरौ गात वहुत वलवानौ॥ है श्री दामा जोड हमारी। तासौ मारि भजौ मे तारी॥ वोलि उठ्यौ तवही श्रीदामा। तारि मारि भाजहु तुम स्यामा॥ तवही स्याम भजै दे तारी। धर्यौ धाय श्रीदाम हकारी॥ तव हरि कह्यौ वच्यौ नहि तोही। ठाढ़ौ भयो छुवौ तव मोही॥ ऐसे कहि हरि ताहि रिसाने। कहत सखा सव स्याम खिजाने वोलि उठे वलराम तव। इनके माय न बाप। हारजीत जाने नही। लरिकन लावत पाय॥ ऐ है तनके स्याम, झुठहि झगरत सखन रांग। रुठि चले हरिधाम। लखि उदास पूछति जननि॥

अंत—विविध भांति करिकै पहुनाई। नद स्याम की वात चलाई॥ ऊधौ कहो। कुशल दोउ भैया अरू वसुदेव देवकी मैया॥ करत हसारी सुधि कवहुँ। कहु ऊधो वलवीर पुलकि गात गद गद वचन, पूछत नद अहीर॥ चूक परी अनजान, कहि पछताने आज के, घर आये भगवान। जाने हमन अहीर करि॥ प्रथम गर्ग मुनि कह्यौ वपानी। भूल्यौ सग दोष हित जानी॥ अव ऊधौ विछुरे गिरिधारी भरियत समुझ शूल सोइ भारी॥ कह्यौ जसोमति दृग भरि पानी। ऊधौ हम ऐसी नहि जानी॥ सुत कौहित करिकैं हम मानैं। हरि है वासुदेव प्रगटाने॥ जवते हरि मधुपुरी सिधारे। तवते ऊधौ प्राण हमारे॥ तलफन मीन नीर विन जैसे। देख्यौ स्याम मनोहर तैसे॥ मै वाते सांची कहियौ ऊधौ। कैसे स्याम रहत वहां सूधौ॥ दही मही माखन नित जाई। खात कौन के धाम कन्हाई॥

विषय—श्रीकृष्ण चरित्र वर्णन

टिप्पणी—यह ग्रंथ आद्यन्त से खण्डित है—आदि के ६४ और अन्त के ५३२ वे पृष्ठ के आगे के सभी पृष्ठ नष्ट हो गये है।

संख्या ५७ बी. वृजविलास (काली लीला), रचयिता—व्रजवासीदास, पत्र—१७, आकार—१० × ६½ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्) – ५५५, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० भोजराम शुक्ल, ग्राम—अतमादपुर, जिला—आगरा।

आदि—...राखि को लेही॥ वरु मोहि राखे बांधि भुआला॥ रहे सदन वाले मोहन लाला॥ नदवचन सुनि सव व्रज वासी। भए दुखित मन परम उदासी॥ काहू पै कछू वात न आई। अति भय गये त्रसित मुरझाई॥ नंदघरनि व्रज नारि विचारे। अति व्याकुल नेननि जल वाढ़े॥ व्रजहिं वसत सव जन्म सिरानौ। या विधि कवहूं न कस रिसानो॥

अंत—॥ दोहा ॥ लै अधरनि परस वहि । माखन रोटी खात । करत प्रसंसा मधुर कहि । सुमत प्रफुल्लित मात ॥ सोरठा ॥ जो प्रभु अलप अपार । दुस्तर शिव सनकादि हू । धनि नंद की नारि । ताको सुत करि मानही ॥ इति श्री बृज विलास का लीला दावानल पान लीला संपूर्ण ।

विषय—काली नाग नाथने की लीला तथा दावानल पान लीला वर्णन ।

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रंथ के आदि के दो पन्ने नष्ट हो गये हैं संभवतः यह सुप्रसिद्ध "बृज विलास" नामक ग्रंथ का खंड है ॥

संख्या ५७ सी. ब्रजविलास, रचयिता—ब्रजवासी दास (आगरा), कागज—देशी, पत्र—६००, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००९६, खंडित । रूप—पुराना, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० शिवकंठ तिवारी, ग्राम—पचलाइ डाकघर—माधौगंज, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री राधा वल्लभो जयति अथ ब्रज विलास ब्रजवासी दास कृत लिख्यते ॥ सोरठा ॥ होत गुनन की खान जाके गुन उर गनत ही ॥ द्रवो सु दया निधान वासुदेव भगवंत हरि ॥ मिटत ताप त्रय तासु जासु नाम मुखते कहत ॥ वन्दौ सो सुभ राशि नंद सुवन सुन्दर सुखद ॥ अरुण कमल दल नैन गोप वृन्द मुन्डन सुभग ॥ करहु सो मम उर धाम पीतांवर वर वेणु धर ॥

अंत—दोहा—ब्रज विलास ब्रज राज को को कहि पावै पार । भक्त भाय गावत भगत भजन प्रभाव विचार ॥ सिगर दोहा आठ सौ और नवासी आहि ॥ है इतने ही सोरठा ब्रज विलास ये माहिं ॥ दस सहस्र सत सों अधिक चौपाइ विस्तार ॥ छंद एक सत पद अधिक मधुर मनोहर चार ॥ सबको नुष्टप छंद करि दस सहस्र परिमान । खंडित होन न पावइ लिखियो ज्ञान सुजान । विधि निषेद जानें नहा कछु ब्रज वासी दास । ज्यों जानै त्यौं राखिहै नंद नंदन की आस ॥ ब्रजवासी गाऊं सदा जन्म जन्म करि नेह । मेरे जप तप व्रत यहै फल दीजै पुनि एह ॥ अपूर्ण कुछ छंद अंत के नहीं ॥

विषय—श्री कृष्ण की ब्रज लीलाओं का वर्णन ।

संख्या ५७ डी. ब्रजविलास, रचयिता—ब्रजवासी दास (वृंदावन), कागज—देशी, पत्र—३००, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०९ = १७५२ ई०, लिपिकाल—सं० १८९४ = १८३७ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० दिग्विजय मंगल, ग्राम—शिवगंज, डाकघर—मरहरा, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री कृष्णाय नमः अथ ब्रज विलास ब्रजवासी दास कृत लिख्यते ॥ सोरठा ॥ होत गुणन की खान जाके गुण उर गनत ही ॥ द्रवौ सुदया निधान वासुदेव भगवंत हरि ॥ मिटत ताप त्रय तासु जासु नाम मुख से कहत ॥ वन्दौ सो सुभ राशि नंद सुवन सुंदर सुखद ॥ अरुण कमल दल नेन गोप वृंद मंडन सुभग ॥ करहु सो मम उर धाम पीतांवर नर वेणु धर । वन्दौं जगत अधार कृष्ण ब्रज बलदेव पद ॥ अभिमत फल दातार नीलांबर रेवति रमण ॥

अंत—दोहा—व्रज विलास व्रज राज को कोकहि पावै पार। भक्ति भाव गावत भगत भजन प्रभाव विचार। सिगरे दोहा आठ सौ और नवासी आहि॥ है इतने ही सोरठा व्रज विलास के माहिं॥ दस सहस्र पट सो अधिक चौपाई विस्तारु। छन्द एक शत षट अधिक मधुर मनोहर चारु॥ सबको नुप्टुप छंद करि दस सहस्र परिमान। खंडित होन न पावई लिखियो जान सूजान॥ विधि निपेद जानैं नहीं कछु व्रजवासी दास॥ ज्यो जानैं त्यो राषिहै नद नंदन की आस॥ नहि तप तीरथ दान वल नही कर्म व्योहार। व्रजबासी के दास को व्रजवासी आधार॥ व्रजवासी गाऊं सदा जन्म जन्म करि नेह। मेरे जप तप व्रत यहै फल दीजै पुनि एह॥ इति श्री व्रजविलासे सव सुख रासे भक्ति प्रकाशे कृत व्रजबासी दासे सपूर्णाम्॥ श्रीकृष्णायनमः अथ लिखा गोकरन ब्राह्मण गुजराती आगरा मध्ये मिति जेठ वदी नौमी संवत् १८९४ वि॥ जैसी प्रति देखी तैसी लिखी व कलम गोकरन ब्राह्मण कृष्ण चद्र जी को। राधा कृष्णाजी की जै॥

विषय—कृष्ण चरित्र वर्णन।

टिप्पणी—व्रज विलास के रचयिता व्रजवासी दास थे। रचनाकाल संवत् १८०९ वि० और लिपिकाल सवत् १८९४ वि० है।

संख्या ५७ ई. माखनचोरी लीला, रचयिता—व्रजवासी दास, पत्र—१६, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५५, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१७=१८६० ई०, प्राप्तिस्थान—वेनीराम पाठक, ग्राम—मानिकपुरा, डाकघर—बिलराम, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ माखन चोरी लीला लिख्यते॥ चौपाई॥ मैया री मोहि माखन भावै। औ रस छुअतो रुचि नहि आवै॥ मधु मेवा पकवान मिठाई। सो मोको नेकहु न सुहाई॥ व्रज युवती एक पाछे ठाढी। हरि के वचन सुनत रति वाढी॥ मन मन कहत कवहुं अपने घर। माखन खात लखै सुनन्द वर॥ वैठे जाय मथणिया पाही। अपने कर निकारि लै खाही॥ मै वर देखहु कहूं छिपाई। कैसे मोघर जाहिं कन्हाई॥

अत—दोहा-तेरी सौ तोसो कहत मै सकुचत यह वात। तेरो मुख हरि लखत ही सकुचि तनक है जात॥ सोरठा—नेकु देखावहु आंखि नहि अवते ये ढग भले॥ कव लगि कहिये राखि करत अचगरो श्याम अति॥ इति श्री माखन चोरी लीला व्रजवासी दास कृत संपूर्णम् समाप्तः लिखत गौरीनाथ पांड्यां वृन्दावन निवासी श्रावण कृष्ण पक्ष द्वितीया याम् संवत् १९१७ वि०॥

विषय—श्री कृष्ण जी की माखनचोरी लीला।

इस ग्रन्थ का लेख बहुत अशुद्ध है। ह्रस्व और दीर्घ का ज्ञान नही रखा गया है तथा न मात्रा आदि का ध्यान रेखा है॥

संख्या १७ एफ. अघासुर वध लीला, रचयिता—व्रजवासी दास (वृंदावन), पत्र—८, आकार—८×६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०,

लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१७=१८६० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० बेनीराम पाठक, ग्राम—मानिकपुर, डाकघर—बिलराम, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ अघासुर वध लीला लिख्यते ॥ चौपाई ॥ तहाँ अघासुर वन में आयो। कंस राज करि कोप पठायो ॥ ताके एक बहिन द्वै भैइया। मारे प्रथमहिं कुंवर कन्हैया ॥ एक पूतना जो ब्रज आई। वत्सा सुर अरु बक द्वै भाई ॥ तिनको बैर असुर उर धारी। कियो गर्व मन मे अति भारी ॥ आज राज को कारज कीजै। और बैर भाइन को लीजै ॥ गिरि समान अजगर तन धारी। परो असुर मग बदन पसारी ॥

अंत—दोहा—देखत सुर नर सिद्धि मुनि चढ़े विमान अकाश। हरि कौतुक चकित सबै गये कमल भव पास ॥ सोरठा—कह्यो ब्रह्मा सों जाय कहत जानि पर ब्रह्म तुम ॥ सो ग्वालन संग खाय छोरि छोरि करते कवर ॥ इति श्री अघासुर वध लीला संपूर्ण समाप्त लिखत गौरी नाथ पाड्या वृन्दावन संवत् १९१७ वि०

विषय—श्री कृष्ण की अघासुर वध लीला।

संख्या ५७ जी मान चरित्र लीला, रचयिता—ब्रजवासी दास, कागज—देशी, पत्र—३५, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०१=१८४४ ई०, प्राप्तिस्थान—राम दास गोसाईं, ग्राम—गढ़ी जैसिंह, डाकघर—सिकंदरा राऊ, जिला—अलीगढ़।

श्री गणेशाय नमः श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ मान चरित्र लीला लिख्यते ॥ नित्य श्याम श्यामा सुखकारी। करत नित्य नव चरित विहारी ॥ निर्गुण निर्विकार अविनासी। भक्त मनोरथ सदा विलासी ॥ नित वृन्दा वन धाम सुहायो। नित्य रास रस वेदन गायो ॥ सदा भक्त बस कृष्ण कृपाला। दया सिन्धु प्रभु दीन दयाला ॥ सरद रैन सुरास उपायो। युवतिन प्रति निज रूप बनायो ॥

अंत—दोहा—राधा रसिक गुपाल को कौतूहल रस केलि ब्रजवासी प्रभु जनन को सुखद काम तरु बेलि ॥ सोरठा—सुफल जन्म है तासु जे अन दिन गावत सुनत। तिनको सदा हुलास ब्रज बासी प्रभु को कृपा ॥ इति श्री मान चरित लीला संपूर्ण समाप्त संवत् १९०१ वि० लिखा मंगल दीन ब्राह्मण चौबे ॥ श्री राधा कृष्ण की जै ॥

विषय—श्री कृष्ण द्वारा राधिका मान मोचन।

संख्या ५८ ए मंगल विनोद बेलि, रचयिता—वृंदावन दास (वृंदावन), कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—६×४ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०१, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१२ वि०, प्राप्तिस्थान—अद्वैतचरण जी गोस्वामी, स्थान—श्रीराधारमण घेरा, वृंदावन, डाकघर—वृंदावन, जिला—मथुरा।

आदि—श्री राधा वल्लभो जयति श्री हरिवंश चंद्रो जयति श्री हितरूप गुरुभ्यो नमः। अथ श्री मंगल विनोद प्रसाद बेली लिख्यते। दुपाई। नामा मिश्र हरिवंश कृपा अद्भुद बरखै जग। श्री राधा रस रहसि गूढ़ दरसाइ निया मग। नमामि राधा चरन सकल मंगल कौ कारनि। नमामि गुर हित रूप मेन्य गौरंग विहारनि ॥ २ नमामि रसिकानंद प्रिया

आनन अंबुज अलि । नमामि ललिता ललित रूप रस वेलि महाफलि ३ नमामि सहचर वृन्द सदा सेवति राधा पद । नमामि वृन्दारन्य अपिल कौतुक कौ वेहद ४ नमामि दिन मणि सुत्ता तीर सोभा कौ संघट । नमामि सव सुपनि कर वेली तरुवर वंशीवट । नमामि वृन्दा देवि सुभग कानन अधिकारी नमामि पगकुल वृद जहा संतत सुप भारी । ६

अत—हंसहि अली दिस झुकी खकितिन भुजभरि लीनी । मनहु दामिनी निकरि दमकि दसननि छवि दीनी । ९६ न्याइ रसिक मणिलाल फिरत जैसे कर चकरी । प्रिया रूप गुन मांहि सपी जिनकी मति जकरी ९७ यह मंगल कौ ध्यान तलपते उठत केलिवन छिनक विसरि जिन जाइ सदा सुधि करि मेरे मन ९८ मंगल जुगल विनोद मोद सो सहचरि पायौ । श्री हरिवंश प्रसाद कछुक मै वरनि सुनायौ । ९९ ठारह सौ गत भयौ वर्ष वारहौ प्रगट जव । पूस सुदी पुनि तीज भयौ पूरन प्रबंध तव ॥ १०० पठन श्रवन मगल जस राधा रसिक विहारी । वृन्दावन हित रूप भक्ति सरसे हिय भारी ॥ १०१ इति श्री मंगल विनोद वेली वृन्दावन दास जी कृत सपूर्ण ॥

विषय—राधाकृष्ण के श्रृगार और विहार का वर्णन ।

संख्या ५८ वी. श्री गुरु महिमा प्रसाद वेलि, रचयिता—वृन्दावनदास जी (वृंदावन), कागज देशी, पत्र—२८, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१११, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२० वि०, लिपिकाल—सं० १८९१=१८३४ ई०, प्राप्तिस्थान—गोस्वामी अद्वैत चरण जी, स्थान—वृंदावन, डाकघर—वृंदावन, जिला—मथुरा ।

आदि—श्री राधा कृष्णाभ्यां नम. अथ श्री गुरु महिमा प्रसाद वेली लिख्यते । तूमर छंद । श्री हरि वंश वदौ चरन । इहि भव सिंधु नौका तरन तिन वद सरन जिन २ लई सव की आसा पूरन भई । अव मो सुमति कौ वर देहु । महिमा कहौ गुरज अछेहु । करता बुद्धि के प्रति पाल । हरता विघन सव कलिकाल २ जडता छेदि टारौ दूरि निरवाहि सुवहि उरमै पूरि । विनती सुनौ प्रसित निपति दाइक भजन रक्षिक वली । गुर महिमा जु सिंधु अगाधि । ताकौ तुम कृपा ही साधि । तन कसु दृष्ट काजे अहा । काहौ रतन चरित निमाहा । गुर महिमा जुहो यह माला । मोपै हूजिये जू कृपाल जाके माल उरमह लसौ लोक प्रलोक पूरति जसे ।

अंत—ठारह से संवत जानि । ऊपर वीस वर्ष वखानि । दीनी सुमत श्री हरिवंश । गुरज सकथ्यौ सुनि गुन गंस । १०९ । कवित्त—गुरु कृपा तोई सौ जू भी ज्यौ रहै हियौ जाको जग सौ उदास औत्र न पथ गरूर है । उर दया सुख नाय काहू सौन और काम गुर की दई वैभव कौ विल सैर समूर है । उभै भाव रुप की तरग उठै नाना भांति ताही मांह छक्यो अरि इन्द्री जीतन सूर है । वृन्दावन हित मेरी ताकौ नमो वार वार गुर कृपावल सो करी माया चूर २ है । ११० दोहा ॥ केलिदास हस्ताक्षरन वेलि लिखी बनाइ । पठै सुनै गुर भ्रत्य जे तिनकी वलि २ जाइ ।१११। इति श्री गुर महिमा प्रसाद वेलि वृन्दावन दास जी कृत सम्पूरणम् । राधाकृष्णाय नम. श्री कृष्णायनमः । गोपालाय नमः । संवत् १८९७ आश्वन शुक्ल पंचम्यो वुधो ॥

विषय—गुरुमहिमा का वर्णन ।

संख्या ५९ श्री रामायनी ककहरा, रचयिता—लाला वृंदावन, कागज—पुराना कागद, पत्र—५, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१९ = १८६२ ई०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस ।

आदि—श्री गणेशाय नम श्री गनेश जू सहाइ ॥ अथ लिख्यते श्री रामनी ककहरा कका कहु नामै रघुवीर कृपाला ॥ अज अबिनासी दीन दयाला, सुरहित हरत भूमि को भारा ॥ प्रगट भये रघुवंश कुमारा ॥ खखा-खलत दशरत आगन माही, थाए नय छवि बरनि जाही ॥ लछिमन भरथ शत्रुहन भैय्या, निरखत जननी लेत बलैया ॥ गगा गौर श्याम सुन्दर दोऊ जोरी । जो कछु कहौं सो उपमा थोरी ॥ कर धनुही कटि कसे निषगा । चढ़े नचावन चपल तुरगा ॥ घघा घरही बिश्वामित्र जो आये । आदर करि भूपति बैठाये ॥

अंत—सो दिन धन्य घरी शुभ जाना । गुर वसिष्ट मन में अनुमाना । साजि समाज वेद विधि कीन्ही । राज तिलक रघुराजहिं दीन्हा । सस्सा शोभित कनक सिंहासन राया । बसि बहुकाल गये सुरधामा ॥ इति श्री रामायनी ककहरा समाप्ति सु सुभवते ॥ मिती कुमार बदी ५ सतौ संवत् १९१९ लिखा श्री लाला वृन्दावन पटवारी बरही बैठे ॥

विषय—वर्ण माला के प्रत्येक अक्षरों से क्रमश चौपाई का आरम्भ हुआ है और संक्षिप्त रामायण भी पूरी कही गई है ।

संख्या ६० विहार वृन्दावन रचयिता—वृंदावनदास (आगरा), पत्र—२३३, आकार—१० × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७७०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० बैजनाथ ब्रह्मभट्ट, ग्राम—अमौसी, डाकघर—बिजनौर, जिला—लखनऊ ।

आदि—सत्य नाम सत्य गुरु समरथ दीन दयाल ॥ अथ लिख्यते बिहार वृन्दावन ॥ ग्रन्थ कर्त्ता की राय अर्थात् सिद्धान्त उन विरोधों के विषय में जो शास्त्र और अन्य मतों में वर्तमान हैं और सतता के गुण और काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार के अवगुण और दया । धर्म । शील । सन्तोष । उदारता । वैराग्य आदि के लाभ ॥ दोहा ॥ जग विवाद को दूर करि । मन में संशय होय । वृन्दावन इस जाल से । विरला बाचे कोय ॥ तथा ॥ सब अपने सिद्धान्त को । सही कहत हैं सार । वृन्दावन वह और को । भूला जाने वार ॥ कोई यत्न अपने आधीन कहता है कोई ईश्वर के कोई दोनों के आधीन कहता है । कोई प्रारब्ध को कोई यत्न को मुख्य कहता है इसके विशेष एक ही मत वाला दस प्रकार के वचन कहिता है एक स्थान पर जगत् और ईश्वर की सत्यता दिखाता है दूसर स्थान पर असत्य कह देता है । कहीं जप तप पूजा कर्म तीर्थ व्रत मूर्तियों की पूजा नाम का स्मरण ठहराता है कहीं इन सब का अनिश्चय कराता है परस्पर में शास्त्रों का विवाद दीखता है ॥ यही दशा पुराणों की भी है । और फिर सब वेद को प्रमाण करके अपने कहने की अर्थात् सिद्धान्त को निश्चय कराते हैं । कोई किसी देवता की महिमा करता है किसी दूसरे की

निन्दा करता है। विष्णु पुराण में विष्णु की महिमा की है शिव पुराण में शिव जी की महिमा है॥ देवी पुराण में देवी को मुख्य कहा है। सूर्य पुराण में सूर्य को सबसे बड़ा बताया है। गणेश पुराण में गणेश जी को सबसे बड़ा अधिकार कहा है।

अंत—अंकुर बीज वासना होई। जग उपजावन हेतू सोई॥ जग को सत्य सत्य जिन माना। दूजे दृढ़ कर इच्छा ठाना॥ उपजै विनसै सो जग माहीं। आपी अपने हाथ नसाही॥ ज्ञानी बीज वासना नाशै। जग असवत सो ताको भासै॥ ज्ञानी एक ब्रह्म सब जानै। दूजी दृष्टि नही मन आनै॥ मृग तृष्णा को नीर ज्यों। दरसै जलहि समान। विंद्रा बन वह जल नहीं। कस डूबन की हान॥ अन्य पुरुष की दृष्टि में। जग व्योहार लखाय। विंद्रावन जब जग नहीं। कौन व्योहार बताय॥ महाराज सत्य है २ विना ब्रह्म ज्ञान के बन्ध की भ्रान्ति दूर नहीं हो सकती और मैंने भली प्रकार विचार के देख लिया कि मैं सजातीय विजातीय सुगति भेद रहित अखंड ब्रह्म हूं। मुझे अब इसमें कोई समय विपर्यय नहीं रहा। महा राज आप धन्य हो धन्य है महाराज एक यह प्रेमी भी आपसे कुछ पूछा चाहता है अब आप इसकी सुनियें और मेरी तो यह दशा है॥ सोरठा॥ भूल तिमिर भयो दूर। भूल भर्म जातो रह्यौ। वृन्द्रावन मैं पूर। आपन लख आपहि रह्यौ॥ इति श्री वृन्द्रावन समाप्त॥

संख्या ६१. देवानुराग सतक, रचयिता—बुधजन दास, कागज—देशी, पत्र—१४। आकार—८×६ इंच, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८९७ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० वेनीराम पाठक, स्थान—मानिकपुरा, डाकघर—बिलराम, जिला—एटा (उ० प्र०)।

आदि—श्री गणेशाय नमः। अथ देवानुराग सतक लिख्यते॥ दोहा॥ सनमति पद सन मति करन वदू मंगल चार। वरनै वुध जन सतसई निज पर हित करतार॥ परम धरम करता रहौ भवि जन सुप करतार। नित वदन करता रहू मेरा गहि करतार॥ परं पग तरे आपके पांय पग तरे दैन। इम कर्म कूं सब तरे करौ सर्वथा चैन॥ सब लायक गायक प्रभु धायक धर्म कलेश। लायक जानि नर नमत है पायक भए सुरेश॥ नमू तोहि कर जोरिकै शिव बनरी कर जोर। वर जोरी विधि की हरो योवर दीजै मोर॥ तीन लोक की खबर तुम तीन लोक के तात। त्रिविधि शुद्ध वदन करु त्रिविधि ताप मिटि जात॥ त्रिविधि शुद्ध वंदन करूं त्रिविधि ताप मिटि जात॥ तीन लोक पति है प्रभू परमातम परमेश। मन वच तन कर नमत हूं मेटौ कठिन कलेश॥ नमू जु तेरे पांय को परम पदारथ जान। तुम पूजे ते होत है सेवक आप समान॥

अंत—परिपूरन प्रभु विसर तुम नमूं न आन कुठौर। ज्यो ज्यो कर मो तारिये विनती करूं निहोर॥ दीन अधम निरधन रटै सुनिये अधम उधार। मेरे औगुण जिन लखौ तारो विरद चितार॥ करुनाकर परगट विरद भूले बनि है नाहि। सुध लीजौ सुध कीजिये दृष्टि धार मो माहि॥ यही विरद मो दीजिये जांचूं नहिं कछु और। अनमिष दृग निरखत रहूं शांति छवी चित चोर॥ याद हिया में नाम मुख करो निरंतर वास। ज्यो लौ वसिबो

जगत में भरिबो तन में सास ॥ म अज्ञान तुम गुण अनत नाही आवे अन । वदत अग नमाय वसू जाव जीव परजत ॥ हार गये हो नाथ तुम अधम अनेक उधार । धीरे धीरे सहज में लीजो मोहिं उबारि ॥ आप पिछानि विशुद्ध को आया कह्यो प्रकाश । आप आप में थिर तने वन्दे बुध जन दास ॥ मन मूरत मगल वसी मुप मगल तुव नाम । ये ही मगल दीजिये परो रहों तुव धाम ॥ इति श्री देवानुराग शतक सपूणम् लिखा मानिक चद जन स्वपठनाथ । आगरा मध्य सवत् १८९७ वि० चेत्र शुक्र पक्ष तृतीयायाम् ॥

विषय—ईश्वर विनय ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रथ के रचयिता बुधजन दास थे रचनाकाल का पता नहीं, लिपिकाल सवत् १८९७ वि० है । इसको एक जनी ने लिखा है ॥

सख्या ६२ क्षमापोडसी, रचयिता—चक्रपाणि, पत्र—१३, आकार—१०½ × ७½ च, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६४, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८२ = १८२५ ई०, लिपिकाल—स० १९०६ = १८४९ ई०, प्राप्ति स्थान—प० लक्ष्मीनारायण, वाह, स्थान—वाह, डाकघर—वाह, जिला—आगरा ।

आदि—श्री मते रामानुजाय नम ॥ सु कान्य कुब्जाग्र कुलोत्तम श्री सुराय मिश्रा त्मय जो बुधाग्रा ॥ स्तोत्र क्षमा पोड़शिकाऽभि धान व्याख्याति सद्विबुध चक्रपाणि ॥ श्री पराशर भट्टाचार्य्य श्री रगेश पुरोहित ॥ श्री वत्साक सुत श्री मान श्रेय से मेसर भूयसे ॥ १ ॥ श्री पराशर भट्टाचार्य्य मे भूयसे श्रेयमे भस्तु महेत भद्राय भवतु अत्र श्रेयसो भूयस्त्वतु स्तोत्र समाप्ति तत्प्रचारादि प्रतिबधक दुरित प्रशमत्त्वेन स्तोत्रा ध्येतृ श्रातृजन क्षेम बाहुल्य वत्व कथ भूत श्री पाराशर भट्टाय श्री रगेश पुरोहित श्री रगेश श्री रग क्षेत्र विराजमान ॥

अत—सत्यक्त सव विहित क्रिय मथ कामधद्धालु मन्वह मनुष्ठितनिंद्य कृत्य ॥ अत्यत नास्तिक मनात्म गुणोप पत्र मारग राज कृपया परयाक्ष मस्व ॥ १ ॥ सत्यक्त सव विहित क्रिय सत्यक्त त्याग करि है सपूर्ण विहित स्वधम रहित क्रिया जा करिकें औरू अथ जो नाना प्रकार के अथ हैं काम-जो नाना प्रकार की कामना हैं तिनहीं में आठो प्रहर श्रद्धा है और अनुष्ठित करवे के जोग्य नहीं ऐसे करियत भये हैं निंद्य कर्म जा करिकें और अत्यन्त नास्तिक जो वेद शास्त्र की निन्दा ताको करण वारौ जो हौं और अनात्म गुणोप पत्र आत्मा त्मा जो देह रे ताही के गुणनि करिकें उप पत्र कहा युक्त हौं आत्मस्वरूप को जो सोधन है ताहिं करिकें रहित हौं ऐसा जो हो तासे सव अपराध अपनी परम जो कृपा है ता करिकें क्षमा पन करतु यद्यपि अपना बडे योग्य हैं तथापि अपनी न्यूनता वनन करीं नीचानु सधान जीव को कर्त्तव्य हे ॥ तदुक्त यामुना चार्य्योपि । अम यदि क्षुद्र श्रल मीतर सूत्रा प्रसव भूरि त्यादि ॥ १९ ॥ यश्चक्रे रगिण स्तोत्र क्षमा पोडश नामक ॥ प वेदाचाय यो वेदाचार्य्य क्षमा पोडशी है नाम जाको असो रगीराग स्तोत्र रगनाथ स्वामी को जो स्तोत्र है ताहि चक्रेकरत भए असें जो हैं वेद व्यास के तनय पुत्र वेदाचार्य्य तिनहि हम भजत हैं शिष्य कृत श्लोकय ॥ २० ॥ यश्च-क्रे रगीण स्तोत्र क्षमापोडशि नामक ॥ वेदव्यासस्य तनय वदा चार्य्य महस्भजे ॥ २० ॥ इति श्री क्षमा पोडशी सम्पूर्ण ॥ दुजति दिति बिधु समित विक्र

मार्क भू प्रेद हाय नवरे द्विप वेरिगेर्के मार्गेनभस्य गल पक्ष रमेश तिथ्यां श्री चक्र-पाणि बुध रात् विदधे सु टीकाम् ॥ १ ॥ इति श्री क्षमा पोडश्या टीका व्याख्या समाप्ता ॥ सवत् १९०६ ॥

विषय—श्रीरंगाचार्य्य की क्षमा पोडपी नामक स्तोत्र की व्याख्या ॥

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रन्थ में सोलह श्लोकों द्वारा श्री रंगाचार्य्य जी की विनय की गई है। अन्तिम श्लोकों से पता चलता है कि मूल ग्रन्थ श्री वेदाचार्य्य रचित है और उसके श्लोको का अन्वय कान्य कुब्ज कुलोत्पन्न श्री सुग मिश्र द्वारा सम्पन्न हुआ है और भाषा व्याख्या श्री चक्रपाणि जी मिश्र ने की है। व्याख्या विस्तृत और सुबोध है। प्राय. पदच्छेद करके भली भाति समझाया गया है—ग्रन्थ के अन्त में उसका रचना काल भी एक श्लोक में दे दिया गया है "दगदति दति विंधु" इससे सवत १८८२ निकलता है। इसी को टीकाकार ने टीका निर्माण समय बतलाया है।

संख्या ६३. कवित्त रामायण, रचयिता—चंद कवि, कागज—देशी, पत्र—३३, आकार—८×४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६० = १८०३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला वेनीराम, ग्राम—गंगागंज, डाकघर—सलेमपुर, जिला—अलीगढ़।

आदि—पहिले भयो राज रिपि पाछे भयो ब्रह्म रिपि विस्वा मित्र याको नाम जानते है सबही ॥ उन कह्यौ आय मेरी राक्षस बुझावै आगि, राजा तेरे पुत्र बिनु काहू सो न दबही ॥ जिनके खिलौना लिये खेलत हू सबासंग, ऐसे प्यारे न्यारे होत नाहि कबहीं ॥ करि उपगार कौन कीनो है बिलंव। चंद ते उगे ही वाय दिन भागे मौन जबहीं ॥ १ ॥ आगे आगे रिपि जाय हिय हरप मांहि, पाछे पाछे सुदर कुवर रघुवीर है ॥ सु पै है ताकी वाय पूंछत है ताहि पाय चल रे निकट राय जहा तेरे घर है ॥ मारग में भयो सोर राक्षस उठे घोर। हसत हसत राम लियो एक सरहे ॥ देखो रे या नीच की जु आई है सुकृत वीच, ऐसी ऐसी मीच पाय पुनि नीच सो निटर है ॥

अंत—जाय हाथ धनुप चढ़ाय भये सीता पति। ताही हाथ रावन संघारो लंक जारी है ॥ जाही हाथ तारयो ये उवारयो हाथी हाथ गहि। जाहि हाथ हेम मथि लछिमी निकारी है ॥ जाही हाथ गिरवर धारी भये प्रान नाथ। ताही हाथ नद कहा नाथ्यो नाग कारी है ॥ हौ तो अनाथ प्रभु जोड दोऊ हाथ अब तो। श्री नाथ हाथ गहिवे की वारी है ॥ दो०—ये चरित्र रघुनाथ के वरने है कवि चद ॥ नागर नन्हा पठन को ठाकुर श्याम लिखत। मुखते जु वाहर चंद के जैसे निकसे वर्ण। तैसे ही श्यामा लिखो सुन्यो जे अपने कर्ण ॥ जो कोई याको वांचे है गुरु पडित कवि यार। सवद सबै सुधि कीजियो मोपे ताना न मार ॥ इति श्री चद विरिचितायां कवित्त रामायण सपूर्ण ॥ श्री राम संवत् १८६० लिखा ॥

विषय इसमें रामायण सातो कांड के कवित्त लिखे है।

टिप्पणी—इस ग्रथ के रचयिता कवि चंद थे जैसा इनके पदो में आया है:—लिपि काल सवत् १८६० वि० है और कुछ पता नही चलता। लिपिकाल से पता

चलता है कि १८६० में चंद कवि वर्तमान था क्योंकि लेखक ने अपने इस दोहे में बतलाया है —

ये चरित्र रघुनाथ के बरन है कवि चंद। नन्हा नागर पठन को ठाकुर श्याम लिखत ॥ मुखते वाहर चंद के जैसे निक्से वण। तैसे ही श्यामा लिखे सुन्यो जु अपने कर्ण अर्थात् श्यामा ने चंद कवि के मुख से निकलते ही शब्दों को लिखा ■ अर्थात् लेखक और कवि साथ ही थे।

संख्या ६४ मूहूर्त दर्पण, रचियिता—चंद्रमणि, पत्र—५६, आकार—१३ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप् —१६२६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३९ = १७८२ ई०, प्राप्तिस्थान—शालिग्राम दुबे ग्राम—नंदगाँव, डाकघर—जैतपुर कलाम, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ मुहूर्त दर्पण लिख्यते सिंदूर वर्ण गज वदन, सुख अगार निकेत। मगल मूरति जग विदित, गण पति सब मति देत ॥१॥ दंडक पंचम प्रयल ॥ महाराज श्री उदोत सिंह, जगमैं प्रसिद्ध दिन कर से लसत हैं। जिनके प्रताप अरि तिमिर बिलाइ जात, कहूं ना दिखात गिरि कन्दरा बसत हैं ॥ विमल सुजस को प्रकास दसौं दिशा होत, मित्रण के मुख पुडरीक विकसत है। चन्दत सरल कर दवनि के वृन्द सदा, सम्पति समीप कवि बुध बिलसत हैं ॥ २ ॥ दोहा महाराज के हुकुम तें, विविध ग्रन्थ मथि चार, भाषा कीन्हों चन्द्र मणि सकल सहिता सार ॥ ३ ॥ अगिनि ब्रह्म गौरि गनपति नाग पवग मुष भानु। शभु दुर्गा धम विश्वे विष्णु कामहि जानु ॥ शिव शशि पे तिथिन के पति प्रति पदा तें मानु। अमावस के पित्र स्वामी, यह मति उर आनु ॥ ४ ॥

अंत—दोहा—पारस के परसें कहू आयस कचन होत। सुवरन मय जग जग मगे। दरसे सिंह उदोत ॥ ४१ ॥ दंडक ॥ सब जग को अधार सहि सुखा को सिंगार। सब भूप सिर दार जाहि लाजें पर वार ॥ दान जूझ को अँगार अरि दल जतवार। जासु सोहै भुज गार सदा गुनी को भँडार ॥ जसु उजिल अपार सुर सरि कैसी धार। पार वार हू की पार छहाँ दिसनि मझार ॥ अति परम उदार सब सुषमा को सार। धनि नृपति उदोत सिंह पृथु अवतार है ॥ ४२ ॥ सवैया ॥ जौ लगि भूमि पुरदर मंदिर ज्यौं लगि मेर मदा किन जो है। जौ लगि इन्द्र फर्निदलिंद सुता उतरगनि मोरे ॥ ४३ ॥ इति सकल सामंत चक्र चूड़ा मणि मजरी नी राजित चरण कमल चतुर्दधि वहाय वसुन्धर ह्रदय पुडरीक विकास दिन कर श्री मन महा राजा धिराज उदोत सिंह देवो थोजित ज्योति रवि चन्द्र विरचित मुहूत रत्ने वस्तु प्रकरण ॥ यादृशी पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशी लिखित मया। यदि शुद्धम शुद्धवा मम दोषो न दीयते ॥ लिपित पंचम दास सावरण ब्राह्मण उतनु वस्ती मानिकपुर जिला इटावा तथा वासुरम आकर हलते पचार मे अपने पाठकों उवारी नगर पई में जमुना जी के तट संवत् १८३९ द्वितीय ज्येष्ठ सुदी १३

विषय—(१) शुभा शुभ प्रकरण [पृ० १—११] (२) नक्षत्र प्रकरण [११—२३] (३) सक्रांति ,, [२३—२७] (४) गाचर ,, [२७—३०]

विषय—(५) संस्कार प्रकरण [पृ० ३०—३२] (६) विवाह प्रकरण [३२—३८]
(७) वधू प्रवेश " [३८—४०] (८) यात्रा " [४०—५०]
(९) वस्तु " [५०—५५]

संख्या ६५ ए. अमरलोक वर्णन, रचयिता—चरणदास (डेहरा, अलवर), पत्र—८, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०१ = १८४४ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा रामदास, ग्राम—जहांगीरपुर, डाकघर—फरौली, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ अमर लोक वर्णन लिख्यते ॥ दोहा ॥ प्रणाम श्री सुख देव को सोहैं गुरू दयाल ॥ काम क्रोध मद लोभ से काढ़ै मेरे साल ॥ १ ॥ वाणी विमल प्रकाश दी बुधि निर्मल को तात मोहि मूरख अज्ञान को नाहे आवत है वात ॥ २ ॥ अमर लोक वर्णन करो वेही करैं सहाय। दृष्टि हिये मम खोलि कर सबही देहु दिखाय ॥३॥ भेद लियो गुरु देव सो अद्भुत रचौ सु ग्रन्थ। साखी वेद पुराण में जानी सुनिये संथ ॥४॥ चौ०-भेद अगोचर कोई कोई जाने। गुरू दिखावै तो पहिचाने ॥ पता कहैं कछु वेद पुराना। ज्यो का त्यो उनहूं न बखाना ॥ कछु कछु मत मारग हू भाषे। फिरि भूलें सगळें नहि साखै ॥ हरि की कृपा प्रगट में गया। किया उजागर खोलि सुनाया ॥ निराकार तौ ब्रह्म है माया है आकार। दोनो पदवी को लिये ऐसा पुरुष निहार ॥ २

अंत—दोहा—मम हिरदै में आयके तुमही कियो प्रकाश। जो कछु कहौ सो तुम कहौ मेरे मुख सो भाप ॥ ५ ॥ आदि पुरुष परमातमा तुमहि नवाऊ माथ, चरनन पास निवास दै कीजै मोहि सनाथ ॥ ६ ॥ तुमरी भक्ति न छाडहूं तन मन शिर क्यो न जाय। तुम साहिब में दास हू भलो वनो है दाव ॥ ७ ॥ गुरु शुक देव कृपा करी मूरख भयो प्रवीन। मम मस्तक पर कर धन्यो जानि निपट आधीन ॥ ८ ॥ कोटि नाम को फल लहै तिरवेनी असनान ॥ शोभा गावै लोक की मूरख होय सुजान ॥ ९ ॥ पढ़ै सुनै जो प्रीति सौ पावै भक्ति हुलास। नित उठकर तू पाठ यह चरण दास कहि भास ॥ १० ॥ प्रेम वढे अघ सव हरै कलह कल्पना जाय। पाठ करै या लोक को ध्यान करत दरशाय ॥ ११ ॥ इति श्री अमर लोक अखड धाम वर्णन ग्रन्थ सपूर्णम् लिखा नारायन गोसाई जेठ सुदि प्रतिपदा संवत् १९०१ वि०

विषय—अमर लोक की कथा वर्णन है ॥

सख्या ६५ बी. अमरलोक लीला, रचयिता—चरणदास, पत्र—१४, आकार—८½ × ५½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१५, रूप—प्राचीन, लिपि—फारसी, प्राप्तिस्थान—बाबू शिवकुमार प्लीडर, स्थान—लखीमपुर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—खेरी।

आदि-अंत—६५ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है:—इति श्री अमर लोक निज धाम निज स्थान परमोत्तम पुरुष विराजमान प्राप्त निर रुद्र कवुअत श्री सुखदेव जी के दास चरणदास कृत अमर लोक लीला सम्पूर्णम् समाप्तम् वखते नाकिस बन्दा दीन दयाल

वल्द भगवन्त राम कायस्थ सर कानूनगो परगने काकोरी सरकार लखनऊ मसाफ सूबै अख्तरनगर अवध ।

विषय—(१) पृ० १ से २० तक—अमरपुरी (वैकुण्ठ) की शोभा स्थिति और वहा के निवासियों का वर्णन ।

सख्या ६५ सी अष्टाग जोग, रचयिता—चरणदास (डेहरा, अलवर), कागज—देशी, पत्र—३४, आकार—८ × ६ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण अनुष्टुप)–५२०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९६ = १८३६ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा रामदास, ग्राम—जहागीरपुर, डाकघर—फरौली, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनम ।। अथ अष्टाग जोग ग्रथ लिख्यते ।। गुर शिष्य सवाद । दोहा ।। व्यास पुत्र धन धन तुम्हीं धन धन यह अस्थान । मम आशा पूरी करी धन धन वह भगवान ।। १ ।। तुम दर्शन दुर्लभ महा भये जु मोको आन । चरण लगो आपादियो भये जु पूरण काज ।। २ ।। चरण दास अपनी कियो चरणन लियो लगाय । सिर पर धरि सब कुछ दियो भक्ति दृढ़ समुझाय ।। ३ । बालपने दरशन दिये तबहीं सब कुछ दीन । बीज जु बोया भक्ति का अब भया वृक्ष नवीन ।। ४ ।। दिन दिन बढ़ता जायगा तुम किरपा के नार । जब लग माली ना मिला तब लग हुता अधार ।। ५ ।। अरु समुझाये जोग ही बहु भाती बहु अग । ऊर धरे ताही कही जीता बिंद अनग ।। ६ ।। अरु आसन सिद्धलाइया तिनका साधी विधि । तुम्हारी कृपा सौं होहिंग सबही साधन सिद्धि ।। ७ ।। इक अभिलाषा और है कहि न सकू सकुचाय । हिये सुरत आय करि फिरि उलटी ही जाय ।। ८ ।। गुर वचन ।। दोहा—सत गुर से नहिं सकुचिये एहो चरणन दास । जो अभिलाषा मन विषे खोलि कहौ अब तास ।। ९ ।

अत—जोग समाधि—दोहा—आसन प्राणायाम करि पवन पथ गहि लेहि । षट चक्कर को छेद करि ध्यान शून्य मन देहि ।। आपा विसर ध्यान में रहै सुरति नहिं नाद । लीन होय किरिया रहित लागै जोग समाध ।। तब लगि तत्व विचारि करि कहै एक अरु दोय । ब्रह्म ब्रत बाधे रहै ह्या लगि ध्यानहि होय । मैं तू यह वह भूलि करि रहे जु सहज सुभाय । आया दृष्टि उठाय करि ज्ञान समाधि लगाय । ज्ञान रहित ज्ञाता रहित रहित ज्ञेय अरु जान । लगी कभी छूटै नही यह समाधि विज्ञान ।। पूछे आठौ अग ते जोग पथ की बात । सुकदेव कहै ताम चलो गुरकृपा लै साथ ।। इति श्री अष्टाग जोग ग्रथ सपूर्ण समाप्त लिखित स्वामी रामानद गिरि गोसाईं स्वपठनार्थ जेष्ठ सुदि २ सवत् १८९६ वि० जेराम राम राम राम ।

विषय—अष्टाग जोग, समाधि का लक्षण, भेद और क्रिया का वर्णन ।

सख्या ६५ डी जाल लीला, रचयिता—चरणदास (दिल्ली), पत्र—१२, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप् —१००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—प० चन्द्रशेखर त्रिपाठी, स्थान—बाह, डाकघर—बाह, जिला—आगरा ।

आदि— अनुमान से २–३ पृ० लुप्त ।। न काहु कौ करै अपनी कर लेप ।। १० ।। महू पिज हौ कहा भव ठौर हमारी । बाट घाट गिरि किंनरागो कुलहि मझारी

इहि विधि वचन रचै अति सुर सखी ज्यों बोले ॥ चोठ कंठ लागे नहीं संसै सय खोलै ॥११॥ गोपकुमार सहसयेक लीये संगी डोलै ॥ व्रज वन जमुन जल थल लीला वहु खेलै ॥ कवहु के होय महीन टा पट्ट हाथ वजावै ॥ कवहु के वैन सुर धरे मगीत सुनावै ॥ १२ ॥

अंत--वाढी निश सरद देप हरि की नृत्त कारी। गऊ वन तिन छोडि दियो वछरन पै नांहि पियो ॥ मुरली धुनि सुनत मोहे मुनि जन वृत धारी ॥ सुषदेव जी गुरु कूं चरन दास वहुप्रणाम करैं। रास को विलास दीयो परगट दरसारी ॥ १ ॥ इति पद मं० ॥

विषय--श्री कृष्ण के वाल चरित्र वर्णन ॥

संख्या ६५ ई. भक्ति पदार्थ, रचयिता—चरणदास (डेहरा, अलवर), कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३८०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९६ = १८३९ ई०, प्राप्तिस्थान--बाबा रामदास, ग्राम--जहांगीरपुर, डाकघर—फरौली, जिला—एटा।

आदि--श्री गणेशाय नम. अथ भक्ति पदार्थ ग्रन्थ लिख्यते ॥ दोहा--प्रणवो श्री मुनि व्यास जी मम हिरदे में आय। भक्ति पदारथ कहत हूं तुमहीं करो सहाय ॥ प्रेम पगावन ज्ञान दे जोग जितावन हार। चरन दास की वीनती सुनियो वारंवार ॥ तुम दाता हम मांगता श्री सुकदेव दयाल ॥ भक्ति दई व्याधा गई मेटे जग जंजाल ॥ किसू काम के थे नहीं कोई न कौडी देह। गुरु सुक देव कृपा करी भई अमोलक देह ॥

अंत--दोहा--सून्य शहर हम वसत हैं अनहद है कुल देव। अजपा गीत विचारिले चरण दास यहि भेव ॥ भक्ति पदारथ उदय सू होय सभी कल्याण। पढ़ै सुनै सेवन करै पावै पद निर्वाण ॥ भक्ति पदारथ में कही कछु एक भेद वखानि। जो कोई समझै प्रीति सों छूटै जम दुख सान ॥ पाठ करै मन में धरै वहुरो करै विचार। कहैं गुरू शुकदेव जू तुम्हे करू परणाम ॥ तुम प्रसाद पोथी कही भये जो पूरण काम ॥ हिरदे में शीतल भये तपति गई सब दूरि। या वाणी के कहे ते कायर मन भयो शूर ॥ चदन चरचै पुष्प धरि वहुरि करै परणाम। कथा वांचि सब ही सुनै कहा पुरुष कह वाम। कहै सुनै जो प्रेम सों वाकू राखै याद। चरण दास यो कहत है मनिहो पूरे साध ॥ इति श्री चरण दास कृत भक्ति पदार्थ ग्रन्थ सपूर्ण लिखा शिव दीन पांडे सवत् १८९६ वि० चैत्र वदी ९

विषय--सतगुरु की भक्ति का उपदेश।

संख्या ६५ एफ. भक्ति पदार्थ, रचयिता—चरणदास, कागज—स्यालकोटि कागद, पत्र—५५, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११००, रूप—कुछ प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९२ = १८३५ ई०, प्राप्तिस्थान—प० भोजराम शुक्ल, स्थान—ऐतमादपुर, डाकघर—ऐतमादपुर, जिला—आगरा।

आदि--६५ ई के समान।

अंत—जिनको मन विकरल सदा, रहो जहां चित होय। घर वाहर दोउ एक से, डारी द्विविधा खोय। यह सगरो उपदेश ही में आपन कू कीन। मोमन कूं आया वना, कही होय

आधीन । सत उस सू मागू यही, मारी गरीवी देय । दूर बड़प्पन कीजेय । न्हानाहीं कारलेय, जनक परम गुर देव जी, सुन सतगुरु सुखदेव । यही अरज मैं करत हू, दोहि साध करलेय, चारो युग के भक्तजन, तुम ही सुख के धाम । चरणदास ही होयके, तुम्हें करू परनाम, इति इति श्री चरण दास जी कृत भक्ति पदाथ सम्पूर्ण ॥

विषय—विचित्र प्रकार के ज्ञान का विवेचन ।

सख्या ६१ जी भक्ति पदाथ, रचयिता—चरणदास (दिल्ली), पत्र—५४, आकार—८ × ५½ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२ परिमाण (अनुष्टुप्)—१२९६, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० भोजराज शुक्ल, (अवसर प्राप्त, इन्स्पेक्टर, पाठशाला), स्थान ऐतमादपुर, डाकघर—आगरा, जिला—आगरा ।

आदि ६५ इ के समान ।

अत—तिनसे जग सहजहिं छुटा, कहारक कह भूप । चले गये घर छोड़ि के धरि विरक्त का रूप । जिनको मन विरक्त सदा, रहीं जहा चित होय । घर बाहर दोउ एकसे, डारी द्विधा खोय । यह सगरो उपदेश ही, मैं आपन कू कीन । मो मन कू आपा घना, कहीं होय आधीन । सतगुर सू मागू यही मोहि गरीबी दय । दूरि बड़प्पन कीजिये न्हा नाही करि लेय । जनक परम गुर देव जी सुन सतगुरू सुखदेव । यही अरज मैं करत हू मोहि साध करि लेव । चारो युग के भक्त जन तुम ही सुख के धाम । चरण हा दासा होय के, तुम्ह करूँ परनाम । इति श्री चरण दासजी कृत ग्रथ यह । भक्ति पदारथ नाम । लिख्यो भक्ति अनुराग सों, पूर्ण भये मम काम । भादों शुक्ला पक्ष की, नवमी तिथि रविवार । सपूरण ता दिन कियो, याथा सरल विचार । इति शुभम् ।

विषय—भक्ति वर्णन ।

सख्या ६१ एच ब्रह्मज्ञान सागर, रचयिता—चरणदास (डेहरा, अलवर), पत्र—२०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२५, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा विष्णुगिरि, ग्राम—शिवनगर, डाकघर—सहावर कस्बा, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ ब्रह्म ज्ञान सागर लिख्यते ॥ दोहा ॥ जैसे है सुकदेव जी जानत सव ससार । भगवत मत परगट कियो जीव किये बहु पार ॥ १ ॥ तिन मोपै किरपा करी दियो ज्ञान विज्ञान । सो सिष तुमसों कहत हीं छूटे सब अज्ञान ॥ २ ॥ शिष्य सुनी अब कहत हीं परम पुरातन ज्ञान । निगुर को नहिं दीजिये ताके तप की हान । ३ ॥ कुडलिया—मोक्ष मुक्ति तुम चहत हौ तजौ कामना काम । मन की इच्छा मेंटि करि भजौ निरजन नाम ॥ भजौ निरजन नाम तत्व देह अभ्यास मिटाओ । पचन के तजि स्वाद आप में आप समाओ ॥ जब छूटे झूठी देह जैस वे तैस रहिया ॥ चरण दास यह मुक्ति गुरू ने हमसे कहिया ॥

अत—दोहा-जनक गुर शुकदेव जी चरण दास शिष्य होय । आप राम ही राम हैं गई दुइ सब खोय ॥ ब्रह्म ज्ञान पोथी कही चरण दास निर्वार । समुझै जीवन मुक्त हो लहै भेद तत्सार ॥ ४ ॥ इति श्री ब्रह्म ज्ञान सागर ग्रन्थ से सपूर्ण समाप्त १९०२ वि०

विषय—इसमें ब्रह्म ज्ञान का वर्णन है ॥

संख्या ६५ आई. ब्रह्मज्ञान सागर, रचयिता—चरण दास (दिल्ली), पत्र—३४, आकार—७ × ३¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—जोरावर सिंह, ग्राम—मीढ़ाकुरा, डाकघर—मीढ़ाकुरा, जिला—आगरा ।

आदि ६५ एच के समान ।

अंत—अथ ब्रह्म ज्ञान को लछन वरनन । अथ ज्ञान परीछा । निरलभ १ निहभर्म २ नीर वासीक ३ निरविकार । अथ विचार परीछा । निरमोहत १ निरवंध २ निहसक ३ निर्संन ४ परम संतोष परीछा । अजाचीक १ अपानीक २ अपछीक ३ अरियर । अथ महज परीछा । नीहप्रपच निह तरंग २ निरलिप्त ३ निहकर्म ४ । निरवैर परीछा । सुहृदे १ सुपदाई २ सीतलताई ३ सुमती ४ अथ सुन परीछा सीतल वत १ सुवुधी २ सतवादी ३ ध्यान समाधी ४ जासो ऐ लछन न होऐ ताको वी टडो जानी ऐ लछ ग्यानी ए । दोहा । जनक गुरु सुखदेव जी चरनदास सिष होइ । आपा राम ही राम है गई दुई सब पाऐ । १८७ ॥ ब्रह्म ग्यान पोथी कही चरनदास निरु आर । समुझें जीवन मुक्त होए, लखे भेद ततसार । इति श्री चरनदास जी कृत ब्रह्म ज्ञान सागर । समाप्त शुभमस्तु ।

विषय—ब्रह्म ज्ञान का वर्णन ।

संख्या ६५ जे ब्रह्मज्ञान सागर, रचयिता—चरणदास (दिल्ली), पत्र ३४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० भगवती प्रसाद शर्मा, ग्राम—वरतरा, डाकघर—कोटला, जिला—आगरा ।

आदि—६५ एच और अंत ६५ आइ के समान ।

संख्या ६५ के. ब्रह्म ज्ञानसागर, रचयिता—स्वा० चरणदास (दिल्ली), पत्र—३२, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दीनानाथ, अध्यापक, ग्राम—चन्द्रपुर, डाकघर—कतरी, जिला—आगरा ।

आदि—६५ एच और अंत ६५ आइ के समान ।

संख्या ६५ एल. ब्रजचरित्र, रचयिता—चरणदास (डेहरा, अलवर), कागज—देसी, पत्र—१६, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९६, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८५ = १८२८ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा रामदास, ग्राम—जहांगीर पुर, डाकघर—फरौली, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ ब्रज चरित्र लिख्यते ॥ दोहा—दीनानाथ अनाथ की विनती यह सुनि लेहु ॥ सम हिरदे में आय के ब्रज गाथा कहि देहु ॥ चारि वेद तुमको रटे शिव शारदा गणेश । औरन शीश नवायहूं श्री कृष्ण करौ उपदेश ॥ कै गुरु को गोविन्द को भक्ती कै हरि दास । सबहुन के एकै गिनौ जैसे पुहुप अरु बास ॥ नारद मुनि अरु व्यास जू कृपा करिय सुदयाल । अक्षर भूलौ जो कहीं कहौ मोहि ततकाल ॥ श्री शुकदेव दयाल

गुर मम मस्तक पर ईश ॥ ब्रज चरित्र मैं कहत हौं तुमहि नवाये शीश ॥ सब साधुन परणाम करि कर जोरों शिरनाय । चरण दास विनती करै वाणी देहु बनाय ॥ सदा शिव ब्रज में रहै करि गोपी को रूप । मूरति तौ परगट भई आप रहत है गूप ॥

अंत—कवित्त—नन्द के कुमार हौं तो कहौं बार बार । मोहिं लीजिये उबारि ओट आपनी में कीजिये ॥ काम अरु क्रोध आदि सारौं जम वेड़ा प्रभु, मागौं एक नाम मोहिं भक्ति दान दीजिये । और की छुटायो आश संतन को दीजे साथ, वृन्दावन वास मोहिं फेरिहु पतीजिये ॥ कहे चरण दास मेरी होय नाहीं हास, श्याम कहू मैं पुकारि मेरी श्रौन सुनि लीजिये ॥ १ ॥ याही हाथ कुच गहि पूतना के प्राण सोखे, पाय ऊंची पद निज धाम को सिधारी है ॥ वाही हाथ श्रीधर की मुख माड़ी दही, सेती छाती पै पाव दै मरोरि जीभ डारी है ॥ वाही हाथ कूबरी के कूबर को सीधो कियो । वाही हाथ मत गज लँघि मूड़ मारी है ॥ वाही हाथ बाह चरण दास कह आय गहौ । जाही हाथ जमुना में नाथ्यो नाग कारी है ॥ इति श्री ब्रज चरित्र सपूर्ण समाप्त लिखा रामबली गोला मैदान वाले संवत् १८४५ वि०

विषय—ब्रज की कृष्ण लीलाओं का वर्णन ।

संख्या ६५ एम. चरणदास के शब्द, रचयिता—चरणदास (डेहरा अलवर), पत्र—१२०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ —२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा विष्णुगिरि, ग्राम—शिव नगर, डाकघर—सहावर कस्बा, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ चरण दास कृत शब्द वर्णन ॥ मंगला चरण ॥ दोहा ॥ ब्रह्म रूप आनन्द घन निर्विकार निर्लेप । मंगल करन दयाल जी तारण गुरु सुख देव ॥ १ ॥ सतियन में तुम सत्य हो सूरन में हो धीर । जतियन में तुम जती हो श्री शुक देव गंभीर ॥ २ ॥ राग कल्यान—नमो सुख देव हो चरण पखारणम् । द्वन्द संकट हरन करन सुख मंगल परम आनंद घन पतित के तारन ॥ नाव तरु त्याग वैराग है मुक्त लौं तीनहु गुणन ते निर्विकारम् ॥ महा निष्काम और धाम चौथे रहौ सिद्धि चेरी भई फिरै द्वार ॥ ज्ञान के रूप अरु भूप सब मुनिन में दया की नाव किये जीव पार ॥ उदै भागौत मति भान परगट कियो तिमिर कियो दूरि अरु धर्म धारं ॥ मोह दल जीति अनि रीति के खंडन भक्ति के दृढ़ करन भव विडार ॥ चरण दास के शीस पर हाथ नित ही रहौ यही मागौं गुरू बार बार ॥ ६ ॥

अंत—कोई जानै संत सुजान उलटे भेद को । पेड़ चढ़ो माली के ऊपर धरती चढ़ी अकास । नारि पुरुष विपरीति भये हैं देखत आवै हास ॥ बैल चढ़ो शंकर के ऊपर हंस ब्रह्म के शीस । सिंह चढ़ो देवी के ऊपर गुरु ही की बकसीस ॥ नाव चढ़ी केवट के ऊपर सुत की गोदी माय । जो तू भेदी अमर नगर को तौ तू अर्थ बताय ॥ चरण दास सुख देव सहाई अब कहा करिहै काल । बाबी उलटि सर्प में बैठी जवसु भये निहाल ॥ २ ॥ इति श्री चरण दास कृत शब्द समाप्त ॥ लिखा भैरू नाथ संवत् १९०२ श्रावण सप्तमी ॥

विषय—ज्ञानोपदेश ।

संख्या ६५ एन. धर्म जहाज, रचयिता—चरणदास (डेहरा, अलवर), पत्र—२८, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, लिपि-नागरी, लिपिकाल—सं० १९०१ = १८४४ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा रामदास, ग्राम—जहाँगीर पुर, डाकघर—फरौली, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ धर्म जहाज लिख्यते ॥ श्री गुरू चेला सवाद ॥ चेलाबचन ॥ दोहा ॥ ठाढा होकर जोरि कै अरज करै चरण दास । ए हो श्री सुक देव जी कछु पूछन को आस ॥ १ ॥ गुरुवचन-पूछौ मन को खोलि कर मेंटौ सब संदेह । अरु तुम्हरे हिरदे विषै सदा हमारो गेह ॥ २ ॥

अंत—व्यास पुत्र तुम मम गुरु देवा । करू मानसी तुम्हरी सेवा ॥ मन में तुम्हरी पूजा साज । तुमसो पूंछि करौ सब काज ॥ मेरे ध्यान शितावी आये । जो थे सो संदेह मिटाये ॥ मैं तो ध्यान करत ही रहू । तुम्हरी मूरति हृदय गहूं ॥ मेरे जीवन प्राण अधारा मै नहि रहो चरण से न्यारा ॥ तुम्हरो चरण दास कहा हू । बार बार तुमपै बलि जाहूं ॥ तुमही को ईश्वर करि मानू । पार ब्रह्म तुमही को जानू ॥ और न कोई पूजी आसा । मो हिरदे में राखौ वासा ॥ दोहा—अपने चरणहि दास को सब विधि दिया अघाय । अस्तुति करूं तौ क्या करूं तो क्या करूं मोपै कही न जाय ॥ इति श्री स्वामी चरण दास कृत धर्म जहाज गुरु चेला संवाद सपूर्ण समाप्तः लिखा नारायन गोसाईं ॥ जेठ सुदी अष्टमी । सवत् १९०१ वि० ॥

विषय—गुरु शिष्य संवाद के रूप में ससार से तरने का ज्ञान वर्णन ।

संख्या ६५ ओ. षटकर्महठजोग, रचयिता—चरणदास (डेहरा, अलवर), पत्र—१४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९६ = १८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा रामदास, ग्राम—जहांगीरपुर, डाकघर—फरौली, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ षट कर्म हठ जोग लिख्यते ॥ शिष्यवचन ॥दोहा॥ अष्टांग जोग वर्णन कियो मोको भई पहिचान । छहौ कर्म हठ जोग के वरणो कृपा निधान ॥ गुरू वचन—पहिले ये सब साधिये काया होवे सुद्धि । रोग न लागै देह को उज्वल होवै वुद्धि ॥ चौपाई—अरु साधैं षट कर्म बताऊं । तिनके तोको नाम सुनाऊ ॥ नेती धोती वसती करिये । कुंजर कमर देह सब हरिये ॥ न्यौली किये भजै तन बाधा । देखि देखि निज गुरु सो साधा ॥ त्राटक कर्म दृष्टि ठहरावै । पलक पलक सो लगन न पावै ॥ छप्पय ॥ गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवन के देवा ॥ सर्व सिद्धिफल देन गुरू तुमही मुक्ति करेवा ॥ गुरु केवट तुम होय करि करौ भव सागर पारी ॥ जीव ब्रह्म करि देत हरौ तुम व्याधा सारी ॥ श्री शुकदेव दयाल गुरु चरण दास के शीश पर ॥ किरपा करि अपनो कियो सब ही विधि सो हाथ धर ॥ इति श्री षट कर्म हठ जोग ग्रन्थ संपूर्णम् लिखितं रामानंद गोसाईं संवत् १८९६ वि० मिती अषाढ़ सुदी ३

विषय—हठयोग साधन विधि ।

संख्या ६५ पी जोग, रचयिता—चरणदास (दिल्ली), पत्र—१९, आकार—६३/४×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८५, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—फारसी, प्राप्तिस्थान—प्यारेलाल शर्मा, ग्राम—खौदा, डाकघर बरहन, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशाय नमः। श्री सरस्वती नमः। अथ श्री सुकदेव जी का दास चरणदास कृत जोग लिख्यते। गुरु नानक को शिष्य तासु को दासु कहाऊँ। सदा रहूं हरि सरन और ना शीश नवाऊँ। साधन सों यही चहौं मोहि हरि भक्ति बताओ। माया जाल संसार तासुओं वेग छुटाओ। गुरुदेवन गुरू देव यही सुनि लीजै चरनदास कौं हरि भगति कृपा करि दीजै। छप्पै। गुरू इश्वर गोरेश शीश गुर राम बनावें, गुए काटै जम फास सब अध नसावै। गुरु दवन के देव भयभरम अलगावै। गुरू भवसागर तार पार उनलोक बसावैं। चरनदास यह जानके सत संगत हरि को भजो, सुखदेव चरण चित लायकै मो झूठ कान दुविधा तजो। नद राम विन्ती करें सुनो इश गुरदेव, तुमही दाता भगति के जोग जुगति कहि देव।

अंत—अथ चाचरी मुद्रा चौपाइ। चाचरीमुद्रामें मकारी। अंगुल चारि नासिका अगारी। निरखत रहे नासिका अगारी। दृष्टि बाधि निरखै तहँ लागी। दीखत दीखत नासकीं आवे, स्थिर दृष्टि तहा ठहरावै। जब बहुतक अचरज दरसावै, साधन करै सुनै छकि जावै। पुनि भरकुटे को ध्यान लगावै, बाधे दृष्टि तहा लौं लावै। यह तब साधारन।

विषय—योग की विधि और मुद्रादि का वर्णन।

संख्या ६५ क्यू नासकेतु पुराण, रचयिता—चरणदास (दिल्ली), पत्र—३६, आकार—१०×७३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७३६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—वंशीधर जी माथुर वैश्य, ग्राम—बमरौली अहीर, डाकघर—बाह, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः। श्री शुकदेवाय नमः। अथ चरणदास कृत नासकेत पुराण लिख्यते। दोहा। जै जै श्री मुनि व्यास जी जै जै गुरु सुषदेव। तुम किरपा सों कहत हौं नासकेत को भेव। नृप बैठो यो हिरद विषै मो मुप कहो बषानि, तुम तो जानत हो सबै मैं हो मूढ़ अज्ञानि। चरणदास हौ कहत हौं भाषा परम पुनीत। सुनि २ आवै नीति पर छूटै सकल अनीत। नर नारी सुन लीजियो अदभुत कथा सुजान, पाप पुन्य की और सों जो कोइ होइ अजान। त्रेता जुग की यह कथा सहस कृत्य के माहिं, नासकेत तहा सो बदे मैं भाषत है छाहि।

अंत—नास केत की यह कथा जैसा धरम जिहाज। जामें जो कोऊ चढ़े सोई उतरे पार। रहि जावे अभिमान सों सोवे वेत मझार, सत गुरू विन बूढ़े सभी राम भगति नहिं जान। सत संगति आवै नहीं, करिके वे अभिमान। नासकेत की कथा को कहै सुनै चित लाई। पाप तेज तब पुनि करै वेस स्वरग वह जाय। सुषदेव के परताप सा कही नास सो कत। पाप पुन्य के भेद जो सजन करो नर हेत। इति श्री नासकेत उपाख्यानो नाम अष्टादशमो ध्याय॥ समाप्त। शुभम् भूयात्॥

विषय—नासकेत की कथा स्वर्ग नर्कादि वर्णन ।

संख्या ६५ आर. नासकेत पुराण, रचयिता—चरणदास (दिल्ली), पत्र—४१, आकार—८ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११७५, रूप—बहुत प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० मुरलीधर मिश्र, ग्राम—बडा गाँव, डाकघर—कंतरी, जिला—आगरा ।

आदि—···यन्मः अथ नासकेत लिष्यते । दोहा । जै जै......सजी । जै जै गुरु सुखदेव ॥ तुम क्रपा से कहतु हू .... ना जेव । × × × × । मेला जुग की यह कथा सस्कृत के माहि, नासकेत ही नाम हें में भाखूं लै छाहि । नीव खार के ही विखें, कथा कही जो सूत । सोन कादि रिखी सवै, सुनत भेय मिलि जूथ । सूतौ वाचः । वैस्यं पाइन इक समें बैठे गंगा तीर, अति प्रसन्न उज्जल दिसा, निरखत सुरसरि नीर । राजा जन्मेजय तवैं किआ जुतहां सनात मोती सोना आदि वहु दिआ विप्रन को दान । प्राक्षत में टन काज ही ने मलीआ जो अेक । ब्रह्म चरज रुपी जु तप, वारह बरस की टेक ।

अंत ६५ क्यू के समान । पुष्पिका इस प्रकार हैः—इति श्री नासकेत चरनदास क्रत नाटके...भासु चनिर्वय वर्णनोनाम अष्टदसो अध्याय । १८ । सुभं मस्तू । कल्याण रस्तू संवत् १९१० सुभ जो देष्यो सो लिष्यो ममदोस न दीयते लिष्यते लाला प्यारे लाल । वासी दगसै के । भूल चूक गोपो सुनार की पुस्तक पै ते उतारी ।

संख्या ६५ एस. नासकेत पुराण, रचयिता—चरणदास, (दिल्ली), पत्र—२०, आकार—१२½ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१२ = १८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—छिगामल पुजारी, स्थान—राधाकृष्ण मंदिर, फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—अंत—६५ क्यू के समान । पुष्पिका इस प्रकार हैः—

इति श्री नासकेत पुपाख्यानो नाम अष्टादसमोऽध्याय। श्री राम संवत् १९१२ श्रावण कृष्ण ५ पंचमी ।

संख्या ६५ टी. नासकेतु, रचयिता—चरणदास (डेहरा, अलवर), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०२६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१७ = १८६० ई०, प्राप्ति-स्थान—पं० रूपनारायण, ग्राम—भज्जूपुरवा, डाकघर—मल्लावाँ, जिला—हरदोई ।

आदि—६५ क्यू के समान ।

अंत—नास केतु ऐसी कथा जैसे धर्म जहाज ॥ जन्मै जै दाता चढे कष्ट गये सव भाज ॥ केवट तहां जो व्यास से, वचन वादही वान ॥ जगत सिन्धु सव जा धर्म यही जिहाज वखान ॥ जामें जो कोई चढै सोई उतरै पार ॥ रहि जै है अभिमान से सो वूढ़ै मझधार ॥ सत गुरु विन वूडे सवै राम भक्ति नहिं जान ॥ सत सगति आवै नही करै वहुत अभिमान ॥ नास केतु ऐसी कथा कहै सुनै चित लाइ ॥ धर्म वढै पापै घटै सवै स्वर्ग में जाइ ॥ इति नास केत पोथी समाप्तं ॥ सवत उनइस जानियो औ सत्रह परिमान ॥ वैसाखै सुदि

द्वादशी बुध वासर को जान ॥ तादिन लिखि पूरन भये जथा विहारी लाल । जैसी की तैसी लिखी ना जानौं कुछ हाल ॥ जहा जीविका प्रान की ताको करौ बखान । ताहि नग्र में बसत हौ पर सुनियो बुधिमान ॥ सँग सेवस तीर है श्री गगा की धार । जाको मजन करत ही हो जाये भव पार ॥ राम राम

विषय—नासकेतु पुराण का भाषानुवाद है ॥

संख्या ६४ यू पंच उपनिषद, रचयिता—चरणदास (डेहरा, अलवर), पत्र—२४, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४१०, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबा रामदास, ग्राम—जहांगीरपुर, डाकघर—फरौली, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पंच उपनिषद लिख्यते (भाषा) दोहा—वंदन श्री शुकदेव को उनको हिय में लाय । छिप्यो भेद परगट कियो परमारथ के दाय ॥ सहस्कृत भाषा करी ताको यह दृष्टांत । खोलि खोलि सब ही कही समझौ छूटे भ्रान्त ॥ ज्यो कूएँ से नार ले बाहर दियो भराय । विना जतन कोइ पियो तिरषा वत अघाय ॥ पौ दीनी सुकदेव ने में जल काढन हार । प्यासा कोई न जाइयो दैरौं बारबार ॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य जो अरु शूद्रहु जो होय । वह पावेगा हेत करि बहु प्यासा जो कोय ॥ मुक्ति नीर की प्यास जो काहू ही को होय ॥ और मनुष्य जग प्यास में रहे जु मृत्यक होय ॥ यह जग ऐसो जानिये मृग तृष्णा को नीर । निकट जाय प्यासा कोइ कभी न भागै पीर ॥

अंत—अष्टपदी—दुओ से न्यारा जान जाग्रत अरु स्वप्नन सू । ऐसा कोई नाहिं न जानैं सत्त हू ॥ सत का जानत मूल जो ज्ञानी लोयही । दीरघ अरु पर काशी जानै सब को यही ॥ जाको लोभ न होय अविद्या होय ना । मैं अभिमान कुकर्म वासना कोय ना ॥ गरमी जाडा भूख प्यास व्यापे नहीं । पैइये क्रोध न मोह नेक वामे कहीं ॥ वाहि न इच्छा होय न पूरी चाहही ॥ कुल विद्या अभिमान न उनके माहि ही ॥ मान नहीं अपमान न मनमें लावई । सबसौं होय निवृत ब्रह्म को पावई ॥ तेज विन्द उपनिषद संपूरण ही भई । गुरु सुकदेव के दास चरण दासा कही ॥ ताहि सुनै मन राखि विचारा की करै । निश्चय होवै मुक्त जगत में ना परै ॥ दोहा—कही गुरू शुकदेव ने मेरी कछू न बुद्धि । पढ़ो नहीं मूरख महा मोंकू नेक न सुद्धि ॥ १ ॥ मेरे हिरदे के विषे भवन कियो गुरु आय । वेई बिराजत है सदा मेरी देह दिखाय ॥ २ ॥ जब सू गुरु किरपा करी दरशन दीनो मोय । रोम रोम में वे रमे चरण दास नहिं कोय ॥ जाति वरण कुल मन गया गया देह अभिमान ॥ अपने मुख सों का कहौं जगही करै बखान ॥ रहे गुरू शुकदेव जी मैं मैं गई नसाय । मैं तें तैं मैं वही है नख सिख रहो समाय ॥ इति श्री पंच उपनिषद भाषा समाप्त ॥

विषय—पंच उपनिषदो का संस्कृत से भाषानुवाद ।

संख्या ६५ वी मन विकृत करन गुटका, रचयिता—चरणदास (डेहरा, अलवर), पत्र—३२ आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ —२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा विष्णुगिरि, ग्राम—शिवनगर, डाकघर—सहावर कस्बा, जिला—एटा ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ मनविकृत करन गुटकासार ग्रन्थ लिख्यते ॥दोहा॥ नमो नमो श्री व्यास जी सत गुरु परम दयाल ॥ ध्यान किये आशा नशै लगै न जगत वयाल ॥ १ ॥ अष्टपदी—नमो नमो शुकदेव तुम्हें परणाम है। तुम किरपा सों आप मिलै घन श्याम है ॥ तुम्हरी दया से होय जो पूरण जोगा है। तनकी व्याधा छुटै मिटै मन रोग है ॥ तुव किरपा सो ज्ञान पदारथ पावई। उपजै सार विचार अक्षर छुटावई ॥

अंत—दोहा—गुरु समान तिहुं लोक में और न दीखै कोय। नाम लिये पातक नशैं ध्यान किये हरि होय ॥ १ ॥ गुरु ही के परताप सों मिटै जगत की व्याधि। राग द्वेष दुख ना रहैं उपजै प्रेम अगाध ॥ २ ॥ गुरु के चरणन में धरौं चित बुधि मन अहंकार। जब कछु आपा ना रहै उतरै सवही भार ॥ ३ ॥ मन विरक्त के करन को कीनो गुटका सार पढै सुनै चित मे धरै भवसागर हो पार ॥ ४ ॥ इति श्री चरणदास कृत मन विकृत करन ग्रन्थ समाप्त. लिखा भैया राम वैद्य मिती जेठ वदी १० मी सवत् १९०० वि० ॥

विषय—ज्ञानोपदेश।

संख्या ६५ डब्लू. ज्ञानस्वरोदय, रचयिता—चरणदास (दिल्ली), पत्र—३३, आकार—७ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४६, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपिकाल—स० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—मुंशी जोरावर सिंह, स्थान—मिढ़ाकुर, डाकघर—मिढ़ाकुर, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशाय नमः। अथ सरोदो चरनदास क्रत प्रारंभ.। दोह.। नमो नमो सुपदेव जी करो प्रणाम अनंत। तब प्रसाद सुरभेद को चरन दास वरनत। पुरुषोत्तम परमातमा पूरन विस्वा वीस। आदि पुरुष अविचल तुही, तोहि नवावों सीस। कुंडलिआ। आछर ॐ सो कहत हैं अक्षर सो है जानि। तिहि अक्षर स्वासा वहै ताही कौ मन आनि। ताही कौ मन आनि राति दिनि सुरति लगावौ। आपा आप विचारि और ना सीस नवावौ। चरनदास मथि कहत है अगम निगम की सीप यही वचन ब्रह्म ज्ञान कौ, मानौं विस्वा वीस।

अंत—डेरे में मेरो जन्म है नाम रन जीत वषानो। मुरली कौ सुत जानौ जाति धूसर पहिचानो। वाल अवस्था मांहि वहुरि दिल्ली में आयौ। रमत मिले सुपदेव नाम चरन दास धरायौ। योग मुक्ति करि ब्रह्म ज्ञान दृढ़ करी गयौ। आतम तत्त्व विचारि कै अजपा सन्यौ भखौ। ४०। इति श्रीचरनदास क्रत ग्यान सरोदय संपरन समरतु लीपा नार्थी सालिकराम मार्गक्रस्न चतुरदसी वार बुध सौ जाको ग्यान सरोदय सौ लीपी सो मन उतीम जानौ सः१९१८ मीति आसाढ़ वदी ३ सव थान जीजोनी वीजा से न कै मंदिर में लिपी लछमन पुरोहीत।

विषय—स्वरोदय सवंधी ज्ञान का वर्णन।

संख्या ६५ एक्स. स्वरोदय, रचयिता—चरणदास, कागज—बाँसी, पत्र—२७, आकार—६ X ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० हरीमोहन मिश्र, ग्राम—सिगरावली, डाकघर—तांतपुर, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—६५ डब्ल्यू के समान।

अत—अग्नि तत्व के चहत ही, जुद्ध करनि मत जाय। हारि होय जीते नहा, और आवे तप छाय। तत्व अकास जो चलत है, तोउ हारो जाय। रन माहीं काया छुटे, धरनी दसो आय। जलपति के जोग में गभ रहे सो पूत, वायु तत्व में छै वरे, और होय पूत कपूत। पृथ्वी तत्व में गभ में बालक होय जो भूप, चन्चतो सो जानिये।। सुन्दर होय स्वरूप। अग्नि तत्व के चलत ही, जनै गभ रहि जाय। गभ गिरै माता दुखी, होत मान मर जाय।

विषय—स्वरोदय वणन।

सख्या ६६ बाइ, ज्ञान स्वरोदय, रचयिता—चरणदास, कागज—बाँसी, पत्र—२४, आकार—६३⁄४ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० जानकी प्रसाद जी, स्थान—बमरौली कटारा, डाकघर—बमरौली कटारा, जिला—आगरा।

आदि—६५ डब्ल्यू के समान।

अत—आसन सजम सोधि करि, दृष्टि स्वास में मान॥ तत्व भेद यो पातने कथ्यो स्वरोदय ज्ञान॥ छप्पै—हिये में सुरुतु जन्मना मरण जीत कहायौ बाल अवस्थहि माहि, दिल्ली में आयो। पर मस मिले शुकन्य नाम चरणदास धरायौ। चरण कमल उधारि मरि बहुर अति सुयस सुख पायौ॥ जोग मुक्त हरि भक्ति करि, ब्रह्म ज्ञान करि दृढ करि गह्यो। आतम तत्व विचारि कै, अजपा में समान रह्यो। इति श्री चरनदास कृत ज्ञान स्वरोदय सम्पूर्ण।

अत—'ज्ञान स्वरोदय' चरणदास का मशहूर ग्रन्थ है। इसमें स्वरोदय की परीक्षा का अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है।

सख्या ६६ जेड स्वरोदय, रचयिता—चरणदास, पत्र—२४, आकार—९ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८३७ = १७८० ई०, प्राप्तिस्थान—प० लक्ष्मीनारायण वैद्य, स्थान—बाह, डाकघर—बाह, जिला—आगरा।

आदि—६५ डब्ल्यू के समान।

अत-बाये सुरते आइके दहिनै पूछै आई। जो सुर दहिनो चदहै कारज अफल बताइ। जब सुर चालै बाहिर को जो कोई पूछै ताहि। वासो ऐसी भाषिये नहिं कारज विधि कोई। पैज वधि वासो कही मसा पूरी होइ। जो कोई पूछे आइके बैठ दाहिनी ओर। चद चलै सूरज नहीं कारजधि विकोर। जो सूरज में सुर चलै कहै दाहिनी आइ। लगनवार अरु तिथि मिलै के कारज हो जाइ जो चदा में सुर चलै बायैं पूछे आई। तिथि और अछिते सुरसी अइष्ट सुन आर जो जइ। जो पूछे प्रसग वह रोगीन ठहराइ। सुन औरते आइके पूछे बहते स्वास। जिह नै है चेष्टा जानियें रोगी को नहि नास। सुन और ते आइके पूछे बहते पछि जेते कर जगत। इति श्री सुरोदय चरन दास कृत सम्पूरन शुभम्। श्री लाजो की प्रति सो। उतारी। स० १८३७ फागुन बदी ८।

विषय—स्वरोदय का वणन।

संख्या ६६. एकादशी भाषा, रचयिता—चतुरदास, कागज—बाँसी, पत्र—१६०, आकार—९ × ६ इन्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६०९ वि०, लिपिकाल—सं० १८७४ = १८१७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री महत दातारामदास जी कबीरपंथी, ग्राम—मेवली, डाकघर—जगनेर, तहसील—खैरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशायन्मः। अथ एकादश भाषा लिष्यते। १०। चौपाई—संतदास सतगुरु के चरना। तिनको गहौ सदृढ करि सरना। जानें उपजैं ज्ञान विचारा। छूटे कर्म मर्म्म व्यवहारा ॥ १ ॥ बऊरयौ जन्मत जन्म नहि आऊँ। तिनको निजानन्द पद पाऊँ। तिनकी आज्ञा हिरदे धरौ ॥ लोक हितारथ भाषा करौं ॥ २ ॥ श्री भगवान विरचहि भाष्यो। सो विरंच विनारद सो भाष्यो। सो नारद व्यासि समुझाये। व्यास व्यास करि शुकहि पठायो। ३ ।। सो शुक कहयो परीक्षत आगे ॥ छूट्यो द्वैत स्वप्न ज्यों जागे। सोई सूत अजहु विस्तारै। सहश्र अठासी रिषि मन हरैं ॥ ४ ॥ श्री भगवान आप ही भाष्यौ ताते नाव भागवत राष्यो। आप मिलन को पथ दिखायो। या मारग बहुत निहरि पायो ॥

अंत—संवत सोलह सै नवा। जेठ शुक्ल पष्ठी कुला दिवा संतनदास गुरू आज्ञा दीनी। चतुरदास यह भाषा कीनी। दोहा—परमज्ञान परगट भयो। मम घट है निज देव। ते मेरे निति उर वसै, सतदास गुरुदेव। ६। इति श्री भागवत पुराणे एकादश स्कंधे श्री शुक परीक्षत संवादे श्रीकृष्ण वैकुण्ठ प्रयाणो नाम एकाकि शोध्याय। ३१। पठनार्थं बाबा जी गरीब दास जी। लेखत उद्योत सिह कायस्थ मकान वारी गुमट मैं। जागेर के। जो देष्यो सो लिख्यो मम दोस न दीयते। सवत् १८७४ मिती फागुन सुदी १२ ब्रहस्पिति वार सम्पूर्णम्।

विषय—भागवत के एकादश अध्याय का पद्यानुवाद।

संख्या ६७ ए. लग्नसुंदरी, रचयिता—छदुराम (सगौनी), पत्र—५१, आकार—७½ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६३२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७० वि०, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—प० हरीप्रसाद आचार्य, ग्राम—ऑनवल खेडा, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम.। अथ लग्न सुंदरी लिष्यते। दोहा। श्री गनेस सुमिरन करौ, सरस्वती तोहि मनाय क्षदुराम चरन गुरवंदि के लग्न सुंदरी गाइ। श्री धरनीधर सुत कहे, मंसुष राम प्रवीन, तिनके लघु भ्राता क्षदू, मति अनुसार सुकीन नग्र सगोनी वास है, सुभ धामनि को धाम, सुंदर बाग तडाग है क्षदुराम चहु गाम। अठारह से सतरि १८७०, द्वौज २ फागुन वदि गुरुवार, क्षदुराम तब वरनियो, लग्न सुदरी सार ॥ अथ बालक जन्म के बिचार-बालक जन्म के भेद सब कहहु सकल समुझाइ, जाके जैसे ग्रह परे, ते फल देतु-बताइ। राहु परे जाही दिसा सिरहानो तहा मानु, मगरं दिसि पाओ फटो टूटो वान सुजान। रवि दीपक तहिये रहे, सनि लोहो तहां होय, गुरू पीतरि जा विधि मिले, लग्न जानिये सोइ।

अत—अथ सक्रांति को वाहन। गजवाहन रवि सौम कहि, जीव तुरग बताय, भाम बुध मृग जानियै, शुक्र शनीचर नाय। नाव चढ़े जल वर्षई मृग चढ़ि पमन चलाय, वान चढ़े रनक्रों करे गज चढ़ि अन्नो पाय। सक्रांति कहि मकर की, ताको भाव बताय, छदूराम नर समुझि के दीना भेद लपाय। अथ नक्षत्रनिको वहिन। [1]हय [2]मृग [3]कूम [4]गज [5]केहरी, [6]महिषी [7]ससा वपानि, [8]सूकर [9]दादुर [10] विलार [11]श्वप, छदराम पहिं चानि। मेषलग्न ते मीन लौ, प्रथम तुरग बताय, जाही विधि छदराम तो, वाहन नपत बताय। इति श्री छदरामकृत लग्न सुदरी वननो नाम नवमो अध्याय ९ सपूण सवत् १९३१ शाके १७९६ तत्र वर्षे ज्येष्ठ सुदी १२ बृहस्पति वासरे लिपिते दुलीचद पडित अस्थान नोपुरा में बसई को वासु ॥ ० ॥ ६ ॥ ० ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

विषय—ज्योतिष।

सख्या ६७ वी लग्नसुदरी, पत्र—५३, आकार—१०½ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५५०, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी लिपिकाल—स० १८९३ = १८३६ ई०, प्राप्तिस्थान—प० केशवराम, ग्राम—शमसाबाद, जिला—आगरा।

आदि—पहला पृष्ठ नष्ट कुभ सुचारि। धन अरु कऋ सौं पाँच कहि। तहँ बैठी है नारि ॥ ९ ॥ मकर सिंह वृश्चिक मिथुन। तीन अखी जानि। कन्या तुमसौं मात कहि। नारि तहाँ पहिचानि ॥ १० ॥ पापग्रह जेइ परैं। तेई विधवा जानि। सौमग्रह अहि वात का। क्रूर सौं कन्या मानि ॥ ११ ॥ कुडरिआ ॥ अहिवाती सुन्दर ललित। पहिरैं वस्तर लाल। दहिनी भुज पर तिल कहत। क्षदुराम लीख वाल ॥ १२ ॥ लगन लछि पहिचानौं। तन उतग सौं देपि वचन बहु चातुर जानौं ॥ सौमग्रह गुरु देखिकैं लछन दये बताइ। बुध शुक्र के कहत हौं। देखि ग्रन्थ समुझाइ ॥ १२ ॥ दोहा ॥ सौम ग्रह जो शुक्र है। ताके कहत सुभाव। देपि ग्रन्थ प्रिय अग के। बरनत हौं सब भाव ॥ १२ ॥

अत—शुक्र शनीचर धाम एक। वन फूलहिं पहचान। गुजा फल शुक्र बुध। रवि मंगल सम जान ॥ ३८ ॥ अस्लोक तुलसी सौरी भूमस्र। बुध अबुज द्विसेत। सहस्र अस्थाने गते सौरी कुरन पुस्प चमुष्टिकं ॥ ३९ ॥ जीव पच मैं भवन मैं। कमल मुष्टि मैं जुक्त। भूम फूल काटे सहित। बाँस पत्र कर मुक्त ॥ ४० ॥ राहु परै कै इन्द्र मै। पुस्प अरुसे जाम। कपूरवास क्षदुराम कहि। जीवन दृष्टि पहिचान ॥ ४१ ॥ चदा रवि को देपिइ। शुक्र अबीर बताई। चन्द्र जीव की नजरि मैं हरो रग कर लाइ ॥४२॥ लग्न मधि ग्रह देपिकै। पडित करौ विचार। हाथ प्रस्न क्षदु राम कहि। जातु नाम निजु सार ॥४३॥ इति श्री छदुराम कृत लग्न सुदरी वरननो नाम दसमोध्याय ॥ १० ॥ सवत् १८९३ ॥ असाढ सुदी तुतीया गुरुवासरे ॥ सुभ मस्तु कल्यन रस्तु ॥ जंसी प्रति येक हजार क्षावन कहे। दोहा छद कवित्त ॥ तिमिर हरनु को भानु है पढ़े सुने दै चित्त ॥ कटि ग्रीव और नैन कर तन दुख सहत सुजान ॥ लिखी जात बड़े कष्ट सौं। सठ जानत आसान ॥ श्री रामजी सहाय ॥

संख्या ६७ सी. लग्न सुंदरी, रचयिता—छंदुराम (सागोनी), कागज—बांसी, पत्र—७०, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३६५, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७० = १८१३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० जानकी प्रसाद, ग्राम—बमरौली कटरा, डाकघर—बमरौली कटरा, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशायनमः। अथ लग्न सुन्दरी लिख्यते। दोहा—श्री गनेस सुमिरन करौ, सरस्वति तोहि मनाय, धन्वरा चरन गुर वदि के, लग्न सुन्दरी गाइ। श्रीधरनी घर सुत कहे, मसुख राम प्रवीन, तिनके लघु भ्रात धून्दू मति अनुसार सुकीन। नग्र सगोनी वासु है, सुभ धामन को धाम। सुन्दर वाग तडाग है, छन्दु राम चहुं गाम। अठारह सै सतरि १८७० द्वौज २, फागुन वदि गुरुवार। क्षंदु राम तव वरनियो, लग्न सुन्दरी सार। अथ बालक जन्म के विचार—बालक जन्म के भेद सव, कहत सकल समझाय। जाके जैसे ग्रह परैं, ते फल देत बनाय। राह परे जही दिसा, सिरहनि ताहा मानु। मगर दिस पाओ फटो टूटे वान सुजान।

अंत—इति श्री छन्दुराम कृत लग्न सुदरी वरनो नाम महूरत विधि सम्पूरन अष्टमो अध्याय। अथ दुरगा मतो। दोहा—वर्ष एक वा तीन में पाच सात नो जानि। मार्ग और वैसाख में फागुन गो नो आनु। तीज पचमी सप्तमी, आठे दसमी होइ। तेरथ पूनो तिथि कही, अब जानो सुभ सोइ। रवि चन्द्रा बुद गुरू शुक्र, पंचवार पहिचानि। गोन्यो चल्यो भवन को, छन्दूराम शुभ मानि। रोहिनी मृग सिर आद्रा, अनुराधा श्रम नव ताप, चिता स्वाति सो पूर्वा जे नक्षत्र सुखदाय। मकर मिथुन धन मोहे कन्या तुला बखानि। जे जोना अप लग्न शुभ सुख कारज को मानि।

विषय—ज्योतिष।

संख्या ६८. विजय मुक्तावली, रचयिता—छत्र कवि, पत्र—१६०, आकार—७ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०१०, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५७ = १७०० ई०, लिपिकाल—सं० १८९१ = १८३४ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला शंकरलाल पटवारी, ग्राम—मझोला, डाकघर—थाना दरियावगंज, जिला—एटा।

आदि—नृपति सांतन एक दिन गयऊ अखेटक काज। सघन विपिन सरिता निकट लै प्रिय लोग समाज॥ केवट तनया ससि वदन जोजन गधा नाम। निरपि नृपति लोभित

भयो विज्जुल्ता सो वाम ॥ अति आसक्त भयो नृपति तब केवट लयो बुलाय । देहु मोहि अपनी सुता मन वच क्रम सुख पाय ॥ केवटोवाच—तुम पृथ्वी पति भूप हौं नीच जाति मल्लाह । आपुहिं कहौ विचारि के केहि विधि होइ विवाह ॥ ता विवाह तुमसों करौ जो यह मागे देहु ॥ नृपता याको सुत ल्है करो आपु करि नेह ॥

अत—अष्टा दशो पुराण को सुने जगत में कोइ । सुनत विजय मुक्तावली तितनोइ फल होइ ॥ वर्णो ग्रन्थ सु छत्र कवि अपनी मति अनुसार ॥ छमियो चूक बुधीस सब कविता समुझन हार ॥ छप्पय-मधु कैटव वकु हत्यो हत्यो हिरणाक्ष अघासुर ॥ हरनाकुश जेहिं हत्यो हत्यो धेनकु केसी सुर ॥ वध सहित दसकंध हत्यो वत्सासुर जेहिं धर । नरकासुर जेहि हत्यो हत्यो शिसुपाल अधम धर ॥ सुत धम क्रम रक्षत अवनि महिमा महा जानी पर । त्रलोक्य नाथ कवि छत्र कहि सु पढ़त सुनत रक्षा करे ॥ सवैया—ब्याल धरे शशि भाल धरे हरि छाल जरे तन भस्म लगाये । गंग धरे अरधंग सिवा ढिग भंग धरे गन भूतन छाये ॥ ब्याल धरे सिर माल कपाल धरें विष कंठ महा सुख पाये ॥ ऐसे सदा शिव होत प्रसन्न सु छत्र विजय मुक्ता वलि गाये ॥ दोहा—मौजा सुन्दर वारी एसे भूपति सिंह कल्यान । पूरन कीनो ग्रन्थ कवि छत्र गो तिहि अस्थान ॥ दयो सु सीस चढ़ाई ले आछी मोतिन हेरि । जापे सुरज चाहति लयौ वाके दुपहि न फेरि ॥ इति श्री महा भारथे महा पुराणे विजय मुक्तावली कवि छत्र विरचिताया राजा जुधिष्ठिर राज्य क्रम वरणनो नाम ४३ प्रभाव सवत् १८९१ वि० असाढ़ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ७ सनि वासर लिखत य छोटे लाल काय थ कुलश्रेष्ठ सारा श्रोनई मध्ये ग्राम नगरा धीर ॥

विषय—महाभारत का हिंदी पद्यानुवाद ।

संख्या ६८ वी विजय मुक्तावली, रचयिता—छत्रकवि (अटेर, भदावर), पत्र—१५५, आकार—११¾ × ६¾ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्ति स्थान—छेदालाल पाठक, स्थान—दुडला, डाकघर—दुडला, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशायनम । अथ विजै मुक्तावली लिष्यत । दोहा । बृज रछन मजन अनल, रछन गोधन ग्वाल । भुजवर करवर करज पर, गिरवर धरन गुपाल । हरि दीपक मन सदन धरि कपट कपाट उधारि, नसै सकल अघ कालिमा छत्र सुमति विचारि । दंडक छंद । झूम २ आये कोपि वासव पठाये नव, धाये दिसि दिसनि सवासर तरज पर । मेघ की मरोर महा पौन की झकोर, नीरद निपट घोर घोष सोज रज पर । असें लषि कृष्ण ने उठायो गिरि गोवरधन, बृज की सहाइ करि कर की करज पर । रापे सुरपाल के कराल क्रोध तें गुपाल छत्र है दयाल गोपी ग्वाल की लरज पर । सवेया—आनन येक कहे मनु को चतुरानन चारिहु वेद बतावें । जे रिपिवध प्रसिध है सिध सदा मन वांछित सिधि सु पावें । नारद सारद जोवत हैं सनकादि सुकादि सबे गुण गावें । वदत ये सब शेष सुरेस दिनेस धनेस गणेसहि ध्यावें ।

अंत—जान्यो भारत कृष्ण मत तिनहि सहाइ पाइ। एक छत्र महि भो गई छत्र जुधिष्टिर राइ। भारथ सुनि भाषा कियौ छत्र सुबुधहि पार। कहत सुनत पातिक नसै अघ दीरघ दुप जाई। चारि वरन मै जो सुनै, तरुनी पुरिप जु कोई। प्रगटै हरि की भगति उर मोचन अप्प कौ होई। सवैया। जो फल तीरथ जात कियै अरु जो फल पोडस दान दिये के। ज्ञान कथा नि सुनै फल जो कवि छत्र वढ़े बहु बुधि हियै ते। जो फल रुद्र प्रसन्न भये फल सोई युधिष्टिर नाम लियै ते। श्री कृष्णहि पत्थहि हेत जि सौति सो फल भारथ श्रोन कियै ते। इति श्री महाभारते पुराणे विजै मुक्तावली कवि छत्र विरंचते राज्य जुधिष्ठिर राजगादी वरननो नाम। प्रतिय चालीसमो आध्याय। इति विजै मुक्तावली संपूर्ण। शुभंमस्तु। कल्यान रस्तू। दोहा। इंद्रजीत पुस्तक लिपी कौरव पांडव जुद्ध, भूल चूक जो होय पुनि चातुर कीजे शुद्ध। मिति श्रावण वदी। २। दतीया। गुरू वासरे संवत् १९०० शाके १७६५ लेखक मिश्र इंदजीत जाजढ मध्ये रोजे की। श्री श्री श्री श्री श्री राम रामं रामं रामं रामं राम रामं राम राम

विपय—महाभारत का हिंदी-पद्यानुवाद।

मगला चरणकवि परिचय—मथुरा मंडप में वसैं देस भदावर ग्राम। उगलत प्रसिद्ध महि, छेत्र बटेश्वर नाम। सुजस सुवास सु निकट ही पुरी अटेरहि नाम। जज्ञ जन हौ मादि वृत रचन धाम प्रति धाम। नगर आहि अमरावती वासी विबुध समान, आखडल सौलत तहां भूपति सिंघ कल्यान। श्री वास्तव कायथ है छत्रसिंह यह नाम, रहत भदावर देस में ग्रह अटेर सुप धाम।

ग्रंथ रचना काल—सवत सत्रह सै वरप सप्तवादि पंचास, शुक्ल वदि एकादसी रच्यो ग्रंथ नभ मास। नाम विजय मुक्तावली, हित करि सुनै जो कोइ, अष्टादसौ पुरानकौ ताहि महा फल होई। महाभारत का संक्षिप्त वर्णन।

संख्या ६८ सी. विजै मुक्तावली, रचयिता—छत्रकवि (अटेर, भदावर राज्य), कागज—देशी, पत्र—१३२, आकार—१० × ७ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२५३, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७५७ वि०, प्राप्तिस्थान—हनुमान प्रसाद सब पोस्टमास्टर, स्थान—राया, डाकघर—राया, जिला—मथुरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥—थ विजे मुक्तावली लिष्यते। दोहा वृज रक्षक भक्षक अनल रक्षक गोधन ग्वाल—भुजवर करव—जपर गिरवर धान गुपाल। १। हरि दीपक मन सदन धरि कपट कपाट उघारि। नसै सकल अघ कामना छत्र सुदेखि विचार। २। दंडक। भूमि २ आपेको पिवासव पठाये धन धाये दिसि दिसिते सुतौवा सरत रज पर। मेघ की मरोर महा पवन झकझोर जोर नीरद निपट घोर घोप जो गरज थर। राखे स्वरपाल के कराल क्रोध तै गुरु पाल छत्र द्वैदयाल गोपी ग्वाल की लरज पर। हर वराइ धाइ गिरि मूलि ते उठाइ लियौ छाइ व्रज राख्यौ करकि रज पर ॥ ३ ॥ सवैया। आनन एक कहै चतुरानन आनन चारिहु वेद बतावै। जे रिपि वध प्रसिद्ध सु सिद्ध सदां मनवं छित सिद्धि सु

पावे । नारद सारद जो वतये सनकादि सुकादि सवै गुन गावे । बदत ये सब सेस सुरस दिनेस धनेस गणेसहि गावे ।

अंत—इते श्री महाभार्थे कवि विरचते विजे मुक्तावली युधिष्ठर राज नीत वनम नाम तेतालीसो अध्यायइ इती विजे मुक्तावली सपूण ताटक नृप पविक्रम की पुनि वर्ष गनौ । नभ है नापु पत्ति समान भतो सिव लोचन सेप सवे जु भइ पुनिदै प्रति जौ तव हीजु भई २ दोहा । नभ करना दसमी गनौ वार दृत्य गुन जानि ता दिन यह प्रति निमरी सुनियौ सवे सुजान २ नग्र धौलपुर मध्य यह नरहरि सन्दम प्रार । लिखी इसुरी हेत निज लाजो चतुर सुधार ।

विषय—महाभारत का हिंदी पद्यानुवाद ।

संख्या ६८ डी विजय मुक्तावली, रचयिता—छत्र कवि, कागज—बासी, पत्र—१०४, आकार—११ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१४६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८४ = १८२७ ई०, प्राप्ति स्थान—श्री दौलतराम पुजारी, ग्राम—सरधी, डाकघर—जगनेर, जिला—आगरा ।

आदि—६८ बी के समान ।

अंत—जो फल तीरथ जात कीये अर जो फल पोडस दान दीये ते । जो फल सगुम नेम रचे अरू जो फल हैं सत संग कीये ते । ज्ञान कथा न सुनें फल जो कवि छत्र बढ़ यहाँ बुधि हीये ते । जा फल रुद्र प्रसन्न हुवै फल जोइ जुधिष्ठिर नाव लीये ते । इति श्री महाभारते पुराणे विज मुक्तावलि कवि छत्र विरचित पांडव कौरव कुरक्षेत्र भारत समस्त ॥ श्री मस्तु ॥ मंगल मस्तु ॥ मंगल लेप कानाच । पाठकानाव मंगल सव साउना सुमे भुपति मंगल ॥ १ ॥ पोथि लिखित लाला बालमुकुन्द हेतराम सुत निज पठाथ वासी हीमत की ॥ मीती माघ सुदी ३ संवत १८८४ ।

विषय—महाभारत का खण्ड काव्य ।

संख्या ६८ ई विजय मुक्तावली, रचयिता छत्र कवि (अटेर, ग्वालियर), पत्र—१५६ आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८९६, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५७ = १७०० ई० लिपिकाल—सं० १८४९=१७९२ ई०, प्राप्तिस्थान—स्यामसिंह सेंगर, ग्राम—बैसपुर, डाकघर—जलेसर, जिला—एटा ।

आदि अंत—६८ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है—इति श्री महाभारते महापुराणे विजय मुक्तावली कवि छत्र विरचितायां संपूर्ण समाप्त संवत् १८४९ अषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे रविवासर ॥ जै शंभूनाथ की ॥

संख्या ६८ एफ सुधासार, रचयिता—छत्रकवि अटेर, भदावर), पत्र—७७, आकार—१३½ × ९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६६०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७६, लिपिकाल—सं० १८५३ = १७९६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० नरोत्तमदास लक्ष्मीनारायण वैद्य, स्थान—बाह, डाकघर—बाह, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । अथ पोथी सुधासार श्री भागवतु दसमुल्लिप्यते ।

छप्पय। श्री परमानद परम पुरुप पावन अविनासी। अजर अमर अज अलख अमित सब जगत निवासी। अगुन सहित जग रमत रुप अति अतर जामी। जल थल मन वन माह सकल तल तल विश्रामी। अति अमल जोति एकै सदा और कोऊ दूजो नसरि। तिनको प्रनाम निसु दिन हरषि सुमन वच क्रम जुत छत्र करि। १। सवईया। लेम कलेस के दूरि करें दिन दीननि के दुप पंडन है। देत सदा नव निद्धि सिद्धिनि दीह दरिद्र के कंदन है। जन वाहुक पडन छुद्रन के जन जाल विदत्ति विहंडन हैं। छत्र प्रनाम करौ तिनको महिमें महिमा महि मडन है। दोहा। गिरिजा और गिरीस को गंगा को सिर नाइ। श्री परमानद पुरुप के कहौ कछू गुन गाइ। सोहत सिंह गुपाल की कीर्ति दिवसि दिसानि। भूतल पल भरि अरिनिकर गहतु परुं जन पानि। भूपति भानु भदौरीआ किरनि क्रांति जगु छाइ। सहद सकल नृप के सुपद तम अरि गए बिलाइ। ताके सुपद अटेर पुर मुलकु भदावर मांहि। चारि वर्ण जुत धर्म तह रहत भूप की छाह। श्री वास्तव काइथ कुल छत्रसिंह शहे नाम। गाइ विप्र के दास नित पुर अटेर सुप धाम। × × × सवत सत्रह से वरप और छिअतरि तत्र चैत्र मास सित अष्टमी ग्रथ कियौ कवि छत्र।

अंत —जो फलु सत है जज्ञ करे अरु सागर सागर सगम गंग अन्हाऐ। जो फलु पोडस दान दिये अरु जो फल तीरथ राज सिधाऐं। जो फलु छत्र करें तपसा अरु रुद्र प्रसंन्न भए वरु पाऐ। जो फलु है जग जोग करे फलु सो भगवान कथान के गाऐं। जथा॥ जो गति ऊर्ध रेतनि की मति जो उर में समता अति आऐं। जो गति है सत साधनि सग जो सतोप महा उपजाऐ। जो गति है बहु जाप जपे भगवंत भजे विधि सो मनु लाऐं। से गति होति है छत्र कहौ दिन भगवत कथा यह गाऐ। दोहा। अक्षर प्रति फलु जग्य कौ, डारतु अघनि नसाइ। कोटि जन्म के कलमप कहत सुनत नसि जाइ। इति श्री भागवते महापुराने दसमसकधे श्री हरि जल विहार जदुवस वर्णनं नाम नव्वे अध्याय। ९०। श्री मार्ग मासे कृष्ण पक्षे अष्टमी कुजवारे। सवत् १८५३। दोहा। दरम स्कध कथा अमृत कृष्ण चरित्र रसाल। लिखितं पुस्तक वाहि में मिश्रजु मोहनलाल। श्री

विषय—भागवत दसमस्कंध का पद्यानुवाद।

संख्या ६९. अश्वविनोद, रचयिता—चेतनचन्द, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) २२, परिमाण (अनुष्टुप्) ८००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६१६ = १५५९ ई०, लिपिकाल—सं० १८५० = १७९३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला शिवदयालु, ग्राम—बरखेड़वा, डाकघर—तड़िया, जिला—हरदोई।

आदि—श्रीगणेशाय नम. अथ शाल होत्र लिख्यते॥ दोहा—नमो निरंजन देव गुरु मारतड ब्रह्मंड। रोग हरन आनद करन सुख दायक जगपिड॥ श्री महाराजाधिराज सगर वश नरेश गुण ग्राहक गुणि जनन के जगत विदित कुशलेश॥ जाके नाम प्रताप को चाहत जगत उदोत। नर नारी सुख रुख है कुशल कुशल कुशगोत। नित चातुर चप चातुरी मुख चातुर सुख देन। कवि कोविद वरनत रहत सुख मुख पावत चैन॥ वाजी सो राजी रहै ताजी सुभट समर्थ॥ रन सूरे पूरे पुरुप लहै कामना अर्थ॥ बालापन मे शरन

रहि मैं सुख पायो वृन्द । साल होत्र मति देखि कै बरनत चेतन चंद ॥ श्री कुशलेश नरन हित नित चित चाह लहयो ॥ अश्व विनादी ग्रन्थ यह सार विचार कह्यो ॥ मूल माला सारा सु मधु पत्र सुमन कर साज । सुयश फूल फलिया सदा कुशल सिंह महराज ॥ दोहा—विजय करन अरु जय करन गावत चारौं वेद । नकुल अ० सहदेव सों रवि वाहन को भेद ॥

अत—विधि विचार दाहा—सीतल गरम सुभाव ये अरु कुनि द्वन्द जो होय । साल होत्र या विधि यहै जो पहिचानै कोय ॥ चौ०—कुमैत कुसकी और समद । गरम प्रकृति होइ सुनि चंद ॥ कुरंगा मुरग को हारौ यान । रात दिन कहिये हरा मोज ॥ नीला अरु चीनी सवजार । सरद प्रकृति होय येतार ॥ ताजी रंग घोड़ा के जेते । अरन पीत उदय है तेते ॥ ह प्रधान सबके अंग पित्त । वात पित्त मिलि होत विचित्र ॥ पहिचाने अग अग की राति । करि औषधि अवै पर साति ॥ नाड़ी नैन बताय दृष्टि । प्रकृति स्वभाव सबै अवरषि ॥ औषधि करै रोग पहिचानि साप हाथ न आय हानि ॥ घुरहा पाड़े गोपा नाथ कान कुविज मैं भये सनाथ ॥ तिनके सुत चारौं उधिकाइ । इन्द्रजीत लछिमन जदुराइ ॥ चाथे ताराचंद कहायो । जिन यह अश्व विनाद बनायो ॥ हरिपद चित्त नाम की आसा । सालहोत्र यहै परकासा ॥ कुशल सिंह महरान अनूप । चिरजीव भूपन के भूप ॥ सा०—यह ग्रन्थ कुरन सार जिनके हेतु हाथ मैं ॥ ऐड सुधारि विचारि चेतन चन्द कह्यो यथा ॥ सवत सोलह सै अधिक चार चागुन जान । ग्रन्थ कह्यो कुशलेश हित रक्षक श्री भगवान ॥ इति श्री अश्व विनोदी नाम ग्रन्थ चेतनचद कृत संपूर्ण समाप्त लिखित देव मिश्र सवत् १८५० वि० ।

विषय—घोड़ों की औषधि, रोग, दोष, उनके ऐब हुनर आदि के वर्णन हैं ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता चेतन चन्द थे । ये गोपीनाथ कान्यकुब्ज ब्राह्मण के पुत्र थे । इनके ३ भाई और थे । जिनके नाम इन्द्रजीत लक्ष्मण और जदुराइ थे । महाराजा कुशलेश के आज्ञानुसार चेतनचन्द ने यह ग्रन्थ रचा इस प्रकार उपरोक्त कथा का वर्णन है —घुरहा पाड़े गोपी नाथ कान कुविज मैं भये सनाथ । जिनके सुत चारौं उधिकाइ । इन्द्रजीत लछिमन जदुराइ ॥ चौथो ताराचंद कहायो । जेहि यह अश्व विनोद बनायो ॥ कुशल सिंह महराज अनूप । चिरजीव भूपन के भूप ॥ सवत सोलह सै अधिक चार चौगुने जान । ग्रन्थ कह्यो कुशलेश हित रक्षक श्री भगवान ॥ मास फाल्गुण सुकल पक्ष द्वितीया सुभ तिथि नाम ॥ चेतनचन्द सुभाषियत गुरु को कियो प्रनाम । निर्माणकाल सवत् १६१६ वि० लिपिकाल सवत् १८५० वि० हैं ॥

सख्या ७० ए व्यजन प्रकार, रचयिता—छोटेलाल गुजराती अवदीच (आगरा), पत्र—४०, आकार—९ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप)—१००६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२३ = १८६६ ई०, लिपि काल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवकुमार मिश्र, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ व्यजन प्रकार छोटे लाल विट्ठल नाथ के पुजारी अवदीच ब्राह्मण जयशकर के पुत्र कृत लिख्यते ॥ साग भाजी का वर्णन ॥ प्रश्न ॥ ससार मैं

साग कितने प्रकार के होते है ॥ उत्तर—साग अनेक प्रकार के इस संसार में होते है ॥ प्रश्न—उनमें कितने भेद हैं । उत्तर—चार भेद हैं ॥ प्रश्न—कौन कौन से चार भेद है । और उनके नाम का हैं ॥ उत्तर—चारों भेदो के नाम यह है ॥ (१) कद (२) फल (३) पत्रा (४) फली कन्द किसको कहते हैं । कंद उसको कहते है जो धरती के भीतर पैदा होय ॥ जैसे जमीकंद आलू रतालू अरवी सकरकंद इत्यादि ॥

अंत—मुरब्बे कितने प्रकार के होते हैं—और किन चीजों के वनाये जाते हैं ॥ मुरब्बा तो अनेक चीजों का बनता है पर मेरी याद में तो अठारह प्रकार का है—१. आमका २. अननास ३ सेव का ४. विहीका ५. नासपाती का ६. संतरे ७. अदरख का ८. हड़का ९. गाजर का १०. आवले का ११ नीबू का १२ पौंडे का १३. इमली का १४. करौंदे का १५. वेल का १६. पेठे का १७. चिकनी सुपारी का १८. कसेरू इत्यादि का ॥ दोहा—रामनेत्र ग्रह इदु मित सवत विक्रम जान । चैत्र मास सित सप्तमी सुन्दर ग्रन्थ वखान ॥ कद मूल फल पत्र की क्रिया दई जु वताय । भूल चूक जो होय सो गुनि जन लेहु वनाय ॥ व्यजन प्रकार के भाग को पूर्ण कियो जगदीस । छोटेलाल यों कहत हैं कवि जन पद धरि सीस ॥ इति व्यजन प्रकार सपूर्ण लिखी शोभा राम सवत् १९३६ वि०

विषय—१. साग भाजी वनाने की रीति । २. अचार वनाने की रीति ॥ ३ मुरब्बा बनाने की रीति ॥

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता छोटे लाल अवदीच ब्राह्मग आगरा निवासी थे। निर्माण काल सवत् १९२३ वि० है । इसको इस प्रकार लिखा है । रामनेत्र ग्रह इंदु मित संवत विक्रम जान ॥ चैत्र मास सित सत्तमी सुन्दर ग्रन्थ वखान ॥ लिपि काल सवत् १९३६ बि० है ॥

सख्या ७० वी. व्यजन प्रकार, रचयिता—छोटेलाल गुजराती अवदीच (आगरा), पत्र—४२, आकार—८ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०, लिपि-काल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—वैद्य राम जीवन, ग्राम—पाचौलो, डाकघर—मारहटा, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ व्यजन प्रकार छोटे लाल विट्ठल नाथ के पुजारी जय शंकर के पुत्र अवदीच कृत लिख्यते ॥ साग भाजी का वर्णन ॥

प्रश्न—ससार में साग कितने प्रकार के होते हैं ॥

उत्तर—अनेक प्रकार के साग इस ससार में होते है ॥

प्रश्न—उनमें कितने भेद है ॥

उत्तर—चार भेद साग भाजी के है ॥

प्रश्न—कौन कौन से चार भेद हैं ॥ उनके काका नाम है ॥

उत्तर—उत्तर चारो भेदों के नाम ये है ॥ १. कद २. फल ३ पत्र ४ फली

प्रश्न—कंद किसको कहते है ।

उत्तर—कद उसको कहते हैं जो धरती के भीतर पैदा होय ॥ जैसे जमीकद आलू, रतालू, अरवी सकरकद इत्यादि ॥

अत—प्रश्न—मुरब्बे कितने प्रकार के होते हैं और किन चीजों के वनाये जाते हैं ॥

उत्तर—मुरब्बे तो अनेक वस्तुओं के बनते हैं परन्तु मेरी याद में तो अठारह प्रकार का होता है ॥—१ आम का २ अननास का ३ सेव का ४ विही का ५ नास पाती का ६ सतरे का ७ अदरख का ८ हड का ९ गाजर का १० आवले का ११ नीबू का १२ पौढे का १३ इमली का १४ करौंदे का १५ वेल का १६ पेठे का १७ चिकनी सुपाड़ी का १८ कसेरू का इत्यादि ॥—दोहा—राम नेत्र ग्रह इन्दु मित सवत विक्रम जान। चैत्र मास सित सप्तमी सुन्दर ग्रन्थ वखान ॥ कद मूल फल पत्र को किया दइ सु वताय। भूल चूक जो होय सो गुनि जन लेहु वनाय। व्यजन प्रकार के भाग को पूण कियो जगदीस ॥ छोटे लाल यौं कहत ह कवि जन पद धरि सीस ॥ इति व्यजन प्रकार सपूण लिखी लालू गोकुल वहेडा निवासी सवत् १९३६ वि० ॥ राम ॥

विषय—इस ग्रन्थ में साग भाजी बनाने की और अचार मुरब्बा वनाने की रीति आदि का वणन है ॥

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता छोटे लाल अवदीच ब्राह्मण आगरा निवासी थे। निर्माण काल सवत् १९२३ वि० है इसको इस प्रकार वणन किया है ॥ राम नेत्र ग्रह इदु मित सवत विक्रम जान। चैत्र मास सित सप्तमी सुन्दर ग्रन्थ वखान ॥ लिपिकाल सवत् १८३६ वि० है ॥

सख्या ७० सी व्यजन प्रकाश, रचयिता—छोटेलाल गुजराती अवदीच (आगरा), पत्र—४०, आकार—१० × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०२४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२३ = १८६६ ई०, लिपि काल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—कवि रामजीवन, ग्राम—खसपुरा, डाक घर—रामपुर, जिला—टूटा।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ व्यजन प्रकाश ग्रन्थ लिख्यते ॥ साग भाजी का वणन ॥

प्रश्न—ससार में साग कितने प्रकार के होते है ॥

उत्तर—अनेक प्रकार क साग इस ससार में होते हैं ॥

प्रश्न—उनमें कितने भेद हैं।

उत्तर—चार भेद हैं ॥

प्रश्न— कौन कौन से चार भेद हैं उनके काका नाम हैं ॥

उत्तर—चारों भेदों के नाम ये हैं ॥ १ कद २ फल ३ पत्र ४ फली

प्रश्न—कद किसको कहते हैं।

उत्तर—कद उसको कहते हैं। जो धरती के भीतर पैदा होय जैसे जमीकद आलू रतालू अरवी सकरकदो इत्यादि

अत—मुरब्बा कितने प्रकार के होते है और किन किन चीजों से वनाये जाते है।

उत्तर—मुरब्बा तो अनेक वस्तुओ से वनते है। परन्तु मेरी याद में अठारह प्रकार का होता है ॥—१. आम का २. अनन्नास का ३. सेव का ४ विहीका ५. नासपाती का ६. सतरे का ७. अदरख का ८ हडका ९ गाजर का १०. आंवले का ११. नीबू का १२ पौंडे का १३. इमली का १४. करौंदे का १५ वेल का १६. पेठे का १७ चिकनी सुपारी का १८ कसेरू इत्यादि का—दोहा—रामनेत्र ग्रह इन्दु मितु संवत् विक्रम जान। चैत्र मास सित सप्तमी सुन्दर ग्रन्थ वखान। कंद मूल फल पत्र की किय। दई जू वताय ॥ भूल चूक जो होय सो गुनि जन लेहु वनाय ॥ व्यंजन प्रकार के भाग को पूरन कियो जगदीस ॥ छोटे लाल यो कहत है कवि जन पद धरि सीस ॥ इति व्यजन प्रकाश संपूर्ण समाप्तः लिखतं रामलाल अत्तार आगरा गोकुल पुरा निवासी। श्रावण सुदी सप्तमी संवत् १९३६

विषय—इस ग्रन्थ में साग भाजी वनाने की और अचार मुरव्वा वनाने की रीति लिखी है ॥

टिप्पणी—इस व्यजन प्रकार के रचयिता छोटे लाल गुजराती अवदीच ब्राह्मण आगरा निवासी थे। निर्माणकाल सवत् १९२३वि० है ॥ इसको इस प्रकार वर्णन किया है ॥ दोहा—राम नेत्र ग्रह इन्दु मित संवत् विक्रम जान। चैत्र मास सित सप्तमी सुन्दर ग्रन्थ वखान ॥ लिपिकाल सवत् १९३६ वि० है ॥

संख्या ७१ ए गीतगोविद सटीक, रचयिता—चिंतामनि, कागज—देशी, पत्र—५९, आकार—८ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३४, रूप—अच्छा, लिपि—देवनागरी, रचनाकाल—सं० १९१६ वि०, लिपिकाल—सं० १९१६ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—हनुमान प्रसाद सव पोस्टमास्टर, स्थान—राया, डाकघर—राया, जिला—मथुरा।

आदि—श्री राधा वल्लभो जयति। अथ गीता गोविन्द सटीक लिष्यते। सुंदर सुभग अग अलसी कुसम से है नेन कंज अैन कहै वैन मुसक्याऐ है। वाम भाग राधा तिह को धाए क बांह धरै बधा के हरन रति पति कौ लजाए है। सोभा के निधान सब सुख के विधान जांने देवन प्रधान नर संगा न सरसाऐ है। कहै कवि चितामनि प्यारी प्यारेलाल सुनौरी पीअैय पहारसिंह यामै मन भाए है। २। मूल मेघेर्मेदुर मेवरं वन भव स्यामास्तमाल द्रुमे। नंक्र भीरुरया चमेवतदि मराधे ग्रह प्रापय इत्थंनं इति देश तश्च लतियोः प्रसद्य कुजद्रभ ॥ राधा माधव योर्जयंति यमुना कूले रह के लयः १ टीका सवैया। मेघन अवर छाइ रह्यौ सब भूमि तमालिन सौ अतिकारी। रैन उरात गुपाल घनौ गृह जास गले वृष भानु दुलारी। नद निदेश कौ पाइ चले प्रति वृक्षनि मारग केलि पसारी। कूल कंलिदी बिलास करै जय राधिका माधव कुज विहारी।

अत—इति श्री मत गीत गोविन्दे सटीक सूचनिकायां स्वाधीन पति कास प्रति पीताम्बरी नाम द्वादसो सर्ग। १२। इति श्री मत्गीत गोविन्दे महा काव्ये सपूर्ण। रस[६] आत्मा[१]

भक्ति[१] स मार्ग द्रग युत वप बिक्रम की गनौ। रितु सरद कातिक शुक्ल अछया नवमि वार भृग भनों। जयदव कृत श्री गीत गोविन्द चित कवि टीका कीयौ। निज काज कवि इश्वर सुप्रति निर्मित करी पूरन कीयौ।

विषय—गीत गोविंद का हिंदी में पद्यानुवाद।

सख्या ७१ वी सगीत चिंतामणि, रचयिता—चितामनि, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—८×६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९६=१८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला दवीराम पटवारी, ग्राम—अगसौली, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्रीगणेशाय नम ॥ अथ सागीत चिन्तामणि लिख्यते ॥ प्रथमहि सुमिरौं गनपती सारद नाऊ माथ करि प्रनाम गुरदेव की धरैं जो मोपर हाथ ॥ चि तामणि सागीत को गुनि गुनि रचै बनाय ॥ सुनि हैं पढ़ि हैं करि कृपा छमहिं दोख बिसराय ॥ भजन राग झझोटी ॥ उठौ लाल प्रात काल प्रान जीवन प्यार ॥ दिनकर कर उदित भइ उडगन दुति छीन भई। चकइ पिया मिलन गइ हेरत सब वोर ॥ चिरिया बन चह चहानि पनिहारिन म.ति पान। शशि मलीन जगत जानि करत का अवारे ॥ पथिकन निज राह लइ गाय गोप ग्वाल भइ। ठाढ़े सब द्वार दरस द मुरारी ॥ जोग श्याम प्रमुदित मन बलि बलि जाय चि ता मणि सुर नर मन हरन प्यार न द के दुलार ॥ १ ॥ राग झझोटी—अवधपुरी आनद कद जग जीवन ज म लियो ॥ चद्र वदन सुख सदन मदन राजीव विलोचन आन कियो। तन घन श्याम सलोनो सोहे अरुण कमल करपद मन मोहे। राजत गोल कपोलन अनदित कच बिलोकि अब अवल गयो ॥ कबु ग्रीव भुज बाह विशालन शुभ श्रुति भृगुटी सोहत आनन। पक्ति दाड़िम यों लखिकर आपुहि दरकि गयो ॥ नासा निरखि कीर उठि भागो लखति नाम भवरन मन त्यागो सु दर जघा निरखि राम को कदली मन भरमाय रह्यो ॥ भाल तिलक सोहत शुभ कारी कर शर धनुप तूण कटि। क्रीट मुकुट लखि पीत बसन तन चिन्ता मणि सिर नाय दियो ॥

अत—राग खम्माच—झुकि कारी बदरिया आई बिच बीच चमक दुख दाइ ॥ ऊधौ तुम हू मोहन सों कहियो पावस अब नियराइ ॥ दादुर हस कोकिला बोलत पवन चले पुरवाइ ॥ जो तुम हमको त्यागन चहते काहे प्रीति बढ़ाइ ॥ सुनि सुनि हूक उठत जियरा में कुवरी तुम मन भाइ ॥ वे बतिया सुधि अउतीं हमको बन बिच बेणु बजाई ॥ तज दी लोक लाज गुरु जन की तुम सग रहस मचाइ ॥ फिर फिर इन्द्र देव गोवधन चहु दिशि घेरी आइ चि ता मणि गोपिन की बिनती लीजो ब्रजहिं बचाइ ॥ १ ॥ दादरा—चलो सखि वहा हिन्डोला झूलैं। बशी वट अरु श्री जमुना तट तेल कदम की कूल ॥ चिन्ता मणि पिय प्यारी परस्पर झूलत मोमन फूले ॥ २ ॥ इति श्री सागीत चि ता मणि सपूण समाप्त लिखा भोलानाथ बनिया। पीपल गाव सवत् १८९६ चैत्र सुदी दशमी को ग्र थ सपूण भया ॥

विषय—इस ग्रन्थ में राग रागनियों का वणन है ॥

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता चिन्ता मणि थे। इनका कुछ पता नहीं केवल लिपि काल संवत् १८९६ वि० है॥

संख्या ७२. वर्णाकर पिंगल, रचयिता—चिरंजीव कवि, पत्र—२०, आकार—७ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०३, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—जयंती प्रसाद शर्मा, स्थान—फतेहाबाद, डाकघर—फतेहाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः। ब्रह्मा विष्णु शिवादि सब तिनि चरणनि चितु लाई। संकर सुत चिरंजीव यह वर्णक वृत्त गाई। मो गुरु तीनि धराधर देहि भलो सुख सर्प तथा करि मानो आदिम गोजस चद परालो जल वंश क फल पाकरि जानों। अन्त गुसो परदेस आकाश सु शून्य तलात बखानौ। मात पिछली आकुरो बिन कानै लघु मानि। और मात के वर्ण यह सबै गुरू करि जानि। संयोगादि जु वर्ण है विंदु विसर्ग सम्रक्त सोइ गुरू करि मानिये यह मानै कवि जुक्त। कहूं छंद के अन्त में लघु दीर्घ जु होई। दीर्घ लघु करि मानिये लघु दीर्घ कर दोइ। आदिम अवसान में भजसा गुरू जु लेखि। परता लघुता जानिये पिंगल वाका विसेखि। मगन सिधि गुरू तीनि तै नगन तीनि लघु सोई। गौरव लाघव को लहै यह जानत सब कोई।

अंत—शरद उपेन्द्र कवीन्द्र कहै सुमुखि पुनि दोधक छंद महा। शालिनी। श्रीपुनि भका जानिऊ वृत्त रथोद्धत नग कहा। भूपर विलासित भाषै शेष उपस्थित श्योनि कामिनी तहां। मौक्तिक माला यह छद सवैस शष्ट सुवणहि वृत्त तहां। अथवा दशाक्षर वृत्तः रोन भास गण ये करि सब जो चन्द्र वर्त्म भणि छंद सुख दसो। यथा नीरूप नर या जग रहिहे दुष्ट वाक्य मुख ते नहि कहि है। सत्व मध्य सुख वास करि चरै जाइ धाम सुजन्म जगधरै। चन्द्र वर्त्म ऽ। ऽ॥ ऽ॥। ऽ४२ जतो जरो जानि यथा प्रमानहिं सुछंद वशस्थ अनंत गावहि यथा। पढ़ै पढ़ावै अधिका उदारता अनेक विद्या पटुता विवेकता अशेष दोषै जु अदोष जानि है प्रमान भानै समभाव मानिहे। वशस्थ। ऽ।ऽऽ॥ऽ।ऽ ऽ इति चिरञ्जीव कृत वर्णकर पिंगल समाप्तम्॥

विषय—आदि में गुरू लघु विचार। पुनः प्रस्तार निरुपण। पश्चात् ४२ वर्णिक वृत्तो के लक्षण उदाहरण सहित।

संख्या ७३. दादू की बानी, रचयिता—दादू, कागज—देशी, पत्र—८७, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८१० = १७५३ ई०, प्राप्तिस्थान—चौधरी गंगाराम, ग्राम—इगलास, डाकघर—इगलास, जिला—अलीगढ़।

आदि—साहिब मिला तो सब मिला भेटे भेटा होइ साहिब रहा तौ सब रहा नही तो नाही कोइ॥ सब सुख मेरे साइयां मंगल अति आनन्द। दादू सज्जन सब मिले भेटे परमानन्द॥ दादू रीझे राम परथा अन्त न रीझै मन। मीठा भावै राम रस दादू सोई जन॥

दादू मेर हिरदे हरि बसै दूजा नाहीं और । कहाँ कहा धौं राषिये नहीं आन की ठौर ॥ दादू एक हमरे उर बस दूजा मेल्हरा दूरि । दूजा देखत जाइगा एक रहा भरपूर ।

अत—धनासी —तेरी आरती ये जुग जुग जै जै कार ॥ जुगि जुगि आतम राज जुगि जुगि सेवा कीजिये ॥ जुगि जुगि रचे पार जुगि जुगि जग पावे की मिले ॥ जुगि जुगि तारण हार जुगि जुगि दरसण देखिये ॥ जुगि जुगि मगल चार जुगि जुगि दादू गाइये ॥ इति श्री राम मति ॥ दादू जी की बानी सपूण समाप्त ॥

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

सख्या ७४ नेम बत्तीसी, रचयिता—दामोदर दास (वृदावन), कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—४ × ३ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६८७, प्राप्तिस्थान—श्री अद्वैतचरण गोस्वामी, स्थान—श्री राधारमण घेरा वृदावन, डाकघर—वृंदावन, जिला—मथुरा ।

आदि—अथ नेम बत्तीसी लिख्यते । दोहा । श्री गुर लाल कृपाल घर यह मेरे निर्धार । श्री वृन्दावन छाडि कै भट कौ नहिं ससार । श्री गुर लाल कृपाल करि दियौ वृन्दा वन वास । अब हौ मन निश्चै करौ तजौं अनत्त की आस । कुज २ निरषत फिरौं जमुना जल न्हाउ । श्री वृन्दावन छाडि कै अन तन नित हू जाउ । वृन्दावन सुखरासि है आनद ठाव सुठान । श्री राधा बल्लभ छाडि के अन तन नित हू जाउ । वासी की आसा करौं वासी हाथ बिकाउ । श्री वृन्दावन छाडि कै अन तन किंत हू न जाउ । रैनि रटौ पानी पियौ पातर सीए सुग पाइ । श्री वृन्दावन छाडि कै अन तन ही कित जाउ ।

अत—भीषम ने प्रन कियो शस्त्र हरि पै जु गहायौ । वेद कह्यौ हरि मेटि भक्ति की घोलि जिवायौ । कोली कामी भयौ रूप तिन हरि कौ कीयौ । राषा ताकी पैज सरन अपने कर लायो । प्राम नाम की लाज गहि जे नान सबे पाछे फिरै । लरैं मरैं रक्षा करै ये भले पोटे करे । तुम पूरन सब भाति हौ सबके पुजवौ काम । बुरे भलैं कोऊ जपैं परम रसाली नाम । नेम बत्तीसी अधिक रस नित प्रति पाठ कराऊँ । दामोदर जन प्रन कियो निरवाहो वलि जाउ । सत्त सागर सिधि गनिरस ससि रवि रितु हेम । अघन मास अरु पछि सित एकादस व्रत नेम । बुरौ भलौ तुम्हरौ प्रभु तुम्हर सरन रहाउ । दामोदर कौं स्याम बिन और न दूजी ठाउ । इति नेम बत्तीसी सपूण । शुभभूयात

विषय – वृन्दावन की महिमा का वर्णन ।

सख्या ७५ ए मोहविवेक की कथा, रचयिता—दामोदरदास, पत्र—११, आकार — ९३⁄४ × ९१⁄४ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७७७ वि० लिपिकाल—स० १८६१ = १८०४ ई०, प्राप्तिस्थान—वासुदेव सहाय, स्थान—फतहपुर सीकरी, डाकघर—फतहपुर सीकरी, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नम । श्री गुरभ्यो नम । अथ मोह विवेक की कथा लिख्यते । ग्वालक भाषा । दोहा । सत्रह सै सतहत्तर समौ वसाष वदि पचमी ग्रनीथ । प्रेम प्रितनु

के नही भक्त भावतिहि कोथ। मेधापति वा तासु पति रुप धार मधु मुर हयौ। वृथानंद को शारथ पडव सुत सभ कौ जयो। देवन बडो कृष्ण सामान सुपन वडो संतोप प्रमान। चरन प्रताप तरुनिजा सोइ, सुर समान दाता नहिं कोइ। सभ सतन कूं करू प्रनाम, पाऊँ पर्म भक्ति निज धाम। गुरू की कृपा चाहिये देव सो तुम अवगति मै लहौ न भेव। सेस संहसति सकुन निस दिन गावे···। महापुरुप मिलि कियो विचारी, तुम अनत मोल हौ पियारी।

अंत—विश्राम निसवासर निरभै रहे, करै विध्न की आस। अब विन्ती मेरी सुनो कहे दमोदरदास। काच पारना झले झले तो कुष्टी होइ। दामोदर ऐसे कहें पाए हे गुण दोय। नाव परम रस पासा कह्यो दीजे प्रेम चित लाइ। उस पेरे की कुष्टता इस पारसे जाइ। अह पाए विप पान काय पार सुपान। कहे दामोदर दास यों सुनहु संत दे कान। इति श्री मोह विवेक की कथा सपूर्णम्। समाप्त लिपत पिरान सुपजी। लिप्यत फिरोजाबाद में १८६१ शुभं भवतु श्लोक १९३ पत्र ११

विपय—मोह विवेक की कथा।

संख्या ७५ बी. मोहविवेक की कथा, रचयिता—दामोदर दास, पत्र—१०, आकार—८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुप्टुप्)—३९०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७७ = १७२० ई०, प्राप्तिस्थान—मुंशी हुकुम सिह, स्थान—मिढाकुर, डाकघर—मिढ़ाकुर, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ मोह विवेक की कथा लिष्यते॥ सत्रह सै सतहत्तर समौ। वैस वदि पचमी शनौथ। प्रेम आतिउ के नही। भक्त भाव तिहि कोथ॥१॥ मेधा पति तातास पति, रूप धारि मधु मुर हयो। वृथानद को सारथ। पडव सुत सभकौ जयो॥ २॥ देव न वडो कृष्ण समान। सुप न वडो सतोप प्रमान। चरन प्रताप वरनिजा सोइ। सुर समान दाता नहि कोई॥ ३॥ सब संतनु कूं करो प्रनाम। पाऊ पर्म भक्ति निज धाम

अत—विमल अजाय भक्ति निसान। सब कोई पावै सुख दान। धर्म उदै मन निर्मल आज। सब सुख भयो विवेक के राज॥ १६९॥ विश्राम निरभै रहै। करै विष्णु की आसा अब विनती मेरी सुनो। कहै दमोदर दास॥ १७०॥ काच पारना झल झले तो कुष्टी होइ। दामोदर ऐसे कहे पाये यह गुण दोइ॥ १७१॥ नाव परम रस पासा कह्यौ पीजै मचित लाइ। इस पेरे की कुष्टता रस पारे से जाय॥ १७२॥ इह पारा विप पानका यह पारा सुपान। कहै दमोदर दास यौ सुनहु सत दै कान॥ १७३॥ इति श्री मोह विवेक की कथा समाप्तम।

विपय—मोह तथा विवेक और उनके कुटुंबादि का वर्णन।

टिप्पणी—रचयिता ने अपने गुरू का नाम परमानंद दास बताया है॥

संख्या ७३. वैद्यक, रचयिता—दामोदर, कागज—देशी, पत्र—३२६, आकार—७$\frac{1}{2}$ × ५ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुप्टुप्)—८४७६, रूप—प्राचीन,

लिपि--नागरी प्राप्तिस्थान--श्री चिरजीलाल जी वैद्य, स्थान--बेलनगज आगरा डाक घर--आगरा, जिला--आगरा ।

आदि--श्री धन्वन्तरायनम अथ वैद्यक ग्रन्थ लिप्यते अथ दश ज्वर नाम ॥ अजीण ज्वर ॥ १ ॥ अहार ज्वर, पित ज्वर, पेट ज्वर, वायु ज्वर, दृष्टि ज्वर, काल ज्वर, कफ ज्वर रक्त ज्वर, दष्टि ज्वर, काहि किंचि ज्वर ॥ एन दशी ज्वर इथी होय ॥ आसू ॥ १ ॥ भाजि में ॥ २ ॥ वैसाप ॥ ३ ॥ जेठ मे ॥ ४ ॥ पित प्रकाश चैत्र ॥ १ ॥ फागुन में कफ प्रकोप ॥ आसाढ ॥ १ ॥ श्रावण ॥ २ ॥

अंत--अथ नेत्र प्रतिकार ॥ पीपर टा १ लायची टा १ फिटकरी विजावोल, हिंग सूक्ष्म वाँट दिन १४ मरदि इनी गोलि चणा प्रमाण दिजै आविद घसी नेत्र आँजी एक गोली सो तिमिर फूको परज एता रोग जाय ॥ १ ॥ अफीम हर में भीजी गो घृत सी अजन कीनै करती रहे ॥ समुद्र फेण आप अजन कीजे रात्री धो मिटे ॥

विषय--विषय वैद्यक ज्वर लक्षण पृष्ठ ४५ तक पाक बनाने की विधि ७६ तक, भिन्न २ रोगों के नुस्ले ६८ तक, रसादिक प्रयोग ७५ तक, ज्वरा दी उपचार ८५ तक।

टिप्पणी--प्रत्येक अध्याय में 'इति श्री दामोदर विरचिता' का उल्लेख है। अत रचयिता का नाम दामोदर है।

सख्या ७७ जनक पचीसी, रचयिता--दरयावदास 'दौवा', कागज--पुराना कागज, पत्र--२३, आकार--७ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--१४, परिमाण (अनुष्टुप)--३२२, रूप--प्राचीन, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १८८१ = १८२४ ई०, लिपि काल--स० १९२० = १८६३ ई०, प्राप्तिस्थान--लक्ष्मीप्रसाद त्रिवेदी 'मधु' स्थान--अमर मऊ, डाकघर--सागर, जिला--सागर (मध्यप्रदेश)।

आदि--श्री गनेस जू सदा सहाय ॥ अथ लिख्यते जनक पचीसी की पोथी ॥ श्री गनेस जी सर सुती, महावीर दलवान ॥ जनक सुता लछिमन सहित, कृपा सिन्धु भगवान ॥ कृपा सिन्धु भगवान हुकुम पाऊ गुन गाऊँ ॥ बैठ रहौं सुख पाय आपनो दास कहाऊँ ॥ कहि दउवा दरयाव नाथ वन्धु हमें देव उपदेस ॥ दीन जान अरजी सुनो मरजी करो गनेश ॥ जब रघुवर भृगु नाथ पर । तुरत उठे पिस आय । जनक राव व्याकुल भये । सिगरी सभा ससाय ॥ सुनको समझावो न तुमने मानी ॥ तजो क्रोध परस राम अपनी ठानी ॥ तब जनक भौंह रघुवर नै टेडी तानी ॥ अभमान घटो दिलको सुरत सिव में समानी ॥ जोलों प्रभु ची हा नहा, तोलो कीन्हीं वाद ॥ पवन साध के ध्यान धर सभु वचन फरमाय ॥ सिव के वचन याद कर ग्यान भयौ हे ॥ अभमान अग दिलको सब छूट गयो है ॥ परनीत कर त्रलोकीपत जान गयो है ॥ धर अस्त सख अस्तुत करि सरन भयौ है ॥

अंत--दोहा धनुस टोर सीता वरी, धन दसरथ के लाल । व्याह बनौ सिय राम को, इक्यासी की साल ॥ येते श्री जनक जी पचीसी दरयाव दास विरच ताय ॥ सम्पूरन समा पता ॥ सव देव नाई वसि फीस लै को सपुरन समापत ॥ मुकाम साह नगर ॥ लिखी अजुध्या की जो कौउ बाँचै सुनै ताको राम राम माहान को डडोत चरन छूकै ॥ कही कथा

चित लाय के। अछिर ज्ञान विचार। जहां चूक मोपर परे, कवि कछु लेव सुधार ॥ संवद १९२०

विषय—दोहा, त्रोटक, छप्पय आदि छंदो में सीता जी के विवाह तथा परशुराम संवाद का वर्णन है।

टिप्पणी—उक्त पुस्तक साह नगर निवासी दौवा दरयाव कृत है। दौवा बुन्देल खन्ड मे एक जाति कहलाती है, जो बुन्देला ठाकुरो तथा अहीरों के सम्पर्क से बनी हुई है। पुस्तक मे ठेठ बुन्देल खडी शब्दो की बहुलता है।

संख्या ७८ ए. वैद्यक विनोद, रचयिता—दरियाव सिंह (बीबीपुर, कानपुर), पत्र—१२०, आकार—८ X ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८३०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९० = १८३३ ई०, लिपि काल—स० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—वैद्य सीताराम, ग्राम—बमनोई, डाक-घर—बमनोई, जिला—अलीगढ।

श्री गणेशाय नमः अथ वैदक विनोद लिख्यते ॥ प्रारम्भ में मलहम बनाने का उपाव तूतिया हरूनी १ तो० जंगाल हरी १ तो० सौहागा चौकिया कच्चा १ तो० विरोजा ४ तो० फटकरी १ तो० हरदी आवा १ तो० हरतार तव का ६ माशे इस सव दवाइयों को महीन पीस कर विरोजा में मिलावै और शराब बरंडी या सिरका तेज और गाय का घी २ तोला थोडा थोडा मिलाकर घाव पर लगावै जब वह घाव लाली पर आवै तब यह मलहम लगावै तेल मीठो ऽ। गरम करके आदमी के सिर की हड्डी दो तोला नीम की पत्ती दो तोला लेकर उसी तेल मे डाले खूब जरावै जब दोनो चीजे जर जाय तब निकारि डारै और मोम दो तोला मिलावे मुरदा संख ६ माशे सफेदा कस गरी ६ मासे सेंदुर गुजराती ६ माशे पीस छान के जुदा जुदा उसी तेल में डाले और आंच थोरी थोरी करै जब कवाव पर आवै और तार बंधने लगे तब अफीम ६ माशे मिलावै जब खूब मिल जाय ठडा कर उस घाव पर लगावै घाव नीक होइ ॥

अंत—गरमी के मौसम में खून अलग अलग होता है और इस मौसम में मुनासिव है कि सांझ की वेरा फस्द खुलवावे जो सवेरे की वेरा खोली जाती है तो उसमें बुराई यह है कि खून कम हो जाता है और खुशकी वदन में हो जाती है इससे सांझ की वेरा अच्छी है और जो बाजे आदमी नही माणते तो एक न एक बीमारी पैदा हो जाती है और मौसम बरसात में खून माफिक से होता है फसद खोलना न चाहिये लेकिन जो कोई रोग कठिन आ पडे और हकीम की राय में आवै तो खुलवावै और जिन दिनो में खून कम होता है तौ वसवव खुसकी के कई बीमारियां हो जाती है। और जिन दिनो में खून जादा हो जाता है तौ भी कई बीमारियां पेदा हो जाती है और दर्द भी कई तरह का पैदा हो जाता है। जरूरत के समय हर रितु में और हर समय फस्द खुलवाना मुनासिव है ॥ इति श्री वैदक विनोद संपूर्ण समाप्तः यह पुस्तक ठाकुर दरियाव सिंह जमीदार मौजा बीबीपूर ने संवत् १८९० वि० में उर्दू फारसी से हिन्दी में किया और लाला अमृत लाल ने सन् १९१० वि०

में लिखा ॥ लिखी रहे सौ वर्ष तक जो न मिटावे कोय ॥ लिखने वाला वावला गल गल माटी होय ॥

विषय—फारसी से हिन्दी भाषा की गई है। इसको दरियाव सिंह ने सवत् १८९० में भाषा किया ॥

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के फारसी से हिन्दी भाषा में अनुवाद कर्त्ता ठाकुर दरियाव सिंह जाति के कुरमी मौजा वीबीपुर तहसील बिल्हौर जिला कानपुर निवासी थे। निर्माण काल सवत् १८९० वि० और लिपि काल सवत् १९१० वि० है ॥

सख्या ७८ बी वैद्यक विनोद, रचयिता—दरियाव सिंह (बीबीपुर), कागज—देशी, पत्र—८८, आकार—९ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८४० रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८९० = १८३३ ई०, लिपि काल—स० १९१७ = १८६० ई०, प्राप्तिस्थान—लाला सीता राम, ग्राम—विनोदगज, डाकघर—छर्रा, जिला—अलीगढ़।

आदि-अत—७८ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है —

यह पुस्तक सवत् १८९० में बनाई गई है और इसको लाला गौरी चरन ने सवत् १९१७ में लिखा है। इसमें दवाइया और मल्हम वगैरा अच्छे अच्छे लिखे हैं। इति श्री वैद्यक विनोद समाप्त हुआ ॥ सीता राम करै सो होय ॥

सख्या ७८ सी कोक शास्त्र, रचयिता—दरियाव सिंह (बीबीपुर कानपुर), पत्र—२४, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१२, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लाला भोजराज ग्राम—रुद्रपुर, डाकघर—धमनोई, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्रीगणेशाय नम ॥ अथ कोक शास्त्र भाषा लिख्यते ॥ स्त्रियों के जाति भेद प्रथम लिख्यते पद्मिनी, चित्रनी, सखिनी हस्तनी। इनके लक्षण लिख्यते ॥ प्रथम पद मिनी लक्षण मृगा के नेत्र तुल्य लालिमा युक्त नेत्र तथा पूर्णचन्द्र तुल्य प्रमाद गुण युक्त मुख अरु स्थूल अरु उच्च कुच तथा सिरस्त के पाख तुल्य मृदु सरीर होति है ॥ अरु स्वल्प भोजन दक्ष कम में काम जलमें कमल की सुगधि होति है।

अत—जिसका पति पर देस में गा होइ तिसका अग चन्द्रकमल करिकै सतप्त है और बहुत काल में प्राप्त होइ सो प्रोषित पति वा वियोगिनी कहावति है ॥ जिसका पति काम कलोल जानति होइ अन्य स्त्री भोग रहित होइ सद नायका क्रीडा करिके पाइव दे के न छोड़े सो स्वाधीन पति का कहावति है ॥ विथित कुसुम माला भूषण वस्त्र धारण करिके काम लोल होइ के अपने पति के वास स्थान में प्राप्त होइ बहुत कालान्तर सौं उत्तक ठिता कहावति है ॥

विषय—नायक नायका भेद और उनके लक्षण आदि का वर्णन है।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता दरियाव सिंह ग्राम बीबीपुर तहसील बिल्हौर जिला कानपुर निवासी थे। सवत् १८६० में विद्यमान थे। ग्रन्थ का निर्माणकाल और लिपिकाल का पता नहीं ॥

संख्या ७९ ए. अजीर्ण मंजरी, रचयिता—दत्तराम या रामदत्त माथुर, निवास स्थान—आगरा, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—१० × ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३९६, पूर्ण, रूप—दीमक खाई, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९२१ बि०, लिपिकाल—१९३० वि०, प्राप्तिस्थान—वैद्य राम भूपण, ग्राम—जमुनिया, पो० आ०-हरदोई, जिला—हरदोई (अवध)।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ अजीर्ण मंजरी लिख्यते ॥ जिनके हाथ में अमृत का पूर्ण कलश धरा है और जो पीतांवर के धारण करने वाले कमल नेत्र और मणि की माला पहिरे हैं। और आयुर्वेद विद्या के प्रगट करने वाले और रोगों को स्मर्ण मात्र से हरने वाले श्री धन्वतरि भगवान को हम नमस्कार करते है। श्री वृन्दावन विहारी राधिका रमण को नमस्कार करके दत्त राम अजीर्ण रोग कहा गया है क्योंकि जव अन्न का परिपाक यथार्थ नहीं होय तव अनेक ज्वरादि दुष्ट रोग मनुष्य को सतापित करते हैं इसी हेतु अजीर्ण रोग का पूर्वाचार्यो के संमत निदान को कहते हैं अजीर्ण रोग होने का कारण मन्दाग्नि है मंदाग्नि के होने ही से अजीर्ण रोग होता है।

अंत—शुद्ध सीगिया विष १ भाग पारा १ भाग जायफल २ भाग सोहागा २ भाग पीपल ३ भाग सोठि ६ भाग कौडी की भष्म ६ भाग लौंग ५ भाग इन सवको चूर्ण करैं इसे महोदधि वटी कहते है यह अग्नि को वढाती है ॥ चीता, सोठि, हीग, पीपलामूरि, पीपरि, चव्य, अजमोद, मिरच सब चीजे एक एक कर्ष दोनो खार, सेधा नोन काला नोन समुद्र लोन सांभर लोन कचिया नोन प्रत्येक एक एक कोलले सवका चूर्ण करके विजौरे के रस में भावनादि घाम में सुपायले पीछे खाय यह चित्रकादि नाम का चूर्ण है गुल्म ग्रहणी आमरोग इन रोगो को हरता है अग्नि दीप्त करता है रुचि कारक है कफ को नाश करता है। इति अजीर्ण मजरी संपूर्ण समाप्तः लिखा शिवराम पांडे संवत् १९३० आपाढ़ नौमी शुक्ला।

विशेप—प्रथम मगलाचरण के पश्चात् अजीर्ण रोग होने का कारण और उसकी औपधि का वर्णन है।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के रचयिता पं० दत्तराम माथुर आगरा निवासी थे निर्माण काल संवत् १९२१ वि० लिपिकाल संवत्—१९३० वि० है।

संख्या ७९ बी. नाडी प्रकाश या नाडी परीक्षा, रचयिता—दत्तराम या रामदत्त माथुर-स्थान आगरा, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—१० × ६ इचो में, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, पूर्ण, रूप—दीमक खाई, गद्य, लिपि—नागरी, रचना काल—१९३७ वि०, लिपिकाल—१९४८ वि०, प्राप्तिस्थान—लाला शिवदयाल, ग्राम—वरखेडवा, डाकघर—टीडगाव, जिला—हरदोई (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नाडी प्रकाश लिख्यते ॥ ग्रथ के आदि और अंत में मगला चरन करा कर्ते है इसी से नमस्कार आत्मक मंगल ग्रंथकर्ता करता है धन्वंतरि मिति धन्वंतरि वैद्यो के राजा और ज्ञान के देने वाले गुरु को प्रणाम करके मै नाड़ी प्रकाश ग्रंथ को रचता हूँ ॥

और जा भाव प्रकाश आदि ग्रंथ हैं तिनका मत देख के वैद्यों के हेतु यह नाडी प्रकाश ग्रंथ दयाराम करके कहा जाता है ॥

नाडी के जाने विना जो वैद्य दवा करता है सो वद्य धन धर्म और जस को नहा प्राप्त होता है ॥

अंत—सात वर्ष के उपरांत चौदह वर्ष तक एक मिनट में ८५ पचासी वार नाटी कपमान होती है ॥ और चौदह वर्ष पीछे ३० वर्ष पर्यंत तक अस्सी ८० वार नाडी चलती है और तीस वर्ष से लेकर पचास वर्ष तक एक मिनट में ७५ वार चलती है और पचास वर्ष से ८० वर्ष तक एक मिनट में ६० साठ वार नाडी चलती है ये जो पीछे नाडी चलने का संख्या कहि आये इसमें कमती चले तो सरदा की ज्यादा चले तो पित्त की नाडी जाननी। ऋषि ७ धनंजय ३ नंद ९ शशांकमृत १ अथात १९३७ में इस ग्रंथ का रचा विक्रम संवत् आश्विन शुक्ला दशमी बुधवार नाडी ग्रंथ समाप्त हुआ इति शुभम् केशव देव संवत् १९४८ वि० ॥

विषय—वैद्यक वर्णन है ॥

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के रचयिता 'दयाराम' माथुर पंडित आगरा निवासी थे निर्माण काल संवत् १९३७ लिपिकाल संवत् १९४८ वि० है ॥ ऋषि धनंजय नंद शशांक अत पर मिते त्रिभुविक्रम वत्सर धर्मानंद्वा सामगात खल पूर्णताम्

संख्या ८० ए अष्टयाम, रचयिता—देवकवि, पत्र—२२, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८४ = १८२७ ई०, प्राप्तिस्थान—छोटेलाल शर्मा, स्थान—बाह, डाक घर—बाह, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः। अथ श्री देवकृत अष्ट जाम लिख्यते। कवित्त। सराहैं सुरासुर सिद्ध समाज जिन्हे लखि लाज भर रति मार। महामुद मंगल संग लस विलसै भव भारनि वारन वार। विराजै त्रिलोक लोनाइ की ओक सुवीच मनोहर रूप अपार। सदा दुलही वृषभान सुता दिन दूल्ह श्री ब्रज राज कुमार। दोहा। दंपति तिनके देव कवि वरनत विविध विलास। आठ पहर चौंसठ घरी पूरण प्रेम प्रकास। २। अथ प्रथम पहर प्रथम घरी। दोहा। प्रथम जाम पहली घरी पहले सूर उदोत। सकुचि सेज दंपति तजै, बोलत हंस कपोत। कवित्त। रंग राति उठी अँगिरात प्रभात उठै अंग आलस की लहरैं। तिय सों पिय पासु तज्यो न परै बिछुरे हिय दोउन के हहरैं। विथुरे थक वारहि वार बडे छुटि हारन ते मुक्ता थहरैं। झलकै छतिया पर है छल कै सो विछोननि पे छहरैं।

अंत—अथ निशा चतुर्थ पहर अष्टम घरी। दोहा। अरुन उदय तरनी तरन होत करन सुप लीन। कछु क्रोध कछु हरषा, कछु अधिक आधीन। कवित्त। वाचकइ सो भयो चित चीतौ चितादि चहूँ दिसि चाय सा नाची। ह्वै गई छाम छपाकर की छवि जामिनि जौन्ह जनाजम जाँची। बोलत वैरी विहंगम देव सु सौतिन के घर सम्पति साची। लोहू पियो जु वियोगिन को सु कियो मुपलाल पिसाचनि प्राची। इति श्री कविन्द्र देव विरचते

अष्ट जामे। अष्टजामो समाप्तम् शुभम्। संवत् १८८४ वि० कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे अष्टम्यांम्।

विषय—आठ याम चौसठ घड़ी का नायक नायिका के संयोग का काल-विभाजक-चक्र वर्णन।

संख्या ८० बी. अष्टयाम, रचयिता—देवदत्त (इटावा), पत्र—२०, आकार—६३/४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रामाज्ञा जी शर्मा, ग्राम—बड़ागाँव, डाकघर—कंतरी, जिला—आगरा।

आदि-अंत—८० ए के समान।

संख्या ८० सी. अष्टयाम, रचयिता—देवदत्त (इटावा), पत्र—४०, आकार—६३/४ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८५=१८२८ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर चन्द्रिका बख्श सिंह, ग्राम—बड़ागाँव, डाकघर—काकोरी, जिला—लखनऊ।

आदि-अंत ८० ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री कवि देवदत्त विरचितं अष्टजामे अष्टजामो समाप्त' शुभमस्तु॥ कार्तिक मास्य शुक्ल पक्षस्य मेकादस्यां चंदवासरे॥ लपक जीत रैक वारस्य पठार्थ भीम सिंहस्थ सुभं भवेत्॥ संवत्॥ १८८५॥

संख्या ८० डी. अष्टयाम, रचयिता—देव कवि, पत्र—२०, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८३=१८२६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रेवतीराम शर्मा कन्हौवा, ग्राम—कोटकी, डाकघर—जारखी, जिला—आगरा।

आदि-अंत—८० ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री कविदेवदत्त विरचिते अष्ट जामे अष्टजामो समाप्तः शुभमस्तु॥ संवत् १८८३ विक्रमे॥ श्रावण कृष्णपक्षे सप्ताम्यांम लिखितं उजागर लाल शर्मा॥

संख्या ८० ई. भावविलास, रचयिता—देवदत्त (धौलपुर ?), कागज—देशी, पत्र—४२, आकार—८ × १३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७४६ वि०, लिपिकाल—सं० १९१२=१८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—हनुमान प्रसाद, सब पोस्टमास्टर, स्थान—राया, डाकघर—राया, जिला—मथुरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ भाव विलास लिष्यते। छप्पय। श्री वृन्दावन चंद चरण युग चरचि चितु धारि। दलि मलि कलि मल सकल कलुप दुप दोप मोप करि। गौरी सुत गौरीश गौरि गुरु जन गुण गाये। भुवन मात भारती सुमरि भरतादिक ध्याये। कवि देवदत्त श्रृंगार रसु सकल भाव संयुत सच्यौ। सब नायकादिनायक सहित अलंकार वरणनु रच्यौ। १। दोहा—अरथ धरम ते होइ अरु काम अरथ तें जानु। ताते सुप सुप

को सदा रसु श्रृंगार निदानु । ताके कारण भाव है तिन्हैं करतु विचार । जिनहु जान जान्यौ परै सुपदाइक श्रृंगार ।

अंत—दोहा–७४ अलंकार ये मुख्य है इनके भेद अनंत । आन ग्रंथ के पंथ लखि जानि लेहु मतिमंत । ७५ सुभ संग्रह सं छयालीस घटत सोरही वप । कही दव सुप देवता भाव विलास सरूप । ७६ दिल्लीपति अवरंग के आजमसाहि सपूत । सुन्यौ सराह्यौ ग्रंथ यह अष्ट जाम सजूत । इति श्री भाव विलासे देवदत्त कवि विरचते, अलंकार मुख्य निरूपन पंचमो विलास लिखित बेजान मिश्र लिपायत कवीस्वर दन्त जी । मिती कार्तिक सुदा ९ रविवार संवत् १९१२ वि० ।

विषय—नायिकाभेद, रस और अलंकार वर्णन ।

संख्या ८० एफ. देवमाया प्रपंच नाटक, रचयिता—देव (इटावा), पत्र—४६, आकार—१० × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०३५ रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८३ = १८२६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गयेन्द्रप्रसाद जी गुप्त, स्थान—वाह, डाकघर—वाह, जिला—आगरा ।

आदि—पहिले चार छन्द लुप्त] जराज कुमारि ॥ सुरु नासिका सुकुमारि ॥ ४ ॥ गीतिका ॥ सु रसाल रूप विसाल अद्भुत बाल जोति उजागिरी । उरमाल नील [illegible] जलज लोचन सजल सोभा सागरी ॥ डोलति सडग मगर जनि उडगन पति मुखी नव नागरी ॥ मुद अगन की वह अगन आइ सील सोभा सागरी ॥ ५ ॥ अमीय सोभा ताकी ताकि । रहे हैं सर्व नर थाकि ॥ नटी मोहनी नाम । पूछत कर गहि बाम ॥ ६ ॥ दोहा ॥ कै दवी कै दानवीं, किधौं मानवी बाल । जितै आइ जाति कित । लोचन सजल विसाल ॥ ७ ॥ बन्र दग ढारति भरति । फिरि फिरि दीह उसास । किहि कारन बारन गमनि, तू दुप दुखी उदास ॥ ८ ॥

अंत—दोहा ॥ माया भजी प्रपंच है, छूटे साधन सिद्ध । वरम्हादिक के मूढ़ है, नभ मडराने गिद्ध ॥ ११९ ॥ जय सत संगति देव जे, ज्ञाता कृपा निधान । विमल बुद्धि निरमल प्रकृति, मिले ब्रह्म विज्ञान ॥ १२० ॥ इति श्री देव माया प्रपंच बुद्धि विजय परमात्मा स्वरूप नाम्यो षष्टमाङ्क ॥ ६ ॥ संवत् १८८३ मिती फाल्गुन शुक्ल पंचम्या गुरु वासर लिपित गोपी नाथ कायस्थ मौजा पियूने में जैसे प्रति पाइ तैसी लिपी मम दोषो न दीयते जो बाचें सुनै ताको राम राम ।

विषय—प्रथम अंक—मंगला चरणादि तथा कलि प्रवेश वर्णन (१—५) ।

(२) द्वि०—अ०—बुद्धि सत्प्रकृति गृह प्रवेश (५—१२) ।

(३) तृ०—अ०—जन स्तुति प्रयान (१२—२२) ।

(४) च०—अ०—माया पुरुष प्रवेश (२२—२८) ।

(५) पं०—अ०—सह शास्त्र पंच प्रपंच श्रीमायास्तुति वर्णन (२८—३७) ।

(६) ष०—अ०—बुद्धि विजय, परमात्मा स्वरूप लाभ (३७—४६) ।

संख्या ८० जी श्रृंगार विलासिनी, रचयिता—देवदत्त कवि (इष्टिकापुर ?), कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण

(अनुष्टुप्)—३४५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मुरलीधर केशवदेव मिश्र, स्थान—जगनेर, डाकघर—जगनेर, तह०—खैरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—||अथ शेठा भे देपु सवि प्रभा ॥ सवैया ॥ चर वर्णि निरप मित कथयामि कथं तव सवस्तु सचन। रसरास विलास रसास विहास विचित्र चरित्र सचे रच न ॥ मद ज्वर आलि विलोकय तस्तुत तथापि करीति मनः पचनं ॥ यद पाडु मुरारच्युत मिन्टु मुखी श्रुणुते ससुधा मधुर वचनं ॥ इति प्रोढा ॥ अथ मुग्धा दीनां स्वुर तस्य रूपान्युंचन्ते ||

अत—दोहा—देवदत कवि रिष्ट का पुरवासी मचकार ग्रन्थ में वर्शाधर द्विज कुल धुरं वभार. छप्पय—स्वरभूत स्वर भूमिय तेवत्सरे पदाय, दिली पतिरव रग मरहि रज रंस दुपायं। दक्षिण दिशि चत देव ककुणे नाम विदेशे, कृष्ण वेणीना मन दीरगं प्रवेश श्रावणे वहुल नवमितिथे रेवा नौ रेवती धृति युते कवि देवदत्त उदिते ग्राव गभाय दर्पिन सुनि। इति श्री कवि देवदत्त विरचताया श्रगार विलासनी नाम सम्पूर्ण

विषय—नायिकाओं के लक्षण आदि वर्णन किये गये हैं।

संख्या ८१ ए. ससुरारि पचीसी, रचयिता—देवकीनंदन (फर्रुखाबाद, मकरंद नगर), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० राम जीवन कवि, ग्राम—खसपुरा, डाकघर—रामपुर, जि०—एटा (यू० पी०)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ ससुरारि पचीसी देवकीनंदन कृत लिख्यते ॥दो०|| रसिक कन्हैया लाल के रस रसाल सव ख्याल। प्रथम मिलन ससुरारि को कहत भरो रस जात ॥ १ ॥ पीउ पाई नव तरुनई भइनव तरुणी नारि। जाइ जु वहु ससुरारि मैं ताकी कहत वहारि ॥ तिय नैहर मिलवो कठिन वैस सधि को जोगु। लाज सरस नहिं मिलि सकत क्यो पावै रस भोग ॥ कवित्तु सवैया ॥ जा दिन ते ससुरारि मे आपनी लाल जू आये महा रस ठाने। मैं दिन चारिक वात नही मैं भुलावत ही रही वे वहकाने ॥ आजु न मागत पानिहि पान भई अधरात परे दुख माने ॥ जाई मिलौ वृषभान लली वै लला घर आपने जात रिसाने ॥

अंत—दोग लाई नीर गुलाव को करवाये असनान सुपवत केशन वाल हे। कौतुक लातत कान्ह ॥ ३ ॥ ज्यो ज्यो भरे नोर केश सुप कै उझालि कर त्यो त्यों कुच उघरैं उचकत छबि छाती मै ॥ देवकी नदन कइ ललको गिरोई परै मनुआं लला को लाडिली न जानै भेद कौन किहि धाती मै ॥ पीठि लागो सपी के विलोकै दुरो प्यारी ओर दीठि छाई रही जाइ श्यामरे की छाती में। ४॥ इति श्री कविकुल कमल दिवाकर देवकीनदन विरचिता ससुरारि पचीसी समाप्तः मार्ग शुक्ल दशम्यासोमे लेखिवकसी सुसेण संवत् १८७९ वि०

विषय—ससुरारि का वृतात वर्णन है।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रथ के रचयिता देवकीनंदन जाति के ब्राह्मण शिवनाथ कवि के पुत्र थे। रचनाकाल—संवत् १८३२ वि० है। इसको इस प्रकार लिखा है। सवत विक्रम जानियो ठारह सै वत्तीस। आश्विन सुदि तिथि पंचमी कही ससुरारि पचीस ॥ लिपिकाल सवत् १८७९ वि० है ॥

संख्या ८२ ए लीला, रचयिता—देवीदास (देवीदास का पुरवा, बाराबंकी), पत्र—८२, आकार—८ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०२५, रूप—नया, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री दुर्गादास साधु, ग्राम—हाजी गुर्जे, डाकघर—नगराम पूरब, जिला—लखनऊ।

आदि—अथ लीला साहेब देवी दास कृत ॥ साधो निर्गुन उपजा ग्यान कहा गुन पाइये ॥ निर्गुन शब्द अधार शून्य हद आसन मारा। जहाँ न निशा दुआर नाम दीपक तहँ बारा ॥ निर्बानी सो ज्ञान भा जन यह सब्द भुलान ॥ दै उपदेश कीन्ह बश अपनी तेहि का और बयान ॥ १ ॥ गैबी शून्य समान पुरुष यह इच्छा धारी। को जानै को आवै कहाते सृष्टि सवारी ॥ तीनि लोक बिस्तार भो अदा दीन्ह छिटकाय। मरै न जाई गैबी पुरुष यह नहिं आवै न ह जाय ॥ २ ॥

अंत—जिहि का जस बिस्राम है तेहिका तैसा होइ। देवी दास के प्रभु जगजीवन गुरु और न कोइ ॥ दोहा ॥ नाम निसानी जाहि के। जहँ भावै तहँ जाइ ॥ देवीदास निह कर्म सों। सुरत निधिरय समाइ ॥ इति श्री लीला साहेब देवी दास जी कृत ॥ सम्पूर्ण ॥

विषय—(१) पृ० १ से ८२ तक—गुरु महात्म्य। नाम महात्म्य। सुमिरन। संसार। अभक्तों की निन्दा। भक्त महात्म्य। ज्ञानी व कलयुग वर्णन। ईश्वर की वत्सलता। गर्व त्याग। विनय। उपदेश। मन। मिष्ट भाषण। दास जीव तथा आत्मादि निरूपण। दो अक्षरों की महत्ता ॥ चेतावनी। साधु। आरती। माया। आशा। पालन। गुरमंत्र। भावी गुरु उपदेश। काल तथा कर्ता का वर्णन ॥

टिप्पणी—यह ग्रन्थ 'सत्य नामी सम्प्रदाय' के साधु देवी दास जी की रचना है। ये जगजीवन दास (जिनकी गद्दी कोटवा बाराबंकी में है) के शिष्य थे। इन्होंने बाराबंकी तथा लखनऊ जिले की सीमा पर जहाँ देवी दास का पुरवा नाम से अपनी गद्दी कायम की अभी तक इनके वंशज गद्दी धर हैं।

संख्या ८२ बी विनोद मंगल, रचयिता—देवीदास (पुरवा देवीदास, बाराबंकी), पत्र—५७१, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी और कैथी, रचनाकाल—सं० १८३८ वि०, लिपिकाल—सं० १८५० = १७९३ ई० प्राप्तिस्थान—महंत पुरंदरदास ग्राम—पूरे ठाकुर दुबे, डाकघर—जगदीशपुर, जिला—सुल्तानपुर।

आदि—चरन गुरु जग जिवन के सत सुकृत अंतर वास है। सोइ धरी शुभ दिन भक्ति गुन हिय उदित ज्ञान प्रकाश है। करजोरि मांगौ चरन सिर धरि बिनति मेरा मानिए। करि कृपा चित बसि हृदय दाया दास आपन जानिए। उपदेश हृदय दृढ़ाय मत सतमंत्र ते चित लावऊँ करहु मोहिं सनाथ सतगुरू भक्त पदवी पावऊँ।

अंत—छन्द—हमहिं नहि अत्र और भावै, नाम सुमिरन मा रही। नाम पारस पाय अन्तर, भमना अब ना चही। भयउ मन संतोष आपन अटक नाही जो चहा। सदा सतगुर करत दाया देत जबहीं जो कहा। भइ न निडर निसंक तन मन, काहु का डर ना रहा। नाम कर्ता पुरुष आपुहि कौन सुमिरत निर्बहा। सदा संकट हरत जन के रमित संगति लागि के।

जरे दुख के मरे शसय आप सरनहि भागि के। गनिन अनगन जाइ मोहि ते, सरन आए सब तरे। निहंग मूरति ध्यानि करि नहि जक्त माया झक मरे। हम भइनि सरन सनाथ तवही, प्रगट करिगोहरायऊँ। जानि सुमिरहि मानि शब्दहिं अलख ज्ञान नेताय हू।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

संख्या ८३. बालचरित्र, रचयिता—देवीदास, पत्र—३२, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बलवंत सिंह, अध्यापक, ग्राम—विरथला, डाकघर—सयान, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम. अथ बाल चरित्र लिखते। गुरू गणेश पग वंदन करि कै संत को सिर नाऊ। बाल विनोद यथा मति हरि के सुन्दर सरस सुनाऊ। भक्तिनि के वत्सल करुनामय तिनकी अद्भुत क्रीत्वा। सुनौ संत हौ सावधान है श्री दामोदर लीवा। सुन्दर सरस माहावन भीतर बसै अहीर सभागे। जाति अनेक अनेक गोप गन सव व्रज राजहि लागे। व्रज के वास वीच अति उत्तिम नन्द भवन सुपकारी। सम्पति कहा कहौ कमलापति जाके अजिर विहारी। सव सुवरन कै सुखद धौर हर पना पिरोजा लागे। वैइरज मरकत मनिहीरा विद्रुम रचित सभागे।

अंत—यह दामोदर लीला क्रीडा सीपे सुनै सुनावै। वंधन छुट्यो दामोदर ताके वधन वेगि छुटावै। मनि ग्रीव नल कूवर जैसे तारत वार न लाई। त्योंही तरत वार नाही लावै लीला सुने सुहाई। दामोदर जू की यह लीला देवीदास कही है। सत जननु की चरन रैनु की तन मन ओट लही है। भूल भई जौ होइ कहूँ तौ सुकवि सुधारि सुलीजौ। मधुर मुकुद नाम के रस कौ मन की रुचि सौ पीजो। इति श्री देवीदास कृत वाल चरित्र सपूर्ण।

विषय—श्री कृष्ण की बाललीलाओ का वर्णन।

संख्या ८४ ए. वारहमासी विरहिनी, रचयिता—देवी प्रसाद ब्राह्मण (बेला, इटावा), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०५ = १८४८ ई०, लिपिकाल—स० १९१२ = १८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामसनेही मिश्र, ग्राम—मानिक खेड़ा, डाकघर—किशोरगंज, जिला—एटा।

आदि—श्रीगणेशाय नमः। अथ विरहिनी का वारह मासा देवी प्रसाद कृत लिख्यते॥ आसाढ़—तुम जाय ऊधो खवर लावो श्याम विन कल ना परै॥ अव होत व्याकुल सवहि व्रज हरि विन कहौ दुख को हरै॥ असाढ़ मे घन घेरि आये मेघ जल वरसावही॥ दादुर चकोर मलार वोलै मोर शोर मचावही॥ श्याम विन सुख सेज सूनी विरह मदन सतावही॥ दिन रैन में तलफत फिरू नदलाल सुधि विसरावही॥ दो०—परदेशी आये नही कीजै कौन उपाय। चेरी के बस में परे रहे मधु पुरी छाय॥ कुछ विथा जी में है सखी अव सोच भंडारे भरे॥ अव होत व्याकुल सवहिं वृज०॥ १॥

अत—जेठ में वर पूजने आई सबै व्रज भामिनी। रोरी औ चन्दन गार के सजि थार लाईं कामिनी॥ वेद विधि पूजा करे धाई सकल गज गामिनी॥ तन होय परम

आद कर जाइ खुशी से यामिनी ॥ दो०—जेठ सुदी है सप्तमी उनइस सत अर पाच । देवी प्रभु दरशन दिये धन्य धन्य दिन साच ॥ कान दे लीला सुनै ससार सागर से तरै ॥ अव होत व्याकुल सवै ब्रज हरि विन कहो दुख को हरै ॥ १२ ॥ कवित्त—वेले का— वेले में ज्ञानी जहाँ पाडव महरानी औ, सतन के दरस जहा मदिर अधिकाइ हैं । अस्तल के पास ही कदव कुड शोभित अति, पच मुखी महादेव लीला दर साई है ॥ राम रेखा नारो जहा गगा शिव पधारो अर, फाटक मदार जहा चर्चिका सुहाइ हे ॥ भनत है देवी नित विल्लेश्वर दरश होत वाला जी वेद सुने फूल मती माई है ॥ इति श्री वारह मासा विर हिनी देवी प्रसाद कृत सपूर्ण लिखा वेनी दीन सवत् १६१२ वि० ॥

विषय—श्रीकृष्ण जी के वियोग में ब्रज के गोपियों का विरह वणन ।

सख्या ८४ वी राग फुलवारी, रचयिता—देवी प्रसाद वनिया (वेला, इटावा), पत्र—३६, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्) – ८६४, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०२ = १८४५ ई०, लिपिकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामसनेही मिश्र, ग्राम—मानिक खेड़ा, डाकघर—फिरोजगज, जिला—एटा ।

आदि—अथ राग फुलवारी लिख्यते ॥ दोहा ॥ गणिपति गौर महेश अर ब्रह्मा विश्नु मनाय ॥ राग रग देवी कहत सहित ताल सुर गाय ॥ चौमासा रगत वहार—श्याम विन नाही पडत मोहि चैन, ऊधौ अव कैसे कटै दिन रैन ॥ टेक—असाढ में ग्रीषम रितु जाई । चलै या वैरिन पुरवाई ॥ पिया की खवर नहीं पाइ । करैं ये अपनी मन भाइ ॥ दो०—मोर शोर कूकन लगे दादुर हस चकोर । झूम झूम वरसन लगे गरज परी चहु ओर ॥ और से लगे कृष्ण के नैन ॥ श्याम विन० ॥

अंत—अस्तुति देवी फूल मती जी की पुष्पवती महिमा अधिक भाषे वेद पुरान । तीन लोक चौदह भुवन धरै मात को ध्यान ॥ धरै मातु को ध्यान पाप कोई निकट न आवै ॥ देवी मुख से कहैं रमा सव के घर जाव ॥ लघु मति के अनुसार कही मैं एतिक लीला ॥ आदि शक्ति मन सुमिरि उसी को पाय उसीला ॥ मैं मूरख अति हीन मति नहि मोको कछु ज्ञान । भूल चूक सज्जन क्षमहु मोहिं जानि अज्ञान ॥ सवत् १९३२ लिखा राम लाल वेला निवासी ॥

विषय—इसमें श्रीकृष्ण की चीर लीला और दान लीला का वर्णन है ।

सख्या ८४ सी राग विलास, देवी प्रसाद (वेला, इटावा), कागज—देशी, पत्र—१२०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)— २१६०, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८९६ = १८३९ ई०, लिपिकाल— स० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामसनेही मिश्र, ग्राम—मानिक खेड़ा, डाकघर—फिरोजगज, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ राग विलास लिख्यते ॥ कुडलिया ॥ प्रथमहिं सुमिरि गनेश को दुर्गा सीस नवाय । तुलसी कवि अर सूर कवि ब्रह्मा विष्णु मनाय ॥ ब्रह्मा विष्णु मनाय रागिनी यह मैं गावौं ॥ विशुन चरन उर धरौं मनै मन आनद पावौं ॥

कह देवी प्रसाद लौट भव फिरना आई । सबै पाप कटि जाय सुमिरि जो गिरिजा धाई ॥१॥ है महिमा सिय राम की जो जामें चित लाइ । यह सब रंगा राग में बांचत हियो जुडाय ॥ वांचत हियो जुडाइ राम गुन जो कोई गावै ॥ आदि शक्ति मन सुमिरि पुन्य फल को वह पावै ॥ कह देवी परसाद मोहि क्छु ज्ञान न आई ॥ भूल चूक करि मांफ कि महिमा राम की गाई ॥ २ ॥ पीलू ठुमरी—मुकट की एक लर लटकि रही ॥ तेहि की झोक नोक वरछी सम सो हिय माझ ठही ॥ होठि समेट भोंह तिरछी करि मुरली में तान कही ॥ पवन मंद पछी वन मोहे जमुना उलटि वही ॥ मुकट की एक लर लटकि रही ।। ३ ॥

अत—शरद शशि निर्मल गगन में निरखो नवल सुपेत । मचलि जात गोदहिं नहि आवत उडगन पति के हेत ॥ नित्य नई हरि लीला करि ब्रज ब्रज वासिन सुख देत ॥ कहत है देवी दर्शन देवो मुरली मुकुट समेत ॥ उझकत झुकत झकैइयां लेत ॥ ४ ॥ इति श्री राग विलास सपूर्ण ॥ रस निधि वसु अरु भूमि संवत विक्रम जानिये । माघ मास सुदि नौमि देवी कहत वनाइ करि ॥ भूल चूक जो होइ छमहु सजन सव दया करि । भूल चूक सव खोइ पढ़हु ग्रंथ चित लाइ करि ॥ लिखा वांके लाल कायथ मौजा हसनपुर जिला अलीगढ़ तिथि सावन शुक्ल पक्ष सप्तमी सवत् १९१० वि० ।

विपय—इस ग्रथ मे प्रारम्भ में देवी, ईश्वर आदि की प्रार्थना, पुनः राग रागिनी, मलार ठुमरी झपताल के सरगम और प्रत्येक ऋतु के गाने के पद लिखे है ॥

संख्या ८४ डी. संगीत सार, रचयिता—देवी प्रसाद (वेला, इटावा), कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५४८, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९०० = १८४३ ई०, लिपिकाल—सं० १९५२ = १८९५ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामनाथ गुप्ता, ग्राम—जादव नगर, डाक-घर—हाथरस, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय्य नम. अथ सांगीत सार लिख्यते ॥ दोहा—गग पति गौरि महेश अरु ब्रह्मा विश्नु मनाय । राग रंग देवी कहत सहित ताल सुर गाय ॥ अस्तुति देवी फूल मती जी की—भवानी फूल मती माई । भक्त भय भजन सुखदाई ॥ सीस पर मुकुट धरो आला । विराजै विकट रूप वाला ॥ गले में मोतिन की माला । हाथ में लिये खग भाला ॥ दोहा—धूप दीप चंदन चढ़े औ कपूर मिष्ठान । मेवा औ पकवान चढत है लौंग फूल औ पान ॥ दरश से पापहु कटि जाई ॥ भवानी ॥ १ ॥

अंत—ऊधो जाय खवरि तुम कहियो मन हमरो हर लीना ॥ हमको जोग भोग कुवजा को पाती में लिख दीना ॥ कहौ हम किस विधि कीना ॥ ३ ॥ मधुपुर फाग विहारी खेले परो सवै व्रज सूना ॥ कहत है देवी मिले हित से हरि राधा को दर्शन दीना ॥ मिलै जैसे जल से मीना ॥ ऊधौ जी० ॥ ४ ॥

विपय—इसमें राग रागिनी लिखी है ॥

संख्या ८५. महेश महिमा, रचयिता—देबीसहाय बाबा (बनारस), कगज—देशी, पत्र—१३४, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण

(अनुष्टुप्)—१५०८, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबा गोविंदानद, ग्राम—तातपुर, डाकघर—सिकदरा राऊ, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—जो शिव नाम लेत अलसैहैं ॥ तो फिर जन्म जन्म के पातक तेर कौन नसैहै ॥ है शुभ अशुभ कर्म को मालिक तासो तू का कइहै ॥ सु दर वैस ऐस मा खोई अत आप पछतैइहै ॥ देवी सहाय भजन विन कीन्हे रसना रस ना पइहै ॥ १ ॥

अत—काह को विसारे मूढ़ डोलत महेश पद । परम पवित्र छोभ मोह के हरैया हैं ॥ माया की मरोरनि के मोह झकझोरनि के, काम की करोवनि के पल में धरैया हैं ॥ आठो जाम रक्षन करैया साधु भक्तन के, सकट कटैया उर धीर के धरैया हैं ॥ धम के वढ़या सुद्धि बुद्धि उपजैया । निज रूप दरसैया भव सिन्धु के तरैया हैं ॥ इति श्री महेश महिमा श्री बाबा देवी सहाय कृत सपूण समास ।

विषय—इसमें महेश (काशी विश्वनाथ) महिमा का वर्णन है ॥

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता बाबा देवी सहाय वाजपेइ थे । इनके पिता का नाम माखनलाल वाजपेई था । ये बड़े शिवभक्त साधु थे । शिव की महिमा गाने और भक्ति के सहित पूजा करने से ६ वष के अधे होने पर भी भली भात देखने लगे थे । जिस पडित जी के यहा यह ग्रन्थ मिला उनका कहना है कि पडित देवी सहाय वाजपेई आनन्द वन काशी में वास करते थे और लगभग १५० वष पहले विद्यमान थे ।

सख्या ८६ श्री महाराज देवी सिंह का वारहमासी, रचयिता—देवी सिंह, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१९ = १८६२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० छेदालाल अध्यापक प्राइमरी पाठशाला, स्थान—खैरागढ़, डाकघर—खैरागढ़, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नम । अथ श्री महाराज देवी सिंह जू की वारहमासी लिख्यते । शोरठा । वहुविधि वाद धराइ । पच सरनि को पच सर । इने घने उरघाइ । गाढ़ असाढ़ पूरी मुई । चौपाई—लागत अषाढ़ गाढ़ मुई परी विरह अगिनि अतर पजरी । ज्यों २ पवन चलत चहु ओरन त्यौ त्यौ जाम रीति झक झारनि । सब कोऊ धाम धौर हरछावै मोहि सेज निसि निंदि न आवे । हौ तज धाम काम वस भइ । कथ अत सुधि यो नहीं लइ ।

अत—लागो आषाद घुमरि आये बदरा विजुरी चमके मेर आगन । मेरे चोकि चोकि चहु ओर निहारो जैयें मीन फिरे जल मेरे हमको । सामन मास हमप छल कीनौ प्रीति करी जाइ कुविजासेंरे—द नदलाल पिराण तजोंगी नहा आए संजामुवा सेरे हमका । भादों भवन नींद नहीं आव मोरा वोल वाइ मधुवन मेर कोइ हैं में वन वनि ढूढ़ों सूरके लाल वृन्दावन करै हमको ।

विषय—श्री कृष्ण राधिका सम्बन्धी वारहमासी ।

सख्या ८७ चिकित्सासार, रचयिता—धीरजराम सारस्वत, कागज—स्यालकोटि, पत्र—७५, आकार—१० × ६ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप)—

१६५०, रूप—प्राचीन, पद्य औ गद्य । लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१० = १७५३ ई०, लिपिकाल—सं० १८६८ = १८११ ई०, प्राप्तिस्थान—पंडित बालकिशुन जी वैद्य, स्थान—बेलनगंज आगरा, डाकघर—आगरा, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । सोरठा ॥ कमल नयन ससि मारल, नाग वदन इक रदन युत ॥ विरद विरद प्रति पाल हरै विघ्न विघ्नादि पति । कर मुरली कर माल सुभट मुकट सिर भृकुटि धीन । सखा संग लिय ग्वाल हरे विघन घनस्याम जू ॥ छप्पै—शून्य चन्द्र गज चन्द्र बर्ष विक्रम शुभ दायक । ज्येष्ठ सुदी रवि दूज पूज हरि गुन दीना नायक ॥ पाइ गोविन्द प्रसाद सार ग्रन्थन को लीनो । नाम चिकित्सा सार ग्रन्थ ये भाषा कीन्हो । कृपाराम द्विज लडिता को नदन धीरज धर । करवो ग्रंथ भली करें देव सुधार वैद्य वर ।

अंत—इति श्री सारस्वत धीर्जराज कृते ग्रन्थे चिकित्सा सारख्ये मित्र का ध्यायोष्टम ॥ × × संवत् १८६८ मिती मार्ग शीर्ष ९ रवि वासरे सम्पूर्ण । दोहा ॥ धर्म्म काज कीजै तुरत, तासौ सब सिद्ध होय, प्रभू कृपा तैं सब बनै रतीराम कहे सोय इदं पुस्तकं लिप तं रतीराम पंडित कोथी मध्ये ॥

विषय—देशी तोल वैद्यक—२ पृष्ठ तक, जडी विचार—५ पृष्ठ तक; धातु सोधन ११ पृष्ठ तक; रोगो के लक्षण और उपचार १९ पृष्ठ तक; रोगो का निदान २९ पृष्ठ तक; भिन्न २ चिकित्सा ६९ पृष्ठ तक, पथ्या पथ्य विचार ७२ पृष्ठ तक; अपथ्य विचार ७३ पृष्ठ तक; बाल रोग और उनकी चिकित्सा ७५ पृष्ठ तक ।

संख्या ८८ ए. ध्रुवदास की वाणी, रचयिता—ध्रुवदास, पत्र—२०१, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२२१, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८१० = १७५३ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराज महेद्र मानसिंह जी, महाराजा भदावर, स्थान—नौगवाँ, डाकघर—नौगवाँ, जिला—आगरा ।

आदि—श्री हरिवंश चन्द्रो जयति ॥ श्री राजा वल्लभो जयति ॥ अथ श्री ध्रुवदास जी कृत वानी लिष्यते ॥ अथ रस रतनावली लीला लिष्यते ॥ दोहा ॥ प्रथम समागम सरस रस, वर विहार के रंग । त्रिलसत नागरिनवल कल, कोक कलनि के अंग ॥ १ ॥ नमित ग्रीव छवि सीव रह, घूंघट पटहि सँभारि । चरनन सेवत चतुरई, अति सलज्ज सुकुमारि ॥ २ ॥

अंत—दोहरा—मोमति तृसल वरेन सम, सोभा मेरु समान । या मन के अवलंब हित, कही कछुक उनमान ॥ ५९ ॥ वरषा ग्रीपम नैन सुप, सरद वसंत विलास । लपटिन कौ सुप हिम सिसिर, प्रेम सुपद सब मास ॥ ६० रस मय रस हीरावली, पढ़ि है ध्रुव जो कोइ । प्रेम कमल तिहि हीय में, तवही प्रफुलित होइ ॥ ६१ ॥ और न कछू सुहाय ध्रुव, यह जांचत निशि भोर । या ही रस की चटपटी, लगी होय हिय मोर ॥६२॥ दोहा कवित्त अरु चौपई, इकसौ साठ और दोइ । जुगल केलि हीरावली, हिय गुन सो ले पोइ ॥६३॥ इति श्री हीरावली सम्पूर्ण ॥ इति श्री ध्रुवदास गुसाई विरचिता लीला ध्रुवदासजी कृष्ण लीला ४२ सम्पूर्ण ॥ लिपितंग वैष्णव शोभा राम मन छा रंग पठनार्थ वैष्णव शोभा रम मनछ राम छे

पत्र २०१ रुप्या छै ॥ सवत् १८१० नावरप्ये भादरवा शुद्ध दवा दसी वार गरेउ ॥ अमदा वाद मध्ये रहे छे ॥ हरि वश चन्द्रो जयति । राधा कृष्ण ॥

संख्या ८८ बी. ब्यालीस लीला, रचयिता—ध्रुवदास, पत्र २५१, आकार—९½ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५१८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३६ = १७७९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० छोटेलाल जी शर्मा, वैद्य, स्थान—कचराघाट, डाकघर—कचराघाट, जिला—आगरा।

आदि—श्री राधावल्लभो जयति॥ श्री हित हरिवंश चंद्रो जयति॥ अथ श्री ब्यालीस लीला॥ श्री ध्रुवदास जी कृत लिप्यते॥ चौपाई॥ जीव दशा कछु इक सुनि भाई, हरि जस अमृत तजि विष खाई॥ १॥ छिन भगुर यह देह न जानी, उलटी समझि अमर ही मानी॥ २॥ घर घर नीके रंग यौ राच्यौ, छिन छिन में नटकपि ज्यौ नाच्यौ॥ ३॥ करी न कबहू भजन संभारी, ऐसे मगन रह्यौ व्यौहारी।॥ ४॥

अंत—जो रस उपजत दुहुन में, प्रेम रंग सुकवार। प्रेम रंगीली निज सहचरी, निरपत प्रेम विहार। २१॥ निति उठि जो गावै सुनै, यह लीला रस रूप। हित ध्रुव ताके हिय कमल, उपजै प्रेम अनूप॥ २२॥ इति श्री दानलीला संपूर्ण॥ संवत् १८३६ मिती जेठ वदी॥ ३॥ लिपित जुगल दास॥

संख्या ८८ सी वृंदावन सत, रचयिता—ध्रुवदास, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८०, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६८६ = १६२९ ई०, लिपिकाल—सं० १७९० = १७३३ ई०, प्राप्तिस्थान—चौबे लोकमन, स्थान—उम्मेद गढ़ी, डाकघर—हरदुआगंज, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री राधा वल्लभो जयति ॥ अथ वृन्दावन सत लिख्यते ॥ प्रथम नाम हरिवंश हित रट रसना दिन रैन ॥ प्रीति रीति तव पाइये अरु वृन्दावन ऐन ॥ चरन सरन हरि वंस की जव लगि आवत नाहि ॥ नव निकुज निज माधुरी क्यो परसे मन मांहि ॥ वृन्दावन सत करन कौ कीनो मन उत्साह ॥ नवल किशोरी कृपा विन कैसे होत निवाह ॥ यह आशा धरि चित्त में कहत जथा मति मोर ॥ वृन्दावन सुख रंग को काहु न पायो ओर ॥

अंत—ऐसी मति मोपै कहां सोभा निधि ब्रज राज ॥ ढीठ होइ कछु कहत हौं आवत नहिं जिय लाज ॥ मति प्रमान चाहत कह्यो सोऊ कहत लजात । सिन्धु अगम जेहि पार नहिं कै सीप समात ॥ या मन के अवलव हित कीनी आनि उपाय ॥ वृन्दावन रस कहन कौ अति कसाह उरझाय ॥ सोलह सै ध्रुव छियासिवां पूनो अगहन मास ॥ यह प्रवध पूरन भयो सुनत होय अघ नास ॥ इति श्री वृन्दावन सत ध्रुव दास कृत समाप्तः लिखतं प्रहलाद सवत् १७९० वि० जै राम जी की सदा सहाय ॥

विषय—वृन्दावन की महिमा का वर्णन ।

सख्या ८८ डी. वृंदावनसत, रचयिता—ध्रुवदास, पत्र—३०, आकार—६½ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६८६ = १६२९ ई०, लिपिकाल—स० १८५३ = १७९६ ई, प्राप्तिस्थान—पं० भगवती प्रसाद शर्मा, ग्राम—बरतरा, डाकघर—कोटला, जिला—आगरा ।

आदि-अंत—८८ सी के समान । पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री वृंदावन सत संपूर्ण शुभमस्तु ॥ मिति माघ सुदी ८ सवत १८५४ ॥ राम राम राम राम

संख्या ८८ ई. वृंदावनशत, रचयिता—ध्रवदास, पत्र—३२, आकार—५ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६८६ वि० प्राप्तिस्थान—ठाकुर जनक सिह जी, ग्राम—रुद्रमुली, डाकघर—वाह, जिला—आगरा ।

आदि-अंत—८८ सी के समान ।

संख्या ८८ एफ. वृंदावनशत, रचयिता—ध्रुवदास, पत्र—३०, आकार—४ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०३, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६८६ = १६२९ ई०, प्राप्तिस्थान—मुंशी जोरावर सिंह जी, स्थान—कागासोल, डाकघर—कागासोल, जिला—आगरा ।

आदि-अत—८८ सी के समान ।

संख्या ८८ जी. वृंदावनशत, रचयिता—ध्रुवदास, पत्र—२१, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६८६ = १६२९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर प्रतापसिंह, ग्राम—राटौटी, डाकघर—होलीपुरा, जिला—आगरा ।

आदि-अंत—८८ सी के समान ।

सख्या ८८ एच वृ दावनशत, रचयिता—ध्रुवदास, कागज—प्राचीन देशी, पत्र—२२ आकार—६×५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—११३, रूप—प्राचीन, रचनाकाल—स० १६८६ = १६२९ ई०, लिपिकाल—स० १८६० = १८०३ ई० प्राप्तिस्थान—श्री अद्वैतचरण गोस्वामी, स्थान—घेरा श्रीराधारमण जी, डाकघर—वृदावन, जिला—मथुरा।

आदि-अत—८८ सी के समान। पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री वृदावन सत सपूर्ण। ०। सवत १८६० का फाल्गुणी वदी ७ गुरुवासर। लिखित मिश्र भीषाराम गाहु मध्ये। लिखायत चिरजीव धम मूरति दीवान पेमस्यध जी। शुभरस्तु। कल्यान मस्तु।

सख्या ८९ सत हरिश्चद कथा, रचयिता—ध्यानदास (साहिपुर) कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६×४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, पूण, रूप—प्राचीन, पद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८९० वि०, प्राप्तिस्थान—रामदास वैरागी, स्थान—कुरी वन का नगला। डाकघर—सुरसान। जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ हरिश्चद कथा। ध्यान दास कृत लिख्यते ॥ दो०—गोविंद गुरु को नित नमो नमो भगत सब साध। ता प्रताप जस उचरों हरिचद सत्त अगाध॥ चौ० ॥ अवगति अलप अनाहद भारी। उपजत पपत महा सुधि सारी॥ नाव न गाव गाव का अगम अगाध साध सगति एहिग। रूप न रेप भेप न कोइ। वानी रहनि पानि नहिं सोइ॥

अत—॥ दो० ॥ उदधि द्वोत करि लीजिये। रपण भार अगार, ध्यान दास सब सुधि लिपै भगवत भगति अपार॥ लिषन काज सुरसति लिपै सब पडित कल माहि॥ रोम *समान न लिपि सकै हरि चरचा मति नाहिं॥ जो उचरै या ग्रथ को कोऊ सुनै चित लाइ॥* ध्यान लहै सो प्रेम पद पाप ताप त्रय जाई॥ हरिचद सत को सुनि कोइ ऐसी टेक समाई। ध्यान लहै सोपरमपद जामे ससय नाही॥ ध्यान तीन या ग्रथ की धरम कथा विस्तार। हरिचद सत हिरदै धरै सो जन उतरै पार॥ इति श्री हरिश्चद सत कथा ध्यान दास कृत सपूर्ण शुभ मस्तु सवत् १८६० वि० जेष्ठ मास शुक्ल पक्षे तिथौ अष्टम्याम्।

विषय—राजा हरिश्चद की कथा लिखी है।

सख्या ९० ए सग्रहीत लतिका, रचयिता—दानादास (चतुरनगर, परगना चाइल, प्रयाग), कागज—देशी, पत्र—३०, आकार—८×६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७२, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—शिवदयाल वाजपेयी ग्राम—सिंहपुर,) डाकघर—ससौढा, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशानयम ॥ अथ समहीत लतिका लिख्यते ॥ भजन ॥ नरतन पाय कमाया क्या रे ॥ कल्प वृक्ष छाया तर आया तऊ कछू न पाया क्या रे ॥ गेह देह लखि कै तू भूला माया में भरमाया क्या रे ॥ जो आया सो गया अकेला तू लै जैहै माया

क्या रे ॥ ना हरि भजा न साधु न सेवा जीवन व्यर्थ गमाया क्या रे ॥ गिरिधर दास जो मोहन भूला मनुज नाम कहवाया क्या रे ।

अत—हट जा सौंहै से सांवलिया तोसो बहुत जरी ॥ दामिनि दमके गरजे गगनवा सूने भौन डरी ॥ मै अलबेली अकेली सेज पर तडफत भोर करी ॥ कहत रसीले पिया सावन में सौतिन वेर परी ॥ इति श्री सग्रहीत लतिका समाप्तः शुभम सवत् १९३६ वि० ।

विषय—इसमें भिन्न भिन्न कवियों की कविता संग्रह की गई है ॥

टिप्पणी—इस ग्रंथ के संग्रहकार दाता राम उप० दीनादास चतुर नगर निवासी थे । ग्रथ संवत् १९३० वि० में सग्रह किया गया और सवत् १९३६ में लिखा गया । इनके ग्रथ संवत् १९३२ के रचित प्राप्त हुए हैं ॥

संख्या ९० बी मद चरित्र, रचयिता—दीनादास (चतुरनगर, प्रयाग), कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)-४८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवदत्त मिश्र, ग्राम—बिलावती, डाकघर—धूमरी, जिला—एटा ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः अथ मदचरित्र लिख्यते ॥ दोहा—सिय रघुवीर चरण रज सुमिरौ आठौ जाम ॥ जाकी कृपा कटाक्ष ते नाश होत रिपु काम ॥ सोई रघुवीर कृपा निधी दीनन सदा सहाय ॥ काम क्रोध मद लोभ सब सुमिरत सकल नसाइ ॥ अव रघुवर पद सुमिरि के सुमिरो पवन कुमार ॥ शेप महेश गणेश विधि अगम निगम श्रुति चार । श्री रघुनाथ प्रतापते कहव कछुक कलि धर्म । समुझैं सज्जन सन्त जन कटुक बचन कहु नर्म ॥

अंत—दोहा—सब जीवन उपकार हित भापेउ दाता राम । शुक्ल वंश भौ जन्म मम चतुर नगर है ग्राम ॥ छद—मद चरित्र दाता राम कृत जोइ नारि नर जग गावहि ॥ समुझै पढे उर सोच कर त्यागै सुरा सुख पावहि ॥ सुमिरैं सदा रघुवीर पद संताप पाप नसावहिं ॥ सब भांति सुख पा लोक में हरि धाम अंत सिधावही ॥ सोरठा—भापउ चरित अनूप सब जीवन उपकार हित । बूडत सब भव कूप उंच नीच नर नारि जग ॥ १ ॥ सुमिरन करू सिय राम छांड़ि कपट जंजाल सब ॥ खोवत नाहक दाम अंत जावगे नर्क में ॥ दीना जिनके मुखनते निकसत सीता राम । तिनकर सदा गुलाम मै सेवक आठौ जाम ॥ इति श्री मद चरित्र संपूर्ण समाप्तः लिखा सिवनाथ ब्राह्मण संवत् १९३४ वि० ॥

विषय—इस ग्रन्थ में नशे बाजो की दशा वर्णन की गई है ॥

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता दीना दास उर्फ दाता राम चतुर नगर निवासी थे । जाति के ब्राह्मण (शुक्ल) थे । यह इस प्रकार वर्णन किया गया है:—सब जीवन उपकार हित भापेउ दाता राम । शुक्ल वश भौ जन्म मम चतुर नगर है ग्राम ॥

संख्या ९० सी. प्रेम बिहारी, रचयिता—दीनादास (चतुरनगर, परगना चाइल, प्रयाग), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२०, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३२ = १८७५ ई० लिपिकाल—

स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा हरीदास, ग्राम—परावल, डाकघर—गजदुइवारा, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम । अथ प्रेमविहारी लिख्यते ॥ कवित्त—कहै जदु पति धीर सुनौ सखा मम धीर, ऊधौ हरौ ब्रज पीर जाय जोग हौ लगाय जू ॥ बीतत अल्प काल प्रलय समान जिन्हैं, तिन्हैं ज्ञान को विधान आइये सिखाय जू ॥ कीजिये उरिन हमैं गोपिन के रिन चोढ़, आप बिन गाढ़े दिन करै को सहाय जू ॥ चले सिरनाय श्याम सुरति बनाय । रथ पथ हरषाय गये जहा नदराय जू ॥ १ ॥

अत—खेमटा—काहे न धुलायो चुनर भई मैली ॥ नैहरि छाडि ससुर जब जैहौ ऐहै सुदिन उतैली ॥ तब तोहि मैल कुचैलि देखि हैं नगर नारि नर छैली ॥ घूघट पट जब टारि दखि हैं फूगे सुख जिमि पली ॥ नाक मूदि अपने घर जैहै नगर यात सब फैली ॥ नेक लाज नहिं आवत सजनी क्यों बावरि सी भैली ॥ अमित दुगन्ध आवत तेरे तन से निकसि जात जेहि गैली ॥ जह तह काटि फाटि के लटकत जसे गीध की थैली ॥ दीना गध तबै सब जहे जरि हैं चिता धरि दैलो ॥ २ ॥ इति श्री प्रेम विहारी ग्रन्थ सपूर्ण शुभ लिखित शिवदयाल चैत्र सुदी सप्तमी सवत् १९३६ वि० ॥

विषय—श्री कृष्ण और गोपियों का विरह वर्णन ।

सख्या ९० डी गोपी विरह महात्म, रचयिता—दानादास (चतुरनगर, तह०, चाइल, प्रयाग), कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, लिपिकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला महावीर प्रसाद, ग्राम—बकावली, डाकघर—धूमरी, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ गोपी महात्म लिख्यते ॥ दोहा ॥—अकल अनीह अखड अज निराकार निरधार ॥ बस गुर हृदय वसत मम माया गुण गोपार ॥ वन्दौं शेष गणेश हर अगम निगम श्रुति चार ॥ रघुनदन पद बदिक वन्दा पवन कुमार ॥ बोहित तुलसी चरन चढ़ि होत जात मै पार ॥ अगम सिन्धु ससार यह महा घोर है धार ॥ मै मति मद अध सठ कह लगि करौं बखान ॥ थोर मह सब जानिहैं सज्जन सत महान ॥ छद—अब मैं सबते विनय करत हौं सुनौ सकल मन लाई । कछुक हाल मै आपन बरनत सबहिं चरन सिर नाइ ॥ शुकुल वश भयो जन्म हमारो चतुर नगर है ग्रामा ॥ चाइल परगन निकट प्राग के पिता बनायो धामा ॥ पिता हमारे सब विधि साधू बदल शुकुल जेहि नामा ॥ मैं मति मद महा अपराधी लोभ क्रोध बस कामा ॥ फिरौं सदा कपटी क्रूरन सग जानौं धम न दाया ॥ कह लगि अवगुण कहौं आपनो ग्रसेउ मोहिं जस माया ॥ जबते सन मुख भयेउ राम के छाड़ि छाड़ि अन आसा ॥ तब ते सब सुख सिमिटि आय के सदा रहत मम पासा ॥

अत—आनद कद नद सुत कीरति रही अमित जग पाई ॥ गोपी विरह नयी यह कीरति अधिक स्वाद दरसाइ ॥ दाता राम कामना पूरन ह्वै है जो सुनि गावै ॥ छल बल छाड़ि प्रेम सब मनसो सो परम पद पावै ॥ कवित्त—जमदूत सुन पाई जमराज ते सुनाइ

एक, अद्भुत कविताई वैजनाथ जू वनाई ॥ चुप रहे जम राई सोच उर में वढाई, शीस नीचे को नवाई चित्र गुप्त को बुलाई है ॥ नर्क मूदौ अव भाई अघहु पुन्यौ न आई, सव गोपी विरह गाई वैकुन्ठ को सिधाई है ॥ चित्रगुप्त मुसकाई मसौ लेखनी छुटाई, वैजनाथ की दुहाई लोक चौदहौ में छाई है ॥ दोहा—गोपी विरह महातम भाषेउ मति अनुसार। दाता राम विप्रवर रघुपति पद उर धार ॥ इति श्री गोपी विरह महात्म सपूर्ण समाप्तः लिखतं चौवे दान मल सवत् १९३६ वि० ॥

विषय—गोपियो के विरह का माहात्म्य वर्णन ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता दाता राम दीना दास जाति के ब्राह्मण चतुर नगर निवासी थे जो तहसील चाइल जिला प्रयाग में है । इसको इस प्रकार वर्णन किया है:— शुक्ल वंश भयो जन्म हमारो चतुर नगर है ग्रामा ॥ चाइल परगन निकट प्राग के पिता वनायो धामा पिता हमारे सव विधि साघू वदल सुकुल जेहि नामा ॥ मैं मति मंद महा अपराधी लोभ क्रोध वस कामा ॥ सवत् ओनइस से वत्तिस में कातिक नौमि विचारी ॥ कृष्ण पक्ष तिथि सुन्दर जानौ कृष्ण चरण उर धारी ॥

संख्या ९१. विजयदर्शन, रचयिता—दीनानाथ, पत्र—२३६, आकार—७ X ४$\frac{3}{4}$ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४२५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नौवतराय गुलजारीलाल वैद्य, स्थान—फिरोजावाद, डाकघर—फिरोजावाद, जिला—आगरा ।

आदि—ॐ नमः सिद्ध ॥ श्री शीतल रामो जयति ॥ विजय दरसनय ॥ श्री गुरुभ्यो नमः श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वत्ये नम. ॥ श्री परमात्म रामाय नमः श्री शुक्लां वरधरं विष्णुं शशि वर्णं चतुर्भुजं ॥ श्री प्रसन्न वदनं ध्यायेत सर्व विघ्नोप शांतये ॥ अथ गुरु स्तुति पारी ॥ ॐ नमः सिद्ध सतगुरु देवा ॥ श्री सत गुरु चरन हृदय मै राखौ ॥ श्री सतगुरु सुमिरो अमृत चाखौ । २ ॥ सतगुरु सुमिरे तें आनन्द ॥ श्री सतगुरु सुमिरैं परमानन्द ॥ ३ ॥ श्री सत गुरु सुमिरैं मिटै उपाधि ॥ श्री सत गुरु सुमिरैं जरिहै व्याधि ॥ ४ ॥ सतगुरु सुमिरि सच्चदानन्दू ॥ सत गुरु सुमिरि श्री गोविन्दू ॥ ५ ॥

अत—आज्ञा तव यह हमकौ दयौ । सुमिरि ब्रह्म विद्या की पूजा कह्यौ ॥ श्री ज्ञानानन्द विद्या गुन सागर । शिव. स्वरूप वेद मय आगर ॥ ६९ ॥ पूर्ण अभिषेक करिहै तुम्हरौ । सुश्री विद्या नाम पोडषी सुमिरौ ॥ ७० ॥ श्री श्री स्याम सरुप श्री दीनी सिछिग्रा ॥ अटन राज्य श्याम प्रसिद्धि प्रगासा ॥ दीना नाथ हरि चरन निवासा ॥ आज्ञा श्री दक्षिण कालिका ॥ यह अज्ञा करि अंतरध्यानी । स्याम सरुप अंतर ज्ञानी ॥ ७१ ॥ ज्ञानानद गुरु नाथ को ध्यायौ । श्री ब्रह्म विद्या कौ भेदु लखायौ ॥ पूर्ण अभिषेक करै उपदेसू । श्री राज राजेश्वरी जगत नरेसू ॥ ७२ ॥

विषय—(१) गुरु स्तुती, पर ब्रह्म निर्गुन स्वरुप । ब्रह्मांड वर्णन, सर्गुण निरुपण, सृष्टि, कर्माकर्म, विराट, परम पद । रंग ईश्वरी निज स्वरुप । ब्रह्म विद्या निरुपण, पूजन वारनी व चक्र, शिवपूजन, शक्ति पूजन विधि, पंचमकार शोधन, संपूज्य, पच कोश पूजन, पट सिंहासनैश्वरी आदि पूजन, सप्त महा योगनी पूजन, अन्य डाकन्यादि पूजन, पट दर्शन

पूजन (समस्त चक्रेश्वरी देवता सपूज्या) । १—११३ । (२) पात्र स्वीकार लक्षण, गुरु आदि पूजा विधि । पात्र स्वकार लक्षण, बलिदान विधि, शक्ति वीर पूजन विधि उच्छिष्ट चंडालनी । बलिदान, अष्ट कुलागना पूजन, अमृत मन्त्रो धार वणन, मृत्युजय शोधा वर्णन, पूजन विधि मूल मन्त्रोधार, सहस्र नाम विजय मन्त्र, विजय जन्त्र, चौवीस पथ, हवन तथा जन्त्र निरूपण, कोष्टवली, जीवोत्पत्ति रज वीर्य लक्षण तथा भेद, पद दर्शन वणन, पञ्च ज्ञानी, आरती वर्णन, पच मुद्रा, आत्मज्ञान, महिमा नाम का परिचय उत्पत्ति चतुथ वणन । चित्र गुप्त कायस्थ । ज्ञान वर्णन परिचय दीना नाथ ॥ ११४-२३६ ॥

टिप्पणी—यह खण्डित ग्रन्थ वाम मार्ग से सम्बन्ध रखता है । इसमें वेदान्त के कुछ सिद्धान्तों के साथ ही साथ शक्ति की पूजा और शिव पूजा की प्रधानता रखी गई है । पचम कारादि का पृथक पृथक शोधन कराया है । रचयिता ज्ञानानन्द को अपना गुरु मानता है और ग्रन्थ के अन्तिम भाग में उनका कुछ परिचय दिया है । साथ ही उसने अपना भी परिचय दिया है । किन्तु ग्रन्थ के अपूर्ण होने तथा ग्रन्थ के पत्रों के फट जाने और फटे स्थानों पर चिटें लग जाने के कारण दोनों ही व्यक्तियों का परिचय अधूरा रह गया है । विशेषतया ग्रन्थकार का परिचय नितान्त अधूरा है ॥ अन्त में शीतल प्रसाद की महिमा का वणन है । ठीक नहीं कहा जा सक्ता कि ग्रन्थकार का नाम क्या है सभव है वह इन्हीं के खानदान का कोई व्यक्ति हो अथवा यही स्वय ग्रन्थकार हों । क्योंकि उनका नाम ग्रन्थ में बहुत बार आया है । ग्रन्थ के र० का० का छन्द भी पुस्तक के फट जान से अधूरा रह गया है 'शुक्ल पचमी भयो' इतने से कुछ पता नहीं चलता । दीनानाथ का भी परिचय दिया है किन्तु उसमें भी कुछ विशेष पता नहीं चलता । और न यही कहा जा सकता कि यही ग्रन्थकार था ।

सख्या ६० अनुभव प्रकाश, दाप कवि पत्र—६६, आकार—१०½ = ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ —१३, परिमाण (अनुष्टुप्) १४०४, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९५८ = १९०१ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला ऋषभदास जैन, ग्राम—महोना, डाकघर—इटौंजा, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री परमात्मने नम अथ अनभौ प्रकाश ग्रथ लिख्यते ॥ दोहा ॥ गुण अनत मय परम पद । श्री जिन वर भगवान । ज्ञेय लपत है ज्ञान में । अचल सदा निज थान ॥ १ ॥ अथ वचनका ॥ परम देवाधि देव परमात्मा परमेश्वर परम पूज्य ॥ अमल अनूपम आनदमय ॥ अपडित भगवान ॥ निर्वाण नाथ को नमस्कार करि ॥ अनभा प्रकाश ग्रथ करौं हौं ॥ जिनके प्रकासा दवे पदाथ का स्वरूप जानि निज आनद उपजै ॥ प्रथम मह लोक षट् द्रव्य का बन्या है तामैं पच द्रव्य सौ सहज स्वभावसत विद आनदादि ॥ अनत गुण मय चिदा नद है ॥ अनादि कम सजोग तै ॥ अनादि ॥ असुद्ध होय रह्या है ॥ तातैं परम पद मै अपना नयर भाव काये ॥ तातैं जन्मादि दु ख सह है ॥ ऐसी दु ख परिपाटी अपनी असुद्ध चित वीन ते पावै हैं ॥ जो अपने स्वरूप की सँभार करे तो एक छिनक मै सब दुख विलाय जाय ॥

अंत—अनुभव यह शिव पद स्वरुप कौ अनुभव कल्याण अनत ॥ अनुभव सुख अनत ॥ अनुभव अनत गुण निधान अनुभव अविनासी थान ॥ अनुभव त्रिभवन सार अनुभव यहिमा भंडार ॥ अनुभव आतु वोध फल । अनुभव स्वर सरम्म अनुभव स्व संवेद अनुभव तृपति भाव अनभव अपंड पद सर्वस्व अनुभव सास्वाद ॥ अनभव विमल रुप अनुभव अचल गोति ॥ रुप प्रगटै ॥ करणा ॥ × × × अरिल्ल ॥ यह अनुभौ परकास ज्ञान निज दायक है ॥ करिया को अभ्यास संत सुपपाय है ॥ या में अर्थ अनूप सदा भवि सरध है ॥ कहै दीप अविकार आप पद कौ लहै ॥२॥ इति अनुभव प्रकाश ग्रंथ अध्यात्म सपूर्ण ॥ मिती हुती सावन वदी ॥ १० ॥ सं० १९५८ ॥

विषय—(१) पृ० १ से १६ तक—मंगलाचरण । आत्मस्वरूप के विस्मरण का फल । अनुभव के लाभ । चेतन के अनेक विशेषण पुद्गल के विभिन्न रूप । स्वविचार सिद्धि का उपाय । आत्मा के गोथ स्वरूप के प्रगट होने का उपाय । कैवल्यज्ञान । (२) पृ० १७५६ तक—अपना स्वरूप साक्षात् होने का उपाय । ज्ञान जान पणा रूप होकर अपने को क्यो न जाने इसका समाधान । माया ब्रह्म और जीव निरूपण । ब्रह्मज्ञान का संगम संसार का स्वरूप ज्ञान । शरीरादि का मिथ्यात्व और ज्ञान का प्रभाव । अन्य मिथ्यात्वो का वर्णन । शुद्ध चेतन स्वरूप का वर्णन । अनुभव का वर्णन मिथ्यात्व में फसने के कारण सम्यक् ज्ञानादि वर्णन । परमात्मा के साध्य होने का वर्णन । साध्य साधक । निज धर्म की महिमा । (३) पृ० ५६ से ९६ तक—मिश्र धर्म अधिकार । सम्यक गुण सर्वथा । ज्ञानक सम्यक दृष्टि को हुआ है या नहीं ? इसका समाधान । स्वानुभव का वर्णन । देवाधिकार एवम मोक्ष का मूल तत्त्व और अनुभव की प्रधानता । ग्रथ की महत्ता और फल ।

संख्या ९३ ए. कवितावली, रचयिता—दूलनदास (धर्मे, रायबरेली), पत्र—२७, आकार—९ × ६½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२७ = १७७० ई०, लिपिकाल—सं०१९८५ = १९२८ ई०, प्राप्तिस्थान—त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पुरवा प्राणपाडेय, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली ।

आदि—नमामि रामभक्त सामरथ्थ पवन नंदन । कपिदं तेज पुंज दुष्ट दैत्य दल निकदन । प्रचड वाहु दंड स्वर्ग सैल शोभिततन मृगेन्द्र नाद रावना गड्द गर्व गजनं । शरीर वज्र वज्र नख विपच्छ वपु विदारनं. महा जती नमामि दीन जन लगन सुधारनं । गंभीर बुद्धि जुद्धि धीर वीर वल महा वलं । शुसील ज्ञान गुन निधान चरन ध्यान अस्थनं । सकेम भेस ध्याय तो प्रभावविस्व विद्दितं । हितं परोपकार कीस वस असउद्दित ।

अंत—कर कचन से तरह दार वर पच वार वहु वानी के । चपला से चमकैं चुनीदार तैसे तबीज उरमानी के । सिर सोहै चिरागोस पेचजर जरे जराऊ पानी के । अति उर अनंद 'दूलन' गोविन्द तकि तनै जसोमति रानी के दामिन से दमकै दसन मनोहर पीत बसन कटि बांधे हैं भौहन कोदड तिलक वर मानहु मदन सुमन सर साधे हैं दूलन

सिरसो ह मुकुट मजुकर लकुट कामरी काधे हैं। यो विविध भाति मधुवन वीथिनि में एल्त माधो राध हैं। इति श्री कवित सम्पूरन शुभ मस्तु।

विषय—श्री हनुमान जी, श्री गणेश जी, भक्तों की महिमा, श्री गगाजी, निगुण ब्रह्म स्मरण श्री कृष्ण राधिका की स्तुति। श्री राम नाम महिमा। सन्तों की रहनि गहनि। श्री सिव जी की महिमा इत्यादि अनेक स्फुट विषयों का वणन।

सख्या ९३ बी मगल गीता, रचयिता—दूलनदास (धर्मे, रायबरेली) पत्र—८, आकार—९ × ६३ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५४, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३०, लिपिकाल—स० १९८५ = १९२८ ई०, प्राप्तिस्थान—प० त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पुरवा प्राणपाडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली।

आदि—रामजिऊ दीनदयाल सामरथ सतगुर उरिम लगन धराइ। राम जिउ निर गुन व्याह विधान बखानों गुरु कृपा सुधि पाइ। राम जिउ कजन नगर सुहावन पावन हृदय कमल विग साइ। रामजिउ रचि रचि सहज सील गुन आगर सुमति का माड़ो छाइ। रामजिउ बाध्यो पाच पचीस तीन तहँ बदनिवार लगाइ। रामजिउ उलटि पवन तह बेदी बाध्यो प्रीत के खभ गड़ाइ। रामजिउ चौगुन चाऊ चउक तह पूरन सोह मुक्ता मोती। राम जिउ निमल नीर प्रेम घट पूरन जग मग मानिक जोती।

अत—माया तसि वसि निजु तन मन कहँ उलटि पवन चित देहु नाम औराधहु। बाजै निसान अधर धुनि गीति गँगन गढ़ लेहु सत्य युग बाधहुं। सखी मोरे सजन कही रस बतिया। तनिक भनक परी श्रवनन्ह मा, सोवत चौंकि परिउ अधि रतिया। पिय की बतिया हिया मोरे लागी प्रीत बेलि हरि भइ दुइ पतिया। सुनतहि प्रीतम की रस बतिया मैं भइउँ सुखित जरी है सवतिया। सखि 'दूलन' पिय की रस बतिया गूथौं हार म चुनि २ मोतिया

विषय—मगल समय में गाने योग्य गीत, नहछुर, बारात, द्वार चार लहकौरि, चढ़ाव, भवरी, विनती, मैहर द्वार, गारी, वर परछानि इत्यादि के अत्यत सुदर गीत ग्रामीण भाषा मिश्रित सरल हिंदी में लिखे गये हैं।

सख्या ९३ सी दोहावली, रचयिता—दूलनदास (सेमासी धम, रायबरेली), पत्र—२२, आकार—९ × ६३ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१७६, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल स० १८२५ लिपिकाल—स० १९८५ = १९२८ ई०, प्राप्तिस्थान—त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरे प्राणपाडे, डाकघर—तिलोइ, जिला—रायबरेली।

आदि—दूलन प्रेम प्रतीत ते, जो वदै हनुमान। निसु वासर ताकी सदा सब मुश्किल आसान। साइ तेरी सरन हौं अबकी मोंहि नेवाज। दूलन के प्रभु राखिये यहि बाना की लाज। दूलन दाता राम जिय सबका देत अहार। कसे दास विसारि हैं आनहु मन अति वार।

अंत—सरवस दूलन दास के आसु तोप तुम्ह राम। तुम्हरे चरनन सीस दै रटौं तुम्हारो नाम। कर्ता हर्ता राम जिनु 'दूलन' कीन्ह विचार पेट प्रपच के कारने, सूद्रि मुवा ससार। सरवस दूलन दास के केवल नाम प्रसाद। यह सत सिद्धि औ सर्व शुभ सुफल आदि औकाद।

विषय—योग, ज्ञान, भक्ति, संसार की असारता, ईश प्रेम राम नाम महिमा आदि विषयों का वर्णन।

सख्या ९४ ए. वाराह पुराण, रचयिता—दुर्गाप्रसाद (हमजापुर, अलवर), पत्र—३१८, आकार—१२ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२८०, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२७ = १८७० ई०, लिपिकाल—स० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० हरीविष्णु, ग्राम—पुरवा बहादुर पुर, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ वाराह पुराण लिख्यते ॥ सोरठा ॥ सिद्धि बुद्धि के धाम हरण अमगल विघ्न के ॥ वारबार प्रणाम गणनायक शुभ सदन के ॥ श्री नारायणहि प्रणाम सुर सेवित नर वर सहित ॥ चतुर वर्ग के धाम असुर निकदन देव हित ॥ श्री शारदहि प्रणाम हस वाहिनी जो सदा ॥ बसै सो मम उर धाम निर्मल मतिहि प्रकाशनी ॥ प्रथम अध्याय—एक समय नेमिषारण्यवासी रिषियों ने श्री सूत जी के मुखार विंद से परम पावन श्री विष्णु जी का नाना औतार चरित्र सुन परम प्रेम में मग्न हो श्री वाराह औतार की कथा सुनने की वांछा से अति हर्षित हो श्री शौनक जी सूत जी से प्रश्न करते भये कि हे सूत जी हम सपूर्ण अहोभागी है जो आपके मुखार विंद से परम पावनी हरि कथा दिन दिन प्रति नाना औतार चरित सुनते हैं और आपभी धन्य हो जो श्री परमेश्वर के परम पावने गुणानुवाद रूपी अमृत से अनेक जन्म की तृष्णा हमारी दूर कर रहो हो ॥ जो इस कथा को प्रातः काल उठ करके अथवा किसी पुन्य दिन में श्रवण करै वे सब पापो से मुक्त हो हमारे धाम को निज पितरों के साथ जाय हे धरणि जो तुमने प्रश्न किया सो सो हमने वर्णन किया अब क्या सुना चाहती हो। इति श्री वाराह पुराण सपूर्ण समाप्तः लिपा शिव विष्णु पडित हमजापुर निवासी संवत् १९२८ वि० कार्तिक शुक्ल नवमी ॥

विषय—वाराह औतार का कथा का वर्णन।

टिप्पणी—इस ग्रथ के रचयिता दुर्गाप्रसाद-पिता का नाम ब्रज लाल-अलवर राज, ग्राम हमजापुर निवासी थे। निर्माण काल संवत् १९२७ वि० लिपिकाल संवत् १९२८ वि० है।

संख्या ९४ बी. वाराह पुराण, रचयिता—दुर्गाप्रसाद (हमजापुर, अलवर), पत्र—३१०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७१७२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, लिपि-काल—स० १९२९ = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामनाथ शास्त्री, ग्राम—रामनगर डाकघर—सोरो, जिला—एटा।

आदि-अंत—९४ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है —इति श्री वाराह पुराण सपूर्ण समाप्त लिखा गगा दीन गगा पुत्र ने ३ मास में स्वपठनार्थ सवत् १९२९ वि० फाल्गुन सुदी ११ राम राम राम राम ।

सख्या ९४ सी लीला नरसिंह औतार, रचयिता—दुर्गाप्रसाद, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६×४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२६ = १८६९ इ०, प्राप्तिस्थान—लाला रामनरायन, ग्राम—भीषमपुर, डाकघर—जलेसर, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ लीला नरसिंह औतार लिख्यते दोह—जहा साच तह आप हैं जहा आप तह साच ॥ चाहीं ज्वाला में बसौं तहू न लागी आच ॥ टेक—प्रहलाद भक्त हरि भये प्रेम हितकारी । नरसिंह भयो औतार असुर को मारी ॥ देखी जब प्रभु की शक्ति अवा में जाके । बिल्ली ने बचे धरे अवा में जाके ॥ दीन्हीं जब अगिन लगाय कुम्हार ने जाके । प्रभु की दाया से बचि गये हैं बचे वाके ॥ प्रभु लीला अगम अपार जक्ति ससारी ॥ नरसिंह भयो औतार असुर को मारी ॥ १ ॥

अत—इतिनी सुनि श्री भगवान रूप नरसिंघ धर । प्रगटे खभा को फारि भक्त पर हित कर ॥ पकड़ो हरना कुस धूरी साझ जघा धर । नखों से तब फारो उदर बने नरसिह हर ॥ कहते दुर्गा प्रसाद ख्याल त्रिपुरारी । नरसिंह लियो औतार असुर को मारी ॥३॥ इति श्री नरसिंह औतार लीला सपूण समाप्तम् सवत् १९२६ वि० जेष्ठ सुदी नौमी लिखा भिखू बनिया गढ़ी हरनोमल ॥ राम राम राम राम ॥

विषय—प्रह्लाद भक्त की लीला ।

सख्या ९५ ए तत्वज्ञान बारहमासी, रचयिता—द्वारिकादास (मोहम्मदपुर, कानपुर) कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६×४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, पद्य लिपि—नागरी । रचनाकाल—१९३१ वि० । लिपिकाल—१९३१ वि०, प्राप्तिस्थान—बाबा रामदास जी, ग्राम—दहीनगर, डाकघर—टेवा, जिला—उन्नाव (उ० प्र०) ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ तत्वज्ञान की बारहमासी लिख्यते ॥ कवित्त ॥ न गहै कर माल न मुख से करे गढ़ि गढ़ि पाहन की मूरति न पुजै ॥ सकार हकार मिलाय कहै तेहि आदि में आदि को अक्षर दीजै । सूरज चद्र के मध्य बसै तेहि आदि में आदि को अक्षर दीजै ॥ सूरज चद्र के मध्य बसै सेहिका गहिकै चढ़ गवन करीजै द्वारिका पतित पावन पावन कहैं सतो समझ बूझ मन लीजै ॥ तत्व ज्ञान की बारह मासी ॥ चैत । चिन्ता सोच बाढ्यो मोह माया बस रह्यो सखि आस तिसुना में फस्यो दिन रात दुबधा में गयो ॥ हूँ लोभ बस कहु कुजन के फिरि आनि के सेवक भयो ॥ जिन गर्भ में रक्षा करी तेहि नाम धोखे ना कह्यो ॥

अत—कवित्त—धृत कम ना छुटावै नाहक । इद्री तलफावै मरे पूजि पूजि पाहन भूलि कथनी के ज्ञान में । तीरथ को धावै । पै साहब को न पावै घर सतगुरु का न खोजे रहै दान के गुमान में ॥ मन चित्त कर हेरयो बहु खोजि खोजि देख्यों इस सतगुरु के

समान केहि दाता ना जहान में ॥ पतित पावन को चेरा इक द्वारिका विगैला ताहि दुनिया से उवारि कै वसायो अलप धाम में ।

विषय—ईश्वर के नामकी महिमा जिससे ज्ञान प्राप्त हो, वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के रचयिता द्वारिकादास थे मुहम्मपुर कानपुर निवासी । यह बारहमासी अपने मित्र शुकदेव की आज्ञा से रची । निर्माण काल संवत् १९३१ वि० और लिपिकाल सवत् १९३१ वि० है ।

संख्या ९५ बी. ज्ञान का वारहमासा, रचयिता—द्वारकादास, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी । लिपिकाल—१९३७ वि०, प्राप्तिस्थान—ठा० भैरव सिह राठौर, ग्राम—गगापुर । डाकघर—बारहद्वारी, जिला—एटा (उ० प्र०) ।

आदि-अंत—९५ ए के समान ।

संख्या ९५ सी. तत्वज्ञान की वारामासी, रचयिता—द्वारकादास, कागज—देशी । पत्र—१६, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन सडी गली, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९३१ वि०, लिपिकाल—१९३४ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० रामदयाल दुबे, ग्राम—नगरा बग्गा, डाकघर—जैथरा, जिला—एटा (उ० प्र०) ।

आदि-अंत—९५ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है:—इति श्री तत्वज्ञान की वारामासी सपूर्ण लिखा रामनाथ त्रिपाठी अलीगंज बाजार संवत् १९३४ वि०

संख्या ९६ ए. रस मजूषा, रचयिता—द्वारकाप्रसाद, कागज—देशी, पत्र—१६०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५००, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—वैद्य रामजीवन मिश्र, ग्राम—लालामऊ, डाकघर—तालाबबक्सी ।

आदि—कफ केशरी रस—विष २५, अभरख २५, वंग २५, सोहागा २५, गुजराती १२, लौंग १२, अकर करा १२, अजवाइन १२, मिर्च १२, सव अदरख के अर्क में गोली मटर बरावर करै । अदरख में खाय तौ कफ ज्वर जाय खोखी नासै ॥

अंत—हरि गौरी रस—जो पक्ष हीन, वल हीन, वीर्य हीन, मलहीन होय तौ पारा लेने से मनुष्य अजर अमर होय घिकुवार से घोटे तव छानि लेइ, चीत से वहेरा के क्वाथ से वाइन सबके रस से चार पहर घोटे । तब पारा सब काम में जोजित करै । पारा १ गंधक २ भागले खरल में घोटे कजरी करै घीकुवार के रस से घोटे तब बरगद के जटा में घोटे कजिरी करिकै आतिशी शीशी में कपरौटी करै तब सुरै कै कजरी शीशी में भरै मुहरा में डाटे दे तव एक खपरी की पेंदी में आगुर भरि चौडा छेदकरै उसपर शीशी धरै तब वारू भरै शीशी का मुंह खुला राखै तब २७ पहर आच दे तब शीशी फोरि रस निकारि ले लाल वर्ण हो तब २ रत्ती रस मिश्री दूध के साथ दे तो प्रमेह स्वास कास क्षीण पन अल्प वीर्य ये सब दूर होइ यह हर गौरी रस जुदा जुदा अनोपान से अनेक रोग दूर होइ ॥

विषय—रस बनाने की विधि का वर्णन ।

संख्या ९६ बी रस मजूषा, रचयिता—द्वारका तिवारी, कागज—देशी, पत्र—१६०, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं १९०७=१८५० ई०, प्राप्तिस्थान—वैद्य रामनाथ शर्मा, ग्राम—मीरपुर, डाकघर—मल्लावां, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नम । अथ रस मजूषा लिख्यते ॥ दो०—श्री गुरुचरण प्रणाम करि हिये धरौं निज ध्यान । रस मजूषा रचन को मोको दीजो ज्ञान ॥ १ ॥ सस्कृत जो ग्रंथ है और जे भाषा जानि तिनकी आशय मैं कहीं रस मजूष बखानि ॥ २ ॥ चरका दिक जे ग्रथ है सो हैं नृपति सुजान । तिनकी सेवा करन को भाषा कीन्हीं जान ॥ ३ ॥ अथ नाड़ी परीक्षा—भूखे से प्यासे से सोय से तेल लगाये से तुरत अस्नान से राह के चले से नाड़ी का ठीक ज्ञान नहीं होता । तासौं चतुर वैद्य नाड़ी ठहर सौं देखै ॥

अंत—जो मुँह आवै तो कट सरैया की जड़ खैर सार त्रिफला के काढ़ा कौवा दूध को कुल्ला करै पथ्य दूध भात देय । इति कपूर रस । इति श्री रस मजूषायां रस स्थाने सब रोग चिकित्सायां द्वारिका त्रिपाठी कृत नवमोध्याय सपूर्णम् ॥ लिखत श्री निवास सवत १९०७ वि० शाके १७७२ चैत्र शुक्ला राम नौमी श्री राम राम राम राम ।

विषय—रस रसादिक बनाने की विधि ।

टिप्पणी—इस ग्रथ के रचयिता द्वारिका त्रिपाठी ब्राह्मण थे ।

संख्या ९७ ए शब्द होरी, रचयिता—बाबा फकीरादास (नरोत्तमपुर, बहरायच), पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८३१ ई०, लिपिकाल—स० १९३०=१८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिव महेश, ग्राम—विशुनपुर, डाकघर—अलीगंज, जिला—एटा ।

आदि—अथ ज्ञान की होरी (शब्द होरी) लिख्यते ॥ दोहा—प्रथम गुरु की बंदना तिमिरि दृष्टि मिट जाइ । साहेब सब घट भीतर नैनन में दरसाय ॥ १ ॥ ॐकार मूल श्री भाल मुकुर मनि रवि सीस कुंज विहार । दास फकीर के हिरदे बसौ धुनि उपजै नाम तुम्हार ॥ २ ॥ दृष्टि दरसा जो देखिये सो पाये तत सार । दास फकीर प्रगट कहि समुझै सो उतरे भव पार ॥ ३ ॥ नाम रटनि जेहि साधु की रसना रटनि अनुराग । आठ पहर चौसठ घरी तब आवै वैराग ॥ अथ शब्द होरी लिख्यत ॥ डर लागै पिया को कसे मैं खेलौं होरी ॥ एइ नैहरवा में आनि भुलानि बढ़ सुधि बिसरी पिय तोरी ॥ औगुन बहुत नहीं गुन एकौ रहीउ मैं विषय रस घोरी ॥ १ ॥ पाच पचीस रंग होरि इर बातिन संग निकर न पाऊरी ॥ कैसे रंग पिया पर डारऊ अलप वेस बुद्धि थोरी ॥ २ ॥ पिया मोरे ऊचे अटा पर बैठे रहि बउ मैं नजरिया जोरी ॥ पल छिन कल न परै बिन दखे जगत जेठनिया की चोरी ॥ ३ ॥ अब की निहोर कार भरि चितवउ छूटै ना दिढ़ डोरी ॥ दास फकीर दरस पिय फगुवा मागत हौं करजोरी ॥

अंत—समुझौ मन आपन जाना ॥ झूठ प्रसग छाँड़ि देउ मनुआ साची प्रीति लगा वोना ॥ झूठ है यह जगत जहा लगि ज्यो रवि कीनि बखानि । धाम मृग प्रान गलावोना

॥ १ ॥ झूंठे पांच तत्व पर कीरति झूंठे ग्राम गुमाना ॥ झूंठ न मिलेउ झूठ घर थापेउ रचि पचि याही में खपना ॥ नेक नही गुरू घर पावोना ॥२॥ या जग फंद रहा जग फादा गदा गांदि लोभाना ॥ ज्यो सुगना ललनी पर लोभा उलटि पंख लपटाना ॥ आनि फिरि अत तुलाना ॥ ३ ॥ जस मरकट गागर कर मेलेउ भरि मूठी कसि लेना ॥ छुटत नहीं सो कोऊ जतन से ताही में फस वध वोना ॥ घरै धूर भीख मंगाना ॥ ४ ॥ ए मनुवां सुन वात हमारी थिर है वैठ अलाना ॥ धूर भीषम दास फकीरा दया सत गुरु कै हरदम रहौं सयाना गाफिल नेक न आना ॥ ५ ॥ इति श्री होरी के शब्द समाप्तः संवत् १६३० वि० ॥

विषय—ज्ञान की होरी के शब्द ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता वावा फकीरा दास नरोत्तम पुर जिला वहरायच निवासी थे । निर्माण काल सन् १२३८ फसली । लिपिकाल संवत् १९३० वि० है ॥

संख्या ६७ बी. वानी बाबा फकीरादास, रचयिता—फकीरादास (नरोत्तमपुर वहरायच), कागज--देशी, पत्र--११२, आकार--१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९१२, रूप--नवीन, लिपि--नागरी, रचनाकाल--१२२५ = १८१८ ई०, लिपिकाल--सवत् १९३० = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान--वावा रामदास, स्थान—हरसूपुर, डाकघर---नानपारा, जिला--वहरायच ।

आदि--श्री गणेशायनमः ॥ अथ वावा फकीर दास की वानी लिख्यते ॥ प्रथम करौं गुरु बदना तिमिरि दृष्टि मिटि जाइ । साहेव सव घट भीतर नैनन में दरसाइ ॥ ॐ कार मूल श्री भाल मुकुर मनि रवि ससि गुंज विहार ॥ दास फकीरे के हृदे वसौ धुनि उपजै नाम तुम्हार ॥ दृष्टि दरस जो देखिये सो पाये तत सार । दास फकीर प्रगट कहि समुझौ सो उतरै भव पार ॥ नाम रटनि जेहि साधु को रसना रटनि अनुराग ॥ आठ पहर चौसठ घड़ी तब आवै वैराग ॥ भव सागर दरिआव है तामें नाम जहाज । दास फकीर संगति चढ़ि गुरु पूरे के लाज ॥ पुरुष है नाम मे मिलै तौ दिख लावै सैन । अयन वैन के पार है दरसैये वोरी-नैन ॥ वानीः—जपु नाम हरि नाम को फिकिरि सव छोडिके सोवता क्या भव जाल माही ॥ माया औ मोह पर वार दिन चारि को छूटि सव जाय कछू हाथ नाही ॥ जोगना ध्यान औ ज्ञान नाही नेम आचार नाही ॥ सहज एक प्रीति वहि नाम से लायके खेलु संसार के वीच मांही ॥

अंत—नैन झलकै जोगी अवल चढ़व ॥ तन धन देखि जनि ववरावो करौ भजन अस पै हौन दांव ॥ आसन अधर पवन पर भाव आवत जात सो हगम गांव ॥ उनि मुनि आगे अग्र अगोचर त्रिकुटी में वैठि के ध्यान लगाव ॥ तन तकिया मन ताल वजायो पांच पचीस का घेरि लै आव ॥ सुखमन सोधि समुझि घर आवो सूने महल लै सेज विछाव ॥ उनि मुनि अगर भई मोह छाही दास फकीर तहं बैठि जुडाव ॥ इति श्री वानी बाबा फकीरा दास (आनंद वर्धनी) संपूर्ण समाप्तः संवत् १९३४ वि० ॥

विषय--ईश्वर की महिमा और ज्ञान वर्णन ।

संख्या ९७ सी. शब्द फहरा, रचयिता—फकीरादास (नरोत्तम पुर, बहरायच), पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ३२, परिमाण (अनुष्टुप्) ३८८,

रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—भौरूदास, स्थान—रामकुटी (भीशमपुर), डाकघर—जलेसर, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ शब्द कहरा लिख्यते ॥ कहरा शब्द १ ॥ काया की नगरिया से गगरिया भरि लावरे ॥ गगन इदर वाले सुरतिया डोरी लावरे ॥ नौ नारी पनिहारी लागी लागा पूरा दावरे ॥ १ ॥ पांच पचीसौ रगे चगे माते मत के भावरे । प्रेम कै इडुरिया धैके हौले हौले आवरे ॥२॥

अत—हिंदू तुरुक दोइ दीन सबन में रह्यो समाइ ॥ हिंदू भूले वेद में तुरक भूले पढ़ि कुरान । ई दूनौ दुइ राह ते साधौ पचिगे जाति अभिमान ॥ ऐसी दुइ अछर ततसार सोइ अतर लौ लावे । देखौ उलटि निहारि और कछु नजरि न आवै ॥ दास फकीर विश्वास ते रहे चरन तर सोइ । जेहि जस दाया सत गुरु करि हैं तिनका तस फल होइ ॥ ५ ॥ इति श्री सबद कहरा समाप्त लिखा राम दास ॥

विषय—निराकार परमात्मा के विषय के शब्द ।

टिप्पणी—इस ग्रथ के रचयिता बाबा फकीरा दास जाति के मुराऊ थे । ये नरोत्तम पुर जिला बहराइच के निवासी थे । इनके छोटे छोटे अनेक ग्रथ रचे पाये जाते हैं जो निराकार परमात्मा के विषय में उपदेशार्थ लिखे हैं ।

सख्या ९८ ज्ञान उद्योत, रचयिता—श्री फकीरे दास (ठाकुर दूबे का पुरवा सुल्तानपुर), पत्र—११३ आकार—९ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९३२, रूप—अच्छा, लिपि—कैथी, रचनाकाल—स० १८५२ = १७९५ ई०, लिपिकाल—स० १८९२ = १८३५ ई०, प्राप्तिस्थान—महत पुरदरदास जी, ग्राम—ठाकुर दूबेका पुरवा, डाकघर—जगदीशपुर, जिला—सुल्तानपुर ।

आदि—सत गुरु साहेब दानिया, देहु जाहिं वरदान । मन यह कछु मांगा चहै देहु राशि मनमानि । सुमिरउँ गनपति आदि सुर, शुभ करता के दानि । जो कोउ मागै जवन फल, देहिं ताहि हित मानि । सत्य नाम सत गुरु सही, कहे सत्य जो कोय । वदौ ताके पद कमल जाते मम हित होय । वदौ सतगुरु पदकमल, सत्य नाम जिन दीन । ज्ञान उदोत होत जेहि कीर्ति कहँ जन लीन ।

अत—दो०—उत्तम कुल सुन्दर सु तनु, लक्षन सब गुन होय राम नाम बिन हीन कस, लाल इदारनि सोय । सकल वस्ते हीन जो राम नाम धरि हीक भोजन कवनिउ भाति रा, करे नोन सब नीक । चौपाइ—राम नाम जब तेहि उर होई, अवगुन तजि तेहि सब गुन सोइ । जीव ब्रह्म वसि कवनेउ जामा, नाम जपत जुग २ विश्रामा । दास फकीर मनहि समुझाई । भक्ति बिना मिथ्या दुनियाई गुरु की कृपा जस मति मोहि आई । तस कहि राम चरित चित लाई । निज स्वारथ लगि कहेउँ बखाना वन अनवनरे नहि मन आना तन मन वानि, करन हित पावन, तेहि हित प्रभु कहि कथा सुहावनि ।

विषय—ग्रथ में गुरु की वदना सब प्रथम करके पश्चात् ज्ञान और भक्ति उत्पन्न होने के हेतु अनेक कथाएं लिखी गई हैं ।

टिप्पणी—श्रीफकीरेदास जी का जन्मस्थान ठाकुर दुबे का पुरवा, तहसील मुसाफिर खाना, जिला–सुल्तानपुर में सरयू पारीण कुडवरिया दुबे गार्गेय गोत्रीय ब्राह्मण वंश में हुआ था। कहते हैं ये एक फकीर के आशिर्वाद से पैदा हुए थे इसी कारण इनका नाम फकीरदास रखा गया। बडे होने पर श्री जगजीवन स्वामी का नाम सुनकर शिष्य होने की इच्छा से गए। परतु इनके मन में यह दुविधा आ गई कि मैं ब्राह्मण हूँ और ये क्षत्री है। इस कारण स्वामी जी ने इन्हें शिष्य नहीं बनाया परच अपने शिष्य माधौदास के पास भेज दिया और ये इन्हीं के शिष्य हो गये। आपका बनाया हुआ एक ग्रथ ज्ञान उद्योत और बहुत से स्फुट भजन आदि देखने में आए हैं। कविता साधारण है परंतु ज्ञान और भक्ति शान्त रस से पूर्ण है। भाषा ग्रामीण मिश्रित अवधी है। आपका शरीरात ६५ वर्ष की आयु में स० १८५७ चैत्र शुक्ल ८ शनिवार को हुआ। आपके वंशज महंत का परिवार उसी स्थान पर अब भी वर्तमान है।

संख्या ९९. इजुल पुरान, रचयिता—हकीम फरासीस नाम सुत हकीम, कागज—देशी, पत्र––१४६, आकार––११ × ७ इंच, पंक्ति प्रति पृष्ठ)––२०, परिमाण (अनुष्टुप्)––३२४५, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १८९७=१८४० ई०, प्राप्ति-स्थान—श्रीयुत देवीलाल जी आयुर्वेदाचार्य, तहसील—खैरागढ, डाकघर—जगनेरा, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वस्तयै नमः अथ ईजुल पुरान लिप्यते। अथ मूत्र परीक्षा। गुर कैसौ रंग होय तो गरमी जानिये। सुरप रंग होय तो पित्त जानिये। सुपेत्र रग होय तो सीत जानिये। जरद रग होय तो कफ जानिये॥ इति मूत्र परीक्षा॥

अन्त—मही के गुण मही रहे तामें अढ़ाई गोहूं २॥ डारि राखे॥ दिन २॥ तब निकारिकें खाइ गोहूं मासे २ मिरच मासे २ मिलाय खाय दिन २९ तौ आमवात सो जो संग्रहणी अतिसार जाय एते गुन करे। इति श्री ईजुल पुरान वैद्य शास्त्रे हकीम फरासीस नाम सुत विरचतायाम सर्व क्री वरननो नाम त्रिदसमो अध्याय ॥ १३ ॥ संपूरण स्माप ताम् जथा प्रति देखी तथा लिखी मम दोषो न दीयते मिती पौष सुदी ६ भौम वासरे समत १८९७ दसकत लाला सिवलांके वाचें सुने तिनको राम राम। श्री ३.

विषय—१, मल मूत्र परीक्षा २, भिन्न प्रकार के त्रिदोषो का विवेचन। ३, महा-दीर्घ सन्निपात के लक्षण ४, ज्वरों के लक्षण ५, लोहू विकार ६, प्रमेह, जलधर का निदान ७, नेत्र परीक्षा। ८, सर्बत बनाने की विधियां। ९, आसव तथा गुटिका बनाने की रीतिं। १०, अर्क बनाने की रीतियां ११, वफारा देने की तरकीव १२, विविध काढ़े। १३, चूरन बनाने की विधि १४, विविध प्रकार की गोलियां १५, लेपन विधि १६, चटनी विधि। १७, पाक विधि। १८, तैल विधि। १९, मलहम बनाने की विधि। २०, घी बनाने की क्रियायें।

संख्या ६६ बी. वैद्यक फरासीसी, रचयिता—हकीम फरासीस, कागज—देशी, पत्र—१०४, आकार—९ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप)—

२३४०, खडित। रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १८४७ = १७९० ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर हरनामसिंह, स्थान—दाईपुर, डाकघर—अतरौंव, जिला—हरदोई।

आदि—मुरहठी की सरवत ॥ मोरहठी तोला १ आध पाव पानी में छान लेइ तामें मिरचे मासे १ मिश्री मासे ५ डारि पीवै कमल सनिपात नासै ॥ नेम सिराइ ॥ उचकि हड फूटन नासै ॥ १ ॥ जाठौ की सरवत ॥ जाठौं तोला १ आध पाव पानी में वाटि छानि पीवै ॥ लपट जुरताई दाह जाइ पेसाव की चिनग जाइ ॥ २ ॥

अत—ये सब पीस कपर छन करै तब ए वस्तुण मिलाइ कै सहत दो सेर जोस दके सब वस्तुऐं मिलावै तब सिधि के मासे ४ की गोली बाध खाइ रोज ४० तो नामर्द मद होइ बिंद कुम्याद सुक्रत पर मेह सोजाक चितौरी टाकी दूरि होइ बाइ के विकार नासै सब रोग जाइ ॥ इति श्री भाषा फरा सीसी सपूर्ण समास सवत् १८४७ वि० ॥

विषय—वैद्यक का ग्रन्थ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता हकीम फरासीस थे। लिपिकाल केवल सवत् १८४७ वि० है ॥

सख्या १०० गदाधर भट्ट की बानी, रचयिता—गदाधर भट्ट (वृदावन), कागज—देशी, पत्र—११२, आकार—१० × ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, खडित। लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबा बशीदास जी, स्थान—गोविंद कुड, वृदावन, डाकघर—वृदावन, जिला—मथुरा।

आदि—श्री श्री गौर निरयानदौ जयति श्री निकुज विहारिण्यै नम अथ श्री गधाधर भट्ट जू की बानी लिख्यते सिद्धात के पद राग विभास कबै हरिकृपा करि है। सुरति मेरी औंर न कोऊ काटा कौनेहवेरी। काम लोभ आदि ये निदय अहेरी। मिलिकै मनमति मृगी इन चहुधा घेरी। रोथी आय आस पीसि दुरासा केरी। भटकि देत वाही में फिर फिर फैरी। परी कुपथ कटक घनेरी। नेक ही न पावति भजि भजन सेरी। दभ के आरभ रही सत सगति डेरा। करै क्यों गदाधर बिनु करना तेरी।

अत—गुनिन कर गदाधर भट्ट अति सबिहत को लागे सुखद सज्जन सुहृद शुसील वचन आरज प्रति पालै। निमत्तर निष्काम कृपा करना का आलै। अनन्य भजन दृढ करन धर्यो बपु भक्तन काजै। परम धरम कौ सेतु श्री वृदावन गाजै। श्री भागवत सुधा बरपै बदन काहू को नाहिन दुखद गुमनि कर गदाधर भट्ट अति सबिहन को लागे सुखद। श्री गदाधर भट्ट जू की छप्पय श्री नाभा जू महाराज कृत सपूण।

विषय—राधाकृष्ण भक्ति विषयक पद।

सख्या १०१ ए होली सग्रह, रचयिता—गौरी शकर (मसवानपुर, कानपुर), पत्र—१२, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी रचनाकाल—सवत् १९३० = १८७३ ई०, लिपिकाल—सवत् १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर हरविलास सिंह, स्थान—रानीपुर, डाकघर—जैथरा, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नम. अथ होली संग्रह ग्रन्थ लिख्यते ॥ जंगना थारे करूगी कपोलन लाल जी म्हारी अगिया न छूओ ॥ यह अंगिया नहि धनुप जनक को छुवत टूट ततकाल । म्हारी नहि अगिया गौतम की नारी छुवत उडी नंदलाल ॥ म्हारी कहा विलोकत भृकुटी कुटिल कर नही पूतना खाल ॥ म्हारी यह अंगिया काली मत समझो जा नाथ्यो पाताल ॥ म्हारी गिरिवर उठाय भयो गिरधारी लाल नही जानौ व्रज वाल ॥ म्हारी इतनी सुनि मुसकाय सांवरो लीनो अविर गुलाल ॥ म्हारी सूर स्याम प्रभु निरषि छिरकि अग सखियन कियो निहाल ॥ म्हारी० ॥

अंत—काफी पीलू—वीती जात वहार री पिय अवहूं न आये। कैसे के मै दिन वितवों आली जोवन करत उभार री ॥ पिय अवहूं न आये ॥ कहा करूं कित जाऊं वतावो यह समयो दिन चार री ॥ पिय अवहूं न आये ॥ अली माधवी पिय विन व्याकुल कोऊ न सुनत पुकार री ॥ पिय अवहू न आये ॥ इति श्री होली सग्रह गौरी शकर भट्ट सग्रहीत समाप्त सवत् १९३० वि० ॥

विषय—राधाकृष्ण की भक्ति और क्रीडा का वर्णन ।

संख्या १०१ बी, काव्यामृत प्रवाह, रचयिता—गौरीशंकर भट्ट, (मसवानपुर, कानपुर), कागज—सफेद, पत्र—२०४, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४४८, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १९३९ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० श्यामलाल भट्ट, स्थान—गगाखेडा, डाकघर—माल, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ काव्यामृत प्रवाह लिख्यते ॥ श्री रघुनाथ सतक ॥ मगलाचरन ॥ एक रदन करिवर वदन विघन हरन सुख कंद ॥ सिद्धि सदन मगल करन जै जै गिरिजा नंद ॥ सवैया—एक ही दत अनंत लिये छवि चंद लिलार में धारन हारै । गौरी के गोद विनोद करै चहुं कोद नसे के पसारन हारे ॥ मोदक लै हितकै नितही ललिते के सुकाज सभारन हारे ॥ होहु सहाय गजानन जू जे घने विघने के विदारन हारे ॥ × × × श्री जग वदन वदन भाल गुलाल भरो मानो हाथ रती को । नामहिं ते लछिराम गनेस के पाप पहार नसै धरती को ॥ दानियां तीनहुं लोकन में वरदानियां वेद विरंच जती को ॥ संभु को वारो सवारो प्रताप दुलारो दयानिधि पारवती को ।

अंत—फूलि रहे कचनार अनार हजार सो रंग विरंग अवास है ॥ मजुल मजु दली कदली बनी भौर थली रुचि मै न मवास है ॥ सो मदनेसजू सीतल मद सुगधित पौन हू गौन प्रकाश है ॥ वाग घनो है। घनी वनी कुज विदेशी तुम्हे सव भांति सुपास है ॥ हरिजस रसिक सुजान हित कियो ग्रथ चित धारि । होय शब्द जो दोष जुत लीजौ सुमति सभारि ॥ इति श्री काव्यामृत प्रवाह समाप्तम शुभम् मिती चैत्र वदी नौमी संवत् १९३९ वि० लिखी चैनू वनिये ने—

विषय—इस ग्रथ में प्रथम मंगला चरन पुनः गणपति वंदना और रामजी के रूप आदि के कवित्त सवैया वर्णित हैं। फिर श्री कृष्ण जीकी लीला, सुंदरता और षट् ऋतुओं का वर्णन है।

टिप्पणी—इस ग्रंथ के रचयिता गौरीशंकर भट्ट मसवान पुर जिला कानपुर निवासी थे। इनके पिता का नाम ललता प्रसाद था। इसको इस प्रकार वर्णन किया है—सुरसरि रविजा मध्य की भूमि महासुदि दानि। जाको अन्तर वेद कहि सब जग रह्यो बखानि॥ तेहि थल में मसवान पुर सुभग सोभ सरसात। भट्ट सदावर्ती वसत अट सेला विख्यात॥ तेहि कुल मन्नालाल में भट्ट सबै गुण धाम॥ परम प्रीति सिय राम पद करै सदा सुभ काम॥ तनय भये तिनके चतुर अति लालता प्रसाद। सुमति सराहन जोग जे करत सदा प्रियवाद॥ गौरीशंकर नाम में तिनको तनय अपान॥ सुमति कविन की दरिश पथ की-हों मधुकर बखान॥ इस कवि ने संग्रह भी किया और स्वयं कवि भी था। लिपिकाल संवत् १९३९ वि० है।

संख्या १०१ सी ऋतुराज शतक, रचयिता—गौरी शङ्कर (मसवानपुर, कानपुर), कागज—पतला, पत्र—३२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८४, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९३९ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर दीनपाल सिंह राठौर, स्थान—झाझामऊ, डाकघर—उमरगढ़, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशायनम॥ अथ ऋतु राज शतक लिख्यते (बसंत बहार)॥ मंगला चरण दोहा॥ फूलि उठत अंग अंग सु तर ऐ सुषमा सुष साज। आय जात हिय में जबै श्याम चरण ऋतु राज॥ १॥ डोलत कोकिल मद भर चलत भौंर चहु ओर। विहरत अपर विहग घर ऋतु पति आगम जोर॥ २॥ मन हरन॥ द्रुमन लपेटे लता तनत वितान मानौ फूलना झरत मही फरस परे लगी॥ चातक न होंहि वंदीजन गुन गान कर तीतर चकोर चमूचटक चर्चै लगी मोर नहि बोलें या बसंत रितु आगम की घन में गंभीर बीर नौबत झरै लगी॥ ३॥

अंत—लीला अद्भुत लोक हित करत अलौकिक आप। बसहु जुगुल प्रभु मो हिये हरि मन की संताप॥ ७॥ रंग भीने पट सो सदा रहहु ह्दय लपिटाय। प्रेम दास की आस बस प्रिय पूरन ह्वे जाय॥ ८॥ सोरठा—सब चैतन्य सरूप भूमि लता द्रुम गुल्म तृण। धारि रहे जड़ रूप सुन्दर स्याम विहार हित॥ इति श्री ऋतु राज शतक संपूर्ण लिखा राम अधार मिश्र स्वपठनार्थ आश्वनि शुक्ला नौमी संवत् १९३९ वि०॥

विषय—बसंत बहार वर्णन।

संख्या १०१ डी संगीत की पुस्तक, रचयिता—गौरीशङ्कर भट्ट, मसवानपुर (कानपुर) कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला गूजरमल, स्थान—गडहिया, डाकघर—उमरगढ़, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशायनम॥ अथ सांगीत ग्रंथ लिख्यते॥ रात्रि के गाने योग्य॥ समय सूर्य अस्त॥ बनते आवत कुंवर कन्हाई॥ बंसीवट की मग में सजिनी बंशी तान बजाई॥ भई सांझ उडनाथ उदित भये गोरज अंबर छाई॥ ऐंता पैंता मना मन सुखा संग

राजत बल भाई ॥ श्यामल गौर मनोहर जोरी विधि निज हाथ बनाई ॥ कटि नीलो पीरो पट राजत उर बनमाल सोहाई ॥ सुनत सखी इनहीं सों लागी या ब्रज की ठकुराई ॥ जसुधा मात आरती साजी उर आनद अधिकाई ॥ सिंह जुझार जुगुल पद पंकज छवि उरमाहिं समाई ॥ १ ॥

अंत—(गजल धुनि परज ताल गजल) छोडि सब भ्रम जाल तुम नंदलाल को ध्याया करो ॥ और श्यामा श्याम के पूरे चरित गाया करौ ॥ सोहबते बद छोडकर यह गौर करके देख लो। जो है सेवक श्याम के उनके निकट जाया करौ ॥ तुम नसीहत सज्जना की दिल लगाकर नित सुनौ ॥ सिर्फ सुनने से है क्या कुछु काम में लाया करौ ॥ जो सनेही वन्दौ के उनकी सुलह में मत रहौ। मक्र दुनिया छोड हरि चरनन में शिर नाया करौ ॥ वैठते उठते हमेशा ऐश और आराम में। नाम श्यामा श्याम का तुम भूल मत जाया करौ ॥ दास सिंह जुझार प्रभु का नाम अपरपार है। नाम लेकर श्याम का आनंद उपजाया करौ ॥ छोडि सब जजाल० ॥

विषय—इस ग्रन्थ में सूर्य अस्त से रात्रि के २ से ३॥ तक के राग रागिनी लिखी है।

संख्या १०१ ई, संगीत रत्नाकर द्वितीय भाग, रचयिता—गौरीशंकर मसवानपुर (कानपुर), कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कवि विश्राम सिंह, स्थान—भवनियापुर, डाकघर—सरौंढ़ा, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ सांगीत रताकर लिख्यते ॥ रात्रि समय गाने योग ॥ ध्वनि गौरी वृन्दावनी ॥ ताल धीमा ॥ समय सूर्यास्त । बनते आवत कुंवर कन्हाई ॥ वंशीवट की मग में सजिनी वंशी तान वजाई ॥ भई सांझ उडुनाथ उदित भये गोरज अवर छाई ॥ ऐता पेता मना मनसुखा संग राजत बलभाई ॥ श्यामल गौर मनोहर जोरी विधि निज हाथ बनाई ॥ कटि नीलो पीलो पट राजत उर वनमाल सोहाई ॥ सुनहु सखी इनही सो लागी या ब्रज की ठकुराई ॥ जसुधा मात आरती साजी उर आनंद अधिकाई ॥ सिंह जुझार जुगुल पद पंकज छवि उर माहि समाई ॥

अत—नाम श्यामा श्याम का तुम भूल मत जाया करौ ॥ दास सिंह जुझार प्रभु का नाम अपरंपार है। नाम लेकर श्याम का आनद उपजाया करौ ॥ छोडि सब जजाल तुम नद लाल को जाया करौ ॥ इति श्री सांगीत रत्नाकर सपूर्ण समाप्तः

विषय—प्रत्येक धुनि व ताल व समय के गाने वर्णन हैं।

संख्या १०१ एफ. संगीत विहार, रचयिता—गौरीशंकर, (मसवानपुर, कानपुर), कागज—विदेशी, पत्र—१२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२४=१८६७ ई०, लिपिकाल—संवत् १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर जवाहरसिंह, स्थान—खेतूई, डाकघर—मुरादाबाद, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ सागीत विहार लिख्यते ॥ ध्वनि प्रभाती ॥ ताल इक ताल (समय प्रात काल) ॥ जय जय गण राज देव भक्तन सुखकारी ॥ शकर सुत सिद्धि सदन सुन्दर गज राज वदन । दान वन्धु एक रदन कोटि विघन हारी ॥ शोभित शशि वाल भाल राजत गल मुकुत माल । शुड दड वल विशाल सतन हित कारी ॥ वदत नित प्रति सुरेश गावत गुण गण महेश । ध्यावत तव नाम शेष ब्रह्मा मुख चारी ॥ मोदक प्रिय मोद करण सुयश भरण विपति हरण ॥ तुव उदार चरन शरन शकर वलि हारी ।

अत—जमुना के तीर भीर बीर लै अहीर की । रोकै गली छली भली चली न नीर की ॥ जोरै मरोरि भौहैं सोह सोहै वीर की ॥ राखे न नेक धीर कौन हीर पीर की ॥ ललिते जु लोभ सोभ सोभ अटक रही ॥ तॅसी तनी० ॥ इति श्री सागीत विहार सपूर्ण समाप्त लिखत राम लाल वनिया शिव गज सावन मास शुक्ल पक्ष दशमी सवत १९२६ वि०

विषय—समय समय के एव ऋतुओं के अनुकूल गाने योग्य पद लिखे गये हैं ॥

सख्या १०१ जी वीरविनोद, रचयिता—गौरीशङ्कर, (मसवानपुर कानपुर), कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३६, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १९४०=१८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रतनसिंह, स्थान—कुटी चन्दसेन, डाकघर—रहीमाबाद, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ वीर विनोद लिख्यते ॥ मगला चरन ॥ दोहा ॥ सुभग चरन गिरजा ललन मलन खलन के झुण्ड । विघन सघन तरु दलन को वलन फिरा वत सुण्ड ॥ मेघ वरन तन रतन गन चन्द्र भाल भुज चारि । प्रन पालौ घालौ सदा श्री काली रिझ वारि ॥

अत—जहा सुजन तह प्रीति है प्रीत तहा सुख ठौर ॥ जहा पुष्प तहँ वास है जहा वास तह भौर ॥ चारि वेद कर सार यह सुनि राखहु सब कोय । ढाई अक्षर प्रेम के पढे सो पडित होय ॥ इति श्री वीर विनोद सपूर्ण लिखत चेनू वनिये फाल्गुन कृष्ण पक्षे शिवरात्री सवत् १९४० वि० ॥

विषय—वीरता के कवित्तों का वर्णन है ।

सख्या १०२ ए चीरहरन लीला, रचयिता—गौरीशङ्कर (कपन सराय, जि० शाहजहापुर) कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नारायणाश्रम कुटी, डाकघर—मोहनपुर, जिला—एटा ।

आदि—अथ काव्य चीरहरन लीला गौरी शकर कवि कृत लिख्यते—कवित्त—एक समय उठि के सजनी जमुना जी नहान चली ब्रज वाला । चीर उतारि धर तट ऊपर कोउ नारि उतारत शाल दुशाला ॥ केलि करैं मिलि गोप सुता उत कन्ह चले उठि के ततकाला ॥ गौरी शकर श्याम गये फिर चीर चुरावत भये नदलाला ॥ १ ॥

अत—दोहा—अरज हमारी सुनौ प्रभु कृष्णचन्द्र महराज । लज्जा मेरी राखिये गोपिन के सिरताज ॥ सोरठा—भूल चूक जो होय लीजौ सबै सुधारि तुम । मैं विनती कर जोरि वुद्धिहीन जानत नहीं ॥ दोहा—विप्रन को प्रनाम करि सतन को करि जोरि । दोहा—

विप्रन को प्रनाम करि संतन को करि जोरि । कृपा दृष्टि करिये सवै मति मोरी है थोरि ॥ इति श्री चीर हरनलीला गौरीशकर कृत लिख्यते । राम राम ।

विषय—श्रीकृष्ण की चीरहरण लीला का वर्णन ।

संख्या १०२ बी गोवर्द्धन लीला, रचयिता—गौरीशंकर (कपन सराय, शाहजहांपुर), पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १२, परिमाण (अनुष्टुप)—२४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा नारायणाश्रम कुटी, डाकघर—मोहनपुर, जिला—एटा ।

आदि—अथ काव्य गोवर्धन लीला लिख्यते ॥ कवित्त—एक समय व्रज गोप सवै मिलि इंद्र के पूजा को साज सम्हारो ॥ कान्ह कहै गिरि पास चलौ सव खाइगो भोजन आज तुम्हारो ॥ सो वरदान दिहौ सवका फिरि नाहि करै कछु इंद्र हमारो ॥ गौरी शंकर पास गये हरिश्याम तहां दोऊ रूप सम्हारो ॥ १ ॥

अत—आरत वैन कहे घनश्याम सो माया के जाल में भूलि परोजू ॥ नाथ उतारि धरौ गिरि को जव इद्र दोउ कर जोरि खड़ो जू ॥ जो भव सागर पार चहौ मन क्यों न गोविंद को ध्यान धरो जू ॥ गौरी शंकर टेरि कहै उर स्याम सदा मेरे वास करो जू ॥ इति गोवर्धन लीला संपूर्ण लिखा गुरु वकस लाला नगरा धीर मिती मार्ग शीर्ष वदी तिथि अष्टमी संवत् १९३० वि० ॥

विषय—श्री कृष्ण की गोवर्द्धन लीला का वर्णन ॥

संख्या १०२ सी. मनिहारिन लीला, रचयिता—गौरीशङ्कर (कपन सराय शाह जहांपुर), पत्र—४, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, लिपिकाल—संवत् १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर राम सिह, स्थान—दीनाखेड़ा, डाकघर—सारोन, जिला—एटा ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ मनहारिन लीलालिख्यते ॥ कवित्त—है विछुआ दोऊ पायन में अरु नूपुर ने अति शोर कियोरी ॥ श्याम के सीस पै सारी लसै अरु पैधति घांघर लाल हरोरी ॥ है दुलरी तिलरी नकवेसरि नौलख हार जडाऊ जडोरी ॥ देखो सखी अनरीति करै हरि ने मनहारी को रूप धरोरी ॥ १ ॥ नख सो सिख लौ सिंगार किये जब सुन्दर नारि को भेष कियोरी ॥ कांच के जोरे अमोल डला विच कान्ह सम्हांरि के भेष कियोरी ॥ नारि की चाल पै चाल चलै मुसक्याय मनोहर चित्त हरोरी ॥ वृषभान पुरा विच शोर कियो हरि ने मनहारी को रूप कियोरी ॥ २ ॥

अंत—दीजै हमै वकसीस प्रिया चलि जाऊ घरै नहि वेर करोरी ॥ आजु की रैनि वसो सजनी हरि ने सुनि के, निज भेष करोरी ॥ श्याम गये छलि के नंद ग्राम सो प्यारी महा उर सोच करोरी ॥ गौरी शंकर टेरि कहैं हरि ने मनहारी को रूप धरोरी ॥ ५ ॥ इति श्री मनहारी लीला संपूर्णम् समाप्ता लिखा राम चरन संवत् विक्रमादित्य १९३४ फागुन सुदी तीज ॥ राम राम राम ॥

विषय—श्री कृष्ण जी का मनिहारिन का रूप धारण कर श्री राधिका जी के यहा जाना ।

संख्या १०२ डी रहस पचासा, रचयिता—गौरीशङ्कर (कपन सराय, शाहजहा पुर), कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्ति स्थान—प० शिव बिहारी गौड़, स्थान—जैतपुर, डाकघर—पिल्वा, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ रहस्य पचासा लिख्यते ॥ कवित्त ॥ साझ समय जमुना तट मोहन कुज लता आ कदव फरोजू ॥ आस भरो सब गोपिन को फिर आजु की रैनि में रास करोजू ॥ यों कहि श्याम लिये मुरली उत में शशि आय प्रकाश करोजू ॥ गौरी शकर फूकि वजावत कान्ह जवै व्रज शोर परोजू ॥ १ ॥ कान अवाज परी अनवाल के श्याम जवै कर वेनु धरोजू ॥ या वसुरी नहिं धीर धरै घन श्याम सुनाय के प्रान हरोजू ॥ टेरि कहै सब गोप सुता घर छाड़ि सवै वन धाम करोजू ॥ गौरी शकर होत विहाल सिंगार सबै व्रज नारि करोजू ॥ २ ॥

अत—चीर चुराय दियो वरदान सो स्याम कहैं सुनु गोप कुमारी ॥ जो अभिलाख हुती व्रजवाल के कान्ह सबै करि केल उवारी ॥ आनद सों हरिरास कियो निज धाम गइ व्रज वृषभान दुलारी ॥ गौरी शकर भक्ति करो क्यों न श्याम सहाय करैंगे तुमारी ॥ ५ ॥ दोहा—रास करो गोपाल ने देखत होत अनद। प्रात गईं सब निज भवन उर राखे व्रज चंद ॥ इति श्री रहस पचासा सपूर्ण समाप्त सवत् १९३६ वि० ॥

विषय—श्री कृष्णजी की रास लीला के पचास कवित्त लिखे है ॥

संख्या १०२ ई श्यामविलास, रचयिता—गौरीशङ्कर (कपन सराय, शाहजहापुर), पत्र—२४, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १९३३=१८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला भगवती प्रसाद, स्थान—जलाल के नगरा, डाकघर—नदरइ, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ श्याम विलास लिख्यते ॥ दोहा ॥ प्रथमहि सुमरि गणेश को शारद को शिर नाय । राधा कृष्ण विलास में चित्त दीज मन लाय ॥ १ ॥ शहर शाहजहां पूर में कपन सराय सर नाम । ब्राह्मण कुल में जन्म है गौरी शकर नाम ॥ २ ॥ कवित्त—साझ समय जमुना तट मोहन कुज लता औ कदव परोजू ॥ आस भरो सब गोपिन को फिरि आजु की रैनि में रास करोजू ॥ यों कहि श्याम लिये मुरली उत में शशि आप प्रकाश कियो जू ॥ गौरी शकर फूकि वजावत कान्ह जवै व्रज शोर परोजू ॥ ३ ॥

अत—काम सतावत मोहि पिया जब आनि खडी हम होहिं दुवारे । हार हमेल गरे विच सोहत भामिनि नयन दिये कजरारे ॥ अकुलात इन्द चहुओर चितै जब कथ बिना सखि खात पछारे ॥ गौरी न मानत है पपीहा घर पीउ नहीं पिउ पीउ पुकारे ॥ ५ ॥ इति श्री श्याम विलास सपूर्णम् लिखत गौरी हेलवाइ कटरा शाहजहा पूर बीच माघ मासे शुक्र पक्षौ तिथौ दश्याम सवत्सरे विक्रमादित्ये १९३३ राम राम राम ॥

विषय—कृष्ण चरित्र सक्षेप से लिखा है ।

संख्या १०३ ए मंगल आरती, रचयिता--गल्लू महाराज (व्रन्दावन), कागज—देशी, पत्र—६२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १८७७ = १८२० ई०, प्राप्तिस्थान—अद्वैत चरण जी गोस्वामी, स्थान—घेरा राधा रमन, डाकघर—व्रन्दावन, जिला—मथुरा ।

आदि--अथ मंगल आरती लिष्यते । राग भैरव मगल आरती कीजै भोर । मंगल राधा जुगल किसोर । मगल जनम करम गुन गुन मंगल मंगल जसोदा मापन चोर । मंगल मुकुट वेण वन माला मंगल रूप रम्यौ मन मोर । जन भगवान जगत में मंगल मंगल मूरत नद किशोर ॥ १ ॥ मंगल आरती कीजै प्रात मगल गोपी मगल ग्वाल मगल नद जसोमत मात मंगल वृज वृंदावन यमुना मंगल मुरली शब्द रसाल रामहरी मगल नंदलाल मंगल राधा सपिन सुहात । २ । मंगल आरती वृज मगल की करिये मगल रूप निहारि । मगल वृज मंगल वृन्दावन मगल दायक जमुना वारि मंगल गोपी गोप धेनु हित गिरि गोधन मगल विस्तारि । मंगल मुरली धुन आनंद वन मगल गुन लीला उरधारि ।

अंत--राग पमाच । वोन दस दन भूल जिन जाय तो सों रही समझाय । वो तेरी य बात चलत घर घर मै रही पै सकल वृज छाय । वह रसिया रिझि वार रूपको तु सुंदर वर अति ही सहज सुधाय । ईछाराम गिरधर चित वन में लेहै चित्त चुराय । राग विहागरो । कासों कहिये यह बात नंद नंदन बिन देषे सजनी वोन महा अकुलात । बदन सरोज बडी बड़ी अखियां सुभग सांवरे गात । कोट्य कद्रप अंग अंगमा वरनत वरनी न जात लागी लगन सकुच गुरजन की कैसे भयै दिन रात ईछाराम गिरधर सुप निरपत मेरे युगन अघात । राजिव नैन ललोही तेरी चितवनि पर हरिवस कीनी । दीरघ जमला विलोलकता छन तिन मधिक जरा दियो । भोह धनुष चंद सो बदन कूंचन सो गात तेरी हीयो । कमल कलीसी मानो अति छबि राजत तानसेन के प्रभु रीझि वूझकर बोलवे कौनि मलीयो २ राग माल कोस चौताल । काधे कामर कारी प्रीत पिछोरी ओर कटि सेली बांधे मोर मुकट कर मुरली विराजत टोना से पढ़ पढ़ सखी विरह रूप आराधे २ मिती वैशाप शुक्ल ३ संवत् १८७७ ।

विषय--श्री कृष्ण की मंगला आरती सवधी पदो का संग्रह ।

संख्या १०३ बी. सुरमावारी, रचयिता—गल्लू महाराज (वृंदावन), कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—७ × ५ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)--५८, रूप--प्राचीन, लिपि--नागरी, रचनाकाल--संवत् १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान--अद्वैतचरण जी गोस्वामी, स्थान—घेरा राधारमन जी, डाकघर--व्रन्दावन, जिला--मथुरा ।

आदि--अर्थ छदम लिख्यते । दोहा । भये केउ दिन प्रिया को गये बाप के धाम । नैना तरसत लालके छिन न लहत विश्राम । सुरमा वारी वेष सजि गये भानु के गाम । झोरी कंधा टारि के वनी छबीली बाम । भूप द्वार की गली में फेरी देत पुकारि । सुरमा मिस्सी मधुर धुनि मनु कोकिल झंकारि । पुरवासी छकि जकि कहै नपशिप छबिहि निहारि ।

रूप छलावा है किधौं सुरमा वारी नारि। प्यारी धुनि सुनि मोहनी सिरकी झाकी आइ। ललिता सौं मुसकनि कह्यो याको ऐतु बलाइ।

अन्त—ललितादिक सब बैठिकैं करत छदम की बात। डोरी पखा सवैया की गहि खवरा नात। अहो विशाषे लाल को नेहन परन्यो जात। एक प्राण द्वै रहे थे देह न दोइ सहात। छिन कनि छुरो क्यों सहे जिनकी ऐसी प्रीत। तन मन हार परस्पर यह करि मानी नीत। इनको सुप हम सबिन को जीवन प्राण अधार। अलि दंपति के नेम पै तन मन जिय बलिहार गौर पछकी पचमी भृगुवासर वैसाप। सवत् नभ ससि पड जुग फली चित्तन हुलाप। इति सुरमा वारी सपूण पदराग।

विषय—श्री कृष्ण की छद्म लीला।

टिप्पणी—पुस्तक में ग्रथकर्त्ता का नाम नहा है। परतु खोज से पता चला कि इसके रचयिता वृन्दावन के एक प्रसिद्ध कवि और गौडीय सम्प्रदाय के आचार्य थे। उनका नाम गल्लू जी महाराज उपनाम श्री गोस्वामी गुण मजरी दास जी था। इनका वर्णन नवभक्तमाल नामक ग्रथ में श्री गोस्वामी राधाचरणजी ने किया है। ये (गल्लू जी महराज) गोस्वामी राधा चरण जी के पिता थे।

सख्या १०४ (इस सख्या का विवरण पत्र लुप्त हो गया है)।

सख्या १०५ ए परतत्व प्रकाश, रचयिता—गणेश (सूहे की गली, आगरा), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० शिव शर्म्मा, पूर्व हेडमास्टर मारहरा, ग्राम—धूमरा, डाकघर—सरोढ, जिला—एटा उ० प्र०।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ परतत्व प्रकाश लिख्यते॥ दोहा—ब्रह्मादिक सब देवता जिनको करत प्रनाम—सो शिव सुत मेरो करौ सबही मनके काम॥ १॥ जाके गुण गण गणत हू शेष न पावत पार। सो शिव सुत परब्रह्म हे सब देवन को सार॥ २॥ सस्कृत शब्द अपार लपि भाषा कछू बनाइ। जेहि सुनि क जिय समुझि कैं भव सागर तरि जाइ॥ ३॥ जगन्नाथ जाको गुरु ताको नाम गणेश रामचन्द्र सुत परम जड़ सो प्रसिद्ध सब देश॥ ४॥ ताने मन में यह रच्यो नथामल के हेत। ताहि प्रसिद्धि वरथो चहै जासौं जीव सचेत॥ ५॥ माथुर जाति सुबुद्धि अति सावलदास प्रसिद्ध॥ ताके नय बेटा भये जाके अतिहि रिद्धि॥ ६॥ ताको मध्यम पुत्र शुभ नथामल जेहि नाम सो गणेश पति के चरण शरण गयो सुप धाम॥ ७॥ जैसे व्यवहारी सकल निसि दिन निज व्यवहार॥ मन लगाइ के करत हे तिमि तुम ब्रह्म विचार परम आत्मा ब्रह्म निज एक अषड अपार। ताके विन जाने कोऊ नहीं होत भवपार॥ ९॥

अत—जैसे सैनहि जान है परे अध भवकूप। झूठ छाडि सच ग्रहण करि जथा रीति है सूप॥ १०॥ ग्रथ अलौकिक यह रच्यो परको तत्व प्रकास। पूरण कृपा जापै भई सो जानै हरिदास॥ ११॥ सहे वाली जो गली नगर आगरे बीच। तहा बैठ कै यह रच्यो खोटा कहि है नीच॥ १२॥ इति श्री परतत्व प्रकास ग्रथ सपूण समाप्त लिखा शिव बालक विद्यार्थी आगरे का रहने वाला॥ माघ सुदी पचमी सवत् १९२० वि० राम राम राम।

विषय—इन्द्रिय-ज्ञान उपदेश किया है ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के रचयिता गणेश जी आगरा निवासी थे । लिपिलाल सवत् १९१० वि० है ।

संख्या १०५ बी. परतत्व प्रकाश, रचयिता—गणेश (आगरा), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६ X ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९२१, लिपिकाल—१९३२ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रामदत्त ज्योतषी, ग्राम—नील का पुरा, डाकघर—सिदपुटा, जिला—एटा, (उ० प्र०)

आदि—१०५ ए के समान ।

अत—नाम रुप ये द्वार है मंद बुद्धि अनरुप । जैसे सैनहिं जान है परैं अंध भव कूप । झूठ छाड़ि सच ग्रहण करि जथा रीति है सूप ।। ग्रथ अलौकिक यह रच्यो परके तत्व प्रकाश पूरण कृपा जापै भई सो जानै हरिदास । सूहे वाली जो गही नगर आगरें वीच तहां वैठि के यह रच्यो खोटो कहिहै नीच ।। संवत विक्रम जानिये उनइससै इक्कीस । आश्विन सुदि की पचमी कृपा करी जगदीश । भूल चूक याकी सवै लीजौ चतुर सुधारि । कविराजन की रीति यह रहै सदा उर धारि ।। इति श्री परतत्व प्रकाश गणेश कृत संपूर्ण समाप्तः लिखा शिव गोपाल सारस्वत ब्राह्मण आगरा नमक मंडी का रहने वारा मार्ग शीर्ष संवत् १९३२ वि० ।

विषय—परब्रह्म का विचार ससार में मुख्य माना है ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रथ के रचयिता गणेश जी थे । इनके गुरु का नाम जगन्नाथ और पिता का नाम रामचंद था । इन्होने वह ग्रंथ सावल दास जो जाति के माहुर थे, पुत्र नत्थामल के हेत यह ग्रथ रचा । गणेश जी आगरा किवासी थे । निर्माण काल स० १९२१ वि० और लिपिकाल सं० १९३२ वि० है । इसको इस प्रकार लिखा है ।

जगन्नाथ जाको गुरु ताको नाम गणेश रामचंद्र सुत परम जड़ सो प्रसिद्धि सव देश ताने मन में यह रच्यो नत्था मल के हेत ताहि प्रसिद्धि कन्यो चहे जासो जीव संवत माहुर जाति सुवुद्धि अति सावल दास प्रसिद्धि ताके भच वेटा भये जाके अति ही रिद्धि ।। ताको मध्यम पुत्र शुभ नत्था मल जेहि नाथ । सो गणेशपति के चरण शरण गयो सुष धाम । सूहे वाली गली नगर आगरे वीच ।। सवत् विक्रम जानिये उमइस सै इक्कीस । आश्विन सुदि की पचमी कृपा करी गण ईस ।।

संख्या १०६, सत्यनारायण की व्रत कथा भाषा, रचयिता—गणेशदत्त, पत्र—२४' आकार—८ X ६$\frac{3}{4}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—पंडित विहारीलाल शुक्ल, स्थान—गडही, डाकघर—अमेठी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशायनम. ।। लिष्यते सत्य नारायण की कथा भाषा ।। दोहरा ।। वन्दे गणधिप गुरु गिरा । हरि हर दिज सव सन्त । सत्य देव की यह कथा । भाषा करि वृतन्त ।। चौपाई ।। एक समय नैमष के माही । सौनिक कही सूत के पाही ।। नाथ कथा

तुम बहुविधि वरनी। जप तप जोग कठिन अति करनी॥ लघु श्रम किये महाफल होई। अब कहि कथा वखानहु सोइ॥ कहा सूत कहिये मुनि ज्ञानी। शौनिक प्रति विष्णु बखानी।

अंत—छन्द॥ पावै सकल फल करे जो मन लाय वृत पूजन करै। धन हीन सुप सपति लह निश्चय दुख दारिद को हरे॥ जा कहै पुलिकित हरि कथा। नित सुवृत नासत अघ सही। महिमा अमित है याहि वृत करि कौन मुख से हम कही॥ इति श्री प० गणेश दत्त विरचिते श्री रेवा खडे सत्य नारायण वृत कथा भाषा सम्पूर्णम्॥ सवत् १६४० को साल भादा वदी अष्टमी॥

विषय—सत्य नारायण की कथा का भाषा पद्यानुवाद।

सख्या १०७ ए बारह मासा विरहिनी, रचयिता—गणेश प्रसाद (फरुखाबाद), पत्र—९, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६ रूप – नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १६२५ = १८६८ ई०, प्राप्तिस्थान—कीसा सहाय, स्थान—ख्वाज़ानी, डाकघर—जलाली, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नम॥ अथ विरहनी का बारा मासा लिख्यते करें रो रो के यादगारी, तसव्वर में पीतम प्यारी॥ लगा जबसे असाढ़ माई, गज़ब गम की वदली छाई॥ चले वन वैरिन पुरवाई दमकि रही दामिन दुखदाई॥ दोहा—मोर शोर कोयल करें रही कोकिला कूक। पिया पिया रट रहा पपैया उठत कलेजे हूक॥ रहै चश्मों से अश्क जारी। तसव्वर में पीतम प्यारी॥ १॥ शुरू सामन धड़के छतिया। याद आवैं उनकी बतिया॥ लिखीं किन सौतिन को पतिया। भई पिय बिन बरिन रतिया॥ दोहा—कर सिंगार झूलै सखी पहिर कुसुभी चीर। कचन थार सजोय गुजरिया चली वीर के तीर॥

अंत—बहुत कुछ करी मजेदारी तसव्वर में प्रीतम प्यारी॥ जेठ कुल करी ऐश आराम फसे दिल दो उल्फत के दाम॥ फरुखाबाद शहर सरनाम मका है कूचा सालिक राम॥ दोहा—लेख राज राजी हुए कर मालिक की याद। बारह मासा मदन मनोहर कई गनेश परसाद॥ मिहर भगवान कलम जारी तसव्वर में प्रीतम प्यारी॥ इति श्री बारह मासा विरहिनी सपूर्ण समाप्त जेठ सुदी नौमी सवत् १९२५ वि०।

विषय—विरहिनी का बारह मासा लिखा है॥ आसाढ़ से फाल्गुन तक विरहिनी अपने पति के विरह में दुखी रही। चैत्र में पति को परदेश में जाकर जोगन बनकर ढूँढ़ा फिर आनद से रही।

टिप्पणी—इस ग्रथ के रचयिता गणेश प्रसाद फरुखाबाद निवासी थे इनके पिता का नाम लेख राज था। ये १९०० वीं शताब्दी के अत में हुए हैं। इन्होंने अपने निवास स्थान के लिए इस प्रकार लिखा है—फरुखाबाद शहर सरनाम मका है कूचा सालिक राम॥

सख्या १०७ बी भ्रमरगीत सवाद, रचयिता—गणेशप्रसाद (फरुखाबाद), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण

(अनुष्टुप्)—६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पण्डित छीतनमल मुदर्रिस, स्थान—पिथौरा, डाकघर—सिकन्दरा राऊ, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—अथ भ्रमर गीत ऊधौ गोपिन कौ संवाद लिख्यते ॥ कुछ कपट प्रीति की रीति कही ना जाती ॥ लिखि लिखि पाती में जोग जरावति छाती ॥ सुनि सुनि ऊधो के बैन नयन भरि आये ॥ किरा कारन तजि हरि हमें द्वारिका छाये ॥ तजि लोक लाज कुल कान भवन विसरावे ॥ कुब्जा के कीने काज कृष्ण मन भाये । दिन रैन चैन ना पडे नीद ना आती । लिख लिख पाती में जोग जरावति छाती ॥ हरिमाखन चाखन हार छाछ कुविजा सी । कैसे मन मानी कृष्ण की दासी ॥ इत राधा वल्लभ नाम लेत ब्रज वासी । उत कुबरी कृष्ण कहाय करावत हांसी ।

अंत—सखा तुम समझी मन माही । डरिन हम गोपिन से नाही ॥ परी ऊधो पर परछाही । भक्ति गोपिन की चित चाही ॥ दो०—निरत करन ऊधो लगे निरखि सखिन की रीति । लघु गनेश परसाद भनत यम भ्रमर गीत नव नीति ॥ मदन मोहन मन बसत मुदाम सखिन की कहियो सीता राम ।

इति भ्रमर गीत ग्रन्थ सपूर्ण ॥

विषय—राग रागनियो में ऊधो गोपी संवाद वर्णित है ।

संख्या १०७ सी, दानलीला, रचयिता—गणेश प्रसाद (फरुखाबाद), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १९२२ = १८६५ ई०, प्राप्ति-स्थान—छीतरमल, स्थान—पिठौरा, डाकघर—सिकन्दर राऊ, जिला—अलीगढ ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ दान लीला लिख्यते ॥ मेरी लूटि लूटि दधि खाई हटकौ मनमोहन माई ॥ मै गई आज दधि वेचन माई वसीवट वृंदावन ॥ मेरे निकट आय मनमोहन लगो बहियां पकरि झकझोरन ॥ छद—कहा खूब कितना समझाया नहिं मानत हटकी ॥ चीर फार चोली मसकाई पकड बाह झटकी ॥ ग्वाल बाल आ गये मेरी पट खोली घूंघट की ॥ लपक लपक के उछल उछल के फोड़ दई मटकी ॥ टूट जिकर जैहै वंशीवट की हकीकत सुन नागर नटकी ॥

अंत—छंद—सीस मुकुट मकराकृत कुडल वैजंती माला । नंदनदन छवि निरख पडी चरनों में ब्रजवाला ॥ देने लगी असीस जिये तेरो माई गोपाला ॥ लेखराज फरजंद चद ये सांचे में ढाला ॥ टूट ॥ करी बंदिश गनेश प्रसाद वतन है शहर फरुखाबाद ॥ हरि चरन भक्ति जिन पाई हटकौ मन मोहन माई ॥ इति श्री दानलीला संपूर्णम् लिखा कालिका प्रसाद नेरा निवासी संवत् १९२२ वि० ।

विषय—श्रीकृष्ण की दानलीला का वर्णन ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता गणेश प्रसाद फरुखावाद निवासी थे। इसको इस प्रकार लिखा है :—देने लगी असीस जिये तेरी माई गोपाला । लेखराज फरजंद छद ये सांचे में ढाला ॥ करी वंदिश गनेश परसाद वतन है शहर फरूखाबाद ॥ लिपि काल संवत् १९२२ वि० ।

संख्या १०७ डी देवस्तुति संग्रह, रचयिता—गणेश प्रसाद (फरुखाबाद), पत्र—१२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप)—२६०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—किसन सहाय, स्थान—झाझानी, डाकघर—जलाली, जिला—अलीगढ़।

आदि—ॐ श्री गणेशाम्बिकाभ्यानम ॥ श्री देव अस्तुति ग्रन्थ लिख्यते ॥ श्री दुर्गा अस्तुति ॥ भवानी भजौ महम माई भक्त भय भजन सुख दाई ॥ ताप त्रय मोचनि लोचन तीन। वदन लखि रवि शशि लगत मलान ॥ चतुर भुज सोहे प्रबल प्रवीन सकल जिन खल खडन कर दीन ॥ दोहा—श्याम केश सुन्दर मुकुट तिलक मृगा मद भाल ॥ अक्षत आभूषण अवर तन उर मणिमाल विशाल ॥ सिंह वाहन सुंदर ताई भक्तभय भजन सुख दाई ॥ प्रथम नरसिंह रूप धारो हिरना कश्यप को संघारो ॥ वली वावन बलि छल डारो राम हुइ रामन को मारो ॥

श्री गंगा जी की अस्तुति ॥ भव तरनी कलि मल दुख हरनी जय जय सुर सरिता सुख दाइ ॥ दरस प्रताप ताप त्रय मोचनि पाप आप ते जात नसाई ॥ × × × रातो खतम करो जमपुर को पुनि पापिनि की यही बहाई ॥ करि व्यौहार विष्णु ब्रह्मा पुर शिवपुर में हुन्डी भुगताई ॥ शोभा अमित जाय नहिं वरनी कीरति लोक लोक में छाई ॥ मांगे दास गणेश देहु वर राधा कृष्ण भक्ति मन माइ ॥ इति श्री देव अस्तुति संग्रह ग्रन्थ संपूर्ण समाप्त लिखत राम औतार हुये ग्राम वेदी पुर परगनो सिकंदरा राऊ जिला अलीगढ़ माह महीना शुक्ल पक्ष त्रयोदशी संवत् १९१८ वि० ॥ राम राम राम जै भगवती माइ की ॥

विषय—इसमें देवी गणेश, शिव, राम, कृष्ण, हनुमान, सूर्य आदि की स्तुतियां लिखी हैं।

संख्या १०७ ई गायन संग्रह, रचयिता—गणेश प्रसाद, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२४, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला गूजरमल, स्थान—गढ़िया, डाकघर—उमरगढ़, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ गायन संग्रह गणेश कृत लिख्यते ॥ ख्याल रंगत वशी करन ॥ नर्गिस चश्म गुल बदन उमर है वाली घूंघट की ओट कर चोट मोहनी डाली ॥ अलबेली बांकी अदा दार भामिनि है करके सोलह सिंगार खडी कामिन है ॥ जोवन मिसाल दम दमक रही दामिन है दिल है मेरा मुश्ताक खुदा जामिन है ॥ क्या फबत है गुंचे दहन पान की लाली घूंघट की ओट कर चोट मोहनी डाली ॥ १ ॥ इस कदर तेरे रुखसारो पर जोवन है जिस कदर फलक पर झलक माह रोशन है ॥ क्या मदन की आमद बदन में नाजुक पन है मखमली मुलायम शिकम जिसम कुदन है ॥ क्या अदा से काली लट नागिन लट काली ॥ घूंघट की० ॥ २ ॥

अंत—राग कालगड़ा—दधि वेचन कुंजन आज गई सुनरी सजनी इक वात नई ॥ जमुना निकट खडे मन मोहन अजब अचानक भेंट भई ॥ वार वार वरजो नहिं मानत मटुकी

पटकि कर झटक दई ॥ चूमि चूमि मुख मदन मनोहर मौज भरी लपटाय लई ॥ दास गणेश निरखि नयनन छवि पूरन परमा नंद भई ॥

इति श्री गणेश कृत राग रागिनि संग्रह सपूर्ण लिखा मैयाराम खडैचा फागुन सुदी संवत् १९३६ वि० ॥

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या १०७ एफ. हिन्डोला राधाकृष्ण, रचयिता—गनेशप्रसाद (फरुखावाद), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९१८=१८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—छीतरमल, स्थान—पिथौरा, डाकघर—सिकन्दराराऊ, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ हिडोला राधा कृष्ण लिख्यते-पिया सग हिडोला गोरी झूलैं वृषभान किशोरी ॥ सजि सजि सिंगार पिय प्यारी वनि चली ब्रज की नारी ॥ यह पहिरि चूनरी सारी छवि अंग अंग उजियारी ॥

अंत—छद-पूरन परमा नद अधर मुख वंशी झन कारी ॥ मन मोहे चर अचर भनक सुनि शिव समाधि हारी ॥ लखि छवि हित हरि वंश परस पर सुख समाज भारी ॥ लेख राज सुत सदा जुगुल चरनन के हित कारी ॥ टेक ॥ मदनमोहन सुदरताई रागिनी कथ गनेश गाई । टेक ॥ अति ललित छद जिन कोरी झूलै वृषभान किशोरी ॥

इति श्री हिडोला राधा कृष्ण सपूर्णम् लिखा मैकू लाल वनियां हाथरस निवासी चेला गणेश परसाद जू का ॥ राम श्रीकृष्ण राधा

विषय—राधा कृष्ण का हिडोला वर्णन ।

संख्या १०७ जी, मलका मुअज्जम का दरबार देहली, रचयिता—गणेश प्रसाद (फरुखाबाद), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—१०×८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९२४=१८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला दीनदयाल पटवारी, स्थान—सराय रहीम, डाकघर—हबीबगज, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ सहसाही मलका मुअज्जम कैसर हिंद दरबार लिख्यते रंगत मोहनी राग विहाग ।। खुदा ने दी जिसने पाई मिली मलका को सहंसाई ।। मुल्क में किया वखूवी राज अदल हो रहा जहां में आज ।। सजे सरपर सोने का ताज ताज ताजो की आप सरताज ।। दो०—करें कोर नसकुल खडे वडे वडे सरदार ।। वैठी लंदन साह तखत पर लगे रहे दरवार ॥ चलन जिसका चेहरे साही मिली मलका को सहसाही ॥१॥ लाट जंगी को वुलवाया हुक्म मलका ने फरमाया ॥ ताज दिहली को भिजवाया चला साहव जिहाज आया ॥ दो०—कलकत्ते से रेल में हुआ लाट असवार । चार पहर दस मिनट में देहली गया ताज सरकार ॥ लई राजो ने पेशवाई मिली मल्का की साहंसाही ॥ वदल पोशाक वरक रगी चुरट साहव सवार जंगी ॥ रिसाला चला संग संगी लिये तलवार हाथ नगी ॥ दो०—अगरेजी वाजा बजा सव साविक दस्तूर ॥ गरर गरर गर गर गर गर गर वजे सग तवूर ॥ सवारी कपू में आई मिली मलका को सहसाही ॥ मेम टिम टिम

सवार आतीं परी आलम को सरमाती ॥ झलक चेहरे की झलकाती चली डाले नकाब जाती ॥ दो०—सजी सेज गाड़ी बड़ी बेशुमार इकरग । बैठे बाबा लोग साहर अगरेजों के सग ॥ विलायत नजर पड़ी आइ मिली मल्का को सहसाही ॥

अत—जितने थे दरबार में खैर खाह सरकार । बे कीमत पोशाक बदन में तरह दार हथियार ॥ खिल्त राजों को पहिराइ मिली मल्का को सहनसाइ ॥ लैम्प रोशन चिराग वाले चले गोले औ गुब्बारे ॥ फलक में झलक रहे तारे ॥—दो०—अगरेजी आला किला पेड़ खड़े मेदान । घन चक्कर चरखी महतावीं छूट जगी बान ॥ कैद कैदिन की छुड़वाइ मिली मल्का को सहसाही ॥ कैसर हिंद छंद जोड़ा किला जिन भरतपूर तोड़ा ॥ जहा में जबरदस्त फोड़ा मुकाबिल उदू नहीं छोड़ा ॥ दो०—शहर फर्रुखाबाद में कूचा सालिक राम । कहै गणेश परशाद वल्द है लैस राज सरनाम ॥ मदद पर है गगे माइ मिली मल्का को सहसाई ॥ इति श्री ख्याल सहसाही मलका मुअज्जमा कैसर हिंद दरबार देहली रगत मोहनी राग बिहाग सपूण समास सवत् १९३४ वि० ।

विषय—मल्का मुअज्जमा कैसर हिंद (महारानी विक्टोरिया) के समय में जो दरबार दिल्ली में हुआ था उसका वणन किया है ।

सख्या १८७ एच प्रेम गीतावली, रचयिता—गणेशप्रसाद फरखाबाद, कागज—देशी, पत्र—५०, आकार—१२ × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४००, रूप—अच्छा नहीं, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १९२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—मौलाना रसूल खा काजी, स्थान—गाजीरी, डाकघर—सलेमपुर, जिला—अलीगढ़,

आदि—श्री गणेशाय नम अथ प्रेमगीतावली लिख्यते श्री शिवस्तुति राग भैरवी ॥ वारबार पुकारत आरति मैं शिवशकर सरन तिहारी ॥ पूरन ब्रह्म देव देवन के नृपपति चरन कमल बलिहारी ॥ जह जह भीर परी भक्तन पर तुम सहाय कीनी भय हारी ॥ लोचन तीन सकल भय मोचन सुख सागर सबके हितकारी ॥ सीस गग अद्धग उमा छवि सोभित मुडमाल विषधारी ॥ नील कठ तन भस्म चिता की ओढ़े नाग चर्म त्रिपुरारी ॥

अन्त—श्री गगाजी की अस्तुति—राग विलावल—भवतरनी कलिमल दुख हरनी जय जय सुर सरिता सुखदाई ॥ दरस प्रताप ताप त्रय मोचनि पाप आपते जात नसाई ॥ तारन को परवार भगीरथ आये विपुन समाधि लगाइ ॥ × × खातो खतम करी यमपुर की फिर पापिन की वही बहाइ ॥ करि त्यौहार विश्नु ब्रह्मापुर शिवपुर में हुन्डी भुगताई ॥ शोभा अमित जाइ नहि बरनी कीरति लोक लोक में छाई ॥ मागे दास गणेश देहु वर राधा कृष्ण भक्ति मन भाइ ॥ इति श्री गगा अस्तुति सपूण । इति श्री प्रेमगीतावली गणेश प्रसाद कृत सपूण लिखा राम दास वैश्य ओमर फरखाबाद सवत् १९२४ वि०

विषय—देवी देवताओं की स्तुतिया एव श्रीकृष्ण लीला ।

सख्या १८७ आई रागमनोहर, रचयिता—गणेशप्रसाद, फर्रुखाबाद, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२ परिमाण (अनुष्टुप्)-

८५४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत्—१९२२ = १८६५ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा मेरूदास रामकुटी, स्थान—भीशमपुर, डाकघर—जलेसर, जिला—एटा।

आदि—अथ राग मनोहर लिख्यते ॥ ठुमरी भैरवी ॥ ढलेजात जुवनवां रे दिन दिन। उनही पर निसदिन ध्यान लगायो श्याम सुन्दर पर जियरा गमायो ॥ दिनही रैन मोहिं तरफत वीती रात कटे तारे गिन गिन ॥ १ ॥ जो चाहे तरुवर की छैयां गौना लेन नहि आये सैयां ॥ याही सोच मोहिं रहत है पलपल वीती जात वैस छिन छिन ॥ रूप सरूपके स्वांग उतारे विना वताये गुरू कर डारे ॥ मान नही काहू को राखे गर्व किये चाहे जिन जिन ॥ ढले ॥ १ ॥

अत—है रतन जडित कर कंचन की पिचकारी भर भर के मारे रंग अग हरि नारी ॥ वंदिश गनेश परसाद कलम है जारी है शहर फरूखा वाद वसत व्रज नारी ॥ देहु अमर भक्त वरदान ज्ञान अनमोली वृन्दावन वरसत रंग रची हरि होली ॥ लिखा रामचरन स्वपठनार्थ संवत् १९२२ वि० जै कृष्ण कन्हैया लाल की ॥ शिव शिव शिव ॥

विपय—इस ग्रन्थ मे ठुमरी, होली, गजल आदि राग रागिनियो का वर्णन है।

संख्या १०७ जे. राग रत्नावली, रचयिता—गणेश प्रसाद फरुखावाद, कागज—अंग्रेजी, पत्र—२६०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९०५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १९२० = १८६३ ई०, प्राप्ति-स्थान—पण्डित राममनोहर, स्थान—माधौगंज, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ राग रत्नावली दशावतार लिख्यते मंगला चरन ॥ लखनी रंगत सोहनी ॥ विदित लम्वोदर जगवन्दन। भजो गणपति गिरिजा नन्दन ॥ सीस राजत मणि मुकुट विशाल तिलक केशर को शोभित भाल ॥ कुटिल भृकुटी जुग नैन रसाल लसत उर नव रतन की माल ॥ दो०—गज आनन कुंडल श्रवन अरुण अधर छवि अंग ॥ एक दंत शोभा अनत लखि लजत अनेक अनग ॥ अग राजत विभूत वन्दन भजो गणिपति गिरिजा नन्दन ॥ कपोलन पर घूंघट वारी जुगुल अलकै झलकै कारी ॥ फवन पीताम्बर की प्यारी मुदित मन चारि भुजा धारी ॥

अंत—काल करि लोचन विशाल गोपी नाथ जव, भीम सेन काल सो कराल ह्वै के लसै गो ॥ रथ ते उतरि वडे गथ की गदा लै, रण पथ पै सवेगि डाटि तोदल मे धसैगो ॥ दीरघ उदड और दडनि चपल करि, मंडल मही को धन ध्वनि करि निकसै गो ॥ थर थर धराधरा धर तवह्वै है। धर कौन को नसैगो अव कौन को वसैगो।

विपय—इस ग्रन्थ में दश औतारो की लीला का वर्णन है।

सख्या १०७ के. राम कलेवा, रचयिता—गणेशप्रसाद, (फरुखावाद), कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—१२ × ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १९२६ = १८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—पण्डित रामदत्त, स्थान—रायपुर, डाकघर—गोनमत, जिला—अलीगढ।

आदि—श्री गणेशाय नम। अथ राम कलेवा लिख्यते ॥ रंगत वे नजीर–मुनि संग

मनोहर माइ । सोहैं समाज रघुराइ ॥ मणि मुकुट चमक चपला सी । छवि कोटि काम उपमा सी ॥ लखि श्याम गौर सुख रासी गये मोहि जनक पुर वासी ॥

अत—छद—नाग सुता गधव सुता अरु पक्ष सुता सारी ॥ राज वधू सुर वधू वधू मिथला पुर की प्यारी ॥ लै लै नाम राम दशरथ को गाय रहीं गारी ॥ लेखराज सुत सदा चरन रघुवर का बलि हारी ॥ टूट ॥ मदन मोहन सुन्दर सवाद वदिश गणेश परसाद ॥ अति ललित रागिनी गाय सोहे समाज रघुराइ

इति श्री राम कलेवा सपूर्ण सवत् १९२६ त्रि० जेष्ठ सुदी ११ दशमी लिखी राम भरोसे ॥

विपय—धनुप भग और राम सीता का विवाह वर्णन ।

सख्या १०७ एल रुक्मिणी मगल, रचयिता—गणेशप्रसाद (फर्रुखाबाद), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १८२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—पण्डित रामदत्त, स्थान—रायपुर, डाकघर—गोनमत, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ रुकुमिनी मगल लिख्यते ॥ अथ लावनी रुकुमिनी मंगल रगत वसीकरन राग भैरवी लिख्यत ॥ सुन सुन नारद के वचन परम सुख पाती । दुलहिन दुलहा को लिखत प्रेम की पाती ॥ कुदन पुर भीशमक सुता सुदरी माया । ताको मुख चद निहारि चद्र सरमाया ॥ तेहि घर विवाह शिशु पाल सग ठहराया ॥ धरि मौर सभा पति धूम धाम से धाया ॥ लखि दुख बरात रुकमिनी दुखित हो जाती ॥ दुलहिन दुलहा को लिखत प्रेम की पाती ॥ १ ॥ जो जन मगल रुकमिनी प्रेम से गावें । ससार सकल सुख पाइ मोक्ष फल पावे ॥ लखि लेख राज आनद सरन हो जावें ॥ वदिश गणेश प्रसाद भक्ति मन भाव ॥ नैनन में नद किशोर वसो दिन राती ॥ दुलहिन दुलहा को लिखत प्रम की पाती ॥ इति श्री रुकमिनी मगल सपूर्ण समाप्त ॥ सवत् १९२४ लिखी रामदास वैश्य ओमर फर्रुखाबाद ॥

विपय—कृष्ण रुक्मिणी का विवाह वर्णन ।

सख्या १०८ गगपचीसी, रचयिता—गंग कवि, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १८६० = १८०३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर पीतम सिंह, स्थान—वेहना की नगरा, डाकघर—अलीगज, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम । भूत नाथ भव भीति विदारण भव भुजगाधिप हार ॥ जटा जूट गगाधर राजत धराधर विलसद गार ॥ कलित कलाधर कलहा लाहल गल कलि कलुप विदार ॥ शभू शाभु सदा शिव शकर भजुरे वार वार ॥ १ ॥ काशीनाथ चरण शर णागत जनि मृत दुख विदार ॥ शशि शेखर शिव शिवद शिवाचर समदन दमन मुदार ॥ भैरव भुजग विभूपित भूविद भुवनाधिप भव दार ॥ भवानद भव तारण शकर भजुरे वार वार ॥ २ ॥ गगपचीसी—गगपचीसी मैं कहौं गौरिगनेसै ध्याय । सिव विरचि को

सुमिरि कै रघुनंदन चितु लाइ ।। भूपन वरनन मै करौ सव सुनियौं चितु लाइ ।। धर्म विराजै अग मो सकल पाप कटि जाय ॥ अर्ज करौ महराज सों चरन पकरि सिरनाइ ।। भव सागर मोहि पारकर अपनी नांद चढ़ाय ॥ छंद—पायन पति पाय पोसि कटि करूनी हीरा जडे । जामा दुसाला पीत धोती रंग कुकुम के परे ॥ दोऊ हाथ पहुंची मुद्रिका भुज नग लगे सव जगमगे ।। एक हाथ भामिनि विराजै माल मोतिन की गरे ॥ मोती जजीरे छटा छूटै जुलफै कपोलन के तरे ॥ लाल अविर गुलाल सोभित स्यास सिर चीरा परे ॥ सुर सिद्धि की यह सपदा है असुद सव देखत मरे ।। एक कर ललित को कर गहे एक कर राधे गरे ॥ सेस छवि नहिं जात वरनत काम लज्जित हैं वटे । अव गग साहेव सरनि आये सप्त जन्म के पातक हरे ।। ४ ॥

अन्त—सीखे नही तुम्हरे उर मोहन वोलि कही अपने जियकी ॥ तुम नेकऊ नही उर लावत हो विगरी वनता वृपभान पुरी की ।। वोलाय सुनार गढ़ाय देहौ औ लगाय देहौ वहि तेन ठानी की ॥ पाई हती सो हिराय गई अव दाम कहो सों धरौं दुलरी की ।।१॥ दो०—तव मन मो दाया करी विहसे कृष्ण मुरारि । दुलरी अपने फेट से लीन्हीं श्याम निकारि ॥ राधे जू के कठ में वांधी अपने हाथ । तेहि पाछे मुरली मिले चलौ हमारे साथ ॥ प्रभु पीतावर से छोरिके राधे दोऊ कर लीन्ह । एक सखी सौं मागिके प्रभु को मुरली दीन्ह।। उन दुलरी पाई आपनी उन मुरली पाई आप । कहत सुनत पातक हरै कटै अंग के पाप ॥ इति श्री गगपचीसी संपूर्ण सवत् १८६० आपाढ़ मासे शुक्ल पक्षे वुध वासरे ॥

विपय—प्रथम शकर स्तुति पुनः राधाकृष्ण का दुलरी-मुरली का झगडा वर्णन ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता कवि गग थे । इनका पता इस ग्रन्थ से कुछ नही चलता ॥ लिपिकाल १८६० वि० है ।।

संख्या १०९. नागलीला, रचयिता—गंगाधर, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८×६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०, अपूर्ण, रूप—पुरानी फटी दीमक खाई, पद्य, लिपि—नागरी, तीसरा पृष्ठ नही । रचनाकाल—सं० १८६० = १८०३ ई०, लिपिकाल—१९०६ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० रामभरोस गौड, ग्राम—वीघापुर, डाकघर—टप्पल, जि० अलीगढ़ (उ० प्र०) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ नाग लीला गगाधर कृत लिख्यते ।। दो० ॥ चरातन गौवन को धाये चलत प्रभु काली दह आये । गोप जल पिये और प्याये । पियत जल सब ही मुरझाये । दो० ।। पीछे से आये कृष्ण जी सवही लिये जिवाय । निर्मल आज करु यमुना जल ग्वालन लेउं वचाय ॥ गेद खेलत को प्रभु आये ग्वाल सव मिल करके धाये ।। भेद काहू ने नापाये चरित गगा धर ने गाये ।

अत—निरनय जन पाता । वसत है जमुना मे काली । नाथ के लाये वन माली । महीना फागुन का आया । कृष्ण के मन में अति भाया द्वादसी काली को जानो अठारा सै संवत् मानौ । दो० । ताके उपर ६० धरि गुनि लेउ चतुर सुजान । गंगाधर ने कथि गायो है सवत् का परमान । कृष्ण की कृपा भई भारी । सुनौ सव व्रज के नरनारी ॥ इति श्री नागलीला गंगाधर कृत सपूर्ण सुभम् ।

विपय —श्री कृष्ण की नागलीला का वणन।

विशेप ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के रचयिता गगाधर थे। रचनाकाल १८६० वि० है इसको इस प्रकार लिखा है महीना फागुन का आया कृष्ण के मन में अति भाया। द्वादसी काली को जानौ अठारा सै सवत मानौ ॥ दो० ॥ ताके ऊपरि सठि धरि गुनि लेउ चतुर सुजान। गगाधर ने कथि गायो है सवत का परमान। कृष्ण की कृपा भइ भारी। सुनौ सब ब्रज के नरनारी ॥ लिपिकाल सवत् १९०६ वि० है ॥

सख्या ११० ए वटेश्वर महात्म, रचयिता—गगाप्रसाद माथुर वैश्य (बाह, आगरा), पत्र—७६, आकार—७½ × ६¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १९०३ = १८४१ ई०, लिपिकाल—सवत् १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबू रामबहादुर अग्रवाल रईस, डाकघर—बाह, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ वटेश्वर महातम लिखते ॥ इलोक ॥ नद हस्त मवलेत्य ॥ पगर्ण ना मद मद मरविद लोचन ॥ सचलरूनक किं लीरी संतत तव करोतु मगल ॥ १ ॥ दोहा ॥ षटरस भोजन सस्कृत। सज्जन पाक प्रधान। भासा पन वार विना। भोजन करत न कान ॥ २ ॥ शिव सुत पद प्रनवौं सदा। ऋद्धि सिद्धि नित दइ। कुमति विनासन सुमति धरि। मगल मुदित कोइ ॥ ३ ॥ पार ब्रह्म शिव सरस्वती। गिरवर गुर गनश। इनको ध्यान हृदै धरौ। करत बुद्धि उपदेश ॥ ४ ॥ दडक ॥ वक्र तुड धारी जाको पित त्रिपुरारी तासु भाद ताडिका मारी मातु शैल कुमारी है। एक दत भारी दग निपावक निहारी है गज वदन विचारी औह मूसे सवारी है ॥ भाल चन्द्रधारी मणिनन मुकुट धारी प्रथम पूजा तुम्हारी श्रुति वेदन विचारी है। गगा प्रसाद ध्यान हृदै में निवास करौ अरजी हमारी नाथ मरजी तिहारी है ॥ ५ ॥

अत—त्रिपुरारि मनसा करहिं पूरी नारि कर जो गाव हीं, तेही नितार मिटाइ तनु तजि विष्णु लोक सिधार हीं ॥ गगा प्रसाद प्रसाद पावत आमरे तन जाइकै ॥ उर रासि राधा कृष्ण दग भरि शभु चरित सिहाइ कैं ॥ २५ ॥ इति श्री सूर्य सेन स्थले श्री मथुरा मडलातगते श्री वटेश्वर महात्म गनेश नन्दी गण सवादे कवि गगा प्रसाद विरचिते यथा रुचि पुराने नाम द्वादशमो अध्याय ॥ १२ ॥ इति श्री वटेश्वर महात्म संपूर्ण समाप्त ॥ लिखित लाला भवानी प्रसाद विजौली के कायस्थ ॥ जैसी प्रति देखी तैसी लिखी ॥ अक्षर मात्र की भूल होइ सो सम्हार लीजो ॥ मौजे होली पुरा में लिखी ॥ मिती असाढ सुदी १२ सवत् १९१० वाचै सुनै ताको राम राम सीताराम जी सदा सहाय ॥

विपय—(१) मगला चरण, नन्दी गण और गणेश के सवाद के व्याज से सूर्य सेन के क्षेत्र [वटेश्वर का महात्म] वर्णन—ग्रथकार परिचय —बाहि नगर में बसत है माथुर बस वैश्य। गोत जान मुसारिया गनि ये बिस्वे बीस ॥ १४ ॥ प्रगट कहौ कहँ ते भये दौरी मन की दौरि। श्री मथुरा की मधि मैं। विदित महौली पौरि ॥ १५ ॥ परम सखा श्रीकृष्ण को ऊधव भक्त सु साध। तिनके सुत के जुगल सुत लघु गगा गर साद ॥ १६ ॥ पूजत नित गिरिराज कौं। इष्ट राधिका स्याम। जुगल मत्र हिरदै जपै। श्री वृदावन धाम ॥ १७ ॥

तिन कछु भाषा चरित बनायौ । गुरु प्रसाद सौं गाइ सुनायौ ग्रन्थ निर्माण कालः -प्रथम अंक करि एक कौं । नौपै सुनहु सुजान । ताके ऊपर तीनकौं । सवत् करौ वखान ॥ १९ ॥ मास दसोदर सरद ऋतु । राका पूरन चंद । दरस वटेश्वर कौं करौ । अति जिय वढ़ौ अनद ॥ २० ॥ कमल वदन सुख के सदन । श्री महेन्द्र के राज । भूप रूप कुंजर चढ़े । सेना साज ससाज ॥ २१ ॥ सुनि गन नाथ दयाल है । कवि कुल आयसु दीन । भद्र देस के भूप कुल । वरनौं राज प्रवीन ॥ २३ ॥ भदावर राज के नृपति कुल का वर्णनः—कवि कुल कमल अनेक रंग फूले निज निज रुप । अव कुल विमल दिनेम सम भद्र देस के भूप ॥ २४ ॥ चारिइ सम छत्री प्रगट सुनियत श्रवण प्रसंग । जज्ञ करे धरि ध्यान हरि कुल वसिष्ट के सग ॥ २५ ॥ अनल कुड ते प्रगट में हस वंस चौहान । तिनके कुल के विमल जस अब कबि कहत वषान ॥ २६ ॥ नाम कर्न विधि वस कहे वाढ़ै कृपा अपार । जार्मौ सूक्ष्म ही कहौ अगिन वंश अवतार ॥ २७ ॥ गाहा दोहा चौपई छप्पै टोटक छंद । प्रथम राज महाराज नृप पूरण परमानंद ॥ २८ ॥ चौ० ॥ आसलि वीसलि सलिल सुजाना, रखत रज राव भल माना ॥ उदै राज राजा महाराजा, मदन सिंह सुख साज समाजा ॥ रतन सिह कीरति करि लीनी, जैत सिंह धर नीव सकीनी ॥ चन्द्र सेन कुल करण कन्हाई, मानहु निर्मल सरद जुन्हाई ॥ प्रवल प्रताप रुद्र भूपाला, भूप मुकुट मणि वीर विसाला ॥ विक्रम वल दल अमित अनता, भोज भूमि भरतार गनता ॥ कृष्णसिंह भये कृष्ण समाना, तेज पुज जस जाहर जाना ॥ जे सब भूप पाच दस गोय, सुमिरि सभु कैलाश सिधाये ॥ २९ ॥ दोहा ॥ वदन सिह महराज की, कीरति सुजसि अपार । पूरव सौं पच्छिम करी, श्री जमुना की धार ॥३०॥ छप्पै ॥ सो राजा वर मांगि शक्ति शिव पै मन भायो । भये विदित अवतार सुजस दिसि विदिसिन छायो ॥ सूर समर रण धीर वीर मन मरद अमाने । तिन वांधी विसरांति वटेश्वर जाहिर जानौ ॥ गंगा प्रसाद नृप त्यागि तन भये चतुर्भुज भेस । चढ़ि विमान सुर पुर गये श्री वदनेश नरेश ॥ ३१ ॥ ता पाछे सहा सिहे नृप तेग त्याग रण सूर । प्रजा पालि वैरी दले करौ राज भर पूर ॥ करौ राज भर पूर क्षौर दक्षिण दल भेजे । दीन देख दये छांडि फेरि अपने करि रंजे ॥ कहि गंग प्रसाद नृपति तन त्यागि वहोरी । इष्ट देव गुरु चरण ध्यान धरि जुगलि किसोरी ॥ ३२ ॥ होत उदोत के कादर चले पराइ, जिमि प्रकाश रवि तेज ते तिमिर तेज नस जाइ ॥ × × ॥ कुल भूपण रवि तेज तन वदन मनोज समान । कन्यो राज महराज नृप भुअ पति सिह कल्यान ॥ × × ॥ तिन के सुत सिह गुपाल भये ॥ × × ॥ ता पाछे मह राज धिराजा , श्री अनुरुद्ध स्हि भये राजा ॥ × × ॥ हिम्मत हिम्मत सिह की अव कवि कहति सराहि ॥ × × ॥ श्री महराज धिराज नृप सुनै श्रवन वख तेरा ॥ दोहा ॥ जे राजा श्रवणानि सुनै, कही कथा सबहित ॥ अव प्रताप पूरन कला भूप भूमि सुख देत ॥ × × ॥ श्री महेन्द्र महा राज श्री प्रताप सिंह देव जी की शोभा अति प्यारी है ॥ ४६ ॥ × × राज काज महराज के शिवनंदन मुखत्यार ॥ (सिरने ससिहं) महेन्द्र के पुत्र उत्पत्ति की कथा । सिरनेस की वीरता तथा वैभव का वर्णन । महेन्द्र महा राज का वर्णन । घाटौ की रचना का वर्णन (पृ० १ से १२) तक प्रथम अध्याय (२) पृ० १२—७६ तक वटेश्वर की अन्य रचनाओ तथा महात्मादि वर्णन—

सख्या ११० श्री रामाश्वमेध, रचयिता—गगा प्रसाद माथुर वैश्य (वाह, आगरा), पत्र—२९, आकार—७×७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६९६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पडित लक्ष्मी नारायण वैद्य, डाकघर—बाह, जिला—आगरा।

आदि—श्री मते रामानुजाय नम ॥ श्री यै नम ॥ दीघ छद राग काफी ॥ हे गुर चरन दयाल दया तुम कीनी जैसी। तैसी ही अब कृपा चरन करियो तुम अेसी ॥ १ ॥ मो विचार ससार गुरु सेस अचारी के पद विमल पथ मन पान रस कीन्ह महा मद ॥२॥ श्री निवास आचारीय सुनु तिन के प्रभाव बल रचत जासुकी विरह दुष्प सुनि कौन धरै कल ॥ ३ ॥ कीजौ कठोर मम ह्दय कहत फाटे न महा जड ॥ फिरि मेटो अग्यान ग्यान की सीम करो गड ॥ ४ ॥ ह्वै गये नौन्ना श्री रामानुज अजिर मन घाट बचौरा नग्न तहाँ जहा कृपा कीन्ह गुर बासु दव मम पूज्य कहन को सौंप दइ उर ॥५॥ याहि मध्य स्व स्थान जानि माथुर पवित्र कुल "गंगा प्रसाद" अस नाम लजत लाजत न और तुल ॥ ६ ॥ वात्स्यायन मुनि प्रश्न सेस जी कीन पराकृत व्यास देव इहा कहीं नारद सो देव सस्कृत ॥ ७ ॥ अश्वमेध किया जाय पद्म जह जानि पुराणह ॥ सो अब भाषा रचतु हौं न अब ऐसी जानह ॥

अत—॥ सीता उवाच तोटक जे जमती राग ॥ वे तो रघुनायक ईश्वर हैं जो करै न करै विनु अकुस हैं। मो साधि कहा पठयायो तुम्ह अप कीरति मैं हो न कीरति में ॥ ७९ ॥ कुल नारिन के जो धम नहीं पति के मन दोस धरैं जु कहीं ॥ यह मूरति ध्यान वसी जबसे विसरे न कहू जिय मैं तबतै ॥ ८० ॥ दोउ पुत्र भए उनि अस सें कुस माह सुजानिये अकुरतें। बीर पराक्रम जानि इन्हैं पितु पास ले जाउरे आपु इन्हैं ॥ ८१ ॥ बहु लाउ सो साध न जानीयो जे बल्वीर हेसि (शेष लुप्त)

विषय—मगल चरण, रजक द्वारा कलक, साता त्याग की आज्ञा, सीता बनवास, वशिष्ट मिलन, लवकुश जन्म, अश्वमेध अश्व का पकड़ा जाना, युद्ध वर्णन एवम् सीता के बुलाने की आज्ञा।

सख्या ११० सी रतत मुक्तावली, रचयिता—गंगाप्रसाद माथुर (बाह, आगरा), पत्र—५३, आकार—१०×६३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९०८, रूप—प्राचीन, गद्य और पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १९०० = १८४३ ई०, लिपिकाल—सवत् १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—पण्डित लक्ष्मीनारायण नरोत्तम दास, स्थान—बाह, जिला—आगरा।

आदि—श्री रघुवीर जी सहाय। दोहा। रघुवर चरण सरोज मणि मधुकर है मकरद। मुदित मनोरथ सुफल कर भजत नरश्वर चन्द्र। विश्वनाथ प्रभु सहिता रतत भेद बहु जानि दुखित प्रजा लखि सुखित हित रतत मुक्तावलि ठानि। एकादश विश्राम करि फोरा सग्रह जाति-भेद जानि सौं सबनि के अतर २ भाति। ३०। सुलभ वचनिका रीत करि ग्रन्थन को मत आनि अगम पथ वैद्यक हतो सुगम निगम जह जानि। अथ रतत मुक्तावलि की अनुक्रमणिका। वाह्या भ्यतर विद्रधि व्रणशोथ शरीरा गतुव्रण भग्न व्रण भगन्दर उपदश

फिरंग-विस्फोटक-थूक दोष-विसर्परो - स्नायुगुण - विसूरिका - शीतला - इति सत मुक्तावली अनुक्रमणिका ।

अंत—कातिक वीह तीररसि दिना वार शनीइचर जानि । रीवां नगर हजार अरु नौ सै सम्वत् मानि । खत मुक्तावलि गृन्थ की सुदिन समाप्त बखानि । रघुवर चित रघुवर हिये विश्वनाथ हित जानि । रहत सदा मंगल जहां ग्रथ विनोद प्रकाश । रचना भूषण भाप्य की होत सदा प्रभु पास । श्री शुभ श्री शुभ जानिये श्री शुभ २ धाम । श्री सीता रघुवर जहां करत तहां विश्राम । श्री शुभ मस्तु चिरायुरस्तु । श्री ।

खता ग्रंथ अदभुद् वनो खतहनिकों उपकार । विना जानि की जो कृती ग्रंथ पुजीहत चार ।

विषय— सत्रह प्रकार के फोडो का निदान और चिकित्सा वर्णन ।

संख्या १११. विक्रम विलास, रचयिता—गंगेश मिश्र, पत्र—१०, आकार—९ x ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुप्टुप्)—३२५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १८६१ = १८०४ ई०, प्राप्तिस्थान—कुजीलाल भट्ट, ग्राम—औंडेला, डाकघर—किरावली, आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । श्री गुरुभ्यो नमः । 'गलित गड मद मिलित गात कुंडलित सुंडि मुपनलित वाल विधु कलित भाल दल मिलित दास दुप । चलित चारु लोचन विसाल सुर नर मुनि । वदित करि कपोल मधु गंध नोल मधुकर झुल नंदित । गुनईस गनेस गजेस मुप गौ रस तात दाता सुमति । करियै कटाक्ष करुना कलित करि वरनो भाषा जगति । १ । सोरठा । हरन अमंगल जाल, मगल करन मनंग मुप । धरन वाल विधु भाल, विघन हरन विघनहिं हरहु । २ ।

अंत—चौ० । वहोत भांति वह वातें कहैं जो तु वोलहुगे तो जैहे हैं । निसंक चितु एकत करिकैं सबको लैयौ कांधे धरिकैं । वहु भांति जो छल दिखरावै डरियौ मति यह प्रेतु सुभावै । नदी तीर में वैठो जाइ सबको लैयौ तहां उठाई । करघुनामु राजा चलो वीर थान समुझाइ । मानो हरि क्रीडा करन, जात मसान सुभाइ । इति श्री गगेश मिश्र विरचितां विक्रम विलासे पीका ध प्रमद्ध सु । श्री गुरूं प्रणम्य । मिति अस्वनि शुदि ११ चंद्रवार । संवत् १८६१ लिष्यत पुस्तकं मिद । पुस्तक विक्रम पचीसी समाप्ता लिष्यतं पिरान सुप । पठत वाचत रहस लिपो रहत है सौ वरस । जो लिपि जानै कोइ । लेपन हारो वावरो सो लिपि लिपि मांरा होइ । मिदां ।

विषय—संस्कृत ग्रंथ वैताल पच्चीसी का पद्यानुवाद ।

सख्या १११ बी. विक्रम विलास, रचयिता— गगेश कवि, पत्र—१२१, आकार—८¾ x ५½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७२३, रूप—पाचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १८२० = १७६३ ई०, प्राप्तिस्थान—पण्डित श्री लक्ष्मी नारायण नरोत्तमदास वैद्य, जिला—आगरा,

आदि—१११ ए के समान ।

अन्त—जब लग सूरजचंद मेरुमंदिर गिरि सागर। जब लग नीर समीर नीर निधि छिति पर सोहै। जबलग उडगन भीर अमल अबर में रोहै। जबलग प्रवाह गंगा जमुन, जबलग वेदन को कहाँ। विक्रम विलास गणेशकृत तब लग या जग थिर रहो। ४२।

इति श्री मिश्र गणेश विरचिते विक्रम विलासे पंच विंशति कथानक। २५। सं १८२० वैसाष सु २ बुद्ध दिने। दोहा। पुस्तक यह पंडितकृती विक्रम नाट विलास। सो संपूरण करि दइ, वैष्णव बालक दास। रवि नाजू की कृपातें पायो मथुरा वास। विक्रम विलास पूरन कियो, वैष्णव बालकदास।

विषय—उज्जैन नगर के राजा विक्रम से संबंधित कहानियों का वर्णन।

संख्या १८२ ए शृंगार मझावली, रचयिता—श्री गौरगनदास (वृन्दावन), कागज—देशी, पत्र—३०, आकार—१० × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबा वंशीदास जी, स्थान—गोविन्द कुंज, डाकघर—वृंदावन, जिला—मथुरा।

आदि—श्री श्री गौरांग नित्यानंदौ जयता। श्री निकुंज विहारण्यै नम। श्री सद् माध्व मत मार्तंड कलियुग पावनावतार श्री श्री कृष्ण चैतन्य महाप्रभु चरनार विंदम करंद आस्वादन परायन श्री श्री रूप सनातन चरन कमल भजन परायन श्री गौरगन दास कृत सिंगार मझावली लिख्यते पूर्व भाग प्रारंभ ॥ छप्पै ॥ कबहूँ तौ मोहन हसि हेरो गय गुमान रहेगी कबलौं। अतर पट न खुले संग विसरै। पथ गुमान रहमोगों जब लौं ॥ पादित ताप विनाशन किरपा सब अजान बढ़गो तबलौं। जन कर गहौ हिये में जागी सर्व सुज्ञान लगी हेगो अब लौं। इति वदना सपूर्ण अथ माझ लिख्यते। ऐसा ही रूप सजा दिलवर हम गाहक हुस्न परस्ती के। देखत ही मुझे निकाव किया हो इश्क परस्ता मस्ती के। हम भी कदमों के चेरे हैं तुम हो महरम इस बस्ती के। इश्क मेघ का असर कठिन तुम हा सवा इस किस्ती के। इति वदना सपूर्ण।

अत—अथ श्री वृंदावन की माझ। प्रेम सिंधु माथे काढि सुधा छबि उज्जल सारस रूप रचा। तेज पुंज गुन शक्ति भरा सा सुक्ति भाग का भूप रचा। उपमा रमापति जो सब नायक तिनके परे अनूप रचा। यह रसिक राज का चमन बगीचा क्या मीन केतु का रूप रचा। इति श्री वृंदावन की माझ सपूर्ण अथ ध्यान की माझ निसि दिन मोहन में वास करैं यह छबी सुधा आनद भरी। तब रूप सील गुन उदय होय सार प्रेम नीर की पीर भरी। यह छबि शृंगार घटा दामिनी सी विहसि मधुर मृदु भाव भरी। जनु स्याह चश्म अरविंद खिले फिर हाथ गुलदस्ता फूल छरी। इति श्री शृंगार मझावली उत्तर भाग सपूरण श्री राधाकृष्णार्पण नमस्तु।

विषय—श्री गौरांग महाप्रभु श्री चैतन्य भगवान की वदना। वृंदावन ध्यान और राधाजी की मांझ।

संख्या १८२ बी गौराङ्गभूषण विलास, रचयिता—गौरगनदास जी (वृन्दावन), कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—१० × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण

(अनुष्टुप्)—९३, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबा वसीदास जी, स्थान—गोविन्दकुण्ड, डाकघर—वृन्दावन, जिला—मथुरा ।

आदि—श्री श्री गोरांगभूषण विलास मञ्झावली लिख्यते श्री श्री गौर गन दास जी कृत । अथ मांझ छप्पै । रस भूपित गौरांग प्रेम वपु उज्वल नीके । रस भोजन रस सैन वैंन रसविन सब फीके । रस विलसन कुंज कोलि रस पगे अमी के । ठाकुर परम रसाल चसक रस बस जु भलीके । रस उमगै निस याम सहचर गन रसहीके । विन लखे गौर विलास रचै का भूषण जी के । इति छप्पै अथ मांझ । श्री गौर रूपको लषा नही तो प्रेम स्वाद विपरीत लषै । मनसिज विलास सरस पगा नही तौ कहा मधुर रस रीत लषै । भावभेद गति लषी नही पावक कपूर सम प्रीति लषै । गुरु मार्ग को लषा नही तौ ईस इष्ट विपरीत लषै । जोगी सश्वेत छीरोद पती गर्भोद परे कछु और कहा । ता परे मधुर छवि रूप लषा पुनि लोक अनेकन और कहा । कारन पति उज्जल रूप लपासा पुज्य ब्रह्म परे और कहा ।

अन्त—दोहा—द्वैताद्वैत विचारि कै बहुरि विशिष्टा द्वैत । बृह्मा द्वैतै शोधि के सौधहि शुद्धाद्वैत । भेदाभेद जाकै कहै सोई अचिता भेद गौररूपनिर्देश करि यहि प्रतिपाद्यो वेद योग हीन पूरन नहीं करै तौ लक्षन होय । चिता चित लखाइयै पूरन तम है सोय ३ ध्येय ध्यान युत धारना मध्य लखै जो ईश । चिता चित विलासि सो पूरन तम जगदीश ।४। श्री गुरु कृपा निर्देस करि भूपन विशद विलास । दीन गौर गन निरखि छवि प्रमुदित मोद उलास ॥ ५ ॥ पुनरावृत्ती दोप जो काव्य मध्य नहि सोय ॥ ध्यान भाव रस रूप यहां नितनूतनता जोय । ६ । इति श्री गौरांक भूपण विलास काव्य श्री गौरगनदास कृत संपूर्ण ।

विषय—सिद्धांत और श्री गौरांग महाप्रभु यश वर्णन ।

संख्या ११३ भजनावली, रचयिता—गयाप्रसाद कायस्थ (दौदो, तहसील-गंजअली, जि० एटा), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९४६ = १८८९ ई०, प्राप्तिस्थान—पण्डित रामशकर गौड, स्थान—रती का नगला, डाकघर—हाथरस, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भजनावली लिख्यते ॥ भजना निर्गुण—श्री रघुनाथ से प्रीति करोरे ॥ टेक ॥ पार ब्रह्म पुरुषोत्तम से पट घट के खोल मिलोरे ॥ १ ॥ जीवन मरन हानि लाभ में नित क्यो सोच करोरे ॥ झूठे झगडे या जगके में बिगडे क्यो न बनो रे ॥ २ ॥ एक दूसरे की निन्दा में नाहक देह तजो रे ॥ यामे बुद्धि नष्ट हुइ जइहै प्रभु को क्यो न भजो रे ॥ ३ ॥ हरिजन में हरि व्यापक जानौ हिय में दरश लखोरे ॥ गया प्रसाद भक्ति चरनन में प्रभु के ध्यान धरोरे ॥

अंत—धन दौलत सबही रहि जइहै होतहि जात सकारो ॥ गया प्रसाद कोइ नहिं साथी जइहे हंस बिचारो ॥ जबहिं दै चलि है नगारो ॥ ४ ॥ इति श्री भजनावली गया प्रसाद कृत समाप्त लिखतं रामलाल वैश्य जबलपुर निवासी संवत् १९४६ वि० ॥

विषय—निर्गुण भक्ति विषयक ज्ञानोपदेश।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता गया प्रसाद जाति के कायस्थ थे उन्होंने अपने लिये इस प्रकार लिखा है—कायस्थ कुल भूतेह दाऊद ग्राम वासिना॥ स्थिति लघवते दानी जब्बलपुर पत्तने॥ अर्थात् ये दाऊद ग्राम जिला एटा तहसील अलीगंज निवासी थे और जिस समय इसकी रचना की जब्बलपुर सी० पी० में रहते थे॥ लिपिकाल संवत् १९४६ वि० है॥

संख्या ११४ सुरजपुरान, रचयिता—गेंदीराय, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पण्डित हरिमोहन मिश्र, ग्राम—सिंगरवली डाकघर—ततपुर, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः। अथ सूरज कथा लिष्यते। दोहा—बन्दौं आदित निरंजन सीस नाय करि जोरि। सकल कामना सिद्धि करि, दीन नाथ प्रभु मोर। गन पति फन पति देव पति, रवि ससि पवन कुमार। गुरू गोविन्द उदार दार, विनती करौं सुधारि। शुभगुन देहु मोहि प्रभु, करौं कथाकर गान। ता कारन विचारि कै, भासों सूरज पुरान। एक समय गिरजा सहित, शम्भु रहे कैलास, उपजा अति अनुराग दृढ़, सूर्ज कथा परगास॥

अन्त—साम को तन्दुल सुन लेहु। सुदि जुगल कुँवार मन देहु। पवन दुवरन ही भाषा। कातिक मास यहै मत राषा। तुलसीदल पायेऊँ जो दो पाती। अगहन मास पाइ की छाती। दोहा—मास जुगल दस नेम जो रहे उम मन लाय, सफल होय मन कामना, कह देव गेंदीराय। कथा पुनीत प्रसग तो सब मैं गाई। जो विधान पूजा करै और सुनै मन लाई इति श्री सूर्ज महातम महापुराणे सम सत नवमोध्याय समाप्त।

विषय—सूर्य की कथा।

संख्या ११५ ए प्रीति पावस, रचयिता—आनंदघन, पत्र—८, आकार ८ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महाराज महेन्द्र मानसिंह, महाराजा भदावर, ग्राम—नौगवा, जिला—आगरा।

आदि—अथ प्रीति पावस लिष्यते॥ बन विहरत मोहन घनस्याम। गिरि गोधन समीप सुपधाम॥ १॥ ऋतु वरषा हरषी ब्रजवसि कै। नित नित बसतु स्याम घन लसिकैं॥ २॥ उमह असाढ़ बढ़ि थै रहे। चोप चटक आगम ही चहे॥ ३॥ भयो करसि कौ धनि सी हियें। देषि जिय चट पटी लियें॥ ४॥ सावन रूप महा रस भावन। ब्रज लोचन हरियारौ सावन॥ ५॥ मन भावनहिं वरस झूमि रिझावन। मन मोहन है ब्रज सुप सावन॥ ६॥ नित ही हित झुलान झुकि वरसै। नित वृज मोहन सावन सरसैं। ७॥ सो विलसतु वरिषा सुप वनमें। उनये नये नेह के पन में॥ ८॥ घिरि घटानि जब झुकत अँध्यारी। घन भींजत डोलत बनवारी। ९॥ सुमिलि सखा-समाज संग सो हैं। मन लेपनि अभिलाषनि दो है॥ १०॥

अंत—पावस वन-वन घूमत डोलै । जोवन छक्यो छैल गति वोलै ॥ ९८ ॥ व्रज रस भिजै रिझै इन राख्यो । व्रज रस सार सोधि इन चाख्यो ॥ ९९ ॥ चातक अतुल प्रीति पावस कौ । जस रसि मैं चमकौ व्रज रस कौ ॥ १०० ॥ भीजो रहत प्रीति पावस रस । पावस सुष विलसत भीजनि वस ॥ १०१ ॥ यौंही भीजत भिजवत रहौं । व्रज रस सुष सवाद नित लहौं ॥ १०२ ॥ गोप दुलारे जसुदा जीवन । अति रस प्यावन अति रस पीवन ॥ १०३ ॥ पावस प्रीति पपीहा दरसै । तोपै पोपै पीव तरसै ॥ १०४ ॥ घन चातक कौ मरम न परसै । व्रज प्यासनि आनंद घन वरसै ॥ १०५ ॥ इति श्री प्रीति पावस प्रवंध सपूर्ण ॥ श्री जान राय ॥

विषय—पावस की शोभा, कृष्ण की क्रीडा, वनकी छटा तथा गान-विधानादि का वर्णन ।

संख्या ११५ बी. सुजानहित प्रबन्ध, रचयिता—आनन्दघन, पत्र—१५७, आकार—८ × ४½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)–२०४१, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महाराज महेन्द्र मानसिंह, महाराजा भदावर, स्थान—नौगवां, जिला—आगरा ।

आदि—अथ सुजान हित प्रवध प्रारंभ ॥ रूपनिधान सुजान सखी जवतें, इन नैननि नेकु निहारे डीठि थकी अनुराग छकी, मति लाज के साज समाज विसारे ॥ एक अचभो भयो घन आनंद, है नित ही पल पाट उघारे । टारे टरैं नहिं तारे कहू, सुलगे मन मोहन मोह के तारे ॥ १ ॥ आँपिही मेरी पै चेरी भई लपि, फेरी फिरै न सुजानकी घेरी । रूप छकी तितही विथकी अर, ऐसी अनेरी पत्यात न नेरी ॥ प्रान ले साथ परी पर हाथ, विकानि की वानि पै कांनि वपेरी । पाइनि पारि लई घन आनंद, चाइनि वावरी प्रीति की वेरी ॥२॥ रूप निधान सुजान लखे विन, आंपिन डीठिहि पीठि दई है । ऊपिल ज्यौं परकै पुतरीनि मैं, सूल की मूल सलाक भई है ॥

अत—नाद कौ सवाद जानैं वापुरो वधिक कहा, रूप के विधान कौ वपान कहा सूर सौ ॥ सरस परस के विलास जड़ जानैं कहा । नीरस निगोड़ो दिन भरै भकि भकि वूर सौ चाह की चटक तै भयो नहिये पोप जाकै । प्रेम पीर कथा कहै कहा भक भूरि सौं ॥ चाहै प्रान चातक सुजांन घन आनद कौ । दैया कहू काहू कौं परै न काम कूर सौं ॥४९६॥ नेह सो भोइ संजोइ धरी हिय दीप दसा जुभरी अति आरति । रूप उज्यारे अजू व्रज मोहन सोहन आवनि और निहारति ॥ रावरी आरति वावरी लौं घन आनद भूलि वियोग निचारति । भावना थारु हुलास कै हाथनि यो हित मूरति हेरि उतारति ॥ ४९७ इति सुजानहित प्रवंध ॥

विषय—प्रेम, राधिका का सौदर्य, दूती का उपदेश, वंशी, प्रीति की अनीति, प्रेम दुहाई, विरह व्यथा,अभिलाषा, वसत, विनय, नैन सौदर्य्य, रति, पावस, मान, अगो की शोभा, उन्माद तथा सयोगादि श्रृंगार परिपोषक अनेक छन्दो का सग्रह ।

संख्या ११५ सी. वियोगवेली, रचयिता—घनानन्द, पत्र—६, आकार—८ × ४½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ ,—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८, रूप—प्राचीन, लिपि—

नागरी, प्राप्तिस्थान—महाराज महेन्द्र मानसिंह जी, महाराजा भदावर, जिला—आगरा। स्थान—नागवा, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥बगाली बिलावल ॥ अथ वियोगवेली लिख्यते ॥ सलोने स्याम प्यारे क्यों न आवो, दरस प्यासी मरैं तिनकों जिवावो ॥ कहाँ हो जू कहाँ हो जू कहाँ हो, लगे ये प्रान तुमसो हैं जहाँ हौ ॥ २ ॥ रहौ किन प्रान प्यारे नैन आगे। तिहारे कारने दिन रैन जागे ॥ ३ ॥ सजन हित मानिकै ऐसी न कीजे। भई हैं बावरी सुधि आय लीजे ॥ ४ ॥ कहौ तब प्यार सों सुख दन बातें। करौ अब दूरि तै दुख दैन घातें ॥ ५ ॥ दुरे हौ जू दुरे हौ जू दुरे हौ। अकेली कै हमैं ऐसे दुर हौ ॥ ६ ॥ सुहाइ है तुम्है यह बात कैसें। सुखी हौ सांवरे हम दीन ऐसे ॥७॥ दिखाई दीजिये हा हा अमोही। सनेही ह्व रखाइ क्यों बसोही ॥८॥ तुम्हैं बिन सावरे ये नैन सूने। हिये में ऐ दिये विरहा अदूने ॥९॥ उजारा जो हमैं काकां बसही। हमैं यौं दभाय कै औरै हँसेहो ॥ १० ॥

अंत—हमैं तुमसो लगी सब भांति नीरे। करौ किरपा हरौ ये साल ही वे ॥ ७० ॥ कहा वारैं निछावरि ह्वै रही है। कहै कोलौं यही है जु कही है ॥ ७१ ॥ रसिक सिर मौर हौ रस राखि लीजै। तनक मन नाम के गुन खीच दीजै ॥ ७२ ॥ धरे अब नाव कौं अब नाव ऐसे। दुहाई है सुहाई परे कैसे ॥ ७३ ॥ सदा तैं रावरी बिना मोल चेरी। घरनितैं बादि बन बसीनि घेरी ॥ ७४ ॥ किये कि लाग है ब्रज राज प्यारे। बिराजौ शीस पै जगर्म उज्यारे ॥ ७५ ॥ सदा सुख है हमैं तुम साथ आछें। लगी दाले छवाले घाट पाछें ॥ ७६ ॥ तुम्हें देख सदा मेटैं भले ही। जगैं सोयैं और बैठें चलैं ही ॥७७॥ न न्यारी है न न्यारी है व न्यारी। भई है प्राण प्यारे प्राण प्यारी ॥७८॥ हमारी औ तिहारी येक बात। रगीले रग रातै द्यौस रातें ॥ ७९ ॥ सदा आनद के घन स्याम सगी। जियौ ज्यावौ सुधा पावौ अभगी ॥ ८० ॥ इति वियोग वेली सम्पूर्ण ॥

विषय—कृष्ण के वियोग में ब्रज बालाओं के दुःख का वर्णन

संख्या ११५ डी कवित्त, रचयिता—घन आनन्द, कागज—बाँसी, पत्र—१६, आकार—४¾ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री श्रवणलाल हकीम, ग्राम—बसई, डाकघर—तांतपुर, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—सवैया। देखिधौं आरसी लै बलि नेकु लसी है गुराई में कैसी ललाइ। मानो उदोत दिवाकर की दुति दरशन चन्दहिं भेंद नशाइ। फूलत कज कमोद लखै घन आनन्द रूप अनूप निकाइ। तौ मुखलाल गुलालहि लायकै कैसो तिनके हिय होरी लगाइ। रूप धरैं धुनिलौं घन आनद सूझति की दीठि सुतानौ। लोपत लेत लगायके सग आग अचम्भे की मूरति मानौ। हौ किधौं नाहौ लगी अलगीसी लखौ न परैं कवि क्यों कुप्रमानौ। तो कटि भेद है किंकनी जानत तेरी सौं राधे सुजान हौं जानौ।

अंत—सुनि आरति पपीहा निकूकनि करयो करै। अथिर उदेग गति दपि के आनन्द घन पान विकरयौ सौ बन वीचि बचरयौ करै। बूदन परै मेरे जान प्यारी तेरे विरही को

हेरि मेघ आंसु निकर्यौ करैं। तपति उसास औध रूंधी पै कहां लौं दई बात बूझे सैन निहीउतर विचारियै। उकि चल्यो रंग कैसे रापीये कुलका मुख आन लेखें कहांलो न घूंघट उप्परिये। जरि वरि छार हैं न जाय हाय अैसीन चैसैंचित चढ़ीमूरति सुजान क्यों उतारिये। कठिन कुदाव आय घिरी हौं आनन्द घन रावरी बसायतौं बसाइन उजारिये।

विषय—श्रृंगार रस तथा भक्तिरस के स्फुट सवैया और कवित्त हैं।

संख्या ११६. हरिभजन, रचयिता—दास गिरन्द (रामपुर नवाब की), कागज—विदेशी, पत्र—३२, आकार—१० X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९००, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लाला जैनारायण (नगला राजा), डाकघर—नौकेडा, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ हरिभजन दास गिरंद कृत लिख्यते ॥ भजन ॥ १ ॥ सिंध काफी ॥ राखियो मोय चरनन में भगवान ॥ भजन भाव कछु जानत नाहीं मै मूरख अज्ञान। आस लगी रैन दिन प्रभु चरनन ही मों ध्यान ॥ राखियो० ॥ कथा भागवत ना सुनी पग तीरथ ना दान। लाज तुम्हरे हाथ स्वामी हौं पापन की खान ॥ २ ॥ राखिये मोय० ॥ तीन लोक में सुजस प्रगट प्रभु गावत वेद पुरान ॥ दास गिरद चूकत ही औसर जमघट घेरैं आन ॥ ३ ॥ राखियो० ॥

अंत—दुर्गादास जी कहे पहिले तकदीर मुकद्दम है भाई ॥ फिरते ही तकदीर करै तदवीर भी उसकी हमराई ॥ सत्य वचन कहे जुगुल देह से पहिले किसमत बनाई ॥ राम सरूप कहे तदवीरों की क्यौं करते हो बड़ाई ॥ गिरंद सिह यों कहैं नही क़िसमत का कोई साथी है। तदवीरें समझो वजीर तकदीरहि शाह कहाती है ॥ इति हरि भजन संपूर्ण समाप्तः ॥ राम राम कहो राम राम ॥

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

टिप्पणी—इस ग्रंथ के रचयिता गिरिंद सिंह रामपुर राज्य जिला, मुरादाबाद के निवासी थे।

संख्या ११७ श्याम श्यामा चरित्र, रचयिता—गिरिधारी, पत्र—११०, आकार—१० X ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनष्टुप्)—१७५०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९०४, लिपिकाल—वि० १९०४ (१८४७ ई०), प्राप्तिस्थान—प० वैजनाथ जी ब्रह्मभट्ट, स्थान—असौसी, डाकघर—विजनौर, जिला—लखनऊ (अवध)।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ कवित्त ॥ एकई रदन गज वदन विराज मान। मदन कदन सुत सदन सुकामा को। कहै गिरिधारी गिरिराज नदिनी को नद। आनद को कंद जगवदवर वामा को ॥ शुण्डा दण्ड कुण्डलीको मोहै मनु। भाल चन्द्र मण्डली विलास गुन ग्रामा को। ऐसे गन नायक के वुद्धि वर दायक के। पॉव वंदि कहत चरित श्याम श्यामा को। १ ॥ इति मंगलाचरण ॥ शुभ संम्वत् १९०४ श्री गणेशाय नमः ॥ यमुना निकट एक मथुरा नगर वसै। तहा महाराज कस राज वर जोरे मै। कहै गिरिधारी ताके

अघ को न वारापार । असुर अपार वहु घोट चहुँ वारे में ॥ पाप की कलापन ते पृथी गए आनी नाहिं । एसी गए आइ गिरिगजरथ घारे में । देवकीके कारन अदेव की अदल देषि । दवकी के दया भये दवकी के कोर में ॥

अत—भेजी हम चीठी ना वसीठी मन मोहन को । आपु ही ते कीन्हीं कृपा जानि निजु दासिनी ॥ कहै गिरिधारी भाग प्रगटी हमारी ताको । कहा करैं नारी केउ तेह काने वासिनी ॥ अबै तेन जाय ऐ मनाय हरि आपने को । मनै करती ना हम होती ना उदासिनी । काहा करती है देह दाहक वचन उधो । नाहक हमारें वैर परी ब्रज वासिनी ॥ ३३२ ॥ अग की मलीनी अकुलीनी हम आपु हा हैं । ऊधो आपुही को ये कुलगना कुलीनी हैं । काहे गिरिधारी वैर परी ब्रज नारी सव । जवते विहारी मोपै कृपा कोर कीनी है । वारि वारि मोहि चेरी चेरी कै चितावती हैं । मेरई चवावन सों चवावन प्रवीनी हैं । चेरी हैं तो कान्ह की कमेरी हैं तो कान्ह की न, काहू गोपिकान की चवाकी मोल लीन्ही हैं ॥ ३३३ ॥

विषय—१—पृ० १ से ४२ तक—मगलाचरण । कृष्ण जल । पूतना वध, शिवदर्शन, बालस्वरूप, यशुदा की कामना, बाल विनोद, मिट्टी खाना, गोचारण, दधि लीला, गोरस ढरकाना, गोपियों का उपालभ । उराल वधन, दानलीला, नागलीला, गोवर्धन धारण, ब्रह्ममोह, गौ चरावन वर्णन, मुरली वर्णन । २—पृ०—४२–८४ तक—प्रेम दृढ करना, चीर हरण, रासलीला, पनघट लीला, राधिका दृष्टि, सखी का उपालभ राधा मान, राक्षस वध, कृष्ण मथुरा गमन, मथुरा प्रवेश । ३—पृ० ८५—११० तक—गोपी विरह वर्णन, उद्धव ब्रज गमन, गोपिका उद्धव सवाद, गोपियों का उपालम्भ, उद्धव का नद यशोदा को कृष्ण का संदेश । वात्सल्य रस प्रदर्शन, उद्धव का मथुरा को लौटकर गोपियों का सवाद देना । कृष्ण का प्रेम प्रदर्शन । कृष्ण का ब्रज के प्रेम में व्याकुल होना, कुब्जा की उक्ति । गोपियों के रोष से दुःखी होना ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ में कवि ने कृष्ण चरित्र का सक्षिप्त वर्णन बड़ी उत्तमता से किया है । उसमें प्राय मन हरण छद ही उपयोग में आये हैं जिनका पद लालित्य सराहनीय है । अर्थ गाम्भीर्य को भी कवि ने हाथ से जाने नहीं दिया है और काव्य के अग व्यग्य, अलकारादि का भी सदुपयोग किया है । ग्रंथ का नाम उसके आदि में नहीं दिया गया है । एक छद में प्रस्तावना के प्रसग में "श्याम श्यामा चरित्र" लिखा है, अत वही ग्रथ का नाम मान लिया गया है । ग्रथ के अतिम छद की गम सख्या के पश्चात् दो छद हनुमान जी के विषय में और रामकृष्ण के विषय में लिखे गए हैं किंतु, उनका ग्रथ से कोई सबध नहीं है ।

सख्या ११८ सिद्धान्तसार, रचयिता—गिरिधारी लाल (आगरा), पत्र—५३, आकार—७ × ४½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—७९५, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १७६६ = १७०९ ई०, प्राप्तिस्थान—पण्डित छोटेलाल शर्मा, स्थान—बघराघाट, जिला—आगरा ।

आदि—प्रारम्भ...नाम गुरु मध्य में ॥ ८ ॥ रक्षग गुरु सुपर्यंत ॥ ८ ॥ ॥ ६० ॥ विप्र नाम लघु चतुर जिहि ॥ पच रूपउ गनेहु सुनि पगपति टमि उचरे वचन सर्व जानेहु ॥ ६१ ॥ गन नाम कथन ॥ उरगण लहु गुरू जानियो सरवर गुरु लघु जोइ ॥ सोई नगन पगेस सुनि ॥ तीन गंध जब होइ ॥ ६२ ॥ रग गन नाम कथनं ॥ एक नाम वीर सुन्यो दूजो विलहु जानि दीरघ नाम अनेक हैं ते सब कहौं वपानि ॥६३॥ अथ दीर्घ नाम कथनं ॥ ताटक हार सुकंकन नहिं नेवर केवर जानि, वृज चंद चामर उरग अनुप कहौं प्रमान ॥ ६४ दीर्घ दीह अरु कुचिका भ्रू किंसुक अहि जान। ये गुरु नाम बखानिये राग राजा मन्नान ॥ ६५ ॥

अंत—भयो ग्रंथ पूरण सकल, छद तीन में आठ। सोधो सुबुध सुधारि के, जहां असुध कहु पाठ ॥ ५० ॥ यह विनती मन आनियो सुकवि सुजान सुभाव। जो किछु गिरिधर करी, छमि यहु प्रेम प्रभाव ॥ ५१ ॥ पट ग्रथनि सो मत सुन्यो, ह्यहि उपज्यौ चाई। नगर आगरे में प्रगट करे, चारि अध्याइ ॥ ५२ ॥ वंस चगता चारवे आलमगीर प्रचंड। राज्य मध्य गिरिधर कह्यौ पिंगल सार अखंड ॥ ५३ ॥ जो इहि पिंगल सार को पढै गुनै चित लाइ। छद ज्ञान आवे सकल, गिरधर लाल बनाइ ॥ ५४ ॥ इति श्री गिरिधारी लाल विरचिते वर्न वृत्त छदादि वर्नन नाम चतुर्थो ध्याय ॥ ४ जैसो देष्यौं ग्रथ में तैसो लिष्यौ बनाइ ॥ समझौ ताहि विचारि कछु लीजो सुकवि सुधाइ ॥ संवत १७६६ वर्षे पोष कृष्न पक्ष तिथौ षष्ठी रवि वासरे लिषित मिश्र कुज मनि सकल गुण सम्पन्न श्री गोर धन दास पठ नार्थम् शुभ रास्तु

विषय—(१) गणा गण भेद तथा काव्य दोषादि वर्णन (प्रथमोध्याय) पृ० १—१२ तक (२) मात्रादि वर्णन (प्रस्तारादि) द्वि० अ० १२—२६ (३) मात्रिक छन्दों के लक्षणादि (तृ० अ०) २६—४१ (४) वर्ण वृत्त के लक्षणादि (च० अ०) ४१—५३

संख्या ११९. अश्वचिकित्सा, रचयिता—गिरिधारीलाल (कोटला, आगरा), पत्र—१३, आकार—८ × ६½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८६, रूप—अतिप्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १९२७ = १८७० ई०, लिपिकाल—संवत् १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—मास्टर रामप्रसाद जी, स्थान—कटला, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः अश्वचिकित्सा लिख्यते। अति घोरा वैस्व वर्न। अथ घोरा के अंग भौरी लक्षन वेस्व वरन घोरा। चौपई। वल्लदार नैन अनियारे। थुथरी लघु अधर नुक्यारे। कंध मिली ग्रीवा अस्थूल छाती चौडी होय समूल। सूधो सूत्तमसास न होई कर पग मृग के से सन होई ग्रीवा पुक्ष उचास बतावै करि लघु चौरी पीठ लखावे। छोटे करन श्याम सुम भारे, लम्बोदर कोखा फुलवारे। चारो चौका आठौ वद। जो पावे या विधि सोचद। भूरि भाग जा नरके आवे, जो घोरा या विधि को पावे अथ भौरी लक्षन। चौपई। अब मोरी बरनौ तिहि अग। जो सुभ राखि अंग तुरङ्ग। जो माथे पै भौरी लइये गुनलो सुभ ओगुन नहि कहिये। कधा पर भौरी जो होई उत्तम कहत सयाने लोई।

अत—सोरठा । भार तत चेतत चद्र साल होत को मत निरख सुख पावै मुनि वृद कुशलसिंह महराज प्रभु । घाराकी छाती होय भारी टलै नहीं तो दीजे टारि हफत दाम पोले पैंतीस । करै सकल रोगनको नास । जो छाती से लोहू लीजे तो विचारि या विधिते कीज ॥ प्रथम घरो एक राह चलावे ता पाछे रग सीर खुलावे । गरम मसाला दीजै ताह । कससे दाना दीजै वाय । उष्म नीर अष्टक नव दीज छाती खुलै मान मह लीजे । छाती बदकी दवा । सालमहल्दी सोंठ सुहागा । सोंफ सावन सज्जी परागा । गुर सो मिले वजन सम लेहु टक सुहागा तामे देहु । देतै छाती खुलै वनाय चद २ जो जिकरो आय । इति सालहोत कुशलसिंह महाराज कृत समाप्तम् । मिती सावन सुदी ७ बुधवार स १९२७ व कलम गैरलारी वारी शुभभीके ।

विपय—शालिहोत्र ।

टिप्पणी—पुस्तक अश्व चिकित्सा पर है । वास्तव में इस विपय पर यह पुस्तक इतनी पुरानी है कि सम्भवतया इसको हम पहली पुस्तक कह सकते हैं । लेखक कोल्ला के रहने वाले थे किसी रियासत में काम करते थे उनके प्रपौत्र अब भी वतमान हैं । पुस्तक उपादेय है । मुझे यह भी ज्ञात हुआ है कि पुस्तक के बहुत से नुसखे आजमाये जाने पर बड़े लाभप्रद प्रमाणित हुए हैं ।

सख्या १२० माप भाग, रचयिता—गिरधारी लाल (समायू), कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १९३० = १८७३ ई०, लिपिकाल—सवत् १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामदयाल पटवारी, स्थान—गृदरपुर, डाकघर—विलराम, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ माप भाग लिख्यते ॥ पर ब्रह्म निराकार सर्व शक्तिमान जगदीश्वर के गुणानुवाद के पश्चात् विदित हो कि इस ग्रथ को पडित गिरधारी लाल समायू वासी ने अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार रचा है इससे छोटे छोटे बच्चों का हित हो औ गणितज्ञ लोगों से यह प्राथना है कि इस ग्रथ को कृपा दृष्टि से दखें । माप भाग समकोण त्रिभुज का समकोण त्रिभुज में समकोण की बनानेवाली रेखाओं में आड़ी रेखा भुज वा भूमि और खड़ी रेखा कोटि व लब कहलाती है । और तीसरी रेखा जो समकोण के सामने है उसे कण कहते हैं और लब के भूमि के दो भाग हो जाने से प्रत्येक भाग अबाधा कहलावेंगी । अथवा समकोण त्रिभुज में तीन रेखायें हुआ करती हैं । उनमें से एक रेखा भुजग कहलाती है उसको रोकने वाली जो लब रूपरेखा होती है कोटि कहते हैं । यह कोटि सम कोण त्रिभुज वा सम चतुर्भुज में होती है और भुज कोटि के सिर से बधा हुआ सूत्र होता है उसे कण कहते हैं । इन तीनों रेखाओं में से कोई दो रेखा जान कर तीसरी जान सक्ते हैं ॥

अत—रल्ला और बल्ला के क्षेत्र के कर्ण √५०√ २८८ गट्ठे है तो अब लल्ला के क्षेत्र का भी कण बताओ ॥ उत्तर १८ ३६ ॥ वृत्त क्षेत्र के अतर गत समकोण त्रिभुज

जिसकी कोटि कर्ण से २ गट्ठे कम है और वृत क्षेत्र का क्षेत्रफल २६६·९८०६ है जो समकोण त्रिभुज की भुज के गट्ठे होगी ॥ उत्तर भुज ८ गट्ठे ॥ इति ॥ लिखा भवानीप्रसाद तालिव इल्म दर्जा ४ मदर्सी कासगंज जिला एटा सवत् १९३१ वि० सन् १८७४ ई० ।

विषय—पृथ्वी के क्षेत्रों को मापने की रीति लिखी है ॥

संख्या १२१ ए. गोवरधननाथकी प्रगटन समय की वार्ता, रचयिता—गोकुलनाथ (वृन्दावन), पत्र—६०, आकार—१० × ६$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९२५= १८६८ ई०, प्राप्तिस्थान—विश्वेश्वरदयाल हेडमास्टर, डाकघर—जैतपुरकला, जिला— आगरा ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गोपीजनवल्लभाय नमः ॥ अथ श्री गोवर्द्धन नाथ जी के प्रगटनकौ प्रकार तथा प्रगट होइकैं जो जो चरित्र किये हैं सो श्री गोकुलनाथ जी के वचनामृत के समूह में ते ऊर्द्ध करिके न्यारे लिपे हैं ॥ अव नित्य लीला में श्री गोवर्धन नाथ जी ॥ श्री गिरिराज की कंदरा में अपने भक्तन सहित अखण्ड विराजमान हैं, तथा श्री आचार्य जी महाप्रभू सदा सेवा करत हैं ॥ सो जव देवी जी जीवन के उद्धारार्थ ॥ आपु धरिणी मंडल में प्रादुर्भाव भये ॥ तर आप सर्वस्व ॥ श्री गोवर्द्धननाथ जी ॥ अखिल लीला सामग्री सहित ॥ आप व्रज में प्रादुर्भाव भये ॥ संवत् १४६६ श्रावण सुदी तृतीया ॥ आदित्यवार ॥ सूर्योदयकाल समय ॥ श्रवन नक्षत्र में ॥ श्री गोवर्द्धननाथ जी की उर्द्ध भुजाकौ दरसन भयौ ॥ जा समैं ॥ भूलोक में वडो आनन्द भयो ॥

अत—तब गंगाबाई ने जाइकें । श्री गोवर्द्धननाथ जी के दर्शन किये तव श्रीगोवर्द्धन नाथ जी आप गगाबाई को मुसकान सों दरसन दीये ॥ पाछे श्री गोवर्द्धननाथ जी यह आज्ञा श्री दाऊ जी महाराज सो कीये ॥ जो यह गहनें को वंटा सैया मदिर में स्थापन करौ ॥ तव अैसेई श्री दाऊ जी महाराज कीये वह गहने को वटा श्री गोवर्धननाथ जी के सैया मदिर में स्थापन कीये ॥ सो अैसे अैसे श्री गोवर्द्धननाथ जी के अनेक चरित्र हैं जो कहां ताईं लिखिवे में आवैं । श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपाते स्वकीयन कें अनुभव में आये ॥ इति गोवर्द्धननाथ जी के प्रगटन समै की वार्ता सपूर्णम् ॥ संवत् १९२५ भाद्रपद सुदी ११ शुक्रवार शुभ श्रीः

विषय—श्री गोवर्द्धननाथ के प्रकटन का प्रकार और चरित्रों का वर्णन ।

संख्या १२१ बी. वनयात्रा परिक्रमा व्रज चौरासी कोस की, रचयिता—गोकुलनाथ, पत्र—५६, आकार—१२ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल संवत् १८७०=१८१३ ई०, प्राप्तिस्थान— ठाकुर हरनाम सिंह, स्थान—दायीपुर, डाकघर—अतरौली, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ वन यात्रा परिक्रमा व्रज चौरासी कोस की लिख्यते प्रथम श्री गोसाई जी ने करी सो श्री गोसाई जी अपने सेवकन सो कहत है सवत् १६०० भाद्र पद कृष्ण द्वादसी को सैन आरती करके पाछे श्री गोसाई जी मथुरा पधारे ॥ व्रज की परिक्रमा करवे को सो तहां प्रथम श्री मथुरा जी

में श्री कृष्ण जी को जन्म भयो है तहा कारा ग्रह की ठौर है तहा श्री मथुरा जी में विश्रांत घाट है तहा कंस को मार के श्री कृष्ण और बलराम ने विश्राम कियो है तहा श्री आचार्ज जी महाप्रभून की बैठक है तहा श्री ठाकुर जीने स्नान करि श्रम निवारण कियो है ।

अंत—ब्रज के ८४ कुंड विमल कुंड, धम कुंड, जग्य कुंड, पंच तीर्थ कुंड, मणिकर्णिका कुंड, जसोदा कुंड, निवास कुंड, लंका कुंड, मन कामना कुंड, सेत बंध रामेश्वर कुंड, महोदधि कुंड, क्षीर सागर कुंड, जल विहार कुंड, प्रयाग कुंड, पुस्कर कुंड, द्वारिका कुंड, घोप राना कुंड, गोपी कुंड, काली कुंड, मोती कुंड, नृसिंह कुंड, सरस्वती कुंड, परम हंस कुंड, अभिमत कुंड, रुद्र कुंड, सूकरा कुंड, गुलाल कुंड, सेपेत कुंड, सुरभी कुंड, सीतल कुंड, रंगीला कुंड, छबीलो कुंड, दर्चीलो कुंड, संत कुंड, सूर्य कुंड, विसाखा कुंड, विश्राम कुंड, भोग कुंड सकर्षण कुंड, मानसी कुंड मद्य कुंड, मात्र कुंड बद्री कुंड, केदार कुंड, दोहनी कुंड, मोहनी कुंड, किशोरी कुंड, अप्सरा कुंड, कृष्ण कुंड, राधा कुंड, जुगुल विहार कुंड, शातन कुंड, नारद कुंड, हरिद्वार कुंड, अयोध्या कुंड, चरण कुंड, वामन कुंड, ऋण मोचन कुंड, पाप मोचन कुंड, धर्म रोचन कुंड, गोरोचन कुंड भरत कुंड, वाराह कुंड बलभद्र कुंड, रोहिनी कुंड, पद्मी कुंड, भामिनी कुंड, रतन कुंड, गोविंद कुंड, गया कुंड, दह कुंड, श्याम कुंड, रुक्मिनी कुंड, सत्यभामा कुंड, जमुना कुंड, गोमती कुंड, नैमिषारण्य कुंड, आवंती कुंड, गरुण कुंड ब्रज वल्लभ कुंड ये ८४ कुंड हैं । इति श्री बन यात्रा ब्रज ८४ कोस की गोकुल नाथ कृत संपूर्ण समाप्त ।

विषय—ब्रज की ८४ कोस की बन यात्रा की परिक्रमा ।

संख्या १२२ भड्डू विलास, रचयिता—गोपाल (फतेपुर, आगरा), पत्र—६४, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८९६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १९०२ = १८४५ ई०, लिपिकाल—संवत् १९२७ = १८७०, प्राप्तिस्थान—सुरजी राय, ग्राम—दुगपुरा, डाकघर—नौखेड़ा, जिला—एटा ।

आदि—अथ भड्डू विलास लिख्यते ॥ आरंभ में पहिली नकल ॥ अकबर बादशाह ने बीरबल से कहा कि चार उल्लू जो पक्के उल्लू हों उन्हें मेरे सामने हाजिर करो ॥ बीरबल ने कहा चार उल्लू कहां से लाऊं ॥ निरास हो उठकर ढूंढने चल दिया । जब जंगल में पहुंचे क्या देखते हैं, कि एक लकड़ी बेचने वाला ऊंचे पेड़ पर बैठकर मोटे गुद्दे को जड़ से काट रहा है और उसी पर बैठा है बीरबल बोले इससे अधिक उल्लू और कोई नहीं है । उससे बीरबल ने कहा अबे इसी डार को काटे है तू गुद्दे समेत नीचे गिरेगा । बोला मुझे उतरने में देर न लगेगी इसके साथ ही उतर आऊंगा और मेरे बोझ से डार भी जल्दी कट जावेगी । बीरबल ने जाना यह उल्लू है एक तो पाया । उससे कहा तुझे बादशाह ने बुलाया है । इतने ही में एक घासवाला घोड़े पर सवार सिरपर सवा मन का घासका गट्ठा रखा है । बीरबल बोले अबे सिर पर घासका गट्ठा क्यों रखा है उल्लू बोला बाह बाह कैसे आदमी हैं । मेरी घोड़ी गाभिन है इसपर बोझ नहीं लादूगा ॥ बीरबल बोले आपको

वादशाह ने बुलाया है कि चार अक्लमद लावो सो तुम मिले हो तुमसे जादा कहां पाऊंगा ॥ दोनो वीरवल के साथ हो लिये। वादशाह के दरबार में पहुंचकर वीरवल ने कहा कि सरकार उल्लू हाजिर है। वादशाह ने कहा मैंने चार उल्लू बुलाये तुम दोही लाये। वीरवल वोले सरकार उल्लू चारौ हाजिर है वादशाह ने कहा कहां हाजिर है वीरवल वोले दो तो ये हाजिर है तीसरे आप चौथा मैं वादशाह वोले तुम और हम क्योंकि आपने ये याद किये और मैं लाया जिससे मै हुआ। वादशाह खुश होके वीरवल को खिलत दी और विदा किया ॥

अत—राजा वोला क्यों झगडते हो साधू वोले वैकुन्ठ का दरवार खुला है सो मैं कहता हूं मुझे वैकुन्ठ जाने दो कोतवाल वोला तुमको हुक्म नहीं है मुझको। राजा वोला सव हट जाओ दिया हुक्म मेरा है मैं वैकुन्ठ जाऊंगा जव फासी पर चढ़ने को हुये तभी साधू वोले वस अब वखत नही रहा किवाड वैकुन्ठ के वद हो गये जिस वख्त किवाड खुलैंगे फिर कहदेंगे अव फांसी मत चढ़ो राजा वोला फिर खुलें वता देना चेला से कहा जितना भागा जाय उतना भागो साधू ने सवको वचा दिया। अपना जीव लैके भागे। यह राजा उल्लू था। इति श्री भडई विलास गोपालकृत सपूर्ण लिखा रामदीन पाडे सवत् १९२७ पौष शुक्ल एकादर्शी ग्राम वेथर ॥

विषय—इस ग्रन्थ में भाडो की नकलें और तमाशे लिखे हैं ॥ इस ग्रन्थ के रचयिता गोपाल, जाति के ब्राह्मण, फतेपुर (जिला आगरा) के निवासी थे। निर्माणकाल संवत् १९०२ वि०, लिपिकाल सवत् १९२७ वि० है। निर्माणकाल इस प्रकार लिखा है:—
सवत् विक्रम जानिये नेत्र व्योम अरु निद्धि। तापर भूमि वढाय के ग्रन्थ कियो है सिद्धि ॥
जेठ दशहरा जानियो सुन्दर सुखद सुठाम। जिला आगरा मो वसत फतेपूर है ग्राम ॥

संख्या १२३ ए. मुहम्मदराजा की कथा (मोहमर्द राजा की कथा), रचयिता—गोपालनाथ, पत्र—५, आकार—९ × ६इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र, ग्राम–वेलनगज, जिला—आगरा।

आदि—अथ मोहम्मद राजा की कथा लिखतं ॥ गुरु गोविन्द की आज्ञा पाऊँ। सत समागम वरनि सुनाऊँ ॥ सुणौ एक महा कहौ पूरण ॥ नदि विष्णु भयो वापण ॥ वैकुण्ठ लोभ विष्णु की वास ॥ आये सकल तहां हरिदास ॥ सनक सनंदन आए ईसा ॥ इन्द्र देवते तेतीसा ॥ वाण आदि रिखीश्वर आये ॥ वडे मुनीश्वर और सवाए ॥ परसन कै के कथत हैं ग्याना। सवही करैं विष्णु को ध्याना ॥ ब्रह्मादिक अरू आये शारद। तिहि अवसर आये मुनि नारद ॥ नारायण को पायो दरसन। कर जोरे अरु वूझे प्रश्न ॥ ४ ॥

अत—वो हरि जी अैसी है राजा। ताके न्याइ सवारो काजा ॥ जिन तन मन क्रम लेखे लाया। पुत्र कलित्र समरथी भाया ॥ राजा नारद आनंद पायो। व्यास नृप को वरनि सुनायो। जो मानवी सीषै अरु गावै। नाराइण के अति मन भावै। गुरू गोविन्द का आज्ञा

पाइ । सन्त समागम कथा सुणाइ । मोहम्मद हरि जी की गाथा । तिनि प्रति गावै जन गोपाल नाथा ॥ इति मुहम्मद राजा की कथा ॥

विषय—मोहमर्द राजा की कथा का वर्णन ।

टिप्पणी—प्रथम विवरण में यह आ चुका है ।

संख्या १२३ बी ध्रुवचरित्र, रचयिता—जनगोपाल, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८ × ५ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १८०६ = १७४९ ई०, प्राप्तिस्थान—रामदास बैरागी, ग्राम—बढ़का कुरी नगला, डाकघर—सुरसान, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ ध्रुव चरित्र लिख्यते ॥ दो०—सिव विरंचि सनकादिक सुक नारद मुनि प्रहलाद । ध्रुव की कथा बरनन करूँ तुम सब के परसाद ॥ चौ०—या भागवत कथा है भाइ । चतुर्थ स्कन्ध सो गाइ ॥ सुक रिसि तिरपति सू परीषत सू गाइ । नीका कहिये सुनाइ ॥ गुरु गोविन्द परनाम करीजे । मन वच कर्म चरण चित दीजे ॥ राम भगति को प्रारंभ होइ, गुपत बात समझाऊं सोई ॥ सत जुग त्रेता द्वापर गाइया । कलि जुग आवा गवन जु भइया ॥ पाडव राज परीक्षित दियो । कलि प्रवेश पृथ्वी पर कियो ॥

अंत—वसुधा सब कागद करू सारद लिखत बनाइ ॥ उदधि घोरि मसि कीजिये तौ ध्रुव महिमा न समाइ थै अजान मति आपनी कही जु घटि बधि बात । बकसत सुत अपराध कू जन गोपाल पितु मात ॥ इति श्री जन गोपाल कृत ध्रुव कथा संपूर्ण समाप्त लिखत बैजनाथ मिश्र स्व पठनार्थ आश्वनि मासे कृष्ण पक्षे चतुर्दसी संवत् १८०६ वि० राम राम राम

विषय—इसमें ध्रुव चरित्र का वर्णन है ।

संख्या १२३ सी ध्रुवचरित्र, रचयिता—जन गोपाल, पत्र—२०, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) १३, परिमाण (अनुष्टुप्)—३९०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० हरिप्रसाद जी, ग्राम—जौनाई, डाकघर—टेकुआ, जिला—आगरा ।

आदि-अंत—१२३ बी के समान ।

संख्या १२३ डी०, प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—जनगोपाल, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०६ = १७४९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रामसिंह पवार, ग्राम—दौदापुर, डाकघर—सलेमपुर, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ प्रहलाद चरित्र लिख्यते ॥ चौपाइ ॥ प्रथम सीस हरि गुर को नाऊं । कहूं कथा जो आज्ञा पाऊं ॥ भगवत भगत को जस विस्तारूं । करि आलोकन ध्यान विचारूं ॥ चारि जुगुन के चारों भेदू । रुग युग स्याम अथर वेण वेदू ॥ वाचन अक्षर कू ऊंकारा । तीन लोक बहु विधि विस्तारा ॥ चारि वरण चारों आसरमा । तिनमें कहिये नाना धरमा ॥ एक जोग एक जुगति दृढावै । इक तीरथ बरतन सू चित लावै ॥

अंत—॥दोहा॥ अपनी जाने आप गति और न जाने कोइ । जन गोपाल फल वीज में फल से वीज कहेइ ॥ सात समंद की मसि करै । वसुधा कागज सोइ ॥ महिमा भगत भगवत की । क्यों करि वनरें कोइ ॥ सारद लिषत न अंत हूं कहे सुनै जो कोई । तेहि भजि निज पद पाइये पार कहां सूं होइ ॥ अमृत रस प्रहलाद जस कहै सुनै जे कोइ ॥ अभय अमर पद पाइये भगति मुकति फल होइ ॥ सुनै सुनावै प्रीति जुत हरि जन हरि जस एह । कहे गोपाल उर धारि के राम भगत सू नेह ॥ मै मति मारूं आपणी कही जु घटि वधि वात ॥ जन गोपाल सुन हेत कौ नीकै समुझै मात ॥

विषय—प्रहलाद चरित्र वर्णन ।

सख्या १२४. चारदिशा के सुख दुख,रचयिता—गोपाललाल, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)–१६, परिमाण(अनुष्टुप्)—३०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १८९६ = १८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामसेवकमिश्र, ग्राम—चीतामऊ, डाकघर—कादरगज, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ चारो दिशा के सुख दुख लिख्यते ॥ पूर्व दिसाके सुख-पुरुष वाच—रूप विशेप विशेप धन भूमि सुहावन देश । जाय करौ याते आवै पूरब को परदेश ॥ कवित्त—ताफ तारु वाफता मुस्सजर श्री साफ, मखमलरु सुकेसी पटनाना सुख दाइये ॥ सरस कृपाण तरकसरु कमान वाण, जरकसी चीरा हीरा जहां जाइ लाइये ॥ सुकवि गुपाल फुलवारी धाम धाम अव, श्रीफल कदव वीडा पानन को खाइये ॥ वडे होत केश मिलै तंदुल अशेप प्यारी पूरबके देशमें विशेप सुख पाइये ॥ पूर्व दिशाके दुख स्त्री उवाच खंडन ॥ सोरठा—लगै चोर ठग वाइ पेट चलै पानी लगै कीजै कवहुं न जाइ पूरव के परदेस को ॥ १ ॥

अंत—उत्तर दिसा के दुख—स्त्री उवाचा खडन–दोहा—सदा सीत भय भीत नर व्याघ्र सिह वृष घोर । कीजै नही पयान पिय उत्तर दिशि की ओर ॥ कवित्त—विकट पहार झार घने सिह स्यार निरवाह नही होत रथ वहल को जामे है ॥ गिलटी अरु गिल्लर अनेक रोग होत जहां । चारिहु वरन जीव हिंसक हरामे है ॥ सुकवि गुपाल सदा सीतमय भीत लोग । वरफ के मारे दुरे रहत गुफा में है ॥ राह में न गामे चल्यो जात ना निशा में, याते वहु दुख पावै जात उत्तर दिशा में हैं ॥ इति श्री चारो दिशा के सुख दुख वर्णन समाप्तः लिखा मयाराम सारस्वत ब्राह्मण आगरा वीच सवत् १८९६ वि० ॥ सियराम लखन की जै ॥ राधारमण विहारी की जै ॥

विपय—पुरुष स्त्री के सवाद के रूपमें पूरव, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशाओ के सुख दु.ख वर्णन किये गए है ।

सख्या १२५ ए. कलिजुगलीला, रचयिता—गोविन्द लाल, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३२, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिव विहारी मिश्र, ग्राम—जैतपुर, डाकघर—पिलवा, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ कलजुग के कवित्त लिख्यते ॥ कवित ॥ राजन की नीति गई मित्रन की प्रीति गई, नारी की प्रतीत गई यार मन भायो है ॥ शिष्यन को भाव गयो पचन को न्याव गयो, साच को प्रभाव गयो झूठ ही सुहायो हे ॥ मेघन की वृष्टि गई भूमि सब नष्ट भई, सकल ससार में विस्तार दुर सायो है ॥ कीजिये सहाय जू कृपाल श्री गोविन्द लाल, कठिन कराल कलिकाल चढ़ि आयो है ॥ १ ॥

अत—भूलि करि मानें नहीं भले की जमानो नाहिं, धम ही को थाना अधर्म को ढठायो है ॥ धम दया शील सतोषादिक दूर धरे, काम क्रोध मोह मद लोभ सर सायो है ॥ चोर ठग फासी असाध भये ठौर सब नये, ऐसे में अपनपौ छिपायो है ॥ कीजिये सहाय जू कृपाल श्री गोविन्द लाल, कठिन कराल कलि काल चढ़ि आयो है ॥ इति श्री कलिजुग लीला के कवित्त सपूर्ण फागुन सुदी तेरस सवत् १९३६ में लिखा

विषय—कलियुग की दशा का वणन है ।

सख्या १२५ बी कलियुग के कवित्त, रचयिता—गोविंदलाल, कागज—देशी, पत्र—६६, आकार—१० × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२००, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १९३० = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—मौलाना रसूल खा काजी, ग्राम—नागारी, डाकघर—सलेमपुर, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—१२५ ए के समान ।

अत—कीजिये सहाय जू कृपाल श्री गोविन्द लाल, कठिन कराल कलि काल चढ़ि आयो है ॥ भूल कर मानें नाहिं भलो को जमानो नाहिं धम ही को थानो अधम ने ढठायो है । धम दया शील सतोषादिक जो दूरि देर, काम क्रोध लोभ मद मोह सरसायो है ॥ चोर ठग फासी गर असाधू भय ठौर ठौर, सबन ने ऐसे मै आपनपौ छिपायो है ॥ कीजिये सहाय जू कृपाल श्री गोविन्द लाल, कठिन कराल कलि काल चढ़ि आयो है ॥ जेते भोग विषय वियोग होय सबन को, बिना ज्ञान अन्न जन दौरि दौरि गेह हैं ॥ सुत नासे वित्त नासे नारि हू को नह नास, महा शोक मन वासे तीनों ताप दहै हैं ॥ विषयत विष छोड़ि ज्ञान क सग दाइ, उत्तम भगति माहि सुधि गति रहै हैं ॥ विषया वियोग त्यागे महा मोक्ष मन लागे, भगवान रस पागे नित्य सुख लहै हैं ॥ इति श्री सपूर्णम् मिती आश्विन शुक्ला ६ सना सवत् १९३० वि० ॥

विषय—इसमें कलि काल के उलटे कृत्यों के सबध के कवित्त लिखे हैं ।

सख्या १२६ नैमिषारण्य महात्म्य, रचयिता—गोकरननाथ, पत्र—८४, आकार—६ × ४ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—११६०, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९११ = १८५४ ई०, लिपिकाल—सं० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला छीतरमल, ग्राम—रायजीत का नगला, डाकघर—खरनऊ, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ नैमिषारण्य महात्म्य लिख्यते ॥ दोहा—गुरु गणपति अरु शारदा श्री पति गौरि महेश ॥ सिद्धि करहु कारज सकल यशुदा तनय हमेश ॥

नैमिषार महात्महिं भाषा करत प्रचार ॥ निज बल बुद्धि भरोस नहिं केवल आस तुम्हार ॥ चौ०—मोरे चित अति बढ़ो हुलासा । भांति अनेक कथा इतिहासा ॥ काव्य सहिता कोष पुराना । देखे प्रथक प्रथक धरि ध्याना ॥ सहजहि हृदय एक दिन आई । नैमिष वारता कहौ कछु गाई ॥ जो कछु मिलो जतन करि भारी । लिखेहु तौन सुमति अनुहारी ॥ पढि करि हहि सज्जन अभ्यासा । खल बहु भांति करै उपहासा ॥ सो संदेह नही उर मेरे । दुष्ट सदा हरि माया प्रेरे ॥ पर गुण हरण विघन दिन राती । जिने हृदय रहै बहुभांती ॥

अत—शीश शशि ग्रह अरु चद्रमा संवत् विक्रम भूप । पौष शुक्ल तिथि द्वैज यह विरच्यो ग्रन्थ अनूप ॥ इति श्री नैमिपारण्य महात्म कथा संपूर्ण समाप्त. लिषतं शीतलप्रसाद वैश्य संवत् १९१८ वि०

विषय—इस ग्रन्थ में नैमिपारण्य (मिश्रिख) तथा हत्याहरणादि तीर्थों का माहात्म्य वर्णन किया गया है ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता गोकरण नाथ नैमिपार (नैमिपारण्य) निवासी थे । निर्माणकाल सवत् १९११ वि० है । लिपिकाल सवत् १९१८ वि० है । निर्माणकाल ऐसा लिखा है:—शशि शशि ग्रह अरु चन्द्रमा संवत् विक्रम भूप । पौष शुक्ल तिथि द्वैज यह विरच्यो ग्रन्थ अनूप ॥

संख्या १२७. शगुनपरीक्षा, रचयिता—गोकुलचन्द, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—लाला दिलसुखराय, ग्राम—नगरा भगत, डाकघर—पटियारी, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ शगुन परीक्षा गोकुल चन्द कृत लिख्यते ॥ अथ शगुन परीक्षा रंभः ॥—जो मनुष्य अपने घर से किसी कार्य को चले उसको मार्ग मे पानी से भरा घट मिले अथवा निर धुन्ध या धुआं से रहित अग्नि मिले अथवा मछिली की डलिया मिले अथवा कोई रोटी लिये आगे से आता होय व दूध आगे से लिये आता होय तो ये शगुन शुभ है ॥ जिस काम को जाता होय तो कार्य सिद्धि होगा । और किन्तु रोगी के निवृतार्थ दूत वैद्य को बुलाने जाता हो मिले तो मध्यम हैं और वैद्य को मिलैं तो शुभ है ॥

अत—जो ऐसे कुशगुन होय तो अगर घर को न लौट सके तो वही ठहर जाय और स्नान आदि पूजन भजन करके किसी मंदिर मे ठहर जावे अथवा सूर्य नारायण को जल चढ़ाइ गुरु मंत्र का जाप करै और उस समय श्रद्धानुसार जो कोई आजाय पुन्य करके देवे तो ऐसे खोटे शगुन का प्रभाव जाता रहे ॥ और कार्य भी सिद्धि होगा ॥ इतना उपाय अवश्य करना योग्य है ॥ संवत् १९२७ ई० ॥

विषय—शकुन विषय वर्णन ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता गोकुल चन्द जिला मथुरा निवासी थे । इनके पिता का नाम हकीम रामचन्द था । लिपिकाल संवत् १९२७ वि० है ॥

संख्या—१२८. सुकमाल चरित्र, रचयिता—गोकुल (गोला पूरब), पत्र—१५०, आकार—१०½ × ६¾ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५५०,

रूप—गद्यानु, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १८०१ = १८१४ ई०, लिपिकाल—संवत् १९५४ = १८९७ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रूपमदास जैन, ग्राम—महुना, डाकघर—इटौंजा, जिला—लखनऊ।

आदि—॥ ६० ॥ ॐ नमः सिद्धेभ्य ॥ अथ सुकमाल चरित्र भाषा लि० ॥ नम श्री विश्वनाथाय पंच कल्यान भागिनें ॥ महते वर्द्धमानाय नित्या नंत गुणात्मने ॥ १ ॥ टीका— ग्रन्थ कर्ता ग्रन्थ के आदि विषै निर्विघ्न के सिद्ध र अथ इष्ट देव के निमित्त नमस्कार करै है ॥ श्री विश्वनाथ श्री वर्द्धमान तार्थंकर के निमित्त नमस्कार करै है ॥ श्री विश्वनाथ श्री वर्द्धमान तीर्थंकर के निमित्त नमस्कार होहु ॥ कैसे हैं विश्व कहा तीनलोक तिनों के स्वामी हैं। फिर कैसे हैं पंच कल्यान करि विराजमान हैं। फिर कैसे हैं महान्तु कहता दय मनुष्यन में सर्वोत्कृष्ट हैं फिर कैसे हैं नित्य कहता शाश्वते अनंत गुण तिन्ह के समुद्र समान हैं ॥ १ ॥

अंत—प्रकार इहि भाषा वा भाषा का संक्षेप रूप मंद बुद्धि के अनुसार गाथा सूत्र गोरख न करी ॥ जो या विषै प्रमाद के जोगतैं पदन्तर व्यंजन की अधिक हाय तो है बुध जनहो हम पै क्षमा करके सोध लीज्यौ ॥ मिति कार्तिक वदी परवा ॥ १ ॥ संवत १८०१ ॥ अगरह से इकहत्तर की साल में टीका सम्पूर्ण करी ॥७५॥ इति श्री सुकमाल चरित्रे भट्टारक श्री सकल कीर्ति विरचित यशोभद्रा नामोभद्र सुरेन्द्र दत्त वृषभाद कर वरवर मोक्षगमन सुकुमाल सर्वार्थ सिद्धि अहमिन्द्र विभूति वर्णनो नाम नम सर्गः ॥ सम्पूर्ण ॥ समाप्त ॥ मिती माघ सुदि ॥ १ ॥ संवत् १९५८ ॥

विषय—पृ० १ से २१ तक—वीर नाथ जू श्री ऋषभ देव तथा गौतम गणधरादि की स्तुति। कथा का आरंभ। नाग श्री कन्या को मुनि सूर्य मित्र और अग्नि मित्र द्वारा धर्मोपदेश की प्राप्ति (२) पृ० २१ से ३४ तक—नाग श्री के पिता का पुत्री से रुष्ट होना और जैन धर्म संबंधी व्रत त्याग का आदेश और पुत्री के अनुरोध से निजपुत्री सहित व्रत त्यागने के लिये उन्हीं मुनियों के पास जाना। हिंसा से दुःख की प्राप्ति का उदाहरण (३) पृ० ३४ से ४४ तक—अपरिग्रह परिग्रह। गौतम प्रथम देव द्वारा तथा नाग श्री के भवांतर संबंधी प्रश्न करना वर्णन (४) पृ० ४५ से ६१ तक—सूर्य मित्र से द्विज नागश्री के पिता का दीक्षा ग्रहण करना। जैन धर्म की प्रशंसा और पौराणिक धर्म की आवश्यकता। (५) पृ० ६२ से ७६ तक—नाग श्री के भवान्तर की कथा। (६) पृ० ७७ से ९३ तक—नाग श्री तथा नाग शर्मादि का तप स्वर्ग गमन वर्णन ॥ (७) पृ० ९३ से ११० तक—सुकुमार की पति सुख वर्णन ॥ (८) पृ० १११ से १३४ तक—बारह अनुप्रेक्षाओं का वर्णन तथा सर्वार्थ सिद्धि का गमन। (९) पृ० १३५ से १५० तक—यशोभद्रा। जसोभद्र। सुरेन्द्र। दत्त तथा सप भाव और कात ध्यान का मोक्ष गमन ॥

टिप्पणी—यद्यपि प्रस्तुत ग्रन्थ में 'सुकमाल' के चरित्र का वर्णन किया गया है किन्तु यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो उक्त विषय बिल्कुल गौण दिखेगा। इसमें जैन धर्म के सिद्धान्तों को स्पष्ट करना ही ग्रन्थ कर्त्ता ने लक्ष्य में रक्खा है। इसके साथ ही "ब्राह्मण"

धर्म का खंडन भी किया गया है ॥ यही नही प्रत्युत एक ब्राह्मण कन्या को जैन धर्म की दीक्षा दिला कर उसके पिता को बडी युक्ति के साथ जैनी बना दिया गया है । इस प्रकार जैन सम्प्रदाय के अनुयायियो को अपने धर्म में दृढ बनाया गया है । इस का गद्य कथा वाचक ब्रजवासी पडितो जैसा है ॥

संख्या १२९. भागवत दशम पूर्वार्द्ध (भापापद्यानुवाद), रचयिता—गोपीनाथ द्विज (दिहुली मैनपुरी), पत्र—४१, आकार—१२½ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १६३९ = १५८२ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर शिवलालसिंह, ग्राम—पिपरौली, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पूर्वार्ध लिष्यते ॥ चौपाई । प्रथम चरण सुमरौं भंग वता । करन हरन जे आदि अनंता ॥ अवगति रुप आदि है तासू । घट घट सव ही मध्य प्रकासू ॥ १ ॥ बृह्मा बुद्धि नभिते नयौ । रुद्र ते जवर दाइक ठायो ॥ जाके मुख सारद नित रहै । अगम निगम वानी सव कहै ॥ २ ॥ ता सारद को करों प्रनामू । जो मन करै बुधि विश्रामू । वसति तिनन मे सदा भवानी । वरदाइक सव लोक वखानी ॥ ३ ॥ हृदय लक्षिमी सदा निवासू । नैन सूर ससि होत प्रकासू । रिधि सिधि गणपति हैं संगा । सब देवता तासु के अंगा ॥ ४ ॥

अत—रथ तै कनक डड लै परै । टूटि मुकुट कुडल रज भरै ॥ दोऊ चरण रहे गहि हाथा । चारयो मुख लोटहि लटि माथा ॥वहै नैन जल सो पग धोवै । मनकी मनहु कालिमा खोवै ॥ ५३ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कन्धे बृह्मा मोहननो नाम त्रयोदशमोध्याया ॥ १३ ॥ श्री शुको वाचा ॥ चतुदेशेद्भुत दृष्ट्वा पूर्वागतुक निश्चयं अनीशः कर्तुमस्तौपी कृष्ण ब्रह्मा विमोहिताः ॥ १ ॥

विषय—श्री मद्भागवत दशम स्कन्ध का भापा में पद्यानुवाद । पृष्ठ २ में ग्रन्थ निर्माण काल सोरह सै उनताला भयो, श्रावण सुदि दशमी दिनु लयो । रवि अनुराधा भयो उछाहू । कीजहु सारद कथा निवाहू ॥ सम्राट वर्णनः—निरभय राजु अकवर तनो । तीनि लोक जाको जसु घनो ॥ स्थानादि वर्णनः—नगरु आगरो उत्तिम थानू । सुने पुरान भयो मन ज्ञानू । मिश्र चतुर भुज गुरु मन ध्यानू । जो विधि विधा पूरण ज्ञानू ॥ प्रेम भक्ति जिन ईश्वर जान्यों । प्रेम रुप जग प्रगट वखान्यौ ॥ कविवंश परिचयः—कहै विजन सुत जन भगवानू । वस बरन में विप्र सुजानू ॥ पुरिषा गति दिहुली में वासू । प्रथम भागवतु वंदी दासू ॥ पोपि दूरि कीजै अघ हरना । गोपीनाथ तुम्हारे सरना ॥

टिप्पणी—यह ग्रन्थ प्रसिद्ध मुगल सम्राट अकबर के समय में गोपी नाथ द्विज ने रचा है । यह अपने पूर्वजो का निवास स्थान दिहुली बतलाते है । यह ग्राम मैनपुरी जिले की करहल तहसील में है । रचयिता अपने गुरु का नाम चतुर्भज मिश्र वतलाते है और ग्रन्थ का रचना काल सवत् १६३९ ठहराते हैं । इन्होंने दशम स्कन्ध का पद्यानुवाद प्रायः सरस और उत्तम भापा में किया है ।

संख्या १३० शीघ्रबोध, रचयिता—गुलाबदास, पत्र—१६०, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९२०, रूप—प्राचीन, पद्य और गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १८०२ = १७४५ ई०, लिपिकाल—संवत् १८२३ = १७६६ ई०, प्राप्तिस्थान—उमादत्त जी टीचर, ग्राम—फिरोजाबाद, डाकघर—चाऊ, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः। भाशयरा जगद्भाशा 'नत्वा भाशतम यय। क्रियते काशिनाथेन। शीघ्रबोधायसग्रह। १। टीका। अवयपुरुष के ध्यानतें, पातक तिमिर मिसाइ। जसे सूर प्रकास तें निसातिमिर मिटि जाय। १। रोहिण्युत्तर रेवत्यो मूल स्वाति मृगो मघा अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मगलप्रदा। २। टीका। रोहिनि उत्ता तीनि। रेवे हस्त अरु स्वाति मृग मघ अनुराधा तीन। पानि ग्रहन गनि मूलमें। २। अवागमन्त्रि वाहश्च कन्या वरणेवच। ववते सब बीजस्त सुण्य ग्रामवसायते। ३। अथ, रोहिणी तीन्यों उत्तरा। रेवती मूल स्वाति म्रग सिरम्रगा अनुराधा क्षत्र ग्यारह। ११॥ विवाह को उत्तिम लए ह।

अन्त—जो पडित ससार मैं सबसू विनती येह। छिमा कीजो चूक मों ज्यों पिता पुत्र जा नेह। काशीनाथ अगाधकृत कोनलहै ता पार। गुलाबदास भाषा रचा बुधि सारधा विसतार। १। अठार सैर दुहोतरा माघमास रविवार, कृष्णपक्षकी दसक कीयो समापित सार। मोमे चूक परी जहा पडित लेहु सुधारि। संस्कृत समझ्यो नहीं बुधि सारयो उरधारि। ३। संस्कृतकी सक्ति न होइ, जो पडित सीषो सब कोइ, पर उपगाजो बिज्यो येह, सुधी अथ जानियो तेह। ४। इति श्री भाषा शीघ्रबोध समाप्त। शुभमस्तु। संवत् १८२३। वष चैत्र द्वितीया मास मै। वदी १३ तेरसि सोमवासरे। लिखित गोपाल दास वा प्रेम दास पठतन्य पाडे धमदास ब्राह्मण। दोहा। स्वारथसौं राच्यौ रहे, साध न देखि उदास। ताको अपरि होतु है क्रम मोक्ष परकास॥ १। साधन सतसगति भए कटत सकल जजाल। पापपहार विलात ज्यो, उदित सूर ततकाल। १। पडित पढत मर्म नहि जानै। अथ बिनासव जाही। दीसतु जलजु प्यास नहीं जाती कूवामधि लपि झाहीं। रामजू है।

विषय—काशीनाथकृत शीघ्रबोध की भाषाटीका।

संख्या १३१ रसीले तरंग, रचयिता—गुलजारीलाल रसीले (नरवल, कानपुर), कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १९२८ = १८७१ ई०, लिपिकाल—संवत् १९३२ = १८७५ ई० प्राप्तिस्थान—ठाकुर रामसिंह, ग्राम—देवपुरा, डाकघर—सोरों, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ रसीले तरंग लिख्यते दोहा—श्री लम्बोदर तुव चरण यदि कहीं सति भाव। कर गहि पार लगाइये मेरी अनाथ की नाव॥ अनपढ हौं मति मंद अति नहिं अक्षर को ज्ञान। कविन को जूठन बीनि कै कीन्ह इकट्ठा आन॥ भूल चूक

छमिये सकल तुम्हें कहों कर जोरि। राम चरित कछु कहत हौं सारद तुम्हें निहोरि ॥ है गुलजारी लाल पुनि नाम जात परधान। रावल देवी की शरण नरवल शुभ स्थान ॥ अहो शारदा आइये मम कुबुद्धि के हेत। दोष न देवें मोहिं कोउ प्रणवों विनय समेत ॥ बिन विचार गण अगण के निज मति कर अनुमान। चरित सिया रघुनाथ के करें निरतर गान ॥ प्रेम सहित जो गाइहै करि प्रभु पद अनुराग ॥ मन वांछित फल पाइहै बिना जोग जप जाग ॥

अंत—सिया रघुवीर वसत खेलत आजु बजै निसान सब सुरन एकरी ॥ चढ़त भिगोवन लषन सिया को पट देत छुवाई सो तिनै न केरी ॥ छूटन लाग रंग दुहु दिशि से हसि हसि कुम कुम मारें फेंकरी ॥ करत विदूषक स्वांग विविधि विधि छांडि लाज अरु तजि विवेक री ॥ निचुरत पीत वसन तन लिपटे मलै अबीर मुख करन टेक री ॥ देवर जेठ गिनत नहीं कोई तहं गावत नाचत राग अनेक री ॥ सुख समूह रहियो छाय रसीले मानो दई विधि रेख छेकरी ॥ इति श्री रसील तरंग गुल जारी लाल रसीले कृत सपूर्ण समाप्त लिखतं बाबू दयाल बनियां स्थान सरैया जिला एटा सवत् १९३२ वि० फागुन शुक्ल पक्ष त्रयोदसी सपूर्ण ग्रन्थ ॥ राम राम राम

विषय—राग रागनियों में रामचन्द्र जी की लीला लिखी है ॥

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता गुलजारी लाल जाति प्रधान ग्राम नरवल जिला कानपुर निवासी थे। निर्माण काल सवत् १९२८ वि० लिपिकाल सवत १९३२ वि० है ॥ इसको इस प्रकार लिखा हैः—है गुलजारी लाल पुनि नाम जाति परधान। रावल देवी की शरण नरवल शुभ अस्थान ॥

संख्या १३२ रामचरित्र, रचयिता—गुरदीन, कागज—देशी, पत्र—३५, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १८७८ = १८३१ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा खरगीराम पुजारी, स्थान—अलीगज, जिला—एटा।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीरामचरित्र लिख्यते। भाल लालरी है वंदन कै अलिगण मंडित गंड अपार। एक रदन मिलि जनु वहि निकसी कुजर वदन त्रिवेनी धार ॥ १ ॥ लगी कचहरी रघुनंदन कै बैठे महा महा महिपाल। मध्य मडली रिषि राजन कै जिनकै गिरा तीनहू काल ॥ २ ॥ सूर सिरोमनि जे सेनापति सूरज पुत्र बालि का बाल। बालि बिभीषन पति रीछन कौ मारुत नद काल कौ काल ॥ ३ ॥ भरत लछिमन औ रिपु सूदन भूपन पूपन यह ससार स्वामी रघुपति वर सिंहासन जिनके सीस जगत कौ भार ॥४॥

अत—सो सुख आये पुर रघुवर के कहि श्रुति सेस गनेस न पार। सो सुख पूरन परितापन कहं गाये राम सुजस एक बार ॥ ऐसी भारी भौ सागर मा जीवन जिन उपाय नहिं कीन। तिनके तारन हित सरनी सम वरनी राम कथा गुर दीन ॥ इति श्री रामाश्वमेद समाप्त लिखतं रामसेवक कंपनी एक छावनी। इटाये संवत् १८७८ वि० ॥ राम राम राम ॥

विषय—रामचरित्र वर्णन।

सख्या १३३ ए कविविनोद, रचयिता—गुरुप्रसाद, पत्र—८६, आकार—१० X ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १७४५ = १६८८ ई०, लिपिकाल—सवत् १८९१ = १८३४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री नोवतराय गुलजारीलाल वैद्य, स्थान—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशाय नम अथ आदि मगलाचरण कवित्त ॥ उदित उदोत जगि मगि रह्यौ चित्रभानु ऐसे ही प्रताप आदि रिपभ कहत हैं। ताको प्रतिविम्व दपि भगवान रूप लेपि ताहिन सो पाय पपि मगल चहत है ॥ असी करो दया मोहि ग्रन्थ करौ टोहि टोहि धरयौ ध्यान तव तोहि उमग गहत है। वीचा विघन कोऊ अछर सरल दोऊ नर पढे जोऊ सोऊ सुप को लहत है ॥ १ ॥ दोहा—परम पुरुप परगट वहुल, त्रिभुवन रवि सम वीर। रोग हरन सव सुप करन, उदधि जेय गभीर ॥ २ ॥ सेवत जाके चरन जुग, जाको रिधि सिद्धि देइ। जो धोवे मन में सदा, मगल ताहि करेइ ॥ ३ ॥ गन पति दाता वुद्धिको, तातै कहियं तोहि। यही वीनती आपनी, सरल वुद्धि दै मोहि ॥ ४ ॥ गुरु प्रसाद भापा करी, समझि सकै सवु कोइ, ओपदि रोग निदान कछु कवि विनोद यह होइ ॥ ५ ॥ घटि वढि आछिर होइ जौ, पडित करियो सुद्ध। रचना मेरी देपि कै, करो न कोइ विरुद्ध ॥ ६ ॥ वानी अगम अनेक रस, कह्यौ न जाइ जग माहि। गुरु विन प्रगट्न होइ सव, गुरु विन अछिर नाहिं ॥ ७ ॥ सस्कृत अरथ न जानई। सकति न पूरी होइ। ताके वुद्धि परकास को भापा कीना टाइ ॥ ८ ॥ समत सत्रह सै समै, पैंतालें वैसाप। सुकुल पक्ष पाँचै सुदिन, सोमवार वैसाप ॥ ९ ॥

अन्त—ऐसे वैद्य समुद्र यह, वलवत होइ कनार ॥ ९८ ॥ कह्यौ ग्रन्थ में अल्प मति, गुरुप्रसाद में कान्ह। घटि वढि अक्षर होइ जौ, ताहि सुधारि प्रवान ॥ ९९ ॥ पर तर गछ महिमा अमित, सुमति मेरु गुरजान। ताकौ शिप्य मव मैं प्रगट, कह्यो ग्रन्थ मुनि मान ॥ १०० ॥ पुण्य कथन—सास्त्र दान है ज्ञान वहु, दान अभय निरवाह। भोजन दे तो सुप अधिक, भेपज निर व्याघाह ॥ ६ ॥ रोग हरण तातें अधिक, लोभ छाडि के देह। वधे सुजस ससार मै, पर भव सुप का गेह ॥ ७ ॥ इति श्री पर तरग छीय वाचना चाय्य वय्य धुय्य श्री सुम्मति मेरु शिप्य मुनि मान जी कृत कवि विनोद नाम भापा निदान चिकित्सा पथ्या पथ्य समान सप्तम खड समाप्ता ॥ ७ ॥ कविविनोद सम्पूण सवत् १८९१ चैत्र कृष्ण १२ गुरुवासर लिपत दमीलाल काइस्थ श्रीवास्तव।

विपय—(१) मगलाचरण, नारी परीक्षा, रक्त निकालन मात्रा कथन, पचमाल कथन औपधि देने की भूमिका, विधि, साध्या साध्य, नक्षत्र निणय, मूत्र परीक्षा, दूत लक्षण, रोगी लक्षण, कफ प्रतिकार, वात पित्त कफ मास कथन इनका कोप कथन, ज्वर व्यवहार, मिथ्याहार, ज्वर उत्पत्ति, लघन निपेध भेपज काल, दैस ज्वर, शीतोष्ण जल, सहस्वाय नाम मर्यादा। अति लघन हीन लघन और शुद्ध लघन लक्षण, वात पित्त कफ द्वदज निदान, वात ज्वर चिकित्सा [पृ० १ से १३] (२) पित्तज्वर कफ ज्वर क्वाथ, विपम ज्वर लक्षण पोड्पाग चूर्ण सुदशन चूण, लाक्षादि तैल, सन्निपात निदान, नेत्र अजन विपेस सन्निपात १३ भेद, आनन्द भैरव रस, अतीसार निदान चि० ग्रहणी चिकित्सा

[१४—२८] (३) अर्श निदान चि० मंदाग्नि, अजीर्ण, कृमि, पांडुरोग, पित्त, रक्त, नासा रक्त, हिचकी, यक्ष्मा, कासश्वास, हिक्का, स्वरभग, रोचक छर्दि, तृषा, मूर्छा, अपस्मार, वात व्याधि [२९—४३] (४) अर्दित ग्रन्थसी, वातरक्त, उरु स्तम्भ, आम-वात सूल करण, उदावर्त्त, अनाह, गुल्म स्थान पंचक, गुल्म, हृद्रोग, मूत्र कृच्छ्र मूत्र घात, पथरी मेह, वीस प्रमेह भेद, उदर शोथ, अण्ड वृद्धि गल गंड, व्रण, भगदर, उपदेस, कुष्ट, विस्फोट, मसूरिका, सथंभ, मुख रोग [४४–६०] (५) कर्ण, नासा, नेत्र, सिर, प्रदर, सोम रोगो का निदान तथा चिकित्सा, योनि शुद्ध करण, सूति का रोग, भग संकोचन, लिंग दृढ करन, स्तभन, दुर्गन्धी हरण, वालक लक्षण, विप चिकित्सा वृश्चिक चिकित्सा, भल्लात् की चिकित्सा, निघंट, परिपाक घृत, स्वेदाधिकार, वमन रेचन, फारसी रेचन, वमन विरेचन द्राक्षासव. मधु पक्का हरड़, शत भेद, हरीतिकी, लेखक विन्ती पोथी कथन [६१–८६]

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रथ संस्कृत में था। उसका पद्यानुवाद किन्हीं गुरु प्रसाद जी ने किया है। मूल ग्रन्थकार सुमति मेरु के शिष्य मुनिमान जी कोई जैन साधु थे।

सख्या १३३ बी. वैद्यकसार सग्रह, रचयिता—गुरुप्रसाद, पत्र—२४, आकार—७½ × ५¾ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७६, खडित। रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नौवतराय गुलजारीलाल, स्थान—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ गुरुभ्यो नमः धनवन्तराइ नमः अथ संग्रह सार लिपते॥ १॥ एक दंत गज आनन लम्बोदर भुज चारि। बुधि विद्या के दाता सुमिरौ तोहि विचारि॥ २॥ सकल सिधि के दाता। नन्दन उमा महेश। बुद्धि वल विद्या वानी या.. सुमिरत नाम गनेस॥ ३॥ आचारज कृत पाठजे। पढ़े सुनै उपदेश। गुरु ग्रन्थन शिर नाइकै। भाषा कथौ सुदेस॥ ४॥ धन्वतरि के पाठ वहु। वहु विधि वहुत विचारि। .. की कवि कहौ वखानु कछु। सूक्षम करौ सचारि॥५॥ पाठ पुरा तन जे सुने। रोग चिकित्सा जानि। ताको वियननि मानि कै। भाषा कहौ वखानि॥ ६॥ चौपाई॥ प्रथम कहौ रोग विचारा। पुनि मै कहौ तिनके उपचारा॥ मुनि विचारि.. ग्रन्थन कहौ। गुरु प्रसाद ते भाषा लहौ॥

अंत—अथ मूत्र परिच्छा॥ दोहा॥ आदि धारा परित्याजः जैम धारा समा धरः॥ पट तेलं परि खनं॥ साधु आसाधत रोगः॥ मूत्र मध्ये जथा तैलं यास्थिने वल लोपीयाः। साधू भवेत रोग. असाधु विन्दुरग तुरग ए तू॥ वाते न विस्तं छय साकेन वन्गोयः सिर्श्र से वुधई॥ सेत धारा वल श्लष्टं पित्त धारा चिमध्येमः॥ सरोगी रक्त धारा चः कृष्ण धारा भवै सिती॥ ऐसी मूत्र परीक्षा समायां॥.. ..

विषय—(१) ज्वर के लक्षण भेद तथा चिकित्सादि वर्णन १–५ (२) अतीसार तथा सग्रहणी वर्णन ५–६ (३) सर्व विकार वर्णन कृमिरोगादि चिकित्सा तथा रक्त पित्त चिकित्सा ९–१७ (४) यक्ष्मा रोग। छर्दि रोग श्लेष्मा तथा सन्नपातादि वर्णन और मूत्रादि परीक्षा १७–२४

संख्या १३४ याज्ञवल्क्य स्मृती भाषा, रचयिता—गुरप्रसाद पण्डित, पत्र—१५०, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९३०=१८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर परसूसिंह ग्राम—रामनगर, डाकघर—दारा जिला—सीतापुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ याग्य वल्क्य स्मृति भाषा लिख्यते—किसी समय सोम श्रवस आदि मुनियों ने जोगियों में श्रेष्ठ याज्ञ वल्क्य मुनि को भली भांति पूजकर पूछा कि महाराज ब्राह्मण आदि वर्ण ब्रह्मचारी आदि आश्रम और दूसरे अनुलोमज प्रति लोमज संकर जातियों का सपूर्ण धर्म हमसे कहिये॥ मिथिला नगरी में रहने वाले उस जोगीश्वर ने क्षण भर ध्यान कर मुनियों से कहा जिस देश में काले हिरन होते हैं उसके धर्म सुनो॥ अठारह पुराण न्याय मीमांसा धर्म शास्त्र और व्याकरण आदि छ अर्गो के सहित चारों वेद ये १४ विद्या के अर्थात् पुरुषार्थ ज्ञान के और धर्म के कारण हैं मनु १ अत्रि २ विष्णु ३ हरीत ४ याज्ञ वल्क्य ५ भृगु ६ अंगिरा ७ यम ८ आपस्तम्ब ९ संवत १० कात्यायन ११ बृहस्पति १२ पराशर १३ व्यास १४ संख लिखित १५ दक्ष १६ गौतम १७ शाता तप १८ और वशिष्ठ १९, इतने धर्म शास्त्र के मुख्य बनाने वाले हैं।

अंत—जो पंडित इस धर्म शास्त्र पर एक पर्व में द्विजों को सुनावे उसको अश्वमेध यज्ञ का फल होता है। इन सब बातों की भी अनुमति आप करें ऐसा मुनियों का कहना सुनकर यज्ञ वल्क्य जी ने भी प्रसन्न हो और परमात्मा को नमस्कार करके कहा कि ऐसा ही होवै॥ इति श्री याज्ञ वल्क्य स्मृति भाषा पंडित गुरप्रसाद कृत संपूर्ण समाप्त संवत् १९३० वि०॥

विषय—याज्ञ वल्क्य स्मृति का भाषानुवाद।

संख्या १३५ ए गोपी पचीसी, रचयिता—ग्वाल कवि, पत्र—१४, आकार—७¾ × ५½ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५, रूप—नवीन लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० बैजनाथ ब्रह्म भट्ट, स्थान—असौसी, डाकघर—बिजनौर, जिला—लखनऊ।

आदि—अथ गोपी पचीसी प्रारम्भ। जैसे कान्ह जान तैसे उद्धव सुजान आये। हैं तो महिमान पर प्रानन निकारें लेत॥ आस बेर ब्रजत अँजाये इन हाथन तें। तिनको निरंजन कहत कूठ धारें लेत॥ ध्यान पर पेरी पर पेरी सब पर पेरी। योग परचे क्यों भेजि परचे हमारे लेत॥ अपनी ही सूरति को साजिके सिंगार सब। भेजो सखा मेडुआ कुमंत्र अति भारा है॥ जानी ही की मैरि है अँदेस दै सँदेश यह। लायो सा अँदेस के विचारन नगारा दे। ग्वाल कवि कैसे ब्रज वनिता बचैगी हाय। रचैगी उपाय कौन द्वारन किंवारा दे॥ चौगुनी दवानलि ते जोर विरहागिनि ही। सो तौ करी सौगुनी ये योग व्रत धारा दे॥

अंत—ऊधौ याको श्री कृष्ण सों॥ रावरे कहे ते हों गयो हो ब्रज बालन पै। देखति ही मोहि कियो आदर अपारा है॥ कहते तिहारी बात गात ते भभूके उठे। परत बरद की जमों ति ज्यों अगार है॥ ग्वाल कवि कहै लागी लपट दवागिन सी। दौरो मैं तहा ते तौऊ झरसो दुधारा है॥ गोपी विरहागिन में जोग उड़ि गयो ऐसें। जैसे उड़ि जात परें पावक में पारा है॥ इति श्री गोपी पच्चीसी॥

विषय—गोपी उद्धव संवाद ॥

संख्या १३५ बी. कविहृदय विनोद, रचयिता—ग्वाल कवि, पत्र—८१, आकार—७३/४ × ५१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४८, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० बैजनाथ महाभट्ट, स्थान—असौंसी, डाकघर—बिजनौर, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । कवि हृदय विनोद लिष्यते कवित्त चंडी को—दंडी ध्यान ल्यावे गुनगावे है अदंडी देव । चड भुज दंडी आदि केत करि छंडी है ॥ कीरति अखंडी रही छाय नव खंडी खूब । चौभुज उदंडी धरा मे अमि मुदंडी है ॥ छंडी करना की ब्रह्ममंडी कहे ग्वाल कवि । छंडी नही पैज भक्त पालन घुमंडी है ॥ मंडी जोति जाहिर घमंडी खल खंडी दंडी । अधिक उमडी वल चंडी मातु चंडी है ॥ १ ॥

अंत—चौसर चमेली चारु चांदी के चगेरन लै । चंदन कपूर पूर करि डार्यो भास भ्रास ॥ गेह तजि आई नये नेह में बिकाई हाय । देह में अदेह दुखदाई यो त्रास त्रास ॥ ग्वाल कवि मजुल निकुज में बुलाई हाय । आपन दिखाई तूव सूरत विलास भास ॥ आस में विसास दै विलासी रस रास प्यारे । करी मैं निरास पास अवहू न आस पास

विषय—(१) पृ० १ से ११ तक चंडी , गंगा जी , जमुना जी , त्रिवेणी जी, कृष्ण जी और रामचन्द्रजी के विषय के कवित्त । (२) पृ० ११ से १५ तक—गजोद्धार और सान्त रस के छन्द । (३) पृ० १६ से १८ तक—ब्रज भाषा , पुरवी , गुजराती तथा पजाबी भाषा के कवित्त । (४) पृ० १८ से ४० तक—षट ऋतु के कवित्त । (५) पृ० ४० से ४८ तक—कलियुग के कवित्त और प्रस्तावक । (६) पृ० ४८ से ५२ तक—नेत्र तथा कुच संबधी कवित्त (७) पृ० ५२ से ८१ तक—फुटकर शृंगारादि के कवित्त ।

संख्या १३५ सी. नखशिख बृजराज श्री कृष्णचन्द्र जी, रचयिता—ग्वाल कवि (मथुरा), पत्र—१२, आकार—१३ × ७३/४ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८४ = १८३७ ई०, लिपिकाल—सं० १९१८ = १८६१ ई०

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नष सिष श्री" बृजराज कृष्णचन्द्र जू को लिष्यते ॥ कवित्त ॥ वीन करवर हस कलित वपानियत कीरति तनै या सुरगा मत सुनीसरी ॥ पुनि रुप सुप चद प्रसिधि प्रमानियत जलजन माल मृदुलता विसै बासुरी ॥ ग्वाल कवि निगम पुरान की अधार कहे सुंदर तरंग करि सकै को कवीसुरी ॥ वरनै विसेस कवि पावत नही है थाह सपति मरैया महाराजा जगदीसुरी ॥ १ ॥ दोहा ॥ श्री गुरु श्री जगदंबिका, श्रीपितु दया सुभाय । तिनके चरण सरोज को, वंदत शीस नवाय ॥ २ ॥ कृष्णचंद महाराज के तनको सोभ अपार । सेस महेस गनेस विधि, नारद व्यास विचार ॥ ३ ॥ श्री राधा वाधा हरी, माधा सास्त्र प्रकास, वासी वृंदाविपिन के श्री मथुरा सुप वास ॥ ८ ॥ विदित विप्र वंदी विसद, वरनै व्यास पुरान, ताकुल सेवाराम को, सुत कवि ग्वाल सुजान ॥ ९ ॥ वेद[४] सिद्ध[८] अहि[८] रैनिकर[१] सवत आस्वनमास, भयो दसहरा कौ प्रगट नष सिष सरस प्रकास ॥ १० ॥

अत—सम्पूर्ण मूर्त्ति वर्णन ॥ कोक नद पद का कोस से गुल्फ गोल जंघ, कदली लक केहरी विसाल सों ॥ पान सों उदर नाभि कूपि सी गभीर गुर, उर नवनीतिपानि पल्लव रसाल सों ॥ ग्वाल कवि ललित ललान सी भुजा है वेस, कबु सों गरो है मुख नील कज जालसों ॥ चौंर स्याम केस जो नगजसों सुगध धरो, सीस सो मुकुट सब तन है तमाल सों ॥ ६५ ॥ अथ पूर्नाथ—सेवत नर आसभरन निचित पर मेचे क्यों न जाहि जो रची सभा सुरस की। तिमिर अग्यान को विनास्यो चहे दीपन ती। ध्यावै क्यों न ताहि जाते दुति है दिनेस की ॥ ग्वाल कवि जाके गुनगन को कहै सो को कहे, सो कौन मौन धृत धारी व्यास हारी मति सेस की ॥ त्यागी जग विपमन सिप सिप सिप मेरी लिपि दिपि न मिपि छवि रिप केस की ॥ ६६ ॥ इति श्री ब्रजराज महाराज श्री कृष्णचद जू को नप सिप सम्पूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥ सव जगतां ॥ श्री रामायनम ॥ सवत् १९१८ मिती चैत वदी ५ गुरुवासरे ॥

विषय—श्री कृष्णका नप सिख वर्णन।

सख्या १३६ ए. कासिदनामा, रचयिता—हैदर, कागज—देशी, पत्र—९, आकार—६ × ४ इञ्च, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२ परिमाण (अनुष्टुप्)—२५ पूर्ण, रूप—पुस्तक की भांति, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१९०० वि०, प्राप्तिस्थान—लाला वेनीराम, स्थान—गगागंज, डा० सलेमपुर, जि० अलीगढ़ (उ० प्र०)।

आदि—श्रीगणेशाय नम ॥ अथ कासिदनामा लिख्यते ॥ जो हो कासिद तेरा दिल्ली को जाना। खबर उस कसरी प्यारे की लाना। कइ दिन से उसे देखा नहीं है, कि हम मथुरा चले और वो वहीं है। नहीं है ताब खत लिखने की मुझको। जवानी हाल यह देता हू तुझको ॥ य कहना उस मेरे प्यारे से नागाह। तेरा आशक मिला था घर सरेराह ॥ चला जाता था वह सहरा भटकता। कि हर ना हर कदम पर सर पटकता ॥ कभी वो नातवा खाता था ठोकर। कभू सहरामें यों कहता था रोकर ॥ कि यारब को मेरा प्यारा मिलादे। गमेहिजरा जल्दी अब छोड़ादे ॥

अत—गया वो नागहा दिल्ली शहरमें। दिया हर एक का खत हर एकके घरमें। मेरा पैगाम जब वह याद करके। गया नजदीक उस महरू के घरके। लगा कहने व एक से वो सखुन वर। मिया यहा केसरी रहता कहा पर। कहा उसने कि उसका है यही घर। चले घरमें नहीं है वो सितमगर ॥ यदा दम ले कुछ आराम करले। तु आया जिस लिये वो काम करले ॥ यह कासिद की और उसकी गुफतगू थी। वो आया आप जिसकी आरजू थी ॥ लगा कहने वो मुह से दके दुशनाम। बता तू कौन है किसका है पैगाम ॥ कहा कासिद ने मैं तो वगुना हूं। जवानी तेर आशक की सुना हू ॥ मुझे पैगाम यह उसने दिया है। कि जिसका दिल तूने टुकडे किया है ॥ उसे सब यार समझाते हैं हरदम। मिया तू किस लिये खाता है हरदम। मगर देवेगा फुरसत दूर मुझको। मिलेगा कोई परीरू और तुझको ॥ यह सुन कर वो लगा कहने पियारा। हुआ था किसलिए आशक हमारा ॥ अकेला अगर उसको मैं पाऊ। मजा हम चाह का उसको चखाऊ ॥ भला लखा किया

दिल्ली शहर में । गली कूंचेमें औ बाजार घरमें ॥ एवस हैदर फिकर दिलसे उठादे । नया मजमून और पढ़कर सुनादे ॥ संवत् १९०० आश्विन सुदी १२ द्वादसी ॥

विषय—आशिक ने माशूक को अपना जबानी हाल दिल्ली शहर में भेजा ॥

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के रचयिता हैदर थे इनका और कुछ पता नहीं मालूम है।

संख्या १३६ बी. कासिदनामा, रचयिता—हैदर, कागज—देशी, पत्र - ६, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५, पूर्ण, रूप—पुस्तक की भांति, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१९०० वि०, प्राप्तिस्थान—लाला वेनीराम, स्थान—गंगागंज, डाकघर—सलेमपुर, जि०—अलीगढ़ (उ० प्र०)।

आदि—अंत—१३६ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है:—

संवत् १९०० आश्विन शुक्ल पक्ष १२ लिखी गंगाराम ब्राह्मण मथुरा निवासी ॥

संख्या १३७ ए. सनेहसागर, रचयिता—हंसराज, पत्र—१८, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९४ = १८३७ ई०, प्राप्तिस्थान—नाथूदास बनिया, स्थान—पुरानी बस्ती, कटनी, डाकघर—कटनी, जिला—कटनी (मध्य प्रदेश)।

आदि—श्री गणेश जू ॥ अथ लिष्यते सनेह सागर ॥ छद इतने प्रात होत परकन ते, गिरधर गये मेली ॥ उततै अपनी गई राधिका, मिलने चली अकेली ॥ कान्ह कुँवर सब सघन सगलै ठाढ़े जुरे रहावन ॥ देषी जौलौ कुवर लाड़िली, और सषियन की आवन ॥ कान्ह कुँवर सौ कहत सुदामा, सुनै बात इक मोरी ॥ तुमतै वह तिरछी अषियन सौ, चितवत कुँवर किशोरी ॥ वेइन कोयै उनको हित सौ ठाढ़े इकटिक हेरे ॥ मानहु चतुर चित्र लिख कढ़े पलकन पल सौ फैरे ॥ ठाढ़े लपत परस पर-दोउ लोक लाज नहिं मानी ॥ अति चंचल अषिया सफरी सी सागर रुप समानी ॥ ३ ॥

अंत—इनकौ उन उनकौ इन कीन्हो, नैनन नैन प्रनामू ॥ चले डगर पै इत वे उत कौ, जपत परसपर नामू ॥ घर को मुरक चली इत राधा, कान्हा गये बहोरी । लोक लाज वाटी सलिता भमति हि कानन की होरी ॥ मुरकि मुरकि दोउ जुहुन को, फिर फिर निर पत जाई ॥ आगे जाई आगे जात निशान चलै जनु, पीछे को फह राई ॥५५॥ इते सनेह सागर लीला सम्पूरन ॥ जेठ वदि १२ बुध वासरे संवत १८९४ मुकाम छत्रपुर

विषय—राधा कृष्ण का प्रेम संवाद

संख्या १३७ बी. सनेहसागर लीला, रचयिता—हंसराज बख्शी, कागज—पुराना मोटा कागद, पत्र—८२, आकार—९ × २ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६६५, खंडित रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६१ = १८०४ ई०, प्राप्तिस्थान—राममनोहर विचपुरिया, स्थान—पुरानी बस्ती, कटनी, डाकघर—कटनी, जिला—कटनी (मध्य प्रदेश)।

आदि—श्री वृष भान कर्म्म कुल उच्च, तिहि छिन तहं पग धारे ॥ बाबा नद बरोठे होकरि आदर कर बैठारे आपने अपने गोपिन बालक तुरतहि बोल पठाये करि सिंगार करन कौतूहल घर घरते उठि धाये ॥२४॥ कोऊ बाँधि लाल सिर चीरा कोऊ बाधैं फैटे ॥ आपुस में

सब ही सां हिल मिल करि अंक भरि भटें ॥ कोऊ मोर लिया सिर्पासें कोउ वैन वजावै ।
कोऊ लाल काछनी काछै कूदत तट से आवै । २५ ॥

अंत—या सनेह सागर की लीला केसरी वैसो कहु ॥ ताते सुनें श्रवण पावत हैं पूरन परमा नन्दु ॥ जो सनेह सागर की लीला जो जन जाणै वाते ॥ मन रंजन हे इस लगन की कान्ह मिलन्ह की घातें ॥ ७३ ॥ श्री राधा वर विमल गुरग की निसुदिन सुनै सुनावे ॥ आनद उदित होइ अंतर मन वाछित फल पावे ॥ ७८ ॥ इति श्री सनेह सागर लीलाया श्री बगसी हसराज विरचताया श्री राधा जु सखा भेय्य वर्ननो नाम नम तरो ॥६

दोहा—कविता को पर नाम है लिपि ताको मनुहार । भूलो बिसरो होइ जहँ लीजो मित्र सम्हार ॥ १ ॥ या सनेह सागर की लीला वाचै अस सुने ताको श्री राधा कृष्ण सहाई ॥ श्री राधा कृष्ण विलास अनुलीला वाचै अर सुने ताने राम राम लिपतय चैनसुप अगरघारे कुवर वदि १० सुक्रे को सवतु १८६१ मुकाम नागौंच ॥ रतपाम ॥ राम ॥ राम ॥ राम

विषय—चाथे पत्र से नौवें तक कृष्ण का गैया चराने वन को जाना और यशोदा का आकुल होना । बीस पत्र तक सखियों से कृष्ण की छेड़छाड़ करना ललिता आदि सखियों से कृष्ण का सम्मेलन हे । २० से २७ तक राधा कृष्ण की जान पहचान होना, सुन्दरि की चोरी, राधा की कृष्ण पर तीखी नेमभरी फटकार, दोनों का विस्तृत परिचय तथा प्रेम में फस जाना है । २७ पन्ने से ३२ तक राधा का कृष्ण के वियोग में व्याकुल होना, उनके दर्शनों के लिये तरसना, दूध दही बेंचने के बहाने कृष्ण से मिलना और उन्हे बिना मूल्य मन माना दूध दही देना, अन्त में राधा कृष्ण का धूम धाम सहित—खूब मगल चार बारात भोजना के साथ प्रेम विवाह मधुर छन्दों में वणन किया गया है । ३२ से ४८वें पन्ने तक वृषभान का होरी तथा फाग मनाने के लिये नद को निमन्त्रित करना, सब वृजवासियो का उनके घर साजो समाज से गाते बजाते जाना, खूब फाग खेलना रग और गुलाल की पिचकारियाँ और झोरियाँ और मुट्ठियाँ मारना, कृष्ण और सखियों का झगड़ा, ललता और कमलादि सखियों का बीच पड़कर झगड़े को रफा दफा करना, कृष्ण का जोगी वेष धर कर सखियो के सम्मुख जाना और ललिता की जोगी से नाम धाम, गाम, पन्थ और आराध्य देव पूछना इस पर कृष्ण का अपने को ही निगुन रूप में कथन करना, और अपना इष्ट देव एक "किशोरा' को बतलाना अगम अगोचर अपनी शाला तथा प्रेम का पथ बतलाना ललिता सखी का निगुण, सगुण तथा ब्रह्म रूप से भी पर प्रेम का बतलाना, कमला सखि का कृष्ण को पहिचान जाना और उनकी बातों का भंडा फोड़ कर देना, व्यग से सखियों का योगी को रोकना और भोजन प्रसादी फूलों सब प्रकार से सन्तुष्ट करने को कहना, सब सखियों सहित कृष्ण का बरसाने से आमोद प्रमोद करते हुए नद गाव को जाना वृषभान का नन्द को सत्कार पूर्वक घर को विदा करना । ४८ पन्ने से सखियों का यमुना तट वशीवट को जाना—सखियों के रूप की सुन्दरता का अत्यन्त ललित एव मनोहर छदों में वणन, उनका कृष्ण के प्रेम में आकुल व्याकुल होना आपस में सखियों का वार्तालाप कृष्ण का सखियों के बीच आना और भाति २ के विनोद पूण खेल करना ५६ पन्ने तक है ५६ से ६१ तक सखियों की पूजा करन में कृष्ण का दशन देना

है। ६१ से ६९ तक कृष्ण जी के सखी भेष धारण करना है ६८ पद्य से ७८ तक राधा जी का सखी भेष धरने का वर्णन है यह भेष कृष्ण को छलने के लिये, उनके सखी भेष धरने के बदले में राधा जी ने कन्हैया का रूप धरा।

टिप्पणी—उक्त पुस्तक की चर्चा मिश्र बन्धु विनोद में आ चुकी है पुस्तक रूप राम बगसी की बनाई है उसमें आद्योपान्त ललित पद नामक छंद है एवं कविता भी इतनी ललित है कि वास्तव में ललित पद ही है।

संख्या १३८. हरनाम का बारामासा, रचयिता—हरनाम, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९१० वि०, प्राप्तिस्थान—लाला भोलानाथ हकीम, ग्राम—जगरावा, डाकघर—कासगंज, जिला—एटा (उ० प्र०)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ हरनाम का बारामासा लिख्यते ॥ दोहा ॥ लगा असाढ़ सुहावना घन गरजत चहुओर। पी पी करत पपीहरा औ बोलत दादुर मोर ॥ १ ॥ छंद ॥ अब तो सखि असाढ़ आया मेरी सुधि पिया ने ना लई। घन गरज बैरन बादरी मेरी नींद नैनन की गई किससे कहूं अपना मरम सखि ना अगम जालम नहीं। क्यों कर जिऊं बिन पी मुझे बरषा की रुत बैरन भई ॥ विधना ने मेरे कर्म मे पिय की जुदाई लिखदई। चकवी की जागत पत बिना सखि सोई मत मेरी भई ॥ सूना भवन हरनाम बिन पी पी परेहा कर रहा। गई भूल सब सुख देख दुख पापी पिया ना घर रहा ॥ १ ॥

अंत—गई विधना के हाथ। जब तक मिले न पी मुझे दिन सुझे ना रात ॥ लगा जेठ उठती सीस पर प्यारे की आ कही एक एक में झटपट मैं उलट किवाड़ के पट ने लिपट गई देखने ॥ फरकी भुजा बाई मिल मारे चले परदेस सो चल देखो सखी आये पिया प्यारे रगीले भेष से ॥ सुखिया भई है मुझको भारी नौबते बजने लगीं। जिनका पिया जिसमें मिले खैरात सब बटने लगी ॥ सुबस बसो वो नगर घर जहा बारामासी हो रही बिछड़े पिया हरनाम मिले प्यारे के बल बल मैं गई। इति श्री हरनाम का बारामासा संपूर्णम संवत् १९१० श्रावण शुक्ल नौमी रचा हरनाम दास वैश्य ॥

विषय—इसमें विरहनी ने अपना विरह का दुख बारह महीनो वर्णन किया है।

संख्या १३९. राधिका जी की बधाई, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंचो में, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—चौबे जीवनराम, ग्राम—धौरहरा, डा०—सोरो, जि०—एटा (उ० प्र०)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ राधिका जी की बधाई लिख्यते ॥ सुनत जनम वृष भानु लली को उठिधाई ब्रज नारि हो। मगल साज लिये कर कंगन पहिरे रग रंग सारी हो। जो जैसे तैसे उठिधाई सुनतहि स्वामिन नामा हो ॥ भादौ नदी सास उमगहिं चहु दिशि ब्रज की बामा हो ॥ वेणी शिथिल खसितक चक्षु मुस न लुलित पीठ पर सोहै हो ॥ काजर नयन श्रवण चलत रे बन देखत ही मन मोहै हो ॥ झुम झुम मंडित मुख शशि शोभित बेंदी हीर जड़ाई हो ॥ अधर तमाल रग सो भीने गावत सरस बधाई हो ॥

अंत—सब ब्रज को श्रृंगार रुप रस भाग सुहाग सुहायो हो ॥ मोहन की सरवस सपति सग मिलि बरसाने आये हो ॥ को कहि सकै कहा कहि भाषै कवि पै कहि नहि जाई हो ॥ जो सुख शोभा ताक्षण बाढ़ी अनुभव नयन दखाई हो ॥ नद भवन ते बढ़ि सुख तेहि क्षण क्यों प्रगटायो हो ॥ हरिचद वल्लभ पद वल्ने कवल हरि लखि पायो हो ॥ इति श्री हरिचद कृत राधिका जी की बधाई सपूण समाप्त लिखत रामू बढ़ई कागारोल वाले जिला आगरा की चैत्र बदी प्रति पदा सवत् १९०३ वि० ज राम राम सीताराम लछिमन।

विषय—श्री राधिका जी के जन्म की बधाई वर्णन है।

सख्या १४० ए हरिप्रकास, रचयिता—हरिदास, पत्र—१५०, आकार—१२ × ७½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४१२५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बनवारीदास पुजारी, बामन थोक मदिर, ग्राम—समाई डाकघर—एतमादपुर, जिला—आगरा।

आदि—श्री कृष्ण चद्रायनम । दोहरा । बदौं बारहिं बार गुर चरण कमल रज सीस । पुनि पुनि बदो प्रभु चरण जासु सरण अनईस । कृष्ण चरण की सरण गाहे श्री अनत जुत ध्याइ । जिहि पदरज अज अज शिव धरहि तासु नाम गुण गाइ । दीन बन्धु कृपाल प्रभु तुम सब प्रिय सुचीन्ह । अेसे प्रभु को जान करि चरणनु मे चित दीन्ह । मोहि दीनि प्रभु आनि के कीनों परम सनेह । याते मो मन में बसौ, कृष्ण चरण सों नेह । प्रभु के चरण सरोज गहि भाषा चाहहु कीन । श्री हरिचरण प्रताप ते, चरण शरण गहि लीन । चौपाइ । कृष्ण चरण पकज चित धरऊँ, जीव हितारथ भाषा करऊँ । परि बुधि हीन दीन मति मोरी, हरि गुन कठिन अनत करोरी । पूरि पूरब जे कवि जन भयेऊ, ते हरि गुण गावत नित नयेऊ । पार न काहू पायो भाइ, सहसानन सारद थकि जाई । व्यास आदि जे कविवर भयेऊ, प्रभु गुण गावत नित नयेऊ । परि काहू नहिं पारहिं पावा अपनी जथा जोग मति गावा । याते मो मन परम हुलासा हरि गुण गाऊँ में हरिदासा । हरि कौ दास नाम की आसा और न मेरे कछु अभिलाषा । या मे सुनाम गुन गावा, जाको काहू पार न पावा । लोह रमेरु सु येक प्रमानों, बूड़त सिंधु माह सम जानो ।

अत—सोरठा—हरि प्रकास इहि नाम यामें हरिदासहिं प्रघट । रमें रमा करि धाम तत्त्व गहे वसुद्वै कहे । क्रिया कम सब धम तजि चरण शरण गहि लीन । तुम सर बन्ध कृपाल प्रभु करी कृपा लषि दीन । चौपाइ । दोहा अरु सोरठा नीके गावत गुण गन हरि जी के । पाचे सते पचै गनि लीनें, हरि रस मग्न चरण चित दीनें । चौदस छदरुपाच कवित्ता हरि के चरन कमल बसि चित्ता । के सहस चौपाइ गाइ पाच सते हरि रस रस क्षाइ । अरु अठानवै लेहु मिलाई, हरि पद पद्म करियसिवकाई । परि अनन्यता चित ठहराई, चरण कमल रस भ्रमरहि पाई । दोहा—दोहा क्षद कवित्त करि कृष्ण नाम गुण गाइ । चौपाइ अरु सोरठा पचामृत रस प्याइ । पापी पाषडी अधम गुर द्रोही मति हान । अधिक नून इहि मिरख कोइ सो हरि विमुष मलीन । इति श्री रामायण प्रकासे भक्ति काडे श्री कृष्ण चरित्रे प्रभु नाम गुण वर्णनो नाम दस सतत मस्तरग ॥ ११० ॥ रामजी सहाय रामजो ।

विषय—राम कृष्ण चरित्र, नाम माहात्म्य और भक्ति का वर्णन ।

संख्या १४० बी. वर्षोत्सव, रचयिता—हरिदास, पत्र—३४, आकार—१२ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२७५, रूप—बहुत प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४७ = १७९० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० बाँकेलाल जी अध्यापक, स्थान—फिरोजाबाद, मोह० हंडावाला, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि--श्रीगणेशाय नमः। अथ वसत रितु के पद। मधुरितु वृन्दावन आनंद न थोर। राजत नागरी नवल किशोर। जूथिका जुगल रूप मजली रसाल। विथकित अलि मधु माधकी गुलाल। चंपक नकुलकुल विविध सरोज केतुकी मेदिनी मद मुदित मनोज। रुचिकर चिर वहै त्रिविध समीर, मुकलित नूतन नदित पिकक़ीर। पावन पुलिन घन मजुल निकुज, किसलै सयन रचित सुपपुंज। मंजीर मुरज डफ मुरली मृदंग। वाजत उपग वीना नर मुप चग। मृगमद मलयज कुकुम अवीर, वंदन अगर सत सुरंगीत चीर। गावत सुदर हरि सरस धमारि, पुलकित पग मृग वहत न वारि। जै श्री हित हरिवंश हंस हंसन समाज, अैसे ही करो मिलि जुग जुग राज।

अंत—पिजरी जेमत जुगल किसोर नित रागे अनुरागे दंपति उठै उनीदे भोर। १। अग २ की छबि अवलोकत ग्रास लेत मुप सुपनि निहार जै श्री रुपलाल हित ललित त्रिभंगी विवि मुपचंद चकोर। इति श्री महा हरि भक्त्याभिलाषी हरिदासानुकृत वर्षोत्सव सपूर्णम्। सवत अठारह सौ अधिक कहिये सैंतालीस कार्तिक नवमी कृष्ण मै वार विदित रा ···· ॥ पोथी पूरन भजन हित मनमैं भयो हुलास। चदिरपुर मै वसत है नाम नराइन दास।

विषय—वसंत, फाग तथा हिंडोले एवं जन्मोत्सव संबंधी वधाइयों का वर्णन।

संख्या १४० सी. गुरूनामावली, रचयिता—स्वामी हरिदास, पत्र—२, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रेवतीराम चतुर्वेदी, स्थान—मोहल्ला दुली, फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशाय नमः। श्रीजी सहायः। श्री गुरुनामावलि लिष्यते। दोहा। श्रीगुरुघर परम पद विधि हरि सनकादि। सेवत सहचरि भावनित, नित्य विहार अनादि। दिव्य धाम बृन्दा विपिन दिव्य गौर तन स्याम। दिव्य केलि क्रीड़ित सदा, दिव्य उपासक वास। चौ०। स्वयं प्रकास कृपा करि धाम। सनि कुमार जानि निह काम॥ महल टहलनी धर्म दृढ़ायो सो नारद भागिन पायौ॥ आचारज नारद वपु धायौ पंच रात्रि करि मन विस्तारयौ। तामें गुरु पद राधा स्याम, दिव्य रूप तन वन अभिराम। ४।

अंत—परमानद परम पद दरसी श्री भागौति रीति रस परसी। जन भगवान भजन मन छीनै, कृष्णदेव रसवस करि लीनै। १७। परसोत्तम परसोत्तम भऐ, नंदलाल अपने वपु ठऐ। श्री हरिदेव भगत की माम, आस धीर भजि स्यामा स्याम। आचारज हरिदास प्रकास, वीठल विपुल विहारिनि दास। सरसदेव राजै तिहि गादी, श्री नरहरि स्वामी भक्तिनु गादी। दोहा। आचारज गुरु हरि प्रिया, सहचरि समत कीन्ह। श्रीरसिक

चरन सुप करन जुग श्री पीतावर सिर दीह । रसिक सेव चाहत रहै श्री भगवान दास सुपलीन तिनके भये परमानद जी, परम प्रेम आधीन ।

विषय—गुरु परम्परा का वणन ।

सख्या १४० डी रस के पद, रचयिता—स्वा० हरिदास, पत्र—५, आकार—१२ X ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६०, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रेवतीराम चतुर्वेदी, स्थान—दुली मुहल्ला, फिरोजाबाद, डाक घर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्री विहारी जी । अथ रस के पद । राग का्हरो । माई सहज जोरी प्रगट भइ-रग की गौर स्याम धन दामिनि जैसे प्रथमहू हती अबहू आगेहू रहि हे । न टरि है तैसे अग अग की उजराई, सुघराइ चतुराई सुदरता ऐसें । श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुज विहारा सब वेस वैसें । १ ।

अत—प्यारी अब क्यों हु क्यौंहू आई हे, तुम इत श्रमित अधिक मन मोहन, मैं क्यौंहू समुझाइ है । इत हठ करत बहुत नव नागरि, ते सिये नई ठकुराई हे । श्री हरिदास जू के स्वामी स्यामा कुज विहारी कर जोरि मौन ह दूवरी की राधी पीर-कहो कौने पाइ ह । २१ ।

विषय—राधा कृष्ण के शृगार रस सबधी पद ।

सख्या १४० ई बानी, रचयिता—स्वा० हरिदास, पत्र—२, आकार—१२ X ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रेवतीराम चतुर्वेदी, ग्राम—दुली मुहल्ला फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—अथ स्वामी हरिदास जू की बानी लिप्यते । राग विभास । ज्यौंही ज्यौंही तुम राखत हौ त्यौंही त्यौंही रहियतु है हो हरि । और तो अचरिजै पाइ धरा सुतो कही कान पेंड भरि । जदपि किया चाहौ आपनौ मन भायौ सो तौ कहो क्यों कर राखौ हा पकरि । कहि श्री हरिदास पिजरा के जावर ज्यों फटफटाय रहौ उड़वे को कितोऊ करि । काहू को वस नाहा कृपा ते सब होइ विहारी विहारिन । ओर मिथ्या प्रपच काहे कौ भापिये सो तौ है हारनि । जाहि तुम सौ हित तासौ तुम हित करौ सब सुप कारनि, श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुज विहारी आननि के आधारनि ।

अत—जौलौं जीवे तोलो हरि भजि रे मन, ओर बात सब वादि । धौस चारि के हला भला मै तू कहा लेइगो लादि । माया मद गुण मद जोवन मद भूल्यो नगर विदादि । कहि श्री हरिदास लोभ चरपट भयो, काहे की लागे फिर यादि । १९ । प्रेम समुद्र रूप रस गहरे, कैसे लागें घाट । वेकारयौंदे जान कहावति जानि पन्यौ की कहा परी घाट । काहू को सर सूधो न परे, मारत गाल गली हाट । कहि श्री हरिदास जानहु ठाकुर विहारी तकत ओट पाट ।

विषय—भक्ति के पद ।

संख्या १४० एफ. पद नामावली, रचयिता—हरिदास जी, पत्र—१, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रेवतीराम चतुर्वेदी, स्थान—दुली मोहल्ला फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्री कुंज विहारी लाल की जै । श्री पद नामावली श्री स्वामी हरिदास जू की लिष्यते । श्री हरिदास गाँउ श्री हरिदास गांउ, श्री हरिदास गाढ़ विपुल प्रेम पांऊ । श्री हरिदास गुन रूप तन राऊँ, श्री हरिदास प्रानिकर प्रान जिवाऊँ । श्री हरिदास लेना श्री हरिदास देना, श्री हरिदास गाऊँ भैया कछू मैना । श्री हरिदास दर्यो मे श्री हरिदास रातौ, श्री हरिदास विहार श्री हरिदास वातौं ।

अंत—श्री हरिदास ग्याने श्री हरिदास ध्याने । श्री हरिदास नाम कर कोट ऽ स्नानें । श्री हरिदास मेरे मंत्रमाला, श्री हरदास नाम मुद्रा तिलक माला । श्री हरिदास सेवा श्री हरिदास पूजा । श्री हरिदास भजन विन भाव नहीं दूजा । श्री हरिदास भक्त रित श्री हरिदास परम गत । श्री हरिदास जस गावत भये सुदिढ़ मत । श्री हरिदास वृज रीति श्री हरिदास रस गीत । श्री हरिदास नाम लिये सकल साधन जीत । श्री हरिदास निज दरस श्री हरिदास रस परस । श्री हरिदास सुप देत श्री हरिदास हित हेत । अनंन श्री स्वामी हरिदास निज दास । जे श्री वर विहारन दारा विल सत विलासा । श्री शुभं भवतु ।

विषय—कुछ भक्ति के पद ।

संख्या १४० जी. हरदास जी का पद, रचयिता—हरिदास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१० × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—५६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—वावा हरिदास जी, ग्राम—छर्रा, डाकघर—छर्रा, जिला—अलीगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ हरदास जी का पद लिख्यते । राग टोडी—औधू सव सुख की निधि पाई रे । विपते उलट असीरत हुवा जोतिहि जोति सिलाई रे ॥ टेक ॥ निसि वासर रटिये रसना रुचि अधिक अधिक ल्यौ लाई रे ॥ सतगुरु सवद गगन जव गरजै मृदु वचनन चतुराई रे ॥ सुनि प्रीतम के वचन मनोहर मनसा के होइ वधाई रे ॥ परलै पडी जायथी जड बुधि कोई न सकै भर माई । दिया सुहाग सकल सखियन मे सील सांच ते भाई ॥ हिल मिल हेत अधिक अति आतुर उमगि उचित मुकुलाई ॥ कहै हरदास सवनि सिर ऊपर वांह दई राम राई ॥ १ ॥

अंत—घनाश्री—माई री अपनो पतिव्रत कीजै ॥ कमल नैन के गुन किन गावो, जव लगि जग में जी जै ॥ टेक ॥ विपय मूल वात तजि औरे; चित चरण तन दीजै ॥ गाठी न वींचे ग्रन्थ न लागै, सत्य सुधा रस पीजै ॥ सुनिले सीप समझि मति मेरी । आव घटै तन छीजै ॥ कहै हर दास अवधि दिन आवै; राम रटण करि लीजै ॥ इति श्री हरिदास जी का पद संपूर्ण समाप्त लिखतं केसो दास स्वामी माधव दास का शिष्य ॥

विषय—इसमें स्वामी हरिदास जी के ज्ञान, उपदेश एवं भगवत भजन संवधीपद हैं ।

संख्या १४० एच हरिदास जू की बानी, रचयिता—हरिदास जू, पत्र—२०, आकार—९ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२० रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० गंगाधर शर्मा, ग्राम—गाछ, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—१४० ई के समान।

अंत—परस्पर राग जम्यौ समेत किन्नरी मृदंग सो तार। तिनहु सुर के तान बधान धर धर पद अपार॥ विरस देत धीरज न रह्यौ तिर पलाग डाट सुरमोर निसार। श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंज विहारी जै जै अंग की गति लेति प्रति निपुन अंग अंग अहार॥ ८८॥ तोकौं पाऊं बोलत हरी लाल ठाढ़े कदंब तर। अब कौ असौ ज्यौं किये कहा होत हरी मारि रही कुसमसर॥ कुंज विहारी अपनो अस तासौं क्यौं काज छदम वर॥ श्री हरिदास के स्वामी

विषय—स्यामा कुंज विहारी के संबंध के कुछ भक्ति रस पूर्ण पदों का संग्रह॥

संख्या १४१ कवित्त रामायण, रचयिता—श्री हरिदास या सूर्य यदंश सलह (जायस, रायबरेली), पत्र—१९८, आकार—१२½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, रूप—साधारण, लिपि—फारसी, रचनाकाल—सं० १८९६ = १८२९ ई०, लिपिकाल—सं० १८९६ = १८२९ ई०, प्राप्तिस्थान—राजकिशोर भगवानदयाल जी, ग्राम—जायस, डाकघर—जायस, जिला—रायबरेली।

आदि—सवैया—सनकादिक सारद नारद पाय मनाय सप्रेम विनय यहु गाऊँ। पद पंकज श्री गुरु के शुभ रेणु हृदय निज लाय महा सुख पाऊँ। अवधपुरी मिथिलापुरी लोग सबै कर जोरहु शीश नवाऊँ रचि मोरि पुरावहु जानि मैं दीन अहौं बुधि हीन हदै पछिताऊँ। दो० वाल्मीकि पदहु चरण, प्रेम सहित सति भाय। बुधिदहु वरणहु सुयश कृपा सिंधु रघुराय। पुनि रचि पाप सुहावनी, तुलसिदास उरलाय। कहा यहाँ हरि यश सुखद नेहि कलि कलुप नसाय।

अंत—सवैया—द्वै दुइ पुत्र भये सत भातन, धीर धुरीण स्वरूप निधाना। महिमा पुरि वासिन कौन कहे अवलोकि सिहाहिं सुरस सुजाना है ब्रह्म निरंजन है नहि भूप कहै महिमा जेहि वेद पुराना जास बुधि रही हरिदास कह्यो कविता ही नहीं न अहे चल ज्ञाना।

विषय—राम चरित्र वर्णन।

टिप्पणी—इस पुस्तक की भाषा पूर्वी अवधी है जो मलिक मुहम्मद जायसी की भाषा से मिलती जुलती है। भाषा सरल और सुबोध है।

संख्या १४२ ए रंगभाव माधुरी, रचयिता—हरिदेव भट्टाचार्य (गोकुलगाँव, मथुरा), कागज—देशी, पत्र—१७८, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७३ = १८१६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवकंठ दुबे, ग्राम—बिहगापुर, डाकघर—बिहगापुर, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। श्री राधा वल्लभो जयति ।। अथ श्री रंगभाव माधुरी लिख्यते दोहा—रस मय तिन आनद निधि परम प्रेम के फंद । वसौ सदा हिय दरस के गिरधर गोकुल चंद ॥ १ ॥ चौ०—चौपई रस हे आगा धुरी । कके दुख वाधुरी देखौ सव साधुरी ॥ दो०—भाव चारि विधि केन में सबको अतर भाउ । वीरे राते सेतु फुनि स्यामहिं अधिक गिनाउ ॥ २ ॥ भोग राग सिंगार में इनहिं को संजोग । रसिक दास अनुभव करौ जे भावन के जोग ॥ ३ ॥

अंत—देपत अति सुख होत है भाव माधुरी रग । दरस इहै विनती करत सदा रहौ ही संग ।। रंग रंग के रूप लखि सव विधि पायो रंग । रंग दरस को दीजियो सव रंगनि को सग ॥ इति श्री करंज्योपनाम गोकुलस्य ज्योतिर्वित हरि देव भट्टात्मज हरिदेव भट्टेन गुफिता रंग भाव माधुरी वर्णने केलि दरसन नाम दशम उल्लास संपूर्ण लिपि कृतं व्रजलाल ब्राह्मण पठनार्थं महारानी श्री श्री लक्ष्मी जी श्री श्री राजा वृजेन्द्र श्री रणधीर सिंह राजतव्य संवत् १८७३ मिती असाढ़ वदी १३ रविवार शुभं ॥

विषय—रंग, भाव, रस, शृगार आदि वर्णन है ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता हरिदेव उपनाम दरस हे जो इस प्रकार लिखा हैः— "दरस इहै विनती करत सदा रहों ही संग । देपत अति सुख होत हे भाव माधुरी रंग ॥ रंग रग के रूप लखि सब विधि पायो रंग ॥ रंग दरस को दीजियो सव रगनि को संग ॥ दरसन यो सग्रह करो अपनो मति अनुसार सुहृद होइ चित देइ के कीजो रसिक विचार" ॥ ये गोकुल ग्राम निवासी थे । लिपिकाल सवत् १८७३ वि० हे ।

संख्या १४२ बी. केशवजसचंद्रिका, रचयिता—हरिदेव, पत्र—११५, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०३५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६६ = १८१२ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा महेंद्रमान सिंह (महाराजा भदावर), स्थान—नौगवाँ, डाकघर—नौगवाँ, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री हरदेव जी सहाय ।। अथ केशव जस चन्द्रिका लिष्यते ।। दोहा ।। प्रथम वन्दि हरि गुरु चरण, मन मापन के चोर । एक नाम अरु एक वपु, श्री मन्नद किशोर ॥ १ ॥ श्री गुरु नद किशोर पद, वदौं करि मन चाव । छिप्यो जानि जिन प्रगट किय, केशव हिय कौ भाव ।।२।। वृन्द्रावन विहरहि सदा तिहि पदकज मकरंद स्वाद विषै लम्पट सदा, श्री केशव सुष कंद ।। ३ ॥ आचारज वपु धारिकैं, प्रगटे जनु अनुकूल । तिहिं पद रज वंदौ सदाँ, सव मगल कौ मूल ॥ ४ ॥ सोरठा ।। कीनो चंद्र प्रकाश, मोद करन जन मन कुमुद । मो हिय करौ उजास, श्री केशव जस चन्द्रिका ।। ५ ॥

अंत—दोहा—सो श्री केशव जस लिपन, मो मग भयो उछाह । कन कन अपनी उक्ति दे, रसिकन कियो निवाह ।। तिन रसिकन के ग्रंथ तैं, कन कन भिक्षा लीन । ताकरि केशव चन्द्रिका, प्रगटी नित्य नवीन ।। ज्यौ ज्यौं जुग सखि जूथ मिलि, केशव करत विलास । त्यौं त्यौं ही जस चन्द्रिका नित नित करत प्रकास ।। सोरठा—केशव रति मन गूढ़, को जाने विन जुगल वर । मो हिय कै आरूढ, आपुन जस आपुनि कह्यौ ॥ दोहा—श्री

केशव जस चन्द्रिका, जद्यपि कियौ प्रकास। तदपि न सेवत मद मं, सहस त्रविधि भव वास॥ जो जन केशव चन्द्रिका, कहि सुनि करें विचार। ता हिय जुगल प्रसाद तें, प्रगटै नित्य विहार॥ समत सकल पुराण के, रस नव ऊपर सार। हिय हरिबोध प्रवाधिना भई चन्द्रिका चारु॥ इति श्री मत्सकल जनात करण मल तिमिर निकर निरस नानु शील सीतल रसिक लोचन कुमुदप्रकासन परा पर प्रेम पीयूष पूर करा पूण श्री केशव चन्द्र चन्द्रिका तुरुज्यताँ इति श्री केशव जस चन्द्रिका सपूर्ण—

विषय—(१) मगला चरण, मिश्र मोहन लाल की कृष्ण भक्ति—उनकी स्त्री भाग वती तथा उनका पुत्र कामना—अपूर्व कृष्ण भक्ति तथा व्रत पूजादि, स्वप्न, पुत्रोत्पत्ति, वधाइ पुत्र की बाल्यावस्था और किशोरावस्था वर्णन, उसका स्वाभाविक कृष्ण प्रिय होना—[१–२०] (२) माता पिता का विवाह प्रस्ताव, पुत्र की अस्वीकृति और भक्ति की प्रधानता का वर्णन माता पिता का प्रस्ताव वापिस लेना और प्रसन्नता प्रगट कर भक्ति में अद्वितीय होने का उपदेश देना बालक केशव का कृष्ण की शोध में निकलना और भक्तों के योग्य मिलने पर नाना प्रकार की सेवाओं की कल्पना करना [२०–६७] (३) थकित होकर केशव का रुदन गुरु कृष्ण स्वामी का प्रगट होकर मन्त्र देना, कुंजा की शोभा वर्णन कर उनको दिखाना और अपने निवास स्थान पर लाना, यहा पर उनको विविध सखियों को देखकर सतोष लाभ करना, गुरु द्वारा अष्ट सखियों का वर्णन, [६७–८२] (४) गुरु द्वारा गुरु धर्म वर्णन तथा सखी सम्प्रदाय की सब बातें बतलाना, गुरु परम्परादि वर्णन, भगवान की आज्ञा से एक राजा द्वारा मन्दिर बनाया जाना और केशव का विवाह करना, दम्पति केलि, विष्णु भक्ति केशव की रचना का सार व वश विस्तार ग्रन्थ पूर्ति एवम् निर्माण काल [८२—११५]।

सख्या १४३ लघुतिब्बनिघट, रचयिता—हरिप्रसाद, कागज—देशी, पत्र—९०, आकार—१० × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८१०, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६० = १८०३ ई०, लिपिकाल—स० १९०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामदयाल निगम, ग्राम—शिवगढ़, डाकघर—दप्पल, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशायनम अथ लघु तिब्बनिघट हरि प्रसाद कृत लिख्यते॥

	नाम वस्तु	अवगुण	निवारण	गुण
१	अदरख	गरमप्रकृति वाले को	बादाम तेल	गरम खुश्क है भोजन को पचाता अफारे को वादी को उदर की तरी को दूर करता है॥
२	अखरोट	—	—	गरम खुश्क हे वीर्य को उत्पन्न करता है मैथुन शक्ति को बल देता है। प्रकृति को नरम करता है दस्त उदर हृदय गुर्दे और कलेजे को बल देता है।

३	अफीम	बुद्धि को	केशरदाल चीनी	सर्द खुश्क है नींद लाती है पीड़ा को शान्ति करती है वायु को खोती उदर में अफरा लाती और नजले को भी गुणदायक है।
४.	अनन्नास	—	नोन खटाई मसाला	ठंडा और तर है पित्त की गरमी को दूर करता है उदर को बल देता है।

अत—४. हींग—अवगुण—मस्तक कलेजा। निवारण—अनार गुण—गरम खुश्क है सर्दी के रोगों को गुण करती है वादी को हरती भोजन को पचाती कामदेव को बल देती। ५ हरफा खेडी—अवगुण निवारण-शहद गुण—सर्द तर है पित्त को शान्ति करती है। उदर को बल देती है वात तथा कफ को उत्पन्न करती है इति श्री लघु तिब्ब निघंट हरि प्रसाद कृत सपूर्ण समाप्त. लिखा गंगू राम कुरमी वैद्य रामपूरा सवत् १९०२ वि० ॥

विषय—इस ग्रन्थ में १३३६ वस्तुओं के नाम और उनके गुण अवगुण लिखे हैं ॥

संख्या १४४. मृगया विहार, रचयिता—हरिराम, पत्र—६, आकार—७३/४ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०३, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१५ = १८५८ ई०, लिपिकाल—स० १९१५ = १८५८ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा महेंद्र मानसिंह, महाराजा भदावर, स्थान—नौगांव, डाकघर—नौगॉव, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ मृगया विहार लिष्यते ॥ गौरी सुत गौरी गवरि, गोपति गोधर गाइ। पद वदन करि सवन के, कहियत नृप जस गाइ ॥ १ ॥ सुनि सुनि जस रसदान प्रति, जोजन प्रगट पचीस। चलि गृहते हरिराम जू, आये जहँ नृप ईश ॥ २ ॥ नव गायें में नवल नृप, श्री महेन्द्र हरि नाम। दरसि परम आनन्द भयो। मदन रुप अभि राम ॥ ३ ॥ पॉडु पुत्र[५] प्रति चन्द्रमा,[१] भूमिखड[९] पुनि एक। सवत में मृगया रची, हरीराम करि टेक ॥ ४ ॥

अंत—दंडक—चहकति महि महाराज श्री महेन्द्र सिंह, सहज सवारी में सुरेश शीश लटकत ॥ मटकत वीर धीर हींसत सुंहस गज सुडनि फुहारिन सौ भीजि रेणु अटकत ॥ कवि हरि राम जू जहान के प्रवल पर देपि सु प्रताप पौन चक्र ऐसे भटकत ॥ सटकत दुष्ट हृदे खटकत भार फणी। फेरि फेरि लेत फण कूर्म पृष्टि परकत ॥ ५९ ॥ चचला ॥ श्री महेन्द्र सिह जू महावली पराक्रमी। काम रुप काम दानि शुद्ध सजमी ॥ छमी तस्य पूर्ण मोद सौ विहार जो सिकार की। सो हरी रची सु सुछत्रि वंस धर्म सार की ॥ ६० ॥ इति हरि राम का वर्णन कृत मृगया विहार समाप्तं शुभम् स० १९१५ ॥

विषय—भदावर (नौगवॉ-आगरा) नरेश महाराजा महेन्द्र सिंह की मृगया का वर्णन।

संख्या १४५ शिक्षापत्र, रचयिता—हरिराय (ब्रज्ञात प्राप्त), कागज—देशी, पत्र—३७०, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५९२०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२३ = १८६६ ई०, प्राप्तिस्थान—चौबे जमुनालाल, स्थान—घगघर, अलीगढ़, डाकघर—अलीगढ़, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ श्री कृष्णाय नम ॥ श्री गोपी जन वल्लभाय नम श्री हरी राय जी कृत शिक्षा पत्र लिख्यते ॥ प्रथम पत्र शिक्षा पत्र —अब श्री हरिराय जी शिक्षा करते हैं जो लौकिक वैदिक कार्य के में आवे सबसे मनको उद्वेग करके तथा लौकिक वैदिक काय वन्ये हू करिके श्री कृष्ण के दशन को जैये सो प्रभु तो सदा आनद रूप ह सो जीवन को समुप क्लेश रूप देषिके उदासी न होय । ताते लौकिक काय सिद्धि न होय अथवा बिगर जाय परन्तु मन में क्लेश न करिये तैसे हा वैदिक काय सिद्धि न होय अथवा बिगार होय तहा या समै मनमें क्लेश नाहिं करिये ।

अत—अब श्री हरि राय जी कहत हैं तिनको हे नाथ तुम छोड़त नाहि निश्चय प्राप्त हुइ रहत ह तिनकी प्रसंसा ही करी अपने जानत हौ जद्यपि जीव भगवत नाम हू नाहिं लेत कछू धम नाहीं ह तब तुम अपने प्रति आ केलि रीझौ अगीकार किये हैं ताते हे नाथ हमहू श्री वल्लभाचाय जी के आश्रित है ऐस क ऊपर प्रसन्न होय नाथ हमकू खोटे जानि दोष देषि छोडेंगे । तुम्हारी प्रतिज्ञा भग होयगी निश्चै ताते कृपा करौ वाहे ते तुम श्री आचाय जी से प्रतिज्ञा करी है निज ब्रह्म सबंध कराओग तिनके सकल दोष दूरि होयगो तिनको अगीकार करोंगे सो शिक्षा दो तरह में कही ह ॥ ब्रह्म सबंधे करणात्सुर्वषां देह जिवयो सर्व दोष निवत्तहि दोषापच विधास्मृत । इत्यादि वचन ते तुम्हारे दोष देखेंगे तो तुम्हारी प्रतिज्ञा जायगी तातें अपनी प्रतिज्ञा के लिये श्री महाप्रभू जी क आश्रितन को जानि कृपा करौ इति श्री हरि राय जी कृत शिक्षा पत्र सपूण मासान मासे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे तीज सवत् १९२३ वि० लेखक भवाना राम श्री द्वारिका धीस जी के मदिर के मुखिया पन्नालाल जी के पठनाथ झालरापाटण स्थान गनेश वारी ॥ श्री द्वारिकाधीश जी की ज ॥

विषय—इस ग्रन्थ में ४१ शिक्षाप्रद पत्र हैं जो हरि राय जी ने अपने भाई को लिखे थे तथा जिनमें श्री कृष्ण भक्ति का वणन है ।

संख्या १४६ सुदरी तिलक, रचयिता—भारतेंदु बाबू हरिश्चद्र (काशी), पत्र—४०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४९६ खंडित रूप—पुराना, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० विष्णु भरोसे, ग्राम—देवीपुर, डाकघर—मरहटा, जिला—एटा ।

आदि—जाहिरे जागति सी जमुना जब बूड़ै बहे उमहै वह बेनी । त्यो पदमाकर हीरा के हारन लाय के गगनि से सुख दैनी ॥ पायन के रग सों रगि जात सी भातहि भाति सरस्वति सेनी । पैर जहाइ जहा वह बाल तहा तहा ताल में हात त्रिबेनी ॥ १ ॥ आइ हुती अन्हवावन नाइनि । सोधैं लिये कर सूधे सुभाइनि ॥ कचुकी छोरि धरै उबटैबे को ईंगुर से रग की सुख दाइन ॥ देवजू रूप की राशि निहारत पाय ते शीश लौं शीश ते पाइनि ॥ ह्व रही ठौरहि ठाढ़ी ठगासी हसै कर ठोढ़ी दिये ठकुराइन ॥ २ ॥

अंत—धुरवान की धावनि मानो अनग की तुग ध्वजा फहरान लगी ॥ नभ मंडल है क्षिति मडल है छन जोति छटा छहरान लगी ॥ मति राम समीर लगे लतिका विरही वनिता थहरान लगी ॥ परदेश में पीतम पायो संदेश पयोद घटा घहरान लगी ॥ २ ॥ सजि सोहै दुकूलन विज्जु छटा सी अटा में चढ़ी घटा जोवती है ॥ रग रांती सुनै धुनि मोरन की मदमाती सयोग सजोवती है ॥ कहि ठाकुर वे पिय दूर वसे हम आसुन ते तन धोवती हैं ॥ धनि वे धनि पावस की रतियां पति की छतिया लगि सोवती है ॥ ३ ॥ भूमि हरी भई गैलै गई मिटि नीर प्रवाह वहात्र वहा है । कारी घटा ने अधेरो कियो दिन रैनि में भेद कछू ना रहा है ॥ ठाकुर भौन ते दुसरे भौन लौ जात वनै न विचार महा है । कैसे के आवैं कहा करै वीर विदेशी विचारे ने दोप कहा है ॥

विपय—इस ग्रन्थ में अनेक प्राचीन कवियों की कविताओं का सग्रह है ॥

संख्या १४७ ए. भगवद्‌गीता, रचयिता—हरिवल्लभ, कागज—देशी, पत्र—११२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८९६, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७७१ = १७१४ ई०, लिपिकाल—सं० १८२४ = १७६७ ई०, प्राप्तिस्थान—काशीराम ज्योतिपी, स्थान—रिजौर, डाकघर—रिजौर, जिला—एटा ।

आदि—श्री भगवद्‌गीता जिसमें श्री कृष्ण और अर्जुन का संवाद है लिख्यते ॥ धर्मक्षेत्र कुरु क्षेत्र में मिले युद्ध के साज । संजय मोसुत पांडवनि कीने कैसे काज ॥ संजय-उवाच ॥ पांडव सेना व्यूह लखि दुर्योधन ढिग आइ । निज आचारज द्रोण सो वोले ऐसे भाइ ॥

अंत—जोगेश्वर श्री कृष्ण जू अर्जुन है जेहि ठौर । तहां विजय अरु जीत है अटल सपदा और ॥ यह गीता अद्‌भुत रतन श्री मुख कियो वखान । वार वार निरधार करि परा भक्ति को ज्ञान ॥ × × हरि वल्लभ भापा रच्यो गीता रुचिर वनाइ । सदाचार वरनन कियो अष्टादश अध्याय इति श्री भगवद् गीता सूपनिपत्सु व्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन संवादे मोक्ष सन्यास जोगो नाम अष्टादशोध्याय इति श्री भगवतगीता संपूर्ण लेखक राम विलास पाठक शिव गंज संवत् १८२४ वि० राम राम ।

विपय—भगवत् गीता का भापानुवाद ।

सख्या १४७ बी. भगवगीता, रचयिता—हरिवल्लभ, पत्र—७८, आकार—७ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३३ = १७७६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० हरिप्रसाद आचार्य, स्थान—आवलखेडा, डाकघर—आवलखेडा, जिला—आगरा ।

आदि-अंत—१४७ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री भगवद्‌गीता सूपनिपत्सु व्रह्म विद्यायां योग शास्त्रे श्रीकृष्ण अर्जुन संवादे मोक्ष संन्यास योगो नाम अष्टादशो अध्याय । १८ । सवत १९३३ सुखसरा माघसुदी श्रीमीजी । रामकृष्ण इति श्री ।

सख्या १४७ सी भगवद्गीता, रचयिता—हरिवल्लभ, पत्र—७५, आकार—७½ × ६½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०३१, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२६ = १८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० दाताराम जी दीक्षित, ग्राम—जयनगर, डाकघर—डोहकी, जिला—आगरा।

आदि अंत—१४७ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है —

इति श्री भगवद् गीता सुप निपत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रो श्री कृष्ण अर्जुन सवादे मोक्ष सन्यास योगो नाम अष्टा दशोऽध्याय। १८। इति श्री भगवद्गीता सपूर्णम् शुभ भूयात् सवत् १९२६ शाके शाल्वाहनस्य १७९१ मिती माग सिर सुदी प्रतिपदा १ शनिवासरे को लिपी लिप्यत ब्राह्मन तुलसीराम वाडे मध्ये शुभ मस्तु श्री राधा कृष्ण जी सहाइ। श्री श्री—राम राम।

सख्या १४७ डी श्री मद्भगवद्गीता, रचयिता—हरिवल्लभ, पत्र—२४, आकार—८½ × ५½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६०, रूप—बहुत प्राचीन, लिपि—फारसी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर हुक्मसिंह, अध्यापक, ग्राम—फरहारा, डाक घर—सिढ़ाकुर, जिला आगरा।

आदि-अंत—१४७ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है —

इति श्री भगवद् गीता सूप निपद् सो ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन सवादे मोक्ष सन्यास जोगो नाम अष्टदशोऽध्याय सम्पूरन समाप्त श्री भगवद् गीता हरि वल्लभ कृत महा कहा। श्लोक —अति अत कोप कटुकाचि वानी दरिद्र बंध सुजनस्य वेर। नीचन प्रसगा प्रदार सेवा नर स चिह्न नर्क वसति॥

सख्या १४७ ई भगवद्गीता, रचयिता—हरिवल्लभ, पत्र—४४, आकार—९ × ५ इंच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४४ = १७८७ ई०, प्राप्तिस्थान—राधाकृष्ण, बुकिंग क्लर्क स्थान—मथुरा कैंट, डाकघर—मथुरा, जिला—मथुरा।

आदि अंत—१४७ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है —

इति श्री भगवद् गीता सूपनषत्सो ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे मोछ सन्यास योगो नाम अष्टऽदशमोध्याय। १८। श्री सवत्सरे। १८४४। मासोत्तमे मासे सित पक्षे पुन्य तिथौ। ११। बुधवासरे श्री प्रति लिपित मिश्र परस राम वासी सादूपुर मध्य श्री राम राम राम।

सख्या १४७ एफ भगवद्गीता भाषा, रचयिता—हरिवल्लभ, पत्र—४९, आकार—१० × ४½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री महंत भजनदास जी, ग्राम—चित्रहाट, डाकघर—नौगवाँ, जिला—आगरा।

आदि अंत—१४७ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है —

इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां जोग शास्त्रे कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यास जोगे ममष्टदशोध्याय ॥ १८ ॥ शुभ ॥ इति श्री गीता भाषा संपूर्णं ॥ संवत् १९०० लिषितं लाला बलदेव पठनार्थे लाला नंद किसोर जी ।

संख्या १४७ जी. राधानाम माधुरी, रचयिता—हरिवल्लभ, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—९ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७३ = १८१६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवकंठ दुबे, ग्राम—बिहगापुर, डाकघर—उन्नाव, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री राधारमन जी सहाय ॥ अथ राधा नाम माधुरी लिख्यतेः—वृन्दावन रानी श्री राधा । मोहन मन मानी श्री राधा ॥ जय नित्य विहारनि श्री राधा । वृज सुख विस्तारनि श्री राधा ॥ कीरति की कन्या श्री राधा । सबही विधि धन्या श्री राधा ॥ जय रास विलासनि श्री राधा । नित कुज विहारनि श्री राधा ॥ हरि उर वनमाला श्री राधा । गुन रूप रसाला श्री राधा ॥ श्री दामा अनुजा श्री राधा । वृप दिन मनि तनुजा श्री राधा ॥

अंत—वृन्दावन सोभा श्री राधा । क्रीडा तरु गोभा श्री राधा ॥अति सुधर सरूपनि श्री राधा । माधुरीय अनूपनि श्री राधा ॥ कमनीय कुमारी श्री राधा । हरिवल्लभ प्यारी श्री राधा ॥ श्री कृष्ण कर्षनि श्री राधा । दिव्या सु केशी श्री राधा ॥ अति मंजुल केशी श्री राधा । अभिसार प्रयत्ना श्री राधा ॥ अत्यत प्रमन्ना श्री राधा । कल केलि परावधि श्री राधा ॥ रस रीति रही सुधि श्री राधा । इति श्री राधा नाम माधुरी सपूर्णम् संवत् १८७३ वि०

विषय—श्री राधा जी का गुणगान किया गया है ।

संख्या १४७ एच. गीताका पद्यानुवाद, रचयिता हरिवल्लभ, पत्र—१०६, आकार—७¾ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—८७५, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२२ = १८६५ ई०, प्राप्तिस्थान—प० गंगाविश्नु अवस्थी, ग्राम—पुरहिया, डाकघर—निगोहां, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ अंगी कृत या ग्रन्थ की । ऋषि जु पराशर नन्द । कृष्ण देव परमात्मा । छद अनुष्टप छन्द ॥ १ ॥ प्रज्ञावाद कहत है । अनु सोचन को सोच । यहै वीज या ग्रन्थ को । याको सोच न मोच ॥ २ ॥

अंत—भक्त वश्य श्री कृष्ण जू । यहै कियो निरधार । करैं भक्ति इच्छा सबै । यहै वेद को सार ॥ ८२ ॥ इति श्री भगवद्गीता सूप निषत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे मोक्ष सन्यास योगो नामाष्टादशोध्याय. ॥ १८ ॥ समाप्त. ॥ शुभ ॥ संवत् १९२२ ॥ चैत्र कृष्ण ११ गुरुवार ॥

विषय—गीता का पद्यानुवाद ।

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रन्थ श्री मद्भगवद् गीता का पद्यानुवाद है । इसमें केवल एक ही छन्द—दोहा—का व्यवहार हुआ है । कुल दोहे ७१३ है ।

संख्या १४७ आई. श्री मद्भगद्गीता, रचयिता—हरिवल्लभ, पत्र—५४, आकार—७½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८५, रूप—प्राचीन,

लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० शालिग्राम जी, ग्राम—महुवा डाकघर—बाह, जिला—आगरा।

आदि अंत—१४७ एच के समान।

संख्या १४७ जे भगवद्गीता, रचयिता—हरिवल्लभ, पत्र—१६, आकार—४ × ३ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० भोला नाथ शर्मा, ग्राम—फतहाबाद, डाकघर—फतहाबाद, जिला—आगरा।

आदि अंत—१४७ एच के समान।

संख्या १४८ ए रसिकविनोद, रचयिता—हरिवंश, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३२ = १७७५ ई०, लिपिकाल—सं० १८४० = १७८३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० जवाहर सिंह ग्राम—सेलइ डाकघर—मुरादाबाद, जिला—हरदोइ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः—चाहत पसु पहार चढ्यो बिन पावन होति है रीति जो ताको॥ नाउ न सूधो कहे मुख सा चहे बावरो बात न की यहुताको॥ जात हसेइ सबै जगमें यह जानि कछू न भयो डर ताको॥ भाषत हौं सिसुता को अयान पै न्यान निबाहिबो शैल सुता को॥ बरन नायका नायकनि लच्छन लच्छ समेत। दपि मतो सब कविन को भेद कछुक कहि न्त॥ नाइका लच्छन—साभा जाकी दपि की अनंद हिए से होइ। रस सिंगार बाढ़े तहा वही नाइका सोइ॥ उदाहरण॥ केस छुटे छहरैं चहुओर मनोहर तूल महा मखतूल सौं। अग की रग निहारत हीं उमगी अति आसिन मैं सुख मूल सो॥ देखत मोद बढ्यो हरिवंश भयो कछु और का आरइ सूलसा॥ आनन प्यारो लसै छवि भार भौंरन घेरगो गुलाब की फूलसों॥

अंत—लाजनि सौं न कह तिया पियहिं मिरे हु बैन। विहत हाय भाषत तहा न कवि रसको जैन॥ उदाहरण—केलि के भान में आलिन आइ मिलाइ दइ करिकै हित नीके। नैन निचोहैं भये हरिवंश निहारत ही मुख चदहिं पीके॥ भावते सो भई भेंट जऊ न भये तउ एकऊ नेकऊ जी के॥ जात न लाज न चैन बहे है गात महा अभिलाष हैं तीके॥ सज्जन लखिवे ग्रन्थ को करि हैं मनमें मोद। रसिकन का हरिवंश कवि कीन्हा रसिक विनोद॥ रामनयन बसु इदु के कातिक पहिले पारा। दसमी मगर को रच्यो पूरन रस को दास॥ इति श्री रसिक विनोद समाप्त शुभ मस्तु॥ संवत १८४० चैत्र मास कृष्ण पक्षे तृतीया।

विषय—नायक नायिका भेद और रसादि का वर्णन।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता हरिवंश कवि थे। निर्माण काल संवत् १८३२ वि० है। इसको इस प्रकार लिखा है—रामनयन बसु इन्दु के कातिक पहिले पारा। दसमी मगर को रच्यो पूरन रसकी दास॥ लिपिकाल संवत् १८४० वि० है।

संख्या १४८ बी रसिकविनोद, रचयिता—हरिवंश, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—९००, रूप—

प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२३ = १७६६ ई०, लिपिकाल—स० १८४५ = १७८८ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला शिवराम पटवारी, ग्राम—विशुनपुर, डाकघर—जलेसर, जिला—एटा।

आदि—१४८ ए के समान।

अंत—दो०—सज्जन लखि है ग्रन्थ को करि हैं मन में मोद। रसिकन को हरि वश कवि कीन्हों रसिक विनोद ॥ राम नयन वसु इन्दु कै कातिक पहिले पाख। दसमी मगर को रच्यो पूरन रस को दाख ॥ इति श्री रसिक विनोद समाप्तं शुभ मस्तु। संवत् १८४५ आश्वनि मासे कृष्णपक्षे तिथौ सप्तम्या चंदवासरे लिखतं इन्द पुस्तक।

विषय—नायक नायिका भेद और रस एवं हाव भाव वर्णन।

संख्या १४८ सी. रसिकविनोद, रचयिता—हरिवंश, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४०, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२३ = १७६६ ई०, लिपिकाल—स० १८५६ = १७९९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवदयाल ब्रह्मभट्ट, ग्राम—मोहम्मदपुर, डाकघर—बेनीगंज, जिला—उन्नाव।

आदि—१४८ ए के समान।

अंत—दोहा—सज्जन लखि के ग्रन्थ को करिहैं मनमो मोद। रसिकन को हरिवंश कवि कीनो रसिक विनोद ॥ रामनयन वसु इन्दु को कातिक पहिले पाप। दसमी मंगर को रच्यो पूरन रस को दाप ॥ इति श्री रसिक विनोद समाप्तं शुभ मस्तु संवत् १८५६ वि० श्रीगणेशाय नम. ॥ राम राम श्री सीता राम नमः ॥

विषय—नायक नायिका लक्षण और रसों का वर्णन।

संख्या १४८ डी. सुनारिन लीला, रचयिता—हरिवंश, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२६ = १८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० स्याम-मनोहर शुक्ल, ग्राम—मानपुर, डाकघर—हरदोई, जिला—हरदोई।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ सुनारिन लीला लिख्यते ॥ तन सामरी सुघर सुनारी ॥ रतन जटित के विछिया लाई नाद परम रुचिकारी ॥ टेक ॥ इनको शब्द जू परेगो प्रीतम के जव कान। मनको खेंचि जु लाइ है इनमें सुयत्र वलवान ॥ बडे नगर हौ वसति हौ मो में वडो गुमान। राज भवन ही वेचिहौ जहां वडो पाइहो मान ॥ सवही सो यो है वैठी पनघट वाट। ये विछियां सोइ लेइगी विधि ऊचो रच्यौ लिलाट ॥

अंत—पन डब्बा सौरभ धरे भाजन धरि रस पान। चरण पलोटत रूप हित अलि कोउ रिझवत रस गान ॥ श्री हरि वंश प्रसाद वल वरणी विविधि पलाग ॥ वृन्दावन हित वारने सुख भीने जुगुल सुहाग ॥ कौन गुरू पै ये पढ़े वचन चातुरी लीक। सवकी वुद्धि परोडि कै कहै वात ठिक ठीक ॥ ललिता इन बीथिन में मोचित पावत चैन। चले अधिक अकुलाइके यह घर सुख देखन नैन ॥ इति श्री सुनारिन लीला हरिवंश प्रसाद कृत संपूर्ण समाप्त. ॥

विषय—श्री कृष्ण जी का सुनारिन का रूप धारण कर राधिका से प्रेम सहित मिलना ॥

संख्या १४८ ई सुनारिन लीला, रचयिता—हरिवंश, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप)—८८, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबू सिंह ठाकुर, ग्राम—रामनगर, डाकघर—बारा, जिला—सीतापुर।

आदि-अंत—१४८ डी के समान।

संख्या १४८ एफ अनंतव्रत कथा, रचयिता—हरिवंश, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२४ = १७७० ई०, प्राप्तिस्थान—लाला राजकिशोर, ग्राम—आदिदपुर, डाकघर—अतरौली, जिला—हरदोई।

आदि—श्रीगणेशाय नमः अथ अनंतव्रत कथा भाषा लिख्यते ॥ सबेरे के समय गंगा आदि नदियों में स्नान कर और अपने नित्य कर्म को पूरा कर अनंत भगवान को अपने मनमें ध्यान एक चित्त हो के बैठे। और चिकने कलस को दो वस्त्रों से लपेट कर धरे और मूठीभर कुशा है के शेषजी बनावें उस कलश के आगे भाग में शेष जी को बनावे और फिर अनंत देव का ध्यान धरे। चतुर पुरुष एक गोचम के बराबर पृथ्वी को गोबर से लीपे और उसमें आठपत्तों का कमल बनावे और कलस में आमके पत्ते धरे और फिर उस कमल के ऊपर धरे फिर प्राणायाम करके तिथि आदि का नाम लेकर संकल्प करे ॥ पृथ्वी ति० । इस मंत्र से आसन विधि को करके कलश० सर्वे सिता० मंत्रों से कलस और वरुण की पूजा करे फिर शंख और घंटा की भी पूजा करे।

अंत—ब्राह्मण ने चौदह वर्ष में जिस फल को पाया उस फल को इस व्रत के करने से और कथा सुनने से प्राणी एक ही वर्ष में प्राप्त हो जाता है हे राजा यह व्रतों में उत्तम व्रत हमने तुम्हें सुनाया जिस व्रत के करने से प्राणी सब पापों से छूट जाता है। और जो इस कथा को सुनते और पढ़ते हैं वे सब पापों से छूट कर विष्णु लोक को चले जाते हैं। श्री कृष्ण भगवान बोले हे युधिष्ठिर जो पवित्र प्राणी संसार सागर की गुफा में सुख से विचरने की इच्छा करते हैं वे अनंत देव का पूजन करके अपने दाहिने हाथ में अनंत का उत्तम डोरा बांधते हैं इति श्री अनंत व्रत कथा रघुवंश कृत संपूर्ण समाप्त संवत् १८२४ आश्विनि सित पक्ष नौमी—

विषय—अनंत भगवान के व्रत की कथा वर्णन।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के भाषा कर्त्ता हरिवंश थे। इस ग्रन्थ से इनका और कुछ पता नहीं चलता।

संख्या १४८ जी पंछी चेतावनी, रचयिता—हरिवंश, कागज—पुराना, पत्र—१०, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, खंडित, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० गोविंद प्रसाद ब्राह्मण, ग्राम—हिंगोट खिरिया, डाकघर—यमरौली कटारा, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेस जू सदा सहाय। अथ लिखाते पछी। दोहा—साउनके दम लाठते, दाउन दमकत जोर। नदनवल कैसी सय छाजत, नाचत मोर। कहा हो मेरी सखी कैसे दिल समझाय। आधी रात पपीहा दिलमें खटकत आय। खेलत चौंर स्याम संग राधा प्यारी आय। सुख पायौ सब सखिन नै मुरगा बोली आय।

अंत—मौतिन की माला कटकाछनी विराजै ओंढे विधारी तन केसर के बोरिकी। हाथके लुकुट लियौ चन्दन की पौरकी दिये धेज जरकीम पेच तन नरोर की।……जोति लगी हरिवस जू विचारी हर सीच उँ मोर की। मोर के तो आज विन्द्रावन पोर पोर करके तो जैने जुगल किसोर की (कवित्त अत्यन्त अस्पष्ट है) दोहा—कुच कठोर कर लरम हे, पिय पकरत है धाय, मै डरपति हो हे सखी, अनी० पैठ न जाय।

विषय—पक्षी वर्ग में भी नायक तथा नायिका व्यवहार वतलाया गया है।

संख्या १४९ ए. रागसार, रचयिता—हरिविलास, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३४, परिमाण (अनुष्टुप्)—९७२, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० शिवमहेश, ग्राम—विशुनपुर, डाकघर—अलीगज, जिला—एटा।

आदि—अथ गाने की पुस्तक लिख्यते ॥ श्री गणेशाय नमः राग रागिनी प्रारंभ. ॥ राग कालंगडा ॥ देखि सखी छवि नदन की। निरखत अलक पलक नहि लागै भेदि गई उर चोट मदन की ॥ १ ॥ मुकुट लटक कुडल की आभा भाल विराजै खौर चदन की ॥ २ ॥ मुख मुसक्यान विलोकत सजनी भूलि गई सुधि अपने सदन की ॥ ३ ॥ कटि पट पीत माल वैजती नूपुर धुनि राजीव पदन की ॥ ४ ॥ हरि विलास हरि अंग अंग सोभा गिरा थकी कह सहस वदन की ॥ ५ ॥ राग रामकली—रामकली वोलन वन लागी, जीवन प्रान प्रिया नहि जागी ॥ मद मद हरि बीन वजावत, रस भरी राग रागिनी गावत ॥ पुनि सरोज पद चापि जगावत, उठो भामिनी आलस त्यागी ॥ राम कली० ॥ सारस हस मोर महि डोलै गुजत भृ ग कुज दिल खोलै। नाना भाति विहगम वोलै कोक लोक मेंटत अनुरागी ॥ रामकली० ॥ पवन सुगंध वहै सुख दाई कुसुम लता झुकि झुकि महि आई। जागि प्रिया लखि पिय मुसकाई हरि विलास प्रीतम रस पाई ॥ रामकली० ॥

अत—राग जै जै वती—सुन री सखी कोऊ वंसी वजावै। कैसी करू मोहि नीद न आवै ॥ १ ॥ वैरिन अब प्रगटी दुख दायन सोवत रजिनी मोहिं जगावै ॥ २ ॥ तीछन तान लगत उर मोरे राग रागिनी गाय सुनावै ॥ ३ ॥ या ब्रज रहत वनै कहौ कैसे वसुरी मनमथ वान चलावै ॥ ४ ॥ सासु ननद की त्रास कठिन अति सो दई मारी व्याज छुडावै ॥ ५ ॥ जवते भनक परी सुनि मोरे तवते मोहि कछू नहिं भावै ॥ ६ ॥ हरि विलास हरि वेणु रसीली लै लै नाम पुकारि वुलावै ॥ ७ ॥

विषय—राग रागिनी वर्णन।

संख्या १४९ बी. रागसार, रचयिता—हरिविलास, कागज—देशी, पत्र—४८, आकार—८ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२११, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला भजनलाल पटवारी, ग्राम—रानीपुर, डाकघर—मारहरा, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ राग समग्र लिख्यते ॥ श्री गणपति के सुमिरि के शारद को शिर नाय । राग सार रचना करूं राग रागिनी गाय ॥ राग रामकली —रामकली बोलन बन लागी । जीवन प्रान प्रिया नहिं जागी ॥ मद मद हरि बीन बजावत । रस भरी राग रागिनी गावत । पुनि सरोज पद चापि जगावत । उठो भामिनी आलस त्यागी ॥ १ ॥ सारस हस मोर महि डोलैं । गुजत भृ ग कु ज दिल खोलैं ॥ नाना भांति बिहगम बोलैं । कोक लोक मेंटत अनुरागी ॥ २ ॥ पवन सुगध वहै सुखदाई । कुसुम लता झुकि झुकि महि आई ॥ जागि प्रिया लखि पिय मुसकाई । हरि विलास प्रीतम रस पाई ॥ रामकली बोलन बन लागी ॥ ३ ॥

अंत—राग जै जै वन्ती—सुन री सखी कोऊ बंशी बजाव । कैसी करू मोहिं नींद न आवै ॥ वैरिन अब प्रगटी दुख दायन, सोवत रजिनी मोहिं जगावै ॥ तीछन तान लगत उर मारे, राग रागिनी गाय सुनावै ॥ या ब्रज रहत बनै कहौ कैसे, बसुरी मन अब बान चलावै ॥ सासु ननद की त्रास कठिन अति, सो दइ मारी लाज छुड़ाई ॥ जबते भनक परी सुनि मारे । तबते मोहिं कछु नहिं भावै ॥ हरि विलास हरि वेणु रसीली, लै लै नाम पुकारि बुलावै ॥ इति श्री हरि विलास कृत राग सार संपूर्ण समाप्त लिखत बैजनाथ मिश्र स्य पठनाथ आसौज मास कृष्ण पक्षे द्वितीया सवत् १९४० वि० राम राम राम राम ॥

विषय—राग रागिनियों का वर्णन ।

सख्या १४६ सी राग ज्ञान समग्र, रचयिता—हरिविलास, कागज—देशी पत्र—२४, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप् —३२८, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—चौधरी गगासिंह, ग्राम—विशुनपुर, डाकघर—भूमरी, जिला—एटा ।

आदि—१४९ ए के समान ।

अत—राग खम्माच—मोहिं देखि अचानक रोकि डगर हरि लिपट चिपट गयोरी ॥ आवत ही जमुना जल भरि के औचक आय गयो छल करिके । घट पटक्यो भइ कीच धरनि मम चरन रपट गयो री ॥ १ ॥ पट उघारि सब अग उनि हारयो बरबस पकरयो हाथ हमारो ॥ सबरी हरि हरि लाज आजि रवि तनया तट गयो री ॥ २ ॥ जसुमति पूत अनोखो जायो चलत पथ मोहिं कठ लगायो । हरि विलास दिन रैन रटकि उर नागर नट गयो री ॥ ३ ॥ इति श्री राग रागनी समग्र ग्रथ सपूर्ण लिखा मैया राम फाल्गुन बदी चौदस सवत् १९३२ वि० ॥ नारायण नारायण जय जगदीश हरे ॥

विषय—राग रागिनी वर्णन ।

सख्या १४९ डी रोगाकर्षण ग्रथ रचयिता—हरिविलास (लखनऊ), कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—८ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१९ = १८६२ ई०, लिपि काल—स० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० दालचंद गौड़ ग्राम—राजगढ़, डाकघर—छर्रा, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ अथ हरि विलास कृत रोगाकर्पण ग्रन्थ लिख्यते ॥ दोहा—जय जय गुरू पद पद्म रज वन्दौ वारंवार । भव भेषत वर रुज समन दमन शोक संसार ॥ पुनि वन्दौ सिंधुर वदन शंभु सुनु गण राज । विघन हरन सब शुभ करन राखत जन की लाज ॥ वदौ धन्वन्तर चरण औ अश्वनी कुमार । विश्व रोग भव हरण कौं लीने जिन औतार ॥ सकल सुरनि वन्दौ वहुरि विधि महेश घन श्याम । कवि कोविद पुनि विप-गण सबको करौ प्रणाम ॥ गात ताप हिम कर हरत भव भय हारक राम । सब गद गजन ग्रन्थ यह रोगाकर्पण नाम ॥ सारंग धर माधव सहित लोलिम राज समेत । इन सबको मत लै रच्यो हरि विलास जग हेत ॥ नाडी परीक्षा—हस्त अगूठा मूल थल धमनी धाम प्रधान । दामोदर सुत जिमि कह्यो सो मैं करत वखान ॥ वात नाटिका गति प्रथम द्वितीय पित्त की होय । कफ की नाडी तीसरी हरि विलास करि सोय ॥

अंत—जो यह भेपज खात ता न रहत तन कोइ विथा । ज्यो द्विज धर्म नसात पियत वारुणी वार इक ॥ छद—भुज सहस भंजन भुज शिरोमणि कनक कश्यप नर हरी ॥ तन ताप ग्रीपम विधु असुर हरि तम रवि अघ सुर सरी ॥ रुज अखिल मत्त मतंग केहरि ग्रन्थ यह भेपज खरी ॥ कृत हरि विलास निवास तट सुचि गोमती लक्षण पुरी ॥ दोहा—अक चन्द्र ग्रह काक दग वर्प मार्ग तम जीव । रिपि तिथि पूज्यो ग्रन्थ वर जग सुख हेत अतीव ॥ इति श्री रोगाकर्पण नाम ग्रन्थ हरि विलास कृत संपूर्ण समाप्त. लिखा रामदास चैत्र पक्ष कृष्ण द्वितीया सवत् १९३० वि०

विपय पृ० १ से २ तक—वदना नाडी परीक्षा व उसके भेद लिखे है। २ से १३ तक—जलवायु परीक्षा उसके लाभ हानि ज्वर परीक्षा उसकी औपधियां ॥ १४ से २६ तक आख कान नाक मुख रोग व उनकी अनेक औपधियां वर्णन है। २७ से ४० तक पुरुप स्त्रियो के गुप्त रोग और उनके लक्षण एव उनकी औपधिया समयानुकूल लिखी हैं। ४० से ५५ तक तेल व भस्म धातुओं के फूकने की विधि लिखी है। ५६ से ६० तक विविध प्रकार के रोग फोडा फुन्सी इत्यादि की औपधियाँ लिखी है।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता हरि विलास थे। पिता का नाम दामोदर था। निर्माण काल सवत् १९१९ वि० और लिपि काल सवत् १९३०। लखनौ गोमती तट निवासी थे।

सख्या १५०. शब्दसागर, रचयिता—हजारीदास (उरेरमऊ, बाराबकी), पत्र—४०, आकार—७½ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३६, खडित, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८९५ = १८३८ ई०, लिपिकाल—स० १९६७ = १९१० ई०, प्राप्तिस्थान—महत चद्रभूपण दास, ग्राम—उमापुर, डाकघर—मीरामऊ, जिला—बाराबंकी।

आदि—सुमिरन नाममत भूपाल। अवरमत जत सकल रैय्यत, समुझि दीख हवाल। जोग जप मख दान नेम आचार दीपकमाल। नाम भानु प्रकाश लखि दुरि जात दुति ततकाल। श्रुति कहत जहँ लगि कर्म शुभ ग्रसि रहे सब कलि काल। निर्वाध केवल

नाम वर परताप परम विशाल । नहि निकट आवत समन गण डरपंत कृतत कराल । सुमिरौ हजारी नाम सत मत छोडि सब भ्रम जाल ।

अत—आप मेरे जग जीवन के प्यार । सुमिरन सत्य नाम दम दम प्रति, निसु दिन रहत सभारे । वेद तात स्वर प्रथम हेत रवि, तिलक विभूति सँवारे । सेत स्याम जुग वरन मत्र मनि चिह्न प्रकट कर धार । सेल्ही से सनसत उर अद्भुत, अति विचित्र छवि सार । ताजी तत्त सीस छवि देवत, मगल प्रद भ्रम हारे । सुमति मनहुँ कर पहिरि सुमरनी कुमति कुचाल नेवारे । मानहु घड़ी छिपा कर धारन, पाच पचीस विसारे । गहे दीनता भाव निरतर अहमित गत्र विदारे । पियत सुधा छवि नयन अयन मुद रोम २ मतवार । सपनेहु अवर भावनहि जेहि मन, नामहि नाम पुकारे जन हजारि उन्ह चरन कमल रज, जीवन प्रान हमारे । दो०—सब नामहि दुगुना करै, सह्र जोरि गुन तीन । दुइ बे भागे सेप धरु ररकार जग भीन । दोहा नाम निरगुनो तानियुत, पुनि त्रैगुन त्रैभाग । जिमि नाहीं वहु शेप रहि तिमि जग मिथ्या त्याग

विषय—निर्गुण भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

सख्या १ १ उपदश चिकित्सा, रचयिता—हजारीलाल (इटावा), कागज—देशी पत्र—३८, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१६ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—नानकचद श्रीवास्तव, ग्राम—कमलागढ़ी, डाकघर—वजीदपुर, जिला—अलीगढ़ ।

श्री गणेशाय नम ॥ अथ उपदश चिकित्सा नाम ग्रन्थ लिख्यते ॥ अथ आतशक रोग की उत्पत्ति के लक्षण ॥ ससार में गर्मी को उन नामो में बोलते हैं कोई आतशक कहता है कोई उपदश कोइ फिरग कोइ चीतौरी इन नामो से प्रसिद्ध है । यह आतशक रोग वायु का भेद है सो बहुत गर्मी वाली स्त्रियों के सग से अथवा उसका संग किसी और ने किया हो वह पुरुष जहा मूते वहा पर यह भी मूते अथवा उसका किसी तरह भोजन या पानादि मे सग करै तो वायु अपने कारण से क्रोध को प्राप्ति होकर इस रोग को प्रगट करती है अथवा जो क्षीण पुरुष होय और मैथुन बारबार करे तब वह अत्यत क्षीण होय तब इसके वधेज नहीं रहै और वायु का नाना प्रकार की शरीर में पीड़ा होय तब इसके वायु पित्त कफ ये सब अत्यत कोप को प्राप्त होंय और यह आगतुक नाम फिरग वायु को करै सो फिरग वायु तीन प्रकार का है शरीर के मध्य नसों में धस जाय ॥

अत—मरहम-छोटी इलायची, कत्था पापड़ी, शीतल चीनी सुपारी जली हुई ये सब बराबर ले परन्तु शीतल चीनी छ्योढ़ी हो इन सबको बारीक पीस कपड़ छान करै फिर गाय के मक्खन को कासे की थारी में २१ बार धोवे फिर उस पिसी हुई दवा को इसको मिला के चोटों पर लगावे तो बिलकुल आराम होगा कैसा ही घाव हो सब तीन रोज में सूख कर साफ हो जावेंगे ॥ पुन ॥ अजवाइन दोनों मिलाये टोपी दूर किये हुए गरी पुरानी पारा, गुड पुराना वाय विड़ग ये सब एक २ तोला ले पहिले इन सबको पीस छान गुड़ में मिला पीछे पारे को मिला दो पैसा ढवल भर की गोलिया बाधे । एक गोली सुबह दही के

साथ खाय आतशक जाय। पथ्य उर्द की धुई दाल आम का अचार गेहूं की रोटी मूग की दाल और दूध नहीं खाय ॥ औषधियों की तौल परमान ॥

तौल—वहलोल—१४ माशेका। वाकला—डेढ मासे का

टक—३ व ४ माशे का। दाम—१ तोला आठ माशे का

वाक दवांक—३॥ रत्ती तीन चावल का। दिरम ३ या ३॥ माशा का

दिरहम—४८ जौंका

माशा—८ रत्ती का

मिस्काल—३ माशा ६ रत्ती ॥

विषय—उपदंश की चिकित्सा।

संख्या १५२. आल्हाखंड (अल्हानिकासी), रचयिता—लाला हजारीलाल (फरूखाबाद), पत्र—३२, आकार—९¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६४, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० रामलाल सिंह, ग्राम—शेरपुर लवल, डाकघर—निगोहा, जिला—लखनऊ।

आदि—सुमरन कीजै राम नाम को। जासो कोटिन पाप विलाय ॥ कितनेउ पापी भये दुनियां में। अन्त में लेइ राम को नाम ॥ चाखि पदारथ सो वह पावै। चढि वैकुठ धाम को जाय ॥ अजामिल पापी भयो जगमें। ताकी कथा कहौ कछु गाय ॥ पाप करत सब वैस गवांई। वेश्या घर में लीन्ह विठाय ॥ ऐसो पापी भयो अजामिल। ताकौ हाल सुन्यौ चितलाय ॥ व्याहता त्रिया को दु:ख देवै। नित वेश्या को करै पियार ॥ देश अजामिल कन वज कहिये। तहँ पर पापी को निज धाम ॥ एक दिन साधू आये कनवज में। हरि जन को घर पूछन लाग ॥

अंत—इतनी सुनि कै तव ऊदल ने मनमें सुमिर सारदा माय। भाला मारो एक हाथी के हाथी पैठ जिमी पर जाय ॥ हाथी गिराय दियो ऊदन ने अव दूसरे का सुनो हवाल ॥ दंत पकरि के फिर ऊदल ने औ साहू को दीन्ह गिराय। देखि वहादुरी ये ऊदल की जैचंद वहुत खुशी हुइ जाय ॥ वॉहि पकरि फिर आल्हा को औ दरवार में गये लिवाय। खातिर दारी करि ऊदल की औ रिजगिरि में दीन्ह वसाय ॥ करन वास रिजिगिर मे लागे यारो सुनियो कान लगाय ॥ ऐसी निकासी भई आल्हा की सो मै गाय के दीन्ह सुनाय ॥ मास महीना सावन कहिये आल्हा में कीन्हौ तैयार ॥ नाम हजारी लाल हमारो जानत हमको सव संसार ॥ इति श्री फरुखावाद निवासी हजारी लालकृत अल्हा निकासी सम्पूर्ण ॥

विषय—(१) पृ० १ से ३२ तक—पृथ्वी राज का माहुल के उकसाने पर चदेल राजा से घोडे मांगना, वनाफरो (आल्हादि) का घोडे न देना, उनका राज्य से निकाले जाने पर जयचद के यहॉ पहुचना, जयचद का आश्वासन न देना, वनाफरो का उसके राज्य में लूट खसोट करना और युद्ध छेड देना। फलस्वरूप एवं थक कर कन्नौज के राजा का उन्हे रिजिगिर में वास देना ॥

संख्या १५३ ए. सर्व संग्रह वैद्यक, रचयिता—हीरालाल (डोड़वा, कानपुर), कागज—देशी, पत्र—११२, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५२०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, लिपिकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—वैद्य रामचरन गौड़, ग्राम—मूसागढ़, डाकघर—मैंढ़, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशायनम अथ सव समह वैद्य लिख्यते ॥ अथ सव धातु फूकन की विधि लिख्यते—अमिड नास की छाल लेइ ताइ के भसम करे हाडी में भसम भरिके परत दै कै धातु धरै जो धातु चाह सो धरै चूल्हे पर रखिके आच करे वही धातु भस्म होइ जाइ ॥ पारा भस्म करने की विधि—जल नीम को याल कर दो टिकिया बनावै तिसमें पारा और ईंगुर दोनों को सीताफल में रखकर कपरौटी करे फिर गज पुट में फूक देइ तो पारा की सफेद खील हो जाइ ॥

अंत—पचेज का इलाज—अबर करा तीन माशे तुकमलंगा ३ माशे सुराजाम सफेद २ माशे सुराजाम मीठी सिंघाड़ा की तरह होती है ये सब महीन पीस टोपहर की रोटी खायके शाम को न खावे और नमाज के पेस्तर आधा घंटा ये सब एक ही खुराक है फांक कर आध सेर दूध पिये ॥ इति श्री सव समह समाप्त लिखी रामदास संवत् १९२४ वि०

विषय—अनेक वैद्यक ग्रंथों से औषधियाँ छांट कर लिखी गई हैं।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के संग्रहकार हीरालाल जाति के हलवाई डोड़वा जिला कानपुर के निवासी थे। इनको हुए १०० वर्ष हो गए हैं। यह ग्रन्थ १९०० सं० में रचा गया था। बाबा जी जिनके यहां ये रहते रहे हैं इन्हें गद्दी धारी चेला बतलाते हैं। लिखने का संवत् १९२४ वि० है।

संख्या १५३ बी. सव समह, रचयिता—हीरालाल, कागज—बाँसी, पत्र—६४, आकार—६ × ३३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री वासुदेव वैद्य हकीम, ग्राम—बसई, डाकघर—तांतपुर, तह०—खैरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—श्री राधा कृष्णाय नमः लिखत उपाय सव समह लिख्यते सार सही। रस नादिक काढ़ाँ। काकरा सींगी, भारग, हरडै, जाने, पीपलि, त्रायमतो, पित्तपापरो, देवदार, बच, कुट जवासौ सुठि, नागर मोथा ॥ धनाकुट की इन्द्र जौ पाढ रेनु कागज, पीपल, अधाकारी, पिपरा मूरन, चित्रक नीम, छालि चिरौंजी त्रयमण, इन्द्रायनी, वायची, विरन, दरद, दोउ अजवाइन ॥ मोथागी १ नवै ॥ इस योपदि दसमुल की समभाग लिजै हींग सम ॥ भाग लिजे काढ़ो पिवतो फेर। आदा कोउ सनि चौवे।

अंत—श्री राम श्री सहाय। श्री राम जी सहाय करो पाने १२ ॥ सीसो २४ ॥ सुरमा २५ आंजन की विधि त्रिफला की पुट दाजे ॥ ३० ॥ सुठी से ॥ ३ ॥ खटाई ॥ खाय ॥ सुभ सरतु ॥ नानी गराय पलाण डेड़ा मध्ये पटनाथ श्री बाबा जी श्री प्रहलाद दास जो सुभमस्तु। श्री राम × × ।

विषय—सब प्रकार के रोगो के लक्षण तथा उनके शमन के अर्थ भिन्न भिन्न प्रकार की दवाइयाँ दी गई है। ज्वर के इलाज की ग्रथ में बहुलता है।

संख्या १५४. रुक्मिणीमंगल, रचयिता—हीरामणि, पत्र—२१, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७३, रूप—प्राचीन, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १८७८ = १८२१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० विश्वेश्वर दयाल, ग्राम—होलीपुरा, डाकघर—होलीपुरा, जिला—आगरा।

आदि—सिधि श्री गनेशायनमः ॥ अथ रुक्मिणी मंगल हीरा मनि कृत लिषते ॥ छद ॥ ..वासिर रुक्ष कुभ सिन्दूर होय दल सुभग कुड कुंडालित विघन भो हरन कुवल सेतु दंतु झल कंत कंध सहिता विषधर फग्स पनि सुभ दनि जइ जये नर हेत डरु हीरा मनि गन पति सरन अति उदार असुभन हरन माग राजु मन सिधि वुधि निधि सोत अगनेग वंदौचरन ॥ दोहा ॥ गन पति मन सुमिरि के। सारद विनऊँ तोहि। वरनो कछु गुन कृश्न के। जही सुमति दे मोहि ॥ शिव विरचि सनकादि सुक। नारदादि (२) व्यास। नमस्कार सबको करौं। धरौ सुमति की आस ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ कुंदन पुर सुभग अति प्रसिद्धि जग जानिये। तहाँ भीषम नय नाथ। वसत सदा मिलि धर्म सो ॥

अत—दोहा—सुकवि रुकम दिय छोडिकै। चले निसान वजाइ। रुकमिन लै हरि द्वारिका। पहुँचे हरि सुप पाइ ॥ १२० ॥ आयो देवनि संग लै। कमला सनु तेहि ठौर। छवि छाई तिहूँ लोक की। बची नही केहु ओर ॥ भवन भवन में है रही। वदी धुनि झनकार ॥ विविध बाजे सब बजे। लोक उचित कीयो तेहु सबै। मगल सुभ गये हीरामनि हरनि। कहे सवे मगन जन आए ॥ छुंये दान मान जुत करहि चरहि गे थिद ध्यान उर जनि भोग। इस रहहि तयज पहि पर मगुर सगि सु उर व्रत नम जाप तीरथ फन पावे रुक मिनि चित्र कहत सुनत चितहिं जे त्यामे लघु वुधि हीरा मनि कहा कही हरि गुन रुप अनूप अव पडित सुकवि सुवुधि नर लीजे चूक सम्हारि ॥ इति श्री रुकमिनी मगलु लिषते सपूरन समापति सवतु १८७८ के साल मिती चैत्र वदि १० चन्द्र वासरे को दुरजन के हेत लिषी मो० नाडली में श्री राम राम राम

विषय—रुक्मिणी-कृष्ण के विवाह का वर्णन।

संख्या १५५ ए. प्रेमलता, रचयिता—हित हरिवश, कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—१० × ६ इ च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८२४ = १७६७ ई०, प्राप्तिस्थान—प० दीनानाथ पाठक, ग्राम—पचौली, डाकघर—जलेसर, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नम. श्री राधा वल्लभो जयति अथ प्रेमलता हित हरिवश चंद्र जू कृत लिख्यते ॥ राग विभास ॥ जोई जोई प्यारो करै सोइ मोय भावै भावै मोय जोई सोई सोई करै प्यारो ॥ मोको तो भामिती ठौर प्यारे के नैनन में, प्यारो भयो चाहै मेरे नैनन के तारे ॥ मेरे तो तन मन प्रान प्रान हू ते प्रीतम प्रिय, अपने कोटिक प्रान प्रीतम मोसो हारे, जै श्री हित हरिवंश हंस हंसनी, सावल गौर कहो कौन कहै जल तरगनि न्यारे ॥ १ ॥

अत—आजु अत दखियतु हो प्यारी रग भरी ॥ मोप न दुरत चोरी वृषभानु की किशोरी । शिथिल कटि की डोरी, नन्द के लाल सों सुरति होरी ॥ मोतिन लर टूटी चिकुर चन्द्रिका छूटी रहसि रहसि लूटी गदन पीक परी ॥ नैननि आलस वस अधर विंब निरसि पुलक प्रेम परस नै श्री हित हरिवश री राजत घरी ॥ इति श्री गोसाइ हरिवश जी कृत प्रेम लता चौरासी पद समाप्तम् स० १८२४ लिखा स्वपठार्थ वावा विनय ॥ राम राम राम ॥

विषय—हित हरिवंश के ८४ पद ।

संख्या १५५ बी चौरासीपद, रचयिता—हित हरिवश स्वामी (वृंदावन), पत्र—३०, आकार—८ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—चौबे श्री कृष्ण जी, स्थान—पिनाहट, डाकघर—पिनाहट, जिला—आग रा ।

आदि—श्री हरिवश चन्द्र जयति श्री वसुनन्दनी जयति ॥ अथ श्री हरिवश जी ॥ कृत चौरासी पद लिख्यते । अथ राग ललित ॥ जोइ जोइ प्यारो करै सोइ मोहिं भावै ॥ भाव मोहिं जोइ सोई सोई करै प्यारो ॥ मोकों तो भावती ठौर घारे के नैननि के तारे ॥ मेर तन मन प्रान प्रानहू तें प्रीतम प्रिय अपने । कोटिक प्रनि प्रीतम मोसो हारें ॥ जै श्री हित हरिवश हस हसनिवास स्गौर कहौ कान करैं जल तरगति न्योर ॥ १ ॥

अत—आजु ग्रदपियत ह हौ प्यारी रग भरी, मोपै न दुरित चोरी व्रपभानु की किसोरी सिथिल कटि की डोरी नद के लालन सा सुरत लरी ॥ मोतियन लर टूटि चिकुर चंद्रिका छूटी रहसि रसिक लूटी गदन पीक परी ॥ नयन आल सर वस अधरविंव निरस पुलकि प्रेम परस जै श्री हित हरि वसरी राजति ररी ॥ ८५ ॥ इति श्री चौरासी पद श्री हित हरिवश गुरु कृत सम्पूर्ण ॥ इति ॥

संख्या १२५ सी चौरासी पदी, रचयिता—हरिवश, पत्र—३३, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० वासुदेव सहाय, स्थान—फतहपुर सिकरी, डाकघर—फतहपुर सिकरी, जिला—आगरा ।

आदि—श्रीगणेशाय नम । अथ चोरासी पदी लिख्यते । जोइ २ प्यारो करै सोइ २ मोहि भावै, भावै मोहि जोई २ सोई करै प्यारे । मोको तो भावती ठौर प्यारे के नैननि में प्यारो भयो चाहैं मेर नैननि के तारे । मेरे तो तन मन प्रान हते प्रीतम प्रिय अपने कोटिक प्रीतम के सों हारे । जै श्री हित हरिवश हस हसिनी सावल गौर कहो कौन करे जल तरगनि न्यार । प्यारे बोली भामिनी आजु नीकी जामिनी । भैंटि नवीन मघ सों दामिनी । मोहन रसिक राइ री माई तासा जु मान करै ऐसी कौन कामिनी । जै श्री हित हरिवश श्रवन सुनत प्यारी राधिका रवन सो मिली गज गामिनी ।

रहसि रहसि मोहन पिय के सगरी लडैती अतिरस लटकति । सरस सुधग अग में नागरि थेई थेई कहनि अवनिपगपटकति । कोक कलाकुल जान शिरोमनि अभिनय कुटिल

भृकुटियनि मटकति ।***** भये प्रीतम अलि लपट निरपि करत नासापुट चटकति । गुन गन रसि कराइ चूडामनि रिमवति पदिक हार पट झटकति । जै श्री हित हरि वश निकट दासी जन लोचन चप वरसा सव गटकति । वल्लवी सुक नक वल्लरी तमाल स्याम संग लागि रही अंग अग मनोभिरामिनी । वदन जोति मनो मयंक अलक तिलक छवि कलंक छपति स्याम अंक मनोजल दामिनी । विगत वास हेम पभ मनो भुवग वेनी दड पिय के कठप्रेम पुज कुंज वामिनी । जै श्री शोभित हरिवश नाथ साथ सुरत अलसवंत उरज कनक कलसरा ।

विषय —श्री कृष्ण राधिका प्रेमसवंधी पद ।

सख्या १५६. वैद्यविलास, रचयिता—हुलास पाठक, पत्र—५२, आकार—८ × ४, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२८, रूप—वहुत प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पडित हीरालाल वैद्योपाध्याय, ग्राम—पद्वान, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री धन्वतराय नमः ॥ अथ वेद्यविलास लिख्यते ॥ चौपाई ॥ प्रथमहिं गनपति चरन मनावौं । तेहि प्रसाद वुधि वल सुप पावौं ॥ पुनि वानीके चरन हृदय धरि । जेहि उर सुमति देहि माया करि ॥ पुनि श्रवे हुलास सुप वानी । त्रिपुर सुन्दरी आदि भवानी ॥ रक्त वसन उर हार विराजे । पग नूपुर किंकिन कटि भ्राजै ॥ नगन जटित कुकुम कर मलवा । कुम कुम कलित सुचर्चित वलया ॥ अरुन किरिनि सम आस्य प्रकासा । भृकुटी कुटिल मनोहर नासा ॥ पद्म त्रिसूल चक्र को दडा । वान संख कर गदा प्रचंडा ॥ औ भुसुन्डि कर वस्त्र सवाँरे समर जीति जिन्ह निसिचर मारे ॥ एह सरुप उर जो नर आनै । सुप सोभा वेरी करि जानै ॥ वैद्य कर्म भाषा करौ । गावत हौं अव तोहि । मातु मुदित मन दीजियै ॥ त्रिपुर सुन्दरी मोहि ॥ सुस्रत चरक निदान जो । कीन्हौ ग्रन्थ विलास । सो प्रसाद तुव ग्रन्थ मथि । भाषा करत हुलास ॥

अंत—ताँवा अविली पत्र सम । कीजै पत्र वटोरि । गंधक चूरन पत्र भरि । सरवा सपुट जोरि ॥ गध पुट कै सीतल करै । नेक मुपनि सो डारि ॥ जौपनिछा मुप मो छुटै । तौ पुनि ताहि सवाँरि ॥ चौपाई ॥ कसौधी गंधक सोपलै । कै कुमारि रस सो पलि मलै । कै अर्क दुध सोषलै बनाइ । कीजै गज पुट सुद्ध वनाइ ॥ दोहा ॥ तौ औषध मिश्रित करै । वरी वांधि कै पाइ । कुष्ट छुई अरु पांडुता रीसा सूल नसाइ ॥ इति श्री हुलास पाठककृत वैद्य विलासे धातूनांमध्यें ताम्र मारन विधि ॥

विषय—वैद्यक वर्णन ।

(१) नाडी परीक्षा—प्रथम प्रकाश—	पत्रा	१	से	४	तक ।
(२) काल ज्ञान—द्वितीय प्रकरण—	,,	४	,,	७	,,
(३) धातु आम्रषादि कारणविधि तृतीय प्रकरण	,,	८	,,	१२	,,
(४) गर्भाधानादि विचार चतुर्थ प्रकरण	,,	१३	,,	१८	,,
(५) नेत्र रोगादि उपचार पचम प्रकाश	,,	१८	,,	२३	,,

(६) समुद्रफल के गुण—षष्टम प्रकाश	,	२३	,,	३२	,,
(७) छर्दि उपचार सप्तम प्रकाश	,,	३२	,,	४०	,,
(८) कंठ कुञ्ज लक्षणादि अष्टम प्रकाश	,,	४०	,,	४४	,,
(९) धातु मारणादि नवम प्रकाश	,,	४४	,,	५२	,,

संख्या १९७ गोविंद चंद्रिका, रचयिता—इच्छाराम, पत्र—१८३, आकार—९३/४ × ६१/२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण,(अनुष्टुप्)—४५२९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६८४ = १६२७ ई०, लिपिकाल—सं० १९१७ = १८४० ई०, प्राप्तिस्थान—मोतीलाल जी, (सुपुत्र रायबहादुर मुंशी कन्हैयालाल डिप्टी कलक्टर), स्थान—इतमादपुर, डाकघर—इतमादपुर, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशायनम । श्री सरस्वत्यै नम । अथ गोविंद चंद्रिका लिष्यते । श्लोक । लक्ष्मी नाम्न्यदया सिंधु समर्थेक पुण्डरी विशालाक्ष वंदे प्रणत पालक । १ । तू गिना स्याम गौरांगा विश्वामित्र पदानुजौ । चाप बाण धरौ पार्थौ वन्द दशरथात्मजौ । २ । वासुदेव देव देवं गोविंदे नान्द गुरम् ॥ रुक्मिणी कान्त स्यामांग चन्द्रह देवकी सुतम् । ३ । सर्वा भिप्राय तत्वज्ञ वेदांग पारग मंगलाच कर्ता र वदे वेदान्त देशिकम् । ४ । सव सारार्थ तत्वज्ञ अच्युताच्युत रुपिण सव मगल दातार रामाचार्य महं भजे । ५ । चतुर्भुज धृतायुधं नारायण नमामि । हरि केशव माधव श्री राघव भजामि । दोहा । यहीं श्री वेदांत गुरु जिन पायौ वेदांत । अपिल भ्रांत के असकृत जासु वचन सिद्धांत ।

अंत—हरिगीत ॥ हरि पतित पावन सरन समरथ सकल आरत भजन । इशान स्वपच गनिका चमकार अपार पल गन तारन । जल रान में पसु वारि कातिन द्रावनाथ उतारन । पठ चाहि नर कस्तागुरादि विवेक नाति छित छानक । यह हाति इच्छाराम का प्रभु वंद विधिन प्रमानक । गिरिधरन वारक रजकी भव सरन हो सुप दायक । प्रणयामि पारथ सारथी सब भांति प्रभु सब लायक । दोहा—भारी भव के सिंधु में, थोरी अधार जहाज, आरत इच्छाराम की, रामानुज की लाज । वपुपादिक मोर सब, मन वच क्रम जो होइ । हरि हरि विधि हरि वस्तु मोइ, हरिपद अर्पित होइ । जो मैं नो मोते न्छु, सो सब प्रभु की वस्तु । का मैं का अपन कियो भयो समस्ति सुभ मस्तु । ३९ ।

इति श्री मद्गोविंद चंद्रिकाया इच्छाराम विरचिताया पचत्वारिंसातम प्रकास ४५ अठे मद्दे चंद्र नन्द माधवे पक्षे सिते सप्तम चद्रवासरे । गोविन्द चंद्र जस चारु चंद्रिका लिप जगन्नाथ जथोक्त पुस्तकक । १ । सं० १९१९ वैसाख मासे शुक्ल पक्षे तिथौ सप्तम्या चंद्र दिने गोविंद चंद्रिका समाप्त मस्तु । श्री कृष्ण । श्री कृष्ण । श्री राम । श्री राम । राधाकृष्णाय नम । राम । राम । ।

विषय—मंगलाचरण तथा ग्रंथ निर्माण काल, उद्धव बद्रिकाश्रम आगमन । कृष्ण का गोकुल आगमन, पूतनावध, कृष्ण नाम करण, बाल विलास, वत्स हरन, कालिय दमन, वृन्दावन दावानल वर्णन नंद विमोचन, वैकुंठ दर्शन, रहस्य लीला, वृषभ केशी वध, मथुरा प्रवेश, अनुराग वर्णन, कंसवध, उद्धव मथुरा प्रवेश, अक्रूर हस्तिनापुर आगमन, कृष्ण

द्वारिका आगमन, कृष्ण कुदन नगर प्रवेश, रुक्मिणी विवाह, कृष्ण विवाह, कृष्ण विवाहप्रवेश, अक्रूर आगमन, मित्रविंदा विवाह, कृष्ण अवधि आगमन, सत्या विवाह कृष्ण विलास, सत्य भामा वर्णन, रुक्मिणी विवाह अनिरुद्ध विवाह, नृग उद्धार, काशीदाह वर्णन, शिशुपाल वध, सुदामा चरित्र, कुरुक्षेत्र वर्णन, कुरुक्षेत्र यात्रा, वेद स्तुति, भगवत् प्रताप वर्णन। ग्रंथ समाप्ति।

संख्या १५८ ए. भक्ति रत्नमाला, रचयिता—ईश्वर कवि (धौलपुर), कागज—देशी, पत्र—५७, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—९, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०।

आदि—श्री राधा कृष्णाय नमः॥ अथ भक्ति रत्न माला लिप्यते। मः सूः सौनक प्रति। सवैया। श्री पति श्रेय पती सुधीया पति लोक पती रु धरापति भारी। ईस्वर यज्ञपति सु प्रजापति सर्वपती विपतीनि बिहारी। सात्वक अध कवि कृश्न पति गति दायक लायक है सुपर्क की। १ ते सब दासनि के रस तागति मोपर होउ प्रसन्न मुरारी॥ सोरठा। उत्पति लयथिति होत। जा रक्षा अभ्दुत अकथ तास नाम नव पोत। भव वारिध तारन तरन॥ २॥ गजमुष सुप जल रासि बदहु करि मो पर कृपा॥ विघन विपति सब त्रास। निर्भय हरि गुन गन गनहु

अंत—अवलोकि कवि हरिवर द्वजाति सुकीन भाषा भाषिकै। पुर धवल मद्धि निवास राधा रवन पद उर राषिकै। नभ राम भक्ति गनेश रद मधु सुक्त गुर दसमी भई। तिह द्यौस करि उन साह भगति सु रत्न माला निरमई। दोहा। भक्ति सुकवि जग मैं जिते ते मो क्रतइ निहारि। दोस न देहु असुद्ध जहां सुद्ध करौ निरधार। इति श्री मत्पुरुपोत्तम चरनार विंदु निर्मित श्री मन्भागवत्ता मृताधि मथित भक्ति रत्नमालायां कवि ईश्वर गुफत. प्रवध वधनो प्राम संपूर्ण।

विषय—भक्ति और सत्संग आदि का वर्णन तथा पूजन अर्चना का निरूपण।

संख्या १५८ बी भक्ति रत्नमाला, रचयिता—ईश्वर कवि (कीठवई, मथुरा), कागज—देशी, पत्र—५७, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबू हनुमान प्रसाद पोद्दार सब पोस्टमास्टर, स्थान—राया, डाकघर—राया, जिला—मथुरा।

आदि-अंत—१५८ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री मत् पुरुषोत्तम चरनार विंद निर्मित श्री मत्भागवता मृताथि सथिन भक्ति रत्न माला यां कवि ईस्वर गुफित प्रबंध बंधनो नाम सपूर्ण॥

विषय—भक्ति और सत्संग माहात्म्य।

संख्या १५८ सी मनप्रबोध, रचयिता—ईश्वरी कवि (कीठवइ, मथुरा), कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—७ × ५¼ इच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२११, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१२ = १८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री हनुमान प्रसाद, सब पोस्टमास्टर, स्थान—राया, डाकघर—राया, जिला—मथुरा।

आदि—श्री राधा माधवा जयति राधा माधा सुमरि बाधक सकल विरोध। मन प्रबोध हित करत हैं निज मति सुमन प्रबोध। १ गन नाइक श्री पाइक्रदुरि समन भाइक मल दानि यश सपति समृद्धि कर करत विघन की हानि २ बाग बादिनी बाग मम बसहु दास तिन करन पढ़त इक ग्रंथ। कर सुख प्रसाद बर आनि ३ बासर सुभ रविपक्ष गृह आगम मधु मास। सुकल मदन तिथि ता दिवस की मो ग्रंथ प्रकाश। मन प्रबोध या ग्रंथ को नाम धर्यौ सुख मद यावे अवगाह सुन मिट सकल जग द्वंद।

अंत—इस्वर कवि निज बुद्धि मत भाष्यौं सुमन प्रबोध राधा माधव के चरन उर धरि नासि विरोध २६ संदिसन वन कर यामा द्विज पतियान राम हँस करिहैं मगन मन वच क्रम हरि पाति २७ मन प्रबोध भाष्यौं सु इह इस्वर मति अनुसार सुन्दर मत हरि जन जिते तद्द कोऊ प्यार। २८ इति श्री मन प्रबोध इस्वर कवि विरचिते। मवधा भक्ति वरनर्न नाम नव मार तांत ९ इति श्री मन प्रबोध इस्वर कवि विरचित संपूर्न।

विषय—भगवद्भक्ति वर्णन।

संख्या १५९ ग्रहफल विचार, रचयिता—ईश्वरदास कायस्थ (आगरा) पत्र—११, आकार—१० × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३०, खंडित, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७०६ = १६०९ ई०, लिपि काल—सं० १९०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबू कैदारनाथ अग्रवाल, स्थान—बाह, डाकघर—बाह, जिला—आगरा।

आदि— म भाव ॥ मात्र पद को कष्ट अति, सम रह भ मार ॥ ८३ ॥ सप्तम सुथ जा भवन नहिं हैम धरन धन धार। निज सौं बहु प्रीति करहि सुत अल्प सिद्धि धान ॥ ८४ ॥ अष्टम सुध मत अहि कदु; कातर दिन सुख काम। राजा सौं अति लाभ सुख, विद्या सुत पुनि काम ॥ ८५ ॥ नौ नौ बुध सुशील धम, नाम तारथ न प्रीति। राज समीपी कुल तिलक दुष्ट वा भय भाति ॥ ८६ ॥ दसम मोम सुत हाद सो, सुदर सुखधान। × × ×

अंत—पुत्र जोर मति ज्ञान को, ईश्वर दास प्रकास। बाहम सब तीनी रची, आपम में ग्रह मन्न ॥ ४६ ॥ नगर आगर में बसौं, मधुरा तार सुभ धाम। सब प्रभन कौ सार है, भाष्या भाष्यौं आन ॥ ४७ ॥ संवत् सत्रह सै गये पट ऊपर पंचास। गोपा गिरि के मध्य यह पूरन करी स विलास ॥४८॥ इति ग्रह फल विचार ॥ सम्पूर्ण शुभ मस्तु। सवत् १९०२ फाल्गुण सुदि १३ भाम बासरे को सम्पूर्ण ॥ जैसी प्रति देखी तैसी लिखी मिती मार्तिक बदी ० चन्द्र वासर को सम्पूरण भई लिखा रघुवर पाठक श्री राधा कृष्ण ॥

विषय—ग्रहों के फलों का विचार।

टिप्पणी—ग्रन्थकार ईश्वर दास जाति के खरे सक्सेना कायस्थ थे। यह अपने पिता का नाम रामशमणि दास और अपना निवास स्थान आगरा बतलाते हैं। साथ ही उनका यह भी कथन है कि उन्होंने प्रस्तुत ग्रन्थ गोपाचल (ग्वालियर) में रचा था। ग्रन्थ के प्रति लिपि कर्ता ने नकल करने में इतस्ततः अनेक स्थलों पर अशुद्धियाँ की हैं। कहीं तो पद के पद छोड़ दिये गये हैं। ग्रन्थ आदि में खंडित है।

संख्या १६०. सत्यनारायण की कथा, रचयिता—ईश्वरनाथ, कागज—बांसी, पत्र—१४, आकार—८ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९११ = १८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० जयदेव मिश्र, ग्राम—सरहैदी, तह०—खेरागढ़, डाकघर—जगनेर, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशायन्मः श्री सरस्वते न्मः। श्री गुरूभ्यो न्मः। अथ सत्यनारायण जी की कथा लिख्यते। दोहा। राजै गणेश जू सारदा, जैह नमन गुन गान। करहु कृपाजन जानियो, जै जै श्री भगवान्। श्री प्रभु सत्य नारायन, जसु गावत हो तो तोर। फेर तुवै माराज दहौ, पार लगैयो मोर। तुम्हरे जसको व्रनि हो, पार न पावै राम। लोभ मोह मद जै तजै, और तजे सब काम। जिनके जे लछिन जु है, हैं रघुपति पद प्रीति। ते नर कलि में धन्य है लयो सुनि गति न जीति। जापर तुम कृपा करो, नर देवनि सब जोय। मन में वजुर करै सही, जानतु है सब कोय।

अत—दोहरा—कह ईश्वर सादर ये भजौ करौ सब लोग। दु:ख भंजै जिन विप्र को हो को सुनै न जोग। जाना रामन कौ रुद्धा भजन ब्रह्म और इसि। इति श्री सत्यं नारायण कथा विरंचि तांया ईश्वर नाथ हते सूत सौनक सवादे साह रुप वरननो नाम चतुर्थोध्याय। संवत् १६११ मार्ग सिर सुदी १५ पूरनमासी लिखत मिश्र जवाहिर पठनार्थ बाल बद्रीप्रसाद हरि प्रसाद सुभ भवत, मंगल वस्तु। श्री रामचन्द्र जी।

विषय—सत्यनारायण की कथा का वर्णन।

संख्या १६१ ए. रामविलास रामायण, रचयिता—ईश्वरीप्रसाद (पीरनगर, लखनऊ) पत्र—३००, आकार—१२ × ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९१६ = १८५९ ई०, लिपिकाल—सं० १९२५ = १८६८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामभजन शर्मा, ग्राम—हरिआवां, डाकघर—पिहानी, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ राम विलास रामायण लिख्यते॥ कवित्त—लहत सकल रिद्धि सिद्धि सुख सपदहू, विद्या बुधि सुमिरि गणेश गौरी नदनै॥ सिधर वदन सुठि सोहत तिलक लाल। चन्द्रवाल भाल नैन देत है अनंदनै॥ एक दत भुजग विभूपण परशु पाणि। चारि भुज अभय करत दास वृन्दने॥ सुन्दर विशाल तन ईश्वरी सभारु मन। दया घन हरण विघन दुख द्वदनै॥ १॥ अरुण कमल दल दुति पद तल कल। पदज लखहु जन नखत सुभावते॥ विमल तुपार सम सोहत शरीर सुठि। आनन अनूप नैन खंज ते सुभावते॥ धवल मराल पै सवार स्वेत पट्ट सजि। अंग अंग भूपण अमित छवि छावते॥

अत—वरना शिवा प्रति शंभु सकल चरित्र पावन रामको। जो सुनै गावै पाइ है सो परंपद अभिराम को॥ को कहे कोटिन जन्म जेहिके पाप चय संचय रहै। ते अघन सुनते प्रेमसो श्री राम यस पावक दहे॥ जेहि हेतु रामायण सुनै सो हेतु निश्चै पाइहै॥ सुत दार भू भंडार लक्ष्मी सुख सकल सरसाइ है॥ यह कथा रघुनाथ की श्री वालमीक जू गायउ॥ व्यासादि मुनि वहु भाति कहि शिव शिवा सो समुझायऊ॥ तेहि वरणि भापा

छन्द मैं बरनत पुन्यो पुन्य द्विज बर । ईश्वर त्रिपाठी नाम मनभावना मति तट सुन भर ॥ हरिशरण पुर न पथ नाअम पार नगर निवास है । बानि रामायन कथनु हर नाम राम विलास है ॥ यह पद नव गति कहत मधु मुदि राम सीता मानिबै । इति प्रेम ॥ प्रगट सीता राम नित हित आनिबैं ॥ इति श्री रामायण उमा महेश्वर संवाद संपूर्ण समाप्त ॥ संवत १९२५ वि० बैसाख पूर्णिमा ॥

विषय—राम कथा का वर्णन ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता पं० ईश्वरी प्रसाद पीर नगर निवासी थे । निर्माण काल संवत १९१६ वि० लिपिकाल संवत १९२५ वि० है । [illegible] प्रकार [illegible] है —यह कथा श्री रघुनाथ की कीर्ति [illegible] पावक । [illegible] मुनि वसु [illegible] निज [illegible] पावक ॥ नहि बरनि आवत छन्द मैं बरनत पुन्य द्विज बर । ईश्वरी त्रिपाठी नाम मनभावना मति तट सुन भर ॥ [illegible] पुर न पंथ नाअम पीर नगर निवास है । बानि रामायन कथनु हर नाम राम विलास है ॥ यह पद नव गति कहत मधु मुदि राम सीता मानिबै । इति प्रेम न प्रगट सीता राम नित हित आनिबैं ॥

संख्या १६१ बी. रामायण रामविलास, रचयिता—ईश्वरीप्रसाद (पीरनगर लखनऊ), कागज—देशी, पत्र—२०६, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१६ = १८५९ ई०, लिपिकाल—सं० १९२० = १८६३ ई०, प्राप्तिस्थान—[illegible], ग्राम—[illegible], डाकघर—[illegible], जिला—[illegible] ।

आदि—१६१ ए के समान ।

अंत—नहि बरनि आवत छन्द मैं बरनत पुन्यापुन्य द्विज बर ॥ ईश्वर त्रिपाठी नाम मनभावनि मति तट सुन भर ॥ [illegible] पुर न पंथ आअम पीर नगर निवास है । बानि रामायण कथनु हर नाम राम विलास है ॥ यह पद नव गति कहत मधु मुदि राम सीता मानिबै । इति प्रेम न प्रगट सीता राम नित हित आनिबै ॥ इति श्री राम विलास रामायण उमा महेश्वर संवाद संपूर्ण समाप्त संवत १९२० वि० माघ मास । शुदि सप्तमी ॥ श्री [illegible] [illegible] ॥

संख्या १६१ सी. रामविलास रामायण, रचयिता—ईश्वरीप्रसाद (पीरनगर, लखनऊ), पत्र—२४०, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४८०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२० = १८६३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० [illegible] परिहार, ग्राम—[illegible], डाकघर—[illegible], जिला—अलीगढ़ ।

आदि-अंत—१६१ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है —

इति श्री रामायण राम विलास ईश्वरी त्रिपाठी कृत संपूर्ण समाप्त संवत १९२० वि०

संख्या १६१ डी. रामायण रामविलास, रचयिता—ईश्वरीप्रसाद (पीरनगर लखनऊ) पत्र—२०६, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण

(अनुष्टुप्)—५४६०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१६ = १८५९ ई०, लिपिकाल—सं० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—रामकिशन कूर्मी, स्थान—अतरौली, डाकघर - अतरौली, जिला—अलीगढ़।

आदि-अंत—१६१ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है:—

सवत् १९१८ वि० लिखा रामप्रसाद भट पुरा वाले ने अपने गुरू राधा वल्लभ के पठनार्थ ॥ जै राधाकृष्ण मुरारी राम चन्द भय हारी ॥

संख्या १६२ ए. मनपूरन, रचयिता जगजीवन स्वामी (कोटवा, बाराबंकी), कागज—मोटा पीला कागज, पत्र—४५, आकार—१३½ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्) —६३०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८१४ = १७५७ ई०, लिपिकाल—स १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरुप्रसाद दास, ग्राम—हरिगांव, डाकघर—जगेसरगंज, जिला—सुलतानपुर।

आदि—दो०—कथा प्रगट मनपूरन, सुनिमन पूरन होय। जगजिवन दाससति मूरति, शब्द कहे निजु सोय। चौ०—दाया करिए मोहि, कीर्ति तुम्हारी गावऊँ, कहौ विनय करि तोहि तुमते ध्यान लगावऊँ। चौ०—मनहिं विसारौं तुमका नाही, चित राखो मैं चरनन माही। दाया जब तुम्हारि मोहि होई, तब तुम्ह जिना जानौं कोई। बिन दाया मोहि कछू न होई, कृपा करहु तब जानौ सोई। करुदाया अब दीनानाथ, नाय कहौं तुम चरनन माथा। होऊँ दास तब कीरति गाऊँ, जब तुम्हारि प्रभु आज्ञा पाऊँ, आज्ञा करहु कृपाकरि मोही, तब मै ध्यान धरौं प्रभु तोही।

अंत—रहौं सूरन वहि नामकी, भर्म फांस ते फूटि। अमर भए निर्वान है, ताहि सरन नहि छूटि। सो०—नाम सरन मिलि जाय, दियो भर्म तब त्यागि कै। निरखि रहे टेकलाय अमल ज्योति निरखति रहे। चौ०—रटहि नाम निरखहि निर्वानी, भरम छूटि रहि ज्याति समानी। निर्गुन निर्मल सो निरंकारा, विरले कोउजन निरखन हारा। दो० जग जीवन दास शब्दते, सुनिमानै विस्वास, मनकी दुविधा जाय सब, सदा सत्य मा बास। सो० सदा सत्यमा बास, समुझि कथा मन पूरना। कहि जगजीवनदास, सतहेतु परगट करयो।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

संख्या १६२ बी. बुद्धि वृद्धि, रचयिता—जगजीवन साहब (कोटवा, बाराबंकी), कागज—मोटा, पत्र—२, आकार—२३½ × ११ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप)—३०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७८५ = १७२८ ई०, लिपिकाल—स० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरुप्रसाद दास, ग्राम—हरिगाँव, डाकघर—जगेसरगज, जिला—सुलतानपुर।

आदि—यहि नगर क अंत न पायौ, मै केहि विधि मन समझायौ। कहां ते दहु मै आवा, कछु अंत जानि नहिं पावा। मै कोदहु आऊँ अनारी, मै कहं भूलेउ ससारी। कहँ दहूँ रह्यौ स्थाना, मै तब अवनाही जाना। कवने ग्रह रहि बांसा, अब भूलेउ झूठी आसा। को मै आऊ कह आयौ, मै बात सबै बिसरायौ।

अंत—भे आदि जोति महमाया, ब्रह्मा शिव विष्णु बनाया। चांद सूर्य भयो तारा, सब परे कर्म के जारा। पसु पछी नर नारी। परि मोहम सब बिगारी। जग जीवन दास विचारा, जिन्ह आपनि सुरति सभारा। निगुन राम कहाए, दुइ अक्षर जन मन भाए, तिन्है परे कछु जानी, जिन्ह प्रीत नाम ते ठानी। सत गुरू मिलि अन्तर माहीं, तिन्ह ते छपा कछु नाहीं। जगजीवन दास वे न्यारे, जे गगनमे आसन मारे।

विषय—जीव और संसार की उत्पत्ति का तथा किसी योनि में जन्म लेने के प्रथम जीव किस दशा में था और कैसे उत्पन्न हुआ और महा प्रलय के पश्चात् संसार की उत्पत्ति कैसे हुई आदि का वर्णन।

संख्या १६२ सी, दृढ ध्यान, रचयिता—जगजीवन स्वामी (कोटवाँ बाराबंकी) कागज—पुराना मोटा, पत्र—३, आकार—१५३/४ × ११ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—४१, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१० = १७५३ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरप्रसाद दास, ग्राम—हरिगाँव, डाकघर—जगेसरगंज, जिला—सुल्तानपुर।

आदि—कहत सो अहीं पुकारि, सुनि साधो लेहु बिचारि। का पढ़ि गुनि पंडिताई, जो ज्ञान न हिय समाई। का पढ़े बेद पुराना, जो राम नाम नहिं जाना। विद्या बहुत अधिकारा, ताते बहुत अहंकारा। करहिं बेवाद जहीं ताहीं, ते पंडित भरम भुलाहीं। ते पंडित पर बीरा, जे दीन नाम ते लीना। त्यागि कपट चतुराइ, धन्य सो कहीं सुनाइ। कवि इ का कहौं बखाना, जे जिभ्या करहिं बयाना। निपुन बहुत अधिकारी, छिन अच्छर जोरि सुधारी।

अंत—जग जिवनदास विस्वास, मन बैठ सतगुर पास। भाग्यते अस होय, कोटि सत भाखें सोय। असकहि विवेक विचारि असमने गहे सभारि। जगजीवन तेहि का दासा। जन ज्ञान सत्य विस्वासा। जगजीवन अस परतीती। तिन तैसी राखी प्रीती। दृढ़ ध्यान कथा बयान। मन मगन रहि भरतान। जगजिवन दास, सत गुरू कीन्ह प्रगास।

विषय—ईश्वर में ध्यान दृढ़ करने का उपाय वर्णन।

संख्या १६२ डी विवेकमन, रचयिता—जग जीवन साहब (कोटवाँ, बाराबंकी), कागज—मोटा पातरा, पत्र—३, आकार—१३३/४ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१० = १७५३ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरु प्रसाद दास, ग्राम—हरिगाँव, डाकघर—जगेसरगंज, जिला—सुल्तानपुर।

आदि—मैं कहाँ ज्ञान पुकारि, सुनि साधो लेहि विचारि। ज्ञान कहा ततसार, जो समुझि कर विचार। तस परे तेहि का जानि, जो लेहि तत्तहि छानि। बिन भ्रम भक्ति न होय, मन बूझि देखै कोय। मन बूझि समुझि डेरान, तब आइ उपज्यो ज्ञान। तब चल्यो मन यह भागि मैं रहौं केटि ते लागि। मैं ढूंढ़ सब कहु आई केहु राखि नहिं सरनाइ। तब करें एम विचार, जग कौन है अधिकार। मैं साहि सरनहिं जाऊँ, जो जानि पाऊँ नाऊँ सत सब्द मिलिगी ठाउ, तोइ मोरि सरनहि आउ।

अंत—मन भा सतगुरु का चेला, वह माई अलख अकेला। वैठेउ मन ठहराई, सत गुरु कि वदगी लाई। चमक झलक जह होई, तहँ गुरु मुख मन भा मोई। कहूँ जो मन फिरि धावै, तौ जाय कहूँ फिरि आवै। काहुक मन भा वदा, कोउ भरमि पराभा गदा। कोउ रहा गगन ठहराई, कोउ परा है भर्म भुलाई। ते गुरु मुखी कहाए, ढिग रहे अनतन धाए। बहुतक करहि बयाना कोउ विरला जन ठहराना। विवेक मत्र कहि गावा, जग गुरु मोहि लखावा। अस करै काल ते वांचै, सो निरभै होइ के नाचै। जग जिवनदास भे सोई, असि युक्ति भक्ति करै कोई।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

संख्या १६२ ई० कहरानामा, रचयिता—जगजीवन साहब (कोटवां, बाराबंकी), कागज—मोटा पीला, पत्र—४, आकार—१२३/४ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१० = १७५३ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरुप्रसाद दास, ग्राम—हरिगाँव, डाकघर—जगेसरगज, जिला—सुलतानपुर।

आदि—(ॐ) वो दह साहब समरथ आहै जिन रूव साज बनावारे। पहलि एकमा सब रचि लीन्हा नहि विलव लगावारे। १। नाना विधि सबही मा नाचै, धरि २ रंग सुवांगा रे। कहु भूलत कहुं राह बतावत, कहू रहत रस पागा रे। २। (य) या माया यह नाच नचावै मन मानै तस करई रे, आवत जात सो नाचत आपुइ जस भावे तस फिरई रे॥ ३॥ (ल) सीसिर विना नाम यह आहे, पुष्ट न कैसेहु होई रे। यहि माया रसमाति भुलानेउ, चले सरवसौ खोई रे।

अंत—(ए) ए एकहि ते यहु मन राखहु, कवहु विसारौ नाही रे। जगजीवनदास धन्य वे प्रानी तेहि समान कोउ नाही रे। कहेऊँ ककहरा कहरानामा, समुझै विरला कोई रे, समझै बूझै सत होइ निपटै, अन्तर ध्यानी होई रे। संत के वचन प्रमान करै जो, समुझि ताहि कछु परई रे। जगजिवनदास तब ज्ञान होइ कछु, समिरन मन मह करई रे।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

संख्या १६२ एफ. कहरानामा दोसरा, रचयिता—जगजीवन साहब (कोटवां, बाराबंकी), कागज—मोटा पीला, पत्र—१३, आकार—१२३/४ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१२ = १७५५ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरुप्रसाद दास, ग्राम—हरिगाँव, डाकघर—जगेसरगज, जिला—रायबरेली।

आदि—समरथ साहब तुम ही सब हहु करहु सो होई रे। सरब मई मा वास तुम्हारी और दूजा कोई रे। नाचत आप नचावत सब कह अंत न कोऊ जानै रे। जानतु आपु जनावत सब वह जस जानै तस मानै रे। दूजा नही तुम ही साहेब कहु मूरख कहुं ज्ञानी रे। कहु पण्डित भाषत परमारथ कहुं विवाद रचि ठानी रे। इत हारत उत जीतत आपुहि उत विवेक जप ध्यानी रे। कवहु कवाद चुप्प रस राते कहु न अंत बिलगानी रे।

अन्त—जेहि सरूप निज ध्यान धराउस, तैसे तिनहीं पायो रे। कहु निगुन कहु सगुन जल मह कहूँ परवान ठरायो रे जह जस वास विस्वास के दीन्हेउ तहतस मन्त्र दृढ़ायोरे। अनगन कला कृपा ते सुमिरै अन्तन काहू पायो रे। जेहि चाहै भरमाय देय जेहि चाहै ध्यान दृढ़ायारे। सो अभ्यास कृपा भैजेहि दिसि सो दृढ़ भक्त कहायो रे। जगजीवन दास धन्य वे साधू जेहि आपन करि लीन्हेउरे। ते जग आय विदित जग जाना चरन कमल चित दीन्हे करे। सोइ साधु साधन जिन कीन्हा पोढ़ि डोरि मन लयउरे। टूटत अहै फेरि के जोरन जक्त सबै बिसरायउ रे। निरखि निहारि दखि मनि मूरति चरनन्ह सीस लगायउरे जगजीवन दास साधन के महिमा परगट कहिकैं गायउरे।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

संख्या १६२ जी कहरानामा तीसरा, रचयिता—जगजीवन स्वामी (कोटवाँ बाराबंकी), कागज—मोटा पीला, पत्र—१३, आकार—१३३/४ = ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१४ = १७५७ ई० लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरुप्रसाद जी, ग्राम—हरिगाँव, डाकघर—जगेसरगंज, जिला—सुलतानपुर।

आदि—सतगुरू साहब तुम समरथ हहु, देहु ज्ञान गुन गावौं रे। बूझि बूझि तव आवे मोहि कह, चरनन ते चित लावौं रे। सीसनाय कर जोरि कहौं मैं, आपन करिके जानहु रे। औगुन क्रम भ्रम जो हहिं मोहिमा मेटि सो सरनहिं आनहु रे। सरन आइकै मन सुख पावा नैन ते सुरति निहारौं रे। अब दयाल हो विनती करत हौं कबहु नाह विसारौ रे। ध्यान भजन मह मगन रहौं निसु बासर दरसन पावौं रे। सुर मुनि गन्ध्रप तुम सबके पति यहै जानि मैं गावौं रे। मन मूरति सत सूरति साईं, सुनिये अरज हमारी रे। अपथ पथ इत उतनहि भरमैं सुरति निकट ते न टारी रे। जो तकि देखौं सब जग नैनन्ह, भूल सब भव माहा रे। साधु कहत झूठे का हित करि, कोउ काहू कर नाही रे।

अंत—अपनी २ करिनी करिक, जेइ जस कीन्ह कमाई रे। कहने सुनने की कछु नाहीं जेहि के भाग्य तस पाई रे। बड़े भाग्य वैराग्य जाहि के, जेहि मन मूरति लागै रे। जगजिवनदास तेहि सम नहि कोउ नेम कम भ्रम भागा रे। रसना के रस जे जन राते, माति रहत दिन राती रे। चारि बरन पट दरसते न्यारे उन्हके जाति न पाती रे। जग जिवनदास अम्मर तेई मैं जुग २ जीवहिं सोई रे। अंतर अलख अमूरति बसि जिन्ह सूरति सत्य समाई रे।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

संख्या १६२ एच चरण वंदगी, रचयिता—जगजीवन साहब (कोटवाँ, बाराबंकी), कागज—मोटा पीला, पत्र—४, आकार—१३३/४ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८११ = १७५४ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरप्रसाद दास, ग्राम—हरिगाँव, डाकघर—जगेसरगंज, जिला—सुल्तानपुर।

आदि—साधो करहुँ वंदगी चरन कमल की, रहौं चरन लपटाई हो। साधो अब दाया मोहि जनकह काजै परगट कहौं सुनाइ हो। साधो विधि ने उत्तम नगर बनायौ,

तेहिका अंत न पाई हो। साधो अंध धुंध वह दुनियाँ आहै, सब कोइ परेउ भुलाई हो। साधौ तब न नगर मंह बास कियो है, तेहिका अत न पाई हो। साधौ सबै विदेशी सोवत अहै जागत नहिं गाफिलई हो। साधो जागे कोइ २ चौकि जक्तमा, तिनही सुरति संभारी हो। साधो आपु तरे औ औरन्ह तारिन्हि, तिनकी मैं बलिहारी हो।

अंत—साधौ हिन्दू मुसलमान सब एकै, एक ब्रह्म एक काया हो, साधौ अपने ज्ञान न बूझै कोई, सब निर्गुन कै माया हो। साधौ गौस कुतुब और पीर औलिया, पैगम्बर परमाना हो। साधौ साइ सुल्तान औवली क्लंदर देवान हाफिज मस्ताना हो साधौ सब साई के आहहि प्यारे, सद का करहु बखाना हो। साधौ सबै एक कै जानै, सबकै बदगी आना हो दो०—दुइकर शीश चरनन दियो, छूटै नहि दिन राति, जग जिवनदास, यहि विधि भजे, सोई संत कै जाति।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

संख्या १६२ आई. सरन बंदगी, रचयिता—जग जीवन स्वामी (कोटवाँ बाराबंकी) कागज—मोटा, पत्र—१३, आकार—१२३ × ११ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१४ = १७५७ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८७ ई०, प्राप्तिस्थान—महत गुरुप्रसाददास, ग्राम—हरिगाँव, डाकघर—जगैसरगज, जिला—सुलतानपुर।

आदि—साधौ अहै अथाह थाह कछु नाही देखा ज्ञान विचारी हो। साधौ जेहिका जैसी दाया कीन्हेउ तेइ तस कहा पुकारी हो। साधौ तीन चौथ रचि काया कीन्हेउ तेहिका बड विस्तारा हो। साधौ दसौ बास दस करि दृढ होई नौ मह नाहिं कँवारा हो साधौ दीप सात नव खड बनायो सात समुद्र नेवासा हो। साधौ यह बनाउ सब है काया को विन है तीर निरासा हो। साधौ निर्गुन टूटि फूटि कै आयो, सरि खेलत घरि माही हो। साधौ नेगन्ह रंग तरंग रसहिते वह सुधि पाछिल नाही हो। साधौ सर्व अंग मा बेधि रहेउ है लिप्त काहु मा नाही हो। साधौ जब चाहे उडि जाय तहा को कोउ न तके परछाई हो। साधौ यह माया हे महा अपर बल तीनि लोक महं नाचे हो। साधो देखै अलख खेलु सौ खेलै जब चाहे तब खाँचै हो।

अंत—साधो विरुले साध भये है जग में जेहि ते अन्तर नाही हो। साधौ जग जिवनदास वै पास रहत है कबहु विसारत नाही हो। साधौ सतगुरू पास बास करि रहे हैं जग अहै विसराए हो। साधौ युग २ आहिं सदा संग वासी वै दुनियां नहि आए हो। साधौ लगि पागि अन्तर धुनि लागी साधु भयो मस्ताना हो। साधौ मिलि सतसंग रग रस राते जग जीवन करहि बयाना हो। साधौ अन्य साधु जो जोतिहि मिलिगे जो आहे सो आही हो। साधौ जगजीवन दास विस्वास कै जानै और दोसरो नाही हो।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

संख्या १६२ जे विवेक ज्ञान, रचयिता—जगजीवन साहब (कोटवाँ बाराबंकी), कागज—सफेद, पत्र—४, आकार—८ × ६३ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८११ = १७५४ ई०,

लिपिकाल—स० १९८७=१९३० ई०, प्राप्तिस्थान—त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी 'विशारद'; ग्राम—पूरे प्राणपाडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरली।

आदि—कहत सो अहौं पुकारि, सुनिसाधो लेहु विचारि। शब्द कहाँ परमाना, जिन्ह प्रतीत मन आना। शब्द कहै सो करई, बिन बूझे मर्म मा परई। शब्द कहै विस्तारा, शब्द सब घट उजियारा शब्द बूझि जेहि आइ, सहजै मा तिनही पाई। सहज समान न आना, सहज मिले कृपा निधाना। सहज भजन जो करई, सो भव सागर तरइ। भव सागर अपरम्पारा, सूझत वारन पारा। रहै चरन सरनाई, तव भवसागर तरि जाइ। भव सागर तरि पारा, तब भयो है सबते न्यारा।

अंत—भेप बहुत अधिकारी, मैं तिनको कहौं पुकारी। भसम केस बहु भेपा, ते भ्रमत फिरहिं सब देसा। बहु गुमान अहकारी, इन्ह डारेउ सकल बिसारी। बहुत फिरहिं गफिलाइ करि आसा अर भाइ, केहू तपस्या ठाना, कोइ मगन भयो निर्वाना। कोइ तीरथ बहुत अन्हाई, कोई कंद मूरि खनि खाई। केहू कर घी चहि तूरा, केहु सतगुर मिलहि न पूरा। झूल मुख अगिनि झुकाहीं, कोई ठाढ़े बैठे नाहीं। भूले करि दरस दखा, है न्यारा नाम अलेखा। कोटि तिरथ यह काया, तेहि अत न केहू पाया। पाचौं जिन्ह घर जानी। जग जीवन सो निर्वानी। राम अछर जेहि माही, जग तेहि समान कोउ नाहीं।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

सख्या १६७ के उग्र ज्ञान, रचयिता—जगजीवन साहब (कोटवाँ, बाराबकी), कागज—मोटा पीला, पत्र—१, आकार—१३$\frac{3}{4}$ X ११ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८११=१७५४ ई०, लिपिकाल—स० १९४०=१८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महत गुरुप्रसाद दास, ग्राम—हरिगाँव, डाकघर—जगेसरगज, जिला—सुल्तानपुर।

आदि—मैं सास चरन तर धरऊँ, मैं केसे बदगी करऊँ। जब तुम ध्यान दृढ़ायो, म जानि परखि तब पायो। दृष्टि देखि तब आइ, तब जोतिहि जोति मिलाइ। सतगुर मोहि आपन जाना, तुम तजि भजों न आना। अब बसि काहू कि नाही होइ चहहु मनमाहीं साधो कोइ नहीं करै गुमाना, गुर करै सो होय प्रमाना।

अत—नाम रटत रटि रहेऊ, तब मगन मस्त मन भयऊ। जग जिवनदास जिन जाना, सतसब्द सोइ परमाना। सतगुर अन्तर मिलि गयऊ, उग्रज्ञान तब भयऊ। तब आदि अतकी कहेऊ, जौनी विधि जहा मैं रहेऊ। सुन्य सब्द ह्वै आयो, तब निगुन आनि कहायो। निर्गुन तकि बिलगाना, तब भै महमाया निर्वाना। तीनि चौथ तब भयऊ, जहा तहा सो रहेऊ। भा माया का विस्तारा, करि को मन सकै विचारा। जग जिवनदास जह जागा, तहँ उलटि लगायो धागा।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

सख्या १६७ एल उद निनता, रचयिता—जगजीवन स्वामी (कोटवाँ, बाराबकी), कागज—सफेद मोटा, पत्र—२, आकार—१३$\frac{3}{4}$ X ११ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८११=

१७५४ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरुप्रसाद दास, ग्राम—हरिगाँव, डाकघर—जगेसरगज, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—मोहि नाही है कछु ज्ञाना, कैसे धरौ अन्तर ध्याना । छंद—सुनहु दीनानाथ करहु सनाथ तुमहिं सुनावऊँ । दास आपन जानि निसु दिन कवहु नहि विसरावऊँ । अनत चित्त न जाय प्रीति लगाय रहि चरनन मही । आस जक्त निरास राखौ दूसरो जानौं नहीं । कठिन है भवसागरं सो देखि डर लागत मोहीं । हाथ है निर्वाहु तुम्हरे नहि छिपावत हौ तोही । जाय नहि इत उत चित नैन निरखत ही रहौ । पास वास निस्वास करिकै, भेद नहि परगट कहौ । नेग जन्म के कर्म अव जेहि कृपा करि दूरहि करी । वुध्य सुध्यं भजन हीन हितंकरि अव धर धरी । मातु सुतहिं पियाय पय कछु रोस नाही मन करी । ऐसे आपन जानि़ विसराइये नहिं छिन घरी । च्हौ निर्मल नाम निरखौ जोति कवहूं नहिं टरै । जग जिवनदास प्रगास सतगुरु सीस चरनन्ह तर धरै ।

अंत—छद—अगम अजित अपार अविचल अचल पिय तुव दरस है । वार वार होइ दास दासं प्रगट निज्ञु कीरति कहे । यह किरति मोहि पियारि जगत सदा चरनन्ह तर रहौ । देहु ज्ञान प्रगास निर्मल दीप्ति जेहि तुम्हरी लहौं । ज्योति यक रस उदित देखौ अनत नहि मन राखऊँ । आस परसं रहौं जुग जुग सत्यवानी भाखऊँ । करै जो विस्वास मनमाँ, ताहि सदा उवारई, जगजिवन दास कहत सोई जो सत्य नामहिं जानई ।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

संख्या १६२ एम. वारहमासा, रचयिता—जगजीवन साहव, (कोटवाँ वाराबंकी), कागज—पीला मोटा, पत्र—२, आकार—१३½ × ११ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१२ = १७५५ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महत गुरुप्रसाद दास, ग्राम—हरिगाँव, डाकघर—जगेसरगंज, जिला—सुलतानपुर ।

आदि – कनक नगर विधि नीक बनाई, तहां आय मै परउ भुलाई । मोरे जिय माँ भयो अंदेसा मोर पिय विछुरि गयो केहि देसा । कातिक कर्म परऊँ मै आई, पिय मोर डारा सुधि विसराई । सुधि वुधि मोरि उनहि हर लीन्हा, मै पापिन कछु चेत न कीन्हा । अगहन आस प्यास भै मोही, इन्ह नैनन्ह कव देखिहौ तोही । आवत समुझि नैन वहै नीरा, उन्ह हमारि नहिं जानेउ पीरा । पूस पुन्य मै का दहु कीन्हा, मोरि वपुरी कै सुद्धि न लीन्हा । कलपौ दरस तकै का तोरा, हियरा आनि जुडावहु मोरा । माघ मनहि मोहि मिलिहै नाहा, सतसुख सेज सूति गहि वाहां । वहि चौ महल टहल रहौ लागी, चरन सीस दै रंग रस पागी ।

अंत—सावन सांई मोहि दासी जानी जुग २ कवहु न होउ विरानी । मन और जीव पीव परवारी, आदि अंत कै आऊँ तुम्हारी । भादौ भरम करहिं मोर दूरी, पावौ मै दरस इच्छा भरि पूरी । वडे भाग्य तव जानहुं मोरे चेरि मैं चरनन विसरहिं तोरे । क्वार कूर तजि दे कुटलाई, यहि मन रहौ चरन लपिटाई । कवहु न आपक जानहु ऊँचा, रहहु

नाच सों होइ हों ऊँचा। बारह मास एक करि गाई, सत विवेक कहहिं गोहराइ। जग जिवनदास मन यूहीं कोइ ए सारि सत्य सुहागिनि होइ।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

संख्या १६२ एन. स्तुति श्री महावीर जी की, रचयिता—जगजीवन स्वामी (कोटवाँ, बाराबंकी), कागज—मोटा पीला, पत्र—७, आकार—१२३/४ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१२ = १७५५ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरप्रसाद दास, ग्राम—हरिगाँव, डाकघर—जगेसरगंज, जिला—सुल्तानपुर।

आदि—कछुक कही कृपाते जनम कम गाऊँ, पै महिमा समुद्र की कहां पार पाऊँ जबै सिव असुर को कगन दान दीन्हेउ, धरे करि पहिरि सिर चढ़े भस्म कीन्हेउ। उठी मन तरक सक्ति पायों सुरारा, करों भस्म हरको हरों दिव्य नारी। मनोभव भभरि भ्रमिसतो हे लुकाने, सकारे भागत साम आरे डेकाने। महादु ए पायी फिरैं सिव दुराने कृपा सिन्धु हित जानि चितमें छोहाने। तबै नारि कृतकै नरोत्तम नचायो, करत हाथ ऊपर अपन कृत पायो। लीयो हाथ कगन सिवहि आनि दीन्हेउ, कहा हेतु आपन बहुरि लेत कीन्हेउ। सुखी भे महादेव कहा कमै पायो अखिल विश्व मोहन कला पै दुरायो।

अंत—नम डकिनी सकिना भय विनास नम खचर भूचर व्याधि नास। नम दुष्ट सुरवीर बैताल हारी नम वज्र तन युद्ध मुष्टिक प्रहारी। कृपा उग्र साह महातेजरूप नम सिद्धिदा बुद्धिदा भक्त भूप। न रहत भूत प्रेतं पिसाचादि दोष, नम सयुगे रुद्र रूपे सरोष। रोगे रणे सकटे रिपु बिनासे, कृपा पात्र कल्लास पति पाप नासे। चाहे शु विद्या पठिते पुराने। भजने सो ज्ञान मागे जो ध्यान जगजियनदास विनै हनुमान, विलम्ब न कीजै दै करौ सर्ना मानं॥

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

संख्या १६२ ओ. स्तुति महावीर स्वामी की, रचयिता—जगजीवन साहब (कोटवाँ, बाराबंकी), कागज—पीला, पत्र—१, आकार—१२३/४ × ११ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६ रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१२ = १७५५ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरप्रसाद दास, ग्राम—हरिगाँव डाकघर—जगेसरगज, जिला—सुल्तानपुर।

आदि—अरन अनूप रूपक ध्यान, जगजीवनदास कथित सो ज्ञान। पाप विनास सत मगास सतसुचित ज्ञान निवास हनुमत नमस्ते चान विस्वास, दीन सुलीनं करो सीस बास तन पीड़ खई नाम तु बान दास विस्वास सुयुष्य निर्वानं। ताप सताप विनास तुनाम जर कम नेक सुविध्य विश्राम। लाल लगूर विराजित अंग, दया दरस्य सब व्याधि भंग दैत्य अनेक करत विनास सत सुरक्ष सुकरत विलास वीर गभीर समीर समान त्रयीलोक चौध करत पयानं।

अंत—चरन की सरन मैं दासस्य दास देहु उग्र ज्ञान करौं मैं प्रगास तीथ सरप दरस नाय नीर नेत्र निरखिमे निमल सरीर उदित ज्यों मार्त समान सरूप, सतं सुततं

पीतं अनूपं सदा पास दास वास तुम्हारी, व्रत भंग होवे न लीजे संभारी। सदा करो रक्षा सुनो वज्र अंगी, रामं पियारे अहो सत सगी भरमं विनासं कर्त्तव्यं निहसकं, सदाव्रतं धारी अक्षर द्वै अंकं। साय वर दीजे अहो हनोमान, जग जीवन चाहे दृढ़ अंतर को ध्यानं। जग जीवन नमस्ते चरनं विस्वासं, स्तुति सम्पूर्णं सुमति सिद्धि वास।

विषय—श्री हनुमान जी का गुणगान।

संख्या १६२ पी. परमग्रंथ, रचयिता—जगजीवन साहब (कोटवां, बारावंकी), कागज—मोटा पीला, पत्र—४०, आकार—१३३⁄४ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६०, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८१२ = १७५५ ई०, लिपिकाल—स० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरुप्रसाददास, ग्राम—हरिगाँव, डाकघर—जगेसरगज, जिला—सुलतानपुर।

दो०—परनाम यह ग्रंथ है, पढ़े ते सुमिरन होय। साधुकरे परमनमन, योग ध्यान दृढ सोय। साहेब मैं सेवक अहौं, कृपा करहु जन जानि, सूझि ज्ञान ते मत्र परे, कीरति कहौं बखानि। वदौं सरस सुदेव मुनि, अलख वास सब माहिं। सो सुमिरै मन जानि मैं, अवर दूसरो नाहिं।

अंत—सो०—सुमिरहु सतगुरु नाम, परम गरथ विचारि मन। पावहु सुख विश्राम, कलियुग उतरहु पारभव। प्रभु दायाते ध्यान चरन कमल ते लग दृढ़। तब करि कहा बखान, सुनहु सकल संसार जन। दोहा—सवत अठारह सौ बारह, लिखि सम्पूरण कीन्ह, परम गरथ सुनाम अस, सोइ कहि परगट दीन्ह। मास परम वैसाख हित, सुदि नौमी सुमवार। जग जिवनदास यह ग्रंथ लिखि, समुझि करहु एतवार। सो० सुमिरहु केवल नाम, दुइ अक्षर परमान करि। तवहूं अब सोइ राम, सतन के अंतर वसहि।

विषय—संत मतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश।

संख्या १६२ क्यू. महाप्रलय, रचयिता—जगजीवन स्वामी (कोटवां, बारावंकी), कागज—पीला, पत्र—१३, आकार—१३३⁄४ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८२, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१३ = १७५६ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरुप्रसाद दास, ग्राम—हरिगाँव, डाकघर—जगेसरगंज, जिला सुलतानपुर।

आदि—कहत सुनत विस्वास करि, दुविधा मन ते त्यागि जगजीवन दास धनि प्राणि सो, जागे तेहि बडभागि। छद—अठाया जपु दइ अक्षर धरमा, जिह्वा नाहिं डोल वहु रे। देव उपदेस मत्र यहु सांचा सोई मन महं गावहुरे। साधो समुझि विचारि गहहु मन, अवरि सबै विसरावहु रे। रहहु सुचित्त मित्र वहि जानहु दुविधा दूरि वहावहु रे। १। परि दुविधा दुहु दिसि ते जैहो, एक हिते मन लावहुरे। लइ रहहु कहि प्रगट न भाषहु तबही तौ सुख पावहु रे। जन्म पार विन समझे सुख है, समुझे ते दुख होई रे। सुख परि सुधिगे जहा ते आए, चलेउ सर वसौ खोई रे।

अंत—राम के दरसन कोइ नहिं पावे, राम है भक्त सनेही र जो कोइ कहे राम सबही मा है सब ही मा याही र। न्यारे रहत अहैं सब ही ते, रहत हैं सन्त हँ माहीं रे। जग जिवनदास के साईं समरथ, दियो चरन तर माथा रे। अपनी शरन राख मोहि लीजे कीजे मोहि सनाथा रे। दो० मन दृढ़ है सुमिरत रहौ अनते चित न चलाउ। जगजिवन दास सब भक्त हैं तिनका अलख लखाउ। जो कोई जी से होत है, ताहि न मानै कोय, पापी कुटिल कुकरमी, मुक्ति ताहि नहि होय।

विषय—संतमतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश।

संख्या १६२ आर. ज्ञान प्रकाश, रचयिता—जगजीवन साहब (कोटवा बाराबंकी), पत्र—१८, आकार—१२½ × ११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५२, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१३ = १७५६ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरप्रसाद दास, ग्राम—हरिगाँव, डाकघर—जगेसरगंज, जिला—सुल्तानपुर।

आदि—सतगुर सत समरथ्थ सुख दाया जब तब होय। जनका ज्ञान होय तब, कहि भाषौं तब सोय। चौ०—सतगुर अहैं सिद्धि के दाता, आपुइ करता आपुइ विधाता। आपुइ सतन भजन करावत, आपुइ सतन मन ते गावत। आपुइ सत्य सेत अवतारा, आपुइ आप रहत है न्यारा। आपुइ कीन जिमीं असमाना आपु आय तिहु लोक समाना। आपु करत हैं दिन औ राती, दोसर कौन कहै केहि भाती। दोसर आपु आपु पहिचाना, स्याम सेत मा आपु समाना। दो०—सेत होत है पीतत, होत स्याम फिर सेत जगजीवन स्यारु अगम तत, ज्ञानी गम कहि देत।

अंत—दो०—दिया तन प्रेम क तेल करि, ज्ञान की बाती डारि शब्द अनल टेमी बरै, करै सत्य उजियार। चौ०—छीर प्रसंग घृत करे पसारा, ऐसे रहत सबहि ते न्यारा। जुगुत पाय मथि लिय वहि स्याइ, ताहि युक्ति जन नामहिं पाई। ऐसी युक्ति करछानै कोई, पाप के तत्व अमर भा साई। सो०—अमर भए जन सोय, तत्व सो राम का नाम भजि यहि सम मंत्र न कोय, कहत हों प्रगट पुकारि के।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

संख्या १६२ एस. दृष्टांत की साखी, रचयिता—जगजीवन साहब (कोटवा, बारा बंकी), पत्र—१६, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५० = १७९३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवनंदन, ग्राम—गोसाईंगंज, डाकघर—जयगंज, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नम॥ अथ जगजीवन दास जी की साषी लिख्यते॥ परमार्थ सुफ फल पा पाहन लिया विकास। रामरतन धन नीक श्यामु कहि जगजीवन दास॥ हंस हसनी पै पावै घर्यो धर्यो की आस। राम रतन धन प्रगट्यो सुकहि जग जीवनदास॥ सिर चढ़ाइ धरि गुहा में परगट किया सुथान। कहि जग जीवन दरिद्र दूरि किया गुर ज्ञान॥

अत—कहि जगजीवन दलिद्र शाहि गह्यौ सत राषि। सत की दासी लछिमी साध कह्यौ गुर ताषि ॥ मोली को वतवो गयो गयो प्रेत के वास। राम कृपा ते वाहुड्या सु कहि जगजीवन दास ॥ छित्राणी छित्री मिले मंत्र शक्ति परकास। यौ राम कहति हरिजन मिले सु कहि जगजीवन दास ॥ इति श्री जगजीवनदास कृत दृष्टांत की साखी संपूर्ण समाप्तः ॥

विषय—गुरू और ईश्वर की महिमा का वर्णन।

संख्या १६३ ए. गुरुमहात्म, रचयिता—जगन्नाथ, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७८ = १७२१ ई०, लिपिकाल—सं० १८०८ = १७५१ ई०, प्राप्तिस्थान—बावा जीवनदास, ग्राम—भेरू जी का मंदिर, टूचीगढ़, डाकघर—अलीगढ़, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्रीगणेशाय नमः श्री मतेरामानुजाय नमः। दोहा—आठ अंग सो दंडवत प्रथम कीन परनाम। जगन्नाथ गुरु करि हैं सव विधि पूरण काम ॥ चौ० श्री गुरुदेव चरण चित लावो। हृदय ध्यान धरि शीश नवाव्रो ॥ करि अस्तुति परिक्रमा दीजै। तन मन धन समर्पन कीजै ॥ गुरु है ब्रह्मा सुर तैतीसा। गुरु विन को जानैं जगदीसा ॥ गुरु है नेम धर्म सव केरा। गुरु है आवा गवन निवेरा ॥

अत—गुरु महिमा को पार न पावै। जगन्नाथ जन कछु इक गावै ॥ सवत सत्रह सै सत्तर अरु आठै। माघ मास उजियारी आठै ॥ भरनी रवि अरु मगल वारा। गुरु चरित्र भाषा विस्तारा ॥ दोहा—भूल होइ जो हरिजन मात्रा विन्दु विचारि। हाथ जोरि विनती करौ लीजो सवल सुधारि ॥ स्वामी तुलसी दास के सेवक अति ही हीन। जगन्नाथ भाषा शरन गुरु चरित्र गुन कीन ॥ जलतै थलतै राषियो ढीलो वंधन पारि। मूरख हाथ न दीजियो कहै चरित्र पुकारि ॥ इति श्री गुरु महिमा सपूरन सवत् १८०८ वि० अश्विनि शुक्लदशमी ॥

विषय—गुरु की महिमा का वर्णन।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता जन जगन्नाथ थे। निर्माणकाल सवत् १७७८ वि० है। इसको इस प्रकार लिखा है:—सवत सत्रह सै सत्तर अरु आठै माघमास उजियारी आठै ॥ इनका एक ग्रन्थ मोह मर्द राजा की कथा संवत् १७७६ का है इससे गुरू की महिमा का सवत् १७०८ जो पहिले नोट है अशुद्ध है १७७८ शुद्ध है। लिपिकाल सवत् १८०८ वि० है।

संख्या १६३ बी. गुरुमहिमा, रचयिता—जगन्नाथ, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७०८ = १६५१ ई०, लिपिकाल—स० १७८६ = १७२९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० जवाहरसिंह, ग्राम—खेतुई, डाकघर—मुरादाबाद, जिला—हरदोइ।

आदि—१६३ ए के समान।

अंत—सवत सत्रह सै अरु आठै। माघ माघ उजियारी आठै ॥ भरिनी रवि अरु मगल वारा। गुरु चरित्र भाषा विस्तारा ॥ दोहा—भूलि होइ जो हरिजन मात्रा विन्दु

विचारि । हाथ जोरि विनती करौं लीजौ सकल सुधारि ॥ स्वामी तुलसी दास के सेवक अति ही हीन । जगन्नाथ भापा सरन गुरु चरित्र गुन कीन ॥ जल्तै थलतै राखियो पोदिलो वचन पारि । मूरख हाथ न दीजियो कहैं चरित्र पुकारि ॥ इति श्री गुरु महिमा सपूर्ण समाप्ता सवत् १७८६ वि० भादों मासे कृष्ण पक्षे द्वादस्याम ॥

विषय—गुरू का महत्व वर्णन किया है ।

संख्या १६२ सी मोहमर्द राजा की कथा, रचयिता—जगन्नाथ, पत्र—३२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७६ = १७१९ ई०, लिपिकाल—सं० १८७५ १८१८ ई०, प्राप्तिस्थान—दुलारेलाल मिश्र, ग्राम—फतेहपुर, डाकघर—पागरमऊ, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ मोह मदन राजा की कथा लिख्यते चौ०—गुरु चरन बदि वदू सिधि संत । सुनी सारि स्यो गाऊ मित ॥ जा सुनि मोह द्रोह नहिं व्यापै । होइ निर धप राम कू जापै ॥ कहा जु परम पुरान को सारजै । जो श्री पति नारद सो भापी ॥ वैकुन्ठ लोक सब सुख को धाम । तहँ विष्णु विराजै पुरवन काम । तेहि धाम गये ब्रह्मा सनकादिक । रुद्र रिपि सुर इन्द्र हू आदिक ॥ तेंतिस कोटि देवता तहा । गंगा आदि तीर्थ सब जहा ॥ सब सुरपती तहा शारदा आई । तहा चलत प्रसंग ज्ञान अधिकाई सब ध्यान विष्णु लौ लीना । ता समय आये नारद लिये बीना ॥ सब देव ऋषिन भ सक्ति कीन्हीं । आदर बहु नारद को दीन्हीं ॥ नारद श्री पति को सिर नायो । कर जोरि अग्र भाग ह्वै प्रसन्न करायो ॥

अंत—यो हरि सो नारद मोह मरद कथा प्रगटाइ । सो व्यास सुक सौं सुक नृप को समझाई ॥ ये कथा जे कहैं अरु गावैं । ते नर नारी मोक्ष पद पावै ॥ हम सुनी साधि *कही स्यों गाइ । ता मुनि गुनि बहु आनद होई ॥ सत समागम को मत गाइ । ता सुनि* मोह द्रोस नसि जाई ॥ श्री तुरसीदास जु धन्यो सिर हाथ । यह मोह मरद कथा कही जन जगन्नाथ ॥ परम सत मत हम कह्यौ विचारी । पुरातम कथा परम सुख कारी ॥ सवत सत्रह सै छयोत्रा वृप यह भापी करि बहुत करि हरप । कातिक बदी द्वादशी दिनै सोमवार यह गिनो तर गिनै इति मोह मरद राजा की कथा सपूर्ण समाप्ता लिखत शिव दीन सवत् १८७५ जेठ सुदी दशमी ॥

विषय—मोह मर्दन राजा का वृत्तान्त वर्णन ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ क रचयिता जन जगन्नाथ थे । निर्माणकाल संवत् १७७६ वि है जैसा इस ग्रन्थ से जाना गया—संवत्त सत्रह सै छयोत्रा वृप । यह भापो करि बहुत हरप ॥ कातिक वदी द्वादसी दिनै । सोमवार यह गिनोतर गिनै ॥ लिपिकाल सवत् १८७५ वि० है ॥

संख्या १६२ सी मोहमद राजा की कथा, रचयिता—जन जगन्नाथ, कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—

६००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७६ = १७१९ ई०, लिपिकाल—स० १८६० = १८०३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला छीतरमल, ग्राम—रायजीत का नगला, जिला—अलीगढ ।

आदि—१६३ सी के समान ।

अत—श्री तुरसी दास जु धन्यो सिर हाथ । यहीं मोह मरद रथा कही जन जगन्नाथ ॥ परम संत मत हम कयों विचारी । पुरातम कथा परम सुग कारी ॥ सवत सत्रह सै छयोत्रा वर्ष यह भाषी वहु विधि करि हर्ष ॥ कातिक वदी द्वादिसी दिने । सोमवार यह गिनोत्तर गिनै ॥ इति मोह मर्द राजा की कथा सपूर्ण लिषत वंशी त्रिपाठी बेला पुरवा सामन वदी द्वादशी सवत् १८६० वि० ॥ राम राम राम राम ॥

विपय—मोहमर्द राजा की कथा का वर्णन ।

सख्या १६३ ई. मोहमर्द राजा की कथा, रचयिता—जन जगन्नाथ, कागज - देशी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिणाम (अनुष्टुप्)—८००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७७६ = १७१९ ई०, लिपिकाल—सं० १८६० = १८०३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा रामदास, ग्राम—रामकुटी सिकंदराराउ, डाकघर—अलीगढ़, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—१६३ सी के समान ।

अत—श्री तुरसी दास जू धन्यो सिर हाथ । यह मोह मरद कथा कहो जन जगन्नाथ ॥ परम सत मत हम कह्यो विचारी । पुरातम कथा परम सुख कारी ॥ सवत् सत्रह सै छयोत्रा वृप । यह भाषी करि वहुत हरप ॥ कातिक वदी द्वादशी दिने । सोमवार यह गिनोत्तर गिने ॥ इति मोह मरद राजा की वथा संपूर्ण लिखी शिवदास संवत् १८६० वि० जै भगवान की ॥

विपय—मोह त्यागी राजा की कथा ।

संख्या १६४ ए. सार चद्रिका, रचयिता—जगन्नाथ भट्ट, पत्र—४३, आकार—११¾ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—९४६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८७ = १८३० ई०, प्राप्तिस्थान—प० सीताराम शर्मा, ग्राम—वहरामपुर, डाकघर—इतमादपुर, जिला—आगरा ।

आदि—श्री राधा कृष्णे जयतां । अथ सार चद्रिका लिख्यते । मगला चरन । सोरठा । जय जय भानु कुमारि जय राधा असरन सरन । अपनो विरद विचारि, प्यारी पालहु दीन जन । कीरति ललित उदार, करुणा निधि जस रावरो, छायो जगत अपार, वशी अलि की स्वामिनी । गोरी रूप निधान, श्री प्रीतम की प्राणेश्वरी । तुम हौ परम सुजान, करिय कान जिन वीनती । जप कृपा कीरति जयाते निकुज विहारिणी । कीजै निज पद दास, कुवर किसोरी अली को । स्वामिन सुजस प्रकास छाहि रह्यौ तिहि लोक मै । अव श्रीवन कौ वास, लली अली कौ दीजिये ।

अंत—गीता में कही हरि मुख वानी, सो यह लिखौ भक्ति निधि दानी । ऐसी बुद्धि देउँ मै जातै, अनायास मोहि पावत तातै, या सिद्धांत सौ यही जानिये, गुरहि साध्यात

कृष्ण मानिये । गीताया । श्लोक । तपा सतत युक्ताना, भज ता प्रीति पूवक । ददामि बुद्धि योगते । ये नमा मुपयातिते । १६७ । कवि प्राथना गीत सव पुराणे सन्माहात्मय वेदतक । सच स्वरपे पुराण वाक्यं किं चिरक चिन्मयय्युक्तम् । १६८ ।

इति श्री वैष्णव महिमा प्रतिपादक श्लोक्ता पुराणोक्ता भट्ट जगन्नाथेन सगृहीता । सपूण । इद पुस्तक लिखित । सवत् १८८७ । छाया बलदेव जी की । ग्राम समाइ । तालुका आगरा । वैसाख वदी छठि रविवार । कृष्ण पक्षे । सुभमस्तु ।

विषय—सतों की महिमा सत्सग का प्रभाव तथा नवधा भक्ति आदि का वणन ।

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रथ स्वतत्र रचना नहीं है । किंतु कुछ वैष्णव सप्रदाय के कवियो की भक्ति आदि सबधी कविताओं का सग्रह मात्र है । कवि प्राय सभी सखी सप्रदाय के हैं । सग्रहकर्ता ने प्रमाण के लिये वैष्णव धम की महिमा के सबध के अनेक प्रमाण यथास्थान उद्धृत कर दिये हैं । परतु रचना कालादि के सबध में कुछ नहीं लिखा है ।

सख्या १६४ बी सार चद्रिका, रचयिता—जगन्नाथ भट्ट, पत्र—४४ आकार—१०’ × ६½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—९५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० मिट्ठूलाल जी मिश्र, स्थान—फिरोजाबाद मोहल्ला पीपल वाला, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि अत—१६४ ए के समान ।

सख्या १६५ ए धमगीता, रचयिता—जगन्नाथदास, कागज—देशी, पत्र—३०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, स० १८७२ = १८१५ ई०, प्राप्तिस्थान—प० राममोहन वैद्य, ग्राम—बलभद्रपुर, डाकघर—मेरची, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ धमगीता लिख्यते ॥ ऊ द्वापर विषे कथा होत भई । नगर जु० हस्तनापुर दिल्ली के पास तिं विषे गुर का पूछत भया ये राजा जन्मेजय राजा परीक्षित का बेटा पाडव का पौत्र । हे वैशपायन जी राजा धम और पुत्र युधिष्ठिर इनका मिलाप किस प्रकार होइ है सो तुम कृपा करि के कहौ वैशपायन ऊवाच—राजा का वचन सुन कर श्री व्यास देव जी के शिष्य जु वैशपायन है सो कथा कहत भये हे राजा तुम सुनु ॥ एक समय जु है देवता और इंद्र अर मुनीश्वर अर ब्रह्मा अर रिष्य अर विष्णु अर सूरज अर चन्द्रमा अर विनायक अर सारस्वती अर गगा जी अर जमुना जी अर गधव अर वनस्पत ये सब एकत्र बैठे थे । तहा जाइ प्राप्त भये नारद जी जो रिषी हैं जाकर के नमस्कार करते भये अर वचन करने लगे ॥

अत—युधिष्ठिरो वाच—आज मेरा जन्म सुफल है आज मेरी तपस्या सुफल है आज मेरा जन्म भी धन्य है तेरा दर्शन किया है मैं पाप ते मुक्त होइया और जितने लोभ क्रम हैं तिनते मुक्ति हुइया ॥ धर्मो वाच—हे राजा तेरी आरबल वहुत होवे सवाद करके अर राजा धम देव लोक विषे जाइया धर्म करके शत्रु भी दूर होता है धर्म करके ग्रह भी दूर होता है । जहा धम तहा दया है । इति श्री धम गीता धम सवाद सपूण समाप्त लिखा ज्ञानी राम सवत् १८७२ वि०

विषय—इस ग्रन्थ में धर्म द्वारा युधिष्ठिर को धर्मोपदेश किया गया है ।

संख्या १६५ बी. देवी पूजनादि मंत्र, रचयिता—जगन्नाथ (फैजाबाद), कागज—देशी, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८८; रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—राम भरोसे गौड, ग्राम—बीघापुर, डाकघर—टप्पल, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ देवी पूजनादि मत्र लिख्यते ॥ प्रति पदा में घृत से देवी की पूजा करै और घृत ब्राह्मणों को देवै जो मनुष्य रोग हीन हो जाता । द्वितीया में शर्करा से पूजै और शर्करा विप्र को देवै तौ मनुष्य दीर्घ आयु होता है ॥ तृतीया को दुग्ध से पूजा देवी की करै और ब्राह्मण को दुग्ध देवे तो सब दुखो से पूजक छूट जाता है । चतुर्थी को पुवो से देवी की पूजा करै और पुआ विप्र को देवे उसके कोई विघ्न नहीं होवै ।

अंत—फिर पुष्पादि से गुरु की पूजा कर कृत कृत्यत्व को प्राप्त होवे जो जो कोई श्री मद्भवने सुन्दरी देवी को पूजा करता है तिसको कहीं कहीं कुछ दुर्लभ नहीं है और देहान्त में हमारे मणि द्वीप को जाता है इस प्रकार देवी जी ने हिमालय से वर्णन किया है ।

विषय—देवी के पूजा के मंत्र, उसकी विधि ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता पंडित जगन्नाथ शुक्ल ब्राह्मण फैजाबाद के निवासी थे । मुख्य जन्म भूमि बिल्हौर, जिला कानपुर थी । लिपिकाल संवत् १९३२ वि० है ॥

संख्या १६५ सी. वैद्यक मंत्र तंत्र, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लाला दीनदयाल पटवारी, ग्राम—ससराय रहीम, डाकघर—हबीबगज, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—छेवटा की डाल से अमावस्या के दिन हवन करने से क्षयी रोग नाश होता है । कौडिल्ला के फूलो से होम करने से कोढ़का रोग मिटता है । लह चिडचिडा के बीजो से होम करने से अपस्मार रोग जाता है । क्षीर वृक्षों की लकडियो के होमसे उन्माद रोग मिट जाता है । गूलर की लकडी के होम से अति प्रमेह रोग मिट जाता है मधुवा शर्बत के होम भी प्रमेह मिटता है । मधु त्रितय जो दूध घृत दधि हैं इनके हवन से जो पैरो में मसूरिका रोग होता है मिट जाता है ।

अंत—प्रथम मत्र को सिद्धि करलेना चाहिये । ४१ । दिनमें सवा लक्ष मंत्र जपै जंत्र का पूजन आवाहनादि षोडस प्रकार से करै और हल्दी से चौका लगाय पीले पुष्प चढावे । पीले लड्डू का भोग धरै । पीताम्बर पहिन कर पीला आसन कर उस पर बैठे केसरानि घृत दीपक में भरकर थाली में हल्दी से षटकोण यंत्र बनावै मध्य में केशर से (ह्रीं) लिखे छवो कनो में ऊँ लिखे उसका पूजन करै । सवा लक्ष प्रयोग न कर सकै तो ३६ दिन में ३६००० मंत्र जप कर दशांश होम तर्पण ब्राह्मण भोजन करावै तो मंत्र अपना चिमत कार देखावै ॥ परन्तु पूरा प्रयोग १२५००० यानी सवा लक्ष का है । यह मंत्र बडा चमतकारी है परीक्षा योग है षट कोण यत्र—

दूसरा यन्त्र अष्ट दल है बहुधा पंडितों से मिल सकता है और उसकी पूजन विधि भी पंडितों से मिल सकती है जब उस मन्त्र का पूजन किया जाय तब इस जन्त्र पर दीपक धरा जाय ॥ अपूर्ण ।

विषय—इसमें नाना प्रकार के जन्त्र, मन्त्र और तन्त्रों का वर्णन है ।

संख्या १६६ ए. जैमिनी पुराण, रचयिता—जगतमणि, पत्र—९६, आकार—१२¼ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४५६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५४ = १६९७ ई०, लिपिकाल—सं० १८६८ = १८११ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० नारायन सिंह, ग्राम—जारखा कटरा, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ संघ दलन हरिनाक्ष हर । मधु मदन मधु आरि । सकल जगत पोषण भरण । श्री जदुपति सुष कारि ॥ १ ॥ सकल लोक लौकीक रचि । चतुर्वेद सुख देन । जगत प्रससित दव जितु । सुमिरौं श्री वसु नैन ॥ २ ॥ लोक आरि त्रिपुरारि जे । मदन कदन सुख कंद । चितु चेत्यौ तुव चरन निजु । विमल भाल युत चंद ॥ ३ ॥ वाहन वलित विहंग जे । त्रिकुथा भूपन नाम । राम पुरी प्रनवत तिन्है । जासु सात्य पी धाम ॥ ४ ॥ सत्रह सै चौवन समय । कृष्ण पक्ष बुध वार । माघ मास तिथि पंचमी । कियो कथा विस्तार ॥ ८ ॥ बुद्धिवत दासगु गुरु है । गुरु लौत गह मीर । महा सिद्धि युत धर्म युत । नाम जगत मनि धीर ॥ ९ ॥

अंत—चौपाई ॥ जे मुनि सुने समापति कीजै । दान अनेग पंडितहि दीजै ॥ जै मुनि कथा सकल सुनि लाजे । पुनि पंडित की पूजा काजे ॥ सुवरन सहित गऊ दस साथा । वस्त्र रकुम वासन वर गाथा ॥ अलंकार आभूषन दीजै । यथा शक्ति धर्म सब कीजै ॥ पंडित की पूजा करि जाती । कथा सुनै फल पावै तांती ॥ पूरन कथा होइ यह जवैं । ब्रह्मभोज कीजै नृप तबै ॥ बुद्धि प्रकाश कही मति यथा । चौदह पर्व सुनाइ कथा ॥२०८२॥ दोहरा ॥ सुनी यथा तुम एक मन । कही यथा मति एक । रामपुरी पावन कथा । ताको पुन्य अनेक ॥ २०८३ ॥ इति श्री जगत मनि विरचितायां महाभारते अश्वमेध के पर्वने जैमुनि कृते सब कथा वर्णनो नाम सप्तमोध्याय ६७॥ संवत् १८६८ वर्ष जेष्ट मासे कृष्ण पक्षे तिथौ चतुर्दिस्यां भौम वासरे समाप्त शुभ मस्तु ॥

विषय—पाण्डवों के अश्वमेध यज्ञ करने का वर्णन ।

संख्या १६६ बी. जैमुनिपुराण, रचयिता—जगतमुनि, पत्र—२८६, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८८८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५४ = १६९७ ई०, प्राप्तिस्थान—कुँवर उजागरसिंह जमींदार, ग्राम—ल्लितपुर, डाकघर—कोटला, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । दोहा । रुघ दलन हरि नाक्ष हर मधुसदन मधु आरि । सकल जगत पोषन भरण श्री जदुपति सुखकारि । १ । सकल लोक लोकीक रचि चतुर्वेद सुख दैन । जगत प्रसंसित दव जितु सुमिरौं श्री वसुनैन । २ । लोक आरि त्रिपुरारि जे मदन कदन सुख कंद चितु चेतो तुव चरन निजु विमल भाल जुत चंद । वाहन वलि त विहग जे त्रिकुया भूपन नाम । राम कृष्ण प्रनवत तिन्ह जासु साल्या धाम । ४ ।। सत्रह से चौवन

सवत् कृष्ण पक्ष बुधवार। माघ मास तिथि पचमी कियो कथा विस्तार । ८ । बुधिवंत दातार गुरु है गुह लेत गभीर। महा सिदि्ध सुत धर्म जुत नाम जगत मनि धीर ॥

अत—सुवर्ण सहित गऊ दस साथा वस्त रुक्रम वास नर नाथा। अलंकार आभूपन दीजे यथा शक्ति धर्म कीजै। पूरन कथा होइ यह जवे ग्रहन भोजन कीजे तवे। दोहा। सुनि कथा तुम एक मन कहिय यथामति एक राम कृष्ण पावन कथा ताको पुन्य अनेक। २०८३ इति श्री जगत मुनि विरंचिताया अश्वमेध के पूर्वनि जैमुनि कृत सर्व कथा फल वर्णनो नाम सप्त पष्टो ध्याय = ६७। सपूर्णम् शुभम्

विपय—पाडवो के अश्वमेध यज्ञ का वर्णन।

संख्या १६६ सी. जैमिनीपुराण, रचयिता—जगतमणि, पत्र—१४०, आकार—१० × ५½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०८०, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७५४ = १६९७ ई०, लिपिकाल—सं० १८८२ = १८२५ ई०, प्रासिस्थान—पं० छेदालाल पाठक, ग्राम—टुंडला, डाकघर—टुंडला, जिला—आगरा।

आदि-अत—१६६ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है:—इति श्री जगत मनि विरचितायां महा भारत अश्वमेध के पर्व ने जेमुनि कृते सर्व कथा फल वरणनो नाम सप्त पष्टोध्याय = ॥ ६७ ॥ सपूर्ण संवत् १८८१ वर्ष जेष्ठ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ अष्टम्यां भृगुवासरे। सुभ भूयात्। लिष्यतं मनोहर सावेन। टीकराम पाठार्थं। दोहा। कटि ग्रीवा अरु नयन वहि अति दुप सहै सुजान। लिपी जानि अति कष्ट ते सठ जानत आसान।

संख्या १६७. धर्म सवाद, रचयिता—जन दयाल, पत्र—१३, आकार—८ × ४½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०७, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० बाबूराम जी वैद्य, डिस्ट्रिक्टबोर्ड डिस्पेंसरी, ग्राम—कोटला, डाकघर—कोटला, जिला—आगरा।

आदि—(पृ० १ से ६ तक लुप्त, पृष्ठ ७ से आरंभ) भरतार की सेव कराई। अतीत सेवा सोधि रहाई। धरम दया सक्ति उनमांना; सौचि सनात सदारत जाना। द्विज अतीत हरि सेव कराई, सो त्रिया सुपी स्वरग रहाई। साल वरन सम वरतन कोई, तीरथा गगा सम और न कोई। विष्ण नाम सम और न धरमा पवित्र तीन लोक यह करमा। विपय त्यागी वाला वणी राष्यौ दिढ़वर वसो उत्तम भाष्यौ। तीन लोक महि मुक्ति कहीजे पंडवनदन यह सुणि लीजे। ताके त्रिया सबही माता उत्तिम लषिण महासुप राता। सुध आत्मां सदा अनदा। परम गति सो जाइ सुछदा। पट दोष वनिता कौं लागत, दिन दिन प्रति उठि पुनि सो भागत। अतीत भोजन पावत ताके पापमुचै कहत है जाके।४४।

अत—प्रसूत एक नाई कै होई, स्वांनी सपत सूकरी सोई। सुकरी कुकरी जातक भाई। अधरम पहलै जात फुलाई। गऊ जनै इक सोई वालक। यौ धरम वधै कोई नहि तालक। धरम पाप कौं निरनय कह्यौ........कहै जुधिष्टिर जपौ।५५। धरम संवाद सुणे चित लाई सुचै पाप सत सहजि वधाई। परलोक नर पावै सोई मुकति

होइ न सासो कोइ । ५६ । दोहा । पिता पुत्र की सुन कथा मुदित हाहि सब कोइ । जन दयाल सहजै मिलै चारि पदारथ सोइ । धरम सवाद सुनत ही सब तीरथ फल होइ । सूरम वध अर पाप पै हरिदास दिपावत सोइ अपनौ सरवर लै घर, बुरौ न कहिये कोइ । जो मानत नहि आग लौ तौ कावस याकौ होइ । इति श्री महाभारथे जग्य प्रश्नेधरम जुधिष्ठिर सवादे चतुर्थाध्याय । ४ । दोहा । तेरह दिन में तीन सौ चौपइ जोडि जुधि अण सार वखाणीयौ पडित छाँह जि पोडि । १ । इति श्री धम सवादग्रथ जाग साख । सवत् १९४१ फागण सुदि । २ । सुकुल पक्षि । वार सुक्रवार लिपत राम पाली मध्ये स्वामी जी रतनदास जीतत शिक्ष सोभाराम लिप्यत स्वपठनारथ ग्रथ । ४ ।

विषय– चाडाल और युधिष्ठिर का धम विषयक सवाद ।

। सख्या १६८ ए भाषावैद्य रत्न, रचयिता—जनार्दनभट्ट, पत्र—१६८, आकार—८ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९८४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८७ = १८३० इ०, प्राप्तिस्थान—प० लक्ष्मीनारायण वैद्य, स्थान—बाह, डाकघर—बाह जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नम । श्री सरस्वत्यै नम । अथ भाषा वद्य रत्न लिख्यते । नारदादि सेवत जिन्ह पारद विसद प्रकास । सारद विधु वदन करो हिय सारदा वास । वद करत आएस रचत बड़ो ग्रन्थ अभिराम । तिनको यह छोटो करो वैद्य रतन यह नाम । अथ नारी परीक्षा । भूखौ प्यासौ मौन जुत तेल तछन कोइ । जैये न्हाये तुरत ही नारी ज्ञान न होइ । हाथ अगूठा निकट ही नारी जीवन मूल । सोसों पन्डित देखको जानत सुख दुख मूल । नर को कर पग दाहिनो तिय को वर पद वाम तहा वैद्य जाने निरखि नाड़ी को परि नाम । सम्प्रदाय पोथिनी सौं अरू अनुभव सों भानि । जसे परखत पारखी रतन जतन करि मन । नारी निरख वैद्य जन भली भाति सकुचान ।

अत—सात वार तातो करै सोनो फेरि बुझाइ । यह पानी पीव सब नीर अजीरन जाइ । जब सोने के तार को फेरि अजीरन होइ । चाटै ता मोथा सहित मुनि जन को मत जोइ । गुन अजीरन खडन कह्यो मुनि सुनियो सब कोइ । भली भाति जानी यहै वह नर दुखी न होइ । इति श्री गोस्वामी जनार्दन भट्ट विरचिते भाषा वद्य रत्न ग्रन्थ अजीरन खडन नाम सप्तमो प्रकास इति वद्य रत्न ग्रन्थ सम्पूर्णम् । शुभ भवतु । सवत् १८८० ज्येष्ठे मासे कृष्ण पक्षे अमावस्याय शनि वासरे लिखितम बाहि नग्र मध्ये मिश्र भगवद्दास । श्री राम ।

विषय—नाड़ी परीक्षा, जीभ परीक्षा, नेत्र परीक्षा, ज्वराधिकार, प्रत्येक रोग का निदान, पूर्व रूप उसकी चिकित्सा, आसव, अरिष्ट, अवलेह, गुटिका रस धातु मारण, शोधन आदि समस्त वैद्यक सम्बन्धी विषयों का विस्तृत वणन है ।

सख्या १६८ वी वैद्य रत्न, रचयिता—जनार्दन भट्ट, कागज—देशी, पत्र—९२, आकार—१० × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००४, रूप—प्राचीन,—लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८८ = १८३१ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर ज्ञानसिंह, ग्राम—चौपडिया, डाकघर—पिहानी, जिला—हरदोई ।

आदि १६८ ए के समान।

अत--छाया लच्छन भानु की काल ज्ञान मत देखि। धूम वरन जब भानु लखि तादिन मृत्यु विसेख ॥ प्रतिमा पूरन जो लखै ता कह साध्य वखान। अंग हीन नर देखिये सो असाध्य पहिचान ॥ इति काल ज्ञान--दर्पन घृत जल तेल में छाया लघु नर नारि। विना सीस तन मरन है पटित लेहु विचारि ॥ इति अंग परीक्ष्या--इति श्री गोस्वामी कृत भट्ट जनार्दन नाम वैद्य रत्न भाषा ग्रन्थ सकल वेद्य परकाम विप्र वरन सत संवत् अट्ठासी शेष पृष्ठ चपका है। लेखक नाम काशी पठनार्थ सुवादास कायेथ कोटवा ग्राम निवासी ॥

विषय--नारी परीक्षा, मूत्र परीक्षा, साध्य असाध्य रोग परीक्षा, रोगों के लक्षण और औषधि वर्णन।

संख्या १६८ सी. वैद्यरत्न, जनार्दन भट्ट, पत्र--१८४, आकार--८¾ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१८, परिमाण (अनुष्टुप्)--२०७०, खंडित, रूप--प्राचीन, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--ठाकुर शिव परशन सिंह, ग्राम--राज शिवगढ़, डाकघर--अमेठी, जिला--लखनऊ।

आदि--तवहि सन्निपात बुध जन चीन्ह ॥१॥ पहिला पित्त गत होई वात गति होई वहुरि वहु ॥ कफ गति नारि होई भेद कह दियो सुवुध यह ॥ चक्र चढ़ी सी फिरै थान नाडी अपनो तजि ॥ वहुत भयानक कहौ मोर गति चलै वहुरि सजि ॥ होई जानि सूक्षम वहुरि जानि परै नहि किये परख ॥ इहि भाँति होइ नारी जवहि तव असाध कहिये निरखि ॥ २ ॥ दोहरा ॥ नारी फरकै मास मधि। वह गंभीर वखान। नारि जोर के जोर ते। कुपित उष्ण अति ज्ञान ॥ ३ ॥

अत--अथ अभयादि मोक्षक विरेचन ॥ चप्पैया ॥ हर्र मिरच्च अरु सोंठि आँवरे पीपरि लीजै ॥ पिपरा मुरच विडग और तज पत्र दत्त दीजै। ए सव लेइ समान तिगुन दातौ रुप पातौ ॥ आठगन लेइ निसात छह गुनी मिश्री यातें ॥ यह सव लै चूरण करै मधु सो गोली बाँधि वह। उठि प्रात खाइ यह कर्ष भर सीतल पीवै ॥ सुवहा ॥ दोहरा ॥ ज्यौ ज्यौ जल सीतल पियौ। त्यौ त्यौं लागी डार। जब हित लता तौ पियौ। तव छुडाइ निरधार ॥

विषय--(१) पृ० १ से ७८ तक--नाडी परीक्षादि। ज्वरादि लक्षण। ज्वर भेद। उनके लक्षण और उपचार। चूर्ण। वटी। रस। तथा अन्य रोग ॥ (२) पृ० ७९ से १४२ तक--स्त्री रोग वालक रोग। वाजी करण पाक। रस। कुत्ते काटने आदि का उपाय। तथा कक्ष रोगादि वर्णन। (३) पृ० १४३ से १८४ तक--धातु मारन विधि। धातुओ के गुण। सेन्दूर आदि सोधन और सारस्वत चूर्ण ॥

संख्या १६८ डी. वैद्यरत्न, रचयिता--जनार्दन भट्ट, कागज--बाँसी, पत्र--४३, आकार--५ × ४ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)--२२०, खंडित, रूप--प्राचीन, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--स्यामसुदरलाल अग्रवाल, स्थान--जगनेर, तह०--खैरागढ़, डाकघर--जगनेर, जिला--आगरा।

। आदि—श्रीराम जी । श्रीगणेशाय नम । अथ वयरस गुटिका लिप्यते ॥ अथ मत्र ॥ ॐ नमो सहाय ह्रॉं श्री ह्रीं श्री क्वीं क्वीं क्रीं स स स स्वाहा ॥ अथ पारामारण मत्र विधि ॥ शिवबीज महातेज, अल्पराक्रम दायक, उमामहाश्वर प्रसादेन सिधि भवती पारद यह मत्र पाठि परल में डारि जे ॥ अथ परल मत्र ॥ ॐ नमो पारावाध्यो सघ सवाध्या शिव शक्ति पारा वाध्यो उडैपुडे गागै भाज पारी जानतो श्री गोरपलाले गुरुकी शक्ति मेरी भगति फुरा मन्त्र इश्वरोवाच ॐ नमो पारो वाध्यौ सारो वाध्यौ ॥ अघीमुप पर जलत वांध्यौ फिरै फिरावै भाजे जाय तौ रछा करे ।

। अत—अथ प्रमेह की दवा ॥ असगधी नीली स्वड मिलाइ । सोंठि समगुल लीज पइ आनी औपधि लीजे । घृत मिलाइ पइं क्रिवा ७ वर प्रमेह मिट जाइ । अथ वाइको चूरन । दोहरा भागा सामलु भगारी मडिताइ मिलाइ चूरन दीजे टक २ वाइ वाइ रोग जरते । अथ गुटिका वाइ को । पिपरी असगध चित्रक तामें चाव काविरग सौठि आज वाइन अली करौंजी पिपरामूल समान लीजे । गोली करै टक २ प्रमान पइ । वाइ रोग कि भाजि जाइ । अथ क्वाथ वाइ कौ । सोठ इलायची रसदेवदारी मिलाइ क्वाथदि प्रात उठि रोगानि ।

विपय—भिन्न भिन्न मत्र पृ० ५ तक । पुष्टि गर्मी की दवा—पृ० ९ तक । गभवती की दवा १२ तक । गभधारण की दवा १५ तक । सरस्वती चूण १६ तक । मूसरी आदिके गुण १९ तक । निगुण्डी के कल्प आदि पृ० २४ तक । मन तत्र—३० तक । वध्या की दवा ३५ तक । मरती की दवा ३८ तक । जत्र तथा ज्वर के नुसखे ४५ पृ० तक ।

सख्या १६९ सगीत गुलशन, कागज—देशी और भूरा, पत्र—४०, आकार—१० × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८९९ = १८४२ ई०, लिपिकाल—स० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—रामगौरी गौड, ग्राम—स्यानपुर, डाकघर—जलेसर, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ सगात गुलशन लिख्यते ॥ ठुमरी दादरा—गई बीति रैन नहिं आये पिया । सखी कैसे समुझाऊ मै अपना जिया ॥ कबहू न हमने नह लगाया अवजो लगाया तो दाग उठाया ॥ सैया निरमुहिया ने ऐसा जलाया जला जला के खाक किया ॥ गई बीति ॥ इतनी अरज ह तुमसे शाहिद । हरि तुम्हरे मिल जावें शाविद ॥ हमरी ओर से यह कह दीजो । क्या उसको आजाद किया ॥ गइ बीति० ॥

अत—राग झझौटी राग कव्वाली—हरि का मेद न पाया साधू । हरि का भेद न पाया आप ही माली आपही खाली कली कली में जोहे रे । कच्चे पक्के की सार न जाने मन माने सो तोरा र ॥ कुछ वाटे कुछ मुख में डारै भक्त जनों की ओरी रे ॥ कुदरत तेरी रग विरगी । तू कुदरत का माली रे ॥ आपही वोवे आपही सींचे आप करे रखवारी र ॥ हरि का भेद न पाया साधू हरिका भेद न पाया रे ॥ इति श्री सागीत गुलशन समास ॥

विपय—इसमें नाना प्रकार की राग रागिनी लिखी हैं ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के संग्रहकार लाला जसवतराय जाति के सकसेना कायस्थ थे। ये एटा खास के निवासी थे। निर्माणकाल संवत् १८९९ वि० और लिपिकाल संवत् १९१८ वि० हैं।

संख्या १७०. भाषाभूषन, रचयिता—जसवंतसिंह (जोधपुर), पत्र—४५, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठा० प्रतापसिंह, ग्राम—राटोटी, डाकघर—होलीपुरा, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम.। विघन हरन तुम हौ सदा गण पति होउ सहाई। विनती कर जोरे करूँ दीजे ग्रन्थ वनाई। जिति कीनी पर पच यह अपनी इच्छा पाइ। ताको हो वदन करो हाथ जोरि सिर नाई। करुना करि पोषत सदा सकल सृष्टि के प्रान। ऐसे ईश्वर को हिये रहो रैनि दिन ध्यान। मेरे मन में तुम रहौ यह वैसे कहि जाय। ताते यह मन आपु सों लीजे क्यों लगाय। रागी मन मिलि स्याम सो भयो न गहरो लाल यह अच.ज उज्जल भयो ज्यों मैल निहि काल। चतुर्विध नायक॥ इक नारी सो हित करै सो अनुकूल वखानि। वहु नारि सों प्रीति सम ताको दक्षिण जानि। मीठी बातै सठ कहैं करिके महा बिगार। आवति लाज न धृष्ट को दीये कोटि धिक्कार।

अंत—भाषा भूषन ग्रथ को जो देखे चितलाइ। विविध अर्थ सहित रस समझै सबै इति श्री भाषा वनाई। २०९। भूषन सम्पूर्णम्। लिखितम भवानो सिंह राम पठनार्थ शुभ मस्तु। आसाढ़ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ९ अर्क वासरे सं० १८५२

विषय—आदि में नायक नायिका भेद पुनः ११० अलंकार लक्षण उदाहरण सहित समझाये हैं। अन्त में मधुरा, कोमला परुषा रीतित्रय का विशद उल्लेख है।

संख्या १७१. महापद, रचयिता—जवाहरदास (फिरोजाबाद, आगरा), पत्र—५७, आकार—६¾ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४१, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८१ = १८२४ ई०, लिपिकाल—सं० १८८९ = १८३२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० बांकेलाल, अध्यापक, स्थान—फिरोजाबाद, हुडेवाला, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्री मद गुरूभ्योनमः। प्रथम श्री गुरु चरन रज लै सीस अपने पै धरौ। ताते प्रताप विचारि कछु मै भनत भाषा करौ। पर्ब्रह्म परमातम हियै धरि ज्ञान कौ कछु भेद। लिषौ जो हरि सांचौ साषि ताकी संतवेद। निजु जीव के समझाइवे को प्रथम कछु निर्वेद कहि बहुरि हरि की गूढ़ गति और पिरापति कौ पथ तहि। सो कहत निजु जीव सो सब जीव यामें समझियौ। सुनि जीवरे उर धारिकै संसार में मत उरझियो। अज्ञान में मति फसै रे जिय मांनि मेरी कही। ससार ते जो छुटै चाहै समझि सोचौ यही। जग यह मिथ्या सुप्न है धोषे में हे मति भूल रे। नारि सुत सपत्ति पदारथ राज सब अति सूल रे।

अंत—तर्क कर्त्ताहू सौं मेरी विनती अति दीन है। कीजियो जो होय सांची संत संमत लीन है। ज्ञान जाकौं होयगो नही जानि है वक वाद भेद के जाने विना किमि लखि

परगो स्वाद। सब पंडित वेद वक्ता कों भवित ग्रह में सुनाय। सबनि नें सुनि बाचि के अरु साखि आगम की बताय। गीता पुरान प्रमान है सतन सराही भाउ सों। भयो निश्चै हृदै मेर सुख भयो बहु चाउसों। हरि की कृपा हरि सतकी सें जो, पढ़ेगो चित लगाय। ज्ञान करसो भेद याको पाय हरि पद जाय। अठासीया दस अष्ट समत पुनीत पूस मास अरु तिथि अमावस चद विनीत। निजु जीव के समुझाइबे कों कियो पूरन गीरथ। आरा्क जग की छोड़िकें यह चले हरि के पथ। हरिदास के जे दास हैं तिनको जवाहर दास। वासी फिरोजाबाद को लघु वरन सूद्र उदास। पापी पतित अति कुटिल कामी अधम मोसो है न होय अधम उधारन पतित पावन हरिहू सों नहीं कोय। इति श्री महापद जवाहिरदास कृत निजु हस्त लिखते सपूर्न मिती जेठ बदी ७ रोज भूम वार सवत् १८८९ अस्या श्री विरह वनटोली श्री महाराज सतगुरू बाबा श्री श्री श्री श्री श्री रामरतन जी के।

विषय—निर्वेद कथन, नाम महात्म्य, भक्ति उपदेश, गुरु महात्म्य, निर्गुण, सगुण निरूपण, काल धर्म गृही तथा विरागी धर्म, विविध शास्त्र समन्वय, ब्रह्म ज्ञान तथा वेदात सबधी प्रारंभिक बातों से लेकर सप्त भूमिका तक का सक्षिप्त वर्णन।

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रथ के रचयिता जवाहरदास फिरोजाबाद जिला आगरा के निवासी अपने को शूद्र वर्ण का भूषण बतलाते हैं—उन्होंने अपनी जाति या उपजाति बताने की कोई आवश्यकता नहीं समझी। इससे विदित होता है कि वह केवल वर्ण व्यवस्था को ही महत्व देते थे। अपने गुरू का नाम बाबा रामरत्न लिखते हैं। इनका कथन है कि मैं पढ़ा लिखा नहीं और न मुझे काव्य कोप तथा व्याकरणादि का बोध है। किंतु उनकी रचना को देखते हुए यह बात केवल उनके विनीत भाव को ही प्रदर्शित करती है। अन्यथा उनकी प्रौढ़ विषय प्रतिपादन शैली, भाव गाभीर्य, सरल शब्द योजना तथा पदलालित्यादि गुणों को देखते हुए किसी भी विचारवान की यह धारणा नहीं हो सकती कि ये पढ़े लिखे न थे और बिना प्रगाढ़ अध्ययन के केवल सत सगति मात्र ही से उन्नतावस्था को प्राप्त हो गये थे। काव्य की दृष्टि से चाहे यह ग्रथ उत्कृष्ट भले ही न समझा जावे किंतु इसमें सदेह नहीं कि रचयिता ने भक्ति तथा ज्ञानादि के सबध में बड़े रुचिकर भाव से उदाहरणों आदि के द्वारा पाठकों को उपदेश देकर सजग किया है। और इस प्रकार उनकी रचना लोक तथा परलोक दोनों ही की दृष्टि से हितकर सिद्ध होगी। यह प्रति स्वयम् रचयिता के हाथ की लिखी हुई है।

संख्या १७२ ए. प्रेमसागर (विज्ञानखड), रचयिता—जगदयाल, पत्र—६, आकार—१४ × ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, रूप—नवीन लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०६ = १८४९ ई०, लिपिकाल—स० १९०९ = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामस्वरूप उपाध्याय वैद्य, स्थान—फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम। दोहा। श्री गुरु चरण सरोज को हित से सीस नवाय। कहत खण्ड विज्ञान को हम पर होहु सहाय। सोरठा। जनक राय हरषाय नारद सों पूछत भये। कहो मुनि मोय सुनाय प्रेम लक्षण भक्ति शुभ। चौपाई। नारद मुनि बोले

हरषाई श्री द्वारिका दिव्य अति गाई । उग्रसेन की कथा सुहाई नंद नंदन बैठे तहँ जाई । मोर मुकुट सिर दिव्य विराजे श्रवनिनि कुंडल अति दुतिराजे । अलकनि की शोभा अति न्यारी मुखि पर झूम रही मतवारी । केसरि तिलक अनूप विराजे, लखि भृकुटी मन मथ मन भागे । कटि किंकनी अनूप सुहाई मानो श्याम वेद धुनि छाई ।

अंत—दोहा—गऊ अलकृत रत्न बहु—भूपन वसन समेत । अति हित सो दै भुसूरन नद नदन के हेत । चौ० । गऊ लोक विन्द्रावन गायो । गोवर्द्धन माधुर्य्य सोहायो । मथुरा द्वारा बति सुखदाई, विश्व जीति की अति प्रभुताई । श्री वलभद्र खडमन भावन पुनि विज्ञान खड पनि पावन । यह विधि सो नव खड सोहाये, शौनक प्रति मुनि गर्ग सुहाये । शौनक जू को विदा कराई गर्गा॰चतृ गये मुनि सुखदाई । सम्वत उन्नीसै सुखदाई तापर ऋतु सोभा अधिकाई । पुनि रितु राजसमय अति पावन । फागुन मास अधिक सुख पावन । राधा पक्ष अधिक सुखदाई भौमवार पूनौं छवि छाई । महा प्रभू कौ जन्म सुहायौ तव ही कीर्तन गाथ सुनायो । श्री कृष्ण प्रेम सागरे नारद जनक संवादे गर्गा चार्य शौनक संवादे नवमोतरंग । श्री शुभ मस्तु । श्री सवत् १९०९ । मासो तमे श्रावण मासे कृष्ण पक्षे तिथौ पचम्यां । लिखितं पुस्तकं गंगा प्रसाद अग्रवाले हिसामपुर ग्रामे वसति । या दृशं पुस्तकं दृष्ट वात्ता दृश लिखितं मया यदि शुद्ध अशुद्ध वा मम दोपो नदीयते । श्री राधा कृष्ण श्री हरयनमो नमः । श्री राम कृष्ण ।

विपय—प्रेम लक्षणा भक्ति का वर्णन ।

संख्या १७२ बी. प्रेमसागर (वलभद्रखंड), रचयिता—जयदयाल, पत्र—६, आकार—१४ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९८, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०६ = १८४९ ई०, लिपिकाल—स० १९०९ = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामस्वरूप जी वैद्य उपाध्याय, स्थान—फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—१७२ ए के समान ।

अंत—बोल्यो जनक प्रेरि हरपाई, मुनि कह्यौ वेगि मोहि समुझाई । नागिन कन्या कहा तप कीन्ह्यौ, कौन भांति हलधर को चीन्हो । सुनि नारद बोले हरिपाई भली कथा पूछी नृपराइ । एक दिन गर्ग ऋषेश्वर आये—सब गोपिन हित सो बैठाये । तिनसौ अपनो भेव जनावो—मुनिहल धर पंचागव तायो । ताको उन सब सेवन कीन्हो, तब बलराम उन्हे सुप दीन्हो । यह विधि-राम कथा मै गाई जो सुनि है चित दै हरपाई । ताको अधिक तेज बल होई, वाको जीति सकै नहि कोई । अति आनंद सहित उर माही । श्री वलिराम लोक को जाही । श्री हलधर पंचाग सुहायो गर्ग संहिता मे शुभ गायौ । दोहा । आग्विपाक यहि भाति कहि, गये अपने स्थान । सो सगरो इतिहास मै तुमसो कहो बपान । इति श्री कृष्ण प्रेम सागरे वलभद्र खण्डे नारद जनक संवादे समाप्त शुभ ॥

विपय—वलभद्र के विवाह और उनके निस्सन्तान रहने का इतिहास ।

संख्या १७२ सी. प्रेमसागर (विश्वजित्‌खंड), रचयिता—जयदयाल, पत्र—२०, आकार—१४ × ७ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६०, रूप—

नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०६ = १८४९ ई०, लिपिकाल—स० १९०९ = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामस्वरूप जी वैद्य उपाध्याय, स्थान—फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्री धाम जी सदा सहाय श्री गणेशाय नम श्री श्री राधा रमण के चरण कमल सिर नाय, अति आनंदव ठाइ उरकर हत कथा सुभ गाय। १। हाय अपनो सेवक जानिकै कहौं कथा हरपाय। गुरू चरणन को धरे हिये श्लोक अज्ञान तिमिरा धस्य ज्ञाना जन सला क्या या चक्षु रन्मी चिते येन तस्यै श्री गुरवे नम। ३। कोटि मलिड शका स...न भूषण भूपित सेवित सव सिद्धाना त न मामि गुरु पर। ४। हत कथा सुभ गाय हाय अपनो सेवक जानि र चरणों के धर हिये ऊंनमो भगवते तुम्य पवासु दवाय साक्षिणे, प्रद्युम्नाय निरुद्धायनम सकपणायच। ५। कह्यो गर्ग मुनि सौनकपाही का इक्षा है मन माही। पह द्वारिका तुम्है सुनायों जो सब तीथन कौ फल गायौ।

अत—नदिन सहित गगा तह आई—उपवन सहित वसत सुहाइ। लैदिक पाल सग सब दवा—इन्द्र आयत हकीनी सेवा। यह विधि दिव्य रूप धरि आये सप्तसिंधु नव खड सुहाये। गऊ रूप धरि पृथ्वी आई—ताकी शोभा कहत न जाई। १८५। वृन्दावन के तीथ शुभ गोवधन है साथ। वृज जन सब आये तहा दधि मापन लै साथ। १८६। यह विधि जग्य कथा सुपदाइ सो मैं तुम सौं गाय सुनाई। गावै सुनै जवन चितु लाइ। विस्व विजय जस सो नर पाइ। काटनि जग्यन को फल पावै अत समय गोलोक सिधावे। जहाँ परिपूरण तम सुखदाइ तहा कौन सुपमिलतन भाइ। १९१। नारदजनक सवादे कृष्ण प्रेम सागरे जैदयाल कृते विश्व जित खड समाप्तोयम ॥ सप्तमो ७ ॥ शुभ मस्तु। श्री सवत् १९०९ कुवार मासोत्तमे कृष्ण पक्षे तिथौ नवम्या गुरवासर पुस्तक लिपते गगा प्रशाद अग्रवाले हिसामपुर ग्रामे श्री सरजू निकटे शुभम पात श्री राधाकृष्णायन मोनम श्री गोविंदो मेनम।

विषय—श्री कृष्ण की कृपा से राजा उग्रसेन का राजसूय यज्ञ करने का वणन।

सख्या १७२ डी प्रेमसागर (द्वारकाखड), रचयिता—जयदयाल, पत्र—१५, आकार—१३¾ × ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७६, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०६ = १८४६ ई०, लिपिकाल—स० १९०९ = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामस्वरूप जी उपाध्याय वैद्य, स्थान—फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद जिला—आगरा।

आदि—सोरठा—जै ज जै गुरुदव कृपा सदन आनन्दमय। वेद न पावै भेवप्रभु मोपै कीजे कृपा श्लोक—श्लोक—यमे वास मु पासते शिव इति ब्रह्मेति वदान्तिनौ बौद्धा। बुद्धि इति प्रमाण पटव कर्तेति नैया किका। अहत्रित्य जन सासन रता कर्मेति मीमासाका। सोयन्नो विद धातु वातछिफल त्रलोक्य नाथ हरि। १।

थत—चौपाई—सपन माझ सेस कौ जानौ पक्षिन मै जो गरड़ वपानौ। दवन मध्य विधाता तैसे, देत्यन माहि भयो वलि तैसे। भक्त मुह जौ शमु सुजाना, दासन में प्रहलाद वपाना। विद्यामान ब्रहस्पति जसे नदी माझ गगा है पैसे। गृहन मध्य सूरज कौ जानौ

वृक्षन मह पीपर का मानौ। गिरिन के माझ सुमेर है जैसे, सब दीपन में जंबू ऐसे। पंडन मैं सुभ भरत सुहायो, लोकन मै वैकुण्ठ गनायो पुरनि मध्य द्वारावति जैसे, तीर्थन में पिंडारक तैसे। × × × इति श्री कृष्णप्रेम सागरे द्वारका खंडे नारद जनक संवादे जैदयाल-कृते द्वारिका खंडे समाप्तमः श्री संवत् १९०९ कुवार वारे शुक्र पक्षो तिथौ चतुर्दश्या भौमवासरे। लिखिते गगा प्रसाद अग्रवाले हीसाम्पुर ग्रामे वसति श्री सरजू निकटे। जो प्रति देषा सो लिषा। श्री हनुमते नमो नमः।

विषय—श्री कृष्णजी के द्वारिका जाने का कारण, उनके विवाहो तथा चरित्रों का वर्णन, द्वारिका का महत्त्व तथा उसके दर्शनादि का फल वर्णन।

संख्या १७२ ई. प्रेमसागरे (मथुराखंड), रचयिता—जयदयाल, पत्र—२०, आकार—१३¼ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०६ = १९४९ ई०, लिपिकाल—सं० १९०६ = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामस्वरूप जी उपाध्याय वैद्य, स्थान—फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशाय नमः श्री राधारमण जी सदा सहाय। श्री गुरुचरण सरोज रज अभिमत फल दातार। ताको प्रथम मनाइओ मगल करत अपार। श्लोक। वसुदेव सुत देवं कंसे चणूर मर्दन, देवकी परमानद कृष्णं वंदे जगद्गुर। सोरठा। यक दिन श्री नदनंद मन में कियो विचार यह। वस सुरन आनन्द सब दुष्टन कौ मारिकै। सोरठा। सुनु राजा बहुलास नारद मुनि यह विधि कह्यो, मैं गयौ सहित हुलास कंसराज की सभा में। स्याम करुणहय लपि ललचायो चढ़वे को मन मतो उपायो। दोहा। अति पापी मोहि जानि के दीन सक्र मोहि श्राप। हय पर चाहत चढ़ो सठ धरि हय वपु आप। यह विधि कथा सुनाय कै कृष्ण चरण सिरनाय। चलो विष्णु के लोक कौं दुंदुभि दीयो बजाय।

अंत—दोहा—राजवंश श्रेय लोक को जो कोउ रारत मार। मथुरा वसि सुभ गति लहै यह सिद्धांत अपार। चौ०। उनके श्रवण मुहा सम जानौ, जिन मथुरा महात्म न जानौ उनके चरण वृथा जग माही। जे चलि मथुरा को नहि जाही। नेत्र सोसिपी पक्ष सम कहिये जो मथुरा दरशन नहि लहिये। जो मथुरा को भामन जानो सुप को घट की तुल्य वषानो। श्री मथुरा हित जो उन दीनो वेकर वृथा विधाता कीनो। वृथा सीस परवत सम सोई—श्री मथुरा हित जीवन जोई। पच तत्व की देह वृथा ही—व्रज रज मैं लोटी नहि जाई। जीव सो वृथा कृष्ण नहिं जाने सो मन वृथा जो भक्ति न माने। यह विधि सो सव जानि के निश्चे कियो विचार, औरु वस्तु सव वृथा है हठ है कृष्ण विहार। इति श्री कृष्ण प्रेमसागरे मथुरा खंडे समाप्त सवत् १९०९

विषय—केशी वध तथा उसके पूर्व भव की कथा, अक्रूर का व्रज आगमन, कृष्ण बलराम का मथुरा प्रवेश और कंसवध। वसुदेव तथा देवकी कृष्ण मिलाप। उग्रसेन का बंधन-मुक्त होना, सदीपन से कृष्ण का पढ़ना तथा मथुरा की अन्य लीलाएं, एवं गोपी उद्धव संवाद, मथुरा महात्म्य।

संख्या १७२ एफ प्रेमसागर (माधुयखंड), रचयिता—जयदयाल, पत्र—१२, आकार—१२½ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०६ = १८४९ ई०, लिपिकाल—सं० १९०९ = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामस्वरूप जी उपाध्याय वैद्य, स्थान—फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशायनम । श्लोक । अतसी कुसुमोप मेय कांतियमुना मूलकदंब मध्यवर्ती । नव गोप वधू विलास शाली वनमाली वितनोत्त मगलानि । पर करी कृपा पीत पट हरि सिखि किरीटनटी कृप कधर । लकुट वेण्ड कर चल कुंडल पटुतर नट वेष धरभजे । सोरठा । मुनि बोल्यो बहुलास नारद सौं कर जोरि के । कहो सबै इतिहास श्रुति रुपा कहाँ करि मिली । चापाई । नारद मुनि बाले हरषाई राजा सुनो कथा चित लाई । श्रुति रुपा गोपी बृज माइ । शेष सापि के बरते आई । दपत मोहन रुप लुभानी । वरिबे की इच्छा मनमानी । वृंदा देवी को सब ध्यावे । करि पूजा गहि भाति मनावे । पावै वर सुंदर नंद नंदन । रुप राशि रस गुण अभिनदन ।

अंत—चढ़ि विमान निज धाम सिधायो, शुभ माधुरी खड में गायो । हित करि याहि जो गावे कोई, मन वांछितफल पावे सोइ । पुनि यह लोक भोग सुख भारी अंत समै गोलोक सिधारी । इति श्री कृष्ण प्रेम सागरे नारद जनक सवादे गर्गा चाय सानक सवादे जै दयाल कृते माधुय षडे चतुथ । समाप्त । शुभमस्तु । श्री सवत् १९०९ । भाद्र मासे कृष्ण पक्षे सप्तम्या रविवासरे । पुस्तिक लिखिते गगा अगुराले हिसाम्पुरे । श्री राधा स्याम सुदरोज पति । श्री गोविं‚ाय नमो नम । श्री सीता राम ।

विषय—श्रुतिरूपा के कृष्ण को मिलने, गोपिका दुर्वासा मिलन, चीर हरण लीला कौशलपुर की स्त्रियों का तपोबल के प्रभाव से नदु में आगमन और गोपों से उनका विवाह । कृष्ण तथा भीष्म की पुत्रियों का विवाह, एकादशी व्रत महात्म्य तथा कृष्ण के आनंद विलास और मथुरा के ब्राह्मणों के यज्ञ का वर्णन ।

संख्या १७२ जी प्रेमसागर (गोवर्द्धनखंड), रचयिता—जयदयाल, पत्र—९, आकार—१४ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६७, रूप—नवीन लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०६ = १८४९ ई०, लिपिकाल—१९०९ = १८५२ ई० प्राप्तिस्थान—पं० रामस्वरूप जी उपाध्याय वैद्य, स्थान—फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्री राधा रमण जी सदा सहाय । श्री गणेशाय नम । श्लोक । अज्ञानु रुचित भुजौ कनकाव दातौ सकीर्त्य नैक पित्त रोक मलाय ताक्षौ । विश्वम्भरो द्विजवरौ धर्म पालौ वदे जगत्प्रिय करो करुणावतारौ । (१) दोहा—शीश मुकट केशरि तिलक वांके नयन विशाल, पीतांबर कटि किंकनी उर राजत वन माल । कर लकुटी मुरली अधर, घूघर वाले बाल । छिन २ प्रति रक्षा करौ, सदा लटेली लाल । (३) सोरठा—फिरि बोल्यो बहुलास, अहो मुनि स्वर धन्य । तुम मम हिय अधिक हुलास सुन्यो चरत गिरिवर गहन । (४) दोहा—नारद हृदय अनद कै साधु साधु कहि तात । सुनौ कथा बृज चंद की मेटत

सब उतपात । (५ , चौपाई–वर्षा ऋतु वीती सुपदाई । घर घर वजी अनंद वधाई । इन्द्र जग्य हित सब वृजवासी, करत तियारी अति सुखरासी ।

अत—यहि विधि सौ गिरि कथा सुहाई, गावै सुनै कथा चितु लाई । कोटि पाप-मैरति जो होई मन वांछित फल पावै सोई । पुत्र पौत्र धन धान्य सुपावै, अन्त समय गोलोक सिधावै । गोवर्धन मुखते उच्चारै सो सदेह वैकुण्ठ सिधारै । वर्ष वर्ष प्रति पूजत जोइ नन्द समान मनोरथ होई । (७४) इति श्री कृष्ण प्रेम सागरे जे दयाल कृत नारद जनक संवादे गर्ग सौनक सवादे गोवर्धन खडे तृतीय तरंग समाप्त सुभ मस्तु श्री संवत् १९०९ मासोत्तमे कुवारमासे शुक्ल पक्षे तिथौ पचमा रविवासरे लिपिते गंगाप्रसाद अगरवाले ।

विषय—श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला का वर्णन ।

संख्या १७२ एच. प्रेमसागर (वृंदावनखंड), रचयिता—जयदयाल, पत्र—२१, आकार—१२३/४ × ७ इंच, पक्ति (प्रात पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६९३, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०६ = १८४९ ई०, लिपिकाल—सं० १९०९ = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामस्वरूप जी उपाध्याय वैद्य, स्थान—फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । श्लोक । अनर्पित चरी चिरांत् करुण यावत्तीर्णः ॥ कलौ समर्पयित्तु मुलत्तोज्वलर सांस भक्ति श्रिय हरिः । पुस्ट सुदर धुतिक दव सदीपत्ति । सदा हृदय कद रेस्फुरत्तुनः सची नंदनः । १ । सोरठा । जिहि सुमिरत आनंद राधा रमण अनंद मय । भक्त के हित चंद किये प्रकास उज्जल विमल । दोहा । विहरत है राधा सहित श्री जमुना के तीर । ते निसि दिन मंगल करै संकरपण के वीर । २ । सोरठा सुनौ सवै चितु लाइ श्री वृन्दावन सुभ कथा । उर आनंद वढाइ नारद बोले जनक प्रति । ३ । चौपाई । येक दिन बैठे नद अथाई पठये तहं उपनंद बुलाई । पुनि सगरे वृपभान हंकारे । आये सवै हर्ष उर धारे । सवै जोरिय कम तो उपायो । निसदिन इहा उपद्रव आयो ।

अंत—यह सुनि मोहन गये निज धामा । क्लेस क्रोध बोलयौ श्री दामा । राधा कह्यौ असुर हुई जाई । संष चूड़ दानव भायो आई । श्रीदामा तब कहयौ सुहाई एक सत्त वरष हो विलगाई । १८७ । दोहा । तेहि छिन प्रगटे प्रभू तहां कहयो दोउन समुझाई । अहो प्रियाजन सोचकर छिन सम वरष विहाइ । सोरठा । कह कुवेर घर जाव श्री दामा सौह रप प्रभु । रास समै भै आवत वनिज गति को पाइ हौ । दोहा । वृज विहार अद्भुत अधिक अधिक हृदय हरपाइ । अधिक चित्त दे सुने जो अधिक अधिक फल पाइ । १ र्ण० । इति श्री कृश्न प्रेम सागरे नारद जनक संवादे वृन्दावन षडे समाप्तः ।

विषय—नद आदि का गोकुल से वृन्दावन को प्रस्थान करना, सब तीर्थों के वहां प्रति वर्ष आकर चार मास सेवा करने का वर्णन, श्री कृष्ण भगवान के रास विहार तथा अन्य लीलाओं का वर्णन ।

संख्या १७२ आई. प्रेमसागर (गोलोक खंड), रचयिता—जयदयाल, पत्र—२४, आकार—१४ × ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—७९२, रूप—

प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०६ = १८४९ ई०, लिपिकाल—सं० १९०९ = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामस्वरूप उपाध्याय वैद्य, स्थान—फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशाय नम । श्री राधागोविंद जू, तुमहौ परम दयाल। दास जानि किरपा करौ हरौ सकल जजाल। उमा सहित गणनाथ को वार वार सिरनाय। कृष्णकथा चाहत कह्यो हम पर होहु सहाय। बदौ प्रथमहि गुर चरण, सुदर सुख की पान। सकल अमगल अघ हरन देत विमल विग्यान। तिनके सेवत सुलभ सुभ होत पदारथ चार। ज्यों दिनकरके उदयते, मिटत जगत अध्यार। सोरठा। पुनि बदौ पदरजु, जासो उज्जल होय हिय, करौं सो मम उर अैन सुदर मोहन जस कहौं। गौर अग राजत विमल विधु अकलक अछीन। सो मम हिय आकास मै कियो प्रकास नवीन। तासौं सूझै जो कछू सो मैं कहौ सुनाय। सुनिहै सज्जन सत जन अधिक हृदय हरपाय।

अत—सोरठा—माटी पान अनूप सो विधिवत तुमसौं कह्यो। सुनौ चित्त दै भूप बालकेलि लीला बहुरि। जमुना के तट मोहन पेले, बाल सपा सब लागे डोले। ताही छिन दुर्वासा तह आये लीलाप्पित अति श्रम छाये। × × × गऊ लोक प्रभु रास कियो नव प्रान पियारी हेतु। कहिउ तव अब इच्छा काहे मन माहा। सो बहु लास वही मो पाही। तुरत जनक मुनि चरनन गहि, बोलेउ हित हरपाय, और चरित्र जो किये प्रभु विधिवत कहि समुझाय। सोरठा। गऊलोक निजधाम, सो वैभव तुमसौं कह्यो सुनौ सकल तजि काम श्री वृन्दावन गूढ़ रस। इति श्रीकृष्ण प्रेम सागर जै दयालकृत नारद जनक सवाद गोलोक पद्दे सप्तमोध्याय।

विषय—कृष्णावतार का कारण, नद व उपनदादि शब्दों की व्युत्पत्ति, कृष्ण के सखा सखी तथा माता पितादि सबधियों के अवतार का विवरण और कृष्ण बाल लीला का सक्षिप्त वर्णन।

सख्या १७३ ब्रह्म वैवर्त पुराण, रचयिता—जैजैराम अग्रवाल मित्तल (मेंडु, अलीगढ़), पत्र—७२०, आकार—१०$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—९ परिमाण (अनुष्टुप्)—११५०० खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६७=१८१० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री भारती भवन, स्थान—फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्री कृष्णाय नम ॥ अथ ब्रह्म व वर्तपुराणे कृष्ण खड भाषा लिख्यते ॥ सोरठा ॥ गननायक वरदेव सुमरत दायक सिद्धि के। मन बच कम के सेव जो प्रेरक है बुद्धि के ॥ दोहा ॥ अरुण वरण भूपन अरुण अरुण वसन जुत हस ॥ कृपा करौ सो शारदा कदन करत प्रसस ॥ २ ॥ पीत वसन भूपन विविधि दीरघ द्रग भुज चार ॥ कमला प्रति सब जगत पति मो मन करौ विहार ॥ ३ ॥ इन्दु वरन वाहन वरद चद भाल ईशान। उमा सहित बदन करौं कृपा करौ भगवान ॥ ४ ॥ तिमर हरन मगल करन तत सत चित भगवान ॥ ४ ॥ विश्व रूप सब विश्व को आदि मध्य अवसान ॥ ५ ॥

अत—ताते जब सहित करि जोगा। मम कीत तो नाम सजोगा ॥ गिद्ध कोटि सहस्र परमाना। जन्म स्वैं करन सूकर आना ॥ स्वापद जन्म सतत परिमाना। कछू भोजन

निकरत जु आना ॥ विप्र अदी छित है जो कोई। संख चिह्न जुत सुक सो होई ॥ नृप वाही दुज होत सुजानो। राज हंस निश्चे कर मानो ॥ चित्र वस्त्र चुरावत जोई। तीन जन्म मयूर सो होई ॥ तेज पात जो हरत सुजानो। सो कारंड जोन्ह पहिचानो ॥
[शेष लुप्त]

विषय—(१) पृ० १ से पृ० २४ तक--मंगला चरण, ग्रन्थ निर्माण कालः—एक सहस्र औ आठ सत सठ संवत पाइ। करौ अरंभ या ग्रन्थ को, कीजो गिरा सहाइ ॥ नृप कुल वर्णन.—सोम वस में प्रगट भो, जदुकुल परम उदार। प्रगटे ताही वंश में श्रीपति कृष्ण मुरारि ॥ तिनके सुत भए प्रद्युमन तिनके सुत अनुरुद्ध। वजू नाभ तिनके भए जे है जगत प्रसिद्ध ॥ जिन प्रतिमा श्री कृष्ण की थरपी करि सनमान। तिनके जस सब जगत मै ज्यों प्रसिद्धि ससि भान ॥ उपजे तिनके भ्वश मे। भवरा जो कुल राज। वसत करौली नगर में। सुख के सबै समाज। एक समय मन में कियो विद्या पढन विचार ॥ गये तहुण गड नगर मे प्रोहित ग्रेह मझार ॥ तहां विरोहित नृपति सो। उपज्यौ दछुक विगार ॥ बढ़त बढ़त अति बढ़ि गयो। मन में बढ्यो विकार ॥ राजा बहुदल राथ ले। चढ़ि आयो वा धाम। प्रोहित सौ औ नृपति सो। भयो बहुत सग्राम ॥ दोनो भ्राता मन विखे। छत्री धर्म विचार। प्रोहित संग है नृपति सो। कीनौ जुद्ध अपार ॥ तव प्रोहित मारे गये। जुद्ध करत दोऊ बीर। चलत चलत आये निकट तरन तनूजा तीर ॥ जमुना को जल उतरि कै। जहँ तहँ करत निवास। आये देश निज छाड़ि कै। कियो साहपुर वास ॥ ताही समै सहावदी (?न)। दिली को सुल्तान। जुद्ध करत हाथु रस सो। वीते बहुत विहान ॥ तिनके संग को भाट इक। लस गर गयो सुभाय ॥ बैठि सभा मे शाह की। उठि आवे नित जाय ॥ एक द्यौस ता शाहने। ऐसे कह्यो सुभाय ॥ उमरायन सो नृपन सो। वोल्यो बचन सुनाय ॥ जो या राजै मारि कैं। मो पर ल्यावे सीस। ताको मै या देश को। राज करौ वकसीस ॥ भाट उठो या बात सुनि। पहुँचो निज ग्रह आइ। दोऊ भ्रातन सो कह्यौ। सबै संदेश सुनाइ ॥ —सोरठा—दोऊ राज प्रवीन सुनत बात यह भाट की ॥ करि घोरन पर जीन चले बहुत उत्साह सौ ॥ गढ़ देखौ तब जाइ फेरि अश्व चहुँ ओरि तैं ॥ एक ओर लषि पाइ कोरा दीने अश्व के ॥ तव वह कोरा खाइ घोडा वाढ़्यो क्रोध में ॥ दोऊ पाँय उठाइ उडि कूदो गढ मध्य में ॥ जाति धाक कौ अति वली महा पालथा नाम ॥ दिली के सुल्तान सो नित्त करत सग्राम ॥ ताको यही सुभाय एक पहर लौ प्रात ही। देवी के ग्रह जाइ पूजा करै विधान सौ ॥ घर को चलौ समाइ राजा पूजा करि तहा। तबही पहुँचै जाइ घोरा के असवार ए ॥ करिके क्रोध अपार खडग काढ़ि कै कमर तें ॥ राजा के गल डारि लीनो सीस उतारि के ॥ रहितौ मुकुट सुभाइ सा राजा के सीस पर। लीनो तुरत उठाइ पटका में वाधौ तवै ॥ फेरे अस्व सुजान आये वाही ठाम में ॥ कोरा दियो निदान उडिकै गढ बाहिर परे ॥—दोहा—तब दोऊ भ्राता साथ ही आइ गए निज धाम। आइ नग्र खोली कमर कीन्हो घर विश्राम ॥ यहां भाट आयो सभा तहा सुनी यह वात। राजा को मारो कहै आप न आप लजात ॥ भाट कह्यो सुलतान सों लखौ साह सो ओर। जिन मारो राजा वली सो है कोऊ और ॥ तवै भाट तहां आइकैं इनको गयो लिवाइ। दोनो भ्रातन साथ ही दीनों जाइ

मिलाइ ॥ तब पूछौ सुलतान ने तुम डारौ नृप मार ॥ पटका खोलौ कमर तें दीनौ मुकुट निकार ॥ दिल्ली पति इनको तबै महा सूर जिय जानि । राजा कहि मन सब दियो कियो बहुत सनमान ॥ पचासों और पाच सत ग्राम राज विख्यात ॥ बाटे धरनी करि कहे पोरच वागर जात ॥ भ्राता भौ बड राज है छोटे कुश विख्यात ॥ पोरच भये भवराज ते कुंश ते वागर जात ॥ गद्दी के मालिक भये राजा पोरच जात । तावेदार ह्वै के रहैं तिनके बागर भ्रात ॥ और तिन दस लियो बहुत कियो राज जसमंड । सबते तिनको देस सब कहियत पूरन खंड ॥ ता राजा तहँ वसि करे जैसे करत उदार । ते में वरनन ना करे होहि ग्रन्थ विस्तार ॥ उपजे तिनके वंश में द्रवे सिंघ बलवान तिनके तनय बहुत भये नगर बसे बहु ज्ञान ॥ वाहन सिंह तिनके भये बुद्धि धान रनधीर । तिनके जमुनी भानु सुत प्रगट भये रन वीर ॥ अमर सिंघ तिनके भए राजा परम उदार । तिनके गुन अद्भुत सकल जानत सब ससार ॥ सोवर गढ के जाठ ने कीनौ कछु विरोध । दिल्ली के सुल्तान को तापर वाढ़ो क्रोध ॥ फौज कसी तापर भई उतरे ओ फर मान । हुकुम पाइ कें चढ़ि गए राजा मुगल पठान ॥ तब राजा अमर सिंघ को उतरा यह फरमान । सोवर गढ़ कों जाइके मारो वेगि सुजान ॥ राजा सुनिकें हुकुम का हृक वेर ग ॰ वजाय । फिरि अहिदी आये तहा दाना हुकुम सुनाय ॥ औरंग जेव महावली दिल्ली को सुल्तान । ताको हुकुम न मानइ ऐसो को हिन्दु आन ॥ राजा तब दल साथ ले पहुचे सोवर तार । डेरा कीने जाइक सूर वीर अति घोर ॥ प्रात होत हल्ला करौ राजा जुद्ध उदार । सूर वीर पहुचे तहा गढ़ को लीनो मार ॥ गढ़ भीतर के जात हा वड़ा जुद्ध घम सान । अमर सिंह राजा तवे रन में छोड़े प्रान ॥ सोवर पै मारे गए अमर सिंह विख्यात । पात साह निज श्रवन सुनि राखी यह बात ॥ तिन के सुत अनिरुद्ध सिंघ राजा बुद्धि विचित्र । राज नीति जानत सकल अद्भुत तिनके चरित्र ॥ पात साह ने सुधि करी यह्यु कारज कौ पाइ । राजा सिंघ अनिरुद्ध को लानो पास बुलाइ ॥ राजा तब दिल्ही गए मिले तवे सुल्तान । खिलअत देके मुहमदह कियो अधिक सनमान ॥ ता राजा ने कविन सों नह कियो द दान । दान दछि तिनके भए घासी राम सुजान ता राजा को राइ सों बरनी कवि बहु भाति ॥ ताही में सब लिखो है जैसो है विख्यात ॥ भूख नादि कवि आइके पायो बहु सनमान ॥ जस बरनन जिनको कियो बहुकवि जानत जान ॥ जा कवि दस विदस के आये सुनि नृप दान । तिनके घर पासन करे और दये बहु दान ॥ ता राजा के गुन बहुत क्यों करि बरने जाय । बलि दधीच आ करन करि उन मानों कलि माहिं ॥ मैट भइ अयाद तब ता राजा के राज । वाढ़ों ता अति नगर में सुख को सब समाज ॥ हाट बाट सु दर अधिक सेन धाम मह भूप ॥ बाग ताल सोहत सुखद मनको मोहत रूप ॥—कवित्त—जिन अनरुद्ध गहलौ तन कौं सर कीन्हों । प्रबल पुडीर बीर मार हैं वितारि कें ॥ भाटन कों मारा चौहान कौं मीडि डारौ । बरौली को राउ जुद्ध जुरे गयो हारि कें ॥ जै जै राम भने जाट जातिन कों कौन गिनै । नृपति अमेठी डारे देस के सिंघार कें ॥ माहन मइ कों छिन एक ही में लूट करि । बीजापुर ऐसो कुर सदा लीनों मारि कें ॥— × × × × नगर की सोभा तथा कुन्डा ताल का वणन ॥ अनिरुद्ध सिंह की विजय तथा बीरता का वणन ॥ राजा सिंह अनि-

रुद्ध के वेटा सिंह कल्यान राजा को मरनो भयो वाढ़ी मनहिं गिलान ॥ करी प्रतिज्ञा प्रगट तिन भोग दये सब त्याग ॥ एटा को मान्यो जवै तव सिर वाधौ पाग ॥ × × × × × उक्त राजा की वीर ताई का वर्णन राजा किसुन सिंह एटा पति (मैंन पुरी में शरणास्थ) पर कल्यान सिंह की विजय का वर्णन अर्थात् पिता का वैर ले लेने का वर्णन— तिनके सुत प्रगटे जगत राजा सिंह अजीत। जुद्ध जुरे न मुरे कहूं रन में रहे अजीत ॥ तिनके सुत प्रगटे प्रवल दाता वुद्धि उदार ॥ रतन सिंह राजा तिन्हे जानत सव संसार ॥ वहुत राज कीन्हो विमल वाढ़ौ सुजस अपार ॥ द्वै प्रताप सूरज तपो पोरच खंढ मंझार ॥ उपजे तिनके मित्र सिंह राजा परम उदार। राजनीति जानत सकल तिनको सुजस अपार ॥ ता राजा को राज अव प्रगटहसायन माह। चारि वरन निज धर्म रत सोवत जाकी छांह ॥

× × × ×

सोरह सुत ता नृपति के जद्यपि वहु परिवार। सौप्यो सुत जसवंत कौ सवै राज को भार ॥ राजा जसवन्त के दान का वर्णन।

कवि का निज कुल वर्णनः—वैंस वरन जो तीसरो वेदन कर विख्यात। अगरो हेते प्रगट है अग्रवार यह जात ॥ मीतल गोत में प्रगट भए गेन्ना साह सुजाम। उपजे तिनके वंश में गिरिधर अति बुधवान ॥ तिनके भोपत राम सुत तिनके केसो राम। सीलवंत वुधिवंत अति जिनके गुन अभिराम ॥ तिनके सेवा राम सुत गुन निधि वुद्धि समुद्र। बालक हीतें जिन विविध पूजे श्रीमनि रुद्र ॥ तिनको राजा रत्न सिंघ वहुत कियो सनमान। राज काज में अति निपुन कीनौ राज दिवान ॥ तिनके मेंडू नगर में वाग कूप औ धाम। सब ही देस प्रसिद्ध है जिनको जस अभिराम ॥ तिनकी रुचि अति धर्म में औ हरि भक्ति निदान। तिनके जै जै राम सुत प्रगट भयो जग जान ॥ देव गिरा पारस गिरा विद्या पढ़ी अपार। देस गिरा में करत जो कविता चित्त विचार ॥ कवित्त बनिया वरन हौं कहावतु हौ अग्रवार। मैंडूपुर वासी हूँ हौ कहति समुझाइकैं ॥ सेवाराम सुत जाको जस देस देसनि में। सहर अनूप में निवास करो जाय कैं ॥ गंगा तट वास अव आयो हौ हसायन में। राजा मित्र सिंह पास रहौ सुख पायकैं ॥ जै जै राम सोई जाकी कविता मधुर होई। सब कोई कान दै सुनत मन लाइकैं ॥ × × × वीते वरप चालीस तव संवत गंगा नीर। बहु धन खरच करौ तहां आयो जहँ नृप वीर ॥ राखौ तव वहु मानदे दै दफ्तर को काज। श्री जसवंत कुमार सो बाढौ धर्म समाज ॥ तिनकी आज्ञा यो भई पर्म धर्म मय चार। जुगल चरित कहियै कछू निज मति के अनुसार ॥

हसायन के नगर, ताल, बाग, हरिमंदिर, दुर्ग तथा सभा का वर्णन। ग्रंथ परिचयः—

दोहा—ब्रह्म वैं वरत पुरान के, खंड कहे हैं चार। तामें कृष्ण खड यह, सब वेदन को सार ॥ श्री जसवंत कुमार की आज्ञा मन में राषि। कृष्ण खंड के सार सव वरनत भाषा भाषि ॥ जैसो कछु रिषि व्यासने कीन्हो है इतिहास। सोई सब भाषा विषै कीनों सुमति प्रकास ॥ अनुवाद के विषय में कवि का कथनः—नहिं विस्तार समास नही जो पुरान को रूप। सोई भाषा में कियो जै जै राम अनूप ॥ अश्लोकनि को अर्थ लहि तदवत रूप

विचार । भाषा में सोइ कियो ताही के अनुसार ॥ (२) पृष्ठ २५ से पृष्ठ ७३० तक-- वैवत पुराण का हिंदी भाषा में पद्यानुवाद । श्री कृष्ण के विविध चरित्र तथा भक्ति की विविध रीतियों आदि का वर्णन । कुछ राम चरित्रों का भी वर्णन ॥

टिप्पणी-- ब्रह्म वैवर्त पुराण के चार खंडो में से श्री कृष्णजन्म खंड नामक खंड का यह पद्यानुवाद है । अनुवादक जै जै रामजी मीतल गोत्रीय अग्रवाल वैश्य मैंदू (अलीगढ़) के निवासी थे । वहा से जाकर इन्होंने कुछ दिन अनूप शहर (बुलंदशहर) में निवास किया । तदुपरांत वह हसायन (अलीगढ़) के राजा जसवंत सिंह के यहाँ नौकर हो गये । इस राजा से इनका पैतृक संबंध था । इस कवि के पिता सेवाराम राजा रतन सिंह के दीवान थे । इनकी कविता अच्छी है । इन्होंने अपना तथा अपने आश्रयदाता का वंश परिचय दे दिया है । जो यथास्थान उद्धृत कर दिया गया है । यह अनुवाद उन्होंने व्यास कृत ब्रह्म वैवर्त पुराण के श्लोकों के आधारपर किया है । अनुवाद अनेक प्रकार के छंदों में लिखा गया है । यद्यपि इनके छंद अच्छे हैं फिर भी कहीं कहीं उनमें गति भंग दूषण पाया जाता है । कवि अपने को फारसी तथा संस्कृत भाषाओं का ज्ञाता बतलाता है ।

संख्या १७४ ए. गर्भ चिंतामणि, रचयिता—जैलाल, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी लिपिकाल—सं० १९०४ = १८४७ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला श्यामसुंदर पटवारी, ग्राम—सराय रहमत खान, डाकघर—विजयगढ़, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ गर्भ चिंतामणि लिख्यते ॥ क्यों जनम गमावो रटो राम रघुराई । मानुष देह बहुरि सहज नहि पाई ॥ नरनारी संजोग गर्भ में आयो । मल मूत्र मास को पिंड होय हिय रायो ॥ पग ऊपर तल में सीस रहे लटकायो । दुख गर्भ बास को दुख बहुत घबरायो ॥ पड़ते ही पिण्ड में जीव तनिक सुधि आई ॥ मानुष ॥ १ ॥ अगिन जहर तह तपे पवन नहिं आवै । रहे जीव कैद में जरा चैन नहि पावै ॥ करता सों बारबार अरज गुद रावै । इस फंद से बाहिर जो कोई भांति करावै ॥

अंत—हरि विमुखन की यह दशा होत दोजख में । जै लाल रटो नित राम नाम हरदम में ॥ गुरु पुरषोत्तम कर याद गर्भ प्रण घट में । कट जाय आगमन फंद तेरा घट पट में ॥ है तारक मंत्र यही वेद श्रुति गाई । मानुष देह बारबार सहज नहिं पाइ ॥ ५० ॥ इति गर्भ चिंता मणि संपूर्ण शुभ मस्तु लिखत शिवदास गोकुल पुरा आगरा मध्ये संवत् १९०४ वि० ।

विषय—जीव की गर्भ बास की दशा का उसके पापों के प्रायश्चित सहित वर्णन है ॥

टिप्पणी—इस गर्भ चिंतामणि ग्रंथ के रचयिता जै लाल थे । इनके गुरु का नाम पुरषोत्तम था । लिपिकाल संवत् १९०४ वि० है ।

संख्या १७४ बी०. गर्भचिंतामणि, रचयिता—जयलाल, पत्र—८, आकार—६×४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० लक्ष्मीनारायण आयुर्वेदाचार्य, ग्राम—सैंगई, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि-अंत १७४ ए के समान।

संख्या १७४ सी. सग्रह, रचयिता—जैलाल, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६×४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०१ = १८४४ ई०, प्राप्तिस्थान—कवि विश्राम सिंह, ग्राम—भवनियापुर, डाकघर—सरौढ़ा, जिला—एटा।

आदि—अथ राम नाम की महिमा लिख्यते ॥ श्री गणेशाय नमः। है रामनाम सिरनाम जगत जो गावै। कट जाय काल फंद फेर जन्म नहिं पावै ॥ है रामनाम का वड़ा महातम भारी। वेदन का सार गीता में कहै विचारी ॥ सुर रिपि मुनि जपते नाम अटल जुग चारी। है सकल लोक विख्यात जपे नरनारी ॥ जमराज कांपता रामनाम को ध्यावे। कटजाय काल फंद फेर जन्म नहि पावै ॥ यह वाल्मीक मुनि भये जगत विख्याता। जिन मरा मरा जप पाय त्रिलोकी नाथा ॥ भये ब्रह्म लीन जप उलटा नाम सुहाता। रह गया नाम ससार सकल जस गाता ॥ जयराम नाम जो जीव मुकुत को चाहै। कट जाय काल०॥ × × × हों हाथ जोड जैलाल तेरा जस गावै। कट जाय काल फद फेर जन्म नहिं आवै ॥

अंत—त्रिलोचन नील कंठ देवा। भूत वैताल करै सेवा ॥ वजाये गाल मिलै मेवा। त्रिशूली खप्पर धर देवा ॥ सीस पुजै शिवलोक में मृत्यु लोक में लिग। चरण पुजै पाताल में उमा पती अर्द्धंग ॥ गगा रहै संग सदा दासी। महादेव० ॥ चढ़े सिर कस्तूरी चदन। दिगवर वाघंवर अंगन ॥ करैं सुर तेतीसो वंदन। धतूरा आक भोग व्यजन ॥ वभोला पद वीनवैं हाथ जोड जैलाल। पलक खोल प्रभु दर्शन दीजै कीजै मोहि निहाल ॥ काट देव जमपुर की फांसी। महादेव कैलासीवासी ॥ इति महादेव जी की विनती संपूर्ण संवत् १९०१ वि०

विषय—इसमें शंकर और श्री कृष्ण जी की विनती आदि के अनेक ख्याल लिखे है ॥

टिप्पणी—इसके रचयिता जेलाल थे। इनके गुरु पुरुषोत्तम थे। इन्होने अनेक ख्याल बनाये है। लिपिकाल सवत् १९०१ है।

संख्या १७४ डी. सग्रह, रचयिता—जैलाल, काग ज—देशी, पत्र—२४, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१२ = १८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला दिलसुखराय, ग्राम—नगराभगत, डाकघर—पटियाली, जिला—एटा।

आदि—१७४ सी के समान।

अंत—सिय रामचन्द्र वुलवावो जी गुरु वशिष्ठ वोल पठावो जी ॥ रामचन्द्र गादी वैठारो राज तिलक गुरु करसो धारो ॥ करैं कौशिल्या आरती वर्षे फूल विमानन जे

ज त्रैलोग्य उचारो रे॥ रग रचना केशर लावार ॥ ४ ॥ इन्द्रादिक ध्यावन आव जी ब्रह्मादिक ध्यान लगावे जी ॥ इन्द्रादिक सुर ध्यावन आवै रिषि मुनि अस्तुति निज गुद गावै ॥ दास जैलालकी वीनती महा मूढ़ पापी ॥ रति डूवत नाव बचावार, रग रचनी केशर लावोर ॥ इति श्री रामचन्द्र जी का राज तिलक सपूर्ण समाप्त सवत् १९१२ वि०

विषय—इसमें रामनाम की महिमा, श्री कृष्ण जी की विनती, श्री रामचन्द्र जी का राजतिलक, शिवजी की विनती और पारवती की विनय आदि का वर्णन है।

सख्या १७४ ई ख्याल, रचयिता—जयलाल, कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०१ = १८४४ ई० प्राप्तिस्थान—बाबा जीवनदास, भैरूजी का मदिर, ग्राम—दूचींगढ़, डाकघर—अलीगढ़, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नम । अथ ख्याल जैलालकृत लिख्यते ॥ श्री रामचन्द्र को राज तिलक । रग रचना केशर लावार । दशरथ सुत तिलक चढ़ावोर ॥ चोवा चदन केशर लावो कुकुम अरगज सुगंध मगावो ॥ ढोल पखावज बांसुरी बीन मृदग घनासुरी । नृत्यकी युक्ति बनावो र ॥ रग रचनी० ॥ १ ॥

अत—मैं कहलग वर्णन करू तेरी चतुराई । ह नभ मडल पाताल तेरा यश छाइ ॥ हू अधम नीच अज्ञान पूर्ण कुटि लाइ । शरणागत वत्सल जान वीनती गाई ॥ दौ हाथ जोड़ जलाल तेरा जस गावै । कट जाय काल फंद फेर जन्म नहि पावै ॥ इति श्री ख्याल जैलालकृत सपूर्ण सुभ मस्तु । लिखत बनवारी भैया आश्विन वदी सप्तमी सवत् १९०१ वि०

विषय—इसमें रामनाम महिमा, रामचन्द्र का राजतिलक, जुगुल विहार, शिवजी की विनती आदि का वर्णन है।

सख्या १७४ एफ कठिन औषधि सग्रह, रचयिता—जयदयाल गौड़, कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३८०, रूप—प्राचीन, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५५ = १७९८ ई०, प्राप्तिस्थान—वैद्य जगजीवन लाल, ग्राम—नानेरा डाकघर—हाथरस, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ कठिन औषधि सग्रह लिख्यते अथ सग्रहनी निदान—कटुक तिक्त कसायला रूपा सीतल खाइ । अतासार पुनि कहौं सग्रहनी हुइ जाइ ॥ सग्रहनी लक्षण—उदर दुखै अपच अन्न कठ सूखै छुधा त्रिषा रहित ॥ औषध ॥ धनिया मोथा उसीर चदन अतीत सोंठि नेत्रवाला जवाइन सालि पर्णा वेल सम चूर्ण प्रात खाइ । अन्न अपच सग्रहनी जाइ ॥

अत—पेशाब वद होइ औ दरद कस्त होइ ताकी दवाई ॥ सिलाजीत सोधा टका १। पीपरि १२५, लघु इलायची १२५ सब मैदा करि गुड़ पुरान टका २ कूटि कै झरवेरी के प्रमान की गोली बाधै खाइ ऊपर चौरहन जल पीवै दुख मिटै अथ कठिन रोगों की औषधि सग्रह सपूर्णम् । लिखा जमाहर लाल सवत् १८५५ वि०

विषय—वैद्यक।

संख्या १७४ जी. श्रीकृष्ण जी की विनती, रचयिता—जयदयाल, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०४ = १८४७ ई०, प्राप्तिस्थान—रामलाल गौड, ग्राम—बादलपुर, डाकघर—हाथरस, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ श्री कृष्ण चन्द्र जी की विनती लिख्यते ॥ श्री कृष्ण चन्द्र महराज वेष नटवर धारी । वंशी वारे श्याम मुरारे लाज अब हाथ तेरे मथुरावारे गिरवर लियो उठाय राख ली लाज । विरज की मतवारे ॥ सब मेघ विचारे हार चले इन्द्र लोक में पुकारे ॥ आदि पुरुष अवतार सांतरो इनसे तौ हम सब हारे ॥ खाली कर डारे नीर जल बरस रह गई छारे ॥ जब इन्द्र गयो घब राई । कहौ कीजे कौन उपाई ॥ मैं करी बहुत लरकाई । सब बात हाथ बिगराई ॥

अंत—सीस मुकुट पीताम्बर बांधे कानो कुडल क्षत वंसुरी ॥ खडे कदंब तर सखा सग ग्वाल बाल खेलै हंसरी ॥ है अपार, लीला जग तोरी को गावै कवि मति थोरी ॥ है गुरु पुरुषोतम दास जेलाल कहै यो कर जोरी ॥ मैहुं मति मंद अभागी निश दिन कुकर्म सो लागी ॥ अब करौ कृपा वर मांगी दो बुझा पाप की आगी ॥ नाश कर दुप दरिद्र दोषा रे ॥ श्याम मुरारे लाज अब हाथ तेरे वंसी वारे ॥ ३७ ॥ इति श्री कृष्ण चन्द्र जी की विनती संपूर्ण समाप्तः लिपतं शिव दास नागर आगरा मध्ये गोकुल पुरा संवत् १९०४ वि०

विषय – श्री कृष्ण की बृज लीला ।

संख्या १७४ एच श्रीकृष्णचंद जी की विनती, रचयिता—जयलाल, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१४ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला चंपतराय, ग्राम—अलीगंज, डाकघर—अलीगज, जिला—एटा ।

आदि-अंत—१७४ जी के समान ।

संख्या १७५. नरसी मेहता की हुंडी, रचयिता—जेठमल, (नागपुर) पत्र—१२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७१० = १६५३ ई०, प्राप्तिस्थान—विसेश्वरदयाल चतुर्वेदी, ग्राम—पुरकनैरा, डाकघर—होलीपुरा, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ नरसी मेहता की हुंडी लिख्यते ॥ चौपाई ॥ श्री गणपति को पहिले ध्यावौ । जब नरसी की हुंडी गावो ॥ परम भक्त म्हेता है नरसी । राम भजन को बुधि है सरसी ॥ १ ॥ निशि दिन रामकृष्ण चित धरै । झूंठी दंतकथा नही करै ॥ जाको है जूनागढ़ बास । राम भजन में रहै हुलास ॥ २ ॥ जहां आये साधू जन दोय ! बासो लेकर रहिया सोय ॥ प्रात जाग पूछत है तहा । कौन लिपत है हुडी यहा ॥ ३ ॥ एक मसखरै कीनी हांसी । सुण ज्यौं ही तीरथ के वासी ॥ घर मेहता नरसी के जाओ । चाहे जितनी हुंडी लिखावो ॥ ४ ॥ उनके धन को छेड़ो नाही । बहुतेरी लक्ष्मी घर माही ॥ जब साधू पूछत घर आये । नरसी जी घर वैठे पाये ॥ ५ ॥

अत—इस विधि करी भक्त की साह। हुडी सिकारी सावल साह॥ कबीर के घर वाल दरयाये। धना भक्त के खेत निबाये ॥ ७४ ॥ राणै विष को प्याला भरो। चरणा मृत को नामजु धरयौ॥ मेल्यो दासी हाथे जवै। मीराबाई पी गई तवै॥ ७५ ॥ सुप उपज्यो पीवत पर मान। सहाय करी जब थी भगवान॥ पीच अरोग्यो श्री यदुराय। नरसा की हुडा सिकराय॥ ७६ ॥ सोरठा॥ नगर नाग पुरवास, नाम जेठ मल जानिये। हरि भक्तन को दास। सवत् सतरा सो दस ऊपरै॥ ७७ ॥ समौ बैठ गुरवार। जेठ शुक्ल पख अष्टमी॥ हरि गुण लियो उचार। जो गावै सीखै सुणे॥ ७८ ॥ इति श्री नरसी मेहता की हुडी समाप्तम्॥

विषय—नरसी भक्त की द्वारका पति श्री कृष्ण के द्वारा हुडी सकारने का वणन॥

सख्या १७६ नेमीनाथ जी के छद, रचयिता—हुलकलाल (शिकोहाबाद, मैनपुरी), पत्र—३०, आकार—७¾ × ४¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८४३ = १७८६ ई०, लिपिकाल—स० १९१३ = १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—जैन मदिर, ग्राम—नगला सिकदर, डाकघर—नारखी, जिला—आगरा।

आदि—अथ श्री नेमनाथ जी के रथ की अति से सोभाछद। गीत लिखते। दोहा। प्रथमोनमो श्री अरहन को दूजो सरस्वति माहिं। तीज गुरु को प्रणाम करि छद रचो हरि माहि। जबू दीप सुहावनो लखि जो जा विस्तार भरत क्षेत्र दक्षिण दिशा सोरट देश मझार। नगर द्वारका जादव वसै लसै सुर ा समान। अब वारह जोजन वनो विस्तार जाको जान। छप्पन कोट जादव तहा वसै महाबलवान। ताही वस विषे भरेवल नारायण आन। समुद्र विजे के नदवर अभो जगत विख्यान। वासुदेव बसुदेव को भये सुवल अवद्दाल।

अत—भूल चूक अक्षर अमिल कीजौ सुद्ध प्रवीन। महा विचछन चतुर जे तिनसों विनती कीन। छद। कलिकरी विनती महादीनती सुनहु विचक्षन परवीन। लघुदीघ भापा यहि जाना आसी मोमें वुधिहीन। बहुत अपनी करी सयानी ताते अरज सु मैं कीनी। जिन गुन धारन वारन पारा भुजवल लरि नहिं कर लीनी। २१६। इति श्री नेमनाथ जी के छद सपूर्ण मिती चैत्र वदी ८ गुरुवार सवत १९८३ वि०।

विषय—नेमिनाथ जी के रथ आदि की शोभा का वणन।

सख्या १७७ छद रत्नावली, रचयिता—जुगतराय (आगरा), कागज—देशी, पत्र—६४, आकार—११ × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७३० = १६७३ ई०, लिपिकाल—स० १९०८ = १८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबू हनुमान प्रसाद, सब पोस्टमास्टर, स्थान—राया, डाकघर—राया, जिला—मथुरा।

आदि—श्री गणेशायनम अथ छद रत्नावली लिख्यते। दो। श्री बानी करता पुरस कयौ जु प्रथम उचार। आगम निगम पुरान सब तामैं ताहु जुहारि। पिंगल आगे

गरुड के रच्यौ कला प्रस्तार। यह चेरो आपु समुद्र करि छंद समुन्द्र अपार। २। जुगतराइ सौ यौ कह्यौ हिमंत पांन बुलाइ। पिंगल प्राकृत कठिन है भापा ताइ बनाइ। ३। छंदो ग्रंथ जिते कहे करि इक ठौरे आनि। समझि सबनि के सार लै रतनावली बखानि। ४। नाम छद रतनावली यही कहै सब कोइ। लाइकहै प्रभु सबन कौ कवि हिय रापन सोइ। ५। सप्तध्याय रत्नावली कन्यौ ग्रथ मनसूर। प्रथम ध्याय कर्मरु क्रिया गुरु लघु गन इमपूर। ६। असम मात्रा छद द्वतीया है सम कलत्र तृयिक जांनि। चौथी सम वरन जु कही असम वर्न पचमांनि। ७। छठे ध्याय छंद पारसी सप्तम तुक कौ भेद। करु पढत या ग्रंथ कौ मनक्रम वचन सौ पेद। ८। अथ गुरु लघु लक्षण। सजोगा दिसि विंदु सुनि कहूं होइ चरनंत। दीरघ ऐ गुर जानीऔ और लघुनाम्ल हत। ९। जथा। उजुल जस जस अवर कन्यौ दिस २ हिम्मत पांन। मुक्ता तजि सुर सुदरिन भूपन कीनो कान। १०।

अंत—अथ बस्तुनिर्देस। संवत सहस सात सततीस। कार्तिक मास सुकल पक्ष दीस भ्यौ ग्रंथ पूरन सुभ थान। नग्र आगरौ महा प्रधान। ६१। दान मान गुन मान सुजान दिन २ बाढौ हिम्मत पान। जुगुत राइ कवि यह जस गायौ। पढत सुनत सब ही मन भायौ। ६२। जो कछु चूक मोहिते होई। सो अपराध छमौ सब कोई। बिनती सबकी करौ अपार। पंडित गुन जन लेइ सुधार। ६३। ऐते श्री जुगत राइ विरंचिते छद रत्नावली तुक भेद सप्तमोध्याय। ७। ईते छद रत्नावली समाप्त॥ सम्पूर्ण॥ मिती अगहन सुदी २ सवत १९०८ शुभ मस्तु श्री रस्तू।

विषय—पिगल।

संख्या १७८ ए. अखरावट, रचयिता—कबीरदास (काशी), पत्र—५०, आकार—१० × ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७४ = १८१७ ई०, प्राप्तिस्थान—प० भगवतीप्रसाद शर्मा, ग्राम—बरतरा, डाकघर—कोटला, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशाय नमः श्री ग्रन्थ अखरावती लिष्यते॥ दोहा॥ सत्य नाम निज सार है। सत गुरु कै उपदेश। सुनहु संत सत भावते। यहे मुक्ति सदेश॥ सोरठा॥ काग कुमति गति परि हरो। नाम सनेही होय। हंस होय सत गुरु मिले। कुलका क्रम सब खोय॥

अंत—विनु अक्षर सब झूठ है। नहिं अक्षर मांहि समाय। अक्षर भेद जो पावही। सो हंसा मा जग होय॥ सोरठा॥ कहै कवीर गुरु नाहि। सत वचन प्रतीत करु। गहु हस राज की वाह। निश्चै ज्ग भौजल तरे॥ इति श्री अपरावति ग्रन्थ सम्पूर्णम् श्री मुख वानी जो प्रति देखा सो लिखा मम दोपो न दीयते॥ सवत॥ १८७४ साल में लिखा साधू सन्त दास ने।

विषय—शब्द माहात्म्य, नाम माहात्म्य, आत्म निरूपण तथा ब्रह्म ज्ञान आदि का वर्णन।

सख्या १७८ बी, अखरावती, रचयिता—कबीरदास (काशी), पत्र—५०,

आकार—६ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४०, रूप-प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—रवतीराम, ग्राम—सनकुता,डाकघर—आगरा, जिला—आगरा ।

आदि-अंत—१७८ ए के समान ।

संख्या १७८ सी अमरावती, रचयिता—कबीरदास (काशी) पत्र—४८, आकार—६ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० चंद्रशेखर तिवारी, स्थान—बाह, डाकघर—बाह, जिला—आगरा ।

आदि अंत—१७८ ए के समान ।

संख्या १७८ डी कबीर बीजक, रचयिता—कबीरदास, कागज—बाँसी, पत्र—२९४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८५=१८२४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० दाताराम महंत श्रीकबीर जी की शाला, ग्राम—मेवली, डाकघर—जगनेर, तह०—खेरागढ़, जिला—आगरा ।

आदि—कबीर गुसाइं की दया । साधु गुरू की दया । श्री गुरवै नम । अथ रमैनी लिष्यते । अन्तर जोत सब्द एक नारी हरि ब्रह्मा ताके त्रिपुरारी । तेहि तिरिया भग लिंग अनन्ता । तेहु न जाय नष्ट आदि अरु अन्ता । बाखरि येक विधैता कीन्हों । चौदह ठौरि पाटि सो लीन्हों । हरि हर ब्रह्मा महतों नाऊँ । तेई पुनि तीनि बसाय गाऊँ ।

अंत—कहिये काहू कहा नहिं माना । दास कबीर सोइ पहिचाना । बहुतेक जिनि बहन द । गरि पकिरा जो ठौर । कहा सुना माने नहीं । देऊ धका एहु ओर । विप्र मतीसी सपूर्ण । संवत । १८८५ । कातिक मास्या । कृष्न पक्ष । एकादसी । सोमवार । बीजक सम्पूरण समाप्त । श्री गुरुय नम

विषय—इसमें ब्रह्म, विद्या, माया और जीव विषयक कबीर साहब के भजन हैं ।

संख्या १७८ ई बीजक रमैनी, रचयिता—कबीरदास (काशी), पत्र—३०२, आकार—६३/४ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० वेदनिधि जी चतुर्वेदी, स्थान—पारना, डाकघर—पारना, जिला—आगरा ।

आदि—लिपते बीजक रमैनी । जीव रूप इक अंतर बासा, अन्तर जोति कीन्ह परगासा । इक्षा रुप नारि अवतारी, तासु नाम गायत्री धरी । तेहि नारि के पुत्र तीन भऊ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नाऊ । तब ब्रह्मे पूछत महतारी के, तोर पुरुष कैकर तोह नारी । हम तुम तुम हम और न कोऊ तुमहि से पुष हमहि तोर जोइ,। साषी । बाप पूत कै एकै नारी एक माय बिआये । ऐसा पूत सपूत न देषा जो बापहि चीन्हैं धाए । १ ।

अंत—दषी सब कोउ कहत है अनदेषी कहे न कोइ । अनदेषी सोइ कहे जो भीतर बैठा होइ । चिरिआ तो तिल भर नहीं दना मौहे हाथ । चकुना मरि मास परोसी पकरि

अनरद्द हाथ। चिऊंटी निकली हाट मैं नौ मन कज्जल लाइ। हाथी लीहिस गोद मे ऊँट लिहिस लटकाए। तीनि लोक लीटी भया गीधर नीऐ मंडराऐ। मै तोहि पूछौ पडिता कौन वृक्ष चढ़ि पाये। आंगन वेलि अकास फला, अन व्यानी का दूध ससा सिंध को धनुप करि वांझ पूत को सूध। इति वीजक सापी संपूरणम्।

विपय—साखी, चेतावनी, कहरा, शब्द तथा विरहुली द्वारा ईश्वर, जीव और माया का वर्णन।

संख्या १७८ एफ. बीजक रमैनी, रचयिता—कवीरदास, पत्र—१४६, आकार—७ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०७ = १८५० ई०, प्राप्तिस्थान—मुंशी शिवनारायण श्रीवास्तव, स्थान—धौलपुर, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि-अंत—१७८ ई के समान। पुष्पिका इस प्रकार है:—इति श्रीवीजक सम्पूर्णम् संवत १९०७ चैत सुदी दौज॥

संख्या १७८ जी. दत्तात्रय की गोष्ठी, रचयिता—कवीरदास, पत्र—६०, आकार—८१/२ × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० वैजनाथ ब्रह्मभट्ट, ग्राम—अमौसी, डाकघर—विजनौर, जिला—लखनऊ।

आदि—सत नाम कवीर साहव की दया सू लिपितं ग्रन्थ दत्तात्रय की गोष्ठी समयै जोगी जोग कहत है॥ साधे कहत है साये॥ इन दोनो में थिर रहै॥ जाके मते अगाधे॥ समैनी॥ हिंगर लाज ते काशी आये। ज्ञान हेत कोई सत न पाये॥

अंत—रमैनी॥ दत्ता त्रेई मन मातौ उपावा॥ देह धारि अवनीस आवा॥ तुम ही हौ हमरे अविनासी। तुम ही काटी जम की फाँसी॥ जेहि कारण हम भयौ सन्यासी। जेहि कारन मै वन खड वासी॥ जेहि कारन हम भेप वनावा। जेहि कारन हम ध्यान लगावा॥ जेहि कारन हम जप तप कीन्हा। जेहि कारन हम भये अधीना॥ जेहि कारन हम तीर्थ अन्हाये। जेहि कारन हम काशी आये॥ जेहि कारन हम साधु मनाए। साध ध्यान ते साहिव पाए॥

विपय—दत्तात्रय और कबीर का संवाद।

संख्या १७८ एच. वशिष्ठ गोष्टी, रचयिता—कवीरदास (काशी), पत्र—१०, आकार—७१/२ × ५१/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दालचंद जी अध्यापक, ग्राम—खांडा, डाकघर—बरहन, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशायनमः। श्री गुरुभ्यो नमः। सत गुरू कवीर की दया। धर्मदास की दया। लिष्यते वशिष्ठ श्रेष्ठ। राय बंकेज सुनो उपदेसा। कर्म जीव काल के भेसा। गुरु वशिष्ट वृपन के माही। गुसाइ को न काल जग नेहा। गुरू वशिष्ट रिपन के राउ। मोसे वोले सत्य सुभाउ। मोसो सवद धरो जिन भोई। कैसे मुकत जीव की होई। निवसार पाय

क अस्थाना । सोसोहु सबद कहो निरवाना । रामचद्र को कौन बन कराउ, ताके प्रभु तुम गुरू कहाउ । कौन मत्र तुम ताहि सुनायो । दोहरा । बेटा है महमत के राचे अपने रग । परमानंद से गुरू करे करि काल सुजंग । भगत दिलावर उपजी ल्याये रामानद । सप्त दीप नव षड में परगट करो कबीर ।

अत—जीवत सुम्मेरनु जो चितु लावै । जम औघट नही तिहि चजउवे । जो फर लिप जीवन कर पाना, सो सुमिरन है अधर अमाना । दोहा—सुमिरन पाच अणम है सुमिरन लगन पचीस । पाचं तत्तुक पिंड है तामही सब दीस ।

सत गुर कबीर की दया । इति कथा वसिष्ट गोष्ट सपूण समापता । सत गुर कबीर धनी धरमदास की दया । श्री राम जी ।

विषय—जीव, माया तथा ब्रह्म और शब्दादि का वणन ।

सख्या १७८ आई कबीर साहिब और गोरख की गोष्ठी, रचयिता—कबीरदास (काशी), आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री वासुदेव हकीम वैद्य, ग्राम—लसई, तह०—खेरागढ, डाकघर—तातपुर जिला—आगरा ।

आदि—सन्त नाम सन्त सुक्रति आदि अलषी अजर अचित पुसमुनीन्द्र करनामय कबीर साहिब और गोरख की गोष्टी लिख्यते ॥ गोरष वचन ॥ कौन दश कौन दरवेषा । कौन गुरू ने मुडे भेसा ॥ कौन पुर्म को सुमरो नामा । कौन शब्द से मागा गाया । कबीर वचन । अत दिल दरीयाव मन दरवेसा । ज्ञान गुरूने मुडे वसा । अलप पुष का सुमिरौं नामा । गुर का सब्द ऐ मागौं गामा । गोरष वचन । स्वामि कौन साछरि कौनसा पानि । मुडे गुरूने कौन की वानी । कबीर वचन । अनुध अनछुरीनि रजन पानि ॥ गुरू मुडे अनहद की बानी ।

अत—कबीर वचन—सिधा अतन धरती मंडा न अकास । चार दिशा चारपुरी । जीव को कहा निरास । चन्द्र सूरज दोय कान । गोली माला आनु को, सन्त गुरू की आन । गोरख वचन—स्वामि धरती तो हाहि भई, परइ भई अकास । तीन लोक इंधन भये हम सन्त पुसके पास ॥ टोपी कोपीन कुरबो । गोलि कदा हाथ । जी तीस सत कबीर । उत्तर दीनी गोरपनाथ । कबीर गोरष की गोष्ठी सम्पूर्ण ।

विषय—कबीर और गोरष का आध्यात्मिक वाद विवाद ।

सख्या १७८ जे झूलना, रचयिता—कबीर दास (काशी), पत्र—५, आकार—८ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० बाँकेलाल शर्मा, स्थान—हैंडावाला, फिरोजाबाद डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—कबीर सत झूलना । तपत बना हाड चाम का बेंदाना पानी को भाग लगामता है । मलिमत करे लोर मास बेठ आप आपकों अस बटाउता है । नाद विदके बीच बिल्लोर करे सो तो आत्मा राम कहलाउता है । अस्थान इही कही दृढत हो दया दप कबीर

बताउता है । १ । कादर करीम रहम कीया घट पोलि के वाजी नटलाई । पाप वाद आव आतस में आप राना सब घट वना पाएक ताई । घट पटमें वेद वेदान ब्ढ़ा कर तार झूला आई दुचिताई । दुष दुद अपार अधर कहा सब भूलि परे नहीं सुधि पाई । दया दान दोज का दुष मिटा कॉइम कबीर की रोसनाई । १ ।

अंत—लोमस रुसी के स्रापसे जी देषो विप्रसें हो गये कव्वरे । कपिल मुनि कलपना रहया जीतिन भी सागर के पुत्र जारे । वसिष्ट अविद्या को नास किया देपो पुत्रकी पीरते भी पुकारे । सनकादि को बैराग दोस नाही कबीर कहै इजे विजै टारे ।

विषय—निर्गुण उपदेश संबधी झूलने ।

संख्या १७८ के. झूलना, रचयिता—कबीरदास (काशी), पत्र—७७, आकार—६½ × ५½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८५, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० बैजनाथ ब्रह्मभट्ट, ग्राम—अमौसी, डाकघर—विजनौर, जिला—लखनऊ ।

आदि—सत नाम । सत सुकृत आदि अदति अजर अचित्य पुरुष । मुनिन्द करुना मय कबीर जोग सतामन धनी धर्मदास चूरामनी नाम सुदर्शन नाम कुलपति नाम प्रमोद, गुरूवाला पीर कमाल नाम अमोल नाम श्रुति सनेही नाम साहेव हक नाम साहेव वेस बियालीस की दया से लिख्यते ग्रथ झूलना ॥ गुरु प्रेम को अंक पढ़ाये दियौ तब पढ़िवे को कुछ नहिं वाकी ॥ वावन से तीर जराय दियो पेट पोलि महल मै देई झांकी ॥ चारि वेद तख्त आस पास वने है सुसम वेद आसन जाकी ॥ १ ॥

अंत—अधर आसन की ये वंक प्याला पीये जोग जुगित पाये पंथ न्यारा ॥ पथ वीच ली गये सहर वे मगपरी देव की दृष्टि तहां सहज ॥ आइ ध्यान धरि पेपो ये नैन विनु देपिये ॥ अगम अगाध सव कहत जाई ॥ कहै कवीर कोइ भेद विरला लहै गहै सो कहै यह भेद भाइ । × ×

विषय—निर्गुण उपदेश संबंधी झूलने ।

संख्या १७८ एल ज्ञान स्थित ग्रथ, रचयिता—कबीरदास (काशी), पत्र—७०, आकार—७ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—७४८, रूप—प्राचीन, लिपि नागरी, लिपिकाल—सं० १८७४ = १८१४ ई०, प्राप्तिस्थान—मुंशी शिवनारायण श्रीवास्तव, स्थान—धौलपुर, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—जय श्री सत गुरुजी की दया । लिख्यते ग्रंथ ज्ञान स्थिति ॥ चौपाई ॥ आदि वचन मैं कहौ विचारी । सुनो धर्म दास यह कथा अपारी ॥ यह तो कथा वहुत अवगाहा । ग्यान गम्य जाको नहि थाहा ॥ वहुन ग्रन्थ कहा वहु बानी । याको गाम्य सुजन वहु जानी ॥ यह गम्य काहू जान न पावा । सो धर्म दास मैं तुम्हैं जनावा ॥ ज्ञान स्थिति मैं कहौ वखानी । जाते विनसै भय की खानी ॥ ज्ञान स्थिति विनु मुगति न पैहौ । देह छुटे घरले हर जैहो ॥

अंत—आदि ब्रह्म को जाय जगाया । मनौ काम ब्रह्म तर लाया ॥ गुप्त नाम पूरुष

तव भाषा। तीनि भाव ब्रह्म करि राखा ॥ आदि आलय के साथ जो दीन्हा। पुरुष ऐ के नरियर की्हा ॥ × × × कोटि ग्रन्थ कल्पातर। धमन कह्यौ पुकार। ज्ञान स्थिति भडार द। आदि पुरुष को सार ॥ इति श्री ज्ञान स्थिति ग्रन्थ सम्पूर्णम् शुभ मस्तु ॥ मिती माघ सुदी ६ सवत् १८७४ विक्रमी ॥ जय श्री सत गुरु की ॥

विषय—सतमतानुसार ज्ञानोपदेश।

सख्या १७८ एम ज्ञानस्थित ग्रथ, रचयिता—कबीरदास, पत्र—१३६, आकार—७ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२०, रूप—प्राचीन, लिपि–नागरी, लिपिकाल—स० १८७० = १८१३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री तिलकचद महावीर प्रसाद, ग्राम—कोरियानी, डाकघर—गोसाईगज, जिला—लखनऊ।

आदि अत—१७८ एल के समान। पुष्पिका इस प्रकार है —

इति ज्ञान स्थिति ग्रन्थ सम्पूण समाप्त सवत् १८७० वि० ॥

सख्या १७८ एन कबीर जी का पद, रचयिता—कबीरदास (काशी), पत्र—३०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—५४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००८ रूप—प्राचीन, लिपि–नागरी, लिपिकाल—स० १६९६ = १६३९ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा हरिहरदास, ग्राम—छर्रा, डाकघर—छर्रा, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री रामजी सति हैं कबीर जी का पद लिख्यते ॥ राग गोड़ी—दुलहिन गावो मगल चार हम घर आये राम भरतार ॥ टेक तन रत करि मैं मन रत करि हौं पच तत्त बरियाती। रामदेव मोरे पहुना आये में जोवन मैं माती ॥ सरीर सरोवर वेदी करिहौं ब्रह्मा वेद विचार। राम देव सांग भावर लैंहों धन सो भाग हमार ॥ सुर तैतीसौं कौतिग आये मुनिवर कोटि अठ्यासी। कहैं कबीर हम ब्याहि चले हैं पुरिष एक अविनाशी ॥

अत—हज काबे ह्वै ह्वै गया केती बेर कबीर। मेरा मुझ में क्या खता मुखना बोले पीर ॥ कबीर सेष सबूरी बाहिरा क्या हज काबे जाइ। जिसका दिल साबित नहीं तिसकू कहा खुदाइ ॥ इति कबीर जी की पद साखी समाप्त लिखत केशो दास सवत् १७१० आसाढ पूनो कृष्ण पक्ष आसाढ श्री राम सति है ॥

विषय—कबीर जी के पद ज्ञान सबधी।

सख्या १७८ ओ रमेनी, रचयिता—कबीरदास, पत्र—१०, आकार—८ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाँके लाल जी शर्मा, स्थान—हुन्नावाला, फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—अथ रमेनी लिख्यते। काम बानते सब अकुलाते। अब सुन लेहु क्रोध की बातें। काम ते क्रोध अधिक पर चढा। ताके उर त्रासें, कोऊ पढ़ा। कूरि कुबुधि क्रोध के सग बिना विवेक मिटै नहीं आग। जबही उर में प्रगटे आई। कपे देह थरथरै पाइ।

अत—वृक्ष एक जु लगा अकासा, नहीं फुल फले न वाके पासा बिनु जड़ मूल रहे वह ठाढ़ा, तिहि तर हाल राम की लागा। लोग दुनी सब सोदे-आया, सुप थोरा दुख बहुत

कवीर चतुर ए हीन कुल इन ते नीच न कोइ है। जो वरण भेद भगवान के तोरन मदूधे क्यो होइ है। छप्पै छदस सम्पूर्णम्।

विषय—ईश्वर की सत्ता, भक्ति तथा आत्मोपदेश।

संख्या १७८ यू. कुरम्हावली, रचयिता—कवीरदास (काशी), पत्र—५०, आकार—८½ × ५¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० वैजनाथ भट्ट, ग्राम—अमौसी, डाकघर—विजनौर, जिला—लखनऊ।

आदि—सत नास। सत सुकृत आदि अदली अजर अचित्य पूरन मुनीन्द्र करुणामय कवीर सुरत जोग संताएन धनी घर्म दास की दया चूरासनी नाम वुल पत नाम प्रमोघ गुरु वाला पीर कवल नाम अमोल नास सुरत सनेही साहव वस प्रताप की दया सो लिष्यते ग्रन्थ क्रुम्हावली॥

अत—॥ साषी ॥ सक सुरत एकै भयो। तव को टोरै आऐ। काके होरै टूटि है। सो कोई देव वताए॥ चौपाई॥ ग्रन्थ कहेउ क्रुम्ह वलिसारा। पहुचै हस पुर्म दरवारा॥ समझ विचार ज्ञान मत सता। रह नीर हं सोई मत वंता॥ इति श्री ग्रन्थ क्रुम्हावली सपूर्ण॥

विषय—संतमतानुसार ज्ञानोपदेश।

संख्या १७८ व्ही. स्वास गुंजार, रचयिता—कवीरदास (काशी), पत्र—२५४, आकार—८½ × ५¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० वैजनाथ ब्रह्मभट्ट, ग्राम—अमौसी, डाकघर—विजनौर, जिला—लखनऊ।

आदि—सत नाम—सत सुक्रति आनंद अदली अजर अचिंत्य पुरुप मुनिवर करुणा मय कवीर सुरत जोग सतापन धनी धर्मदास चूरामनी नाम सुदरसन नाम कुलपत नाम प्रमोध गुरु वाला पीर कवॅल नाम अमोल नाम सुरत सनेही साहव वंस प्रताप की दया सो लिष्यते श्री ग्रन्थ स्वाॅस गुंजार॥ सतनाम सुक्रति गुन गाऊ॥ अविचल पाॅय अभय पद पाऊ॥ जासों रहत अमर पुर गएेऊ। सील रूप सवही के भएउ॥

अंत—सत सुक्रति के वाहेर॥ जो चितवै कर जोरी डीठ॥ ताजन भोरी चौहटै॥ गुन गार की पीठ॥ जी आ कहौ तौ जग तरै॥ प्रगट कही नहि जाय॥ प्रवाना लेहौ हौं धर्मदास॥ राखहुँ सिरहि चढ़ाय॥ हंस तुम जिन डरपसि मोरी प्रतीत॥ सात दीप नौ खढ मै लै जे है भव जल जीत॥ ऐते श्री ग्रन्थ स्वास गुंजार संपूर्ण॥ सुभ मस्तु समाप्त॥

विषय—श्वास संबंधी ज्ञानोपदेश।

संख्या १७९ ए. कृष्णक्रीड़ा, रचयिता—कालिकाचरण, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२० = १८६३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० दुलारेलाल, ग्राम—फतेहपुर, डाकघर—बाॅगरमऊ, जिला—उन्नाव।

आदि—श्री गणेशायनाम अथ कृष्ण क्रीड़ा लिख्यते ॥ वसत तिलक छन्द—मातग मौलि मन होमि किरीट भारी । श्री खड सारि शशि वदन सु धधारी ॥ अनोज अग्रिज विघ्न समूह हारी । जैं वक्र तुण्ड जन मगल मोद कारी ॥ विद्या विवाद श्रुति नारद विलास लोके । विरचीं वीना विचित्र कर पुस्तक पुष्प कान्हे ॥ चन्द्र प्रभा वसन भूषण भूरि गाता । हरिधर हर धर धरनि धर श्रुति विहीन । सहस वदन वदौं पदन प्रभु गुन वदन प्रवीन ॥ कवि कोविद सुर असुर नर सकल वदि कर जोरि । करौं कृष्ण क्रीड़ा कथन बुधि विवेक रस बोरि ॥

अत—धार न देर सुनी अजहीं तब कीन्हीं न दर न लीन्हीं सवारा । भूप सुता हित घोर वने दुर वासा की साप गरे गहि डारी ॥ फेरि लये गुर वालक ज्यों अरु मीत सुदामा की प्रीति सभारी । कालिका चरन कृपा करिके हरि तैसे हरो हिय पीर हमारी ॥ ५ ॥

इति श्री कालिका चन कृते कृष्ण क्रीड़ा नाम ग्रन्थ समाप्त सवत् १६२० वि० जेष्ठ शुक्ला ११ ग्यारस ॥

विषय—इस ग्रन्थ में श्री कृष्ण जी की लीला और उनकी महिमा कवित्त, सवैया, दोहा आदि छदों में वर्णन की है।

सख्या १७९ धी कृष्ण क्रीड़ा, रचयिता—कालिका चरन कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८९४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९११ = १८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० अजमेरसिंह, ग्राम—नगरा रामू, डाकघर—सरार अगत, जिला—एटा ।

आदि अत—१७९ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है —

इति श्री कालिका चन कृते कृष्ण क्रीड़ा नाम ग्रन्थ सपूर्ण समाप्त सवत् १९११ वि० राम राम राम श्री गणपताय नम ॥

सख्या १८० नरक के पापी, रचयिता—काली प्रसन्न, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर विश्रामसिंह, ग्राम—राहीपुर, डाकघर—बारह द्वारी, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ ब्रह्मवैवर्त पुराण के नरक और उनके पापियों के नाम लिख्यते ॥ कौन कौन पाप से मनुष्य कौन कौन नरक को पाता है ॥

नरक कुड —	पापिया के नाम
१ वह्नि कुड—	जो बाधवो को कटु वाक्य कहता है ॥
२ तप्त कुड—	जो अतिथि को अन्नदान नहीं करता है ॥
३ क्षार कुड—	निषिद्ध दिवस में जो रजक को वस्त्र धोने को देता है ॥
४ विट कुड—	ब्रह्म के वृत्त का हरने वाला ॥
५ मूत्र कुड—	पर तड़ाग खनित्वोत्सर्जक ॥

६. श्लेष्म कुंड—	एकाकी मिष्ट भोजी ॥
७. गर कुड—	जो पिता माता का पालन नही करता है ॥
८. दूषिका कुड—	अतिथि दर्शन से जो विरक्त होता है ॥
९. वसा कुंड—	विप्र अर्पित दान को पुनराय जो अन्य को दान करता है ॥
१०. शुक्त कुंड—	पर स्त्री गामी अथवा पर पुरुप गामिनी ॥
११. अस्टक कुड—	गुरु जन का ताड़न कारी ॥

अंत—

१. शूल पीत कुड—	शिव लिग पूजन द्रोही ।
२. प्रकंपन कुंड—	विप्रो का दंड दाता व भय दिखाने हारा ॥
३. उल्का मुख कुड—	स्वामी से कटु भापिणी स्त्री ।
४. अकूप कुड—	शूद्र भोग्या ब्राह्मणी ।
५. वेधन कुंड—	वेश्या ।
६ दंड ताड़न कुंड—	घु गी ।
७. जाल वद्ध कुंड—	महा वेश्या (अष्टाधिक पुगामिनी)
८. देह चूर्ण कुंड—	कुलटा ।
९. दलन कुड—	स्वैरिणी ।
१०. शोपण कुड—	पुंश्चली ।
११. कष कुंड—	सवर्ण पर पत्नी गामी ।
१२. सूर्य कुड—	ब्राह्मणी गामी क्षत्रिय वैश्य ।
१३. ज्वाला मुख कुड—	मिथ्या सपथ कारी, विश्वास घाती मिथ्या साक्षी ॥
१४. जिस्म कुड—	नित्य क्रिया हीन कुत्सित उपहास कारी ॥
१५. धूमान्ध कुंड—	देव व विप्र धन हारी ।
१६ नाग वेष्टन कुड—	जो ब्राह्मण वैश्य दैवैज्ञ वृत्ति ग्रहण अथवा लाक्षा लोह रसादि द्वारा वेचकर जीविका निर्वाह करे ॥

इति श्री नरकों और पापियों के नाम संपूर्ण समाप्तः

विपय—ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार ८६ नरको और उनके पापियो के नाम ॥

संख्या—१८१ ए भृगुगण (गोत्र), रचयिता—कमलाकर भट्ट, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—६×४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्) १६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२६ = १८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामलाल, ग्राम—रती का नगला, डाकघर—हाथरस, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ भृगु गण गोत्र प्रवर लिख्यते ॥ भृगुगण कहते है ॥ आर्ष्टि पेण नैरथि ग्राम्यायण काणायन चांद्रायण पौठ कुलायण सिद्ध सुमनारायण योराभि रभिये वौधायना चार्य ने कहे हैं नैरु शिर उपस्तम्वि भालिव कादम्वायनि गार्दभि

अनूप मात्स्य सूत्र में और भी कहे हैं । भृगवन्दीय मार्ग पथ घटायिनि कपि आइयायनि ये आर्ष्टिषण गण हैं और इनके प्रवर ये हैं कि भागव च्यावन आप्नवान आर्ष्टिषण अनूप ये जो वत्सगण और विद गण आर्ष्टिषेण गण हैं। इनका परस्पर विवाह नहीं होता है क्योंकि इनके दो तीन प्रवर तुल्य होने से यद्यपि तीन प्रवर वाले जो आर्ष्टिषेणगण हैं इनका ऐसा नहीं है तथापि वत्स गण विदगण आर्ष्टि षेण गण इनका परस्पर विवाह नहीं होता है । ये पांच प्रवतिन है ऐसा मंजरी [illegible] बौधायनाचार्य के कहने से परस्पर विवाह नहीं होता है ॥

अंत—वत्स और पुरोधस के पांच प्रवर हैं । भार्गव, च्यावन, आप्नवान वात्स, पैरोधस ॥ इति ॥ पजिचनि मथित इनके पांच प्रवर हैं इति प्रवर मंजरीकार ऐन लिखने से गूढ़ ढूंढना चाहिये इसके अन्तर यस्क गण कहते हैं । यस्क मान, मूक, माध्य क, पथ भूम्य, भागत्य, राजि नायिन, भाग विमय, दुगदन भास्कर दयतायन वार्क ऐप, माध्य मेय वासि कौशायेय, कौंडिल्य सत्यकि, चित्र सेन, भास्क भागति, वार्कण्डीय पौस्त्य कक चिति, भागुरि, अनूप, ये बोधायनाचार्य ने कहा है वा हस्य चराडपोदन जीवत्यायन मौसलि विलि सालि भागुलि, भाग चिति, काश्यपि वालेपि समादा गपि सारि ज्वरि भागति सातुष्टि मद्रायनि मादायनि स्तोक भावस्य शार्क राक्षि कौटिल्य पिएभि वालिह हास्य दीर्घ चित्त गौंजिग वामादर ये मात्स्य सूत्र में कहे हैं । मापुलोऽर्थं लाष्ट काश्मदि मद्याकि चारय च रिक्षित पैग चित पचाष्ट य पारायपत पालस्वायत गोवायन इति ॥ भृगुगण गोत्र प्रवर समाप्त लिखत राम भरोसे पाण्डे संवत् १९२६ वि० ।

विषय—भृगुगण के गोत्र प्रवर आदि वर्णन ।

संख्या १८९ घी गोत्रप्रवर प्रकाशिका, रचयिता—कमलाकर भट्ट, कागज—देशी, पत्र—६८, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६६२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२७ = १८६० ई०, प्राप्ति स्थान—दुर्गाप्रसाद मिश्र, स्थान—पटा, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश) ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ गोत्रप्रवर प्रकाशिका श्री कमलाकर प्रभाकर कविवर कृत लिख्यते ॥ श्रीपरमात्मने नम ॥ अथ गोत्र प्रवर लिखते हैं । कि समान गोत्र के निमित्त कन्यादान न पूछे क्योंकि असमान प्रवर वालों के साथ विवाह करना चाहिये । ऐसा आपस्तंब व गौतमादि आचार्यों ने कहा है विवाह के कर्मों में समान गोत्र और समान प्रवर वाले वर्जित है । अब समान गोत्र क्या है उसको कहते हैं । प्रवर मंजरी संज्ञक पुस्तक में बौधायनाचार्य ने विश्वामित्र जमदग्नि भरद्वाज गौतम अत्रि वसिष्ठ कश्यप ये सात रिषी हैं अगस्त सहित आठ ऋषियों का पुत्र होना उसको गोत्र कहते है । उक्त रिषियों के जो रिषी रूप पुत्र पौत्रादि रूप है वे व्यतीत हुए और आगे होने हारे जो गोत्र हैं ऐसा कहा जाता है । भृगु जी के गण में मिलने से जमदग्नि के नाम से और अंगिरा के गण में अंतरगत होने से गौतम और भरद्वाज के नाम से गोत्र होना ठीक है ॥

अन्त—माता भगिनी के बराबर पर स्त्री को समझ के पर स्त्री गमन व गर्भ

दूषण न करै यह कश्यप और बौधायन जी का वचन है और जो चंडाली स्त्रियां हैं तिनके संग ज्ञान से गमन करै तो द्विगुण अज्ञान गमन से प्रायश्चित होय है अज्ञान से एक चन्द्रायण और ज्ञान से दो चन्द्रायण व्रत करै जो गुरु की स्त्री के गमन के समान प्रायश्चित है इससे ३ वर्ष व ६ वर्ष तक चन्द्रायण व्रत करै यह मिताक्षरा में लिखा है और स्मृत्यर्थ सार में भी लिखा है कि विवाह के योग्य जो सगोत्र की व सबंध की कन्या के सग गमन करै तो जितना गुरु की स्त्री के गमन में प्रायश्चित है उतना ही कन्या के गमन में भी होय है ॥ फिर चन्द्रायण आदि व्रत करके भोग छोडकी उसकी माता के समान रक्षा करै और कश्यप जी का वचन है कि अज्ञान से जो कन्या गमन करै तो तीन वार जन्म लेकर के और तीनो जन्मों में व्रत आदि करता जावे तो शुद्ध होवै और वेदान्ती की पत्नी गमन में आचार्य की स्त्री गमन समान ही प्रायश्चित जानना चाहिये। इति श्री गोत्र प्रवर प्रकाशिका प्राचीन कविवर कमलाकर भट्ट कृत सपूर्ण। लिखा शिवनाथ सासन वदी अष्टमी संवत् १९२७ वि० ॥ जैरामजी की ॥

विषय—इस ग्रन्थ में ब्राह्मणो के गोत्र, प्रवर, शिखा और सूत्र आदि का वर्णन है।

संख्या १८२. दशमस्कन्ध भाषा, रचयिता—कनक सिंह, कागज—देशी, पत्र—२४९, आकार—१० × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४७८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५५ = १७९८ ई०, प्राप्तिस्थान—रामनाथ वैद्य, डाकघर—सलेमपुर, जिला—अलीगढ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः अथ पोथी दशमस्कन्ध भाषा कनक सिंह कायस्थ कृत लिख्यते ॥ श्लोक—शिव सुत उमया भ्रम निवास एक दत सुंडा हस्तत गजमुख तुदीयणत ईश ॥ चदन धुधर वदन शीश ललाट छवि दुनिया सीस ॥ मूसे वाहन भाल वईस। दूजे कर फरस हथियार तीजै कर मोदक अहार। चौथे हाथ कमंडल नीर गले जनेऊ वास सरीर ॥ सुर तैतीस तणा अगवानू पुस्तिग सकल जु करै वखानू ॥ गज वदन सेंदुर चढ़न उदर सिन्दु बुधिपति मान। सुमिति संचन हर लच्छन इच्छा पूरन काम ॥ कवि ॥ कनक सिंह विनवै वहु भाई ॥ टूटत अच्छर देहु वनाई ॥

अन्त—अरिल्ल—ऐसे प्रभु की कथा प्रीति करि जो सुनै। जनम सुफल सो मानि धन्य आपहिं गनैं ॥ कर्म सवै छुटि जाहि जु ताहि कर्महि गनै। परि हां प्रभु लीला अनुसारि जुता रूपहिं सनै ॥ कुंडलिया—निस वासर प्रभु की कथा प्रानी सुनै जु निरा। भवसागर को वह तिरैं ह्वै हरि जू को मित्र ॥ ह्वै हरि जू को मित्त कीर्त्ति प्रगटै जु आपनी। तिनसे दुर दुख जाहिं अवन लागति है कपनी ॥ राज तजत नर देव राखि मन भव दुख को रिस। तप इच्छा चित धारि नींद नहि निभे अहरि निस ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कन्वे भाषा कनक सिंह कायथ कृते सवत १८५५ आश्वनि मासे शुक्ल पक्षे तिथौ १२ रवि वासरे पुस्तक लिप कृतं पाठक व्रज लाल ॥ राम राम राम ॥

विषय—भागवत दशमस्कन्ध की भाषा टीका।

टिप्पणी – इस ग्रन्थ के रचयिता कनक सिह जाति के कायस्थ थे। निर्माणकाल का पता नहीं। लिपिकाल सवत् १८५५ विक्रमी है। कवि का वर्णन इस प्रकार लिखा है:—

मन- सिंह विनवे यहु भाइ। टूटत अच्छर देहु बनाइ ॥

संख्या १८३ रसरंग नायिका, रचयिता—कान्ह कवि वृन्दावन, कागज—देशी, पत्र—१३८, आकार—११ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८९, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८०४ = १७४७ ई०, लिपिकाल—सं० १८८१ = १८२४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री अद्भुत चरण जी गोस्वामी घेरा श्री राधारमण जी, वृन्दावन।

श्री राधा रमनो जयति अथ रस रंग नाइका भेद का कान्ह कवि कृत लिष्यते ॥ छप्पय। येक दंत मति वंत संत सतत सुषदायक। कमल सुंड पर चारु मुंड पर चंद कलायक। अंकुसमस्तक हाथ साथ सिधि अष्टक विराजै। लंबोदर मुनि ईसि सेस सुर असुर निवाजै। भय नय विघन विनासक खानी अगम अपार गुन गण नायक जगदीश सुभ सुभ दायक श्री शंभु सुअ। १। गिरजा नन सिंगार चारु रति मधि करुणामय। करये मद्दा विष्वस वीर वीभत्स अस्थि चय। अहि भूषण भय रूप तानि लोचन अद्भुत कहि रुंड माल सिर जटा करण कुन्डल जग मग अहि। सम निरषत संसार सब सांति करत कवि जन हदा। भस्म अंग सिर गंग जय नाथ रस मय श्रृंगार रस सबते विशेष। तामें नीकी नाइका बरणत चित अवरेषि। अथ नाइका लक्षन ॥ जाको रूप विलोकि कै उपजतु है अति हेतु। सोइ कहिये नाइका बरनत बुधि सुचेत।

अन्त—जा दिन बिछोह कै विदेस कौं पधारे तुम जादिन वियोग आगि बहु भूनि हैं। काहू न पिछानैं आपि आगी निन ठाढ़ी रहौं बूझत न बैन देरी वान पर रून हैं ॥ हलति न चलति न मुष ते कहति कछु दुष सुष एक करि पेचि रही धून है। कान्ह चलि देपौ याके प्राण हैं कि नाहा पंच बान तन कीनों पंचयातन की तून है। दोहा। जाकी रचना देषिकैं बाढ़ै प्रेम तरंग। मन में अति सुष पाइकै कियो कान्ह रंग। संमत धृति सत जुग बरष कान्हा सुकवि प्रसंग। क्वार सुदी तेरसि ससी रच्यो ग्रंथ रस रंग। इति श्री कान्ह कवि विरचितायां रस रंग नाइका भेद कौ संपूरण समाप्त ॥ संमत् ॥ १८८१। मिती आषाढ़ सुदी १४ जामा सोमवार लिषी गुपाल राय श्री वृन्दावन।

विषय—नायिका भेद।

संख्या १८४ निज उपाय, रचयिता—करमअली, कागज—बास का, पत्र—९४, आकार—६ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५२, रूप—प्राचीन, पद्य गद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् हिजरी १०९८, प्राप्तिस्थान—श्री वासुदेव वैद्य हकीम, ग्राम—बसाई, डाकघर—तातपुर, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम। श्री रामाय नम। श्री गोपालाय नम आदि सुमद्ध अल्प कुछोर महमद नाव। उनहीं की कलमा पढ़ु निस दिन आठो याम। मानस होगी करनें, औषध रचै अपार। सीत रसित गरम पुनि, रक्ति को दीजो भेद विचार। चार तत्त्व पैदा किये, आदम के मन माहि। पाक अग्नि पानी पवन, सबही मैं परछाहिं। पल्लताती मजू कहत हैं जाने होत बिगार। गर्मी तै पीत रक्त है, सांत पीव न कफ चार। षट रस है ससि सूर तै, ताकी भाषत रीत।

अन्त—मानस रोगी कारने, भाखे सुभग उपाय। कर्म अलि कीनो अही, निज गिरन्थ चित लाय। छाडि बहुत विस्तार को सूक्ष्म औषध लखिलीन। चूक कछू जो पाइये, लेव सवारि प्रवीन। सब वेदन विन्ती करी कर्म्म आलिमो कीन। दुख न धरो या वात को, जो मैं अति बुध हीन। सन हजार अठानसे हुतो महा सावन ग्रन्थ सम्पूर्ण ॥ पौष मगलवार तीतान (?) इति श्री निज उपाय ग्रन्थ सम्पूर्ण ॥

विषय—प्रकृति वर्णन, पित्त कफ वात के लक्षण, खांसी, आंख, धुन्ध, फूली, परवाल, जाला, रतौंधी, नासूर मॉस वृद्धि, कर्ण पीटा, कृमि रोग, मृगी, जुखाम, दन्त पीडा। सर्दी, हिचकी, संग्रहणी, पथरी, मूत्र वध, अजीर्ण, अतिसार, कुष्ट, रक्त विकार, सन्निपात, नख रोग, पेट वाय, सुदर्शन चूर्ण, जोगराज गुग्गुल चन्द्रप्रभावटी सर्व फोडादि के उपाय।

संख्या १८५. विड़द सगार, रचयिता—करणीदान चारण (जोधपुर), पत्र—२०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल – सं० १८२८ = १७७१ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रामसिंह सिपाही, ग्राम—नारागांव झावर, डाकघर—छर्रा, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ विडद सगार चारण करणी दान कृत लिख्यते ॥ श्री गणपति सुर सति नमस्कार। दीजिये मुझे वर बुधि उदार ॥ अव साण सिद्धि रह माण अंस। वाषाण करू नृप भाण वंस ॥ जिण तेज अरक जिमि छक जहूर। सुन्दर प्रवीण दातार सूर ॥ छत्रपती अभी छत्र कुल छतीस। वहत्तर कला सुलक्षण वत्तीस ॥ वर्णाश्रम धर्म मर्जाद वेद। भाषा पट नव रस अरथ भेद ॥ आस रास मद थागण अथाग। रूप-गाचत्र असी छत्तीस राग ॥ जोहरी परख जिण विध जुहार। दश चार परप विद्या उदार ॥ वर सकति पाय ताला विलद। अग जीत सुतन नर लोक पंद। ससि वेस पहल तप वल सजेव। जालियो साहि अव रग जेव ॥ पर चंड चड पर होम पाठ। अव ताहि दिये पत साहि आठ। साहिरा जोध जोता समंद। कटहड चढ़ण मल के कमध ॥ कील मारग मीर हेकमन है कीध। दई वाण पाण जम दाढ़ दीध ॥ अव साह औधि देखे अताल। मह मंद साहि दिये मुकत माल ॥ पति हुकमै मध फरा खान पेल। झोटिया थाट भुज भार झेल ॥

अन्त—सरण ये बडद मोपम सकाज। दई वाण अभा उमर दराज ॥ जस करै येम दुणियाण जाय। महराण जे मगहरा समाय ॥ दाव सिघण वाका दुरग। जी यसी अने नृप घणा जग ॥ गाव सिघणा गुण छकड गांव। पाउ सिंघणा लाखा पसाव ॥ खित गीत चत्र श्लोक खांति। भगवत श्लोकी सत्य भांति ॥ ईण मजउ उजासरो गुण अपार। सूरज प्रकाश रो तत सार ॥ कीरत प्रकास सुज राज काम। नृप ग्रन्थ वडद संगार नाम ॥ महाराज निवाज सुव छव मन। कविराज रीझ कहिये करन ॥ जै पै असीस आयम जोड़ कायम राज नृप जुगा कोड ॥ दूहा ॥ अमर धर पाणी पवन सूरज चन्द सकाज। महाराज अभ माल रो रिधू यता जुग राज ॥ इति श्री ग्रन्थ विडद संगार चारण करणी दान कृत सपूर्ण समाप्तः ॥ लिखतं मेरू लाल गूजर गौड ब्राह्मण संवत् १८२८ वि० माघ मास शुक्ल पक्ष त्रियोदश्याम।

विषय—जोधपुर नरेश राजा अभय सिंह का प्रताप वर्णन ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता चारण करणी दान थे जो महाराज अभय सिंह के समय में । अभय सिंह का राज्य काल सवत् १७८१ से सवत् १८०५ है । ग्रन्थ का लिपि काल सवत् १८२८ वि० है ।

सख्या १८६ ए. एकादशी महात्म्य, रचयिता—कर्तानन्द, पत्र—३५, आकार—१४½×८½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४९०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३२ = १७७५ ई०, लिपिकाल—स० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—सूर्यपाल जी, ग्राम—बड़ागाँव, डाकघर—कतरी, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशायनम । सीतारामभ्या नम । श्री गुरुचरण । कमलभ्यो नम । श्री सरस्वती नम । श्री सुखदेव जी सहाइ नम । अथ एकादशी महात्म्य लिषते । करतानद उवाच । दोहा । सतगुरु वदा चरन रज । गुर जी को प्रनाम । गुरू को सीस नवायक मागौ एक हरि नाम ।१। व्यास पुत्र सुषदेवजी तुम रवि के वर ईस तिनहीं के परताप सौं पार करै जगदीस । २ । अपना कर चरण दास ही भक्ति दई अनुराग । जिनके दो सुत ही भई ज्ञान अरु वैराग । ३ । तिन तारे बहु जीव ही भवसागर के माहि । गये पारसो पार ही तिनकी पकरी बाह । ४ । चरनदास के सिष्य जो सहजो बाइ नाम । तिनके करतानंद ने हित कर पूजे पाइ । ५ । चोपाइ । बदौ बाई के वे चरना, भक्ति बढ़ावन है तम हरणा । कर्तानद कहै कर जोरी, सुनो यह विनती मोरी । ६ । भवनिधि कठिन महा दुख दाई । ता तरिबे की कहो उपाई । श्री गुरू दया करो तुम येसे मातापुत्र पालि हैं जैसे । ७ । तुम सवग्या पम गुरू देवा, आदि अतकी जानौ भेवा । एक आदसी की कथा सुनावो, मो मनको सदेह मिटावो ।

अन्त—अठारह सै बतीसा कहियें । माघ मास तिथि नौमी लहिये । कर्तानद की हीये आय बोले, गुपत प्रगट भेद सब खोले । सत गुरूआज्ञा मोकों दीनी सस्कृत सो भाषा कीनीं । फरकाबाद नगर सो जाना नित कीज गगा असनाना । सब साधन कु सीस नवाऊँ अपना भूल चूक बक्स साऊँ । अधिर सुध असुद्ध जु होइ लेहु सुधारि कृपा करि सोइ । कर्तानद जथा मति गाई, मत एकादसी खोजि दिखाई । गुरू कृपा करि सिर करि धरिया, तातें पोथी पूरन करिया । दोहा—धन्य २ सुखदेव जी धन्य चरन हो दास । तुमरी कृपा पूरन भइ, कर्तानद की आस । छन्द । धन्य २ श्री गुरूदेव भेद मोहि सबै बतायौ, नाम भेद फल सकल ठीक हिरदे में आयो । बार बार परनाम करूँ निज सीस नवाऊँ । करत रहीं हीं ध्यान नाम तुमरे गुण गाऊँ । इति श्री पदम पुराने एकादसी महात्मे वुधनी नाम वर्ननो चतुर्विसाध्याय । २४ । संवत् १९१८ मिती फागुन बदी ७ रोज भृगुवासरे । सपूरण । लिखनार्थी हरसुख सिंह ठाकुर । सुभअस्थाने । मौजे लछिमनपूर आयौ दखौं सो लिखीं निज वानी विस्तार । लिखते दोस मिटाइये श्री भगवान करैं उरधार । पठनार्थो रूपराम अजाची ब्राह्मन भ्राता मोती राम व धीर सिंह के छोटे भ्राता । श्री राम राम राम राम राम ।

विषय—वर्ष भर में पडने वाली एकादशियो की व्रत कथाओ का वर्णन ।

संख्या १८६ बी. एकादशी महात्म्य, रचयिता—कर्त्तानन्द (फरूखाबाद), पत्र—३८, आकार—१२¾ × ८⅞ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२४७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३२ = १७७५ ई०, लिपिकाल—स० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—बनवारी लाल पुजारी बम्हन टोला मदिर, ग्राम—समाई, डाकघर—एतमादपुर, जिला—आगरा ।

आदि-अंत—१८६ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री पद्मपुराने एकादसी मातम बोधनी नाम सपूर्ण सवत १९ सै मी साल अपवदिगुरवारे लिष्यते लालदास वैष्णव पेरी के छाया बलदेव जी देग्न अतर वेदा जो देखा सो लिखो मम दोस न श्री महाराज चरन दासजी ।

संख्या १८६ सी. एकादशी महात्म्य, रचयिता—कर्त्तानन्द फरुखाबाद), पत्र—८०, आकार—८ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३२ = १७७५ ई०, प्राप्तिस्थान—रेवतीराम शर्मा, ग्राम—कंतरी, डाकघर—बाव, जिला—आगरा ।

आदि-अत—१८६ ए के समान ।

संख्या १८६ डी. एकादशी महात्म्य, रचयिता—कर्त्तानन्द (फरुखाबाद), पत्र—४०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३२ = १७७५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्रीमान् प० लक्ष्मीनारायण जी आयुर्वेदाचार्य, ग्राम—सैगई, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि-अंत—१८६ ए के समान ।

संख्या १८७. ख्याल मरहठी, रचयिता—कासीगिरि 'बनारसी' (काशी), पत्र—६०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा हरिदास सरावल, डाकघर—गज दुडवारा, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ मरहठी ख्याल काशीगिरि वनारसी कृत लिख्यते ॥ लावनी ॥ हृदय में हैं हिंग लाज करै काज लाज रखने वाली ॥ नयना देवी नयन में बसैं हसै दै दै ताली ॥ सीस में सीता सती विराजै सावित्री सकटा रानी ॥ मस्तक में आय रहैं आय श्री महा विद्या औ महारानी ॥ भृगुटी में करै वास भैरवी भय मानै सब अभिमानी ॥ ब्रह्म में अपणे विराजै ब्रह्मा चल औ ब्रह्मानी ॥ बसै नासिका में नौ दुर्गा नगर कोट लाटो वाली ॥ नयना देवी० ॥ १ ॥

अत—अकबराबाद के बीच मंडवी जिवनी की में मेरा धाम । हरि के भरोसे तहां में अहर निशा करता विश्राम ॥ राधा कृष्ण है नाम जहां लिखने काही करता निष्काम ॥

उदर हेतु ये यत्न करि मुख से करता रामहि राम ॥ इसमें ही करता हूं गुजारा जो विधना ने दीने दाम ॥ इति श्री बनारसी काशी गिरि कृत ख्याल मरहठी सपूर्ण संवत् १९४० वि० ।

विषय—देवी जी, गंगा जी, आदि के अनेक ख्याल वर्णन ।

टिप्पणी—इस मरहठी ख्याल के रचयिता काशी गिरि बनारसी थे । इनका पता इस ग्रन्थ से पूरा पूरा नहीं चला । लिपि काल संवत् १९४० वि० है ।

संख्या १८८ भरतरी चरित्र, रचयिता—काशीनाथ, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८८, रूप—स्वच्छ, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१६ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामदत्त रायपुर, डाकघर—गोनमत, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ भरतरी चरित्र काशी नाथ कृत लिख्यते ॥ इन्द्र के नाती भये पुत्र गंधव सेन । भाई विकरमा जीत के मैना जती मैन ॥ चौ०—जा दिन जनमें हैं भरतरी राजा बाजे है तबला निशान ॥ हरे हर गोबर मगाय के अंगना वेदी लिपाय । मोतियन चौक पुराय के कंचन कलस धराय ॥ सुघर सहेली बुलाय के गावें मंगल चार । काशी से पंडित बुलवावती चंदन चौकी बिछाय ॥ ब्रह्मा बांचे वेद को खुला हफ किताब । नाम तो निकला भरतरी कर्म लिखा वाला जोग ॥ धारू आरू तेर वेद को पुत्र दोष लगाय । कंचन देवों गी दच्छिना ऐंठ धरौ इसका नाम ॥

अन्त—पुत्र कहे भिक्षा डारती जेजा रमते अतीत । लेके भिक्षा राजा रम चले आसन पड़ी भभूत ॥ और मंदिर और बाग में बोलन लागे करिया काग । धन्य घड़ी जामें जन्म लिया धन्य पुरुष तेरे भाग ॥ मेरी मेरी कहके रम गये रानी खड़ी रोवै द्वार । साची बनी काया कोठरी झूठा है जग संसार ॥ नदी किनारे रूखड़ा जब तब होय बिनास । मेरी मेरी कहि के रम गये अर्जुन जोधा से भीम । पड़ी रही झाड़ खंड में गढ़ कोटा की सी नीम ॥ जुग जुग जावे मेरी नगरी चौपड़ लागे बाजार । यार से दूनी उजाड़ से मिल गये गुरू गोरख नाथ ॥ चेला बनाय ले बाबा आपना सेवा करूंगा बनाय । धूनी तेरी हम करें संग फिरें तेरे नाथ ॥ बोले बाबा गोरख नाथ जी सुन बच्चा मेरी बात । तुझको चेला ना करें तुम हो राजकुमार ॥ पान फूल के भोगिया ना सधे तुमसे जोग । पान फूल बाबा सब तज सुनले गुरू गोरख नाथ ॥ छोड़ा ऊंचे का बैठका छोड़ा भाइयों का साथ ॥ जोग बुरा जौहर भला आठ पहर संग्राम ॥ आठ पहर के बीच में जिसे राखे भगवान ॥ छुरिया काढ चेला किया कान दिये हैं फाड़ि । पीठ ठोंक दीनी गोरख नाथ जोग अमर हो जाय ॥ कलि अमर राजा भरतरी जी ॥ इति श्री काशी नाथ विरचिते भरतरी चरित्र संपूरणम् संवत् १९१६ वि० ॥

विषय—राजा भर्थरी का जन्म लेना । ब्राह्मणों से भरथरी की माता का नाम करण करवाना और भविष्य पूछना । पंडितों का भरथरी को जोगी बताना । भरथरी का विद्या पढ़ना और उसकी चार वर्ष की आयु में माता का स्वर्गवास हो जाना । नवें वर्ष की आयु में अनूप दई से दसवें वर्ष की आयु में चंदादे से ग्यारहवें वर्ष की आयु में पिंगलादे से और बारहवें वर्ष की आयु में श्यामादे नारियों से विवाह करना तथा तेरह वर्ष की आयु से शिकार खेलना पश्चात् गुरू गोरख नाथ का चेला होकर जोग साधन करना ।

संख्या १८९ ए. चित्रचन्द्रिका, रचयिता—काशी राज (काशी), पत्र—४७५, आकार—७ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८९ = १८३२ ई०, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० वैजनाथ ब्रह्मभट्ट, ग्राम—अमौसी, डाकघर—विजनौर, जिला—लखनऊ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः अथ चित्रचन्द्रिका लिप्यते। छप्पै—वारण आनन सुभ भाल सिंदूर सुचर्चित। देव सिद्ध गधर्व नाग किन्नर करि अर्चित॥ एक दंत भुज चारि सुभग लंवोदर राजत। अष्ट सिद्धि नौ निद्धि विविध विधावर छाजत॥ कवि काशिराज सुख पाइकै। चरण कमल में चित धन्यो। नाम लेत शिव पुत्र को। विघ्न सकल तत्क्षण तन्यो। टीका—यह मंगलाचरण है गणपति की स्तुती। ग्रन्थकर्त्ता करतु हैं। कैसे हैं गणपति गज वदन। उज्वल मस्तक में सिन्दूर लगाये हुए है पुनि देवता आदि दै कें पूजित हैं पुनि एक दांत चार भुज सुन्दर लम्बा उदर सोभित है पुनि आठ सिद्धि नव निद्धि अनेक प्रकार की जो विद्या रूपी जो वर हैं तिन करि के सोहैं हैं। ऐसे जो गनि पति तिनके चरण कमल में कवि काशि राज सुख पाइके चित्त लगायो शिव पुत्र को नाम लेत ही सम्पूर्ण विघ्न तुरत ही दूर भये॥ १॥

अन्त—कवित्त—कमल नयन वर अग रुचि नीरद सी। पीत पट कहि राजै मुकुट मयूर पक्ष॥ आकृत मकर कान कुंडल कलित मणि। मोती माल वन माल सोहै भृगु लात वक्ष॥ अधर मधुर पर मुरली विराज मान। गोपिन के मध्य छाजै दक्षिण परम दक्ष॥ चरण शरण आय कवि काशीराज ताके। चित्र चन्द्रिका जो ग्रन्थ कीन्हो जगमें समक्ष॥ टीका—यह मंगलाचरण है ग्रन्थकर्त्ता कवि श्रीकृष्ण की स्तुति [illegible]र—[illegible]फेरी से है श्रीकृष्ण की कमल नयन वर नाम कमल ते श्रेष्ट हैं नेत्र जाके अग रुचि न[illegible] नाम जाके अंग में शोभा मेघकी सी है। पीत पट कटि राजै नाम पीताम्वर क[illegible] रै है। मुकुट मयूर पक्ष नाम जिनका मुकुट मयूर पख की है आकृत मकर कान कु[illegible]सी [illegible]लित नाम जटित ऐसो है कुडल कान में जाके मोती माल वनमाल सोहै भृगु लात [illegible] (अ[illegible]म मोती की माला अरु वनमाल और भृगु मुनि की लात जाके वक्ष नाम हृदय में [illegible]०, [illegible]प्र अधर मधुर पर मुरली विराज मान नाम जाके मधुर ओष्ट के ऊपर वाँसुरी सोभाय[illegible] गोपिन के मध्य छाजै नाम गोपिन के वीच में सोभाय मान है दक्षिण नाम दक्षिण [illegible]वनारसी अरु परम दक्ष नाम परम चतुर है चरण शरण आय कवि काशिराज ताके तिन श्री [illegible] [illegible]कै चरण शरण में आय करिके कवि काशीराज चित्रचद्रिका जो यह ग्रन्थ है ताको क[illegible] म[illegible]है जगमें समक्ष नाम संसार में प्रत्यक्ष कीनो इति श्री मत् श्री लक्ष्मी नारायण च[illegible]नै र कमल प्रसादात् श्री कवि काशीराज विरचित चित्रचंद्रिका ग्रन्थ [illegible]म्पूर्ण तामियात् संवत् [illegible]९३१ वि०

विषय—

(१) पृ० १ से ३३ तक—मंगलाचरण। चित्र लक्षण। शाक चित्र लक्षण। वर्णा चित्र लक्षण। एकाक्षर लक्षण तथा अन्य वर्ण चित्र वर्णन [प्र० प्रकाश]।

(२) पृ० ३४ से ५५ तक—द्वितीय प्रकास-स्थान चित्र वणन।
(३) पृ० ५६ से ५९ तक—स्वर चित्र वणन [तृ० प्र०]
(४) पृ० ६० से ७३ तक—आकार चित्र वणन [च० प्र०]
(५) पृ० ७४ से १२० तक—गीत चित्र वणन [प० प्र०]
(६) पृ० १२० से २२४ तक—कामधेन्वा कारादि चित्र [ष० प्र०]
(७) पृ० २२५ से ३०० तक—गुण वध चित्र [स० प्र०]
(८) पृ० ३०१ से ४६० तक—अथ चित्र [अष्टम प्र०]

कवि वंश परिचय—गौतम ऋषि के वंश में। भये नृपति वरवड। काशी में शिव कृपातें। कीनीं राज अखंड॥ तासुत नय जग विदित हैं। चेत सिंह महाराज। आगम निगम प्रवीन अति। ज्ञानिन में सिर ताज॥ हौं सुत तिनको जानिये। विदित नाम वल्वान। काशी राज सुग्रन्थ में कियो नाम परधान॥

ग्रन्थ निर्माण काल—युव गुरवार सो है रसे प्रिय धृति याग श्रवण सुरद गुण आगम वखानियै॥ आशा तिथि पूरी जहा हपु शुक्ल पक्ष युत हरन विघन एल जगमें प्रमानिये॥ निधि सिद्धि नाम चन्द्र विक्रम सुभन्द अलिराशि है ललित तहा राजै पहि चानिये॥ कवि काशीराज मन आनन्द करन हार ग्रन्थ को जनम दिन निधौ शिव जानिये॥

संख्या १८९ वी मुष्टिकप्रश्न, रचयिता—काशीराज, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०२ = १७४५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० राम भजन मिश्र, वेहदर कलाँ, डाकघर—सण्डीला, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नम॥ अथ मुष्टिक प्रश्न लिख्यते॥ लग्न की केंद्री वृहस्पति तथा शुक्र होय तौ जीव चिंता कहिये॥ मे०, वृ०, तु०, सिं०, इन ऊपर केन्द्री कुल शक होय तौ धातु चिन्ता कहिये॥ वृ॥ २, ब ९, तु ७, मि० १२, क ४, चन्द्र, वृ० शु० सो जो इनकी दृष्टि होय अर बुध तथा शनि वक्री होय तौ मूल चिन्ता कहिये। बुध लग्न ये ५ अरु ९, ५ शुक्र की दृष्टी होय अर ६, शुक्र होय तौ फूल चिन्ता कहिये॥ चन्द्रमा केन्द्री बुध होय की सूय की दृष्टी होय तौ गुज मूल वतइये।

अन्त—मंगल वन्द्री को देषित होय तो लाल विद्रुम होय केन्द्री शनि होय तो लोहा कार होय॥ राहु केन्द्री होय तौ सखा कार होय॥ बुध॥ ३॥ ५॥ होय राहु सूय की दृष्टी होय तो सर्व तथा ८ दपति होय तो स्वेत कृष्ण जानिये॥ मगल शुक्र॥ ९॥ ५॥ होय तौ मृत्तिका कहिये बुध ५॥ ६॥ चन्द्रमा शुभ्र दपति होय तो अल को फल कहिये॥ सूय॥ ६॥ मगल॥ ९॥ होय तौ तिल मशुरी रक्त कारो कर बुर कहिये॥ शुक्र ११ होय तौ गेहूं जौ कहिए॥ इति श्री काशी राज कृत मुष्टिक प्रश्न सपूण समाप्त लिखत गंगा विष्णु शुक्ल स्वपठनाथ सवत् १८०२ वि० आश्वनि कृष्ण त्रयोदशी श्री राम॥

विषय—मुष्टिक प्रश्न द्वारा शुभाशुभ वर्णन।

संख्या १९० ए योगवाशिष्ठसार, रचयिता—कवीन्द्र (काशी), कागज—देशी, पत्र—६२, आकार—६½ × ३½ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—

७७५, रूप--प्राचीन, लिपि--नागरी, रचनाकाल--सं० १७१४ = १६५७ ई०, लिपिकाल--सं० १७१४ = १६५७ ई०, प्राप्तिस्थान--श्री चिरंजीलाल जी भैरोंबाजार, जिला--आगरा।

आदि--शुरू के पांच छन्द नही हैं। कवि परिचय पांत जल जानत भले। संशय भरम भली विधि दले॥ न्यायादि बहु बार पढ़ाए॥ साहित में वहु ग्रन्थ वनाए॥ ७॥ पुराण अठारह रसना बैसे॥ सुमरत सबै कठ मै लसै। ८। जोग वापिष्ठ भले कै वूझा॥ जाने ब्रह्म आपही सुझा॥ चारि वरण अरु आश्रम चारी। पडित मूढ़ पुरुप अव नारी॥ १०॥ सब नित जाहिं आसिष देहिं। काशी प्रयाग न्हाहि सुख लेहि॥ सो कविन्द्र युग युग जग जियौ। धरमहि काज जनम जिहि लियो॥ १२॥ जाते प्राग बनारस सुखी॥ नर नारी कोउ नाहिन दुखी॥ १३॥ पूरणेन्द्र ब्रह्मेद्र गोसांई॥ जाकी करणी तन मन भाई॥ १४॥ स्तुति कवीन्द्र की निसि दिन करै। हिये हरप ऑपिन जल भरै॥ १५॥ दया शील सन्तोप विराजे॥ जामे क्षमा धर्म्म बहु लाजे॥ १६॥ दान ज्ञान अनुभव को सागर। पर विराग विज्ञान उजागर॥ १७॥ परानन्द सवही को देता। दुप सहत पर स्वारथ हेता।१८। कासी में कोउ नाहिन पूजा। कवि कविद्र सौ उन न दुजा॥ १९॥ पहिले गोदा तीर निवासी। पाछे आये वसे श्री काशी॥ २०॥ ऋग्वेदी अशुलायन सापा। कीनौ ज्ञान सार है भापा।२१। जान सार जाके हिय बसै। ताको दुख सब पल में नसै॥२२॥ दोहा॥ कासी की अरु प्राण की, कर की पकर मिटाइ॥ सवही को सब सुख दियो, श्री कवीन्द्र जग आय॥ २३॥ इति मगला चरण अथ योग वापिष्ट सार लिप्यते॥ १॥

अन्त--दोहा-संवत सत्रह सै बन्यौ चौदा ऊपर वर्ष॥ फाल्गुण बदि एकादशी भयो विष्णु के हर्ष॥ १॥ परमेसुर को पाइके। आय कृपा को लेश। बनो ग्रथ अनुभव लिये, अस गुरु के उपदेश, कवीन्द्र सरस्वती सो पासी पंडित ज्ञानी काशी वासी॥ अर्थ उपनिपद नीके ज्यानि लियो परब्रह्म पहिचान॥ उन यह ग्रंथ भलो हि बनायो। जाहि बनावत बहु सुख पायो॥ ज्ञान सार है याको नाम। ज्ञानि पावै सुनि सुप धाम, जो लौ रहिये भूमि अकास॥ तौलौ ज्ञान सार परगास चारि वेद चारौ जुग जौलौ॥ ज्ञान सार यह रहि है तोलौ इति श्री योग वसिष्ठ सार सपूरनम॥

विपय--योगवासिष्ट का पद्यानुवाद।

संख्या १९० बी. वशिष्टसार, रचयिता--कविन्द्राचार्य, पत्र--१९, आकार--७½ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--९, परिमाण--(अनुष्टुप्)--३४२, रूप--प्राचीन, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १८५८ = १८०१ ई०, प्राप्तिस्थान--पं० रामप्रसाद टीचर हिम्मतपुर, जिला--आगरा।

आदि--ॐ श्री रामाय नमः। लिपते वशिष्ट सार्वसिष्ट उवाच। दोहा। हे अनंत व्यापक सकल चिनमये सीरो धाम। अनुभव है ठहरात जे ताहि करो परनाम। हौं बंध्यौ छूटौ कवै, यह न्हिचै है जाहि। नही मूरप नही अति चतुर येह विद्या है ताहि। जौलो ना जगदीस की होय कृपा को लेस। तौलो न सतगुरु मिलै ना विद्या उपदेश। भवसागर के तिरन को सतगुरु कहे उपाये ज्यो ढ़ीवर सुपाइये नदी तिरन को नाव। ग्यान महुपद

सों मिटत दीरघ रोग ससार। को हों काको जगत है असे कियो विचार। फरोरसीली घाट के नहीं तज्तर भेस। एक दिवस सब सिये नहि असे निरजन देस।

अन्त—अस्थावर जगम सबे मनमें दपे जात। मन उन्मन के भावतें नहि दूजो ठहरात। न्हें चल आनद जो सुपी जिहि में जग ठहरात। न्हें चल चचल आत्मा सो चित ए दिपात। पहले अपनी काचुली जानत है निज देह। छाडी अहि जब काचली तासू नेक न नेह। त्यों ग्यानी के नाहिनै दुष गुनन की सुध। भली बुरी जानै नहीं त्यों बालक की बुधि। फुलली जैसे पभ में ज्यों जल माहि तरग। सदा रहत है ब्रह्म में यह जग नाना रग। इति श्री कविन्द्रा चारज विरचित वसिष्ठ सार तत्त्व निरूपन नाम दसमो परकण सपुरण। १०। इति श्री कविन्द्रा चारज जी की कृत सपूर्ण सुभ भवन्ति मगल यथा लिपत तथा प्रतिथा लिपतेम्म दोसो न दीयते। सवत ॥ १८५८ ॥ श्री राम कृष्णाय नम गुरम्ये नम।

विषय—योगवाशिष्ट का पद्यानुवाद।

सख्या १९१ ए गणेश कथा, रचयिता—केशवराय कायस्थ, पत्र—७०, आकार—४ X ३ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८९० = १८१३ ई०, लिपिकाल—स० १८७० = १८१३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० दुर्गाप्रसाद शर्मा, फतेहाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम। अथ गणेश कथा लिप्यते हरि राजा सों यों कही एक समय मति धीर। राउ ब्राह्मनी के पुत्र की कथा सुनो तुम वार श्री कृष्णो वाच। एक ब्राह्मनी दुबल रहे। गण पति ब्रत तन मन करि गहे। वह नगरी नील ध्वजराई तहा दुज बालक आवें जाई। निस बासर से वामन धरो। तापर राइ मया अति करें। निस और वासर नींद न नैना। श्रवण सुनत राजा के वैना। व्रत प्रताप ते ऐसी भई। सब सपति गणपति जू दई। एक दिन माता पूजा करै। हृदय ध्यान विविध धरें॥ आयो सुत कीनै दरबारा। भोजन मागत वारवारा। मोही भूख लगी अधिकाई।

अत—रिधि सिधि के दास हौ सेवहु चित लगाइ। गणपति पग सुमिरन करें। कायथ के सो रोई। चौपही। आगे हती कछु सही। कछु कथा सुऔरहिं कही। तब शिव महिमा करनन लगी। रिधि सिधि भगतनि को दई। पहले कथा पुरातन सुनी। ता पाछे चौपही मे गुणी। मनदै श्रवण सुनै जो ज्ञानी। अहो बुधि प्रघटि बुधि बानी। जो यह कथा सुने सुनावै। गणपति को चरणोदक पावे। इति श्री गणेश कथा भाषा कृत महित दोहा चौपही समपूणम्। शुभ मस्तु। पठनाथ इद कायस्थ श्री वास्तव लाला मोहन लालस्य स्व स्थान फतिया बाद के। श्री। श्री। श्री।

विषय—श्री कृष्ण और युधिष्ठिर के सवाद के रूप में गणेश कथा का वणन।

सख्या १९१ बी गणेशमत कथा रचयिता—केसव, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ X ४ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२४, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८४० = १७८३ ई० प्राप्तिस्थान—रामभजन मिश्र, बेहदर कला, डाकघर—सण्डीला, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गणेश व्रत कथा लिख्यते ॥ दोहा—सुमिरण कर को गुरु को चरणन चितलाइ । सकट चौथि कथा कहौ सुनौ सबै मनु लाइ ॥ युधिष्ठिर —नृप प्रत्यक्ष श्री कृष्ण को श्रवण सुनत यश रीति । ये ये रावर शत्रु है तिनहिं कवन जीति ॥ श्री कृष्ण उवाच—कृष्ण कहेउ नृप राइ सुनु करौ धर्म यह चित्त । शत्रुन । होयगी करि गणेश को व्रत ॥ सत्रुग से सकट कटे रिद्धि सिद्धि धन धाम । उमा पुत्र ये ह्वै है पूरण काम ॥

अंत—असाढ़ मास होम यहु जानै । फूल कमल सेवती व्रत सानैं ॥ होम करै मन लगावै । सो नर मन वांछित फल पावै ॥ सामन मास यह विधि कही । व्रते मिलावै दही ॥ यहै होम करि जानै भेवा । जाते वस्य होय सव देवा ॥ दोहा—गणपति पूजन रैं । और होम उपदेश । एहि विधि सेवन करत है । वडे देव गन्नेश ॥ सुख संपति ने है । काटत सकल कलेश । केशव जू सेवत रहै । श्री गुरु चरण गनेश ॥ इति श्री पुराणे गणेश चतुर्थी व्रत कथा समाप्तः शुभ मस्तु चैत्र मासे सिते पक्षे षष्टम्याम भौम सवत् १८४० शाके १७०५ ॥

विषय—गणेश चतुर्थी की व्रत कथा का वर्णन ।

संख्या १९१ सी. सकट चौथी महिमा, रचयिता—केशोराई, पत्र—१०, आकार—६२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२०, रूप—प्राचीन, —नागरी, प्राप्तिस्थान—प० दामोदर प्रसाद शर्मा, ओखरा, डाकघर—कोटला, जिला— ।

आदि-अत—१९१ बी के समान ।

संख्या १९१ डी. गनेश कथा, रचयिता—केशवराय कायस्थ, पत्र—२९, आकार—४२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२८, खडित, रूप—, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० राम जी सारस्वत, जौधरी, डाकघर—नारखी —आगरा ।

आदि—जानौ सही । इतनी कहि नारद मुनि गए । महादेव तहां आवत भए । —महादेव जू तिहि समै, आए करि असनान । पारवती कौ देषिकै, धरौ चित्त मैं । चौपही । महादेव जू पूछत बात मन मलीन तुम काहे गात । पारवती जी पूछै जेवा, ाल कौ पै हरै देवा । सो हमं सौ कही औ समुझाइ जातै जीअ की जरनि बुझाइ । चरे जगत के ईसा मुंड माल है हमरे सीस । जेते जनम तुमारे भए मुंड सवै ते हमने मुडनि की पहरै हम माला सबै भयकर होइ निहाला ॥ पारवती उवाच ॥ बात एक मारी सुनौ प्रिभु जू अपने मन मैं गुनौ । एक जंनम तुम धरौ निधारु, मेरे जनम भए रु । सो हमसो कहिए समुझाई । कैसे चली बात गहि आई । महादेव तव ऐसे कहै, मन्त्र मेरे उर रहै ।

अन्त—.. काइथ के सौराइ । आगै कथा कछू सही काइथ उदै भान की सही । तब था सुनी कछु थोरी । कछु अक आपु उकति सौ जोरी । पहिले दंत कथा मै सुनी,

पाछे छद चौपही गुनी । दै श्रवाति सुनि कोइ ग्यानी, यह विधि भइ रसातम कहानी । सो तिहि कथा सुनै जु सुनावै । सो नतु लाभि मुक्ति फल पावै । इति श्री गनेश कथा सपूर्णं ।

विषय—गणेश कथा तथा व्रतादिका वर्णन ।

सख्या १९२ ए रामचद्रिका रचयिता—केशवदास (ओरछा, बुन्देलखण्ड), पत्र—११२, आकार—१० × ३½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१३६ रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६९, प्राप्तिस्थान—पं० वेनी प्रसाद जी वरवा, वमरौला कायस्थ, जिला—आगरा ।

आदि—श्री रामाय नम ॥ श्री कृष्णाय नम ॥ अथ रामचन्द्रिका लिष्यते ॥ ॥ दडक ॥ बालक मृनालनि ज्यों तोरि डारै सब काल कठिन कराल वै अकाल दीह दुष्प कौ । विपति हरत हठि पाषिनि के पात सम पक ज्यों पताल पेलि पठवै कलुष की ॥ दूरि कै कलक अक भव सीस ससि सम राषत है केसोदास दास के वपुष कौं ॥ साकर की साकरिनि सन मुख होत ही ते दस मुष मुष जोवै गज मुष मुष को ॥ १ ॥ बानी जगरानी की उदारता वपानी जाय ऐसी मति केसव उदार कौन की भइ ॥ देवता प्रसिद्ध सिद्ध रिषिराज तप वृद्ध कहि कहि हार परि कहि न काहु लइ ॥ भावी भूत वर्तमान जगतु वषानतु है केसव दास क्यों हू न वषानी काहू पै गई ॥ वने पति चारि मुष पूत वने पचमुष नाती वने षट मुष तदपि नई नई ॥ २ ॥

अन्त—दोहा ॥ राज श्री यम कैसे हू, होहु न उर अवदात । जैसे तैसे ताहि वस, अपने कीजे तात ॥ ३६ ॥ इहि विधि सिषदै पुत्र, विदा करै दै राज । श्री राजत रघुनाथ सग, सोभित सधव साथ॥ ३७॥रूप॥ श्री रामचन्द्र चरित्र कौजु, सुनै सदा सुष पाइ । ताही पुन्य कलिन्न सपति देत श्री रघुराइ ॥ न्हान दान असेष तीरथ न्हान को फलु होइ । नारकी जनि विप्र छत्रीय वैस्य सूद्र जु कोइ ॥ ३८ ॥ विमल छद ॥ असेष पुन्यपाप के कलाप आपने वहाइ ॥ विदेह राज ज्यों सदेह भक्त राम को कहाइ ॥ लहै सुगति लोक लोक अत मुक्ति होहि ताहि । पढ़ै सुनै कहै गुनै जु रामचंद्र चद्रिकाहि ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ लीला श्री रघुनाथ की । कौन जानिवे जोग । वेद भेद पावै नहीं । सु सकर करै वियोग ॥ ४० ॥ इति श्री मसकल लोक लोचनेम्यकोर चिंता मनि श्री रामचन्द्र चन्द्रिकाया मिश्र केसवदास विरचिताया श्री राम सीता समागम वर्णन नाम उनतालीसमो प्रकास ॥ ३९ ॥ सपूर्ण शुभ मस्तु सवत १८६६ मारग सुदि ४ सोमे लिपित भगवत दास मु० धाइपुर ।

विषय—श्री रामचरित्र वर्णन ।

सख्या १९२ बी रामचद्रिका, रचयिता—केशवदास, पत्र—१२३, आकार—९ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३५०, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हुक्म सिह अध्यापक, डाकघर—मिढाकुर, जिला—आगरा ।

आदि—छन्द—अति सुनि ततुमतु तहं मोहि रह्यो कछु बुधि वल वचनन जाहि कह्यौ । पशु पक्षि नारि नर निरखि तवै, दिन रामचन्द्र गुन गुनत गवै । अति उच अगारनि

वनी पगारनि जनु चिन्ता मनि नारि । शुभ सत मपधू मनिधूपति अंगनि हरि कीसी अनुहारि । चित्री बहु चित्रनि परम विचत्रिनि केशवदास निहारि । जनु विश्व रुप की अमल आरसी रची विरचि विचारि । सोरठा । जग जसवंति विसाल राजा दशरथ की पुरी, चन्द्र सहित सबकाल भालथली जनु ईसकी । कुडलिया—पडित अति सिगरी पुरी मनऊ गिरा गति गूढ । सिंहनि जुत जनु चद्रिका मोहतु मूढ़ अमूढ़ , मोहत मूढ़ अमूढ़ देव संग अदित विचारी । सव श्रृंगार सदेह सफल सुप सुपमा मडति । मनऊ सची विधि रची विविध विधि वरनत पडित । सोरठा । नागर नगर अपार महा मोह तप मित्रते । त्रिष्ना लता कुठार लोभ समुद्र अगस्ति से ।

अन्त—जवान षेलि एकहूँ जुवा जु वेद रक्षिये । अमित्र भूमि मांमवा अभक्ष भक्ष भक्षिये । करौ न मत्र मूढसौ नगूढ मंत्र पोलिये, सुपुत्र होई जै हठी मठीन सो बोलिये । व्रथा न पीड़िये प्रजा हितू मगान पारिये । अगाध साधु बूझि कै यथा पराध मारिये । कुदेव देव नारिकौ नवाल चित्त लीजई । विरोध विप्र वंससो सुभूलिहू न कीजई । पर द्रव्य कौ तौ परस्त्री वषानौ । रहौ काम क्रोधे महा कोह लौपै । तजौ गर्व को सदा चित्त छोभै ।.. ..

विषय—राम चरित्र वर्णन ।

संख्या १९२ सी. रामचन्द्रिका, रचयिता—केशवदास, कागज—बाँसी, पत्र—२९६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४९००, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४९ = १७९२ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री मुरलीधर केशवदेव मिश्र, डाकघर—जगनेर, तहसील-खेरागढ, जिला—आगरा ।

आदि—नागरथी छन्द ॥ मुनिउवाच ॥ भलौ बुरौ न तूठाणै वृथा कथा कहै सुनै । न रामदेव गाइ है, न राम लोक पाइ है । छप्पै—बोलन बोल्यो बोल दियो फिर ताहि न दीनौ ॥ सारि न मान्यो सक्रोध मन वृथा न कीनौ । जुरिन मुरिचौ रन माझ लोक की लीक न लोपी । दान सत्य सन मान सुजस जस विदिसा वोपी । मन लोभ मोह मद काम वस, भयौ न केशवदास भनि । पार ब्रह्म श्री राम है अवतारी अवतार मनि ॥ मधुभारछन्द ॥ राम नाम सत्य धाम बरनि बैको वरन सौ । ध्यान करि चारि जाम जगत कौ सरनसौ ॥

अन्त—सवैया— पूजा को बनाइ फलकंचन रुचौ चढ़ाइ धूप दीप अछित चदन चर चाइकै ॥ सुनत पुनीत होत पोत भवसागर कौ सुख कौ निवास सब दुख विसराइकै ॥ भक्ति मुक्ति हेत सुन वित धन द्वारा देत अर्थ धर्म कामना की पूरन पाइकै । कहै केशवदास रामचन्द्र जूकी चंद्रका की सप्त दिवस माझ सुनै चित लाइकै । इति श्री मरसकल लोक लोचन चकोल चिन्ता मनि श्री रामचंद्रकाया श्री रामपरमधाम प्रवेसनी नाम पंच पचासयो प्रकाश. ॥ ५५ ॥ सवत् १८४९ शाः १९१४ ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे पुन्य तिथौ ८ भौम वासरे ॥ लिखितं मिश्र धर्म्मपाल जगनेरिमध्ये ॥

विपय—रामचरित्र वर्णन ।

संख्या १९२ डी. कविप्रिया, रचयिता—केशवदास (ओडछा, बुन्देलखण्ड), पत्र—१०७, आकार—१० × ६½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—

२६७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६५४ = १६०१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० भगवन्त प्रसाद मोंढ़ा, डाकघर—फीरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ अलंकार कवि प्रिया लिष्यते। दोहा—गज मुष सन मुष होत ही। विघन विमुष ह्वै जात। ज्यौं पग परत पराग मग। पाप पहार विलात ॥ १ ॥ बानी जू के बरन जुग। सुबरन कन परमान। सु कवि सुमुष कुर पेत परि। होत सुमेर समान ॥ २ ॥ कवित्त—सस सस गुन कोरी सत्य ही की सत्यासुभ सिद्धि की प्रसिद्धि की सुबुद्धि वृद्धि मानिये ॥ ग्यान ही की गरिमा की महिमा विवेक ही की दरसन ही को दरसन उर आनिये ॥ पुन्य को प्रकासु वेद विद्या को विलास की धौं जसको नैवासुके सौदा भजन जानिये ॥ मदन कदन सुत वदन रदन कीधौं विघन विनास वे की विधि पहिचानिये ॥ ३ ॥ प्रगट पचमी को भयो। कवि प्रिया अवतार ॥ सारह सौ अठावना। फागुन सुदि बुधवार ॥ ४ ॥ नृप कुल बरनौं प्रथम ही। पुनि कवि केशव दास। प्रगट करी जिन कवि प्रिया। कविता को अवतस ॥ ५ ॥ नृप कुल वर्णन—ब्रह्मादिक के विनयते। हरन सकल भुव भार। सूरज वंश कयौ प्रगट। रामचन्द्र अवतार ॥ ६ ॥ तिनके कुल कलि काल रिपु। कहि कैसे वे रनधीर। गहर वार प्रख्यात जग। प्रगट भये नृप वीर ॥ ७ ॥

अंत—माम मसौ हम जी वन घीनन घीन वजै सह सोम समा। मार लता तिय नावत सारि रिसाति ननावति ताल रमा ॥ मान वहिर हिहि मोरि दमोद दमोदरि मोहि रही वनमा। माल वनी वलि केशव दास सदा वस केलि वनी वलमा ॥ ४८ ॥ सैनन माधव पोसर केशव देप सुदसु सवेस सवै। मैन चमित विजी तरनी रचि चीर सवै निधि काल फवै ॥ तै न सुनी जस भीर भरी धर धीर जरी निसु कौन यह। मैन मनी गुद चालि चवै सुभ सोभत मैं सरसी वलमैं ॥ ८४६। दोहा—जा माता ममता मया। मा परोछ छराछमा। तारो नो गग नो रोता। मक्ष जक्ष क्षज छमा ॥ सार मान वरा रोहा। नगे भागम ना हिज। जाहिना मग भागे। न हारो रावन मारसा ॥ ९५० ॥ अथ कवि प्रीया सम्पूर्णम् ॥

विषय—प्रथम उल्लास—पृ० १ से ५ तक राजवंश वर्णन। द्वितीय उल्लास—कवि वंश वर्णन पृ० ५ से ७ तक। तृतीय उल्लास—कवित्त दूषण पृ० ७ से १३ तक। चतुर्थ उल्लास—कवि व्यवस्था पृ० १३ से १५ तक। पचम उल्लास सामान्यालंकार स्वेतादि १५ से २० तक। षष्ठम उल्लास सामान्यालंकार वाह्य वर्णादि पृ० २० से ३१ तक। सप्तम उल्लास—सामान्यालंकार भूमि भूषण पृ० ३१ से ३६ तक। अष्टम उल्लास—सामान्यालंकार राज श्री भूषण पृ० ३६ से ४३ तक। नवम उल्लास—विशिष्टालंकार उत्प्रेक्षालंकार पृ० ४३ से ४९ तक। दशम उल्लास—विशिष्टालंकार उत्प्रेक्षालंकार पृ० ४९ से ५३ तक। एकादस उल्लास—विशिष्टा लंकार अपह्नुति पृ० ५३ से ६४ तक। द्वादश उल्लास विशिष्टालंकार युक्तालंकार पृ० ६४ से ६९ तक। त्रयोदश उल्लास—विशिष्टालंकार समाहितादि पृ० ६९ से ७३ तक। चतुर्दश उल्लास—विशिष्टालंकार नषशिष

पृ० ७३ से ७६ तक। पचदश उल्लास—विशिष्टालकार यमकादिलंकार पृ० ७६ से ९९ तक। षष्टदस उल्लास—चित्रालकार।

संख्या १९२ ई. कविप्रिया, रचयिता—केशवदास ओडछा, पत्र—८६, आकार—९ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६५८, लिपिकाल—सं० १८८२ = १८२५ ई०, प्राप्ति-स्थान—कुजीलाल भट्ट, ग्राम—औंडेला, डाकघर—किरावली, जिला—आगरा।

आदि—१९२ डी के समान।

अन्त—कामधेनुदे आदि अरू कल्प वृछ पर्यंत। वरनहु केशव सकल कवि चित्र कवित्त अनत। इहि विधि केशव जानियो चित्र कवित्त अपार। वरननु पंथ वनाइ में, दीनों मति अनुसार। सुवरन जटित पदारथनि भूपन भूपित मानि। कवि प्रिया ज्यों कवि प्रिया कवि सजीवनि जानि। पलु पलु प्रति अवलोकिवो सुनिवो गुनिवो चित्त। कवि प्रिया ज्यौ रहि जहु कवि प्रिया ज्यो मित्त। अनिल अनल कलि मलिनेतं विकल पलनि ते नित्त। कवि प्रिया ज्यो रछिजहु, कवि प्रिया ज्यो मित्त। केशव सोरह भाव शुभ, सुवरन मय सुकुमार। कवि प्रिया के जानियो सोरहऊ श्रृगार। इति श्री मद्दि विध भूपन भूपितायां मिश्र श्री केशवदास विरचितायां कवि प्रियायां चित्रालंकार वर्णन नाम पोडपः प्रभावः समाप्तः। १६। तत्समाप्तोयं कवि प्रिया नाम ग्रथः। संवत अष्टादश शत व्यासी मास असाढ़ कवि प्रिया पूरण भई परम प्रेम नित बाढ़।

विषय—दशांग काव्य का वर्णन।

सख्या १९२ एफ. रसिक प्रिया, रचयिता—केशवदास ओड़छा (बुन्देल खण्ड), पत्र—१२३, आकार—६¾ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८४५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४८ = १५९१ ई०, लिपि-काल—सं० १९०८ = १८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० उलफतरी बसायक नवीस, फतहाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ श्री कृष्णाय नमः॥ एक रदन गज वदन सदन बुधि मदन कदन सुत। गवरि नंद आनद कद जगवंद चंद जुत॥ सुप दायक दाय सुकृत गन नायक नायक। पल धायक धायक दरिद्र सलायक लायक॥ गुण गण अनंत भगवत भजि भक्त वत भवभय हरण। जय केशवदास निवास निधि लम्वोदर असरण सरण॥ १॥ श्री वृष-भान कुमारि हेत श्रृगार रुप भय। वास हास रस हरे मातु वधन करुणा मय॥ केशी प्रति अति रुद्र बीर मारयौ वत्सासुर। भय दावानल पान पीऐ वीभत्स वकी उर॥ अति अद्भुत वंचि विरंचि मति सांत संतन सोचि चित। कहि केशव सेव वहु रसिक जन नवरस मय व्रज राजु नित॥ २॥ दोहा। नदी वैत वे तीर तहाँ तीरथ तुंगा रंन्य। नगर ओढ़छो रिवलें वसैं धरणी तल में धन्य॥ ३॥

अन्त—इहि विधि केशवदास रस। अनरस कहे विचारि। वरनत भूल परी जहाँ। कवि कुल लेहु निचारि॥ १४॥ वाढ़े रति मति अति चढ़े। जानै सब रस रीति। स्वारथ

परमारथ लहे । रसिद प्रिया की प्रीति ॥ १५ ॥ जैसे रसिक प्रिया विना । दिखियै दिन दिन दीन । त्यौंही भाषा कवि सबै । रसिक प्रिया करि हीन ॥ १६ ॥ साधारण रस वर्णन कैं । वरनौं पाइ प्रसग । साधारक बाधा वधिक । राधा जू के अग ॥ १७ ॥ इति श्री मन्महाराज कुमार श्री इन्द्रजीत विरचितायां रसिक प्रियायाँ रस अनरस वननो नाम पोडषो प्रभाव ॥ १६ तामध्य लिषित षमानी राम ब्राह्मन पठनार्थं नदलालु राइ वासुद मइ के । जो दखो सोइ लिखो सुध असुध न जानि । पंडित अथ विचारिकैं । पढ़ियो ग्रन्थ प्रमान ॥ जो बाँच ताको राम राम श्री राधा कृष्णाय नम नारायनम श्री रामचन्द्राय नम श्री वासुदेव —

विषय—नायका भेद और रसों का वर्णन ।

ग्रथ निर्माण काल —सवत् सोरह से बरस । बीती अठ तालीस । कातिक सुदि तिथि सप्तमी । वार वरनि रज नीस ॥

सख्या १९७ जी विज्ञान गीता, रचयिता—आचार्य केशवदास जी (ओड़छा), पत्र—१२४, आकार—९ x ६३ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३१५, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६७ = १६१० ई०, लिपि काल—स० १८४९ = १७९० ई०, प्राप्तिस्थान—त्रिभुवनप्रसाद त्रिपाठी, पूर परान पाडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली ।

आदि—श्री गणेशायनम । श्री विज्ञान गीता लिख्यते । छप्पय—ज्योति अनादि अनत अमित अद्भुत अनूप पुनि परमानन्द पावन प्रसिद्ध, पूरण प्रकाश पुनि नित्य नवीन निरहि निपट निर्गुन निरजन । समसर बज सवग, संत सो चित सो चित घन । वरनी जाइ दखी सुनी, नति नेति भाषत निगम । तिनकौं प्रनाम केशव करहुं, अन दिन धरि सयम नियम । चन्द्रकला = सग सोहति है कमला विमला, अमला मति होतु तिहु पुरकौं । कहि केशव क्यों हू बनै न निवारत जारति जोर तिही उर धौ धरि पूरण ब्रह्म सदा द्दृष्टि रूप महाइ सबै, जग ज्यौं सुरकौं । अति प्रेम सों नित्य प्रणाम करों परमेश्वर की हर कीं गुण कों ।

अत—दोहा—सुनि २ केशव राय सों कह्यो रीझि नृप नाथ । मागि मनोरथ चित्त मैं कीजै सबै सनाथ । वृत्ति दइ पुरषान की, देहु बाल बनि आसु । मोहि अपनौ जानिकै, दे गगातट वासु । इति श्री मिश्र केशव राइ विरचितायां चिदानन्द मगनय विज्ञाण गीता या महा मोह पराजय प्रबोधी दय वर्नन नामें कनि शीतमें प्रभाव । समास शुभ भूयात हरि भक्ति रस्तु सब कल्याण मस्तु । सं० १८४९ । फाल्गुण कृष्ण तृतीयो सम्पूर्ण ।

विषय—इस पुस्तक में श्री केशवदास जी ने प्रथम प्रभाव में अपनी वशावली पुस्तक बनाने का कारण और बादशाह अकबर तथा राजा वीरसिंह देव की प्रशसा की है । दूसरे प्रभाव में काम रति कलह सवाद तीसरे में अहकार दभ सवाद चतुर्थ भाव में सप्तदीप सब खडादि का वर्णन पचम प्रभाव में महामोह मिथ्या दृष्टि सवाद छठे में गगा शिव वारा णसी, मणि कर्णिका घाट आदि तीर्थों का प्रभाव । सातवें में चार्वाक और उसके शिष्य का सवाद । आठवें में पाखड धर्म वर्णन । नवें में हृदय में श्रद्धा और विवेक तथा वैराग्य के मिलने का कथा तथा राज धर्म वर्णन । ग्यारहवें में वर्षा तथा शरद ऋतु का वर्णन और

श्री विंदु माधव, विश्वनाथ गंगा जू स्तुति आदि का वर्णन। बारहवें में महामोह पराजय और विवेक जय वर्णन। और तेरहवें प्रभाव में माया विलास वर्णन। इसी प्रकार प्रत्येक प्रभाव में कथा प्रसंग और प्रश्नोत्तर के रूप में अत्यन्त उत्तम काव्य और अनेक छंदों में ज्ञान विज्ञान का विवेचन किया गया है। स्थान २ पर अनेक पुराणों तथा शास्त्रों आदि के प्रमाण श्लोको में उद्धृत किए गए हैं।

संख्या १९३ ए. अंग स्फुरण ग्रंथ, रचयिता—केशव (राधन, कानपुर), पत्र—४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२६ = १८६९ ई०, लिपिकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० काशीराम ज्योतिषी, डाकघर—रिजौर, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ केशवदास शास्त्री कृत अंगस्फुरण ग्रन्थ लिख्यते ॥ अंग स्फुरण दक्षिण भाग में शुभ और वाम भाग व पृष्ट भाग व हृदय भाग में अशुभ जानो ॥ मनुष्य प्रश्न करते हैं कि अंग के स्थान स्फुरण का विचार शुभा शुभ फल विस्तार सहित वर्णन कीजिये ॥ १. मस्तक--पृथ्वी लाभ। २. ललाट--स्थानी की वृद्धि। ३ भृगुटी के मध्य में--पिय दर्शन। ४. नेत्रो में—भृत्य मिले। ५. नेत्रो की कोरो में--धन प्राप्ति। ६. कण्ठ मध्ये--राज प्राप्ति होय। ७ दृग बंधन--युद्ध में जाने से जय। ८. अपांग देश में—स्त्री लाभ। ९ कर्णान्त में--प्रिय मित्र की सुधि। १०. नासिका में—प्रीति सुख होय। ११. अधरोष्ठ में—प्रिय वस्तु की प्राप्ति। १२ कण्ठ में—ऐश्वर्य प्राप्ति। १३ कंधो में—भोग वृद्धि प्राप्ति। १४. दोनो बाहु—मित्र मिलाप। १५. दोनों हाथ—धन प्राप्ति। १६ पृष्ट में—दूसरे से जय होय ॥ १७ उरु से—जय प्राप्ति। १८ कुक्षि में—पुत्र प्राप्ति। १९. शिश्न इंद्री--स्त्री प्राप्ति। २०. नाभि में—स्थान भ्रंश ॥ २१. आंतो में—धन प्राप्ति। २२ जानु संधि में—बलवान शत्रुओं से संधि ॥ २३. जंघा के एक देश—एक देश का स्वामी होय। २४. पादो में—उत्तम स्थान में मान्यता। २५. तलुओं में—अलाभ और गमन ॥

अंत—स्त्रियो का अंग स्फुरण—स्त्रियो का अंग स्फुरण भ्रू मध्य में तो पुरुष ही के समान है परन्तु और सब अंग पुरुषो से विपरीत अर्थात्त वाम अंग स्त्रियो का शुभ कहा है। हे राजा अनिष्ट फलों के निवारण हेतु ब्राह्मणों से तर्पण करावै सुवर्ण दान करै तो अशुभ अंगस्फुरण का दोष जाता रहै। नेत्रो के ऊर्ध्व प्रान्त आदिक स्थानों में स्फुरण होय तिसका फल कहते हैं। नेत्र के ऊपर का पलक स्फुरण होय तौ मनका दुख जाय और धन की प्राप्ति होय और नासिका के निकट स्फुरण होय तौ मृत्यु नेत्र के नीचे की पलक में स्फुरण होय तो जुद्ध में पराजय होय ये सब फल वाम नेत्र के स्त्रियों के और दक्षिण नेत्र पुरुषो के विचारि करि लेओ। इति श्री मनुष्य स्त्री अंग स्फुरण शुभा शुभ फल संपूर्ण लिखतं वैजू मिश्र सैवसू निवासी संवत १९३१ वि०—राम सिया भज कैसा सलोना—

विषय—अंगो के स्फुरण के शुभाशुभ लक्षण वर्णन।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता केशव देव शास्त्री थे जो राधन जिला कानपुर के निवासी थे। रचना काल संवत् १९२६ वि० और लिपि काल सवत् १९३१ वि० है।

सख्या १९३ बी होरा व शकुन गमन, रचयिता—केशवदास (राधन, कानपुर), पत्र—१२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर सजन सिंह, सिकन्दरा मऊ, डाकघर—अलीगढ़, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नम । अथ होरा व शकुन गमन लिख्यते—जिस वार का होरा होय उसी में प्रथम दो घटि का होरा तिसके पीछे छटे वार को दूसरी इसी क्रम से दिवस के १२ होरा जानों । गुरु की होरा में विवाह शुभ है । यात्रा में शुक्र की होरा शुभ । ज्ञान कार्य में बुध की शुभ । सपूर्ण काय में चन्द्रमा की होरा शुभ । युद्ध में भाम की शुभ । सूय को राज सेवा में शनि की धन आदि काय में शुभ फलदायक है और जिस वार में जो काय शुभ कहा है वे सब काय जिन वारों की होरा में करने से शुभ दायक है । शनि के होरा में गमन करने से ये सगुन कहे ह ।

अत—यात्रा में युद्ध में विवाह में और नगरादि प्रवेश में और व्यापार अर्थात सब वस्तु के लेन देन में राहु भाग में शुभ दायक होता है । गग जी के मत से रात्रि की पिछली ५ घरी ऊषा काल में गमन शुभ और बृहस्पति के मत से शकुन और अंगरा के मत से मनका उत्साह शुभ और जनादन के मत से ब्रह्म वाक्य शुभ जानिये । इति श्री होरा व गमन के सगुन सपूर्ण समाप्त लिखा राधावल्लभ विद्यार्थी आगरा कालिज सवत् १९३० वि० ।

विषय—ज्योतिष ।

सख्या १९३ सी ज्योतिष भाषा, रचयिता—केशवप्रसाद दूबे (राधन, कानपुर), कागज—देशी पतला, पत्र—४८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३९ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामकुमार मिश्र बसीठ, डाकघर—कासगज जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ ज्योतिष भाषा लिख्यते अथ सवत्सरों का फल लिख्यते । प्रभवादि सवत्सरों में से चलते हुए संवत्सर को दुगुण करे उसमें ३ घटाकर ७ का भाग दने से जो शेष रहै तिससे शुभा शुभ फल जानिये । १ अथवा ४ शेष रहे तो दुर्भिक्ष और ५ व २ बचे सुभिक्ष ३ अथवा ६ शेष रहे तो साधा ण और शून्य आवे तो पीड़ा जाननी ॥ सवत्सरों के स्वामी ॥ ५ वर्ष का एक युग होता है इसी प्रमाण से ६० वष के १२ युग और क्रम से उनके १२ स्वामी विष्णु १, बृहस्पति २ इन्द्र ३, अग्नि ४, ब्रह्मा ५, शिव ६, पितर ७, विश्वे देवा ८, चन्द्र ९, अग्नि १०, अश्वनी कुमार ११, सूर्य १२

अत—(३) वारों में पचक वर्जित रविवार में रोग पचक मगल में अग्नि पचक सोमवार में राज पचक बुधवार को चौर पचक, शनिवार को मृत्यु पचक ऐसे ये पचक इन वारो में वर्जित हें जानिये ॥ इति श्री ज्योतिष भाषा केशव प्रसाद दुबे कृत सपूर्ण लिखत शिव मगल मिश्र रावतपूर सवत् कार्तिक कृष्ण ९ सवत १९३९ वि०

विषय—ज्योतिष ।

संख्या १९३ डी. ज्योतिपसार, रचयिता—केशवप्रसाद (राधन, जिला—कानपुर), पत्र—१६०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६७२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३० = १८७३ ई०, लिपिकाल—स० १९३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला जैनारायण नगला राजा, डाकघर—नौखेडा, जिला—एटा ।

आदि–श्री गणेशायनमः ॥ अथ ज्योतिष भाषा लिख्यते ॥ अथ शक प्रकरण प्रारम्भः ॥ सवत्सर नाम ॥ शालिवाहन शक में जिस सवत्सर का नाम जानना हो उसकी यह रीति है कि शक की संख्या लिखकर उसमें १२ मिलावें और ६० का भाग दे जो शेष बचे वही संवत्सर का नाम जानिये । जो शालिवाहन के शक में १३५ मिलावें तो वही विक्रम का संवत हो जाय जो रेवा नदी के उत्तर तट में संवत नाम से प्रसिद्धि है ॥ संवत्सरों के फल । प्रभवादि सवत्सरो में से चलते हुए संवत्सर को द्विगुण करें उसमें से तीन घटा के ६ का भाग देने से जो शेष रहे तिससे शुभाशुभ फल जानिये १, ४ शेष रहे तो दुर्भिक्ष ५, २ बचे तो सुभिक्ष ३ अथवा ६ सेस रहें तो साधारण और सून्य आवे तो पीड़ा जाननी

अंत—अतरंग बहिरग नक्षत्रः सूर्य नक्षत्र से चार नक्षत्र फिर तीन नक्षत्र इस प्रकार वर्त्तमान नक्षत्र तक बरावर गिने तो विक्रम से अत रंग वहि रंग सज्ञक होते हैं उनमें लाना और पठवाना आदि कर्म करें ॥ (सूतिका स्नान) हस्त जेष्ठा, पूर्वा फाल्गनी, स्वाति धनिष्ठा, रेवती, अनुराधा, मृग, अश्वनी और तीनों उत्तरा रोहिणी । इन नक्षत्रो में प्रसूता स्त्री का अस्नान शुभ कहा है परन्तु रिक्ता तिथि में न करें ये मुनीद्रों का कथन है । इति श्री शुकदेव विरचिते । केशव टीका कृते संपूर्ण समाप्तः लिखतं वनवारी लाल आगरा पीपल मंडी जेष्ठ मास कृष्ण पक्षे तिथो द्वादश्याम् सवत १९३३ वि० राम राम कृष्ण

विषय—ज्योतिष ।

संख्या १९३ ई. ज्योतिष सार, रचयिता—केशवशास्त्री (राधन, जिला कानपुर), पत्र—१७२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७२०, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल - स० १९३० = १८७३ ई०, लिपिकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवशर्मा नगराधीर, डाकघर—सराय अगत, जिला—एटा ।

आदि—ऋतु प्रकरणम अपन शिशिर वसंत ग्रीष्म इन तीन रितु मे सूर्य की गति उत्तर दिशा को होती है तिसको उत्तरायण कहते है यही देवताओ का दिवस है और वर्षा शरद हेमत इन तीनो रितु में सूर्य की गति दक्षिण को होती है तिसको दक्षिणायन कहते है यही देवताओ की रात्रि है ॥ अपनो में शुभा शुभ कर्ण गृह प्रवेश देव प्रतिष्टा विवाह मुडन व्रत धारण मंत्र लेना ये सव शुभ कर्म उत्तरायण में करावें और सव निद्य दक्षिणायन में करने योग्य है ॥ सक्राति अनुसार ऋतु । मकर आदि लेकर दो राशि जव सयूं भोगते है तव एक रितु हो जाती है इसी प्रकार सूर्य १२ राशि भोगते है । उससे ६ रितु होती है ।

अंत—सूतिका अस्नान— हस्त जेष्ठा पूर्वा फाल्गुनी स्वांति धनिष्ठा, रेवती अनुराधा मृगा आश्वनी और तीनो उत्तरा रोहिणी इन नक्षत्रो मे प्रसूता स्त्री का अस्नान शुभ कहा है

परन्तु रिक्त तिथि में न करै ये मुनीद्र का कथन है—इति श्री केशव देव विरचिते ज्योतिष सारे सवत सरादि प्रकरणं समाप्तम् लिखत शिव चक्रधर सवत् १९३० वि०

विषय—ज्योतिष ।

सख्या १९३ एफ. वैद्यकसार, रचयिता—केशवप्रसाद दूबे (राधन, जिला—कानपुर), पत्र—६४, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०००, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२७ = १८७० ई०, लिपिकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामभजन वाजपेयी, सराय पैकू, डाकघर—सरौंढ़ा, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनम अथ वैद्यक सार ग्रन्थ लिख्यते दोहा—विद्याधिप गण ईश के चरण सरोजहिं नाँमि । वैद्यन हित भाषा रचौं वैद्यक सारहिं सौंमि ॥ ब्रह्मा वर्त प्रसिद्धि जो तीथ सुर सरो तीर । ताते पश्चिम दिशि वसत राधन ग्राम सुधीर ॥ तामें भये द्विज कुल तिलक दुवे देवकी राम । भये परम सुख तासु सुत पडित विद्या धाम ॥ तिनके जन्मे सुत उभय केशव अरु बलदेव । जिनमें केशव ने पढ़ी विद्या करि पितु सेव ॥ काव्य कोष व्याकरण पढि अरु वैद्यक के ग्रन्थ । पुनि लीनो पितु साथ ही नगर आगरो पथ ॥ तह शाला पाठक हुते पडित हीरा लाल । तिनकी पाइ सहायता रहे तहा कछु काल ॥ सवत सत्ताइस अधिक उनइस सत को जान । तामें वैद्यक सार यह रच्यो ग्रन्थ सुख खान ॥

अत—अथ सिंगरफ सोधन विधि—नीबू के रस की सात पुट देइ भेड़ के दूध की सात पुट देइ तो सिंगरफ सुद्ध होइ । इति श्री द्विवेदी केशव प्रसाद कृत वैद्यक सार ग्रन्थ समाप्त बैसाख मासे कृष्ण पक्षे द्वितीयाम् सवत् १९३६ वि० ग्रन्थ लिखा गया लेखक राम गोपाल त्रिपाठी आगरा मध्ये निवासी उत्तरी ग्राम परगना शिव राजपुर ॥

विषय—वैद्यक ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता केशव प्रसाद दूबे थे । इन्होंने अपना परिचय इस प्रकार दिया है —दोहा ब्रह्मावत प्रसिद्धि जो तीथ सुर सुती तीर । ताते पश्चि दिशि वसत राधन ग्राम सुधीर ॥ तामें भये द्विज कुल तिलक दुवे देवकी राम । भये परमसुख तासु सुत पडित विद्या धाम ॥ तिनके जन्मे सुत उभय केशव अरु बलदेव । जिनम केशव ने पढी विद्या करि पितु सेव ॥ काव्य कोष व्याकरण पढि अरु वैद्यक के ग्रथ । पुनि लीनो पितु साथ ही नगर आगरो पथ ॥ तहा शाला पाठक हुते पडित हीरालाल । तिनकी पाइ सहायता रहे तहा कछु काल ॥

ये राधन (जिला, कानपुर) के निवासी थे जो ब्रह्मावर्त (बिठूर) से पश्चिम की ओर गगा के तट पर बसा है । ये दो भाई (केशव और बलदेव) थे । पिता का नाम परम सुख था । इनके बनाये अनेक ग्रन्थ हैं । निर्माण काल सवत् १९२७ वि० है —सवत सत्ताइस अधिक उनइस शत को जान । ताम वैद्यक सार यह रच्यो ग्रन्थ सुख खान ॥ लिपिकाल सवत् १९३६ वि० है ।

संख्या १९३ जी. वैद्यकसार, रचयिता केशव प्रसाद दूबे (राधन, कानपुर), कागज—देशी, पत्र—६०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००८, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवशर्मा वैद्य, वासूपुर, डाकघर—फरौली, जिला—एटा।

आदि-अंत—१९३ एफ के समान। पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री द्विवेदी केशव प्रसाद कृत वैद्यक सार ग्रन्थ संपूर्ण समाप्तः संवत् १९३० वि० श्रावण शुक्ल पक्षे तिथौ त्रतीयायाम लिखत शिव दत्त पाठक देहरादून निवासी ॥

संख्या १९३ एच. वैद्यकसार, रचयिता—केशव प्रसाद दूबे (राधन, जिला—कानपुर), पत्र—६४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला लालविहारी, गोहरा, डाकघर—शाहाबाद, जिला—हरदोई।

आदि-अंत—१९३ एफ के समान। पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री द्विवेदी केशव प्रसाद कृत वैद्यक सार ग्रन्थ संपूर्ण सवत् १९३० वि० लिखा राधाकृष्ण ॥

संख्या १९४ ए. पशुचिकित्सा, रचयिता—केशव सिंह (तियरी, जि० उन्नाव), पत्र—९०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८९०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर जैरामसिंह, वजीर नगर, डाकघर—मधौगंज, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ पशुचिकित्सा लिख्यते ॥ वृषकल्पद्रुमः—दोहा—गणपति गिरिजा ईश अरु विधि वन्दौ कर जोरि। विष्णु चरण को ध्यान धरि भाषौं ग्रन्थ वहोरि ॥ कवित्त—सिद्धि के सदन गज वदन विशाल तन दरश किये ते वेग हरत कलेश को ॥ अरुण पराग को लिलाट में तिलक सोहै बुद्धि के निधान रूप तेज ज्यो दिनेश को ॥ मंगल करन भव हरन शरन गये उदित प्रभाव जाको विदित हमेश को। जेते शुभ काज तामें पूजिये प्रथम ताहि ऐसे जग वदन सो नदन महेश को ॥ दोहा—वृष कल्पद्रुम ग्रन्थ को नाम कीन उच्चार। कछु निदान रुज सो कहौ पशु सुख हेतु विचार ॥ और दवा कछु जो सुनी ग्रन्थ में अव लोक। लिखिहौं आगे ते सवै हरन पशुन को शोक ॥ वरणि शुभा शुभ कछुक विधि थोरो और विधान। विगरो जो यामें लखै सो सुधारु बुध वान ॥ अवध राज धानी जहां शहर लखनऊ जान। ताते पश्चिम जानियो सोरह कोस पमान। जिला लिखों उन्नाव को मिया गज के पास। आसीवन को परगना तियरि ग्राम में वास ॥ तालुक दार कहावही केशो सिंह अहीर। तिन सग्रह करि ग्रन्थ यह हरन वृषभ की पीर ॥

अत—दो० यह चारो रग जानियो घुटुना गाठिन माहि । वहिरी दिशि ये प्रगट हैं वहु निगाह करु ताहि ॥ चौ०—भितरी रग जो प्रथम वखानी । तिनके समुह है यह जानी ॥ इन फस्तन को खोलि जो जान । छाती भरी जकरि खुलि माने ॥ पगके रोग हरारत तनकी । नीक होय यह जानौ मनकी ॥ दोहा—यह रग एक वखानियो दुम नीचे जर माहि । वहुत पातरी होति है करु निगाह वहु ताहि ॥ चौ०—यह रग फस्त खोलि जो जाने । अत कोस के रोग नशाने ॥ उदर में झोरिया जो वचन की तेहि के रोग हरैं यह नीकी ॥ दूध सूख जावै जहि पशु को । अरु वदहजमी होवै वाको ॥ इतने रोग सकल हरि जाइ । जो मन चितते करा उपाइ ॥ अथ अग्निपुराणे द्विनवत्यधिक द्विशत तमोऽध्याय सपूण समास । इति श्री पशुचिकित्सा वृषभ कल्पद्रुम सपूण सवत् १९४० मिती कातिक वदी ३

विषय—वृषभ (बैलों) के रोगों के लक्षण और उनकी औषधियों का वणन ।

टिप्पणी—इस ग्र थ के रचयिता केशव सिंह तियरि ग्राम निवासी थे । निर्माण काल सवत् १९३१ वि० और लिपिकाल सवत् १९४० है । इसको इस प्रकार लिखा है —

सवत शशि गुण ग्रह शशी पौष मास तिथि तीज । ग्र थ अरम्भन कीन तव वृष तन हित को वीज ॥ निवासस्थान आदि इस प्रकार लिखा है —अवध राजधानी जहा शहर लखनऊ जान । ताते पश्चिम जानियो सोरह कोस प्रमान ॥ जिला लिखों उन्नाव को मिया गज के पास । आसीवन को परगना तियरि ग्राम में वास ॥ तालुकदार कहावही केशव सिंह अहीर । तिन समह करि ग्रन्थ यह हरन वृषभ की पीर ॥

सख्या १९४ बी पशुचिकित्सा, रचयिता—केशवसिंह, (तियरी, जि० उन्नाव), कागज—देशी, पत्र—८४, आकार—१० × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)— १७९८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३१ = १८७४ ई०, लिपिकाल—स० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा रामदास राम कुटी, डाकघर—सिकन्दराराऊ, जिला—अलीगढ़ ।

आदि अत—१९४ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है —

इति श्री अग्नि पुराणे द्विन वत्यधिक द्विशत तमोऽध्याय वृषभ कल्पद्रुम सपूण समाप्त लिखा साधू राम सिंह नगरा निवासी जतपुर जिला अलीगढ़ सवत् १९४० वि० जैसा प्रति देखी तैसी लिखी ॥ श्री गोपाल कृष्ण की जै ॥

सख्या १९४ सी पशुचिकित्सा, रचयिता—केशवसिंह (तियरी, जि० उन्नाव), कागज—देशी, पत्र—८८, आकार—१० × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८७०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३१ = १८७४ ई०, लिपिकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला गेंदनलाल, सारौं, डाकघर—सारौं, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश) ।

आदि अत—१९४ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है —

इति श्री अग्नि पुराणे द्विन वत्यधिक द्विशत तमोऽध्याय वृषभ कल्पद्रुम सपूण सवत् १९३६ वि०

संख्या १९४ डी. पशु चिकित्सा, रचयिता—केशवसिंह (तियरी, जि० उन्नाव), कागज—देशी, पत्र—८४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८७६, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रामदेवसिंह, ग्राम—बुकरा देव, डाकघर—धूमरी, जिला—एटा।

आदि अंत—१९४ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री पशु चिकित्सा वृष कल्पद्रुम ग्रंथ केशवसिंह अहीर कृत संपूर्ण समाप्तः॥ श्रावण वदी द्वादशी संवत् १९३६ वि०

संख्या १९५ ए. काशी काण्ड, रचयिता—श्री खेमदास जी (मधनापुर, जि० बाराबंकी), पत्र—१४१, आकार—७ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्) ७८०, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२७ = १७७० ई०, लिपिकाल—सं० १९५६ = १८९९ ई०, प्राप्तिस्थान—त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, पूरे परान पांडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली।

आदि—नमो नमो गन नायक, शत चित आनंद रूप। जा सुमिरे सत सिद्धिता, गैवी रूप अनूप। वंदौ गुरू-पद-रुज मग, जेहि उर अंतर ध्यान ताहि दरस दूसन दहैं, अघ कटि घरि विलगान। नमो २ निः अक्षर, ब्रह्मा विष्णु महेस। नमो कहौ कर जोरिकै, नित प्रतिनमो नरेश पद वंदन आनद जुत करि श्रीदीन दयाल। द्रवहु दास मम जानि के वरनौ वस्तु विसाल।

अंत—संवत कहिये अष्टदस, सत्ताइस ऊपर लीन्ह। अगहन शुक्ला सप्तमी, लिखि सम्पूरन कीन्ह। निजि मुख स्वामी भाखि कै कहिन कि भजहु मुरारि। सुसुन वेद कर भेद एह, मुनि सुन लेहु विचारि। सवत कहिये अष्ट दस चालीस चारि और चारि। पक्ष सेत तिथि सत्तमी, चैते लीन्हे उतारि। सो०-चैते लीन्ह उतारि प्रथम ग्रंथ ते पाठ करि जहुँ कहुँ चूकि हमारि सज्जन सोइ संभारिए।

विषय—प्रथम गुरू की वंदना, मन्त्रोपदेश लेने का वर्णन एवं भजन विधि वर्णन करके श्री दूलनदास, देवीदास, गोसाई दास जी आदि की प्रशंसा की गई है। पीछे गुरू शिष्य के प्रश्नोत्तर के रूप में काशी जी की श्रेष्ठता और त्रिवेणी की महिमा बतलाकर यह दिखलाया है कि नेत्रो तथा भौहो का संधि स्थल ही त्रिवेनी रूप है। इसी क्रम में अनहद शब्दो का विवरण और उसकी गरिमा का वर्णन किया गया है।

टिप्पणी—श्री खेमदास जी मधनापुर (जिला—बारहबंकी) के रहनेवाले कान्य कुब्ज ब्राह्मण थे। बड़े होने पर एक ब्रह्मचारी से उपदेश लेकर घोर तपस्या की, परंतु ईश्वर का ज्ञान प्राप्त न हुआ। जब श्री जगजीवन साहब की कीर्ति सुनी तो उनके पास जाकर मंत्रोपदेश लिया। खेमदास ने काशी काण्ड, ततसार दोहावली तथा शब्दावली नामक ग्रंथ भक्ति विषय के लिखे है और बहुत से स्फुट भजन बनाये है।

संख्या १९५ बी. सब्दावली, रचयिता—खेमदास जी (मधनापुर, बाराबंकी), पत्र—५२, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६४

रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३० = १७७३ ई०, लिपिकाल—सं० १९५७ = १८९९ ई०, प्राप्तिस्थान—त्रिभुवन प्रसाद तिपाठी, पूरे परान पाडे, डाकघर—तिलोइ, जिला—रायबरेली।

आदि—राम नाम सत्त नाम हमरे कौन करै असनाना। काया गढ़मा कोटिन तीरथ, कोइ कोई पहिचाना। आपन अस जिउ सबका जानै ताहि मिलैं भगवाना। नीचे भरि ऊँचे ढरकावा सत्य नाम जिन्ह जाना। जलम जलम के पाप कटति हैं तिरवेनी गंगा असनाना। ना हम करिये खेती चाकरी नाहि बनिज बैपारा। छिन एक नाम लेव साहब का एही नेम हमारा।

अन्त—सजन से लगन यह लागी, दरस को भइउँ बैरागी। नहीं वह रंग मोहि आवे सजन सो गुनह मोहिं लावै। उत्तहै विरहे को दाधा तपै तन बोलि नहिं आवा। दरद येहि दहँ दुवरानी बेदरदी दद ना जानी। आस की अमल को आवे खसम आगे भसम लगावे। अभूखन खाक तन साजा रुल्न को लागि तव लाजा। होइ जा अमर को थासी आउँ मैं ताहि की दासी। सुनावे गैब को डंका चलौ जहा हस्म है बंका। दियो गुर तखत उर डेरा करी नहि जक्त फिरि फेरा। तवत छबि पलक ना मारी चरन सरनि स्याम, नेवारी।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश।

संख्या १९५ सी ततसार दोहावली, रचयिता—खेमदास जी, (मधनापुर, बारबकी), पत्र—३१, आकार—७ × ५३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३ परिमाण (अनुष्टुप्)—१९५, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२८ = १७१७ ई०, लिपिकाल—सं० १९५७ = १८९९ ई०, प्राप्तिस्थान—गुरुप्रसाद दास, ग्राम—रमइ, जिला—रायबरेली।

आदि—सोरठा—बंदौं सिद्धि गणेश, गन नायक लायक सबै। तूपद परौं महेश, ग्यान ध्यान वरदान द। करहु अनुग्रह मोहि, ज्ञान ध्यान वरदान दे। विनय करत हौं तोहि बुद्धि सुद्धि गुनि खानि तुम। दोहा—ज्ञान ध्यान वरदान दे निज मुख कहो गणेश। दास स्याम विनती करै ग्रंथ करहु उपदेश। मूल मंत्र मन मँगन ह, तजि जिय बाद बेवाद ततसार दोहावली, लिखि स्वामी संवाद। मम सेवक, स्वामी सदा, हौं तुव दास निदास। दास स्याम विनती करैं कहो सो करहु प्रकास। जरा मरन गभवास ते, अमित लोग केहि जोग। कौन अर्थ ते रहित हे कहु सो केसे लोग।

अन्त—सदहिं सत्य सुमिरन करे सत्त तिलक धर ध्यान। निरखै निरगुन रूप सोइ, ह्वै बैठे निवान। ध्यान धरे हौं ताहिका आहि धरैं मुनि ध्यान। सिद्धि साउ सुमिरन करे, सोइ तत्त परमान। अरस परस गुन गाइये ज्यौ २ उठै तरंग। दास स्याम दुनिया जहा तहां कहा वह रंग। दुनिया में दुइ स्यार हैं, एक झूठ एक साच। स्यामा दूनौ दरि के साधु समाने नाचु। अगित भेद नहि भाँति ते, जानै जानैं हिरदय माहि। सदहिं सुरति लागी रहे सो नित निरखै ताहि। स्वामी अब सब भाति ते कान्ह मोहि निहिसंक। सहज निरंतर नेह क, नाम भजौ निहि थ्रक। गुरु मुख वाचा विष्णु के बड़े भाग्य ते होइ। स्याम नाम सुमिरन करै हरदम सत्य समोइ।

विषय—तत्वज्ञान।

संख्या १९६. वैद्यप्रिया, रचयिता—खेतसिंह (गिजौरा विंध्याचल), पत्र—२६०, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७२ = १८१५ ई०, लिपिकाल—सं० १९०३ = १८४६ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला भगवती प्रसाद वैश्य, कुंदौली, डाकघर—अतरौली, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वैद्यप्रिया लिख्यते ॥ दोहा—श्री गिरजा सुत गुण सदन गणपति बुद्धि गभीर। तुम दर्शन अघ बहु दरैं आनंद होत शरीर ॥ वंदहुं शारद मातु पद जो शुभ मति दातार। सारद सुमिरण करत ही बाढ़ै बुद्धि अपार ॥ विष्णु और लक्ष्मी जी की स्तुतिः—सोरठा—विष्णु सकल गुण ईश कमल नयन घनश्याम प्रभु। दुख टारन जगदीश सुर महिसुर भुव भक्त के ॥ दोहा—श्री लक्ष्मी कमला रमा सिन्धु सुता के चर्ण। वन्दहु सुख दायक सदा सकल सिद्धि सुख कर्ण ॥ श्री शिव और गिरजा की स्तुतिः—करि प्रणाम उर ध्यान धरि शंकर दीन दयाल। तिनकी कृपा कटाक्षते रंक होय भूपाल ॥ आदि शक्ति श्री पार्वती त्रिभुवन व्यापक शक्ति। उत्पति पालन प्रलय करि सकल देव करि भक्ति ॥ स्थान वर्णन दोहा—अब वर्णहुं स्थान पुनि श्री गुरु प्रथम निवास। दूजो निज वर्णन करौ पुनि सत सत प्रकाश ॥ गुरु स्थानः—शोभिजे दिलीप नगर चारि वर्ण धर्म है। बसैं तहां अनेक विप्र वेद उक्ति कर्म है ॥ भांति भांति के तहां अनेक सुख देखिये। लहे न दुख रंक हू सो राजनीति पेखिये ॥ कविस्थान—अब वर्णौं स्थान निज नाम गिजौरा जान। विन्ध्याचल गिरि निकट ही सो अब करहुं बखान ॥ तीरथ परम पुनीत तहँ नाम अनौटा जासु। शिव गिरिजा शोभित तहां बनभारी चहु पास ॥

अंत—ग्रन्थ की समाप्ति वर्णनः—गुरुकी कृपा कटाक्ष ते करयो ग्रन्थ गुण धाम ॥ तिन श्री गुरु के चरण को वारंवार प्रणाम ॥ चूक क्षमा करि आदरहि ग्रन्थ सकल अभिराम बुध जन जेवर वैद्यपुनि तिनको दंड प्रणाम ॥ कछु न चातुरता कही बुध कछु नाही जोर। ग्रन्थनि ते औषधि कही कहा अधिकता मोर ॥ ताते मो विनती सुनौ चूक भूल सब कोय। मनसा वाचा कर्मना सेवक जानौ मोय ॥ पर निन्दा पर ईर्षा पर दुख सदा सुहाय। तिनको बहु विनती करौ दोष सो हृदय लगाय ॥ देव कोटि तेंतीस पुनि जिन सब रचे सुपथ। तिनको उर धरि ध्यान रचि वैद्य प्रिया यह ग्रन्थ ॥ सवतसर—संवत सत अष्टा दशहि अधिक बहत्तरि जानि। मार्ग शुक्ल पांचै जु शनि तेहि दिनि ग्रन्थ बखानि ॥ पूरण कीनो ग्रन्थ यह रोगी को सुख दाय। याहि समुझि के वैद्यवर औषधि करियो ताय ॥ इति श्री वैद्य प्रिया ग्रन्थे श्री पंडित राज खेत सिंह विरचिते संपूर्ण समाप्तः ॥ श्री संवत विक्रमी १९०३ जेठ शुक्ल नवमी को ग्रन्थ लिखकर पूर्ण किया शिवगंज चौराई मध्ये विक्रमसिंह ठाकुर

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता खेत सिंह थे। निवासस्थान गिजौरा विन्ध्याचल के पास अनौटा तीर्थ स्थान के निकट था। इसको इस प्रकार वर्णन किया है :— अब वर्णौं स्थान निज नाम गिजौरा जान। विन्ध्याचल गिरि निकट ही सो अब करहु बखान ॥ तीरथ परम पुनीत तहँ नाम अनौटा जासु। शिव गिरिजा शोभित तहां वन भारी चहुं पास ॥ वहां

राजा मान सिंह राजा और जवाहिर सिंह दीवान थे। जाति के ये श्रीवास्तव कायस्थ थे। निर्माण काल संवत् १८७२ वि०—संवत् शत अष्टादशहिं अधिक बहत्तर जानि। माग शुक्ल पाँचे जु शनि तिहि दिनि ग्रन्थ बखानि॥ लिपिकाल संवत् १९०३ वि० है।

संख्या १९७ रसतरंग, रचयिता—खुशीलाल (बरजापुर, कानपुर), कागज—विदेशी, पत्र—३२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०६, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२० = १८६८ ई०, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० विष्णुभरोसे, बहादुरपुर, डाकघर—बेहटा, गोकुल जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नमः। अथ रसतरंग लिख्यते॥ अस्तुति गणेश जी की॥ दोहा॥ विघन हरन मंगल करन कुंजर बदन विकास। दीजै वर बाढ़े विशद वाणी बुद्धि विलास॥ जय गणेश वर देवता तुमहिं नवावहु माथ। विघन नाशि बुधि दीजिये जोरौं दोनों हाथ॥ सवैया—गिरिजा सुत विघ्न विनाशन हौ तुम बुद्धि प्रकाशन हौ जग माहीं॥ शुभ नाम जपै भव पीर टरै अरु ध्यान धरै सब पाप नसाहीं॥ पद पंकज राखि हिये अपने नित ठाढ़े पुकार करौ तुम पाहीं॥ निज सेवक जानि विषाद हरौ मन बीच करौ शुभतास सदाहीं॥ चौ०—जय गज वदन देव गन नायक। आरत हरण परम सुख दायक। जय जय शंकर सुवन कृपाला। ललित सिंदूर सुसोभित भाला॥ जय गणपति गज दंत विशाला। सैल सुता सुत दीन दयाला॥ जय लम्बोदर विघन विनाशन। मूषक वाहन बुद्धि प्रकाशन॥

अंत—लौंद महीना—विरखि बारहु महीना हम बिताये, सखी तब लौंद में घन श्याम आये। पिया अपने को हिरदे से लगाया, पहिन अभिरन सखी पलिंगा बिछाया॥ हर्षि करि श्याम की छाती से लागी। सखीरी चैन स सब रैन जागी॥ हुइ मन कामना पूरन हमारी। विरह की सब ताप खोई मुरारी॥ सखी री खुल गई तकदीर मेरी। बनी बाके बिहारी की मैं चेरी॥ मिली श्री राधिका मोहन को जैसे। मिले निज पीव से संसार से ऐसे॥ बहुत सुख से बनाया बारहु मासा। मेरी पूरण करो नंदलाल आसा॥ पढ़ इसको सदा कोइ जो मन लाय। मिलै बैकुण्ठ भव सागर उतर जाय॥ दोहा—रसिक श्याम जो नर सदा सुनै सहित विश्वास। हरि राधा पद रति बढ़ै पूजै मनकी आस॥ प्रार्थना—कविताई जानों नहीं ना कछु पिंगल ज्ञान। कविजन भूलि सम्हारियो दास आपनो जान॥ लखेश्वर अस्थान ते दक्षिण दिशि एक ग्राम। कहत ताहि बरांज पुर सकल जगत सरनाम॥ अद्भुत है नगरी बनी सुजन जनन कर धाम। ताही में मैं बसति हौं खुशी लाल मम नाम॥ श्रीवास्तव पद दूसरो कुल कायस्थ बखान। सुत हौं देवी दयाल कों करू इष्ट को ध्यान॥ संवत विक्रम जानिये उनइस सौ पचीस। चैत सुदी तिथि पचमी पूरन कीनो ईस॥ बृज को तजि हरि राधिका रहे द्वारिका छाय। सो चरित्र वर्णन कियो निज बुधि को बल पाय॥ इति श्री रसतरंग संपूर्ण संवत् १९४० फाल्गुन शिव तेरस॥

विषय—शृंगार।

संख्या १९८. श्री किशोरीदास जी की वाणी, रचयिता—किशोरीदास जी (वृन्दावन), कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—१० × ७ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४, खंडित रूप—बहुत पुराना, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबा बंसीदास जी, गोविदकुण्ड, वृंदावन।

आदि—श्री श्री गौरांग विधुर्जयति। श्री कुज विहारण्यै नमः। श्री किशोरी दास जू की बानी लिख्यते। अथ श्री महाप्रभु जी के पद मगला चरन लिख्यते। राग सूहो बिलावल रुपकला। जे जे श्री चैतन्य मंगल निधि गाइये। प्रेम अवधि ललित लीला अधिकाइये। ऐसे गौर किशोर सदा उर ध्याइयै। ध्याइये गौरांग सुदर निरखि नैन सिराइयै। भज शची नंदन जगत वंदन त्रिविध ताप नसाइयै। पतित पावन विरद जाकौ बडे भागन पाइयै। श्री किशोरीदास मंगल निधि जै जै श्री चैतन्य गाइयै। जे जै श्री चैतन्य परम कृपाल प्रगटे जीव उधारन भक्तन के प्रति पाल। दुपित जानि जन जन मले ततिहि काल भक्ति मंडन खलन खडन ऐसे दीन दयाल। ऐसे दीन दयाल प्रभू है जगनाथ के लाल। कृष्ण भक्ति प्रकासि दसौ दिसि कीनौ विश्व निहाल।

अन्त—महाराज वृषभान बहुत विधि की आस पुजाई। श्री किशोरी दास की बांह पकरि कै बरसाने जु बसाई॥ राग रामकली। हमतौ श्री चैतन्य उपासी। आनद मंगल श्री शची नंदन सेऊ सुप रासी। इनके चरन सरन जे आवै पावे वृज वृन्दावन वासी। श्री किसोरी दास इनतहि औरै भजिते नर नरक निवासी।

विषय—कृष्ण भक्ति विषयक पद।

सख्या १९९ ए. सामुद्रिक, रचयिता—कोक, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० गंगाराम गौड़, ग्राम—जलाली, जि०—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशायनमः॥ अथ सामुद्रिक लक्षण दोहा॥ निलज अंकुरा बोले अधिक तामस अति गति हास। कहै कोक गुन तरुनी के सकल अलक्षन वास॥ जाकी जुग भौहैं मिली ऐसी जुवती होय। कहै कोक अति कुटिल मन तेहि प्रति पोवन कोय॥ तन कंपै मारग चलै जांघ पीड्री वार। जहां तहां वह देखिये विभि चारणी वह नार॥ तरुवर वरित विहग सम तिहि नक्षत्र को नाम। प्रगट जगत में देखिये व्यभि चारी वह वाम॥ कामिनि लज्जा परि हरै वैठै सम्मुख द्वार। गहे अजिर भावै नही ये लच्छन विभिचार॥ जाके अधर विसालती वोलै सदा कुवैन। सो नारी नहि व्याहिये निरपि आपने नैन॥ जा नारी की मुच्छ पर प्रगट हेरै कच स्याम। भूमि न परसै मध्य पग रांड दरिद्री वाम॥ जांघ मुच्छ पर वार जेहि सुभर काम को धाम। भूमि न परसै मध्य पग होइ सो विधवा वाम॥

अन्त—जाकी नारी गंभीर नहि श्रवन होइ जिमि सूप। निश्चय होय दरिद्रिनी यद्यपि संग्रह भूप॥ छुधावती निद्रावती सोगवती सी वाम। उच्च दत रसना कठिन कवहुं न पावै दाम॥ येक पीन होय छनि कछु अधिक हीन कछु अंग। वात कहत या तरुनी के फूलै ग्रीव उतंग॥ रोम होय सव गात पर चलती चाल उताल। अति दुर्वल अति छीन

तन सोभा पावत वाल ॥ जाके कूप कपोल हूँ वात कहत है जाय । तात भ्रात तरुनी के निश्चय जीवत नाहिं ॥ काम का वास —

कृष्न पक्ष	शुक्ल पक्ष
१ मस्तक	१ अंगुष्ठ
२ नेत्र	२ पाद
३ अधर	३ गुफ
४ कपोल	४ जघा
५ ग्रीवा	५ भग
६ कोपि	६ कटि
७ कुच	७ नाभि
८ हृदय	८ हृदय
९ नाभि	९ कुच काख
१० कटि	१० काख
११ भग	११ ग्रीव
१२ जघा	१२ कपोल
१३ गुफ	१३ अधर
१४ पद	१४ नेत्र
३० पद अगुष्ठ	१५ मस्तक

इति श्री सामुद्रिक कोक कृत नारी पूषण समाप्त लिखत लीला धर पाढे जेष्ठ शुक्ला सप्तमी सवत् १७१० वि०

विषय—सामुद्रिक शास्त्र ।

सख्या १९९ घी कोकविद्या, रचयिता—कोक पण्डित, पत्र—३२, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२०, खडित,रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० रामभजन वाजपेई, स्थान— सराय वैकू, डाकघर—सरौंद, जिला—एटा ।

आदि—कोक पंडित ने लिखा है कि वल और वीर्ज के वढाने को सैकडों औषधी रसादिक हैं परतु दूध के समान कोई औषधि नहीं इस लिये मैथुन किये पाछू जो मनुष्य दूध पीवे वह कभी वल हीन नहीं होय वरन चौगना वल और वीर्य और वढै ॥ दूसरी दवा ॥ तिल्ली का तेल शरीर पर मलने से सरीर चैतन्य रहता है और अतरादिक सुगध के सूघने से मगज में वल की प्राप्ति होती है वल और वीज वढाने की औषधि-गोद ढाक का, ताल मखाना वीज वद, समदर सोख, मूसली सफेद, वडा गोखरू तज ये सब औषध वरावर ले पीस छान के वरावर की खांड मिलावै प्रात काल दूध के साथ ६ *माशा खाय ॥ दूसरी दवा* ॥ कवाव चीनी लौंग अकर करा सोंठ

ऊद खालिश स्पंद जलाने का ये सव वरावर पुराना गुड दुगुणा डाल गोली वांधै दिन सात खाय १० स्त्री को प्रसन्न करै ॥

अन्त--जिस स्त्री ने वेटा जना होय और वेटी चाहै--कड्ई तोरई को साफ करके छिलका दूर करै भग मे राखै फिर पानी से धोके पुरुप के सग मैथुन करै और मेंथी के लाड्डू खाय और चिकनी सुपारी दूध में पीसै और पीवै ॥ और औपधः--जाय फल को पुर्प तोडै तीन टूक में एक गुड में लपेट के सिर पै वार के घर के पिछवाडे फेकै दरवाजे के सामने जहां छप्पड से पानी पड़ै खाय घर में पुर्प खाय कोई जानै नही वेटी पैदा होय।

विषय--पुरुष स्त्री के वल वर्धक औधधि और गुप्त रोगो की औपधि तथा संतान एवं वांझ आदि की औषधि लिखी है।

संख्या १९९ सी. सामुद्रिक लक्षण नारी दूषण, रचयिता--कोक पण्डित, पत्र--१, आकार--१६ X ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--६०, परिमाण (अनुष्टुप्)--३०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल--सं० १८९० = १८३३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० वावूराम मास्टर, रामनगर, डाकघर—आवागढ़, जिला—एटा।

आदि-अंत—१९९ ए के समान।

संख्या २००. कविविनोद, रचयिता—कृष्णदत्त ब्राह्मण, कागज—पुराना मोटा, पत्र—१८, आकार—१० X ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२०, रूप—अति प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—नाथू बनिया, पुरानी वस्ती कोठी, जिला—जब्बलपुर।

आदि—अथ कवि विनोद महा भट्ट श्री त्रिलोकी चंद्र जी की आज्ञा सों परम पुनीत नगरी भोजा की वावल वाले ब्राह्मण कृष्ण दत्त ने लावनी की चाल भापा सस्कृत किया॥ यह ग्रन्थ ब्राह्मणो को विशेष महाफल दायक सुगम लक्ष्मी का दाता है। सं० १९२८ में पूरा किया॥ दोहा–प्रथम तीन सायर भये, तुलसी केशव सूर॥ कृष्णदत्त तिनके सदा, पद सरोज की धूर॥ १॥ सीताराम भजो नहीं नही कियो सुख गेह॥ कृष्णदत्त द्विज मूढ़तैं, वृथा धरो नर देह॥ २॥ भूत भविष्यत वर्तमान जो काल बतलाता है॥ जोति शास्त्र सब शास्त्र सिरोमन बिना भाग्य नही आता है॥ जिसका जन्मे मेप लग्न में क्रोधवन्त और महाव्यसन सब कुटुब से विरोध जिसके रक्त नेत्र रहना निर्धन॥

अन्त--इति केतु फल॥ इति श्री मत्कृष्ण दत्त विप्र विरचतं जोतिसार भाषा कवि विनोद नव ग्रह फल समाप्तं॥ सम्बत १९२८ मिती भाद्र पद कृष्ण ५ भौम वासरे परोपकार्थये लिप्यते॥ परोपकाराय शुभ भवतु मगल मंगल भगवान विष्णुः मंगल गरुडध्वजः मगली पुडरीकक्षा मगला यतनो हरिः॥ श्री शिवायन्मः॥ श्री रामायन्मः॥ इति शुभं सम्पूर्ण॥

विषय—पृष्ठ १ से लेकर ३ तक गणेश स्तुति। पृष्ठ ४ में शिव कृष्ण और सरस्वती वन्दना। पृष्ठ ५ में बारह लग्नो (मेष, वृष, तुला, मिथुन, कर्क आदि) के फल। पृ० ६ से उच्च अथवा नीच ग्रहों का विचार। सूर्य का विचार पृ० ९ तक। चन्द्र का फल द्वादश

रभो में, पृष्ठ ११ तक। पृ० १२ तक भौम फल, पृ० १४ तक बुध फल, १६ तक गुरु फल, १८ पृ० तक भृगु फल, २५ पृ० तक शनिग्रह का फल, २८ तक राहु ग्रह का फल, ३२ तक केतु फल तथा बाकी में ग्रन्थ की समाप्ति।

संख्या २०१ श्री कृष्णदास जी के पद, रचयिता—श्री कृष्णदास, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबा अनन्तदास, बनकुंजी, शिवगज चौड़ा, डाकघर—गाढ़ा, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ श्री कृष्णदास के पद लिख्यते ॥ जो तुम हरि यह शुक्ति न करते ॥ हमसे पतित विस्वास विननिव भव सागार क्यों तरते ॥ जो तुम नाउ ऐस न उधरते द्विज को गनिका घरते। तब विधि देश काल हित साधन तब शुचि करि करि मरते ॥ जो वैकुन्ठ गये हूं रिषि दुर्वासहि नहिं परि हरते। तब मुनि गन सब बल तब भक्तनि दुपबल नेक न डरते ॥ जा श्रुति निपुनि जग्य विप्रनु तजि जुव तिन नहिं अनु सरते ॥ तब हम कम जाल सब पावक जन्म जन्म परि जरते ॥ जो ब्रज राज युवति के श्रम में बधन हृदय न धरते ॥ तब अनुराग पियूष विना तब वैभौ बारिधि परते ॥ जाको सकल विनोद गाइयत भल की राधा वरते ॥ श्री कृष्ण दास हित वृन्दावन विधु जे न भजत ब्रत नरते ॥

अन्त—मोसे अधिक छाडि चतुराइ। मैं जानी रजनी सब जागी जदपि सकुच ते कछु न जनाई ॥ अलकृत तेरे अधर दसन छवि आलस वलित मुर लेत जभाइ ॥ देखहि जो अति सुभग वदन पर मध्य सामरा लट छुट आइ ॥ नागवली रस भलित ललित अति वनित कपोलन कुंडल झाइ ॥ मानो अति विपुल बहत अनुरागहिं अनुपम नयनन की अरु नाइ ॥ श्रम जल विन्दु ललाट पटल पर अति लागति सखि मोहिं सोहाइ ॥ मानो लाव निलेप क्रम उपटत अति ही ताते तन मन न समाइ ॥ भृकुटी विलास दास रसि रजित मनमथ मनमथ को सुखदाई ॥ कृष्णदास हित को बरनैं छवि जो नागर अपने मुप गाइ ॥

विषय—कृष्ण भक्ति विषयक पद।

संख्या २०२ मंगलसंग्रह, रचयिता—कृष्णदास और ललितकिशोरी, पत्र—२, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—दालाराव जी दीक्षित, डाकघर—दोहली, जिला—आगरा।

आदि—अथ मगल श्री कृष्णदास कृत लिप्यते। श्री राम। अथ मगल श्रीकृष्णदास जी कृत लिप्यते। प्रथम जथामति श्रीगुरू चरन लड़ाये हो। उदित मुदित अनुराग प्रेम गुन गायहो। निरपदपन सपतो सुप शीश मस्तक नाय हो। देउ सुमति वलि जाउँ आनंद बढ़ाइहौं। आनद सिंधु बढ़ाइ छिन प्रेम प्रसादे पाइ हौं। जै श्री वल विहारुनिदास कृपा ते हरि मगल गाइहौं। १।

अत—मगल ललित किशोरी जी कृत लिप्यते ॥ आजु महा मगल भयो माई, भई प्रसन्न सरोवर राधे ये सुप कह्यो न जाई। परम प्रीतसो विलसत दोऊ, प्रेम बढ़ो

अधिकाई। श्री हरिदासी रसिक सिरोमनि, उमंगि उमंगि आनँद झरलाई। १। आजु समाज सहज मन भायो, कुमरि किशोरी गोरी भोरी, अपनी जान निकट वैपयो। अपने मेल मिली सब तान तरंग तरंग बढ़ायौ। श्री हरिदास रसिक सिरोमनि, तन मन वचनन हियो सिरायौ। १। इति मंगल सम्पूरणम्।

विषय—कृष्ण भक्ति के पद।

संख्या २०३ ए. ज्ञानप्रकाश, रचयिता—कृष्णदास, पत्र—१६, आकार—८½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० वैजनाथ ब्रह्मभट्ट, अमौसी, डाकघर—बिजनौर, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गुरुभ्वै नमः ॥ श्री गणेशाय नमो नमः दीन वचन होइ शिष्य ने। नमस्कार कियो आय। वंधेउ मन संसार ते। छूटै कौन उपाय ॥ १ ॥ द्वितीय प्रश्न अव कहतु हौ। नीके कहिये मोहि। पंच कोस वपु तीनि की। उत्पति कैसे होहि ॥ २ ॥ ॥ श्री गुरुवाक्य ॥ सिष्य उतर सुनि कहत हौ। निश्चै कर उर माहिं। छूटै एक विचार तैं। दूसर साधन नाहि ॥ ३ ॥ एकहि से त्रधा भयो। द्रष्टा सत्ता पाय। पंच कोस करि रचि रहै। कहौ तोहि समुझाय ॥ ४ ॥

अंत—कहत सुनत सव ही थके। भयो एक निरधार। ज्ञान अग्नि परगट भई। जगत भयो जरि छार ॥ कीन्हो ग्रंथ विचार यह। निश्चै ज्ञान प्रकास। श्रवन सुनत आनंद भयो। मिटै द्वैत जगभास ॥ गुरु सिष का संवाद यह। जोरि सुनै चित लाय। समुझै अपने रुप को। जक्त भर्म मिटि जाय ॥ × × × × इति श्री ज्ञानप्रकाश पोथी कृष्णदास कृत समाप्तम् ॥ सुभ मस्तु—श्री राम सीता राम सवत् १९०० ॥ १० जेठ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ अष्टाम्यां सुक्रवारे समाप्तम् ॥

विषय—(१) पृ० १ से ४ तक—रासार से विराग होने का उपाय। पंच कोप और शरीरोत्पत्ति का वर्णन। शरीरों का पृथक् २ वर्णन। (२) पृ० ४ से ८ तक—जीव निरूपण। अज्ञान दूर होने का यत्न महा वाक्य का भेद। त्वं पद वर्णन। (३) पृ० ८ से १६ तक—आत्म निरूपण ग्रन्थकार परिचय जो इस प्रकार है:—सार सार सव ग्रन्थ को। संग्रह किषो वनाय। भाषा ज्ञान प्रकाश तव। दीन्हो नाम जनाय। ज्ञान प्रकास प्रकासते। रहै तिमिर कछु नाहिं। श्रवन मनन करि कृष्णदास। जोरि धरे उरमाहिं ॥

संख्या २०३ बी. ज्ञानप्रकाश, रचयिता—कृष्णदास, पत्र—५, आकार—८¾ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लक्ष्मीनारायण श्रीवास्तव्य, चैदुवार, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि-अंत—२०३ ए के समान।

संख्या २०४, पंचाध्यायी, रचयिता—कृष्णदास कायस्थ सकसेना दूसरे (रामपुर, समशाबाद), पत्र—१२, आकार—८¾ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—५००, रूप—प्राचीन, लिपि—फारसी, लिपिकाल—सं० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबू शिवकुमार वकील, लखीमपुर, जिला—खीरी (अवध)

आदि—श्री कृष्ण ॥ श्री गनेशाय नम पोथी पचाध्यायी हरि हर हरि जन सुमिरन करहू । हरि चरनार विन्द उर धरहू ॥ कोटि जग्य जप तप विधि नाना । अमित जोग वृत सजम ध्याना ॥ प्रागादिक पुनि तीरथ जेते । नाम तुल्य हुइ सकहिं न तेते ॥ वन को अनल तिमिर को भानू । त्यों अघ को हरिनाम प्रधानू ॥ मूल मत्र हरि नामहिं जानों ॥ मुच्छ द्वार कुजी पहिचानों ॥ है हरि नाम पाप को अरिनी । मोह नदी को सुन्दर तरिनी ॥ सुख दायक कुल कलुष विभजन । है हरिनाम विश्व मन रजन ॥ जग धंधा तजि धध विचारौ । हरि उसास हरि नाम सँभारौ ॥

अंत—रास खेल अद्भुत कथा । कहे जथा मति गाइ । प्रभु पद पकज पर सदा । कृष्ण दास बलि जाइ ॥ इति श्री पचध्यायी भागवत दसाम स्कधे कृष्ण कृत मिती कुआँर बदी अष्टमी रोजयक शबा सन् १२६१ फसली व तारीख विस्तु यकुम शहर जीहिज्ज सन १२६९ हिजरी मुताबिक हिन्दी संवत् १९१० वि० दर दैतुल सल्तनत लखनऊ व महल्ले हसन गज । औरये गोमती । व मकाने खुद । बखत वेरंत चरन सेवक अहक रुल इबाद दुर्गा परसाद वल्द लक्ष्मी परसाद काननगो परगना गोपा मऊ मुतील्लकै योगर सरकार खैरा बाद सूबै अवध ॥ सम्पूरण शुद्ध ॥

विषय—(१) पृ० १ से २१ तक—रामनाम महत्व, कवि दैन्य वर्णन और ग्रन्थ प्रतिज्ञा । ग्रन्थकार परिचय इस प्रकार है —खेमकरन गुरु नाम सुहायो । सुमिरि जासु जम त्रास नसायो ॥ द्विज घर मिश्र सनाढ्य जानो । दया धाम गुन मय पहिचानों ॥ × × × कृष्ण दास मम नाम । हरिजन चरन सरोज रज । रहत रामपुर ग्राम । समशा बाद प्रसिद्धि जो ॥ करी कृपा पूरे चरन । चरन सुनाऊ तोह ॥ सक्सेनो कायस्थ कुल । जासु दूसरो मोह ॥ ग्रन्थ निर्माण काल —शुक्ल पक्ष तिथि पूर्णिमा । अश्वनि मास पुनीत । वनद्या मूलन विविध अरुन नील सुत पीत ॥ रहस्य प्रस्ताव तथा रास रचना । (२) पृ० २२ से ४७ तक—अन्तर ध्यान कथा । (३) पृ० ४८ से ५५ तक—गोपिका जोग वर्णन । (४) पृ० ५६ से ९२ तक—रास लीला वर्णन ।

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रन्थ के रचयिता कृष्ण दासजी कायस्थ सकसेना दूसरे थे । इनका निवास स्थान रामपुर नामक ग्राम जो अब शमशाबाद के नाम से प्रसिद्ध है, था—सम्भवतः यह फर्रुखाबाद जिले का शमशाबाद है । इनके गुरू का नाम खेम करन था । यह सनाढ्य जाति के मिश्र ब्राह्मण थे ।

संख्या २०५ ए, विहारी सतसई, रचयिता—कृष्ण कवि, पत्र—१०, आकार—७ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्) ७२, खंडित रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दुर्गाप्रसाद शर्मा, फतहाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—दोहरा । डीठिन परतु समान दुति कनक कनकु से गात । भूषन फट कर कस लगत परस पिछाने जात । टीका । यह नाइका के अग की दीपति सखि नाइक सौं कहति है । नाइक टु सखी सौं कहै तो सम्भवै । कवितु । आजु लाल एक के ब्रज बाल मैं विलोकि जाकी ललित लुनाइ लखि लोचन सिहात हैं । साजति सिगार रचि पचि के प्रवीन

चेत सब हेरत हिरात है। करति विचार पै न होत निरधार कछु जै सोई कनकु ... ...क के गात है। कौंवरे करै कै वितान पहिचानियत कर परसै है आभूपण जानै जात है। ७०।

अंत—गुडि लखि लाल की अगना अंगना माह। वौरी दौरि फिरति छुवति छवीली छाह। टीका। यह नाइका पर कीया प्रौढ़ा है सुनाइका की चग को छाह छुए ते नाइका के मिले ही को सुख भानति है। सखि सखि सो कहति है। कवित्तु। नंदलाल नव नागरि पै निजु रूप दिखाई... ..।

विषय—विहारी सतसई के दोहों पर कवित्त रचे गए हैं।

संख्या २०५ वी. विदुर प्रजागर, रचयिता—कृष्ण कवि, पत्र—१८०, आकार—५ × ३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७९२, लिपिकाल—सं० १७९२ = १७५५ ई०, प्राप्तिस्थान—प० दुर्गाप्रसाद शर्मा, डाकघर—फतेहावाद, जिला—आगरा।

आदि—श्री रामजी सहाई। श्री गणाधिपतये नमः श्री रामचन्द्रजी सदा सहाई। अथ विदुर प्रजागर लिखते। दोहा—सुमति सदन सुदर वदन एक दंत वरदानि। छम रुचि विघ्न विनास कर गनपति मोदक पानि। १। सरद सुधा निधि वदन द्युति सुमिरौं सारद माई। जाके कृपा कटाक्ष ते विमल वुधि अधिकाई। वंदौं गुरु गोविन्द के चरन कमल सविलास। कहों तथा मति वरन कछु भारत को इतिहास। ३। धृतराष्ट्र ते विदुर ने कीयौ धर्म संवाद। कहत कृष्ण भाषा वरनि सुनत विलाई विषाद।

अंत—दोहा। विदुर प्रजा गरु में कह्यो यह भाषा मनु ल्हाइ, पढ़ै गुनै समुझै सुनै ताको पापु विलाई। सकल कथा इतिहास को भारत कहिये सारु ताहु में उदिम परव तामें विदुर प्रजारु राजा आय्रा मल की आज्ञा अति हितु जानि विदुर प्रजागर कृष्ण कवि भाषा कन्यो वखानि। ३५। मै अति ही ढीठ नौकरी कवि कुल सहज सुभाई। भूल चूकि कछु होई तो लीजौ समझ वनाइ। सत्रह में अरु वानवें सम्वत् कार्तिक मास सुक्क पछि पाचें गुरौ कीनो ग्रंग प्रकास। ३७। इति श्री महाभारथे उद्योग पर्व ने विदुर प्रजागरे कवि कृष्ण भाषा नवमोध्याय।

विषय—महाभारत की कथा आदि से अंत तक संक्षेप में लिखी है।

संख्या २०५ सी. विदुर प्रजाकर, रचयिता—कृष्णकवि, पत्र—६७, आकार—७½ × ६¾ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९११ = १८५४ ई०, लिपिकाल—स० १७९२ = १७५५ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबूराम बहादुर अग्रवाल, डाकघर—बाह, जिला—आगरा।

आदि—२०५ बी के समान।

अन्त—राजा आर्यामल कही। आज्ञा अति हित जानि। विदुर प्रजाकर कृष्ण कवि भाषा रचौ बपानि॥ ३९॥ मैं साहस अति ही कन्यौ। कवि कुल जाति सुभाइ। भूल चूक जो होइ कछु। लीजौ समुझि वनाइ॥ ४०॥ सत्रह सै अरु बानवै। संवत् कातिक मास।

सुकुल पक्ष पाँचै गुरौ । कीन्यों ग्रन्थ प्रगास ॥ ४१ ॥ इति श्री महा भारते महा पुराने उद्योग पवने विदुर प्रजागेर नाम नवमो अध्याय ॥ ९ ॥ धृत राष्ट्र विदुर सवादे कथा सम्पूर्ण सुभ मस्तु सवत् १६११ जेठ वदी ३० लिखित लाला भवानी प्रसाद विनौली क कायस्थ ॥ जैसी प्रति देखी तैसी लिखी अक्षर मात्रा की भूल होइ सो सम्हार लीनो श्री सीताराम जी सहाय ॥

विषय—(१) पाँडवो की उत्पत्ति, उनका निष्कासन, द्रौपदी विवाह, पाँडवों का पुनरागमन, अर्द्ध राज्य प्राप्ति, राज सूय यज्ञ, मगध देश एवम् शिशु पाल विजय, द्यूत क्रीड़ा, पाँडवों का वनोवास, आदि [१ से ४ तक] प्र० अ० (२) विदुर का राजा धृतराष्ट्र की प्रार्थना पर कुछ कथन—पंडित एवम् मूर्ख के लक्षण, बड़ा कौन है ?—आदि राज नीति सम्बन्धी कुछ उपदेश [१४—२५] द्वतीय अध्याय (३) विदुर द्वारा धृतराष्ट्र को धर्म के दस लक्षणादि अनेक उपदेश [२५—३२] तृतीय अध्याय (४) "विरोचन (प्रह्लाद सुत एवम् धन्वा का विवाद । प्रह्लाद का निष्पक्ष निर्णय कर पुत्र के प्राणो की परवाह न करना । "धन्वा का विरोचन को प्राणदान" इस इतिहास द्वारा धृतराष्ट्र को विदुर का धर्मोपदेश, पुण्य पाप की व्याख्या [३२–३९] च० अ० ।

(५) अत्रि सुत दत्त तथा साधुओं के सवाद का इतिहास द्वारा विदुर का अनेक उदाहरणों और धम शास्त्रानुसार उपदेश देना [३९—४६] पचमोऽध्याय ।

(६) स्वयभू मनु के उपदेशों का सार [४७—५३] ष० अ० । (७) अतिथि सत्कारादि अनेक विषयों का उपदेश तथा पाँडवों को उनका राज्य दे देने का आदेश [५३—५७] सप्तम अ० । (८) "जहाँ धर्म तहँ जय ' आदिक कथनों द्वारा उपदेश, कौन नष्ट होता है ? दया और धीरजादि की व्याख्या [५७—६३] अष्टमोध्याय । (९) संसार का मिथ्यात्व, एवम् शरीरादि की अनित्यतादि सम्बन्धी अनेक प्रमाणों द्वारा राजा को विदुर का उपदेश देना । अन्त में धृतराष्ट्र का अदृष्ट की प्रबलता का वर्णन कर होनहार पर विष को छोड़कर चुप रहना । ग्रथकार का स्वल्प परिचय एवम् अभिभावक का परिचय, ग्रंथ पठन पाठन फल व निर्माण काल का दोहा ।

सख्या २०५ डी विदुर प्रजागर (उद्योग पर्व), रचयिता—कृष्ण कवि, कागज—देशी पत्र—६६, आकार—७ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७४२, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९२ = १७३५ ई०, लिपिकाल—स० १८९० = १८३३ ई०, प्राप्तिस्थान—हनुमान प्रसाद जी राय, सहायक पत्रालयाध्यक्ष, जिला—मथुरा ।

आदि अत—२०५ बी के समान । पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री महाभारते उद्योग पव नवमो अध्याय ॥ ९ ॥ संपूर्ण । सुभमस्तु ॥ सवत १८९० पूस मासे कृष्ण पक्षे शनिवासरे । तिथि दुतिय लिप्यत गुमान खां पठान । सकरौली मध्य रहत । श्री राम जी ।

संख्या २०६ ए खेल बगाला, रचयिता—कुदरतुल्ला (फरुखाबाद), पत्र—१६, आकार—९ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८०८ = १७५१ ई०, प्राप्तिस्थान—संग्रह, मनौना, डाकघर—पटियाली, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश) ।

आदि—श्री गणेशायनमः । अथ खेल बंगाला लिख्यते ।। यह पुस्तक खेल बगाला कुदरत उल्ला फर्रुखावाद के रहने वाले ने वनाया । कपडे की आड से निशाना लगाणे को तार्कीब । बंदूक में गोली की जगह पारा भरै और बंदूक के आगे कपड़ा तानै जिसकै चाहे निशाना लगावै जानवर मर जावेगा कपडे में छेद न होवेगा आक के दूध से हाथ से जो चीज चाहो सो सुखा लो जव साफ सूख जावै तो राख या माठी मलौ लिखा हुआ कुछ मालूम न होगा कि क्या लिखा है ।। वगैर रंग व स्याही के रंग वरंग लिखना । पियाज का अर्क निकाल के सफेद कागज पर उस अर्क से लिखै और छाही में सुलावै तो लिखा वे मालूम हो जायगा जब उस कागज को आग में सेंके तो सब अक्षर पीरे रग के प्रगट हो आवेंगे देखने वालों को बड़ा अचरज होगा ॥

अत— चिर चिड़ा की जड़ हाथ में पकड़ के जीता विच्छू पकर ले जहर असर नहीं करेगा ॥ कसौटी का पत्थर खूव पीस कर दिया कि बाती पर गुदक दो चाहे जितनी हवा चले दिया न वुझेगा परंतु तेल सरसो का जलावै ।। मर्द का वीर्य कपडे में वांध कर जहां पानी के घडे धरे जाते हो नीचे गाड दो वह मर्द नामर्द हो जावेगा ।

विषय—आश्चर्य और कौतूहल पूर्ण खेलों का प्रदर्शन ।

संख्या २०६ बी. खेल वगाला, रचयिता—कुदरतुल्ला (फरूखावाद), पत्र—११, आकार—९ X ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५६, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०९ = १८५२ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० दालसिंह, मनौरा, डाकघर—पटियाली, जिला—एटा, उत्तरप्रदेश ।

आदि-अत—२०६ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है:—इति खेल बंगाला सपूर्ण लिखा विसुनलाल कायस्थ अलीगज का रहने वाला लिखा फाल्गुन मास शुक्ल पक्ष दिन एतवार संवत् १९०९ विक्रमा जी का

संख्या २०६ सी. रागमाला, रचयिता—कुदरतुल्ला (फरुखावाद), कागज—विदेशी, पत्र—१२०, आकार—१० X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३७ = १८८० ई०, प्राप्तिस्थान—लाला बालकराम, गोविन्दपुरे, डाकघर—माधौगंज, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ राग माला लिख्यते । ठुमरी राग काफी ॥ सुघर धनि पनियां भरन गई भूल ॥ अतरा ।। गगरि सगरि धर कुआं की जगत पर ठाढ़ रही उर पर दोऊ कर धर । मन अचेत कांपत तन थर थर मुक्त माल रही भूल ।। पनघट की सब सखियां सयानी सुनत तान तनमन अकुलानी । शकर श्याम बडे गुण ज्ञानी यह वंसिया मन्त्र है मूल ॥ सुघर धनि पनिया भरन गई भूल || १ ॥

अत—दादरा–सांवलिया जगाय लाऊ मोरा रे । मोरे पिछवारे मोर चुगुत है कोइ मत करियो शोरा रे ॥ उठो ननद नेक दिया वारो द्वारे ठाढ़ो चोरा रे ।। जो मैं जानती मोरे बालम हैं काहे को करती शोरा रे ॥ चुन चुन कलियां मै सेजा विछाई सोवै पिया तहां मोरा रे ॥ सांवलिया जगाय लाउ मोरा रे । इति श्री रागमाला ग्रन्थ संपूर्ण समाप्तः मिती पौष सुदी दुइज संवत् १९३६ वि०

विषय—अनेक कवियों के राग रागिनियों का संग्रह ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता का पता नहीं, परन्तु संग्रहकार कुदरत उल्ला फर्रुखाबाद के निवासी थे । लिपिकाल संवत् १९३६ वि० है ।

संख्या २०७ ए. उपदेशावली, रचयिता—कुन्दनदास, पत्र—२४, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९३ = १८३६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामनारायण, अमौली, डाकघर—बिजनौर, जिला—उन्नाऊ ।

आदि—श्री दुर्गे महरानी । मन मेरो प्रभु मल मीसत, तौ पद वारि समान । ता सो धोवै वचन मम । जेहि जावै अज्ञान ॥ २ ॥ राम चरित भाषा चहौं । कीन्ह सो कृपा निधान । ताते विनयै गुरु चरन । दीनबन्धु भगवान ॥ ३ ॥ गुरु विन या संसार में । को पावै भव पार । उतरो चाहै उदधि को । तौ करु हृदय विचार ॥ ४ जाके गुरु पद प्रेम नहिं । पुनि संतन के संग । ते जड़ पाँवर पसु सरिस । देह तासु की भंग ॥ ५ ॥ सोरठा—हरे राम अस नाम । मम गुरु दीन दयाल की । तिन दीन्हौं हरि नाम । जासे सब सुप मिलत है ॥ ६ ॥ राम नाम उपचार । प्रगट कियो कलजुग विषै । जीवन को उपकार । देह धरी यहि हेत जिन ॥ ७ ॥ ऐसे गुरु को पाय । कुंदन मन संका करी । प्रभु मोहि देहु बताय । राम चन्द्र को भजन दृढ़ ॥ ८ ॥

अंत—सोरठा मम मति है अति मंद । माया ममता में बसी । सदा अधम मति अंध । कविता कही केहि भांति ही ॥ ९९ ॥ सकल सभा के संग । तुमसों म विनती करौं । भाष्यौ मैं यह ग्रन्थ । अपनी मति अनुसार करि ॥ १०० इति श्री उपदेशावली कुंदनदास कृत समाप्त ॥ सुभ संवत् सर ॥ १८९३ ॥ शाके ॥ ५८ ॥ अषाढ़ मासे कृष्ण पक्षे तिथि त्रयो दस्य ॥ १३ ॥ शनि वासरे क समाप्त ॥ राम राम राम राम राम ॥

विषय—(१) पृ० १ लुप्त, पृ० २ से पृ० ७ तक—मंगला चरण । गुरु का महत्व एवम् राम भजन का प्रभाव । भवसागर की संक्षिप्त कथा । गर्भ में जीव की स्तुति ईश्वर वाक्य । (२) पृ० ८ से १७ तक—बाल, युवा और वृद्धावस्था संबंधी दुखों एवम् पापादि का वर्णन और उनके संबंध से भक्ति का उपदेश । (३) पृ० १८ से २४ तक—राम भजन का उपदेश । नरक की भयंकरता । चौरासी योनियों से छूटने का विधान । गुरु वन्दना । गुरु की मृत्यु का समय—संवत् अठारह सै को साल इक्यानवै तामें भोग भई है । अरु साके सत्रह सै छप्पन पुनि माग शुक्ल नौमी जो लई है । भूमि जो वार पुनीत महा नज्जम गढ़ गंगा निकट सही है ॥ देह तजी तेहि काल कृपाल कहै "कुंदन" भजुराम नहीं है ॥ कवि दैन्य वर्णन और ग्रन्थ समाप्ति ।

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रन्थ कुंदन दास जी ने विविध प्रकार के छन्दों में लिखा है । इनके गुरू का नाम हरेराम था जिन्होंने संवत् १८९१ में गंगा तटस्थ नज्जम गढ़ नामक स्थान में शरीर त्याग किया ।

संख्या २०७ बी. रामविलास, रचयिता—कुन्दन दास, पत्र—१२, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५, खंडित, रूप—

प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामनारायण, अमौली, डाकघर—बिजनौर, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कुंदनदास कृत रामविलास लिख्यते ॥ रागगौरी ॥ वन्दो गनपति चरन हरन दुष। शिव के पुत्र सिद्धि के दाता जेहि सुमरे तिहि होत परम सुष। कोसौ विघन होई जो के हुहि लेइ नाम तिहि काल। सिद्धि करौ पुनि विघन हरै सव शिव सुत दीन दयाल ॥ हरि की दई मुद्रिका सोभित करमें मानो भानु। विघन तिमिर हिमि नासत है जिमि पातक हरि को नाम ॥ सुमिरत संकर पुनि विधि जिनको सदाँ काम कल्यान। प्रथमै पूँजि गनेस गौरि पद पाछे करत विधान ॥ सो गन नायक है सिधि दायक ता पद माथ नवावै। कीजै दास दास कुंदन को राम चरित जिहि गावै ॥ १ ॥

अंत—॥ कुंडलिया ॥ द्विज वर सकल बुलाइकै। रघुवर दीन्हौं दान। वार वार अस्तुति करी। राजिव नैन सुजान ॥ राजिव नैन सुजान। राम सोभा सुखसागर। राज नीति पर वीन। ग्यान वैराग्य के आगर ॥ कहि कुंदन येहि विधि दान दै। गवन कीन्ह रघुवीर घर। आनंद सहित आसिप दियो। सरजू तट के द्विज वर ॥ १३ ॥ विश्वा मित्र प्रवीन मुनि। वसत जु उरास ठाम। अति गभीर पुनीत वन। तहाँ जपै हरि नाम। तहाँ जपै हरि नाम। कसै इन्द्री सव अपनी। जोग जग्य दृढ़ करै। हरै काया अघ अपनी ॥ जोग जग्य दृढ़ करै। आनि श्रुति स्यास जो अस्वा। जग्य होन नहिं पावै। चले तव अवधहिं विस्वा ॥ १४ ॥

विषय—(१) पृ० १ से १२ तक प्रार्थनाएँ एवम् राम चरित्र वर्णन (रामजन्म से विश्वामित्र आगमन के पूर्व तक) (२) पृ० १३ से...अन्त तक लुप्त।

संख्या २०८ ए. लघुतिब्ब निघंट, रचयिता—लाडिली प्रसाद, कागज—देशी, पत्र—४८, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर मानसिह, ग्राम—पाली, डाकघर—पाली, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गुणेशायनमः अथ लघुतिब्ब निघंट लाड़िली प्रसाद कृत लिख्यते ॥ अद्रक—गरम प्रकृत वाले को अवगुण निवारण वादाम का तेल। गरम खुश्क है भोजन को पचाता है। अकारे तथा वादी को और कफ को और उदर की तरी को दूर करता है। अखरोट—गरम खुश्क है वीर्य को उत्पन्न करता है मैथुन शक्ति को बल देता है प्रकृति को नरम करता है। मस्तक हृदय उदर गुर्दो और कलेजे को बल देता है। अफीम—बुद्धि को अवगुण निवारण केशर तथा दालचीनी सर्द खुश्क है नीद लाती है पीडा को शांत करती है। वायु को खोती है और अफारा लाती है। नजले को गुणदायक है।

अत—ससार मे मैने सव रोगो के नुसखे देखे परन्तु पाप रोग का नुसखा कही नही मिला अन्तमे ढूढते २ एक पुस्तक में मिला जो मीदहसन ने वायजीद की कथा में लिखा है। वर्णन है। कि एक दिन वायजीद्र घूमते २ एक स्थान पर जा निकले वहां देखते

हैं एक हकीम ने औषधियों की दूकान खोल रखी है और हजारों मनुष्य उसके आस पास इकट्ठे हो रहे हैं और वह अपनी वैद्यक के घमड से चिल्ला चिल्ला कर कहते हैं कि मैं प्रत्येक पीडा की औषधी करता हू और यह मेरी दूकान चिकित्सालय है यह सुनकर वायजीद ने उस हकीम के पास आकर पूछा कि अये छोटे बड़े मनुष्यों के पीडा के चिकित्सक तेरे पास कोई औषधी पाप रोग की भी है । यह सुनकर वह हकीम तो चुप रह गया परन्तु एक उन्मत्त पुरुष ने जो वहा बठा था कहा कि अय, वायजीद पाप रोग का एक नुसखा मेरे पास रखा है परन्तु उसमें सब वस्तु कडवी हैं । तू उसको न पी सकेगा । वायजीद ने कहा कडवी दवा ठीक होती है । तब उन्मत्त मनुष्य ने कहा कि तू पहिले फकीरी रूप बीज ऐ सतोष के पत्ते जमा कर विनय की हरड तैयार कर उसमें धम का बहेडा आदरभाव का जामला मिलाले फिर श्रद्धा के इमाम जस्ते में कूट विचार की हाडी में भर उसमें प्रेम का पानी डाल उत्सव की आच दे जब उफान आवे तब छान कर ईर्षा द्वेष काम क्रोध मोह लोभ का फोफ निकाल फेक और आशा के प्याले में भरकर परमात्मा के गुणानुवाद का शहत मिलाकर फिर पाप के कठ में डाल जिससे तू इस रोग से छुटकारा पावे ।

विषय—वस्तुओं के गुण अवगुण और अवगुणों के निवारण की वस्तुओं का वणन है ।

सख्या २०८ बी निघट, पत्र—४४, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—९८०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, ठाकुर हरदन सिह, ग्राम—कजापुर, डाकघर—पटियाली, जिला—एटा ।

आदि-अत—२०८ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है —

इति श्री लघुतिब्ब निघट लादिली प्रसाद कृत सपूण सवत् १९३२ वि० ।

सख्या २०९ रामगोल वैद्यक शास्त्र, रचयिता—रघुलाल, पत्र—२०३, आकार—१० × ६½ इच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०७५, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लाला प्रभूलाल वैद्य, स्थान—फिरोजाबाद, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नम । श्री मते रामानुजाय नम । अथ रामगोल वैद्यक सास्त्र लिप्यते । हिंदुवा वा फारसी किताब पोथान के मतोत्पत्ति दवाई ताप की । अथ वात ज्वर । पाइनु की अगुरी सीतल प्याइ होइ । मुप मीठो होइ । देही में तडकलु होइ । सिर पीरा होइ । ताको उपचार । सौंप मासे ४ ॥ मुनक्का दोने ९ अजीस बनफ्सा मासे ४॥ गाजमा मासे २॥ अनेसू मासा १॥ मिश्री तोला १॥ पानी चौदह टक भरि । चहारम रापि ल्यावे । दोहरी । सौंप मासा ४॥ गिलोइ मासा ४॥ बनफसा मासा ४ मुनका दाने ७ आलू बुखारे दाने २॥ गुलकद तोला १॥ तीसरी ॥ सौंफ मासे ४ गिलोइ मासे ४॥ मुनका दाने ७ अजीर दाना १॥ आलू बुखारा दाना १॥ पिस्ता दाने ७ पतमी मासे १॥ मिश्री तोला १ ॥

अत—पाप ग्रह के वेध असुभ । चक्र विधि ।

अ	कृ	रो	मृ	आ	प्र	प्र	श्ले	आ
भ	ड	अ	घ	क	ह	ढ	जु	म
अ	ल	ऌ	२	३	४	ॡ	म	पू
रे	च	१	ओ	१ सू ६ म	० औ	५	ट	ढ
उ	द	१२	४ ९ सु १४	४ १० प ११	२ ७ चं १२ बु	६	प	ह
पू	स	११	अः	३ १ बृ १३	अं	७	र	चि
स	ग	रौ	१०	९	८	ए	त	स्वा
ध	ॠ	पि	ज	भ	प	न	ऋ	वि
ई	पु	अभि	उ	पू	मू	ज्ये	ऽनु	द

संहार चक्र और हू है। परि जे सबही चक्र युद्धादि कों समर में बिसेप करिके हैं। औरु सयान के समैं अक्षे है। परंतु फलु रोगी और नरको करत है। इति श्री रामय गोले वैद्य सारोक्ति श्री राउचद्र हंस ज्वाज्ञा लघुलाल वचनि का काल ज्ञान चक्र निरुपनो नाम अष्टमोपदेसः। ८।

विषय—अनेक रोगो के लक्षण तथा उनका निदान।

संख्या २१०. भगवंत भूपण, रचयिता—ललित लाल, कागज—देशी, पत्र—१११, आकार—६½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचना-काल—सं० १९०१ = १८४४ ई०, प्राप्तिस्थान— बाबू हनुमान प्रसाद जी सब पोस्टमास्टर, स्थान—राया, डाकघर—राया, जिला—मथुरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः। अथ श्री भगवंत भूपन लिख्यते। प्रथम गनेस अस्तुति। छप्पै। एक रदन बुधि सदन भाल भ्राजत मयक वर। लंबोदर सुपपानि मोद आनद मगल कर॥ सुंडानन भुज चारि विवुध चितु चरननि ल्यावत पाइ मनीपा विमल सुजस नृपगन के गावत। जिहि वलक वित्त भगवत के करौ सरल मंजुल रवन॥ बरदान देहु जीन जानि कवि जय जय संकर सुबन।

अंत—कवित्त, जीरन जन्या व जाकौ जाजरीन जोरै जुरै जतन करि हारौ भूरि भार भरी छीनी है। वारिध मय दाई कैरौ ललिता को अपराध। ललित लाल इह ग्रंथ कौ जे

नर पढहि हमेस । तिनके सकल मनोरथ पूरन करें रमेस । इदु धनवि ससि सवत पूरन कीनौ ग्रथ । श्रावन शुक्ला पचमी रवि वासर कवि कथ । इति श्री मन्महाराजाधिराज भूपन भूपिता या मिश्र ललित लाल विरचतेते भगवंत भूपन नाम ग्रन्थ श्री राना जी भगवत स्वाथ वरनव सपूरन मस्तु । कल्यान रस्तु ।

विषय—गुरु, सारदा और कवि स्तुति । किताब, मुचकुद, सामान्य भूमि भूपन, देश, नग्र, दुर्ग, सरिता, वन, विविध वृक्ष, प्रथम दीघ वृक्ष, मध्यम वृक्ष, लघु वृक्ष, गिरि, आश्रम, बाग, सरोवर, बाजार, धाम, पताका, सभा सभा शोभा, सूर्योदय, चद्रोदय समुद्र, सामान्य षट् रितु, विशेप षट् रितु, पावस, सरद, विजय दशमी, शिशिर, बसत, ग्रीष्म, सामान्य राज्य श्री, भूप्पामर नव, विसेप राज्य श्री, महाराज कुमार, प्रोहित, दलपति, राजा मंत्री मेरु, प्रतिहार दूत, गजराज, सग्राम, आखेटक, जलकेलि, विरह, स्वयवर, राजा श्री भूपन, राज नीति, सत्रुनाश, विवेक और दान वर्णन ।

सख्या २११ उदाहरणमजरी, रचयिता—लल्लभाई (भडौंच), कागज—देशी, पत्र—१०८, आकार—१२ × ५ इच, पक्ति(प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७८, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३३ = १७७६ ई०, लिपिकाल—स० १८३६ = १७७९ इ०, प्राप्तिस्थान—श्री अद्वैतचरण जी गोस्वामी, स्थान—राधारमणघेरा, वृदावन, डाकघर—वृदावन, जिला—मथुरा ।

आदि—श्रीगणेशाय नम । अथपूर्णोपिमा । यह विधि सब समता मिले उपमा सोई जानि । ससि सो उज्जल तिय वदन परल्व से मृदु पानि ॥ कवित्त ॥ भूपन जरा इनके पाइन अनोट ओट कचन अनूप रूप साचे ही की ढारी सी । घु घरू पाइल पर जे हरी विराजे अरु वाजे छुद्र घटिका निहारे मति हारी सी । कठ २ माल भाल लाल २ की जिनतें दिन सदुति देखें लगे तारीरी । मनिमयधारी नख सिखलों उतारी निसकारी में निहारी जगमत दिवारी । अथ लुप्तोपमा—वाचक धम रु वरनी यह चोथो उपनाम इक विनहें बिनती न बिन लुप्तोपमा बपान । उदाहरन—बिज्जुरी सी पक मुखी कनक लता तिय ऐख । बनिता रस सिंगार की कारनमू परत पेप ।

अत—प्रगट भयो भृगुपुर विषे मजुमुके अधिकार । बनीक कुल भूषण भयो लल्लूभाई सिरदार भाषा भूपन ग्रथ को ताकों बढ अभ्यास । अलकार के असमें भयो बुद्धि परकास । वाने पडित सगतें ग्रथ २ के देखि । उदाहरन वाके लिखे इतनो कन्यो विसेख । अठरासह तेंतीस में उत्तम भादो मास । उदाहरन की मजरी पूरन भई विकास । इति श्री भट्ट बनीक कुलभूपण श्री लल्लूभाई विरिचिता उदाहरण मजरी सपूण । सवत् १८३६ प्रवर्तमान्ये चैत्र मासे शुक्ल पक्षे पचमी रवौ ॥ लखित नागर जातीय वडनग राजनिनाना गणेशजी श्री रस्त । शुभमस्त । कल्याणमस्त ।

विपय—भाषा भूपणमें वर्णित अलकारों के उदाहरण देकर अलकार वणन ।

सख्या २१२ ए प्रेमसागर, रचयिता—लल्लू जी लाल (आगरा), पत्र—३४०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७७३५, पद्य गद्य,

लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६०=१८०३ ई०, लिपिकाल—सं० १९१०=१८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला भोजराज, ग्राम—रुद्रपुर, डाकघर—बमनोई, जिला—अलीगढ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ प्रेमसागर लिख्यते। दोहा—विघन विदारन विरद वर वारन बदन विकास। वर देवहु बाढ़े विशद वानी वुद्धि विलास॥ जुगुल चरन जोवत जगत जपत रैन दिन तोहि। जग माता है सरसुती सुमिरि युक्ति दे मोहि॥ महाभारत के अन्त में जब श्री कृष्ण जी अंतर ध्यान हुए तो पांडव तो महा दुखी हो हस्तिनापुर का राज परीक्षित को दे हिमालय गलने गये और राजा परीक्षित सब देश जीत धर्म राज करने लगे। कितने एक दिन बाद राजा परीक्षित आखेट को गये तो वहां देखा कि एक गाय और बैल दौंडे चले आते है तिनके पीछे मूसल हाथ में लिये एक शूद्र मारता आता है।

अंत—श्री कृष्णचन्द्र के जितने बेटे पोते नाती भये रूप लावण्य 'कर्म धर्म में कोई कम न था एक एक सें बढ़के थे। उनका वर्णन में कहां तक करूं इतना कह वोले महाराज मैंने ब्रज की द्वारिका की लीला गाई यह है सबकी सुखदाई। जो जन इसे प्रेम सहित गावेगा सो निस्सन्देह भक्ति मुक्ति पावेगा। पदार्थ जो फल होता है तप यज्ञ दान ब्रत तीर्थ स्नान करने में सो फल मिलता है हरि कथा सुनने और सुनाने में॥ इति श्री लल्लू जी लाल कृते'प्रेम सागरे द्वार का विहार वर्णनो नाम नवति तमोऽध्याय संपूर्ण समाप्तः संवत १९१० वि० लिखा नन्हे मल वैश्य॥

विषय—श्री कृष्ण की लीलाओ का वर्णन।

संख्या २१२ बी. प्रेमसागर, रचयिता—लल्लूलाल (आगरा), पत्र—४०२, आकार—३½ × ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० लक्ष्मीनारायन जी आयुर्वेदाचार्य, ग्राम—सैगई, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि—इतना कह लोमष ऋषि ने एक चेले को वुलाके कहा तुम राजा परीक्षित को जाके चेता दो कि तुम्हें। श्रृंगी ऋषि ने शाप दिया है भला लोग तो दोष देंगे ही पर वह सुन सावधान तो हो जाय॥ इतना वचन गुरू का मान चेला चला चला वहां आया जहां राजा बैठा सोच करता था आते ही कहा महाराज तुमे श्रृंगी रिषि ने यह साप दिया है कि सातवे दिन तक्षक डसेगा। अब तुम अपना कार्य्य करो जिससे कर्म की फांसी से छूटो॥ सुनते ही राजा प्रसन्नता से खडा हो हाथ जोड कहने लगा कि मुझपर ऋषि ने वडी कृपा की जो शाप दिया क्योंकि मैं माया मोह के अपार सोच सागर में पडा था सो निकाल वाहर किया॥

अत—इतनी कथा सुनाय श्री शुकदेव जी बोले कि महाराज जिस समय बलराम जी सब यदुवंशियों को साथ लेकर अर्जुन के पीछे चलने को उपस्थित हुए उस काल श्री कृष्णचन्द्र जी ने आय वलराम जी को सुभद्रा हरण का सब भेद समझाया और अति विनती करि कहा कि भाई अर्जुन एक तो हमारी फूफी का बेटा और दूसरे परम मित्र उसने

जाने विन जाने समझे विन समझे यह कम किया पर हमे उससे लगना किसी भाति उचित नहीं ॥

विषय—श्री कृष्ण चरित्र वणन ।

सख्या २१२ सी राजनीति भाषा, रचयिता—लल्लूजी लाल (आगरा), कागज—विदेशी, पत्र—१६०, आकार—१० × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५९ = १८०२ ई , लिपिकाल—स० १८६७ = १८१० ई०, प्राप्तिस्थान—प० राममनोहर ग्राम—आरे, डाकघर—माधोगज, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशायनम अथ राज नीति भाषा लल्लूजी लाल कवि कृत लिख्यते ॥ दोहा—गज मुख सुख दाता जगत दुख दाहक गुण ईश । पूरण अभिलाषा करौ शभू सुत जगदीश ॥ कवि वासी गृह कूप को कथा अपार समद । तैसी ये कछु कहत हौं मति हे जेसी मद ॥ श्री गगा जू के तीर पटना नाम नगर तहा सब गुण निधान महाजान पुन्य मान सुदशन नाम राजा था । याने एक दिन काहू पडित ते द्वे श्लोक सुने तिनको अथ यह है कि अनेक अनेक प्रकार के सदेहनि को दूरि करे अर गूढ अथनि को प्रकाशे ताते सबकी आदि शास्त्र है ।

अत—अर अवस्था प्रमाण कार्य कीजे तो दोष नाहीं वानर ते यह उपदेश सुनि मगर निज घर गयो औ उन नया वियाह कियो घर माडयो सब दुख छाडजो आनन्द सौं रहनि लागो इतनी कथा सपूण करि विष्णु शर्मा ने राज पुत्रन को आशीश दई कि तिहारी जय होय और शत्रु की हार । यह सुनि राज पुत्रन हू वस्त्र आभूषन द्रव्य मगाय भेंटे धरि पाय लाग गुरु को विदा कियो अरु आप नीति माग सों निज राज काज करन लागे इति लल्लूजी लाल कवि कृत राजनीति भाषा सपूण समाप्त लिखा किशोरी लाल गुजराती सवत् १९६७ वि०

विषय—इसमें पाच प्रकार की कथा है । (१) मित्र लाभ (२) सुहृदभेद (३) युद्ध कराने की युक्ति (४) मेल कराने की युक्ति (५) प्राप्त धन आदि का खो देना आदि वणन ।

सख्या २१२ डी सभाविलास, रचयिता—लल्लूजी लाल (आगरा , कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—१० × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४८, लिपि – नागरी, रचनाकाल—स० १८७० = १८१३ ई०, लिपिकाल—स० १८८४ = १८२७ ई०, प्राप्तिस्थान—हरिहरसिंह ठाकुर, स्थान—छावनी, एटा, डाकघर—एटा, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ सभा विलास लिख्यते ॥ सोरठा—विघन हरन गन राय मूषक वाहन गज बदन । गनपति चरन मनाय तबै काज कछु कीजिये ॥ १ ॥ दोहा—आनन भावत स्वाद इमि पर्यो गह्यो सु मलिंद । कृष्ण चरन अरविंद को पियत सदा मकरद २ ॥ ममता अमता के मिटे उपजे समता ज्ञान । रमे जु रमता राम सो जमता गहे

न मान ॥ ३ ॥ साध सक्यो न तू साध संग लाय न सक्यो समाध । विषै विषाद उपाधि तजि हरियल आध अराध ॥ ४ ॥

अंत—संग्रह करि कवि लाल ने रच्यो काव्य रस रास । धन्यो नाम या ग्रन्थ को याते सभा विलास ॥ यद्पि काव्य भूषन सहित दुर्जन दोषत ताहि । विगरे देत वनाय हैं सज्जन साध सराहिं ॥ ख रिपि वसु चन्द्रहि गनी संवत को परमान । माघ शुक्ल नौमी रवौ कियो ग्रन्थ निर्मान ॥ इति श्री लल्लू जी लाल कवि ब्राह्मन गुजराती सहस्त्र अवदीच आगरे वासी कृत सभा विलास संपूर्ण समाप्तः लिखतं जग्गामल वैश्य आगरा निवासी स्व पठनार्थ भादौ वदी पचमी संवत् १८५४ वि० जै कृष्ण भगवान की जै जै जै ।

विषय—सभा योग्य शिक्षा और राग, रागिनी, पहेली आदि समय समय की बातें वर्णन की गई है ॥

संख्या २१२ ई. सभा विलास, रचयिता—लल्लूजी लाल (आगरा), कागज—देशी, पत्र—१६०, आकार ६ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७० = १८१३ ई०, लिपिकाल—स० १८७३ = १८१६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवकंठ दुवे, ग्राम—विगहापुर, डाकघर—विगहापुर, जिला—उन्नाव ।

आदि-अंत—२१२ डी के समान । पुष्पिका इस प्रकार है:—इति श्री लल्लू जी लाल ब्राह्मण गुजराती सहस्त्र अवदीच आगरे वासी कृत सभा विलास संपूर्ण समाप्तः लिखतं शिव गनेश सवत् १८७६ वि०

संख्या २१२ एफ. सभाविलास, रचयिता—लल्लू जी लाल (आगरा), कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७० = १८१३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर देवसिंह सेंगर, ग्राम—गजमऊ, डाकघर—दरियावगज, जिला—एटा ।

आदि-अंत—२१२ डी के समान । पुष्पिका इस प्रकार है:—इति श्री लल्लू जी लाल ब्राह्मण गुजराती सहस्रा अवदीच आगरे वासी कृत सभा विलास संपूर्ण समाप्तः लिखतं गोरे लाल ब्राह्मण आगरा निवासी गोकुल पुरा ।

संख्या २१३. कंदुक क्रीड़ा, रचयिता—कविलोक, पत्र—१२, आकार—७ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८०५ = १७४८ ई०, लिपिकाल—सं० १८०५ = १८४८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कन्हैयालाल शर्मा, स्थान—फतेहाबाद, डाकघर—फतेहाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्रीराम जी । मन मोहन अंत कहूँ मत जाउ गटेक करा तरवा छनिया । नहि अंगन दान दिवाल रहौ फिर भयौ हौचत अचयी औ पनिया । हिगुठान सो गेंद कहा करि है तीनो लोक सुमित्र रही माया सोम चले व्रज जीवन ताय उठाय लये करसो कनीया । १ । माता एक हारी पलदे समताऊं जहा जमुना ठडि है । वगुरि वह भीर सखा

सिवसे दल सो उठि दौरे से चौक धरे मनु ही ऐसो कहि कान कहा जा दुरो तीनों लोक सुमित्र व्रजमें दीजिये गेंद घुतान जसोमति जोहत गुआल सबे भगुरि । २ । गेंद के खेल में खेल बढ़े जहा राग सखा सबही जुर सोहैं वालकदास गुपाल कुमार के लोचन लाल भये भर मोहें मीचि वही टग्फूल मिके कविलोक सलौने कहा करि हौ तू दुचति मति होइ जसोमति मोहि तो काज्ञु जहकर नाह ।

अत—धजत नाद गमर मपन सेसजी छाह करें जो सही है । जाय कहा करिहौ निज धाम सों धाम मिली । सुख दुख मारो वेद विलास गिरा कहे अधतारन नाम तुमारो पीर हरे । फिर मय नम कीत वार तुम क्या मानि गाड धारौ सेसके सीस पै छाप करी तय से सजनि वैकुण्ठ सिधारो । ३६ । नाम धवा नही कस कलेस नहीं व्रजमें वप रीत भइ । कालीया कूलते नाथ लीयो तब श्री जमुना निरदोप करी है । कविलोक पचीसन ते अधिकें हरिवसभले लघु बुधि कही हे । इति श्री कन्दुक क्रीडा समाप्तम् लिखी गगा प्रशाद कौम काइथ मौ जगराजपुर परगने फतिहाबाद जिले आगरा सम्वत् १८०५ फागुन सुदी ३ ।

विपय—श्रीकृष्ण लीला और कस वध ।

सख्या २१४ गीता सुबोधिनी टीका, रचयिता—माधव, पत्र—२७६, आकार—८ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३८०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—मिहीलाल जी शर्मा, ग्राम—बेगनपुर, डाकघर—फतेहाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नम । श्री राधा कृष्णाय नम । श्री मद्भगवद्गीता भाषा टीका लिख्यते । दोहा । हाथ बेंत रथ सारथी सोहत पारथ साथ । छेम सहित नित विजय चित बसत लसत जदुनाथ । स्तुति पद्धरि छद । तुम आदि अनादि अनत देव तुम अगम अगाध अभे अभेव । तुम एक अनेक अरूप रूप । तुम करन हरन भय भरन भूप तुम साधन साधक सिद्ध सुद्ध । तुम कारज कारन बुद्धि वुद्ध । तुम सकल भुवन सब में समान । तुम सबहि ते न्यारे निदान । तुम निर्विकल्प निगुण निरीह निर्द्वन्द्व छन्द जानत । निर्भेद निरय निर्वेद वैप । तुम अलख अमूरति अज अलेप ।

अत—इति भाति श्रुति स्मृति पुराणनि के वचन करिके भगवद्गीता मोक्ष को हेतु है यह निरधार भयो । श्रीधर के श्लोक को जिनकी दीनी सुमति करि कह्यो अरथ सुखकद । ते यासे सुख पाइवो माधव परमानन्द । दो पद रज परमानन्द की श्री धर सिर पर धारि । टीका करी सुबोधिनी अरथ उधारि । जो चाहे निजु बुद्धि बल भगवद्गीता सार । अमृत वृष्टि गुरु दृष्टि विनु नहीं लहे निरधार । कानौ चाहे जोर तन अजुहित उचि समुद्र करनधार विनु अमर भूमि बूड़गो छद । इति भगवद्गीता सूपन परसु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्ण जुन सवादे मोक्ष्य सन्यास योग नाम अष्टादशोऽध्याय । मिती श्रावण कृष्ण अष्टमी बुधवार सम्वत् १९१८ द० मगल सैन ।

विपय—गीता का अनुवाद ।

संख्या २१५ ए. जनम करमलीला, रचयिता--माधोदास, पत्र—१६, आकार--६ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--७, परिमाण (अनुष्टुप्)--१२०, खंडित, रूप--प्राचीन, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान—प० चन्द्रशेखर त्रिपाठी, स्थान--वाह, डाकघर--वाह, जिला--आगरा।

आदि--॥ रत हरी सब कौं सुख दीना ॥ ११ ॥ प्रथम पूतना प्रान सोपि प्राना हत कीनी। सविप पयोधरा अधरा लाई जननी गति दीनी ॥१२॥ माम्र घौंग्र के सिसुउ तान सोवत पग पट कारा ॥ कपट विकट सकटा सुरा सत खडि करि डारा ॥ १३ ॥ वरग्र घौंग्र के जब भये तरुणा वृत आयो ॥ लैगयो गगन उठाय कंठ गह मारिपिमावा।' १४ ॥ ये कह्यौ सस्तन पान करत आई जुज भाई। मुख मह जगत निरखि सबं जसु विस मैह पाई ॥ १५ ॥ वाल चरित्र कीये जिते तिते कहन न जाई ॥ निज जन व्रज आनद देह सी सुमंग लगाई ॥ १६ ॥

अंत--जिहि वा पाइ नर सरीर जे हरि कीरति नुन करहीं ॥ श्री वैकुठ निवास पाइ सुरिप पिसि परही ॥ ९५ ॥ हरि लीला हरि जनम करम सुज सुजे गावहि। ग्यान भक्त वैराग जागे वंछित फल पाव ही ॥ ९६ ॥ सत जुग ध्यान तेर तामय द्वापर हरि पुजा कलिकी–रतन समान और नहीं कछु पूजा ॥ ९७ ॥ कीरतन प्रिये प्रान प्रभु लीला चल देसा–श्री जगन्नाथ जगत्त गुरु कृष्ण कौं वहे उपदेसा ॥ ९८ ॥ यथा कथा परि हरि करि कीरतन अभ्यासा ॥ हरि लीला हरी जनम करम कहि माधो दासा ॥ ९९ ॥ इति श्री जनम--करम लीला संपूर्ण समास ॥

विपय--कर्म की प्रधानता का वर्णन।

संख्या २१५ वी. करुणा वत्तीसी, रचयिता--माधोदास, पत्र--२४, आकार--८½ × ६½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--८, परिमाण (अनुष्टुप्)--२८८, रूप--प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० अनदीलाल दुवे, ग्राम—वमरौली कटारा, डाकघर—ताजगंज, जिला—आगरा।

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ लिष्यते श्री करुणा वत्तीसी माधो दास कृत ॥ कवित्त ॥ गिरि को उठाय वृज गोप को उठाय लियो, अनलते उवारयो पुनि बालक मजारी को ॥ गज की अरज सुनु ग्राहते छुटाय लीनो। राख्यो वृत नेम धर्म पांडव की नारी को ॥ राख्यो गज घटा तल वालक विहंगम को। राख्यो पन भारत में भीष्म ब्रह्मचारी को ॥ त्रिविध ताप हाथी निज संतन सुख कारी। मोहि तो भरोसो भारी ऐसे गिरिधारी को ॥ १ ॥

अत—करत अपराध भोर सांझतर कौर नित, अति ही कठोर मति वौर को न काम हौ ॥ आतुर अधीर ताते धीरज धरत नाहि। ऊच नीच वाले गति वकूं आठौ याम हौ ॥ अरचा न जानूं कछू चरचा न वूझत हौ कछु। हेत प्रात सेन लेत हरिनाम हौ ॥ सब तकसीर बलवीर मेरी माफ करो। कहै माधो दास प्रभु तेरो ही गुलाम हौ ॥ ३२ ॥ दोहा या करुणा वत्तीसि को, पढ़ै गुणों नर नारि। ताके सब दुःख द्वन्द को। काटै कृष्ण मुरारि ॥ १ ॥ इति श्री माधव दासेन विर चितायांम करुणा वत्तीसी संपूर्ण ॥ शुभम भूयात् ॥

विषय—करुणा तथा विनय के छन्द ॥

सख्या २१५ सी, करुणाबत्तीसी, रचयिता—माधोदास, पत्र—१२, आकार—६¾ × ४¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—११६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० लक्ष्मीनारायण जी आयुर्वेदाचार्य, ग्राम—सेगइ, डाकघर—फिरोजाबाद जिला—आगरा ।

आदि-अत—२१५ बी के समान ।

सख्या २१५ डी करुणाबत्तीसी, रचयिता—माधवदास कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२७, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७५ = १८१८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० जैगोपाल शर्मा, ग्राम—सराय हरदेवा, डाकघर—जलेसर, जिला—एटा ।

आदि-अत—२१५ बी० के समान । पुष्पिका इस प्रकार है —

इति माधवदास कृत करुणा बत्तीसी सपूर्ण ॥ लिपा महेशराम सवत् १८७५ वि० मिती फागुन सुदि प्रतिपदाया ।

सख्या २१५ ई० करुणाबत्तीसी, रचयिता—माधवदास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७६ = १८१९ ई०, प्राप्तिस्थान—राय परमानद जी, ग्राम—सीमरी, डाकघर—पतियाह, जिला—एटा ।

आदि-अत—२१५ बी के समान । पुष्पिका इस प्रकार है —

इति मु श्री माधौदास कृत करुणा बत्तीसी सपूर्ण चैत सवत १८७६ वि० ॥ बल्दाऊ के भयाजी जय होय ॥ श्री कृष्ण ॥

सख्या २१६ ए नासकेतु पुराण, रचयिता—माधवदास, कागज—देशी, पत्र—११६, आकार—१० × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०८ = १८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० भागवत प्रसाद, ग्राम—कन्रामऊ, डाकघर—बिलग्राम, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशायनम श्री सरस्वत्यै नम श्री गुरुचरणकमलेभ्यो नम । अथ नासकेतु पुराण भाषा लिख्यते ॥ दो०—राम नाम से मत्र नहिं दाया सो नहिं ज्ञान । गगा सो सलिता नहि व्रत एकादशी समान ॥ चौ० ॥—आद गुरू प्रथम चरन मनाऊ, जेहि सुमिरत अक्षर सुदि पाऊ ॥ मातु सारदा विनवौं तोही । निमल ज्ञान ट्द दे मोहि ॥ सकल रिपिन को मे सिर नाऊ । जेहि ते हृदय भक्ति वर पाऊ ॥ सत्र सतन के चरन प्रनामा । पाऊ सतन सग विश्रामा ॥ गुरू विप्रन का करौं प्रनामा । सकल मनोरथ पुद बहु नामा ॥ यहि तर सबके चरन मनाऊ । नासकेत कथा सुभ गाऊ ॥ जमके सकल कथा विस्तारा । नासकेत प्रगटे तहि बारा ॥ वेसपायन रिपि कह बपानी । जन्मेजय के जग्य में आनी ॥ दो०—नासकेत जेहि विधि कहा जम के सकल पसार । वेसपायन रिपि के वचन कहैं सकल विस्तार ॥ चौ०—माधौदास कृपा हरि पाइ । गुरू प्रसाद कछु अनभव आई ॥ मोरे हृदय परम अभिलाषा । देपि सस्कृत करि हो भाषा ॥

अंत—माधौ दास कथा यह गाहिं। मथि पुरान कीन्हे चौपाई ॥ निर्गुन ते सगुन सग भीना। भाग्य होय चित धरे प्रवीना ॥ राजा रघु हरष मन भयऊ। धन्य धन्य पुत्री मम भयऊ ॥ कुल उजागर कीन्ह हमारा नासकेतु तुम धनि अवतारा ॥ उद्यालक मुनि मगन तव होई। राजा रघु से विदा कराई ॥ नासकेत जो सुनै पुराना तिनके सदा होय कल्याना॥ दो०—सकल कामना हीन जो भक्ति करै मन जानि। माधौ दास प्रयाग विनु कल्प वृक्ष के छाह ॥ दान धर्म सनमान जस नर तन के फल होय। काल के मुख सब जात हैं कारन जगत वियोग ॥ कथा रसाल बषानि येह नासकेत मति धीर। प्रेम प्रीति मन लाय नर सुमिरो श्री रघुवीर ॥ सो०—अरे मूढ़ अज्ञान भौसागर बूड़त कहा राम नाम जल जानि नर चढ़ि पार विहाय दुप ॥ इति श्री नासकेतु पुरान वेद शास्त्र मत सकल लोक ज्ञान संवोधन ज्ञान प्रसर्ग वारनो नाम अष्ट दशमोध्याय ॥ १८ ॥ सवत १९०८ शाके १७७३ मिती आश्विन शुक्ल पंचम्यां ५ सोमवासरे प्रति लिपतं मिश्र ठाकुर दास इदं पुस्तिकं गगादीन तिवारी जी की ॥

विषय—नासकेतु पुराण का अनुवाद।

संख्या २१६ बी. नासकेत पुराण भाषा, रचयिता माधवदास, कागज—देशी, पत्र—११२, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण अनुष्टुप्—२०७६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८७ = १८३० ई०, प्राप्ति-स्थान—पं० विष्णुभरोसे दूबे, ग्राम—खजुहना, डाकघर—धालामऊ, जिला—हरदोई।

आदि-अंत—२१६ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्रीनासकेत पुरान वेद शास्त्र मत सकल लोक ज्ञान सवोधन ज्ञान प्रसग धरननो नाम अष्टदसमोध्याय संवत १८८७ वि० पौष मासे कृष्णपक्षे त्रयोदस्याम ॥ श्री रामायणे नमः ॥

संख्या २१७, आदिरामायण (माधव मधुर रामायण), रचयिता—माधवदास कत्थक (रीवां), पत्र—२४४, आकार—१३½ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५४०, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०४ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—प० छोटेलाल जी शर्मा, स्थान—कचोराघाट, डाकघर—कचोराघाट, जिला—आगरा।

आदि—श्री मते रामानुजाय नमः ॥ ॐ आदि रामायणं नाम श्री राम चरितं शुभम् ॥ किन्चित्स माधवा लोच्य प्रनय नभि प्रयत्नतः ॥ १ ॥ × × दोहा—एक समै सब मुनिन सो, हस वोले......। मन हरषित अति। पुलकित वारहिंवार ॥१॥ × × विधि कह सुनि इतिहास विष्याता, जासै ससय सकल निपाता ॥ १ ॥ एक समैं आवत हनुमंता, वडे वेग सो अति वलवंता ॥ २ ॥ तहां सुपर्न मिले मग जाता, पूछेउ पवन तनय सो वाता ॥ ३ ॥ वडे वेग सो तुम कहँजै हौ, हमहुं चलव जो भेद वतैहौ ॥ ४ ॥ हनुमत कह रघुवर पर जैहौ, दुप हर दरस सभा कर पैहौं ॥ ५ ॥ नीरा जन कौ समय विचारी, ताते चटकि जाउँ उरगारी ॥ ६ ॥ वेन तेय वोले हरषाई, वे को है मोहि देहु वताई ॥ ७ ॥ हनुमत कह अवतारन कारन, पालन पोषन अरु संहारन ॥ ८ ॥

अंत—जे करिहैं मन न विरति, ग्यान भक्ति पर पाय। पाँच मुक्तिने लहहिंगे। सब संदेह विहाय। कहि सुनि यह रामायने, करि हैं रीति विचार। ते प्रमोद वन बसहिंगे, परम प्रेम उर धार ॥ कवित्त—गंगा परसाद जू को नाती कासी राम पुत्र माधै मेरो नाम रीवा नगर निवास है। महाराज वि वनाथ सिंह को सिपायों पाल्यों मधुर रामायन रच्यो सहुलास है। आदि रामायन को अर्थ चारों खंडन में पंच रात्रि पदम पुराणमतापाम है। मानौ के विस्वास अत नासें भव त्रास भयो राम को विलास सीताराम जू को वास है ॥ इति लिखि श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा बहादुर सीता रामचंद्र कृपा पात्राधिकारी विश्वनाथ सिंह देवा जया माधव विरचित माधव मधुर रामायण संपूर्ण ॥ संवत् १६०४ ॥ फाल्गुण शुक्ल प्रतिपदायां सोमवासरे।

विषय—(१) पूरब खंड	पृ०	१	—	७८
(२) दक्षिण खंड	पृ०	१	—	७०
(३) पश्चिम खंड	पृ०	१	—	३१
(४) उत्तर खंड	पृ०	१	—	६०

टिप्पणी—प्रस्तुत रचना आदि रामायण का पद्यानुवाद है। रचयिता माधवदास बरथक रीवा नरेश राजा विश्वनाथ के आश्रित था। वह लिखता है 'मैं उन्हीं का सिखाया पढ़ाया हूँ और उन्हीं ने मुझे पाला है।" यह अपने पिता का नाम काशीराम और पिता मह का नाम गंगा परसाद लिखता है। उसने ग्रंथ के अंत में ग्रंथ का नाम 'माधव मधुर रामायण' लिखा है और यह भी प्रकट किया है कि इसमें मुख्यतया पद्म पुराण के मत को प्रधानता दी गई है।

संख्या २१८ द्वैत प्रकाश, रचयिता—मधुसूदन दास, पत्र—५, आकार—१३ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७४९ = १६९२ ई०, लिपिकाल – सं० १८७२ = १८१५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० लक्ष्मीनारायण वैद्य ग्राम और डाकघर—बाह, जिला—आगरा।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नम ॥ दोहा ॥ श्री गुरपद निज जोरिकर। रामानुज सिर नाइ। द्वैत ज्ञान मोहि दीजिये। ज्यों संसार नसाइ ॥ १ ॥ दोहा ॥ रामानुज पद जोरि कर, अरु संत संग सहाइ, जह प्रसाद मोहि दीजिये, जन्म मरण मिट जाय ॥२॥ कवि कोकिल कवि राज जू, वरन दीजिये सोइ। पद लालित्यऽनुप्रास युत, छंद भंग नहिं होई ॥ ३ ॥ शिव शुक ने प दिनेश जू, विनती तुम सुन लेहु। असत पदारथ ध्वंस करि, सत्य ज्ञान मोहि देहु ॥ ४ ॥ सत्य कहां सो आतमा, असत देह को जानु। सत् असत् दुहुको लखे, सोई ज्ञान प्रमानु ॥ ५ ॥ षट विकार जे देह के, तिनको करे जु नास। सत्य ज्ञान तब जानिये, आत्मा होइ प्रकास ॥ ६ ॥ महत् ब्रह्म की राशि जो, सो सब जड़ करि जानि। सत् चित् पूरन आत्मा, मधु सूदन पहिचानि ॥ ७ ॥

अंत—दोहा ।। कृष्णदास गुरु यों कह्यो, सो मै कह्यों प्रकाश । श्री रामानुज कृपातें, जान्यो गीता भाश ॥ ९० ॥ सत्रह से उनचास जू, संवत् कह्यो विचारु। मारग सुदि तिथि पूर्ण अरु जानो शशि वारू ॥ ९१ ॥ कृष्ण दस गुरु यह कही, तजि अद्वैत कुवास। सदा अविद्या रहत है, मधु सूदन के दास ॥ ९२ ॥ इति श्री द्वैत परकास आत्मा, परमात्मा सच्चिदानन्द वैकुण्ट्या मुसव्य सक मेवक हेत वाद सिद्धांत श्री मधुसूदन दास कृतेन पंचमो विरचनम् ॥ संवत् १८७२ ज्येष्ठ शुक्ला ५ चन्द्रे शुभम् ॥

विषय—प्रथम विरचन—मंगलाचरण, आत्मा, देह तथा तत्वों का वर्णन [सांख्य मतानुसार पृ० १ तक] द्वितीय—आत्म-परमात्म द्वैत सिद्धि [१ से २ तक] तृतीय—वैकुंठ धाम वर्णन [२ से ३ तक] चतुर्थ—अद्वैत सिद्धि उपदेश [३ से ४ तक] पचम—अद्वैत वाद के अधिकारी तथा अनधिकारी वर्णन, कवि परिचय एवम् ग्रन्थ निर्माण काल वर्णन [४ से ५ तक]

संख्या २१९ ए. ध्रुवलीला, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—४ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७०, रूप—नवीन, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामदीन, ग्राम—अतरौली, डाकघर—अतरौली, जिला—हरदोई।

आदि—श्री ऊंकार नमः श्री गणेशाय नमः। श्री गुरुभ्यो नम· अथ ध्रुव लीला लिख्यते ॥ दो० ॥ श्री गनपति को सुमिरि के सुमिरौ पवन कुमार। वल वुधि विद्या देहु मोहि हरौ कलेश विकार ॥ ध्रुव लीला वरनन करौ भक्तन को सुख सार। लज्जा मेरी राखियो हे प्रभु कृष्ण मुरार ॥ वुद्धि हीन मति मंद मैं तुम करता संसार। सेवक पर किरपा करौ सतन के रखवार ॥ तुम प्रभु दीन दयाल मेरी ओर निहार। महादेव पावे दरस दीना नाथ तुम्हार ॥ सरस्वती जी का नगर में आकर वचन सुनाना ॥

अंत—जव ही फेट वांध लीन्हीं ध्रुव प्रगट्यो आप अगारा। महादेव फिर दरशन दीन्हो कुटुम सहित परिवारा ॥ ध्रुव है मोहि भक्तो में अति प्यारा ॥ वार्ता। विष्णु भगवान का ध्रुव को आशीर्वाद देकर अंतर ध्यान होना देवताओ का फूल वरसाना ॥ दोहा ॥ पुष्पन की वर्षा करी देवन वैठि विमान। जै जै शब्द उचारि कै करै अप्सरा गान ॥ इस पुस्तक के पढ़त ही उपजै हृदै ज्ञान। लीला ललित विनोदनी भक्तन की सुख खान ॥ महादेव परसाद ने बहुत कियो परिश्रम। ध्रुव लीला के कहत ही छूट जात सव भ्रम ॥ इति श्री माधव लीला सपूर्ण समाप्तः मिती श्रावन शुदी शनिवार संवत् १९४० वि०।

विषय—ध्रुव चरित्र वर्णन।

टिप्पणी—रचयिता महादेव, जाति के अयोध्यावासी वैश्य मैनपुरी निवासी थे। इसको इस भांति वर्णन किया है:—महादेव प्रसाद करी हरसाइ हमन पर दाया। मैनपुरी में गंज कष्ठ करै भेज शहर सरसाया ॥ छिपही मुहल्ला मे मकां रहे हर जकां सभी फरमाया। रहू मै शहर के दरम्यां सभी जाने है नर नारी ॥ नाम है महादेव प्रसाद कलम हरदम रहै जारी। कौम वनिया अजोध्या का वहे सरजू लगे प्यारी। लगी है आशा हृदय में दरश हमको दे गिरधारी ॥ लिपिकाल संवत् १९४० है।

सख्या २१९ बी बारहमासा, रचयिता—महादेव (मैनपुरी), कागज—विदेशी, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९५० = १८९३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामदीन, ग्राम—अतरोली, डाकघर—अतरोली, जिला—हरदोइ ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ वारह मासा लिख्यते ॥ गया कथ परदेश सखीरी उमर तो मेरी ह वारी । हुइ वेकली उसी दिना से तबियत को हुई बीमारी ॥ फागुन ॥ आया महीना फागुन का चहु ओर तो प्यारी रग बरसे । पिया मिलन को हमारा घड़ी घड़ी जियरा तरसे ॥ रग कसर से गलिया वह रही चले पिचिकारी कर कर से । चली होलिका पूजन को हैं सखिया अपने घर घर से ॥ नाच रग हरजा होते हैं गोरी लिपट जातीं घरसे । अपने पिया को कहा में पाऊँ जिसके जाय लगू गर से ॥ मन को मार रही विरहावै उड़ा न जावे विना परसे । सूनी सेज पिया विन तड़पू लगी आश मेरी हरि से ॥ शर ॥ लगी है आग मिलने की समन को ढूढ़ कर लाऊं । न जानू किस जगह प्यारा कहो केसे किधर जाऊ ॥ मगर लागे पता उसका तो जाकर के पकड़ लाऊ । मेरे दिल में यही आता कि जोगिन हो निकर जाऊ ॥ जल्दी घर को आवो प्यारे विरह दुखी तेरी प्यारी । हुई वेकली उसी दिन से तबियत को हुई बीमारी ॥

अत—माघ ॥ आ गया माघ में कथ हमारा अब हमने सुख को पाया । जाय विछाया पलग अटा पे दोउ मिल प्रेम बढ़ाया ॥ फुलवन सेज विछाय रागनी गाय इतर छिड़काया । वरौं पिया सग गेंद खोल कर केश सुरत अधिकाया ॥ मिटी विरह की आग खुला है भाग प्यारी ने पति को पाया । महादेव प्रसाद करी इरशाद हमन पर दाया ॥ मनपुरी में गज कष्ट करे भज शहर सरसाया । छिपट्टी मुहल्ला में मका रहै हर जका सभी फरमाया ॥ शैर ॥ रहूं मे शहर के दरम्या सभी जाने है नर नारी । नाम हे महादेव परशाद कलम हरदम रहे जारी ॥ कौम वनिया अजोध्या का वहे सरजू लगे प्यारी । लगी है आस हृदय में दरश हमको दे गिरधारी ॥ दरश दिया है मेरे पिया ने खुद आके हमको प्यारी । हुई वेकली उसी दिना से तबीयत को हुई बीमारी ॥ इति श्री बारहमासा महादेव कृत सपूर्ण समाप्त लिपत जै जै राम मैनपुरी वासी ॥ सवत १९५० वि० राम जे जै सीताराम

विषय—बारहमासा ।

सख्या ११९ सी बारहमासा विरहनी, रचयिता—महादेव (मैनपुरी), कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३९ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला जैनारायण, ग्राम—नगला राजा, डाकघर—नौरंगा, जिला—एटा ।

आदि-अत—२१९ बी के समान । पुष्पिका इस प्रकार है—इति महादेव कृत बारहमासा विरहनी सम्पूर्ण समाप्त लिखा श्रीराम पडित स्वपठनाथ कातिक मासे शुक्ल पक्षेतृतीया सवत् १९३९ वि० श्री गणेशाय नम । श्री राम सीता की जय बोलो राधा कृष्ण की जय । राम राम राम ॥

संख्या २२० ए. अमरकोष भाषानुवाद, रचयिता—महेशदत्त (धनावली, बाराबंकी), कागज—देशी, पत्र—१८०, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२५०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, लिपिकाल—स० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर जैराम सिंह, ग्राम—वजीरनगर, डाकघर—माधौगंज, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ अमर कोष लिख्यते ॥ दोहा—दंति वदन सकल रदन सिद्धि रदन महराज। उमा नदन मोदक अदन पुरवैं सब ममकाज ॥ स्वर्ग के नाम—स्वः स्वर्ग, नाक, त्रिदिव त्रिदशालय, सुरलोक, द्यौः, द्यौ, त्रिविष्टिप, देवताओ के नाम—अमर, निर्जर, देव, त्रिदश, विवुध, सुर, सुपर्वा, सुमना, त्रिदिवेश, दिवौका आदित्ये, दिविषत, लेप, अदिति, नंदन, आदित्य, ऋभु, अस्वप्न, अमर्त्य, अमृतान्धा, वहिरमुप, कृतभुक, गीर्वाण, दानवारि, वृन्दारक, दैवत, देवत ॥

अंत—आदि नामो से वहुव्रीह अन्य लिंग को भजता गुण योग द्रव्य जोग से जो उपाधि विशेषण है वे धर्म के ही गुण को भजते है ॥ असज्ञा में कर्त्ता के अर्थ में कृत प्रत्यय परगामी होते हैं कर्म और कर्ता के वर्तमान कृत प्रत्यय परगामी होते तिस करके रंगे हुए इत्यादि अर्थ में अणादि तद्धित प्रत्ययांत नानार्थ भेदक अनेकार्थ विपेशण मत वशिष्ट के कारण से वाच्यलिंग होते है। पट सज्ञा कृपांत नांत संख्या और कतिशब्द तीनो लिंगो में समरूप और नित्य ही वह वचनात होते है युष्मद; अस्मद शब्द तिङत पद और अव्यय मे भी तीनो लिंगो में समान वने रहते हैं विरोध अर्थात विप्रति पेध में पर लिंगानुसासन प्रवर्तित होता है इस ग्रथ में जो नाम कहने से शेष बाकी रह गये है वे शिष्ट महा महा कवि भाष्यकारादिको के प्रयोगों से जानने के योग्य है। इति लिंगादि सग्रह योग कुशमांक शशाङ्क १९३१ के दशम्यामा श्विनेऽसिते मृगांकेमर कोपस्य टीकापूर्ति मियादियम् इति श्री भाषनुवाद अमरकोष समाप्तः।

विषय—अमरकोश का भाषानुवाद।

टिप्पणी—इस ग्रंथ के अनुवादकर्ता पं० महेशदत्त शुक्ल धनावल, जिला बाराबंकी निवासी थे। निर्माणकाल संवत् १९३१ वि० है। इसको इस प्रकार लिखा है:—

योग कुशमाके शशांका १९३१ के दशम्याभाश्विने सिते मृगां के ऽमर कोपस्य टीका पूर्ति मिया दियम। लिपिकाल संवत् १९४० वि० है।

संख्या २२० बी. नरसिह पुराण, रचयिता—महेशदत्त (धनौली, बाराबंकी), कागज—देशी, पत्र—३००, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४९६०, रूप—प्राचीन, पद्य गद्य। लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर भगवान सिंह राठौर, ग्राम—गोपालसिंह का पुरवह, डाकघर—कांसगंज, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ नर सिंघ पुराण भाषा लिख्यते ॥ नरसिंघ मुरारी जग दध हारी चरण कमल शिरनाई। नरसिंघ पुराणा सहित प्रमाणा भाषांतर सुखदाई ॥

मैं करति यथा मति करि बुध गणनति करहि कृपा हितजनी । नहि जानत संस्कृत जो जन तिन हित रचत न मृषा बखानी ॥ दो०—यहि नरसिंघ पुराण में अरसठ हैं अध्याय । सकल व्यास वणत सुबुध देखहिं अति हरषाय ॥ तहां प्रथम अध्याय मह सब पुराण प्रस्ताव । बहुरि सृष्टि कह सूत जू करिके बहुत बनाव ॥ श्री नारायण नरों में उत्तम नर देवी व सर स्रुती को नमस्कार करिके फिर जय उचारन करना चाहिये । तपाये हुए सुवण के समान चमकते हुए केशों के मध्य में प्रज्वलित अग्नि के तुल्य नेत्रवाले व वज्र से भी अधिक नखों से स्पर्श करने हारे दिव्य सिंघ तुम्हारे नमस्कार है ।

अत—भरद्वाज आदिक मुनि वृन्दा । मैं कृत कृत्य द्विजा गन्यविन्दा ॥ हर्षित है किय सूत सुपूजा । मनसों छाँड़ि सकल विधि पूजा ॥ गैमय निज निज आश्रम काहाँ । सुमिरत सुमिरत हरि मन माहाँ ॥ इति श्री नरसिंघ पुराणे भाषानुवादे महेश दत्त कृत सपूर्ण समाप्त लिखा आश्विन सुदी चौदस सवत १९३६ वि०

विषय—नरसिंह अवतार और उनकी अनेक कथाओं का वणन ।

टिप्पणी—इस ग्रथ के रचयिता प० महेशदत्त, संस्कृत के विद्वान और धनावली, जिला बाराबकी, के निवासी थे । इनके बनाये भाषा के अनेक ग्रथ हैं और इन्होंने संस्कृत से अनेक ग्रथों का भाषानुवाद किया है । सवत् १९२७ वि० तक के रचे ग्रथ इनके पाये गये हैं । इस ग्रथ का लिपिकाल संवत् १९३६ वि० है ।

सख्या २२० सी नरसिंह पुराण, रचयिता—महेशदत्त (धनौली बाराबकी), कागज—देशी, पत्र—२९६, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४९९६, रूप—नवीन, पद्य गद्य । लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामनारायण मिश्र, ग्राम—बिनेनपुर, डाकघर—अमरगढ़, जिला—एटा ।

आदि अत—२२० बी के समान । पुष्पिका इस प्रकार है —इति श्री नृसिंह पुराण भाषानुवादे महेश दत्त कृत सम्पूण समाप्त लिखा चैत्र मास शुक्ल त्रयोदशी सवत १९३६ वि०

सख्या २२० डी नरसिंह पुराण, रचयिता—महेशदत्त (धनावली, बाराबकी), कागज—विदेशी, पत्र—३००, आकार—१२ × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५८५०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामदत्तजी पाठक, ग्राम—पिहानी, डाकघर—पिहानी, जिला—हरदोई ।

आदि–अत—२२० बी के समान । पुष्पिका और टिप्पणी इस प्रकार है —

इति श्री नरसिंह पुराणेभाषानुवादे सपूण समाप्त लिखा मन्नालाल वाजपेई ७ मास में

टिप्पणी—इस ग्रथ के भाषानुवादकर्त्ता प० महेश दत्त जी थे । सवत् १९९० वि० के पहले इनका जन्म हुआ होगा ऐसा काव्य सग्रह आदि से पता चलता है ।

यह धनावली जिला बाराबंकी गोमती नदी के तट के निवासी थे। लिपिकाल संवत् १९४० वि० है ।—सुकुल वहोरन राम तनय वर धरि धरि मणिनामा । तासु इन्द्रमणि सुत तासुत विश्राम राम गुण धामा ॥ तासु तनुज श्री रजादंद सुख वेद द्विजन में टीके । अवधराम शुभ नाम सकल सुव धाम तासु सुत नीके ॥ वहिरालय जन पद गोमति तट धनावली कृत वेशा । विप्र महेश दत्त सुत ताके वारहवंकि प्रदेशा ॥ संवत १९३१ वि० में अमर कोप नामक ग्रथ रचा जो इस प्रकार लिखा है:—कुरामाके शशांकाब्दे दशम्यामाश्विनेऽसिते मृगां केऽमर कोपस्य टीका पूर्ति मियादियम

संख्या २२० ई. रामायण वालमीकि वालकाट, रचयिता—महेशदत्त (धनौली, बाराबकी), कागज—देशी, पत्र—२५६, आकार—१० × ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—२९, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२७०, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३६ =१८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामावतार शुक्ल, ग्राम—पटियाली, डाकघर—पटियाली, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ वालमीकीय रामायण वालकांड दो०—भव्य करण जन भय हरण रामचरण शिरनाइ । वाल्मीकी भापा करत गणपति गिरा मनाइ ॥ तपस्या व वेद पाठ करने में निरत वेद जानने वालो में व मुनिवो में श्रेष्ठ नारद मुनि से तप वी वालमीक जी ने पूछा कि इस मृत्यु लोक में इस समय गुणवान वीर्यमान धर्मज्ञ उपकार मानने वाला सत्य वादी दृढ़ व्रत धारण करने वाला अनेक चरितकारी सब प्राणियो का हित करने वाला, परम विज्ञानी अतिदर्शनीय रूप आत्म ज्ञानी क्रोध जीतने वाला तेजस्वी निंदा रहित व सग्राम में जव उसके क्रोध हो तो देवता भी भयभीत हो ऐसा कौन है हे महिर्षि जी यह सुनने की हमको वडी इच्छा है आप ऐसे मनुष्य के जानने मे समर्थ है । वालमीक जी के ऐसे वचन सुन तीनो लोको के जानने वाले नारद मुनि हर्षित हो वोले सुनिये ॥

अत—गुरुओ के गुरू कार्य करते कराते जिस समय जिस कार्य का प्रयोजन देखते वही करते कराते इस रीति से रामचन्द्र जी के शील स्वभाव से राजा दशरथ व सब वेद पाठी ब्राह्मण लोग सव उद्यमी व जितने राज्य निवासी है सबके सब अति संतुष्ट हुए तिन चारो पुत्रो में अति यशस्वी लोक में सब से सम भाव रखने वाले सत्य पराक्रमी ब्रह्मा के समान सबके पालन करने वाले महा गुणवान कृपानिधान रामचन्द्र जी ही हुए इस रीति से महाराज कुमार श्री रामचन्द्र जी श्री जनक नंदनी सीता जी के साथ उनमें अपना मन लगाए उनका मन अपने में निवेशित कर वहुत दिनो तक विहार करते रहै । चौपाई ॥ ब्राह्म विवाह विवाहित सीता । यासो रामहिं प्रिया पुनीता ॥ प्रीति रूप गुण शीलहि पाई । राम प्रीति दिन दिन अधिकाई ॥ रामसे दुगुण प्रीति हृदय माही । जनक सुताके शंशय नाही ॥ राम जानकिहि सीतारामहिं । जानत मनसो मन अभिरामहि ॥ राम से अधिक प्रीति वैदेही । करत सदा लखि परम सनेही ॥ रूप देवता सम कमलासम । शोभा सीता

माहिं न कछु कम ॥ सीता राज कुवरि सग रामा । अति शोभित भए पूरण कामा ॥ जिमि सब देव देव हरि आपू । कमला सग सोभित शुभ रापू ॥ इति श्री रामायणे वाल्मीके वाल्कांडे सप्त सप्ततितम सपूर्ण लिखा सावन सुदी दसमी सवत १९३६ वि०

विषय—रामायण बाल्कांड की भाषा टीका ।

सख्या २२० एफ वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाड, रचयिता—महेशदत्त (धनौली, बाराबकी), कागज—विदेशी, पत्र—३००, आकार—१० × ८ इंच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२९, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६००, रूप—नवीन, पद्य गद्य । लिपि—नागरी, लिपि काल—स० १९३४ = १८७७ ई०, प्राप्तिस्थान—प० बालधर शास्त्री, ग्राम—राजापुर, डाक घर—कादरगज, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनम अथ रामायण वाल्मीकीय भाषा अयोध्याकांड लिख्यत । सोरठा । भरत चरण शिरनाइ रचत अयोध्या कांड वर । गणपति होहु सहाय हरहु विघन बाढ़े सुयश ॥ जब भरत जी अपने मामा के घर को गये सो पाप हीन व नित्य ही लवणादि शत्रुओं के मारने हारे शत्रुघन जी को भी बड़ी प्रीति के साथ ले गये वहा यद्यपि उनके मामा युधाजित जी भोजन भूषण आदि दे पुत्र के समान लालन पालन करते कराते रहे ॥ तथापि ये दोनो भाई अति वृद्ध राजा दशरथ जो का स्मरण करते जाते थे महा तेजस्वी राजा दशरथ जी भी अपने पुत्रों का जो मामा के यहा थे भरत शत्रुघन को इन्द्र वरुण के समान याद करते रहे ।

अत—श्री सीता जी ने तपस्विनी अनुसूया जी ने जो प्रीति पूर्वक वस्त्र भूषण पुष्प माला आदि दिये थे उनका हाल सब रामचन्द्र जी से कहा—मनुष्यों को दुर्लभ सत क्रिया जानकी जी को देख श्री राम व लक्ष्मण बहुत प्रसन्न हुए सब तपस्वियो से पूजित श्री राम लक्ष्मण जानकी सहित रात्रि में वहां सोये । जब रात्रि बीति गई प्रात काल हुआ तो पुरुष सिंह राम लक्ष्मण दोनों भाइ स्नान व अग्नि होत्र आदि कर वनवासी तपस्वियों से दूसरे वन को जाने के लिये आज्ञा मागने लगे तब सब धम चारी तपस्वी दोनों भाइयों से बोले कि इस वन में राक्षस तपस्वियों को बहुत दिक करते हैं ॥ × × × कुडलिया । द्विजगण कर जोरी कह्यो इमि पुनि विप्रन कीन स्वति पुन्य वाचन सकल सब विधि युत पर बीन ॥ सब विधि युत परबीन दस्यु तापन भगवाना । राघव लछिमन जनक सुता युत कीन पयाना ॥ वन महं पेठे जाय यथा रवि निविशत है घन । तिमि रघुनदन गयउ सकल लै अनुमति द्विज गन ॥ इति श्री रामायण वाल्मीकी अयोध्या कांड सपूर्ण समाप्त सवत १९३४ वि०

विषय—वाल्मीकि रामायण अयोध्या कांड की भाषा टीका ।

सख्या २२ जी वाल्मीकि रामायण आरण्यकांड, रचयिता—महेशदत्त (धनौली, बाराबकी), कागज—विदेशी, पत्र—२६०, आकार—१० × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२७०, रूप—साधारण, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, लिपि काल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—रामावतार शुक्ल, ग्राम—पटियाली, डाक घर—पटियाली, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ रामायण वाल्मीकी भाषा आरण्य कांड लिख्यते। दो० वन विहरण असरण सरण सिया लखन रघुवीर। चरण कमल शिर धरत जो हरण प्रणत जन पीर॥ महा गहन वन में प्रवेश कर श्री रामचन्द्र जी ने तपस्वियों के आश्रम देखे जिनमें कुश चीर ठौर ठौर परे हैं ब्रह्म विद्या की लक्ष्मी का प्रभाव अच्छी तरह विद्यमान हो रहा है जैसे आकाश में भी टिके सूर्य मंडल को मारे तेज के कोई नही देख सक्ता। वैसे ही ब्रह्म विद्या के प्रभाव के कारण वे भी बडी कठिनता से देखने के योग्य है।

अंत—यह कह पुनि कह लपण सो सत्य पराक्रम राम। हम विन किमि राह हैं सखे सीता के असु ग्राम॥ इमि बहु भांति विलाप करि रघुपति करुणा पूर। परम मनोहर पंप सर पैठहु करि श्रम दूर॥ वन देखत मग कुसुम युत पपा देखहु जाय। जाना शकुनि समेत जी दुखित चित्त ह्वोइ भाइ॥ इति श्री वालमीकी रामायण आरण्य कांड संपूर्ण समाप्तः अश्विन सुदी १२ सवत १९३६ वि०॥

विषय—वालमीकि रामायण आरण्य कांड की भाषा टीका।

संख्या २२० एच. वालमीकीय रामायण किष्किंधा काड, रचयिता—महेशदत्त (धनौली, बाराबंकी), पत्र—२३०, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३९७०; रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२६ = १८७२ ई०, लिपिकाल—सं० १९४०=१८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० वालधर शास्त्री, ग्राम—राजापुर, डाकघर—कादरगज, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशायनमः श्री रामो विजयतेत राम॥ अथ रामायण वाल्मीकीय भाषा किष्किंधा कांड लिख्यते। दो० सीतान्वेषण हित चरण चरण शरण हुइ आज। किष्किंधा विवरण करत धरत हृदय रघुराज॥ पवन तनय सुनिये विनय सनम्र विनय करि राम। दियहु मिलाप सुकंठ कहं जिमि तिमि पुर वहु काम॥ कमल मछली सहित पंपा नाम तालाब के निकट जाय जानकी जी के विरह से व्याकुल श्री राम जी लक्ष्मण सहित विलाप करने लगे तिसको देखते ही मारे हर्ष के श्री रामचन्द्र जी की सब इन्द्रियां कांप उठी॥ जानकी जी के अंगों के समान कमलादि देख मानो काम के वश हो लक्ष्मण जी से बोले हे लक्ष्मण वै सूर्यमणि के समान निर्मल जल भरी कमलों से पूर्ण किनारे पै विविध प्रकार के वृक्षो के लगने से यह पंपा शोभित है हे लक्ष्मण देखो तो इस पपा के किनारे कैसा सुहावन वन लगा है।

अंत—महाराय मह संगि विहीना। पथिक समान दीन गिरि दीना॥ सहित वेग वेगित हनुमाना। हरि वर वीर वीर परसाना॥ महानुभाव समाहित मानस। लंकहि चल्यो नहीं कछु आलस॥ इति रामायण वाल्मीकीय किष्किंधा कांड समाप्तः॥ लिपा रघोसिंह साह वैरी ग्राम निवासी सवत १९४० वि०

विषय—वाल्मीकि रामायण किष्किंधा कांड की भाषा ठीका।

संख्या २२० आई. रामायण वालमीकी भाषा सुंदरकाड, रचयिता—महेशदत्त (धनौली, बाराबकी), कागज—विदेशी, पत्र—१८०, आकार—१२×८ इंच, पंक्ति

(प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४९७२, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३० = १८७३ ई०, लिपिकाल—स० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान प० ज्ञानानद जोशी, ग्राम—मथुरा, डाकघर—मथुरा छालाकुज, जिला—मथुरा ।

आदि—श्री गणेशायनम अथ सुदर काड वाल्मीकी रामायण भाषा लिख्यते ॥दो०॥ सीतान्वेषण निरत गत भाम वार हनुमान चरण कमल अशरण शरण शरण होहिं जन जान ॥ शिर धरि राम सदेस तरि न दिन दश मिथिलेश । सुता सदेश बहोरि कह योश लेश यह वेश ॥ सो कपि पति शुभ मति करहिं हरहिं विपति के जाल ॥ मोरि विनति नति ऐहिं अरु दृढ़ि भक्ति निजहाल ॥ जामवत के वचनों से प्रोत्साहित हो शत्रुओं के खींचने वाले हनुमान जी ने रावण की हरी सीता जी के रहने का स्थान ढूढ़ने के लिये सिद्धि चरण सेवित आकाश मार्ग में जाने की इच्छा की । उस समय और लोगों से न हो सकने वाला विघ्न रहित काम करने की इच्छा किये सिर व गल ऊपर उठाये हनुमान जी बड़े भारी वृषभ के समान शोभित हुए ।

अत—(हरिगीतिका छद) तहि समय तुम्हारे शोक पीन्ति जनक राज कुमारिका । मम सवल इप्सित वचन प्रार्थित भइ शोक विदारिका ॥ गत शोक लहि तव शान्ति हर्षित वचन कहहु बनायके । हम चले तेहि समझाइ बहु तिन चरण पर शिर नाइके ॥ इति श्री रामायण वाल्मीकीय सुन्दर काड भाषा सम्पूर्ण समाप्त लिखा शिव दयाल सिंह ठाकुर गूजे पुर निवासी मार्गशीर्ष वदी । पंचमी सवत १९४० वि०

विषय—वाल्मीकि सुन्दर काड रामायण का भाषानुवाद ।

सख्या २२० जे रामायण वाल्मीकि भाषा लकाकाड, रचयिता—महेशदत्त शुक्ल (धनौली, बाराबकी), कागज—देशी, पत्र—३६६, आकार—१२ × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८००, रूप—नवीन, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३८ = १८८१ ई०, प्राप्तिस्थान—रामकुमार शास्त्री, ग्राम—हरिहरपुर, डाकघर—अवागढ़, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनम श्री रामायनम ॥ अथ रामायण वाल्मीकी भाषा का लका काड लिख्यते ॥ दो०—जलधि सेतु कारण निरति मारथ मारण दास । दर दारण हारण दिपति पुर बहिं रघुपति वास ॥ उदधि सेतु करि सम रहित रावण युत परिवार । जनक सुता सग अवध लहि राम हरहि अघवार ॥ पवन तमय नय विनय युत अनय रहित सुग्रीव । शुभ सगद अगद सुखद समुद करहु मम जीव ॥ जनक सुते शुभ गण युते विश्वनुते घर दानि । मामव भव भव तारिणी रिपुमारिणि शुचि गानि ॥ अच्छी तरह कहे हनुमान जी के वचन सुनि अति प्रीति सहित हो श्री रामजी बोले कि जो काय हनुमान ने किया है वह भूतल में महादुर्लभ है क्योंकि इस महीतल में मन से भी और कोइ ऐसा कार्य नहीं कर सकता ॥ भाई गरड़ व पवन व हनूमान को छोड़ और किसी को पृथ्वी पर हम नहीं देखते जो समुद्र नाघ जाय दखो देवता दानव जक्ष गधर्व नाग व राक्षस रावण की पाली लका पुरी किसी के जाने जोग्य नही है ।

अत—हरि गीतिका ॥ धन धान्य वृद्धि कुटुम्ब वृद्धि सुसिद्धि वर नारी लहै। अरु सुख अनुत्तम अर्थ सिद्धि समृद्धि वहु भारी सहै ॥ जो सुनै यह वर आदि काव्य महार्थ युत क्षिति में सही। सो सकल वांछित पाव ही नर कछुक संसय है नहीं ॥ दीर्घायु कर आरोग्य कर यश करण शुभप्रद ह्वै सही। सो भ्रात कर वर वुद्धि करु प्रताप कर रिपि ने कही ॥ यहि पढ़हु सज्जन सुनहु पुनि मन गुनहु देर न लावहू। रघुनाथ नाथ सनाथ करि है यहँ लगावहु भावहू ॥ इति श्री रामायण वाल्मीकी लका कांड संपूर्ण लिखा वैजू शुकुल सुभानपुर निवासी पौप कृष्ण द्वितीया संवत १९३८ वि०।

विपय—वाल्मीकि रामायण लंका कांड का भापानुवाद।

संख्या २२० के. वालमीकी रामायण भापा उत्तरकाड, रचयिता—महेशदत्त (धनौली, बारावंकी), कागज—देशी, पत्र—२६०, आकार—१२×८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६८०, रूप—साधारण, गद्य पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामकुमार शास्त्री, ग्राम—हरिहर पुर, डाकघर—अवागढ, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ रामायण वालमीकी भापा उत्तर कांड लिख्यते। दो०—कुजा रमण जनदर हरण भव्य करण महराज। चरण शरण अशरण शरण हौं पुर वहु सव काज ॥ राज्य पाय हरपाय सब भाय संग रघुनाथ। करहु दया रिपुगण हरहु भरहु जनन एक साथ ॥ (त्रिभगी छद) पितु आज्ञा पाई मुनि संग जाई यज्ञ रखाई जनकपुरी। पहुंचे दोऊ भाई शिव धनु धाई जाय उठाई सीय वरी ॥ पुनि अवधहि आई राज्य विहाई वनहि सिधाई नारि हरी। करि कीस मिलाई लक ढहाई निजपुर आई राज्य करी ॥ सो रघुपति राजा सहित समाजा सव गुण भ्राजा अशुभ है। अरु पालहि धरणी अद्भुत करणी करि अघ हरणी मोद भरै ॥

अंत—जब से राम गये तजि याहि। अवध वहुत दिन शून्य रहाही ॥ ऋपभ नृपति के समान वहोरी। वसी अयोध्या सब सुख भोरी ॥ यह आख्यान आयु कर शोभन। कीन्ह वरूण सुत कवि अघमोचन। उत्तर कांड सहित सव गावा। सो मुनि ब्रह्मा के मन भावा ॥ इति श्री रामायण वालमीकी भापा उत्तर कांड संपूर्ण समाप्तः लिखा वैजू शुक्कल सुभावपुर निवासी पौप शुक्ल दशमी सवत १९४० वि०

विपय—वाल्मीकि रामायण उत्तर कांड का भापानुवाद।

संख्या २२० एल. विष्णुपुराण भापा, रचयिता—महेशदत्त (धनौली, बारावंकी), कागज—देशी, पत्र—४००, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—९२००, रूप—नवीन, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रामसिह जी, ग्राम—मझगवाँ, डाकघर—बेनीगज, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ विष्णु भापा लिख्यते ॥ दोहा ॥ कुशल करण अशरण शरण विष्णु चरण धरि ध्यान। श्री मत विष्णु पुराण को भापा करत समान ॥ है पहिले सुभ अस में सब वाइस अध्याय। नाना भांति कथा जहां कहो पराशर आय ॥ तहां प्रथम

अध्याय मह सब पुराण प्रस्ताव । जिनि में त्रैयपरा शरद् प्रश्नोत्तर श्रुति गाव ॥ हे पुडरी काक्ष आप की जय हो हे विश्वभावन ऋषी केश महापुरुष सबसे पूर्वज तुम्हारे नमस्कार ह जा विष्णु सत अक्षर ब्रह्म ईश्वर पुरुष अपने गुणों की तरगो से इस ससार की सृष्टि पालन व नाश करते हैं और प्रधान द्वारा बुद्धयादिकों को उत्पन्न करते हैं सो हम सब को गतिभूति मुक्ति दें विश्व के ईश्वर विष्णु व ब्रह्मादिकों व गुरू के प्रणाम कै वेद सम्मति पुराण कहते हैं । इतिहास पुराणों के जानने वाले वशिष्ट मुनि के पौत्र मुनिवरों में उत्तम पराशर ऋषि से नमस्कार के साथ मैत्रेय मुनि बोले ।

अत—(चौपाई) अनिल अनल जल कुतल अकाशा । इनकी रचना करत प्रकाशा ॥ शा द रूप रस गध स्परशा । सब विषयन भोगत करि सर्शा ॥ सकल इन्द्रियन के उपकारी । व्यक्त सूक्ष्म तनु सुद्ध विधारी ॥ करत प्रणाम तोहि भगवाना । करहु दया सब गुण गण धाना ॥ प्रकृति पुरुष आतमा मय जासू । अज अद्वैत रुप है तासू ॥ होहु सनातन अरू अविनासी । सकल जनन कह मुक्ति प्रकासी ॥ इति श्री मत् विष्णु पुराणे षष्टेऽशे अष्टमोध्याय ॥ ८ ॥ इति श्री मत विष्णु पुराण भाषा महेशदत्त रचित धनावनी बारावकी निवासी सम्पूर्ण सवत् १९३० वि० दो० प्रति श्लोक प्रति चरण पति पद भाषान्तर कीन । तदपि भूल जो होइ कहु चित्त न धरहि प्रवीन ॥

विषय—सस्कृत ग्रथ विष्णु पुराण का भाषा गद्य पद्य में अनुवाद ।

संख्या २२१ व्रताक भाषा, रचयिता—महेशदत्त त्रिपाठी (नदापुर, सुलतानपुर), पत्र—५७१ आकार—९½ × ५¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६५६, रूप—नवा न लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० रामनारायण, ग्राम—७मौसी, डाकघर—बिजनौर, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गनेशाय नम श्री विष्णवे नम शिवाय नम श्री कृष्णाय नम श्री गुरुव नम ॥ दोहा ॥ शिव नन्दन करिवर वदन । मोदक अदन सुजान पूर्ण करो मम कामना । बुद्धि सदन गुण खान ॥ १ ॥ शकर कृत इस ग्रन्थ को । उल्था करति विचारि । गिरिजा नन्दन करि कृपा । ताको देहु सुधारि ॥ २ ॥ अऽन्या धान । प्रतिष्ठा यज्ञ दान । और वृत्त और शुभ कर्म अभिषेक इतने काम मल मास में वर्जित है । शुक्र और वृहस्पति अस्त हों अथवा बाल हों या वृद्ध हों तो मल मास में पूर्वोक्त काय और देव दर्शन वर्जित हैं और वृहस्पति नीचस्थ अथवा मकर के हों और वक्री अथवा अति चारग हों या वल वृद्ध हो या बाल वृद्ध हों या सिंह राशि के हों

अंत—मंत्र ॥ विश्वाय विश्व रुपाय विश्व धाम्ने स्वयम्भुवे ॥ नमोऽनन्त नमो धात्रे ऋक्साम यजु पाम्यते ॥ इस मत्र से अर्घ द ॥ इस विधि से सम्पूर्ण महीने महीने करे और वर्ष के अन्त में घी और चाउरि से अग्नि और ब्राह्मणों की तृप्ति करके रत्न सुवर्ण पद्म सहित बारह घट दूध देनेवाली शील वती सवत्सा चाँदी के खुर मढ़ी वस्त्र युक्त काम्यदोहनी बारह अथवा चार अशक्त हो तो एक ही गऊ ब्राह्मण को दे । × × × इति श्री नील कण्ठात्मज भट्ट शंकर कर्ता व्रतार्क सोधापन रत्नान्ति व्रतानि सकल भाषा महेश दत्त त्रिपाठी कृत समाप्तम् शुभम् ॥

विषय—(१) पृ० १ से १६४ तक—व्रत के अधिकारी एवम गमपादि का विचार। व्रतोपयोगी वस्तुएं। ऋत्विग्वर्णन। द्वादश लिङ्गोद्भव मंडल। एवम आसनादि विधान। भग व्रतपूर्ण होने का विधान। सामान्य पूजा। मत्रादि (परिभाषा प्रकरण) व्रतों का प्रकार। अरुन्धती व्रत संबंधी कथा। अक्षय तृतीया। स्वर्ण गौरी। हरितालिका। बृहद् गौरी। संकष्ट चतुर्थी। कपर्दीश्वर विनायक। गौरी चतुर्थी व ऋषि पंचमी के व्रतो के विधान एवम् कथाओं का वर्णन (२) पृ० १६५ से ३२२ तक—षष्ठी संबधी व्रत। विशेष-लीलता शीतला। अभुक्ता भरण सप्तमी। हेमाद्र माघ शुक्ल सप्तमी बुधाष्टमी वृत। भविष्योतर दशा फल। जन्माष्टमी ज्येष्ठा। महा लक्ष्मी, राम नौमी। अगहन की एकादशी ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी तथा गोप पद्म वृतों का विधान माहात्म्य एवम् उनके सबध की कथाएं (३) पृ० ३२३ से ४७२ तक—श्रवण द्वादशी। पार्वती वृत। नृसिंह चतुर्दशी। अनन्त चतुर्दशी। कदली व्रत। तथा सावित्री वृत संबधी कथादि का विस्तृत वर्णन। (४) पृ० ४७३ से ५७५ तक—नार दीयेगो पद्म व्रत। कोकिला वृत। सोमवती व्रत। वर लक्ष्मी व्रत। दान फल व्रत। सोमवार व्रत तथा भौम व्रतों का विधान माहात्म्य। पूजा विधान कथाओं और उद्यापि नादि का वर्णन।

संख्या २२२. चित्रकूट महात्म, रचयिता—महिपाल 'द्विजदत्त' (तरौंहा, बांदा), कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—१० X ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२८ = १८७१ ई०, लिपिकाल—सं० १९३८ = १८८१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० विष्णुभरोसे, ग्राम—पूरा बहादुरपुर, डाकघर—बेहटा गोकुल, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ चित्रकूट महात्म लिष्यते ॥ श्री राधवायनमः दो०—राम चरित अनुराग अति ऋषि साडिल्य पुनीत। जिमि सुसुडि प्रति प्रश्न किय तिन वरणी करि प्रीति ॥ सांडिल्य उवाच ॥ दो० ॥ राम चरन भूषित विमल चित्रकूट वर धाम। जह अनंत सिय सहित प्रभु अमित लहे विश्राम ॥ चित्रकूट गिरि भूति अति सुनी अही ऋषि नाथ। श्रुति समत सवाद कहि मो कह करहु सनाथ ॥ चौ० चित्रकूट महिमा श्रुति गाई। मंदा किनि तट परम सुहाई ॥ परम शुद्ध मडल निपुणई। पूरब रचि विरचि सुखदाई ॥ राम चरित सब कह सुपदाई। अगम सुगम निगमागम गाई ॥ तो जानत सत सग प्रभाऊ। सुगम पथ नहि आन उपाऊ ॥ धन्य आजु सुचि सग समाजू। सुफल सुकाम सुकृत सुख साजू ॥

अंत—जो हित अंत समै कहि वेद तिहि दिन रैन सुचित धरीजै। सो द्विज दत्त लहौ न लहौ लहि मानुष देह सुधारस पीजै ॥ दो०—सुजन आदरहि यहि सदा जानि भक्त को भेद। अबुध निरादर जो करहि दत्त हमहिं नहिं खेद ॥ संवत उनइस सै अट्ठाइश श्रावण मास सुहावन। मन भावन हरि पद रति पावन नाना सुख उपजावन ॥ चित्रकूट महात्म ग्रथ यह विरचो भव निधि सेतू। बैठि तरौ हां नगर पुनीता जो मम सुप को हेतू ॥ इति श्री चित्रकूट महात्म संपूर्ण समाप्तः माघ मास शुक्ल पक्षे त्रयोदशयाम संवत् १९३८ वि० ॥

विपय—चित्रकूट तीथ की महिमा का वणन । - ।

टिप्पणी—इस ग्रथ के रचयिता महिपाल उप० द्विज दत्त जाति के ब्राह्मण तरौंहा जिला बादा निवासी थे । निर्माण काल सवत १९३८ वि० है । इस को इस प्रकार लिखा हैं —सवत् उनइस सै अठ्ठाइस श्रावण मास सुहावन मन भावन हरि पद रति पावन नाना सुख उपजावन ॥ चित्रकूट महात्म ग्रथ यह विरच्यो भवनिधि सेतू ॥ बैठि तरौं [illegible] नगर पुनीता जो मम सुख को हेतू ॥

सख्या २२३ ए गनेश की पूजा तथा होमविधि, रचयिता—माखनलाल चौबे (कुलपहार), पत्र—२७, आकार—८३/४ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२४, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०० = १७४३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० आनदीलाल दूबे, ग्राम और डाकघर—थमरौली फटारा, जिला—आगरा ।

आदि—प्रथम पृष्ठ लुप्त—द्वितीय पृष्ठ से उद्धृत ॥ श्री कृस्न उवाच ॥ कृस्न कहै नृपराज जू। धरौ धर्म में चित्त । क्षत्रन की छैं होइगी । करौ गणेश को वृत ॥ शत्रु नास सकट कटैं । रिधि सिधि धन धाम । उमा पुत्र कों सेइया । पूरण हुइहे काम ॥ चौपाई ॥ पूंछत तबै कृष्णकों राई । कौन गनेस कौन सुत आई ॥ कौन भाति प्रगटे हो देवा । ते हमसौ कहियो भेवा ॥

अत—गण पति पूजा सब कही । और होम उपदेस । जिहि प्रकार सेवत रहै । आदै दव गणेस ॥ सुग्व सपति को दत है । काटत सबै कलेस । श्री भप वानी कहत हैं । नृप कौं दे उपदेस ॥ सले सै रैन मन वय मुतिक्यमगजे गजे सर यति साधयो । नहिं चदनेन वणे वणे सुभ कासै एक दंतस्या कपिलो गज ॥ आसलखपरतु ॥ जपे गणेश ॥ गणेस ॥ गणेश ॥ गणेश ॥ गणेस ॥ रेती श्री गणेश की पूजा की विधि होम की विधि सम्पूर्ण समाप्त ॥ इति श्री लिखित ब्र ही विरामन मुजै दिनहुली के गोत्र आवोरिआ ॥ सो पोथी गणेश की सम्पूरण ॥ जैसा देखी तैसी लिखी अछिर की टोट होइ तहा और लगाइ लीजो समत पटा १८१०० लीखत भा वदी १३ अइ ॥

विपय—श्री गणेश की पूजा तथा होम विधि ।

सख्या २२३ बी गणेशकथा, रचयिता—माखनलाल चौबे (कुलपहार, हमीरपुर), कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०८ = १८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला देवीराम पटवारी, ग्राम—अगसौली, जिला—अलीगढ़ ।

आदि-अत— २२३ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है —

इति श्री गणेश उत्पति कथा वणन सपूर्ण भई ॥ इति श्री गणेशावृत कथा सपूर्ण सवत् १९०८ वि० ।

सख्या २२४ कोकशास्त्र, रचयिता—मकुददास, पत्र—४२, आकार—९१/२ × ६१/२ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप् —६७२, रूप—प्राचीन, पद्य गद्य,

लिपि—कैथी, रचनाकाल—सं० १६७५ = १६१८ ई०, प्राप्तिस्थान—बनवारीलाल पुजारी, बम्हनटोला मंदिर, ग्राम—समाई, डाकघर—इतमादपुर, जिला—आगरा।

आदि—श्री राम श्री गनेस सा एकम्ह श्री गंगाजी सहाए श्री पोथी कोक सास तर। दोहा। पिंगल विनु छंदहि रचै ओ गीता विनु ज्ञान। कोक पढ़े विनु रती करें सो नर पसु समान। चौपाइ। ब्रनौ गनपति वुद्धि निवासा। राम रूप तुम पुरवहु आसा। तव वरनौ सारद के पाऊँ। जीन्ह की कृपा ज्ञान मोंहि आऊ। ऋीतु पताल कै वदौं देवा। दस द्वीगपाल के करौ मैं सेवा। चौदहभुवन कीन्ह विस्तारा। वदौं तुअगुर अगम अपारा। दोहा। एतना देव कह वंदौ वहु विधि चरन मनाए। कोक सासत्र वछु वरनौं अक्षर देहु वनाए। चौपाई। पंडित जन सो वीनती हमारा, मैं वछु कथा करौं अनुसारा। तोहरी कृपा ज्ञान हीद आया। पुपन छत्र ताही दिन पाया। जगकर उपमा जो सजोगा, कथा कहो मै सुनु सब लोगा। साहसलै मंदील सुलताना ताकी मे सब लोक संकाना। दोहा। सोलह सै पचहती समत सुना हदीस, सनद कुतर मह देपः एक हजार पचीस। ताहा कवि एक पंडित भेउ, पहिल कोक ग्रथ उन कैउ। जवनी पुत्र कवी अती मन माना। काम केलि रस उन सब जाना। उनके मता ग्रंथ हम देपा।······वीसेपा। काम केलि वरनहि सब कोइ। सुना रसी करवस होइ। दोहा। वहुत ग्रंथ विचारत होए वहुत दिन पेप। वाल वोध के कारन, कीए कथा संक्षेप।

अंत—औरत का संकोच विधि—पाव तोला सुपासीम का दो भाग दर काजर काफ का भुप तीनों तोलाई सब चीज को फुकी करै मीलएके सुवाही पाइ एक तोला ऊपर सो मुनका रस पीश्रै एक सीपी से वोल प्रट है। भवानी सीघ मथुरा के पोथी कीफली आफान्ह पुर छावनी मो।

विषय—काम शास्त्र का वर्णन।

संख्या २२५. पद्मावती, रचयिता—मलिक मुहम्मद जायसी (जायस, रायबरेली), पत्र—३१७, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७२६, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् ९२७ हिजरी, लिपिकाल—संवत् १८५८ = १८०१ ई०, प्राप्तिस्थान—महंत गुरुप्रसाद दास जी, ग्राम—हरिगाँव, डाकघर—जगेसरगंज, जिला—सुलतानपुर।

आदि—श्री गणेशायनमः चौ—संवरौं आदि एक करतारु, जेइ जिव दीन्ह कीन्ह संसारु। कीन्हिसि पृथिमी जोति प्रगासू, कीन्हिसि नव पर्वत कविलासू। कीन्हिसि पवन अगिन जल षेहा, कीन्हिसि बहुतै रंग औरेहा। कीन्हिसि धरती सरग पतारू कीन्हिसि वरन वरन अवतारू। कीन्हिसि स्याम सेत ब्रह्मंडा, कीन्हि भवन चौदह नव पडा। कीन्हिसि दिन दिनकर ससि राती, कीन्हिसि नषतु तराइन पांती। कीन्हिसि सीत धूप और छाया कीन्हिसि मेघ वीजु जेहि माहा।

अंत—चौ० एक पुरुष के एकै धानू, एक चाँद एकै पुनि भानू। जो सब कर पर पुरुष आही, एक ते करू पूजा पुनि ताही। ग्रह २ दीपक लेसहु ग्याना, नाही तेज जारु अभि

माना। पाचहु मिलिके नाचहु ताहा, आइ पुरान पूप तम जाहा। जनमा मरन परै जेहि वाता वहि के रग रहसि जेराता। नाहि तो जन्म २ पछिताहु रहट घरी अस फिरि २ जाहु। वास पाइ इहवा जनि भुल्हु, करि २ ववध दहि जनि फूलहु। दो० सुख सवाद जनि भूलहु होइह अत विकार। नाही तौ पछिताइहौ, यहि पावौ करु छार।–महमद रसना हाथ कर, रहु अति लीने भेप, मीठो बोलन जै चरन, सबै तुम्हारो देस।

विपय—सूफी प्रेम कथानक काव्य जिसमें चितौर के राजा रत्नसेन के समय उसकी रानी पद्मिनी के लिये दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन की लडाई का वर्णन है।

टिप्पणी—जायसी का जन्म जायस (रायबरेली) के मुहल्ला कचानाखुद में हुआ। इस स्थान पर अब एक नयी हवेली बन गई है जो दादू मियाँ के मकान के पास है और जायसी के एक वशज ने बनवायी है। जहा जायसी ईश्वर आराधना करते थे वह गुफा अब तक है। जायसी के खानदानी लोग हैदराबाद (दक्षिण) में बड़े बड़े ओहदों पर हैं। कुछ लोग यहा भी हैं। जायसी ने जायस के पास एक 'दमड़ी' नामक छोटा सा गाव बसाया था जो अब तक है। जायस के बहुत से लोग इनके शरीरान्त का इस प्रकार वर्णन करते हैं कि जायसी ने अमेठी के राजा से एक बार पहले ही कहा था कि तुम्हारे हाथ से हमारी मृत्यु हागी। एक बार काटि के समीप ही तपस्या कर रहे थे कि वहा से शेरके बोलने की आवाज सुनाई पड़ी। राजा साहब ने गोली मार दी, परतु गोली 'मलिक' साहब को लगी। उन्होंने उसी स्थान पर उनकी समाधि बनवा दी जहा पर प्रति वर्ष मेला भरता है।

सख्या २२६ एकादशी महात्म्य, रचयिता—मानदास, पत्र—४८, आकार—८½ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२००, रूप प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८५ = १८२८ ई०, प्राप्तिस्थान—महाराज महेन्द्र मान सिंह जी, स्थान—भदावर, डाकघर—नोगॉव, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ श्री सरस्वती जू नम ॥ श्री गुरु चरन कमलेभ्यो नम ॥ अथ एकादशी महात्म्य लिष्यते ॥ है केसो एकादशी महात्म्य ॥ जाके कहत सुनत परम मोछ की प्रापति ह्व जातु है ॥ और जाग्रत के समान मुक्तिकी देन हार व्रत कोऊ नाहिं ॥ जैसे नदीनि में श्री गगा जू वडी है ॥ और जसे देवतनि मैं श्री कृष्ण जू बड़े हैं ॥ अरु चारहू वेदनि मं जसे साम वेद वडो है और वृछन मैं जैसे पीपर वड़ो है तैसे व्रतनि माझ एकदशी वड़ी व्रत है ओर नाही ॥

अत—एका दशी अपार चरित रासि बुध जन लही। मम मति लघु सिल हारि, लपि कछु ले इकठा करे ॥ ३९ ॥ पट पद हस समान, गुन ग्राही सज्जन सुमति। मानदास अस जानि, कहे कछुक व्रत चरित वर ॥ ४० ॥ इति श्री पद्म पुराने एकादशी महात्मे श्री कृष्ण जुधिष्ठिर सवादे कातिक सुक्ल एकादसी प्रबोधिनी नाम चतुर्विंसमो अध्याय ॥ २४ ॥ सम्पूर्ण मिती जेठ वदी ३० सवत् १८८५ श्री गनेशाय नम ॥ अथ एकादशी मल मास कथा लिष्यते ॥ जुधिष्ठिर उवाच — × × तो ब्राह्मन अपने पिता के ग्रेह में जातु भयो श्री कृष्ण कहत है कि हे राजा जुधिष्ठिर या प्रकार व्रत करियै ॥ ४३ ॥ जो यह एका

दसी व्रत सुनैगो सर्वे पापनि तै छूट हरि को लोक पावैगो ॥ ४४ ॥ इति श्री ब्रह्मांड पुराने पुरुषोत्तम मासे श्री कृष्ण जुधिष्टिर संवादे कमला एकादसी व्रत महात्म्यं सपूर्न संवत् १८९५ मलमास ॥

विषय—वर्ष भर की सम्पूर्ण एकादशियों के व्रतो का विधान, उनका माहात्म्य, फल और कथादि का वर्णन।

संख्या २२७. गोपीचंद राजा की कथा, रचयिता—मानामन्त्री, पत्र—५२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७६, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—महाराजा महेन्द्र मान सिंह जी (भदावर के राजा), स्थान—भदावर, डाकघर—नौगवां, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ गोपीचंद राजा की कथा लिप्यते ॥ चौपही ॥ अलप निरंजन सिरजन हारा। सब जग सिष्ट उपामन हारा ॥ १ ॥ लैकर चैपाले और मारै। चौदह भुवन पलक मैं टारै ॥ २ ॥ धरती सर्ग पताल अकासा। नाना विधि लीला परगासा ॥ ३ ॥ गगन पड़ो कीनो विन थूनी। चद श्रौर रवि जटे विन चूनी ॥ ४ ॥ प्रेम भक्ति का है वह दाता। निर आकार पिता नही माता ॥ ५ ॥ भांत भांत रचना उन कीनी। भगत मुकत उनही ने दीनी ॥ ६ ॥ गोपीचंद राजा शुभकारी। सोलह सै छांड़ी जिन नारी ॥ ७ ॥ जाका मंदर इन्द्र सम जाना। त्यागत मन मै मोह न आना ॥ ८ ॥ दोहा ॥ माता के उपदेश से छोंड सकल सुप भोग। गौड़ वंगाला राज तज अमर भये कर जोग ॥ ९ ॥ अमर काया के कारने जोगी भये गोपी चंद ॥ मानामन्ती यौं कहै छोंड़ माया के फन्द ॥ १० ॥

अंत—राज काज सब त्याग सन्यासी। सब ही त्याग भये वन वासी ॥ राज काज में वहु दुप सहे। जोग काज अमरापुर लहे ॥ राज सकल सब पुर कौं जारै। राज काज भाई को मारै ॥ राज काज भाईन सो लरै। राज काज रन माही मरै ॥ धन गोपीचन्द उत्तम काया, विप समान छोड़ी सब माया ॥ धन इह मैना मंती माई। जिन इह सुत की जुगत वताई ॥ धन वह गुरु जलंधर नाथा, जिन गोपीचंद कियो सनाथा ॥ सबमें सार नामको पावै। जनम जनम की पीर मिटावै ॥ एक ब्रह्म दूसरो है नाही। तत्व ज्ञान वेदीनह माही ॥ अवगत आपसै ध्यान लगावौ। गुरु किरपा सै सब सुध पावौ ॥ ९५० ॥ अव इहि कथा जो भई समापत। तत ज्ञान मेहि भयो परावत ॥ जो कोई जोग कथा यह गावै। आतम ज्ञान पदारथ पावै ॥ ९५२ इति श्री गोपीचन्द की कथा राग सागरो वैराग वानी समाप्त, श्रावन मासे कृष्ण पक्षे प्रति पदायां १ बुधवासरे सवत् १९२७।

विषय—गोपीचन्द की आदि अवस्था रानी का जोग के प्रति उपदेश, राजा का विरोध, रानी का देह की अनित्यता और ससार की निस्सारता समझा कर पुत्र का योग में विश्वास जमाना। गोपीचन्द तथा रानियो का संवाद। राजा का दीक्षा लेकर जालंधर को गुरू करना। माता तथा रानियो से भिक्षा मँगवा कर गोपीचन्द का योग दृढ़ कराना।

गोपीचन्द का निज भगनी चन्द्रावलि के यहाँ योगी वेश में जाना और उसका विलाप। राजा का शरीर की अनित्यता तथा ससार मिथ्यात्व को समझाना और योग की प्रशसा करना, मन पर विजय कर गुरु जालधर से मिलना और सदैव एक ब्रह्म के ध्यान में निमग्न रहना।

सख्या २२८ गनिका चरित्र, रचयिता—मगलदेव (आगरा), कागज देशी, पत्र—३६, आकार—८×६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२१०, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, लिपिकाल—स० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—जैसुखराम, ग्राम—मगलपुर, डाकघर—मारहरा, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशायनम अथ गनिका चरित्र लिख्यते॥ दो० धर्म कर्म धन भक्षिणी सतति खावन हार। गनिका है अति राक्षसी बुधजन कहत पुकार॥ चौ० पृथक नारि डायन कहु नाहीं। यहा प्रबल डायन जग माहीं॥ जे बस पर हैं इन ठगनी के। काटि कलेजा खावहिं नीके॥ ये डायन लड़िकन को खावैं। धन पति को चटनी करि जावैं॥ नव कुमार सब इनके खाजा। इनते बचे न रैयत राजा॥

अत—चौ० सब से गौ हत्या अति भारी। वेद शास्त्र सब कहत पुकारी॥ गौ घाती ढिग बैठन हारो। वो भी होवत गौ हत्यारो। गौ घाती से प्रीति लगावे। वे भी गौ घाती हुइ जावें॥ अब तुम देखो सोच विचारी। वेश्या प्रति दिन गौ हत्यारी॥ जब तुम उसका नाच करावो। तब तिन को निज ढिग बैठावो॥ अति पातक ढिग बैठे होइ। धर्म शास्त्र आज्ञा नहिं गोई। वेश्या की लीला दसाई। मगलदास बहुत विधि गाई॥

विषय—वेश्या के अवगुणों का वर्णन भली भाँति किया गया है।

टिप्पणी—इस ग्रंथ के रचयिता मगलदेव सन्यासी आगरा के निवासी थे। निर्माण काल सवत् १९३२ वि०, लिपिकाल सवत् १९४० वि० है।

सख्या २२९ ए राग सार सग्रह, रचयिता—मन्नालाल (दोड़वा कानपुर), पत्र—७२, आकार—८×६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९४१ = १८८४ ई० प्राप्तिस्थान—लाला बालकराम, ग्राम—गोविंदपुर, डाकघर—माधोगज, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशायनम अथ राग सार सग्रह लिख्यते॥ श्री गणेश वदना॥ ध्याइये गणपति जग वदन। शकर सुवन भवानी जी के नदन॥ तेज प्रताप महा दुख भजन॥ मोदक प्रिय मुद मगल दाता। विद्या वारिधि बुद्धि विधाता॥ सिद्धि करन गज वदन विनायक कृपा सिंधु सुन्दर सब लायक॥ मागत तुलसी दास निहारे बसहु राम सिय मानस मोर। ध्याइये गणपति जग वदन॥१॥

अत—राग विलावल॥ दखत खग मृग छबि रघुवर की। कनक-कुरंग सग वन धावनि कर सरोज साधन धनुसर की॥ ग्रीवा नवनि ठवनि ठमकनि ठठि ओट गमन वल्ली तरवर की॥ चलनि अहेरी चाल सुचंचल चहूँ ओर चितवन हरिहर की॥ फिरि फिरि

हिरन विलोकत रामहि मूरत मधुर प्राण हर वर की ॥ राम गुलाम सराहत सुरगण भाग्य अपार सरवरी चर की ॥ इति श्री राग सार संग्रह समाप्तम लिखा राम विलास त्रिपाठी स्वपठनयार्थ संवत् १९४१ वि० जेष्ठ शुक्ला दशमी ॥

विषय—इसमें हर प्रकार के भजन, ठुमरी, राग रागिनी आदि का वर्णन है।

टिप्पणी—इस ग्रंथ के संग्रहकार मन्नालाल वैश्य डीड़वा जिला कानपुर निवासी थे। लिपिकाल संवत् १९४१ वि० है।

संख्या २२६ बी. रागसंग्रह, रचयिता—मन्नालाल (डोड़वा, कानपुर), पत्र—८४ आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) ३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६२४ रूप—साधारण, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३१ = १८७४ ई०, लिपिकाल—सं० १९४२ = १८८५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवमहेश जी, ग्राम—विशुनपुर, डाकघर—अलीगंज, जिला—एटा।

आदि—२२६ ए के समान।

अंत—भजन ॥ सुन वंशी वाले काहे को डाली लाल मोहनी। दधि की मटुकिया सिर पर धरके दधि बेचन ग्वालिन निकसी और गूजरी आगे निकस गई चन्द्रावलि पीछे निकसी। कान्ह कहे दधि लेहौं बरजोरी भोरहिं से भई आज चोहनी ॥ सुन वंशी ॥ रोज रोज का दान मैं लूंगो जो यही मारग आवोगी। छल बल करके निकल जावोगी नाहक रारि बढ़ाओगी ॥ नथ दुलरी की न्यारो लेउंगो सुरत बनी तेरी सोहनी ॥ सुन वंशी वाले० ॥ राज कठिन है कंस राजा को सुनै कंस कहिं पावेगो। माय जसोदा पिता नंद जी सबको पकड़ बुलावेगो ॥ ग्वाल बाल संग चलैंगे पीछे चलेगी मैया रोहनी ॥ सुन वंशी वाले० ॥ बांस बरेली के लालदास और वृन्दावन दस कोस बसै, मोहनि मूरति हृदय बसि गई अमृत मुख से वचन कहे। जो रस चाहौ सो रस नहियां गो रस पियो भरि दोहनी। सुन वंशी वाले काहे को डाली लाल मोहनी ॥ इति श्री राग संग्रह ग्रंथ समाप्तः भादों दुहज संवत् १९४२ वि०

विषय—प्राचीन काल की अनेक भाँति की राग रागनियों का वर्णन है।

टिप्पणी—इस ग्रंथ के संग्रह कर्ता मन्नालाल जाति के वैश्य डोड़वा जिला कानपुर निवासी थे निर्माण काल संवत् १९३१ वि० लिपि काल संवत् १९४२ वि० है।

संख्या २२६ सी. संगीतसार, रचयिता—मन्नालाल (डोड़वा, कानपुर), कागज—विदेशी, पत्र—८०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९५६, रूप—साधारण, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० गंगाप्रसाद दुबे, ग्राम—सराय नव्वाब, डाकघर—सारो, जिला—एटा।

आदि—२२९ ए के समान।

अंत—राग विभाग चौताला ॥ भूप के कुंवर दोऊ सुन्दर अनूपरूप बाग मध्य आये सिया चली देख लीजिये। मैं तो देखी मगन भई तन की सुधि भूलि गई सुम की जोहारैं कही नैनन सुख लीजिये ॥ पीछे कीजो और बात वे तौ जौलो चले जात मैं तो चेरी रावरी

हू रावरे सुख लीजिये ॥ विधि को मनात जात काहू न जनात बात तात की प्रतिज्ञा देखि कैसे मन धीजिये ॥ राम रूप देखि कान्हर नंदिनी जनक जी की गौरी सो कह्यो आप ऐसो वर दीजिये इति सगीत सार समाप्त ॥

विषय—अनेक राग रागनियों का वर्णन ।

टिप्पणी—इस ग्रंथ में अनेक कवियों के भजन, ध्रुपद, दादरा, गजल, होली आदियों का संग्रह है । इसके संग्रह कर्ता मन्नालाल, (जाति बनिये, जिला, कानपुर, ग्राम डु डवा) हैं

संख्या २३० ए' एकादशी महात्म, रचयिता—मेघराज प्रधान, पत्र—६७, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२० = १८६३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० देवीप्रसाद सनाढ्य, स्थान और डाकघर—समसाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ श्री राधावल्लभो जयति ॥ नवीन नीरद स्याम नीलें दीवर लोचन । स्फुरी दुर्हदलोद्वह नील कुंचित मूर्द्ध ज ॥ कदंब कुसुम भासि वनमाला विभूषित । गंड मंडल ससग चन्द्रिकाकन कुंडल ॥ × × × × × है कैसो एकादशी महा तसु जाके कहत सुनत परमोक्ष को प्रापति हो जात है और या व्रत के समान मुक्ति को देन हार और व्रत कोऊ नाहीं ॥

अंत—सो जे प्रानी या व्रत को करि है तिनको सोवरन की सी कान्ति हो है ॥ और सूरज की सी तेज ह्वै है ॥ और काल बस ह्वै है तब वैकुंठ लोक की बास पाइ है । सो जो कथा कहि है और सुनि है तिनको व्रत के कर को फलु ह्वै है ॥ यामें सन्देह नाहीं ॥

इति श्री पदम पुराने एकादशी महात्मे श्री कृष्ण जुधिष्टर सवादे प्रधान मेघराज भाषा कृते कातिके सुकल पक्षे की एकादसी । देवठानी नाम चौवीसयोध्याय ॥२४॥ एका दशी कथा संपूर्ण ॥ शुभ मस्तु सिद्ध श्री ॥ महारानी बाकावती ॥ देव्या जू के आज्ञा अनु पान लिषी मिती भादों वदी १२ बुधे संवत १९२० मौ० नौगाए में ॥

विषय—साल भर की चौदहों एकादशियों के व्रतों का विधान और उनके माहात्म्य का वर्णन ।

संख्या २३० बी मकरध्वज की कथा, रचयिता—मेघराज कायस्थ, पत्र—६, आकार—८ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० सीताराम शर्मा, ग्राम—आरे, डाकघर—कसरी, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गनाधिपतेनम ॥ श्री सरस्वतीनम ॥ श्री मकरध्वजकी कथा लिप्यते ॥ चौ० ॥ सिया गये से हनमत वीर । सागर नापि गये कपि धीर ॥ तिन सब लंका दई जराय । सागर पूंछ बुझाई जाय ॥ धुवाँ बहुत तिनके मुख गयौ । अश्लेषमु तिनको तब भयौ ॥ तब खखारि कै थूक्यो जाइ । तिहि देखत ही लीन्यौं खाइ । तिहि सजोग गभु तिहि ठयौ । दिन पूजैं ते वालकु भयौ ॥ ताको नाम मगधुज धन्यौ । मानो हनू दूजौ अब तरो ॥

मगरेलनि में खेलै जाइ । मलहम आवै सवै गिराइ ॥ अति वंत महा सो भयो । पूछन माय आपनी गयो । पिता हमारे को कह नाउ । जीतत सौह कौन की खाऊँ ॥ मगरि कह्यौ तासौं सति भाऊँ । हनूमान है तिनकों नाऊँ ॥

अंत--॥ दोहरा ॥ बिदा दई सुख पाइ कै । चले निसा तब जाइ । मन इच्छा पूजी सवै । जब कृपा भये रघुराइ ॥ चौपही ॥ ध्रुव जिमि राजु तहाँ अव करै । कछुकी नही सका धरै ॥ अव यह कथा समगल भई । मेघराज काइथ बरनई ॥ जो यह कथा सुनैं धरि ध्यानू । बढ़ै लक्षिमी अरु सन मानू ॥ अरु जे पढ़ै सुनै चितु लाई । विछुन्यौ मिलै तासु कौ आइ । मकरध्वज अति बली अपार । तिनकी कथा चली ससार ।

विषय--हनुमान के पुत्र मकरध्वज की कथा का वर्णन ।

संख्या २३१. मीराबाई की बानी, रचयिता—मीराबाई, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल— सं० १८१२ = १७५५ ई०, प्राप्तिस्थान—रामभरोसे दूबे, ग्राम—मानपुर कला, डाकघर—गंज डुंडवारा, जिला—एटा ।

आदि—अथ मीराबाई की बानी लिख्यते ॥ भजन ॥ मै अपने सैयां संग सांची ॥ अब काहे की लाज सजिनी परगट ह्वै नाची ॥ दिवस न भूख न चैन कबहू नीद निशि नासी ॥ वेधिवार को पार ह्वै गो ज्ञान गुह गांसी ॥ कुल कुटुम्बी आनि बैठे मनहु मधु मांसी ॥ दास मीरा लाल गिरधर मिटी जग हांसी ॥ १ ॥ ऐसे पिये जान न दीजै हो ॥ चलो री सजनी मिलि राखिये नैनन रस पीजै हो ॥ जोइ जोइ भेप सो हरि मिलै सोइ सोइ कीजै हो ॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर वडभागन री जै हो ॥ २ ॥

अत—भजन—जावा दे री जावा देरी जोगी किसका मीत । सदा उदासी मोरी सजनी निपट अटपटी रीति ॥ बोलत वचन मधुर अति प्यारे जोरत नाही प्रीति ॥ हूं जाणू या पार निभैगी छोड़ चला अध वीच ॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर प्रेम पियारा मीत ॥१॥ नैना लोभो रे वहुरि सकै नहि आय । रोम रोम नप सिष सव निरषत ललकि रहे ललचाय । मैं ठाढ़ी ग्रह अपने री मोहन निकसे आय ॥ वदन चन्द परकासत हेली मंद मंद मुसकाय ॥ लोग कुटुबी बरजि बरज ही बतियां कहत बनाय ॥ चंचल निपट अटक नहि मानत पर हथ गये विकाय ॥ भली कहौ कोई बुरी कहौ मै सब लई सीस चडाय ॥ मीरा प्रभु गिरधरन लाल विन पल भरि रह्यो न जाय ॥ २ ॥ बादर देख झरी हो श्याम में बादर देख झरी ॥ कारी पीरी घटा जो उमगी वरसी एक घरी ॥ जित जाऊं तित पानी ही पानी भई सव भूमि हरी ॥ जाको पिउ परदेस वसत है भीजै वार खरी ॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर कीजै प्रीति खरी ॥ ३ ॥ पिया तै कहे गयो नेहरा लगाय । छांडि गयो अब कहां विसासी प्रेम की बाती वराय । विरह समुद्र में छांडि गयो पिय नेह की नाव चलाय ॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर तुम विन रह्यो न जाय ॥ ४ ॥ इति मीरा बाई के भजन सपूर्ण ॥ संवत १८१२ वि०

विषय—मीरा बाई कृत भजन ।

संख्या २३२ ए गणितनिदान, रचयिता—मोहनलाल, पत्र—१६०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३३६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९११ = १८५४ ई०, लिपिकाल—सं० १९१७ = १८६० ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामदयाल पन्सारी, ग्राम—गूदापुर, डाकघर—बिलग्राम, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ गणित निदान ग्रन्थ लिख्यते ॥ बहुधा यह देखा कि मनुष्य करना नहीं जानता और केवल २० वा १०० तक गिनती जानता है वह अपना हिसाव याद रखने के लिये दीवाल पर खड़िया से लकीर खींच देता है और जब अपना लेन देन का हिसाव करता है तो लकीर गिन कर बता देता है कि हमारा इतना चाहिये वा तुम्हारी इतनी जिंस हम पर हुई और जितना उनके पास पहुँचा हो वा उन्होंने कुछ जिंस दे दी हो तो गिन कर लकीर मिटा देते हैं ॥ और बता देते हैं कि हमारा इतना बाकी रहा तुम्हारी जिस इतनी हम पर और चाहिये जो मनुष्य १०० तक पूरी गिन्ती नहा चाहिये तो जब उनको २० से ऊपर गिनना पडता है तो वह २० सों के हिसाब से बताते ह जैसे ५५ को वह दो बीसी ऊपर पन्द्रह वा पाच कम ३ बीसी कहेंगे और जो तुरत ही हिसाव का काम आन पडता हे तो ककड़ वा ठीकड़ी वा कौड़ियों से काम कर लेते हैं और बहुत से आदमी अपने हाथ की अगुली के पोरुओं के चिन्हों को गिनकर जोड़ लेते हैं ॥ जब विद्यार्थी गिन्ती गिनना सीख जाय तो उसे गिन्ती का जोड़ और घटाना इस रीति से सिखाना चाहिये ॥ पट्टी पर तीन खड़ी रेखा पास पास खींचे और फिर थोड़ा उनसे हटा कर और दो लकीर पास खीचे जैसे ||| || फिर पूछे बताओ ३ और दो कितने हुये फिर विद्यार्थी एक ओर से गिन कर बता देगा कि पाच हुए ॥

अंत—२॥ऽ धाऊ व मिट्टी मिले लोहे में से ऽ६ सेर लोहा पडता हे तो ५६ऽ धाऊ में से कितने मन लोहा निकलेगा ॥ उत्तर ३ऽ४ ४ एक नगर से दो सवार आमने सामने की सीधी दो दिसा को चले एक चार मील फी घंटे चला और दूसरा ३½ मील फी घंटे चला तो कितने समय में उनके बीच ६० मील का अन्तर पड जावेगा ॥ कदाचित वे दोनों अपनी चाल से एक दिसा को ही चलते तो उनमें ५½ मील का अन्तर स्थान कितने समय में होता उत्तर ११ घंटे १२० तोप का लड़ाइ का जहाज है उसमें २८००ऽ लोहे के कील काटे लगे है तो –)॥२ सेर के भाव से कितने का लोहा लगा होगा ॥ उत्तर ११६६६।≈ ॥२ पाई ॥ वैरा मीटर नाम वायु के गुरुत्व के मापने के यन्त्र में पारा ३० इंच ऊचा खड़ा है उस समय प्रत्येक वर्ग इंच के ऊपर हवा का ७॥ सेर बोझ पडता हे जो पारा २५ इंच ही खडा हो तो हवा का बोझ प्रत्येक वर्ग इंच पर कितना होगा उत्तर ऽ६। ॥ अपूर्ण

विषय—गणित।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता मोहनलाल जाति के ब्राह्मण थे। निर्माण काल सन् १८५४ ई० और लिपिकाल सन् १८६० ई० है। गणित प्रकाश और इसका लिखनेवाला एक ही है।

संख्या २३२ धी. गणित निदान, रचयिता— मोहन लाल, कागज—भूरा, पत्र—१४४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५९२, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१३ = १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला हरकिशन राइ वैद्य, ग्राम—जाजामऊ, डाकघर—हाथरस, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—२३२ ए के समान ।

अंत—८०० धुएँ की गाड़ी हैं उनमें से प्रत्येक २२४५ मन बोझ २०० मील १ दिन में लेजाती है और एक घोड़ा १०॥५ मन बोझ २४ मील ले जाता है तो सब गाड़ियों के बराबर काम कितने घोड़े करेंगे ॥ इति श्री गणित निदान पं० मोहनलाल कृत संपूर्ण समाप्तः लिखा गौरी दयाल कायस्थ दर्जा ३ स्कूल सीता रामपूर ॥

विषय—गणित वर्णन है ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के कर्त्ता पंडित मोहनलाल थे जिन्होंने अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किया था । लिपिकाल संवत् १९१३ वि० है ।

संख्या २३२ सी. गणित निदान, रचयिता—मोहनलाल ब्राह्मण, कागज—देशी मोटा, पत्र—७२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९४४, खंडित, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०९ = १८५२ ई०, लिपिकाल—सं० १९११ = १८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—हरिहर सिंह ठाकुर, स्थान—छावनी मोहल्ला एटा, डाकघर—एटा, जिला—एटा ।

आदि-अंत—२३२ ए के समान ।

संख्या २३३. कहानियों का सग्रह, रचयिता—मोतीलाल (लखनऊ), कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामभरोसे, ग्राम—देवकली, डाकघर—माहरहटा, जिला—एटा ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ कहानियों का संग्रह लिख्यते ॥ एक साहूकार पोतड़ो का रज्जा समय के फेर में पड़ अपना धन सब खो बैठा और लगा निपट दुख पाने और उपासा रहने निदान उसके जी में यह सोच आया कि जो मैं किसी महापुरुष या सिद्ध के पास जाऊं तो यह दुःख मिटे क्योंकि सुना भी है कि साधु के दर्शन से व्याध जाती है यह विचार चला चला एक जोगी के पास गया । यह उससे कुछ कहने न पाया कि उसने अपने योग से इसका मनोर्थ जान करके कहा—दोहा—सुख दुख प्रति दिन संग है । मेटि सकै नहिं कोय । जैसे छाया देह की । न्यारी नेक न होय ॥ यह उत्तम उत्तर पा वह विचारा धीरज धर अपने घर आया ॥

अंत—एक बूढ़ा बटोही गरमी की ऋतु में तपन की प्रचण्ड किरनों से निपट कष्ट पाकर लाठी टेकता चला जाता था । मारग में एक जवान घोड़ा पर चढ़ा आ निकला । बूढ़े को देखकर उसे दया आई और बोला अजी मै जवांन आदमी हूं शीत घाम सब सह सकता हूं तुम बुढ़ापा के कारण बहुत थके हो अब इस घोड़े पर चढ़ो । मै पीछे पीछे चला

जाऊंगा। उसकी इस करुण वाणी से प्रसन्न हो बूढ़ा उसके घोड़े पर चढ़ा और जवान पीछे पाछे पैदल जाने लगा।

वह बहुत दूर न गया था कि जवान ने पुकार कर कहा अरे बूढ़ निलज्ज घोड़े पर से उतर क्या तूने अपना घोड़ा पाया है सो सारा दिन उस पर चढ़ा चला जाता है। बूढ़ा शमा कर उतर पड़ा और धीरे धीरे चलने लगा। थोड़ी दूर गया था कि इसका कष्ट देख फिर उसके जी में दया आई और बहुत सी विनती कर फिर उसे घोड़े पर चढ़ाया। थोड़ी दूर जाकर उसे फिर उसी भाति उतारा निदान दो तीन बार उसे इसी प्रकार चढ़ाने उतारने से बूढ़े ने पूछा तुम्हारे पिता का नाम क्या? बोला सैय्यद हब्बो। फिर उसने तुम्हारी महतारी का नाम क्या? उसने कहा बीबी जीरा पर वह कुलवान नहीं उसके ब्याह से हमारे कुलमें दाग लगा। यह सुनते ही बूढ़े ने कहा हा बाबा अब मैं समझा कि चढ़ावै उतारैं जीरा। अब आप चलिये मैं गिरते पड़ते चला जाऊंगा इति श्री कहानियों का समह सपूर्ण लिखा लाला सुख वासी लाल पटवारी संवत् १९३० आषाढ़ मास शुक्ल पक्ष दशमी।

विषय—इस ग्रन्थ में १०० मनोहर कहानियाँ लिखी हैं।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के समहकार मोती लाल थे। ये लखनऊ निवासी थे। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति को किसी सुख वासी पटवारी ने संवत् १९३० वि० में लिखा।

सख्या २३४ ए धर्मसवाद, रचयिता—सुखदास (पंजाब), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—९ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९० = १८३३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामकिशन कुरमी, ग्राम—अतरौली, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ सुख दास कृत धर्म सवाद लिख्यते ॥ ॐ द्वारा पुर विषे कथा होत भई नगर शुद्ध हस्तनापुर दीली के पास ति विषे गुरां कोल पूछत भई। ॐ राजा जन मेजय राजा परीक्षित का बेटा पाण्डव का पोता। हे वैशपायन जी राजा धर्म अरु पुत्र युधिष्टिर इनका मिलाप क्योंकर होइहै सो तुम कृपा करके कहो॥

अत—धर्मोवाच—हे राजा जी तेरी अखल बहुत होवे हे पाण्डव पुत्र तू चिरजीवी होय। सवाद करके अरु राजा धम देव लोक विषे प्राप्त भया धम करके शत्रु भी दूर होता है। धम करके ग्रह भी दूर होता है जिथे धर्म उथे दया है॥ इति श्री धर्म सवाद सुख दास कृत सपूण समाप्त लिखत राम दास सवत् १८९० वि० आश्विनि सुदी दशमी।

विषय—महाराजा युधिष्ठिर और धम का सवाद वणन।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता सुख दास पजाब निवासी थे। इनका और कुछ पता नहीं। लिपि काल सवत् १८९० वि० है।

सख्या २२४ बी दुर्गास्तुति, रचयिता—सुखदास, पत्र—४, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९६, प्राप्तिस्थान—लाला छीतरमल, ग्राम—शाहजीत का नगला, डाकघर—लखनऊ, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ दुर्गा अस्तुति लिख्यते ॥ चौ० गुरु गणेश के चरण मनाउं । जेहि प्रसाद देवी गुण गाऊ ॥ प्रथमहिं सुमरौ वंदी माया । जेहि सुमरे ते निर्मल काया ॥ सौरो देवी आदि कुमारी । जेहि सुमरे सिधि होइ हमारी ॥ सुमरौ दुरगा मन चित लाई । दुख दारिद्र पाप छुटि जाई ॥ अस्तुति करौ भवानी केरी । सुनियहु सत कहौ मैं टेरी ॥ जा सुमिरे दुख भंजन होई । रोग आदि दुख रहे न कोई ॥

अंत—कलयुग कलि मप जाइ नसाई । अस्तुति पढ़ै सदा चित लाई ॥ कोढ़ी पढ़ै कुष्ट छय जाई । दाद खाज सब शीघ्र नसाई ॥ विद्यार्थी विद्या को पावै । पुत्र अर्थि को पुत्र मिलावै ॥ जो जो मन में इच्छा लावै । सो इच्छा संपूरण पावै ॥ दिन प्रति अस्तुति जो कोइ ध्यावै । कहि सुष दास परम पद पावै ॥ इति दुर्गा अस्तुति सपूर्ण समाप्तः लिखत रामदास चेला गंगादास अस्थान राममठी भादों सुदी ३ संवत् १८९६ वि०

विषय—भगवती दुर्गा की महिमा का वर्णन ।

संख्या २३४ सी. भगवती अस्तुति, रचयिता—सुखदास, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६ × ५ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९७=१८४० ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा रामदास, ग्राम—दही नगर, ग्राम—टेढ़ा, जिला—उन्नाव ।

आदि-अत—२३४ बी के समान ।

संख्या २३४ डी. गर्भगीता, रचयिता—सुखदास (पंजाब), पत्र—३२, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१०, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९० = १७३३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० देवनद मिश्र, ग्राम—हबीबगंज, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः अथ गर्भ गीता सुप दास कृत लिख्यते ॥ अर्जुनवाच ॥ ॐ अर्जुन श्री कृष्ण भगवान पास पूछता है श्री कृष्ण जी उत्तर देते है ॥ श्री कृष्ण जी की आज्ञा है कि जो कोई इस गर्भ गीता का मन लाय कर पाठ सुनै तिसके निकट जम किंकर आवै नही । बचन है श्री कृष्ण जी का । श्री कृष्ण अर्जुन सवाद करते है पुन्य पाप विचारते है जो कोइ इहु वचन पाठ सुनै कमावै अरु रहते रहै सो मुक्ति होयगा ॥ अर्जुनवाच ॥

अंत—श्री भगवानुवाच—हे अर्जुन धन्य तेरे ज्ञानुकों और वैष्णव धर्म तेरा तुझको भावता है और देखिया दो अक्षर है अरु जे हरिहर सदा जपिये । हे अर्जुन वैष्णव अस्नान करिके ॐ नमो नारायण श्री मन्त्र एक मन होइ कर जपै सो मेरा भगत है सो वैकुन्ठ को प्राप्त होता है सो मेरा भगत जानना अरु साधू भगत छोडिके मनुष्य के गर्भ वास होता है । हे अर्जुन मनुष्य की देह में साढ़े तीन करोड़ रोमावली है तब लग नरक मे जाता है । यहै गर्भ गीता है । इति श्री गर्भ गीता अर्जुन श्री कृष्ण सवाद संपूर्ण समाप्तः ॥

विषय—श्रीकृष्ण और अर्जुन के संवाद के रूप में ज्ञान एवं धर्मोपदेश ।

सख्या २३४ ई गर्भगीता, रचयिता—मुखदास, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, रूप—बहीखाता तुल्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९१ = १८३४ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामऔतार अध्यापक, ग्राम—नगला बीरसिंह, डाकघर—मारहरा, जिला—एटा ।

आदि अत २३४ डी के समान । पुष्पिका इस प्रकार है —

इति श्री भगवत्गीता कृष्ण अर्जुन संवाद गर्भ गीता सपूर्ण समाप्त स० १८९१ वि० ।

सख्या २३४ एफ गर्भगीता, रचयिता—मुखदास, पत्र—३६, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप)—२०८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८१२ = १७५५ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामस्वरूप, ग्राम—लमौरा, डाकघर—रामपुर, जिला—एटा ।

आदि-अत—२३४ डी के समान । पुष्पिका इस प्रकार है ।

इति श्री गर्भ गीता श्री कृष्ण अजुन सवाद समाप्त सवत् १८१२ वि० ।

सख्या २३४ जी सारगीता रचयिता—मुखदास (पजाब), कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८१२ = १७५५ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामस्वरूप, ग्राम—लमौरा, डाकघर—रामपुर, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ सार गीता लिख्यते ॥ अर्जुनोवाच—अर्जुन श्री भगवान जी से प्रश्न करे हैं कि हे परमेश्वर जो ऊँकार का महातम और रूप और असथान तिनके सुनने की मेरे वाछा है । तुम कृपा करके कहौ । श्री भगवानो वाच ॥ हे अर्जुन तुम ने बहुत भला प्रश्न किया है अब ऊँकार का महातम विस्तार कर कहता हौं तू सुने । यह गीता सार है । ब्रह्मा विष्नु महेश्वर इसकी रक्षा करने हारा है ॥ और अग्नि वायु सूरज यह इसके देवता हैं गायत्री जगत्री त्रिष्टुप एटु तानो इसके छद हैं और अग्नि असथान है ॥ तहा चारों वेद हैं ॥ रिग्वेद युजुर्वेद, सामवेद, अथवण वेद चारों वेदों कारन है ॥

अत—रे मनसो तिस फल को तुम क्यों नहा खाते । पापों के अज्ञान को वरचन करन हारी है । बारबार भली भाति सदा सवदा गीता का पाठ कीजै अथवा श्रवण कीजै और शास्त्र का विस्तार श्री कृष्ण के निमित्त कीजै । कमल नाभ जो है श्री कृष्ण कृपानिधान श्री नारायण जी तिनकी मुख कमल ते निकसी है और श्री मुख वाक्य है गगा गीता गायत्री गुरु गोविन्द इन पाचो का राग करै सो पुनजन्म को न पावै जो कोई इस सार गीता का जथा शक्ति अभ्यास करै अर पाठ मात्र करै सो विश्नु के विद्मान जाइ प्रापति होय इसके आगे क्या कहैं इति श्री सार गीता सपूण समाप्त शुभम् लिखत सवत् १८१२ वि० लिखा राम गोपाल पाठक माधौ गज ॥

विषय—भगवद्गीता का सार वणन ।

संख्या २३४ एच. सारगीता, रचयिता—मुखदास (पंजाब), पत्र—२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६०=१८०३ ई०, प्राप्तिस्थान—रामभजदत्त, ग्राम—हस्तपुर, डाकघर—चांदपहाडी, जिला—अलीगढ़ ।

आदि-अंत—२३४ जी के समान । पुष्पिका इस प्रकार है:—इति श्री भगवद्गीता श्री कृष्ण अर्जुन सवादे सार गीता संपूर्ण शुभम् सवत् १८६० वि० ॥

संख्या २३४ आई. गीतासार, रचयिता—मुखदास (पंजाब), पत्र—८, आकार—७$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{3}{4}$ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५, रूप—प्राचीन, लिपि—फारसी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर शिवनाथसिंह जी, रईस, ग्राम और डाकघर—इतमादपुर, जिला—आगरा ।

आदि-अंत—२३४ जी के समान ।

संख्या २३५. हनुमान स्तोत्र, रचयितः—मुक्तानन्द मुनी, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—७ × ५$\frac{1}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० जीह्वाराम शर्मा, ग्राम—सौराई, डा०—खन्दौली, जि०—आगरा ।

आदि—श्री हनुमाने नमो नमः । अथ हनुमान स्तोत्र लिख्यते । इदव छंद—नीति प्रवीन सवै निगमा गम शास्त्र में वुद्धि रुप के अपारा । श्री रघुनाथ के मंत्री अनूप हो ताहि तै राम को प्रान से प्यारा । प्रौढ़ शरीर सिंदूर से सोहत नैपिक के मध्य इन्द्र उदारौ । श्री रघुवीर के इव महावल कष्ट हरौ हनुमान हमारौ । जानकी कारन श्री रघुनाथ के अन्तर भे भयौ कष्ट अनता । टारिन ताहि सहायक एक हने मनुजाद महा वलवंता । जारि निशाचर नाथ के लंक महामुनि सिद्ध प्रशसत संता । श्री रघुवीर दूत महाबल संकट मोर हरौ हनुमता ।

अंत—यह पुस्तक जो पढ़े तासु सब संकट नासै, राम दूत हनुमत सदा दग आगे भासै । विघन होत सव नाश मगन होई हरि गुन गावै । पाप पुंज सब तरह वहुरि भव में नहि आवै, धन धाम पुत्र सपत बढै पद्म चरण रति पावहि, मुक्ति कहे सो भक्त के संकट विकटन आवहि । इति मुक्ता नद विरचित श्री हनुमान स्तोत्र सपूर्णम् । श्रीराम । श्रीराम ॥

विषय—हनुमान जी का स्तोत्र ।

संख्या २३६. ज्ञानमाला, रचयिता—मुकुन्दराय, कागज—देशी, पत्र—९०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—रसूल खां काजी, स्थान—गाङ्गीरी, डाकघर—सलेमपुर, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ मुकुन्द रायकृत ज्ञान माला भाषा लिख्यते ॥ एक दिन राजा परीक्षित गदी पर बैठे थे ता समय श्री व्यास जी के पुत्र शुकदेव जी आये । राजा देखते ही सिंहासन से उठ खड़ा हुआ और रिषि के चरणारविंद में गिर के साष्टांग

दडवत की फिर वड़े आदर और सत्कार सहित उनको सुन्दर स्थान में ले जाकर रतन जटित सिंहासन पर वैठाय दोऊ चरण चरण कमलों को धोय के चरणोदक लिया।

हे मनुष्य जो इन तीन वातन को अपने चित्त सों कभी न्यारी नहीं करै तो इस लोक और परलोक में परम सुख पावे। प्रथम स्वामी की सेवा में हस मुख और निर्लोभ रहै दूजे चाकर के मन को दुखी न राखे। तीजे क्रोध न करै। इति मुकुन्दराय कृत ज्ञान माला भाषा समाप्तम् शुभ लिखत शिवनद गुजराती ब्राह्मण सवत् १९०० वि० तिथि दुइज भादवा कृष्ण पक्ष॥

विषय—इस ग्रन्थ में श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को व्यावहारिक शिक्षा दी है। जो ऊ चनीच कर्मों से सबध रखती है।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रथ के रचयिता मुकुन्द राय थे। ये जाति के ब्राह्मण थे। इनका और कुछ पता नहीं। लिपिकाल सवत् १९०० वि० है।

सख्या २३७ रविव्रत कथा, रचयिता—मुनीन्द्र जैन, कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—९ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७५, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७४३ वि० = सन् १६८६ ई०, लिपिकाल—स० १८५५ = सन् १७९८ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा खड्गी राम पुजारी, ग्रा०—अलीगज, जिला—एटा।

आदि—श्री वीतरागाय नम॥ अथ रवि व्रत कथा लिख्यते॥ चौपाइ—पारस नाथ वन्दों धरि भाव। सरस्वति माता करौ पसाव॥ सुगुरु गुरु चरण कमल चितधरा। रवि व्रत नीक कथा यह करौं कासी देश बनारस ग्राम। सेठ वड़ो मति सागर नाम॥ तासु घरनि गुण सुन्दर सती। सात पुत्र ताके सुभमती॥ सहस्र कूट दैत्याले एक। आये मुनिवर सहित विवेक। आगम सुनि सव हरपित भये। सवै लोक वदन कौ गये॥ वदे जाति पति पूजे पाइ। राजा लोग सवै सिद्धराय॥

अत—गढ़ गोपाचल नग्र भलो सुभ थान वखानो। दवेन्द्र कीर्ति मुनिराज भये तप तजे प्रमानो॥ तिनके पद पट विराज ही सुरेन्द्र कीर्ति जु मुनीन्द्र सकल भटरे पति पर मं कल्स सघ आनन्द॥ सवत्—सवत विक्रम राइ भले सत्रह सै मानै। ता ऊपर तेतालिस जेठ सुदि दसमी जानै॥ वारजु मगल वार हस्त नक्षत्र जु परियो। तब यह रवि व्रत कथा मुनीन्द्र रचना शुभ करियो॥ वार वार हौं का कहौं रवि व्रत फल जु अनत। पचन मिलि जु कृपा करी दीनो पट सु महत। गाव विरथरा वसहिं गोत पडा जु वखानौं। जैसवार जसवत साह भगवतह जानौं॥ तिनकी त्रय गुणवत शील सजम कहि पूरी॥ उपजै कुपि द्वै रतन साह पिर मल वूड़ी चदजू॥ हेमचन्द कुल वश वचन अपने प्रति पालैं॥ अवगुण को दे त्यागि भले गुण मन में राखै॥ तिन सकल कीर्ति साह तुम हो गुण गुणवंत सोर॥ एतवार व्रत की कथा तुम जु करौ एक और॥ जौ लौं सूरज चाद रहे ग्रह तारा मडल॥ रहै सुदरसन मेरु षीर सागर सपूरन॥ जौ लौं पिरथी चद सै निजु वढ़ौ वश कुल॥ सकल कीर्ति सो ऐसो कह्यौ दूजो अपय भडार॥ सकल पेट परिवार करौ सुख

भोग जू ॥ इत आदित वार व्रत कथा सपूरण । श्रावण मासे सुकुल पक्षे चतुरदशी गुरुवासरे संवत् १८५५ वि० ।

विषय—रवि व्रत कथा के इसमें अनेक दृष्टान्त वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के रचयिता मुनीन्द्र जैन थे । इनका वास विरथरा में था । ये गोपाचल गढ में आकर रमे थे । जहा जैसवार जसवत साह थे । इनके रतनसाह्व पिरथीमल, बूडीचन्द, हेमचन्द थे । ये जेसवार जैन धर्मावलम्बी थे । इनको इतवार व्रत की कथा सुनाई गई और मुनि राय ने आशिर्वाद दिया । निर्माण काल सवत् १७४३ वि० है । लिपिकाल सवत् १८५५ वि० है । निर्माण काल का दोहा इस प्रकार है:—संवत विक्रम राय भले सत्रह सै मानै । तापर तेतालीस जेष्ठ सुदी दशमी जानै ॥ वारजु मगलवार हस्त नक्षत्र जु परियो । तब यह रवि व्रत कथा मुनीन्द्र रचना सुभकरियै ॥

संख्या २३८. चित्रगुप्त की कथा, रचयिता—मुन्नूलाल कायस्थ, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—८३/४ × ५३/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५१, लिपिकाल—स० १८८५, प्राप्तिस्थान—बाबू शिवकुमार प्लीडर, डा०—लखीमपुर खीरी, जि०—लखनऊ ।

आदि—श्रीगणेशायनमः ॥ श्री गौरी नमः ॥ नमो नमो गन पति गुन ज्ञाता । सिद्धि होत जाते सब वाता ॥ नमो नमो गुरुदेव गुसाईं । गुरु समान जगमें कोउ नाही ॥ नमो नमो त्रिभुवन के स्वामी । नमो नमो प्रभु अन्तरजामी ॥ नमो नमो श्री आदि भवानी । नमो नमो जगदबे रानी ॥ नमो नमो शंकर त्रिपुरारी । संकट हरन महा सुभ कारी ॥ नमो नमो शिव शकर नाथा । गौरा पारवती जिहि साथा ॥ नमो नमो श्री गंगा माई । जेहि दरसन से दुख मिटि जाई ॥ नमो नमो भारत द्विज देवा । निसिदिन करौ तुम्हारी सेवा ॥ नमो नमो पृथ्वी आकासा । सूरज चन्द्र जहाँ परकासा ॥ नमस्कार कर जोरिकै । कहत सुनहु सव देव ॥ चित्र गुप्त की अव कथा । तुम पूरन करिदेव ॥

अंत—मुनि पुलस्य वोले तिहिं ठाईं । है यह कृपा वहुत सुखदाई ॥ जम दुतिया को जो दिन होई । कातिक माँझ होति है सोई ॥ जो नर वादिन पूजा करई । सुमिरन उनकी मनमें धरई ॥ विविध भाँति सी ध्यान लगावै । अरु पूजा की सौझि धरावै ॥ धूप दीप नैवेद्य मँगावै । अक्षत सहित पुहप सव लावै ॥ दही दूध पकवान मिठाई । व्राह्मण को वहु देइ जिमाई ॥ चित्रगुप्त प्रसन्न वहु होवैं । ताको पाय दुःख सब खोवैं ॥ जो जन कहै सुनै चित ल्यावै । बिष्णु लोक की पदवी पावै ॥ दोहा ॥ चित्रगुप्त की यह कथा । चित दै सुनै जो कोय । ताको दुःख रहै नहीं । बहु सुख प्रापति होय ॥ तमाम तमाम शुद ॥ पोथी चित्रगुप्त जी वखत्ते नाफिस वन्दा गुरुदयाल वल्द महताव राय इब्न खरमराय कौम का कायस्थ कानून को परगने काकोरी सरकार दारुल सलतनत लखनऊ मसाफ सूवै अवध अख्तर नगर दर अहदे हजरत नसीरुद्दीन हैदर दाम इकवाल हू अजलालहू दरमाह कुआर तिथि सुदी चतुर्दशी बाके तारीख दवाज दहम शहर रबी उस्सानी सन् १२४६

हिजरी वख्त इस माह रोज बरामदा व रोज जुमा तहरीर याफ्त ॥ हरकि दवा कुनद बातिल गरदद । न विश्ला बिमानद सियह बर सफेद । नवाँ सिन्दारा नस्ते फदी उम्मेद ॥

विषय—पृष्ठ १ से १० तक—चित्रगुप्त की कथा और कवि परिचय—अब मैं अपनी बात बताऊँ । सब दासन को दास कहाऊँ ॥ मुन्नू लाल नाम मम जानों । इन्द्र जीत को सुत पहिचानौं ॥ कायथ माथुर मोहिं बखानों । अल्लमहाउले मोको जानें ॥ सैर कोट स्थान कहायो । प्रयाग मध्य जन्म जो पायो ॥ ग्रंथ निर्माण काल—भादों मास पक्ष उजियारा । तेरसि तिथि औ रविवारा ॥ संवत अट्ठारह सै इक्कावन । पूरन भई कथा मनभावन ॥

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ इन्द्र जीतात्मज मुन्नूलाल माथुर कायस्थ की रचना है । इनकी अल्लमाउले थी और यह प्रयाग के मध्यवर्ती सैरकोट नामक स्थान के निवासी थे । इन्होंने चित्रगुप्त की संक्षिप्त कथा दोहे चौपाइयों में लिखी है । वर्णन प्रायः साधारण हैं । ग्रंथ के प्रति लिपि कर्ता ने भी अपना पूरा परिचय पुस्तक के अंत में लिख दिया है । उससे ज्ञात होता है कि यह किताब गुरुदयाल कायस्थ ने लिखी है । इनके पिता का नाम मह ताब राय और प्रपितामह का नाम खग राय था और ये हजरत नसीरुद्दीन (नवाब अवध) के अहदमें परगने काकोरी के कानूनगो थे ।

संख्या २३९ प्रियव्रत या ध्रुवचरित्र, रचयिता—मुरली, कागज—देशी, पत्र—९, आकार—८¾ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मु० काशी राम, ग्राम—रायभा, डाकघर—अछनेरा, जिला—आगरा (उ० प्र०) ।

आदि—विश्वरूप धरनी धर जग नाथ शिवजू । विश्वरूप धरनीधर जगन्नाथ शिवजू । विश्वरूप धरनीधर जगन्नाथ शिवजू । अठ सातिया । इ काले ब्रह्मा संकरे । विष्णु निरंजनं । मध्य निरंजनं । तत्वपद नियरुप । आकार निराकार । अविनासी अखंडित । सोहमन विसराम । काया क्षेत्र तकि राम । २ ।

अंत—सूनी तारी पुरानी पुनीया ? सख्या घोड़े टोलें ननीया । ध्रुवकी सुनी श्रवनन अवाजा । ततक्षण उठि धाये राजा । ५३ । नांगे पायन पिछ हों नीवहीया । इतहत जाइ मिले दल महिया । रथ ते उतरि पुत्र पिता के पायन परे । पिता पुत्र को उपदेश करे । ५४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

विषय—ध्रुव चरित्र ।

संख्या २४० शृंगार सार, रचयिता—मिश्र मुरलीधर, कागज—बाँसी, पत्र—४, आकार ७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—श्री बहुरी चिरंजी लाल जी, स्थान—भैरो बाजार, जिला—आगरा ।

आदि—भाव लक्षन ॥ रस उपजत है भाव ते भाव सु पाँच प्रकार । भनि विभाव अनुभाव अरु सात्विक थिर संचार ॥ रच अनुकूल है विकार मन वहै भाव अनुभाव जिनिते विकार मन जानिये ॥ विभाव विसेपना है आवन की सोहे भाँति आली वन इक पूजो

उद्दीपन मानिये ॥ सात्विक है आठ स्तम्भ स्वेद रोम स्वर भग वे पथु विवर्ण आँसू प्रलय वखानिये ॥ ते तीस है सचारी तो स्थाई रति पुष्ट करै न वही सिगार रस पूरौ पहिचानिये ॥

अंत--दोहा-- ऐ हो ओरी हाव है दम्पति के संयोग । इनको काई कविन ने, वरन्यौ नारि वियोग ॥ ४२ ॥ यह सिगार रस सार की, पोथी रची विचारि ॥ भूल्यों हो उनहां कछु लीजे सुकवि सुधार ॥ इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचित श्रृंगार सार ७४ ॥ ॥ शुभम् भूयाम् ॥

विषय—श्रृंगार रस की विवेचना ।

संख्या २४१. भागवत दशमस्कध, रचयिता—नागरीदास, पत्र--४०६, आकार—१२ X ८ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७५५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० विद्याराम शर्मा, ग्राम—उगनपुरा, डाकघर—वाह, जिला--आगरा ।

आदि—''''''छद पद्धरि । इक समय कियो वसुदेव ब्याह । रथ चढ़ि चले करिके उछाह ॥ तीय पुरुष एक रथ वैठि लीन । हय रश्मि कस नृप ग्रहन कीन । भगिनी हित काजे कंस राइ । सतरु कम स्थिनि विच लिये जाइ । सूत दये दाइ जे गज सुचारि । सुवरन माला तिहि कठ अरि । दस पांच सहस घोरा सुदीन्ह । क्षत दसरु आठ रथ संग कीन्ह । सत दोइ दई दासी सुचारु । वर भूषन अम्बर सुजि सुदारु । अवनीस सुता पर प्रीति मान । अनगिनत विदा देय ताहि दान मृदु मृदग वाजे वजाइ । वर वधु मंगल सुगाई । कवित्त—हाथ मे है हय रसमी गहे जात मारग में खेहि कंस तो सो कहि देव वानी है । आठवो गरभ याको मारि है सुतो को मूढि जाहि लिये जातु जिय भगनी सुमानी है । ऐसे सुनी कान्ह तब भोज कुल दोवन ने गहि करवाल के समाखि कै ठानी है । कठिन कठोर निरलज्ज अति देख्यो ताहि वोले वसुदेव वर कोमल सुवानी है ।

अत – कूरम कुल मधि प्रगट नृपति जोरावर सिंह वर । अम्बरीप ज्यौ भक्ति दीन जन पै करुना कर । भये मुहब्बत सिह पुत्र तिनके सुभ हारथ । राजा राव प्रताप सिह तिन सुत सम पारथ । अरि प्रबल नबल कीने जिन निज भुज दण्ड प्रताप करि । मनि नागर अठस सुरेस ज्यौं रह्यौ सदा सिर क्षत्र धारि । दोहरा । साह फकीर जु दास के वालकृष्ण सुत जानि तिनके छाजू राम जू हरि जन मांझ प्रधान । छप्पै । छाजूराम दिवान राजा के प्रतिनिधि । दई कृपा करि ताइ भक्ति लखि ईस सकल विधि । दाता करन समान सूर जाहर जस आयौ । गोदानन के काज मनो मृग फिरि घर आयौ । इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे भाषा साह छाजू रामर्थ नागरीदासेन कृतम् ।

विषय—श्री कृष्ण का चरित्र वर्णन ।

संख्या २४२. फोकमजरी, रचयिता--कवि नहसूर, पत्र--२८, आकार—६ X ३½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४९०, खडित, रूप —प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान--बाँकेलाल, ग्राम—फतेहाबाद, डाकघर--फतेहाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नम । श्री सरस्वत्यै नम । अथ कोक मजरी लिख्यते । दोहा । ललित सुमन धन अलि पनिच चेतन छवि अभिनव कद मधु हितु हितु ऋतु सन सु जै जै मदन अनद । छप्पै । अभिनव जल धर वरन सकज सुख चरण सों सुतरति पति मधु रूति हितौ प्रगट विकत पति जिहि नित पुरप चाप अलि पनिच पच सायक जग रजन जुलचेर चपल पलाक असुर सुर नरवर गजन सुरनि पसुनि परिनि सधति अलि आनद प्राणन करत सो जयो नित नागरन जो धरधरा जिहि नरा धरन । २ दोहरा वरनौ काम अभिराम छवि वरना भामिनि भोग सकल कोक दधि मथन करि रच्यो सार सुख जोग ।

अत—मनुप रूप ह औतन्यो तीन रात की जोग द्रव्य उपाजन हरि भजन और भामिनि भोग । भगत एक भगवत्त की भाग सभामिनी भोग । यह सकल में सुख करण यहु दुख हरण वियोग । पिंगल विनु छद रच अर गीत विनु मान कोक पद विनु रति करै तिनहु न रच बरयान कोक पदे विनु रति करै विनु दीपक निस धाम ता कारण रचना रची कोक मजरी नाम । ललित वचनि तिनि कविनि के सुरत करत सब कोइ द्रग भजति सब कामिनी भेद सयन में होइ । छप्पै । ललित वचा ते जानि श्रग २ सुनि २ औलि जहि उकति जुगति वसु आनि समुझि गुर लघु गुण किजहि रति विनोद तिहि मानि । कोक गति जो जन जान सवल भेद निरखहि येलि वहु विधि ठान अजन सुनैन भामुवजति नयन फेरि कटाक्ष हसि मनु हरै कवि नाह सुर ।

विषय—इसमें क्रमश इन विषयों का उल्लेख है । स्त्री पुरप भेद, उनके लक्षण शुभाशुभ दीप, नुसखे, आसन, रति के अयोग्य क्रिया । अंत में वाजीकरण औषधियों का वर्णन है ।

सख्या २४३ स्वामी नामदेव जी का पद, रचयिता—नामदेव, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८×६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७१० = १६५३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा हरीदास जी, ग्राम—छर्रा, डाकघर—छर्रा, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—राम जी सति ॥ अथ श्री स्वामी नाम देव जी का पद लिख्यते ॥ राग टोडा नाम दव पायो नाम हरी । जम आइ का करि है वौरे अब मेरी छूटि परी । भाव भगति नाना विधि कीन्हीं फल काको न करी । केवल ब्रह्म निकट लै लागी मुकति कहा बपुरी ॥ नाय लेत सनकादिक तारे पार न पायो तास हरी । नाम दव कहै सुनो रे सतो अब मोंहि समझ परी ॥ १ ॥ राम रमे रमि राम सभारे ॥ मैं न्लि ताकि छिन न विसारे । टेक । सरीर सभागी सो मोहिं भावे । पार ब्रह्म का जो गुन गावे । सरीर धर की इहै बड़ाई नाम दव राम नवी सरिनाइ ॥ २ ॥ राम नाम जपिवो श्रवनन सुनिवो सलिल मोह में वहि नहि जाई । अकथ कथ्यो न जाइ कागद लिख्यो न जाइ अखिल भुवन पति मिल्यो सहज भाई ॥ राम माता राम पिता राम सब जीव दाता मन तन भईया छिपी कहींदे फुकारि गीता ॥

अत—राग धनासी । कहा लै आरती दास करै । तीनि लोक जाकी जोति फिरै ॥ टेक ॥ कोटि भानु जाके नष की सोभा कहा भयो कर दीप फिरै । सात समुदर जाके भरण

निवासा कहा भयो जल कूप भरे । अणंत कोटि जाके वाजा वाजै कहा घंटा झुलकार करै ॥ चौरासी लप व्यापक राम्या । केवल हरि जस गावै नामा ॥ १ ॥ आरती पति देव मुरारी, चंवर ढुरै वलि जाउं तुम्हारी ॥ टेक ॥ चहु जुग आरती चहु जुग पूजा चहुं जुग राम अवर नहिं दूजा । आरती कीजे अैसे जैसे ध्रुव प्रहलाद करि सुष तैसे ॥ आनद आरती आतम पूजा नाम देव भणै मेरे देवन दूजा ॥ २ ॥ इति श्री नाम देव का पद संपूर्ण समाप्त

विषय—ब्रह्म ज्ञान वर्णन ।

संख्या २४४ ए. अनेकार्थ मजरी, रचयिता—नददास, पत्र—११, आकार—७ × ४½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८१४ = १७५७ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० श्रीरामजी शर्मा, प्रधानाध्यापक, ग्राम—मई, डाकघर—बटेश्वर, जिला—आगरा ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ ॐ ॥ अथ अनेकार्थ मजरी लिप्यते ॥ दोहा ॥ जो प्रभु जोति मय जगत मय कारन करन अभेव । विघन हरन सव शुभ करन, नमो नमो तिहि देव ॥ १ ॥ एकै वस्तु अनेक है जगमगात जग धाम । जिमि कंचन ते किंकिनी, कंकन कुंडल नाम ॥ २ ॥ उच्चर सकत न सस्कृत, अरु समझन असमर्थ । तिन हित नन्द सुमति जथा, भाषे अनेक अर्थ ॥ ३ ॥ गो शब्द नाम ॥ गो इन्द्रिय दिग वाक जल, स्वर्ग वज्र पग चंद । गोधर गोतरु गो किरनि, गोपालक गोविंद ॥ ४ ॥

अंत—दान नाम ॥ दान द्विजन को दीजिये गज मद कहिये दान । दान सॉवरो लेत वन, गोपी प्रेम निधान ॥ ११६ ॥ रस नाम ॥ रस नव रस घृत रस अमृत, रस विष अकरस नीर । सव रस को रस प्रेम रस, ताके वस वलवीर ॥ ११७ ॥ सनेह नाम ॥ तैल सनेह सनेह कृत वहुन्यो प्रेम सनेह । सो निज चरनन गिरधरन, नद दास कहँ देहु ॥११८॥ जो इहिं अनेकारथहि सदा, पढ़ै सुनै नर कोइ । ताको अनेक अर्थ सु इहां, पुनि परमारथ होइ ॥ ११९ ॥ इति श्री अनेकारथ मजरी स्वामी नददास जी कृत सम्पूर्ण ॥ संवत् १८१४॥ वर्षे अषाढ़ शुक्ला ११ भौम दिन ॥

विषय—अनेकार्थ सवधी शब्दो के नामों का दोहो मे उल्लेख ।

सख्या २४४ बी. अनेकार्थ मजरी, रचयिता—नददास, कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप् —५६०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०१ = १८४४ ई०, प्राप्तिस्थान—वैद्य रामदास, ग्राम—बाबुलपुर, डाकघर—मेंडू, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥ तं नमामि पद परम गुरु कृष्ण कमल दल नैन । जग कारण करुणार्णव गोकुल जाको अैन ॥ नाम रुप गुणा भेद लहि प्रगट तस वही ओर । ता विनु तहां जुआन कछु कहे सुअति बड ओर ॥ उचरित सकत न संस्कृत जाहत नाम तिन लगि नंद सुमति जथा रचत नाम के दाम । ग्रंथ निनाना नाम को अमर कोस की भाय । मान वति के मान पर मिले अर्थ सब आय ॥ स्वच्छ वछु उर पिय के निरपि आपनी काय । ताते उपज्यो मान हिय आन तिया के भाय ॥ मान नाम ।

स्वदप अहकार मद गव समय अभिमान मान राधिका कुवारी को सबको करत कल्यान ॥ सखीनाम् ॥ वयसा सध्रीची सखी हितू सहचरी आहि। अलीकुवर नदलाल की पली मनावन ताहि ॥

अत—ध्रुवनाम ध्रुव निश्चय ध्रुव जोग पुनि ध्रुव जो ध्रुव पद ताल । ध्रुव तारे जिमिते अटल भजियो श्री गोपाल ॥ सुमनस । सुमन ससुर सुमनस पुहप सुमनस वहुरि वसत । सुमनस तेनित मन वैसे कोमल कमलाकत ॥ विटप नाम । विटप श्रंग पलुव विटप विटप कहत विस्तार विटप वृक्ष की डार गहि ठाढे नद कुवार ॥ रसनाम ॥ रस नव रस घृत रस अमृत रस विष रस रस नीद । सवरस को रस प्रेम है जाके वस वल वीर ॥ स्नेह नाम ॥ स्नेह तेल अरु स्नेह घृत वहुरो प्रेम स्नेह सा निज घर नव गिरधरन नद दास को दह ॥ इति श्री नददास कृत अनेकार्थ मजरी समाप्त लिपि कृत ब्रह्म नारायण जोसी वासी माधोपुर का सवत १९०१ माग शिर कृष्ण तिथौ चौथ ॥ पम्नाथ श्री राव जी अजुन सिंघ ॥

विषय—अनेक शब्दो के अनेक नाम लिखे हैं ॥

सख्या २४४ सी अनेकार्थ, रचयिता—नददास, पत्र—३०, आकार—६ × ३ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५२ = १७९५ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर प्रताप सिंह, ग्राम—पटौटी, डाकघर—होलीपुरा, जिला—आगरा।

आदि-अत—२४४ के समान। पुष्पिका इस प्रकार है —

इति श्री नददास कृत अनेकार्थ सम्पूर्णम्। शुभ मस्तु। लिखित भवानी सिंह आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ११ रवि वासरे सम्वत् १८५२।

सख्या २२४ डी भँवरगीता, रचयिता—नददास, पत्र—४१, आकार—४८ × ६२ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४१ परिमाण (अनुष्टुप)—२०५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६३ = १७०६ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला सूरजपाल जी माथुर वैश्य, स्थान—पचौरा, डाकघर—पँचौरा, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम । दोहा। गोरी नदन वदिके वदौ सारद माय। उद्धव के उपदस को वर्णों मन चित लाइ। उद्धव को उपदश सुनो व्रज नागरी। रूपशील भव शील सुनौं गुण आगरी। प्रेम ध्वजा रस रोपनी उपजावन सुख पुज, सुदर स्याम विला सिनी नव विन्द्रावन कुज। सुनो व्रज नागरी। कहो स्याम सन्देश एक मैं तुम्हें पठायौ ता कारन श्री कृष्ण मोहि तुम पे पठवायो। सोचत ही मनमें रहो कब पाऊँ इम ठाउ। कहि सदस नदलाल को वहुरि मधुपुरी जाउँ। सुनो व्रज नागरी। सुनो स्याम को नाम वाम घर की सुधि भूली, भये नयन जल नील प्रेम वेली दग फूली। दोहा। पुलकि रोम सब अग भये भार आए जल नैन वप कठ गद् गद् गिरा, वोले जात न वैन। विवश्घर प्रेमकी।

अत—सुनत सखा के वन नन भरि आए दोऊ, विह्वल प्रेम अवास रही नाहिं सुधि कोऊ। रोम रोम प्रति गोपिका हे गइ सिगरे मात। कल्पत येवर साँवरे वृज वनिता भई पात। उमहि अगतें। है सचेत कहि भले सरूप पठये सुधि लायन। अवगुन हमरे आनि तहा ते लगे हिसावन। उनमें मोमें ह्वे सखा छिन भरि अतर नाहि। ज्यों दखी मो माह

वे योंही उनही:माहिं । तारागन वारि ज्यो । ऊ गोपी आइ दिखाई एक करिके वनवारी । ऊधो भरम निवारि डारियो मोह की जारी । अपनो रूप दिखाइके लीन्हों बहुरि डराइ । नन्ददास पावन भये सो यह लीला गाइ । इति श्री नददास कृत भंवर रीति सम्पूर्णम् । प्रतिलिती सावन वदी द्वतीय ११ शनीश्चर सम्वत १८६३ श्री रामचन्द्र जी श्री राम श्री राम श्री राम ।

विषय—उद्धव गोपी संवाद ।

संख्या २४४ ई. नाम मजरी नाममाला, रचयिता—नंदादस, पत्र—१५, आकार—९ × ५½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, खंडिता रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६० = १८०३ ई०, प्राप्तिस्थान—दामोदरदास गौड, ग्राम—शमशावाद, डाकघर—शमशावाद, जिला—आगरा ।

आदि—[दूसरे पृष्ठ से शुद्ध, पहला पृष्ठ लुप्त] ••••••म । चली मनावन भारती, वचन चातुरी काम । सीघ्र के नाम । आसु झटित प्रति तूर्ण लघु, छिप सतुर उत्ताल । तुरत, चली चातुर अली, आतुर लपि नदलाल । धाम के नाम । संदन सद्म संकेत ग्रह, आलय नीलप स्थान । भवन भूप व्रषभानु के सहचरि पहुंची जान । सौवर्न के नाम । कंचन अर्जुन कार्ति सुर चामी कर तपनीय । अष्टापद हाटक प्रटट महा रजत रमनीय । सोने ही के सदन सब मानक गच सचि देत । जहा तहा निजु नारि नर, झाकी झुकि झुकि लेत । रूपे के नाम । क्वरु सरजत दुर्वरन पुनि, जात रुप पज्जूर । रुपे के गोसार जहँ, भूप भवन ते दूर ।

अंत—अथ इंद्री के नाम । गोंहुपी करन गुन, इद्री ज्यो अस पाइ । पियरा धामाधव मिले, परम प्रेम रसु आइ । अथ माला के नाम । माला अकसिज गुणवती, यह जु नाम की दाम । जनज कठ को रहि सुनरु ह्वै है छवि के धाम । अथ जुगल के नाम । जमल जुगल जुग दंद द्वै, उभय मिन विव वीज । जुगल किसोदर सर्व सौ नंददास के हीय ।२६०। इति श्री नाम मजरी नाम माला नद दास क्रत समाप्तम् । शुभ मस्तु । संवत् १८६० मिती पौस स्वदी १२ रविवासरे । शुभ भवतु । लिप्यत पुस्तकं दृष्टाता ६ सलिपित मया येदि शुध मशुध वा मम दोसो न दीयते । १ । पुस्तक नाम माला सम्पूर्णम् । श्लोक सख्य २६० पत्र सख्या १५ । शुभं शुभं भूयात । शुभ शुभं शुभं । श्री ।

विषय—कुछ शब्दो के पर्यायवाची शब्दो की दोहो में नामावली ।

संख्या २४४ एफ. मानमजरी, रचयिता—नददास, पत्र—२१, आकार—७ × ४½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) ११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८१४ = १७५७ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० श्रीराम जी शर्मा, प्रधानाध्यापक, ग्राम—मई, डाकघर—बटेश्वर, जिला—आगरा ।

आदि—२४४ बी के समान ।

अत—वेत के नाम ॥ वेत स शति विदुल रथी, अम्य पुष्प वानीर । मंजुल वजुल कुंज वह, जहँ वैठे बलवीर ॥ ६७ ॥ कोकिला नाम ॥ परभृत कलरव रक्त दग, पिक धुनि

तहँ रस पुज । जनु पिय आरति निरप तुहि, टेरति चलि वह कुज ॥ ६८ ॥ इन्द्रिय नाम ॥ गोह दुधी पकरण गुण, इन्द्रिय ज्यों असु पाइ । यों राधा माधव मिले, परम प्रेम रस भाइ ॥ ६९ ॥ जुगल नाम ॥ जमल जुगम जम द्वद द्वै, उभय मिथुन विवि वीय । जुगल किसोर सदा वसो, नन्द दास के हीय ॥ ७० ॥ माला नाम ॥ माला ध्रुवस्तंय गुनवती, यह जु नाम की दाम । जु नर कठ करि है सु नर ह्वै है छवि के धाम ॥ ७१ ॥ इति श्री मान मजरी नाम माला कृत कवि नद दास जी सपूर्ण समाप्त ॥ सवत् १८१४ वर्षे अषाढ़ शुक्ला ७ ॥ गुरुवार ॥

विषय—अनेक शब्दों के पर्याय वाची शब्दों का कथन ।

सख्या २४४ जी नाम मजरी, रचयिता—नंददास, पत्र—५८, आकार—६ × ३ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५२ = १७९५ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर प्रतापसिंह, ग्राम—रुटौरी, डाकघर—होलीपुरा, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नम । दोहरा । तत्रमामि पद परम गुरु कृष्ण कमल दल नैन । जग कारन करना निधि गोकुल जाको ऐन । १ । नाम रूप गुण भेद जेते प्रगटत सब ठौर । तिन बिन तत्व जु आन कछु वहै सु अति बड़ चौर ।२। गूध्य नाना नाम की अमर कोश के भाई । मानवती के मान पर मिले अथ सब आइ । ३ । उचरि सकत न सस्कृत जानो प्राकृत नाम । तिहिन नद सुमति जथा रची नाम की दाम । ४ । कृष्ण नाम । कृष्ण विष्णु पावन विमल वासुदेव भगवत । विख्यातम परमात्मा कमला कत अनत । ५ । हृदय नाम । वक्ष हृदय उर पीयके निरखि आपनी छाह । ताते उपज्यों मान यह आन त्रिया के भाई । ६ । मान नाम । रतव दप अहंकार मद गभ समय अभिमान । मानि राधिका कुवरि को सबको करत कल्यान । सखी नाम । वयसी साध्रीची सखी हितु सहचरी आहि अली कुवर नदलाल की चली मनावत ताहि । बुद्धिनाम । बुद्धि मनीषा से मुखी मेधा धिषना धीप । मति सौपती काति चलि भली विजक्षणनीय

अत—द्वय नाम जुगल जुग्म जुग द्वद द्वय उभय मिथुन विनिवीय । जुगल किसोर सदा वसो नददास के हीय । रस नाम । सार माधुर्य पुनि पुण्य रस कुम्मसार मकरद । रस के जाननहार वलि सुनि पावै सुखवद । माला नाम । माला शक शाग गुणमती यह जु नाम की दाम । जो नर कंठ करै सुतौ ह्वै है छवि को धाम । १०७ । इति श्री नददास कृत नाम मजरी सपूणम् । शुभमस्तु । लिखत भवानी सिंह श्रावन मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ४ चद्रवासर । सम्वत् १८५२ ।

विषय—अनेक शब्दों के अनेक नाम ।

टिप्पणी—अमर कोष के अनुसार इस कोष को बनाने का प्रयत्न किया है ।

सख्या २४८ एच फूल मजरी, रचयिता—नददास, पत्र—३, आकार—८ × ८½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० श्रीराम जी, ग्राम—भीमनपुर, डाकघर—फतहाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गनेशायनमः ॥ अथ फूल मंजरी लिपिते ॥ दोहा ॥ सीस मुकुट कुंडल झलक, संग सोहे ब्रज वाल । पहरें माल गुलाव की, आवत है नदलाल ॥ १ ॥ चंपक वरन सरीर सव, नैन चपल है मीन । नव दुलहीन की रुप लपि, लाल भये आधीन ॥ २ ॥ फूलि रहे तहँ विविध तरु, वहुत सघन घन वेलि । कुजय होय उर माल धरि, करत कुंज मधि केलि ॥ ३ ॥ स्वेत वरन सारभ अधिक, मनौं कनक की धूप । लसत राधिका कुँवरि कै, कर को वंड अनूप ॥ ४ ॥ मंजन कै ठाड़ी भई, नव सत भूषन मेलि । वनमाला ऊपर लसे, मनौ कनक की वेलि ॥ ५ ॥

अत—लाल मनावति वेगि वलि, कहाँ रही हठ लाय । पुरी वह सव वीसरी, लेति सेवती पाय ॥ २८ ॥ तुम जु लिये भले महा, दुपित होय है वाल । और प्याल सव छांडि यह, करनौ हत लाल ॥ २९ ॥ कहत फिरत सव सपिन मे, सौतिन लावत सूल । आजु लाल हम कू दिये, सूरज सुपी के फूल ।' ३० ॥ पीतांवर कटि काछिनी, सोहत स्याम सरीर । कुसुम केतती मुकट धरि, आवत है वल वीर ॥ ३१ ॥ इति श्री फूल मंजरी नंद दास किरत सपूर्ण समाप्तं ॥ श्री पन्ना तीन ॥

विषय—दोहों में नायिका के रूपादि का वर्णन और प्रत्येक दोहे में एक पुष्प का नाम ॥

संख्या २४४ आई. रानी मगौ, रचयिता—नददास, पत्र—२०, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५३, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—डा० प्रतापसिह, ग्राम—रटौटी, डाकघर—होलीपुरा, जिला—आगरा ।

आदि—अथ रानी मगौ लिख्यते । मैं जुवति जाचत वृत लीन्हो । जहि जहि जौनि जाऊ तहि तहि अंक भुजा पर दीन्हो । पुरुष जाति हौ हौ दान मान देति जतन नेक हेरौं । केसरि वलय महा वरि मडित इनको ऊलपन फेरो । राज सिघासन हय रव हाथी ल्यो नहि नटकर कोट अंगिया उडिया लहंगा मुदरी इनको मेरे कोट । सिह सुता वैकुण्ठ की रानी मगति मुकतिक कर वपै । जिनके चित यह होत अजाची जाचिय जुग जुग हरपै । जाचिग सकल जगतक वलाको किरतध्नी कृत न मानै । वार मुखी को वेटा मानौ पिता नहि पहि-चाने । पारवती पति को अति प्यारी सदा रहे अरधागी व्रत मानी जग मगल माता अनंत पुत्र जिन जानि । प्यारा प्रसनी जठरा कीरति सुमित वेद पुरान वखानी । पुत्र भाई परसोत्तम जाच्यो सख्य चक्र गदा पानी । अदित उधार सची नीधी सोभा सति रुवा सति रानी ।

अंत—आठ आठ झुम वाच हौ फेरें मानो कुमुदिनी फूली अरव मुख हेरे । जुथ जुथ चहु फेरे घनी में कफ सो सुन्दरि वनि । तवै हिते आनंद राम सावधान भये मोहन दानी खोरि साकरि मोहन रोकि ललिता सखि पहली ही रोकी । अहो मारग माझ कौन तुम डारै वृषभान गोपिते नाहि न डरै । अरी वृषभान गोप को कहा डर मानै । दानी दान ल्यौ सब जांनु । अहो वहौत भांति के दान कहावै । तुम कौन भांति के दानी आये एक गहन वेद वोल भी जल में पीसि लोक सब देई । एक अमावस सकई मगै अगर सिरी अपने पद रज इनकी प्यारी । रानी मगौ । नंददास ।

विपय—श्री कृष्ण का ब्रज की युवतियों से दान मॉगने और उनके साथ के प्रेम क्रीड़ाओं का वणन ।

संख्या २४४ जे रास पचाध्याइ, रचयिता—नददास, पत्र—११, आकार—१० × ४३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९८=शक स० १७६३, प्राप्तिस्थान—प० देवीराम जी, ग्राम—विधौली, डाकघर—शेरागढ़, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नम । अथ रास पचाध्याइ लिप्यते । वदन करौं कृपा निधान श्री सुक शुभकारी । शुध जोगमय रुप सदा सुदर अविकारी । हरि लीला रस मत्त मुदित वित विचरत जग में । अद्भुत गति कहु नहिन अटक हे निकसे नग में । नालोत्पल दल स्याम अंग नव जोवन भ्राजै कुटिल अलक मुप कमल मनो अलि अवलि अवलि विराजै । ललित विसाल सुभाल दास जोना निकरि निसा करि कृष्न भक्ति प्रति विंव तिमिर चहु कोटि दिवाकर ।

अत—जो यह लीला गावै हित सौं सुनैं सुनावे । प्रेम भक्ति सो पावै अरु सबके जोय भावै । तीन श्रद्ध निदक नास्ति कहरि धम बहरि मुप । तिनसा कबहू न कहे कहै तो लहै नही सुप । भक्त जननि सा कह जिनके भागवत धम बल, सो जमुना के मीन लीन नित रहत जमुन जल । जद्दपि सब निज भेदनि जमुना निगम बपानै, ते तिहि धार हिधार रमित छुवत नल आवै । यह उज्जिल रस माला कोटि करि योही । सावधान ह्वै पहरि फैरि तो रोमति कोई । श्रवन की रतन सार सार मन को है पुनि ग्यान सार हरि ध्यान साइक्त निसार गुधी सुनि । अघ हरनी मनहरनी सुदर प्रेम वितरनी, नददास के कठ बसो नित मगल करनी । इति श्री रास पचाध्याइ नददास क्रत समाप्त शुभ सवत् १८९८ शाके १७६३ मिती भादों सुदि १ भौमवासरे लिखित मिश्र गोपाल जी स्वपनार्थे ।

विपय—श्री कृष्ण की रासलीला का वर्णन ।

संख्या २४४ के पचाध्यायी, रचयिता—नददास, पत्र—४०, आकार—७ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८२=१८२५ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर तिलकसिंह जी, ग्राम—लतीफपुर कोटला, जिला—आगरा ।

आदि-अत—२४४ जे के समान ।

संख्या २४४ एल रुक्मिणीमगल, रचयिता—नददास, पत्र—१३, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६९, रूप—प्राचीन, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १८७८ = १८२१ ई०, प्राप्तिस्थान—विशेश्वरदयाल, ग्राम—होलीपुरा, डाकघर—होलीपुरा, जिला—आगरा ।

आदि—सिधि श्रीगनेसायनम ॥ अथ श्री रुकमिनीमगलु लिपते ॥ श्री गुरुचरन प्रताप सदा । आनद दे उर । किस्न क्रियात कही जथा । सुखु पाये सुर नर ॥ रुकमिन हरन पुनीत । चितु दे सुने सुनाये । तासु मिटै जम त्रास । वासु हरिपुर को पावे ॥ सिस

पालहि दई रुकम । रुक मिनी वात सुनी जव । चित्र लिपित सम भई । दई अव भई कहा अब ॥ चकित चहूँ दिशि चहति दिछुरि जनु म्रगी मालते । भजोही वंदनु वछु मलिन नलिन जनो जलित ॥ कोर भरि आऐ दोऊ नैन ऐन जने प्रेम सुहाए जनो । सुंदर अरविंद अलदान पेढि हलोए—अलि वूझी ॥ नलि वात कही नैनन की पानी । योही मिरिनु उडियरी कहो तिन सो मधु वानी ॥ ३ ॥

अत—सरनु जानिमन भंगु ककम तिय अति दुप पायौ । जहा दूलहू सिसिपालु तहाँ मनु राषन आजौ ॥ तव निकरौ नृप रुकमु दीऐ सिर कचन कुलही । रंचक धीर होहु अनि दुहोगे दुलही ॥ ५१ ॥ कर ककन दुप दीनो दुपते कोइ जु दीनो । चपल दगन के काजर फिरि मुँह कारो कीनो ॥ रिस करिपा जो हो होय भये ऐसे दुखलु दीनु । पतगु परतु पाग मेनेसे पर तब वहुदल वलु देपत । वल दल जु सम्हार्‍यो । मन हर महार पेठि कमल गुंजार विद जिसे कर सहीय हरो तितो कछू नाही कीन्हो । मूंछ मूडि मुखु मूडि छोडियम जीवन दीनो ॥ ५३ ॥ विधिवत भजो विवाहु तिहूं पुर मंग वुलुगजो ॥ नंददास सुख पाजो तब ही दुलहिन ल्याजो ॥ ५४ ॥ अथ रुकमिनी मगल सपूरन समापति नद दास कृत लिपते नाउली मे लिषी पुरजन के लिये सवतु १८७८ मिती चैत्र वदी १२ बुध वासरे को सम्पूरणः

विषय—श्री कृष्ण रुक्मिणि विवाह वर्णन ।

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रन्थ लिपिकर्त्ता ने प्रति लिपि करते समय बहुत अशुद्ध लिखा है। छन्दो में किसी भी प्रकार के विरामादि चिन्ह न होने के कारण तथा अशुद्ध मात्रादि के पयोग के कारण यह ठीक-ठीक नहीं पढा जाता ।

संख्या २४४ एम. विरहमंजरी, रचयिता—नंददास, पत्र—९, आकार—७ × ४३/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८१४ = १७५७ ई०, प्राप्तिस्थान—प० श्री रामजी शर्मा, ग्राम—मई, डाकघर—बटेश्वर, जिला—आगरा ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ विरह मंजरी लिष्यते ॥ दोहा परम प्रेम उछल नइकु, वढ्यो जु तन मन मैंन । व्रज वाला विरहीन भई, कहत चंद सो वेन ॥ १ ॥ अहो चन्द रस कद तुम, जात आहि वहि देस । द्वारा वति नद नंद सो, कहियो वलि संदेस ॥ २ ॥ चौपाई ॥ चले चले तुम जाइयो जहाँ । वैठे होहि साँवरे तहां । निधरक कहियो जिय जिनि डरो, हो हरि अब व्रज आवन करो ॥ ३ ॥ तुम विन दुपित भई व्रज वाला, नागर नगधर नंद के लाला पूर पछि ॥ प्रस्न भई इक सदर स्याम, सदां वसत वृंदावन धाम ॥ ४ ॥ याके विरहज उपज्यो महा, कहो नंद सो कारन कहा । नद समोधत ताको चित्त । व्रज के विरह समुझि लै मित्त ॥५॥ व्रज मे विरह चारि परसार, जानत हे जेइ जानन हार । प्रथम प्रतिछि विरह तू गुनलै, ताते पुनि पलभांतर सुनलै । तीसरे विरह वनांतर भयो, चतुर्थ विरह देसातर के गयो ॥ ६

अत—ढाढ़े निकसि कुवर वर पोरि वन रहि निसि की चदन खोरि ॥ लट पटी पाग कछुक धसि रही । सो छवि परति कदन पे कही ॥ ८१ ॥ आलस रस भर चचल नैन, जिनहिं निरपि मुरझत मन मैन । अकिले प्रान पियारे पाये, देपि दुपी भरे दग सिथ राए ॥ ८२ ताके निरखि नैंन अरवर, सुदर गिरिधर पिय हँसि पर ॥ समाचार पाये ता तियके, अतर जामी सवके हियके ॥ ८३ ॥ इहि परकार विरह मजरी, मिरवधि परम प्रेम रस भरी । यह जो सुनें गुनें चितु लावै, सो सिद्धान्त तत्व को पावै ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ और भाति व्रज को विरह, वर्नें न क्यों हूँ नन्द । जिनके मित्र विचित्र हरि, पूरन परमा नन्द ॥ ८५ ॥ इति श्री स्वामीनद दास जी कृत विरहमजरी सम्पूण ॥ शुभ मस्तु ॥ श्री परमात्मने नम ॥ सवत् ठारह सो लिपी, चौदह ऊपर वप । तिथि त्रियोदसी, अपाढ़ सुदि गुरु वासर मन हप ॥ श्री मथुरा मध्ये लिपित वालक दास ॥

विपय—चन्द्रमा से व्रज वालाओं का वियोग वणन । वियोग के चार भेद और उनकी यारया तथा वारह महीनों का विरह वणन ।

सख्या २४४ एन विरहमजरी, रचयिता—नददास, पत्र—४, आकार—९ × ४½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६१ = १८०४ ई०, प्राप्तिस्थान—प० मवासीलाल शर्मा, ग्राम—अछनेर, जिला—आगरा ।

आदि अत—२४४ एम के समान । पुष्पिका इस प्रकार है —

इति श्री नददास कृत विरह मजरी सपूणम् । शुभ । भवतु । स० १८६१ । वैपाप कृष्ण ४ रवि । शुभ भूयात् । श्री । लिप्यत पठत शुभं भवतु । पुस्तक विरह मजरी अत्र श्लोक सरया १०० । पत्र १६ । शुभ भूयात् ।

सरया २४५ ए जैमुनी पुराण (अश्वमेध), रचयिता—नन्दलाल (सहावाद), पत्र—१८०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० वालकृष्ण वाजपेइ, वरखेड़ा, डाकघर—हरदोई, जिला—हरदोई (उत्तर प्रदेश)

आदि—श्री गणेशाय नम अथ नदलाल कृत जैमुनि अश्वमेध लिरयते ॥ दोहा—सारद सेस महेस अज सिर धरि गुरु पद धूरि । वाजि मेध वणन करत सकल सुमगल मूरि ॥ सहावाद सुन्दर नगर टीकम को स्थान । वसत तहा चारों वरन शोभा शील निधान ॥ गृह तीरथ नग पुपकरी पच सुभग तह कूप ॥ राम अनुज लछिमन तने अगद तहा को भूप ॥ तेहि पुर भीतर वसत है त्रिभुनायक मति राम । तासु तनै नदलाल पुनि वरनत हरि गुन ग्राम ॥ इह इतिहास पुनीति अति सुनौ सजन चितलाइ । सबै शोक कलेस भ्रम तुर तहिं जाइ नसाइ ॥

अत—पाच वान तव पारथ मारे । घाउ न लगेउ काटि सव डारे ॥ तव करि कोप सारथ पिसियाना । छोडे लगा हजारन वाना ॥ दयजा छत्र रथ तुरग निपाता । नीलद् वज कापेउ रन गाता ॥ पर्यो मूर्छि रन मह नृप सोई । हरिजन देखी दूत जम तोई ॥ मूर्छा

गई उठो वलवाना पुनि रण महं धनुरस संधाना ॥ वान अमिथ पारत पर आरे । लोगेउ तन सब काटि निपारे ॥ हरिजन देषि भजहि जम दूता । तोपि नृप खर जाह वहूता ॥ तव नीलध्वज मन अनुमानी । है यह सुभा महावल खानी ॥ स्वाहा नाम तासु सुकुमारी । वरी अनल का साज मुमारी ॥ राजा मत यह सुमिल कीन्हा । कोपि अनल नगर महं मैं दीना ॥ छांडे सिवान प्रलै की आगी । भाजी सेन जरें सब लागी ॥ नज रथ पैदर तुरग वृष कर भा तजि तनि भार । गयउ वनहि अति विकल ह्वै ततनहि रहो समार ॥

विषय—जैमिनि अश्वमेध का पूर्वार्द्ध वर्णन ।

संख्या २४५ वी. जैमुनी अश्वमेध पूर्वार्द्ध, रचयिता—नंदलाल (सहावाद), कागज—देशी, पत्र—१६०, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२६४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७२ = १८१५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० देवनारायण, अलीगढ़ शहर, डाकघर—अलीगढ़, जिला—अलीगढ़ ।

आदि अंत—२४५ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री जैमुनि अश्वमेध ग्रंथ समाप्तः लिखा रामाधार मिश्र संवत १८७२ चैत्र शुक्ल अष्टमी ॥

संख्या २४५ सी. जैमुनि अश्वमेध, रचयिता—नन्दलाल (शाहावाद), कागज—देशी, पत्र—१८८, आकार—९ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)-२२९०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८८ = १८३१ ई०, प्राप्तिस्थान--प० गगाराम गौड- जलाली, डाकघर—जलाली, जिला—अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

आदि-अंत—२४५ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है:—

इति श्री जैमुनि अश्वमेध ग्रंथ संपूर्ण । लिखत रामदास देवि आश्रय शिवगढ़ वैसाख सुदी तीन सवत् १८८८ वि०

संख्या २४६. भानुमती कबूतरकलाचरित, रचयिता—नरसिंह, पत्र—१६, आकार—९ × ३ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० कन्हैयालाल जी, फतेहाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः । अथ भानमती कबूतर कला चरित लिख्यते तत्रादौ नर सिंह मंत्र पढ़ि पीत सर्वपेन ताडयेत् । प्रेतो ज्वलित पलायन निश्चयेत् । सात समुद्र पार अस्फिटक सिला ताहि चढ़ि वइ सुनर सिंह विराजे नरसिंह कै दुहाई । अथ वटुक भैरव मत्र द्विती ॐ ह्रीं । वटुक भैरव वालक केस भगवासन भेश सभ आपदे को काल भक्त जज हठ को पाल । करे वेरे सिद्धि कपाल । दूज कर करवाल तेतीस काटि मंत्र का जाप लक्ष वटुक भैर जानि ये मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मत्र इस्वरो वाच । अथ नेत्र रधारे को मंत्र पढ़ि पानी के छीटा मारै फली मांडा जाई शर्योतिच सुक न्याच च्यवन शक्र मश्विनौ एतेषां स्मरणात्नृणां नेत्र रोगाप्रनश्यन्ति ।

अत—अथ मोहिनी प्रयोग मत्र दर मौवानम । हुंग कुर सुहु उकार महुं भुइधर मानुष्य मुंह से वाचै सामानुस महु मोह वीरू पलं गौरी । शिवशकर नाथ मोहि देखे पानी पथ हार जाउ हाथ में जौ तेल की धार सीधं दुआरे पे संक समाहि करौसि आर

सध्या समय उ पाता राम लखन हनुमान पढ़ि द्वितीय पवन बाधौ वन में दिनी वाधो वाधौ कटा व्याथा भौ तेल तेलाई ओथा भावे सस्न विष्णु महेश तीनऊ चलेकेदार देवी कमक्षा के दो हार पानीपथ दोहाइ जाइ लरि अग्नि बुझै अग्नि भवतैक्षधारवन मोनु सीतलता ते लावे जै पाव को भवे जसमति पर फिऊ दु ख पावे नरसिंह करे जटा दु ख पावे इति मत्र सग्रह भानमत्यादि विरचित शुभ मस्तु। राम राम राम राम राम।

विषय—इसमें निम्नलिखित मत्र और उनके साधने के उपाय लिखे हैं —इक यत्र, चरवटिवाय गोल झारे का मत्र, कुक्कुर काटे को मत्र वशीकरण मत्र और उसका चक्र ज्वर झारे को मत्र विदूच मत्र और लवग मत्र इत्यादि।

सख्या २४७ ए अनुराग रस, रचयिता—नारायण (वृन्दावन), कागज—दशी, पत्र—२०, आकार—१० x ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामलाल गोड़, यादलपुर, डाकघर—हाथरस, जिला—अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशायनम अथ अनुराग रस लिख्यते, श्री गुरु बदना दो०—श्री गुरु चरण सरोज रज वदौ वारवार। नारायण भव सिंधु हित जे नवका सुपसाद ॥ कृपा करौ मो दीन पै हरो तिमिर अज्ञान। नारायण अनुराग रस निज मति करू वपान ॥ २ श्री राधा गोपाल वदना। श्री राधा गोपाल पद करि प्रणाम ॥ उर धार। नारायण अनुराग रस कहूँ बुद्धि अनुसार ॥ ३ दया सिंधु अति सुप सदन सदा रहो अनुकूल। नारायण जिन उरधरो मो पामर की भूल ॥ ४ (श्री वृन्दा वन वदना) धनि वृन्दावन धाम हे धनि वृन्दा वन नाम। धनि वृन्दा वन रसिक जन सुमिरें राधे श्याम ॥ ५ वृन्दा वन जो वास करें साग पात नित खाये। तिनके भागिन को निरखि ब्रह्मादिक ललचाय ॥ ६ हम न भये ब्रज में प्रगट यही रही मन आस। नित प्रति निरपति जुगुल छवि कर वृन्दा वन वास ॥ ७ नारायण ब्रजभूमि कू सुरपति नावै माथ। जहा आय गोपी भये श्री गोपेश्वर नाथ ॥ ८

अत—गुण मदिर सुदर जुगुल मगल मोद निधान। नारायण निज चरण रति यह दाजे वरदान ॥ इति श्री वृन्दावन निवासी श्री नारायण स्वामी कृत अनुराग रस सपूण समाप्त लिपत ज्ञानदास वैरागी रामगढ़ मध्ये सवत १९२८ वि०

विषय—चेतावनी, गुण दोष लक्षण, कृपा निधान की शोभा और प्रेम लक्षण आदि का वर्णन।

सख्या २४७ बी अनुरागरस, रचयिता—नारायण स्वामी, कागज—देशी पत्र—१६, आकार—१० X ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० विष्णु भरोसे, बहादुरपुर, डाकघर—बेहटा गोकुल, जिला—हरदोइ।

आदि अत—२४७ ए के समान पुष्पिका इस प्रकार है —

इति श्री अनुराग रस नारायण स्वामी कृत सपूण जेष्ट शुक्ल नौमी सवत १९३० वि०

संख्या २४७ सी. गायन संग्रह, रचयिता—नारायणकृत, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—चौधरी गंगासिंह, विष्णुपुर, डाकघर—धूमरी, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ गायन संग्रह लिख्यते ॥ राग झझोटी। सखी तुम नेक तौ रुप दिवाओ। घूघट पट मुख ओट करो क्यो याहि तनिक सरकाओ ॥ ब्रज में लाज करै सो वौरी हंसि हंसि के वतराओ। नारायण हम दोउ वरावर क्यों इतनीं सकुचावो ॥ सखी तुम मेरी ओर क्यो न हेरो। वरसाने में पहिर तेरो कै कोऊ गाम गमेरो। तू इतनी मोसो क्यो चमकत मै हूँ देवर तेरो। घूघट खोल ऐरी नव नागरी दान दीजियो मेरो ॥ लाज करौ गोरस क्यो वेचो घर घर सांझ सवेरो। नारायण नित कुंज गलिन में रहत कान्ह को डेरो ॥

अंत—राग दादरा। गैल जिन रोकौ मद माते। इन वातन शोभा नहि पैइहौ लाज भरी गाते ॥ तुम जानत हमते नहि टरपत तासो वहुत इतराते। नारायण हम यासों न वोलैं मानि जाति के नाते ॥ इति श्री नारायण कृत राग गायन संग्रह संपूर्ण लिखा भैयाराम सारस्वत ब्राह्मण नयर खरैचा फागुन वदी अष्टमी संवत १९३२ वि० ॥ नारायण नारायण जय जगदीस हरे ॥

विषय—संगीत।

संख्या २४७ डी गोपाल अष्टक, रचयिता—नारायण (वृन्दावन), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० भैरवप्रसाद गौड, भगवन्तपुर, डाकघर—मेंडू, जिला—अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री राधा कृष्णाभ्यां नमः अथ गोपाल अष्टक लिख्यते। विहरत स्वच्छंद आनंद कंद श्री व्रज चंद ब्रह्म परम। पूरण शशि वदन शोभा सदनं जित छबि मदनं रुप वरम ॥ हलधर वल वीर श्याम शरीरं गुण गभीरं धरि धरम। भज श्री गोपाल दीन दयाल वचन रसालं ताप हरम ॥ राजत वनमाला रुप विशाल चाल मराला सुरत हरम। कुंडल धृत करणं गिरिवर धरणं निज जन शरणं कृपा करम।

अंत—गोरज मुख शोभित सुर नर लोभित मन्मथ छोभित दृश्य परम्। गोपन सह भुजे विपिन निकुंजे वत्सन पुंजे द्रहिण हरम ॥ यह छवि नारायण लखि नारायण भरे परायण अखिल नरम। भज श्री गोपाल दीन दयाल वचन रसालं ताप हरम् ॥ इति श्री गोपाल अष्टक संपूर्ण समाप्त लिषतं ज्ञानदास जेष्ट सुदी तेरस सवत १९२८ वि० लिखा रायगढ़ मध्ये ॥

विषय—श्री कृष्ण की स्तुति।

संख्या २४७ ई. नारायण कृत संग्रह, रचयिता—नारायण, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७६, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१६ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवमहेश, विश्नुपुर, डाकघर—अलीगढ़, जिला—एटा, (उत्तर प्रदेश)।

आदि—अथ नारायण कृत संग्रह लिख्यते ॥ भजन ॥ राग खम्माच, प्यारे मोरे गरवा मे जनि डारौ बहिंया । छुओ न लगर पकरो कर मेरो अब छोडो तुम कपट वलैया ॥ प्यारे०॥ जावो पिया अब वाही मन भाई के भवन जाके निश प्यारे० ॥ परत हो पैया झूठी मूठी सौं हैं क्यों खावो नारायण मैं बलिहारी विहारी चतुरैया ॥ प्यारे मोरे गरवा में जनि डारौ बहिया

अंत—राग दादरा—गैल जिन रोको मत माते ॥ इन बातन शोभा नहि पैइ हो लाज भरी गाते । तुम जानत हमते नहिं डरपत तासों बहुत इतराते ॥ नारायण हम यासों न बोले मानि जाति के नाते ॥ इति श्री नारायण कृत संग्रह संपूर्ण समाप्त १९१६ वि०

विषय—राग रागिनी, भजन, गजल आदि वर्णन ।

संख्या २४७ एफ. ब्रज विहार, रचयिता—नारायण स्वामी (वृन्दावन), कागज—देशी, पत्र—१८०, आकार—८ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०७२, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—स्वामी नारायण दास, बिलखना डाकघर—बिलखना, जिला—अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) ।

आदि—अथ श्री ब्रज विहार नाम ग्रंथ लिख्यते राग शहानो । बंदो श्री गुरु चरण कमल वर । अस्ताइ ॥ जिनको नाम सकल मंगल निधि ध्यान धरत अघ रहत न परभर । परम उदार सार निगमागम भक्ति ज्ञान की खान मनोहर ॥ नारायण मोंहि दीन जानि के वास दियो वृन्दा वन गहिकर ।

अंत—दोहा । विविध कथा गोपाल की नारायण सुखरास । गति पावे सुनि भक्त जन दुष्ट करें उपहास ॥ इति श्री साक्षी लीला संपूर्ण समाप्त ॥

विषय—श्री कृष्ण की संपूर्ण लीला सांगीत में लिखी है ।

संख्या २४८ सुदामा चरित्र, रचयिता—नरोत्तम दास, पत्र—६, आकार—९ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६० = १८०३ ई०, प्राप्तिस्थान—मुंशी भोलारामजी, ग्राम—भेसन, डाकघर—खेरागढ़ जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नम । अथ सुदामाचरित्र लिख्यते । गण पति कृपानिधान बुधि विवेक जत, देहु मोहि वरदान प्रेम सहित हरि गुन कहो । हरि चरित्र बहु भाइ । सेस दिनेसन कहि सकें । प्रेम सहित चित्र लाइ । सुनो सुदामा की कथा । १ । दोहा । विप्र सुदामा वसत हैं सदा आपने धाम । भिक्षा करि भोजन करे हीये जपै हरिनाम । २ । ताकी घरनि पतिव्रता गहैं वेद की रीति । सुबुधि सुलज्य सुसीलता पति सेवा सों प्रीति ।३।

अन्त—कहु सपनेहु सुवर्ण के महल हते पूर मनि मंडित कलसा कब धरेते रतन जटित सुभ सिंघासन वैठिवे को कब जे पवास पदे मोपे चौर दुरते दरि राज सामा निज वामासो सुदामा कहे कवजे भंडार रतन जुभार भरते जोपे पतीव्रत मोहि दती न उपदेस तौ द्वारका के प्रभु मोपे केमें कृपा करते । ६९ । कथा सुदामा विप्रकी कहैं सुनें चितु लाइ त्या को श्री जदुराय जू दिन दिन होइ सहाइ । ७० । इति श्री सुदामा चरित्र संपूर्ण । संवत् १८६० शाके १७२६ वर्षे चैत्र शुक्ले तृतीय १५ भौमवारे शुभ श्री कृष्णार्पण मस्तु ॥

श्री कल्यानऽस्तु शुभं भवतु । श्री । श्री । श्री । कदन सहाइ रहिइ । सुदा । चरित्र समास । पत्र संख्या ६ । श्लोक संख्या १०० ।

विषय — सुदामा चरित्र वर्णन ।

संख्या २४९ ए. शब्दावली, रचयिता—नेवलदास जी (उमापुर), पत्र — १४४, आकार—९३/४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—९१६, रूप—बहुत अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१७, प्राप्तिस्थान—श्री चन्द्रभान दास जी महन्त, ग्राम—उमापुर, डाकघर—मीरमऊ, जिला—बारहबंकी ।

आदि—सतगुरू साहब कृपा करि, दिहिन भक्ति वरदान । वरनौ जस शब्दावली, धरि उर अंतर ध्यान । सब असमान बटोरि लै, पैठि सिमिटि पाताल । चढ़ि पाताल तहँ गँगन गे, नेवल अजायब चाल । अथ आरती—साहेब तुम जगजीवन स्वामी, जीव जंतु सब अतर जामी । देविदास और दूलन दासा, इन्ह के घर सम्पूरन वासा । खेमदास औ दास गोसाईं, यह आए साहेब सरनाई जहं प्रभु दीन्हेउ तुम ज्ञाना, मैं मति मंद कहै नहि जाना । दास नेवल सुमिरै कर जोरे, कब अइहो साहेब घर मोरे ।

अंत—सोवत रहिउँ नीद भरि हो गुरू दीन जगाइ । गुरूक चरन रज अजन हो, राख्यो नयन लगाइ । तबसे नीद नहि आवै हो, नहि तन अलसाइ । प्रेम प्याला गुरू प्यायो हो, डान्यो मति बौराइ । विरह विथातन तलफै हो, मन कछु न सोहाय । सुमति गहन वा पहिरौ हो, डारो कुमति उतारि । सत कै मँगिया गुंधावौ हो, अंग भसम रमाइ । तन कर दियना बनावौ हो, क्रम वाती लगाइ । नाम के चिनगी उडावौ हो, देतिउँ दियना जराइ । गँगन मँदिल मनुवाँ बैठो हो, जहँ चोरन जाइ । दास नेवल उहँ सत गुरू हो जमराज डेराइ । वंसुरिया विरहिनि वाजि रही । इत उर वाजत उत उर धुनि सुनि घुमरि २ मन माँह रही । अनहद धुनि अवरन गति वाजत, समुझत वनत न जात कही । तान सुनत मोर प्रान छकित भे मै वृन्दावन जात रही । दास नेवल भजु साईं जगजीवन मोहन मोरी वांह गही ।

विषय—भक्ति, ज्ञान और वैराग्य आदि का वर्णन ।

संख्या २४९ बी. ककहरा नामा, रचयिता—श्री नेवलदास जी सत्यनामी (उमापुर), पत्र—१०, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०, रूप—अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८१८, लिपिकाल—सं० १९८२ = १८२६ ई०, प्राप्तिस्थान—त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, ग्राम—पूरेपरान पांड़े, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली ।

आदि—प्रभु साहेब जग जीवन स्वामी भवन २ विश्रामारे । दास नेवल्ह तिन्हकर यक चेला गावत कहरा नामा रे । पहिले ज्याति २ ते निर्गुन तौ फिर सुन्य समाही रे । दास नेवल तेहि सुनहि मिलगे, फिर नहिं आवहि जाही रे । कूर कुटिल निदक अभिमानी अंत जांव वदि खाने रे । बेरी परी नर्क मंह बूडै ऐय रोय पछिताने रे । वालक जुवा जठर नर नारी करि निश्चै जो गावै रे । ताके भमन भरा सुख पूरन अंत मुक्ति फल पावै रे ।

अन्त—भूली फिरहु ब्राप घर बपुरी मायन कछु ढग दीन्हा र खेलहु बहुत विसरिगे साइ लेहु आपना कीन्हा रे। प्रीतम जुक्त रहे तरू नापा तव ओरहि मन लायो रे। अबतौ उमर बीतिगे नाहक पिय दरशन कहू पायो रे। तेहि छिन पिया आप घर बैठे, देखत उठे रिसयाइ रे। मारु, काटु धरु बाधु विविध विध कोऊ न नेह छोडाई रे। दूरहि से करि रहहु बदगी, तौ पिय कर वर पायो रे। वार २ पिय चरनन परिकै दास नेवल तव आयो रे।

विषय— प्रत्येक अक्षर पर कविता करके ज्ञानोपदेश वर्णन।

सख्या २५०, भक्तसार, रचयिता—नवनदास जी, पत्र—४४, आकार—४ × ३ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९ परिमाण (अनुष्टुप्)—२६४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८१७ = १७६० ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर प्रतापसिंह, ग्राम—शटौती, डाकघर—होलीपुरा, जिला—आगरा।

आदि—अथ श्री नवनदास जी कृत भक्तसार पोथी लिख्यते। दोहा। बहु बदन पर नाम बहु परम इष्ट गोपाल नवनदास के उर वसे सूरत परम विसाल। अमर खडत धाम निज वृन्दावन प्रगट्य नवनदास के इष्ट सो केलि करत जदुराय। मगल मयि अनूप छवि श्री सकु सुनर न जीत। माया त्यागि भक्त निज पुरन परम अतीत। सत गुरु पर दयाल मम रहत सीस पर नित्त। आठ पहर रटना यही नवनदास के चित्त। तव कृपा पोथी रचूँ भक्तसार को अग जुगतानद परताप सै खोल कहूँ परसग।

अन्त—जग में रहे मोह नहीं जाके श्री गोपाल साथ नित जाके। कर अस्तुत यों रमत भये। मोह जीत वन नल छये। भक्तसार पोथी कही मोह जात परसग, नवनदास ताके सुने उपजे भक्त उमग। मगल छद। यह कथा निज वैराग दृढमत सुघन जो कोइ करै। आनद उपजे अति महा और सोग पाति गहि जरै। असमेधु जज (अश्वमेध यज्ञ) करै सदा और कोट तीरथ न्हावई। सो फल मिले नरतास कू गोपाल के गुन गावई। बहु करै सुकृत अन गिनत कुलधार सुरग पधारई। लई अमर लोक अपड अवि चल सो लहै यह सारहि। सत गुरू करिके दया किये अतिहि ये भक्त प्रभावहिं। जन नवनदास विलास यह वरनत वाढ़ो अति चावहि। इति श्री नवनदास कृत भक्तसार पोथी चौपाई २०९ दोहा ६४ सवैया २६ छप्पय ४ मगल ३ सकल समुदाय। इति श्री नवनदास कृत रक्तसार पोथी सपूरन समाप्तम् स० १८१७

विषय—पुस्तक कथा इस प्रकार है—एक विवाहार्थी ब्राह्मण कन्या के घर विवाह सस्कार करने गया। विवाह मडप में आधी पद्धति के होते ही ब्राह्मण को वैराग्य हो गया। वहा से प्रस्थान करना चाहा पर कन्या के प्राथना एव प्रतिज्ञा करने पर कि वह सदा आज्ञाकारणी रहेगी ब्राह्मण ने विवाह विधि पूर्ण कराइ। विवाहोपरान्त ब्राह्मणी ने समय पर एक पुत्र प्रसव किया। ब्राह्मण ने उसे एकान्त वनस्थली में फेंक उसके जन्म का कारण पूछा। लड़के के यह वतलाने पर कि वह पूर्व जन्म में दिया हुआ अपना २० मुद्रा का ऋण लेने आया है। ब्राह्मण ने २०) दे दिए। बालक मर गया। इसी प्रकार दूसरा पुत्र खून का बदला लेने तीसरा ऋण लेने आया। ब्राह्मण ने सबको सन्तुष्ट कर कर्तव्य का पालन किया।

कथा का उद्देश्य वैराग्य का प्रतिपादन है। पुत्र पिता आदिकों का सम्बन्ध केवल कर्म रोग है और कुछ नहीं। यही कहने का तात्पर्य है।

संख्या २५१ ए. कन्हैया जू का जन्म, रचयिता—नजीर (आगरा), पत्र—६, आकार—८×५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुंशी पद्मसिंह कायस्थ, कायथा, डाकघर—कोटला, जिला—आगरा।

आदि—लिष्यते श्री कन्हैया जू का जन्म नजीर अकबरा बादी कृत ॥ है रीति जन्म की यों होती जिस घर में बाला होता। उस मंडल में हर मन बहुतेरा सुष चैन दोबाला होता॥ सब बात पिता की भूले है जब भोला भाला होता है॥ यों नेक नक्षत्तर बनते हैं इस दुनियां में संसार जनम पर उनके और ही लछन है जब लेते हैं औतार जनम ॥ सुभ साइत से यो दुनियां में औतार गर्भ में आते है। जो नारद मुनि हैं ध्यान भली सब इनका भेद बताते है॥ वह नेक महूरत से जिस दम इस श्रष्टि में जन्मे जाते है जो लीला रचनी होती है वह रुप यह जाद कहाते है॥ यो देखने में औ कहने में वह रुप तो वाले होते है। पर वाले ही पन में उनके उपकार निराले होते है॥

अंत—नन्द और जसोदा बालक को वाँ हाथों छाओ में थे रखते नित प्यार करैं तन मन वारे सुथरी अवरन घने वन के॥ जी वह लाते मन पर चाते औरु खूब खिलौंना मग वाते। हर आन झुलाते पलने में इधर और उधर टहलाते॥ कर याद नजीर अब हर साइत उस पालने और उस झूले की। आनन्द से बैठो चैन करो जै बोलो कान्ह झन्डोले की॥ इति शुभम्

विषय—कृष्ण के जन्म का वर्णन।

संख्या २५१ बी. बाँसुरी, रचयिता—नजीर (आगरा), पत्र—३, आकार—८×५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुंशी पद्मसिंह कायस्थ, कायथा, डाकघर—कोटला, जिला—आगरा।

आदि—अथ नजीर कृत बाँसुरी लिख्यते॥ जब मुरली धरने मुरली अपनी अधर धरी। क्या क्या प्रेम मीत भरी इसमें धुन भरी। लै इसमें राधे राधे की हरदम भरी खरी॥ लहराई धुन जो उसकी इधर औ उधर जरी॥ सब सुननेवाले कह उठे जै जै हरी हरी॥ ऐसी बजाई कृष्ण कन्हैया ने बांसुरी॥ कितने तो उसके सुनने से धन हो गये धनी। कितनो की सुध विसरि गई जिस दम वह धुन सुनी॥ कितनो के मन से कल गई और व्याकुली चुनी॥ क्या तरसे लेके नारियां क्या कूड़ा क्या गुनी॥ सब सुनने वाले कह उठे जै जै हरी हरी॥ ऐसी बजाई कृष्ण कन्हैया ने बासुरी॥

अंत—वन मे अगर बजाते तो वाँ भी यह उसकी चाह। करती धुन उसकी पक्षी बटोही के दिल में राह॥ बस्ती में जो बजाते तो क्या शाम क्या पनाह। पड़ते ही धुन वह कान मे वलहारी होके वाह॥ सब सुनने वाले कह उठे जै जै हरी हरी॥ ऐसी बजाई

कृष्ण कन्हैया बासुरी ॥ मोहन की बासुरी के मैं क्या क्या कहूं जतन । है इसकी मन की मोहनी धुन उसकी चित हरन ॥ इस बासुरी का आनके जिस जा हुवा बचन । क्या जल पवन नजीर पखेरवा क्या हिरन ॥ सब सुनने वाले कह उठे जै जै हरी हरी ॥ ऐसी बजाइ कृष्ण कन्हैया ने बासुरी ॥ इति शुभम् ॥

विषय—श्री कृष्ण की मुरली का गुणगान ।

संख्या २५१ सी बजारानामा, रचयिता—नजीर (आगरा), पत्र—५, आकार—५½ × ४ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० शालिग्राम जी अध्यापक, ग्राम—देवखड़ा, डाकघर—अहारन, जिला—आगरा ।

आदि—बजारा । टुक हिर्स हवा को छोड़ मिया । मत देस फिरै मारा मारा । कज्जाक अजल का लूटै है दिन रात बजाकर नक्कारा । क्या बधिया भैंसा बैल शुतर क्या गूने पल्ला सिर भारा । क्या गाहूँ चावल मोठ मटर क्या आग धुआ का अंगारा । सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा । गर तू है लखी बजारा और खेप भी तेरी भारी है । ए गाफिल तुझसे भी चतुर इक और बड़ा ब्योपारी है । क्या शक्कर मिसरी कद गरी साभर मीठा खारी है । क्या दाख मुनक्का सौंठ मिरच क्या केसर लौंग सुपारी है । सब ठाठ पड़ा रह जावगा जब लाद चलेगा बजारा । तू बधिया लादे बैल भरे जो पूरब पच्छिम जावेगा । या सूद बढ़ाकर लावेगा या टोटा घाटा पावेगा । कज्जाक अजल का रस्ता में जब भाला मार गिरावेगा धन दौलत नाती पोता क्या यह कुनबा काम न आवेगा। सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा ।

अंत—हर आन नफा और टोटे में क्यों मरता फिरता है बन बन टुक गाफिल दिल में सोच जरा है साथ लगा तेरे दुश्मन । क्या लौंडी बादी दाई ददा क्या बदा चेला नेक चलन क्या मंदिर मस्जिद ताल कुआ खेती बाड़ी फूल चमन । सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बजारा । जब मज फिराकर चाबुक को यह बल बदन का हाकेगा । कोइ नाज समेटेगा तेरा कोइ गौन सिये और टांकेगा । हा टोर अकेला जगल में तू खाक लहद की फांकेगा । इस जंगल में फिर आह नजीर इक भिनगा आनन झाकेगा । सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बंजारा । इति बजारा नामा नजीर कृत समाप्तम् ।

विषय—बजारे के ब्याज से ज्ञानोपदेश ।

संख्या २५१ डी हसनामा, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—शेख मौलाबख्श, अध्यापक, नाहिदपुर, डाकघर—सहावर, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ हंस नामा लिख्यते ॥ आया था किसी शहर से एक हस बिचारा । एक पेड़ पै शहरा के किया उसने गुजारा ॥ रहते थे बहुत जानवर उस पेड़ के ऊपर । उसने भी किसी शाख पै घर अपना सवारा ॥ देखा जो उसे तायुरो ने हुस्नमें खुश रग । वह हस लगा सब के निगाहों में प्यारा ॥ बाजोल गरीबा थे शाहे हुए

आकाश । शकरों ने भी शक्कर से किया उसका मदारा ।। जागो जगनो तूति वो ताऊस कबूतर । सब करने लगे उससे महोब्बत का इशारा ।। कुछ लाल चिडे पोदने पिद्दी न थी आकाश । पिदरी भी समझती थी उसे आंख का तारा ॥ जितने थे गर्ज जानवर उस पेडके ऊपर । उन सब ने महोबत में दिल उस हंस से हारा ।। सोहवत जो हुई हंसमें जानवरों में । एक चंद हुआ खूब महोवत का गुजारा ।। उस हस को जब हो गये दो चार महीने । एक रोज वो यारों की तरफ कहके पुकारा ।। लो यारो हम चलते है कल अपने वतन को । ये पेड मुबारिक रहे अब तुमको तुम्हारा ।।

अंत--इस बात के सुनते ही हर एक के उडे होश । बोले कि यह फुरकत नहीं अब हमको गंवारा ।। हम जितने है सब साथ तुम्हारे ही चलेगें । यह दर्द तो अब हमसे न जायगा सहारा ॥ इतने में सब कूंच हुऐ सुवे नमूदार । पर अपना हवा पर जो उस हंस ने मारा ॥ सब साथ उडे उसके जो थे यार खाह । हर एक ने उडने के लिये पंख पसारा ॥ कोई तोन कोई चार कोई पाच उडा कोस । कोई आठ कोई नौ कोई दस कोस पे हारा ॥ दस कोस पर उडे जो हुई मारगी गालिब । फिर पर में किसी के न रहा कूवतो पारा ॥ कोई यां रहा कोई वां रहा कोई रह गया नाचार । कोई और उडा उनमें जो था सबसे करारा ॥ चीलें गिरी कौवे गिरे और दाज थके भी । उस पहिले ही मंजिल में किया सबने किनारा ॥ सब बैठ रहे साथ के साथी जो नजीर आह । आखीर के तई हस अकेला ही सिधारा ॥ इति श्री हंस नामा नजीर कृत संपूर्ण सवत् १९१० वि० जेष्ट सुदी दसमी ।। राम राम राम राम राम ॥

विषय—एक हंस की कथा जिसमें दर्शाया गया है कि जीव से सब प्यार करते हैं, पर जब जीव निकल जाता है फिर कोई उसके साथ नही जाता । सब देखते ही रह जाते है ।

संख्या २५२ ए. रसरत्नाकर, रचयिता—निंब कवि, पत्र—८१, आकार—४$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५८०, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नौबतराम गुलजारीलाल, फीरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।। एक रदन गज वदन सदन बुधि मदन कदन सुत ।। गवरि नद आनंद कंद जग वंद चद जुत सुखदायक दायक ।। सुक्रति गण नायक नायक पल घायक घायक दालिद्र दहलायक लायक गुरु गुन अनत भगवंत भय सुभगति वंत भव भय हरण ॥ जय केशव दास निवास निधि सुलम्वोदर असरण शरण ॥ १ ॥ पूजि महेश मनाइ गनेस गिरा पति ग्वाल गुरू पग धाऊँ । होहु सहाइ सरस्वति माइ महा मुख अमृत वानी हो पाऊँ ॥ वेद अकास मही पर जेतिक तेतिक को मथिकै मतु ल्याऊँ । पूषन पूरि के दूषन दूरि पुराने ते भूषन भाषा वनाऊँ ॥ २ ॥ अथ रस रत्नाकर लिख्यते ॥ सर्वांग स्थूल तरग गजेन्द्र वदनं, लम्बोदरं सुदरं । विघ्नेशं मधु गधलुब्ध मधुत व्याधूत गंडस्थलं ॥ दता घात विदारिताकुत जनं सिंदूर सोभा करं । वंदे शैल शुता सुतं गणपति सिद्धि प्रद कामदं ॥१॥ दोहा ॥ अखिल निरजन है'''दूजा नाहि न कोई । ता कीनो वहु सकल जग । उन कीनों सवु कोइ ।। चौपाई ।। × × × निवो कवि को आज्ञा दई । तब भाषा यह परगट भई ।

अन्त – अथ पुवादि मरहम विधि लिख्यते ॥ पुरची पुगी फल चार जानिये । और आमरे छाल जारिये ॥ और वारि लै वर कै पान । पल पल सीरो परो सुजान ॥ चूनों सीपी परी सुपाइ । ए दोनौं ऊपल करौ ॥ गावो घृत लीजो पल बीस । औपदि माहि घालि जो ईस ॥ तो लो लरलि उठो जो सार । चीतोरी तजहि असार ॥ ओरो घरन होइ जो देह । या मरहम भाजे संदह ॥ इति ॥ और पुम्यादि मरहम विधि लिप्यते ॥ चूर्यो पहिलै एक भरि लेइ । बहुरि कसीस टक भरि लेइ ॥ चारि टंक लीजै फटि करी । आठ टक लैसी परी ॥ साठि टक लै करवो तेलु । वहो वाहि तेल मैं मलु ॥ घोरि तैल मैं धरै सुजाना ॥ औपदि वैठे तरे सुजान ॥ सब या ऊपर तेली जो तेलु । जैसे औपधि होइ न मैलु ॥ फोहा तेलु भिजै कै धरै । औपधि तर हरि छरो रहै ॥ जिते होइ पव छत न रहैइ । इहि सब को भी ॥

विषय—चौदह विद्याओं की व्याख्या, धातुओं की उत्पत्ति, रस, धूनी, गुटका, वटी और मरहमादि का वर्णन ।

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रन्थ के रचयिता ने अपना गुरु ग्वाल को माना है । ऐसा ही अजीरन मजरी के कर्ता ने भी लिखा है । वदना का छंद दोनों ग्रन्थों में एक ही है । इससे विदित है कि दोनों ग्रन्थों के रचयिता अभिन्न है । अजीरन मजरी में उसके कर्ता का उल्लेख नहीं था । अतएव अब निर्विवाद रूप से उसका कर्ता निम्य कवि मान लिया गया है ।

सख्या २५२ बी अजीरन मजरी, रचयिता—निम्य कवि, पत्र—१०, आकार—१०¾ × ५¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८२५ = १७६८ ई०, प्राप्तिस्थान—नौबतराम गुलजारी लाल, डाकघर—फीरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ अजीरन मजरी लिप्यते ॥ कवित्तु ॥ पूजि महेश मनाइ गनेस गिरी पति, ग्वाल गुर पगु धाऊँ ॥ होइ सहाइ सरस्वति माइ महामुप अमृत बानी हौं पाऊँ ॥ अकासु मही पर नेतिक तेतिक को मथि कें मतु ल्याऊँ । दूपन दूरि कै पूपनि पूरी पुरातन तें भूपन भापा बनाऊँ ॥ १ ॥ श्रवु अजीर जातु पीयै पय चावर ते पचि जाति गरी है । घिउ पचै रसु लाइ जम्हीरी के बीउ पियैं पचै बेरा फरी है ॥ मास के नास कों काजी कजापु है नारिंग कों गुर साहि छरी है ॥ पेट पिडौर की पीर मिटे तव पीसि कै कोदौं की पातु बरी है ॥ २ ॥

अत—अजीरन मजरी करी उदर अजीरन जाइ ॥ इति श्री अजीरन मजरी सम्पूर्णम् संवत् १८२५ मिती सावन सुदी ॥ ४ ॥ मगलवार ॥ नगर फिरोजाबाद म चन्द्रस हकिम लिपित पुस्तिक ॥ श्री धन तरन्म ॥

विषय—विविध वस्तुओं के खाने से उत्पन्न अजीर्ण रोग का उपचार वर्णन ।

सख्या २५३ निपटनिरजन के छद, रचयिता—निपटनिरंजन, पत्र—३६, आकार ८½ × ५¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६५, अपूर्ण, रूप—बहुत प्राचीन लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—डा० लक्ष्मीदत्त जी शर्मा, फीरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि-- ... तहै । निपट निरजन जो इनतें चतुर अंग पूछि राषे अरथ कौ अजहू अवित है । हितकौ कत्वारथ भूवन सौ भूतानति जीवहू में जीवन के जानत के जगत है । ४३ । तत्वन मौ तत्वार्थ भूतन मो भूतागति जीवहू मौ जीवन के जानत जगत है । गुन में गुनत्व और ब्रह्म इ मे ब्रह्मत्व अंतर मो अंतर गत सुपने की स्थित है । निपट निरजन ए आतमा मे आतमत्व लय में विलय सुप सुपयत हित हे । हित कौ ववित्त की वित चित अखत कवित्त है । ४४ । निरपै नैना ताके करुना न आवति है विनही विलोकै याकी उकति अनूठी है । वेद चार भेद संजुक्ति पट सास्त्र ठारह पुरान अर्थ सरल अपूठी है । अस्तुति करत याकौ भए है अनंत जुग निपट निरंजन की वात मूठी है । केतियौ भगत ताकें लगत वकन वौ मेरे जनि जगमै जीभ सी न भूठी है । ४५ । जैसे राज मूरति पै न मूरति निहारियत मूरत निहारै रहे राज की वरद मै । दल दल पौहप के प्रमल अमल वास नास का कुसुम अवलोकन अवद मै । निपट निरंजन लुकानौ है वचन वीच वचन वदत नित्य आवत नवद मै । सवद विदेह कहत ही सवद भयौ देह देष्या चाहे तौ देपियौ सवद मे । ४६ ।

अत—सीभुत सालिग राम परे तही ते व भटा की दया मन आनी । पेट में ठौर सुधारस सुधारस कौन हिता पर आन पिवावत पानी । ईसर ता न रहै निपटा निर अंजन ह्वै तहा पीव की वानी । मे पद स्वानद छाडि दयौ परमानद की अव कौन कहानी । लपत अलेषै मन परौ सात पांच लेपै देपै के परे पेदुप वाख्यौ अति जी की है । यह कहे को है जो है कहौ सत गुरु सोहै एक है दो है हो है सो तौन कही को है । निपट निरंजन ए अंत सव नासवत आज ही ...... जानै सव की को हे । हो ते हो तो .... छु होत नाही अैसे जग होते .. .. को है । २५ । पग मृग मीन .. .. ।

विपय—आत्मज्ञान संवधी छद ।

टिप्पणी—यह विना नाम का आद्यंत से खंडित वेदान्त संवधी ग्रंथ 'निपट निरंजन' की रचना है । उनके छंद अच्छे है । भाषा और भाव दोनो ही लगभग अच्छे है । ग्रथ के अधूरे रहने के कारण कवि का भी कुछ परिचय ज्ञात नही होता और न ग्रंथ के रचना कालादि के विषय में ही कुछ पता चलता है ।

सख्या २५४. श्री विचार सागर, रचयिता—निश्चलदास (किहडौली, दिल्ली), कागज—देशी, पत्र—२००, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६७२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०५ = १८४८ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा रावदेव, ज्ञानकुटी, कपूरपुरा, डाकघर—सहावर, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री विचार सागर लिख्यते ॥ दोहा ॥ जो सुख नित्य प्रकाश विसु नाम रुप आधार । मति न लखै जिहि मति लखै सो मै शुद्ध अपार ॥ अब्धि अपार सरुप मम लहरि विश्नु महेश । विधि रवि चदा वरुण जम शक्ति धनेश गणेश ॥ जा कृपालु सर्वज्ञ को हिय धारत मुनि ध्यान । ताकी होत उपाधि ते मोये मिथ्या भान ॥ ह्वै जिहि जानै विन जगत मनहुं जेवरी साप नसै भुजग जग जिहि लहै सोहँ आये आप ॥ वोध चाहि जाको सुकृति भजत राम निष्काम । सो मेरी है आतमा काकूं करु प्रणम ॥ भन्यो वेद सिद्धांत जल जामे अति गंभीर । अस विचार सागर कहू पेखि मुदित ह्वै धीर ॥

सूत्र भाष्य वार्तिक प्रभृति ग्रथ बहुत सुखानि । यद्यपि मैं भाषा कर लखि मति मंद अजानि ।। कवि जन कृत भाषा बहुत ग्रथ जगत विख्यात । विन विचार सागर लखै नहि सदेह नशात ।। चो० नहि अनुबध पिछानै जौला है न प्रवृत्त सुधर नर तौ लौ । जानि जिनै यह सुनौ प्रबधा कहू व माते ते अनुबधा ॥

अत—दोहा कछू व्यतीत्यो काल तब तजि राजा निज प्रान । ब्रह्म लोक मैं सो गये मुनि जह जात सध्यान ।। राज काज सब तब कियो सक दृष्टि हुसियार । एग्योन रचक रग तिहि लह्यो ब्रह्म निधार ।। अते भयो प्रारब्ध को पायो निश्चल गेह । आतम परमातम मिल्यो देह खेह मैं छेह ।। यह विचार सागर कियो जामे रस अनेक । गोप्य वेद सिद्धात ते प्रगट लहत सविवेक ॥ मारय न्याय मैं श्रम कियो पढि व्याकरण अशेष । पढ़े ग्रथ अद्वैत के रह्यो न एकहु शेष ।। कठिन जु और निबध हैं जिनमैं मत के भेद । श्रम ते अवगाहन किये निश्चल दास सवेद ॥ तिन यह भाषा ग्रथ किय रच न उपजी लाज । तामे यह एक हेतु है दया धम सिरताज ॥ विन व्याकरण न पठि सकै ग्रथ ससकृत मद । पढ़ै याहि अनयासही लहे सु परमा नद ॥ दिल्ली ते पश्चिम दिशा कोश अठारह गाम । तामे यह पूरो भयो किहि ढौली तिहि नाम ।। ज्ञानी मुक्ति विदह मैं जासो होय अभेद । दादू आदू रप सो जाहि बखानत वेद ॥ नाम रप व्यभिचार मैं अनुगत एक अनूप । दादू पद को लच्छ है अस्ति भाँति प्रिय रुप ॥ इति श्री विचार सागर ग्रथ सपूण समाप्त लिखतम् जयता प्रशाद वैश्य बल्हुर निवासी, भादौं सुदी ५ पचमी स० १६०५ वि०

विषय—वेदात ।

टिप्पणी—वेदान्त वणन है। इस ग्रथ के रचयिता निश्चल दास दादू पथी थे । ये देहली वहि ढौली निवासी थे —दिल्ली ते पश्चिम दिशा कोस अठारह गाम । तामे यह पूरो भयो निह ढाली तेहि नाम । ज्ञानी मुक्ति विदह मैं जासो होय अभेद । आद रप सो जाहि बखानत वेद । कठिन जु और निबध ह जिनमैं मत के भेद । तिन यह भाषा ग्रथ किये निश्चल दास सवेद । लिपिकाल सवत १९०५ वि० है ।

सख्या २५५ ए महाशाबर, रचयिता—नित्यनाथ, पत्र—९२, आकार—८ × ६½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—७३६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९५६ = १८९९ ई०, प्राप्तिस्थान—प० रामसेवक मिस्र, मिरकनगर, डाकघर—निगोहाँ—जिला—लखनऊ ।

आदि—यह मत्र अष्टोत्तर शत बार जपै तौ सिद्धि होय ॥ सनीचर के दिन उपास करै इन्दोरन की जर पान फूल फल सुधा लीजै ॥ उत्तर मुख होय लीजै ॥ छाँह मैं सुखावै ॥ ओपरी मैं धूरै ॥ तामैं सोठि पीपरि मिरच बराबर डालि जै ॥ पुनि छेरी के मूत्र मैं बाँटिजै । पुनि छाया मैं सुखाय जै ॥ ताकी गोली बाँधि जै वाके नाम रक्त चदन पुनि पानी सोधि सिताहि लगाइ जै सो वस्य होय पुनि वह गोली और दव दार और चंदन मलयागिरि जलसौं बाँटि जाको खवावै सो वस्य होय ॥

अत—४–८ १२–अदि सिद्धि सुतान हाति । आत्मा हति अरि अरि ॥ ३७ ॥ तस्मा देव दशाह वगरा काल सप्तग्रहोदर्पे साध वस्य समो भावे सम्यक् ज्ञात्वा समाचरेत् । ३८।।

यत द्रस्य परम मुदि रित ॥ सिद्धि दाई कपतछित ।। न्यखिल सिद्धि भाजन भवतु अहों भूवि साध्यक सदा ।। ३९ ॥ चिन्तामणि मोध श्री चद्र सूर्य चूणा स्यनि योगीत गेहि यंत्रादि । सिद्धि जमयादि पाठिकां चमार समोदर पडिते ॥ ४० ॥ इति श्री योग चिन्तामणौ ॥ महाकल्प ॥ वैरे प्रत्यक्ष ॥ सिद्धि योगे । उमा महेश्वर संवादे ॥ दामोदर पढितौ कृत ग्रन्थ सिद्धि सावर संपूर्णम् शुभ मस्तु ॥ संवत १९५६ अषाढ़ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ पंचस्यां ॥ भृगु वासरे ॥ लिपितं त्रिपाठी महासुख प्रसाद ।। वॉगर मऊ के मोकाम इंदौर का ।। राणी पुरा में श्री राम कृष्णाय नमः श्री राम ।।

विषय—(१) पृ० १ से १० तक—प्रथम उपदेश वसीकरण मंत्र संग्रह । (२) पृ० १० से १८ तक—मंत्र सार । स्तंभनादि वर्णन । (३) पृ० १८ से ३२ तक—सकोचन व रुंड कानादि (४) पृ० ३२ ले ३६ तक—कौतूहल (५) पृ० ३६ से ४२ तक—यक्षिनी साधन (६) पृ० ४३ से ५० तक—अंजन पादुका साधन (७) पृ० ५० से ७० तक—अमृत संजीवन सिद्धि मन्त्र (८) पृ० ७० से ९२ तक—यक्षिणी पटल ।

संख्या २५५ बी. वीरभद्र, रचयिता—नित्यनाथ, पत्र—६६, आकार—८ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१५ = १८५८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामसेवक मिश्र, मीरकंजर, डाकघर—निगोहां, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गजाननाय नमः ।। एक समये विषे महादेव पारवती कैलास विषे अपने मंदिर मा बैठे थे तव लोक के उपकारार्थ पार्वती शिव सौ पूछै तव शिव जी कहै प्रथम शिव करत उच्चाटन १ मोहन २ स्तभन ६ संतिक ४ पौष्टिक ५ चक्षू हानि ६ मनो हानि ७ कान विधि ८ आंख अंधी ९ ज्ञान हीन १० लाज हीन ११ खिलनो १२ कार्य स्तंभन १३ शेषन १५ पूरन १५ इनका सब का ध्यान शिव जी तुम मोसो कहो तव ईश्वर बोलेस पार्वती तुम सुनियो मौ तोसों कहत हो तू मेरी भक्ति कृत हो ॥

अंत—गाडी जे तो ते हन कन्या प्राप्ति होयः शीघ्रः ।। इति श्री वीर भद्रे महा तन्त्रे मंत्र को नाम पटलः तृतीया ॥ ३ ॥ पट कोण यंत्र लिपि जै तिहाँ छह कोठा या डंकुर कुल्ल हो स्वाहा मंत्र लिपि जै भोज पत्र पर लिषि घरमा द्वार या देहली माँ ॥ सवत १९१५ शाके १७८० प्रमोद नाम संवत्सरे फाल्गुण कृष्ण ६ गुरु वासरे इदे पुस्तक सपूर्णं ॥ हस्ताक्षर नारायण भट्ट कोल्हापुर कर ग्रन्थ संख्या ११०० श्री लक्ष्मी नारायण प्रसन्नौस्तुलेखक पाठकां यो शुभ भवति

विषय—(१) पृ० १ से १० तक—उज्जामर तंत्र । (२) पृ० ११ से २६ तक—सक्षिप्त स्वर ज्ञान । (३) पृ० २७ से ६६ तक—औषधि प्रकरण ।

संख्या २५५ सी. रसरत्नाकर, रचयिता—पार्वतीपुत्र नित्यनाथ, पत्र—८०, आकार—८ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१५ = १८५८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामसेवक मिश्र, मीरकंजर, डाकघर—निगोहां, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ प्रथम १ साधक पिश हाय सा पीछे ब्रह्मचारी २६ पारे ये मंत्र साधे ॥ ॐ नम सर्वाय साधनी स्वाहा ॥ प्रथम मंत्र १००० एक हजार जपै कृष्ण पक्ष की चौदस की उपवास करै ॥ पीछ २० हजार जपै तब मंत्र सिद्धि होय त पीछ रुद्र अठासी नदय ऐद्द पात का लेप करै तो मयत्र वदय होइ ॥ प्रथम प्रयाग मार इसी गो रोचन बराबर एद्द पानी सीं पीस तिलक करै ता सब नग होइ ॥ गहर की जड तांबूल साथ दीजै तो लोक वश्य होय ॥

अन्त—१५।२४।११ कपूर सहित गुरवार अदिमी की चायी की पात करके दीपक का नत काजल पाड कर अंजन करै तो निधि दरै १६।३।११ रात्रि विर्षे मनल वार की मोम हाय भंवा तेल मा ऐप कर तो धन प्राप्ति पाले पयी पीय पारी सौं पाजन चले। ११।१४।१८। एहोत आदित वार अंजन करै तो अदेपि पास रति विर्षे दर्ष प नाथ शिवजी ने कहा लोक प विनाद य वारा ॥ इति श्री पार्वता पुत्र नित्य नाथ विरचितं रस रत्ना कर मंत्र सार अंजनादि भूप पटमोप दुरा: ॥ ६ ॥ अथ बुद्धि गुनाइ श्री जू ऐ कही भाषा की विचार नम नीया गुरपदन साथ धन पानि वागीस कृत भाषा रस रत्नाकर की संवत् १९१५ नाके १७८० ॥

विषय—(१) पृ० १ स १४ तक —प्रथम उपदेश—मंत्री माहात्म।

(२) „ १४ „ २६ „ —द्वि० उ०—सिद्धि खंड में मंत्र सामंत सार के अन्तर्गत आरपनादि तथा रासना ॥

(३) „ २६ „ ५० „ —मंत्र सार। प्रह क्लेश निवारण करण संबंधी अनेक मंत्र तथा उनकी प्रयोग विधि। तृ० उ०।

(४) „ ५० „ ५८ „ —च० उ०। कौतुहल संबंधी मंत्रादि।

(५) „ ५९ „ ६८ „ —अंजनादि धातुज लेप संबंधी। (बहुत धन आदि के संबंध में) मंत्र—पं० उ०।

(६) „ ६९ „ ८० „ —मृत संजीवनी विद्या, बहुत मार आदि तथा भूख न लगने आदि के संबंध में अंजन धूपादि (प० उ०) ग्रन्थ रचना का कारण—"अथ बुद्धि गुनाइ श्री जू ऐ कही भाषा की विध सोध समनीयो गुरु उपदेश साथ धनपाणि वागीस कृत भाषा रस रत्ना कर की संवत् १९१५ साके १७८०"

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रन्थ प्रधानतया तंत्रों और मंत्रों से संबंध रखता है, किन्तु साथ ही इसमें औषधियों आदि का भी कुछ वर्णन है। इसके कुछ प्रयोग अरुचिकर घृणोत्पादक तथा क्रूरतापूर्ण हैं। किन्तु उनके प्रयोगों के निराकरण करने की विधि भी साथ ही दी है।

संख्या २५८ डी रस रत्नाकर, रचयिता नित्यनाथ, पत्र—८२, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१६ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान—रघुनीराम शर्मा, फतरी, जिला—आगरा।

आदि-अंत—२५५ सी के समान। पुष्पिका इस प्रकार है:—

रत्नाकर समाप्तम् शुभम् भूयात् ॥ इति श्री संवत् १९१६ वि० ॥

संख्या २५५ ई. उड्डीस, रचयिता—नित्यनाथ (पार्वती पुत्र), पत्र—२०, आकार—६½ × ३ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६६, खण्डित, रूप—बहुत प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५६ = १७९९ ई०, प्राप्तिस्थान—रतन सिंह जी, नमनी, डाकघर—किरावली, जिला—आगरा।

आदि— ··टि तिलक करै तौ तीन लोक वस्य होय। अथ मंत्र। ॐ नमो कंद सवारिणी जारिणी मालिनी सर्व लोक वसीकरनाय स्वाहा मंत्र अठोत्तर सै वार जपै तौ सिद्ध होय अथ और प्रयोग सनीचर घृत करै इदोरणी के जर पान फूल शुद्धां उत्तर मुख है लीजै छांह मै सुपाइयै ताकी गोली वांधे सोठि मिरच पीपरि विरावरि डारिछेरी के मूत मै वांहि छांह मै सूषै ताकी गोली वांधि वह गोली और रक्त चदन घिसिकै जाहि लगावै सो वस्य होइ पुनि वह गोली और देवदार और मलयागिरिचंदन पानी सौ घिसि आपनै तिलक करै तो जहां जाय तहां सिद्धि होय।

अंत—जापुरिप कै लेपन करै सो पुरिप स्त्री कौ दिपाइ परै रुद्र जटा श्वेत अर्क तथा जो हो छिर हटाये वो पपुनर्वस नक्षत्र मै लैकै तार्वाज मे मढावै माथै में रापे तौ जहां जहां जाइ तहां वोल ऊपर रहै वड़ी सिद्धि पावै सभा मै वोल वाला होय। मन्त्र। ॐ नमो ह्रूं ह्रां क्ली–हू–हू ठ ठ = फट स्वाहा। जहां कौ चलै तहां कौ या मंत्र है पढ़ि लेइ सिद्धि होइ। इति श्री पार्वती पुत्र नित्यनाथ विरचिते सिद्ध खण्डे मत्रसारे अमृतसंजीवनी नाम सप्तमोपदेश। ७। मिती श्रावण सुदी १ भआ संवत् १८५६ श्री श्री श्री रस्तू कल्यान। मस्तू दीर्घायु रस्तु श्री कृष्ण श्री कृष्ण श्री कृष्ण।

विषय—कुछ जन्त्र मन्त्र तथा तन्त्रादि का वर्णन।

संख्या २५६. रुक्मिणी मंगल, रचयिता—पदमैया, पत्र—३३, आकार—८½ × ६¾ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६१, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४२ = १८८५ ई०, प्राप्तिस्थान—डा० लक्ष्मीदत्त जी शर्मा फीरोजाबाद, जिला—आगरा।

श्री गणेशाय नमः। रुक्मणी मगल लिख्यते। विगन हरन मंगल करन···बुद्धि प्रकास। नामलेत गणेश को होत ····प्रकास। १। सदा भवानी दाहिनी सन्मुख रहत गणेश। पांच देव रक्षा करैं ब्रह्मा विष्णु महेश। गुरू कूं नवन कीजिये एक घडी सुभाव। कागा सो हंसा कीये करत न लागी वार॥ राग जिल्ला की ठुमरी॥ कवो मेरा भाई नारद मुनि आये। कोण जाति तेरो गोत कइये चौकी पर बैठाये। हाथ जोड राजा जी आयो आभूपण पहराये। धुप दीप नईवेद आरती गुरू' सीस नवाये। हाथ पकड़ि रुक्मणी कूं लाये। गुरुकू आन वताये नारद बोले सुन राजा······द्वारिका में लगन पहुचावो। पदम भने···पांई लागुं झट पट विनाइक बैठायो। १।

आदि—चित लगाय रुक्मणी मगल सुणसी। जाकी पुगसि आसा। जिन मुखडा सुँ वचन सुनावे। सुणवा वाला का आसा ठांम पै वांचे उत्तम होसि। सीसुपाल तो जनम

होसी। पदम भणे जो ल्यावा। राखे श्री कृष्ण चद याको ही मिलसी कुंमारी सुणवर प्रापती होसी। परणी पुत्र सौभाग्यवती। यूंही सुणें रुकमणी मंगलवा वैकुण्ठ जासी। जो याको भगति जो करसी। ताको दरसन देसी। श्री कृष्ण सभा में आसी। पदम भणे प्रण नें पाइ लागुं भगतो के मन भासी। १३२। इति श्री पदमैया कृत रुकमणी मगल सपूर्णं। आश्वनि वदी ६ मंगल वासर लिखित वैष्णव नारायण किसन समन सवत् १६४२।

विषय—रुक्मिणि और कृष्ण के विवाह का वर्णन।

संख्या २५७ ए. गंगालहरी, रचयिता—पद्माकर (सागर, जि० बाँदा), पत्र—२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१२, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०८ = १८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० हरस्वरूप वैद्य, सुपरथा, डाकघर—शाहजनपुर, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ गंगालहरी कवि पद्माकर कृत लिख्यते ॥ दोहा—हरि हर विधि को सुमिरि के काटहु कठिन कलेश। कवि पद्माकर करत है गंगालहरी पेश ॥ कवित्त—चढ़ती विरंचि भई वामन पगन पर फैली फैली फिरी ईश सीस पै सुगध की ॥ आइ कै जहान जहु नपाल कटाइ फिरी दीनन के देत दौरि कीनी तीनि पथ की ॥ कहै पद्माकर सु महिमा कहां लौं कहौं गंगा नाम पायो सोही सबके अरथ की ॥ चायों चल चली फूलन गई गही वह वही लहलही कीरति लता है भगीरथ की ॥

अंत—भूमि लोक भुव लोक स्वर्ग लोक महालोक जन लोक तप लोक सत्य लोक बल में ॥ कहै पद्माकर अतल में वितल में सुतल में रसातल में अरु महातल में ॥ त्योंही तलातल में पताल में अचल चल जेते जीव जंत धर्म आगम सकल में ॥ बीच में न फिर में फिरा। विष्णु थल में सु गंगा जू के जल में नहाये एक पल में ॥

विषय—गंगा-महिमा वर्णन।

संख्या २५७ बी. गंगालहरी, रचयिता—पद्माकर (सागर, जि० बाँदा), पत्र—२०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० पद्मगोपाल, दीनापुर, डाकघर—उमरगढ़, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि अंत—२५७ ए के समान।

संख्या २५७ सी. जगद्विनोद, रचयिता—पद्माकर भट्ट (मथुरा), पत्र—७६, आकार—१० × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५९६, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० भवानीलाल शर्मा, डाकघर—अछनेरा, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ लिख्यते पद्माकर भट्ट कृत जगद्विनोद ग्रंथ ॥ दोहा ॥ सिद्धि सदन सुन्दर बदन। नंद नंदन मुद मूल। रसिक सिरोमणि साँवरे। सदा रहहु अनु कूल ॥ १ ॥ जय जय शक्ति शिलामई। जय जय गढ़ आमेर ॥ जय जय पुर सुर पुर सदृश। जो जाहिर चहुँफेर ॥ २ ॥ जय जय जाहिर जगतपति। जगत सिंह नरनाह। श्री प्रताप नंदन बली। रवि कुल वंश वाह ॥ ३ ॥ जगत सिंह नर नाह की। समुझि जगत को ईस ॥

कवि पद्माकर देत है । कवित बनाइ असीस ॥ ४ ॥ कवित्त ॥ छात्रन के छत्र छत्र धारिन के छत्रपति । छटान क्षिति क्षेम के छवैया हो । कहै पदमाकर प्रभाव के प्रभाकर । दया के दरियाव हिन्दू हद्द के रखैया हो ॥ जागते जगत सिंह साहव सवाई श्री प्रताप नन्दकुल चंद आजु रघुरैय्या हो ॥ आछे रहो राज राज राजन के महाराज । कच्छु कुल कलश हमारे तो कन्हैया हो ॥ ५ ॥

विषय—नायिका भेद ।

संख्या २५७ डी जगद्विनोद, रचयिता—पद्माकर, पत्र—१५२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७९८, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० अमृतलाल, फिरोजाबाद, मुहल्ला—पिपलवाला, जिला—आगरा ।

आदि—२५७ सी के समान ।

अन्त—घन वर्खत कर पर धर्यो । गिरि गिरिध निस्संक ॥ अजय गोप सुत चरित लखि । सुरपति भयो ससक ॥ १६ ॥ अथ शांत रस वर्णन ॥ सुरस सान्त निर्वेद है । जाको थाई भाव । सत संगत गुरु तपोवन । मृतक समान विभाव ॥ १७ ॥ प्रथम रोमा वादिक तहां । भापत कवि अनुभाव । धृति मति हरपादिक कहे । शुभ संचारी भाव ॥१८॥ शुद्ध शुक्ल रग देवता । नारायण है तान । ताको कहत उदाहरण । सुनह सुमति दै कान ॥ १९ ॥ शान्तरस को उदाहरण ॥ सवैया ॥ वैठि सदा सत्सगही में । विप मानि विपय रस कीर्ति सदा ही । त्यो पदमाकर झूठ जितो जग जानि सु ज्ञानहि के अवगाही ॥ नाक की नोक में दीठ दिये नित चाहे न चीज कहूँ चित चाही संतत संत सिरोमणि है । धन हैं धन वे जन वै पर वाही ॥ २० ॥ दोहा ॥ वन वितान रवि शशि दियाफल......। ......(अपूर्ण)

विषय—नायका भेद वर्णन

संख्या २५७ ई. लिलहारी लीला, रचयिता—पद्माकर, पत्र—२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१४ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—वावा नारायण शर्मा, मोहनपूर, डाकघर—मोहनपूर, जिला—एटा (उत्तरप्रदेश) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ लिलहारी लीला लिख्यते ॥ कवित्त—मन मोहन मोहनि रूप धरो वरसाने चली वन के लिलहारी ॥ वृपभान के धाम अवाज दई तुम लीला गुदावो सवै वृजनारी ॥ राधे आवाज सुनी श्री कृष्ण की लीन्ही वुलाय पिन्हावन हारी ॥ लै आओ वुलाय हमारे घरे यक आई है आजु नई लिलहारी ॥ १ ॥ उन्ह जाय जवाव दियो श्री कृष्ण को तुम्हे वुलावत राधिका प्यारी ॥ अपने कर सो कर साथ लियो जहँ बैठी हती वृषभानु दुलारी ॥ सिर पै जो डला सो उतारि धरो अरु जाय खड़ी प्रिय पास अगारी ॥ तवही हंसि राधे जवाव दियो तुमही लिलहारी की गोदन हारी ॥ २ ॥ लिपि दे भुज दंड पै वाल गोविन्द भुजै भगवान गरे गिरधारी ॥ ठोड़ी पै मूरति ठाकुर की अरु ओठन पै लिखु कृष्ण मुरारी ॥ इइके अधीन सवै लिपिदे सुनिये लिलहारी की गोदन हारी ॥ ३ ॥ दे लिखि वाहन में व्रजचंद सो गोल कपोलन कुंज विहारी ॥ सो पदुमा

लिखिहों विधि लिखि गोरे गोविन्द गरे गिरधारी ॥ याही तरह नख से सिखलों लिखु नाम अनंत इकंत होइ प्यारी ॥ स्यामरे को रंग सों गोदि द अंग में सुनिये लिल्हारी की गोदन हारी ॥ ४ ॥

अन्त—दत पै नाम दमोदर को मेरे कंठ म लिखिदे कृष्ण मुरारी ॥ दाहिनी ओर लिखो सजनी कर चारि भुजा के वाके मुरारी ॥ हाथ पै नाम लिखो हरि को दानों जोवन बीच लिखो वनवारी ॥ हृदय बिच नाम लिखो मन मोहन सुनिये लिल्हारी की गोदन हारी काम हमारो यही सजनी हम है परदेसी सहित रुजगारी ॥ तुम जोइ कहो हम साइ लिख तेर अंगहि अंग में येथों मुरारी ॥ वृषभान लली बरसाने बरा बड़े राजा की तुम राज दुलारी ॥ दहो कहा सो कहा सजनी हम है लिल्हारी की गोदन हारी ॥ ६ ॥ दहों मैं हार हजारन को दुलरी तिलरी हसुली बढ़ि भारी । दहा छला दोनों हाथन के अरु पैधन को अपने तन सारी ॥ और अभूषन तोहि दिहों अरु पैधन की अपन तन सारी । मातिन माल अमोल दिहों सुनिये लिल्हारी की गोदन हारी ॥ ७ ॥ हाथ पै हाथ धरो जबहीं तब चौंकि उठी वृषभान दुलारी । श्याम लिखे छल छंद बड़े तुम काहे को भेष बनायत नारी । देरान को तोहि प्रेम बढ़ो तब ही हम रूप कियो लिल्हारी ॥ पदमाकर यो वृषभानुकुमारि कहीं हम हैं हरि पै पग धोवन हारी ॥ इति श्री लिल्हारी लीला लिख्यते ॥ लिखा बाल दीन पांडे मिती चैत्र बदी अष्टमी सवत् १९१४ वि० राम राम राम—

विषय—श्री कृष्ण की लिल्हारी लीला।

संख्या ७५८ रामविनोद, रचयिता—पद्मरंग, पत्र—२४४, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७२८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२८ = १८७१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० देवनारायण मोहनपुर, डाकघर—परवान, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशायनम अथ राम विनोद लिख्यते श्री शिवाय नमः ॥ प्रथम गणेश जू की स्तुति लिख हैं गणेश जी कैसे ह रिद्धि सिद्धि के दने हार हैं गौरा के पुत्र हैं विघ्न के दूर करने वाले हैं ऐसे गणेश जी को नमस्कार है । ग्रन्थ करनवारे पंडितों से विन्ती कर हैं नाना प्रकार के वैद्यक के शास्त्रों को देख कर राम विनोद ग्रन्थ अधिक सुगम करूं हू । सकल जग के जीवों को सुख का देने वाला है । अथ वैद्य बुलाने वाले के लक्षण—विलक्षण होय पंडित होय सुन्दर होय सज्ञान होय विनय वत होय ऐसा पुरुष होय सो रोगी के वास्ते वैद्य बुलाने जावे ॥ वैद्य के आगे आय हाथ जोड़ नमस्कार कर मीठे वचनों से विनय करै वैद्य के आगे श्रीफल रुपया रख प्रसन्न हो आगे धरै और यह कहै आप कृपा करिये ॥ वैद्य को बुलाने वाला पुरुष खाली हाथ जाय ॥ खुशी होय वैद्य अपने घर से एक पुरुष के साथ जाय ॥ रोगी के घर दोके साथ न जाय ऐसा भला सगुन होय तो वैद्य रोगी के घर जाय ॥

अन्त—चरक १ आत्रेय २ हरीत ३ जोग चिन्ता मणि ४ सुश्रुत ५ भृगु ६ क्षीर पाणि ८ आनन्द माला ९ आनंद माला १० वैद्य विनोद ११ सन्निपात कलि काम १२ राज मार्तंड १३ रस चिन्ता मणि १४ जोग सतात १५ बिन्दुसार १६ मनोरमा १७ बालतन्त्र १८

सारंग धर १९ काल ज्ञान २० वाल चिकित्सा २१ वैद्य सर्वस्वात २२ वैद्य वल्लभ २३ मनो-त्सव वैद्य २४ वैधक सारोद्वार २५ सार संग्रह २६ भाव प्रकास २७ अमृत सागर २८ चिकित्सार्णव २६ क्षेम कौतूहल ३० रस मजरी ३१ रस रत्नाकर ३२ टोंडरा नंद ३३ माधवी दामोदर ३४ माधव निदान ३५ वंगसेन ३६ रत्न भूषण ३७ जैजु ग्रन्थ ३८ वसिष्ठ ३९ भेड़ा ग्रन्थ ४० इत्यादिक ग्रन्थो की भाषा से यह राम विनोद किया गया वचन का वंध यह सर्व व्याधि का दूर करनेवाला है। इसमें पुन्य होय जस होय अच्छे अच्छे मित्र होंय धन की प्राप्ति होय परोपकार होय इस ग्रन्थ बरावर और ग्रन्थ सुगम नही है। इति श्री पद्म रंग विरचिते राम विनोद ग्रन्थ सम्पूर्ण समाप्तः श्री संवत् १६३५ वि०

विषय—वैद्यक।

संख्या २५६. ऊखाचरित्र, रचयिता—रामदास विस्राम छन्दर-सुलतौंपुरी (चन्देरी, पहार कवि कायस्थ), पत्र—८४, आकार—१०½ × ६½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४५७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुशी छेदा-लाल, खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ गज मुप शसि मुख हंस सुभ। मूषक वाहन जासु। सिधि वुधि वर के दानि हे। नमो गनाधिप आसु ॥ १ ॥ सोरठा ॥ शिव सुत हृदय मनाइ। अघ नासत कर फरस धरि। दारिद दरक विलाइ जिमि। अहिगण सागर लखत ॥ सुमिरौ चित्त लगाइ। जदपि सुतत्रय के वचन। वसउ सु कवि उर आइ। तहां वुधि उति पति करै ॥ नील जलद तनु श्याम। अरुन जलध लोइनि सरिस। ससि मुख कमल वास हरि। राधा पद उर धरउ ॥ छद गीतिका ॥ श्री कृष्ण अज शिव सती। सारदा सेस अंव गणेशयं। दुज राज रिखिन समाज। चित्र गुपिन्न भूमि सुरे सय ॥

अन्त—रामदास कवि कथा वनाई। केवल रची चौपई गाई ॥ पढ़त न फीकी कहै सुजाना। तिहि विश्राम छंद विनु नाना ॥ काइथ कुल कवि नाम पहारा। सुलातापुरी चंदेरी वारा ॥ देपि कथा यह वुधि विचारी। सुदर छन्द करौ निरधारी ॥ प्रति अध्याय सु छंद वनाए। सवको वाचत लगे सुहाये ॥ छद नाम संज्ञा सुनि लीजै। वुधि वान मम दोस न दीजै ॥ छंद गीतिका परम सुहाये। गावत सुनत श्रवन सुखदाई ॥ पदमावती मर हटा कहिये। दुवई छद त्रभंगी लहियै ॥ उपै व्याहि कृष्ण घर आये। नित नव आनद वजत वधाये ॥ कथा भागवति सुनै जो कोई। पावै फल पुरान विधि सोई ॥ दोहा ॥ रिपि मुनि भूसर सकल। अरु भाषा करि सोइ। तिनके चरननु रेनु धरि। कवि पहार सिर माहि ॥ इति श्री हरि चरित्रे दशम स्कन्धे श्री भागवते ॥ महापुराने ऊषा विवाह वर्ननो नाम सप्त-दशमो ध्याय ॥ लिखितं पीत जोसी मोजे पीथे पुर के ॥ संवत् १९१८ मिती फागुन वदी १० रविवार ॥

विषय—उपा अनिरुद्ध की कथा का वर्णन। कवि परिचयः—नेमा कहत राम को दासू। देस मालवा अति सुख वासू ॥ सहर सिरोज निकट सो ठाऊं। जन्म भूमि मलिनी के गाऊ ॥ पिता मनोहर दास विधाता। वीरा वती जन्म दियौ माता ॥ रामदास सुत तिनको आई। कृष्ण नाम की भक्ति कराई ॥ विश्राम छन्द रचयिता का परिचयः—(१)

कारण —रामदास कवि कथा बनाइ । केवल रची चौपई गाइ ॥ पढ़त न फीकी कहे सुजाना । तेहि विश्राम छन्द बिनु नाना ॥ (२) परिचय —देखिये अन्तिम भाग

संख्या २६० ए. ख्याल पचासा, रचयिता—द्विज पहिलमान, पत्र—३१, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००२ लिपि नागरी, लिपिकाल—सं० १९२६ = १८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० जैसुखराम, मंगलपुर, डाकघर—मारहरा, जिला—एटा (उत्तरप्रदेश) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ ख्यालपचासा लिख्यते ॥ ख्याल श्री कृष्ण जी के जन्म का—चली हरी दर्शन को शृंगार लिये कर आरति थार सम्हार ॥ नंद भवन प्रभु प्रगट भये तीनि भुवन कर तार ॥ स्यामल मूरति निरखि छवि आनंद उर न समात । करै सखि आरति वारहिं वार लये कर आरति थार सम्हार ॥ १ ॥ चंदन अगन लिपाय के मोतिन चौक पुराय । नंद द्वार नौबति बजै ग्रह ग्रह मंगल चार ॥ देव सब बरषत पुष्प अपार करैं सखि आरति वारहिं वार ॥ २ ॥ कोऊ माला कोऊ मूंदरी कोऊ रतनन के हार । साल दुशाला चीर पट कर सखि आरति वारहिं वार ॥ ३ ॥ पहिल मान जदुराइ के दानन को न सम्हार । कामिनि गाय बजाय के प्रभु मूरति धरि ध्यान । चली सखि बरनति नाम उदार करैं सखि आरति वारहिं वार ॥ ४ ॥ इति श्री ख्यालपचास संपूर्ण लिखा मथुरा प्रसाद आगरा निवासी ॥ राम राम संवत् १९२६ वि० राम राम ॥

अंत— ख्याल पचासवा-कृष्ण भये गोकुल के वासी राधिका लछिमी सी दासी ॥ मधुर धुनि मुरली की खासी सुनत उठि धाये व्रज वासी ॥ दो०-महरि श्याम छवि निरखि के लीन्हे कंठ लगाय । नंद सुनत आनंद भये अति गौ गन रतन लुटाय ॥ दान भूपति दिये मन भासी कृष्ण भये गोकुल के वासी ॥ १ ॥ सुनत सब धाई व्रजनारी रतनि भरि कंचन की थारी ॥ कृष्ण छवि निरखै नर नारी । आरती करैं सखी सारी ॥ चंदन अगर लिपाय के मुक्तन चौक पुराय । गणपति गवरि पुजाय सकल मिलि गावैं मंगल चार । कर न्योछावरि नज वासी कृष्ण भये गोकुल के वासी ॥ २ ॥ पूतना नंदधाम आई महरि से बोली मुसकाई । मोहिं सुत दीजे दिखलाइ सेज पर सोवत जदुराई ॥ दो०-धाय श्याम को गोद लै विष कुच दियो गहाइ । कपट जानि खींचो हरि तबहीं गई स्वर्ग लै धाई ॥ गिरत गति दीनी अविनाशी कृष्ण भये गोकुल के वासी ॥ ३ ॥ कंस सुनि सोच कियो भारी । प्रणाघत भेजो छलकारी । अघासुर आवा बल धारी । लात से मारा बन वारी ॥ दो०—जसुधा बांधे श्याम को ऊखल दामरि लाइ । जानि दुचित्ती मातु को दीने वृक्ष गिराय ॥ गये दोऊ इन्द्र धाम खासी कृष्ण भये गोकुल के वासी ॥ ४ ॥ नन्द तहां दये दान भारी गोप सब सोचत नर नारी । कंस अब किया जुलुम भारी कौन विधि बीच हैं बनवारी ॥ दो०-नंद गोप गोकुल तजी वृन्दावन बसे जाय । नाग नाथि धाये प्रभू गिरिवर नख धरो जाय ॥ इन्द्र का मान भयो नासी कृष्ण भये गोकुल के वासी ॥ ५ ॥ धाम है मथुरा का भारी । जहा हरि प्रगटे गिरिधारी । सबन से दान कियो जारी । कंस तहा रच्यो रंग भारी ॥ दो०—कंस बुलाये गोप सब राम कृष्ण दोऊ भाइ । रथ चढ़ाय अक्रूर गये तहँ धनुष जग्य दरयो जाइ ॥ रूप सब देखत व्रजवासी । कृष्ण भये गोकुल के वासी ॥ ६ ॥ धनुष प्रभु खंडन करि डारा । सूर सब मारे

वरिआरा ॥ कूवरी सुन्दर तन कारा । वसन लये रजक कृष्ण मारा ॥ दो०–सूर मारि डारे समर । देखत सब नर नारि । गयो कंस घबराय तब । टारों उन्हें संहारि ॥ वचन अस कहो भूप त्रासी । कृष्ण भये गोकुल के वासी ॥ ७ ॥ कुवलिया मारो जदुराई । कंस के संका मन आई ॥ लये सल तोसल बुलवाई । कृष्णन से समर कियो जाई ॥ दो०–सल तोसल मारे हरी । मुष्टि कादि रन धीर । धाइ गये प्रभु कंस केस । गहि दियो भूप को डारि ॥ खैंचि गये जमुना तट वासी । कृष्ण भये गोकुल के वासी ॥ ८ ॥ मातु पहँ राम कृष्ण आये । कृष्ण तब बंधन कट वाये ॥ तुरत ही धाम श्याम लाये । मातु पितु आनन्द उर छाये ॥ दो०–उग्रसेन को राज दे । तिहुं पुर अनंद अपार । पहिलमान श्री कृष्ण को । सुजस रह्यो जग छाय ॥ काट देउ जमपुर की फासी । कृष्ण भये गोकुल के वासी ॥ इति श्री ख्याल पचासा पहिलमान द्विज कृत संपूर्ण समाप्तः सवत् १९२६ वि०

विषय—श्री कृष्ण लीला ।

संख्या २६० बी. भजनपचासा, रचयिता—पहिलामान (द्विज), पत्र—२८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८७२, खंडित, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबू दीपचन्द, चौगन्नापूर, डाकघर—मारहरा, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्रीगणेशायनमः ॥ मेरे मन हरि की याद भुलाई ॥ पुत्र कलित्र मित्र धन दारा बडे चतुर है भाई । प्रेम फन्द से फांस लियो है सो छूटति कठिनाई ॥ १ ॥ निस दिन भ्रमत बैल सम जगयो तन धन बुद्धि गमाई ॥ हरि का नाम जपा नहिं मूरख भूलि गई चतुराई ॥ मेरे मन ॥ २ ॥ जब जमराज नर्क दिये डारी विपति परे सुधि आई । त्राहि त्राहि हरि सरन तिहारे अबकी होहु सहाई ॥ मेरे मन ॥३॥ झूंठ विवाद मास मद हारी रौरव भरमौ जाई । पहिल मान हरि नाम रटा कर जमपुर फांस छुटाई ॥ मेरे मन ॥ ४ ॥ कर्म गति ना काहू लखि पाई ॥ नृप को दान विदित चारों जुग गिरगिट तन धरो जाई ॥ द्वारावती कूप में टारी कृष्ण दरस गति पाई ॥ १ ॥ गणिका अजामिल कंसादिक सुर पुर दीन पठाई । अघा वका सकटा सुर तारे कीन्हेउ कौन कमाई ॥ २ ॥ रामण सीय विपिन छलि लैगो सो सुर पुर बसो जाय । विप्र सुदामा दास तिहारो चौथे पन सुधि आई ॥ ३ ॥ सिवरी वधिक कौन व्रत धारी उनकी सुगति बनाई ॥ पहिलमान प्रभु अधम उधारन मेरी याद भुलाई ॥ ४ ॥ कर्म गति काहू ना लखि पाई ॥

अंत—अथ बारह मासा पूरबी ॥ गगन घन गरज मचावेरे । लागे मास असाढ़ मोर वन शोर मचावे रे ॥ करि सोलह सिंगार निरखि नयनन जल आवेरे ॥ १ ॥ सांवन परे हैं हिन्डोल तीज त्यौहार न भावेरे ॥ सइयां भये निपट कठोर नेकु मेरी सुरति न आवैरे ॥ २ ॥ भादो मांस गंभीर घटा घन तडप सुनावै रे ॥ मेरे लगत विरह के बान जान मेरी कौन बचावै रे ॥ ३ ॥ क्वांर कनागत दान मान तन मोहिं न भावे रे । भये स्याम निरमोह एक पतिया न पठावै रे ॥४॥ कातिक रैन उजेरी पिया बिन सेज न भावै रे । धनि कुवरी के भाग श्याम को कठ लगावै रे ॥ ५ ॥ अगहन अधिक अंदेश विरह दुख कौन वटावै रे । हम सब धारे जोग भोग कुबरी मन भावै रे ॥ ६ ॥ पूस पवन चले जोर सीत तन अधिक

सतावै र । तल्फति हौं दिन रैनि चैन मोहिं नेक न आवै र ॥ ७ ॥ आये माघ वसत कथ विन कछु न सुहावै रे । मालिन ल्याइ वसत ऋत विन वीर न भावै रे ॥ ८ ॥ फागुन उड़त अबीर राग रग मोहिं न भावै रे ॥ फूटि गये मेर भाग श्याम को कौन मिलावै र ॥ ९ ॥ चैत फले फल फूल कुइलिया शब्द सुनावै रे । मारे उठत विरह की पीर श्याम विन कौन मिटावै रे ॥ १० ॥ माधव मास वैसाख श्याम मधुवन में छाये रे । ऋतु ग्रीषम की तपनि हमारी कौन बुझावै रे ॥११॥ जेठ श्याम मिलि गये गले विरहिन लपटावै र । फूलन सेज विछाय श्याम को खूब रिझावर ॥ १२ ॥ पहिलमान द्विज एक कहति हरि के गुन गावर । ऊधो दीन दयाल तपनि तन की वे बुझावैर ॥ १३ ॥ इति बारह मासा विरहनी समाप्त सवत् १९३० वि० ।

विषय—भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

संख्या २६१ श्रीपालचरित्र, रचयिता—परमाल्देव (आगरा) पत्र—१०४, आकार—१२½ × ६¾ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७४८८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जैन मन्दिर, डाकघर—नारोली, जिला—आगरा ।

आदि—६० । अथ श्रीपालचरित्र भाषा लिख्यते ।चौ०। सिद्धि धर्म प्रत केवल सिद्धि । गुन अनंत जाकी पाल सिद्धि । प्रनमौं परम सिद्धि गुर सोइ, ता प्रसग जो मगल होइ । सिद्धि पुरी जाको सुभ तान । सिद्ध पुरी आनंद निधान । प्रगटी जो त्रिभुवन में आइ । सूरप देव कोऊ लखै न ताहि । अंजन नरहित निरजन जानि । हीन बुद्धि की कहै बखानि । मैं मति हीन जुगन की कहा । गुन अनंत हम पार न लहै । जय जिनद आदीश्वर देव । सुन नरअंत पद पंकज सेव । जय अजिते सुर गुन इमिधान । मान रहित मिथ्या तम भान । जयजिन सभव हरै विकार सुमिरत अर्भेग्या वार । जय अभिनंदन नंदन वीर गुन गरिष्ट भय भजन वीर ।

अंत—जो तव रही अनुव गभीर, अति प्रताप कुल रजन धीर । ता सुत रामदास पर वान । ता सुत अस्तुत करि सुर गान । गावर गढ गिर ऊपर थान । सूर वीर तह राजा आन । ता आगे चदन चाधरी । कीरति सब जगमें विस्तरी । जगति बरहिया गुण गभीर । अति प्रताप कुल रजन धीर । ता सुत रामदास परवान ता सुत असली सुरज्ञान । तासुत कुलमंडन परमल्ल बसै आगरेमें अरिसल्ल । ता सम बुद्धि हीन नहिं आन । तिन कीयो चौपई बध प्रमान । होइ असुद्ध जहा पदहानि । फेरिसवारो कवियन जानि । वार वार जपै करि जोर । बुध जन मोहि देहु मति खोरि । इति श्री पालचरित्र भाषा सपूर्णम् । समाप्तम् । शुभभवेत् । मिती कार्तिक वदी १ । ननड । लि० लालामदन मोहन अटेर प्रति अटेर के मंदिर की पै तै उतारी ।

विषय—(१) मंगलाचरण, ग्रथ निर्माण काल —सवत सोरह सौ उच्चरौ, तापर इक्यावन आगरौ । मास असाढ पहुचै आइ वरषारितु कौ वहाँ बढाइ । पाछि उजारी आठें जानि सुक्कर वार वार परवान । कवि परमल्ल सुद्ध करि चित्त । आरंभौ श्री पालचरित्र ।

बब्बर पात साह हौ जहां, ता सुत साह हिमाऊँ तहां। ता सुत अकबर साह प्रवान। सो तप तपै दूसरो भान। ताके राजन कहू अनीति वसुधा सकल करी सब जीत। ताके राज कथा इह करी—कवि परमल्ल प्रगट विस्तरी। (२) श्री पाल का जन्म, उसके कुष्ट व्याधि, उसका वनगमन, सिद्धि चक्र व्रत लेना, सागर में डूबना कष्ट का दूर होना, बहुत बडा दल पाना, दल का प्रगट करना, पुनः राज्य पाना तथा पुराणों में उसका प्रकट होना।

संख्या २६२. कबीर भानु प्रकाश, रचयिता— परमानन्द दास (ढौन्दा, फीरोजपुर समीप मुक्तसर, पजाब), पत्र—५२०, आकार—१०½ × ७¾ इच, पक्ति प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल— सं० १९२५ = १८७८ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० वैजनाथ प्रसाद ब्रह्मभट्ट, अमौसी, डाकघर—बिजनौर, जिला—लखनऊ।

आदि—अथ लिष्यते ग्रन्थ भानु प्रकाश। प्रथम पूर्वार्द्ध भाग जबू द्वीप भरथ खड को सर्वं शास्त्रीय धर्मनि कथा वरननं कबीर भानु अस्त संध्या वंदन। (छन्द शिखरि रादि) कबीरं भानुं भा कर निकर ज्ञानं विधि मयं ॥ परस्थाने धीरं जगत गुरु पीर निधि नयं ॥ महा तेजो रास वदन स्वदनां सानूप नृपा ॥ पर ताप तापं तदनु जदल दापत न क्रया ॥१॥ तर त क्षारं तं लहत जन सारं वसुमती ॥ महत्यंया रंतं अकथित अनत पसु पती ॥ सुराधी सधी सहि यति मीर पीस ॥ जग जगे। भव भावं भगेर तिर करुना मय पग पगं ॥ २ ॥ जन क जंट ज दरस भ्रम भंज सत हितं। निहार हारहा तिमिर हर पारंगत छिति ॥ सती सूतं सातं विलग विलगातं दिन करा। जती भोग भाग गत विगत भागं किन करा ॥ ३ ॥ प्रजा प्रीडा व्रीडा दुख घन तिमिर क्रीडा महि महा ॥ हत मुद्रा निद्रा समद मन छुद्रा गीत गहा ॥ सतो सग रग वसत विप्र सगं भसं करा ॥ उमंग अगं एक समस अनंतं नसकरा ॥ ४ ॥ नमस्कारं कारं कुमर क्रम कार कक्रते वव वंदे भानू भनत भव फंदे वव व्रते ॥ रमं नमे रम्य सत दर कल्यान करन ॥ प्रनंम्यं तौ पीष्ट परम परमीष्ट प्रवरन ॥

अन्त—आरती—आरती कबीर भानु पर कासा। जासु कृपा भ्रम तम हो नासा ॥ आरति साँचे सत गुरु जी की। कुमति विहाय उदै बुधि नीकी ॥ रहै न भर्म अज्ञ रजनी की। लहै परम गति जिनकी आसा ॥ जेहि जेहि सो सत गुरु लषि आया। फेरन सो भौ भटका खाया ॥ ससार विहाय हंस पद पाया। वसे जाय चरनन प्रभु पासा ॥ बूझउ जो सछम वेद की वानी। अड पिड गति सो पहचानी ॥ मै उचरा चर जो बहु वानी। विनु प्रभु को भेटे भ्रम भासा ॥ × × × इति श्री ग्रन्थ कबीर भानु प्रकाश समाप्तम ॥

विषय—(१) पृ० १ से २२६ तक—कबीर भानु अस्त सध्या वंदन (शिखरणी स्तोत्र)। कबीर भानु का वियोग। कबीर भानु का लोप होना। रात्रि का उद्गम। भक्ति विरहनी का कबीर भानु के वियोग में व्यथित होना। प्रीतम के पास पाती लेकर सुरति दूती को भेजना। दूती का विनय पत्र लेकर चलना। रात्रि में विषयानंद। सर्व कर्म धर्म प्रचार होना। इसी रात्रि में भक्ति विरहिनी को महा उद्वेग एवम् उच्चाटन होना। विरह विलाप

में रात्रि का व्यतीत होना। प्रात कालीन यथा॥ (२) पृ० २२७ से २३५ तक—सुरति दूती का लौट कर भक्ति विरहिनी को प्रीतम का सदेश देना। प्रभात होने और मन मोहन जी के आने का आशिवचन सुनाना। उसको श्रृगार करने और भूषणादि से सुसज्जित होने का उपदेश देना, भक्ति का श्रृगारादि करके सत गुरु प्रीतम से मिलने की लालसा कर चलना। (३) पृ० २३६ से ४९० तक—प्राणाधार का आगमन। प्रभात स्तोत्र। भुजग प्रयात अष्टक कह कर प्रभाती और सवैय्या कहना, भक्ति एवम् सत गुरु का विवाह। भक्ति एवम् सत गुरु के सयोग से ज्ञान नाम धारी पुत्र की व्युत्पत्ति। उसके द्वारा भक्ति के शत्रुओं का विनाश। अज्ञान अधकार का तिरोभाव, हृदय में प्रकाश का विकाश॥ (४) पृ० ४९१ से ५२० तक—ससार में दीन धम कथा का विख्यात होना। दीन धम का लेखा। गृही और साधु धम आदि का निणय। मध्यान्ह दिन का होना। कबीर भानु महा राज की मध्यान्ह की स्तुति विनय। कबीर भानु प्रकाश की आरतीआदि के पश्चात् ग्रन्थकार का परिचय॥ एवम् ग्रन्थ निर्माण काल—सवत् उन्नीस सा पेंतीसा। कला एकादशी तिथीसा॥ मगल और ज्येष्ठ महीना—तादिन ग्रन्थ समापति कीन्हा॥ महि पजाब देश के माहीं। सहर फिरोजपुर एक आही॥ नग्र मुक्त सर तहँ एक अहई। दौदा ग्राम निकट तेहि कहई॥ ताहि ग्राम में जब आसीना। भजन ध्यान प्रभु के लौलीना॥ ग्रन्थ रचन गुर आज्ञा पाई। लिख रचि धम कथा समुदाई॥ जेते अक्षर लिखे बनाई। जो कोई पढि पढि ताहि मिलाई॥ सो गुरु मनमुख लेखा भरि है। भिन्न भेद जो कोई करि है॥

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रन्थ के रचयिता ने अपनी रचना में कबीदास को नायक, भक्ति को नायिका एवम् सुरति को दूती मान कर वियोग के व्याज से प्राय ससार के सभी धम पथ सप्रदायादि का वणन करते हुए कबीर के सिद्धान्तों का बड़ी उत्तमता से मडन किया है। अन्य धर्मों का वर्णन करते हुए भी उन्होंने पक्षपात से काय नहीं लिया हे। जिस प्रकार उन्होंने ईसाइ, मूसाइ, कुरानी और पुरानी मतों का वणन किया है उसी प्रकार अमरीका और यूरोपादि देशों का भी वर्णन किया हे। 'हिन्दुस्तान' शब्द की व्याख्या 'मेरु तत्र' के आधार पर की गई ज्ञात होती है। इस एक ही ग्रन्थ से अनेक धम व सम्प्रदाय के सिद्धान्तों और उनके विभागों का ज्ञान हो सकता हे। ग्रन्थ उत्तम हे। किन्तु लिखा बहुत अशुद्ध है।

सख्या २६३ ए बहुरगीसार, रचयिता—परमानन्द (इटावा), पत्र—१६२, आकार—६ X ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप)—१२१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८९० = १८३३ ई०, लिपिकाल—स० १९०६ = १८४९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर विजय सिंह रामपुर के, डाकघर—सरौढ़ा जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नम श्री गुर नारायनम अथ बहुरगी सार लिख्यते॥ भजन—सता कृष्ण धरम औतारा लीला वेद प्रकारा॥ चोर भक्त को नित चुरावै काम हरन सुख धारा। अग्नि रूप औतार कृष्ण तन क्षुधा तृपा धर्त सारा॥ १॥ आलस हरन नींद के हरता

मिथुन प्रचुत घर दारा ॥ प्रक्त पती कृष्ण है जगपति कामिन के भरतारा ॥ २ ॥ जेती कामिनि कृष्ण पुरुष वर इच्छा रास विहारा। अग्नि कुड में सवही उज्वल जोति पतिंगा कारा ॥ ३ ॥ अग्नि जोति चन्दा निर दोसी सखी सकल को तारा। परमानन्द कृष्ण उपदेशी निन्दे मूढ़ गवांरा ॥ ४ ॥ दो०—जेती आहुति अग्नि में अग्नि सदा परकाश। धर्त रूप सब सत्य है परमानंद विलास ॥ संतो राम कृष्ण करता है उनही जक्त रचा है ॥ रमन भवन श्री रामचन्द्र को कीडा कृष्ण करा है'। सतजुग चारी ले अवतारी ब्रह्मा देव तरा है ॥ त्रेता तीनि चीनि सोई प्रभु दसरथ भाव सता है। द्वापर दौसी धरम हेत दिउ असुरनि मारि कहा है ॥ भक्तन के हिरदे में व्यापक कलि में एक रहा है। परमानंद निसानी मानी संभल महल वना है ॥ दो०—संभल मुरादाबाद मेरा मित्र कलकी रूप। कछू दिना में प्रगटि है परमानद अनूप ॥

अन्त—होली ज्वाला देवी–चलोरी सखी ज्वाला पूजो री वसत ऋतु आई होरी ॥ काली दुरगा पूजन सगी भैरव द्वार खरोरी। महाकाल जहँ धूम मचावे जोगिन शोर करोरी ॥ चन्द्र क्षेत्र चमत्कार वीर वर प्याला रंग पियोरी ॥ चखन करो वली वली दे पशु को वंशी मीन हतोरी ॥ जोत रूप माता जग जननी विजया अंक धरोरी ॥ खप्पर खंग गरुडन की माला रक्त वरन शिव जोरी ॥ ब्रह्म रूप जो शंकर पूजे चैत्र ब्रह्मा शुभ कोरी ॥ सहस वाहु को रामन मारो परमानंद धरोरी ॥ १ ॥ दो०—अग्नि रूप ज्वाला मुखी दसौं दिसा की माय। रिद्धि सिद्धि दासी खडी परमानद सहाय ॥ मचाई जग में नित नई नई होरी ॥ सुनके कोऊ देउ न खोरी ॥ काम क्रोध के कुड बने है ममता को रंग भरोरी ॥ मचाई ॥ लोभ मोह सवही को गहि गहि बोरत है वर जोरी। आसा तृष्णा जग फगु हारी पीछे फिरत दौरी दौरी ॥ इनसे भागि वचो नहिं कोई लेत है प्राण निचोरी ॥ खेलत बारह मास छऊ रितु लागी है मेरी औ तेरी ॥ खेल फाग कुरंग रूप वत कामिनि करत वर जोरी ॥ इनसे भाग बचो कोउ गुरुजन ब्रह्म रंग डिग डोरी ॥ परमानद वसु गगन गुफा मे शब्द न शोर करोरी ॥ मचाई जग मे नित नई नई होरी ॥ इति श्री वहुरंगी सार संपूर्णम् ॥

विषय—इसमे राम कृष्ण के शिक्षाप्रद भजन है।

संख्या २६३ बी. बहुरगीसार, रचयिता—परमानन्द (इटावा), पत्र—१६, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला सीताराम विनोदगज के, डाकघर—छर्रा, जिला—अलीगढ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ वहुरंगी सार ग्रन्थ परमानन्द कृत लिख्यते ॥ वहुरंगी सार का प्रारम्भः ॥ सतो कृष्ण धरम अवतारा। लीला वेद प्रकारा ॥ चोर भक्त को चित्त चुरावै काम हरन सुप धारा ॥ अग्नि रूप अवतार कृष्ण तन छुधा तृपा धर्त सारा ॥ सतो कृष्ण० ॥ आलस हाल नीद के हरता मिथुन प्रचुत घर दारा। प्रक्त पती कृष्ण है जग पति कामिनि के भरतारा ॥ जेती कामिनि कृष्ण पुरुप वर इच्छा रास विहारा ॥ अग्नि कुड मे सवही उज्ज्वल जोति पतिगा कारा ॥ अग्नि जोति चन्दा निरदोसी सखी सकल को तारा ॥

परमानद कृष्ण उपदशी निर्दे मूढ़ गवारा ॥ दोहा—जेती आहुति अग्नि में अग्नि सदा परकाश । घृत रूप सब सत्य है परमानन्द विलास ॥

अन्त—सतो राम कृष्ण करता है उनही जक्त रचा है ॥ सतो० ॥ रमन भवन श्री रामचन्द्र को क्रीडा कृष्ण करा है । सत जुग चारी ले औतारी ब्रह्मा देव तरा है ॥ सतो० ॥ त्रेता तीनि चानि सोई प्रभु दशरथ भाव सता है । द्वापर दौसी धरम हेत दिउ असुरनि मारि कहा है ॥ भक्तन के हिरद में व्यापक कलि में एक रहा है । परमानन्द निशानी मानो सभल महल बना है ॥ दो०—सभल मुरादाबाद मेरा मित्र कलकी रूप । कछु दिना में प्रगटि हैं परमानद अनूप ॥ होरी—मचाइ जग में नित नई नई होरी सुनके कोऊ देउ न खोरी ॥ काम क्रोध के कुन्ड बने हैं ममता को रग भरोरी ॥ मचाई० ॥ लोभ मोह सबही को गहि गहि बोरत है बर जोरी ॥ आसा तृष्णा जग फगुहारी पीछे फिरत दौरी दारी ॥ २ ॥ इनसे भाग बचो नहिं कोई लेत हे प्राण निचोरी । खेलत बारह मास छऊ ऋतु लागी है मेरी आ तेरी ॥ ३ ॥ खेल फाग कुरग रूप बत कामिनि करत बरजोरी । इनसे भाग बचो कोऊ गुरू जन ब्रह्म रग डिग डोरी ॥ परमानद वसु गगन गुफा में शब्द ने शोर करोरी ॥ मचा० जग में नित नई नई होरी ॥ ४ ॥ इति श्री बहुरगी सार ग्रन्थ सपूर्ण समाप्त लिखा प्राग द । तिवारी भादौ सुदी चौदस स० १९८० वि० ॥

विषय—उपदेश व शिक्षा सबधी भजन ।

सख्या २६४ ए. उषा चरित्र, रचयिता—परसराम, पत्र—५०, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०० रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७२ = १८१५ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवकण्ठ मिश्र गोपामऊ के, डाकघर—गोपामऊ, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ उषा चरित्र लिख्यते ॥ चउ—चैत मास गौरी व्रत होई । सकल त्रिया पूजि सब कोई ॥ बाणासुर की राज दुलारा । ऊषा नाम सो प्रान पियारी ॥ विधि सजोग ताके मन आइ । सो चलिके रानी पै जाई ॥ मोकू विदा देहु जा माता । हो पूजौं शकर सुख दाता । रानी विदा कुमरि को कानी । पुष्प कमल सामग्री दानी ॥ दूध दीप नैवेध ले । सब सखा दल साथ । फूल दल पाती फल जती । केशर चन्दन हाथ ॥ आइ कुमरि शकर मठ जहा । उमापती सोहत है तहा ॥ जल आश्रम शकरि चलि गये । प वत मग करीलउ गये ॥ गावें गदप राग सुजाना । रति अपछरा नृत्त जहँ ठाना ॥ दिन कर मगन महा सुख होइ । काम मग्न फूली सब कोई ॥ कुवरि आइ पूजन जब देखा । सब दास पिया रग देखा ॥ कुवर देख मन में कही धन्य सती पति सग । भये प्रसदि गौरा लिखे आयेउ मग अनग ॥

अन्त—कपट प्रीति ऐसी कुवर न काज । वचन करो दुख बहुत न दीजै ॥ सुनी कुवर कुवर की रानी । अति सो प्रीति दुख कर जानी ॥ तबहिं कुवर भेंगे एक बारी । लइ जिवाय विरह की मारी ॥ मिली कुवर आर राज कुमारी । पहिले दुख छिन माहि बिसारी ॥ सेज सुखं सेन राजकुमारी । ऊषा सहित मरी निज सारू ॥ दो०—

कुवर कहै रजधानी । अति सुख रुप अनत । जो यह कथा निरवारई । कृपा करै भगवंत ॥ दया करौ जादौ नाथ गुसाई । भुक्ति मुक्ति फल होइ वडाई ॥ कहै सुनै सकट नहिं परई । विछुरे प्रीतम मिलै तेहि वरही ॥ व्याध दरिद्र न आवै नेरे । रन में तिसनहि आवै हेरे ॥ रूप नीक पावै ससारा । वाधो छुटै सुजत ही वारा ॥ जुर जाड़ा आवै नहिं नेरे । दुष्ट न व्यापै करै वहु तेरे ॥ दो०–परसराम की वीनती । जौन श्रवन सुन लेइ । परम दयाल कृपा करै । प्रभु इतना फल देइ ॥ पुनि ले अपनो इक हौ । अल्पै सतले सोइ । गुन जन समैं सुधारियो । हीन जहां कछु होइ ॥ इति श्री अनिरुद्ध उपा सुपन प्रसंग समाप्त संवत १८७२ जेष्ट कृश्न ९ गुरु लिखत नंद राम ॥

विपय—ऊपा अनिरुद्ध का स्वप्न प्रसंग वर्णन ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता परसराम थे जैसा इस पद से प्रगट है:—परसुराम की वीनती जौन श्रवन सुनि लेइ । परम दयाल कृपा करै प्रभु इतना फल देइ ॥ लिपिकाल सवत् १८७२ वि० है ।

संख्या २६४ वी. ऊपा चरित्र, रचयिता—परशुराम, पत्र—२०, आकार—८ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५०, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—कैथी, रचनाकाल—लगभग १६३० ई०, प्राप्तिस्थान-पं० सीताराम शर्मा, डाकघर—वमूतरी, जिला—आगरा ।

श्री गणेशायन्मः ॥ अथ लिपित ऊपा चरित्र ॥ कृष्ण कमल लोचन हितकारी । अवध भूप ईश्वर अवतारी ॥ जाकौ नाम सुनत अघ जाइ । सो प्रभु वरनै सदा घट माहि ॥ घट घट बसै लपै नहि जानी । पडित गन गुन रहे वपानि ॥ प्रेम प्रीति निजु सुःख कहात । चतुर्जुग एककर वात ॥ दोहरा ॥ त्रिभुवन पति नागर नवल । जुगल किसोर किसोर । तिहि की जुगति ऊपार है । कवि वरनै किहि ठौर ॥ जाको मरमु निगम नहि जानै । जासौं मति पकरि तासु ग्रह आनै ॥ जोग अनेक जोगेश्वर आवै । करत विचार पार नहि पावै ॥ गुप्त रुप प्रगटौ सब आइ । गिरगुन एक करौ गुँसाईं ॥ कमल नैन भयो वनवारी । केल कृष्ण सतन हित कारी ॥ अब प्रभु कौ विनयौ कर जोरी । तिहि गति अगम मुहि मति थोरी ॥

अन्त—दूत कहै आये किहि काजा । अनत वभूत वड राजा ॥ तव वोले हरिक. देखा । कुमार एक अटक्यौ तेहि देसा ॥ . नाजा हौ चडी आये । वंधे कुमार तोही दे ·· ये ॥ सुनि कै दूत चकित से रहेयो । स..... जासौ कह्यौ ॥ राजा पूछी कहौ समुझाइ । पुरुष एक उतर्‌यौ आइ ॥ कहै दूत तुम...भुआला । कृष्ण देव आये इहि काला ॥ ..... रराज जादौ चढ़ि आये । कटक अनत सा . प धाए ॥ आए राइ सहत वल जाहे । गज म .. न उठि खुर काहे ॥ प्रवल कटक कछु कही.. इ ॥ राज द्वार रह गये रुप छाइ ॥.. ..

विपय—ऊपा अनिरुद्ध के विवाह का वर्णन ।

संख्या २६५ ए. षटरहस्य निरूपण, रचयिता—जन पर्वतदास, पत्र—३०, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७४० = १६८३ ई०, लिपिकाल—स०

१८९८ = १८४१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामविलास रामनगर के, डाकघर—तालयकती जिला—लखनऊ (उत्तरप्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ पट रहस्य निरूपण लिख्यते ॥ प्रथम ज्योति रहस्य लिख्यते ॥ लाल दूलह दविन के लागौं पाय ॥ कर जोड़ो पद जोरि लाहिले विनै करो सिर नाय ॥ ये हमारि कुल पूज्य भवानी तुम्हं उचित हिआ आये ॥ परमानद होय दूनौ दिसि इनके पूजि पुजाये ॥ २ ॥ नाइ रीझै जप तप सजम ना कछु गाये बजाये। केवल विनै मात्र कर जोर द्रवती मरल सुभाये ॥ ३ ॥ सखौं विघ्न प्रसन्न मोद प्रद वह तिहि वनि मति भाये। वेगि पाय परि दीन भाव धरि करि है क्रोध विल माये ॥ ४ ॥ प्रभु हसि कहा कैसी हे दवी वैगी बदन दुराये। क्रोध प्रसन्न जानि कस परि ए विना सरूप लखाये ॥ ५ ॥ यह हमारि ग्रह गोचर माया इनहिं न अग दिपाये ॥ दूरि रहौ जनि छुवेहु धोवेहू मह हो तुम विना नहाये ॥ परयम राम गहो घूघट पट हमरी पदुप छु ाये। इन दविन के भाग्य सराहौं दोऊ पद लेत चढ़ाये ॥ हमको काह ठगौ मृग नैनी तुम्है ठगन हम आये। जन पवत मुख काय कहत भ लालन पढ़े पढ़ाये ॥

अन्त—कोउ वहु श्रुति सवन कठ घोड सता नद तप पायो। क्यौं करे कौतुकी नारन तिन सब भेद बतायो ॥ नापित गति सुनि भूप कौतुकी आतुर तिन्हे बुलायो। चित्र चिन्ह तत्काल मिटे नहिं जदपि धोय छुड़ायो ॥ रचना देपि हसे सभा मुनि अरु सब सखा बराता ॥ मचो हास आनन्द कुला हल समुझि परै नहिं बाता ॥ इहि प्रकार आनन्द दुहू दिसि परम विलास सुहावा ॥ सज्जन समुझि लेउ अपने मन यथा स्वमति मैं गावा ॥ जस मम हर्दै प्रेरना करि अरु जस मम मतिहिं लखायो। पर्वत दास सत पद रज सिर राखि चरित यह गायो ॥ दो०—जे सुनि है करि प्रीति यह जे कहिहैं करि भाय। तिनको राम विलास यह करि है तुरत प्रसाव ॥ सीताराम रहस्य यह भक्त रसिक सुख मूल। ध्यान मनन करिहैं जेइ तिन्ह दंपति अनुकूल ॥ भक्ति हास्य श्रृंगार रस त्रय रस मिश्रत स्वाद। जे पढ़िहैं जनिहैं तेइ सिय रघुबीर प्रसाद ॥ कहै सुनै जे ध्याह मा सावधान करि भाव। सात होइ सबौं सुभ दिन दिन मंगल चाव ॥ इति श्री पट रहस्य निरूपण सपूर्ण समाप्त॰ लिखतं शिव दीनपांडे स० १८९८ वि० चैत्र कृष्ण द्वादसी ॥

विषय—श्री राम जी के विवाह के रहस्य (ज्योति रहस्य, बाती रहस्य, लहकौरि रहस्य, राम कलेवा रहस्य, चतुर भगिनी रहस्य) वर्णन।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता बाबा पर्वत दास थे। यह अठारहवीं शताब्दी में हुए थ। ग्रन्थ निर्माण काल सवत् १७४० वि० और लिपिकाल सवत् १८९८ वि० है।

सख्या २६५ वी पट रहस्य, रचयिता—पर्वतदास, पत्र—२५, आकार—१४ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९११ = १८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—भगत रामदास—सीरपुर, डाकघर—बारहद्वारी, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि— श्री गणेशाय नमः अथ पट रहस्य लिख्यते ।। प्रथम ज्योति रहस्य ॥ लाल इन देविन के लागौ पाय । कर जोरो पद जोरि लाडले विनै करौ सिर नाय ॥ हे हमारि कुल पूज्य भवानी तुम्है उचित ह्यां आये । परमानद होइ दोनो दिसि इनके पूजि पुजाये ॥ नाई रीझै जप तप सजम ना कछु गाये वजाये , केवल विनय मात्र कर जोरत द्रवती सरल सुभाये ॥ सर्वो विध्न प्रसन्न मोद प्रद कह तिहु वनि सत भाये । वेगि पाय परि दीन भाव धरि करि है क्रोध विलमाये । प्रभु हसि कहा कैसी है देवी वैठी वदन दुराये ॥ क्रोध प्रसन्नि जानि कस परिहै विना सरूप लखाये । यह हमारि सह गोचर माया द्रवहि न अग दिखाये ॥ दूरि रहौ जनि छुयेहु धोखेहु तुम हौ विना नहाये । वरवस राम गह्यो घूघट पट हमरी पदुप चुराये ॥ इन देविन के भाग्य सराहौ द्वौ पद लेत चुराये ॥ हमका काह ठगौ मृग नैनी तुम्हे ठगन हम आये । जन पर्वत मुसकाइ कहत भई लल्न पढ़े पढ़ाये ॥

अन्त—अथ चतुर भगनी रहस्य। हे दसरथ के पूतो का कछु नेग हमारा । मैं तुम्हरे पुरिखन कै वदी विदित सकल संसारा ॥ जवते वसिष्ठ पुरोहित भे तवते मै लीन भटाई । केवल तुम्हरे हेत लाडिले मै यह वृत्ति उठाई ॥ यह इच्छाकु वंस में मेरा अन्य भापि नहिं खाऊं । तेहि पर अवस अवध गादी तजि और कहू नहिं जाऊं ॥ पिता तुम्हारे वहुत कछु दीना रात्र वहुत कछु पावा । तुमसी घरहिं सपदा पाई आग्रह काह न आवा ॥ और और के नेग है हम एकै यह पावै । फिर कवहू नहिं जाही काहु के घर वैठे गुन गावै ॥ व्याहि प्रथम आवै जव दुलहिन हमै नेगु दै दासुन । तव भोगे सेज्यादिक सौपिन पूछिलेउ निज सासुन ॥ सुनि परिहार अनरगल अक्षर घूघट विच मुसकानी । मानहु चारि विधु भये अरुन घन ऊपर प्रभा यह रानी ॥ तव तिन पुरानी हसि वोली सत्य कहे यह भाटिन । जो मागै सो देउ प्रीति जुत यह हमारि कुल पाठिन ॥ अव मै पाठ चुकिउं ठकुरैनी जो हमका इन चीन्हा । सुन्दर वदन सुकोमल नैनन मोहिं चितै हसि दीन्हा ॥ अव चहिहो तव मांगि लेउ मै मोर कहू नहि जाई । जस जस इनकी वृद्धि होइगी तस वर बड़ी सवाई ॥ सदा अचल अहि बात रहै होइ होइ पूर धुर धारी । प्राण ते अधिक पतिन का प्यारी होय असीस हमारी ॥ जन पर वत जे परम उपासक रस माधुर्जहि जाना । रहस्य ध्यान ते जनित पाउ सुख होइहि मगल ताना ॥ सीता राम विवाह सुभग यह सवका परम हुलासा । राम कृपा सो रहस्य रह य कह यह सोजन पर्वत दासा ॥ इति श्री रहस्य सपूर्ण सवत् १९११ श्रावण शुक्ल वुधवार तिथि दुतिया लिखा मुसदी घूरे लाल गुजौली ॥ राम राम

विपय—इसमे श्री राम और सीता आदि चारो भाइयो के विवाह, राम कलेवा आदि पट रहस्य लिखे है ।

सख्या २६५ सी. जानुकी व्याह चतुर्थरहस्य, रचयिता—पर्वतदास (ओडछा), पत्र—४, आकार—१३ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्) ८२, लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—८२, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, ठाकुर भगवान सिह, सासनी, डाकघर—सासनी, जिला—अलीगढ (उत्तर प्रदेश) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ जानुकी व्याह चतुर्थ रहस्य लिख्यते ॥ प्रथम जोति रहस्य लिख्यते ॥ लाल इन देविन के लागौ पाय । कर जोडो पद जोरि लाड़ले विनय करौ

सिर नाये । ये हमारि कुल पूज्य भवानी तुम्हैं उचित ह्या आये ॥ परमानद होय दानों दिसि इनके पूजि पुजाये । ना इ राक्ष जप तप सजम ना कछु गाय बजाये ॥ केवल त्रिन मात्र कर जोरत द्रवती सरल सुभाये ॥ सर्वो विघ्न प्रसन्न मोद प्रद कहति हवनि सति भाये ॥ वेगि पाय परि दीन भाव धरि करि ह क्रोध विल माये । प्रभु हसि कहा कैसी ह देवी वैठी वदन दुराये । क्रोध प्रसंति जानि कस परि है बिना स्वरूप लखाये । यह हमारि ग्रह गोचरि माया द्रवहि न अग दिखाये ॥ दूरि रहौ जनि छुयेहु धोपेटु तुम ही बिना नहाये । वर वस राम गह्यो घूघट पट हमरी पदुप चुराये । इन दविन क भाग्य सराहौं द्वौ पद लेत चढाये ॥ हमका याह ठगो मृग मैं यू तुम्हैं ठगन हम आये । जन पचत मुस काइ कहत भईं लालन पढ़े पढाये ॥

अत—जानकी घेर हे सखी सुभगिनी सग तरनी तरन चपल बरनी मन हरनी मृदु अग मसला करैं । परसपर हिल मिल एक एक के घेरे ॥ नाम कहा निजनिज भरतन के चचल दग करि हेरैं ॥ अगुल्नि कोरे बसन अजोरैं दाठि करै सय नारी । नारि सुआसिनि सये लैत भईं रह गइ जनक दुलारी ॥ प्रथम कहौं तानिज भगनिनि वा कहौं निज निज पति नामा । सिय सकोच ते कहि न सक कछु धरि क्षिप्र कोरैं वामा ॥ अथ कस सकुच करौ अवनी मुख कहो मद मुस काइ । गाढ़े गही नारि सगति तिन नही कछु जतन बिसाई ॥ हम सन हठि हठि नाम कहायो विन लीन्ह नहिं बाची । तुम नोपी कस कहा सयानी हय नाही अस काची । एक कटे अस नाहिं गओओ ह लीजे सग लिवाई । आवनि वेगि पठ जनवासे जहँ बतरो समुदाइ ॥ श्रुति कीरति तव कह्यो शत्रुहन भरत माडवी काहा । मद रघरन तव कह्यो उरमिला लखन हमारे नाहा ॥ धरि येक हास कर्यो सब जुरतिन तुरत सिया गहि लीन्हा ॥ तुमहु नाम कह्यो निज पति को जो यह कौतुक कीन्हा ॥ सकुचि सिया कह म नहि जानति कहु सखी यह बानी । पाले पराहु महा कठिनन के ना कछु चली सयानी ॥ तब सिय कहै नाम निज पति को सुनहु सकल सपि वृन्दा । रघुनायक रघुवर रघुनदन रघुकुल मनि रघु चदा । सखी कहै हमहा बड़ी चातुर तिन्हें कहा बद लावो । तान नाम कस गोयहु लाडली जौन वशिष्ठ धरायो ॥ छवि आगर करण सुख सागर बल बुधि अरु गुन धामा । आदि रकार मकार अतहु यह निज पति कर नामा ॥ सखी कहै हमहू अस जाननि राम नाम तव कता । पै तुम्हरे मुप ते निकसाउब यहै बात है तता ॥ तेहि अवसर नृप जनक आइगे सकल रही सकुचाई । जाहु सिया तुम्ह मात बुलावै दासी चली लिवाई ॥ सीताकी रहस्य जे गावैं सुनै उर करि बडी हुलासा । हुइहै परम सुपी नारी नर गावत परवत दासा ॥ इति श्री जानकी ब्याह रहस्य समाप्त लिपत राम दास मुसी चत वदी तेरस सवत् १९०० वि० ।

विषय—श्रीरामजानकी के विवाह के छ रहस्यों (ज्योति रहस्य, बाती रहस्य, लहकौरि रहस्य, जानकी रहस्य, आदि) का वर्णन ।

सख्या २६५ डी रामकलेवा रहस्य, रचयिता—पर्वतादास (ओरछा), पत्र—२०, आकार—१३ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६५, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर भगवान सिंह सासनी, डाकघर—सासनी, जिला—अलीगढ़ ।

आदि— श्रीगणेशायनम. अथ रामकलेवा रहस्य लिख्ये ।। अथ कलेवा रहस्य रागिनी काफी ।। सुनिये रहस्य या श्री राघो सुख दानि । प्रात समय रवि उदित भये सति नौवा जनक पठायो । चारिउ कुवँरि राउ दशरथ के तुरत बोलि लै आयो ।। गवनित नौवा गा जनमासे नृप दशरथ के ठाईं । चारिउ कुवँर महा कौशल वर चले कलेवा खाईं ।। सुनि नृप सखा अनुज जुत रामै आतुर लिय उर लाई । जाउ सकल मिलि खान कलेवा पठये जनक बोलाई ।। पितु अनुसासन पाय कृपा निधि चलिभे चारिउ भाई । सम वे राजकुमार छवीले ते सव चले लिवाई ।। कोउ स्यन्दन कोउ तुरंगन आपु रुचिर सुख पाला । अनुज-सहित लसत रघुनदन कोटि मदन मद घाला ।। स्यद नादि सह भ्राजत अदभुत परम विचित्रित कीन्हे । जग मगात सब जडित जडापन दिनकर परत न चीन्हे ।। गोमुप आदि दुदभी वाजत पणवं सरस सहनाई । आवत जान राम कहं सखियां गली सुगंध सिचाई ।।

अंत—येहि प्रकार सुनि वचन सखा के भूप सखी मुसकाने । औरौ जे सब वैठे सभासद तेउ हू से सुख साने ।। कोउ वहु श्रुति सर्वज्ञ कहे कोऊ सतानद तव पायो । वयो कहे परम कौतुकी नारद तिन सव भेद वतायो ।। नापित गति सुन भूप कौनुकी आतुर तिन्हे बुलायो ।। चित्र चिन्ह तत्काल मिटे नहि जयपि धोय छुडायो ।। रचना देखि हसे सभा पुनि अरु सव सकल वराता । मच्यो हास आनन्द कोलाहल समुझि परै नहि वाता ।। एहि प्रकार आनन्द दुहू दिशि परम विलास सोहा । सज्जन समुझि लेउ अपने मन यथा सुमति मै गावा ।। जस मम हृदै प्रेरना करि अरु जस मम मतिहि लखायो । पर्वत दास सत पद रज सिर राखि चरित यह गायो ।। दो०—जे सुनिहै करि प्रीति यह जे कहिहै करि भाव । तिन कहे राम विलास यह करिहै तुरत प्रसाव ।। सीताराम रहस्य यह भक्ति रसिक सुख मूल । ध्यान मनन करिहै जेई तिन्ह दंपति अनुकूल ।। भक्ति हास्य श्रृगार रस त्रय रस मिश्रित स्वाद । जे पढ़ै जनिहै तेई सिय रघुवीर प्रसाद ।। कहै सुनैं जे व्याह या सावधान करि भाव । सांत होय सर्वोशुभ दिन दिन मगल चाव ।। इति श्री रामकलेवा रहस्य पर्वत दास कृत सपूर्ण समाप्तः ।। लिखत रान दास मुसी चैत्र वदी द्वादशी संवत १९०० वि० राम राम राम—

विषय—१ पृष्ठ से २ पृष्ट तक—कलेवा के लिये राम आदि चारो भाइयो का जनक के मंदिर जाना आदि । पृष्ठ २ से ३ तक—भोजन तैय्यार होना और जेवनार के लिये महल मे चारो भाइयो को बुलाना ।। पृष्ठ ४ मे ६ तक—चारो भाइयो का जीमना और सखियो का गारी गाना आदि । पृष्ठ ७ से १० तक—जेवनार जीमने के पश्चात् पान आदि खाना और चारो ओर से सखियो का घेर कर बैठना और परस्पर हास विलास करना ।। पृष्ठ ११ से १५ तक—सखियो का हसी दिल्लगी करना और परस्पर के उत्तर प्रति उत्तर ।। पृष्ठ १६ से १९ तक—राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न आदि का सरहज के महिल मे जाकर हास विलास उत्तर प्रति उत्तर देना पृष्ठ २० से २४ तक—सरहज के मंदिर से राज समाज में जाना और कविका ग्रन्थ महिमा वर्णन करना आदि लिखा है । इसमें २१ विश्राम है ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता पर्वत दास संत थे जो सवत् १७२१ में हुए है । निर्माण काल का पता नही । लिपि काल सवत् १९०० वि० है ।

संख्या २६६ ए रणसागर, रचयिता—पातीराम (सरहैदी), कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—१२ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६२, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री जयदेव मिश्र, ग्राम—सरहैदी डाकघर—जगनेरा, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—ऐसे अमृत वचनि सुनि, मुदित भये मनमाहिं। आपस लै तवही चले, निज राजनु परछाहि। चौपाई—तिहि औसर नारद रिषि आऐ परम भगत सबके मन भाए। तिनको हरि जू आदर कीनो। नमस्कार करि सादर लीनौ। तिन असी विधि बैन बतायो, जिनके सुने परम सुख पायो। पूछन लगे तिनै सुख दाता। सकल पडु पुत्रन की बाता। दुर्जोधन है अति अनराइ। उनको होत सदा दुख दाइ। कैसी रीति रहैं तब ठौऊ, कहा भेद रिषि राज गुसाइ। नारद कही सुन हो भगवाना। अलख निरंजन सबके प्राना। तुम मोसों पूछत यह बाता। मेरे रोम उठे सब गात। सोरठा—धरत तुम्हारो ध्यान, सकल जीव ससार के। सुनहु श्री भगवान, पातीराम नारद कहत।

अन्त—फिरि निकुल प्रचारै वचन उचारै आयसुमोंको दीजे ये जू। ये जू सबको रन मारों कटक सहारों नृपति देव नहिं काजे ये जू। देखो मम काजू पौरख आजू भूमि पलटि सब लाजे ये जू। बनकू नहीं जइय घर ही रहिये कौरक को बल लीजे ये जू। राजा समुझावै वचन सुनावे नकुल रोस नहीं कीजे ये जू। तुम पोरिख ताइ कहि न जाइ, सरि वरि कोनहू दाजे ये जू। दोहा—दग भरि राजा यो कही, हौनि मिटी न जाइ, अनुजन की भुज पकरि के, ग्रह कू चले लवाइ। सभा यह वहित करि सुन जो कोइ नर नारी। मोक्ष लाभ आर अरथ प्रम मिलहा पदारथ चारि सब पतितन ते पतित हों बुधि हीन ते हीन प्रभु को जस कसे कहू म दीनन में दीन। सिसु पर पित हितु नहिं तजे, पर कोट तकसीर पाती राम का रक्ष करि, तैसे हो जदुबीर। इति श्री महा भारत पुराने भाषा रण सागर दुज पाती राम कृत राजा जुधिष्ठिर वचन हारि वरनो नाम आवा दसोध्याय ॥ १८ ॥

विषय—महाभारत के सभापर्व का पद्यात्मक अनुवाद।

संख्या २६६ बी पातीराम के भजन, रचयिता—पातीराम (सरैंधी), पत्र—११०, आकार—९ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप)—१५२०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री सोनपाल पारासर, ग्राम—सरेंधी, डाकघर—जगनेर, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशायनम। श्री सरस्वतै नम। श्री भजन गणेश जी का। टेक०—जोई गनेश मनावै जा जग में। रिद्धि सिद्धि सुग सम्पति सबरी चारि पदारथ पावे। माता पारवती के लाड़ले दुलार कुमार दवता वन्दना करें कर जोरें बार बार। दालिद्र के खोपरे को फोर करैं धार धार जी, जाके नाम लेत कट जात पातक पहार। पाच पाच पेड़ रिद्धि नाम के चले अगार रूप ह अनादि गणपति जू के अवतार। चारि वेद जस गावैं ॥ टेक०। एक दयावन्त दूजे चारि भुज चक्रधारी माथे पे सिंदूर सीस प मुकुट धारी। कन्धे में जनेऊ

चीज और यही पूजा के सब चीज मिलाय खाइ ओ भोग सर्म नारी साधी लच्छी होइ कै भोग करै जिससे कमल सीधो रहै गर्भ रहै धरिये में बीज पहुँचै ॥

अन्त—अथ आयु विधि। जेहि मानुष को नापै तेहि के अंगुल की परमान हैं। जो नर वामन अंगुल का होइ सो देव रूप है निज मानो १ मिथ्या अहारी होइ। और अस्सी अंगुल का महा कुटिल कूर जानो ९० अंगुल वाले की उमरि ३० की और ९० अंगुल से आगे अंगुल पीछे ७ बरष बढ़त है। सा ले औ सौ अंगुल खोले की उमिरि ८० बरस की जानौं और १०० आगे होइ तो अंगुल पीछे सात सात बरस बढ़े सो उमिरि ११० बरसि कै और ११० अंगुल के होइ तो १५० बरस के उमरि जानब और ११० अंगुल से १५० आगे अंगुल पीछे दस दस बरस बढ़त है उमिरि सो जानब १२० अंगुल से आगे और बढ़ा होइ सो गुन म नहा ला कहा ॥ दोहा—देवता दैत्य राक्षस सब हैं यह आ कछु नाहि। दास पतित मत गूढ़ है। या समुझि लेउ मन माहि ॥ गुन दोष आ सुख दुख भल क कहब विचारि। दास पतित धर्म पत गहो रक्षक श्री मुरारि ॥ इति श्री रजस्वला रोग दोष निवारण नाम ग्रन्थ सपूर्ण समाप्त लिखत शिव विलास पाडे सवत १९१२ वि० माघ मासे शुक्ल पक्षे त्रियोदशी ॥

विषय—इस रजस्वला ग्रन्थ में बाझ स्त्रियों के लक्षण, रोग और उनके उपचारों का वर्णन है।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता बाबा पतितदास थे। ग्रन्थ का निर्माण काल संवत् १८९० वि० और लिपिकाल स० १९१२ वि० है ॥

संख्या २६८ ए विवेक सार, रचयिता—पतितदास, पत्र—४०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८० रूप—प्राचीन, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १९३९ = १८८२ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला जानकी प्रसाद मुख्तार, बाबू बिहारीलाल नम्बरदार समेरी, डाकघर—नगराम, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ पोथी विवेकसार लिख्यते वर्णो स्वरा सुर पन्नगा। गण गंधव नराच। प्रसीद मे पुन पुन अक्षर सुद्धि कुरुष्य मम् ॥ १ ॥ मम मतिं बुद्धि तुक्षच। ज्ञान ध्यानेश्वद् नात् ॥ गुर प्रसादे न कथ हरि चरचा सुलभ य ॥ २ ॥ स्वजन सुख पदाय पाखडिना निंदक च ॥ शुभा शुभ सग्रह या न गहति स्वार्थी पथ ॥ दोहा ॥ अरे गँवार पीछे रूपक समुझो बहुत सँगार। पतिता नद की सीख यह उतरि चलै भव पार ॥ १ ॥

अन्त—वन भेष सुनि दुश के ज्ञाना ॥ आम दरसी के कह पहिचाना ॥ ब्राह्मण दोनों सुने दिखडी पाची ॥ भीतर नीचे तापर लाली राँची ॥ बेंडी खड़ी ह लाली जानी ॥ क्षत्री के सुपेदी तापर लाली मानी ॥ वैश्य मध्य नीचे बेंडी पेरी ॥ सदु लाली तापर सुपेद दे दै देरी ॥ इतरी जीउ मध्य में काली दई दूनों केर माथे सब काय के सेड ॥ त्यागी को कछु नहीं। सब राखै चहैं मुँड़ाय ॥ कषाय वस्त्र भल गहे मे सूर वीर ॥ इति श्री स्वामी

पतित पावन और शिष्य संवादे सर्व न्याय और अपने भेष के गहन गाहन सपूर्ण ॥ सुभ मस्तु ॥ संवत् १९३९ ॥ मिती श्रावण आदिक कृष्णा १४ ॥

विषय—(१)—गुरु शिष्य संवाद के व्याज से साधु सन्यासी आदि के लक्षण और उपदेश संबधी पद्य ।

संख्या २६८ बी. पतित पावनदास की कविता, रचयिता—पतितपावन चकौली, पत्र—२२५, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३७५, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—मुंशी जानकी प्रसाद, मुख्तार, बाबू बिहारीलाल नम्बरदार—समेसी, डाकघर—नगराम, जिला—लखनऊ ।

आदि—कहता पतित बचोगे तबहीं । हरि के दास में हरि की हरिनी ॥ दासहि दास्य भेद नही एको वाकी महिमा यन की करनी ॥ १ ॥ विन धर शीस जगत धरि खायो खाय पंचानमस गिरधरनी । सिरनी पाय दोस मोहि लागे नाम ब्रह्म हो बरनी ॥ २ ॥ हरि चाहैं इतो का करैं कोई वने घने में रहे रहे चर धरनी । हो थै चरनन पानि भरनी ॥८१०॥ का करिवो जब जम लूटि लई नगरी । तबहीं तो कोट भवानी चढ़के का करिहौं मग परिहौं सकरी ॥ १ ॥ जादिन दूत कोटि लैहहि घेरी तादिन सुकिहौं कौनी कोठरी । बजाइ नगारे पकरि मँगइहै तबना कोई बांह तोर पकरी ॥ २ ॥ ताते मूढ़ गहउ करि सरनहीं होइहौ पार सागर भौ तपरी । दास पतित प्रभु मन समुझावै मानौ मोरि सरल तोरसुधरी ॥ ८११ ॥

अन्त—अवधू सुनियो जाति हमारी ॥ छत्री कुल में गोंड चकौली जहँ वाधेउ छुरी कटारी । ज्ञान ध्यान पितु दियेउ सूरता जननी दिढ़ता दै दुष्टन मारी ॥ असरफपुर है मात के नहइयर जहँभा चेत करारि । गांव रिठुरी आसत गुरु भेट्यो जबसे सरण सिधारी ॥ चिन्ता भरम छूटि सब ससै सँग सूते गोड पसारे । दास पतित भजु अलख निरंजन आवागमन को टारि ॥ × × ×

विषय—(१) पृ० १ से ४० तक—चेतावनी, गुरु महिमा, कर्त्ता निरुपण तथा विनयादि, योग विधान और जाप एवं हिन्दूमुस्लिसभ्रम। (२) पृ० ४१ से ११६ तक—गारी, साधु उपदेश, देवी से विनय, विवेक, मन की चंचलता और विनय तथा स्मरण । (३) पृ० ११७ से १९८ तक—ध्यान, सतगुरु, मन की भूल, होली, गुरु माहात्म्य, भजन-भाव और कवि परिचय । (४) पृ० १९९ से २२५ तक—गिरिजा शकर सबधी भजन, जगन्नाथ संबधी भजन, तृष्णा, दुनियाँ की स्वार्थान्धता, आत्मदर्शी वर्णन राम नाम माहात्म्य विनय तथा दीनता

संख्या २६९ ए. परमपहेली, रचयिता—प्राणनाथ, पत्र—१६, आकार—३$\frac{3}{4}$ × ३$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुंशी वंशीधर, मुहम्मदपूर, डाकघर—अमेठी, जिला—लखनऊ ।

आदि—जो पीव की इश्क सो प्रीति । देषी इसक की ऐसी रीति ॥ विना इसक नाही परतीति ॥ ११ ॥ इसक निहचै मिलावै पीव । विना इसक न रहे याको जीव ॥ ब्रह्म सिष्टि की ऐही पहचान । आतम इसकै के गलतान ॥ १२ ॥ इसक याहि धनी ए बताया । इसक

याही सिष्ट गाया ॥ इसक याही में समाया । इसक याही सिष्टे चित्त लाया ॥ १३ ॥ इसक पिया को बताव विलास । इसक ऐं चर पीव के पास ॥ इसक मिले दरसन । इसक न होए बिना सोहागिन ॥ १४ ॥ इसक ब्रह्म सिस्ट जानें ब्रह्म सिस्टण्ही बात माने ॥ रास रही को एही खान । इन अरवाहा को एही पान ॥ १५ ॥

अन्त—जब प्रेम हुआ प्रबल । भग आया धाम का बल । तुम पुजिन जानों कोई । बिना सोहागिन प्रेम न होइ । प्रेम खोल देवे सब द्वार । पारे के पार जो पार । प्रेम धाम धनी को विचार । प्रेम सब अगा सिरदार ॥ इसके मैं पाह पाया । ईस के धाम में ले बैठाया । इसके अन्तर आरों खुलाइ । धनी साथ में ला देखाइ ॥ महे मत कहे प्रेम समान । तुम दूजा जिन कोइ जान । लेय छरग ते घर आवे । पीया प्रेमें कंठ लगावे ॥ १६ ॥

विषय—प्रेम का वणन ।

सख्या २६८ वी श्री धामकी पहेली, रचयिता—प्राणनाथ, पत्र—१४४, आकार ३३/४ × ३३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान – मुंशी बशीधर, मुहम्मदपुर, डाकघर—अमेठी, जिला—लखनऊ ।

आदि – श्री धाम की पहेली बरन बनी ॥ मंगला चरण अथे लिख्यते ॥ ब्रह्म सिस्ट रीजीओ । हारे सैंया मेहो अपना जीवन ॥ सपी मेरी जो है मूल वतंन । सास्त्र सबद मात्र जो बानी ॥ ताको कलस धानी । सबदा तीत ताको भी कलसहू ओ अपड को ॥ तापर धुजा धर तिन थेरहीत ॥ मगज वेद कतबे के ॥ बाधे हुते वचन आद करके अवला ॥ सपी मेरी कबहू न खोले किंन ॥ सुपन वेकुठ लौं ॥ या निरजन निराकार ॥ सौ क्यों सुने फौं उलय के ॥ सपी मेरी क्यो कर लवे पार ॥ सुपन बुध अटरल सौं ॥ वेद कतेब पोजे जिन मग जन पाया माहेका बाधे मा गेने बार तिन सातु बोले दूर्न जुदा ॥ गावे सबदा तीस वेहद ॥ पर काहा करे बुध मोह की ॥ आगेन चले सबद पांच तत्व मोह अहकार ॥ चादह लोक त्रीगुन ॥ ये सुन द्वैत जो लेपड़ी ॥ निराकार निरजंन सुन ॥ प्रकृती माहा प्रले हो वही ॥

अत—याद करो सोई सायेत न जी वैठ के माग्या जित स्याम श्यामा जी साथ सो भिन क्यों न दपो अतर गत पीछला चार घड़ी दिन जय ये सोई घड़ी हे अब याद करो जो मैं कहा सब निंद छोड़ी जी मागी नब आद करो धनी को सरप श्री स्यामा जी रप अनूप याद करो सोइ सनेह साथ करत मिनी मिने जेह सुप सैयॉ लेने नित अग आतम मजो उपजन रस प्रेम सरप चहे चित के विधि रग खेलत बुध जगत तले जगावती ॥ सुप मूल वतन देपा वली प्रेम सागर पुर चला वती सग सैयो कों भी पीतो लावती ॥ पीया जी के देई प्रावती तेज तारतम जो न करावती तासों महमत प्रेम ले तौलती तिन सा धाम दरवाजा पोलती सौया जाने धाम में पेठी था ॥ ए तो घर ही में जाग वैठी था ॥ १९६ ॥ श्री धाम को वरनन ॥ तमाम ॥

विषय—(१) पृ० १ से ६० तक-मगला चरण, सृष्टि निरूपण, अश अजीम का वणन, सात तबक आदि का वणन, श्री धाम सबधी वन तथा मदिर आदि का वणन,

धनी की वैठक का वर्णन, पशु पक्षियो के कल्लोल का वर्णन और आनन्द बधाई आदि। (२) पृ० ६१ से १२४ तक–श्रृंगार तथा हास विलास का वर्णन, स्यामा स्याम का सयुक्त वर्णन, सखियो आदि के साथ लीलाओ का वर्णन, भोजनादि वर्णन, अन्य कार्य–खेल कूद और रास आदि सबधी विनोद वर्णन, गाने वजाने का वर्णन तथा नृत्य का वर्णन। (३) पृ० १२५ से १४४ तक–युगल किशोर के दर्शनों का वर्णन, प्रेम विलास, स्वरूप श्रृंगार तथा प्रेम वाहुल्य का वर्णन ॥

संख्या २६९ सी. प्रगटबानी, रचयिता—प्राणनाथ, पत्र—९२, आकार—३३/४ × ३३/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुंशी वशीधर, मुहम्मदपुर, डाकघर—अमेठी, जिला—लखनऊ।

आदि—अथ प्रगट बांनी लिपे है ॥ अव लीला हम जाहिर करे। ज्यौं सुख सैयां हिरदे धरे ॥ पीछे सुख ही सीस दन। पस रसी चौदे भवनं ॥ अव सुनी ओ ब्रह्म सिस्टी विचार। जो कोई निज वतनी सिरदार ॥ अपने धनी श्री स्यामा स्यांम। अपना वासा हे निज धाम ॥ सोई अपड अपेरा तीन घर नित वैकूंठ। मिने अपेर पाही गुभ करु प्रकास ॥ ब्रह्मा नद ब्रह्म सिस्ट विलास। ऐ वानी चित दे सुनी यो साथ ॥ क्रिया करके कहे श्री प्राण नाथ। ऐ किव कर जिन जानों मन धनी ल्याये धाम से वचंन सो केहे तीहू प्रगट कर यह टालु आडा अंतर तेज तार तम जो न प्रकाश ॥ करु अंधेरी सव को नासं। अव खेल उपजे के कहू कारंन ॥ ऐ दो उईछा भउत पंन विना कारन दोउ ऐ उपजाई ॥ हमारे धनी सो तोवा तेहे अति घनी ॥

अंत—धनी जी को दीदार सव कोई देपे होरी गई दुनिआँ सव किनहूँ कछू ऐ नां कह्यो क्रोध ब्रोध काऊ का ना रह्यो ॥ धनी जी को० । धनी जी को ऐसो जस दुनियाँ आये हुई ऐक रस नेज जोत प्रकास जो ऐसो काहू ससे न रह्यो केसो सव जाते मिली एक ठौर कोई न कहे धनी मेरी और पीया के व्रह सो निरमल कीये पीछे अखड सुख सव को दीऐ ऐ ब्रह्म लिला भई जोईत सी कवहू ना होसी कितना तो कै उपज गरो इद भी आंगे कै होसी ब्रह्मांड ये तीनो ब्रह्मांड हूऐ जो नाव ऐरो हू एना कोई होसी कित इन तीनो में ब्रह्म लीला भई ब्रजरास और जागनी कही ज्यौ निद में देख्या सो कछूक नीद कछूकु सुध रास को सुख लीयो या विध जाग नीको जागते सुख ऐ लीला क्यौ करुं या सुख जागनी में लीला धाम जा हेर निसांन लीऐ हिरदे चित धर तव उपज्यो आनद सवो करार लै नजरो लीला नित विहार इति ही वैठे घर जागो धाम पुरंन मनोरथ हूये सव काम धनी महमत हसता लीदे साथ उठा हस्ता मुखजे ॥११५॥ श्री प्रगट वानी तमाम सम्पूर्ण : साधु लछमन दास जी पठनारथ दसकत तिलोक दास कवीर पथी मेडता में ॥

विपय—(१) पृ० १ से ३० तक–सृष्टि निरूपण, माया वर्णन, कृष्ण जन्म और कतिपय लीलाओ का अति सूक्ष्म विवरण। (२) पृ० ३१ से ८२ तक–अखंड रास का वर्णन, भगवान का अंतरध्यान होना और सखियो की जड़ अवस्था का वर्णन, वृज, मथुरा

तथा द्वारा'वती की सक्षिप्त कथाओं का वणन । (३) पृ० ८३ से ९२ तक-धनी जी के दीदार, सुरत और उसके प्राप्त कत्ताओं की स्थिति का वणन, ब्रह्म लीला के तीन ब्राह्मणों का वणन तथा लीला धाम की कथा ॥

सख्या २६९ डी तारतम्य, रचयिता—प्राणनाथ, पत्र—७८, आकार—३¾ × ३¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१२, खडित, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—मुशी वशीधर, मुहम्मदपुर, डाकघर—अमेठी, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री कृष्णाय नम ॥ श्री निज नाम श्री कृष्ण जी अनादि अक्षरातीत सो तो /ब जाहीर भए मय विधि वतन सहित ॥ १ ॥ श्री तारतम लिषे है ॥ जब पाच तत्व चौदा लोक तीन गुण पिड ब्रह्माड ए ससार वछु ना हतो तब क्या थी ॥ धाम और प्रमधाम ? ए दोठे काने अपढ हे कुरान की बोली ये कहे ते हे अरस ओर अरस अजीम ये दो मकान हैं आतहे २ अपनी बोली में वहेत हैं नूर और नूर तज लाय अप्पर को सरुप कैसो है क वरस सात को लपनी जी को सरप कैसो है के वरस पाच को ४ श्री राज जी को सरप कैसो ह कै जैसे वरस ग्यार को श्री ठकुरानी जी को सरप और सपियम के सरप जेसे कें वरस नौंके ओर चार चार वरस की पूव पुसलीयां हे श्री धाम के सोहैं ॥

अन्त—तब अप्पर की सुरतनें कही के दूसरे ब्रह्माड में होएगा ॥ ए वरदान दीयो ॥ इही अपीअन में यो होत स्नेह कीयो ढ़ुढ़ती ढ़ुढ़ती वन में ॥ दूरि निकस गी, तहा आगें अध्यारा आई ॥ पात पात कर ढू ढ़े ॥ पर राज काहु न प्रगट भये ॥ फेर राज ने अवेस दीयो ॥ तव वीचई में से प्रगट भए ॥ एक सपी एक कृष्ण भये नाना प्रकार पेले ॥ फेर पीछे दोए घरी रात रही ॥ तब जीसना कीयो ॥ फेर आरोग के ॥ अपने चित्त की वातें करने लगे । पिछले स्नेह जो कीए थे सो सब सपियन के हिरदे में चढ़ आए ॥ तब सपियन नें पूछी कै आधीरात कों तुम कहा गए हते ॥ तब आवेसने जुवाब दियो ॥ कै मै कहू ना गयो हतो ॥ उस वी सुपन ॥ जे राज को आवेस राज के पास गयो ॥ अप्पर की सुरत अप्पर को ठिकानें गई ॥ अप्पर की ओर सपियन की नीद नहीं ॥ यह जोग माया को पतन भयो ॥ तब अप्पर मैंने विचार देप्यों ॥ के मे कहू और देप्यौ है ॥ तब ब्रज लीला चित्र में चढ़ आइ ॥ ब्रज अपड चित्त में भयो ॥ और रास बुध में अपड भयो ॥ फेर राजनें देप्यो तिन समें त मरी सपियन कों दुप न भयौ ॥ तब तीसरौ ब्रह्माड पैदा भयो ॥ जैसो काम माया को हुगै ॥ तैसो कोते सो उठि ठाढ़ो भयो ॥ नद जसोदा ग्वाल गोपी और कस तेसो का तैसो उठ ठाढ़े भए तब कस ने अपने भाई वसी को घोड़े को सरप धरकें पठायां ॥ × × × ×

विषय—(१) पृ० १ से ७८ तक—सृष्टि उत्पत्ति तथा हरदो मकान का वणन, लक्ष्मी आदि का स्वरूप, ठकुरानी तथा सखियों का भगवान के प्रेमाधिक्य के सबध में विवाद, सखियों की प्रेम परीक्षा तथा इसी सबध में कृष्णावतार एव उसकी विविध लीलाओं का सक्षिप्त वर्णन ।

संख्या २६९ ई. वेदात के प्रश्न, रचयिता—प्राणनाथ (पन्ना), कागज—पुराना, पत्र—१०, आकार—८ x ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—राममनोहर विचपुरिया, पुरानी बस्ती, कटनी, मध्यप्रदेश ।

आदि—श्री परमात्मनेनमः अथ श्री वेदांत के प्रश्न लिष्यते ॥ श्री वेदान्त मधे ऐसे कहो है ॥ जो कछु दृष्टे विष्टे देषियत है ॥ अस कानन सुनियत है ॥ अरु जो कछु चित विषै मन विषै ध्यान कीजीयत है ॥ अरु सब्द मात्र वस्तु मात्र जो है सो सब तीनो काल विथा है ॥ याकि साक्षि ॥ " दृश्यते श्रूयते यधतः स्मयतेः वानरैः " ये वेदन्त विषे ऐसो कहो है की जो कछु मन चित्त विषै ॥ सब्द मात्र बात मात्र ॥ सो सब चिदानन्द ब्रह्म है ॥ याकि साक्षि ऐसि भाँत प्रिय अस्मेति श्रुते दस्वते श्रूयते पधत सुसृय ते वान रैः सदा ॥ अब या प्रश्न को अर्थ ऐसो प्रकार सो ॥ विचार के लीजै ॥ जो पहिले सो सब मिथ्या कह्यो फेर वाही सो सच्चिदानद ब्रह्म कह्यौ ॥ अरु असत मिथ ॥ कव हूँ सत न होई अरु सत ब्रह्म कवहूं मिथ्या न होई ॥

अन्त—उक्त आत्म बोध ॥ त्रिधार दृष्टि ॥ पुरा प्रोक्तानीव ईश्वरी ब्रह्म निस्ताह ॥ अब याके प्रश्न को अर्थ ऐसे प्रकार सो ली लीजे जो सी वसिष्ठ नो स्वप्न ते कही अस ईश्वरी सिष्ट प्रकृति के आदि जो लय सब ससार कहो ॥ अरु ब्रह्म कि सिष्टि तद गत ब्रह्मा समान है लिषत सर्म्पून ॥

विषय—प्राणनाथ जी ने वेदांत संबंधी प्रश्नो का विस्तृत विवेचन किया है ।

संख्या २७०. भक्ति भावती, रचयिता—प्रपन्न गणेशानन्द, पत्र—२४, आकार—८ x ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०८, रूप—पाचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६०६ = १५५२ ई०, लिपिकाल—सं० १८१० = १७५३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला राजकिशोर, जाहिदपुर, डाकघर—अतरौली, जिला—हरदोई ।

आदि—सिद्धि श्री गणेशायनमः अथ भक्ति भाव लिख्यते ॥ सब संतन को नाऊं माथा । जा प्रसाद से भयो सनाथा । भौ जाल पार गयो कोऊ चाहै । तौ संत चरण निज शीश चढ़ावैं ॥ जौ नारायण अन्तर जामी । सबकी बुद्धि प्रकाशी स्वामी ॥ तुम वांणी मैं प्रगट्यो आई । निर्वर्त्ति प्रवर्त्ति देह बताई ॥ दोहा—परम हंस आस्वादिता । चरण कमल मकरद । नमः राम रामा नन्दा । नमः गोकुल चंदा ॥ चौ० जै प्रवर्त्ति कौ दुष न मानौ । तौ निर्वर्त्ति औषध क्यो मन आनौ । कलि अज्ञान भयो विस्तारा । पूर्व अपर नही सभारा ॥ अध फर कूप वेलि अव लंवी । काटत मूसो तरि अज गरि लम्वी मधु की वू द पडी एक आई । सब दुख विसर्‍यो और सुख पाई ॥ अल्प सुख दुख है विस्तारा । पै कोई येकै भाजि होत है न्यारा ॥ जे दुख जाणै तै होइ असंगा । ताते उपजे भक्ति अभगा ॥

अन्त—दोहा—जड़ संसार असार है चेतनि एकै होइ । ताते तुम्हरो तोष को हेत नाहिने कोइ ॥ ब्रह्म ज्ञान हरि चर्म रति ई नद है को सिद्धि । साधक होय नमो नमः मेरो तास धनै और न जानू कोइ ॥ चौपाई—भक्ति भावती याको नामा । दुष खंडन अरु सुख

विश्रामा ॥ सीखै सुनै अरु करै विचारा । तौ कलि कुसमए की ह्वै त्यौं पारा ॥ अल्प सुलछण ही जाने केता । सो सुख पावै चाहै जेता ॥ दोहा—जो वहुपुर ते मति लहै । यह पडित पूछ्या होय । सो सव याही मैं लही । जो नीके सोधै कोय ॥ चौपाई—लरिका कछू वस्तु जो पावैं । लै माता आगे कुदरावै ॥ भली बुरी वह लेइ पिछाणि । यौं तुम आगै मैं इह आणि ॥ अब वहेडो कहा ते करई । अपनो फल लै आगे धरई ॥ यू जैसी कृपा तुम हमसौं कीनी । तैसी म वाणी कह दीनी ॥ सवत सोलह सै नव साले । मथुरा पुरी के सव आलय ॥ अस्वनि पहल द्वारसि रविवारी । तहा पट पहर माहि विस्तारी ॥ इति भक्ति भावती सपूण समाप्त सवत् १८१० वि० आश्वनि शुक्ल नवमी ॥ राम राम राम ॥

विषय—ईश्वर भक्ति वर्णन ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता—प्रपन्न गणेशादि मथुरापुरी के निवासी थे । निर्माण काल सवत् १६०९ वि० है जो इस प्रकार लिखा है —सवत सोलह सै नव साले । मथुरा पुरी केसव आलय । आस्वनि पहल द्वारसि रविवारी । तहा पट पहर माहि विस्तारी ॥ लिपिकाल सवत् १८१० वि० है ।

सख्या २७१ वैद्यक विधान, रचयिता—प्रतापराय, पत्र—१२०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७७२ = १७१५ ई०, लिपिकाल—स० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर अगम सिंह परिहार, नगला छमन सिंह, डाकघर—पिलखना, जिला—अलीगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ वैद्यक विधान प्रताप कृत लिख्यते ॥ शभु गजानन को सुमिरि भगवति शास नवाय । सस्कृत से भाषा रचू सुनो सुजन चित लाय ॥ १ ॥ धनवतरि को ध्यान धरि गुरू चरण करिमान । आस तिहारी कर रचू वैद्यक रूप विधान ॥ २ ॥ प्रथम रोगी परीक्षा लिख्यते—रोगी की परीक्षा इतने प्रकार से होती है ॥ देषि के सो छूवे सौं पूछिवे सौं स्वप्न मैं दूत सौं असगुन सैं और काल ज्ञान से साध्य असाध्य रोगी की परीक्षा होती है ॥ मूत्र परीक्षा ॥ नारी परीक्षा ॥ रोगी को दृष्कि पूछिके नाड़ी देखै और उसकी दसा को समुझि करि के फिरि मूत्र परिक्षा करिके औषधि आरम्भ कर ॥ औषधि विचार ॥ वैद्यक प्रथम आपधि के गुणागुण विचारै और रोगी को रोग के प्रमाण माफिक औषधि दय अर्थात् थोरो रोग होवे तो अधिक औषधि न दय और वे औषधि रोगी द्वेष करै तो ऐसो रोगी जीवै नहीं ॥

अन—प्राणी को ६ वस्तुयें तत्काल हर लेती है । उनके नाम ये हैं । (१) सरो मांस २ वृद्ध स्त्री ३ सूय को घाम ४ तुरत को जमो दही ५ प्रात काल समय मैथुन, प्रभात काल की निद्रा ये ६ वस्तु है । ६ वस्तु तुरत प्राणन की रक्षा करती है ॥ ताजो मास, वाला स्त्री, क्षीर को भोजन, नयो मक्खन कूप जल से अस्नान और उष्ण जलसो स्नान करना ॥ छ रितु में छ खिन से भोग करै सो लिखाते हैं । हिम रितु में शिशिर ऋतु में अपनी शरीर की शक्ति माफिक वारवार स्त्री सौं भोग करै तो शरीर में आनन्द रहै । वसत और सरद ऋतु

वर्षा रितु में ग्रीष्म रितु में पन्द्रहवें दिन भोग करै में तीसरे दिन भोग करै शक्ति माफिक तो रोग होवै नही आनंद रहे। इन स्त्रियों से भोग न करैं। रजस्वला स्त्री सों, रोग वाली सों। बूढ़ी सो जाके काम जगे, मैली कुचैली सों, गर्भवती सो आतशक वाली स्त्री सों संभोग न करै। इति श्री वैद्यक विधान ग्रन्थ प्रताप राय कृत संपूर्ण समाप्तः लिखत रामवली वैद्य वनारस शहर सवत् १९०० वि० जेठ वदी दशमी ॥

विषय—वैद्यक।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता प्रताप राय थे। इनका विशेष पता नहीं। निर्माणकाल संवत् १७७२ वि० और लिपि काल संवत् १९०० वि० है।

संख्या २७२. अमृत सागर, रचयिता—प्रताप सिंह महाराज जैपुर, पत्र—६२५, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३६ = १७७८ ई०, लिपिकाल—स० १९०० = १८९३ ई०, प्राप्तिस्थान—वैद्य रामलाल शर्मा, निहालगंज, डाकघर—धूमरी, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नमः सिद्धि श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी विरचिते अमृत सागर नाम ग्रन्थ लिख्यते ॥ श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी विचारि करि मनुष्यां का रोगां का दूर करबा वास्ते परम करुण सुश्रुत वाग भट्ट भाव प्रकाश आत्रेय ने आदि लैके वैद्यक का सर्व ग्रन्था तें वाको सार काढ़ि अति संक्षेप ते सर्व रोगों का निदान पूर्वक अमृत सागर नाम ग्रन्थ की वचनिका करिके औषद्यां के अनेक प्रकार का अजमाया जतन विचार पूर्वक है ॥ अथ प्रथम रोगां का विचार लिख्यते ॥ कोई तरह ने पीडा होत ने रोग कहिये सो दो प्रकार को छे। एक तो कायिक दूसरो मानसिक। काया में रहे तीको नाम कायक और मन में रहे तीको नाम मानिसिक छे। सो ये दोनो वात पित्त कफ रूप दो शरीर में कई तरह का कुपथ्य करके मिथ्या हार मिथ्या विहार का विथा को कोप कों प्राप्त हुआ सर्व रोग ने उपजावे छे। अर ये वात पित्त कफ कही तरह कुपथ्यां से विन स्वाथ्य क्या गाड़े छै। अर येही आछी तरह पथ्यां का अच्छा हुआ कहे।

अन्त—अथ पित्त की प्रकृति के लक्षण लिख्यते—जवान अवस्था में सफेद वाल हों वुद्धि मान होय और परोव घने आवै क्रोधी होय स्वप्न में तेज दीखै ये लक्षण होय तो पित्त की प्रकृति जानिये। अथ कफ की प्रकृति को लक्षण जाकी गंभीर वुद्धि होय स्थूल अग होय स्वप्न में जल का स्थान देखै केश चीकण होय ये लक्षण जामे होय ताको कफ की प्रकृति कहै। अथ भेद, को लक्षण लिख्यते। तमो गुण और कफ अधिक होय तव मूर्छा होय और वाय पित्त रजोगुण अधिक होय तद मौलिक और भ्रान्ति होय। कफ वाय और तमो गुण अधिक होय तव तन्द्रा होय और वाल जातो रहै तद ग्लानि आवै और दुख सों और अजीर्ण सो पेदसूं यासूं भी ग्लानी होय अथ वल थकी उत्साह नही होय ताको आलस, कहिये याकों आदि लै सो सही जाण लेणा जी। इति शरीर नाम या मनुष्या के शरीर में जो कुछ है सो संक्षेप सूं सर्व निरूपण कियो छे। इति श्री मन्महाराजा धिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई

प्रताप सिंह जी विरचिते अमृत सागर नाम ग्रन्थ सपूण समास लिखत राम गोपाल वैश्य सवत् १९०० चैत्र मासे शुक्ल पक्षे अष्टम याम् ॥

विषय—वैद्यक ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता श्री महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र सवाई प्रताप सिंह जी थे । निमाण काल सवत् १८३६ वि०, लिपिकाल—सवत् १९०० वि० ।

सख्या २७३ ए अनिन्य मोदिनी, रचयिता—प्रियादास जी (वृन्दावन), पत्र—२३, आकार—६×४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, रूप—अति प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबा यशोदास जी गोविन्दकुण्ड, वृन्दावन ।

आदि—श्री राधा वल्लभा जयति । अथ अनिन्य मान्निी लिख्यते । दोहा—श्री चैतन्य मन हरन भजि श्री नित्यानद सग । श्री अद्वैत प्रभु पारपद जैसे अगी अग । रसिक सिरोमनि विप्र वर श्री मति रूप अनूप । सदा सनातन धर हिये दाऊ एट सरप । रसिक अनिन्यनिकी गमन जामा रग में होय । ताके आचारज येई यह छबि मन में सोय । कहू बिन्दु कहू चुलु भरि जान मूए सिंधु रस रसिकता रूप सनातन मान । रस अनिन्य पद्धिति कही कीजै सरस विचार । सुगम होय जिनकी कृपा उभै रूप उरधार । सम्प्रदाय दृढ हिये द्रढ रच रीतै अधार । ऐसे गुरु की सरन ह्वै करै तत्व निरधार । कठ लगनि कठी सुभग तुलसी माल सुधारि । स्याम बदनी गुंज युत उर पर करत विहार । तिलक भाल जगमग रहै मुद्रा भुज निरसाल । इष्ट अचारज नामधर अंकित सोभा जाल । श्री वृन्दावन धाम में बसे निरतर देह । जो उद वन बीस सके सन द्रढ करै सनेह ।

अन्त—कवित्त—जु किसोर जू ने जाको मन चोर लियो पियो हित रस ताकें और कहू आसना । निस दिन गान रूप माधुरी को पान उर मुकुर समान नेंकु बासना की पासना । लागै दग झरी प्रेम भरी सुनि बातें हरी खरी मति हरी जाति घूमें मानों सासना । कोऊ भाग पाय जो पै मिलै आन हँसनि सा दत झलकात चल ऐसे ही उपासना । दोहा—अनिन्य मोदनी रचि कही देत अनिन्य मोद । पियादास जे दृढ भरा तिनकी सुर भरी गोद । इति अनिन्य मोदिनी सम्पूर्ण

विषय—अनन्य भक्ति का वणन ।

सख्या २७३ बी श्री भक्तमाल भक्तरस बोधिनी टीका, रचयिता—प्रियादास, कागज—बाँस का, पत्र—१२२, आकार—१०×६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९२४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७६९ = १७१२ इ०, लिपिकाल—स० १९०२ = १८४५ इ०, प्राप्तिस्थान—हरिमोहन मिश्र, सिंमावली, डाकघर—तॉतपुर, तहसील—खेरागढ, जिला—आगरा ।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नम अथ भक्तमाल सटीक लिख्यते । अथ टीका कर्ता को मगल चरन अज्ञान निरूपन । कवित्त । महा प्रभु कृष्ण चैतन्य मनहरन जू के चरन को मेर नाम मुप गाइयै । ताही समै नाभा जून आज्ञा दई लई धारि टीका भक्त माल को सुना

इये। कीजिये कवित्त वंद छद अति प्यारो लगे जगे जग माहि कहिवानी विरमाइये। जानौ निज मति अैसे सुन्यो भागवत सुक दुम विप्र वेस ऐसे ही कहाइये। टीका को नाम स्वरुप वरननं ॥ रचि कविताई सुखदाई लगे निपट सुहाई, औ सचाई पुन रुक्त लौ मिटाइ है। अक्षर मधुर ताई अनुप्रास यमकाई अति छवि छाई मोद गरी सी लगाई है। काव्य की बड़ाई निज मुष न भलाई होत, नाभा जू कहाई ताते प्रोढ़ कै सुनाई हैं। ह्रदै सरसाई जो पै सुनीये सदाई इस भक्त रस वोधिनी सुनाम टीका गाई है। भक्ति स्वरूप—श्रद्धाइफलेल और अटउ बनो श्रवन कथा मैल अभिमान अंग भग निछडाइयै। मनन सुनीर अन्हवाय अंग छाइदया नव नवसन पुनि सौधौल लगाइयै। अमनाम हरि साधु सेवा कर्णफूल मानसी नथ संग अंजन बनाइयै ॥ भक्ति महारानी कौ सिंहार चारु रहै जो निहारि लटै लाल प्यारी गाइयै।

अन्त—इति श्री भक्त माल नारायण दास कृत सम्पूर्ण छप्पै ॥ तवैया रसकाई कविता जाहि दीनो तिनपाई भई तरसाई हिये नव नव चाई है। करणं भवन मेराधिकार वन वसै लसै ज्यौ मुकर मध्य प्रतिविम्व भाई है। रसिक समाज में विराज रस राज कहै, चहे दुप सब फूलै सव सुखदाई है। जाना हरि लाल मनोहर नाम पायौ उनहू को मन हरि लीनो तातें राई है। इनकी के दास दास दास प्रियादास जानौ तिन लै बपानौ मानो टीका सुप दाइयै। गोवर्द्धन नाथ जू के हाथ मनुपस्वाजा को कन्यो वास बृन्दावन लीला मिलि गाइये। मति उनमान कह्यो लह्यो मुख संतनि के अंत कौन पावै जोई गावै उर आइयै ॥ घट बढ़ि जात अपराध मेरो क्षमा कीजो साधु गुन ग्राम इह मानि मै सुनाई है। कीनी भक्त माल सुर रसाल नाभा स्वामी जू न तरै जीव जगन जग जनमन मोहिनी। भक्त रस बोधिनी है वांचत कहस अर्थ लागै......अति सोहनी। टीका और मूल नाम गीता सुनै जब रसिक अनन्य मुप होत विश्व मोहिनी। नाभा जू कौ अभिलाप पूरन लै कियो मैं तो ताकी साखि प्रथम सुनाई नीके गाइकै ॥ भक्ति विसवास जाके ताही सौ प्रकास कीजै भीजै रंग हियो लीजै सतति लहाइकै ॥ सम्वत प्रसिद्ध दस सात सत नूनहत्तर फाल्गुन मास वद सप्तमी वितायकै। नारायण सुख भक्त माल लेके प्रियादास दास उर वसौ रहौ छाइकै। इति श्री भक्तिमाल भक्त रस बोधिनी टीका सम्पूर्ण ३७१४ श्लोक फाल्गुन शुक्ला ७ सवत सर १६०२ प्रति लिखीत मिश्र कनही राम वलमगढ़ के पठनार्थ ठाकुर परसराम वासी शुभ मस्तु कल्याण मस्तु ॥

विषय—प्राचीन और मध्यकाल के भक्तो का वर्णन।

संख्या २७३ सी. पीपाजी की कथा, रचयिता—प्रियादास, पत्र—१६, आकार—८×६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७६९ = १७१२ ई०, लिपिकाल—सं० १८७६ = १८१९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर दालसिंह, गगागंज, डाकघर—राजा का रामपुर, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ पीपाजी की कथा लिख्यते। पीपा प्रताप जग वासना नाहर को उपदेश दियो। प्रथम भवानी भक्ति मुक्ति मांगन को धायो ॥ सत्य कहौं

तिहिं शक्ति सुदृढ़ हरि शरण बतायो। श्री रामानंद पद पाइ भयो अति क्ति की सीमा गुन असरत्य अनमोल सत धरि रासत ग्रीवा ॥ परसि प्रणाली सरस भई सकल विश्व मगल कियो। पीपा प्रताप जग वासना नाहर कौ उपदेश दियो ॥ गागरौन गढ़ बड़ पीपा नाम राजा भयो ल्यो मन दूवी सचा रग चढ़यो भारिये ॥ आये पुर साधु सीधो दियो जोइ सोई लियो मनमाझ प्रभु बुद्धि फरि डारिये सोयो निसि रोयो दरि सुपनो विहाल अति प्रेम विकराल देह धरि के पछारिये। भवना सुहाय बड़ बहु पाय परि गई नहिं रीति भई वाही भक्ति लागी प्यारिये ॥

अत—गूजरी को धन दियो पियो दही सतनि ने ब्राह्मन को भक्त क्रिया देवी जी निकारि कै। तेली को जियायो भैसि चोरनि पै फरि लायो गाड़ी भरि आयो तन पाच ठौर जारि कै ॥ कानद ऐ कोरो करौ बनिया को शोक हरो भरो घर त्यागि डारी हत्या हू उतारि कै। राजा कौ अँसेर भई सत कौ जु विभव दई लई चीठी मानि गये श्री रग उदारि कै ॥ १ ॥ श्री रग के चेत धर्यो तिय हिय भाव भर्यो ब्राह्मन को शोक हर्यो राजा प बुलाइ कै। चदवा बुहाय लियो तेली को ऐ बैल दियो दियो पुनि घर माझ भयो सुख आइ कै ॥ यहोइ अकाल पर्यो जीव दुख दूरि कर्यो धर्यो भूमि गभ धन पायौ दै लुटाई कै ॥ अति विस्तार लियो कियो है विचार यह सुनै एक बार फेरि भूल नहि जाय कै ॥ २ ॥ इस पीपा की कथा को जो बाचेगा सुनेगा सुनावेगा वह मोक्ष को प्राप्त करेगा ॥ इति श्री पीपा जी की कथा सम्पूर्ण समाप्त लिखा राम भजन चैत्र शुक्ल राम नौमी सवत् १८७६ वि ॥

विषय—पीपा जी की कथा का वर्णन।

सख्या २७३ डी रसिक मोदिनी, रचयिता—प्रियादास जी (वृन्दावन) कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—६ × ४ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१११, रूप—बहुत अच्छा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३५, लिपिकाल—स० १८३५ = १७७८ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा बशीदास जी, गोविन्दकुण्ड, वृन्दावन।

आदि—श्री राधागोविन्द जयति। अथ श्री रसिकमोदनी लि० ॥ दोहा ॥ महाप्रभू चैतन्य हरि रसिक मनोहर नाम, सुमिर चरन अरविन्द वर बरनो महिमा धाम। श्रीगोपाल राधारमन विपिन विहारी प्रान। ऐसे श्रीजुत रूप जो सदा सनातन दान। प्रगट करी वृज भूमि मधि श्री वृ दावन धाम। ताकी छवि कहि कवि सकें सब जन मन अभिराम। लाख अग हरि भक्त के चौसठि महा प्रकास। ताहू मे पुनि पाचि कहि वह्यो एक बनवास। दुलभ सुलभ सो कियो सब विधि सुखकौ मूल। कथा कीतन रास रसि श्रीयुत जमुना कूल। सब तनि के यौं रस प्रबल मानें तीन गुन हीन। बसें निरन्तर विपिन में ज्यों जल जीवन मीन। भूतल में वृन्दा विपिन ऐसर्यो परि प्राहि। बड़ी भूल नही बस सकें फिर कब पावैं ताहि। निपट प्रबल साधन करें तऊ मिलै तन त्याग। निरसाधन तन सहत हीं मिले घटे रस पाग। श्री वृ दावन धाम में साधक सुख अब गाउ। मगन होत रस सिंधु में भूले सिधकी चाउ। परम रसक्नि लाड़िली जाकौ महल रसाल। कृपा करैं

काहू रीझि में तव बन बसैं निहाल। सोवत जागत रैंन दिन चलत फिरत सुप होत। जुगल रूप गुन नाम रस बहत चहूं दित सोत।

अत—ते तुम मणि गनो अर्थ कांति विरतार। रसिक जननि मन मोहनी तातें पहऱ्यौ हार। कांति मोहिनी तांते पऱ्यौ रसिक मोदनी नाम। सदा कंठ में झलमलो अंग अंग अभिराम। रसिक इन्दु गोविन्द श्री कुंज वास अनयास। प्रियादास इह नाम जिन गुह्यौ चातुरी वास। पूछो जगके जौहरी मणि सुगंध नहीं होय। ए अदभुत पहरत हीयें मन में पेठे सोय। जो सुगंध मन करनकी इच्छा होय अनूप। तो पहरो ग्रीवा हरपत गुन बाढ़ै रूप। और महा अदूभुत लपौ सुन्यौ न देख्यौ नेंन नेकु निहारे हीयपें वाहू वासे वेंन। बानी मानी रसिकजन छानी रहै मूल। सानी वन हित जुगल हित गानी सव अनुकूल। इति श्री रसिक मोदिनी सम्पूरण समाप्त। फाल्गुण सुदी पूर्णमा स० १८३५

विषय—भक्तिरस का वर्णन।

संख्या २७३ ई. सगीत रत्नाकर, रचयिता--प्रियादास, पत्र—४०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५१८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९६ = १८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—रामदास गोसाईं, गढ़ी जेसिंह, डाकघर—सिकन्दर राऊ, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्रीगणेशाय नमः अथ सांगीतरत्नाकर लिख्यते॥ रेखता रासलीला— रस रहस में रसीलो नाचत नवल विहारी। अदूभुत श्रगार कीने संग सोहे कीरति कुमारी॥ बाजत मृदग बीना मुरचंग बजै न्यारी। बाजत करताल झांझै मुरली को शोर भारी॥ गाती हैं गीत गोपी शुभ राग को उचारी। लेती हैं ताल सम्यै देती हैं सबै तारी॥ ह्वै कै त्रभग कबहू बसी मधुर बजावै। धुर पद मलार ठुमरी सुन्दर सुराग गावै॥ कर कोप करि के कबहुं नाचन प्यारी सिखावै। इहि भाति से मगन ह्वै रस रहस में वढ़ावै॥ प्रिय दास आस पास सोहैं गोप की कुमारी। तिन मध्य सुभग राजत वृपभान की दुलारी॥ दादरा सुन्दर कली का—छवि आगर नागर बन्योरी नारी। लहँगा लाल वैजनी सारी रतन जड़ाऊ की चोली न्यारी॥ चपकली गरे कठा सोहै नक वेसर की है वलि हारी॥ भूपन वस्त्र विचित्र श्रंग में छवि पै रति छवि दीजै वारी॥ प्रिया दास मुकुटी सिर सुन्दर देख छकी छवि गोप कुमारी॥ २॥

अत—राग पीलू—पहित रूप वने बनवारी॥ पीताम्बर की धोती पहिरे रचि पचि पटुली सवांरी। तिलक भाल रच्यो माल गले विच पोथी कांख तर सोहत न्यारी। सिरपै पाग गुलावी सोहत को बरणो छवि अति शुभकारी॥ प्रियादास के ठाकुर परि हरि खराऊँ वरसाने तन चले सिधारी॥ ११॥ राग देश वागेश्वरी—प्रियाजी की झांकी हरि देखन आये। प्यारी आवत देखि श्याम को उठि के कंठ लगाये॥ सखी लाय आसन सुचि तापै श्याम विठाये। कर को पकरि वृपभान नन्दिनी हरि के चित्र दिखाये॥ देखो प्यारे चित्र तिहारे सांझी के विच कैसे वनाये। तब ही बचन श्याम शुभ मधुरे यो फिर कहत सुनाये॥ तेरो भेद वेद नहि पावत तव दर्शन को मम दृग अकुलाये। तबहिं लाल को कुंअरि किशोरी

सुमन माल पहिराये ॥ प्रियादास मिले युगुल परस्पर सखी सुमन बरसाये ॥ १११ गोपी गजल—नटवर लीला करत गोपाल । नटवर भेष सजे जैसे मोहन तैसे सजे सब संग के ग्वाल ॥ कबहू कला बास पर खेलत कबहू कूदत महि दै ताल । नट लीला में चतुर शिरा मणि मोहल्इ सबे बृजकी बाल ॥ प्रियादास कीरति की कुमारी रीझ दई उर मोतिन की माल ॥ नटवर लीला कन्ह की पढ़ै सुनै मन लाइ । नग्नागर आगर गुणन लेत याहि अपनाइ ॥ इति श्री संगीत रत्नाकर संपूर्ण समाप्त लिखत रामदास चेला संत दास स्थान जमुनाघाट संवत् १८९६ वि० राम राम राम राम ।

विषय—रागरागिनियों का विवेचन ।

संख्या ७७३ एफ सांगीत माला, रचयिता—प्रियादास, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२४ = १८६७ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामनाथ मिश्र, बिल्सद पट्टी डाकघर—अलीगंज जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सांगीत माला प्रिया दास कृत लिख्यते ॥ रेखता रास लीला ॥ रस रहस में रसीलो नाचत नवल विहारी ॥ अद्भुत श्रृंगार कीन्हे संग सोहै कीरति कुमारी ॥ बाजत मृदंग बीना मुरचंग बजै न्यारी ॥ बाजत करताल झांझें मुरली का शोर भारी ॥ गाती हैं गीत गोपी शुभ राग को उचारी ॥ देती हैं ताल सबै देती हैं सब तारी ॥ ह्वै कै त्रिभंग कबहूं बंशी मधुर बजावै ॥ धुपद मलार ठुमरी सुन्दर सुराग गावैं ॥ कर को पकरि कै कबहू नाचन प्यारी सिखावैं ॥ इहि भांति स मगन ह्वै रस रहस में बढ़ावै ॥ प्रिया दास आस पास सखि गोप की कुमारी ॥ तिन मध्य सुभग राजत वृषभान की दुलारी ॥ १ ॥ राग सुन्दर कली का दादरा—छटा दान लीला ॥ छवि आगर नागर बन्यो नारी ॥ लहंगा लाल बैंजनी सारी रतन जड़ाव की चोली न्यारी ॥ चंप कली गरे कंठा सोहै नक बेसरि की है बलिहारी ॥ भूषण वस्त्र विचित्र अंग में छवि पै रति छवि दाजै वारी ॥ प्रिया दास मटुकी सिर सुन्दर दधि छकीं छवि गोप कुमारी ॥ २ ॥

अन्त—चंप कलिता गृह गमन लीला ॥ राग इमन देश ॥ श्याम सखी दोऊ करत कलोल ॥ आलिंगन चुंबन परि रंभन अपने अपने रुचहिं तौल ॥ छूटी लट अलकें कपोल पे नागिन सी रहीं डोल ॥ प्रियादास आनंद निधि लूटी प्रेम विवस बिन मोल ॥ १ ॥ राग देव गधार-प्रेम हिंडोरे सखी प्रभु को झुलावै ॥ नेह के खम्भ प्रीति की डोरी पलक पाट पै हरिहिं रमावे ॥ झोका देत रसिक नागर जब तब गोपी निज कंठ लगावै ॥ दखि दखि मोहन मूरति को गोपी हिये बिच हर्ष बढ़ावै ॥ प्रियादास छवि लखि दृग छाके उपमा अधिक कहन नहिं आवै ॥ २ चंप कलिता को सुख दियो निशि में सुन्दर याम । ह त प्रात ही चलि भये मोहन अपने धाम ॥ पंडित लीला—राग पालू ॥ पंडित रूप बने बनवारी । पीतांबर की धोती पहिरे रचि पचि पटुलि सवारी ॥ तिलक भाल रच्यो माल गले विच पोथी काख तर सोहत न्यारी ॥ सिरपै पान गुलाबी सोहत को बरणै छवि अति सुख कारी ॥ प्रियादास के ठाकुर पहिरि खराऊ बरसाने तन चले सिधारी ॥ इति श्री संगीत माला प्रियादास कृत संपूर्ण लिखा भैरों दास माली चैत्र पीछले पाख पंचमी संवत् १९२४ वि०

विषय—राग रागिनियों में श्री कृष्ण चरित्र वर्णन।

संख्या २७३ जी. संग्रह, रचयिता—प्रियादास, पत्र—२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) - २८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१० = १८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला दिलसुखराय, नगरा भगत, डाकघर—पटियारी, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ नटवर लीला लिख्यते ॥ नटवर लीला करत गोपाल नटवर वेष सजे जैसे मोहन तैसे सजे सब संग के ग्वाल ॥ कबहू कला बांस पै खेलत कबहूं कूदत महि दै ताल ॥ नट लीला में चतुर शिरोमणि मोहि लई सब ब्रज की बाल ॥ प्रिया दास कीरति की कुमारी रीझि दई उर मोतिन की माल ॥ दो०—नटवर लीला कान्ह की पढ़ै सुनै मन लाय। नटनागर आगर गुणन लेत वाहि अपनाय ॥ इति ॥ हिंडोला लीला ॥ राग पील ॥ आज बन झूलत पिय प्यारी ॥ हमहू देखि आई हनु सजनी झूला पऱ्यो कदम की डारी ॥ जमुना निकट तीर वंशीवट श्री वृन्दावन अति शुभ कारी ॥ गावत राग मलार सुहावन मन भावन हित गोप कुमारी ॥ प्रिया दास वृषभान सुता को कबहूं झुलावत श्याम विहारी ॥१॥ राग मलार-सावन मास सुहावन प्यारी ॥ देखो दामिनि कैसी दमकत नभ मंडल में घटा आई कारी ॥ मोर शोर वन घोर करत है और क्वैलिया कूकत न्यारी ॥ वरषत मेघ गरजत है नान्ही नान्ही बूंद परत महि प्यारी ॥ प्रिया दास कहैं रसिक शिरोमणि गावत सावन तनमन वारी ॥ इति

अन्त—राग पट-फूल बिनन लीला ॥ फूलन के हित सखिन संग चली श्री वृषभानु कुमारी है ॥ अति सुकुमार रूप निधि श्यामा वा छवि पै बलिहारी है ॥ लहगा लाल रेशमी सोहै अति छवि देत किनारी है ॥ तापै सोहै रग चैजनी केरि सुदरी सारी है ॥ कठ सिरी दुलरी औ तिलरी कौस्तुभ मणि उर न्यारी है ॥ दमकत जुगनू उभय कुचन बिच शोभा कहि बुधि हारी है ॥ जात बतात मध्य गोपिन के कीरति राज कुमारी है ॥ गज गामिनि सुकुमार छबीली हसत बजावत तारी है ॥ प्रियादास आनन्द रस लूटत ललितादिक ब्रज नारी है ॥ साझी लीला ॥ राग देश वागेश्वरी ॥ प्रिया जी की सांझी हरि देखन आये ॥ प्यारी आवत देखि श्याम को उठके कठ लगाये ॥ सखी लाय आसन सुचि तापै श्याम बिठाये ॥ कर को पकरि वृषभान नंदिनी हरि के चित्र दिखाये ॥ देखो प्यारे चित्र तिहारे साझी के बिच कैसे बनाये ॥ तबही बचन श्याम शुभ मधुरे यो फिरि कहत सुनाये ॥ तेरो भेद वेद नहिं पावत तव दरसन को मम दृग अकुलाये ॥ तबहि लाल को कुंवरि किशोरी सुमन माल पहिराये ॥ प्रियादास मिले जुगुल परस्पर सखी सुमन वर्षाये ॥ इति सांझी लीला समाप्तः लिखा वेनी-राम वैश्य जेष्ठ शुक्ला नौमी संवत् १९१० वि० राम राम राम राम

विषय—श्री कृष्ण की ब्रज लीलाओं का वर्णन।

संख्या २७४. जैमुनी पुराण, रचयिता—पुरुषोत्तमदास (दादरपुर), पत्र—१६०, आकार—१०½ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८४०,

खडित, रूप—बहुत पुराना, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १५५८ = १५०१ ई०, प्राप्तिस्थान—प० कैलाशपति जी तैनगुरिया पुरोहित, ग्राम—बिजौली, डाकघर- बाह, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम । अथ जै मुनि लिष्यते । प्रथमहि प्रणवौ पुरुष पुराना । आदि अत प्रभु है अवसाना । निगुण सगुन जानि नहिं जाई । रप नरस रहत घट सोई । ब्रह्मादिक जिहि पोजत रहही । आदि सारदा तोहि मनावौं । देहु सुमति जो हरि गुन गावौं । तुम भल जानत रहहु भगवतहि मारि दत रापेहु सुर सतहि । वाहन गरर गदा कर लीन्हा । सप चक्र मनि भूषन कीन्हा । कमल चरन के नृमल चरना । रसना रामे नाम गहु सरना । बाक बादिनी नृमल बाना । देहु सुमति हरि नाम प्रवाना । कवल नयन निजु चरन निवासी । तुभ प्रशाद पावौं कवि रासी । दोहा । ब्रह्म रुद्र सुरगन पति जग जननी जस लेहु पुरसोत्तम हरि सेवक बुधि प्रकास किछु देहु । २ ।

अन्त—मदनसिंघ सब विप्र बुलाए । जोतिष शास्त्र बिसारद आए । कहहु लग्न सुभ कहिअ नही । बिपया चद्रहास जो ब्याही । उत्तिम सूज ब्रहस्पति कहिअ वर कन्या एकादस बहिया । बड़े भाग्य दैष्णव गृह आया, आजु नीक सुभ लगन सो पावा गौधूरी कर उत्तिम पर्वा लग्न दोष विवर्जित सर्वा । सुनतै मदन परम हुलासा । सपिअन्ह सौ कह बचन प्रकासा । बाजन बाजे मगल चारा, होइ लाग विवाह पसारा । बिपया चन्द्र हास नह धाए दिव्यावर बस्तर पहिराए । मडप पाटवर ते क्षावा बर कन्या वेदी बैठावा । हरादे चढ़ाइ कन्या नहवाइ, अरघ देइ वेदी बैठाइ । चन्द्र हास कह ब्रह्म बनावा भरत होत हरि कलस पुजावा । जिय मह सुमिरा हरि कर पवना । आसन आइ बैठ मन हरना । साधरन विप्रन्ह कह ।

विषय—मगला चरण, कवि तथा उसके अभिभावक का परिचय—जबू द्वीप भरत षडा कनउजकै पाटी पर चण्ड । सप्तपुरी महा उत्तिम थाना कोशल देसहि कोउ जाना । रामपुरी सरजू के तीरा नाम अजोध्या निमल नीरा । सर्गा द्वार पापकर नासन । जहवा रामचंद्र कर आसन । तिहिते दक्षिन जोजन चारी, आदि गोमती किल्मिप हारी । नारायणपुर सुघर सुदेसा तहा बस विक्रार नरेसा । कुँवर ब्रह्म दधीच सुजाना, बान्ह की सरवर रावन आना । तहवा नगर बसत इक दादर, जहवा जती सती कर आदर । राजा रुप महा बहा रहई बैश्य बश नित धमहि चहई । लागि गुहारि फेरि संहारा । दादर पुर के महा जुझारा । सब सकुल निमल राजा, रुप महु नाम । राम भक्त पुरुषोत्तम बसहिं सुदादर ग्राम । बश विभूति पिता महँ प्रीती । क्षेमा नद धम की रीती । तिन के सुत पुरषोत्तम दासा प्रथम गये जग्गनाथ निवासा । कमल नयन पर दच्छिन दीन्हा ब्रवक पुरी जाइ गुरु कीन्हा । गुरु रघुनाथ के चरन मनाये जिन व्याकरन निक्षुन पढाये । ग्रन्थ निर्माण काल — सवत पद्रह सै अट्ठावन निमल चैत माल का आवन । शुक्र पक्ष प्रति पक्षा सुहावन, श्री गोविन्द रथा गुन गावन । उत्तम दिवस चद्रकर वारा मेषक सूर्ज बसत प्रगासा । हरि प्रसाद पुरुषोत्तम दासा अश्वमेध करि कीन्ह प्रगासा । और राजा युधिष्ठिर के अश्वमेध यज्ञ का वर्णन ।

टिप्पणी—कवि क्षेमा नन्द के पुत्र दादरपुर के निवासी थे। उन्होंने अम्बकपुर में जाकर गुरु दीक्षा ली थी और किसी रघुनाथ से व्याकरण पढ़ा था।

संख्या २७५. वैद्यकसार, रचयिता—पुरुषोत्तम मिश्र, कागज—स्याल कोटी, पत्र—४८, आकार—११३/४ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११५२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा बिनतीदास, चेला धरमदास, ग्राम—कुंडौल, डाकघर—डौंकी, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ प्रथमे औषध भंक्षणे ॥ अथोप चारः सरकुंरवा मूल पावे दिन ७ फीहा जाए। प्रमेह जाइ वह्म दंडी पचाग पीवें दिन ३ वीर्ज प्रवाह मिटै पथ्य रहै तो ॥ अथ शीत ज्वर को ॥ × × तथा सिंगरपुर सोमल खार दोनो समान मही पीसै मात्रा चांवल १ अनुपान दूध भात के चूरमा देइ शीत ज्वर जाय गोली शीत ज्वर की चमत्कार लवग अकर करा दोनों समान पीसें सहत सो गोली वांधे झडवेर प्रमाण सांझ सबेरे खाय शीत ज्वर जाय। तव ब्राह्मण भोजन करावे। शीत ज्वर की गोली तुलसी के पत्र अढ़ाइ २॥ सो दीजे।

अन्त—जवानी पीपरामूल, दाल चीनी, पत्रज, इलायची केसर, सोठ, मिरच, चीता, नेत्र बाला, स्याम जीरा, धनिया, सोचर पेसव प्रत्येक टांक टांक लेइ अनार दाना टंक तितडी टक वेल गिरी टक ३ धाप के फूल टं ३ अजमोद ट० २ पीपर टं० ३ मिश्री टंक १०८ कपित्थ टक १४४। इति प्लहिना। इति श्री पुरषोत्तम मिश्र विरचितो वैद्यक सार संपूर्ण ॥ आसाढ़ कृष्णा १० रवि वासरे संवत १९०२। श्रीराम जी।

विषय—क्षाष्ठादि दवाइयो के अंजन चूर्ण तथा रसादिक का वर्णन।

संख्या २७६ ए. जोग वासिष्ट उत्पत्ति, रचयिता—प्यारेलाल काश्मीरी, कागज—देशी, पत्र—२००, आकार—१२ × १० इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०००, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२२ = १८६५ ई०, लिपिकाल—सं० १८३३ = १८७६ ई०, प्राप्तिस्थान—रामेश्वर सिंह, मोहनपुर, डाकघर—सहावर, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जोग वसिष्ट प्यारे लाल कश्मीरी कृत भाषा लिख्यते ॥ अथ उत्पत्ति प्रकरण लिख्यते ॥ श्री गणेशायनमः। वसिष्ट जी वोले हे राम जो ब्रह्म और ब्रह्म वेत्ता में तुमः इंदः सः इत्यादिक सब सब्द आत्म सत्ता के सहारे से स्फुरते है ॥ जैसे सपने में सब अनुभव सत्ता में सब्द होते है तैसे ही यह भी जानौ और जो उसमें यह विकल्प होते है कि जगत क्या है कैसे उत्पन्न हुआ है और किस का है ॥ हे राम जी यह जगत ब्रह्म रुप है यहा का स्वप्न का दृष्टांत विचार लेना चाहिये। इसके प्रथम मुमुक्ष प्रकरण मैंने तुम से कहा है अब उत्पत्ति प्रकरण कहता हूं सो सुनिये ॥ जो ज्ञान वस्तु सुभाव है हे राम जी पदार्थ जो उपजते हैं वही घटते बढ़ते बंध मोक्ष ऊच नीच होते है और जो उपजते नही उनका बढ़ना घटना वध मोक्ष ऊंच नीच नहीं होता है ॥ हे राम जी स्थावर जगम जो कुछ जगत दीखता है सो सब आकाश रुप है दृष्टा का जो दृश्य के साथ संजोग है इसी का नाम बंधन है और उसी सजोग के विवृत होने का नाम मोक्ष है ॥

अत—हे राम च द्र यह जगत चित में स्थित है और चित्त सकल्प रुप है। जब सकल्प रुप क्षय होता है तब चित्त नष्ट हो जाता है और जब चित्त नष्ट हुआ तब ससार रूपी कुहरा नष्ट हो जाता है॥ और निमल शरद काल के आकाश वत आत्म सत्ता प्रकाशती है। वह चैतन् मात्र सत्ता एक अज आदि मध्य अत से रहित है उसी से जो स्पन्द फुरा है वह सकल्प रुप ब्रह्मा होकर स्थित हुआ और उसने नाना प्रकार का जगत रचा है वह शून्य रुप है मूरख बालक को सत्य रुप भासता है जैसे बालक को परछाइ में बैताल भासता है और जैसे जीवों को अज्ञान से देहाभिमान होता है तैसे ही असत्य रुप ही सत्य रुप होकर भासता है॥ जब सम्यक ज्ञान होता है तब लीन हो जाता है जैसे समुद्र से तरग उपजकर समुद्र में लीन होते हैं तैसे ही आत्मा में जगत उपज कर आत्मा में ही लीन होता है। लिखी जोग वशिष्ट उत्पत्ति प्रकरण प्यारेलाल कृत भाषानुवाद सपूण समाप्त सवत १९२२ में भाषा समाप्त हुइ लिखा भैरवलाल ब्राह्मण भाद्र पद सवत १९३३ लिखहि का मार्हे ७॥) रु० पाये॥ इति श्री जोग वसिष्ट सपूण भया॥

विषय—ब्रह्म ज्ञान का वणन।

सख्या २७६ जी शिवपुराण भाषा पूर्वार्द्धखण्ड, रचयिता—प्यारेलाल, कागज—देशी, पत्र—३१६, आकार—१२ × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)-७१८९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्ति स्थान—पं० श्रीराम शास्त्री, रुद्रपुर, डाकघर—नौरेहा, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नम॥ अथ शिव पुराण भाषा का पूर्वार्द्ध प्यारे लाल कृत लिख्यते॥ प्रथम अध्याय। एक समय श्री सूत जी महामुनि श्री वेद व्यास जी के सत शिष्य जिनमे आपने गुरु की सेवा से बड़ाई पाई नमिषारण्य के वन में श्री सदा शिव महाराज की तपस्या में लगे थे और श्री शकर के गुणों का अपने हृदय में ध्यान करके मगन रहा करते थे कि सयोग से शोनकादि मुनीश्वरा के सहित सूत जी के सम्मुख आये। और विनय की कि आप सदा शिव के गुणों को वणन करें क्योंकि हम अथाह ससार सागर में डूब रहे हैं हमार बडे भाग्य से आप मिले हैं॥ थोड़े समय में वह जुग आनेवाला है जिसमें पाप अधिक होंगे और सनातन धम का नाश होकर सब प्राणी कुमाग में लीन हो जावेंगे मनुष्य आप निंदित होकर औरो की निंदा करने वाले सत्य हीन और लोभी होकर त्रिकाल सध्या और व्रत आदि से हीन हो केवल ससारी काय में प्रवृत्त होकर विचरेंगे॥

अन्त—ब्रह्मा जी बोले कि हे नारद मदिर में जाने के पाछे सब स्त्रिया इकट्ठी होकर शिव पावती की आरती उतारने लगी नाच व गाना और फूलो की वर्षा होने लगी विष्णु और हम सबने दोनों का पूजन किया॥ हम सबको ऐसा आनद प्राप्त हुआ जैसे गुगे को वचन दरिद्री को धन, अन्धे को नेत्र योगी को योग रोगी को अमृत प्राप्त होने से होती है॥ हम सबने अलग अलग स्तुति की जिससे शिव प्रसन्न हुऐ और सबको उत्तम २ भोजन दिया, इसी तरह कइ दिन तक हम सब लोग कैलास पवत पर रहे फिर विदा होने की विनय की और कहा कि हमारे सबके मनोरथ आप जानते हैं॥ शिव जी ने विष्णु और हम से कहा हमको तुमसे अधिक कोई प्रिय नहा है हमने तुम्हार कहने से गिरजा का व्याह

किया अब तुम अपने लोक को जावो ॥ तुम्हारे सब काम पूर्ण होंगे तारक दैत्य वेग ही जमलोक जावेगा तुम सब देवताओ को निर्भय कर दो यह वह शिव जी हंसे और चुप रहे हम भी हस के जय जयकार शिव शंभु कह अस्तुति चले ॥ बरात चले जाने के बाद शिव गण उनकी सेवा करने लगे ॥ शिव व गिरजा ससार के माता पिता है हम उनका श्रंगार क्या वर्णन करें शिव समान संसार मे कोई नही है उन्हों ने पर ब्रह्म होकर ससार के दुख दूर करने को विवाह किया है यह हमारी लीला कह कर और सुन कर मोक्ष प्राप्त करे शिव गिरजा का विवाह मंगल दायक है जो इसको न सुने वह पशु समान है इस ससार में मुक्ति मिलने की युक्ति इससे अधिक कोई नही है जो शिव जी की कथा प्रीति सहित सुनेगा वह आनंद को प्राप्त होगा जो इस कथा को पढ़कर सुनावेगा वह भी आनद को प्राप्त होगा जो थोडा भी पढ़ेगा व सुनावेगा मुक्ति को पावेगा सब रोग दूर होंगे अत में मुक्ति को प्राप्त होगा ॥ इति श्री शिव पुराणे तीर्थ खेडे ब्रह्मा नारद संवादे शिव गिरजा विवाह तृतीयो खंड सम्री समाप्त. लिखा रामदास बैरागी चैत्र वदी एकादशी संवत १९३२ वि० ॥

विषय—शिवपुराण का भाषा में अनुवाद ।

संख्या २७६ सी. शिव पुराण भाषा पूर्वार्द्ध चौथा पाँचवाँ भाग और छटवाँ, रचयिता—प्यारेलाल, कागज—देशी, पत्र—२३६, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५८१६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दुर्गाप्रसाद मिश्र, डाकघर—एटा, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । अथ शिव पुराण भाषा लिख्यते ॥ चौथा खंड पहिला अध्याय । इतना सुनि के सौनक ने कहा है सूत जी शिव जी का विचार सुन नारद जी ने ब्रह्मा जी से फिर क्या पूछा सूत जी बोले कि नारद जी ने ब्रह्मा से यह प्रश्न किया कि मै ने वेद पुराणो को बहुत पढ़ा परन्तु मेरे मन की तृष्णा न गई मै संसार भर में फिरता रहा परन्तु शिव का भेद न मिला फिर विशनु जी के कहने के अनुसार मै आप की सेवा में उपस्थित हो थोडा सा शिव जी का चरित्र सुना तो मन को अति सतोष प्राप्त हुआ और यह विश्वास हुआ कि शिव जी का चरित्र अति आनंद और मंगल दाता ससार के लिये है ॥ शिव के तप बिना किसी को कुछ भी सुप प्राप्त नही हो सक्ता है अब मेरी इच्छा है कि मै यह सुनू कि शिव गिरजा के साथ विवाह करके कैलाश पर्वत पर विराजे तो फिर उन्होने कौन से भक्तो के सुख दायक लीलाये की और हिमांचल ने विदा होकर कौन २ कार्य किये । तारक दैत्य का वध व ति वीर्य की उत्पत्ति और त्रिपुरासुर का प्रगट होना आदि सब कथा सुना दीजिये ॥

अन्त - शिव और गिरजा ने विश्वनाथ का पूजन किया और बडे आनंद के साथ अस्तुति की फिर वीर भद्र और गणेश जी ने पूजन किया फिर लक्ष्मी और विष्णु ने पूजन किया फिर हमने सावित्री सहित पूजा की इस प्रकार सबने उसकी पूजा विधिवत की नाना प्रकार के बाजन बजने लगे और नाच गान होने लगा देवताओ की पत्नियां भली प्रकार नाचने गाने लगी किन्नर और गंधर्व शने देवता गण आकाश से फूलो की बर्षा करने लगे

मुनिश्वरों ने अस्तुति की वेद पुराण शरीर धारण कर आये आर शिव गिरजा की अस्तुति की उस समय शिव गिरजा ने सबकी ओर दया दृष्टि करके देखा जिससे इम सबके मनोथ पूण हो गये फिर शिव गिरजा पुत्रों समेत सबके देखते देखते अतर ध्यान हो गये और विश्वनाथ के लिंग में समा गये इस बात को कोइ न जान सका शिव जी का प्रभाव अचरज से पूण है फिर अपने लोक में जाकर कैलास वासी हो गये और लिंग रूप करके काशी में स्थिर रहे यह देख सबको अचरज हुआ फिर सबने अस्तुति की और मुक्ति को प्राप्त हुये और अपने अपने अशों को काशी में स्थित करके चले गये और शिव का नाम जप कर उनका ध्यान करके सदा प्रसन्न बने रहे सदा शिव गिरजा के चरित्र सदा वर्णन करते रहे जिससे शिव की प्रीति उत्पन्न होती है यह शिव चरित्र अति आनंद का देनेवाला है इसके पढ़ने से शिव अति प्रसन्न होते हैं ॥ इति श्री शिव पुराणे षष्ट खडे ब्रह्मा नारद सवाद पच विंशो अध्याय से पूण समाप्त

विषय—शिव पुराण का भाषानुवाद ।

सख्या २७७ दश लाक्षणिक धर्म पूजा, रचयिता रघू, पत्र—५०, आकार—८३⁄४ × ६१⁄२ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—लाला ऋषभदास जैन, महोना, डाकघर—इटौंजा, जिला—लखनऊ ।

आदि—ॐ नम सद्धेभ्य ॥ अथ दस लाक्षणिक धम पूजा प्रारभ्यते ॥ श्लोक ॥ उत्तम क्षान्ति मधत ब्रह्मचय सुलक्षणम् स्थापये दशधा धर्म मुत्तम जिन भाषितम् ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा मदि् वाजब सत्य शौच सयमत पर त्यागा किंचन्य ब्रह्मचय लक्षण धर्म अत्रावत रावतर सवौंषद ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा मदि् वार्जिय सत्य शौच सयम तपस्त्यागा कि चन्य ब्रह्मचय लक्षण धम अत्र तिष्ट तिष्ट ठ ठ ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा मदि वार्जव सत्य शौच सयम तपस्त्यागा कि चन्य ब्रह्मचय लक्षण धम अत्र मम सन्निहतो भव भव वव षट् स्थापन ॥ × × × × उत्तम क्षमा गुण समूहों के स्थान रहने वाली है अर्थात् उत्तम क्षमा के होने से अनेक गुण प्रगट हो जाते हैं ६ह उत्तम क्षमा मुनियों की बहुत प्यारी है श्रेष्ठ मुनि जन इसका पालन करते है इह उत्तम क्षिमा विद्वानो के लिये चिन्तामणि रत्न के समान हे । × ^ × ×

अत—जिण णाह मदि जुई पण मिज्जई दह लक्खणु पगले पढ़णिर ॥ मो खेम सिंह सुय भव्व विण यजु यहो लिख भण इह परहु थिर ॥ ६ ॥ अथ ॥ श्री जिनेन्द्र दव भी इस दश लाक्षिणिक धम की महिमा का वणन करते है । और श्री मुनिराज भी इसको प्रमाण करते है । इसलिये हे भव्य हो इसका नित्य पालन करो और अतिसय विनय सहित ऐसी श्री खेम सिंह की पुत्री होली के समान अपने चित्त को स्थिर करो ॥ भावाथ ॥ आचाय ने होली का दृष्टान्त दिया है । होली श्री खेम सिंह की पुत्री थी । इसने मन वचन काय पूवक दश लाक्षणिक व्रत पालन किये थे । इन व्रतों का पालन जैसा होली ने किया है वैसा ही भव्य जावा पालन करो । ऐसा आचाय का आशीर्वाद है ॥ ६ ॥ ॐ ह्रा उत्तम ब्रह्मचय धर्मांगाय अध्य निर्वयामिति स्वाहा ॥ १० ॥ अध्य ॥

विषय—जैन धर्म संबंधी दश लाक्षणिक धर्म पूजा का वर्णन ।

संख्या २७८ ए. मानस दीपिका शंकावली, रचयिता—रघुनाथदास (अयोध्या), पत्र—१२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)-२८०, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० दाताराम गौड़, राघौपुर, डाकघर—मारहरा, जिला—एटा ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः श्री जानकी वल्लभो विजयते ॥ ए गोसाई जी की रामायण विचारते सर्व संका रहित है जाते पूर्व पर लगाये तें इसी ग्रंथ में समाधान मिलता है परन्तु इस ग्रन्थ का प्रचार बहुत है । याते बहुत लोग शका करत है ताते कछु लिपत है । शंका भाषा बद्ध करब मैं सोई ॥ प्रतिज्ञा तें विरुद्ध कांड के आदि में संस्कृत कवि काहि लिखे । उत्तर देव बानो अति मगलरूप जानि कै वा भाषा के पट लच्छन में संस्कृत ह्न चाहिये । शंका—निज इष्ट देव त्यागि प्रथम गणेश वदना की है । उत्तर—गणेश का प्रथम पूजन सर्व सम्मत वा प्रथम पूजित नाम प्रभाऊ ॥ सका—गोसाईं जू ने अनन्य द्विभुज रघुवर उपासक नारायण जू को उर में बसाये कोहको उत्तर—दोऊ का अभेद जानि प्रमाण-प्रगट भये श्रीकंता ॥ शंका—माया जीव ब्रह्म जगदीशा । ये सब अनादि है विधि ने कैसे बनाये । उत्तर—उपजाने में तात्पर्य नहीं हैं । गुण और अगुण का प्रकरण है वा प्रार्थना ते विधि ने । उपजाये प्रमाण—जय जय सुननायक इत्यादि ॥

अंत—जीव कै जन्म नाही होत और चारि अवस्था में जन्म रूप भेद पाया जाता है जैसे बाल वृद्ध इत्यादि केवल लड़िका देखे होइ फिर दूसरी अवस्था में जो देखेगा सो नही पहिचानेगा और जन्म संसार का नाम है और चारो जुग का जो भेद कहत है सो प्रमाण तौ समान जानव याही ते धरमन में विरुद्ध भाषत है जैसे समान और विशेष सों सब मतन में सामान्य विशिष्ट पायो जात है औ विशिष्ट में अनेक विरुद्ध देखौ परे है जैसे मास मच्छन में विन्ध्य के दखीन में बासीन को आज्ञा उत्तर—बासी पतित होत है । हवन धातु तौ जीवन में चरितार्थ नहीं होत जैठ घट मठ आकाश का नाश पावतु है याही ते जीव व्यापक जानौ जात है और जन्म सूक्ष्म और स्थूल शरीर करके भाषतु है ॥ जैसे ८४ लक्ष जोनि जन्म परमित कियो सो संस्कार और काल को धर्म्मन को मुख्य जानवो साम आयो ॥ दोहा ॥ मान युक्त मानस सुखद शंका रहित उदार । बोध रहत निज मोह बस शका करत उदार ॥ मानस मान अनेक जुत मानी मन गम नाहि । मन साहस शकावली क्षमव साधु मन माहि ॥ इति श्री ससकांड शंकावली संपूर्ण समाप्तः लिखी गौरीशंकर दूबे क्वार मासे शुक्लपक्षे त्रितीयांस संवत् १९३० वि० ।

विषय—इस ग्रंथ में श्री गोसाईं तुलसीदास कृत रामायण में जो शंकायें हैं उनका समाधान किया गया है ॥

संख्या २७८ बी. मानस दीपिका विश्राम, रचयिता—रघुनाथदास (अयोध्या), पत्र—८, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, रूप—प्राचीन, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—दाताराम गौड़, राघौपुर, डाकघर—मारहरा, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनम अथ मानस दीपिका विश्राम लिख्यते ॥ विश्राम नाम धन्यो ताको हेतु ॥ दोहा ॥ विषै आप आकाश मह मन भटका जिमि खग ॥ यहि भू उपर विचार मग प्रेरक कर थिर अग ॥ अथ रामायण के परमार्थ पक्ष की विचार ॥ दोहा ॥ रामायण द्रुम मोक्ष फल गायत्री गऊ बीच । राम सुरच्छा अंकरित वेद मूल शुभ बीज ॥ वेद वेद्य पर पुरुष भो दशरथ तन यह धार । वाल्मीक ते वेद भी रामायण अवतार ॥ कुभज मुनि निज संहिता माहीं कह्यो अनूप । रामायण अरु वेद का भिन्न न जान्यो रूप ॥ भक्त मालवर ग्रन्थ में कीन्हों यह निरधार । वाल्मीक तुलसी भये कुटिल जीव निस्तार ॥ वेद मूल हद ते चली कथा भूमि क द्वार । आतम ज्ञान तरंगिनी पान करत सुख सार ॥ वार्ता—यातें गूढ़ाशय वेद रूप यह रामायण कथा भागते सत गुण लीला प्रति पादन करतु है अरु अंतर आशय ते परमार्थ पक्ष ऐश्वर्य छिपाइ कै कहत है यथा मानुष देह ब्रह्माद्य जानौ ॥

अंत—धरि प्रसंग के भगते हरि यश हेतु जनाय । यथा भानु समता लिये दयो तोगनि जाय ॥ रामायण सरसिज सरिस । चहियत भानु प्रकाश ॥ यह प्रसंग खद्योत इव किमि कर सरस्त विकाश ॥ रामायण के अर्थ को को समर्थ मति वंत । यथा सिंधु खग चोंच भरि तृप्ति लहति नहिं अंत ॥ को तुलसी भाषा वचन कौन वेद को सार । कौन कोष तिहिं तिलक को चाही कहत गंवार ॥ मत्सर मद माया मदन मार मान मरोर ॥ रामायण जानै कहा परधन परतिय चोर ॥ कवि कोविद रघुवर भगत मानस मान सुजान । की सत सिन्धु गभीर ता मंदिर गिरि पहिचान ॥ मानस वारा वार को पार वार को जान । मंदिर गिरि धूहत जहा मम मत की परमान ॥ अष्टा दश पर संहिता या मल तन्त्र विचार ॥ धर्म नीति श्रुति सागरहिं तुलसी कृत विस्तार ॥ वरवै ॥ श्री काशी पति पितु की आज्ञा पाइ । यो गजराज कथनि मन मेल मिलाइ ॥ सरल अरथ आखर की थोरी सहत प्रभाव शांत रस बोरी ॥ दूर देश दरशायन हारी अनेक सम चितु विमल तमारी ॥ इति श्री रघुनाथदास कृत मानस दीपिका विश्राम अंग सप्तम समाप्त संवत् १९३० कातिक शुक्ला ११ शनिवार । जै राम सीता सीता राम ॥

विषय—मानस दीपिका रामायण का विश्राम अंग वर्णन ।

संख्या २७८ सी विश्रामसागर, रचयिता—रघुनाथदास (अयोध्यापुरी), कागज—सफेद, पत्र—६००, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२००, रूप—नया, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०१ = १८४४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० बाबूराम, रामनगर, डाकघर—आवागढ़, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ रघुनाथ दास राम सनेही कृत विश्राम सागर लिख्यते ॥ श्लोक ॥ सीता रामेति जुगल वस्तु तस्त्वेक रुपिणं । परमानंद संदोह सवा राध्य नतोस्म्यहम ॥ दोहा-सुमिरि राम सिय सत गुर गणप गिरा सुख दानि । नाना ग्रन्थन केर मत कहाँ बन्दना बखानि ॥ १ ॥ बन्दों शारद के चरण हरण अविद्या मूल । बुधि सुधि विद्या दे सुमति है मो पर अनुकूल ॥ २ ॥ छंद-एक रदन करिवर वदन सदन सुख के दुख नाशक । ईश तनय गण ईश सीस रजनीश प्रकाशक ॥ ३ ॥ रिद्धि सिद्धि बुधि देत लेत हरि

कुमति न जागत। जो सुमिरै मन लाय विघ्न ताजन के भागत ॥ जै जै गणेश गिरिजा सुवन भुवन विदित यश अपहरण। रघुनाथ दास वदन करत वार वार गणपति चरण ॥ संवत मुनि वसु निगम शत रुद्र अधिक मधु मास। शुक्ल पक्ष कवि नौमि दिन कीन्ही कथा प्रकाश ॥ अवधि पुरी परसिद्धि जग सकल पुरिन सर नाम। रामघाट के घाट में राम निवास सुधाम ॥ तहां कीन्ह आरम्भ मैं रघुपति आयसु पाय। श्री गुरु देवा दास के पद निज हृदय बसाय ॥

अन्त—अहो सत भगवंत गुरु विनय करहु मम कान। चहो न महि सुप देव सुरा विधि सुख पुनि निरवान ॥ विधि सुख पुनि निरवान रिद्धि सिधि सकल धरीजै ॥ जह राखौ प्रभु मोंहि तहां निज पद रज दीजै ॥ दीजै पुनि सत संग जह तव गुण सुन वाको लहौ ॥ भक्ति विमुख कर वदन जनि दिखरायो सुख प्रद अहौ ॥ अयन तीसरे सत्या गाई। युग सहस्र नव सै है भाई। और सतत्तर जानी जोई। इतनी है चौपाई सोई ॥ दोहा साठि पंच शत जानौ। नव्वे सोरठ सोइ पिछानौ ॥ है छप्पय वावन इहि माहीं। गितिका छद उतालिस आही ॥ चौवोला जुग यामें होई। मंजु छंद यक सुन्दर सोई छंदै हैं मुनि कहा सुहाई। कुंडलिया मोहि वीस लखाई ॥ तोटक यक यक दडक जानौ। कमल यक यक तोमर मानौ ॥ रोला वेद वेद अश्लोका। रुद्र त्रिभंगी छन्द विलोका ॥ एक मालिका यामें भाई। संख्या अपन कहा मै गाई ॥ सो०-महिखर छंद जु एक जुग नराच छदे अहैं। भुजंग प्रयाता एक एक कविरा यामें विशद ॥ जो कुछ देखेउ चूक मम छम्यो जानि अज्ञान। परा धीन जग जीव सब ज्ञानी इक भगवान ॥ इति श्री विश्राम सागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत संपूर्ण समाप्तः। लिखतं रामनाथ त्रिपाठी मौजा गूजे पुर श्रावण वदी नौमी संवत् १९०१ वि०

विषय—रामायण आदि बहुत से धार्मिक ग्रन्थों का सार लेकर भक्ति ज्ञानोपदेश।

संख्या २७८ डी. प्रश्नावली, रचयिता—जन रघुनाथ (अयोध्या), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०१ = १८४४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामभरोसे, देवकली कलाँ, डाकघर—मारहरा, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ प्रश्नावली लिख्यते ॥

कमल	कुंद	निवारी	दुपहरिया
महादेव	जमराज	हनूमान	इन्द्र
ईश	गरुड	पपीहा	गीध
वेला	केवडा	गुल्दावदी	पियावासा
राम	गणेश	शनिश्चर	भैरव
मैना	कोयल	खूसट	वया
कलगा	सुदर्शन	गुलमेंहदी	नरगिस
भरत	पवन	जल	शारदा

टिटीरी	भरदूल	चहरैंचा	चहूल
कदयल	भरवा	गुलफ्रिग	सेवती
अम	शुक	अश्वनीकु	स्वामिका
	कन्नाश	तूती	सारस
गरगवा	—	—	—

अगुली रख कर इस प्रश्न का निकालना

१	२	१३	८	२६	२४
३१	२३	२८	११	७	०
१७	१४	२०	२७	१९	०
९	१८	४	२२	५	०
३	२९	१६	६	३०	०
१५	१०	१२	२५	२१	०

अन्त—बिन वर्षा घन समुझि घर दीन्हे चयनि विसारि। पियावास तिमि तव तजा मैरव आश निवारि ॥ तीतर त्याग प्राण निज गा अनार तर सूखि। नरसिंह को कर यादि अब तू मति माहुइ दूखि ॥ सुमिरि शारदा के चरण चढ़े न क्यों चहूल। नरगिस करि क्या करहिंगे जो ईश्वर अनुकूल। रहिये रहन बटेर की चहिये सुयस गजारि। लहे केतकी बास किमि मुनिवर कहत विचारि ॥ सारस पद को याद कर है सो मंगल खानि। स्वामि कार्तिक रटत जेहि शभु सेवती मानि ॥ गुलाबास की आस तजि शार दूल को ध्याव। होइ सुख परदश में कहत बृहस्पति जाव ॥ गुल फ्रिग फूली विपिन भई कृपणि के दर्वि। वह रवि सुत हरि बिन वृथा तूती बोलै अर्वि ॥ श्री गुरुदेवा दास के चरण कमल धरि माथ। बरणौं माणस प्रश्न यह पूरण जन रघुनाथ ॥ दव सुमन अरु खगन के नाम जान इकतीस। पच धाम कोठा असी अक पाच तिन सीस ॥ सकल सुनावै नाम जो धाम मध्य ठहराय। अक जोर दोहा समुझि सगुनहि देव बताय ॥ इति श्री जन रघुनाथ दास कृत प्रश्नावली सपूर्ण समाप्त सवत् १९०१ वि०

विषय—शुभाशुभ शकुनों का विचार।

सख्या २७९ ए प्रह्लाद लीला, रचयिता—रैदास, कागज—स्यालकोटी, पत्र—२, आकार—९ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सनी, बेलनगज, जिला—आगरा।

आदि—सहर बड़ो मुल्तान जहा एक असुर राजा। तहा जनमें प्रहलाद सुर नर मुनि के काजा ॥ पूछौं विप्र बुलाइ कै जनम्यो राजकुमार ॥ या सम सो कोई नहीं, असुर सहारण हार ॥ सुत धौरों पहलाद की रण गुण तै पठैरो ॥ मैं पठैरो राम को नासा ओइ जान हा जानौं। राम मौं छोड़ि तीसरो, अक न आनौं ॥ कहा पढ़ावै बावरे और सकल जजार। भौ सागर जम लोक ते मुहि कौन उतारे पार ॥ २ ॥

अन्त—अस्त भयो तव भानु उदय रजनी जय की हा। प्रभा में ते निकसि जाय पर जाधा लीन्हा ॥ नप मों निश्चय किन्हियां, तिलक दिया महराज। सस लोक नव खड

में, तीन लोक भइ राज । जहां भगत की भीर तहां सब कारज सारे ॥ हमसे अधम उधारि कीऐ नरकन ते न्यारे ॥ सुर नर मुनि गंद्रप पर्द, पूरण ब्रह्म निवास ॥ मनसा, वाचा, कर्मणा, गावे जन रैदास । इति प्रहलाद लीला ॥ सम्पूरण ॥

विषय—प्रह्लाद चरित्र वर्णन ।

संख्या २७९ वी रैदास जी का पद, रचयिता—रैदास, कागज—देसी, पत्र—५, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६९६ = १६३९ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा हरीदास छर्रा, डाकघर—छर्रा, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री रामजी सति ॥ अथ रैदास जी का पद लिष्यते पद—परसै राम रमे जो कोई । पारस परसे दुविधा न होई ॥ जे दीसे सो सकल विनास । अण दीसे नाहीं विस वास ॥ करम रहित जो उचरे राम । सो भगता केवल निहराम ॥ फल कारण फूलै वन राइ । उपजै फल तब करम नसाइ ॥ बटक बीज का पहुआकार । पसन्यो तीनि लोक विस्तार ॥ जहां का उपज्या तहा विलाइ । सहज सुनि मे रह्यौ लुकाइ ॥ जो मन व्यंदै सोई व्यंद । अमावस में दीसै चंद्र ॥ जलमें जैसे तूंबा तिरै । परचै पिंड न जीवै मरै ॥ सो मन कौन जु मनको खाइ । बिन द्वारे त्रिब लोक समाइ । मनि की महिमा सब कोइ कहे । पंडित सो जो उनमनि रहे ॥ घृत कारण दधि मथे सयान । जीवत मुकति सदा निवाणि कहै रैदास परम वैराग । राम नाम किन जपहु अभाग ॥

अंत—राग धनाश्री— मैं का जानो देव मैं का जानों मन माया के हाथ बिकानो ॥ चंचल मनवा चहु दिशि ध्यावे पाचौंइन्द्री हाथ न आवै ॥ तुमतो आदि जगत गुरु स्वामी हम कहियत कलियुग के कामी ॥ लोक वेद मेरे सुकृत बडाई लोक लीक मोपै तजी न जाई ॥ इन मिलि मेरो मन जु बिगान्यो दिन दिन हरि सों अंतर पान्यो ॥ सनक सनदन महा मुनि ज्ञानी सुष नारद व्यास इहै जु बखानी ॥ गावत निगम उमापति स्वामी सेस सहस भुज की रतिगामी ॥ जहां जहा जांव तहां दुखकी पापी जो न पत्याहु निगम हैं साखी ॥ जम दूतन हू बहुविधि मान्यो तहू निलज अजहूं नहिं हान्यो ॥ हरि पद विमुष आस नहि छूटे ताते तिश्ना दिन दिन लूटे ॥ बहु विधि कर लीये भट कायै तुमहिं दोष हरि कौन लगावै ॥ केवल राम नाम नहिं लीयो संतत विषै स्वाद सुख दियो ॥ कहै रैदास कहां लौ कहिये विन रघुनाथ बहुत दुख सहिए ॥ इति श्री रैदास जी का पद सपूर्ण समाप्त. लिखतं कैसोदास ॥

विषय—ज्ञान और भक्ति का वर्णन ।

संख्या २८०. ज्योतिष पद्धति, रचयिता—रामचंद (मेवाड), आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२६०, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५८ = १८०१ ई०, लिपिकाल—सं० १८५८ = १८०१ ई०, प्राप्तिस्थान—त्रिभुवन प्रसाद त्रिपाठी, पूरेपरान पाँडे, डाकघर—तिलोई, जिला—रायबरेली ।

आदि—दोहा-ॐ गज-मुष सनमुष होतही विघन विमुख है जात । ज्यों पग परत प्रयाग मग पाप पहार विलात । जे अठये भवन राह मंगल केत युत परै तौ लोह छात

उपजै । सूर्य राहु युक्त परे तौ लोहवा अग्नि ते मरण । रवि मगल अठये भवन में परै तौलो हवा अग्नि अग्नि घात । तथा रुधिर प्रकोप वाग रमी रक्त श्रावबा छात उपजै । चरैट भवन मगल परै तोवा दृष्टि होइ तो नेत्रैथवा करण विकार ॥ शनि मगल तथा राहु । मंगल बरहे परे तो मद्द मास भोजी ल्पट दृष्टे नेत्र कर्ण विकार

अन्त—मीन र । शनि । कुत्यणो, चचलाइ वणो, क्षिर ध्याणो सिल्य णाणे ॥ विद्या जाणे ॥ धलवणो करै उदमी ध्याणे । नम्रताई वणी । काम भोग पे विन्दु खुलास ललित वेगो होय । वैपार मोह । विवहारमाहे समुरुणे । व्यसनो । परेक्षा वणे जाणे । धन मोह विष भक्षण उपजै । कामी न्याय चाले ।

विषय—फलित ज्योतिष वणन ।

टिप्पणी—फारसी भाषा में लिखा है कि मारवाड़ के बहादुर सिंह दीवान की आज्ञा नुसार यह पुस्तक लिखी गई थी ।

सख्या २८१ ए. जिज्ञासा बोध ग्रन्थ, रचयिता—रामचरण (शाहीपुर) कागज—देशी, पत्र—१३६, आकार—८ × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—५०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५९५०, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८४७ = १७९० ई०, लिपिकाल—स० १९०४ = १८४७ ई०, प्राप्तिस्थान—चौबे जमनालाल, अलीगढ़, जिला – अलीगढ़ ।

आदि—अथ जिज्ञास बोध ग्रन्थ लिख्यते ॥ अस्तुति—रामतीत राम गुरदेव जी पुनि तिहू काल के सत । जिनहू रामचरण की वदन वार अनंत ॥ आज्ञा पाऊ परम गुर गाऊ बोध जज्ञास । राम चरण चरणा रता हिरद अधिक हुलास ॥ करि हुलास भजि राम कू सब विधि पूरण काम । निज जग्यासा विचारि कै सतगुर कू परनाम ॥ गुर गोविन्द सरब गह दसौ दिसा भरपूर ॥ राम चरण उर सुमिरिये भरम न गिणिये दूर ॥ द्वार नहीं भर पूर हैं बाहर भीतर राम । सा सरूप परगट गुरू ताहि सदा परनाम ॥ कुन्ल्या—मुर सद कू सजदा करै जे साइ माने सोइ ॥ बदगी जुगति दिखलाया ॥ आलम औरत जुलुम रह तिस वास विसाया ॥ राम चरण उन पीर के पैर मुराद जोइ । मुरसद कू सजदा करै जे साईं मानै सोइ ॥ छद मन हरन—कीजिए परनाम नित सत चिदानद गुर, सद निज धरम करै करत प्रकास जू ॥ महा गुण ग्यान दीनो बखानी है, तिरा आप ताप जो निवारि सारी दति है निवास जू ॥ ऐसे गुण सागर दयाल महा दीनन के, आवत नजीक जाकी काटे दुख पास जू ॥ राम ही चरण गुर देव को प्रणाम करे । धरै उर ध्यान सुधि पावत जज्ञास जू ॥

अन्त—दोहा—गुर सतुक्ति अति अगम है निगमहू लहै न पार । राम चरण वन्दन करै नमो गुर निरकार ॥ छद मनहरन—निराकार ब्रह्म नित गति है अकास वत । आकास मैं आभ गुर जैसे करि जानी है ॥ आभ ते प्रगट जल त्यौंही गुर ज्ञान दाता या तैंने पै भोमिया हा जग्या सानि पानी है ॥ एह तन कारन प्रगट आप राम रूप दास कू । निवास हेति दया उर आनी है ॥ रामही चरण कहै नमो जी कृपाल गुर । दया करि कियो मोहि आपक समानी है ॥ सोरठा—कीयो आप समानि अपनो अनुचर जानिकै ॥ मेटी दुतिया

वानि राम चरण पद लीन जू ॥ अरेल—राम चरण पद लीन तीन के पार है। सत गुरु दीन दयाल कियो उपगार है ॥ साधन सुध जग्यास भयो उर सोध है ॥ परिहां पायो सुख भरपूर जग्यास बोध है ॥ अठारा से सैंताल का सवत कातिक मास। बुधि दोज सोमार दिन पूरण ग्रन्थ जग्यास ॥

विषय—ज्ञानोपदेश।

संख्या २८१ वी. विश्रामबोध ग्रंथ, रचयिता—रामचरण, कागज—देशी, पत्र—९६, आकार—१०×८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५१ = १७९४ ई०, लिपिकाल—स० १९०३ = १८४६ ई०, प्राप्तिस्थान—गनेशदत्त पाण्डया, वीरपूर, डाकघर—दतौली, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विश्राम बोध ग्रन्थ लिख्यते। अस्तुति ॥ रम तीत राम गुरु देव जी पुनि तिहू काल के संत। जिनकू राम चरण की वंदन बार अनंत ॥ सतगुरु परम कृपाल कू करि अस्तुति परनाम। राम चरण चित लाइ चित पाइ रहे विश्राम ॥ छांडि मनोरथ कामना राम नाम लौ लाइ। रामचरण विस्रवास पद गुरु किरपा सूं पाइ ॥ गुरु किरपा सूं उपज्यो उर में उत्तम सोध। राम चरण ताते कहूं ए विसराम जु बोध ॥ कुंडल्या—बोध बुधि दाता गुरू सार दिखावण हार। उनकूं वन्दन कीजिये पल पल बारबार ॥ पल पल बारबार करै उर नैन उजारा ॥ सदा एक रम जोति करै नहि होइ अधारा ॥ राम चरण सुख कार गुरु आनद काज पयोध ॥ गुरु गोविन्द सो अधिक है देवै उत्तम बोध ॥ गुरु गोविंद सूं अधिकता कहै सास तर संत। गुरु रि लिया से पाइए निज पद तत भगवत ॥ निज पद तत भगवंत और साहिक नहिं कोई। जन के वचन विचारि सार हिरदै धरि सोई ॥ राम चरण भजि राम कूं यो परंपरा वेदंत। गुरु गोविंद से अधिकता कहै सासतर सत ॥

अंत—छंद हंसाल—गुरु ज्ञान रूपं महिमा अनूपं गुणा तीत पार सबै तो अधार ॥ अध्यातम वाचा। सुधा बैन सांचा। पीवै तोर दासं। पावै अविनासं ॥ है है नहि कामा मिटै स्रत जामा। उधारे अनेकं गुरू जी अलेप ॥ हमे सरणि लिए महा पद दिये। किये आप रूपं गुरू जी अनूप ॥ अनूप अतोलं अतोलं अतोलं। कहे राम चरणा सुनो मोर करणां ॥ दोहा—करणा सुनि कृपाल जो मोहि लगाए पाइ। आप मिलाए आप मे दुतिया भेद मिटाइ ॥ छद वेताल—दुती भेद भै भरम वीता नदीता सव काम जू। नह काम निरमल भया निरभै पाइयो अभिराम जू ॥ नित सुख सानन्द मांही लीन आगम धाम जो। एक रस सरवंग पूरण राम चरण विराम जो ॥ सो०—ए विश्राम जु बोध सतगुरु किरपा करि कह्यो। लह्यो जु आतम सोध राम चरण चरणां रता ॥ अठारा से अक्यावन आसोज सुकुल पप होइ। दोज तिथि गुरु वार कू ग्रथ जस पूरण होइ ॥

विषय—निर्गुण ब्रह्म की कथा वर्णन।

संख्या २८१ सी समतानिवास ग्रंथ, रचयिता—रामचरण (साहीपुर, राजपूताना), कागज—देशी, पत्र—६८, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५२ = १७९५ लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा रामगिरि, मौसानपुर, डाकघर—गौंडा, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्रीगणेशाय नम ॥ अथ समता निवास ग्रन्थ लिख्यते ॥ अस्तुति ॥ रमतीत राम गुरुदेव जी पुनि तिहू काल के संत । जिनकू राम चरण की वंदन बार अनंत ॥ परम गुरू परमातमा रमता राम निधान ॥ राम चरण कर जोड़िके करिहै वंदन मान ॥ वंदन विधि कर जोरि करि उर में अधिक हुलास ॥ राम चरण गुर राम सो सुप समता सु निवास ॥ सुख समता बकसीस दे सतगुर किये निहाल ॥ राम चरण भव तारिहै समरथ संत कृपाल ॥ कुंडल्या—कासी भया कबीर जी ज्यू ही भया दात डैसंत ॥ भवसागर की धार सैं ज्यों तार्‌या जीव अनंत ॥ ज्यों तारा जीव अनंत राम के भजन लगाया । भ्रम भरम उड़ाइ कृपा करि कणप कराया ॥ राम चरण वंदन करै सो मारे उर वर संत ॥ कासी भया कबीर जी ज्यू ही भया दात डैसंत ॥ भला पधारे कठिन जुग वपु धारण करि संत ॥ किते पतित पावन किए हमसे अधम अनंत ॥ हमसे अधम अनंत नाव नवका बैठारे । पेवट आप दयाल पेह कर भव जल तारे ॥ राम चरण कर जोरि के उर अस्तुति करत ॥ भला पधार कठणि जुग वपु धारण करि संत ॥

अंत—छंद पधरी—जपि राम नाम कारज कीन । तब मिटी वासना हुती कीन ॥ जब लिये आय आप सम्हाइ । रवि ववहु तोरिव मिले जाइ ॥ गुर तेज रूप मन जल सुकाइ । अब ववदास मिनतान पाइ ॥ पद गुणातीत अभीति निति । मन वाच अगोचर अगमगति ॥ गुरु मिहर वानगी पाइ दास । ॥ रामचरण समता निवास ॥ अब भया थीर गंभीर धाम । तन सहज भाइ समता अराम ॥ एवं ठण गुर क्रिया कीन । महाराज आज मों देपि दीन ॥ परापरी अपणाइ आप मेटि दिये सब ही संताप ॥ मन वचन जोरि कर कहै दास । राम चरण पायो निवास ॥ जिभ्या एक महिमा अनंत गुर नमो नमो कृपाल संत ॥ कुंडल्या-ये किरपा क्रिपाल जी कीन्हा आप दयाल ॥ राम चरण जा केलि उर बोले वचन रसाल ॥ बोले बचन रसाल राम रस जामे भरिया ॥ अणाभौ अगम अगाध जथारथ जो उचरिया ॥ दास विचारै राम जन साही सदा निहाल ॥ ले समिता सुमरै राम कू विपति होइ पैमाल ॥ संवत्‌-समता अष्टादसमा पोप सुदी वावना । ठकै सौ मथ ग्रन्थ संपूरण भावना ॥

विषय—शिक्षाप्रद दोहों का संग्रह ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता राम चरण साहिपुरा निवासी कृपाल दास के शिष्य थे । निर्माण काल संवत्‌ —समता अष्टादस में पोप सुदी वावना । ठकै सौ मथ ग्रन्थ संपूरण भावना ॥ यानी निर्माणकाल संवत्‌ १८५२ वि० है । इनकी मृत्यु संवत्‌ १८५५ में हुई है । इसका दोहा इस प्रकार है ॥ ॥ गाहक उर मोह पधारे धामकू । ररकार में लीन

उचारे रामकूं ॥ अठारा सै पचपन वुधि पांचै परी । परिहां वेसाख मास गुरुवार देह त्यागन करी ॥ लिपिकाल—सवत् १९०० वि० है ॥

संख्या २८१ डी. विस्वास बोध ग्रंथ, रचयिता—रामचरण (साहीपुरा, राजपूताना), कागज—देशी, पत्र—१००, आकार—८ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४९ = १७९२ ई०, लिपिकाल—स० १९०४ = १८४७ ई०, प्राप्तिस्थान—चौधरी गगाराम—इजलास, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ विस्वास वोध ग्रन्थ लिख्यते ॥ रम तीत राम गुरु देव जी पुनि तिहूं काल के सत । जिनकूं राम चरण की वंदन वार अनंत ॥ गुण अगाध त्रिगुण परै निरगुण राम सरूप । राम चरण नित वंदना करि हू सदा अनूप ॥ करि वंदन विधि भावना नित निरमल परकास ॥ मन थिरता के हित कहू गेह वोध विसवास ॥ राम निरंजन देव कूं राखूं उर विसवास । गुरु वाहक साहिक सदा राम चरण निज दास ॥ दास आस अविनास पद सद विसवास विचारि । सत गुरु कूं सिर नाइके करिहौं ग्रन्थ उचार ॥ चदरायणां ॥ करिहौं अबै उचार वोध विसवास को ॥ जगतें वेड़ों पार करौं प्रभु दास को ॥ ज्यो चितवनि सबै मिटाइ गाइ अनूपरे । परिहां राम चरण गुर राम एकही रूप रे ॥ मन हरन ॥ राम गुरू एक सौ ववेक करि मान भाइ, वडाई सो जानि एह देह राम जाप जू ॥ पोपरु सतोप रीति रीति सू करत रप्या, देह दप्या दान जू निवारैं पाप दाप जू ॥ ऐसो ए दयाल गुरु देव जू निहाल करै । ताते ताहि वदन करत मिटे ताप जू ॥ राम ही चरण जो सरण सदा सुख दानी निधानी जो राम रूप मिले गुरु आप जू ॥

अन्त—कुडल्या—ज्ञान लह्यो गुरु देव सैं जो भयो अमन मन सोइ । गयो तिमिर अज्ञान को रह्यो प्रकासिक होइ ॥ रह्यो प्रकासिक होइ सार वुधि दिल दर सावै ॥ नही असुध को भास दास पद वदो न पावै ॥ राम चरण शरणौ सुखी ज्या ऐसी बरतिन जोइ ॥ ग्यान लह्यो गुरु देव सैं जो भयो अमल मन सोइ ॥ छंद कपाल—सतगुरु अमल कियो मन मेरो चेरो जानि चितायो ॥ मेटि अधीरज धीरज दीन्ही निज विसवास दिढ़ायो ॥ करि सुचेत हेत दे अपनो विसवास वोध ये गायो ॥ सारी रैसि राम मिलवे की जाको भेद वतायो ॥ भजन ज्ञान वैरागरु भगती सत्ति सुधा मई वोले ॥ जो जो अगता वंधन होते सो सो सांसै खोलै ॥ ससै मेटि किया निर संसै असै अंस मिलाया ॥ जीव ब्रह्म की भिनिता भागी आपै रूप समाया ॥ ए परताप परम गुरु केरो फेरा सबै मिटाया ॥ निरभै किया आप करि किरपा मैं चरणूं शिरनाया ॥ पुनि वलिहारी वारंवारा सत गुरु दीन दयालं ॥ राम चरण कर जोड करै नित नमो नमो कृपालं ॥ सो०—अठारा सै गुणचास संवत् भाद्र पद मास सुधि ॥ पूरन ग्रन्थ प्रकास चतुरदशी गुरुवार है ॥

टिप्पणी—गुरु व परमात्मा में विश्वास करने ही से मनुष्य वधन से छूट सकता है आदि वर्णन ।

विपय—इस ग्रन्थ के रचयिता रामचरण थे, जो साहिपुरा राजपूताना निवासी थे । इनके बनाये अनेक ग्रन्थ है । निर्माण काल संवत् १८४९ वि० है जो इस प्रकार लिखा

है—अठारा से गुणचास सवत् भाद्र पद मास सुधि । पूरन ग्रन्थ प्रकास चतुर दशी गुरवार है ॥ लिपिकाल संवत् १९०४ वि० ॥ इनकी मृत्यु का समय सवत् १८५५ वि० है ॥

संख्या २८९ ई. अमृत उपदेश, रचयिता—रामचरण (साहीपुरा राजपुताना), पत्र—७२, आकार—८ x ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४४ = १७८७ ई०, लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा बिहारीदास-रतनगढ़ी, डाकघर—बिसवाँ, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ अमृत उपदेश लिष्यते ॥ अस्तुति ॥ रम सीत राम गुरु देव जी पुनि तिहू काल के सत । जिनको राम चरण की वंदन वार अनंत ॥ राम निरजन ध्यान मह सतगुरु कूं परनाम । कहू इम्रत उपदेस पह दहु बुधि वरियाम । बुधि सुधिता होइ तब उपजै इम्रत बैन । राम चरण दाता यथै रोम रोम होइ चैन ॥ छद मन हरन—रोम रोम होइ चैन बैन जो बरानें, गुर वर में सतुति कू न तोल सु तुलाई है ॥ चद सूर सम कहू सो तो उदय अस्त होइ, धरा ज्यू धमान् धीर धरा न रहाइ है ॥ अतोले सुमेर सो तो साहू को बताये तोल, अथग समद कू मानद जू थगाई है ॥ राम ही चरण कहे गुर जी अगाध गति सिष है चात्रग स्वाति नीर कू जचाई है ॥ दोहा—चात्रग जाचे नीर तछि पीर हरे पन पलक पी, रामचरण किरपाल की बलिहारी पल पलक की ॥ कुडल्या—राम मई गुरु जाणिये गुर मई जाण राम । गुरु मूरत को ध्यान उर रसना उचरै राम ॥ रसना उचरै राम भरमना उर में नाहीं ॥ गुर गोविन्द तन एक देषि व्यापक सब माहीं ॥ राम चरण कह जाइये ए घटि वधि कोइ म ठाम ॥ राम मई गुर जाणिये गुर मई जाणो राम ॥

अन्त—मैं हूँ तोर चरणा परानित स्वामी । तुमे सोनपूर्ण भाग अतर जामी ॥ कई मोहि धीर अभीर करी हैं । दोउ हसत सीस दया से दिए हैं ॥ रवे आप सरणा एक रणा सुणी हैं । उदय भाग मेरो भलाये वणी हैं ॥ किए मुकति रपाहनी जग जाल । कहै राम चरणा नमाणी कृपाल ॥ दोहा—सिर ऊपर सत गुर तपै क्रिपाराम जो सत । राम चरण ता सरणि मैं ऐसो पाया तत ॥ तत दियो जग तरण कू राम नाम निरधार । राम चरण भज रैणि दिण गये गुणा ते पार ॥ अमर भये गुरु बैन सुणि चैन भये चित पूरि । काळ जाल में भरमना सकल निवारे दूर ॥ दूरि निवारे करि दया दे इम्रत उपदेस । रामचरण क्रिपाल कू किये जतन मन पेस ॥ ए इम्रत उपदेस अति संत वचन वरियाम । राम चरण भावै भले सिर पर सतगुर राम ॥ इति श्री इम्रत उपदेस ॥ श्र राम चरण कृत संपूर्ण सवत् १८४४ वि०

विषय—उत्तम उपदेश वर्णन ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता राम चरण साहपुरा निवासी थे । निर्माण काल सवत् १८४४ वि० है, लिपिकाल सवत् १९०० वि० है । इनकी मृत्यु संवत् १८५५ वि० में

हुई थी । इसको इस प्रकार लिखा है:—ए बाहक फुरमाह पधारे धामकूं । ररकार में लीन उचारे रामकू ॥ अठारा सै पचपन बुधि पांचे परी । परिहां वैसाख मास गुरुवार देह त्यागन करी ॥

संख्या २८१ एफ. रामचरण के शब्द, रचयिता—रामचरण (साहपुर राजपूताना), पत्र—८०, आकार—८×६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—५०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९००=१८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवदत्त वैद्य, बलाई का नगला, डाकघर—विजयगढ़, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ रामचरण के शब्द लिख्यते ॥ राम तीत राम गुरु देव जी पुनि तिहू काल के संत । जिनकूं राम चरण की वंदन वार अनंत ॥ प्रथम वदन गुरु देव कूं पुनि अनत कोटि निज साध । कहूं एक चिन्ता वणी देउ बाणी विमल अगाध ॥ वधे स्वाद रस भोग जे इन्द्रियां तणे अरंथ ॥ उन जीवन के चेतिवे कहू चिंता वणि ग्रन्थ ॥ राम चरण उपदेश हित कहू ग्रन्थ विसतार । पऱ्यो प्राण भव कूप में सो निकसै अरथ विचार ॥ चामर चद—दिवाना चेति रे भाई । तू सिर गजव चलि आई ॥ जुरा की फौज अति भारी । करै तन लूटि के पवारी ॥ साई वेगि अपणध्याइ । पीछे जुरा दावै आइ ॥ तजि संसार का सब धंध । एतो सही जम का फद । अव तू राम सरना गाइ । वीतो जनम अहिलो जाइ ॥ तेरा जणम की सुणि यादि । मरख खाइये नहिं वादि ॥ पाई दुलभ मानुष देह । अव हरि सुमिरि लाह्वा लेहें ॥ गाफिल होइ मत भाई । औसर वहुत नहिं पाई ॥

अंत—दुप मा सवद ससार में उलटे दुखी पुकार । जैसे दुधारा खंग ज्यूं करै वध परहार ॥ कडी वचन मे संग लिया मीठे नही मिलाइ ॥ लवो उठता वैठता दुर्जन बडा संताप ॥ नप दर वाहिर भीतरां जल धर अगन उचारि ॥ सिव सुत नारि विचारि के मधि की मधि निवारि ॥ तेरा मे मेरा का है तेरा मेरा नाहिं ॥ तेरा मै मेरा कहै सो वूडि जाइ भौ माहिं ॥ मुक्ति ग्यान पूजि परम पद रसिक होइ रस लेइ । राम चरण चहुं फड़न के मति धुर अपिर जेइ ॥ अठारा सै पट वर्ष मास फागुन वुदि सातैं । संत पधारे धाम सनीचर वार विख्याते ॥ वत्तीसै क्रिपाल छठि भद्र पद सुदि सुकर । छाडे आप शरीर परम पद पहुंचै मुकर । पचपन कै वैसाख वुदि पांचै गुरुवार ॥ राम नारण तन त्यागि के लीन भये निज निरकार ॥ सत गुरु संत कृपाल जी राम चरण सिप तासु के । कारिज कर करण मिले तुम गुरु रामजन दास के ॥ इति श्री राम चरण के सबद सपूर्ण समाप्तः लिखतं राम दास वैरागी । सवत् १९०० वि० भाद्र पद अष्टमी जलम श्री कृष्ण जी का दिन—

विषय—निर्गुण भक्ति और ज्ञानोपदेश ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता राम चरण शाहपुरा (राजपूताना) के निवासी थे । इनके गुरु का नाम कृपाल दास था जो संवत् १८३२ मे मृत्यु को प्राप्त हुए । राम चरण के शिष्य रामजन थे । इनके ग्रथ संवत् १८४२, १८४७, १८४९, १८५१, १८५२ के निर्मित मिलते है । इनकी मृत्यु संवत् १८५५ में हुई ॥

सख्या २८१ जी। अणभै विलास, रचयिता—रामचरण (साहीपुरा, राजपूताना), पत्र—१००, आकार—८ × ५ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८४५ = १७८८ ई०, लिपि काल—स० १९०१ = १८४६ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा परमानद दास, मुरसान कुन्ती, डाक घर—मुरसान, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ ग्रन्थ अणभै विलास लिख्यते रमतीत राम गुरदेव जी पुनि तिहू काल के सत । जिनकू राम चरण की वदन वार अनत ॥ नमो निरजन राम जू नमो गुरू गुण पार । राम चरण वदन करै मैं तुमरे आधार ॥ सरजन हारा रामजी सत गुर धदि विलास । हरिजन किरपा होइ उाध कहू अन भोग विलास ॥ मन हरन छद—अनुभो विलास कहू सांता येका सद हू । सोग रोग मानि सारा भव को नियास जू ॥ उदित आनन्द होइ दुद वाद दुष खोइ । जोइ जग पार निराधार वो प्रकास जू ॥ राम ही घरण अनुभो अनूप रहै, पाइ गुर ज्ञान जो निधान को उजास जू ॥ दोहा—यह उजास गुर ज्ञान सो उर लोचन परकास । रवि ससि उदै हिये न होत उजास ॥ कुण्डलिया—सहस सूर ससि के उद हिये न होत उजास । सत गुर ग्यान उदात से हिरदै होत प्रकास ॥ हिरदै होत प्रकास भरम अधियारो भागै ॥ सुपना वत ससार जानि सोवत सो जागै ॥ परचि भजै परमातमा रहै न मैरी आस । सहस्र सूर ससि कै उदै हिये न होइ उजास ॥

अन्त—याको है सवाद मीठा दीठी हम चाषि यह पीको रही काम राम राम जी सौं राग है ॥ उत्तिम सवद सत नित गारी साभ भरी । उचारी है गिरा ग्यान अगता ज्यौं त्यागी हैं ॥ भगति भजन मन जातिये गति कहा, गही जो विचार वान वाही बड़भागी है ॥ अनभै विलास महा सुख को नियास जानौ । वियानू जो याहा यह परम विराग है ॥ राम चरण महराज कै अनभौ छैल अनूप । तासो जोडि बनाइ यह कीनो ग्रन्थ सरूप ॥ साहिपुरै सुभ धाम मत सगति सता, सरणि ग्रन्थ वरण्यो यह नाम निज अणभोल विलास जू ॥ राम चरण गुर दर अगम छौर अण भै कही । जाको अति गुणभेव कहो कौन जानै राम जन ॥ राम भजन प्रकास सतगुर किरपा सू भयो । मो उर हिरदै हुलास ग्रन्थ जोड़ कही राम जन ॥ सवत् सिप्या सार अठारा सै पैताल जू, महा सुध भूवार पूर्यो पूरण ■ थ हो ॥ इति श्री अणभै विलास ग्रन्थ सपूर्णम् लिखा सवत् १९०३ ॥

विषय—निर्गुण मत के अनुसार ज्ञानोपदेश ।

सख्या २८१ एच राम रसाइनी, रचयिता—रामचरण (साहीपुरा), कागज—देशी, पत्र—४०, आकार—१० × ८ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी लिपिकाल—स० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा परमानन्द दास, मुरसान कुन्ती, डाकघर—मुरसान, जिला—अलीगढ़ ॥

आदि श्री गणेशायनम । अथ राम रसाइनि ग्रन्थ लिख्यते ॥ रर तीत राम गुरु देवजी पुनि तिहू काल के सत । जिनकू राम चरण की वदन वार अनत ॥ दोहा ॥ सत गुर

जन होइ उजागर ॥ रामचरण मौ धार का दुख दालिद् सब जाइ । भरम भेद सबही मिटै सुष में रहे समाइ ॥ छंद पधरी ॥ मैं शरण तुम्हारी दयानाथ । मन नैन उभै जोरे जु हाथ ॥ गुन तीन पार गुर ज्ञान रूप सुधा सिन्धु पूरन अनूप ॥ प्रभु कृन सुख कैसे समाइ । येह भेद कहियो वनाइ ॥ तुम वैन अमी भरिया रसाल । मोहि श्रवन द्वार पावा कृपाल ॥

अन्त—सोरठा–राम चरण महराज सुष विलास चाहक कहे । कलि जीवन के काज दया विचारी उर महीं ॥ राम चरण जी सतगुर मेरा दया करी है भारी । जिनये अनभै बैन उचारे सबद कहे सुख कारी ॥ रतन अमोलक सतगुर वाइक जाकी जोति अनूपा । ताकी जोड़ि ग्रन्थ एक कीन्हो सुख विलास सुख रूपा ॥ ए गुर मिहरि भई मो ऊपर तब ये जोड़ बणाई । राम जन सरणागति तुम्हरी सत गुर रखो सदाई ॥ छुद्र बुद्धि सुधि नहिं मोरे ये किरपा गुरु कीन्हा । जाते भेद पाइ गुर प्रगट ग्रन्थ जोड़ ये चीन्हा ॥ नगर साहि पुर जाणि सुभ सत सगीत । धाम है ग्रन्थ वरण्यो परमाण सुख विलास सुख रूप जू ॥ अठारा सै छियाल ए सवत् सख्या कही । मघश्र सुधि विलास ताज तथिर गुरवार है ॥ इति श्री सुख विलास ग्रन्थ सपूण शुभ मस्तु लिखत ज्ञानदास स्वपठनाथ बवार बुदि सवत् १९०५ नौमी राम राम राम राम सतगुर मेरा बेड़ा पार ॥

विषय—सतगुर की सेवा फल का वर्णन ।

सख्या २८२ सगीत मनोहर, रचयिता—रामचरन बनिया द्वारा सग्रहीत, (शाहजहापूर), कागज—देशी, पत्र—६४, आकार—१०×८ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३५२, पूर्ण, रूप—पुस्तक की भांति, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१९१६ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रामसनेही मिश्र, स्थान—मानिक खेड़ा, डा०—किशोरगज, जि०—उन्नाव ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः । अथ सागति मनोहर राम चरणकृत लिख्यते ॥ द्वो० । सिद्धि सदन वारन बदन हृदय राखि सुख दानि । यह पुस्तक सग्रह करौं जन जानि ॥ बहु नवीन गजलैं लिख्या सरस पढ़हु चित लाय । राम चरन लखि रसिक जन पुनि पुनि हिय हुलसाय ॥ ठुमरी भैरवी ॥ ढले जात जुवना रे दिन दिन । उनपे निस दिन ध्यान लगाया । श्याम सुंदर पर जियरा गवायो । दिन ही रैन मोहिं तलफत बीती । राति कटी तारे गिन गिन ॥ १ ॥ जो चाहे तरवर की छहिया गौना लेन नहिं आये सैया । यही सोच मोहिं रहत है पल पल ॥ बीती जात वैस छिन छिन ॥ रूप स्वरूप के स्वाग उतारे बिना बताये गुरु कर डारे मान नहा काहू को राखे । गव लिये चाहे जिन जिन ॥ ढले जात जुवनवा रे दिन दिन ॥

अत—ठुमरी दादरा ॥ गइ बीति रैन नहि आये पिया । सखि केसे समझाऊ मैं अपना जिया । कबहू न हमने नेह लगाया अब तो लगाया तो दाग उठाया । सैया निर मोहिया ने ऐसा चलाया, जला जला के खाक किया । गई बीति० । इतनी अरज है तुमसे साहिद हरि तुम्हरे मिल जावे शायद । हमरी ओर से यह कह दीजो, क्या उनको आजाद किया । गई बीति० ॥ राग शहाना ॥ कासे कहू दुख अपना सखीरी । प्रीत किये की रीनि

नईरी ॥ ऐसे निरमोहिया पाले पडी हूं पीत लगाय में जिया से गईरी ॥ कासे कहूं दुख अपना सखीरी ॥ रेखता ॥ सरजू नदी के तीर कुवंर सावरा खडा । तिरछी नजर वदल वह दिल में मेरे अडा ॥ पनियां भरन को हम गई सर पर मेरे घडा अब क्या कहूं सखीरी सन बात में खरा । गले मोतिन की माला हीरा रतन जड़ा । जुगराज जिसके दर्श को दरवार मे खडा । सरजू नदी के तीर कुवर सावरा खडा । ठुमरी पील ताल जल्द ॥ सैयां रंगरेजवा ने सोहिका गारी दीन्ही रे ॥ सूहे की रंगाई वारी क्या कुछ मागे जो मांगी वह लीन्ही रे । सैइयां रंग रेजवा ने गारी सुहिका दीन्ही री ॥ इति श्री संगीत मनोहर संपूर्ण समाप्त. लिख दिव्वा लोहार अगहन वदी नौमी संवत् १६१६ वि० ।

विषय—राग रागिनी वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रथ के रचयिता रामचरन वनिया थे जो शाहजहांपूर के निवासी थे। लिपिकाल सवत् १९१६ वि० है ।

संख्या २८३ ए. रसपचीसी, रचयिता रामहरी जौन्हरी (वृन्दावन), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ × ५ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल और लिपिकाल— सं० १८३५ = १७७८ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा बंशीदास जी, गोविन्द कुण्ड, वृन्दावन ।

आदि—श्री राधारमण चन्द्रो जगति । अथ रसपचीसी लि० । दो०—इष्ट सुराधारमण हे शची सून संकेत । राधाकुंड नदी श्वरं वृन्दावन रस पेत । जीभ कसौटी स्वाद की श्रवण कसौटी बन । बास कसौटी नासिका रूप कसौटी नैन । जीवन आगम सिसु गमन कटि पटि कसित कुमारि । मनहु छीन छति छींजिकै द्वै नृप बीज उजारि । यह कटि परती टूटिकै गुर उरोज के भार । जो नहि होतो त्रिवलि कौ दृढ़ वंधन आधार । मृग मराल कोकिल मयंक वारिज केहरि मीन । कदली हार्‍यो कीर छवि लई राधिके छीन । सिंघ कमल कोकिल उरग गति मराल गज चाल । कीर कुरंगिन मीन छवि अधर पवाली लाल । बाल दयाल विसाल छवि तिलक बोल परताप । जगत करन जनु वरि दई जगत विजै की छाप ।

अत—नवला नितसत तीर जब नीर सुवह वरचीर । जनु असुवन रोवत बसन तन विछुरन की पीर । कंज २ प्रतिकज पर अलि गुंजत परभात । जनु उरतम तेजहि भज्यौ रोवत ताके तात । वृन्दावन जमुना पुलिन राधाकृष्ण विहार । नंददास सत कविन की बानी करे अहार । चौपाई - दोहा चापई रस पचीस । रामहरी भजले जगदीस । इति रसपचीसी सम्पूर्ण ।

विषय—वंदना तथा श्री राधाजी के श्रृंगार का वर्णन ।

संख्या २८३ बी. बोधबावनी, रचयिता—रामहरी जौन्हरी (वृन्दावन), कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२, रूप—अति प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३५ = १७७८ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा बंशीदास जी, गोविन्द कुण्ड-वृन्दावन ।

। आदि—श्री राधा रमन चद्रा जयति । अथ ग्रथ बोध बावनी लिख्यते । दोहा , सुमिरहु श्री राधा रमण शची सून वृज मौन । पाच बात नित याद करि कहा ते आये कौन ? कहा करन कहा करत हौं । जाऊ कहा विचार । और कछु नाहि न बने थ्यार बात हिय धार । यथालाभ सतोष करि छिन २ ले हरि नाम । यथा शक्ति कछु दान दै कृपा धरन कर धाम । सोरठा । हरि भजि करि सुच काज भूल विलघहि जिन करै निहचै कीजै आज कहा भरोंसो कहालकौ । ४ । दोहा । झूठौ जग सौं राम की साचे कृमहि कीन्ह । रामहरी साचो लगत माया भ्रम आधीन । रे मन सोंचे कृम भजि माया भ्रम दे त्याग । पेल पिलारी ने किया मन धरिलै बैराग । मिथरान स्वर जगत सुप सबै दु प को धाम । इक्क रसना आनद मय एक कृष्ण कौ नाम । यह विषया विस्वासिनी मोहन जिन पति धाइ । सकल जगत पायौ तऊ पाते छिन न अघाइ ।

अत—कथना जाहिं न पाइ हरि पैये करनी सोइ । बात नदी पगना परै पारैं दीवग होइ । अगहन पून्यो सवत ६ अष्टा दस पैंतीस । वरपोत्सव बलदेव को वृन्दावन रजनीस । बांनी नाना कविन की बोध बावनी धार । राम हरी पढि अर्थ लहि हरि भजि उतरो पार । इति श्री बोध बावनी सम्पूण ।

विषय—वैष्णवों के लिये प्रेमा भक्ति के विषय म ज्ञानोपदेश ।

सख्या २८३ सी लघुशब्दावली, रामहरी जौन्हरी (वृन्दावन) कागज—दशी, पत्र—२०, आकार ६ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०० रूप—अति जीण, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३४, लिपिकाल—स० १८३५ = १७७८ ई० प्राप्तिस्थान—बाबा वशीदास जी, गोविन्द कुण्ड, वृन्दावन ।

आदि—श्री राधा रमन चद्रो जयति । अथ श्री लघु शब्दावलि लि० ॥ दोहा । अग्नि कमल राधा रमन शची सून गोपाल । श्री मुकद वृन्दा विपुन सुमिरि मिटै जजाल । अनेका अथ नद दास की एक सन्द बहु अथ । अधिक सब्द लैको सतें दोहा किए सामथ । देव शब्द १२ ॥ दुव मेघ, चौहारन्ह क्रीडा पति रवि जीत । कात मोद मद सुप्र गति हरि-देवहि करि प्रात । सारग सब्द । ललित पवन घन तडित तृण अहि निपि चपन पकाम । धन पद कवि विप करट पट ओ अकुठन तिय ग्राम । द्विज तव कच धनु अग्नि सरवीन मराल । मृग पद पै पिक कमल छवि है है सारग नद लाल । हरि सब्द । हरि चदन चातग किरण शुक्र सत शुक कील । दादुर तरू जम भय मिटै हरि भजि गहि मन शील ॥ गो सब्द । गोदि गर रवि मृग सतध्या अग्नि पुसप बाल । जग्य निगम सर चिन्ह गिर गोसुप भजि गोपाल । सुर भी स द । सुरभी चपव धीर पुनि सजी कंचन मास । विरव प्रसस्थ रुजाय फल सुरभि ललित सो स्याम । रस सब्द । हप तिक्त सिगार रसद्रवी सुगध सराग । पारद धीरज कोक नद पु रस हरि रस पाग । गुण सन्द । गुण प्रधान इद्रिय छलित सूर त्याग पुनि उप्न । नटी गवैया सीतल हीरा गुनगुनि श्री कृप्न ।

अत—ससि कलकदा कमल सन्द २॥ ससि कहि चद कपूर कृपि वमराल कलकद । कमल जुजल वारिज वदन ध्यान करौ नद नंद । अखिल अब्द और कोशवहु राम हरी नहि

छोर । भाषा सुमुरू ज्ञन कछू लिषे छिमयौ नंद किशोर । अल्प आयु विघनि वड सार काढ़ि नर लेय । बाद विवादहि छाँडि कै भजिये श्री हरि देव वेदराम वसु कलानिधि संवत मासु जु क्वार । शुक्ल पक्ष पुन्यौ सरद वृन्दावन गुरूवार । अति दुर्लभ वृन्दा विपुन गाय्यौ वेद पुरांन । देह पाप वसि धूलि जन कल्प वृक्ष रस पांन । सौ दोहा नाना अरथ लघु सब्दावलि नाम । रामहरी पठि अर्थ लहि सुमिरौं स्यांमा स्यांम । इति श्री लघु सब्दावलि सम्पूरण ।

विषय—कुछ शब्दों के पृथक २ नामों का वर्णन ।

संख्या २८३ डी लघु शब्दावली, रचयिता—बाबा रामहरी जी जौन्हरी (वृन्दावन) कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण अनुष्टुप्)—१०२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३०, प्राप्तिस्थान—बाबा बशीदास जी, गोविन्दकुण्ड, वृन्दावन ।

आदि—शिर धरि श्री राधारमन पदभट्ट गोपाल सहाइ । कोश धन जप आदि औ कछुक नाम कहाइ । नददास नामावली अमर कोश के नाम । इनते जे नितरक्त औ लिषे हेत घनस्यांम । प्रथम मंगला चरन में सुमिरो शचीकुमार । अशुभ हरन सब शुभ करन प्रणऊँ बारबार । कृष्ण नाम को गिनै जिह्वा अखिल हराय । तऊ ग्रंथ की आदि में विशंत नाम गनाय । श्री कृष्ण नाम । गोकुलचंद हरि मोहन माषन चोर । बनमाली गोविंद विध गिरधर स्याम किसोर । केशव माधव मुरलिधर दामोदर गोपाल । कुंज विहारी चिकनिया पुरुषोत्तम नंदलाल । सुदर नाम । हृद्य सौम्य मंजुल मधुर चारु ललित सुकुमार । कम्र मनोज्ञ मनोहर सम्पूष्ठ मजुर ससार । कमल नाम । उत्पल राजिव कोक नद सितां भोज जल जात । इदी वरऊ महोतप लविस प्रसून सत पात । सरसी कह बन रूह बनज अबुंज बारिज सोइ । सहश्र पत्र परड डकहि नीरज सरसिज होइ । ब्रह्मा नाम ॥ पेरमष्ठी प्रजापति कमला सत हृसेश । विरच विधाता अल्म भूहिंर्ण लोकेश । महादेव नाम । उग्रक पदीभूत कृत वासो सित कठ । इशांन रुद्र मृत्युज्जय रुवृष्व ध्वज श्री कठ ।

अन्त—जन्म नाम । भव उदगम उद्भव जनन जनि उत्पति सव ग्राम । जन्म सफल जगजब भलो भजि मन मोहन स्यांम । रस नाम । सारध मधुरग पुष्प सार मकरंद । रस के जानन हार इक भजि लै रे नद नंद । सो दोहा किय नाम बहु राम हरी नहिं पार । भूल चूक कवि करि छमा लघुनाम बलिधार । अब्द पड जुग चारि तिस श्रावण शुक्ला तीज राम हरी वृज बास करि सदां कृष्ण रंग भीज । इति श्री लघुनामा सम्पूरण ।

विषय—कुछ शब्दो के पृथक २ अनेक नाम ।

टिप्पणी—बाबा रामहरी जौहरी जयपुर के निवासी थे । यह गौडीय सम्प्रदाय के वैष्णव थे और अपने समय के अच्छे कवियो में गिने जाते थे ।

संख्या २८३ ई. सतहंसी, रचयिता—रामहरी जी जौहरी (वृन्दावन), कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—६ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०२, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३३ = १७७६ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा बशीदास जी, गोविन्दकुण्ड, वृन्दावन ।

आदि—श्री श्री राधा रमन चद्रो जयति । अथ सतहसी लिख्यते । सात रस दोहा थावरे विचरन जग मग चित्त । श्री राधा मन चरन करि परि चरन सुचित्त । विपै चरन मन थावरे विचरन जग मग मित्र । वारन को तारन अहो वारन लागी तोहि । वारन करिये हे प्रभू वारनि भटकति मोह । धारनितें वृज रापि लिय गोधन धार न कीन । धार नदी ससार की बहत सुधा रिन बीन । कर गहिकै तारयौ करी करही सा प्रभु आप । कर नीकी मौंको करी रविकरि कसी ताप । तारी लाई नाहि जिन सो तारी प्रभु वाम । तारी विन तारे पुलत दै तारी रै नाम । घरी जमावत ही रहत घरी भजे नहि राम ॥ अथ सिक्षा ॥ जारज को चाहत रमा जार जता तें जान । जारज तन तें त्यागिये दु प जारजतें मान । कीकिन सेइये तारि सरुप जो लेत । तार सहित जौ होय री सा रसब्द करि हेत । सरवर सरवर सात ही सरवर सरवर जात, मिथ्या रूपी जगति गनि अठो नगन सब रूप ।

अन्त—हरी राम जौहरी जौहर परप प्रवीन । तिह प्रेर जौहरि करी जौहर भरी नवीन । दोहा जम जुग पठन घटि जमकैं धरी बनाय । जमके जेवर सुनेगे जमकैं ते नहि जाय । सतही सब होता दोहा किये सबही को सत जान । सत पद पावत सुनत हीइही सुसत करि मान । राम[3] ताप[3] वसु[8] विधु[1] अयद्द माघ सुवल मधुमान । कुज दिन वृन्दावन प्रगटि धरिहू पठ सुजान । इति श्री सतहसी सम्पूरण समाप्त ।

विषय— श्री राधाकृष्ण का गोपिकाओं के साथ राम विहार ।

सख्या ७८३ एफ बुधविलास, रचयिता—रामहरी जौहरी (वृन्दावन), कागज—देशी पत्र—४६, आकार—६ × ५ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ट)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३२ = १७७५ ई०, लिपिकाल—स० १८३२ = १७७५ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा बशीदास, गोविन्द कुण्ड—वृन्दावन ।

आदि—श्री राधा रमण चंद्रो जयति । अथ ग्रथ बुधविलास लिख्यते । पुण यहु श्री राधा रमण सची सून गुन देव । हरि जन जमना वृज राम हरी के सेव । कज्जल नग सब उदधि मसि लेपन सुर का तार । रसा पत्र गो लिपत ऊ राम हरी नहि पार । लघु दोहा सब कविन के राम हरी लिप लीन । हित रस नेह समुद्र है पैरिन पाऊँ दीन । राम हरी सुध प्रति मैं धन विच परे रोर । धर्म पुत्र हू कही है रहत नाहि मन ठौर । लेन देन कीरति भई राम हरी ते टूट । नद कुमार सौं प्रीत करि बसि बृज रासुप लूट । कृष्ण चद्र को ध्यान धरि कृष्णहि के गुण गाइ । राम हरी भजि कृष्ण कौं कृष्णहि सदा सहाइ । प्यारो जानूं कृदम हू मित्र जानि घनश्याम । राम हरी जग एक है सुदर गिरधर नाम । जमला इह जग सुप नहा किये जु बहुते मित्र । जिहि सुप बध्या येव सौं सो सांचे सुप नित्त । मित्र बराबर सुप नहीं तीन लोक में कोइ । जैसो चाहे त्यो पसों जो बसो चित होइ ।

अत—पुटकर दोहा जुदे २ नहीं अनुक्रम जान । राम हरी सगहि करी अपनी बुधि प्रमान । शब्द आठ दस तीस द्वै जेठ सुदी रवि तीज (१८३२) । मन रोचक यह ग्रथ

पठि प्रेम भक्ति रस भीज । दो सत पचपन उपरै दोहा चुनि २ सोध । बुद्ध विलास चित चतुरई करि हरि प्रीति प्रबोध । इति श्री बुद्ध विलास सम्पूर्णं समाप्त ।

विषय—भगवान श्री कृष्ण की वंदना तथा उपदेश ।

संख्या २८४ ए. गणक आह्लादिका, रचयिता—रामहित, पत्र—१६०, आकार—९ × ६३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०८०, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८४ = १८२७ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० मिट्ठूलाल मिश्र, डाकघर—फीरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—आई उ ऐ कृतिका वोवा वी वू रोहिणी वे वो क की मृगसिर कू थ ङ छ आद्रा को कोहही पुनर्वस हूहेहोडा पुष्य डीडूडेडो श्लेपा मामीमूमे मघा मोटा टीटो पूर्वा फाल्गुणी टेटोपीप उत्तरा फाल्गुनी पूख ण ठ हस्त पेपो रारी चित्रा रुरे रोता स्वांती तीत तेतो विसापा नानी नूने अनुराधा नोया यी यू ज्येष्टा जौ जो भाभी मूल भूधा फाढ पूर्वा पाढ़ भेभो जजी उत्तरा पाड खी खू खे खो श्रवन ॥

अन्त—जन्म नखत ता मनुज की । परे मध्य तिर सूल । चारो दिसि जो विदित है । सो जूझै जनि भूल ॥ दोऊ वगल त्रिमूल के । मनुप नखत गत पाव । शुद्ध करन जनि जानरे । गये लागि है घाव ॥ इति श्री जग राम हित विरचितायाँ गणक आह्लादिकाको समान विसेस सौच चारादि अपर विचार सहित वर्णनो नाम नवमो विश्राम समाप्तम् ॥

विषय—फलित ज्योतिप ।

ग्रन्थ निर्माण कालः—एक आठ पुनि आठ दे । तापर चारि धरेहु ॥ संवत शुभ पहिचानिये । ग्रन्थ पूर कृत ऐह ॥

संख्या २८४ बी. गणक आल्हादिका, रचयिता—जैरामहित, पत्र—१६०, आकार—१० × ६३/४ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४००, रूप—प्राचीन, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८८४ = १८२७ ई० ।

आदि—अथ नक्षत्र ॥ चरण विभाग लिष्यते ॥ चू चे चोला ॥ अश्वनी ॥ लीलू ले लो ॥ भरणी ॥ आ ई ऊ ऐ ॥ कृतिका वो बा वी बू ॥ रोहिणी ॥ वे वो क की ॥ मृगसिरा ॥ कू थ ङ छ ॥ आर्द्रा ॥ के को ह ही ॥ पुनर्वसु ॥ हू हे हो ड़ा ॥ पुष्य ॥ डी डू डे डो ॥ श्लेपा ॥ मा मी मू मे ॥ मघा ॥ मो मा टी टो ॥ पूर्वा फाल्गुणी ॥ टे टो प पी ॥ उत्तरा फाल्गुनी ॥ पू ख ल ठ ॥ हस्त पे पो रा री ॥ चित्रा ॥ रु रे ऐ ता ॥ स्वांती ॥ सी तू ते तो ॥ विशाखा ॥ ना नी नू ने ॥ अनुराधा ॥

अंत – चद्र नपत ते दीजिये । चन्द्र कला पर जोय । अट्ठाइस जो नपत हैं । क्रमते भरिये सोय ॥ जन्म नपत जा मनुज की । परै मध्य तिरसूल । चारो दिशि जो विपति है । सो श्रम्भै जनि भूल ॥ दोऊ जुगल तिर सूल के । गुनय नपत गत पाव । शुद्ध करन जान दै । गये लागि है घान ॥ एक आठ पुनि आठ दै । ता पर च रि धरेहु । संवत सुभ पह चानिलै । ग्रंथ पूरिकृत ऐह ॥ चैत्र शुक्ल नौमी सुतिथि । गुरु वासर सुप रूप । अथ

गनक आह्लादिका । कीन्हौं मति अनुरूप ॥ इति श्री जन रामहित विरचितायां गणक आह्लादिकाया समान विशप शौचा चारादि अपर विचार सहित वर्णनोनाम नवमो विश्राम ॥ समाप्तम् ॥ शुभम् ॥

विषय—फलित ज्योतिष ।

संख्या २८५ गायन सग्रह, रचयिता—रामकवि (कहिजरी), कागज—देशी, पत्र—२१०, आकार—१२ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवमहेश, विश्नुपुर, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्रीगणेशाय नम ॥ अथ गायन सग्रह लिख्यते ॥ श्रीगणनायक को सुमिरि सर स्वति को शिरनाय ॥ हनूमान बजरग को ध्यावत शीश नवाय ॥ राग रागिनी को लिखू कविजन करि गुन गान ॥ गुर पद पद्म पराग का महिमा सकल बखान ॥ ध्रुपद—गुर गनेश शारदहिं मनाउ । जात मोक्ष सुगति गति पाऊ ॥ जटा मुकुट गौरी अरधंगा । चरणा म हरि जू के चरणा ॥ त्रिभग छद त्रिभगी मानस रगी ताना नदी गरल गरे । त्रिभुवन के नायक हैं सुख दायक लायक लोचन तीन धरे ॥ शिव प्रति काशी हैं अविनाशी कैलाशी दारिद हरन ॥ मम्मू गति ताल धुधकति धुधग पर कहत राम कवि शिव शरणं ॥ गुरू० ॥ कनक पर कनिका सुर कीन्हे भग रग रूप्परि अरि लीन्हें ॥ रचिर्सा भैरव गाल बजावै मधुर मधुर धुनि ताए सुनावैं ॥ तान सुनावै निरतत आवे भावैं भूमम भसम धरे । किंकृत ताल उझरत उडग पर कहत राम कवि शिव शरण ॥

अत—राग देश सोरठ—प्रभू जी मोरे औगुन चित न धरौ ॥ मम दर्शी है नाम तिहारो चाहे तो पार करा ॥ यक नदिया एक नार कहावत मैलो ही नीर भरो ॥ दोनों जाय मिल सागर सों सुर सरि नाम परो ॥ यक लोहा पूजा में राखो यक घर बधिक परो ॥ पारस गुन औगुन नहि चित में कचन करत खरो ॥ यह माया भ्रम जाल निवारो सूरदास सिगरो ॥ अब की बेर मोहिं पार उतारयो नहि प्रन जात हरो ॥ १० ॥ राग झप ताल—मो मन बसौं स्यामा स्याम ॥ स्याम तन मन इयाम कामर माल की मन याम । इयाम अगन इयाम भूषण वसन हैं अति इयाम ॥ इयामा इयाम के प्रेम भाने गोविन्द जन भयो इयाम ॥ २ ॥ राग झझौटी—अब हरि बनि है नाहिं बिसार—क्षाम दयाल कृपा निधि हे प्रभु गिनिय न दोष हमार ॥ सिद्धि अजामिल गनिका आदिक आपन पै तुम तार । मोमन लाल आपनो पन सोइ बनि हे नाथ सभार ॥ ३ ॥ राग परज ॥ या व्रज में कछु देख्यो री टोना ॥ लै मटुकी सिर चली गुजरिया आगे मिले बाबा नन्द के छोना ॥ दधि को नाम बिसरि गयो प्यारो लेहु लेहु कोऊ स्याम सलोना ॥ वृन्दावन की कुज गलिन में आख लगाय गयो मन मोहना ॥ मीरा के प्रभु गिरधर नागर सुन्दर स्याम सुघर रस लीना ॥ ४ इति श्री गायन सग्रह कवि राम कृत सपूण सवत् १९२७ वि० चैत्र द्वादशी शुक्ल पक्ष ॥

विषय—नाना प्रकार की राग रागिनियों का वर्णन ।

संख्या २८६ ए शिवपार्वती विवाह, रचयिता—रामऔतार पत्र—११ आकार—१० × ४ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, लिपि—नागरी,

रचनाकाल—सं० १९१९=१८६२ ई०, लिपिकाल—सं० १९४९=१८९२ ई०, प्राप्ति-स्थान—पं० हरस्वरूप, सुघरवा, डाकघर—शाहजनपुर, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शिव पार्वती विवाह लिख्यते ॥ दोहा—नमो जुगुल पंकज चरण श्री गणपति सिरनाइ। कहौं कथा शुभ व्याह शिव छन्द कवित्त बनाइ॥ सवैया—कंठ विराजत जाहि हलाहल सीस सुधौंल गगा कर धारा॥ वाम शिव अरधिंगिन जो कटि शार्दुल चर्म कसे अहि डारा॥ भस्म सु अग ललाट शशी कर शूल धरे वसहा असवारा॥ सो शिव मो पर होहु दयाल नमो चरणाम्बुज वारहि वारा ॥ १ ॥ घनाक्षरी—शकर के व्याह की भई है तयारी जब गण सब दूलह श्रृंगार शिव करही माथे जटा मुकुट भुजंगनि को मौर गूथ कुडल कानन पहिराये विप धरही॥ हाथे व्याल कंकण विभूति सर्व अंगन मे शशि भाल सीस गंगा सोहत सुन्दर ही॥ काधे उपवीत सर्प नैन तीन विष कठ डाले गले बीच माला गूथी नर शिर ही ॥ २ ॥

अन्त—सव याचक ही सनमानि भले निजधाम चले भव साथ भवानी॥ हरषी उर देवन पुष्प बहू बर्षे कहि सुंदरि जै जै वानी॥ नभ दुंदुभि आदिक भांति किते बहु वाजन वाजहि आनद दानी॥ हिम वानहु साथ चले शिव को पहुचावन प्रीति हृदै अधिकानी ॥ १ ॥ बहुभांति कही परितोप करी गिरिनार्थहि कीन विदा गिरि जेशू इत आये ग्रही हिमवंतन जै गवने उत आपन धाम महेशू॥ सब सागर शैल सरादिक जो रहे नेवत आये धरे बहु भेशू॥ अति सादर कीन गिरीश विदा गवने अपने अपने सब देशू ॥ २ ॥ जबही शशि शेपर सग शिवा पहुचे कैलाशहि जो सुख धामा॥ अति मोद भरे सब देव गये अपनो अपनो जह जाकर ठामा॥ जग मातु पिता शिव पारवती कैलास रहे जन पूरन कामा॥ किमि ताहि सिंगार कथा कहिये निज भोग विलाश चरित्र ललामा ॥ ३ ॥ हरि गौरि विवाह चरित्र कथा बहुभांतिन नित नवीन उदारा॥ अव गाह अनत अगोचर जो गम नाहि जहां मन बुद्धि विचारा॥ सह सान्य दानि न अंत लहै श्रुति जानि सकै नहिं भेद अपारा॥ किमि सो यह राम औतार कहै अति मंद मती अघलीन गवारा ॥ ४ ॥ दो०—शकर व्याह चरित्र शुभ मुद दायक सुख खान। कहत सुनत शिव गौरि कृपा होहि परम कल्यान॥ आश्वनि सित तिथि प्रति पदा उदधि सुवन सुतवार। संवत ग्रह शशि अंक शशि ग्रन्थ समाप्त विचार॥ इति श्री शिव विवाह सपूर्ण समाप्तः संवत् १९४९ वि०।

विषय—शिवजी का विवाह, उनका श्रृंगार एव बरात बरातियो का वर्णन।

संख्या २८६ बी शिवविवाह कवितावली, रचयिता—राम औतार, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०२, रूप—दीमक लगी, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१९=१८६२ ई०, लिपिकाल—स० १९४९=१८९२ ई०, प्राप्तिस्थान—शिवलाल शर्मा, धूमरा, डाकघर—सरौंढ़, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ श्री शिव विवाह कवितावली लिख्यते ॥ दोहा॥ नमो जुगुल पंकज चरण श्री गण पति सिर नाइ। कहौ कथा शिव व्याह शिव छंद कवित्त

घनाइ ॥ सवैय्या—कंठ विराजत आहि हलाहल सीस सुघौल गंगा कर धारा ॥ वाम शिवा अर्धंगिनि जो कटि शार्दुल चम कसे अहि डारा ॥ भस्म सु अंग ललाट शशी कर शूल धरे वसहा असवारा ॥ सो शिव मोपर होहु दयाल नमो चरणाम्बुज वारहिं वारा ॥ १ ॥ घनाक्षरी—शंकर के ब्याह की भई है तयारी जब गण सब दूलह श्रृंगार शिव करहीं ॥ माथे जटा मुकुट भुजगनि को मौर गूथ कुंडल कानन पहिराये विषधरहीं ॥ हाथे व्याल कंकण विभूति सब अंगन में ससि भाल सीस गंगा सोहत सुन्दर हीं ॥ कांधे उपवीत सर्प नैन तीन विष कंठ डाले गले बीच माला गूथी नर सिरहा ॥२॥ दूलह सरूप बनि चढ़ि शिव वसहा पै साजि के समाज निज चले ऐ बराति जो । अमित प्रकार गण भेषहु अनेक विधि निज निज वाहन चढ़े हैं बहु भांति जो ॥ खर स्वान असुर श्रृगाल बाघ भूप गण विविध स्वरूप सब अगणति जाति जो ॥ भूत प्रेत जोगिनी पिशाच बहु रंग के चले सब हर्षित सकल जमाति जो ॥ ३ ॥

अन्त—सब याचकहा सनमानि भले निज धाम चले भव साथ भवानी ॥ हरषी उर देवन पुष्प बहू बर्षे कहि सुन्दर जै जय बानी ॥ नभ दुंदुभि आदिक भांति किते बहु बाजन बाजहिं आनंद दानी ॥ हिम वानहु साथ चले शिव को पहुचावन प्रीति हृदै अधिकानी ॥ बहु भांति कही परि तोष करी गिरि नायहिं कीन बिदा गिरि जेशू ॥ इत आये गृही हिम वत्तनि जै गवने उत आपन धाम महेशू ॥ सब सागर शैल सरादिक जो रहे जेपत आये धरी बहु भेशू ॥ अति सादर कीन्ह गिरीश बिदा गवने अपने अपने सब देशू ॥ जनहीं शशि शेखर संग शिवा पहुचे कैलाशहिं जो सुख धामा ॥ उर मोद भरे सब देव गये अपनो अपनो जह जाकर ठामा ॥ जगमातु पिता शिव पारवती कैलाश रहे जन पूरण कामा ॥ किमि ताहि सिंगार कथा कहिये निज भाग विलास चरित्र ललामा ॥ हरि गौरि विवाह चरित्र कथा बहु भातिन नित्त नवीन उदारा ॥ अवगाह अनंत अगोचर जो गमनाहिं जहां मन बुद्धि विचारा ॥ सहसानन वानिन अंत लहे श्रुति जानि सकै नहिं भेद अपारा ॥ किमि सो यह राम औतार कहै अति मंद मती अघ लान गवारा ॥ दो०— शंकर व्याह चरित्र शुभ मुद दायक सुख खान ॥ कहत सुनत शिव गौरि कृपा होहि परम कल्यान ॥ आश्विनि सित तिथि प्रतिपदा उदधि भुवन सुत वार । संवत ग्रह शशि अंक शशि ग्रंथ समाप्त विचार ॥ इति शिव विवाह संपूर्ण समाप्त

विषय—शिव विवाह वर्णन ।

संख्या २८७ ए. कवित्त, रचयिता—विप्र रामबक्स, कागज—बाँस का, पत्र —१६, आकार—५ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२, खण्डित, रूप—अतिप्राचीन, लिपि- नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री लचेरा राम ब्रह्मभट्ट, ग्राम—बसई, डाकघर—ताँतपुर, तहसील—खेरागढ़ जिला—आगरा ।

आदि—थकित भई है देह अगत करै ना नेह, कौन जल प्यावै मेरो जीव अकुलावै है । प्यासी कंठ चढ़्यो जोर ये हो नंद के किसोर देखो नेक मेरी ओर तेरी याद आवै है । मैया बाप भैया आप पालन करैया आप संकट हरैया आप और न सुहावै है । विप्रराम बकस कहैं श्री जी राजाधिराज राज अब तो समेटि मेरी देह दुख पावै है । चरनन को रापे

ध्यान जीउ तौनो सुजान भगवान मेरी ऐसो करेगो मति । भक्तन को साँसो काज ये हो गरीब निवाज तुमको हमारी लाज दुष्टन को मारो हति । कामदेव तेरो रूप ही सो सुन्दर सरुप त्रयलोकी नाथ भूप तेरी छवि छाइ छिति । विप्र राव वकस कहे श्री जी राजा धिराज काइ वर देह की पुसामद करिहयो मति ।

अन्त—अरजुन के काजे आप स्वारथी हो युद्ध करिके वेराट रूप से सेना दुष्ट मारी है । द्रोपदी पुकारी जबै नेक न अवार चारि आयो अन्त भक्ति पन धारी है । दुरभासा आयो श्राप देने ज्यों जुधिष्ठिर को थार से निकार यो साग पत्रलेंदकारी है । विप्र राम वकस कहे कैसे लगाइ देर अरजी हमारी आगे मरजी तिहारी है । त्यारे प्रहलाद जिनै आप कौन छोटयो वाद पिता वलिहार यो तेरी सुधि न विसारी है । गिरवर सो डारयौ वानै वाको कूप सो निकास्यो तेहस्ती सिंह भाज गरा आप रखवारी है । होलिका में जान्यो तोउ नेक न लगी है आंच पंभ फारि प्रगटे नरसिह देह धारी है । विप्र राम वकस कहे तेरो विस्वास है अरजी हमारी आगे मरजी तिहारी है । ब्राह्मनन तुम्हारे मैने तुझको सहन नाथ हम है अनाथ तुम्हें न भक्ति पन पारे है । धारत उतारन काजे धारे चौबीस देवन की पक्ष करि असुर सिधारे है । जहां तहा भीर परी संकट सहाय करी आयो कलिकाल रक्षा कारन पुकारे हैं । विप्रराव वकस कहे श्री जी राजाधिराज रापीयो हमारी लाज भिक्षुक तुम्हारे है ।

विषय—भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति विषयक कवित्त ।

संख्या २८७बी. विप्र करुनासागर, रचयिता—विप्र रामवकस, पत्र- ४८, आकार—७½ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप् —१०८०, खडित, रूप—अति प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ब्रह्मभट्ट खचेरा ब्राह्मण, ग्राम—बसइ नसौरा, डाकघर—तांतपुर, तहसील—खेरागढ, जिला—आगरा ।

आदि—विप्र करुना सागर ग्रन्थ लिख्यते । दोहा । श्री गुरु चरन प्रनाम करि, गणपति सीस नवाइ । शारद की अस्तुति करहुं, भक्ति दान दे माइ । शिव विरच सुर इन्द्र लै तुमै नवाऊ सीस । भक्ति दान मोहि दीजिये कृपा सीन्धु जगदीस । च्यारों जुग के भक्त कौं, आपुन लीयो उवारि । कलिकाल रक्ष्या करो, भक्तन लेइ सम्हारि । ब्रह्मा की रक्षा करी लाए वेद छुडाय । सखासुर के प्रान हनि, आपुन करी सहाय । विप्र वरन डभिन सकलई नेकु दीये पढाई । कर्म्म करै द्विजराज सब माथे लिये चढाई ।

अन्त—सतजुग मे रक्षा करी, देवन की महराज । असुरन को संग्राम करि रापी तिनकी लाज । मीन भये आपुन प्रभु वेदनि कारन काज । संपासुर के प्रान हनि विधि की रापी लाज । बनि वराह वसुधा लई मारयो असुर प्रचड । लाए आपुन डाढ धरि, काये करि नव षड । कमठ रुप धरि सिधु मथि उधरै लानि कपिरि । अमृत पै उगरन भयौ, हनै मोहिनी ध्याय । भक्ति करी प्रहलाद ने, दियो पिता ने त्रास । आप भये नरसिघ हरि पूजी मन की आस । वामन धारो रूप तुम, पहुंचै बलि के द्वार । इन्द्र पक्ष के करने, आप रुप करतार । परसराम तुम रूप धरि छत्री किये निकछ । सहज भुजा नृप की हनी करि विप्रन को पच्छि ।

विषय—ब्राह्मणो की महिमा और उनकी विपत्ति दूर करने के संबंध मे श्री कृष्ण की स्तुति ।

संख्या २८७ सी. रामबकश के कवित्त, रचयिता—रामबकश, कागज—बासी, पत्र—४८, आकार—७ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—४१६, खंडित रूप—अति जीर्ण, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—श्री रघुवरराम ब्रह्मभट्ट, ग्राम—बसई, डाकघर—तांतपुर, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—अंगद पठायौ समझायौ जाय रावन कूं जानकी मिलागे लैके या विधि उचारी जू। रावन कीयो है क्रोध नेक्हू न राख्यो बोध फेंकि दऊ सोको या मैं महाबल भारी जू। उठो है रिसाय बोल्यो अंगद संहारी आप राम परौंगे पाय मानीयै हमारी जू। अंगद ने आय कही रामचन्द्र सत्य भई अचल अपग भक्ति दीजियौ तुम्हारी जू। फौज साजि धाई रामचन्द्र ने पठाई पाछे रावन की धाई भयौ जुद्ध घोर भारी जू। राक्षस फिरैं हैं इतैं बंदर जुरे हैं विते राम की भई है जीति फौज मारि टारी जू। फेरू चढ़ें भारी दुष्ट मकर बतायौ दुष्ट आपु सबै भाजे जहा अवध बिहारी जू। अंगद चढ़यो है हनुमान संग जामवन्त अचल अपग भक्ति दीजियौ तुम्हारी जू। दिसा चारि रोकी दरवाजे पर धर जाय दुष्टन की फौज आई सघन कारी जू। मेघनाद आयौ लक्षमन सौं कियो है जुद्ध हनुमान दौरयो वाके मुष्ट एक मारी जू। मूरिछा भयो है फिर उठो क्रोध कीनो आप लक्षमन जू के बान मारयो देह डारी जू।

अंत—ब्रह्मा ने कीनी देवतान ने निहारि सकल पृथ्वी प चढ़यो है भार सुनी जै हमारी जू। कृष्ण चन्द्र बोले मैं तो ब्रज में धरौंगो देह भारथ उतारौं आप भूमि रपवारी जू। जनम लउगो वसुदेव देवकी के आय थोरे दिनन में मनै मनमें विचारी जू। ब्रह्मा देवतान संग लै करि पधारौ आप अचल अपग भक्ति दीजियौ तिहारी जू। राधा सो कीन आओ भवन वृषभान जू के कीरति तुम्हारी होय आय मैं है तारी जू। देवतान कानी तुम ग्वालन का धारो देह हमहू धरोगे देह सुनियो हमारी जू। गर्भ देवकी के आप मिलि हैं जसोधा धाय करि ई चरित्र आठे पूतन सिधारी जू। कंस आदि लैके और दुष्टन को नाम करे अचल अपंग भक्ति दीजियो तुम्हारी जू।

विषय—रामचन्द्र के सम्पूर्ण जीवन की मुख्य २ घटनाओं का वर्णन।

संख्या २८८ ए. कार्तिक महात्म्य, रचयिता—रामकृष्ण, पत्र—४८, आकार—१२ × ४¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६९६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७४२ = १६८५ ई०, प्राप्तिस्थान—शालिगराम शर्मा, ग्राम—महुवा, डाकघर—जैतपुर कलाँ, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशायनम। श्री सरस्वत्यै नमः। श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः। लिष्यते श्री कार्तिक महात्म्य। दोहा। प्रथमहि गुरु गोविन्द को सुमिरन करौं बनाय। वाकपती गनपती सहित कवियन चरण मनाय। प्रथमहि मंगल चरण लें, सबको मंगल जोर, कहत सुनत सुष उपजे और परमारथ होइ। कातिक की महिमा विपुल मुक्ति धर्म परमान। राम कृष्ण की सुरति सौं प्रगट कियो भगवान। सत्रह सौ सम्वत सरहि च्यालीस पुनि जानि। पौष पचमी शशि सहित आरम्भ्यो तह जानि। कहत सुनत श्रद्धा बढ़े पढ़े रहे मन लाइ। आह्लादन सुनि के करैं भव सागर तिरि जाइ।

अन्त - काम भेद सुप तुम नहि पायौ । तातै हमरो निंच कहायौ । तातें वृप होहु निरधार, सूरत सुप नहि लहत लगार । सो शिव प्रयाग अपैवर भए, पीपर रूप विष्णु है गए । ब्रह्मा जबही भए पलास, छोलौ नाम कहे पुनि तासु । पेठ मध्य ब्रह्मा के वास, त्वचा विष्णु साषा शिव जास । पात पात में देवा सवै, विष्णु स्वरुपी पीपर अवै । दोहरा । रिसि मिलि बूझै सूत कौ, पीपर भेद निदान । कवही छूवै दुख नही होइ प्राप्ति भगवान । इति श्री पद्म पुराणे कार्तिक रिसि सूत संवादे पीपर वृक्ष वेप वर्णननो नाम अष्ट विंशोध्याय । समाप्त शुभ ।

विषय—कार्तिक मास के स्नानादि का फल वर्णन ।

संख्या २८८ बी. कार्तिक महात्म्य, रचयिता—रामकृष्ण, पत्र—४५, आकार—१२$\frac{3}{8}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७४२, लिपिकाल—१९०६ = १८४९ ई०, प्राप्तिस्थान—वंशीदासपुजारी मन्दिर बम्हनटोला समाई, डाकघर—एतमादपुर, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । श्रीराधाकृष्णाय नमः । दोहा । प्रथमहिं गुरुगोविंदको सुमिरन करो बनाय । वाकपती गनपति सहित, कविननमले मनाय । प्रथमहि मंगल चरनते, सवकौ मंगल जोइ । कहत सुनत सुप उपजै अरु परमारथ होइ । यह कातिक महिमा विपुल, मुक्ति धर्म परमान । रामकृष्ण की सुरति सो प्रगट कयो भगवान । १७४२ । सत्रहसै संवत्सरहि वयालीस पुनि जानि । पौष पचमी शशि सहित आरभ्यो तहि जानि । कहत सुनत सरधा बढ़ै, पढ़ै रहै मन लाइ । आह्लादन सुनिकै करै, भव सागर तिरि जाइ ।

अंत—कामभेद सुप तुम नहि पायौ, तातै हमरो निंच कहायौ । ताते वृप होहु निरधार, सुरत सूप नहि लगत लगार । सो शिव प्रयाग अपैवर भए, पीपर रूप विष्न है गए । वृह्मा जब ही भये पलास छोलो नाम कहे पुनि तास । पेठ मध्य ब्रह्मा को वास त्वचा विष्न साषा शिव जास । पात २ में देवा सवै विराम स्वरूपी पीपर अवै । दोहा । ऋषि मिलि बूझै सूत को, पीपर भेद निदान । कवही छूवै दुप नही, लगै कब प्राप्ति भगवान ।

इति श्री पद्मपुराणे कार्तिक महात्मे ऋषिसूत संवादे पीपर कुछ यथेष्ट वरननो नाम अष्ट विंशमोध्याय ॥ २८ । दोहा । अब आगे यह कहैगे लछि अन्नादि जुभेद सब एसो सबवानिकै ज्यौ भाषे निजु भेद । ऋषि रुवाच सब रिसि मिलि परसन करै, कहै सूत समझाय । पाप पुन्य पीपर छुये, तिनको वरुन वपान । सवादि । १९६ । जेठ वदी कृष्ण पक्षे एकादसी सुक्रत्रवारे छाया वलदेव की अंतर वेद लिपित लालदास वैष्णु वा पठनार्थ जो खोजो लिखो मम को सोन दीजिये ॥ राम राम ॥

विषय—कार्तिक मास के स्नानदि का विधान और माहात्म्य ।

सख्या २८८ सी. कार्तिक महात्म्य, रचयिता—रामकृष्ण, पत्र—४८, आकार—१० × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७२८, रूप— प्राचीन,

लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७४२ = १६८५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री प० लक्ष्मी नारायन जी आयुर्वेदाचार्य, ग्राम—सइजइ, डाकघर—फीरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि-अंत—२८८ ए के समान।

संख्या २८९ रामरक्षा स्तोत्र, रचयिता—रामानुजाचार्य (वृ दावन), पत्र—६, आकार—६ × ४½ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नेकराम शर्मा, कायथा, डाकघर—कोटला, जिला—आगरा।

आदि—श्री रामचद्राय नम । ॐ सध्या तरणि सव दुख निवारनि। सध्या उधरे विघ्न टरे पिंड प्राण की रक्षा श्री नाथ निरजन करे। १। ज्ञान धूप मन पुहुप इद्रिय पच हुतासन क्षिमा जाप समाधि पूजा नमोदेव निरजन। २। ॐ अखड मडलाकार व्याप्तं जेन चराचर। तत्पद दर्शित जेन तस्मै श्री गुरवे नम। ॐ परम गुरुभ्यो नम ॥ प्रात्परे श्री गुरुभ्यो नम। आत्मा गुरुभ्यो नम। आदि गुर देवी अनादि गुरदेव अनत गुरदेव। अलख गुरुदेव। सराय गुरूदेव। श्री गुरूदेव। श्री गुरुदेव के चरनार विंद नमस्कार। हरत सव व्याधि सोक सताप दुख दालिद्र कलह कल्पना रोज पीड़ा। सकल विघ्न खखड तस्मै श्री राम रक्षा निराकार वाणि। अन ततलें निभय मुक्ति कारभी। ६। बाधपा मुल देखिया स्थूल गजिया गगन धुनि ध्यान लगा रहे। त्रिगुण रहित सील सतोष माही श्री राम रक्षा लिये ॐ कार जाज। ७। पाच तत्व पच भूत पचीस प्रकृति पच वायु सम दृष्टि साम धर आइ। ८। उलटिया प्रान अपान उधान व्यान समान मिलि अनहद शब्द कि खवरि पाइ। ९।

अत—दोहान फिरती रहे। अलख निरजन का चक्र फिरता रहा। वहुवाट घाट में चौर में राज के तेज में साकरे पैठता आनि विशाल में सोवते जागते टेलते मालते उठते वैठते सत के सीस पर हाथ धारे रहे। चरण अरू सीस सो राम रक्ष्या करे गुरू का जावले गुरु साधें। जीतिया सग्राम देवाधि देव चढ सूयय कथि रह फेर सुधा विया। उलटि अमृत पिया। विपकि लहर सव भागी। कमल दल कमल जोति ज्वाला जगै। भमर गु जार आकार जागा। रोम नाडितु चारक विंद सोषत गाजत गगन वाजत वेनु धुनि सक त्रकुटि सारे गुरू रामनद ब्रह्म की चिन्ह ते सो ज्ञानि एते राम रक्षा वादेप उद्धरत प्राणी। राजद्वारे पथे धारे सग्रामे शत्रु करे। श्री राम रक्ष्या स्तोत्र मत्र राजाराम चद्र उचरत लक्ष्मण कुमार सुनत धर्मे निहार ततयो पराय लभ्यते सीता सुमत हनुमान सुनेत। वीज त्रिकाल जपते सो प्राणी परागता। इति श्री रामानुजाचार्य कृत श्री राम रक्षा स्तोत्र सम्पूर्ण ॥

विषय—अनेक रोग विनाशक राम रक्षा मत्र वर्णन।

संख्या २९० सुखजीवन प्रकाश, रचयिता—रामप्रसाद (जहानगज), पत्र—४०, आकार—१० × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०६, रूप—कीड़ा लगा, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, लिपिकाल—स० १९३६ = १८७९ ई०, प्राप्तिस्थान—वैद्य देवनारायण—मोहनपुर, डाकघर—बरवान, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ सुख जीवन प्रकाश लिख्यते ॥ मंगला चरन कवित्त ॥ शेष महेश गणेश मनाय मनाऊं सदा जगदव भवानी ॥ श्री धन्वतरि सुश्रुत दाग भट्ट पाराशर आत्रेय जे ज्ञानी । निज मति आयुर्वेद रच्यो उन पग जुग सौमिरु गुणहि वखानी ॥ भाषा वैद्यक ग्रन्थ कह्यो चहौं देहु दयानिधि वुद्धि की खानी ॥ दोहा—सुख जीवन परकास यह है जीवन को मूल । निश्चय दोष हरन यह जानु अमिय सम तूल ॥ दोहा और चौपाइन में लिखी है मति अनुसार । लोक कार्य हित चिकित्सा मुनिन कहे सुख कार ॥ सोई पुस्तक हेरि के याही ग्रन्थ के मांहि । लिख राखी शुभ जानि के दोष न मुझ को नाहिं ॥ चूक जो होवे या विषे चतुरहु लेहु निहारि ॥ रोगिन के हित होइगे वैद्यन को यश शार ॥ सब रोगन में होत है ज्वर नृप रोगहु गूढ़ याते प्रथमहि लिखत है ज्वर की औषधि ढूढ़ ॥

अंत—अथ वाल रोग चिकित्सा ॥ दोहा ॥ धाय पुष्प नेत्र वाल अरु लोध गिरी को लाय ॥ गज पीपरि सम लायके क्वाथहु करै बनाय ॥ सहत मिलाकर दीजिये बल बालक को देषि ॥ अतीसार को दूर कर बहुरि न ताको पेष ॥ तथा ॥ पीपरि और अतीस पुनि ककरा सिगी लाय । नागर मोथा मंगाय के चूरन करो बनाय ॥ शहत डारि चटाइये बल बालक को जानि । ज्वर अतिसार अरु वमन हू कासहु दृष्टि न आनि ॥ अथ विरेचन ॥ सिगरफ सुहागा सम कह्यो त्रिफला त्रिकुटा दीन । बचा हींग अज मोद पुनि सैधव दती लीन ॥ खुरासानि अजवाइनि पुनि क्रमि रिपुहु को लाइ । सबहि बराबर लीजिये जय पालहु को भाइ । नीवू रस को मर्दिये ताको खूव महीन । रती एक मात्रा कही गोली विधि से कीन । उष नोदक से खाइये गुल्म पाण्डु क्षय टारि । स्वास कांस कफ मेह जुत अफरा मूल विडारि । उदर रोग मंदाग्नि पुनि अर्श विष्ट बहु नाश ॥ कोढ़ इत्यादिक दूर सब जगत होय प्रकाश ॥ राम ग्रह शिव नेत्र जिनइन चरनन चित दीन । और नेत्र लगाय के अपने वस कर लीन ॥ तिनकी कृपा कटाक्ष ते ग्रन्थ समापति होति । अश्वनि शुक्ल मास मे नव निधि पावत ज्योति ॥ इति श्री मन जहानगज निवासी रामप्रसाद विरचिते सुख जीवन प्रकाश संपूर्ण समाप्तः ॥ संवत् १९३६ वि० ।

विषय—वैद्यक ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता राम प्रसाद जहानगज निवासी थे । निर्माण काल संवत् १९३२ और लिपिकाल संवत् १९३६ वि० है ।

संख्या—२६१ ए. जोग वासिष्ट पूर्वार्द्ध, रचयिता—रामप्रसाद निरजनी (पटियाला), पत्र—४३६, आकार—१२ × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२८८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९८ = १७४१ ई०, लिपिकाल—स० १९१२ = १८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला दीनदयाल अवकाश प्राप्त तहसीलदार, टप्पल, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जोग वसिष्ट भाषा रामप्रसाद निरंजिनी कृत लिख्यते ॥ प्रथम वैराग्य प्रकरण ॥ उस सच्चिदानन्द रूप आत्मा को नमस्कार है जिससे

सब भापते है । और जिसमें सब लीन और स्थित होते हैं ॥ अर्थात् जिससे ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय दृष्टा दर्शन दृश्य और कर्त्ता कारण क्रिया सिद्धि होते है ॥ जिस आनन्द के समुद्र के कारण से सब जीव जीते हैं अगस्त जी शिष्य सुतीक्षण के मन में एक समय उत्पन्न हुआ तब वह उसके दूर करने के हेतु अगस्त मुनि के आश्रम जाय के विधि सहित प्रणाम करके पूछा कि हे भगवान आप सब तत्वों के जानने वाले हैं और सब सास्त्रो के जानने हारे हो एक सदेह हमको है सो दूर करो । मोक्ष का कारण कर्म है अथवा ज्ञान अथवा दोनों । इतना सुन अगस्त जी बोले कि हे ब्राह्मण केवल कर्म से मुक्ति नहीं होती और न केवल ज्ञान से ही मुक्ति होती है ॥ मोक्ष दोनों से प्राप्त होता है ॥ कर्म से अन्त करण शुद्ध होता है मुक्ति नहा होती और अन्त करण की सुद्धि बिना केवल ज्ञान से भी मुक्ति नहीं होती । इस कारण दोनों से मुक्ति होती है ॥

अन्त---हे रामजी जो तामसी राजसी जाति है उसको जन्म और कर्म के ससकार वश से सात्विक प्राप्त होता है ॥ और वह भी अपने विचार द्वारा सात्विक जाति को प्राप्त होता है ॥ पुरुष के भीतर अनुभव रूपी चिन्तामणि है ॥ उसमें जो कुछ निवेदन करता है वही रूप हो जाता है ॥ इससे पुरुषार्थ करके अपना उद्धार करो पुरुष परिश्रम और अपने श्रेष्ठ गुणों से मुक्ति को पाता है ॥ और उसके जन्म का अंत होता ॥ फिर जन्म नहीं पाता है और अशुभ जाति के कर्मों से अलग हो जाता है । ऐसी वस्तु पृथ्वी आकाश देवलोक में कोई नही है ॥ जो उपाय करने से प्राप्त न होवे । हे रामजी तुम तो बड़े गुणवान हो । धीरज वान हो उदार वैराग्य और दृढ बुद्धि से सम्पन्न हो और उसके प्राप्त की धर्म बुद्धि से बीत शोक रूप हो तुम्हारे कार्मों को जो कोई ग्रहण करेगा वह मूढ़ता से रहित होकर अशोक पद को प्राप्त होगा । अब तेरा अन्त का जन्म है और बड़े विवेक से सयुक्त हो । तुम्हारी बुद्धि में शांति के गुण फैल गये हैं और उनसे तुम्हारी शोभा है सात्विक गुण से सब में रमि रहे हो और ससार की बुद्धि मोह चिन्ता तुम को मिथ्या है । तुम अपने स्वस्थ स्वरूप में स्थित हो । इति श्री जोग वसिष्टे महारामायणे स्थिति प्रकरणे मोक्षो पाय वर्णनं नाम एकषष्टितम सर्ग ६१ समाप्त लिखत दया राम कायस्थ आगरा निवासी अश्विन मासे शुक्ल पक्षे द्वादश्याम सवत् १९१२ वि० ॥

विषय---योगवाशिष्ठ का भाषानुवाद ।

सख्या २९१ घी योग वाशिष्ठ, रचयिता---रामप्रसाद निरजनी (पटियाला,पजाब), कागज---मोटा, पत्र---४२०, आकार---१६ × १० इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)---३२, परिमाण (अनुष्टुप्)---१३४४०, रूप---पुराना और दीमक लगी, लिपि - नागरी, रचनाकाल---स० १७९८ = १७४१ ई०, लिपिकाल---स० १८५६ = १७९९ ई०, प्राप्तिस्थान---पण्डित रामभजन शास्त्री, भिम्मपुर कलाँ, डाकघर---जलेसर, जिला---एटा ।

आदि अंत---२९१ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है ---इति श्री जोग वसिष्टे । महारामायणे स्थिति प्रकरणे मोक्षो पाय वर्णन नाम एक षष्टितम सर्गा ६१ सपूर्ण समाप्तम लिखत गूजर मल ॥ वैश्य श्रपम्नाथ सवत् १८५६ वि० ॥

संख्या २९१ सी. जोगवसिष्ठ, रचयिता—रामप्रसाद निरंजनी (पटियाला, पंजाव), पत्र—४२४, आकार—१६ × १२ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२९९६, रूप—दीमक लगी, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७९८ = १७४१ ई०, लिपिकाल—सं० १८७५ = १८१९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० केदारनाथ, भगौता, डाकघर—सोरों, जिला—एटा।

आदि-अंत—२९१ ए के समान। पुष्पिका इस प्रकार है:—इति श्री जोग वसिष्ठे महारामायणे स्थिति प्रकरणे मोक्षो पाप वर्णनं नाम एक षष्टिम सर्गा ६१ संपूर्ण समाप्तम् लिपतं शिवराम पाँडे संवत् १८७५ वि० ॥ राम राम राम।

संख्या २९१ डी. जोगवसिष्ट भाषा (पूर्वार्द्ध), रचयिता—रामप्रसाद (पटियाला पजाब), कागज—देशी, पत्र—६१०, आकार—१६ × १० इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६००६, रूप—प्राचीन, लिपि नागरी, रचनाकाल—स० १७९८ = १७४१ ई०, लिपिकाल—सं० १८८० = १८२३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला लच्छीराम पटवारी, पीपरगज, डाकघर—सराय अगत, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ जोग वसिष्ट लिख्यते ॥ साधु राम प्रसाद कृत ॥ प्रथम परब्रह्म परमात्मा को नमस्कार है जिससे सब भासते हैं और जिसमें सब लीन और स्थित होते है। जिससे ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय द्रष्टा दर्शन और कर्ता कारण क्रिया सिद्धि होते है जिस आनन्द के समुद्र के कण से संपूर्ण विश्व आनन्द मयी है जिस आनन्द से सब जीव जीते है। अगस्त जी के शिष्य सुतीक्षण के मन में एक सन्देह पैदा हुआ। तब वह उसके दूर करने के कारण अगस्त मुनि के आश्रम को जा विधि सहित प्रणाम करके बैठे और विनती कर प्रश्न किया कि हे भगवन आप सब तत्वों और सब शास्त्रों के जानने हारे हौ मेरे एक सन्देह को दूर करौ। मोक्ष का कारण कर्म है कि ज्ञान है अथवा दोनो है समझाय के कहौ इतना सुन अगस्त मुनि बोले कि हे ब्रह्मण्य केवल कर्म से मोक्ष नही होता और न केवल ज्ञान से मोक्ष होता है। मोक्ष दोनो से प्राप्त होता है ॥

अन्त—हे रामजी जो पुरुष अभिमानी नही है और जिसके रूप में स्थिति है। वह शरीर के इष्ट अनिष्ट मे राग द्वेष नही करता क्योकि उसकी शुद्ध वासना है और वह जो करता है सो बधन का कारण नही होता। जैसे भुना बीज नहीं जमता तैसे ही ज्ञान वान की वासना जन्म मरण का कारण नही होती और जिसकी वृत्ति ससार के पदार्थों मे स्थिति है और राग द्वेष से ग्रहण त्याग करता है ऐसी मलीन वासना जन्मो का कारण है ऐसी वासना को छोड़कर जब तुम स्थित होगे तब तुम कर्ता हुए भी निर्लेप होगे ॥ और हर्ष शोक आदि विकारो से जब तुम अलग होगे तब गीत राग भय क्रोध से रहित होगे। हे रामजी जिसका मन असग हुआ है वह जीवन मुक्त हुआ है ॥ इससे तुम भी वीत राग होकर आत्म तत्व में स्थित हो। जीवन मुक्त पुरुष इन्द्रियो के ग्राम को निग्रह करके स्थित होता है। और मान मद वैर को त्याग करके संताप से रहित स्थित होता है। वह सब आत्मा जानकर कर्म करता है। परन्तु व्यौहार बुद्धि से रहित असंग होकर कर्म करता है। वह

करता भी अकरता है उसको आपदा व सपदा प्राप्त हो अपने स्वभाव को नहीं त्यागता जैसे छीर समुद्र मदरा चल पहाड को पाकर शुक्ला को नहीं त्यागा ॥ तैसे ही जीवन मुक्त अपने स्वभाव को नहीं छोड़ता। हे रामजी आदा प्राप्त हो अथवा चक्रवर्ती राज्य मिले। सप अथवा इन्द्र का शरीर प्राप्त हो इन सब में सम भाव स्थित होता है। हप शोक को नहीं प्राप्त होता। वह सब आरम्भा को त्याग कर नानात्व भाव से रहित स्थिति होता है। विचार करके जिसने आत्म तत्व पाया है वह जैसे स्थिति हो वैसे ही तुम भी स्थिति हो इसी दृष्टि को पाकर आत्म तत्व को देखो तब विगत ज्वर होगे ॥ और आत्म पद को पाकर फिर जन्म मरण के बन्धन में न आवोगे ॥ इति श्री जोग वसिष्ट उपशम प्रकरण समाप्त इति श्री जोग वसिष्ट पोथी सपूण सवत् १८८० वि० ॥

विषय—योगवाशिष्ट का भाषानुवाद।

सख्या २९२ अक्षरावली, रचयिता—श्री रामसेवक महात्मा (हरचन्दपुर, जि० बारहबकी) पत्र—२८, आकार ७½ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६५, रूप—सादा, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९,० = १८८१ ई०, प्राप्तिस्थान—महन्त चन्द्र भूषण दास जी ग्राम—उमापुर, डाकघर—मीरमऊ, जिला—बारहबकी।

आदि—(क) करन धार कमाल कर्ता करत सरवस सो अहै। श्रुति सेस सास्त्र पुरान ग्यानी काव्य तेहि सी कति कहै। ब्रह्म शकर नारद सुक व्यास सौनक मन चहै। सनकादि देव सुरादि सूतो अंगिरा अतर गहै। आनत सत सुगावते सतनाम पारस पर अहै। आरूप अवरन अकह अविगत कवन तेहि गत काल्है। अस सामरथ जग जविन जगमग जगति पति जन भ्रम दहै। प्रभु देवादास एखाय दीन्हो रामसेवक मिलि रहै।

अत—एक करता पुरुष अविगत अलख अगुन निअक्षर। जिन काल त्रिभुवन तनक मा नहिं जानि गति काहू पर। सोइ सु यकार अपार अवरन बरन बुद्धि न सचरं। अद्वैत अकथ अनादि अज अल भेस देस निवासर। सो सत्य गुरु सत सिद्धि दायक जक्त गुन धरि अवतर। जग जिवन नाम कहाय जन हित भक्ति विस्तार कर। प्रभु देविदास दयाल तिन्ह कहि दीन्ह मत परगट वर। जन राम सेवक मँगन है कर जोरि कै पायन्ह पर।

विषय—प्रत्येक अक्षर पर छद रचना करके ज्ञानोपदेश किया गया है।

सख्या २९३ ए कातिकमहात्म्य, रचयिता—रगीलाल (मथुरा), कागज—देशी, पत्र—१०६ आकार—१० × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९७६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९४० = १८८३ ई० प्राप्तिस्थान—लालामगावकूश पिइरुआ, डाकघर और जिला—हरदोई।

आदि—श्रीगणेशायनम ॥ अथ कार्तिक महात्म की भाषाटीका लिख्यते ॥ एक समय सब तीथन में उत्तम जो नैमषाण्य क्षेत्र है तामें बैठे हुए श्री सूत जी अट्ठासी

हजार ऋषियों से कहते भये की हे ऋषियों जब श्री सत्य भामा जी अपने मनमें प्रसन्न होकर लक्ष्मी के पति जो श्री वासुदेव भगवान श्री कृष्णचन्द्र हैं। तिनसों बोलत भई हे नाथ आज में अपने को धन्य मानू हूं। आज मेरो जन्म सफल भयो और मेरे जन्म के दाता जो मेरे माता पिता हैं। ते भी धन्य हैं। जिन्होंने तीनों लोकन में जाको सरूप जाको विख्यात ऐसी जो मैं हू ताय उत्पन्न करी और आपके जो सोलह सहस्र स्त्री हैं तिन सबमें मै यथोक्त विधि से नारद मुनि के अर्थ समर्पण किये गये ताकी वार्ता जो मृत्यु लोक में बसन हारे जो जीव नहीं जानत हैं सोई कल्प वृक्ष आपकी कृपाते मेरे घर मे वर्तमान है ॥

अंत—सूत बोले ऐसी वाको बैठाय के उद्दालक चले गये। वहां बहुत देर ताईं उनकी मार्ग देखती भई। वो जब उनको न देखती भईं तब पति के त्यागने से दुखित हो शोक सों रोदन करती भईं॥ वाके रोदन को लक्ष्मी बैकुन्ठ भवन में सुनत भई तब लक्ष्मी उदास मन हो विष्णु सों प्रार्थना करत भई। लक्ष्मी बोली हे स्वामी मेरी जेठी बहिन भर्त्ता के छाड़ने सों दुखित है तो हे दयालु जो मैं तुम्हारी प्यारी हू तो तुम वाको धीरज देवो जाय॥ सूतजी बोले ता पीछे कृपानिधि विष्णु लक्ष्मी सहित वहा जात भये उस अलक्ष्मी को धीरज दे के ये वचन बोलते भये। हे अलक्ष्मी तुम पीपल की जड़ में सदा रहो ये मेरे अश सों उत्पन्न है याते मैने तुम्हारे वास के निमित्त दियो। और प्रति वर्ष जो गृहस्थी जेष्ठा जे तुम हो तुम्हारो पूजन करेंगे उनके घरमें तुम्हारी छोटी बहिन लक्ष्मी वास करेगी और स्त्रियों करके नाना प्रकार की भेद देके सदा पूजी जावोगी। गध पुष्पाद से जो तुम्हारो पूजन करेंगे तिन पर लक्ष्मी प्रसन्न होगी। सूत जी बोले हे मुनियो या प्रकार श्री कृष्ण और सत्य भामा और नारद पृथु को संवाद मैने तुम्हारे आगे वर्णन कियो और जो कुछ तुम्हे पूछना होय सो पूछो मैं विस्तार पूर्वक कहूगी॥ ये वचन सुनते ही सब ऋषि मन्द मन्द हंसते भये और आपस में कुछ न कहते भये और सब बद्रकाश्रम को दर्शन करने के निमित्त जात भये। जो मनुष्य या कथा को श्रमण करेगो अथवा श्रेष्ट मनुष्यन को सुनावैगो वो सब पापनते निवृत्त होयगो॥ और विष्णु भगवान को सायुज्य प्राप्त होयगो। इति श्री पद्म पुराणे कार्तिक महात्मे व्रज भाषा टीकायाम मथुरा निवासिना रंगीलाल कृतो संपूर्ण समाप्तः संवत् १९४० माघ मासे शुक्ल पक्षे पचम्याम्।

विषय—कार्तिक माहात्म्य वर्णन।

संख्या २९२ बी. कार्तिकमहात्म्य, रचयिता—रंगीलाल (मथुरा), कागज—देशी, पत्र—११२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८७२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला हरसुख राय, गगधरापुर, डाकघर—जैथरा, जिला—एटा।

आदि-अंत—२९२ ए के समान।

संख्या २९२ सी. जर्राही प्रकाश. रचयिता—रंगीलाल, कागज—देशी, पत्र—७६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००८, रूप—

प्राचीन, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १९१९ = १८५९ ई०, प्राप्तिस्थान--ज्ञानचन्द श्रीवास्तव, कमलागढ़ी, डाकघर--वजीदपुर, जिला--अलीगढ़ ।

आदि--श्री गणेशायनम ॥ अथ जर्राही प्रकाश ग्रंथ लिख्यते ॥ अथ आतशक अर्थात उपदश की चिकित्सा ॥ जानना चाहिये कि ये रोग कितने ही प्रकार का होता है ॥ एक तो किसी वेश्या के यह रोग होवे और पुरुष कामदेव से उन्मत्त होकर इसकी परीक्षा न करके उससे संभोग करे जैसे कहावत कि ज्वानी दिवानी और जब वह भोग कर चुकता है तो कई एक दिन पीछे यह रोग प्रगट होता है और पेडू व लिंग पर अंड कोषों पर एक पीली फुन्सी हो जाती है उसमें खुजली के संग जलन होती है फिर मनुष्य उसे खुजा डालता है जब वह घाव बढ़ जाता है तब अपनी मूर्खता से तेल खड़ी व कत्था लगा देता है जब घाव एक पैसे के बराबर हो जाता है तब लोगो पर प्रगट करता है तो वह उसको हुक्के में पाने की दवाइ देता है । उसस मुँह आगया वमन व दस्त हो गये और कोइ खाने को दूध बताता है यदि इस चिकित्सा से कई दिन के लिये आराम हो जाता है । परन्तु रोग की जड़ नहीं जाती बस उचित है किसी विद्वान बुद्धिमान जर्राह को बुला कर चिकित्सा करावे और जर्राह को भी चाहिये पहिले घाव को देखे कि घाव कितना चौड़ा है परन्तु यह घाव केवल मरहम से अच्छा नहीं हो सकता इसकी इस प्रकार चिकित्सा करें॥

अन्त--नुसखा १--बनमफ्सा का तेल ५ तोले आंच धरके उसमें सफेद मोम २ तोले कतीरा ९ माशे मिलावें और जहा दर्द होता हो वहा मर्दन करावे तो इसके लगाने से बहुत जल्द फायदा हो जायगा ॥ नुसखा २--बनसफा के व सपेद चन्दन खतमी के बीज नाखूना जव का चून गेहू की भूसी ये सब दवा बराबर लेके कूट छानकर इन सबको मोम रोगन में और बन फसा क तेल में तथा गुल रोगन में मिलाकर पकावे जब रोगन मात्र रह जावे तब उतार कर इसका मर्दन दर्द के मुकाम पर करावे तो दर्द बहुत जल्दी दफा हो जावेगा । नुसखा ३--खतमी के बीज अलसी मकोय के पत्तों का रस अमल तास का गूदा इन सबको पीस कर छाती पर लेप करना अथवा बारह सिंगा का सींग सोंठ अरंड की जड़ इनको पानी में घिस कर लगाना अथवा मीठे तेल में अफीम आटा कर मलवाना ॥ इति श्री जर्राही प्रकार ग्रंथ रंगीलाल कृत संपूर्ण समाप्त लिखा शिवदास अहीर रमुआ ग्राम निवासी वैसाख वदी १३ संवत् १९१६ वि० ॥

विषय--छूतवाले रोगों का वर्णन ।

संख्या २९३ डी जर्राही प्रकाश, रचयिता--रंगीलाल, मधुपुरी (मथुरा), कागज--देशी, पत्र--१२४, आकार--८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--२६, परिमाण (अनुष्टुप्)--१६३४, रूप--प्राचीन, लिपि--नागरी, रचनाकाल--स० १९२७ = १८७० ई०, लिपि काल--स० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान--वैद्य रामभूषण, जमुनिया, डाकघर और जिला--हरदोई ।

आदि--श्री गणेशायनम अथ जर्राही प्रकाश लिख्यते ॥ मंगला चरण दोहा ॥ श्री धन्वन्तर के चरण रज निज मस्तक पर धार ॥ जर्राही परकास ये रच्यो ग्रन्थ सुपकार ॥

पुनि गुरु चरण सरोज रज मस्तक तिलक चढ़ाय। रोगिन के उपकार हित पूरण कियो वनाय ॥ नाना ग्रन्थन को रतन अरु निज मति अनुसार। रची चिकित्सा देह की सुख पावे ससार ॥ अथ मस्तक के फोड़े का यत्न ॥ एक फोडा सिर के तालू पर होता है। सूरत उसकी यह है कि पोस्त के दाने के वरावर होता है उसके आसपास हथेली के वरावर स्याही होती है ॥ और वह स्याही हवा के सदृश दौड़ती है और जहरवाद से संवध रखती है। यहां तक यह स्याही फैलती है कि सव शरीर स्याह हो जाता है और वह रोगी ४ या ७ पहर में मर जाता है। परन्तु परमेश्वर की कृपा से कोई अच्छा जर्राह मिल जाता है तो निःसदेह आराम हो जाता है ॥ जो स्याही कंठ के नीचे उतर आई हो तो इलाज करना न चाहिये ॥

अन्त—प्रगट हो कि जो लोग प्रति वर्ष फस्त खुलवाते या जुलाब लेते हैं तो उनको अभ्यास वैसा ही पड जाता है और यह अभ्यास अच्छा नहीं और फस्त का खुलवाना उत्तम है ॥ क्योंकि वर्ष मे तीन रितु होती हैं और रुधिर भी तीन प्रकार का होता है। शीत काल में मध्यान के समय खुलवावे कि उस रितु में रुधिर उसी समय चक्कर पर होता है ॥ फिर ठहिर जाता है और कोई कोई यो भी कहते हैं कि रुधिर जम जाता है सो यह वात झूंठ है। क्योंकि जो मनुष्य के शरीर में रुधिर जम जावै तो मनुष्य जीवै नही किन्तु भीतर गरमी होती है और रुधिर निकलने में यह परीक्षा नही होती कि यह रुधिर अच्छा है वा बुरा और उसी समय में फस्त खुलवाने से मनुष्य दुर्वल हो जाता है। क्योकि बुरे रुधिर के साथ अच्छा रुधिर भी निकलता है। और ग्रीषम काल में रुधिर प्रथक होता है। इस रितु मे सझा के समय फस्त खुलवाना उचित है और सवेरे खुलवाने में रुधिर कम हो जाता है। जो मनुष्य फस्त खुलवाने के आदी है अगर फस्त न खुलवावैं तो एक न एक रोग समाना रहता है। वर्षा काल में रुधिर मात दिल हो जाता है उस रितु में फस्त खुलवाना योग्य नहीं। जो हकीम की सम्मति होवे तो खुलवा लेवे ॥ और अगर फस्त खुलवाने की अधिक आवस्यता हो तो फस्त खुलवा लेवे दिन मुहूर्त समय न देखै यह समय विचार योग्य नही है इति जर्राही प्रकाश रंगीलाल कृत सपूर्ण समाप्तः ॥ राम राम राम राम राम ॥

विषय—शल्य चिकित्सा का वर्णन।

संख्या २९४ ए. श्रीमद्भागवत महापुराण, रचयिता—रसजानि, पत्र—४५७, आकार—१५×८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२७५०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८०७ = १७५० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० खुसालीराम-राजोरिया, ग्राम—कुंडौल, डाकघर—डौकी, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशायन्मः श्री राधा कृष्णो जयति। •अथ श्री भागवत की भासा रस जानि कृत लिख्यते। प्रथम स्कध मंगला चर्ण ॥ चौपाई ॥ राधा चरण अरुण पाऊ। सीस नवाइ जु बात सुनाऊ। हे राधे सुनि विन्ती मोरी। कृपा कटाक्ष जु चाहौ तेरी ॥ जिहि कटाक्ष जल सीचो ताही। बजि रूप हिय बानी आही। सव अंग सुंदर मेरी कविता। सुन्दर करऊँ प्रेम रस वनिता ॥ सव कनि कहत वदन छवि ससि जिमि। करि मन काव्य आपने मुख सिति। सशि समान जिन करहे सजनी। पगट कलंक होत जिहि रजनी ॥ अर्थ गभीर करहु पुनि ऐसी। नाभि गभीर विराजति जैसी ॥

अंत—कहु आर का और पुनि, जो अथहि लपि लेहु ॥ पाठ भेद सों जानियौ, मोहि दोप जिनि देहु । चौपाई—मोर डेढे पसु इरस पागे, जो रस पगे न सोभा आगे । सवत अष्टा दस सत सात । जेष्ठ बदी छट मगल गात । इति श्री भागवते महापुराणे परम हस्या सहितायां द्वादस स्कन्ध भापा रस जानि कृते त्रयादश अध्याय ॥ द्वादश सम्पूण शुभ मस्तु ॥ सरवोपरि श्री भागवत, परम धम स्वछन्द । जाके कह आवे नहीं, सोइ अति मति मद । पुनि चउधि मास लोन मधुरित मधुर वसत नवीन । सवत वीस चारि के भीतर । प्रति सुभ मूल लिखी है मनु करि । कृष्ण पक्ष तिथि मावस आना । गुरवासर दिन पुनि पहिचानी । लिखित हरिप्रसाद पडितवर, हरिदासनि की सदा आस करि । सन्तन सम प्रिय ओर न कोई । कहि प्रभु पुनि पुनि यह मत गोइ । बाबा जी बालक दास जी की प्रति सों पडित हरिप्रसाद ने सम्पूण भागवत रसजस कृत प्रति की उतारी । प्रति दृष्टा सो लिखा मम दोपो न दीयते । ग्राम वास कुन्डाल ॥ राम राम ॥

विपय—भागवत् का भापानुवाद ।

संख्या २९४ बी श्रीमद्भागवत, रचयिता—रसजान, कागज—बाँसी, पत्र—११४९, आकार—१२ × ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४१२९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९०४ = १८४७ ई०, प्राप्तिस्थान—महन्त त्रिवेणीदास चेला मगलदास जी, राधा वल्लभ की शाला, डाकघर—यमरोली कग्रा, जिला—आगरा ।

आदि अंत—२९४ ए के समान । पुष्पिका और टिप्पणी इस प्रकार है —

इति श्री भागवते महापुराणे द्वादस कन्धे भापा रस जानि कृते नाम त्रय दसो अध्याय ॥ १ ॥ सवत् १९०५ ॥ शाके १७७० तत्र वर्षे दत्र कृष्ण पक्षे तिथौ ३ रविवासर ।

टिप्पणी—भागवत माहात्म्य में रचयिता ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है — दोहा—श्री प्रिया दास रस रस रास को पौत्र देश्नादास, ताही को रस जानि तिन कीनो नाम प्रकास ॥ २ ॥ श्री हरि जीवन गुर कृपा पाये सोई जानि । श्री भागवत महात्म की भापा करी बखानि ।

संख्या २९४ सी श्रीमद्भागवत (प्रथम स्कन्ध), रचयिता—रासजान, पत्र—२९, आकार—१२½ × ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१२ = १८५५ ई० प्राप्तिस्थान—प० कैलासपति शर्मा, ग्राम—बिजौली, डाकघर—डाव, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥ अथ प्रथमो स्कध भापा रसजन कृते लिपते । प्रथम मगलाचरन । चोपई । राधा चरन कमल मन ध्याउ । सीस नवाइ ■ वचन सुनाउ । हे राधा सुनि विनती मोरी । कृपा कटाक्ष जु चाहत तोरी । तेहि कटक्ष जल सींच्यो ताहि । बीज तू पहिय वानी आही । सब अंग सुदर मेरी कविता सुदर करहु प्रमरस वनिता । सब कवि कहँत वदना छवि ससि जिमि करि मम काव्य आपने सुप तिमि । सस समान

जिन करिहै सजनी। प्रगट कलंक जुहै जिमि रजनी। अर्थ गंभी करहु पुनि ऐसो। नभिणा भार विराजै जैसी। दुर्जन हुन मन छेदहु ऐसी। पीतम हिइज भेदत जैसे।

अंत—कृष्ण पांडवनि के प्रीय भारे। फूफी के बेटा अति प्यारे। तिनके बस में मोको जानि। मोपर कृपा करी तुम आनि। तुम्हरी गति नहि जानी जाइ, नरनि कौं दुर्लभ दरसनु आइ। अति दुर्लभ तुव दरसन वाको, मन आइ प्राप्त भयो ताको। सब के गुरु तुम सिधि के दाता, पूछतु एक तुमही को वाता। मरन हरन प्रानी आहि, करिवे जोग्य कहो सुनि ताहि कहौ करै अरु सुनि कहा वरो, कहि भजै कौन कौं सुमिरै। जाजा कौ निषेध है अहौ, सो सो प्रभु तुम मोसे कहो। गो दोहन लगि रहौ तहा, अहि ग्रहस्थन के ग्रह जहां। सूतो वाच। सुंदर वानी सोयो राजा पूछी सुक रो सुप के काजा। तबै व्यास सुत बोलत भये अति धर्मग्य महा छवि छाये। इति श्री भागवते महापुराणे प्रथम स्कंधे भासा रसजन क्रत श्री सुकगवननो नाम उनइसमोध्याय। १९। संवत १९१२ मासोत्तम मासे कृष्ण पक्षे पुनि तिथउ। ६। गुरुवासरे सन् १२६२ फसली। राम राम राम राम।

विषय—भागवत प्रथम स्कंध के उन्नीस अध्यायों का भाषा में पद्यानुवाद।

संख्या २९४ डी. भागवत प्रथम स्कन्ध, रचयिता—रसजान, कागज—बाँसी, पत्र—२४, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५७ रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० जयदेव मिश्र, ग्राम—सरैंधी, डाकघर—जगनेर, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—श्रीमन्ते रामाजायन्मः॥ ॐ नमः अथ लिख्यते भागवत को प्रथम स्कन्ध॥ दोहा—रसिक भूप हरि रुप पुनि श्री चैतन्य स्वरुप। हृदै कूप अनुरूप पुनि, उकल्यो बहै अनूप। मगवंशके नृप कहे, द्वादश पहिले ध्याय। भये वरनशकर सुने, कलि प्रभाव को पाप॥ श्री परीक्षत उवाच॥ जदुकुल भूखन कृपन जु आहि। अपने धाम गये ते ताहि। कौन को वस भयो घर में पुनि। यह हमसो सब कहो सुनि।

अंत—तुक अमिलन मात्रा अधिक अर्थ बनावनि हेत। तुम मिलन संक्षेपहित, कहूं अर्थ संकेत। तुक अमिलन पेरोख नही, कवि प्रयोग को देखि। घटी बढ़ी मात्रा को निपुन, पढ़ि लैहै सु विशेप। कहुं और पुनि जो अर्थहि लखि लेहु। पाठ भेद को जानिये, मोहि दोख जनि देहु। चौ०—संवत अष्टादश सत सात। जेठ वदी छटि मगल गात। दोहा—श्री प्रियादास रस रासि की, कृपा पाप रस जानि। अगम कीयो निपट सुगम, द्वादस स्कन्धि वखानि। श्री भागवत महापुराणे द्वादस स्कन्ध भापा रस जान कृते त्रयोदशोध्याय।

विषय—भागवत प्रथमस्कन्ध का पद्यानुवाद है।

संख्या २९४ ई०. भागवत (द्वितीय स्कन्ध), रचयिता—रसजन, पत्र—१७, आकार—१२$\frac{1}{2}$ × ७ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कैलाशपति शर्मा, ग्राम—विजौली, डाकघर—बाह, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम । श्री ध्या न्म श्री हि या ध पा सनि वे वे ते ॥ दोहा । श्रीवन की रतन आदि करि, स्थूल रूप भगवान । तामें मन ठहरात हैं प्रथम ध्याय यह जान । श्री सुको वाच । हे नृप कृष्ण श्रेष्ठ यह भारी, सकल लोक को मंगलकारी । ग्यान वान को समत ह पुनि, सुनिवे की लाइक ताते सुनि । ने नर आत्म तत्त्व नहि जानै ग्रह में अति आसीकहि ठानै । ते नृप नाहिन सहस निवाता सुनिवे योग आहि विष्याता । निंद्रा रात्रि की आयुहि हरै, कटूआ पुछ यरीय सग करै । दिन की आयुऽ दि मतै जाऐ, कुटु व भरन तें यछु न सुहाऐ । तन सुत त्रिय परि करि ह जेतो यह नर नष्ट लहत हे ते तो । तौ मन नैक न आवति ताते, अति आसक्ति ह रहौ जाते । सर्वोत्म इश्व जो आहि हे नृप जो नह चाहतु ताहि । सो नर हरि सुमिरन मनु ल्यावै, हरि को सुनै औरू हरि गुण गावै ।

अन्त—जग में ज्ञान मान हे जाइ, गुण मय हरि को जानत सोइ । जग के जन्म कर्म के माही हरि कै कक्षू अभिमान न नाही । कवि हू वरन कर नहि याते माया करि प्रकासत ह ताते । सहित विकल्प कल्प विधि सोई । जड जगम सब होहि फला मैं महा तत्वादिक होहि विकल्प म । कल्प लक्ष सरूप हे जोको, आंसा जो टै काल सुता को । कहिहो मैं प्रमान रूप सवै पदम कल्प तुम सुनि ऐहु अर्थ । श्री सौ कोच । महा भागवत विदुर है जोइ दुस्तर घधन तजि करि सोई । जाइ तीथनि मधि अन्हायो सूत जु तुम नैह न सुनायो । तत्र विचार मत्री सुनि, जाइ कही सो हमें कहौ पुनि । पूछी पीछे मत्री सुनज्य कहा विदुर सौ हमहि कहौज्य । अहो सूत जी विदुर चरित सब तुम नीके वरनो हम सो अब । विदुर नै घध त्याग क्यों कर फिरि कहौ कैसे ग्रह वरे । सूत उच ॥ तुम हमसौं पूछी हे जोई श्री सुक सा रूप पूछौ सोई । श्री सुक नृपहि यहो पुनि असौ मोमो सुन्यो अहो नृप तसे । इ श्री ग म पु णे तीयऽधभा रसनिते परम हस सहिता यासिक्या ।

विषय—भागवत द्वितीय स्कध का पद्यानुवाद ।

सख्या २९४ एफ श्री भागवत पुराण, रचयिता—रसजान, कागज—स्यालकोटी, पत्र—६०, आकार—१२×५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१४ = १८५७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत नन्दाप्रसाद दुवेदी, बमरोली कटरा, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नम । अथ श्री भागवत पुराण प्रथम अध्याय लिख्यते । श्लोक । ॐ नैमिषे निमत्र क्षेत्र ऋषम शौन कादय सत्र स्वर्गीय लोकाय, सहप समऽऽसत् ॥ दोहा —प्रथम मगलाचरण कह सूत प्रश्न वषानि । आदर करिके सूत कौ, प्रथम ध्याय यह जानि । द हा—जग उपजै वे पाले हरे । व्यापक हत्यौरा पुनि रहे ॥ जिति हिय भरि विधि बेद पढ़ायो । जानै मोही बन्ने निह पायो ॥ सब प्रकास सवग्य विराजत । जाते झूठो साचो लागत ॥ माया रचित जगत हे असे । मृग मारिचि का मैं जल जैसे ॥

अन्त—श्री शुक्र नृप सौ कह्यो पुनि जेसे । मोसा सुनो अहो मुनि तैसे । दोहा—प्रियादास रस रासि की, पाय कृपारस जानि । आगम कीयौ निपट सुगम द्वितीय स्कध घपानि । राम राम कृष्ण । राम कृष्णराम । राधा कृष्ण । सवत् १९१४ शाके १७७९ तत्र वष ज्येष्ठ कृष्ण अष्ट म्या रवि वासर लिखी भवानी प्रसाद ब्राह्मण अस्थान नौपुरा में, पठ नाथ श्री दौलतराम ब्राह्मण अस्थान वमरोलीतैं ।

विषय—भागवत प्रथम तथा द्वितीय स्कंध का दोहा चौपाइयों में अनुवाद।

संख्या २९४ जी. भागवत (तृतीय स्कन्ध), रचयिता—रसजान, पत्र—४२, आकार—१२½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०१६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० कैलाशपति शर्मा, ग्राम—बिजौली, डाकघर—बाह, जिला—आगरा।

श्री गणेशाय नमः। श्री सरस्वत्यै नमः। दोहा। रसिक भूप हरि रूप पुनि, श्री चैतन्य सरुप। हृदय कूप अनुरूप रस उझल्यो वह्यो अनूप। आपहीन लपि वंधु सव विदुर त्यागि उठि जाय। उद्धव सो सवाद किय, तृतीय पहल के ध्याय। श्री शुकउवाच। हे नृप तुम पांडव सुपकारी, तिनके भए सुरत मुरारी। दुर्योधन ग्रह त्यागत भए अपनौ मानि विदुर घर गए। अति संपति सौं रह्यो सुछाये सोऊ ग्रेह विदुर छुट काए। वन में जाय मैत्रे सो सो पूछत भए तुमनि पूछो जो। राजोवाच। कहां मिले मैत्रेय विदुर पुनि; कब संवाद भयौ कहियै मुनि। साधुन के समत नीकौ जो, विदुर भक्त पूछौ ह्वै है सो।

अंत—देव इति जहां पाई सिद्ध, तहां सीधपुर भयौ प्रसिद्ध। जोग सो सबै धन मल गयो सहान दीतन ताकौ भयौ। सेवत तामो सिद्ध महान, करत सवै सिद्धिनु कौ दान। मात की आज्ञा पाय कपिल मुनि गये पूर्व उत्तर के मधि पुनि। अस्तुति करत भए गधर्व चारन सिध अप्सर मुनि सर्व। समुद पूजिके दीनो ठौर, गावत जस सा ख्यक सिर मौर। तिनि लोक के मंगल कारन अवलो करत जोग कौ धारन। एहो तात तुमनि पूछो जो कह्यो संवाद मात सुत कौसो। यह मत पावन कपिल देव कौ आत्म जोग मे गोथ-भेव कौ। हरिमे मन धरि सुनै सुनावै सो तिह चरन कमल को पावै। दोहा। श्री प्रियादास रस रासिकी पाय कृपा रस जानि। अगम कियौ निपटै सुगम तृतीय स्कध वपानि। इति श्री भागवते महापुराणे तृतीय स्कंधे भाषा रस जानि कृते कपिले ये त्रयस्त्रिशोध्याय। श्रीरस्तु मासे फाल्गुणे कृष्णपक्षे चतुर्थ्यांज्ञ वासरे श्री चौवे चिंतामणि मिठार्थ लिखत देवी दास प्रोहित साथन शुभमस्तु।

विषय - भागवत तृतीय स्कंध का पद्यानुवाद।

संख्या २९४ एच. भागवत (चतुर्थ स्कन्ध), रचयिता—रसजान, पत्र—४७, आकार—१२½ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६३ = १८०६ ई०, प्राप्तिस्थान—प० कैलाशपति शर्मा, ग्राम—बिजौली, डाकघर—बाह, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः। ओ नमो भागवते वासुदेवाय। ओ नमोनारायणं ओं हरे नमः। अथ चतुर्थ स्कध लिष्यते। दोहा। श्री रसिक भूप हरि रुप पुनि श्री चैतन्य सरुप हृदय कूप अनरुप रस उझुल्यौ वहे अनूप। मैत्रेय उवाच। मनु कंन्यनि कौ वस है चतुर्थ पहिले ध्याय जज्ञादिक अवतार जह, प्रगटे सुपहि बढाय। मनु की तिय शतरुपा नामै, प्रगटी तिनि सुकि न्याता मै। देव हुती इक पुनि आकूती, तीजी कौहे नाम प्रसूती। मनुकें द्वै वेटा हे यद्यपि समत पाइ तिया कौ तद्यपि। आकूती रुचि कौ दे कही याको सुत हम लेहे

सही। तामें रचि हरि में मनु ल्याइ, इक सुत सुता लग उप जाइ। जज्ञ नाम सुत विष्णु प्रशस सुता दक्षण रमा सुअस

अंत—शुक उवाच। जहा उत्तान पाद को वस अरु सुन प्रिय व्रत वस प्रसस। जो नारद ते आत्म ज्ञान ले बहुरो पृथ्वी को सुभोग कै। राज वारि वैर्टनि को दया अपु हरि को पद पावत भयो। यह हरि कथा कही मेत्रे मुनि ग्रन्थो विदुर कें प्रेम ताहि सुनि। हरि पद हिय धरि दग भरे आये पुनि मुनि के पायनि लपटाये। कही क्रिहे जोगेस कृपाल, तुमनि मोहि दिपयो ततकाल। या जग दुस्तर कौ जो पार, जहा अकिंचन द्रव्य मुरारि। जह कहि अज्ञा ले नवाय सिर गए हस्तिना पुरहि विदुर फिरि। अपने बंधुन के देषन हित अति आनदित होय गयो चित। जह हरि भक्तिनि को चरित्र जो सुने आपु धनमति पावें मो। दोहा—श्री प्रियादास रस रासिकी पाय कृपा रस जानि। अगम कियो निपटे सुगम चतुथ स्कध वषानि। इति श्री भागवते महापुराणे वयासिक्या चतुथ स्कधे भाषा रसजानि कृते एकत्रिंसोध्याय। ३१। चतुर्थ स्कध भाषा सपूर्ण सवत् १८६२ मिती फाल्गुण सुदी पंचमी सनी प्रतिलिप्यते श्लोक सत्रह चालीस १७४०।

विषय—भागवत चतुथ स्कध का पद्यानुवाद।

सख्या २९४ आई. भागवत (पचम स्कध), रचयिता-रसजन पत्र—३२ आकार—१३¾ × ७ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)– १६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०६, रूप—प्राचीन, लिपि – नागरी, लिपिकाल—स० १९१२ = १८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—प० कैलाशपति शर्मा, ग्राम—बिजौली, डाकघर—बाह, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम। श्री राधा जयति। दोहा। रसिक भूप रघुवस मनि, पुनि चैतन्य सरप। पद कृप अनुरूप रस, उक्ति लो वइ अनूप। ज्ञान पोष व्रत को चरित पचम पहिले ध्याय। राज भोग करि मुक्ति पुनि भयो ज्ञान को पाय। राजोवाच। अहो महामुनि प्रिय व्रत नामा, महाभागवत आत्मारामा। वाधि कम म हरिहि भुलावै ता ग्रह म सो र्यो मन लाय। निश्चे प्रियव्रत से असग जे ग्रह में रति करि बन उचित जे सुपी भये हरि पद छायारत चहे नही कुटवहि तेजर। त्रिय सुत धरनि माहि अटक्यो नो हरि में अति मति लाइ पुरयो सो। मेर यह सदह महा मुनि ताको आपु दूरि कीजै पुनि।

अन्त नारायन भगवान वषान्यो। यह तिहि माया गुणनि सुवान्यो। ताहि को यह थूल सरार रति सो सुने सनी वेधीर। शुध रति सा होइ अमल मति जानि हरि सरप दुगम अति स्थूल रप सुन जीत मनही पुनि, बुधि सो सूछम मढि धर मुनि। धर गिरि नभ नद सम द्रय ताल नरक जोति गन दिसीर सातज्ञ सव शुध हरि थूल सरप सो हम तमे सुनायो भूप। श्री प्रियादास रस रासिकी पाय कृपा रस जानि, अगम कियौ निपटे सुगम पचम स्कध पुनि। इति भागवते महा पुराने पचमो स्कध भास्साजन कृते सुयो परीक्षत सवाद नक वननो नाम षड्वीसमोध्याय। २६। सवत् १९१२ मिती कार्तिक वदी १० रविवासर। लषत। लाला हरदेवदास रहत मो० मलापुर पठनाथ मिश्र बल्देव गसाए।

विषय—भागवत पचम स्कध का पद्यानुवाद।

संख्या २९४ जे. भागवत (षष्टम स्कन्ध), रचयिता—रसजन, पत्र—२७, आकार—१२½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) – १४, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० कैलाशपति शर्मा, ग्राम—विजोली, डाकघर—बाह, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । दोहा । रसिक भूप हरि रुप श्री चैतन्य सरुप । हृदय कूप अनुरुप रस उलभ्यौ वहै अनूप । हिरन कासिप के जन्म कौं, कारण पहिले ध्याय विष्णु भक्त प्रहलाद पै जो अति गयौ रिसाय । राजोवाच । अहो महामुनि श्री भगवान सबके प्यारे सुहृद समान । ताने अहो विषम जन जैसे, हते इंद्र हित दानव कैसें । सुप रुप नहिं लाभ सुरनि तें, निर्गुन को नहि भय असुरन तें हरि गुन में यह सखे महा दुरि करौ मुनि कहियै कहा । शुक उवाच । अहो तुम पूछ्यो हरि चरित्र वर, जहां भक्ति वर्धक पवित्र तर, श्री प्रहलाद कथा गावत मुनि व्यास महिनै, सो तोहि कहो पुनि । निर्गुन अज अव्यक्त मुरारी जदपि प्रकृति तें परे सुभारी तिऊ निज माया गुन आश्रे करी, हता हन्यहि हेत होत हरि ।

अन्त—धन जस धर सुत रुप सुहाग । पावै तिय जु करै वड भाग । कंन्या गुननि भरयौ पावै पति विधवा पावे अति उत्तम गति । मृत वत्सा के मरें नहि सुत होय कुरूपा निपट रुप जुत । सहित तिय दुर्भगा होय जो या वृत किए होय सभगा सो । होय निरोग महा रोगी जन वहुरो पावे दृढ इन्द्री तन । पुन्य कर्म मे याहि पढ़े जो पितर देव अति तुष्ट होय तौ । देव पितर हरि अग्नि सु आक्षे देय अर्थ सवहो मे पाक्षे । दिति वृत मरुत निजन्म अनूप, महा पुन्य हम वरन्यौ भूप । श्री प्रियादास रसरास की पाय कृपा रस जानि, अगम कियौ निपटै सुगम षष्ट स्कंध वपानि । इति श्री भागवते महा पुराणे परमहस स सहियां वैयासिक्यां षष्टम स्कंधे भाषा रस जानि कृते एकोनविसोध्याय । १९ । श्री षष्टम स्कध भाषा संपूर्ण संवत् १८६४ मिती असाढ़ सुदी १५ लिपितं जोरावर मैनपुरी मध्ये ।

विषय—भागवत षष्टम स्कध का पद्यानुवाद ।

संख्या २९४ के. भागवत (सप्तम स्कन्ध), रचयिता—रसजन, पत्र—२७, आकार—१२½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६४ = १८०७ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० कैलाशपति शर्मा, ग्राम—विजोली, डाकघर—बाह, जिला—आगरा ।

आदि—श्रीगणेशाय नम. । दोहा । रसिक भूप हरि रुप पुनि श्री चैतन्य सरूप, हृदय कूप अनुरूप रस उलक्ष्यौ वहे अनूप । छुट्यौ पापी अजामिल हरि के दूतन आइ; धर्म कह्यौ जम अनुचरनि षष्टम पहिले ध्याइ । राजोवाच । तुम नृवति मग वरन्यो मुनिवर क्रम करि विधिपुर जाइ छुटे नर । वहुरि त्रिगुण वरन्यो प्रवृत्ति मग, जाकरि प्रकृति क्षुटै न जाइ जग । पापिन के फल नरक कहे मुनि, कह्यो स्वयभू मन्वन्तरि पुनि । प्रिय वृत पुनि उत्तान पाद के वस चरित वरने सवाद के । दीप षड धर समुद्र वनादि जे तुम आक्षें वरनें आदि पुनि नक्षत्र पातालन कीजो रचना तुम नीके वरनी सो । घोर नरक अव अहो तह ज्यो नरन जाइ सो कहौ । श्री शुकउवाच । मन तन वानी कृत पापिनि कौं,

प्रायश्चित यहा न करे जो, तौ मरि घोरि नरक में जाय जे हम तुमको दए सुनाइ । तातें मीचु पहल दढ़ तन करि वेगि पाप कौ जतन करे नर ।

अत--तुमरे मामा के सुत प्यार सुहृद पूज्य गुरु किंकर भारे । ताको तत्व यथारथ नाहीं, आवत हँसि सिवादि बुधि माही । पूनत हम रति मौन सात करि होहु प्रसन्न सोइ जदुपति हरि । श्री शुकउवाच । भयौ प्रेम विह्वल नृप जह सुनि कृष्ण सहित पूजे नारद मुनि । कृष्ण धम पुत्र सौ आर्छे, सीख मागि मुनि गमनौ पाछे । पर दक्ष श्रीकृष्ण सुने जन भए धम सुत अति विस्मै जय । वस दक्ष वेटनु के कहे, जिनमे जड़ जगम सबहू हे । दोहा । प्रियादास रस रासिकी पाइ कृपा रस जानि, अगम कियौ निपटे सुगम सप्तम स्कध वषानि । इति श्री भागवते महापुराणे सप्तम स्कधे पम हस सहितायां वैयासिक । भाषा रस जानि कृते पच दशोध्याय १ । सप्तम स्कध भाषा सपूण समाप्त । सवत् १८६४ ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ त्रियौ दस्या गुरवासरे लिषी जोरावर ब्राह्मण सनाढ्य मैनपुरी मध्ये ।

विषय- भागवत सप्तम स्कंध का पद्यानुवाद ।

सख्या २६४ एल भागवत (अष्टम स्कध), रचयिता—रसजान पत्र—३२ आकार—१२½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३४४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६४ = १८०७ ई०, प्राप्तिस्थान—प० कैलाशपति शर्मा, ग्राम—बिजौली, डाकघर—बाह, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नम । श्री सरस्वत्यै नम । दोहा । रसिक भूप हरि रूप पुनि श्री चैतन्य सरूप । रद रूप अनुरूप रस, कह्यौ यह अनूप । अष्टम पहिलै ध्याइमै कहे चीर मनु वाम, स्वायभू स्वारोचिषर उत्तमत्ता मस नाम । श्री राजो वाच । स्वायभू को वस गु आदि करि विस्तार कह्यौ तुम ताहि । जहा मरीचादिक नम नें पुनि, औरो मुनि हमसों कहीयें मुनि, जह जह जन्म कम्म हरि के जे, वरनत कवि हमसों कहिये ते । दियो करैं करिहै जो अहो, हरि मन्वतर मोसों कहौ । श्री शुक उवाच । स्वायभू आदिक छह मनु जे, होयि चुके या कल्प माहि ते । पहलो मनु हम कह्यौ महामति, जहा सब देवादिक की उतपति । पुनि आकूतिर देव हूति जे स्वायभू मनु की पुत्री ते । तिनके सुत भए पकज नैंन धम ज्ञान उपदेश सुदेन कपिलदेव जो कियौ कह्यो सो, सुनिये अब श्री जज्ञ कथौ जो । भोग स्वयभू मनु तजि दये तप हित तिय जुत वन को गए ।

अन्त—आत्मा परमात्मा निर्नै जो नाव चढ्यो सब सग सन्यौ सो । तापाछें यह भीव मारि करि उठे विधिहि दार वेद त्याय हरि । पुनि सो सत्य व्रत जो भूप ज्ञाण वहुरि विज्ञाय सहत । इकल्प में हरि प्रसाद करि ववस्वत मनु भयौ भूप वर । सत धृत तिमि अवतार चरित्र, सुनत होय नर निपट पवित्र । जो यह अवतारहि नित गावै, पूरण होय उत्तम गति पावै । सूतें विधि मुपवेद गिरे जे असुरमारि जिन ताहि दए ते । कह्यो तत्व सत्य व्रत भूपहि, नव तहाँ ता माया तिमि रुपहि । दोहा—श्री प्रियादास रसरास की पाप कृपा रस जानि । अगम कियो निपटे सुगम अष्टम स्कध वषानि । इति श्री भागवते महा

पुराणेऽष्टम स्कधे भाषा रस जानि कृतेख चतुविसोध्याय २४ अष्टम स्कधे भाषा संपूर्ण संवत् १८६४ ज्येष्ठ वदी १० चद्रवार लिपितं जोरावर ब्राह्मण सनाढ्य मैनपुरी मध्ये ।

विषय—भागवत अष्टमस्कध का पद्यानुवाद ।

संख्या २९४ एम. भागवत अष्टम स्कन्ध भाषा, रचयिता—रसजान, पत्र—४७, आकार—१२ X ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११९६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबू राऊबहादुर जी अग्रवाल, डाकघर—बाह, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥ रसिक भूप हरि रुप मुनि, श्री चैतन्य स्वरूप । हृदय कूप अनुरुप रस, उछल्यौ वहै अनूप ॥ १ ॥ अष्टम पहिलेध्याय में, कहे चरण मनु वाम । स्वायंभू स्वारो चिसरु, उत्तम तामस नाम ॥ २ ॥ राजो वाच ॥ स्वायभू कौ वस जु आहि, करि विस्तार कह्यौ तुम ताहि । जहां मरीचादिक जन्मे पुनि, औरौ मन हमसौ कहियै मुनि ॥ जहाँ जहँ जन्म कर्म हरि केजे, वरनत कवि हमसौ कहियेते । क्यो को करिहै जे अहौ, हरि मन्वन्तर मै सो कहौ ॥ श्री शुकोवाच ॥ स्वयंभू अदिक छह मनु जे, होइ चुके या कल्प माहिते ॥ पहल्यौ मनु हम कह्यो महा मति, जहँ सव देवा दिक की उतपति ॥ पुनि आकूती देव हूहिंगे स्वायंभू मनुकी पुत्री ते ॥ तिन के सुत भे पंकज नैन, धर्म ज्ञान उपदेश सुदैन ॥

अन्त—श्री शुकोवाच—यह सुकि आदि पुरुप तिमि रुप, कह्यौ समुद्र में तत्व अनूप ॥ साख्य जोग जुत मच्छ पुरान, सविता नृपहि कह्यौ भगवान ॥ ३५ ॥ आत्मा परमात्मा निरनै जो, नाव चढ़पो सव सग सुनै सो । ता पीछे हय ग्रीव मदि करि, उऋे विधि हिये वेद ल्याइ हरि ॥ ३६ ॥ पुनि सो सत्य वृत जो भूप, ज्ञान वहुरि विज्ञान स्वरूप । इह कल्प मै हरि प्रसाद करि, वैवस्वत मनु भयौ भूप वर ॥ ३७ ॥ सति वृत तिमि अवतार चरित्र, सुनत होहि नर निपट पवित्र ॥ जो इहिं अवतारहि नित गावै पूरन होइ उत्तम गति पावै ॥ ३८ सूते विधि सुप वेद गिरे जे, असुर मारि जिन ताहि दिये ते । कह्यौ तत्व सत्य वृत भूपहिं, नवति हौ तामाया तीमि रुपहि ॥ ३९ ॥—दोहा—श्री प्रियादास रस रास की, पाय कृपा रस जानि । अगम कियौ निपटै सुगम, अष्टम स्कन्ध वखानि ॥ इति श्री भागवते महा पुराणे अष्टम स्कन्धे भाषा सहिते चतुर विंशोध्यायः ॥

विषय—भागवत अष्टम स्कन्ध का पद्यानुवाद ।

संख्या २९५ ए. जैमुनी पुराण, रचयिता—रतिभान (इटौरा), पत्र—७३, आकार—१७ X ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४९६४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६८८ = १६३१ ई०, लिपिकाल—सं० १८४४ = १७४७ ई०, प्राप्तिस्थान-पं० लक्ष्मीचन्द जी गौड, ग्राम—चन्दवार, डाकघर—फिरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—ओ नमः श्रीमते रामानुजाय नमः । श्री गुरूभ्यो नमः । परमात्मने नमः ओ निर्गुणादि निरंजन सोई । सुमिरत जाहि सकल सिद्धि होई । पुनि पुरुषोत्तम पुरुष

पुराना । सुमिरा आदि मध्य अवसाना । सुमिरौ श्री गुर चरण सुचिरा । ध्याऊ विघ्न विनासन निरा । दाता सिद्धि सकल ये चरना । तीथ सकल सदन सुभ करना । सिवविरचि मुनि मानत जिन्हे । प्रनत पाल जानत तिन्है । भव समुद्र नौका ये पाइ मेर हृदे बसेतें आइ । गुरकी कृपा प्रगट भौ ग्याना । जैमुनि कथा करौ बषाना । सचित सकल पाप जन्मादि । कीन्है कादि धासते चादि । ग्यान कुलभौ भाग्रु विचारे । कै कक्षु साधु कृपा के जारे । उपज्यौ ज्ञानु सुनी म कथा । भाषा करि देषी प्रति जथा । विदुष विचारि दीजिभहु षोरि । दोउ कथा देष यह जोरि । देसु नौरठौ उत्तम ठाउ । बसायो तहा इठौरा गाऊँ । कालप क्षेत्र कालपी पासा । सिद्धि साध पडित सुष वासा । कलि गगा वैतवै इत वहै । न्हाए जहा पापु नहिं रहै । मध्य सुदेस इठौरा गाऊ । तहा सत गुरू रोपन तिहि नाऊ । प्रगट प्रनाम पथ ह जाका । निगुन मत्र जपे जगुता की । कीरति विदित कहै सव कोई । हमरे कहे यहे नहि होई । म आपु बडाइ अज बषानौं । जाते न उह मारी जानो । तासु पुत्र कुल मडन दासा । भगति भागवत प्रेम हुलासा । जानराय जग नामु कहायो । छोटे बडे सबनि मन भायो । ऐसो प्रगट जगत नसु जाको । श्री परशुराम पुत्र है ताको । × × × श्री परशुराम गुरू पिता हमारे । तिनि भए पुत्र पुनि चार । जेठे तीनि सवहि विधि लायक । अपनी बात कहौं परवान । सब कोउ कहै नाउ रति भान ।

अत—अथ सुनु सुनु के देह जो दान सुनि जन्मे जै तासु बषान । सकल कथा सुनि विप्र जिमावे । दस बष स्व कण को आस्य गढावै । पूजै विप्र वस्त्र पहिरावै । विपभ ऐकसा द्रिष्ट मनावें । यह सव सौंज दूजहि पहुचावै । तब श्रोता अश्वमेध फल पावै । सतत साधुन सेवा करइ । चारि पदारथ ता कह मिलइ । चौदह पव कहे नृप राई । आगे आश्रम पव सुनाइ । बसत हस्तनापुर सुष वास । पारथ कुंत सहित हुलास । बषे नौ वाति निकुताइ । सुपमाँ सुनि जन्मे जौराइ । इहि विधि कथा रिषि जै मुनि कही । रति भान सौं भाषा निवही । दोहा—सकल कथा पूरन भई गई दुचितई चित । रतिभान सकल भ्रम क्षाडिकै सुमिरौ निरजन नित । स० १६८८ अति पवित्र वैसाष । शुक्ला सोम त्रियोद्रसी भ पूरन कथाऽभिलाष । इति श्री महाभारते अश्वमेध के पवने जैमुनि जन्मेजे कथनो नाम अष्ट वीसमोध्याय । ६७ । अथ शुभ सवत सरे नाम सवत् काल युक्त सवत् १८४४ दक्षिनाइने भास्करे । लिषित मासोत्तमें मासे पोष कृष्णपक्षे तिथौ त्रतीया गुरु वासरे । गगा जमुना मध्ये परगने फुफुद स्थान सध साधुनविश्राम × × । लिषित वैष्णव श्री श्री श्री श्री स्वामी महत हीरादास जी को सीस्य वैष्णव अजाध्यादास ।

विषय—मगलाचरण, कवि परिचय तथा अश्वमेध यज्ञ का वणन ।

सख्या २९५ घी जैमिनी पुराण, रचयिता—रतिभान (इटौर, मध्य प्रदेश), पत्र—७५, आकार—१२¾ × ८¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६८८ = १६३१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री प० लक्ष्मीनारायण जी आयुर्वेदाचाय, ग्राम—सैगइ, डाकघर—फीरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः। अथ जैमुनि पुराण भाषा लिष्यते ॥ ओ निर्गुण आदि निरंजन सोई। सुमिरत जाहि सकल सिधि होई॥ पुनि पुरुषोत्तम पुरुष पुराना। सुमिरो आदि मध्य अवसाना॥ सुमिरौ श्री गुरु चरन सुचिरा। ध्याऊ विघ्न विनासन नित्त॥ दादा सिद्धि सकल वै चरना। तीरथ सकल सदन सुभ करना॥ देस नौग्ठौ उराम ठाऊं। वस्यो जहां इटौरा गाऊं॥ कालप क्षेत्र कालपी पासा। सिद्धि साध पंडित सुष बासा॥ कलि गंगा वैतवै इत वहै। न्हाए जहां पाप नहि रहै॥ मध्य सुदेस इटौरा गाऊं। तहां सत्य गुरु रोपन तिहि नाऊं॥ प्रगट प्रनाम पंथु है जाकौ। निर्गुन मंत्र जपै जग ताकौ॥ जाते नामु हमारौ जानौ। मै आपु बडाई काज वपानौ॥ तासु पुत्र कुल मंडन दास। भगति भागवत प्रेम हुलास॥ जानराय जग नाम कहायौ। छोटे वडे सवनि मन भायौ॥ ऐसे प्रगट जगत जस जारौ। श्री परशुराम पुत्र है वारो। श्री परशुराम गुरु पिता हमारे। ताकी स्तुति करत पुकारे॥ ताके भए पुत्र पुनि चारि। × × जेठे तीनि सबहि विधि लायक। संत साधु सबहि सुष दायक॥ अपनी वात कहौ परवान। सब कोऊ कहै नाम रतिभान॥

अंत—सकल कथा सुनि विप्र जिमावै। दस वर्ष स्वकर्ण को अस्व गढ़ावै॥ पूजै विप्र वस्त्र पहिरावै। वृषभ एक शादिष्ट मगावै॥ यह सब सौजहि जहि पहुंचावै। तव श्रोता अस्वमेध फल पावै॥ संतत साधुन सेवा करई। चारि पदारथ ताकहु मिलई॥ चौदह वर्ष कहे नृपराई। आगे आश्रम पर्व सुनाई॥ वसत हस्तना पुर सयवासा। पारस कुतीस हित हुलास॥ वरसै नौ वीति निकुताई। सुषमै सुनि जन्मेजय राई॥ इह विधि कथा रिषि जैमिन कही। रतिभान सो भासा निवही॥ दोहा॥ सकल कथा पूरन भई। गई दुचितई चित्त। रतिभान सकल श्रम छांडिकै। सुमरि निरंजन नित्त॥ संवत सोरह सौ अट्ठासि, अति पवित्र वैसाष। सुकला साम त्रयोदसी। भई पूरन कथाऽभिलाष॥ इति श्री महाभारथे अस्वमेध पर्वने जैमुनि जन्मेजय कथानो नाम अष्टवीसमोध्याय॥ जैमिन पुराण सम्पूर्णम् शुभम्॥

विषय—जैमुनि पुराण का पद्यानुवाद।

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रंथ का रचयिता परशुराम का पुत्र मध्य देशान्तर्गत इटोरा ग्राम का निवासी था। वह अपने बड़े तीन भाइयो का होना बतलाता है। स्वय सबसे छोटा था।

संख्या २९६. वैद्य सुधानिधि, रचयिता—रतिराम, पत्र—२०३, आकार—१० × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६९९, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—महादेव सिंह वर्मा चन्द्रसेनी, ग्राम—रामपुर चन्द्रसेनी, डाकघर—होलीपुरा, जिला—आगरा।

आदि—······ पान्मे = वैद्य सुधानिधि लिष्यत। दोहा। ······ विघन हरन सुप कद। रहो सदा······क्रत सो गनपति गवरीनन्द। पुनि ······प्रथम धनतरि रुप, विघन विहंडन सो सदा, मंडन ग्रंथ अनूप। नाना व्यापति विक्र जो जग जीवन अनत, तिनको हित केहि विधि वने, कहो मोहि सो कंत। म्रग सावक नेंमी प्रिया, जो पूछत तू मोहि,

अति विचित्र इतिहास, क्सुष्ट सु सुनाउ तोहि । रोग विपति लखि श्रेष्ठ के, चतुरानन दुप पाय । चित्य करी बहु भांति, छीर सिंधु तट जाय । विधिबानी सुन विनै जुत, पत्न सक्र अनुरूप । कर कर कर करुणायतन, धन्यौ धनतर रूप । जग जीवन हित लागि निज, कीनौ आयुर्वेद, प्रघट करी बहु औषधी हरन सकल गर पेद । ७ ।

अत—अथ बांछी के विप को जतन । अजैपाल घिसि रोय सौं, जिं काटे पै धर धाय । जिमि नौसादर तात की लेपहविप धाय । पालस पापटो पीसिये, अरु क्षीर मैं जान । पुनि ताको लेपक करे, बीछी विप की हान । अजा क्षीर में सिरस के बीज मिहीं घिसवाय, लेप बीछी डक में ताको जहर मिटाय । बीछी को मत्र—ऊ आत्यस्य वेगेन विक्ष्म याह वहेनच । सुचा पक्षियान व ॥ भूम्य गछ महा विप । १ । उपध याग योग पदाक्षा श्री सियोतमा प्रभू पदान भूम्य गछ महाविस । पामन सौ करादय घार इक बीस । २१ । अथ कनेरि के विप को जतन रजनी पयमें पीसिके सिता और मिल पाय । विस कनेरि को जाय ।

विषय—मगलाचरण धन्वतरि उत्पत्ति वंश तथा वृतादि लक्षण, नाड़ी परीक्षा, तौल प्रमान, गर्भ उत्पत्ति, पालन विधि, युक्तायुक्त विचार, रोग गणना, रोग निदान, ज्वराग्नि वणन, मदाग्नि अजीर्ण, आलस्य आदि के लक्षण और प्रतिकार का वणन, कृमि रोग प्रतिकार, रक्त पित्त निदान, राजयक्ष्मा, कास हिचकी, स्वर भग मूर्छा और उनकी चिकित्सा, उन्माद वणन, वात व्याधि, मूत्रकृच्छ, पथरी, प्रमेह, मेद, गड माल, भगदर, उपदश, कोढ़ादि रोगों का वणन । पश्चात् धुरपाधिकार, सब धातु शोधन तथा विप आदि का वणन ।

टिप्पणी—यह वैद्यक ग्रंथ सुश्रुतादि अनेक प्राचीन सस्कृत ग्रथों के आधार पर बड़े परिश्रम से लिखा गया है । प्राय वैद्यक में चीड़ फाड़ और फोड़ा आदि कुछ रोगों को छोड़ कर अनेक प्रसिद्ध रोगों पर प्रकाश डाला गया है । रावण के ग्रथ में से बालकों की चिकित्सा में सहायता ली गई है । खेद है ग्रथ का कुछ भाग लुप्त हो गया है और प्रति लिपि कर्त्ता ने उसे अशुद्ध भी बहुत लिखा है ।

सख्या २६७ ए प्रेमरतन, रचयिता—रतनदास (काशी), कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५२, रूप—नवीन, लिपि – नागरी, रचनाकाल—स० १८४४ = १७८७ ई०, लिपिकाल—स० १८७२ = १८१५ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला रामस्वरूप, लभौरा, डाकघर—रामपुर, जिला—पुरा ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ प्रेम रतन लिख्यते ॥ सोरठा ॥ अविगत आनद कंद परम पुरुष परमातमा । सुमिरिसु परमानन्द गावत कछु हरि यश विमल ॥ १ ॥ पुनि गुर पद शिर नाइ उर धरि तिनके वचन वर ॥ कृपा तिनहिं की पाय प्रेमरतन भाषत रतन ॥ २ ॥ अगम उदधि मधि जाहि पगु तरहि बिनु जिमि तरणि ॥ तैसिहि रचि मन माहि अमित कान्ह रस गाथ की ॥ ३ ॥ पै मोमन विश्वास, पुरवत पूरण काम प्रभु । उर पुर सकल निवास निज जन को अभिलाप लखि ॥ ४ ॥ लीला अगम अपार पार न पावे शेप

शिव । जासु स्वांस श्रुति चार तिहिं गुण गण को गनि सकहिं ॥ ५ ॥ अमित चरित्र विचित्र यथा शक्ति गावत सकल । निज मुख करन पवित्र भापत हरि गुण गण विमल ॥ ६ ॥ भक्त हृदै सुख दैन प्रेम पूरि पावन परम । लहत श्रवण सुनि चैन भव वारिधि तारण तरण ॥ ७ ॥

अन्त—प्रेम रतन गावहिं सुनहिं जे सप्रेम नर नार । कृष्ण प्रेम सों पावही सकल सुखन को सार ॥ हरि सम जग कछु वस्तु नहिं प्रेम पंथ सम पंथ ॥ सत गुरु सम सज्जन नही गीता सम नाहिं ग्रन्थ ॥ सोरठा—जो जन होहु सुजान लीजो चूक सुधारि धरि ॥ बालक अति अज्ञान हौ अजान जानत न कछु ॥ अति जड़ बढि मंति मद नहिं कवि बुधि नही चतुर कछु ॥ मोको गमहु न छंद यह गायो गुरु कृपा ते । ठारह सै चालीस चतुर वर्ष जब वितित भय ॥ विक्रम नृप अवनीस भये भयो यह ग्रन्थ तब । माह माह के माह अति शुभ दिन सित पंचमी । गायो परम उछाह मंगल मंगल वार वर ॥ कह्यो ग्रन्थ अनुमान त्रयशत अरसठ चौपई । तिहि ऊर्ध्वरु अठ जान दोहा सोरह सोरठा ॥ काशी नाम सुठाम धाम सदा शिव को सुखद ॥ तीरथ परम ललाम सुभग मुक्ति वरदान छम ॥ ता पावन पुर मांहि भयो जन्म या ग्रन्थ को । महिमा वरणि न जाइ सगुण रूप यश जस भरयो ॥ कृष्ण नाम सुख मूल कलि मल दुख भंजन भजत । पावै भव निधि कूल जाके मन यह रस रमहिं ॥ कुरू क्षेत्र शुभ थान व्रज वासी हरि को मिलन । लीला रस की खान प्रेमरतन गायो रतन । इति प्रेम रतन ग्रन्थ सपूर्ण समाप्तः लिखत रामगिरि केपिल मध्ये संवत् १८७२ वि० ॥

विषय—श्री कृष्ण जी का द्वारिका से कुरुक्षेत्र आना और श्री राधिका का बरसाने (ब्रज) से कुरुक्षेत्र जाना तथा वहां दोनो का मिलन वर्णन ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ की रचयित्री बीबी रतन कुंवरि काशी निवासिनी थी । निर्माण काल सवत् १८४४ वि०, लिपि काल संवत् १८७२ वि० है । रचनाकाल इस प्रकार वर्णन किया है:—ठारह सै चालीस चतुर वर्ष जब वितित भय । विक्रम नृप अवनीस भये भयो यह ग्रन्थ तब ॥ काशी नाम सुठाम धाम सदा शिव को सुखद ॥ तीरथ परम ललाम सुभग मुक्ति वरदाम छम । तापावन पुरमाहिं भयो जन्म या ग्रन्थ को ॥ महिमा वरणि न जाइ सगुण रूप यश रस भरयो ॥ कुरुक्षेत्र शुभ थान व्रज वासी हरि को मिलन । लीला रस की खान प्रेम रतन गायो रतन ॥

संख्या २९७ बी. प्रेमरतन, रचयिता—रतनदास (काशी), कागज—देशी, पत्र—८०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—७९२, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८४४ = १७४८ ई०, लिपिकाल—सं० १९०७ = १८५० ई०, प्राप्तिस्थान—प० शिवदान गगापुत्र, कटक, डाकघर—भरावन, जिला—हरदोई ।

आदि-अंत—२९७ ए के समान । पुष्पिका इस प्रकार है :—

इति श्री प्रेम रतन बीबी रतन कुवँरि कृत सपूर्ण समाप्तः लिखतं चेतनदास स्वपठनार्थं काशी वासी संवत् १९०७ वि० ॥

सख्या २९८ विग्रह वनन, रचयिता—रतन सिंह, कागज—बाँसी, पत्र—२०, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, रूप—अति प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रचेराराम ब्रह्मभट्ट, ग्राम—बसइ डाक घर—तान्तपुर, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशायन्म । श्रीसरस्वतीन्म । अथ विग्रह वर्नन ॥ श्री नारायण मिश्र ने सहसस्कृत करी कीन। रतन सिंघ भासा करी जाकी कछु प्रवीन। श्री गनेस अर सरस्वती, फल दाइक तुम होइ। देवन विग्रह की दवा, विग्रह कबहू न होइ। कहि सिंघ सियाराम मन सो करि क नेह। विग्रह अर सम सिंध की, भषा तुम करि देहु ।

अत—भरौ बख्तर ओढ़ि सवारो, तीर कमान लिये रखवारो। एकान्त म दुबि क्यो जाइ। गदहा जानि गदही ठहराइ। गधही जान रोकि सो धायो। गधहा जानि समारि गिरायो। जाते कारज विचार सो कीजे। बिना विचार सबै डरीजे। बगला कहै सुनौ तुम राजा। बिना विचारे बिगरे काजा। मत्र पछी मोमा यों कहे, दम हमार मे तुम रहे। ४४ ॥ याही देस बीच तू धरै, दुष्ट हमारी निन्दा कर। यह बात हम कैसे सहै, दौर मो को मारन चहे। चोवनि चाट करत अर मारत। दुर्बल तेरो भूप विचारत। भोरा अर सुधो डर माही। ताको राज चाहियत नाहीं। भौरो भूप न चहिये कोइ। वस्तु हाथ की रहे न सोइ। धरती को कैसी विधि राषे। ऐसी नीति वेद विधि भाषे।

विषय—राजनीति।

टिप्पणी—रचयिता ने अपना पता निम्नाकित छप्पय में दिया है "प्रथम नराइन मिश्र तिन ग्रन्थ सकीनो। सस्कृत में श्लोक जोरि जित तित थे लीनो। विश्नु शर्मा जो विप्र जानि जाकी पढ़ि आयो। पटना नृप का कुवरि बहुरिताको सुनायो। लाभ मित्र को भेद सत्र विग्रहे सधि सदार भनि रतन सिंघ का सा करी ताके अग सुचारि गनि"।

सख्या २९९ कवित्त सग्रह, रचयिता—रूपराम सनाढ्य, (कचराघाट, आगरा), पत्र—१७, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० छोटेलाल शर्मा, डाकघर—कचरा घाट, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ कवित्त ॥ सामरौ गात सुहात भट्ट जल जात हूतैं अति सै अनुकूले। पीत झॅगूली महा विलस रति की मति की गति हू छकि भूले ॥ मोद विनोद भरी दतियाँ लखि कै अतियाँ छतियाँ सुख फूलै। रूप रगीले छवाले भने दस रत्थ के लाड़िले पालने भूल ॥ १ ॥ लाने लोने लोचन ललित ललाइ लसै ए लन की पीक लीक लेरि सुख सरसै। गोल मोल लोहन अमोलन कपोलन पै अलबेली अलक अवलि वेसी परसै ॥ अति कमनीय कठ किंकनी वलित कटि कस अट पट पीत पटनी कौं दरसै। रूप राम सुकवि विलोकौ राम चन्द्र जू के मुख अरि विद पै अनन्द वृन्द वरसै ॥ २ ॥ राजत राम अनूप सरूप मो भूप मनोभव वैरि को भावक।

पीत दुकूल कसै विहँसै लखि लोचन लाजत है मृग शावक ॥ गोल अमोल कपोलन पै हलकैं अलकैं छलकै छवि छावक। मानो निशंक मयंक के अंक कौ रोषि कें राहु चलायो है चाबुक ॥ ३ ॥ चकित सी चित वीत चहूँ दिसि चित चोरि आई पूजि गौरि ओढ़ि ओढ़नी धनक की। दमकति दामनी है कीधौ चंद चाँदनी हे करिवर गामिनी है कली है कनक की ॥ भये हैं अधीर धीर काहू न धरी है धीर कहौ कैसे वीर वाकी सुप भावना की। रूप राम काम की है कामिनी ललाम छाम राम जू की वाम कीधौ नन्दिनी जानकी ॥ ४ ॥

अन्त—इन्द्र सौ न भोगी न वियोगी राम चन्द्र जू सौ योगी चन्द्रभाल सौ न रोगी तिमि चन्द्र सौ। करण सौ न दानी काभिमानी और रावन सौ वावन सौ न कवानी ज्ञानी हरिचन्द्र सौ ॥ पुत्र सौ न फूल गंगा जल सौ न जल और औध सौन थल रुप राभ मधु कंद सौ। भौन सो न फद मंद जौन सौ न कौन कहौ पौन सो स्वच्छंद ना अनन्द साधु वृन्द सौ ॥ ९३ पचवान वान में न देवन विमान में न मारौ भासमान में न प्रान नप्रयान में। गंग के प्रवाह में न सिन्ध के अगाह में न पच्छिन के नाह में न पौन अप्रमान में ॥ ऐरापति में न अस्वपति में न मेघन में तारापति में न तैसो कहौ कहा जहान में। रुप राम सुकवि विलोको ऐसो काहू में न जैसो वे प्रमान वेग देख्यो हनूमान में ॥ ९३ दारिद सो तापन प्रताप है अनग ऐसो गंगा सौन आप त्यौन पाप है अनीति सौ। विंध्य सौ विनोद अनुमोद ब्रह्मबोध सौ न वान सौ सवोध न अवोध इन्द्र जीत सौ ॥ रुप राम भनत नीरदै हरिचन्द सौ अनंदन अनद रस रीवि सौ। वीर दस कध सौ न मूरग्व कवन्ध सौ न कस सौ मदंध त्यौ न वंध और प्रीति सौ ॥ ९४

विषय—फुटकर कवित्तो का सग्रह

संख्या ३००. रत्नकरड श्रावकाचार की देस भाषामय वचनिका, रचयिता—सदासुख कासिलीवाल (जयपुर), पत्र—८३६, आकार—१३ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०४८, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२० = १८६३ ई०, लिपिकाल—सं० १९५८ = १९०१ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला ऋषभदास जैन, ग्राम—मोहना, डाकघर—इटौजा, जिला—लखनऊ।

आदि—ॐ नम. सिद्धेभ्यः ॥ नमः स्याद्वादिवे सर्वज्ञाय ॥ अथ श्री रत्न करड श्रावकाचार की देष भाषा में वचनिका लिखिऐ है ॥ यहाँ पर इस ग्रन्थ की आदि में स्याद्वाद विद्या के परमेश्वर परमनि ग्रन्थ वीत रागी श्री समत भद्र स्वामी जगत के भव्यनि के परमोपकार के अर्थि रत्न त्रय का रक्षन को उपाय रुप श्री रत्न करड नामा श्रावकाचार कौ प्रगट करने का इच्छक विघ्न रहित शास्त्र की समाप्ति रुप फलकूं इच्छा करता इष्ट विशिष्ट देवता कू नमस्कार करता सूत्र कहे है ॥ श्लोक ॥ ममः श्री वर्द्धमानाय निर्द्धूत कलिलात्मेन ॥ सालोकानां त्रिलोकानाम यद्विद्या दर्प्पं णायते ॥ १५ ॥ अर्थ. ॥ श्री वर्द्धमान तीर्थंकर कैं अर्थि हमारा नमस्कार होहु। श्री कहिये अतरंग स्वाधीन जी अनंत ज्ञान अनन्त दर्शन अनत वीर्य अनत सुख रूप अविनासीक लक्ष्मी अर वहिरग इन्द्रादिक देवनि करि वदनीक जो समवशर नादि लक्ष्मी तिस करिकै वृद्धि कौ प्राप्ति होई। सो श्री वर्द्धमान कहिये। अथवा अव

समतात् कहिये समस्त प्रकार करि ऋद्धि कहिये परम अतिसय कों प्राप्ति भया है। केवल ज्ञानादिक मान कहिये प्रमान जिसका सो वद्धमान कहिये। इहाँ अवाचोर लोय इस सूत्र करि अकार कौ लोप भयो हे ॥ कसा कहें श्री वद्ध मान निदूधव कलिल हें॥ आत्मा जाका निर्धत कहिये नष्ट किया हे आत्मा तै कलिल कहिये ज्ञाना वरनादिक पापमल जानें ऐसा है॥ वहुरि जाकी केवल ज्ञान लक्षण विद्या अलोक सहित समस्त तीनि लोकनि का दपण यत् आचारण करें हैं॥

अत—हे जिन वानी भगवती। मुक्ति भुक्ति दातार। तेरे सेवन तें रहें। सुख मय नित अविकार॥ १५॥ दुख दरिद्र जन्मो नहीं। चाहण रही लगार। उज्जल यस मय विस्तरयो। यों तेरौ उपगार॥ १६॥ अड़सठि वरस जु आइ कै। वाते तुझ आधार। शेष अयुत वस्न ते। जाहु यही समसार॥ १७॥ जितनें भवति तनै रहो। जैन धम अम लान। जिनवर धम विना कुमम। अन्य नही कल्यान॥ १८॥ जिन वानी सू वीनती। मरण वेदना एक। आराधन के सरन तें। होहु मुझे पर लोक॥ १९॥ वाल मरन अज्ञान तैं। करे जु अपरपार। अब आराधन सरन तैं। मरन होहु अविकार॥ २०॥ हरि अनीति कुमरन हरो। करो जु ज्ञान अखड। मोकू नित भूषित करौ। साख्र सु रत्न करड॥ २१॥

× × × ×

इति श्री स्वामी समत भद्र विरचित् रत्न करड श्रावका चार की देस भाषा में वचनिका सम्पूणम्॥ इस प्रकार मूल ग्रन्थ के प्रसादतैं सदा सुख कासिली वाह डेडा का अपने हस्ततैं लिपि ग्रन्थ समाप्त कीया सवत १९५८ वैसाख वदी ३ रविवार ता दिन पुस्तक सम्पूण॥

विषय—(१) पृ० १ से १४८ तक—मगला चरण। धम का स्वरूप। सम्यग्दशन का लक्षण। सत्याथ आप्त का लक्षण। सत्याथ आगम का लक्षण तपस्वी का स्वरूप सम्यक्त के अगों के लक्षण। इन अगों के पालन करने वाले प्रख्यात व्यक्तियों का विवरण। असमथ तादि स्वभावों का वणन। लोक तथा देव मूढ़ तादि का वर्णन। सम्यक्त के नष्ट कारी अष्ट मद। गर्वादि वणन। सम्पत्ति का लक्षण। सम्यग् दृष्टि के गुणों का विवरण। धम अधम का फल। रत्न त्रय में सम्यग्दृष्टि की महत्ता। सम्यग्दशन का प्रभाव (प्रथम अधिकार) (२) पृ० १४९ से १५२ तक—सम्यक् ज्ञान का स्वरूप। (द्वि० अ०) (३) पृ० १५३ से २५६ तक—सम्यक् चरित्र। पच प्रकार के अणु व्रत। व्रत अती चार। अणु व्रत धारियों को फल और महिमादि। उनके अष्ट मूल गुण। तीन प्रकार के गुण व्रत और उनके स्वरूपादि दड तथा भोगोप भोग वणन। तृ० अ० (४) पृ० २५७ से ३६६ तक—चार शिक्षा व्रतों के स्वरूप का निरूपण दसाव कासिक वृत क्षेत्र की मर्यादा। सामायिक स्वरूप तथा उसके अति चार आदि का वणन। नवधा भक्ति का विवरण दान विधान तथा दोनों का फल। जिनेन्द्र की पूजा का उपदेश उपास्य देवो की गणना तथा पूजा का विधान। जिन पूजन का फल। वैया व्रत के पच अती चार। (चतुथ अधिकार)॥ (५) पृ० ३६७ से ८३६ तक—परमागम की आज्ञा। प्रमाण भावना महा अधिकार। भावनादि का वणन।

पन्द्रह प्रकार की भावनाओं का वर्णन। धर्म का स्वरूप। दश लक्षण रूप १२ प्रकार के अभ्यंतर आदि का वर्णन। स्वाध्याय आदि का कथन। आत्मा के तिष्टने का विवेचन। धर्म ध्यान का वर्णन। धर्म ध्यान विषै दस भावनाओं का वर्णन। अन्यत्व भावना का स्वरूप चितवन। निर्जरा भावना। अष्टादश दोषो का विवरण। शुक्ल ध्यान के चार भेदों का वर्णन। समाधि मरन की महिमा का वर्णन। आत्म निरूपण तथा ज्ञान का प्रभाव वर्णन तथा निश्रेयस्वरूप वर्णन। श्रावक के पदों का वर्णन। दश प्रकार के परि ग्रहों का वर्णन। ग्रन्थकार परिचयः—जयपुर नगर मनोग्य अति। धनिमति धर्म विचार। वर्णाश्रम आचार को। अति उज्जल आधार॥ यामें राज करै निपुण। राम सिंह जनपाल। क्रोध लोभ मद टारिकैं। विघ्नहरण कूं टाल॥ × × गोत कासिली वाल है। नाम सदा सुख जास। म्हली तेरा पंथ में। करै जु ज्ञान अभ्यास॥ जिन सिद्धान्त प्रसाद तै। लिपी वचनिका सार। पढ़ि सुनि श्रद्धा भक्ति तै। करो धर्म निर्धार॥ ग्रन्थ निर्माण कालः—संवत् उगनीसै उगनीस। मगसर बुद्धि अष्ठ मिदि नईस। लिखणे का आरम्भ जु किया। सुभ उपयोग माहि चित दिया। संवत् उगनी सै अरु वीस। चैत्र कृष्ण चौदह निज सीस। पूरन करि स्थापन जब कीया। शुभ उद्यम का निजफल लीया॥

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रन्थ स्वामी समंत भद्र का रचा हुआ है। उसी की वचनिका सदा सुख कासिली वाल ने भाषा में की है। मूल ग्रन्थ लेखक ने सूत्रों में रचा है। टीका कारने इन सूत्रों की व्याख्या बडी मार्मिकता से की है। स्थल स्थल पर प्रमाण के लिये गोमट सार, त्रैलोक्य सारादि अनेक जैन ग्रन्थों से सहायता ली है। विविध गाथाओं द्वारा भावों को अत्यन्त रुचि कर दिखाने की पूर्ण चेष्टा की है। ग्रन्थ में पृ० प्रकार से सूक्ष्म तथा जैन धर्म का मूल तत्व, जिसकी जड स्याद् वाद सिद्धान्त पर निर्भर है, भली भाति दिखा दिया गया है। ग्रन्थ के मध्य भाग मे कुछ विपक्षी धर्मो के सिद्धान्तों पर आक्षेप किये गये है। यज्ञ विधान को भूल ग्रन्थकार तथा टीकाकार दोनो ही नापसद करते हैं। जैन धर्म ही जब इसके विरुद्ध है तो उसके आचार्यों का ऐसा लिखना समीचीन ही है।

संख्या ३०१. श्री अयोध्या महात्म्य, रचयिता—सहाईराम, पत्र—१५०, आकार—१० × ६½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०२५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० शिवकुमार उपाध्याय, द्वारा इन्द्रजीत सिंह, वकील, ग्राम—वाह, डाकघर—वाह, जिला—आगरा।

आदि—अथ अयोध्या महात्म्य लिप्यते॥ दोहरा॥ गणपति औ शारदा चरण। प्रथमहि करि परनाम। अवध महातम कहत हौ। भाषा करि सुख धाम॥ महाबीर महराज कौ। वन्दौ वारहि बार। मम कुल को पालन करत। बुधि बल देत अपार॥ सोरठा॥ वदन करि पग शेष। कहौ कथा हरि धाम कर। अघ न रहत लवलेश। जासु महातम सुनत ही॥ एक समै रिपि राज। घने गये कैलास को। तहाँ अति बन्यो समाज। पारवती सकर सहित॥ दोहा॥ पारवती ताही समै। कोमल दोऊ कर जोर। मधुर बचन बोलत भई। मनहु सुधा रस बोर॥ सोरठा—सवै देव के ईश। महादेव आनद भवन। तुम्हैं नवावो सीस। कहो कथा श्री अवध की॥

अंत—॥ छन्द ॥ मति विपुल विविध विधान वरनन कथित शिव जग नयक ॥ शुभ स्थान यह चित्रलोक नगरी परम आनंद दायक ॥ ब्रह्मादि सुर सनकादि नारद मान हित वहु सेवहा । प्रगट जहाँ रघुवंश भूषण सव मंगल देवहीं ॥ दोहा ॥ शत पुराण मनु वप में । कहे महाइ राम । दायक चारो फल कथा । सत्र मंगल को धाम ॥ श्लोक ॥ मति विपुल विधानैं वर्णित धम माध कल यति परम भक्त्या क्षेत्र महात्म्य मेतत् । य रह नर उदारह श्री सनाथ स्सम्यान्नजति हरि निवास सव भोगाश्च भुक्ती ॥ १ ॥ इति श्री अयोध्या खडे गौरी शंकर संवादे सहाईराम भाषा कृते अयोध्या क्षेत्र महिमा वर्णनो नाम त्रिंशोध्याय ॥ ३० ॥ सं० १९३६ इति समाप्त ग्रन्थोयम् ॥ शुभम् ॥

विषय—श्री अयोध्या क्षेत्र की महिमा का वर्णन ।

संख्या ३०२ रामायण माहात्म्य, रचयिता—शक्तधर (मुरादाबाद, उन्नाव), पत्र—६०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—९७२, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८३ ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० हर विलास सिंह, ग्राम—रानीपुर, डाकघर—जैथरा, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनम अथ रामायण महात्म्य लिख्यते ॥ श्लोक—शम्भो प द युग नमामि सतत सलालित चोमया । शक्तधरमि वंदित भय हर सौख्य कर कामदम ॥ य ध्यात्वा निज मानसेपि मनुजा धान्य धन ऐश्वरे । त वदे कवि वृन्द वंदित मह दारिद्र्य दु खच्छिदे ॥ १ ॥ प्रणम्य सच्चिदानंद श्री राम जगदीश्वरम ॥ श्री रामायण महात्म्य टीकेयं तन्यते मया ॥ २ ॥ दोहा—करि प्रणाम गज वदन विभु सिद्धि सदन सुख धाम । रामायण महात्म्य कर रचौं तिलक अभिराम । कहय प्रथम अध्याय महँ राम कथा सवि धान । जाहि पढ़े जन होत हैं सुखी सुखी मति मान ॥ रहौं जिला उन्नाव महँ ग्राम मुरादाबाद । शुक्ल वंश जनि शक्तिधर कीन्हौं यह अनुवाद ॥ सुनहिं पढ़हि जे प्रेम करि पावैं जन मन काम । उनकहँ कछु दुर्लभ नहीं कृपा करैं श्री राम ॥

अंत—रामकथा का सुनने द्वारा करोड़ों जन्मों के पापों से शीघ्र ही मुक्त हो जाता है । और अंत समय में सात पीढ़ियों सहित मोक्ष को पाता है इस रामायण महात्म्य को मैंने भली भांति तुम लोगों से कहा जिसको पूर्व काल में भक्ति के सहित पूछते हुये सनत कुमार जी से नारद जी ने सुनाया था । इस रामायण में एक श्लोक अथवा आधे श्लोक को पढ़ते हैं उनको कभी पाप बन्धन नहीं होता है । जो प्राणी भक्ति भाव से इस रामायण को सुनते अथवा गाते हैं उनके पुन्य फल की आप सुनिये वे लोग सौ जन्मो के पापों से शीघ्र ही छूट जाते हैं और हजार कुलों के सहित परम पद को प्राप्त करते हैं । प्रति दिन राम कथा को सुनते हुये मनुष्यों को चैत्र मास और कातिक मास में रामायण का कथा रूपी अमृत नवमी के दिन सुनना चाहिये उसी से वह श्रोता पापों से मुक्त हो जायगे । यह राम कथा राम की प्रसन्नता का जनक होकर राम भक्ति को बढ़ाता है और सब पापों को क्षय करता है । जो मनुष्य सावधान हो इस राम कथा को सुनता अथवा पढ़ता है वह सब पापों से मुक्त होकर वैकुंठ धाम को जाता है । चौ०—रामायण महात्म्य

अनूपा। तासु तिलक भाष्यो सुख रूपा। तिलकन मह सिर मौर सुहोई। राम कृपा खिल ससय खोई॥ जो जन पढ़ै सदा मन लाई। तापर दया धरहि रघुराई॥ पुत्र पौत्र धन धान्य समाजा। तासु अलभ्य न एकौ साजा॥ सत्य सत्य जन भाषण येहू। सब तज करिय राम पद नेहू॥ गोपद इव तरिहौं संसारा। ना तरु वह जैहौं मझधारा। जासु न जानत कोऊ प्रभु ताई। सोइ करिहैं द्विज शक्ति सहाई॥ इति श्री रामायण महात्म्य सपूर्ण सवत् १९४० वि०

विषय—रामायण माहात्म्य वर्णन।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता पं० शक्तिधर शुकुल उन्नाव जिला के अंतर्गत मुरादाबाद के निवासी थे। ग्रन्थ संवत् १९४० वि०, चैत्र शुक्ल नौमी को लिखा गया:— रहो जिला उन्नाव महँ ग्राम मुरादाबाद। शुक्ल वश जनि शक्तिधर कीन्हो यह अनुवाद॥

सख्या ३०३. महाभारत (गदापर्व), रचयिता—शंकरदास, पत्र—३६, आकार—८¾ × ६¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११८८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७६ = १८१९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० मचासीलाल, ग्राम—अछनेरा, डाकघर—अछनेरा, जिला—आगरा।

आदि—प्रथम अध्याय लुप्त (द्वितीय अध्याय से उद्धृत पृष्ठ २)॥ दोहा॥ कहतु सगुन कौ पुत्र जहँ। दुर्जोधन तुव काज। पारथ भिस्म समर्थ रन। हौं जीतौं महराज॥१॥ ॥ समानिका॥ चन्द्र वस में प्रसंस। धर्म को करौं विध्वस॥ सावधान है सहिन्द्र। संग राखि फौज वृंद॥ २॥ पंड वंदजे जिजितेक। अगृमो करैं न टेक। भिस्म पंथ सौंल सैसु। आजु ही फते करौंसु॥ ३॥ मकै रनै समाइ जाउ। अगृतै परैं न पाउ॥ सत्ति हौं करौं पतिग्य। देहु मो नृपाल अग्य॥ ४॥ तोटक॥ दुर्जोधन नैन नवाइ रहे। तुव के पितु तैं अति सुष्प लहे॥ तट तैं नहि छाडत मोहि वनै। मम प्रानु वसैं तुमसैं सपेने॥ ५॥

अंत—सपति है सचीर अपार। वाजि वारन देस को मिलै सदा फल चारि॥ वंदि मोच अनेकक सुनितै छुटै वहु तोइ। इक चित्त सुनित्त है सुनि हित भारथ कोइ॥ ३८॥ चामर॥ स्वर्ग के कपाट तान रैहि कौ पुले रहै। येकु हू जुपार भारथै कथा सुनै कहै॥ अष्ट सिद्धि विद्धि पुत्र भक्ति भक्ति विश्नु आइहै॥ अर्थ धर्म काम कौ सनासु मोक्ष पाइहै॥३९॥ ॥ दोहा॥ राजु भयो ध्रुव धर्म कौ। उदै अरत लौ जानि। छत्र फिरै ध्रुव पाल पै। संकर दास वखानि॥ ४०॥ इति श्री महाभारते महा पुराने गदा जुद्धे कवि शकर दास कृते दुर्जोधन जघ भग जुधिष्टिर विजय वर्नन नाम षट वींसमोध्याय॥ २६॥ गदा पर्व समापति सपूर्न मिती फागुन वदि ३० रिवि वासरे सवतु १८७६॥ जथा प्रति तथा लिष्यते॥ श्री राम॥

विषय—महाभारत गदा पर्व की कथा का वर्णन।

सख्या ३०४. करुणा विरह प्रकाश, रचयिता—सेवादास पांडेय, पत्र—९८, आकार—१० × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०७८,

रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८२४ = १७६७ ई०, लिपिकाल १८६२ = १८०५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० महावीर प्रसाद मिश्र, स्थान—मोह० ह लखीमपुर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी ।

आदि—श्री राधा वल्लभो विजयते ॥ श्री महागणपतये नम ॥ अथ करणा प्रकास लिख्यते ॥ दोहा ॥ आरत की आरति हरन । पद परस सुत षड । चरन पद्म धरों । वदो सुन्डा दड ॥ १ ॥ ७लप अकथ अव्यक्त अज । अगुन अनादि अनीह । कछु वरनन करौं । सुफल होत निज जीह ॥ २ ॥ परदै ॥ गौरि गिरीश ईस गण नवाइ । सुमिरि सारदा सरस्वती सुर सरि पाइ । आनद दायक दायक पद जेहि चितवत कृपा कटाक्ष कम्न दुप घेरि ॥ सोरठा ३ ॥ अवगति अकथ अपार । पार न लहि सकै । आनत हृदय अगार । परस जासु होत बानी विमल ॥ ४ ॥—दोहा—प पद्म प्रिया पद्मा युत शुभ चारु । तासु पद्म पद वदि वैं । करौं कथा विस्तार ॥ ५ ॥ गौरि गिरीस इस गण सास नवाइ । सुमिरि सारदा सरस्वती सुर सरि पाइ ॥६॥ ग वरदायक जगत प्रसिद्धि । पर धायक सुप दायक दायक सिद्धि ॥ ७ ॥

अत—सारदा वृन्दावन के जीव पसु । पक्षी नर नारि सब । धारि प्रेम की रहे कृष्ण को धारि उर ॥ १०४ ॥ वे वृन्दावन कुज वोइ जमुना व लता । वोऽ पुज । वै माधो वे राधिका ॥ १०५ ॥ दोहा ॥ येहि प्रकार करणा विरह । बरणो सेव राधा राधारवन मिलि । फिरि य भोग विलास ॥ १०६ ॥ श्री हरि दव विहार को । चरित प्रसिद्ध । कीन्हा सेवादास यह । माफिक अपनी बुद्धि ॥ १०७ ॥ पढ़े र चित्त धरि । चि । तासु को आइ । वरी निरतर सवदा । राधा कृष्ण बनाइ ॥ काव्य रीति जाना नहा । छन्दी भेद न आहि । कविजन लीज्यौ सोधिके । अक्षर ताहि ॥ १०९ ॥ वखे ॥ राधा कृष्ण मनाओ नाओ माथ । मागौं मो वर पावो जो ॥ ११० ॥ राधे रचन चरन मन वन बनाइ । पावौ सा वर जेहि रचि मोहि होइ । विरद राधिये हाठिक अपन मोर । करि उर कृपा चिते करि लोचन कोर ॥ ११२ पालक हो धालक असुर अपार । विरद् मनत अहि बानी सभु वदार ॥ ११३ ॥ राधा वल्लभा चरिते करुणा विरह समाप्त शुभ मस्तु माघ मासे शुक्र पक्षे तिथौ दुतिय भौम वासरे इद पोस्तक लिखित हरी राम दुवे रमुइवा पुर के संवत् १८६२ ॥

विषय—(१) पृ० १ से ६ तक—प्रथम उल्लास । कवि परिचय तः निर्माण काल —विरच्यो विरह प्रकासपाढे । सेवा दासनै । सुनिहैं सहित हुलास, बुध जन भक्त जन ॥ १७ ॥ सरजू तट शुभ थान, मडल अवध पुनीति अति । कीन बखान, सौत ग्राम सुन सरि जहाँ ॥ १८ ॥ राम जन्म महि । अवधहि जान सुजान । सरि सुर पुर सरि करत बखान ॥ १९ ॥ × × सवत् ३ष्टा दस भये विंसति गुरवार । कातिक सुदि एकादशी । लियो ग्रन्थ अवतार ॥ २२ ॥ भूमिका पृ० ६ से १४ तक—द्वि० उ० उद्धव गमन प्रस्ताव व्रज आगमन । (३) पृ० ५४ तक—गोपियों का विरह वणन तृ० उ० (४) पृ० ५१ से ५८ तक—व्रजदर

च० उ० (५) पृ० ५८ से ७२ तक—उद्धव द्वारावति आगमन। ब्रज का समाचार कथन कृष्ण का ब्रज प्रेम में तल्लीन हो जाना। पं० उ० (६) पृ० ७२ से ८६ तक—हरि का कुरुक्षेत्र गमन। और ब्रज वासियो से समागम रुक्मिणी राधिकादि मिलाप प० उ० (७) पृ० ८६ से ९६ तक—कृष्ण का तीर्थ से लौटना। ब्रज वनिताओं का वियोग। रुक्मिणी आदि द्वारा राधा का सत्कार और पारस्परिक विरह दशा वर्णन ग्रन्थ की पूर्त्ति तथा उसके पठन पाटन का फल वर्णन।

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रन्थ के रचयिता पांडेय सेवादास है। इसमें उन्होने भागवत तथा सूर सागर के आधार पर गोपियो के विरह का वर्णन किया है। इसके साथ ही स्पष्ट रीति से यह भी कह दिया है कि उन्होने प्रागन कवि की रचना से भी यथोचित लाभ उठाया है। उनका कथन है कि उक्त ग्रन्थों को पढ कर ही उनके मन में कृष्ण प्रेम जगा। उनके विरह वर्णनो को पढ़कर वे मुग्ध हो गये थे।

सख्या ३८५. राधारहस्य, रचयिता—शीतलप्रसाद (जुरिया, इलाक़ा सडीला, मुतास्सिल रहीमाबाद), पत्र—७६, आकार—८३/४ × ५१/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिणाम (अनुष्टुप्)—१७१७, रूप—प्राचीन, लिपि—फारसी, रचनाकाल—स० १९०६ = १८४९ ई०, लिपिकाल— सन् १२६८ फसली = स० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबू सेवाकुमा रवकील, स्थान—लखीमपुर, डाकघर—लखीमपुर, जिला—खीरी।

आदि—श्रीगणेशाय नमः॥ भगवती स्तुति मंगल॥ नमो भगवती योगमाया नमस्ते नमो खड्गिनी चक्रधारणि तुही है॥ नमो कालिका जालिका जोति ज्वाला नमो जगत् जननी विहारणि तुही है॥ नमो हंस वाहनि वृषासन नमस्ते नमो दीप दुर्गा परारिन तुही है॥ नमो ईसुरी विष्णवी शक्ति ऐनी नमो चन्द्रिका विश्वतारन तुही है॥ नमो गौरिजा सरसुती मातु कमला सकल दैत्य दानव पछारन तुही है॥ नमो भद्रकाले विसाले कराले नमो शंभु दलिनी अघारण तुही है॥ नमो विन्ध्यवासिन जयन्ती नमस्ते नमोदेवि ललिता खरारिन तुही है॥ नमो रुपवन्ती नमो कामवती नमो मोहनी छवि निहारन तुही है॥ नमो मगला पिंगला सुषमना औ नमो गुन्हिका शत्रु मारन तुही है॥ शीतल परो मातु चरनन तिहारे सरण लाज करि गहि उबारण तुही है॥ सोरठा—सुमिरौ प्रथम गनेश। बहुरि सारदा के चरन। वन्दौ गौरि महेस। सुख दायक संकट हरन॥

अंत—दोहा—जाके नाम प्रताप ते। जोग सिद्धि करि लेहु। सो सीतल निसि दिन भजौ। सांचे भरि को देउ॥ नाम दोऊ सुख सार। जो कोऊ ध्यावौ नेमसौ॥ वेदन कीन्ह विचार। जपौ रटौ निज प्रेम सौ॥ राधे कृष्ण राधे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण राधे राधे राधेश्याम राधे श्याम श्याम श्याम राधे राधे॥ दोहा॥ जो कोई होइ बंदि मै। छूटि जाय ततकाल। मन्त्र जपे लीला सुनै। तापर होत दयाल॥ जो बाँचै चित दै सुनै। प्रेम भक्ति सो कोइ॥ श्री राधा परतापते सुनत समूचनसुख होइ॥ लक्ष मंत्र की ध्यान करि। काज सिद्धि कै लेऊ। प्रिय् घरी के भावसो। विप्रन भोजन देउ॥ मन्त्र × × इति श्री ब्रह्मांड पुराने कृष्ण खडे उमा रुद्र सम्वादे राधा कृष्ण विवाह सम्पूर्ण शुभ मस्तु भापा कृत शीतल प्रसाद पण्डित साकिन मौजे जुरिया इलाक़ा संडीला मुत्तसिल रहीमाबाद वखते नाकिस वन्दा

दीनदयाल वल्द भजवन्त राय कायस्थ खरे कानूनगो परगने काकोरी सरकार लखनऊ मसाफ सूबे अवध अख्तर नगर वाके अमावस बदी माह जेठ सन् १२६८ फसली मुताबिक बिस्त हफ्तुम शहर जिलहिज सन् १२७७ हिजरी रोज शबा व इतमाम रसीद ॥

विषय—(१) पृ० १ से ६ तक—देवी स्तुति । राधा का रूप तथा निवास स्थल और देवी तथा गुरु आदि का वर्णन कवि परिचय —नगर रहीमाबाद सुहावन । मोद जन्म भूमि अति पावन ॥ तामें रहैं विप्र सुख रासी । सदा नीति औ धर्म विलासी ॥ सब दिन रंग राग मे बीते । करें परस्पर काम प्रतीते ॥ × × तामें नृप सूबा सिंह मालिक । सदा विप्र गोभक्त प्रतिपालक ॥ उत्तर दिसा कुरैया गाय । तामें है शीतल का ठाय ॥ दोहा सुर सरजी के घाट ५ । विदित दिव्य कसी धाम ॥ तहाँ के ठाकुर भल हैं । परमानन्द उदाम ॥ बच्छ गोत्री बदा । प्रथम त्रिपाठी बदनीया ॥ ज्यों सागर में इस । मुक्ता भाजन पे धरा ॥ गोमस्पा लोक लीला ॥

(२) पृ० ७ से १९ तक—द्वितीय रहस । राधा कृष्ण जन्म कथा वर्णन ।

(३) पृ० २० से ३६ तक—तीर्थ रहस्य लीला ।

(४) पृ० ३७ से ५० तक—राधा कृष्ण विवाह वर्णन ।

५ पृ० ५१ से ६६ तक—गंगा जन्म गोपेश्वर महादेव वर्णन ।

(६) पृ० ६७ से ७६ तक—शेष विवाह सम्बन्ध वर्णन ॥

टिप्पणी—प्रस्तुत ग्रन्थ के रचयिता पं० शीतल परसाद का जन्म स्थान रहीमाबाद नगर के निकटस्थ कुरिया (इलाका सडीला) नामक ग्राम में था । उस समय यह स्थान नृप सूबा सिंह के अधिकार में था । ग्रन्थकार ने नृप सूबा सिंह को बड़ा धर्मात्मा बतलाया है । साथ ही रहीमाबाद की तत्कालीन सुंदर रहन सहन का भी दिग्दर्शन कराया है । सुर सरि के तट वर्तिनी देव कसी नामनी नगरी के बच्छ गोत्रीय ठाकुरों का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है कि त्रिपाठी प्रथम ठाम पूजे गये इससे यह भी झलकता है कि सीतल त्रिपाठी ब्राह्मण ही रहे होंगे ।

संख्या ३ ६ ग दिललगन चिकित्सा, रचयिता—सीताराम वैद्य (लखनपुर), पत्र—९३, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६०, रूप प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७० = १८१३ ई०, लिपिकाल—सं० १८९० = १८३३ ई०, प्राप्तिस्थान पं० रामदुलारे वैद्य ग्राम—मलीहाबाद, डाकघर—मलीहाबाद, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्रीगणेशायनमः अथ दिल लगन चिकित्सा लिख्यते ॥ शंभू सुध दायक गज आनन तिनकू सीस नवाऊ । पुनि देवी की चरन कमल की रज लै हृदै लगाऊ ॥ श्री धन्वंतरि और अश्वनी सुत तिनहू चरण धरि सीसा ॥ कहू दिल लगन चिकित्सा कृपा करें जगदीसा ॥ चारि लाख वैद्यक देसाई जो मुनि कही बखानी ॥ कछुक ग्रन्थ देखे निज गुरु सों तिनकी भाषा ठानी ॥ सरल सृष्टि भाषा जो भासी जब वैद्यक दर्साइ ॥ दरज व्यथा सुनैते उँहै भगवत इच्छा गाइ ॥ प्रथम दूत के लक्षन वर्णन सुन रस रूप उजागर ॥

अति सुन्दर सुजान उज्ज्वल हो चतुरा बुध गुण सागर ॥ होय अकेला मीठा बोलै इस गुण वैद्य बुलावै ॥ फल फूल रुपैय्या वस्त्रादिक सुभ वस्तु लियो कर आवैं ।

अमित ग्रन्थ वैद्यक के जगमें तिनकी भाषा कीनी ॥ चरकादिक जो वैद्य शिरोमणि तिनकी आज्ञा लीनी ॥ हट्टी सिंह सुत पुस्तक कीनी अगनित ग्रन्थन मथि कै ॥ अवगाहन में अजब अनोखो सीस फूल सो कथकै ॥ जो यह ग्रन्थ पढ़ै औ समुझै सुन दिल लगन पियारी ॥ सीताराम कियो यह निश्चै तिनकू व्यथा कहारी ॥ याके तो इलाज अलबेली तैने सब अज माये ॥ यथा युक्त सुन पंकज लोचन मैने तोहि सुनाये ॥ संवत ठारा सै सत्तर महिना सावन अधिक सुहायो ॥ कृष्णत्रयोदसी छैल छबीली चन्द्रवार सु बतायो ॥ त्रिपुर सुन्दरी की कृपा सपूरन ग्रन्थ बनायो ॥ कठिन चिकित्सा सागर प्यारी भाषा कर दर्पायो ॥ पूरण वैद्य सभा के भूषन गौड विप्र गुण दाता ॥ पाठक हठी सिंह सुत नाम है सीताराम विख्याता ॥ शाक्ति उपासक संकर सेवक पढ़ो लिखो अति नाही ॥ जिन यह ग्रन्थ रचो है ताको सदन हसन पुर माही ॥ और भरम भूलो मत कोई सुन दिल लगन पियारी ॥ है दिल लगन उर्वसी नभ की सुदर कुदरत न्यारी ॥ आवै इकली और न कोई निसा समै वो बाला ॥ किया सिंगार बतीसो अभरन ओढ़ै सुरख दुसाला ॥ इति श्री दिल लगन चिकित्सा नाम ग्रन्थ संपूर्ण समाप्त. ॥ लिखत शिवराम वैद्य आषाढ़ कृष्ण पक्ष त्रयो दसी संवत् १८९० वि० ।

विषय—वैद्यक ।

संख्या ३०६ बी. दिललगन चिकित्सा, रचयिता—सीताराम (हसनपुर), पत्र—९६, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७० = १८१३ ई०, लिपिकाल—सं० १९२९ = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला भगवती प्रसाद वैद्य, ग्राम—वकौठी, डाकघर—सिकंदरपुर, जिला—सीतापुर ।

आदि—अथ दिल लगन चिकित्सा लिख्यते ॥ दोहा ॥ शंभु बुध-दायक गज आनन तिनकू सीस नमाऊ ॥ पुनि देवी की चरण कमल की रज ले हृदै लगाऊं ॥ श्री धन्वन्तर और अश्वनी सुत तिनहुं चरण धरि सीसा ॥ वहूं दिल लगन चिकित्सा प्यारी करै कृपा जगदीसा ॥ चार लाख वैदक दर्साई जे मुनि कहो बखानी ॥ वछुक मत्र देखे निज गुरु सौ तिनकी भाषा ठानी ॥ सकल सृष्टि बाधा जो नासी जन वैद्यक दर्साई ॥ देहज व्यथा सुनै ते जेहै भगवत इच्छा गाई ॥ प्रथम दूत के लक्षण वर्णन सुन रस रूप उजागर ॥ अति सुन्दर सुजान उज्जल हो चतुरा बुध गुण सागर ॥ होय अकेला मीठा बोलै सगुण वैद्य बुलावै ॥

अंत—फल फूल रुपैया वस्त्रादिक सुभ वस्तु लिये कर आवै ॥ जान लई वैदक में मैने अधिक निठुरता तेरी ॥ ऐसी तै कहि चतुर सिरोमणि मोको नीद घनेरी ॥ यह दिल लगन चिकित्सा अब गिन याद करो इन तेले ॥ तेरे प्रश्न किये ते प्यारी वर्णन कीने मैने ॥ अमित ग्रन्थ वैद्यक के जग मे तिनकी भाषा कीनी चरका दिक जो वैद्य सिरोमणि तिनकी

आज्ञा लीनी ॥ हट्टी सिंह सुत पुस्तक कीनो अगनित ग्रन्थन मथि के ॥ अवगाहन में अजब अनोखो सीस फूल सो कथके ॥ जो यह पढ़े अरु समझे सुन दिल लगन पियारी ॥ सीताराम कियो यह निश्चै तिनकू व्यथा कहारी ॥ याके तो इलाज अरवली तैने सब अजमायो ॥ यथा युक्त सुन पकज लोचन मैं तोहि सुनायो ॥ सवत अठारा स सत्तर महिना सावन अधिक सुहायो ॥ कृष्ण त्रयो दसी छैल छवाली चद्रवार सु बतायो ॥ त्रिपुर सुन्दरी की कृपा सपूरन ग्रन्थ बनायो ॥ कठिन चिकित्सा सागर प्यारी भाषा कर दर्षायो ॥ पूरण वैद्य सभा के भूषण गोड विप्र गुड दाता ॥ पाठक हट्ठी सिंह सुत नाम हैं सीताराम विख्याता ॥ शक्ति उपासक सकर सेवक पढ़ी लिखो अति नाहीं ॥ जिन यह ग्रन्थ रचो है ताको सदन हसनपुर माहीं ॥ और भरम भूलो मन कोइ सुन दिल लगन पियारी ॥ है दिल लगन उबसी नभ की सुन्दर कुदरत न्यारी ॥ आवे इकली और न कोई निसा सभै वो चाला ॥ किया सिंगार बतीसा अभरन ओढ़ो सुरख दुसाला ॥ इति श्री दिल लगन चिकित्सा सपूण समाप्त सवत १९२९ भाद्र पद शुक्ल पक्ष अष्टमयाय ग्रन्थ सपूण दसखत बैजनाथ पाठक ॥ श्री राम जी ॥

विषय—वैद्यक ।

सख्या ३०६ 'सी' दिल लगन चिकित्सा रचयिता—सीताराम वैद्य (हसनपुर), पत्र—९६, आकार—१२ × ८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७० = १८१३ ई०, लिपि काल—स० १८९६ = १८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—वैद्य रामलाल शर्मा, ग्राम—निहालगज, डाकघर—धूमरी, जिला—एटा ।

श्री गणेशाय नम ॥ अथ वैद्यक ग्रन्थ सीताराम विरचिते दिल लगन लिख्यते ॥ शम्भु बुध दायक गज आनन तिनकू सीस नवाऊ ॥ पुनि देवी की चरण कमल की रज लै सीस चढ़ाऊ ॥ श्री धनवन्तर और अस्वनी सुत तिनहु चरण धर सीसा ॥ कहू दिल लगन चिकित्सा प्यारी कृपा कर जगदीसा ॥ चार लाख वैदक दरसाई जे मुनि कहीं बखानी ॥ कछुक ग्रन्थ दख निज गुर सों तिनकी भाषा ठानी ॥ सकल सृष्टि व्याधा जो नासी जब वैदक दरसाई ॥ देहज व्यथा सुने ते जे हैं भगवत इच्छा गाई ॥ प्रथम दूत के लक्षण वणन सुन रस रूप उजागर ॥ अति सुदर सुजान उज्जल हो चतर बुध गुण सागर ॥ होय अकेला मीठा बोले इस गुण वैद्य बुलावे ॥ फल फूल रुपैया वस्त्रादिक शुभ वस्तु लियो कर आवै ॥ शुभ रहस्य लक्षण उज्वल हों तावे तो सग जाई ॥ जो हो हीन अग अरु मैलो वैठ इकतर रहिये ॥ शस्त्र बाध कर आवे जो नर आनद कद छबीली ॥ ताके सग कबहु नहिं जैइये सुनले रग रगीली ॥

अत—सवत् अठारै सै सत्तर महीना सावन अधिक सुहायो ॥ कृष्ण त्रयोदशी छैल छबीली चन्द्रवार सु बतायो ॥ त्रिपुर सुन्दरी की किरपा सपूरण ग्रन्थ बनायो ॥ कठिन चिकित्सा सागर प्यारी भाषा कर दर्शायो ॥ पूरण वैद्य सभा के भूषण गोड विप्र गुण दाता ॥ पाठक हठी सिंह सुत नाम है सीता राम विख्याता ॥ शक्ति उपासक सकर सेवक

पढ़ो लिखो अति नाही ॥ जिन यह ग्रन्थ रचो है ताको सदन हसन पुर माही ॥ और भरम भूलो मत कोई सुन दिल लगन पियारी ॥ है दिल लगन उर्वसी नभ की सुन्दर कुदरत न्यारी ॥ आवै इकली और न कोई निसा समै वो बाला ॥ किया सिगार बतीसो अभरन ओढ़ो सुरख दुसाला ॥ इति श्री दिल लगन चिकित्सायां ग्रन्थ सपूर्ण लिखितं शिव नारायण चैत्र वदी छठ संवत् १८९६ वि० ॥

विषय—वैद्यक।

संख्या २०७ ए. कवि तरग, रचयिता—सीताराम (रोपड , पत्र—११६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६० = १७०३ ई०, लिपिकाल—सं० १८६९ = १८१२ ई०, प्राप्तिस्थान—सेवाश्रम पुस्तकालय, ग्राम—नौरलपुर, डाकघर—उमरगढ़, जिला—एटा।

आदि—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ कवि तरग भाषा लिख्यते ॥ दोहा—प्रथम नमो परमात्मा। वहुरो शारद माय। शिव सुत पद परताप ते। भाषा कहो बनाय ॥ मारग सित तृतिया असित। सोम दिवस शुभ वार। एकादश संवत समय। और साठ निरधार ॥ देखी तिब्ब सहाव की। उपज्यो मन आनन्द। अर्थ फारसी कठिन ते। सुगम बनाये छन्द ॥ ब्राह्मण तिरखे वंश में। केशव सुत कविराम। रोपड में भाषा करी। कवि तरंग धरि नाम ॥ कवि सी मति भाषा करी। तर्क न कीजै कोय। ज्यों दीपक के दीप है। घट उपज्यो तन होय ॥ चरक आदि ते ग्रन्थ लै। देखे उदधि समान। उनमें सार निकारि के। रतन गहे जिय जान ॥ रोग हरण अरु सुख करण। रतन औषधी सोय। सेवे प्रति दिन मनुज जो। रोग व्याधि को खोय ॥ व्याधि हरण नर होय जो। करै भक्ति करतार। युवती आदिक सुख करै। भोग सार ससार ॥ याते पहिले देह की। करो सदा प्रति पाल। जो कवहूं गिरि जाय तो। बहुरि न पावै काल ॥

अत—अथ शस्त्र मंज्जन प्रतीकार ॥ दोहा—हंडौली का तेल कर। मलै शस्त्र पर कोय। जगाल मोरचा न लगै। बरस काल जो होय ॥ रापै गेहूं रास में वरस काल के मांहि। मैल मोरचा ना लगै कह्यौ कपट कछु नाहिं ॥ संवत—गये जो बिक्रम बीर विताय। सत्रह सै अरु साठि गिनाय ॥ मकर कृष्ण तृतिया परधान। शुभ नक्षत्र भृगु वासर जान ॥ कह्यो सुगम कवि सीताराम। सब काहू के आवै काम। कष्ट हरण है सुख का धाम। कवि तरंग राख्यो इहि नाम ॥ दोहा—अर्थ फारसी कठिन ते। भाषा कही बखान। ताते छमियो सकल कवि। चूक परै कवि आन ॥ चौ०—खंड दीप मुनि दोहा जान। कवि तरग में कहे वखान ॥ थान खड राम चौपाई। संख्या ग्रन्थ यहे सुबताई ॥ रोग निधान औषधी कही। कवि तरंग में जानो सही ॥ समझ चिकित्सा करै जो कोय। ताको अपजस कबहु न होय ॥ दो०—किंचित लाभ न कीजिये। धर्म अर्थ पहिचान। दीजै औपधि दया करि। श्री पति कह्यो वखान ॥ इति श्री कवि तरग सीताराम विरचिते रोपड स्थाने समाप्तम्। लिखा श्याम लाल वैश्य मिती वैसाख सुदी पूर्ण मासी संवत् १८६९ वि० राम राम राम—

विषय—वैद्यक ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता सीताराम केशव के सुत थे। ग्रन्थ रौंपड़ में रचा गया —ब्राह्मण तिरपे वंश में केशव सुत कवि राम रौंपुड़ में भाषा करी कवि तरंग धरि नाम ॥ निर्माण काल संवत १७६० वि० है । इसको इस प्रकार वर्णन किया है —गये जो विक्रम वीर बिताय । सत्रह सै अरु साठ गिनाय ॥ मकर कृष्ण तृतिया परधान । शुभ नक्षत्र भृगु वासर जान ॥ कह्यौं सुगम कवि सीताराम । सब काहू के आवे काम ॥ लिपिकाल संवत् १८६९ वि० है ।

संख्या ३०७ बी. कवि तरंग, रचयिता—सीताराम (रौंपड़), पत्र—११६, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४३६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६० = १७०३ ई०, लिपिकाल—सं० १८८८ = १८३१ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला हरकिसनराय वैश्य, ग्राम—जाजामऊ, डाकघर—हाथरस, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ कवि सीता राम कृत कवि तरंग लिख्यते ॥ दोहा—प्रथम नमो परमातमा । बहुरो शारद माय । शिव सुत पद परताप तें । भाषा कहीं वनाय ॥ मारग सित तृतिया असित । सोम दिवस सुभ वार । एकादश संवत् समय । और साठ निरधार ॥ देखी तिब्ब सहात की । उपज्यो मन आनंद । अथ फारसी कठिन ते । सुगम बनाये छन्द ॥ ब्राह्मण तिरपे वंस में । केशव सुत कविराम । रौंपुड़ में भाषा करी । कवि तरंग धरि नाम ॥ कवि सीपतिभाषा करी । तर्क न कीजे कोय । ज्यौं दीपक के दीप है । घर उपज्यो तन होय ॥ चरक आदि ते ग्रन्थ है । दूले उदधि समान ॥ उनमें सार निकारि कै । रतन गहे जिय जानि ॥ रोग हरण और सुख करण । रतन औषधी सोय । सेवे प्रति दिन मनुज जो । रोग व्याधि को खोय ॥ व्याधि हरण नर होय जो । करै भक्ति करतार । सुन्दरी आदिक सुख करे । भोग सार ससार ॥ याते पहिले देह की । करो सदा प्रति पाल । जो कबहु गिरि जाय तो । बहुरि न पावे काल ॥

अंत—शीतला फोरा का उपाय । मगर का पिता ४ माशे कलमी शोरा ४ मासे । संग बसरी ४ मासे । रतन जोति ४ मासे । गमीरी ४ माशे । समुद्र झाग ४ माशे । चीनी पियाला असल पुराना ८ माशे । सीपी का चूना बीच रगर के निकाले ८ माशा मोती अनछेदे १माशा । सफेद मिरचा । दक्षिणी दान १६, संगि समाक का खरले होवे या सवज पत्थर का खरल होवे उसमें सब औषधे डाल के सौ नीबू कागजी के रस से खाल करैं २० दिन फिर नीबू के दुके के पेंदे को चौकोना चौकोना रुपया यानी अकबर शाही लगाय कासे के बर्तन में ५० नीबू के रस में खरल करे २० दिन गोलियां बना रखे फेर पानी से घिस के तांबे की सलाई से नेत्रों में लगावे दूध भात पथ्य करे शीतला का फूला तिमिरि पुष्प धुंध सब रोग जाय ॥ अथ संवत् कथित ॥ गये जो विक्रम वीर बिताय । सत्रह सै अरु साठि गिनाय । मकर कृष्ण तृतिया परधान । शुभ नक्षत्र भृगु वासर जान ॥ कह्यौं सुगम कवि सीता राम । सब काहू के आवे काम । अथ फारसी कठिन ते । भाषा कही बखान । ताते छमियो सकल

कवि। चूक परै कहु आन ॥ इति श्री कवि तरंग कवि सीताराम विरचिताया रौपट अस्थाने संपूर्ण समाप्तः सवत् १८८८ वि० राम राम

विषय—वैद्यक।

संख्या ३८७ सी. कवितरंग, रचयिता—सीताराम (रौपड), पत्र—१२४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९९६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी रचनाकाल—सं० १७६० = १७०३ ई०, लिपिकाल—स० १८९६= १८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—रामजीवन वैद्य, ग्राम—पचौली, डाकघर—मरहरा, जिला—एटा।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ श्री कबि सीताराम कृत कवितरग लिख्यते ॥ दो०—प्रथम नमो परमातमा। बहुरो शारद माय। शिव-सुत-पद परताप ते। भाषा कहौ बनाय ॥ मारग सित तृतिया असित। सोम दिवस सुभ वार। एका दश संवत् समय। और साठ निर धार ॥ देखी तिब्ब सहाय की। उपज्यो मन आनन्द। अर्थ फारसी कठिन ते। सुगम बनाये छन्द ॥ ब्राह्मण तिरपे वंश में। केशव सुत कवि राम ॥ रौपुड में भाषा करी। तर्क न कीजै कोय। ज्यौ दीपक के दीप है। घट उपज्यो तन होय ॥ चरक आदि ते ग्रन्थ लै। देखे उदधि समान। उनमें सार निकारि कै। रतन गहे जिय जानि ॥

अंत—अथ संवत कथितं—गये जो विक्रम वीर विताय। सत्रह सै अरु साठि गिनाय। मकर कृष्ण तृतिया परधान। शुभ नक्षत्र भृगु वासर जान ॥ कह्यौ सुगम कवि सीता राम। सब काहू के आवै काम। कष्ट हरण है सुख का धाम। कवि तरग राख्यौ यहि नाम ॥ दो०—अर्थ फारसी कठिन ते। भाषा कही बखान। ताते छमियां सकल कवि। चूक परै कहु आन ॥ चौ०—पंड द्वीप मुनि दोहा जान। कवि तरंग मा कहे वखान ॥ थान पड राम चौपाई। संख्या ग्रन्थ यहै सु वताई। रोग निधान औषधी कही ॥ कवि तरंग में जानौ सही ॥ समझ चिकित्सा करै जु कोय। ताको अपजस कबहु न होय ॥ दो०—किंचित लोभ न कीजिये। धर्म अर्थ पहिचान ॥ दीजे औषधि दया करि। श्रीपति कह्यौ बखान ॥ कवितरंग सपूर्ण समाप्तः सवत १८९६ वि०।

विषय—वैद्यक।

सख्या ३०८. प्रभाती भजन, रचयिता—सीताराम, पत्र—३२, आकार—८ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९७२, खडित लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३० = १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामशंकर वैद्य, ग्राम—धनरायपुर, डाकघर—मल्लावा, जिला—एटा।

आदि—जागिये कृपानिधान जान राय रामचन्द्र जननी कहत बार बार भोर भयो प्यारे राजिव लोचन विसाल पीत वापिका मराल ललित कमल वदन ऊपर मदन कोटि वारे ॥ उदित अरुण विगत सर्वरी ससांक किरन हीन दीन दीप ज्योति मलिन दुति समूह तारे ॥ मानो ज्ञान घन प्रकास वीते सव भवविलास आस त्रास तिमिरि तोप तरनि तेज जारे ॥ बोलत खग मुखर निकर मधुर कर प्रतीत सुनो श्रवण प्राण जीवनधन मेरे तुम वारे ॥ मनो वेद बंदी मुनि सूत मागधादि विरद वदत जय जय जय जयति कैट भारे ॥

विकसत कमला वली चले प्रपुञ्ज चचरीक गुजत कल कोमल ध्वनि त्याग कज सारे ॥ मनो विराग पाय सकल सोक कूप ग्रह विहाय भृत्य प्रेम मत्त फिरत गुणत गुण तिहार ॥ सुनत वचन प्रिय रसाल जागे अतिसय दयाल भागे जजाल विपुल दुख कदब टारे ॥ तुलसि दास अति अनद देखि के मुखार विन्द छूटे भ्रम फद द्वद परम मद भारे ॥

अत—प्रभु मेरी नाव उतारो पार । वलिहारी नन्द कुमार ॥ भव सागर ससार अगम है । तिरछी जाकी धार ॥ पार उतारन कठिन भयो है । सूझत वार न पार ॥१॥ लोभ मोह के बादल उमड भयो महा धुध कार । काम क्रोध पवन सग लीने बरसत ह हकार ॥ २ ॥ डोलत ह यह नाउ पुरानी भवसागर मझधार ॥ बिजली चमकत बादल गरजत लाज तजिया हमार ॥ ३ ॥ दीन दयाल भरोसे तेरे चढाया सब परि वार ॥ इस बेडे को पार उतारो हे दयाल करतार ॥ महा मली में कपटी कामी तुम्हरो दरसन हार ॥ रप चद निज ठार नही कोऊ नाम तेरा आधार ॥ प्रभु मेरी नाव उतारो पार ॥ ४ ॥ मन राम सुमिरि पछु तायगा ॥ पापी जीउडा लोभ करत है आज कल्ह उठ जायगा ॥ लालच लागे जन्म गवायो माया भरम भुलायगा ॥ धन जोवन का गर्व न करिये कागज सा गल जायगा ॥ सुमिरन भजन दया नहि कीनी तामुख चोटा खायगा ॥ धर्म राय जब लेखा मागे क्या मुख लेकर जायगा ॥ कहत कबीर सुनो भाइ साधा साध सग तर जायगा ॥ मन राम सुमिर पछ तायगा ॥ इति श्री भजन प्रभाती सपूर्णम् लिखत बाबूलाल वैश्य कसहेट बाजार का रहवे वारा सवत मिती वैसाख वदी ७, १९३० वि० ।

विषय—इस ग्रन्थ में गो० तुलसीदास, सूरदास, प्रेमदास, कबीर दास, मीराबाई, रूपचन्द, रामनाथ आदि अनेक कवियो के रचे हुये भजन प्रभाती सगृहीत हैं ।

सख्या ३०. औषधि यूनानीसार, रचयिता—सिवगोपाल (दिल्ली), पत्र—९०, आकार—१०×८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८० = १८२३ ई०, लिपिकाल—स० १९०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—वैद्य शिवदयाल, ग्राम—नीमखापुरा, डाकघर—जलाली, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ औषधि यूनानी सार लिख्यते ॥ शिवगोपाल दिल्ली निवासी कृत ॥ रस निस गोली—अकर करा काली मिच सोठि तज दार चीनी जाफ रान मोथा पिपला मूर जायफल जाविश्री सालब मिश्री बहमन सफेद व सुख मस्तगी इन्द्र जो पोस्त तुरज मुनक्का गोंद बबूल सब चीजें बराबर २ तोल के बारीक पीस के गोली चने के बराबर बनाव मगर गोंद को भून ले । खुराक एक से पाच गोली तक ॥ फायदा—बलगम को दूर करे और हाजिम है ॥ मरदों के काम की गोली—अफीम जायफल मुश्क काफूर बराबर ताल के पीसले और बगला पान के रस में चार चार रत्ती की गोली बनावे । जब मद औरत के पास जाव तब एक गोली खाय ले । ये गोली इम्साक पैदा करती हैं । गोली जिरयान की—धतूर के बीज, काली मिच ६ ६ मासे पीसके चने के बराबर गोली बनावे और एक रोज सोंफ सी.ह के साथ खाया करे—फायदा जिरियान मनी के वास्ते जीयाम मुफीद है ॥

अंत--गंधक का तेल--यह तेल खुजली के वास्ते मुफीद है ॥ गधक को दो दिन तक मदार के दूध मे पीसे और छाया में सुखादे फिर एक वर्त्तन में पानी भरके उसमें गंधक डालदे ॥ और चार पहर तक मद्दी मद्दी आंच दे जोश दे जब तेल पानी के ऊपर मालूम होवे तो कांसे की थाली में उतारता जावे ॥ रोगन पन वाड ॥:--खारिश के वास्ते मुफीद है पनवाड के वीज १ सेर गधक गंधक १ तोला पीस कर २ सेर दूध और पावसेर घी में पकावे । जव दूध जल जावै औरोगन रह जावै तव काम में लावै ॥ मरहम कौंच ॥ घाव को जल्दी भरता है । कोच की गिरी पांच तोले पीसकर ४ तोले मोम और नीम के पत्ते पावभर मीठे तेल में पकावै फिर घोट ले--मरहम पियाज साबुन कत्था सफेद चार चार तोले नीम ११ पत्ते मीठा तेल ४ तोले सव चीजै तेल में जरावै फिर कत्था पीस के मिलादे ॥ मरहम अरंडी--इसका तेल को पल का रस पाव पाव सेर आग पर जलावै जव तेल रह जावै तब एक तोला पत्थर का चूना वारीक पीस मिलादे ॥ मरहम अलसी ॥ कमीला मोम चार चार तोले तेल अलसी पाव भर पकावै मगर कमीले को पीसे यह मरहम घोडे की पीठ और घाव को मुफीद है ॥ इति किताव यूनानी औषधि सार संपूर्ण लिखतं राम वली पंडित दिल्ली निवासी चैत्र मासे कृष्ण पक्षे दिन चन्द्र वासरे संवत १९०० वि० ॥

विषय यूनानी वैद्यक ।

संख्या ३१०. शृंगार सार, रचयिता—शिवगुलाम (बेथर, उन्नाव), पत्र—३८, आकार—६ X ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० रामप्रसाद दुवे, ग्राम --पीर का नगरा, डाकघर-पटियाली, जिला—एटा ।

आदि—अथ श्रृंगार सार लिख्यते ॥ दोहा—जन हित जीवन मूरि जग । विपति विदारन हारि । जयति जयति जय जयति जय । श्री वृषभान कुमारि ॥ श्री वृषभान दुलारि के । पद वंदौ कर जोर । जे निसि वासर उर धरै । वृज वसि नन्द किसोर ॥ कवित्त—दास दुख मोचन सुरोचन सुभग तन आंगुरी नखन युत मंजु पोर पोरी के ॥ ऐडिन गुलफ सुभ शुलफ सुरज भरे विहरे अश्य रूप वर वृज खोरी के ॥ ललित के जीवन सुकज के वरन चारु सुखमा भरन और करन चित्त चोरी के । वंदत चरन भव हरन सुभाव भरे नवल किशोर अरु नवल किसोरी के ॥ कल्प लता के कीधो पल्लव नवीन दोई हरन मजुता के कजता के वनिता के हैं ॥ पावन पतित गुन गावै मुनि ताके छवि छलै सविता के जन ताके गुरु ताके है ॥ नवो निधिता के सिद्धिता के आदि आलै हठी तीनौ लोक ताके प्रभु ताके प्रभु ताके है ॥ कटै पाप ताके वढ़े पुन्य के पताके जिन ऐसे पद ताके वृषभान की सुता के हैं ॥

अत—मोतिन की माल तोरि चीर सब चीर डारे फेरि कै न जैहौं आली दुख विकरारे है ॥ देवकी नंदन कहैं धोखे नग चोचनि सों अलक प्रसून नोचि नोचि निरधारे है ॥ मानि मुख चंद चोहैं दीनी अधरनि आन तीनों ये निकुंजन में एकै तार तारे है ॥ ठौर ठौर डोलत मराल मतवारे जैसे मोर मतवारे त्यो चकोर मतवारे हैं ॥ १ ॥ औचक अकेली

बरसाने की डगरि भूल भावरें भरी में भोर माधवी लतन में ॥ कवि लछिराम तौलों पीछे ते विथोरि लट बेशर मरोन्यो हार तोन्यो छली छन में ॥ नरान चपेटे कुच फारे कचुकी के बीच आइ केहू लाल मुख विलसन में ॥ वीन उन जाइयो परेते परदस वसै वानर विसासी बजमारे मधुवन में ॥ २ ॥ सवैया—सब भांति सुपास तुम्हें इहि ठाम अराम करौ चित चावन में । कित जाउगे साझ समय सुनिये अधियारी असूझ भया वन में ॥ हम रहू पिया परदश वसें इहि हेत कहा सत भावन में ॥ चगलाल बटोही हमारे बसो धुरवान की धावन सावन में ॥ ३ ॥ फूलि रहे कचनार अनार हजार सो रग विरग अवास है ॥ मजुल मजु दली कदली बनी और थरी रचि मैन मवास है ॥ सो मदनेश जू सीतल मंद सुगधित पौन हू पौन प्रकास है । वाग घनी है घनी वना कुज विदेशी तुम्हें सब भाति सुपास हे ॥ ४ ॥ इति श्री शृगार सार सपूण समाप्त ॥

विषय—शृगार रस के कवित्त और सवैया ॥

सख्या ३११ रसरजन, रचयिता—शिवनाथ, पत्र—२७, आकार—८ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८०, लिपि– नागरी, लिपिकाल—सं० १८४६ = १७८९ ई०, प्राप्तिस्थान –रामनारायण पटवारी, ग्राम—हरपुर डाकघर—बारहद्वारी, जिला—एटा ।

आदि – श्री गणेशाय नम ॥ अथ रस रजन शिव नाथ कृत लिख्यते ॥ कवित्त—चदन चढ़ाइ चारु फूलन के आसन पै आरती सवारि गुन गावती घनर हैं ॥ कहे शिवनाथ साथ राधिका किशोरी जोरी राखि हिय अन्तर निरतर न थर हैं ॥ पौरिहा तिहार हम चौरिहा तिहारे राज हम छत्र धारी ज्योति हारी प्रीति घेर है ॥ आस पास हेर मेरे साहिब रसिक राज दास हम तेर हैं खवास हम तर है ॥ दोहा—रति को थाई भाव सो । सोई है शृगार । ताहि कहत कवि द्वै तरह जोग विजोग विचार ॥ आलबन शृगार को कही नायिका आदि । ऐसे सब कवि कह गये प्रथम नाहिं अविवाद ॥ त्रिगिधि महामाया भई तीनि भेद परगास । स्वेया पर कीया कही पुन जोपिता विलास ॥ तीन्यो के भेदनि रहे तानि लोक परिपूर याहि ते उपजत जगत यही सजीवन मूर ॥ याके भेदनि को कहे ताके तेतो ज्ञान जानि पऱ्यो सो कहत हौं लक्षन समुझि सुजान ॥

अत—उत्तम जथा कवित्त—भाग रस भसे वहु नागिन नवोढ डसे अति शोभ लसे अग अग रस भोये हैं ॥ एक हाथ हाल लाने फूलन की माल लीने एक हाथ प्याला लीने देपि नैन जोये हें ॥ कहे शिवनाथ नाथ धन द धनद सम दूरि कीनो रोस रस आन द समोये हैं मारगना पावे मानौ माननी के कान लगे काननि सो कोमिला को ऐक हैं को ये हैं ॥ मध्यम जथा ॥ दो०—प्यारी जू के कोप में मनको जानें भाव । अग चेष्टा रूप लखि सोई मध्यम राव ॥ कवित्त—बोले न मधुर बेन खोले न बदन चन्द चद कहा भयो सासनि उसासनि सरति हे ॥ अगुली तरजक कर पलव सौं बर जीत कहा भयो दातनि सों अधरा दुसति है ॥ कहे शिवनाथ जो पै साजि के सिगार दैठी अतर क प्रेम सों निरतर वसति हे ॥ ऐसे कोप कोमल में रस वरसति कसि कचुकी कसति ठकुराइनि लसति हे ॥ इति श्री रस

रंजने श्री कृष्ण विलासे शिवनाथ विरचिते नाइका भेद समाप्ते । शुभं भूयात ॥ लेपक स्तुति कवित्त—संवत् रस वेद और भुजंग चन्द्र क्रम ही ते धरीजै अंक वाम मारग सुभाइ सों ॥ ससि ससि मुनि भूमि अंक साके को नीकी भांति लीजियो विचारि पुनि चाहिये गुनाइ सो ॥ माघौ सित पक्ष आइ दशमी को चन्द्र वार ताही दिन पूरन कै लिपिहो भुलाइ सो ॥ कहि जगरूप क्षमा कीजियो कछुक चूक परै सम्हांरो चितु लाइ सो ॥ श्री राधा कृष्णायनमः

विषय—नायिका भेद ।

संख्या ३१२. मनु धर्मसार, रचयिता— राजा शिवप्रसाद (बनारस), पत्र—२२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०८, रूप—प्राचीन, लिपि— नागरी, लिपिकाल—सं० १९१३ = १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला दरगाही लाल कुरमी, ग्राम—बीबीपुर, डाकघर—बिल्हौर, जिला—कानपुर ।

आदि— श्री गणेशायनमः अथ मनु धर्म सार लिख्यते ॥ मनु जी एकाग्र चित्त बैठे हुए थे । महर्षियो ने उनके पास जाय के और महा न्याय प्रति पूजा करके कहा हे भगवन सब वर्णों का और सब अंतर प्रभवो का धर्म क्रम से ठीक २ हम सब को कहिये ॥ जब उन महात्माओं ने महा तेजस्वी मनु जी से यह पूछा तब मनु जी ने उन सब महर्षियों से पूजा करिके कहा कि सुनिये । यह सब जगत पहिले तम अर्थात् अंधेरा था न वह जाना गया था न उसका कुछ लक्षण करने के योग्य था न जानने के योग्य था । मानव नीद में सोया हुआ था । फिर जब महा भूतादि अर्थात् पृथ्वी अप तेज वायु आकासादि से प्रगट है प्रभाव जिसका तम को दूर करने वाले अव्यक्त स्वयभू भगवान इस जगत को व्यक्ति अर्थात् प्रगट करता हुआ जो भगवान जितेन्द्रियों का ग्राह्य सूक्ष्म अव्यक्त सनातन अचिंत सर्व भूत मय है सोई आप से आप प्रगट हुआ ।

अंत—नीच जाति होके हम बड़ी जाति हैं ऐसा झूठ बोलना राजा के समीप किसी पर दोष कहना । गुरू से झूठ बोलना ये सब ब्रह्म हत्या के समान है । साक्षी होकर झूठ बोलने मे गुरू को मिथ्या दोष लगाने में स्त्री के बध में और मित्र के बध में जिसकी वाणी मन शरीर ये सब क्रम से निषिद्धि कथन असतह्य कल्प निषिद्धि व्यापार उनका त्याग किये हुये है वही त्रिदंडी कहाता है । क्योकि दमन से दड है सो जिसने तीनो से तीनो वस्तु का दमन किया वही त्रिडडी है । संपूर्ण जीवों में इन तीनो दड को स्थापन करके और काम क्रोध को रोक के सिद्धि को पाता है । इति श्री मानव धर्म सार संपूर्ण समाप्तः लिपतं गौरी शंकर पाडे वेहरा ग्राम निवासी संवत् १९१३ वि० ॥ राम राम राम ॥

विषय—मनुजी के धर्म शास्त्र का हिन्दी भाषा में अनुवाद ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता राजा शिवप्रसाद थे । ये बनारस निवासी, संवत् १८८० से संवत् १९५२ तक वर्तमान थे । ये बीबी रत्न कुँवरि के पुत्र थे । लिपि काल संवत् १९१३ वि० है ।

संख्या ३१३ ए. वैद्यक संग्रह, रचयिता—शिवराम शास्त्री, कागज—पुराना, पत्र—३६, आकार—७३/४ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—१२६०, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२७ = १८७० ई०, लिपि काल—सं० १९२७ = १८७० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चिरंजीलाल वैद्य, स्थान और डाक घर—बेलनगंज आगरा, जिला—आगरा।

आदि—श्री मते रामनुजाय नमः अथ अतीसार की दारू ॥ जावित्री जायफल सोंठ सोथा, इन्द्रा जव, राल, पनीय सुपारी, पाठ उहबेरी, भाग, कुचला, मुरदा सिंह बासे की छाल, मिरच लोद आम की गुठली बंस लोचन केसरि अनार की कली बबूर के फूल वर की जटा नारीयर की जटा खपरीया सर्व समान लय चूर्ण करै पोस्त के पानी में पीसि गोली लघु बेर प्रमान बाँधे गोली एक सद पानी सो खाइ जाय तो सब अतीसार जाय। पथ मसूर की दार ॥

अंत—श्री श्री १०८ श्री निवास श्री मते रामानुजाय नमः श्री १०९ श्री रङ्ग देशिक तर बड़ी हुले वर्यनि परम गुरुभ्यो नमः श्री इतु श्री लाला गुरु योगी विर चित श्री श्रवण पठनाभ्या धर्म्म निखिल फल प्रद श्री कृष्ण कथा व्रत क ह्स्तमाचाय सहायेन कल्याण शिवराम शास्त्रि सम्य करि कृत्य केशव सुद ली वर्येण चिन्तादि पेटि काय प्रभाकर मुद्राक्षर शालाया क्रोधन संवत्सर कन्या शुक्ल त्रयोदश × × श्री विंद्रावन प्रति श्री रंग स्थली हस्त संवत् १९२७ फाल्गुण मास शुक्ल पक्षि में समाप्त। लिखित मिद ॥

विषय—वैद्यक के नुसखे तथा तंत्र और मंत्र।

संख्या ३१३ बी. वैद्यक, रचयिता—शिवराम, पत्र—६४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६०९, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान लाला राजकिशोर, ग्राम—जाहीदपुर, डाकघर—अतरौली, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ वैद्यक शिवराम कृत भाषा लिख्यते ॥ प्रथम नमस्कार के दोहा —प्रथम गवरि गनेस सरस्वति आज्ञा पाऊ। हों आधीन मति हीन बरन करि सके कहा लौ तुम गुन अपरपार ॥ व्याप रहे त्रिभुवन जहा लों ॥ गुरु आज्ञा बिनु कछु नहिं होई। चार रितु प्रगट कर कहे अब सुनो सब भेद ॥ 'अथ रित विचार बरनन ॥ शिशिर रितु में चार कोठा है एक कोठा में अग्नि है तहा ते धुआ लगत है ॥ प्रथम जल को कोठा ताके द्वै रग हैं सो ऊपर को चलि दूसरे कोठा में अन्न रहत है तिसरे में जायके भस्म होत है चौथे में मल बधत है दो नीचे को चलि एक दाहिनीं ओर दूसरा बाईं ओर नीचे की है सो पायन की ओर आई है। एक बाईं तरफ आई बाइ तरफ के बाहँ के रग में ते चारि अंकुर फूटे। एक नाचे को चला एक बाईं ओर एक दाहिनी ओर एक ऊपर को चली।

अंत—अथ सीत ते गरमी जुर ॥ पेसाब का रंग कासे कासा होय तामें संवत कभो रंग मिला होय तो सीत से गरमी विकार जानिये ॥ ताके लक्षन ॥ पद में दरद होय ॥

नीचे के आधे अंग पसीना आवे उचक होय हाथ पांव में जलन होय। छाती में दरद होय सिर दुषै आखि सुर्ख होय अतीसार होय स्वांस होय कफ डारै पेट में दर्द होय हाड फूटन होय ॥ अथ मलते वाय ॥ पेशाव को तेल केसो रंग होय तामें भूरो रग मिलो होय तो मलते वाजु विकार जानिये ताके लछन ॥ भ्रम होय सिर दुखै खांसी अफरा होय माथे पसीना आवे उचक होय मल ते वाय जुर पेशाव भूरो रंग मिलो होय तामें तेल केसो मिलो रंग होय तो वाय ते मल जुर जानिये। ताके लक्षन। अतीसार अति पीर होय कवज होय छाती दुखे उचक होय छाती मे पसीना आवै ॥ हाथ पांव दुखै ऍंठे जमाही आवै ॥ मलते सीत ॥ पेसाव तेल के सो रग होय तामें कांसे केसो रग मिलो होय तो मलते सित जुर जानिये ताके लक्षन मल वंध होय पेट सूल होय थोरो पेशाव करै कदो हो आवै जमाही आवै उचक होय हाथ पांव मे जलन होय जुर होय हाड फूटन होय अथ सीत ते मल जुर जो पेशाव कांसे केसो रंग होय तामे तेल केस्यो रग मिलो होय तो सीत ते मल विकार जानिये। ताके लक्षन ॥ मल वध होय पेट में सूल होय हाथ पायन में जलन होय जुर होय हाड फूटन होय तो मल शुक्र जानिये अपूर्ण

विपय—वैद्यक।

संख्या ३१४. वैताल पचीसी, रचयिता—शिवरत्न मिश्र, पत्र—११६, आकार—१० × ८ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२११२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८५६ = १७९९ ई०, लिपिकाल—सं० १८९६ = १८३९ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला शिवदयाल, ग्राम—वरखेडवा, डाकघर—टडियाव, जिला—हरदोई।

आदि—श्रीगणेशायनमः अथ वैताल पचीसी शिव रतन मिश्र कृत लिख्यते ॥ धारा नाम नगर एक शहिर वहां का राजा गंधर्व सेन उसकी चार रानियां थी उनसे छै पुत्र जो कि एक से एक पडित वलवान और पराक्रमी थे। होनहार प्रवल है कि वह राजा मृत्यु को प्राप्त हुआ उसके स्थान पर वडा पुत्र सख नाम राजा गद्दी पर वैठा उसके कुछ दिन वाद उसका छोटा भाई विक्रम नामका अपने जेठे भाई को मार गद्दी पर वैठा और भली भांति राज काज न्याय से करने लगा थोडे ही दिनो में वह जम्बू द्वीप का राजा हो गया और उसने अपना साका वांधा कुछ दिन पीछे राजा ने विचारा कि जिन देशो का मै राजा हू उनकी सैर करना चाहिये यह सोच समझ कर राज गद्दी अपने छोटे भाई भरतरी को सौंप आप जोगी वन मुल्क मुल्क और वन वन की सैर करने लगा उस सहर में एक कंगाल ब्राह्मण तपस्या करता था। एक देवता ने उसको एक अमृत फल ला दिया ब्राह्मण उस फल को ले अपने घर में ला ब्राह्मणी को दिया ॥

अत—यह सुन राजा वैताल की वात याद कर हाथ जोड विनय की कि महाराज मै प्रणाम कर नही जानता आप गुरु है जो कृपा करिके सिखा दे तो मै करू यह सुन जोगी ने ज्यो ही दंडवत करने को सिर झुकाया त्यो ही राजा ने एक खंग ऐसा मारा कि सिर अलग हो गया और वैताल ने आकर फूलो की वर्षा की ऐसा कहा है कि अपने को जो कोई

मारना चाहे उसको मारने में कोइ अधम नहा है। उस समय राजा का साहस देख इन्द्र समेत सब देवता अपने २ विमानो पर बेठ वहा जै जै कार करने लगे और राजा इन्द्र ने प्रसन्न हो राजा वीर विक्रमाजीत से कहा कि वर माग तब राजा ने हाथ जोड कर कहा कि महाराज यह मेरी कथा ससार में प्रसिद्ध हो। इन्द्र ने कहा जब तक सूर्य चन्द्रमा पृथ्वी आकाश स्थिर है तब तक यह कथा प्रसिद्धि रहेगी और तू सब पृथ्वी का राजा बनेगा। इतनी कह राजा इन्द्र अपने स्थान को पधारे और राजा ने उन दोनों लोथों को ले लोहे की कड़ाही में डाल दिया तब यह दोनों वीर आ हाजिर हुये और कहने लगे कि हमें क्या आज्ञा है राजा ने कहा जब में याद करू तब तुम आना इस तरह से इनसे वचन ले राजा अपने घर आ राज पाठ करने लगा ऐसा कहा है कि पडित हो या मूरख लड़का हो या जवान जो बुद्धिमान होगा उसकी जै होगी ॥ इति शिव रतन मिश्र कृत वैताल पचीसी सम्पूण मिती आश्वन शुदी अष्टमी सवत १८९६ वि०

विषय—वैताल ने राजा विक्रमाजीत को २५ कहानियों सुना कर मत्र साधन का उपदेश दिया और राजा ने अखड राज वैताल द्वारा प्राप्त किया।

सख्या ३१५ ए भागवत भावार्थ दीपिका, रचयिता—श्रीधरस्वामी, पत्र—१५६, आकार—१३½ × ६½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६५९४, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० गौरीशकर जी गोड, ग्राम—न० धौकल, डाकघर—बरहना, जिला—आगरा।

आदि—(पृष्ठ ५१ तक खडित) पृष्ठ ५१ से चूत पहलव वास स्रक मुक्ता दाम बिल बिभि उपस्कृत मति द्वार अया कुभे स दीपक = ५७ ॥ अकारैर्गो पुर ण है = शात कुभ परिछ द = मच तो ऐकृत् श्रीमान् विमान् शिखर भुमि = ५८ ॥ आम जो है तिनके पतान की वदन वारी हे। मोती जो ह तिनकी माला लवायमान है। सो द्वार द्वार जो है ताके ऊपर जल्न के कुभ धरा है दीपक जे हैं ते धर है ॥ ५७ ॥ प्रकार महल है दरवाजे अस्थान ये जे ह ते सुवण की जो सामग्री हे तिन करिके सयुक्त है सपूण ओर ते सोभायमान् विमान् जो है तिनकी शिखरणि की दुति काति करिक शोभायमान् है। ५८ ॥

अत—इत्यान भ्यतमा मत्र्य विदुरो गज साध्य स्वाना दिदक्षु प्रपयो ज्ञातीना निवृताशय ॥ २९ ॥ रातध श्रणुया द्राजन राज्ञा हव्य पितात्मना आयुद्ध ने यश स्वस्ति गति में सूय्य मान्युयात्। ३०। इति श्री भागवते महापुराणे चतुथ स्कधे व्याख्याने एके त्रिशोऽध्याय। ३१। औसे विदुर दडवत करिके आज्ञा मागी करिके हस्तनापुर कौ जात भयो अपनेनकू दपिवे के लिये सुपित है अतस्करण जाकौ। २९। हे राजन हरि के विषै अपन करो है आत्मा जिन नै तिनको जो जस ह ताय श्रवण करै जे तिनको आयु धा यश कल्याण गति ईनको प्राप्ति होयगे। ३०। इति श्री भागवते महापुराणे चतुर्थे टीकाया एके त्रिशोऽध्याय ॥ ३१ ॥

विषय—भागवत चतुथ स्कध का भावाथ।

संख्या ३१५ बी. भागवत भावार्थ दीपिका, रचयिता—श्रीधर स्वामी, पत्र—६४, आकार—१३½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९४८, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० गौरीशंकर जी गौड़, ग्राम—न० धौकल, डाकघर—वरहन, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॐ नम श्रीमत् परमहंसाय स्वादित कमल[२] चरण[१] चिन्मकरंदाय भक्तजन मानस निवासाय श्रीरामचन्द्राय। १। अथातः पचम स्कंध व्याख्यानेक विशेपवान्। प्रियव्रतोन्वयोयत्रसपचश्च पपंचते १ अथैया के अनंतर पंचम स्कंध जो है ताकी व्यख्या विपै। अनेकन कथा करिकै युक्त अैसो जो प्रियव्रत कौ वंश सा विस्तार करिकै सहित् वर्णन करियेगा पड्क्ति शव्य धुनाध्ययैः पंचमे स्थानईर्य्यते। लोक द्वीपादि मर्य्यदा पालनाख्या अनेकधा। २। छव्वीस अध्याय करिके पचमस्कंध मेंऽस्थान कौ वर्णन करै है स्थान काहेको नाम है लोक दीपादि कईन की मर्यादा को जो पालन सो ऽस्थान कहिये सो अनेक प्रकार को है पृथिव्यु मर्य्यधालौके मर्य्यादा त्रिविधामता पुनत्रैके कशस्ते पुर्ययाधावहुधिमता। ३।

अंत—येत्विहवा अनाग सो अर राये ग्लामिवावै श्रंभरै रुपसृतानु पविश्यं भय्य जिजो विपून शूल सूत्रादिपु प्रोता निक्रीडान् कत पाया तप तौते पित्र प्रेत्वय मयात्त नासु शूला दिपु प्रोतात्मन् क्षुत्त दुभ्यावाऽभिहता कंकव टाहिभि श्वेतस्तिग्यतु डैरोहन्यमाना आत्मशमलं स्मरंति ४९ योसित्वहवै भूतान्मूद्वजय तिनराउत्वाण स्त्रभावायथा ददश् का ख्ये नियं ततिय ५०॥ यत्र न पददंशूका पचमुखा उपस्ट त्यग्र संति यथा विलेशयान्।५१। घटिकै छेदै है। भूप प्यास के मारे मरे है पैनी है चोच जिनकी अैसे जो काग वगुला वर तिन करिकै मरियै है। अपने पापको स्मरण करे हैं। ४२। जेह्रा भूतनिको डर पावै है ऊल्लन है सुभाव जिनकौ जैसे सर्प डर पावै है। ते परलोक मैं। दढश्यूक नाम नर्क में गिरे है। ५०। या नर्क में हे राजा पाचमुख के। सात मुपके दद शूक है ते आपके या पापनि को निगल जाय हैं तैसे मूसिनकौ सर्प निगल जाय है तैसे।

विपय—भाग.वत पंचम् स्कंध का भावार्थ।

संख्या ३१५ सी. भागवत भावार्थ दीपिका, रचयिता—श्रीधर स्वामी, पत्र—७९, आकार—१३½ × ६½ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३१८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० गौरीशकर जी गौड, ग्राम—न० धौकल, डाकघर—वरहन, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः। पुरापाहरायेन्ट सिंह के नाम विराजते यन्नादतः पलायते महा कलमम कुजराः १ पुण्य ही जी अरंण्य वन तामें नृसिह जी कौ नाम ही जो सिह सो विराजे है जाके नादतै महा पाप रूप जे हाथी ते भजै है १ विसर्ग संभवान जीवान स्वमर्यादासुसं सियतान् विस्नु पाल्य खिलै रूपै रित्ये वं पंचमे स्थितं २ विसर्ग तै भये अपनी अपनी मर्यादा करिकै युक्त अैसे जे जीव तिनै अतिसय रुप करिकै युक्त अैसे जे जीव तिनै अतिसय रूप करिकै विष्णु जो है सो पालन करै है यह पंचम स्कध में भई अध्यायै कोन

विंश त्यापष्टे पोपण मुच्यते अति लघित तम यादा भक्तर क्षणर क्षणं अथ इक स्कध के विपे गुणीस अध्यायन करिकै पोपण कहे हैं कै सो पोपन है अति उलघन कीनी है मर्यादा जिनै असे जे भक्त तिनको गो रक्षा सो है रक्षण जाको।

अत—करि क सिर सो दडवत कर ब्राह्मण की आज्ञा लेके बधुन को सग लैके मौन करिके भोजन करे आचाय जो है ताय पवित्र वाणी करिके वदक जो है तिन करिकै सहित अगारी करिके होम को जो शेप चर है तापर श्री कौं दय अैसे विधिपूर्वक यार्सा तेर श्रेष्ठ प्रजा होयगी सौभाग्यवती होयगी २४ हे विभो यह जो चरित्र है सौ विधि पूर्वक कर्यो या वृत जो है ताकौ या ससार के विपे पुरप जो है ते करँगे तो वाछित जो अथ तिनै प्राप्ति होयगे और स्त्री जे है ते पवृत को करेगी तो सौभाग्यता धन पुत्र चिरजीव पति जस घरह तै प्राप्त होयगी २५ × × ✻ इति पप्टे टीकाया नविशोध्याय ॥ १९ ॥

विपय—भागवत पष्टम् स्कध का भावाथ।

सख्या ३१५ डी भागवत भावाथ दीपिका, रचयिता—श्रीधर स्वामी, पत्र—८२, आकार—१२¾ × ६½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप)—३४४४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० गौरीशकर गौड़, ग्राम—न० धाकल, डाकघर—बरहन, जिला—आगरा।

आदि—अथवा के अन्तर चौवीस है अध्याय जाके विपे अैसो जो अष्टम स्कन्द ताके विपे मनु के पुत्र रूपी दवता इन्द्र हरि के अवतार न करिकै सहित मनु की वणन करिथैगो १ पचतरम चतर प्रति मचादिक छै न्यारे न्यार श्रेष्ठ जो धम तिनै प्रवर्ति कर है पालन करे है आचरण करे है २ थोत मचतर कौ सौ धम लक्षण कह्यौ है जा धम के कीये तै मनुष्य है सो नक में नहा जाय है ३ जहा पहली अध्याय के विपै स्वायभू स्वारो चस उत्तम तामस ये आदि मनु तिनको वणिन करिथैगो ४ स्वाय भू मन्वतर ये विप अनन्त दुस्तर जे गुनिन को जो वणन ताको आनन्दित जो राजा सो सब मचत्तर की जो स्थित तायम ✻ है सो राजा मछ है हे गुरो स्वायभू मनु को जो वश सो विस्तार तै सुनो जामें मराचितै आदि लेके विश्व के सजन वार तिनको स्वग होत भयौ।

अत—प्रलय के जल में सु सदे शक्ति जाको अैसो जो ब्रह्मा ताके मुख तै निसरे वेद के गण तिन त्याय दत भये दत्य जो है ताकौ मारि कै आर जो सत्य ब्रत कौ उपदेश करत भये अखिल सबके कारण जि ने कपट रूपी मत्स्य रूप धारण कीयौ है अैसे जो हरि हे तिनको मै नमस्कार करू हूं। गुण तै गुण की प्राप्ति के लीये जाय वणन करे है सो जे करुणा कौ निधान परमानन्द माधवतिन को म शरणि प्राप्ति भयो हूं। इति श्री भागवते महा पुराणे अष्टमे चतुर्विशोऽध्याय ॥ २४ ॥

विपय—भागवत अष्टम् स्कध का भावाथ।

सख्या ३१५ ई भागवत भावाथ दीपिका, रचयिता—श्रीधर स्वामी, पत्र—९२, आकार—१२½ × ६½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४१८६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० गौरीशकर जी गाड़, ग्राम—न० धौकल, डाकघर—बरहन, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशायनमः । गुणार्यं गुण तावास्मे वृण्व ते करुणानिधि । तमहं शरणं यामि परमानंद माधव । १ । गुण जे है तिनकौ अपन स्थान हैं । और गुण जे हैं तिनकी प्राप्ति करिकै वर्णन करिवे में आवे हैं । ऐसे परमानंद माधव जे हैं तिनकी मैं शरणि प्राप्ति भयो हूं । १ । त्रिगुणा पर भिर ध्यार्थे वैवस्वत सुतान्यः । नवमे कृष्ण सत्कीर्ति प्रसंगाय वितन्वते । २ । आठ जे है तिनकौ त्रिगुण करै ऐसी जे चौबीस अध्यायन करिके वैवस्वत जो है ताके सुतकौ जो अन्वय रचे है सो नवम स्कंध जो है ताके विषे कृष्ण जो है ताके श्रेष्ठ कीर्ति प्रसंग के अर्थ वर्णन करियैगी । २ । एव मुक्तोष्टमस्कंधे सद्धर्म्मः सत्व शोधकः । कर्त्तृ पालक वक्रादि मन्वादीनां निरूपणैः । ३ । अष्टम स्कध जो हैं ताके विषै सत्वशोधक जो श्रेष्ठ धर्म है सो कर्त्तृ और फलक के कहिवे तै मन्वादिकन के निरुपण करि कै वर्णन करौ । ३ ।

अंत—जातो गतः पितृ गृहा द्विज मेधितार्थो हत्वारि पून् सुत शतानि कृतो रुदार उत्पाद्यते पु पुरुप ऋतुभिः समीजे आत्मानमा निगमं प्रथय रुज नेपु । ६६ । पृथ्वयाः= सवै गुरू भरं क्षपयन् करुणामंतः समुत्थ कलिना युधि भूप चम्वः दृष्टा विधूय विजये जय मुद्विघोष्य प्रोच्योद्धवायः च परं समगात्सवधाम । ६७ । इति श्री भागवते महापुराणे नवम स्कंधे यदुवंशानु कथने नाम चतुर्विंशोऽध्यायः । २४ । (भावार्थ) जन्म लेते ही पिता जो वासुदेव है ताके घर व्रज जो है ताव जात भये वृद्धि को प्राप्त भयो है रिपु जो वैरी है तिनै मारिकै वहोत सौदाराऽ स्त्री है तिनै विवाह करिकै तेदारा स्त्री है तिनकै विषे सैकरान पुत्र जो है तिनै उत्पत्ति करिकै जो है तिन करिकै पुरुप परमात्मा कौ यजन करत भयौः आत्मा जो है ताय आत्मा के निगम जो वडे मार्ग है तिने जान जो हैं तिनके विषे विख्यात करत । ६९ । पृथ्वी जो है ताको वडो जो भार है ताप दूरि करत काय करि है । कौरव जो हैं तिनके भीतर क्लेश जो है ताकौ उत्पान करि युध जो सग्राम है ताके विषे भूप जो राजा है तिनकी जो चमू सेना है तिनकुं दृष्टि जो है ताते नाश करि कै विजय जो अर्जुन है ताकी जो जय है ताय प्रगट करिकै उद्धव जो है ताके अर्थ परम तत्त्व जो हैं ताय कहिकै अपने जो स्वधाम है ताय जात भये । ६७ । इति श्री भागवते नवम स्कधे टीकायां चतुर्विंशोऽध्यायः २४ नव भिर्लक्षर णै र्लक्ष्यं नव भक्ति पल क्षित ब्रह्म तत्पर भवंदे परमानंद विग्रह श्री भागवत भावार्थ दीपिकास प्रकाशिता स्वपाद नव भक्ता नाम रक्तदाता महेश्वर परमानंद संसेवी श्रीधर स्वामी सत्य ने कृत मालोड्य गृणत श्री श्रुकोक्ति प्रशंशय ।

विपय—भागवत नवम् स्कंध का भावार्थ ।

संख्या ३१६ ए. गणित प्रकाश, रचयिता—श्रीलाल, पत्र—६०, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१७४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०७=१८५० ई०, लिपिकाल—सं० १९१०=१८५३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० विष्णु भरोसे, डाकघर—मारहटा, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ गणित प्रकाश लिख्यते ॥ हिसाब में पहिले संख्या के अंको के रुप पहिचानने आवश्यक है और अंक एक से ले दस तक होते है उनके नाम और रुप ये है—

एक	दो	तीन	चार	पाच	छै	सात	आठ	नौ	शून्य
१	२	३	४	५	६	७	८	९	०

गिनती एक से लेकर सौ तक—

रुप—१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
नाम—एक	दो	तीन	चार	पाच	छै	सात	आठ	नौ	दस	ग्यारा	बारा	तेरा
रुप—१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३			
नाम—चौदा	पद्रा	सोरा	सत्रा	अठारह	उन्नीस	बीस	इकईस	बाइस	तेईस			

अत—गुर—जितने रुपये सेर चिन्स आती हो उतने ही आने की एक छटाक आवेगी ॥ प्रश्न ॥ ५॥) सेर हींग बिकती है तो बताओ की डाइ छटाक के क्या दाम होंगे ॥ गुर के अनुसार १ छटाक हींग के दाम ।")॥ हुये इस लिये आधी छटाक हींग के दाम ≈) । हुये इस लिये ढाइ छटाक हींग के दाम ॥")॥ हुये ॥

गुर—जै रुपये गज उतन ही आने का एक गिरह होता है । प्रश्न—३॥) रुपये गज बनात बिकती है तो बताओ ५॥। गज २ गिरह बनात के क्या दाम हुये ॥ पाच हूना १७॥) तो पाच गज बनात के दाम हुये तीन पौना २।) और ८ पौन ६ आने पौन गज बनात के दाम हुये । गुर के अनुसार एक गिरह के दाम ≡)॥ और दो गिरह के ।≡) याने कुल दाम ५। ।) गज के और २ गिरह के २०॥) हुये । इति श्री गणित प्रकास प्रथम भाग संपूर्ण लिखा छदी लाल दर्जा ५ स्कूल मारहटा जिला येटा सवत् १९१० वि०

विषय—गणित ।

सख्या ३१६ श्री गणित प्रकाश दूसरा भाग, रचयिता—श्रीलाल पण्डित (प्रयाग), पत्र—८०, आकार—८×६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९७२, रुप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८५६ ई०, लिपिकाल—१८६० ई०, प्राप्तिस्थान—रामदयाल पटवारी, ग्राम—गूदरपुर, डाकघर—मिरगाम, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ गणित प्रकाश दूसरा भाग लिख्यते ॥ गणित के उपयोगी चिन्ह + यह चिन्ह जोड़ने का है जिन सख्याओ के बीच में यह चिन्ह होता है उनका जोग जाते हैं । जैसा ४+५ लिखने से जाना जाता है कि ४ और ५ का जोग करना है और इसी चिन्ह को धन चिन्ह भी कहते हैं ।

— यह चिन्ह जिस सख्या के बाइ ओर हो वह सख्या बाइ ओर वाली सख्या में घटानी चाहिये जैसे ५ ३ अथ यह है कि ५ में ३ घटाने हैं इस चिन्ह को रिण चिन्ह भी कहते हैं ।

× यह गुणन का चिन्ह है जिन संख्याओं के बीच में यह चिन्ह होता है उनका घात जानते हैं जैसे ३×४ इसका अथ यह है कि ३ से ४ को गुणा करके गुणन फल जानना ॥

— यह भाग देने का चिन्ह है इस चिन्ह के बाइ ओर भाज्य और दाहिनी ओर भाजक होता है जैसे ८—२ इसका यह अथ है कि ८ में २ का भाग देना ॥

= यह तुल्य का चिन्ह है जिन दो राशौं के वीच में ऐसा चिन्ह देखो उन्हैं तुल्य जानौ जैसे २+३ = ५ वा ७–४ = ३ वा ४ × ३ = १२ वा १२ ÷ ३ = ४

:, ::, : ये अनुपात का चिन्ह हैं अनुपात में चार रासें होती है। उनके वीच में ये चिन्ह होते हैं जैसे ५ : १० :: ३ : ६ इसका यह अर्थ है कि पहिली राशि से जितने गुनी दूसरी राशि है उतने गुनी ही तीसरी से चौथी राशि है ॥

√ यह चिन्ह मूल का है जैसे ²√२५२५ वा √२५ से, २५ का वर्गमूल जानो ³√२७ से २७ का घन मूल जानो ॥

अंत––५२६ का घनमूल यौं लिखकर निकालते हैं––५२६·⁸ ०००·⁰ ०००⁷ ०००·² ०००·⁶ ०२०·² और शेष क्रिया जो कि पूर्णांक घन मूल में व्यौरे वार लिख दी है यहां नही लिखी और विन्दुओ के वनाने की रीति के प्रगट करने के लिये इतना लिख दिया है इससे जाना गया कि ५२६ का घनमूल = ८·०७२२६२ और जानो कि जिस दसा में घनमूल पूरा न निकले और सदा सेस रहे तो दसमलव विन्दु के पीछे घन मूल के ६ स्थान निकाल के शेप को छोड दो और लव्ध को आसन्न घन मूल समझो ॥

॥ प्रश्न ॥

१	२ का घन मूल	=	उत्तर	—	१·२५९९२१
२.	३२१४ ,, ,,	=	,,	—	१४·७५७५८
३.	२५ ,, ,,	=	,,	—	२·९२४१८
४.	५२८ ,, ,,	=	,,	—	८·०८२४८०
५.	५५० ,, ,,	=	,,	—	८·१९३२१२
६.	६०१ ,, ,,	=	,,	—	८·४३९००९
७.	९५९ ,, ,,	=	,,	—	९·८३०४७५
८.	८७६ ,, ,,	=	,,	—	९·५६८२९७
९	९०० ,, ,,	=	,,	—	९·६५४८९३
१०.	२३ ,, ,,	=	,,	—	२·८४३८६७

लिखा वेनी राम विद्यार्थी दर्जा ४ पाठ साला कादर गज जिला एटा सन् १८६० ई०

विषय––गणित में त्रैराशिक दशमलव, आवर्त दशमलव, वर्ग-मूल, घन-मूल, आदि लिखे हैं

संख्या ३९६ सी. गणित प्रकाश तीसरा भाग, रचयिता––श्रीलाल पंडित, पत्र––६०, आकार––८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)––३६, परिमाण (अनुष्टुप्)––१९७८, रूप––प्राचीन, लिपि––नागरी, रचनाकाल––सं० १९११ = १८४४ ई०, लिपिकाल––सं० १९१२ = १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान––लाला रामदयाल, ग्राम––वाजनगर, डाकघर––नौखेड़ा, जिला––एटा।

आदि––श्री गणेशाय नमः अथ गणित प्रकाश तीसरा भाग लिखते ॥ व्यौहारिक हिसाब लिख्यते ॥ जहां त्रैरासिक की गणित मे एक की सख्या हर हो उसकी रीत लिखते

हैं वहुधा व्योपारी लोगों को इस गणित का प्रयोजन पड़ता है उस रीति से एक वस्तु व एक प्रमाण का मोल जानकर कई एक पदार्थ वा प्रमाणों का मोल जान लेते हैं। इस गणित की कइ रीतैं हैं उन सबों में यह स्मरण रखनी उचित ह कि किसी राशि की निस्सेप अपवतन सख्या उसे कहते हैं जिसे कई वेर जोडे वा किसी सख्या से गुणा करैं तो वही राशि पूरी हो जाय जिसका वह आवतनाक हे जसा १ का अपवतनाक १/४ हे इसे चार वेर जोड़ेगे वा चार से गुणा करैंगे तो एक पूरा हो जायगा अथवा ६ का २ अपवतनाक हे उसे तीन वेर जोडो वा तीन से गुण करो तो पूरे छ हो जायगे ऐसे सरवत्र जानौ —

आनों के निस्सेप भाग	रुपये के निस्सेप भाग
पाई ६ = १/२ पाई २ = १/६	आना ८ = १/२ आना २ पाई ८ = १/६
,, ४ = १/३ ,, १½ = १/८	आ० ५ पा० ४ = १/३ आना १ पा० ४ = १/१२
,, ३ = १/४ , १ = १/१२	आ० ४ = १/४ आना १ = १/१६
	आना २ = १/८

अत — एक के पास ५०० सेर की वस्तु ॥।-) ४ सेर की है उसमें तीन तरह की वस्तु के कुछ कुछ भाग मिला चाहता है और उन वस्तुओं में एक का भाव ॥।)६ सेर दूसरी का ॥।≤)४ सेर तीसरी का १।)६ सेर और उन्हें मिलाकर १) ६ सेर बेचना चाहता है तो कहो उनमें से कितना भाग मिलना चाहिये ॥ उत्तर में ॥।)६—ʃ५०० सेर

,, ॥।≡) ४—ʃ५०० सेर

,, १। ६—ʃ१०४१२/३ सेर

इस गणित में केवल एक ही पदाथ का भाव नियत होता हे पर अधिक पदार्थों के भाग भी नियत हों तो इसी प्रकार गणित हो सकता है यथा पहिले इस रीति से दूसरे नियत भाग वाले को भी ठहरा कर गणित करो ॥ इति श्री गणित प्रकाश तृतीय भाग ॥ सपूण समाप्त प श्रीलाल कृत लिखा वैनी राम विद्यार्थी दर्जा ३ पाठ शाला कपूर पू ॥ सवत १९१३ वि०

विषय – गणित ॥

सख्या ३१६ डी महाजनीसार दीपिका, रचयिता—श्रीलाल पडित, पत्र—१२, आकार—१० × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९१३ = १८५६ ई०, लिपिकाल—स० १९२० = १८६३ ई०, प्राप्तिस्थान—चौधरी रायकिशन, ग्राम—भाली खेड़ा, डाकघर—फरौली, जिला—एटा ।

आदि—श्रीगणेशाय नम अथ महाजनी सारदीपिका लिख्यते ॥ साहूकारों के लेन देन का लिखना पढ़ना वहुधा महजनी अक्षरों में होता है और उन अक्षरों के स थ लिखने में मात्रा नहा लगाई जाती इस कारण उस लिखावट को पढ़ प्रयोजन समझना केवल देव नागरी पढ़े लोगो को कठिन पड़ता है और वे लोग इस वात का भी सकोच करते हैं कि हम प० हो ऐसी वात सिखने के लिये किस के पास जाय पर जब कभी महाजनी की

चिट्ठी पत्री पढ़ने का काम पडता है तब उस कागज को ऊपर नीचे देख विन पढ़े फेर मनमें लज्जा पाते हैं और मनमे कहते है कि लिखने पढने का अभ्यास किया चाहेगा वह महाजनो के कार्य लिखने पढ़ने की रीत जान लेगा और किसी के पास पढ़ने को भी न जाना पडेगा। महजनी सार पुस्तक और महाजनी सार दीपिका दोनों पुस्तकें एक ही सी हैं। साहूकारों की वही के नाम। १. चिट्ठी वही २ नकल वही ३. रोकड वही ४. कच्चा खाता ५ रुज नामा ६. पक्का खाता ७. लेखा वही॥

अत—

लेखा वही

लेखा लखमी चन्द रामरतन फरक्काबाद वाले तुमारी वदखाते पन्ने २

११००) जोड़ जमा का	७००) जोड जमा का
४॥≡)॥ ब्याज देना पडा पूस सुदी ५	७००)
२३ रु० ७००) १	२।≡)॥ कसर लेखे की
१००० रु० ४००) २॥)	पूस सुदी ५ तैं
६७६॥।)	१ =) आढ़त रुपया
४॥।≡) ब्याज दर ॥)	११०४॥≡)॥
=)॥ छूट गई	दर =) सैकड़ा
४॥≡)॥	≡)॥ सकरई रु० ७००)
११०४॥≡)॥	दर –)॥
४०२) वाकी देने पोस सुदी ५	।≡) चौधरी को रुपया
संवत १९०३ तैं	७००) दर –)॥
जमा खरच को नकल पन्ने ४	=)॥। परखाई रु० ११००)
	दर)।
	॥)। चिट्ठी खेरीजी
	२॥≡)॥
	७०२॥≡)॥
	४०२) वाकी देने पूस सुदी ५ तै
	११०४॥≡)॥

विषय—महाजनी वही खाते आदि का बोध।

टिप्पणी—जो कुछ महाजनी सार में लिखा है वही महाजनी सार दीपिका में लिखा है।

संख्या ३१६ ई. महाजनीसार दीपिका, रचयिता—श्रीलाल पंडित, पत्र—२०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७०, खडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०३ = १८४६ ई०, लिपिकाल—सं०

१९०३ = १८४६ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला मनसुख राय, ग्राम—वरगिया, डाकघर—पाली, जिला—हरदोई।

आदि—साहूकारों क वही खाता के नाम चिट्ठी वही, नकल वही, रोकड़ वही, कच्चा खाता, रजनामा, पक्का खाता लेखा वही— चिट्ठी वही—

मिती आसोज सुदी ५ सवत १९०३ चिट्ठी आढ़तिये की आइ

चिट्ठी एक लखमी चन्द राम रतन की फरक्का बाद की आइ मिती आसोज सुदी ३

नक्ल ३। ११००) हुन्डी एक मानक चन्द पन्नालाल ऊपर आसोज सुदी ३ दिन १७ पीछे

चिट्ठी एक मथुरा जी की लिखा दवी सनमुख जहाना की आइ चिट्ठी लिखी कातिक सुदी २

२५०) हुन्डी १ जपुर की तुमारी वद वेच की आइ

अत—कच्चा खाता माधो राम वसत राम की दुकान का॥ सवत १९०३ आसोज सुदी पचमी विसपत वार लेखा मानक चन्द पन्नालाल का—

११००) रोकड़ पन्ना १ कातिक वदी ५	११००) नकल पन्ने ३ मिती कातिक वदी ५
२०००) रोकड़ १ कातिक वदी ११	२०००) नकल ३ कातिक वदी ११
३१००)	३१००)

लेखा दुलीचन्द जमुनादास का

७००) नकल ३ कातिक वदी ४	७००) रोकड़ १ कातिक वदी ४
७००)	७००)

लेखा सतापराम रूपचद का

१०८२॥ˉ) न० ३ कातिक वदी ६	१०८२॥ˉ) रो० १ कातिक वदी ६
१०८२॥ˉ)	१०८२॥ˉ)

विषय—वही खाते व महाजनी लेखा की रीति।

संख्या ३१७ हिम्मत प्रकाश, रचयिता—श्रीपत भट्ट, पत्र—१५८, आकार—७ × ४ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७७७३, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८९८ = १८४१ ई०, प्राप्तिस्थान—अध्यापक रामप्रसाद जी, ग्राम—कोटला, डाकघर—कोटला, जिला—आगरा।

आदि—खारो खारा चर परी तीखो दाहक अन्न। क्रोध दाह लघन शरद पित्त करत उत्पन्न। मीठो खारो लान ह हिम भारी दिन को शयन। अल्प चीकनो मधु समय काहे को वैन। । जो उपजावै को रोग को सो निदान हे जानि होनहार हावै कहे आदि रूप सो मानि सो सामान्य विशेष पुनि द्व प्रकार कर लेख राग जात पहिले कहो पूज दोष विशेष। कहौं जु पच व्याधि के ते लक्षन ह सत्र उपजे सुखकारी औषध पुन अनूप। दोषन की कर्त्तव्यता सकल व्याधि उत्पत्ति। आगत सो वणत सुमति पाच भत कर सत्य। सख्या विकल्प और सुनि पर धानक वलकाल सख्या तो जुर आठ जे वणत बुद्धि विशाल अस अस कर कल्पना वातादिक की जानि सो विकल्प प्रधानता मुख्य रोग को मानि।

कारण पूर्व रूप पुनि सप सकल जुत रोग सवल भिषक तासों कहे अवल अलपत्रिपरोग। निसि दिन भोजन वैस ऋतु अन्त मध्य पुनि आदि। वात पित्त कफ व्याधि को काल कहत चक्रादि।

अत—तीनि चारि मग देखिये और वर्छि सम तूल। जाय असाध्य विचारिये जतन न कीजै भूप। एक वूंद भर तेल की डाल मूत्रि मे पेखि, मद्द २ है वह जात जब तहां पित्त को देख। सोरठा। देखे नैन निहार वूंद तेल की मूत्र में। ताके आठ प्रकार न्यारे जाके नाम हैं। दोहा। पूरब पश्चिम देखिके उत्तर दिशि को जाये ताको नीको जानिये करिये तभी उपाय। आग्नेय दक्षिण नैऋत्य और वायव्य है नाम ईसान पांचो ही जोइपे जस सो तासो काम। तिल को तेल जू डारिये फैले अनी निहार वूंद एक जो देखिये ताहि असाध्य विचार। इति श्रीयुत भट्ट विरचिते भवि प्रकाशे सर्व रोग निदान रूप लक्षण समाप्तम। सम्वत १८९८ ज्येष्ठ सुदी नौमी, शनिवार लिखी गिरधारी वारी त्रिषिकर श्री महाराज श्री सुमेरु सिंह को पठनार्थ गिरधारी वारी वासी कोटला श्रीराम जी सदा सहाय। श्री गंगाजी सहाय श्री वलदेव जी सहाय। जो वांचै तिनको राम राम।

विषय—ज्वर निदान, सव प्रकार के ज्वर-निदान, ज्वर के उपद्रव, अतिसार का निदान, सग्रहणी निदान, अर्श, अजीर्ण सर्व प्रकार, कृमि रोग, पाण्डु रोग, कम्मला, राज यक्ष्मा, यक्ष्मा, श्वास, कास, हिक्का, स्वर भंग, क्षरद रोग, तृषा मूर्छा, उन्माद रोग, अपस्मार, अवतानक, वात रोग गृध्रसी आदि, वातरक्त, आमवात, सूल, उदावर्त, गुल्मरोग, हृदरोग, मूत्र कृच्छ, मूत्राघात, अश्मरी प्रमेह, मेद, उदररोग, सोज, अंड, गलगंड, अर्बुद रोग, श्लीपद, विद्रधि, आम अपक्व निदान, व्रण निदान, भगंदर रोग, उपदंश, कुष्ठ, अम्ल पित्त, मुख, दन्त, जिह्वा, तालु, गल, कर्ण, नासा, प्रति श्याय, नेत्र, सिर, प्रदर, गर्भपात, सूतिका, स्तन रोग, वालक रोग, वृष्य, मूत्र परीक्षा आदि का क्रमशः विस्तृत निदान किया है।

संख्या ३१८ ए. ध्रुवलीला, रचयिता—सुंदर ब्राह्मण (करहला, मथुरा), पत्र—४८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९०१ = १८४४ ई०, लिपिकाल—सं० १९१८ = १८६१ ई०, प्राप्तिस्थान—शालिग्राम चौवे, ग्राम—मुन्नागढ़ी, डाकघर—दादोन, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्रीगणेशाय नमः अथ ध्रुवलीला सुन्दर वैद्यकृत लिख्यते॥ दोहा॥ श्री सारद को सुमिरि के सुमिरूं श्री भगवान। सकल सिद्धिदायक सदा विघ्न विनासन जान॥ कवित्त॥ द्रुपदसुता की देखौ टेर केती दूर सुनी मेरी वेर कान्हा सो कान ना करी है॥ भारत में भारी भीर भारई पै परी महा तोर डारो गज घट पीर सो हरी है॥ वेई तुम कान्ह मेरी कान क्यौ ना सुनो कान जान मान काहे कू सो चुपकी सरी है॥ सुन्दर सो वैद्य प्रभू और को जहान बीज जो पै आप ईश तो हमारी सुधपारी है॥ सो०॥ यह संसै मन माहि दो मैं से झूठी कवन। कि मैं ही विश्व में नाहि विश्वंभर नामहिं हरी॥ लीला

प्रारभ ॥ सुनिये सखि हमारी ॥ टेक ॥ तुमथा पुर में हरिभक्त जन्म ले ध्रुव कहि नाम उचारी ॥ मौसी दय तापनो ताको सुनि वन गमन सिधारी ॥ लाख कहीं कोई एक न मानैं हरि पद रति सो ठानी ॥ बालक निपट वर्ष पाचहि को तीन लोक तेहि जानी । करै तपस्या श्री मथुरा में कृष्ण ध्यान शुभ कारो ॥ सुन्दर दश देय प्रभुजन को भक्तन के हित कारी ॥

अत—दो०—अतर गति की जानके चतुभुजी किय रूप । सकल नम्र दर्शन कियो ध्रुव प्रताप जग भूप ॥ सो० कर गहि बोले श्याम अरे पुत्र पुनि कहँ चल्यो । भक्त वमल मो नाम भक्त मोपे न्यारो नहा ॥ चौ० ॥ तुम उत्तान पाद सुत दाइ । पर्यौ विष्णु के चरणन धाई ॥ रानिन सहित दई तिन फेरी । कहत धन्य प्रभु महिमा तेरी ॥ मोसम धन्य जगत नहिं कोइ । सुर नर मुनि किन्नर किन होई ॥ अस कहि भूप चरण दोई धोये । जन्म जन्म के पातक खोये ॥ अवधपुरी के नर अरु नारी । दशन करत मगन मन भारी ॥ प्रभु अंतर जामी भगवाना । सकल विधी पूजे विधि पाना ॥ दै असीस प्रभु धाम पधारे । भक्त जनन के कारज सारे ॥ ये लीला जो सुने सुनावे । निश्च अत मुक्ति नर पावै ॥ चारि पदारथ सुलभ सु होइ । दृढ धरि पाठ करै जो कोइ ॥ सुन्दर वश विप्र तन पाई । ग्राम करहला बास सुहाइ ॥ हरि भक्तन के दास को दासा । महा दीन हरि सेवक खासा ॥ मथुरा से सात कोस छातइ । परगना थाना सोहार कहइ ॥ सवत उनइस सै अरु एक । महिना भादों कृष्ण विवेक ॥ तिथि है तीज कहीं म गाई । सुन्दर ध्रुव लीला रचिपाई ॥ इति श्री ध्रुवलाला सपूर्ण समाप्त सवत १९१८ वि० ॥

विषय—ध्रुव लीला ।

सख्या ३१८ वी हरिश्चद्र लीला, रच यता—सुदरलाल (करहला, मथुरा), पत्र—३६, आकार—९ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी लिपिकाल—स० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा शिवलाल, ग्राम –भीपमपुरा, डाकघर—सासनी, जिला—अलीगढ़ ।

श्री गणेशाय नम अथ हरिश्चन्द्र लीला लिख्यते ॥ दोहा ॥ सिव सुत चरण मनाय के धरि सरस्वति को ध्यान । हरि भक्तन सिर नाइ के लीला रचू सुजान ॥ प्रथम सुमर श्री शार्दा धरू कृष्ण को ध्यान ॥ हरिश्चन्द लीला रचू सुन्दर कहत बखान ॥ सोरठा ॥ पुरी अजोध्या बास नृपति बसे हरिचन्द एक । नीत निपुण हरिदास सुन्दर सत वादी महा ॥ चौपाई ॥ नृपति पुनीत जग्य नित कर ही । हरि चरणार बिन्द उर धरही ॥ बेद वेदान्त सार नहि लीना । हरि जन भक्ति ज्ञान उर चीन्हा ॥ तासु पुत्र रोतास पियारो । अति धर्मज्ञ सील महा भारो ॥ तारा नाम नृपति की नारी । पति व्रत धर्म की पालन हारी ॥ सुन्दर जज्ञ अनेक कराये । पिछली मख यह अतिसुख दाये ॥ नारद जी का आना ॥ नारद जी आवत भये भूप यज्ञ के माहिं । दपत नृप ठाढ़ो भयो हाथ जोड सिर नाय ॥ सो० ॥ धन्य धन्य महराज आज कृतारथ मैं भयो ॥ बोले द्विज महराज चिरजीव रहो भूप तुम ॥

अंत—धन्य जगत जननी वा नर की। करत भक्ति ऐसी दृढ हर की ॥ और कौन या जग के मांहीं। विना विश्नु भव को सुख दाई ॥ भक्त वसल दीनन के नाथा। सदा भक्त सिर राखत हाथा ॥ जोगी जन जप तप जिहि ध्यावै। शंभु रटत अज ध्यान न आवै ॥ सो प्रभु प्रेम विवस भगवाना। भक्त अधीन वेद मुख गाना ॥ जे नर तन शुभ जग तहिं माही। जपत न विश्नु नाम सुखदाई ॥ तिनको स्वांन समान निहारी। सकल गुनी जन देऊ विसारी ॥ हरि विमुखन संगति जो करिहे। निश्चै तेउ नर्क विच परिहैं ॥ वृज भीतर शुभ ग्राम भडो ई। मना मन सुखा कह राव कोई ॥ पास कहरला ग्राम सुहाई। जाको जस मुनि देवन गाई ॥ सुन्दर वैद्य विप्र तन पायो। नग्र करहला वास सुहायो ॥ सब गुन जन कवि जन को चेरो। छमियो प्रभु अपराधहि मेरो ॥ मै अजान बालक अज्ञानी। सकल दोष छमियो जन जानी ॥ भक्ति चरित्र यथा मति गायो। सकल जन्म को अघहिं नसायो ॥ सीखै सुनै जो यह हरि लीला। मिले भक्ति अति सुभग शुशीला ॥ चारि पदारथ सुलभ जो पावै दृढ़ करि पाठ जो नर कोई गावै ॥ मै तो पतित कृष्ण को दासा। महा दीन हरि भक्त हुलासा ॥ इति श्री हरिश्चन्द लीला सुंदर वैद्य कृत संपूर्ण समाप्तः लिखत राम अधार पांडे हाथरस निवासी माघ मास शुक्ल पक्ष त्रयोदसी सवत् १९३२ वि०

विषय—हरिश्चंद्र लीला।

संख्या ३१८ सी. ऊषा लीला, रचयिता—सुंदरलाल (करहला, मथुरा), पत्र—४०, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०२, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९४० = १८८७ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० विष्णु भरोसे, ग्राम—भद्रपुर, डाकघर—वेहटा गोकुल, जिला—हरदोई।

आदि—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ ऊषा लीला लिप्यते ॥ श्री गुरु चरण नवाय के धरूं सरस्वती ध्यान। ऊषा की लीला रचूं जो शुक कही बखान ॥ – रेखता आडो – बाना सुर पूजत त्रिपुरारी ॥ धूप दीप नैवेद्य आरती हाथ जोर चरनन सिर नायो। नैन मूंद कर ध्यान हृदय विच हर हर शब्द रटत सुख पायो ॥ पुलकित रोम रोम तन गद्‌गद दीन दीन करि अस्तुति गाई ॥ जै कृपाल अघ हरौ भक्त के तुम विन और न कोई सहाई ॥ अपनौ जान अभय प्रभु कीजै तुम समान दूजो नहि कोई। ह्वै प्रसन्न तांडव नृत कीन्हौ मन भायो हरि वर दीयो सोई ॥ अंग भस्भूत भुजंग अभूषन सीस चन्द्रमा अति छवि छायो ॥ सुन्दर मेरे भोलानाथ को आक धतूरे को भोग लगायो ॥ ह्वै प्रसन्न संभू कह्यो दिये सहस्र भुज तोय। तीन लोक चौदह भुवन तोसो वली न कोय ॥

अंत—घर घर भये अनंद बधाये, अनिरुध कुँवर व्याहि घर आये। कवि जन दोष गनो जन मोरा, बुद्धि हीन तुमरो जन छोरा ॥ भूल चूक देपौ चित माही, जो न सम्हारौ राम दुहाई ॥ ग्राम करहला पास मडोई, कोई दिन आय दर्श प्रभु दोई ॥ क्वार मास मासन के माई, महा उत्तम तिथि पूनो गाई। होत रास लीला सुखदाई, देशान्तर दुनियां जाय छाई ॥ श्री महा प्रभू के दर्शन करिये, व्यर्थ तनै उत्तम नेक करिये ॥ ऐसो रास होत ये नाथा, अंतर दूसर नैन चहाता ॥ सुदर विरजी नाम हम पूछो निश्चय आय। दास चाकरी

जो कहो, सो करि है वस पाय ॥ – सवैया – मोजा जो करहल। थाना सो सहार जाको परगना वो छाता जो सामने बराई है ॥ मथुरा इलाका वेद भापहि ताका जस तीना लोक जाका बज्यो सुखदाई है ॥ सुन्दर कहत धन्य मथुरा आदि बार बार जाकी प्रभू कीन्ह जो वडाइ है ॥ इति श्री ऊषा लीला सम्पूर्ण समाप्त सवत १९४० चैत्र सुदी पचमी ॥

विषय––ऊषा अनिरुद्ध विवाह वर्णन ।

सख्या ३१९ ए सूरसागर, रचयिता––सूरदास (रत्नकृत), कागज––देशी, पत्र––३१८, आकार––१० × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)––१२, परिमाण (अनुष्टुप्)––१८६७, रूप––अच्छा, लिपि––नागरी, लिपिकाल––स० १८३१ = १७७४ ई०, प्राप्तिस्थान––श्री अद्भुत चरण गोस्वामी, स्थान––घेरा श्री राधारमण, वृ दावन, डाकघर––वृ दावन, जिला––मथुरा ।

आदि––श्री गणेशाय नम । अथ सूरसागर लिप्यते । विस्मय पद । राग विलावल । चरन कमल बदा हरि राइ । जाकी कृपा पग गिरि लघै आधे को सब कुछ दरसाइ । बहरा सुन गुग पुनि बाले रक चल सिर छत्र धराई । सूरदास स्वामी करनामै बार २ बदौं तिहि पाई । राग कान्हरा । अनगति गति कछु कहत न आवै । ज्यों गूगा मीठे रस कौ फल अतरगत ही भाव । परम स्वाम्य सव सौं निरतर अमित पोष उपजावै । मनमाने को अगम अगोचर, सो जानै सो पाव । राग कान्हरा । वासदेव की बड़ी बड़ाई जगत पिया जगदीस जगत गुर अपने जन की सहत ठिठाई । भृग को चरन आनि उर अतर धोटे वचन सन्दल सुपदाई । शिव विरचि मारनि को धाए यह मत काहू देव न पाई । विन बदले उपगार करत है स्वारथ विना करत मित्राइ । रावन अरि को अनुज भभीषन ताको मिलै भरथ की नाइ । बकी कपट करि मारन आइ । सो हरि जी वकुठ पठाइ । विन दीनै हूँ देत सूर कहि अैसे हैं जदुनाथ गुसाई । राग धनासरी । करनी करना सिध की मुख कहत न आवे । कपट रहेत पर सैन की जननी गति पावे । वेद उपनपद जास क्यो निरगुनह बतावे । सोइ सुगुन ह्वे नद के दावरी वधावे । उग्रसैन की आपदा सुनि २ विलपाय ।

अत––राग सारग । अैसे और कौन पहिचान । सुनि सुदरि हरि दीन बध विनु कौन मित्र* मानै । हो अति कुटिल कुचील कुदरसन के जदुनाथ गुसाइ । तप उइ अक भरि माधो उठि अजुन की नाइ । ले पजक बेठारि परम रुचि निजकर चरन पपारे । पूरव कथा सुनाइ कसकरि सब सकोच निवारे । लए छिनायू चरिते तदुल करते ले मुह अबहु काकरी सूरज प्रभु गुर भट्ट इव से अनैले । १८६७ । पद अठारह से सत सठि भए । सवत १८३१ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे नवम्यॉ रवि वासरे । लेखक तिवारी श्रीपति राम जी । लिखा फरक्काबाद मध्य ।

विषय––कृष्ण चरित्र वर्णन ।

सख्या ३१९ वी सूरसागर, रचयिता––सूरसागर, पत्र––१४३, आकार––० × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ) – ३२, परिमाण (अनुष्टुप्)––२१९६, रूप––प्राचीन, लिपि––

नागरी, लिपिकाल—सं० १७९७ = १७४० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० नैनसिंह, ग्राम—हरिपुर, डाकघर—माधोगंज, जिला—हरदोई।

आदि—श्री गणेशाय नमः लिप्यते सूरसागर की पोथी ॥ राग धनाश्री ॥ हरि मुख देखिये वसुदेव। कोटि काम सरुप सुन्दर कोऊ न जानत भेउ ॥ चारि भुज जाके चारि आयुध दखिये निर्खाय। अजौं लग परतीत नाहीं नन्द घरनी जाई ॥ जडे तारे पहरू पौढ़े नीद उपजी गेह। निसि अंधियारी वीजुरी सघन वरषै मेह ॥ स्वान सूते पहरू वैठे खुले धर्म दुआर। वंदी वेरी सबै काटी भये जै जै कार ॥ सिंघ आगे सिंघ पाछे नदी भई भर पूर। नासिका लौ नीर आयो पार पलो दर ॥ गोद तेहिं फार वीनी जमुन जान्यो भेव ॥ वोलि कै हरि चरन परसे तरि गये वसुदेव ॥ सखी मगलचार गावैं नंद घर ग्रानद ॥ सूर दास विलास व्रज हित प्रगट आनन्द कंद ॥

अंत—राग धनाश्री ॥ द्वै मै एकौ तौ न भई ॥ ना हरि भजन न ग्रह पायो सुख बृथा विहाइ गई ॥ ठानी तो कछु औरहिं मनमें औरे आनि ठई। अवगति गति कछु समझ परै नहिं जो कछु करत नई ॥ होत कहा अवके समझाये योहीं सत्र वितई। सूरदास नहि भज्यौ कृपानिधि जो सुख सकल भई ॥ राग मलार ॥ गरव गोपालहिं भावत नाही ॥ कैसी करी हिरन कुस को हरि रती न राख्यो रावन माहीं ॥ जग जानी करतूत कंस की नरकासुर नास्यो वलवाही ॥ बरुन विरंचि सक्र शिव मनसा उनके मन अवगाही ॥ जोवन रुप राज धन धरती ये सव है जलधर की छाही ॥ सूरदास हरि भजे न जे नर ते अतक पुर जाही ॥ ॥ राग जैत श्री ॥ हरिजू मोते और न पापी ॥ हो घातिक जो कुटिल चवाई कपटी महा क्रोध संतापी ॥ लम्पट धूत छूत दमरी को वाम कुजाय सुदा को जापी ॥ काम लुब्ध कामिनि के संग यह माला के उर मह सतापी ॥ अभप भप्यो अरु अपे पान करि करत लालसा धापी ॥ मन वच कर्म दुष्ट सवसों अति कटुक वचन आलापी ॥ इति समापति ॥ संवत १७९७ लिखी वद्रीदास कायस्थ सकिन अकवर पुर साहि पुर लिखी लाला सुवासिह कायस्थ साकिन काशीपुर के हेत यथा प्रति तथा लिप्यते मम दोप न दीयते वांचै सुनै तिहि राम राम यथोचित राम श्री राम राम

विपय—श्रीकृष्ण चरित्र वर्णन।

संख्या ३१९ सी. सूररत्न, रचयिता—सूरदास, पत्र—१४४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८७४ = १८१७ ई०, प्राप्तिस्थान—प० वालकृष्ण, ग्राम—अर्जुनपुर, डाकघर—पटियाली, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ सूर रतन सूरदास कृत लिख्यते ॥ राग केदारा ॥ बनौ वाल भेप मुरारि ॥ थकित जित तित अमर मुनिजन नन्द लाल निहारि ॥ केस सिर विनु विपिन हरि के छिरकि चहुँ दिसि छारि ॥ सीस पर धरि जटा जनु सिसु रूप किय त्रिपुरारि। सदन रज तन स्याम सोभित सुभग इहि उन्ह हारि ॥ मनहुं अंग विभूति भ्राजित सिंधु सो मधु मारि। तिलक ललित ललाट केसरि विन्दु सोभा कारि ॥ क्रोध

भरन तृतीय लोचन रह्यो रिपु तन जारि ॥ कठ स्वाजित नील मनि मय माल रची समारि ॥ नील गिर वल गरल मानो लीलियो मदनारि । कुटिल हरि नप हर्द हरि के निरपि हरिपिल नारि ॥ ईम मनु रजनीस राख्यो सीस तेजु उतारि । त्रिदसपति पति जस मती सौं असन कौ करै आरि ॥ सूर दास विरंचि जाको जपत जस मुख चारि । वरनौ वाल भेप मुरारि ॥ १ ॥

अत—रागनट नारायनी ॥ रे मन तिपटि निलज अति नीति । जियत की कहौं कौन चाले विपत मरत पनि प्रीति ॥ स्वान कुविज सुरुज कानौ श्रवन पुछ विहीन । भगन भाजन कठ म्रिम सिर स्वाननी आधीन ॥ निकट निधन कों लिये आयुध करत तीछन धार अजा नाइक मगन क्रीड़ै तदपि वार वार ॥ पिणक महि इह पेह देही इष्ट देखत लोग । सूर हरि ते विमुप जेनर सती के से भोग ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ अजौ तू सावधान क्यौं न होही ॥ माया विसुप भुअगनि को विपु उतऱ्यो नाहिन तोहीं ॥ राम नाम सौं मत्र सजीवन जिन जग मरता जियायो । वार वार सोई श्रवन निकट होई गुरगा रघू तायो ॥ जागी महा मैड विह्वल वेराग कीत कै गायो । सूर मिटै अज्ञान मूरछा ग्यान मूर के खाये ॥ २ ॥ राग विलावल ॥ करनी करना सिन्धु की कहत यनि आवै ॥ कपट हेत पर सैव की जननी गति पावे ॥ वेद उपनिपद जसु कहैं निर गुनहिं वतावैं ॥ सोई सगुन होइ नद कै दावरी वधावे ॥ उग्रसेन की दीनता सुनि कै दुख पावे ॥ कस मारि राजा कियो आपुन सिर नावै ॥ असमय वन गवमे तपासी श्री पङरावै ॥ नये वत्स हितु धेनु ज्यौं सुमिरत उठि धावै ॥ जरासिन्धु की वदि कटी नृप कुल जस गावै ॥ सोक समुद्र तैं उधरें पडव ग्रह आवे ॥ कलिजुग नामा प्रगट है जाकी छनि छवावै ॥ वहुत दोप गनि सूर के ताते गहर लगावे ॥ इति श्री सूरदास कृत सूर रतन ग्रंथ सपूण मिती अगहन सुदी १० सवत् १८७४ वि० ।

विपय—सूरदास कृत सूरसागर से चुने हुए पदों का संग्रह ।

सख्या ३१९ डी सूर सागर, रचयिता—सूरदास, पत्र—३३९, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९६३५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१७ = १८६० ई०, प्राप्तिस्थान—लाला जयतीप्रसाद ग्राम—वल्हुर, डाकघर—वलहुर, जिला—कानपुर ।

आदि—श्रीगणेशायनम ॥ श्री गौरीशकरायनम ॥ श्रीकृष्णायनम अथ श्री भागवते दशम स्कन्धे सूर कृते सूर सागर लिख्यते ॥ दोहा ॥ व्यास कह्यो सुखदेव सौं श्री भागवति वखान । द्वादश स्कध परम सुभग प्रेम भक्ति की खान ॥ नव स्कध नृप सौं कहे श्री सुकदेव सुजान । सूर कहत अव दशम को धरि उर में हरि ध्यान ॥ — विलावल — हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ । हरि चरनारविन्द उर धरौं ॥ जय अरु विजय पारपद दोई, विप्र के श्राप असुर भय सोई । दुइ जन्मन ज्यों हरि उद्धारे, सो तो मैं तुमसा उचारे ॥ देत चक्र शिशु पाल जे भये, वासुदेवहू सौं पुनि हये । औरहु लीला वहु विस्तार, कीन्हों जीवन को निस्तार ॥ सो अव तुमसौं सकल वखानि, प्रेम सुनि हिय में आनि ॥ जो यह कथा सुनै चितलाई, सो भव तरि वैकुन्ठे जाइ ॥ जैसे सुक नृप को समझायो, सूरदास त्योंही कहि गायो ॥

अंत—अथ जन्मेजय कथा वर्णनं ॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ, हरि चरनार विन्द उर धरौ ॥ जन्मेजय जव पायो राज । एक वार निज सभा विराज ॥ विना वैर मन माहि विचार । विप्रन सौं यो कह्यो उचारि ॥ मोको तुम अव जग्य करावहु । तक्षक कुटुम्ब समेत जरावहु ॥ विप्रन सप्त कुटी जव जारे । तव राजा तिनसो उच्चरे ॥ तक्षक कुल समेत तुम जारौ । कह्यो इन्द्र निजु सरनि उवार्‌यो ॥ नृप कह्यौ इन्द्र सहित तुम जारौ । विप्रनहु यह मतो विचार्‌यो ॥ आस्तीक तिहि अवसर आयो । राजा सो यह वचन सुनायो । कारन करन हार भगवान । तक्षक डसन हार मति जान ॥ विन हरि अज्ञा डुलै न पात । कौंन सकै करि काहु निपात ॥ हरि ज्यौं चाहे त्यौंही होय । नृप यामे सदेह न कोय ॥ नृप के मन यह निश्चय आयो । जग्य छाडि हरि पद चितु लायो ॥ सूत सौनकन को समझायो । सूरदास त्यौंही कहि गायौ ॥ इति श्री भागवते सूरदास कृते सूर सागरे द्वादस स्कंध समाप्तं शुभ मस्तु ॥ श्री गौरीशंकरायनमः ॥ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे तृतीया गुरुवासरे सवत १९१७ सुमम् लिखित मेडे लाल सराफ साह केवलराम सुत साह नेवाजन लाल के नाती श्री दयाराम साह के पंती वल हुर ग्राम के वासी चिरजीव गौरी दत्त हेतु वे जो जान्यो सो लिख्यो कृपा करि मोधिवी ॥ श्री गौरी-शंकरायनम. श्री राधावल्लभायनमः

विषय—श्रीकृष्ण चरित्र वर्णन ।

संख्या ३१९ ई. सूरसागर दशम स्कध (पूर्वार्द्ध), रचयिता—सूरदास, पत्र—१६१, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१०२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१७ = १८६० ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर ज्ञानसिंह, ग्राम— मडौली, डाकघर—कादिरगज, जिला—एटा ।

आदि—श्री गणेशायनमः श्री संकरायनमः श्री कृष्णाय नमः अथ श्री भागवते दशम स्कन्धे सूर कृते सूर सागर पूर्वार्द्ध लिख्यते ॥ दोहा ॥ व्यास कह्यो सुकदेव सो श्री भागवति वखानि । द्वादस स्कन्ध परम सुभग प्रेम भक्ति की खानि ॥ नव स्कंध नृप सो कहे श्री सुख देव सुजान । सूर कहत अव दसम को धरि उर में हरि ध्यान ॥ विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करो । हरि चरनार विन्द उर धरौ ॥ जै अरु विजय पार पद दोई । विप्र के श्राप असुर भये सोई ॥ दुई जन्मन ज्यों हरि उद्धारे । सो तो मै तुमसौं उच्चारे ॥ दत वक्र शिशु पाल जो भयो । वासुदेव है सो पुनि हयो ॥ औरहु लीला हरि विस्तार । कीन्हो जीवन को निस्तार ॥ सो अव तुमसो सकल वखानि । प्रेम सहित सुनि हिय में आनि ॥ जो यह कथा सुनै चित लाइ । सो भव तरि वैकुंठे जाइ ॥ जैसे सुक नृप को समझायो । सूरदास त्यौंही कहि गायो ॥

अंत—कल्यान—ऐयो रास रंग स्याम सवहुन सुष दीन्हो ॥ मुरली धुनि करि प्रकास षग मृग सुनि रस अवास । जुवती तजि ग्रेह वास वनहि गवन कीन्हौ ॥ मोहे सुर असुर नाम मुनि गन जन हिये जाग । शिव सारद नारदादि चकृत भये ज्ञानी ॥ गगन अमर अमर नारि आये लोकन विसारि । ओक ओक त्यागि कहत धन्य धन्य वानी ॥ थकित भयोगन समीर चन्द्रमा भयो अधीर । तारागन लजित भये मारग नहि पावै ॥ उलटि जमुन

बहति धार विपरित सवही विचार। सूरज प्रभु सग नारि कौतुक उपजावै॥ टोरी॥ नन्द कुमार रास रस कीन्हाँ। वृज तरुनिनि मिलि के सुख दान्हों अद्भुत कौतुक प्रगट दिखायौ कियो स्याम सव हुन मन भायो॥ विचगोपी विच मिले गुपाला। मनि कचन सोभित सुभ माला॥ राधामोहन मध्य विराजै। त्रिभुवन की सोभा लखि लाजे॥ रास रग रच्यो अति भारी। हाव भाव नाना गति न्यारी॥ नृत्तत अग थकित भइ नागरि। रुप गुनन करि पम उजागरि॥ उमगि स्याम स्यामा उर लाई। वारवार कह्यौ श्रम पाइ॥ कठ कठ भुज भुज दोउ जोरे। घन दामिनि छूटत नहि छोर॥ सूर स्याम जुवतिन सुख दाइ। जुवतिन के मन गर्व विढाइ॥ अथ श्री भागवते सूर कृते दसम स्कन्धे अन्तर ध्यान लीला वणनं नाम त्रिशेध्याय ३०॥ लिखत मेडे लाल फाल्गुण मासे शुक्ल पक्षे तृतीया गुर वासरे श्री सवत १९१७ सुभम्॥

विषय—दशम स्कन्ध भागवत का पूर्वार्द्ध ३० अध्याय तक।

संख्या ३१९ एफ. सूरसागर भागवत दशमस्कध (उत्तरार्द्ध), रचयिता—सूरदास, पत्र—१७२, आकार—१२×८ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४१८, रूप—प्राचीन, लिपि-नागरी, लिपिकाल—स० १९१७=१८६० ई०, प्राप्ति स्थान—ठा० ज्ञानसिंह, ग्राम—मडैली, डाकघर—कादिरगज, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नम श्री सकराय नम श्री कृष्णाय नम अथ सूरसागर भाग वत दसम स्कन्ध सूरदास कृत उत्तरार्द्ध लिख्यते॥ हरि हरि हरि हरि समुरन करो। हरि चरनार विन्द उर धरो॥ राग विलावल॥ गन भयो वृजनारि को तवहीं हरि जानी। राधा प्यारी सग लै भये अतर ध्यानी॥ गोपिन हरि दख्यो नहीं तव सव अकुलाइ। चकृति है पूछन लगी कहँ क गये कन्हाइ॥ कोऊ मरम जान नहीं ब्याकुल सव वाला। सूर स्याम हूढ़त *फिरें जित तित ब्रज व ला विहाग—हुते कान्ह अवहीं सग। वन में मोहन मोहन कीन्हें* टेरैं॥ ऐसे सग तजि दूरि भये क्यों समुझी हरि गोहनि घेरैं॥ चूक मान लीन्ही हम अपनी वैसेहु लाल वहुरि मुरत हेरैं॥ कैहति है तुम अतर जामी पूरम कामी हौ सव घरे। हूढ़त द्रुम वेलि वनमाला भई वेहाल करत अत रेरैं॥ सूरदास प्रभु तुम्हरी दासी वृथा करत हमको क्यों झेरैं॥धनासिरी॥ विरल वृजनाथ वियोगिन नारि॥ हाहा नाथ अनाथ करो जनि टेरत वाह पसारि॥ हरि के लाउ गव जोवन के सकी न वचन सभारि॥ चिंतित हुं अपराध हमारो नहिं कछु दोष मुरारि॥ ढूढ़त वाट घाट वन घन मैं मोचि नैन जल धार॥ सूरदास अभिमान देहि के वैठा सवसु हारि॥

अत—तहँते पुनि द्वारावति आये। ब्राह्मण क वालक पहुँचाये॥ अर्जुन देषि चरित्र अनूप। विस्मय वहुत भयो सुनि भूपि॥ ऐसे हैं त्रिभुवन के राय। कहा सकै रसना गुण गाय॥ ज्यौं सुक नृप सों कहि समझायो। सूरदास ताही विधि गायो॥ इति श्री भागवते सूर कृते दशम स्कध समाप्तम्। फाल्गुण मासे शुक्ल पक्षे तृतीया गुरु वासरे श्री सवत १९१७ लिखतं मेडे लाल सराफ साह केवल रामसुत साह नेवाजन लाल के नाती श्री दयाराम साह के पती वल्हुर ग्राम के वासी चिरजीव गोरी दत्त हेत वे जो जान्यो सो लिख्यो कृपा करि सोधवी॥

विषय—भागवत दसम स्कंध सूर सागर के ३१ से ९० अध्याय।

संख्या ३१९ जी. सूरसागर एकादश स्कंध, रचयिता—सूरदास (व्रज), पत्र—५, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१७ = १८६० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० रामसिंह, ग्राम—दीनाखेड़ा, डाकघर—सरौं, जिला—एटा।

आदि—श्रीगणेशायनमः अथ एकादश स्कन्ध लिख्यते ॥ श्री विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करौं। हरि चरनारविन्द उर धरौं ॥ सुक देव हरि चरनन चितलाय। सूर तरौं हरि के गुन गाय ॥ अथ नारायन औतार वर्णन ॥ विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करौं। हरि चरनारविन्द उर धरौं ॥ नारायण ज्यौं भयो अवतार। कहौं सो कथा सुनो चित धार ॥ धर्म पिता अरु मूरति माय। भये नरायण सुत तिन आय ॥ बद्रिका आश्रम रहे पुनि जाय। जोग्या भास समाधि लगाय ॥ उनके और कामना नाहीं। सुख पावै त्रिभुवन मन माहीं ॥ सुर पति देखत गयो डेराय। काम सैन्य संग दियो पठाय ॥ रितु वसंत फूली फुलवाई। मद सुगंध वयारि वहाई ॥ करत गान गंधर्व सुहाये। नृत्त भाव अपसरा दिखाये ॥ काम वान पांचौ सधाने। नारायन ते मनहि न आने ॥ तव तिन सवन महा भय पायो। कह्यौ इंद्र हमें वहां पठायौ।' तव नारायन आंखि उघारी। उन सव को कीनी मनु हारी ॥ तुम कछु मन में भय मति धरौं। इतहि हमारे आश्रम करौं ॥ दोष तुम्हारो है कछु नाह। तुम्हे पठायो है सुर नाह ॥

अंत--ब्रह्मा हरि पद ध्यान लगाये। तव हरि हस रूप धरि आये ॥ सवहुन रुप देषि सुप पायो। तवही उठि के माथो नायो ॥ सनकादिक कह्यो या भाय। हमको दीजै प्रभु समझाय ॥ को तुम क्यौकरि यहां पधारे। परम हस तव वचन उचारे ॥ यह तो प्रश्न जोग्य है नाहीं। येकै आतम हम तुम माहीं ॥ जो तुम देहि देखि करि पूंछी। तौहू प्रश्न तुम्हारो छूंछी ॥ पंच भूत से सव तन भये। कहा देषि के तुम भ्रम गये ॥ यह कहि उनको गर्व नेवार्यो। वहुरो या विधि वचन उचार्यो ॥ विषय चित्त दोऊ हैं माया। दोऊ चतुर ज्यो तरुवर छाया ॥ तरुवर डोलै डोलै सोई। ज्यौं जिय लागि चित चेतन होई ॥ फिर जव चित्त विषय तन जोवै। चित्त विषय सजोग तव होवे ॥ ऐसी भाति रहै दोऊ गोई। तेहि न्यारे करि सक्त न कोई ॥ ज्यौं सपने में सुख दुःख जोय। जागि सत्य राखत चित पोय ॥ जव जागै तव मिथ्या जानै। ग्यानी नित उनको यो मानै। विषय चित्त दोऊ भ्रम जानौं। आतम रुप सत्य करि मानौं ॥ श्रवनादिक में चित्त लगावहु। प्रेम सहित मम रुपहि ध्यावहु ॥ ऐसे करत विषय हूं होई। अरु मम चरन रहै चित गोई ॥ जो ऐसो विधि साधन करै। सो निश्चय मम पद अनुसरै ॥ और जो वीचहि तन छुटि जाय। तौ है जन्म भक्त ग्रह जाय ॥ ऊहं हू प्रेम भक्ति की ठानि। पावै मेरो परम अस्थान ॥ सनकादिक सो कहि यहु ज्ञान। परम हस भय अंतर ध्यान ॥ जो यह लीला सुनै सुनावै। सूर सो प्रेम भक्ति की पावै ॥ इति श्री एकादश स्कन्ध समाप्तः लिपित मेडे लाल संवत १९१७ वि० ॥

विषय—नारायण अवतार और हसावतार की कथा।

संख्या ३१९ एच. सूरसागर, रचयिता—सूरदास (ब्रज), पत्र—३, आकार—१ × ८ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप)—१४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१७=१८६० ई०, प्राप्तिस्थान—ठा० ज्ञान सिंह, ग्राम—मडाली, डाकघर—कादिरगंज, जिला—एटा।

आदि—श्रीगणेशाय नम श्री सकराय नम श्री कृष्णाय नम बौध्य अवतार वर्णन ॥ विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करौं। हरि चरनार विन्द उर धरौं ॥ सुकदेव हरी चरनन सिर नाय। राजा सों बोले या भाय ॥ बाध रूप जसे हरि धार्यो। आदित सुतन को कारज सार्यो ॥ कहौं सो कथा सुनो चित धारि। कहै सुनै सो तरै भव पार ॥ असुर यक्र समय शुक्र प जाय। कह्यौ सुरन जीतें किहि भाय ॥ शुक्र कह्यौ तुम जग्य विस्तरौ। करि के जग्य सुरन सों लरौ ॥ याही विधि तुम्हरी जय होय। या विन और उपाय न कोय ॥ असुर शुक्र की आज्ञा पाय। लागे करन जग्य बहु भाय ॥ तब सुर सब हरि जी पहुंचाइ। कह्यो वृत्तांत सकल समुझाइ ॥ हरिजी तिनको दुखित दपि। कियो तुरत सेवरे को भेप ॥ असुरन पास बहुरि चलि गये। तिनसों बचन ऐसी विधि कहे ॥ जग्य माह तुम जो पशु मारत। दया नहा आवत सहारत ॥ अपनो सो जिय सबको जानि। कीजै नहिं जीवन की हानि ॥ दया धर्म पाएँ जो कोय। मेर मत ताकी जय होय ॥ यह सुनि असुरन जग्यहि त्यागे। दया धर्म मारग अनुरागे ॥ या विधि भयो बौद्ध अवतार। सूर कह्यो भागवति अनुसार ॥

अंत—अथ जन्मेजय कथा वर्णन ॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमरन करो। हरि चरनार विन्द उर धरो ॥ जनमेजय जब पायो राज। एक बार निज सभा विराज ॥ पिता बैर मन माहि विचारि। विप्रनसों यौं कह्यो उचारि ॥ मोको तुम अब जग्य करावहु। तक्षक कुटुंब समेत जरावहु ॥ विप्रन सब सुरी जब जारि। तब राजा तिनसों उच्चारि ॥ तक्षक कुल समेत तुम जारो। कह्यो इन्द्र निज सरन उबारो ॥ नृप कह्यौ इन्द्र सहित तुम जारो। विप्रनहू यह मतो विचारो ॥ आस्तीक तिहि अवसर आयो। राजा सो यह वचन सुनायो ॥ कारन करन हार भगवान। तक्षक डसन हार मति जान ॥ विन हरि आज्ञा डुरै न पात। कौन सके करि काहु निपात ॥ हरि ज्यौं चाहें त्योंही होय। नृप यामें संदेह न कोय ॥ नृप के मन यह निश्चय आयो। जग्य छाडि हरि पद चित लायो सूत सानकनसों समुझायो। सूर दास त्योंही कहि गायौ ॥ इति श्री भागवते सूर दास विरचिते सूरसागरे द्वादस स्कन्ध समाप्तम सुभ मस्तु ॥ श्री गारी सकराय नम ॥ फाल्गुण मासे शुक्ल पक्षे तृतीया गुरवासर श्री संवत १९१७ सुभम् लिखत मेडे लाल सराफ साह केवल राम सुतसाह नेवाजन लाल के नाती श्री दयाराम साह के पती बल्हुर ग्राम के वासी चिरंजीव गौरीदत्त हेत वे जो जायो सो लिखो कृपा करि सोधवी ॥ श्रीगौरी सकराय नम ॥ श्री राधा वल्लभाय नम।

विषय—बाद्ध औतार, कलकी अवतार राजा परीक्षित मुक्ति वर्णन और जन्मेजय कथा ॥

संख्या ३१९ आई. रागमाला, रचयिता—सूरदास, पत्र—२८८, आकार—१२ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१६४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० विद्याराम शर्मा, ग्राम—उगनपुरा, डाकघर—बाह, जिला- आगरा।

श्री गणेशाय नमः। राग भैरों। राधा माधो दोइ नही। प्रकृत पुरुष न्यारे नहिं कबहु वेद पुरान कहत सबही। देह भेद ते भेन जानि कै मत भ्रम भूले लोई। ब्रह्म आदि ३.स्थावर प्रकृत पुरुष रहे गोई। भक्त हेतु औतार लियो ब्रज पूरन पुरूष पुरान। सूर दास राधा माधो तन दोइ यक भये प्रान। राग विभात—राधा माधो प्रकृति पुरुष ज्यों छाया तरवर दोइ नही। नैन दोइ अरू सुवन दोइ ज्यो कहन सुनन दोइ। दोइ नही कंचन भूषन कबहु जल तरंग ज्यों दोइ नही। त्योहि जानि सूरमन विचक्रम राधा माधो दोइ नही।२। राग विभासा। सोइ नंद नंदन गाइये प्यारो। चरन प्रताप तरी रिषी पत्नी हिरनाकुस उर फारो। पतित अजामिल कुविजा दासी पुनि गोकुल पद धाये। रंक सुदामा कियो महाधनी ध्रूव निह चल कीन्यो नहि माओ अपरम पार पार परसोराम वेद विद विमल जस गावत चाओ। सूरदास प्रभु पतित उदारन हरि गोकुल लीला वपधाओ।

अंत—राग विलावलि। ग्वालिनी जोवन गर्व गहीली कुकुभ उपरि कनक तन गोरी सुगंध चढ़ाई किशोरी। क्षिन चीर ठिपाऊ लहगा पिहरें विधि पट मोस महगा कुसभी पूरी मांग मोतिनि ठनि केसरि आऊ लिलाट मुकुट धन काजर रेख नैम अनियारे खजन मीत मधुप भृग हारे अवननि कुंटिल रव ससि जोति कनक वेसरि लटकै गज मोती दसन अनार। अधर विंब मानो चुबुक चारु सुंदो मठ जानो कंठ कपोत मोतिनि के हारा जनौ जुग गिरि विच सुरसरि धारा। कुच चकवा मुख ससि भ्रम भूले बैठि विधुरे दुहु अंकन कृते········ (दीमक ग्रसित) तब मोहन हलधर पकराये। किये तरूनि अपने मन भाये। नाक नैन मुख काजर लायो हरद कलस हलधर सिर नायो। इति श्री राधा माधो विहार सम्पूर्णम्।

विषय—सूरदास के एक हजार के लगभग पदो का सग्रह। पुस्तक मे २५ रंगीन हस्तलिखित चित्र है जो बडे सुन्दर तथा भावपूर्ण है।

संख्या ३१९ जे. विसातिन लीला, रचयिता—सूरदास (ब्रज), पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८३१, प्राप्तिस्थान—ठाकुर हरिसिह रघुवशी, ग्राम—रामगढ़, डाकघर—दतौली, जिला—अलीगढ़।

आदि—श्रीगणेशायनमः॥ अथ विसातिन लीला लिख्यते॥ एक समै वृज चंद नद सुत मन मे यही विचारी। करिके भेष विसातिन जी को छलियो राधा प्यारी॥ कीन-पाव को लहँगा पहिरे अरुन जर कषी सारी। अँगिया खासि लाल मंडन की अति छवि देत किनारी॥ मोतिन की पहिरे नकवेसर झालरदार वनाई। मानौ रति पति गढ़ी आय कर कहि न जात सुघराई॥ कानन करन फूल अति सोहे माथे वीज जड़ाऊ। ताऊपर अति लसत वेंदनी मोतिन मांग भराऊ॥ कंठ लसे दुलरी और तिलरी गज मोतिन के हारा। मानहु गिरि सुमेर को विहाय धंसी गग की धारा॥

अत—जसुधा कही सुनो हो लाल दिन सब कहा विताये। बालन संग कलेवा करिके तब से फिरि अब आये॥ पेलत रहीं गवालन के सग वसी वट की छांई। नवल कुज जहँ नद लगाइ जमुना तट के माहा॥ भली करी तुम प्रान पियारे अब चलि करौ वियारी। परपे महर तुम्हे है वैसी परसी धरी है थारी॥ नद साथ हरि भोजन कीनो बीरा मुख में दीना। सोये आय पलग के ऊपर हरष मातु सुप दीनों॥ जुग जुग जीवो कुँवर राधिका जुग जुग कुवँर कन्हाई सूर दास भगतन के सेवक जिन यह लीला गाई॥ जो कोऊ कृष्ण विसातिन लीला सुनै सुनाव गावै। नर वैकुंठै जाय सकल मनसा फल पावै॥ इति श्री विसातिन लीला समाप्त॥ सवत् १८३१ भादो कृष्ण पक्ष दसमी लिखा राम सनेही॥ राम राम कृष्ण कृष्ण॥

विषय—श्रीकृष्ण की ब्रज लीला।

संख्या ३१९ के विसातिनलीला, रचयिता—सूरदास, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६०, रूप प्राचीन लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—गणेशीलाल, ग्राम—जैतपुर कला, डाकघर—जतपुर कलाँ, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ विसातिन लीला लिप्यते। एक समैं बृज चद नद सुत मन में यही विचारी। करैं भेष विसातिन जी को छलिये राधा प्यारी। कीन पाप की लहगा पहिर ... रून जरकसी सारी। अगिया लासि लाल मडन की अति छवि दत किनारी। मोतिन की पहरे नक वेसरि झालरदार बनाइ। मानों रति पति गढ़ी आप कर कहि न जात सुघराई। करन फूल अति सोहैं माथे बीज जड़ाऊ। ता ऊपर अति लसत चंदनी मोतिन माग भराऊ। कठ लसै दुलरी तिलरी गज मोतिन के हारा। मानो गिरि सुमेर को विहाय धरी गग की धारा, हाथ पकरि मनि हारि न जू की जाय टटो। गागहु कान आपने कर से रचि रुचि बीज सवारे। ६।

अत—भरस परस राधे सों करिके नैनन सो न मिलाए। नद नदन मान के नद गाय चलि आए। जसुधा कही सुनो लाल निस दिन कहा बिताए। वालन सग कलेवा करके तब से फिर अब आए। खेलत रहीं गुपाल सग वनसावट की छाही। नें कुज जहा नद लगाइ जमुनातट की माही। भली करी तुम प्रान प्यार अब चलि करिये वियारी। परपे महर तुम्हें है ...मी परसी धरी है थारी। नद साथ हरि भोजन कीन्हो बीरा मुख में दीन्हो। जुग जुग जीवों कुवर राधिका जुग जुग कुवर कन्हाइ। सूरदास भगतन के सेवक जिन यह लीला गाइ। जो कोइ कृष्ण विसातिन लीला सुने सुनावे गावै। तर वैकुंठै जाइ सकल मनसा फल पावे। इति विसातिन लीला समाप्तम्।

विषय—श्री कृष्ण द्वारा विसातिन भेष धारण कर राधा को छलने का वर्णन।

संख्या ३२० कवित्तावली पृति प्रभाकर, रचयिता—सूयनारायण लाल (कोद, मिरजापुर), पत्र—५२, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९५४ =

१९९७ ई०, प्राप्तिस्थान--श्रीमती पं० रामनारायण दुबे, ग्राम और डाकघर--नगराम, जिला--लखनऊ।

आदि—श्रीगणेशायनमः ॥ अथ कवितावली पूर्ति प्रभाकर लिप्यते ॥ घनाक्षरी ॥ मन वचन वदौ पद शंकर दुलारे जू को मोचन सुकोचन के नेकु ध्यान जाके है। गुन गान वरदान गनाधीस केर साने सुधा स्वाद मुद मोक्षक मजा के हैं ॥ वदन गयंद हर द्वंद चंद्र वाल संतत अनद कंद नंद गिरिजा के हैं ॥ १ ॥ निरतन लागे तन लागे शुभ सार छार अकनि के चन्द चूड वंद जू को नंद भे। देवन जु मन दे सुमन सुर तरु केर विथु रस वीथी मधु कहु कहु वंदभो ॥ त्रास अनायास वास कीन्ह है खलन × × न जान खेद मान मुख मद भो ॥ चोपन चलौ है विनु लकुट सदा को निज गोपनि विसरि अस गोपन अनद भो ॥ २ ॥

अंत—सजनी कहु जाय रहे रजनी जहँ चीन्हे है नीके कै छैल छली। लगी पीक की लीक उनीदे भले वने ये दोऊ नैन सरोज कली ॥ अधरान हैं खडित काजर रेख धरैं चीटी चुरावन खड चली। यह आर है स्वांग दिखावन को कहँवा सव रैन गँवाय अली। १४४ ॥ तोहि कालि सखी मैं लखी नद द्वार पै यों हठली नटली नटली। पुनि क्यो करि सो विकलाइ गई किमिकै विगसै हृद कंज कली ॥ रति सेज करेज जो सीतल भो कहुजा विधि प्रीतम सो मचली। ये रे गोविन्द ने मिलि के गांव सों कहँवो सव रैन गँवाए अली ॥ १४५ ॥ इति श्री कविता वली पूर्ति प्रभाकर लाल सूर्य नारायण कोढ़ मिर्जापुर निवासी रचित समाप्तम् ॥ संवत १९४५ वि० ॥

विषय—अनेक विषयो पर समस्या पूर्ति।

संख्या ३२१ ए. नवरत्न भाषा, रचयिता—श्यामलाल (गौरीलखा, तह० शिवराजपुर, कानपुर), पत्र—७२, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८७२, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०८ = १८५१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवकुमार मिश्र, स्थान—हरदोई, डाकघर—हरदोई, जिला—हरदोई।

आदि - श्री गणेशाय नमः ॥ अथ नवरत्न भाष्य वृन्दावन विलास लिख्यते ॥दोहा॥ श्री गुरुचरण सुमरण करूं जिनसे पायो ज्ञान। प्रिय प्रीतम की भक्ति में निशि दिन रहे मम ध्यान ॥ १ ॥ नव रत्न भाषा कहू सव भक्तन को दास। लीला कछु वर्णन करूं जुगुल चरण की आस ॥ २ ॥ नद गांव नद नन्दन में वरषाने वृषभान। दोनों कुल दीपक भये गावत वेद पुरान ॥ ३ ॥ वृज समुद मथुरा कमल वृन्दावन मकरंद। वृज वनिता सव पुष्प हैं मधुकर गोकुल चंद ॥ ४ ॥ पूरण मासी सरद की रच्यो कन्हैया रास। मन मोहन शीश पाउना चद थक्यौ आकाश ॥ ५ ॥ कहा कहूं छवि आज की भले वने हो नाथ। तुलसी मस्तक तव नवै धनुष वाण लेउ हाथ ॥ ६ ॥ क्रीट मुकुट कटि काछिनी पीताम्बर वनमाल। यह मूरत मेरे मन वसी सदा विहारी लाल ॥ ७ ॥ मेरी ओर निहारियो टेरत हो वृजराज। रहस रास देखूं सभी भक्तन के सिरताज ॥ ८ ॥ वंसी वट जमुना तटहि जहँ खिले कदम द्रुम फूल। भक्तन के प्रिय नाथ हरि प्रगटे जीवन मूल ॥ ९ ॥ ऊठी विसाषा श्यामला अव-

मति दर लगाय । प्यारी जी को टेर के जल्दी नृत्य कराय ॥ १० ॥ सखी बिसाखा उठि चली मोहन को सिरनाय । प्यारी सों अरजी करी तुरतै चली लिवाय ॥ ११ ॥ सुनत बचन प्रिय प्रेम के हृद न हृदय समाय । मानो गज गामिन चली शोभा बरणि न जाय ॥ १२॥

अंत—प्यारी सों सब कहति यह प्रीतम की लाइ चोरि । यह [illegible] ठगति सबको भट्ट अब याहि न दीजै छोरि ॥ १ ॥ अब न रहेगी कानि कछु लाल सुनो नाम जब चोर । कपट वेष तिय धरि हरा बने तिहि छिन नन्द किसोर ॥ २ ॥ हँसति मोहिनी सोहनी रस लीला निरखि अनूप । प्रेम मेल में वारों अति वारों हू रूप ॥ ३ ॥ = ॥ रगता ॥ = ॥ हे श्यामा चलो विपिन में अद्भुत बहार है । छाइ घटायें गगन विच शोभा अपार है ॥ इन्द्र के धनुष दामिन छवि पे शुमार है । प्रफुल्लित कदम खड़े हैं मोरा गुंजार है ॥ श्यामा० ॥ रंग रंग के पारे पक्षी दादुर चिकार है । बीचे करत किलोलें वा जमुना की धार है ॥ गेंदा गुलाब जुही चमेली सुरपुहुप भार है । झोंका चले समीर द्रुम लचती डार है ॥ श्यामा० ॥ फैली है बेल इत उत रावजी बजार है । नाचत है मोर मद से मुगला बिहार है ॥ चपल जो कोयल बोलें पिउ की पुकार है । स्यामू के श्याम पिया संग चलना विचार है ॥ इति श्री नव रस भाष्य वृन्दावन विलास सम्पूर्ण समाप्त ॥ लिखत राधा मोहन मंगल वार पौष शुक्ल संवत १९०८ विक्रम ॥

विषय—राधा कृष्ण की लीला और प्रेम वर्णन ।

संख्या ३७१ जी. नवरस भाषा, रचयिता—श्यामलाल (गौरालगा, कानपुर), पत्र—८०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८६४, खण्डित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१६ = १८५९ ई०, प्राप्ति स्थान—मनीलाल वैद्य, ग्राम—नगरा हरदयाल, डाकघर—धुमरी, जिला—एटा ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः अथ नवरस भाषा लिख्यते अथ वृन्दावन विलास लिख्यते॥ श्री गुरु सुमरन कर जिनसों पायो ग्यान । प्रिय प्रीतम की भक्ति में निश दिन रहे मम ध्यान ॥ नवरस भाषा कहूं सब भक्तन को दास । लीला कछु बरनन करूं जुगुल चरन की आस ॥ नंद गांव नंद नंदन है बरसाने वृषभान । दोनों कुल दीपक भये गावत वेद पुरान ॥ ब्रज समुद्र मथुरा कमल वृन्दावन मकरन्द । ब्रज वनिता सब पुष्प हैं मधुकर गोकुल चन्द ॥ पूरण मासी सरद की रच्यों कन्हैया रास । मन मोहन शशि पाठना चन्द भक्या अकास ॥ कहा कहीं छवि आज की भले बने हो नाथ । तुलसी मस्तक सब नये धनुष बाण लेउ हाथ ॥ मोट मुकुट कटि काछनी पीताम्बर बन माल ॥ यह मूरत मेरे मन बसो सदा बिहारी लाल ॥ मेरी ओर निहारियो टेरत ही ब्रज राज ॥ रहस रास देखूं सभी भक्तन के सिर ताज ॥ बसत घट जमुना तटहि जहँ खिले कमल द्रुम फूल । भक्तन के प्रिय नाथ हरि प्रगट जीवन मूल ॥ उठी बिसाखा सामला अब मति दर लगाय । प्यारी जी को टरि के जल्दी नृत्य कराय ॥

अंत—प्यारी सों सब कहति यह प्रीतम को लाई चोरि । यह [illegible] ठगति सबको भट्ट अब याहि न दीजै छोरि ॥ अब न रहेगी कानि कछु लाल सुनो नाम जब चोर । कपट

वेष तिय परि हन्यो बने तिहि क्षण नंद विसोर ॥ हंसति मोहिनी सोहनी रस लीला निरषि अनूप । प्रेम खेल के बाने अति बाको है रूप ॥ रेखता ॥ हे श्याम चलो विपिन में अद्भुत बहार है । छाई घटायें गगन विच शोभा अपार है ॥ इंदर के धनुष दामिन छवि बे शुमार है । प्रफुलित कदम खडे है भौंरा गुजार है ॥ श्यामा० ॥ रग रंगके बोलें पक्षी दादुर चिकार है । कीडे करत किलोलें या यमुना की धार है ॥ गेदा गुलाब तुर्रा क्या खुशबूय दार है ॥ झौंकन चलैं समीरें द्रुम लचती डार है ॥ श्यामा० ॥ फैली है बेल इत उत सबजी बजार है । नाचत है मोर मद से मृगनी विहार है ॥ चचल जो कोयल डोलै पिउपी पुकार है ॥ श्याम के श्याम प्रिया सग चलना विचार है ॥ श्यामा० ॥ इति श्रीनवरतन भाषा वृन्दावन विलास संपूर्ण समाप्त. लिखत राधा मोहन मगल वार माघ सुदी ११ एकादशी ॥

विषय—राधा कृष्ण की लीला और उनका प्रेम वर्णन ।

संख्या ३२२ ए. शैरवाटिका, रचयिता—श्यामलाल (मथुरा) पत्र—१३२, आकार—८ × ६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३७६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८९४ = १८३७ ई०, लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—मौलाना रसूल खां काजी, ग्राम—गंगीरी, डाकघर—सलेमपुर, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ शैर वाटिका श्यामलाल कृत लिख्यते ॥ दो०—राम बडाई को करै । की के बुद्धि सिवाय । आना राखै जक्त को । सो प्रभु पानी परसाय ॥ शैर—उठि प्रात समय हृदय मे ध्यान धरोरे । प्रभु भजन विना जीव जन्म जात वहोरें ॥ मति मंद अंध काहे को सोच करोरे । श्री राम राम राम राम राम कहोरे ॥ जम अत काल दावन है आय गहोरे । आवै न राम नाम कोटि जतन करोरे ॥ कर मिहर आप राज विभीषन को दयोरे । श्री राम राम राम राम राम राम कहोरे ॥

अत—सोरठा—यह सुनि वगरे ग्वाल वरसाने की बाट में । रग मारो ततकाल सो सुधि पाई राधिका ॥ दोहा—सुधि पाई सो राधिका सो मन आपुन कीन । डगर चलत कछु ना कही सुनी लाल परवीन ॥ शैर—बात होनहार देखो घर काउ ना कही । दधि गोरस लिये राधिका बरसाने तन गई ॥ कहे श्याम कान्ह कंचन पिचकारी दई । सोई चूनरी चपेटन चूर बोर भई ॥ भई चोर बोर चूनर झंझ झोर झपट लई । मुरा क्यानी मुख राधा बाधा ग्रह बाधनन छई ॥ अकुलानी बोली वो ललिता कहां गई । नई चूनरी चपेटन की चूर बोर भई ॥ बाजत है ढोल ढपला त्रातंग वजा दई । वाजत सितार बीन झाझ घोट घटा छई ॥ मिलत गुलाल लाल पडे लाल गली भई । ब्रज मडल के ठौर ठौर फाग फैल रही ॥ मगन ठाढ़े फगुआ वारे रंग डारे अति सई ॥ ब्रज मडल के बीच कीच केशर की भई ॥ हंस लिपटै घन श्याम झपट दौड़ पकड लई । ब्रज मडल के ठौर ठौर फाग फैल रही ॥ है १८९ अरु ४ संवत् विक्रम । मधु मास सुदी दशमी अनुराधा नक्षत्रम ॥

विषय—ध्रुव चरित्र, प्रहलाद चरित्र, वलि चरित्र, दान लीला, नाग लीला आदि कृष्ण जी की अनेक लीलायें, होली वसंत बहार और रास लीला आदि का रोचक वर्णन ।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता श्यामलाल मथुरा के निवासी थे। इनके रचे अनेक ग्रन्थ हैं। रचनाकाल संवत् १८९४ वि० जिसका इस प्रकार लिखा है —१८९ और ४ संवत् विक्रम। मधुमास सुदी दशमी अनुराधा नक्षत्रम। लिपिकाल संवत् १९०० वि० है।

संख्या ३२२ घी दानलीला, रचयिता—श्यामलाल (मथुरा), पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८९१ = १८३४ ई०, लिपिकाल—सं० १९०० = १८४३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामभरोसे गौड़, ग्राम—बाबापुर, डाकघर—टप्पल, जिला—अलीगढ़।

श्री गणेशाय नमः अथ श्याम लाल कृत दान लीला लिख्यते॥ मोर मुकुट कटि काछिनी कर मुरली उर माल। ने बालक मनमें बसो सदा बिहारी लाल॥ सार—लट पटी पाग सीस बधी तैन उर्नाद। मुरली में बाल पैल आये उनमाद॥ बाध दो सिरमी नार न घर घर को गौंद। आये हा मात काल लाल बाल दही द॥ द दही बाल नद लाल गुपाल घर। सब सखा सग मोहन मुरली में टेरें॥ मन बाल बैठ लाल बचन भाभों मेरो। दधि दान कान्ह मागत ना करजी लगो॥ कट पट बधी सुंदर पीताम्बर पट की। सिर मोर मुकुट लकुट ओढ़ब वर पट का॥ मथुवा के बीच जात ग्वालन भटा। सब दूध दही राखो फोर डारी मटकी॥ नथ दुलरी तोर डारी फार डारी चोली। पना चवाइ ऐल करें मोल टाली॥ मैं यहां नाम न्याइ मुख नाहीं बोली। आइ सभा मे हूर लुट भई अनाली

अंत—मोर मुकुट धमी लकुट पढ़ी मने बागमाल। उरा ऐल मग में मगो राह रार ब्रज बाल॥ दौर—मिल गई अचानक मारग में घर गयो मेरो। मन रान गई आयो नार मोतन हेरो॥ गई ग्वालन की गैल दही सावे तेरा। जाकर करियाद कंस पहा करि है मेरो॥ रही फोर नांव तुम पढ़ो तुम लिमके लोलना। रही लगी दूर हमने पन पढ़ न बोलना॥ रहत कौन पुरा हमसे न करो टोलना। मटकी न छिनो मेरी न मोल मोलना॥ अनमोल तेरी मटकी बिन मोल लुग दों। बेहाल कर बाल तुझे नाच नचा दों॥ रहो सूधी अबै ऐसी बूधो न मोको। तै मोसो कहां कब मैं तोमो हजार कहों॥ कहिहों हजार तोमों जब जानी नेह। सिर भर गुपाल लाल बाल गुलचा दे ॥ वरयाद करें याद कहा हमसे लेह। इन बातन दधि दान कान्ह कैसे पी है॥ टरौं न यहां बिना लये गति करि हा तेरी। मग आन खड़ा कान्ह चढ़ा भृकुटी फेरी॥ ठाना न रार मग में कही माना मेरा। ग्वालन न मार दान लेत मत कर दरी॥ यह श्याम दान लीला रचकरके सुना दी। सब याद करो चित में यह बात दी॥ संवत है १८९ अरु एक विक्रमी माघ मास कृष्ण पक्ष और सप्तमी॥ इति श्री श्यामलाल कृत दान लीला समाप्तम् शुभम् संवत १९०० वि०

विषय—श्री कृष्ण का दानलीला का वर्णन।

संख्या ३२३ गाजर की लड़ाइ, रचयिता—टिकैतराय, पत्र—१६, आकार—९ × ६ इंच पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१२ = १८५५ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा देवगिरि-रामगढ़, डाकघर—हरदोली, जिला—अलीगढ़।

श्री गणेशाय नमः अथ गांजर की लड़ाई लिख्यते ॥ सोरनी—सुमिरन करके जगदंबा को ले के रामचन्द्र को नाम। वीर पवारे मो गावति हौं शिवशंकर के चरण मनाय ॥ आदि सरसुती तुमका गइये मेरे कंठ विराजो आय ॥ गाजर केरी करे लड़ाई भूले अक्षर देउ वताय ॥ लगी कचहरी राजा जैचद की भरमा भूत लगे दरबार ॥ मचिया के संग मचियां रगडे मोढा रगडि रगडि रह जाय ॥ रगडि वसौरा रज पूतन के जहँ तिलडारे जमी ना जाय ॥ तौलों मीरा सैय्यद बोले ओ जेचंद सो रंगे वतान ॥ गांजर पैद्मा जतु अटको है ताको अब कछु करो उपाय ॥ इतनी सुनिके राजा जेचंद तुरते बीरा लओ मगाय ॥ सो धरवाय दयो कलसा पै औ छत्रिन से कही सुनाय। है कोइ क्षत्री मेरे दल में जो गांजर पर पान चवाय ॥ इतनी सुनि के ऊदनि बाकड़ा तुरतै बीरा लयो उठाय ॥ बीरा चाबि लओ ऊदनि ने और यह कही लहुरवा भाय। फौजें मजाय देय रनवज की और लाखन देय संग पठाय ॥ करें चढाई हम गाजर की पैसा तुरत लेउं भरवाय ॥ इतनी बात सुनी जैचदने तुरतै दीनो हुकुम कराय ॥ बोलि दरोगा तोपन वारो कलगी बीरा दई इनाम ॥

अंत—वडी वडी तोपन को मजवाओ सो आगे को देउ तुताय ॥ धुवां उगानो चढ़ै क्षत्रिन को लसिगर रही अंधियारी छाय ॥ गोला ओला के सम छूटे गोली मघा वूद अरराय। हाथी घोडा वहुतक जूझे लाखन क्षत्री गये उड़ाय ॥ तोपें धें धें लालों पर गईं छ्लानन हाथ धरे न जाय ॥ यहां लडाई पाछे पर गई लये वंद करे हथियार ॥ दोनों ओर से वढे सिपाही कम्मरि से खेंच लई तलवार ॥ डेढ कदम को अरसा रहिगो घूम के चलन लगी तलवार ॥ पैदर के सग पैदर अभिरे औ असवारन से असवार ॥ सूडि लपेटा हाथी हुइगे हौदन पेश कब्ज की मारु ॥ जह गति वीते दोनों दलमें रुचके मारु मारु रट लागि ॥ नदिया वहन खून की लागी ढालें कछुआ सी उतराय ॥ वेहया डारे मुइ में लौटें जिनके प्यास प्यास रट लागि ॥ मुहर कटोरा पानी हुइगो छूदे ना कहु परे लखाय। लोथिन दे वहँ ढेर लागि गये औ हाथिन के वधे पगार ॥ भजे सिपाही कनवज वारे सो उदनि की नजर परि जाय ॥ घोडा वेन्दुला दावे आवे सुमुहे गोल गओ समुहाय ॥ खैंचि सिरोही लई कम्मरि से सव दल काटि करी खरिहान ॥ अनी वदल गई वगाले की ऊदनि मारि करो संग्राम ॥ राजा गुरुपा के मुँहरा पर ऊदनि गये सेर से धाय। वहुत लडाई भई राजा से सेरे कौन करै वक वाद। कैद कराय लई राजा की डाढे पैसा लओ भराय ॥ लूटि वंगाला ऊदन लीन्हो अपनो कूच दओ करवाय ॥ पद्रह दिन की मंजलि करके फिरि कनवज में पहुंचे आय ॥ दगे सलामी जहँ कनवज में जीति को डका दओ वजाय ॥ इतनी लड़ाइ भई गाजर की टिकहूत रायने कही वनाय ॥ इति गांजर की लडाई सपूर्ण सवत् १९१२ वि० मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्षे वुधवासरे ॥

विषय—गांजर की लड़ाई का वर्णन। यह लडाई गाजर के राजा और कन्नौज के राजा जयचद में हुई थी। राजा जयचंद ने अपने पुत्र लाखन राना के साथ ऊदनि को भेजा था। उनके हारने पर कन्नौज की सेना भागी पर ऊदनि की वहादुरी से राजा गुरपा हार गये और कन्नौज की जीत हुई।

टिप्पणी—इस ग्रन्थ के रचयिता टिकैत राय थे जो सवत् १९०० वि० के पहले हुए थे। लिपिकाल सवत् १९१२ वि० है।

सख्या ३२४ भाषा लघुजातक, रचयिता—टीकाराम अवस्थी, पत्र—३०, आकार—१० × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर प्रताप सिंह, ग्राम—रागैटो, डाक घर—होलीपुरा, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशाय नम। दोहा। देवमुकुट प्रनमित चरन श्री शिव अथ करत। उदय अस्त रवि करत ही जय जय बोलत सत। अथ राशि अग विभाग। जानहु मेष वहि पीरव अरु वृपहि कठ बखान। मिथुन वाहु—सिंह उदर पहिचानि। कन्या कवरि बखानिये तुला बसति अवरेख। वृश्चिक कहिये गुह्य अव धनुको जघ बखानु। घोडनि रग लाल है धोरो वृषभ लखाहि। मिथुन कहावत हरित अति सोसन कर्क गनाहि। सिंह अरुण कछु धूमरो कन्या पदरो रग तुला को चित्र बखानिये वृश्चिक कनक सुरग। धनुष पीत कछु रकल्यो कवरी मकरि दखि भूरा कुम्भ बखानिये मीन मलिन अवरेखि। अथ राशि भेद मेष राशि तो पुरुष है वृषभहि नर कहि यतु ई। सिंह को कन्या कन्या जानि तुला पुरुष वृश्चिक तिया धनुष पुरुष पहचानि मानहि नारी जानिये शिव पडित सुविचारि। अथवा मेष मिथुन अर सिंह तुला कुम्भ धनुष नर नाल। वृष वृश्चिक कन्या मकर त्रिया कर्क अर मान

अत—दूजो ज्यों को त्यों रहै तीज नव कर हीन। एहि जोर राशि छह त्रिय को जन्म मकीन। द्व जोर तो भ्रातृ को चारि जोरि सुत मानि तीन जोरिके मित्र को जनम ऋक्ष पहचानि। एकठार दसों गुन कर दूजे अष्ट गुनाइ। तीजे गुनिये सातसा चाथे पच गुनाई। अपने अपने चक्रसों भाग देइ जो कोइ। यथा तित्थे घटि गुन वतो सब पावे सोई। दश गुन लिखिये पिंड तै बरस आर ऋतु मास। अष्ट गुन पक्ष कहि अवर तिथिन को वास। सागुनै ते दिव सनि पच समग निहारि। जो दस गुन तै कीजिये केश ,साकार। वीसा सां सो भागद शेष रहै व रहे नाही। पिंड तहि भाग छह शीश जुरत ससि राहि। सोई दूही भाग द एक विच पहिला मास। शून्य बचे तो दूसरो एक ऋतु छोड आस। लिप्र पिड जु अष्ट गुनि कहिये नव सरकार। द्वै सै भाग जु एक वच शुक्र पक्षि निरधार। इति श्री भवानीदास अवस्थी सुत टीकाराम कृत भाषा लघु जातक सम्पूर्णम्। शुभमस्तु।

विषय—फलित ज्योतिष।

सख्या ३२५ ए रामचरित मानस, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर तथा काशी), कागज—स्याल कोटी, पत्र—६५०, आकार—११ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२२५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६१३ प्राप्तिस्थान—श्री ननकूप्रसाद जी दूबे—जमराली कटरा, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ बाल काण्ड ॥ वर्णनामर्थ सघाव (श्लोक × × × सोरठा—जेहि सुमिरत सिध होय गण नायक करवर वदन करहु अनुग्रह सोय, बुद्धि राशि

शुभ गुन सदन । मूक होंहि वाचाल पंगु चढ़ै गिर वर गहन । जासु कृपा सुदयाल द्रवौ सकल कलिमल दहन ' नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन वारुन नयन । करौ सो मम उर धाम, सदा क्षीर सागर सयन । कुन्द इन्दु समदेह, उमा रमन करुना यतन, जाहि दीन पर नेह, करौ कृपामर्दन मयन वन्दौ गुरु पद पंकज, कृपासिन्धु नर रूप हरि । महा मोह तम पुंज जासु वचन रविकर निकर ।

अन्त--मोसो दीनन दीन हित तुम समान रघुवीर, अस विचार रघुवंस मनि हरहु विषम भव पीर । कामहि नारि पियारि जिमि, लोहि प्रिय जिम दाम तिमि रघुनाथ निरंतर, प्रिय लागहु मोही राम ॥ श्लोक ॥ × × × इति श्री राम चरित मानस सप्तम सोपानः ।

विषय--रामचरित्र वर्णन ।

संख्या ३२५ बी. बालकाण्ड, रचयिता--तुलसीदास (राजापुर), पत्र--१२२, आकार--१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१२, परिमाण (अनुष्टुप्)--३२९४, रूप--प्राचीन, लिपि--नागरी, लिपिकाल--स० १८३४ = १७७७ ई०, प्राप्तिस्थान--मुंशी लक्ष्मी नारायन, ग्राम--भलसुरा, डाकघर--फीरोजाबाद, जिला--आगरा ।

आदि--श्री वल्लभाय नमः । श्लोक । वर्णं तां अर्थ संघानां रसानां छंद सा मपि । मगला नाच ·······विनायकौ । १ । भवानी शंकरौ वंदे श्रद्धा विस्वास रूपि । याभ्यां विनान पश्यान्ति ····द्धाः सांतस्थमीश्वरं वदे वोध मय नित्य गुरु शंवरं रुपिल । यया श्रितोहि वचोपि··· सर्वत्र वंदिते । ३ । सीताराम गुणं ग्राम······ ··विहारिक्तौ । वदे विशुद्ध विग्यानौ··· श्वर कपीश्वरौ । ४ । जा सुमिरति सिधि होय, गन नाइक करिवर वदन । करौ अनुग्रह सोइ । बुद्धि रासि सुभ गुन सदन । मूक होइ वाचालु पंगु चढै गिरिवर गहन । जासु कृपा सु दयालु द्रवै सकल कलि मल दहन । नील सरोबर स्याम । तरुन अरुन वारुज नयन । करौ सुमम उर धाम । सदा छीर सागर सयन । कुद इंदु सम देह । उमा रवन करुना अयन । जाहि दीन परनेह करो कृपा मर्दन मयन । वदौ गुरू प्रद कंज, कृपा सिधु नर रूप हरि । महा मोह जम पुंज जासु वचन रविकर निकर ।

अन्त--राम रूप भूपति भगति व्याह उछाह अनंद । जात सराहत मनहिं मन कुमुद नाधि कुल चद । चौ० । कामदेव रघुकुल गुर ग्यानी । वहुरि जाधि सुत कथा वपानी । सुनि मुनि सुजस मनहि मन राऊ । वरनत आपन पुंन्य प्रभाऊ । बहुरे लोग रजायसु भयऊ सुतनि समेति राऊ ग्रह जयऊ । जहं तहं राम व्याह सब गावा । सुजस पुनीत लोक तिहु छावा । आये व्याहि राम घर जबते वसे अनद अवधि सब तबते । प्रभु विवाह जस भयउ उछाहू, सकहिं न वरनि गिरा अहि नाउ । कवि कुल जीवन पावन जानी, राम सिया जस मगल पानी । तिहतें मैं कछु कथा वपानी, करन पुनीत हेत निज वानी छंद--निज गिरा पावन करन कारन राम जस तुलसी कह्यौ । रघुवीर चरित अपार वारिधि पार कौने लह्यौ । उपवीत व्याह उछाह मंगल सुनि सुसादर गावही । वैदेही राम प्रसाद ते जब सर्वदा सुप पावही । सीय रघुवीर विवाह जे सप्रेम गावहि सुनहिं । तिनके

सदा उछाह, मगलाय तन राम जस । ३६ । इति श्री राम चरित्र मानसे सक्ल कलि कलुष विध्वसने अविरल हरि भक्ति सपादनी नाम प्रथमो सोपान वालकाड समाप्त सपूर्ण सुभ मस्तु । जथा प्रति लिपी । लि श्रीरामप्रसाद कायस्थ श्रीवास्त वासी वहनरौली के । सवत २८३४ । वैसाख मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यां रविवासर । श्री श्री श्री श्री श्री ।

विषय—रामायण वालकाड की कथा ।

सख्या ३२५ सी रामायण-बालकाण्ड, रचयिता—तुलसी दास (राजापुर), कागज—बासी, पत्र—२२६ आकार—१० X ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४०७, लिपि—नागरी, रचनाकाल - स० १६३१ = १५७४ ई०, लिपि काल—स० १९१३ = १८५६ ई०, प्राप्तिस्थान—राधाकृष्ण बनिया, मुहल्ला पुरानी बस्ती—कटनी ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ श्री जानकीवल्लभो विजयते ॥ अथ बाल कथा लिष्यते तुलसी मत ॥ नाना पुरान निगमागम सबतम मद्रामायण निगदि तक विन्यपि ॥ स्वात सुषाय तुलसी रघुनाथ गाथा भाषा निबध मतिमजुल मातनाती ॥ १ ॥ सोरठा —जिहि सुमिरत सिधि होइ, गन नायक करिवर वदन ॥ करहु अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन । १ ॥ मूक होहिं वाचल पगु चढहि गिरिवर गहन ॥ जासु कृपा सो दयाल द्रवहु सकल कलि मल दहन ॥ २ ॥ नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन ॥ करौ सो मम उर धाम सदा क्षीर सागर सयन ॥ कुद इन्दु सम देह, उमा रमन करुना अयन । जाहि दीन पर नेह करहु कृपा मदन मयन ॥ ४ ॥

अत—सोरठा—सिय रघुबीर विवाह, जे सप्रेम गावहि सुनहि । तिन कह सदा उछाह, मगलायतन राम जस ॥ ३७६ इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वसिने विमल वैराग सपादिनी नाम प्रथमो सोपाना ॥ १ ॥ तहे रक्ष जला रछ रछ सिथिल बधन ॥ मूष हस्तत दातव्य ऐव वदति पुस्तक १ सपून लिषित श्री तमेर भोपाम दास मिति अस्वान सुदि १५ क सवत १९१३ के पोथि सम पूरन ।

विषय—रामायण बालकाड की कथा ।

सख्या ३२५ डी रामायण बालकाण्ड, रचयिता—महात्मा तुलसीदास, पत्र—१२१, आकार—११½ × ६½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३२७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७८ = १८१७ ई०, प्राप्तिस्थान—प० राधाकृष्ण-हिरनगौ, डाकघर—फीरोजाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्रीगणेशाय नम अथ लिष्यते बालकाड सोरठा—जा सुमिर सिधि होइ गन नायक करि वर वदन । करहु अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥ १ ॥ मूक होहि बाचाल पगु चढै गिरि वर गहन । जासु कृपा सु दयाल द्रवो सकल कलि मल दहन ॥ २ ॥ नील सरोरुह श्याम तरुन अरुन बारिज नयन । करौ सो मम उर धाम सदा छीर सागर सयन ॥ ३ ॥ कुद इदु सम देह उमा रवन करुना अयन । जाहि दीन पर नेह करहु कृपा मरदन मयन ॥ ४ ॥ बदौ गुरु पद कज कृपा सिंधु नर रूप हरि । महा मोह तम

अंत—निज गिरा पावन करन कारन राम जस तुलसी कह्यो। रघुवीर चरित अपार वारिधि, पारि भवि कोने लह्यो। उपवीत व्याह उछाह मंगल, सुनि जे सादर गावहीं। वेदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा, सुख पावहीं॥ सोरठा—सिय रघुवीर विवाह, जे सप्रेम गावहिं सुनहिं, तिन कहँ सदा उछाह, मंगल यतन राम जस। इति श्री राम चरित्रे मानसे सकल कलि कलुप विध्वंसे विमल हरि भक्ति संपादिनी नाम प्रथम सोपान॥ मासोत्मासे श्रावन मासे शुक्ल पक्षे द्वादश्यां भोम वासरे संवत् १८७९

विषय—रामायण बालकांड की कथा का वर्णन। राम जन्म तथा विवाह आदि का विस्तृत वर्णन है।

संख्या ३२५ एफ. बालकाण्ड, रचयिता—तुलसी दास (काशी, राजापुर), कागज—बाँसी, पत्र—१४०, आकार—१० × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५००, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० सोनपाल ब्राह्मण, ग्राम—सरेन्धी, डाकघर—जगनेर, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—जेहि सुमरत सिधि होय गन नायक करवर वदन। करौ अनुग्रह सोय, बुद्धि रासि सुभ गुन सदन। मूक होइ बाचाल, पंगु चढ़े गिरिवर गहन। जासु कृपा सु दयाल, द्रवो सकल कल मल दहन। चौपाई—बन्दौं गुर पद पदम परागा, सुरुचि सुवास सरस अनुरागा। अमियमूरि मय चूरण चारु। शमन सकल भवरज परिवारु।

अंत—चौपाई—सुदिन सोधि कर कंकन छोरे, मंगल मोद विनोद न थोरे। तुम छोरो दूलह राम जानकी को कंकन छोरो। कौसिल्यादिक आरती राई नोन उतारि। कमल मुपी कंकनादि छुड़ावहिं गावहिं अमृत गारि। यह न होइ सारंग लला जू जाहि लेहु तुम तानि। सीयं डोरनि छोरनि चित चोरनि सिथिल भई पीय पानि। कंकन छोरयो न जाय लला अंग। लोकि कुँवर कर कोर। देखि देखि नाम चन्द्र ...... दृग भये हैं चकोर। कै तुम रोकै कै कर जोरो कै तुम हाहा खाऊ। छोरि लियो चित चोरि सुख सागर नागर नाऊ।

विषय—रामायण बाल कांड की कथा वर्णन।

संख्या ३२५ जी. रामायण अयोध्याकाण्ड, रचयिता—गोस्वामी तुलसीदास (राजापुर, जिं० बाँदा), पत्र—५६, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४६४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १७९० = १७३३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा हरीदास, छर्रा, डाकघर—छर्रा, जिला—अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ रामायणं अयोध्या कांड तुलसी कृत लिख्यते॥दोहा॥ श्री गुरु चरन सरोज रज निज मन मुकुर सुधारि। वरणौं रघुवर विमल जस जो दायक फल चारि॥ चौ० जबते राम व्याहि घर आये। नित नव मंगल मोद वधाये॥ भुवन चारि दस भूधर भारी। सुकृत मेघ वरपहिं सुख वारी॥ रिधि सिधि संपति नदी सुहाई। उमंगि

अवधि अंबुधि कहँ आई ॥ मनिगन पुर नर नारि सुजाती। सुचि अमोल सुन्दर सब भांती ॥ कहि न जाय कछु नगर विभूती। जनु इतनी विरंचि कर तूती ॥ सब विधि सब पुर लोग सुखारी। रामचन्द्र मुख चंन्द्र निहारी ॥ मुदित मातु सब सखी सहेली। फलित विलोकि मनोरथ वेली ॥ राम रूप गुण शील सुभाऊ। प्रमु दित होहिं देखि मुनि राऊ ॥ दो० -- सबके उर अभि लाप अस कहहिं मनाइ महेसु। आप अछत जुब राज पद रामहिं देहिं नरेस ॥

अन्त—चौ०—पुलक गात हिय सिय रघुवीरू। जीह नाम जप लोचन नीरू ॥ लखन राम सिय कानन वसहीं। भरत भवन वसि तप तनु कसहीं ॥ दोऊ दिसि समुझि कहत सब लोगू। सब विधि भरत सराहन जोगू ॥ सुनि व्रत नेम साधु सकुचाहीं। देखि दसा मुनि राज लजाहीं ॥ परम पुनीति भरत आचरनू। मधुर मंजु मुद मंगल करनू ॥ हरन कठिन कलि कलुप कलेसू। महा मोह निसि दलन दिनेसू ॥ पाप पुंज कुंजर मृग राजू। समन सकल संताप समाजू। जन रंजन भंजन भव भारू। राम सनेह सुधा करि सारू ॥ छंद—सिय राम प्रेम पियूप पूरन होत जन मुन भरत को। दुख दाह दारिद दंभ दूपण सुजस मित अपहरत को ॥ कलि काल तुलसी से सठन्हि हठि राम सन मुख करत को ॥ सोरठा—भरत चरित करि नेम तुलसी जे सादर सुनहिं। सीय राम पद प्रेम अवसि होइ भव रस विरति ॥ इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुप विध्वंसने भरत संगमो नाम द्वितीय सोपान समाप्तः ॥ राम राम अजोध्या कांड संपूर्ण समाप्तः लिखतं प्रहलाद दास सिष्य श्री स्वामी माधोदास निरंजनी संवत् १७९० वि०

विपय—रामायण अयोध्याकांड की कथा का वर्णन।

संख्या ३२५ एच. अयोध्याकाण्ड रामायण, रचयिता—गोस्वामी तुलसीदास जी (राजापुर, जि० बाँदा), पत्र—१४८, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७०६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५६ = १७९९ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० गंगादत्त मिश्र-जलेसर, डाकघर—जलेसर, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ श्री रामचरित मानस अयोध्या कांड लिख्यते ॥ श्लोक ॥ वामाङ्के च विभाति भूधर सुता देवा पगा मस्तके भाले वाल विधुर्गले च गरलं यस्यो रसि व्यालराट ॥ सोयं भूति विभूपणः सुरवरा सर्वाधिपः सर्वदा। सर्वः सर्व गतः शिवा शशि निभः श्री शंकरः पातुमाम् ॥ १ ॥ प्रसन्न तांयोनगताभिपेकतः तथा न मम्लौ वनवास दुःखतः। मुखाम्बुज श्री रघुनन्दनस्यमे सदास्तु तन्मंजुल मंगल प्रदम् ॥ २ ॥ नीलाम्बुज श्यामलकोमलांगं सीतासमारो पितु वाम भागम् ॥ पाणौ महासायक चारु चापं नमामि रामं रघुवंश नाथम् ॥ दोहा ॥ श्री गुरुचरण सरोज रज निज मन मुकुर सुधारि। वरणौ रघुवर विमल जस जो दायक फल चारि ॥ चौ०— जवते राम व्याहि घर आये। नित नव मंगल मोद वधाये ॥ भुवन चारि दस भूधर भारी। सुकृत मेघ वरपहिं सुप बारी ॥ रिधि सिधि संपति नदी सोहाई। उमगि अवध अंबुध कहँ आई ॥ मुनि गन

पुर नर नारि सुजाती । सुचि अमोल सुन्दर सब भांती ॥ कहि न जाइ कछु नगर विभूती । जनु इतनी विरचि कर तूती ॥ सव विधि सवपुर लोग सुखारी । रामचंद मुखचद निहारी ॥

अंत—दो०—नित पूजत प्रभु पाउड़ी प्रीति न हृदय समाति । मांगि मांगि आयुस करत राज काज बहु भाति ॥ चौ० ॥ पुलक गात हिय सिय रघु बीरू । जाहि नाम जपि लोचन नीरू ॥ लषन राम सिय कानन जाहीं । भरत भवन बसि तप तनु कसहीं ॥ दोउ दिसि समुझि कहत सब लोगू । सब विधि भरत सराहन जोगू ॥ सुनि व्रत नेम साधु सकुचाही । देखि दसा मुनिराज लजाहीं ॥ प.म पुनीत भरत आचरनू । मधुर मञ्जु मुद मंगल करनू ॥ हरन कठिन कलि कलुष कलेसू । महा मोह निसि दलन दिनेसू ॥ पाप पुंज कुंजर म्रग राजू । समन सकल संताप समाजू ॥ जन रंजन भंजन महि भारू । राम सनेह सुधार कर सारू ॥ छद—सिय राम प्रेम पियूष पूरन हं त जनम न भरत को । मुनि मन अगम यम नियम सम दम विषम घ्रत आचरत को ॥ दुःख दाह दारिद दंभ दूषन सुजस मिस अपहरत को ॥ कलि काल तुलसी से सठन हठि राम सनमुख करत को ॥ सो०—भरत चरित करि नेमु, तुलसी जे सादर सुनहिं । सीय राम पद प्रेमु, अवस होइ भव रस विरति ॥ इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वसने विमल कर्म वैराग्य ज्ञान सम्पादनो अवध कांड संपूर्ण समाप्तः लिषतं राम भरोसे सूरज कुंड मध्ये वदावन सुभ स्थाने सवत् १८५६ वि० राम ।

विषय—रामायण अयोध्याकांड की कथा का वर्णन ।

संख्या ३२५ आई. अयोध्या काण्ड, रचयिता—तुलसी दास (राजापुर, काशी), कागज—देशी, पत्र—८८, आकार—१२ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२३७६, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८७९ = १८२२ ई०, प्राप्तिस्थान—प० द्वारका प्रसाद—एच० एम० बमरौली कटरा, जिला—आगरा ।

आदि—श्रीगणेशायन्मः श्री सरस्वत्यैन्मः वामा के च विभाग भूधर सुता; देवा पगा मस्तके । भाले वाल विधुर्गले च गरलं, यस्यो रसि व्याल राद् । सोयं भूति विभूषणः सुरवरः, सर्वोधिकः सर्वदा । सर्वं सर्वं गताः शिव ससि निभः श्री संकर पातु माम् । दोहा—श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि, वरनो रघुवर विमल जस, जो दायक फल चारि ॥ जब ते राम व्याहि घर आये । नित नव मगल मोद वधाये । भुवन चारि दस भूधर भारी । सुकृत मेघ वर्षहि सुखवारी । रिधि सिधि संपत्ति नदी सुहाई । उमगि अवध अम्बुध अधिकाई । मन गन फर नर नारि सुजाती । सुचि अमोल सुन्दर सब भांती ।

अंत—हरन कलुप कलि कंठ कलेसू । महा मोह निसि दलन दिनेसू । पाप पुंज कुजर मृग राजू । समन सकल सन्ताप समाजू । जन रंजन भंजन भव भारू । राम सनेह सुधाकर सारू । छन्द—सिय राम प्रेम पियूष पूरण जन्म न भरत को । मुनि मन अगम सगम नेम सम दम विषम कृत आचरन को । दुष दुष्ट दारिद दम्भ दूपन सुनरूमिस

अब हरत को, कलिकालि तुलसी से सठनि हठि, राम सन्मुख करत को। सोरठा—भरत चरित करि नेम, तुलसी सादर जे सुनहिं, सीय राम पद प्रेम अविसि होइ भवरम विरति। इति श्री राम चरित्रे मानसे सकल कलि कलुप। विध्वंसने अविरल भक्ति सम्पादिनी नाम द्वितीय सोपान समाप्त मासोत्तमासे भाद्र प्राद मासे शुक्ल पक्षे सप्ताम्यां शनिवासरे संवत् १८७९।

विषय—रामायण अयोध्या कांड की कथा का वर्णन।

संख्या ३२५ जे. अजोध्या काण्ड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), कागज—देशी, पत्र—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६४०, रूप—प्राचीन, लिपि – नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, प्राप्तिस्थान - पं० सोनपाल ब्राह्मण, ग्राम—सरैंधी, डाकघर—जगनेर, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—अथ अजुध्या काण्ड लिष्यते। श्री राम जी। दोहा—श्री गुर चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार। वरनौ रघुवर विमल जस, जो फलदेवहिं चार। चौपाई—जब ते राम व्याहि घर आये नित नव मंगल मोद वधाये। भुवन चार दस भूधर भारी। सुकृत मेध वरपहि सुख वारी। रिधि सिधि संपति सकल सुहाई। उमगि अवधि अम्बु धरि धारी। मन गन पुर नर नारी सुजाती। सुचि अमोल सुन्दर सब भांती।

अंत—सिय राम प्रेम पियूप पूरन होत न जन्म भरत को। मुनि मन अगम सब नियम यम दम विपम व्रत आचरत को। दुखदाह दारिद दम्भ दूखन सुजस मिसु अपहरत को। कलि काल तुलसी से सठहिं हठि राम सनमुख करत को। सोरठा—भरत चरित करि नेम, तुलसी जे सादर सुनहिं। सीय राम पद प्रेम, अवधि होइ भव रस विरति।

विषय—राम बनवास, दशरथ मरण और भरत मिलन आदि का वर्णन है।

संख्या ३२५ के. रामायण आरण्य काण्ड, रचयिता—गोस्वामी तुलसीदास (राजापुर, जि० बाँदा), पत्र—५०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १७६० = १७०३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शिवदुलार–टीकमपुर, डाकघर—जलेसर, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ आरन्य कांड लिख्यते ॥ मूलं धर्म तरोर्विवेक जलधौ पूर्णेन्दु मानंद दं ॥ वैराग्यांवुज भास्करं अधहरं ध्वांतापहं तापहं ॥ मोहांभोधर पुंज पाटन विधौ खेसं भवं शंकरम् ॥ वन्दे ब्रह्म कुलं कलंक शमनं श्री राम भूमप्रियं ॥ १ ॥ सांद्रानंद पयोद सौभगतनुं पीताम्बरं सुंदरं। पाणौ वाण सराशनं कटि लम तूणीर भारं वरं ॥ राजीवायत लोचनं धृत जटा जूटेन संसोभितं ॥ सीता लक्ष्मण संयुक्तं पथि गतं रामाभि रामं भजे ॥ सो०—उमा राम गुण गूढ़ पंडित मुनि पावहिं विरति। पावहिं मोह विमूढ़ जे हरि विमुष न धर्म रति ॥ चौ०—पूरण भरत प्रीति मैं गाई। मति अनिरुप अनूप सोहाई ॥

अव प्रभु चरित सुनहु अति पावन। करत जे वन सुर नर मुनि भावन॥ एक वार चुनि कुसुम सुहाये। निज कर भूषण राम वनाये॥ सीतहिं पहिराये प्रभु सादर। वैठे फटिक शिला परमाधर॥

अन्त—दो०—गुणागार संसार दुख रहित विगत सदेह। तजि मम चरण सरोज प्रिय तिन कहू देह न गेह॥ चौ०—निज गुण श्रवण सुनत सकुचाही। पर गुण सुनत अधिक हरिपाहीं॥ राम शील नहिं त्यागहिं नीती। सरल सुभाव सवहि सन प्रीती॥ जप तप व्रत दम सजम नेमा। गुरु गोविन्द विप्र पद प्रेमा॥ श्रद्धा क्षमा मयत्री दाया। मुदिता मम पद प्रीति अमाया॥ विरति विवेक विनै विज्ञाना। वोध यथा रथ वेद पुराना॥ दंभ मान मद करहिं न काऊ। भूल न देहिं कुमारग पाऊ॥ गावहि सुनहि सदा मम लीला। हेतु रहित परहित रत शीला॥ मुनि सुनि साधन के गुण जेते। कहि न सकहि सारद श्रुति तेते॥ छद—कहि सक न शारद शेष नारद सुनत पद पकज गहे। अस दीन वधु कृपाल अपने भक्त निज गण मुप कहे॥ सिर नाइ वारहिं वार चरणन व्रह्म पुर नारद गये। ते धन्य तुलसी दास आस विहाइ जे हरि रग रहे॥ रावणादि यश पावन गावहि सुनहि जो लोग। राम भक्ति दृढ पावहीं विनु विराग जप जोग॥ दीप सिपा सम युवति रस मन जनि होसि पतग॥ भजहिं राम तजि काम मद करहि सदा सत सग॥ इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुप विध्वसने विमल वैराग्य सपादनो नाम तृतीया सो पान. समाप्त लिखत सोहन दास जेठ सुदि ११ दशी संवत् १७६० वि०

विषय—रामायण आरण्य काण्ड की कथा का वर्णन।

संख्या ३२५ एल. आरण्य काण्ड, रचयिता—तुलसी दास (राजापुर काशी), कागज—वाँसी, पत्र—२५, आकार—१२ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६३१, लिपिकाल—स० १८७९ = १८२२ ई०, प्राप्तिस्थान—जानकी प्रसाद ब्राह्मण—वमरोली कटरा, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशायनम श्रीसरस्वत्यैनम श्लोक। मूल धर्म्म मरो विवेक जलधेः पूर्णेन्दु मानन्दद। वैराग भुज भास्करं ह्यघ घनं, ध्वान्ता पह ताप हम्। मोहायो धर पुञ्ज पाटन विधौस्व सभव शकर। वन्दे व्रह्म कुल कलक शमन श्रीराम भूप प्रियम्। सोरठा—उमा राम गुण गूढ, पडित मुनि पावहिं विरति। पावहि मोह विमूढ, जे हरि विमुख न धर्म रति। चौपाई—पूरण भरत प्रीत मैं गाई। मति अनुरूप अनूप सुहाई। अव हरि चरित सुनहु अति पावन। करत जे वन सुर नर मुनि भावन।

अंत—कहि न सक सारद सेप नारद, सुनत पद पकज गहे। अस दीन वन्धु कृपाल अपने भक्त गुन निज मुष कहे। सिर नाइ वारहि वार चरननि, व्रह्मपुर नारद गये। ते धन्य तुलसी दास अस विहाइ जे हरि रग रए। दोहा—राव नारि जस पावन गावहिं सुनहि जे लोग। राम भक्ति दृढ पावहीं विन विराग जप जोग। इति श्री राम चरित्रे सकल कलि कलुप विधसो। अविरल भक्ति रूपादिन तुलसी कृत रामायण तृतीय सोपान समाप्त मिती ज्येष्ठ सुदी १३ रवि वासरे सवत् १८७९

विषय—रामायण आरण्य कांड की कथा वर्णन।

संख्या ३२५ एम. रामायन (आरण्य काण्ड), रचयिता—तुलसी दास, पत्र—४२, आकार—८½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—९२४, रूप—अति प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८८३ = १८२६ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० शालिगराम जी शर्मा, ग्राम—महुवा, डाकघर—जैतपुर कलाँ, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशजूय नमः। श्रीमतेरामानुजाय नमः। श्री आरण्य काण्ड रामायन। सोरठा। मुक्ति जन्म महि जानि ग्यान पानि अघ हानिकर। ...... शंभु भवाणि, सो काशी सेइय कस न। चौपाई—पूरन भरत प्रीत मैं गाई, मति अनुरूप अनूप सुहाई। अब प्रभु चरित सुनहु अति पावण, करत जेवन शुर नर मुनि भावण। एक बार चुनि कुसुम सुहाये निज कर भूपन राम बनाए। सीतहि प्रभु पहिराए सादर वैठे फटिक शिला अति आगर। सुरपति शुत वायश धरि वेपा, शठ चाहत रघुपति वल देपा। जिमि पपील चह शागर थाहा। महानंद मति पावन क्षाहा। शीता चरन चोंच हति भाग भागा। मूढ़ मंद मति कारन काजा।

अंत—छंद कहि न सुक सारद सेस नारद सुनत पद पंकज गहे। अस दीन बंधु कृपाल अपने भक्त गुन निज मुप कहे। सिरु नाइ वारहिं वार चरनन्ह ब्रिह्मपुर नारद गऐ। ते धन्य तुलसी दास आस सो हाइ जे हरि रंग रहे। दोहा। रावन अरि जस पावन गावहिं सुनहिं जु लोग। राम भक्ति दृढ़ पावहि विनु वैराग्य जोग। दीप सिपा सम जुवति रश मन जनि हो सिय तंग। भजहिं राम तजि काम, मन करहि सदा सत संग। इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुप विध्वंसने नाम विमल वैराग्य संदीपिनी आरण्य काण्ड कथा संपूर्ण। फाल्गुण शुक्ला पंचम्यां शंवत् १८८३।

विषय—रामायण आरण्य कांड की कथा का वर्णन।

संख्या ३२५ एन. आरण्यकाण्ड, रचयिता—तुलसी दास (राजापुर), कागज—बांसी, पत्र—२१, आकार—१२ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९४, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८८७ = १८३० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० दीनदयाल द्वारिका प्रसाद मिश्र, डाकघर—काजूरौल, तहसील-खेरागढ़ जिला—आगरा।

आदि—उमा राम गुण गूढ़, पंडित मुनि पावहिं विरति। पावहिं मोह विमूढ़, जे हरि भक्ति न धर्म्म रति। चौ०—पूरण भरत प्रीति मैं गाई। मति अनुरूप अनूप सुहाई। अब प्रभु चरित्र सुनहु अति पावन, करत जे बन सुर नर मुनि भावन। एक बार चुनि कुसुम सुहाये निज कर भूपन राम बनाये, सीतहिं पहिराये अति सादर। बैठे फटिक सिला अति सुन्दर। सुर पति सुत धरि वायष वेपा। शठ चाहत रघुपति वल देपा। जिमि पिपीलिका सागर थाहा। महामन्द मति पावन चाहा। सीता चरन चोंच हति भागा। मूढ़ मन्द मति कारन कागा।

अंत—रावन नारि जसि पावनइ गावहिं सुनहिं जे लोग। राम भगति दृढ़ पावहीं विन विराग जप जोग। दीप सिखा सम जुगति रस मन जनि होस पतंग। बनहि राम तजि काम मद करहिं सदा सतपंग। इति श्री रामचरित्रे मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य सम्पादने नाम त्रितिये सोपान सं० १८८७ साके १७५२ असाढ़ सुदी ९ भोमवासरे पुस्तक लिखी मनीराम ने सुभस्थाने पथेने मध्ये चिरंजीवलाल सदा-सुख आत्म पठनार्थम्।

विषय—रामायण आरण्य कांड की कथा का वर्णन।

संख्या ३१५ ओ. वनकाण्ड रामायण, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), पत्र—४५, आकार—१० × ५३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १९०४ = १८४७ ई०, प्राप्तिस्थान—नाथूदास वनिया, पुरानी वस्ती—कटनी।

आदि—श्रीगणेशायनमः॥ परम गुरुभ्यो नमः॥ श्रीराम॥ अथ लिष्यते तुलसीकृत रामायण वन काण्ड॥ सोरठा॥ उमा रामगुण गूढ़, पंडित मुन पावहिं वरति। पावहि मोह विमूढ़, जे हरि भजत न धर्म रति॥ चौं०—पूरन भक्ति प्रीति मैं गाई। मति अनुरूप अनूप सुहाई॥ अब प्रभु चरित सुनो अति पावन। करत जो सुर नर मुनि पावन॥ निज कर भूषण राम बनाये। एक बार चुनि कुसुम सुहाये॥ सीतहिं पहिराये प्रभु सादर। बैठे फटिक शिला पर सुंदर॥

अंत—इति श्री राम चरित्रे॥ मानसे सकल कलि कलुश विध्वंसने विमल विराग संदेह संपादिनी नाम अथ सोपान सम्पूर्न समाप्तं॥ दोहा॥ बार बार विनती करौं पंडित सघन निहोर॥ अछर घटे सुधार वी, मोह न दीजे खोर॥ मिती असाढ़ वदी १४ संवद १९०४ की साल लिषते दुलारे कन्देले ने। मुकाम सुरवारे॥ समपूरन॥

विषय—रामचंद्र के वनवास का तथा सीता हरण आदि का वर्णन।

संख्या ३२५ पी. आरण्य काण्ड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर, काशी), कागज़—बाँसी, पत्र—१५, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १९०६ = १८४९ ई०, प्राप्तिस्थान—जानकी प्रसाद ब्राह्मण-वमरोली कटरा, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ सोरठा॥ उमा राम गुण गूढ़, पंडित मुनि पावहिं विरति, पावहि मोह विमूढ़, जे हरि विमुख न धर्म्म रति। चौपाई—पूरन करत प्रीति मैं गाई मति अनुरूप अनूप सुहाई। अब प्रभु चरित सुनहु अति पावन, करै चरित जे मुनि सुरभावन एक बार चुनि सुमन सुहाये, निज कर भूषन राम बनाये। सीतहि पहिराये प्रभु सादर, बैठे फटिक शिला परमादर। सुरपति सुर धर वायस भेषा। सठ चाहत रघुपति वल देखा। जिमि पिपीलका सागर थाहा। महा मन्द मति पावन चाहा। सीता चरन चोंच

हति भागा । मूढ़ मन्द मति कारन कागा । चला रुधिर रघुनायक जाना । सींक धनुष साइक सन्धाना । दोहा—अति कृपालु रघुनायक, सदा दीन परनेह । तेहि सन आइसु कीन्ह छल, मूरख औगुन गेह ॥

अन्त—सीयराम प्रेम पियूष, पूरन होत जन्म न भरत को । मुनि मन अगम जम नियम सम दम विषय वित आचरन को । कलिकाल तुलसी सेस ठनि हरि राम सन्मुख करतहिको । सोरठाः—भरत चरन करि नेम, तुलसी जे सादर सुनहिं, सीय राम पद प्रेम अवसि होइ भव रस विरति । इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसनो मंडलीय सोपान विमल ज्ञान नाम सम्पा दिनि नाम दो है । वा राधिकादास पुजारी को चेला ॥ राम × × तत्र वरण मासोत्त मासे वाई साख मासे ॥ शुभ क्रिसन पक्षे तीथ ३।४ बुधवासरे साके साल वाहनस्य १७३ श्री सम्वत् १९०६

विषय—सीता हरन तथा जटायु मरण ।

संख्या ३२५ क्यू. किष्किन्धा काण्ड, रचयिता—तुलसी दास (राजापुर काशी), कागज—देशी, पत्र—१९, आकार—७ × ४३/४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८६२ = १८०५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० गौरीशंकर शुक्ल शास्त्री, डाकघर—जगनेर, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा ।

आदि—श्लोक—सोरठा—मुक्ति जन्म महि जानि ज्ञान खान अघ हानिकर । जेहि वस शंभु भवानि सो काशी सेइय कसन । जरत सकल सुर वृन्द विषम गरल जेहि पान किय । तेहि न भजसि मति मन्द को कृपाल शंकर सरिस । चौपाई—आगे चले बहुरि रघुराया । ऋषि मूक पर्वत नियराया ॥ तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुल बल सीवा ॥

अंत—छन्द—कपि सैन संग संघारी निसचर राम सीता आनि त्रैलोक पावन सुमरु सुर नर मुनि नाग दास बखानि हैं जौ सुनत गावत कहत समुझत परम पद गावहीं रघुवीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावही—दोहा—भव भेषज रघुनाथ जस सुनहिं जे नर अरु नारि । तिन्ह कर सकल मनोरथ सिद्ध करहिं त्रिपुरारि ॥ सोरठा—नीलोत्पल दल श्याम काम कोट शोभा अधिक ॥ सुनिय तासु गुन ग्राम जासु नाम अध खग बधिक ॥ इति श्री राम चरित्रे मानसे सकल कलुख विध्वसने विसुध संतोख सम्पादिनी चतुर्थो किष्किन्धा काण्ड संवत १८६२

विषय—किष्किंधा कांड रामायण की कथा का वर्णन ।

संख्या ३२५ आर. किष्किन्धा काण्ड, रचयिता—तुलसी दास (राजापुर), कागज—बांसी, पत्र—१३, आकार—१२ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५१, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८७९ = १८२२ ई०, प्राप्तिस्थान—जानकी प्रसाद ब्राह्मण—बमरोली कटरा, जिला—आगरा ।

आदि—श्रीगणेशायनमः। श्लोक : × × × सोरठा—मुक्ति जन्म महि जानि, ज्ञान खान अघ हानिकर, तहां वस संभु भवानि, सो कासी सेइय न कस। जरत सकल सुर वृन्द, विषम गरल जेहि पान किय। तेहि न भजसि मति मन्द, को कृपाल संकर सरिस। चौपाई—आगे चले वहुरि रघुराया, रिष्यमूक पर्वत नियराया। तहं रह सचिव सहित सुग्रीवा, आवत देखि अतुल बल सींवा।

अंत—छंद—कपि सैन सिहारि निश्चरहि राम सीतहि आनि है। त्रैलोक पावन सुजस सुर मुनि नारदादि बखानि है। जो सुनत गावत कहत समुझत, पर्म पद नर पावहीं रघुवीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावहीं। दोहा—भव भेषज रघुनाथ जस, सुनहिं जे नर अरु नारि, तिनकर सकल मनोरथ, सिधि करहिं त्रिपुरारि॥ सोरठा—नीलोत्पल तन स्याम, काम कोटि शोभा अधिक, सुनीय तासु गुन ग्राम जासु नाम अघ खग वधिक। इति श्री राम चरित्रे मानसे कलि कलुष विध्वसनो नाम चतुर्थो सोपान किष्किन्धा काण्ड सम्पूर्ण शुभ मस्तु॥ संवत् १८७९।

विषय—रामचन्द्र जी का सुग्रीव को मित्र बनाना तथा सेना एकत्र करने का वर्णन।

संख्या ३२५ एस. रामायण (किष्किन्धा काण्ड), रचयिता—तुलसीदास, पत्र—१०, आकार—११३/४ × ६३/४ इन्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई० लिपिकाल—सं० १८८७ = १८३० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० वटेश्वर दयाल जी—जैतपुर कलां, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशायनमः। श्री सरसुती जू परम परम गुरूये नमः। अथ रामाइनि किसिकिंधा कांड लिषते। सोरठा। मुक्ति जाम्न महि जानि। ज्ञान पानि अगहनि करि जहँ वसे संभु भवानि। सो कासी सेइय कसन जरत सकल सुरविंद। विषम गरला। जिन पानि कीय। तिहि न भजसि मति मंद। को क्रपाल संकर सरस। चौपाई। आगे चले वहुरि रघुराया ऋपि मूक पर्वत नियराया। तहां वसैं सचिव सहित सुग्रीवा, आवत देखे अतुल वल सींवा। अति सभीति कहि सुनि हनुमाना पुरूष जोग वल रूप निधाना। धरि वट रूप देषु तहँ जाई कहसु आनि महि सयनि बुझाई। पठया वलि होइ मनमैला, भाजों तुरत तजो यहि सैला। विप्र वेष धरि कपि तहां गएऊ, माथो नाइ पूछत अस भएऊ। को तुम स्यामल गौर सरीरा, छत्रिय रूप करहु वन वीरा। कठिन भूमि कोमल पद गामी, कवन हेत वन विचरे स्वामी। मदुर मनोहर सुंदर गाता। सहह दुसह वन आतप वाता॥ को तुम तीन देव में कोऊ, नर नारायन के तुम दोऊ।

अन्त—कपि सँग सैन सिहारि निश्चर राम सीतहि आनिहै। त्रैलोक पावन सुजस सुर नर नारदादि प्रपानि है। जो यह कथा सुनावत कहत गुणत गावत परम पादु पावही। रघुवीर पद पाथोज मधुकर सो दास तुलसी गावही दोहा—भव भेषज रघुनाथ जस, सुनहि जे नर नारि। तिन्हके सकल मनोरथ सिदि करहिं त्रिपुरारि। चौपाई—नीलोत्पल तन स्याम, काम कोटि सोभा अधिक। सुनीयति सर्गुण ग्राम जासु नाम पग अघ वधक। इति श्री राम

चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्यसनो मतीः संवत १८८७ मासोतमासे मंण सुकल पक्ष १३ रविवार ।

विषय—सुग्रीव मिलाप तथा बालिवध वर्णन ।

संख्या ३२५ टी. किष्किन्धा काण्ड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२३, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल-सं० १८८७ = १८३० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री दीन दयाल द्वारिका प्रसाद, डाकघर—कागारोल, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । सोरठा । मुक्ति जन्म महि जानि, जानि खानि अघ हानि कर । जहं बसि सम्भु भवानि, सो कासी सेइय कसन । जरत सकल सुर वृन्द, विषम गरल जिहि पान किय, तिहि न भजसि मति मन्द, को कृपाल संकर सरस । जिहि खोजन अज ईस, सनकादिक मुनि ध्यान धरि । सेवहिं सकल मुवीस, प्रगट भराउ संसार सन । चौपाई । आगे चले बहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्वत नियराया ।

अन्त—दोहा—भव भेखज इक नाथ जस, सुनै जे नर अरू नारि । तिन कर सकल मनोरथ, सिद्धि करहिं त्रिपुरारि । सोरठा—निलोतपल दल स्याम, काम कोटि सोभा अधिक । सुनै तासु गुन ग्राम जासु नाम खग अघ वधिक । इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने भगति अनन्य संपदा वाद ने नाम चतुर्थ सोपानः ईती किंसकिंधा काण्ड तुलसी कृत समाप्त ॥ संवत १८८७ शाके १७५२ तत्र वर्षे श्रावण सुदी ६ रवि वासरे पुस्तक लिख्यौ मिश्र मनीराम स्वभ अस्थान पथैने मध्ये लिखी । गुलाबा के पुत्र लाला सदा सुख की आत्म पठनार्थ शुभं भवतु ।

विषय—राम चंद्र की सुग्रीव से मित्रता होना, वालि वध तथा सेना का इकट्ठा करना ।

संख्या—३२५ यू. किष्किन्धा काण्ड, रचयिता—तुलसी दास (राजापुर), पत्र—२३, आकार—८ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल-सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १९०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कीर्तिभानु राय मालगुजार—राइवाड़ा कटनी, मध्य प्रान्त ।

आदि—श्रीगणेशजून्मः ॥ श्रीसरस्वतीजुन्मः । अथ लिषते किष्किन्धा काण्ड की कथा ॥ सोरठा—मुक्त जन्म महँ जान, ज्ञान खान अघ हान कर जहँ बसि शंभु भवानि, सो काशी सेहई न कस चौपाई :—आगे चले बहुरि रघुराया । रीष मूक परवत नियराया, तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देख अतुल बल सीवा, अति सभीत कह सुन हनुमाना । पुरख जुगलबल कृपा निधाना ॥

अंत—भय भेषज रघुनाथ जसु, सुनहि जे नर अरु नारी तिन कर सकल मनोरथ, सिद्धि करहिं त्रिपुरारी । सोरठा नील जलद तनु स्याम, काम कोटि सोभा अधिक सुन जासु

गुन ग्राम, जाऊ नाम अघ खग वधिव । इति श्री राम चरित्रे मानसे सकल कलि कलुप विध्वंसने किष्किन्धा काण्ड अगहन वदी १० सं० १९०२ लिपते

विपय—राम की सुग्रीव से मित्रता होना, वालि वध तथा सेना एकत्र करना।

संख्या ३२५ व्ही. किष्किन्धा काण्ड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), पत्र—२८, आकार १० × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०४, रूप—अत्यन्त पुराना, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपि-काल—स० १९०४ = १८४७ ई०, प्राप्तिस्थान—नाथदास बनिया-पुरानी बस्ती, कटनी, मध्यप्रदेश।

आदि—श्री गणेशजूस्मा ॥ श्री सरस्वती जूमा ॥ क्रिष्किन्धा काण्ड की कथा ॥ सोरठा ॥ मुक्त जन्म मँह जानि, ग्यान पान अघ हानि कर। जह बस सम्भु भवानि, सो काशी सेइ्य न कस ॥ चोपाही—:आगे चले बहुरि रघुराया। रीप मूप पर्वत निय-राया ॥ तँह रहि सचिव सहित सुग्रीवा। आवत देपि अतुल बल सीवा ॥ अति सभीत कह सुन हनुमाना। पुरुष्य जुगल बल ·····निधाना धरि बट रुप देषि तै जाई ॥ कहि सुजान तिउ सैन बुझाई ॥

अंत—सोरठा—नील जलद घन श्याम, काम कोटि सोभा अधिक सुनहि तासु गुन ग्राम, जासु नाम अघ भय वधिक ॥ इति श्री राम चरित्रे मानस सकल कलि कलुप विध्वंसने किष्किन्धा काण्ड सम्पूर्न ॥ शुभ मस्तु ॥ चतुर्थ सोपान स्माप्ते ॥ जथा जैसी प्रति पाई तैसी लिपी ॥ मम दोप न दीयते ॥ मिती वैसाप सुदी ९ संवद १९०४ की साल ॥ लिपते दुलारे कंदेले मुकाम मुरवारा ॥ श्री गनेसजू ॥ श्री सीतारामजू

विपय—रामचन्द्र की सुग्रीव से मैत्री होना, वालि वध एवं रावण के विरुद्ध सेना एकत्र करना।

संख्या ३२५ डब्ल्यु. किष्किन्धा काण्ड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर, काशी), पत्र—२८, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४४, रूप—अति प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—स० १९०४ = १८४७ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री गजाधर सिंह रामचरण क्षत्री, ग्राम—सरैंधी, डाकघर—जगनेर, तहसील-खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वतीय नमः। श्री गुरूभ्यो नमः। श्री जानकी वल्लभाय नमः ॥ सोरठा—मुक्ति जनम महि आनि, ज्ञान खानि अघहानिकर। जहां वस संभु भवानि सो कासी सेइ्य कसन। अरस सकल सुर वृन्द, विपम गरल जेहि पान किय। तेहिन भजसि मति मन्द, को कृपाल शंकर सरिस। चौ०—बालि ताहि मारि गृह आवा, देखि मोहि जिय भेद बढ़ावा रिपु सम मोहि मारि अति भारी। हरि लीन्हसि सरवस अरु नारी।

अंत—भव भेपज रघुनाथ जस, सुनहि जे नर नाहिं। तिनके सकल मनोरथा, सिधि करव त्रिपुरारि। सोरठा—नीलोत्पलदलस्याम, कोटि २ सोभा अधिक। भजिय तासु गुन ग्राम, जासु नाम अघ पग वधिक। इति श्री राम चरित्रे मानसे सकल कलि कलुप

विध्वंसने। चतुर्थे श्री पान। लिख्यते मिश्र पूर्नराम अवलिमध्यि जान उराजेउकी। अव अवस्था मीने उचे ग्राम वहा जो देखी जो लिखी मम दोसो न दीयते। संवत् १९०४ शाके १७६९ मिति असाढ़ सुदि ७ चंद्रवासरे राम लछमन।

विषय—रामकी सुग्रीव से मैत्री, बालि बध एवं सेना एकत्र करना आदिका वर्णन।

संख्या ३२५ एक्स. सुन्दर काण्ड रामायण, रचयिता—गोस्वामी तुलसी दास (राजापुर बाँदा), पत्र—२०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७९० = १७३३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा हरीदास—छर्रा, जिला—अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)।

आदि—जात पवन सुत देवन देखा। जाना चह वल वुद्धि विसेखा॥ सुरसा नाम अहिन की माता। पठइन्ह आइ कही तेहि वाता॥ आजु सुरन्ह मोहिं दीन अहारा। सुनत वचन कह पवन कुमारा॥ राम काज मैं करि फिरि आवौं। सीता की सुधि प्रभुहिं सुनावौं॥ तब तव वदन पैठि हौ आई। सत्य कहौं मोहिं जान दे माई॥ कवनेहुं जतन देऊं नहिं जाना। ग्रससि न मोहिं कह्यौ हनुमाना॥ जोजन भरि तेहि वदन पसारा। कपि तन कीन्ह दुगुण विस्तारा॥ सोरह जोजन मुख तेहि ठयऊ। तुरत पवन सुत वत्तिस भयऊ॥ जस जस सुरसा बदन वढ़ावा। तासु दुगुण कपि रुप दिखावा॥ सत जोजन तेहि आनन कीन्हा। अति लघु रुप पवन सुत लीन्हा॥ वदन पैठि पुनि वाहर आवा। मांगी विदा ताहि सिर नावा॥ मोहि सुरन जेहि लागि पठावा। वुधि वल मरम तोर मैं पावा॥ दो०—राम काज सव कर हहु तुम वल वुद्धि निधान। आसिप दे सुरसा चली हरपि चले हनुमान॥

अन्त—दो०—सुनत विनीत सु वचन अति कह कृपाल मुस काइ। जेहि विधि उतरै कपि कटक तात सो कहौ उपाइ॥ नाथ नील नल कपि दोऊ भाई। लरकाई रिपि आसिप पाई॥ तिनके परस किये गिरि भारे। तरि हहिं जलधि प्रताप तुम्हारे॥ मैं पुनि उर धरि तव प्रभुताई। करि हहु वल अनुमान सहाई॥ इहि विधि नाथ पयोद वंधाई। सुंदर सुजस लोक तिहुं गाई॥ इहि सर मम उत्तर तट वासी। हतहु नाथ खल गन अघ रासी॥ सुनि कृपाल सागर मन पीरा। तुर तहीं हरी राम रन धीरा॥ देपि राम वल पौरुष भारी॥ हरपि पयोनिधि भयो सुखारी॥ सकल चरित कहि प्रभुहिं सुनावा। चरन वंदि पाथोधि सिधावा॥ छंद—निज भवन गवनेउ सिन्धु श्री रघुवीर यह मत भायऊ। यह चरित कलि मल हर जथा मति दास तुलसी गायऊ॥ सुख भवन संसय समन दमन विसाद रघुपति गुन गना॥ तजि सकल आस भरोस गावहु सदा संतत सुठि मना॥ दो०—सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान। सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु विना जलयान॥ इति श्री राम चरित मानसे सकल कलुप विध्वंसने॥ ज्ञान संपादिनी नाम पंचम सो पान समाप्तः सुभं भवति॥ संवत् १७९० वि मिती सावन वदी औरस लिषतं कृपाराम महंत गंगा तट वासी काहम गंज॥

विषय—रामायण सुन्दर कांड की कथा का वर्णन।

टिप्पणी—लिपिकाल संवत् १७९० वि० है। यह ग्रन्थ उस समय का लिखा है जब काहम गंज गंगा के किनारे १ मील की दूरी पर बसा था। इस समय गंगा जी काहमगंज से ७ मील की दूरी पर बह रही हैं॥

संख्या ३२५ वाई. सुन्दर काण्ड, रचयिता—तुलसी दास (राजापुर), कागज—पुराना, पत्र—२१, आकार—१०×५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८२५ = १७६४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री चिरंजी लाल जी—भैरों बाजार, जिला—आगरा।

आदि—श्री रामायन। अतुलित बल धामं हेम शैलाभ देहं दनुज वन कृशानं ज्ञान नाम मगन्यं॥ सकल गुण निधानं वानरा नाम धीशं रघुपति वर दूतं वात जातं नमामि चौपाई॥ जामवन्त के वचन सुहाये। सुनि हनुमन्त हृदय अति भाये॥ तब लगि मोहि परिखहु भाई। सहि दुख कन्द मूल फल खाई, जब लगि आँवहु सीतहि देखी। होई काज मन हर्ष विशेषी, अस कह नाई सबन कह माथा। चले हरष हिय धरि रघुनाथा, सिन्धु तीर एक भूधर सुन्दर। कौतुक कूँदि चढ़ै ता ऊपर

अंत—छंद॥ निज भवन गवनेऊ सिंधु श्री रघुवीर यहि मन भायउ॥ यह चरित कलि मल हर जथा मति दास तुलसी गायउ॥ सुख भवन संशय मन दमन विषाद रघुपति गुन गना॥ तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहिं संतत सुचि मना॥ दोहा॥ सकल सुमंगल दायक, रघुनायक गुन गान। सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु विना जल यान॥ इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल विज्ञान भक्ति संपादिनी नाम पंचम सोपान सुंदर काण्ड समाप्त सं० १८२५ (९५) पुष मासे (१) कृष्न पक्षे पंचम्य सुकर वासरे॥ लिषितं गोदावरी दास।

विषय—हनुमान का अशोक वन उजाड़ना तथा लंका में आग लगाकर और सीता का पता लेकर वापस सेना में आना।

संख्या ३२५ जेड. श्री रामायण भाषा सुमेरकाण्ड (सुंदरकांड), रचयिता—गोस्वामी तुलसीदास (राजापुर बाँदा), पत्र—३०, आकार—१०×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६२०, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८७२ = १८१५ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर जसकरन सिंह—टिकरिया, डाकघर—कासगंज, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ रामायण राम चरित मानस सुमेर कांड लिख्यते॥ श्लोक॥ शांत शाश्वत मप्रमेय मनर्घ गीर्वाण शान्ति प्रदं। ब्रह्मा शंभु फणीन्द्र सेव्य मनिसं वेदान्त वेद्यं विभुम्॥ रामाख्यं जगदीश्वरं सुर गुरुं माया मनुष्यं हरिं। वन्देहं करुणा करं रघुवरं भूपाल चूड़ा मणिम॥ १॥ नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेस्म दीये सत्यम वदामि च। भवान खिलांत रात्मा॥ भक्ति प्रच्छय रघु पुगव निर्भ रामे। कामादि दोष रहितं कुरु मान संचा॥ २॥ अतुलित बल धामं स्वर्ण सैला भदेहं॥ दनुज वन कृशानु ज्ञानि नामम गण्यम्॥ सकल गुण निधानं वानरा णाम धीसं। रघुपति वर दूतं वात जातं नमामी॥३॥ चो० जामवंत के वचन सुहाये सुनि हनुमान हृदय अति भाये॥ तब लगि मोहिं परषेहु तुम भाई। सहि दुख कंद मूल फल खाई॥ जब लगि आवौं सीतहिं देखी। होइ काज मोहिं

हरष विसेषी ॥ अस कह नाई सवन कह माथा । चले हरषि हिय धरि रघुनाथा ॥ सिन्धु तीर इक सुन्दर भूधर कौतुक कूदि चढ़े ता ऊपर ॥ वार वार रघुवीर संभारी । तरके पवन तनय वल भारी ॥

अन्त—दो० सुन तहिं वचन विनीत अति कह कृपाल मुसकाइ । जेहि विधि उतरे कपि कटुक तात सो करहु उपाय ॥ चौ०—नाथ नील नल कपि दोऊ भाई । लरि काई ऋषि आसिष पाई ॥ तिनके परस किये गिरि भारे । तरि हहि जलधि प्रताप तुम्हारे ॥ मैं पुनि उर धर प्रभु प्रभुताई । करि हौं वल अनुमान सहाई ॥ यह विधि नाथ पयोधि वधाइय जे मह सुजसु लोक तिहुं गाइय ॥ यहि सर मम उत्तर तट वासी । हतहु नाथ खल नर अघ रासी ॥ सुनि कृपाल सागर मन पीरा । तुरतहिं हरी राम रणधीरा ॥ देखि राम वल पौरुष भारी । हर्षि पयो निधि भयो सुखारी ॥ सकल चरित कहि प्रभुहिं सुनावा । चरन वंदि पाथोधि सिधावा ॥ छंद—निज भवन गवनेउ सिन्धु श्री रघु पतिहिं यह मत भायऊ ॥ यह चरित कलि मल हर जथा मत दास तुलसी गायऊ ॥ सुख भवन संशय समन दमन विषाद रघुपति गुन गना ॥ तजि सकल आस भरोस गावहिं सुनहि संतत शुठि मना ॥ दोहा—सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान । सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिन्धु विना जल जान ॥ इति सुमेर कांड रामायण संपूर्णम्

विषय—रामायण सुंदर कांड ।

संख्या ३२५ ए[२]. सुन्दर काण्ड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), कागज—बाँसी, पत्र—२०, आकार—१२ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८७९ = १८२२ ई०, प्राप्तिस्थान—जानकी प्रसाद ब्राह्मण—बमरोली कटरा, जिला—आगरा ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः श्लोकः अतुलित बलधामं स्वर्ण सैलाभ देहं । दनुजवन-कृसानं ज्ञान नासाग्रगम्यं । सकल गुन निधानं वानरानामधीसं । रघुपति वर दूतं वात जातं नमामी । दोहा—वारि वरो वारि वारि है, तिहि पर बहत बयारि, रघुपति पार उतारहिं आपनि ओर निहारि । चौपाई—जामवन्त के बचन सुहाये । सुनि हनुमन्त हृदय अति भाये । जब लगि मोहिं परखेहु भाई । सहि दुख कन्द मूल फल खाई ।

अन्त—निज भाव गवनेहु सिंधु श्री रघुवीर हिय मन भाइयो, यह चरित कलि मल हरिन जथा मति दास तुलसी गाइयो । सुख भवन संसय दवन नम मन विषाद रघुपति गुन गना । तजि सकल आस भरोस गावहिं सुनहिं संतत सुचिमना । दोहा—सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान । सादर सुनहिं जे तरहिं भव, सिंधु विन जल जान ॥ इति श्री राम चरित्रे मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने अविरल भक्ति संम्पादिनी नाम पंचम सोपान मासोत्मासे शुक्ल पक्षे द्वादश्यां दिन वासरे संवत् १८७९

विषय—सुंदरकांड रामायण की कथा ।

संख्या ३२५ बी.[२] सुन्दर काण्ड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर, काशी), कागज—बाँसी, पत्र—४१, आकार—९ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण

(अनुष्टुप्)—३००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१, लिपिकाल—सं० १८८३ = १८२६ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री वासुदेव हकीम, ग्राम—वसई, डाकघर—ताँतपुर, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—श्रीमते रामानुजायनमः ॥ श्री रामोजयति ॥ चौपाई-जामवन्त के वचन सुहाये, सुनि हनुमन्त हृदय अति भाये। तव लगि मोहि परेखहु भाई। सहि दुख कंद मूल फल खाई। जब लगि सीतहिं आवौं देषी। होइ काज मन हर्ष विशेषी। अस कहि नाह सवन वहं माथा। चले हरषि हिय धरि रघुनाथा। सिंधु तीर एक भूधर सुन्दर। कौतुक कूंदि चढ़े ता ऊपर। बारि २ रघुवीर सम्हारी। तरकेउ पवन तनय दल भारी। जेहि गिरि चरण देइ हनुमन्ता। चलि सो गयो पताल तुरन्ता। जिमि प्रमोद रघुपति के वाना तेहि भांति चला हनुमाना।

अन्त—निज भौन गमन जलधि अति श्री राम यह पत मायऊ। यह चरित्र कलि मलि हरन यथा मतिदास तुलसी गायऊ। सुभ भवन संसय दमन सव कहीं रघुपति गुण गना। तजि सकल आस भरोस गावहिं नित सुनहिं संतत नना। सकल सुमगल दायक, रघुनायक गुण ग्राम। सादर सुनहि जे तरहिं भव, सिन्धु विना जल जान। इति श्री राम चरित्र मानस सकल कलि कलुष विध्वंसनी विमल वैराग्य सम्पादिनी नाम पंचमों सोपान। इति श्री सुन्दर काण्ड सम्पूर्ण। शुभ मस्तु सं० १८८३ लिपी रामकृष्ण दास पठनार्थ उभयंदं।

विषय—हनुमान का समुद्र लांघकर सीता से मिलना, लंका जलाना और राम को सीता की खबर देने का वर्णन।

सख्या ३२५ सी[२]. रामायण (सुन्दर काण्ड), रचयिता—तुलसीदास (काशी), पत्र—१८, आकार—११¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८८८ = १८३१ ई०, प्राप्तिस्थान—कालिका प्रसाद जी, ग्राम—नौनेरा, डाकघर—कग्तरी, जिला—आगरा।

आदि—श्री सिद्ध गणेश जुव नमः। श्री सरसुतीजु धर्म गुरभेनमः अथा श्री रामाइन सुंदर कांड लिषते। दोहा। विघन विनासन भे हरन, करन बुधि परगास। लेत नाम गनेस को होत सत्रु को नास दरीय वदन रिपु दहन, पर देसा उपदेस। दुरजन तै सुरजन मिले तुम प्रसाद गंनेस। सोरठा। उमा राम गुण गूढ़, पंडित मुनि पावहि विरत, पावहिं मोहि विमूढ़ जे हरि विवेसुपम धर्म व्रत। चौपही। जाम वत के वचन मुहाये सुनि हनुमत हृदय अति भाये। तव लगि मोहिं तुम परषहु भाई, सहि दुष कद मूल फल षाई। जब लगि अउसीताहि देषी, होइ कांम माया हर्ष विसेषी। अस कहि नाइ सवन कह माथा, चले हर्ष हीये धरि रघुनाथा। सिंधु तीर इक भूधर सुंदर, कौतुक कुदि चढि तिहि ऊपर।

अन्त—नाथ नील नल के दोऊ भाई, लरिकाई रिपि आइप पाई तिन्ह के परस किऐ गरि भारे, तरइ जलधि प्रताप तुम्हारे। मे पुनि उरधारि प्रभुताई, करहि उपल अनुमान सहाई। इह विधि नाथ पाय धव धारिय, जिहि यह सुजसु लोक तिहि गाइय ऐह मम सर

उत्तर तट नासी, हतउ नाथ पल नर अघरासी। सुनि कृपाल सागर मन पीरा तुरतहि हरौ राम रन धीरा। देषी वल तिहि पोरष भारी, हरषि पयो निधि भएउ सुपारी। सकहि विरत प्रभुहि सुनावा, चरन वंधि पायोधि सिधावा। छंद। निजु भवन गवनेउ सिंधु श्री रघुवीर यह सत भाइयौ। यह चरित कलि मल हरन सीमीवि दास तुलसी गाइयौ। सुप पावन संसय हरन समन विपाद रघुपति गुन गान। तजि सकल आस भरोस गावहि सुनहिं संतत सुगमान। दोहरा। सकल मंगल दाइक रघुनाइक गुन गान। सादर मुनि नहि जे भव तरहिं सिंधु विना जलपान। एते श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुप विध्वंसनो नाम विमल वैराग्य संपादनी सुंदर कांड संपूरन समाप्तम् संवत् १८८८ मिती माघु सुदी २ भ्रगुवासरे लिपत लाला हरदेव प्रसाद रहत मौजा मलापुर मुकाम मौः रुदैनी।

विषय—हनुमान का सीता की सुधि लेने लंका जाना एवं लंका को जलाना और वापस आकर राम को सीता का पता देना।

संख्या ३२५ डी[२]. सुन्दर काण्ड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), कागज—प्राचीन, पत्र—२६, आकार—८ × ७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कीर्तिभानु राय मालगुजार-रैवाड़ा, कटनी (मध्यप्रदेश)।

आदि—श्रीगणेशाय नम अथ लिपते तुलसीकृत रामायण सुन्दर काण्ड ॥ श्लोक ॥ अतुलित वलधामं स्वर्णशैलाभ देहँ दनुज वन कृशानं। अन नामा प्रगम्यं॥ सकल गुण निधानं वानराणाम धीसं॥ रघुवर वर दूतं वात जातं नमामी। चौपाईः—जाम वन्त के वचन सुहाये। सुनि हनुमन्त हृदै अति भाये॥ जव लगि मोहि परिपहु भाई। सहि दुख कन्द मूल फल खाई॥ जब लगि अँइऊ सीतहि देखी। होय काज मन हर्ष विशेषी॥ अस कहि नाई सबन कँह माथा। चला हरप धरि हिय रघुनाथा।

अंत—सकल सुमंगल धाइकर। रघुनायक गुन गान। सादर सुनहिं···सिंधु विना जल जान॥ इति श्री राम चरित मनसे सकल कलि कलुष विमल वैराग्य सम्पादिनी नाम सुन्दर काण्ड समाप्तं लिपी मनवोध कलार, मुरवारा।

विषय—हनुमान जी का समुद्र पार लंका जाना, सीता से भेंट करना, रावण के पुत्र का वध तथा लंका जलाकर वापिस लौटना और राम को सीता का पता देना।

संख्या ३२५ ई[२]. लंकाकाण्ड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), कागज—बाँसी, पत्र—४८, आकार—१२ × ५ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५२४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१, लिपिकाल—सं० १८७८ = १८२१ ई०, प्राप्तिस्थान—जानकी प्रसाद ब्राह्मण-बमरोली कटरा, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशाय नमः श्लोका—रामा कामारि सेव्यं भव भय हरणं काल मत्तेभ सिहं। जोगेंद्रं ज्ञान गम्यं गुन निधि मुदितं निर्गुणं निर्विकारं। माया तीतं सरसिज नयनं, देव तुल्य स्वरूपं। संखे द्वाभ मतीव सुन्दर सनु साईल चर्म्मावरं। काल व्याल कराल भूषन धरं, गंगा ससांक प्रियं। काशी संकलि कुल्य पौध समनं कल्याण कल्पुद्रमं। नौमीयं, गिराजाय निर्गुननिधि, श्री संकरंसन्य भारि। यो सदादि सजा शुंभुं कैवल्यं मदि दुर्लभं

खलाणां दंडकृतयसौ, शंकर सन्तनो तुमां। दोहा—लवनिमेष परमान जुग, वर्षकल्प सरचंड, भजसि न मन मेहि राम कह, काल जासु को दंड।

अंत—सब भांति अधम निषाद सो हरि भक्त ज्यो कर लाइयो। मति मन्द तुलसीदास सो प्रभु मोहवस बिसराइयो। यह रावनारि चरित पावन राम पद रति प्रभु सदा। कामाहि हा विज्ञान कर सुर निध मुनि गावहिं मुदा। दोहा—यह कलिकाल मला यतन, मन करि देखु विचारि। श्री रघुनायक नाम तजि, नहिं वछु आन अधार। समर विजय रघुपति चरित, सुन हरि सदा सुजान। विजय विवेक विभूत नित, तिनहि देहि भगवान। इति श्री रामचरित्रे मानसै सकल कलिकलु विध्वंसनो विमल विज्ञान संपादिनी नाम षष्ठमो सोपान॥ समाप्त फाल्गुण मासे कृष्णपक्षे नवम्यां भृगुवासरे संवत १८७८।

विषय—राम रावण युद्ध वर्णन।

संख्या ३२५ एफ[२]. लंका काण्ड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), कागज—बांसी, पत्र—४९, आकार—१३ × ६ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२१, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८८७ = १८३० ई०, प्राप्तिस्थान—पं० दीनदयाल द्वारिका प्रसाद मिश्र, ग्राम—कागारौल, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः। सोरठा—लव निमेश परिवाण जुग बरष कल्प सर चंड। भजसि मन तेहि राम पद कहु काल जासु को दंड। सिंधु वचन सुन राम सचिव बोलि प्रभु अस कहउ। अब बिलंब केहि काम करहु सेतु उतरह कटक। सुनहु भानु कुल केतु जाम्बन्त करि जोरि कह। नाथ नाव तव सेतु नर चढ़ि सागर तरहिं।

अन्त—सुमर विजय रघुवर चरित सादर सुनहि सुजान। विजय विवेक विभूति नित तिनहिं देहिं भगवान। यह कलि काल मलाय तन, करि मन देखि विचार। श्री रघु-नायक नाम तजि नहिं कछु आनि अधार। इति श्री राम चरित्र मानस सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल विज्ञान सम्पादने नाम षष्ठमो सोपान सं० १८८७ साके १७५२ तव वर्षे जेष्ठ सुदि ९ चन्द्र वार सुरे पुस्तक लिखी मिश्र मनीराम ने शुभ स्थान पथिने मध्ये लिखी गुलाबा के पुत्र सदा सुखकू।

विषय—राम रावण का युद्ध वर्णित है।

संख्या ३२५ जी[२]. रामायण लंकाकाण्ड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), कागज—पुराना मोटा, पत्र—७८, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६०८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ - १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कीर्तिभानु राय मालगुजार—रैवाडू—कटनी, जिला—जब्बलपुर (मध्य प्रदेश)।

आदि—सिधस श्री गंनपतेभो नमा श्री परम गुरुभो नमा। श्री सर सुती भो नमा श्री राम सीता'''सोरठा जेहि सुमिरत सिध होइ॥ गन नाइक करिवर बदन॥ करहु अनुग्रह सोई॥ बुध्य रास सुभ गन सदन॥ लिषते तुलसी दास क्रत रामाइन लंका काण्ड॥ श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार॥ बरनौ रघुवर विसद जसु जो दाइक फल

चार ॥ लखन मेप पर वन जुग वर्ष कल्प सर चंड ॥ भजसि न मन तिहि राम कह काल जासु को दंड ॥ सिंधु वचन सुनि राम, सचिव बोल प्रभु अस कहिव ॥ अब विलम्ब केहि काम रचहु सेत उतरै कटक ॥

अन्त—दोहा यह कल कालि मालाइ तन, मन कस देखि विचारि ॥ श्री रघुनायक राम तज, नहिं कछु आनि अधारि ॥ इति श्री राम चरित्रे मानसे सकल कलि कलुप विध्वंसने विमल वैराग्य सम्पादिनी नाम लंका काण्ड षष्टमो सोपान सांपूर्न समाप्त शुभ मस्तु लिपी ईसुर दास मुरवारे वैठे सुभ अस्थात ॥ पंश्री ठाकुर रामदत्त देवदत्त की साहित्री में सं० १९३२ के साल माघ षद ८ बुधवार के रोज ॥ श्री सीता राम

विषय—राम रावण युद्ध वर्णन ।

संख्या ३२५ एच². रामायण उत्तर काण्ड भाषा, रचयिता—गोस्वामी तुलसीदास (राजापुर बाँदा), पत्र—३८, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ) – २८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०६४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७६० = १७०३ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा हरीदास-छर्रा, डाकघर—छर्रा, जिला—अलीगढ़ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दो० ॥ रहा एक दिन अवधि कर अति आतुर पुर लोग । जहँ तहँ सोचहिं नारि नर कृसु तनु राम वियोग ॥ सगुन होहिं सुन्दर सकल मन प्रसन्न सब केर । प्रभु आगमन जनाय जनु नगर रम्य चहुँ फेर ॥ कौशिल्यादिक मातु सब मन अनंद अस होइ । आये श्री प्रभु अनुज जुत कहन चहत अब कोइ ॥ भरत केर भुज दच्छिन फर कहिं वारहिं वार । जानि सगुन मन हरषि अति लागे करन विचार ॥ चौ०—रह्यो एक दिन अवधि अधारा । समुझत मन दुःख भयो अपारा ॥ कारन कवनि नाथ नहिं आये । जानि कुटिल किधौं मुहिं बिसराये ॥ अहह धन्य लछिमन वड़ भागी । राम पदार विन्द अनुरागी ॥ कपिटी कुटिल मोहिं प्रभु चीन्हा । ताते नाथ संग नहिं लीना ॥ जो करनी समुझै प्रभु मोरी । नहिं निसतार कल्प सत कोरी ॥ जन अवगुन प्रभु मान न काऊ । दीन बन्धु अति मृदुल सुभाऊ ॥ मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई । मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई ॥ बीते अवधि रहैं जो प्राना । अधम कौन जग मोंहि समाना ॥

अन्त—पाई न केहि गति पतित पावन राम भजु सुठि सठ मना । गणिका अजामिल व्याधि गीध गजादि खल तारे घना ॥ आभीर यमन किरात पस स्वपचादि आदि अघ रुपजे । कहि नाम नारक नेकि पावहिं होहिं राम नमामि जे ॥ रघुवंस भूपन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं । कलिमल मनोमल धोइ विनु श्रम राम धाम सिधावहीं ॥ सुभ छन्द चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै । दारुन अविद्या पंच जनित विकार श्री रघुवर हरै ॥ सुंदर सुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो । सो एक राम अकाम हित निर्वान पद सम आन को ॥ जाकी कृपा लव लेश ते मतिमंद तुलसीदास हू । पायो परम विश्राम राम समान रघुवीर । अस विचारि रघुवंस मनि हरहु विपम भव पीर ॥ कामिहि नार पियार जिमि लोभिहिं प्रिय जिमि दाम ॥ तैसे ही तुम लागहु तुलसी के मन राम ॥ इति श्री राम चरित मानसे सकल कलुप विध्वंसने अविरल भक्ति संपादनो नाम सप्तमो सोपान

समाप्तः शुभ मस्तु मिती असुनि सुदी ४ लिपतं श्री स्वामी माधी दास का शिष्य प्रहलाद दास कायम गंज गंगा तट निवासी संवत् १७६० वि०

विषय—उत्तर कांड रामायण की कथा का वर्णन।

संख्या ३२५ आई[२]. रामायण उत्तरकाण्ड भाषा, रचयिता—गोस्वामी तुलसीदास (राजापुर बांदा), पत्र—८८, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५९०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८७२ = १८१५ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर लाल सिंह—मनौना, डाकघर—पटियाली, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ रामा० उत्तरकांड श्री गो० स्वामी तुलसीदास जी कृत लिष्यते ॥ हरिः ॐ तत्सत श्री रामचन्द्राय नमः ॥ श्लोक ॥ केकी कंठाभिनलं सुरवर विलस द्विप्रपादाब्ज चिन्ह शोभाढ्यं पीत वस्त्रं सरसिज नयनं सर्वदासु प्रसन्नम् ॥ पाणौ नाराच चापं कपि निकर युत बंधुना सेव्य मानं नौमीड्यं जानकीसं रघुवर मनिशं पुष्पका रुढ़ रामम् ॥ कौशलेन्द्र पदकंज मंजुलौ कोमलांबुज महेश वंदितौ। जानकी कर सरोज लालितौ चिन्तकस्य मन भृंग संगिनौ ॥ कुंद इन्दु दरगौर सुंदरं अंबिकापति मभीष्ट सिद्धिदम् ॥ २ ॥ कारुणीक कलकंज लोचनं नौमिशंकर मनन मोचनं ॥ ३ ॥ दो०—रहा एक दिन अवध कर अति आरत पुर लोग। जहँ तहँ सोचहिं नारि नर कृशतन राम वियोग ॥ सगुन होंहिं सुन्दर सकल मन प्रसन्न सब केर। प्रभु आगमन जनाव जनु नगर रम्य चहुँ फेर ॥ कौशल्यादिक मातु सब मन अनंद अस होइ। आये प्रभु श्री अनुज युत कहत चहत अस कोइ ॥ भरत नयन भुज दक्षिण फरकहिं बारहिं बार। जानि सगुन मन हरष अति लागे करन विचार।

अंत—छंद—पाई न केहि गति पतित पावन राम भजि सुन सठ मना। गनिका अजामिल व्याध गीध गजादि खल तारे घना ॥ आभीर यवन किरात खल स्वपचादि अति अघ रुपजे। कहि नाम वारेक तेऽपि पावन होत राम नमामिते ॥ रघुवंस भूसण चरित यह नर कहहि सुनहिं जे गावहीं ॥ कलि मल मनो मल धोइ बिनु श्रम राम धाम सिधा वहीं ॥ सत पंच चौपाई मनोहर जानि जे नर उर धरैं। दारुण अविद्या पंच जनित विकार श्री रघुपति हरैं ॥ सुन्दर सुजान कृपानिधान अनाथ पर कर प्रीति जो। सो एक राम अकाम हित निर्वाण पद सम आनको ॥ जाकी कृपा लवलेशतें मति मंद तुलसीदास हूं। पायो परम विश्राम राम समान प्रभु नाहीं कहूं ॥ दो०—मोसम दीन न दीन हित तुम समान रघुवीर। अस विचारि रघुवंश मणि हरहु विषम भव पीर ॥ कामिहि नारि पियारि जिमि लोभहिं प्रिय प्रिय दाम। तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहिं राम ॥ इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपादनो नाम सप्तम सोपान उत्तरकांडः समाप्तः लिपतं राम विलास पांडे जेठ सुदी ९ संवत् १८७२ वि०।

विषय—रामायण उत्तरकांड की कथा का वर्णन।

संख्या ३२५ जे[२]. उत्तरकाण्ड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), कागज—बाँसी, पत्र—३८, आकार—१२ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनु-

ष्टुप्)—१३३०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८७८ = १८२१ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री जानकी प्रसाद जी, दमरोली कटरा, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशाय नमः। श्री सरस्वत्यै नमः॥ दोहा—रहा एक दिन अवधि कर, अति आतुर पुर लोग। जहां तहां सोचहिं नारि नर, कृस मन राम बियोग। सगुन होहिं सुन्दर सकल, मन प्रसन्न सब केर, प्रभु आगमन जनाव जनु, नगर रम्य चहुँ फेर। कौसल्यादिक मातु सब, मन अनंद अस होइ। आए प्रभु सिय अनुज युत कहन चहत अब कोइ। भरत नयन भुज दक्षिन, फरकहिं बारहिं बार। जानि सगुन मन हर्ष अति, लागे करन विचार॥

अंत—मोसे दीन न दीन हित, तुम समान रघुबीर, अस बिचारि रघुबंस मनि हरहु विषम भव भीर। कामिहिं नारि प्यारि जिमि, लोभहि प्रिय जिमि दाम, तिमि निरन्तर रघुनाथ, प्रिय लागहु, मोहि राम। इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष, विध्वंसने अविरल भक्ति, संपादिनी नाम तुलसी कृतो भाषा निबन्धे श्रीमद् रामायण सप्तम सोपान। मासोत्मासे माघ मासे। शुक्लपक्षे एकादश्या रवि वासरे संवत् १८७८ यद्दर्श पुस्तकं दृष्ट्वा, तादृशं लिखितं मया। यदि शुद्धम शुद्धं वा मम दोषोन दीयते।

विषय—उत्तरकांड रामायण की कथा का वर्णन।

संख्या ३२५ के[२]. उत्तर काण्ड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), कागज—बाँसी, पत्र—५५, आकार—१२$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—११५५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१, लिपिकाल—सं० १८८७ = १८३० ई०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० दीन दयाल द्वारिकाप्रसाद मिश्र, डाकघर—कागारौल, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ उत्तर कांड लिख्यते। दोहा—रहे एक दिन अवध कर, अति आतुर पुर लोग. जहं तहं सोचहिं नारि नर कृसतन राम वियोग। सगुन होहि सुन्दर सकल, मन प्रसन्न सब केर। प्रभु आगमन जनाव जनि नगर रम्यि चहुं भेर। कौसिल्यादिक मातु सब मन अनन्द अस होई। आयहु प्रभु सिय अनुज जुत कहनि चाहत अब कोई। भरत नयन भुज दक्षिने फरकत बारहिं बार। जानि सगुन मन हरषि अति लागे करन विचार।

अन्त—मोह समान नहि दीन हित तुम समान रघुवीर। अस विचार रघुवंस मनि हरहु विस मनि भीर। कामहि नारि पियारि जिमि लोभ प्यारेउ दाम। तिमि रघुनाम निरन्तर प्रिय लागहु मम राम। छन्दः—भाषा प्रबन्ध मिदम चकार तुलसीदास सन्ततत मनस पुन्य पाप हर सदा। सेवक विज्ञान भगति प्रदायकम् मायामोह मलाप हम सुमेल प्रेमाभि पूरम सुभम् श्री राम चरित मानस मिदम् मग त्याव गाहते इति श्री राम चरित मानस भिदम उत्तर कांड सम्पूरणम् सप्तमो अध्याय मिती असाढ़ सुदी ३ बुधवासरे संवत् १८८७ पुस्तक लिखी मिश्र मनीराम ने शुभ अस्थान पथेने मध्य। लिखी लाला सदा सुखजी।

विषय—उत्तरकांड रामायण की कथा का वर्णन ।

संख्या ३२५ एल[२]. रामायण उत्तरकाण्ड, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर), कागज—पुराना, पत्र—८८, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५४०, रूप—अति प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १९०६ = १८४९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्री कीर्तिभानु राय माल-गुजार-रैवाड़ा, कटनी, (मध्य प्रदेश) ।

आदि—उत्तर काण्ड श्री गनेस जू सहाइ श्री परम गुरुभ्यो नमः श्री सर सुती जू सहाई श्री रामचंद्र जू सहाइ लिषते उत्तर काण्ड रामाइन तुलसी कृत दोहा श्री मुक्त जान महि जान, खान पान अघ हानि कर जँह वस सम्भु भवानि, सो कासी सेइय न कस, जरत सकल सुर वृंद, विषम गरल जिह पान किय, तिहि न भजस मति मन्द, को कृपाल शंकर सरस ॥ दोहा श्री गुरु चरण सरोज, निज मन मुकुर सुधार । वरनहिं रघुवर विशद जस, जो दायक फल चार ॥ रहे येक दिन अवधकर, अति आरत पुर लोग । जहँ तहँ सोचहि नारि नर, कृस तन राम वियोग ॥

अन्त—सम्पूरन संवद १९०६ साल लिषते मन बोध कलार मुकाम मुरवार ॥ यह कह जो बांचे सुनै ताको राम राम पहूँचे विप्रन दंडवत पहुँचे राम राम मीती असाढ़ सुद १ गुरउ कह सम्पूरन सीता राम सीता राम......

विषय—उत्तर कांड रामायण की कथा का वर्णन ।

संख्या ३२५ एम[२]. उत्तर काण्ड, रचयिता—तुलसी दास (राजापुर, काशी), कागज—बाँसी, पत्र—७०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५०, खंडित,रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० द्वारका प्रसाद प्रधानाध्यापक—बमरौली कटरा, जिला—आगरा ।

आदि—चौपाई–रहा एक दिन अवध अधारा समझत मन दुप भयउ अपारा । कारन कवन नाथ नहिं आये । जानि कुटिल प्रभु मोहि विसराये । अहो लछिमन बड़ भागी । राम पदारविन्द अनुरागी । कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा । ताते नाथ संग नहिं लीन्हा । जौं करनी समुझै प्रभु मोरी । नहिं निस्तार कल्प सत कोरी । जन अवगुन प्रभु मान न काऊ । दीन बन्धु अति मृदुल सुभाऊ । मोरे जिय भरोस अस सोई । मिलिहईं राम सगुन सुभ होई । बीते अवध रहहिं जे प्राना । अधम कौन जग मोहि समाना । दोहा—राम विरह सागर महँ भरत मगन मन होत । विप्र रूप धरि पवन सुत, आय गयऊ जनु पोत ॥

अंत—पूछेऊ राम कथा अति पावनि । सुख सनकादि संभु मन भावनि । सम संगति दुर्लभ संसारा । निमिषि दंड भरि एको वारा । देष गरुण निज हृदय विचारी । मैं रघुवीर भजन अधिकारी । सकुनाधम सब भांति अपावन, प्रभु मोहिं कीन्ह विदित जग पावन । दोहा—आज धन्य मैं धन्य अति जद्यपि सब विधि हीन निज जन जानि राम

मोंहि, सन्त समागम दीन्ह ॥ नाथ जथा मति भापेउ, रापेहु नहिं कछु गोय । चरिन सिंधु रघुनाथ करि, काह कि पावहि कोय ।

विषय—उत्तर कांड रामायण की कथा का वर्णन ।

संख्या ३२५ एन[२]. लवकुश काण्ड, रचयिता—गोस्वामी तुलसीदास (राजापुर बाँदा), पत्र—८०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७६० = १७०३, प्राप्तिस्थान—ठाकुर गनेश सिंह-आदमपुर, डाकघर—टडियाव, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ लवकुश कांड लिख्यते ॥ सो०—वंदौ पवन कुमार खल बन पावक ज्ञान घन । जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धरि ॥ दो०—जन्म ब्याह वन राज प्रभु सकल सुनायो मोहिं ॥ किमि गौने निज धाम प्रभु चरित सुगम सव तोहिं ॥ चौ०—जो गिरिजा सन कहा पुरारी । कहौं कथा खग पति हित कारी ॥ करि सनमान परजि सब रामा । कीने विदा चले निज धामा ॥ करत परस पर राम बड़ाई । चक्रवर्ति प्रभु हैं सुखदाई । लोक लोक जै जै धुनि होई । जीव जंतु प्रमुदित सव कोई ॥ राज नीति दस दिसा सोहाई । जीव जन्तु सव वैर विहाई ॥ करि जय जग्य दान व्रत नेमा । भे सुम विगत राम पद प्रेमा ॥ गृह गृह लोक लोक प्रति लोका । राम प्रताप मिटे सव सोका ॥ वचन अपने मन कोउ न कहहीं । सभि अनुग्रह दिन दिन लहहीं ॥ दो०—भुवन चारि दस वेद धुनि वस हरपे सुर ईस । बरप प्रसून प्रसस करि । जय जय प्रभु जगदीस ॥

अन्त—साजोज विधि दे जुगुल अनुज भुजा जुग तन गये । कर सरजू सों मंजन चारु करि चतुर्भुज मूरत धरी ॥ तेहि समय काग भुसुंड उर में इष्ट छवि देपत भयो । मति मंद तुलसी कहत प्रभु आनन्द रस नही गयो ॥ दो०—भरत सत्रुहिन सहित प्रभु धरेउ चतुर्भुज नाम । महिमा द्विज कर साध हित यहि विधि ने सुख धाम ॥ चौ०—जेहि विधि राम रमा गृह गयऊ । व्यास मुनि पग पति सन कहेऊ ॥ सो०—विनती करत कर जोर । विद्या जन अरु मूढ़ जन ॥ कहियो यथा मति मूढ़ । मानत क्रत संकर भनित ॥ चौ०—खग पति कहे दोऊ कर जोरी । हौं गुरु विनै करौं का तोरी ॥ मम उर मोह निपार उपारा । तव बाणी मम तरण प्रकारा ॥ जगत जागीर दीन तोहि रामा । कह तुम जोग देहु सुख धामा ॥ खग पति काग चरण सिर नाई । महा मोहते न उठत उठाये ॥ दो०—तासु चरण शिर नाय कह प्रेम सहित मति धीर । गयो गरुड़ अमरावती हृदै रापि रघुवीर ॥ गिरजा संत समागम समन लाभ कछु हानि । विनु प्रभु कृपा न होय सो गावहिं वेद पुरानि ॥ इति श्री राम चरित मानसे सकल कल कलुप विध्वंसने विमल वैराग्य संपादने नाम लवकुश कांड समाप्तम् लिषतं शिव गौरी संवत् १७६० वि०

विषय—इस ग्रन्थ में सीता जी को लक्ष्मण का वन में त्यागना और उनका वाल्मीकि आश्रम में जाना, लवकुश का जन्म होना, रामचंद्र जी का अश्वमेध यज्ञ करना, श्याम कर्ण घोड़ा छोड़ना, लवकुश का घोड़ा को बाँधना और फल स्वरूप युद्ध होना आदि वर्णन ।

संख्या ३२५ ओ[२]. रामायण लवकुश काण्ड, रचयिता—गोस्वामी तुलसीदास (राजापुर, बाँदा), पत्र—४०, आकार- ८ x ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२७०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०२ = १८४५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० गंगा प्रसाद दूबे सराय नवाब; डाकघर—सोरा, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ रामायण लवकुश कांड श्री गो० तुलसी दास कृत लिख्यते ॥ दोहा ॥ श्री भुसुंढि के वचन सुन देखि राम पद प्रीति। हुई प्रसन्न बोले गरुड़ बानी परम पुनीति ॥ सुर सरि सम पावन भयो नाथ हृदय अब मोर। जन्म जन्म छूटे नहीं नाथ पदाम्बु तोर ॥ चौ०—सुने अखिल गुन गण प्रभु करे। पूरे नाथ मनोरथ मेरे ॥ तव प्रसाद वायस कुल नाथा। हृदय बसहिं अब प्रभु गुण गाथा ॥ मन संतोष न चित्त अघाहीं। यथा उदधि सरिता सर जाहीं ॥ पंच्छी पशु जंगम जड़ जाती। चर अरु अचर चरण किहि भांती ॥ जे जन अवध बसहिं सुख धामा। लिये संग सादर श्री रामा ॥ तजि सब अवध गये सह देहा। इहि सुनि नाथ परम संदेहा ॥ अब प्रभु मोहिं सब कहो बुझाई। चिता जानि मैं करौं ढिठाई ॥ इहि इतिहास पुनीत कृपाला। जिमि मख कीन्ह राम महि-पाला ॥ दो०—अस कहि गद गद वचन मृदु पुलकावली सरीर। सुनि सप्रेम हरषे विहंग वायस मति अति धीर ॥

अन्त—छंद—उचरित वेद प्रसन्न भरत दयालु हंसि सादर लयो। जल परसि कर रिपु दमन सादर पद्म वन राजा भयो ॥ कपि आदि यूथप राखि प्रभु सकल निज निज घर गये। सुग्रीव प्रभु पद बंदि बारहिं बार रवि मंडल छये ॥ सुर सहित दिनकर वंस भूषण आप जल आश्रित रहे ॥ तेहि समय बोलि अनादि प्रभु जी वचन पावन मय कहे ॥ इक मासु रहु तुम नीर यहं मम पुरी जीव आवहीं। तेहि सुभग देहु विमान पद निर्वान जो मम पावहीं ॥ अति प्रीति सरजू सहित मंज्जहिं मम चरण रति कर सदा। तरि जाय सुर पुर सकल सादर सुनहु मम बांणी मुदा ॥ कहि वचन अंतर ध्यान प्रभु जिमि दामिनी घन में धंसे। नभ जयति जय जयकार जय जय जयति कर लै सुर लसे ॥ इहि भांति रघुपति सह चराचर लै गये निज धाम को। सो कह्यो उमहिं कृपाय तन उर राखि सादर राम को ॥ गिरिजा संत समाग महिं सम नं लाभ कछु आन। विनु हरि कृपा न होंय सों गावहि वेद पुरान ॥ इहि विधि सब संवाद सुनि प्रफुलित गरुड़ शरीर। बार बार तेहि चरण गहि जानि दास रघुबीर ॥ साधु चरण शिर नाय करि हृदय राखि रघुवीर। गरुड़ गयउ वैकुंठ तब प्रेम सहित मति धीर ॥ इति श्री राम चरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने श्री गो० तुलसी दास कृते अविरल भक्ति कर संपादनो नाम लव कुश कांड संपूर्ण। लिपतं वैजनाथ गोसाई जेठ शुक्ल नवमी संवत १९०२ वि०

विषय—लवकुश और राम युद्ध वर्णन।

संख्या ३२५ पी[२]. विनयपत्रिका, रचयिता—तुलसीदास, पत्र—३७, आकार—$11\frac{3}{4}$ x $8\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७८८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—दामोदरदास गौड़, शमशाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः। गाइये गणपति जग वंदन। संकर सुवन भवानी नंदन। १। सिद्धि सदन गजवदन विनायक, कृपा सिंधु सुंदर सव लायक। २। मोदक प्रिय मुद मंगल दाता, विद्या वारिध वुद्धि विधाता। ३। मांगत तुलसी दास कर जोरे वसहु राम सिय मानस मोरे। ४॥ १॥ दीन दयाल दिवाकर देवा करि मुनि मनुज सुरासुर सेवा। १। हिम तम करि हरि कर माली, दहन दोप दुरि तरु जाली। २। कोक कोकनद लोक प्रकासी तेज प्रताप रूप रस रासी। ३। सारथी पंगु दिव्य रथ गामी, हरि शंकर विधि मूरत स्वामी। ४। वेद पुराण विदित जस जागै, तुलसी राम भगति वर माँगै। ५॥ २॥

अंत—पवन सुवन रिपु दवन भरत लाल लपन दीनकी। निज निज औसर सुधि किए वलि जाऊँ दास आस पुजिहै पास पीन की। राज द्वार भल सव कहै साधु समी चीनकी। सुकृत सुजस साहिव कृपा स्वारथ परमारथ गति भई गति विहीन की। समैं सम्हारि सुधारिवी तुलसी मलीन की। प्रीति रीति समुझाय प्रनत पाल कृपाल परमित पराधीनकी। २७७। मारुत मन रुचि भरतकी लपित पन कही है। कलि कालहु नाथ नामसों प्रीति प्रतीति एक किंकर कीत्ति वही है। सकल सभा सुनिलेहु वीजा तिरति सो रही है। कृपा गरीव निवाज की देपत, गरीव को सहसा वांह गही है। विहंसि राम कह्यौ सत्य है सुधि मैं तुलही है। मुदित माथ नावत वनी तुलसी अनाथ परि रघुनाथ की सही है। २७८। इति श्री विनय पत्रिका तुलसी कृत समाप्तम् शुभम् भूयात्।

विषय—राम विनय।

संख्या ३२५ क्यु[२]. विनयपत्रिका, रचयिता—तुलसीदास, पत्र—३९, आकार—१२ × ९ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८२८, रूप—प्राचीन, लिपि– नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामलाल जी प्रधानाध्यापक—प्राइमरी स्कूल–किरावली, जिला—अगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः। गाइये गणपति गंज वंदन शंकर शुवन भवानी नंदन। सिद्धि सदन गज वदन विनायक कृपा सिंधु सुंदर सव लायक मोदक प्रिय मुद मंगल दाता विद्या वारिद वुद्धि विधाता। मांगत तुलसी दास कर जोरे वसहु राम सिय मानस मोरे दीनदयाल दिवाकर देवा कर मुनि मनुज सुरासुर सेवा। हिम तम करिके हरि कर माली दहन दोप दुप दुरित रुजासी। कोक कोकनद लोक प्रकासी तेज प्रताप रूप रस रासी। सारथी पंगु दिव्य रथ गामी। हरि शंकर विधि मूरति स्वामी। वेद पुराग विदित जल जागै। तुलसी राम भजनु वर माँगै। को जाचिय शंभु तजि आन दीन दयाल भक्त आरत हर सव प्रकार समरथ भगवान। कालकूट ज्वर जरत सुरा निज पन लागि कियौ विप पान। दाहन दनुज जगत दुप दायक जान्यौ त्रिपुर एक ही वान। जो गति अगम महा मुनि दुर्लभ कहत संत श्रुति सकल पुराण सोई गति मरण काल अपने पुर देत सदा शिव सवै समान सेवत सुलभ उदार कल्प तरु पारवती पति सहज सुजान। देहु राम पद नेह काम रिपु तुलसीदास कह कृपा निधान।

अंत—पवन सुवन रिपु दवन भरत लाल लषन दीनकी। निज निज औसर सुधि किए बालि जाउँ दास आस पूजि है पास पीनकी राज द्वार भल सब कहे साधु समीचीनकी। सुकृत सुजस साहिब कृपा स्वारथ परमारथ गति भई गति विहीन की। समैं सम्हारि सुधारबी तुलसी मलीन की। प्रीति रीति समुझाय प्रनत पाल कृपाल परमित पराधीन की। मारुत मन रुचि भरत की लषि लषन कही है। कलि कालहु नाथ नाम सों प्रीति प्रतीति एक किंकर की तब ही है। सकल सभा सुनि लेहु बीजानि रति सो रही है। कृपा गरीब निवाज की देषित गरीब को सहसा बांह गही है। विहंसि राम कह्यौ सत्य है सुधि मैं हुलही है। मुदित माथ नावत बनी तुलसी अनाथ परि रघुनाथ की सही है।

विषय—राम विनय।

संख्या ३२५ आर[२]. कवित्त रामायण, रचयिता—तुलसीदास, पत्र—११, आकार—४$\frac{3}{4}$ × ३$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामजी अध्यापक, डाकघर—नारखी, जिला—आगरा।

आदि—श्री मिथिलेन्द्रजा प्राण वल्लभो जयति। सवैया। कीर के कागर ज्यौं नृप चीर विभूषन उत्तम अंगन पाई। अवध तजी मगवास के रुष ज्यौं पंथ के साथ जो लोग लुगाई। संग सुबंधु पुनीति प्रिया मनोकर्म क्रिया धरि देह सुहाई। राजिव लोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊ की नाई। १। कागर चीर ज्यों भूषन चीर सरीर लस्यो तजि नीर ज्यौं काई। मात पिता प्रिय लोग सबै सनमानि सुभाय सनेह सगाई। संग सुभामिनि भाई भले दिन है जनु अवध हुते पहनाई। राजिव लोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊ मैं नाई। २। नाम अजामिल से पल कोटि अपार नदि भव बूड़त काढ़े। जे सुमरे गिरि मेरु सिला कारण होत अजाखुर वारिध बाढ़े। तुलसी जेहि के पद पंकज ते प्रगटी तटनी जेहरे अघ गाढ़े। ते प्रभु सों सरिता तरिके कह मांगत नाव किनारे ह्वे ठाढ़े।

अन्त—सुनि सुंदर वेन सुधारस सानि सयानि है जानकि जान भलि। तिरछे करि नयन देस यत तिन्हें समुझाय कछु मुसकाय चलि। तुलसी तेहि अवसर सोह सबे अब लोकत लोचन लाहु अलि। अनुराग तड़ाग में भानु उदय विकसि मनो मंजुल कज कलि। धरु धीर कहैं देषिय जाय जहा सज निर जनि रहि हैं। कहि हे जग पोचन सोच कछु फल लोचन आपन तो लहि हैं। सुख पाय ते कान सुने बतिया कल आपुस में कछु जो कहिहैं। तुलसी अति प्रेम लगि पलकै पुलकि लखि राम हिये महिमें। इति श्री अयोध्या कांड कवित्त रामायण संपूर्णम् ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

विषय—राम चरित्र।

संख्या ३२५ एस[२]. गीतावली, रचयिता—तुलसी दास, पत्र—१२०, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६७, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६०७ = १८५० ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर सुमेर सिंह–मीठना, डाकघर—फीरोजाबाद, जिला—आगरा।

आदि— ······ ॥ राग सोहिला जैति :—सहेली सुनु सोहिल सब जग आजु। पूत सपूत कौसला जायो अचल भयो कुल राजु ॥ चैत चारु नौमी सविता दिन मध्य गगन गत भानु । नवत जोग गृह लगन भले दिन मंगल मोद निधानु ॥ व्योम पवन पावक जल थल दिसि दसहु सुमंगल मूल । सुर दुंदुभी बजावहिं हर्षित वरसहि सुर तरु फूल ॥ भूपति सुदिन सुहेली सुनिकै वाजे गह गहे निशान । जहँ तहँ सजहिं कलस ध्वज चामर तोरन केतु वितान ॥ सींचि सुगंध रची चौकै ग्रह मंगल चारु । सुनि सानंद उमगि दस स्यंदन सकल समाज समेत ॥ लियो बोलि गुरु सचिव भूमि सुर प्रमुदित चले निकेत ॥

× × ×

अंत—रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर गावत सकल अवध वासी । अति उदार अवतार मनुज वपु धर्‍यौ ब्रह्म सोइ अविनासी ॥ प्रथम ताड़िका हति सुबाहु बल मप राष्यौ हित कारी ॥ देषि दुषी अति सिला श्राप वस रघुपति विप्र नारि तारी ॥ सब भूपन कौ गर्बु हन्यौ हरि भन्ज्यौ शंभु चाप भारी । जनक सुता समेत आवत ग्रह परस राम अति मद हारी ॥ पिता वचन तजि राज काज सुर चित्रकूट मुनि वेष धर्‍यौ । एक नैन कीन्हौं सुरपति सुत वधि विराध रिषि सोच हर्‍यौ ॥ पंचवटी पावन करि रापौ सुपनेषा जो कुरुप करी । षरदूषनहि सिघारि कपट मृग गिद्ध राज कौ गति जो करी ॥ हति कबंध सुग्रीव सखा करि वेध्यौ ताल वालि मार्‍यौ । वानर रीछ सहाइ अनुज सँग सिंधु वांधि जग जस विस्तार्‍यौं ॥ सकुल पुत्र दल सहित दसानन मारि अषिल सुर दुष टार्‍यौ । परम साधु जिय जानि विभीसन लंका पुरी तिलक साल्यौ ॥ सीता लषन संग लीन्हैं प्रभु औरो केते दास आये । नगर निकट विमान आयो सब नर नारि देषन धाये ॥ शिव विरंचि सुक नारदादि मुनि अस्तुति करत विमल वानी । चौदह भुवन चराचर हरषित आये राम राजधानी ॥ मिले भरत जननी गुरु परिजन चाहत परमानंद भरे । दुषह वियोग रोग दारुन दुष रामचन्द्र देखत विसरे ॥ वेद पुरान विचारि लगन सुभ महाराज अभिषेक कियो । तुलसीदास जिय जानि सुअवसर भक्ति दान वर मागि लियो ॥ ३८ ॥ इति श्री तुलसी दास कृत गीतावली उत्तर कान्ड संपूर्ण शुभं भूयात् ॥ मार्ग मासे शुक्ल पक्षे तिथौ द्वादस्याँ चन्द्र वासरे ॥ इति शुभम् ॥

विषय पदों में राम चरित्र कथन ॥

संख्या ३२५ टी. श्रीकृष्ण गीतावली, रचयिता— तुलसीदास (राजापुर बाँदा), पत्र—४०, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८० = १८२३ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० विष्णु भरोसे—पुरा भादुर, डाकघर—बेहटा गोकुल, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री कृष्ण गीतावली लिष्यते राग विलावन—माता लै उछंग गोविन्द मुख बार बार निरखै । पुलकित तन आनन्द घन छन छन मन हरखै ॥ पूछत तोतरात वात मातहिं जदुराई । अति सै सुख जाते तोहि मोंहिं कहु समुझाई ॥ देखत तुव बदन कमल मन आनन्द होई । कहै कौन सुर नर मुनि जानै कोई कोई ॥ सुन्दर मुख मोहि दिखाव इच्छा अति मोरे । मम समान पुन्य पुंज बालक नहिं तोरे ॥ तुलसी प्रभु प्रेम विवस

मनुज रूप धारी । बाल केलि लीला रस ब्रज जन हित कारी ॥ १ ॥ राग ललित—छोटी मोटी मीसी रोटी चिकनी चुपरि कै तूं । देरी मैय्या लै कन्हैया सो कब आवहि तात ॥ सिगरी ही हौंहिं खैहौं बल दाऊ को न दैहौं । सो क्यों भट्टू तेरो कहा कहि इत उत जात ॥ बाल बोलि यह कहि चिरावत चरित लख गोपीगण महरि मुदित पुलकित गात । नूपुर की धुनि किंकनी की कलरव कूद कूद किलकि किलकि ठाढ़े ठाढ़े खात ॥ तनियां ललित कटि विचित्र टेपारे शिशु मुनि मन हरत बचन कहे तोत रात ॥ तुलसी निरखि हरखि बरखत फूल भूरि भागी ब्रजबासी विबुध सिद्ध सिहात ॥ २ ॥

अन्त—कहा भयो कपट जुआ जो हारी ॥ समर धीर महावीर पांच पति क्यों देहै मोहिं होन उघारी ॥ राज समाज सभासद समरथ भीषम द्रोण धर्म धुर धारी ॥ अवला अनघ अनवसर अनुचित होत हेरि करिहै रखवारी ॥ यों मन गुनत दुसासन दुर्जन क्यों तकि गह्यो दुहूं कर सारी ॥ सकुचि गात्त गोचति कमठी ज्यों हहरी हृदे विकल भई भारी ॥ अपनेनि को अपनो विलोकि बल सकल आस विस्वास विसारी । हाथ उठाइ अनाथ नाथ सो पाहि पाहि प्रभु पाहि पुकारी ॥ तुलसी परखि प्रतीति प्रीति गति आरत पाल कृपाल मुरारी ॥ बसन वेखि राखी विसेखि लखि विरदा वलि मूरति नर नारी ॥ गह गह गगन दुंदभी बाजी ॥ बरखि सुमन सुर गन जस गावत जस हरख मगन मुनि सुजन समाजी ॥ सानुज सगन ससचिव सुयोधन भये मुख मलिन खाइ खल बाजी ॥ लाज गाज उन बिन कुचाल कलि परी बजाइ कहूं कहुं गाजी ॥ प्रीति प्रतीति द्रुपद तनया की भली भूरि भय भरी न भाजी ॥ कहि पारथ सो रथहिं सराहत गई वहोरि गरीब निवाजी ॥ शिथिल सनेह मुदित मन ही मन बसन बीच विच वधू विराजी ॥ सभा सिन्धु जदुपति जय मय जनु रमा प्रगट त्रिभुवन भरि भ्राजी ॥ जुग जुग जुग साके केशव के समन कलेस कुसाज सुसाजी ॥ तुलसी को न होइ सुन कीरत कृष्ण कृपाल भक्ति पथ राजी ॥ इति श्री कृष्ण गीतावली संपूर्ण संवत् १८८० वि०

विषय—श्री कृष्ण जी की भक्ति से पूर्ण लीला आदि के पद ।

संख्या ३२५ यू[२]. श्री कृष्ण गीतावली, रचयिता—गोस्वामी तुलसीदास (राजापुर बाँदा), पत्र—६४, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८४ = १८२७ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला दिलसुखराय-नगला भगत, डाकघर—पटियारी, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री कृष्णगीतावली लिख्यते ॥ राग विलावल ॥ माता लै उछंग गोविन्द मुख बार २ निरखै ॥ पुलकित तन आनद घन छन २ मन हरषै ॥ पूँछत तोत रात बात मातहिं जदुराई ॥ अतिसय सुख जाते तोहि मोहिं कहुँ समुझाई ॥ देखत तुव वदन कमल मन आनंद होई ॥ कहै कौन सुर नर मुनि जानै कोइ कोई ॥ सुंदर मुख मोहिं दिखाउ इच्छा अति मोरे । मम समान पुंन पुंज बालक नहिं तोरे ॥ तुलसी प्रभु प्रेम विवस मनुज रूप धारी बाल केलि लीला रस. ब्रज जन हितकारी ॥ राग ललित ॥

छोटी मोटी मीसी रोटी चिक्कनी चुपरि कै तूं ॥ देरी मैय्या ले कन्हैया सो कब आवहिंतात ॥ सिगरिये हौं हिं खैहों बलदाऊ को न दैहों सो क्यों भट्ट तेरो कहा कहि इत उत जात बाल वोल इहि कि चिढ़ावत चरित लखि गोपी गण महरि मुदित पुलकित गात ॥ नूपुर की धुनि किंकनी की कलरव कूद कूद किलकि किलकि ठाढ़े ठाढ़े खात ॥ तनियां ललित कटि विचित्र टेपारे शिशु मुनि मन हरत वचन कहे तोत रात ॥ तुलसी निरपि हरपि वरसत फूल भूरि भागी व्रज वासी विवुध सिद्ध सिहात ॥

अंत—राग आसावरी—गह गह गगन दुंदभी वाजी ॥ वरपि सुमन सुर गण गावत जस हरप मगन मुनि सुजन समाजी ॥ सानुज सगनस सचिव सुयो धन भये मुख मलिन खाइ खल वाजी ॥ लाज गाज उन वनि कुचाल कलि परी वजाइ कहूं कहुँ गाजी ॥ प्रीति प्रतीति द्रुपद तनया की भली भूरि भय भरी न भाजी ॥ कहि पारथ सारथहिं सराहत गई वहोरि गरीव निवाजी ॥ सिथिल सनेह मुदित मन ही मन वसन वीच विच वधू विराजी ॥ सभा सिन्धु जदुपति जय मय जनु रमा प्रगटि त्रिभुवन भरि भ्राजी ॥ जुग जुग जग साके केशव के समन कलेश कुसाज सुसाजी ॥ तुलसी कोन होहु सुन कीरति कृष्ण कृपाल भक्ति पथ राजी ॥ इति श्री रामगीतावली कृष्ण चरित्र श्री गोसाई तुलसीदास कृत संपूर्ण समाप्तं ॥ शिव शिव शिव ॥ जेष्ठ सोमवार सुदी संवत १८१२ वि० ॥ राम राम राम

विपय – श्री कृष्ण जी की विनय आदि वर्णन ।

संख्या ३२५ व्ही[२]. श्री कृष्णगीतावली, रचयिता—गोस्वामी तुलसीदास, पत्र—६४, आकार—८ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२९, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७८८ = १७३१ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामनाथ शर्मा—चौका, डाकघर—आटिया, जिला—लखनऊ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ कृष्णगीतावली श्री गो० तुलसीदास रचित लिख्यते ॥ राग विलावल ॥ माता लै उछंग गोविन्द मुख वार वार निरपै । पुलकित तनु आनंद घन छंन छन मन हरषे ॥ पूछत तोतरात वात मातहिं यदु-राई ॥ अतिसै सुप जाते तोहि मोहि कहु समुझाई ॥ देखत तुव वदन कमल मन आनंद होई । कहै कौन सुर नर मुनि जानै कोई कोई ॥ सुंदर मुप मोहिं देखाव इच्छा अति मोरे । मम समान पुंन पुंज वाल नहिं तोरे ॥ तुलसी प्रभु प्रेम विवस मनुज रूप धारी । वाल केलि लीला रस व्रज जन हित कारी ॥

अंत—राग आसावरी ॥ कहा भयो कपट जुआ जौं हारी ॥ समर धीर महावीर पांचपति क्यों देहैं मोहिं होन उघारी ॥ राज समाज सभासद समरथ भीपम द्रोण धर्म धुर धारी ॥ अवला अनघ अनवसर अनुचित होत हेरि करि हैं रखवारी ॥ यों मन गुनति दुसासन दुरजन क्यों तकि गही दुहूं कर सारी ॥ सकुचि गात गोवति कमठी ज्यों हहरी हृदय विकल भई भारी ॥ अपनेनि को अपनो विलोकि बल सकल आस विस्वास विसारी ॥ हाथ उठाइ अनाथ नाथ सों पाहि पाहि प्रभु पाहि पुकारी ॥ तुलसी परषि प्रतीति प्रीति उर गति आरति पाल कृपाल मुरारी ॥ वसन वेषि रापी विसेपि लषि विरुदावलि मूरति

नर नारी ॥ गह गह गगन दुंदुभी बाजी ॥ बरपि सुमन सुरगन गावत जस हरप मगन मुनि सुजन समाजी सानुज सगन ससचिव सुजोधन भये मुप मलिन पाइ पल बाजी ॥ लाज गाज उन वनि कुचाल कलि परी वजाइ कहूं कहूं गाजी ॥ प्रीति प्रतीति द्रुपद तनया की भली भूरि भय भरी न भाजी ॥ कहि पारथ सारथिहिं सराहत गई वहोरि गरीव निवाजी ॥ सिथिल सनेह मुदित मनही मन वसन बीच विच वधू विराजी ॥ सभा सिन्धु जदुपति जय मय जनु रमा प्रगट त्रिभुवन भरि भ्राजी ॥ जुग जुग जग साके केशव के समन कलेस कुसाज सुसाजी ॥ तुलसी को न होइ सुन कीरति कृष्ण कृपाल भक्ति पथ राजी ॥ इति श्री कृष्णगीतावल्यां कृष्ण चरित्रं समाप्तम् शुभ सवत् ॥ १७८८ वि० क्वार सुदी दसमी लिखत दीना नाथ पाठक पुरतायं पुरा के ॥

विषय—श्री कृष्ण चरित्र वर्णन ।

संख्या ३२५ डब्ल्यू[२]. दोहावली, रचयिता—तुलसीदास जी, पत्र—८५, आकार – ६$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६५, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० देवीप्रसाद शर्मा, डाकघर—फतहाबाद, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्रीमते रामानुजाय नमः राम नाम मन दीप धर जीह देहरी द्वा २ तुलसी भीतर बाहरें जो चाहसि उजियार । नाम राम को अंक निधि साधन ता सब सून अंक रहित सब सून है अंक सहित दस गुन २ । दुगुने तिगुने चौगुने पांच पट्ट अरु सात ओठो ते पुनि नौगिनो नौके नौ रहि जात ३ । नौके नौ रहि जात है तुलसी कियो विचार रम्यो तम यौगत मैनहि द्वैत विस्तार विस्तार ४ । जथाला भूमि सब बीज मय नपतन वास अकास तम नाम सब धर्म मग्र जानत । तुलसीदास ५ । तुलसी रघुवर परम निधि ताहि भजै निहि संक आदि अंत निर्वाहिये जैसे लव को अंक ६ । हरि सो हित ओ राखिऐ कोट किए उपचार मिटै न तुलसी अंक नव नव के लिखत पहार ७ । तुलसी हठि हठि कहत नित हित कै चितहे मानि लाभ राम चित दे माणि सुमिरत बड़ी २ विसार हानि ८ । राम नान जपि जो हजस भाजन भये कुजात कुतभ कुसरू पुर राजमंगल हस भुवनि विप्यति ९ ॥

अन्त—जथा अमल पावन पवन पाइ कुसंग मुंसत । कहि अकुवास सुवास तिमक छमहीस प्रसंग ॥ १७२ । लिपि लिपि सब जग लिपी पाठि पठि पठिका कीन्ह वढि वढि वढि धरि धरि गऐ तुलसी राम न चीन्ह २७३ भक्त हेतु भगवान प्रभु तम मुध रिजत अनूप । किए चार तपावन परम प्राक्त तजन अनुरूप । ३ = ७४ जाति हीन अध जन्म मुहि मुसी कीन्ह असिनार । महा मदयत सुप चहसि अैसे प्रभुहि विसार ॥ ४ = ७५ तुलिसी संपति को सखा परत विपति में चीन्ह । सज्जन कंचन कसनन को विपति क कसौटी कीन्ह । ५ = ७६ ॥

विषय—नीति एव भक्ति विषयक दोहे ।

संख्या ३२५ एक्स[२]. विजय दोहावली, रचयिता—गोस्वामी तुलसीदास (राजापुर बाँदा), पत्र—३६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३५ = १५७८ ई०, लिपिकाल—सं० १८३२ = १७७५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० मन्नीलाल-धनखेड़ा, डाकघर—मुरादाबाद, उन्नाव ।

आदि—श्रीगणेशायनमः अथ विजय दोहावली लिख्यते ॥ दोहा ॥ सोरह से पैंतीस को है संवत सुख रास । राम विजय दोहावली वरणी तुलसी दास ॥ विजय राम दोहावली जानै जे नर कोइ । गुप्त अर्थ रामायणै प्रगट कीजिये सोइ ॥ सो०-मूक होइ वाचाल पंगु चढ़ै गिरिवर गहन । दो०-नहीं मेघ के कंठ गति नहीं अरुन के पाय । वास करैं आकास मैं रवि रथ चढ़िये धाइ ॥ चौ०-राम रूप दुइ ईश उपाधी अकथ अनादि सो समुझहिं साधी ॥ दो०-नाम जपत शंकर शेष न पायो पार । सत्र प्रकार सो अकथ है महिमा अगम अपार ॥ चौ०-भाव कुभाव अनथ आलसहू । राम जयति मंगल दस दिसहू ॥ दो०-भाव सहित संकर जप्यो कहि कुभाव मुनि वाल । कुंभ करण आलस जप्यो अनप जप्यो दसभाल ॥ छंद-दुइ दंडि भरि ब्रह्मांड भीतर काम कृत कौतुक अयं । दो०-उभय घरी सुरलोक में ब्रह्म लोक द्वै दंड । रह्यो भुवन में दिवस निसि व्यापो मदन प्रचंड ॥

अंत—चौ०-उलटा नाम जपत जग जाना वाल्मीक भये ब्रह्म समाना ॥ दो०-एक वीस वध पाप यहि मरी तुम्हारी देह। महि मारौ तो ना मरै तुलसी चरन सनेह ॥१॥ पांच भुजा कैलास को द्वै पठये रघुवीर । दस दस हृदै गुपाल को पांच सिन्धु के तीर ॥ २ चोला छाड्यो स्वयंभु मनु देवन धरो उठाइ । जबहिं निपाते लंक पति दसरथ पहिरे जाइ ॥ रही दरश की लालसा राम लखण सिय नेह । आये रण की भूमि में स्वयंभू मन की देह ॥ तुलसी कहत पुकारि कै चित सुनि हित कर भान । हेम दान गज दान ते वड़ो दान सन मान ॥ तुलसी या संसार में पंच रतन हैं सार । साधु मिलन अरु हरि भजन दया दान उपकार । और वरार्तो से लगै जहँ लग नाम अपार । दुलहा दुलही से लगै एक रकार मकार ॥ तुलसी रा के कहत ही निकसै सबै विकार । फिर आवन को कहत देत मकार विकार ॥ इति श्री गोसाईं तुलसी दास कृत विजय दोहावली संपूर्ण समाप्तम लिखतं राम चरन सुत शिवनाथ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा संवत् १८५२ वि०

विषय—इस ग्रन्थ में रामायण के गूढ़ अर्थों की व्याख्या दोहों में की गई है ।

संख्या ३२५ वाई[२]. हनुमान चालीसा, रचयिता—तुलसीदास (राजापुर-काशी), कागज—बाँसी, पत्र—१४, आकार—३½ × १½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२६ = १८६९ ई०, प्राप्तिस्थान—श्यामसुन्दर जी अग्रवाल, डाकघर—जगनेर, तहसील—खेरागढ़, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गुरू चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार । वरणों रघुवर विमल यश, जो दायक फल चार । बुद्धि हीन तन जानिकै, सुमिरौं पवन कुमार । बल बुधि बिद्या

देहु मोहि हरहु कलेश विकार ॥ चौपाई ॥ जै हनुमान ज्ञान गुण सागर, जै कपीश तिहु लोक उजागर । राम दूत अतुलित वल धामा । अंजनि पुत्र पवन सुत नामा । महावली विक्रम वजरंगी । कुमति निवारि सुमति के संगी । कंचन वरणि विराजै सुवेशा । कानन कुंडल कुंचित केशा । हाथ वज्र अरु ध्वजा विराजे । कांधे मूँज जनेऊ राजे । संकर सुमन केसरी नंदन । तेज प्रताप महा जग वन्दन । विद्या वान गुणी अति चातुर । राम काज करिवो को आतुर ।

अन्त—जै जै जै हनुमान गुंसाई, कृपा करहु गुरूदेव की नाईं । यह शत वार पाठ कर सोई । छूटे वंध महा सुख होई । जो इह पढ़े हनुमान चालीसा । होहि सिद्ध साखी गौरीशा । तुलसी दास सदा हरि चेरा । कीजै दास हृदय मंह डेरा । दोहा—पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रुप । राम लषण सीता सहित, हृदय वसहु सुर भूप । इति श्री तुलसीदास कृत हनुमान चालीसा सम्पूर्ण । मिती चैत सुदी ११ मंगलवार सम्वत् १९२६ शिवलाल ने लिखी ।

विषय—हनुमान जी की स्तुति ।

संख्या ३२५ जेड[२]. हनुमान वाहुक, रचयिता—तुलसीदास, पत्र—११, आकार—९ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४३, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ठाकुर शिवलाल सिंह पिपरौली, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामचन्द्र हनुमान वाँहुक लिप्यते ॥ दोहा ॥ श्री रघुवीरहि प्रनाम करि । सहित लषन हनुमान । रापि हृदय विस्वास द्रिढ़ । पुनि पुनि करौ प्रणाम ॥ भौम वार आदिक पढ़ें । जो नर सहित सनेह । रुज संकट व्यापै नहीं । वाढ़ै सुख धान म्रेह ॥ सुचिस प्रेम पाढिहहि नर । निरुज गात वल धाम । होइहि रत तुलसि सदा । जस पैहे सव ठाम ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ श्री राम कृपाल विराजत मध्य महा छवि धाम गहे धनु वाना । वापादि सामहि जा सुठि सुन्दरी दक्षिन वोर लषन वलवाना ॥ चामर पानि लिये प्रभु के ढिग सोभित वायुतने हनुमाना । तुलसी हृदे धरु ध्यान सदा भ्रम संसै त्यागि कहीं परमाना ॥ १ ॥

अन्त—वाहु पीर को नाम पुनि दहन भोज कीन काज औ वीर गहिये जागी नाहीं वन्याए रन छोड़ी कहु टाठ को । मन राज कत अकाज भाव आजु लगी चाहो चीर चारु पैन लाहो टुक टीक को ॥ मोही ऐसो क्रूर की क्रीपा करो क्रीपानिधान पाद्वो नाम पार सही लाल ची वराट की । तुलसी की वनै राम रावरे वनाए नातौ धोवी केसो कुकुर न घर को न घाटको ॥ ५६ ॥ असन वसन हीन चीपे चीपाद लीन हीन दीन दुवरो कन हाए हाए को । तुलसी अनाथ के सनाथ कीन्हे रघुनाथ भावो पावो फल सीधी आपने सुभाए को ॥ नीच एह नीच्च पद पाये भए आए जे वात जोहरी भजन वचन मन काए को । ताते अत देपी अत घोर वर तोरमा सु पुटी नीक सत लीन राम राए को ॥ ५७ ॥ राम नाम मातु पीतु साहेव समरथ हीत आस राम नाम को भरोस राम नाम को । प्रेम राम नाम को सुनेम राम नाम को सो जानों राम नाम भाग दाही नेन वाम को ॥ स्वारस कल मारथ सो राम नाम राज

वीना तुलसी न कोऊ काहु काम को। राम की सप तीस ख मेरे राम नाम काम तरु काम धेनु मो सो छीनु छाम को ॥ ५८ ॥ देव सरीसे इत्री पुरारी हीते हरौ धाम राम......

विषय—श्री हनुमान जी से तुलसी दास की बाहु पीड़ा दूर कर देने की प्रार्थना।

संख्या ३२५ ए³. विराग सन्दीपनी, रचयिता—गोसाईं तुलसीदास, पत्र—१२, आकार—८½ × ५½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० वैजनाथ ब्रह्मभट्ट-अमौसी, डाकघर—बिजनौर, जिला—लखनऊ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ विराग संदीपनी ॥ गोसाईं तुलसी दास कृत लिष्यते ॥ दोहा ॥ राम वाम दिसि जानकी। लखन दाहिनी ओर। ध्यान सकल कल्यान मय। सुर सरि तुलसी तोर ॥ तुलसी मिटे न मोह तम। किये कोटि गुन ग्राम। हृदय कमल फूले नहीं। विन रवि कुल रवि राम ॥ सुनत लखत विन नैन श्रुति। विन रसना रस लेत। वास लेहे विन नासिका। परसत विनहि निकेत। सोरठा ॥ अज अद्वैत अनाम। अलख रूप गुन परम हित। माया पति सोइ राम। दास हेत नरतन धरो ॥ दोहा ॥ तुलसी यह तन तवा है। तपै सदा त्रै ताप। साँति होइ तव साँति। पद पावै राम प्रताप ॥ तुलसी यह तन खेत है। मन वच कर्म किसान। पाप पुन्य दो वीज हैं। वुवै सो लुनै किसान ॥

अन्त—सोई पंडित सोई पारखी। सोई दाता सोई दानि। तुलसी जाके चित्त में। राग दोष की हानि ॥ चौपाई ॥ राग दोष की अग्नि बुझानी। सकल कामना वास विकानी। जवते साँति वसी उर आई। तवते उर फिरी राम दुहाई ॥ दोहा ॥ फिरी दुहाई राम की। गे कामादिक भागि। तुलसी ज्यों रवि के उदय। तुरत जाइ तम भाजि ॥ यह विराग संदीपनी। सुजन सुचित सुनि लेउ। अन उचित अक्षर विचारिकै। सुधारि तहँ देउ ॥ इति विराग संदीपनी महा मोह विध्वंसनी सति पद तुलसी दास कृत समाप्तम् ॥सुभ मस्तु॥ श्री राम श्रीराम श्री राम राम राम ॥

विषय—पृ० १ से १२ तक—मंगला चरण, भगवान का स्वरूप, मानव काया एवं वाणी आदि तथा साधु का वर्णन। साधुओं के लिये आदेश, संतों के लक्षण आदि का वर्णन। शांति के लाभ तथा राम के प्रभाव का वर्णन।

संख्या ३२५ बी³. जानकी मंगल, रचयिता—तुलसी दास, पत्र—४, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०२ = १७४५ ई०, प्राप्तिस्थान—पं० रामभंजन, छितौनी, डाकघर—मेढ़ी, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्रीगणेशायनमः अथ जानकी मंगल लिख्यते ॥ चौ०-प्रथम सुमिरि गुरु देव गणेश मनाइये। शारद को शिर नाइ राम गुण गाइये ॥ प्रभु गुण सिन्धु समान कौन वरणन करै। जैसी जाकी बुद्धि वैसी हृदै धरै ॥ तव वोले ऋषिराज अवधपुर जाइये। राम भये औतार जज्ञ हित लाइये ॥ करि सरजू अस्नान नृपति घर आइये। बहु विधि पूजा करि सिंहासन वैठाइये ॥ छंद-कहत तप धन अवध पति दोऊ कुंअर हमको दीजिये।

जग्य पूरण होइ हमरो विप्र की जस लीजिये ॥ चौ०—मुनि ऋषि के वचन नृप सोच कीनो घनी । कीजै कौन उपाय बात गाढ़ी बनी ॥ तब बोले गुरु वशिष्ट नृपति सोच नहिं कीजिये । ये पूरण औतार जग्य हित दीजिये । छंद—प्रेम को उपकार कर नृप सुतन दोउ गोदी लिये । महा मुनि की भेंट लै श्री राम अरु लछमन दिये ॥ चौ०—रतन जड़ित पट बांध धनुष लियो हाथ सों । कीन्हीं बहुत प्रणम पिता अरु मात सों ॥ नयन रहे जल पूरि पिता अरु मात के । इनको नीके राखिये पुत्र जानि अनाथ के ॥

अंत—कहत सिया सुनु तात धनुष पण जिन करौं । नातर तजि हौं प्राण कि जेह्र घर में वरौं । करुणा सागर राम जानकी जानिये । पीतांबर कटि बांधि धनुष लै तानिये ॥ छंद—जै जै कार भई तिहुं लोक भूप सबै मुरझाइये । श्री रामचन्द्र मुख निरखि सिय ने सुमन माल पहिराइये ॥ चौ०—सोहत सीता राम कंचन मंडप तरे । सिर सोने को मुकुट मञ्जु मुक्ता गरे ॥ राजत अंग कपोल कि मुक्ता मोल के । सुन्दर लोचन लोल कमल जनु भोर के ॥ सुरंग चूनरी निकट पीत पट छा रही । मनु अरुण घनश्याम चपलता ह्वै रही ॥ यह भूषण प्रतिबिंब राम छवि उर धरे । मनो यमुना जल मध्य दीप दीपक बरे ॥ राम भुजा के निकट सिया भुज यों लसै । मरकत मणि के खंभ मनों कंचन कसै ॥ राम भये तन गोर सिया भई सांवरी । सादर सो सुधि भंत वधू भई बावरी ॥ राम भये घनश्याम सिया भई दामिनी । मुनि भये चन्द्र चकोर चकित भईं भामिनी ॥ पुस्पन बरसत मेघ मुनी सब धर हरैं । होत जनक पुर ब्याह राम भाँवर फिरैं ॥ राम सिया को ध्यान सदा संकर धरैं । महा रूप निहार इन्द्र पूजा करैं ॥ सुर नर मुनि आनंद सुमन बरषा करैं । तुलसी सीता राम सहित उर आनिये । राम भजन बिनु जन्म सु मिथ्या जानिये ॥ इति श्री जानकी मंगल तुलसी दास कृत संपूर्ण समाप्तः संवत् १८०२ वि०

विषय—श्री राम जानकी का विवाह वर्णन ।

संख्या ३२५ सी[3]. जानकी मंगल, रचयिता—तुलसीदास, पत्र—८, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—=, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० बिहारीलाल, डाकघर—नौगावाँ, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ श्री जानकी मंगल प्रारम्भः ॥ छन्द ॥ प्रथम सुमिरि गुरुदेव गणेश मनाइये । सारद को शिर नाइ राम गुण गाइये ॥ प्रभु गुण सिन्धु समान कौन वर्णन करै ॥ जैसी जाकी बुद्धि तैसी हृदै धरै ॥ तब बोले ऋषि राज अवध पुर आइये । राम भये अवतार यज्ञ हित लाइये ॥ करि सरयू अस्नान नृपति ग्रह आइये । बहु विधि पूजा करि सिंहासन बैठाइये ॥ छन्द ॥ कहत तपोधन अवध पति दोउ कुँवर हमको दीजिये । यज्ञ पूरण होय हमरो विप्र को यश लीजिये ॥

अन्त—सोहत सीताराम कंचन मंडप तरे । शिर सोने को मुकुट मंजु मुक्ता गरे ॥ राजत अमल कपोल विमुक्ता मोल के । सुन्दर लोचन लोल कमल जनु भोर के ॥ सुरंग चूनरी निपट पीत पट छा रही । मानों अरुण घनश्याम चपलता है रही ॥ यह भूषण प्रतिबिंब रमा छवि उर धरैं । मानो यमुना जल मध्य दीप दीवक बरैं ॥ राम भुजा के निकट

सिया भुज यों लसे । मरकत मणि के खंभ मनौ कंचन कसे ॥ राम भये तन गौर सिया भई साँवरी । सादर सो बुधि वंत वधू भई बावरी ॥ राम भये घन श्याम सिया भई दामिनी । मुनि भये चन्द्र चकोर चकृत भई भामिनी ॥ पुष्पन वर्षत मेघ मुनि सब जय जय करैं ॥ होत जनकपुर व्याह राम भामरि परैं । राम सिया को ध्यान सदा संकर धरैं ॥ ब्रह्मा रुप निहारि इन्द्र पूजा करैं ॥ सुर नर मुनि आनन्द सुमन वर्षा करैं ॥ ब्रह्मा आदि सब देव मुदित जय जय करै ॥ तुलसी सीता राम सहित उर आनिये ॥ राम भजनु बिनु जन्म सुमिथ्या जानिये ॥ इति श्री जानकी मंगल सम्पूर्णम् ॥

विषय— विश्वामित्र के यज्ञ से लेकर राम विवाह तक की राम कथा का संक्षिप्त वर्णन ॥

संख्या ३२५ डी^{3}. रामाज्ञा प्रश्नावली, रचयिता—गोस्वामी तुलसीदास (राजापुर, बाँदा), पत्र—२४, आकार—८×६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)— ४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—९८०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०३ = १७४६ ई०, प्राप्तिस्थान--पं० रामभजन शास्त्री-भीखमपुर कलाँ, डाकघर—जलेसर, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री जानकी वल्लभो विजयते ॥ अथ रामाज्ञा प्रश्नावली लिख्यते ॥ अध्याय १दोहा—बानि विनायक अंब रवि गुरु हर रमा रमेश । सुमिरि करहु सब काज सुभ मंगल देस विदेश ॥ १ ॥ गुरु सरसइ सिन्धुर बदन शशि सुरसरि सुर गाइ । सुमिरि चलहु मग मुदित मन होइहि सुकृत सहाइ ॥ २ ॥ गिरा गौरि गुरु गणप हर मंगल मंगल मूल । सुमिरत करतल सिद्धि सब होइ ईश अनुकूल ॥ ३ ॥ भरत भारती रिपु दमन गुरु गणेश बुधवार । सुमिरत सुलभ सुधर्म फल विद्या विनय विचार ॥ ४ ॥ सुर गुरु गुरु

१	२	३	४	५	६	७
२४	२५	२६	२७	२८	२९	८
२३	४०	४१	४२	४३	३०	९
२२	३९	४८	४९	४४	३१	१०
२१	३८	४७	४६	४५	३२	११
२०	३७	३६	३५	३४	३३	१२
१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३

दोहा चक्र

सिप राम गण राउ गिरा उर आनि। जो कछु करिय सो होइ शुभ खुलहिं सु मंगल खानि ॥ ५ ॥ इस प्रश्न के जानने की यह रीति है कि प्रथम अध्याय चक्र में अंगुली रखे पश्चात दोहा के चंक के अंक पर उंगली रखे तत्पश्चात् जिस अध्याय का जो दोहा हो उसको पढ़कर अपना हानि लाभ समझ ले

अन्त—दोहा—राम विरह दसरथ दुखित कहत केकयी काक। कुसमय जाय उपाय सत केवल करम विपाक ॥ ४० लपण राम सिय वसहिं वन। विरह विकल पुर लोग। समय सकुन कह करहु सव। जानव जोग विजोग ॥ ४१ ॥ तुलसी लाइ रसाल तरु निज कर सींचत सीय। कृपी सफल भल शकुन शुभ समय सकल कमनीय ॥ ४२ ॥ सुदिन सांझ पोथी नेवति पूजि पभात सप्रेम। सकुन विचारव चारु मति सादर सत्य सनेम ॥४३॥ मुनि गनि दिन गनि धातु गनि। दोहा देपि विचारि। देश करम करता वचन शकुन समय अनुहारि ॥ ४४ ॥ शकुन सत्य शशि नयन गुण। अवधि अवध अधिवान। होइ सुफल शुभ जासु जसि प्रीति प्रतीति प्रमान ॥ ४५ ॥ गुरु गणेश हर गौरि शिव राम लपण हनुमान। तुलसी सादर सुमिरि सब शकुन विचार निधान ॥४६॥ हनूमान सानुज भरत राम शीय उर आनि। लपण सुमिरि तुलसी कहव शकुन विचारि वखानि ॥ ४७ ॥ जो जेहि काजहिं अनुहरै सो दोहा जव होय। शकुन समय सव सत्य सव कहव राम गति जोय ॥ ४८ ॥ गुण विश्वास विचित्र मणि शकुन मनोहर हार। तुलसी रघुवर भगत उर विलसत विमल विचार ॥ ४९ ॥ इति श्री गो० तुलसीदास कृत रामाज्ञा प्रश्नावली संपूर्ण समाप्तः लिखा अनंदीलाल कन्नौजिया मा० जेठ वदी तेरस संवत् १८०३ वि०

विषय—इस रामाज्ञा प्रश्नावली द्वारा शुभ कार्य की जानकारी प्राप्त की जाती है।

संख्या ३२५ ई[3]. तुलसी सगुनावली, रचयिता—गोस्वामी तुलसी दास (राजापुर बाँदा), पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०८ = १७५१ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला कन्नो मल—विसवाँ, डाकघर—बिसवाँ, जिला—अलीगढ़, (उत्तर प्रदेश)।

१	२	३	४
०	७	६	५

१	२	३	४	५	६	७
२४	२५	२६	२७	२८	२९	८
२३	४०	४१	४२	४३	३०	९
२२	३९	४८	४९	४४	३१	१०
२१	३८	४७	४६	४५	३२	११
२०	३७	३६	३५	३४	३३	१२
१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३

आदि—श्रीगणेशायनमः अथ तुलसी सगुनावली लिख्यते ॥ इस प्रश्न के जानने की रीति यह है कि ऊपर के ७ अंक के अध्याय चक्र में प्रथम उंगली रखे पुनः दोहे के चक्र में उंगली रखे पश्चात अपना प्रश्न समझ हानि लाभ समझ ले ॥ अध्याय १ ॥ वाणि विनायक अंब रवि गुरु हर रमा रमेश । सुमिरि करहु सब काज शुभ मंगल देश विदेश ॥ १ ॥ गुरु सर सइ सिंधुर बदन शशि सुर सरि सुर गाइ । सुमिरि चलहु मग मुदित मन होइहि सुकृत सहाइ ॥ २ ॥ गिरा गौरि गुरु गणप हर मंगल मंगल मूल । सुमिरत करतल सिद्धि सब होइ ईश अनुकूल ॥ ३ ॥

अंत—राम विरह दसरथ दुखित कहत केकयी काक । कुसमय जाय उपाय सब केवल करम विपाक ॥ ४० लपन राम सिय वसहिं बन विरह विकल पुर लोग । समय सकुन कह करहु सब जानव जोग विजोग ॥ ४१ ॥ तुलसी लाइ रसाल तरु निज कर सींचे सीय । कृषी सकल भल शकुन शुभ समय सकल कमनीय ॥ ४२ ॥ सुदिन सांझ पोथी नेवति पूजि प्रभात सप्रेम । सकुन विचारब चारु मति सादर सत्य सनेम ॥ ४३ ॥ मुनि गनि दिन गनि धातु गनि दोहा देखि विचार । देश करम करता वचन शकुन समय अनुहारि ॥ ४४ ॥ शकुन सत्य शशि नयन गुण अवध अवधि अधवान । होइ सुफल शुभ जासु जसि प्रीति प्रतीति प्रमान ॥ ४५ ॥ गुरु गणेश हरि गौरि शिय राम लखन हनुमान । तुलसी सादर सुमिरि सब सगुन विचार निधान ॥ ४६ ॥ हनूमान सानुज भरत राम सीय उर आनि । लखन सुमिरि तुलसी कहत शगुन विचारि वखानि ॥ ४७ ॥ जो जेहि काजहिं अनुहरै सो दोहा जव होइ । शगुन समय शुभ सत्य सब कहव राम गति गोइ ॥ ४८ ॥ गुण विश्वास विचित्र मणि शगुन मनोहर हार । तुलसी रघुवर भगत उर विलसत विमल विचार ॥ ४९ ॥ इति श्री गोसाईं तुलसी दास कृत तुलसी सगुनावली संपूर्ण समाप्तः लिखा राम मोहन वैश्य जेष्ठ शुक्ल दसमी संवत् १८०८ वि०

विषय—शुभाशुभ फल वर्णन ।

संख्या ३२५ एफ³. रामाज्ञा प्रश्न, रचयिता—गोस्वामी तुलसीदास (राजापुर), पत्र—४३, आकार—५¾ × ३¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८४, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५६ = १७९९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर ज्वाला सिंह जी जमींदार—रामपुर चन्द्रसेनी, डाकघर—होलीपुरा, जिला—आगरा ।

आदि—श्रीगनेशाय नमः ॥ श्रीरामाय नमः ॥ अथ प्रथम सर्ग की प्रथम दहाई लिष्यते ॥ वानी विनाय अंब रवि, हर गुरु रमा रमेश । सुमिरि करहु सब काज शुभ, मंगल देश विदेश ॥ १ ॥ गुरु सरसुति सिन्धुर वदन, शशि सुरसरि सुर गाय । सुमिरि करहु मंगल मुदित, होइ शुभ सुकृत सहाय ॥ २ ॥ गिरा गवरि गुर गनप हर, मंगल मंगल मूल ॥ सुमिरत तुलसी सिद्ध जग होइ ईश अनुकूल ॥ ३ ॥ भरत भाय रिपुदमन गुरु गनेश बुध वार । सुमिरत सुलभ सुधर्म फल, विद्या विनय विचार ॥ ४ ॥ सुर गुरु सीता राम गुन, गाव गिरा उर आनि । जो कछु करिअ सो होइ शुभ, खुलै सुमंगल खानि ॥ ५ ॥

अंत—सगुन सत्य शशि नयन गुन, अवधि अधिक नव धाम। होइ सुफल सुभ पास वसु, प्रीति प्रतीति प्रमान ॥ ३ ॥ गुरु गणेश हर गौरि सिव, राम लपन हनुमान। तुलसी सादर सुमिर सब, सगुन विचारि विधान ॥ ४ ॥ हनूमान सानुज भरत, राम सिया उर आनि। लपन सुमिरि तुलसी कहत, सगुन विचार वपानि ॥ ५ ॥ जो जिहि काजै अनुसरैं, सो दोहा जहि होइ। सगुन समै सब सत्य फल, कहत राम गति जोइ ॥ ६ ॥ गुन विस्वास विचित्र मन, सगुन मनोहर दास। तुलसी रघुवर भक्ति उर, जानव बिमल विचास ॥ ७ ॥ इति सप्तम सर्ग सम्पूर्णम् इति श्री स्वामी तुलसीदास कृत रामाज्ञा प्रश्न समाप्तं चैत्र वदी १ सम्वत् १८५६ लिपितं वाहि मध्ये—मिश्र मोहनलाला स्वयम् हेत ॥ श्री श्री श्री।

१	२	३	४	५	६	७
२	३	४	५	६	७	१
३	४	५	६	७	१	२
४	५	६	७	१	२	३
५	६	७	१	२	३	४
६	७	१	२	३	४	५
७	१	२	३	४	५	६

विषय—प्रश्नों के शुभा शुभ फलों का वर्णन।

संख्या ३२५ जी[3]. चेतावनी दोहा, रचयिता—तुलसीदास, पत्र—१४, आकार—७ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८९८ = १८४१ ई०, प्राप्तिस्थान—अध्यापक राम प्रसाद कोटला, जिला—आगरा।

आदि—अथ चेतावन दोहा लिख्यते। सांचौं तन मासो रहै कहा ऊंच कहां नीच। तुलसी मन को थिर करै संत गगन के वीच ॥ माया मोह विहाइ सब करै न दूसर काम। तुलसी सांचो है भजो केवल सीताराम ॥ उदासीन जगतै है रहै नाम लौ लाइ। लाख बात की बात यह तुलसी कही बजाइ ॥ विचरै जाहि जगत में लगै न रंच कलेस। जैसी वारज पत्र की लगै न जल को रैस। वारिज पत्र समान गत रहै संत सम भाइ। यह सुभाय जानै लखै लछिनरि ये वताय ॥ जाकी लौ लागी रहै रात दिना भरपूर रहै अखंड समाधि में सदा काल तै दूर। जगन कलेवा काल को ताकौ लखै न कोई। तुलसी ताको सो लखै जो करनी दिठ होई। जन्म मरन या जगत में ये भाई दुख होई। तुलसी मारण कठिन है रोकि सकै नहि कोई ॥ संतन को या धर्म है संत वचन लघु भापि। मिथ्या वचन न भापिये जामैं जावे साधि।

अन्त—कहा कहौं कलिकाय के संत भये वलवंत श्रुति मारण खंडन करै जौ लंका हनिवंत। संत भये वहु भांति के संत भये वहु भाइ तुलसी संतुन संत को दीनो नाम न साइ। सेठ कहे सब जगत को भिछक भये निदान घर घर कर ओदत फिरैं करत सदा

कल्यान। भयो पेट को पेट की फिरै रात दिन लोग लोभ लपेटे फिरत है कहो कहा का जोग। ब्रह्मा विष्णु महेश के आदि रुप को रुप तिनको लखकर जानिये सब पोचन के भूप। कमल नाथ के म'''जब जाइ होइ आसीन सब आकर डंटि जस हैं आपु आपु में लीन। अंस पौधि सब आपनो आपु २ आधार। रूप परस्पर ये कहैं भौंटिये सब विस्तार। जो आखिनि नहीं देखिये निराढुंद सो जानि निराधार ताहि कहत तुलसी संत बखानि। नाम न काहू को जगत आंखिन परै लखाइ ताहि निरुपम कहत हैं निराधार ठहराइ इति श्री चेतावनी दोहा सम्पूर्णम्।

विषय—राम नाम गुण गान, संसार में विरक्त बनकर रहने का उपदेश, सत्संगति की महिमा, कमल दल के तुल्य जगत नदी में संतों का निवास कथन। असंतों की अवहेलना, उनका माया में भ्रमना, ब्रह्म को चेतन और माया को जड़ बतलाना, अंत में मायावी धूर्त कलियुगी निर्गुणोंपासकों की कड़ी समालोचना की गई है। वे लोग संसार को धोका दे उदर पूर्ति के लिये ढोंग रचा करते हैं। जो गुण कलयुगी साधुओं के होते हैं उनका विशद हृदयहारी विवेचन किया गया है।

संख्या ३२५ एच^3. हनुमान त्रिभंगी छन्द, रचयिता—तुलसी दास (राजापुर), पत्र—३, आकार—६ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० भागवत प्रसाद जी, ग्राम—टेहू, डाकघर—अहारन, जिला—आगरा।

आदि—ॐ नमः शसि करांसनाभ्यां वीर हनुमते नमः। जै २ वजरंगि जालम जंगि जुध अड़वंगि जो धारे। श्री रघुवर के पायक कवि दल नायक संत सहायक सुखकारं। वजरंगि वंका निडर निसंका लंका गढ़ पर ललकारे। सिंधु उलंघं कर्म फलंगं मस्त मलंगं भयकारं। १। जै जै०। भार अटारं भाग विदारं अक्ष उमारं सिर डारं। दुर्जन भुज भंजन गर्वित गंजन जन मन रंजन प्रसि पारं। पिसुन पहारं असुर संहारं सिय दुख परं सुखकारं। २। जे जै०। अंजनिनंदन दैत्य निकंदन श्री रघुनंदन मतसारं दानव दलनं, अरि मद मलनं जुध न टलने जै कारं। महा अपर वल पर वल दलनं मज खल खंडन नप गदारं।३। जै जे० भम्य सभूरं साय ससूरं चुगल न चूरं छलकारं। पैठ पातालं दहित तकारं महिरावन मर्दन गहि कर गरदन दुर्जन दरदन दगदारं। ४। जै जै०। घम घमसानं रावण रामं वहिते घानं वलकारं। अनकरि पट्टा देहि भुपट्टा गहि गल पट्टा पच्छारं॥ कडछं कडछं दिग्मे कडछं तइमें तडछं तलवारं॥ ५॥ जै० जै०॥

अन्त—प्रवल पहारं उचक उपारं अरि सिर डारं अहकारं। दृष्टि करालं कंग्र जारं वल कारे। अतिसें.. ...गुरू जे चढ़ि गढ़ वुरु जं गल्लारं। ६। जे जै०। लोहि लड़ाकं असुर अडाकं कउकारे। जलट उलट्टे धरन भुपट्टे करन कपट्टे छिछि डारं द्रोना गिरि आनं अति अभिमानं गेंद समानं करधारं। ७। असुर अडाकं मारुत डाकं दुष्ट भयंकर खल न खयंकर होहर संकर अवतारं। पद्म अंडारं मध्यदि धारं दहि दल्लारं खगदारे॥ जन भगवाने दरस प्रमानं सरन जानकी गिरतारं।८। जे जै०। इति श्री तुलसीदास कृत हनुमान त्रिभंगि छंद संपूर्ण। ६।

विषय – हनुमान की प्रशंसा का अष्टक।

संख्या ३२५ आई³. रामचन्द्र की बारहमासी, रचयिता—तुलसीदास, पत्र—१६, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० रामजती-बड़ागाँव, डाकघर—कमतरी, जिला—आगरा।

आदि – श्री गणेशाय नमः। दोहा॥ वचन केकई मानिके। दशरथ अज्ञा कीन्ह। राम चले वनवास को। राज भरत को दीन्ह॥ १॥ छन्द॥ चैत हरना लख्यो प्रभुजी। चाप लै ठाड़े भये। तुम रहो लछमन जानकी डिंग। आप मारन को गये॥ वन बीच हरना फिरत भागत। लखतु अरु छुप जात है। धनु बाण ताने फिरत रघुपति। छली छल करि जात है॥ दोहा॥ कहत बात श्री जानकी। सुनि लछिमन वीर। हिरना ने कुछ छल कियो। देखो तुम रण धीर॥ २॥

अंत—दोहा—फेर कहो दस चार में। जो कोऊ ठौर पाऊँ। राम आनि करि कहत हौं। सिया हारि घर जाऊँ॥ छंद॥ फागुन में सब फाग खेलें। लंक में खल भल परे। इंद्रजित बलवान जोधा। राम के सन्मुख लरै। तब वीर लक्ष्मण तीर तानें। सामुहें बरनी भई। दसकंध को सुत मंद मति। को रोंपि शक्ति हनि दई॥ हनूमान लाये जब सजीवन। भ्रात को जीवन भयो। वह शक्ति सुरपुर को सिधारी। सोस को ढूंढत भयो॥ भुज बीस चोला गर्ज के मैं अबै सबको मारिहौं। हनुमान अंगद नील नल। सब छार मैं करि डारिहौं॥ रघुवीर ने तब तीर तान्यों। छांड़ रावण पे दयो। श्री राम बाण प्रतापसों वह असुर सुर पुर को गयो॥ १२॥ दोहा॥ असुर मारि सीता लई। राज विभीषण दीन। तुलसी दास हरहू चले। राज अवधपुर कीन॥ इति रामचन्द्र की बारह मासी सम्पूर्णम्॥

विषय—बारहमासी के रूप में राम का संक्षिप्त चरित्र वर्णन।

संख्या ३२५ जे³. रामजी स्तोत्र, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री अद्वैतचरण जी, गोस्वामी घेरा श्री राधारमण—वृन्दावन।

आदि—श्री सीताराम जी सहाय। श्री राम जी स्तोत्र लिषते। रघुकुल मंडल कुल पतक। काम धेनु सुषसीर। नाम लेत थर हरे। श्री जै जे जै रघुवीर। तात वचन हित कारनै। धेरी धनक कर धीर। वनु विचरत करुनाइ मइ। श्री जै जै जै रघुवीर। चित्रकूट के घाट पै। भई संतन की भीर। दइ भरथकूपावरी। श्री जै जै जै रघुवीर। ३ श्री राम वचन असे कहै। सुनो भरत बलवीर। परजाकूं सुष दीजियो। जै जे जे श्री रघुवीर। ४ भरत चलें हैं अवध कूं नैन न आये नीर। ये दरसन कब पाइहो श्री जै जे जै रघुवीर। ५ हम आवें रिपु जिति कै सुर नर मुनि की भीर।। वेगि अवधि कूं आइहे श्री जे जे जे रघुवीर। ६। गंधि व्याध गनिका तिरी। साषि भरत है धीर। पतित बहोत पावन करै। श्री जै जै जै रघुवीर।

अन्त—नव छावरि अधिकी बनी मोती माणिक हीर। बंदीजन अब भरा भरा। श्री जै जै जै रघुबीर। २०। सिंघासन बैठे श्री राम जी। भइ वीर मानन भीर। जल सुत बरषै पहौ पघन श्री जै जै जै रघुबीर। २१। अरगंजन आनंद घन। सकल धरम मन धीर। तुलसी के हिरदै बसौ श्री जै जै जै रघुबीर। २२। इति श्री रामजी स्तोत्र संपूर्णं॥ ० ॥

विषय—श्री रामचंद्र की प्रशंसा।

संख्या ३२५ के³. त्रिदेव स्तुति, रचयिता—तुलसीदास, पत्र—८, आकार—४ × २½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० दुर्गाप्रसाद जी फतेहाबाद, जिला—आगरा।

आदि—श्री। जै जै। भागीरथ नंदनी मुनि चंप चकोर चंदनी नरनाग विबुध वंदनी जै जन्हु बालिका॥ विष्णु पद सरोज जासु ईस सीस पर विभासि त्रिपथगा पुन्य पासि पाप छालिका॥ विमल विपुल रहसि वारि सीतल त्रय ताप हारि भ्रमर वर विहंग तरत्त रंग मालिका॥ पुरजन पूज्यो पहार सोभित ससि धवल धार भंजन भवभार भक्त कला कथालिका॥ निज तट वासी विहंग जल थल चर पसु पतंग कीट जटिल ताप ससव सरिस पालिका॥ तुलसी तत्र तार तीर सुमिरत रघुवंस वीर विचरन्ति भति देहु मो महिसि कालिका॥ राग धनाक्षरी। जे जिलक्ष्मणानंत भगवंत भूधर भुजगराज भुवनेस भू भार हारी। प्रलय पावक महा ज्वाल माला ववन सत्रन सताप लीला वतारी॥ जयति दासरथि सम रथ सुमित्रा स्वस्त्र भुवन विख्यात राम भरथ वंधो चारु चंपक वरन वसन भूपन धरन दिव्यतर भव्य लावन्य सिंधु जयति गाधेय गोतम जनक सुख विस्व कंटक कुटिल कोटि हंता।

अन्त—राग वसंत। देखो देखो बन्यो आजु उमाकंत मानो देखन तुहीन आई रितु वसंत। मनो तन दुति चंपक कुसुम माला वर वसन नील नौ तन तयाल फल कदलि जंघ पद कमल लाल सूचत करिके हरि गति मराल। भुवन प्रसून वह विविध रंग नुपुर किंकिन कलख विहंग। कर नवल कुल पल्लव रसाल श्री फल कुल कंचकी लता जाल। आनन सरोज कच मधुप गुंज लोचन विसाल नवनील कंज। पिक वचन चरित वर वरहि कीर सित सुवन हास लीला समीर। कह तुलसीदास सुनौ सिव सुजान जीत्यौ रति पंच-वान। इति त्रिदेव स्तुति सम्पूर्णम्।

विषय—तीनों देवों (ब्रह्मा, विष्णु और महादेव) तथा गंगा की स्तुति।

संख्या ३२५ एल³. ज्ञानदीपक, रचयिता—श्री तुलसीदास जी, पत्र—५४, आकार ५ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०७½, रूप—अति प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८९८ = १८४१ ई०, प्राप्तिस्थान—रामप्रसाद जी कोटला, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः। भवानी संकरौ वंदे श्रद्धा विश्वास रुपिणौ याभ्यां विना न·········· ··। जा सुमिरत सिधि होय गणनायक करिवर वदन। करौ अनुग्रह सोइ बुद्धि दायक सुभ गुन सदन। अथ ग्यान दीपका लिख्यते। सुमिरत चरण गणेस के प्रथमति

शीश नवाइ । बुद्धि सिद्धि जाते लहीं भाषा ग्रन्थ बनाइ । चौपाई । नहिं उपजै नहिं होइ विनासा तिहु लोक जाकर परकासा । जाकी लीला जगत भुलाना । नमो २ ता प्रभु भगवाना सारद सुक नारदि सुमिरि व्यास जनके पांई । ग्यान दीपका रचत हौं राम चरन चितलाइ । चौपइ । सुनि २ विविध संस्कृत बानी भाषा कीन चहौं रूच मानी । हरिहि मिलन के मारग पांच । देवतारे प्रघट बुध सांच । दोहा । ज्ञान दीपिका बरन हौं भाषत जोति ही पांच जुक्ति जुक्ति सो ग्रंथ करि कथा पुरा तन सांच । अर्थ ग्यान दीपक यथा । दोहा ।—बुध पांच बाती उक्ति तत्व तेल की धार वक्ष अग्नि कर लेखिये ग्यान दीप उजयारि । संवत सोलह सो गये एकतीस अधिक सुविचार शुक्र पक्ष अषाढ़ की दोज पुष्प गुरुवार । तादिन उपजी दीपिका पांच जोग परवान धर्म ग्यान अरु ब्रह्म पुनि प्रतिम रुप विग्यान । ज्ञान सातु भयै स्तवाग्रह वासिनो सुख दोगहित वैरागनि । दुरै टरत सब लोग । अथ धर्म मार्ग ।—

अन्त—भूमि हसै जब भूप मिरैं जुगमी खुहरी तन लोह छपैयो कातु हसै जब ग्यान तजै जति अनारि हसै निजु नाहर कैयो । लछि हसै धन दूर धरै धनु कर्म हसै अभिमान चढ़ैयो । राखि रहै न रहै न चलै तुलसी जग ये नर नाच नचैयो । ४३ दोहा । मन मैं करि अब सोच कहु कैसो परपै भार । यह विचार लिनि राख उर हेत देत करतार । सुमति भूमि और कुमति धनु सरकरनी सब मोर......किकै करक काम तन चोर । यह विचारि नहिं आपु सिर राखि असफल अभार । करम ओट दुख सुख जगत सब भुगवै करतार बुध हीन जड़ता अधिक नहि ३ पाई की मोर । राम साधु को विरद लखि की तुहन की और यह विचार नहि मानिये अब गुनता मति हीन । बिरद सम अनुसर निरखि छिपा कहु पर बीन । ४८ सोरठा । मति वध कुल देस जप तप विप्रा वेद विधि रहै न इनको रहेस । नारि सुमुखे लगाइये । प्रीत हिये दिठ जानि विष नाना कच रग हैति ती टिकावै आनि जिति वसै मनु कामना ॥ इति श्री ज्ञान दीपिकायां श्री स्वामि तुलसीदास कृत श्रुति पुरान उक्ति सिद्धान्त मर्ण वर्नन नाम पंचमासे समुल्लेस समाप्तम—

विषय—धर्माधर्म विवेचन सन्मार्ग गामी होने का उपदेश, ब्रह्म-माया के लक्षण, उनका उदाहरण सहित विस्तृत प्रतिपादन, सृष्टि उत्पत्ति का क्रम, प्रकृति से महत्, महत् से अहंकार, पंच तन्मात्रायें और इन्द्रियों की उत्पत्ति । पंच महाभूतों का वर्णन, अंत में सगुणोपासना के लिये अवतार सिद्धि

संख्या ३२९ एस[3]. ज्ञानदीपिका, रचयिता—तुलसीदास, पत्र—२६, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७००, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ = १५७४ ई०, लिपिकाल—सं० १८५४ = १७९७ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा रामदास-सीतामऊ, डाकघर—मल्लावां, जिला—हरदोई ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ ज्ञान दीपिका तुलसीदास कृत लिख्यते ॥ दोहा ॥ सुमिरत चरन गनेस कं प्रथमहि सीस नवाय ॥ बुद्धि सिद्धि जाते लहै भाषा ग्रन्थ बनाय ॥ चौ० ॥ नहि उपजै नहिं होइ विनास । तिहू लोक जाकर परकास ॥ जाकी लीला जगत

लुभान । नमो नमो ता प्रभु भगवान ॥ दोहा ॥ सारद सुक सारद सुमिरि व्यास जनक के पाइ । ज्ञान दीपिका रचत हौं । राम चरन चितलाइ ॥ चौ० ॥ सुनि सुनि विविध संस्कृत वानी । भाषा कीनि चहौं रचिमानी ॥ हरिहर मिलन के मारग पांच । देहि वताइ प्रगट वुध सांच ॥ दो० ॥ ज्ञान दीपिका वरनि हौं भापत जो तेहि पांच । उक्ति जुक्ति सन ग्रन्थ करि कथा पुरातम सांच ॥ बुद्धि पत्र बाती युक्ति तत्व तेल की धार । ब्रह्म अग्नि करि लेसिये ज्ञान दीप उजियारि ॥ संवत सोरह सत गये येकतिस अधिक विचार । सुक्ल पक्ष असाढ़ की दूजै पुष्य गुरुवार ॥ ता दिन उपजी दीपिका पांचा जो परवान । धर्म ज्ञान अरु ब्रह्म पुनि प्रभु सरुप विज्ञान ॥

अन्त—अति विसार सर्व साख्र मत लघु करि भाखौं पंथ । तुलसिदास टीका करत कोटिन वांटत ग्रन्थ ॥ जथा बुद्धि मत मैं करयौ ज्ञान दीप अनुहार । चूक परी जित होइ कछु छमियो कविहु विचार ॥ भूमि हंसै जब भूप भिरै जग मीचु हंसै तन लोभ छिपाये ॥ काम हंसै जब जूंव तजै तिय नारि हंसै निज नादर काये ॥ लक्ष हंसै खनि दूरि धरै धनु कर्म हंसै अभिमान वढ़ाये ॥ राखै रहैं न चलै पठये तुलसी जगये नर नाच नचाये ॥ मनमें करिय न छोभ कछु केतौ घरै अभार । यह विचारि जिनु राखि सिर देत हरत करतार ॥ सुमति भूमि अरु कुमति धन सर करनी सव मोट । भोग निसाना येक करि करत काम तन चोट ॥ यह विचार नहिं आयु सिर राखी सकरम अभार । कर्म ओट दुख सुख जगत सव भुगवत करतार ॥ बुद्धि हीन जड़ता अधिक करयौ पाप की मोट । राम साधु की विरद सम टिक्यो दुहूं की ओट ॥ यह विचार नहिं मांनिये औगुनता मति हीन । विरद समुझि अरु सरन लखि क्षमा करहु सु प्रवीन ॥ मीत वन्धु कुल देश जप तप विद्या गंद विधि रहै न इनकर लेस नारि जो मुखै लगाइये । प्रीति हिये दृढ़ जानि विधना ताके कर जहै ॥ तिनहिं टिकावत आनि । जितहिं वसहिं मन कामना । इति भाषा तुलसी कृत ज्ञान दीपिका संपूर्ण समाप्तः लिपतं गंगा नारायण कायस्थ संवत् १८५४ वि० राम राम राम

विषय—ज्ञानोपदेश ।

संख्या ३२६ ए. घटरामायण (पूर्वार्द्ध), रचयिता—तुलसी साहब (हाथरस, अलीगढ़), पत्र—२००, आकार—१२ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७१२५, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९११ = १८५४ ई०, प्राप्तिस्थान - पं० गोकुल शास्त्री—बाजनगर, डाकघर—सहावर, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ घटरामायण पूर्वार्द्ध लिख्यते ॥ सोरठा—श्रुति बुंद सिन्धु मिलाय आप अधर चढ़ि चाखिया । भाषा भोर भियान भेद भान गुरु श्रुति लखा ॥ छंद—सत सुरति समझि सिहार साधो निरखि नित नैनन रहौं । पुनि धधक धीर गंभीर मुरली मरम मन मारग गहौं ॥ सम सील लील अपील पेलैं खेल खुलि खुलि लखि परैं ॥ नित नेम प्रेम पियार पिउ कर सुरति सजि पल पल भरैं ॥ धरि गगण डोरि अपोर परखें पकरि पट पिउ पिउ करैं ॥ सर साधि सुन्न सुधारि जानौं ध्यान धरि जब थुर थुआ ॥

जहँ रूप रेप न भेप काया। मन न माया तन जुभा ॥ अली श्रंत मूल अतूल कंवला फूल फिरि फिरि धरि धसँ ॥ तुलसी तारि निहारि सूरति सैल सत मत मन वसँ ॥

मध्य—तुलसी साहेब जाति के दक्षिणी ब्राह्मण थे। इनको साहेब जी भी कहते थे। राजा पूना के युवराज यानी बड़े बेटे थे। इनका ब्याह हो गया था। जब गद्दी पर बैठने का एक दिन बाकी रहा तो भाग गये थे। बरसों जंगलों पहाड़ों में रहे फिर अलीगढ़ के हाथरस में ठहरे यहां पूरा सत संग किया घरसे निकलने के ४२ वर्ष पीछे अपने भाई बाजी राव से संवत् १८०६ में बिठूर में आकर मिले। इन तुलसी साहेब का पहिले श्याम राव नाम था। इनके लिये कहा जाता है कि गो० तुलसीदास का जन्म है।

अंत—फूल दास उवाच—बार बार चरनन सिरनाई करि हैं तुलसी मोर सहाई ॥ अब तो पौढ़ पौढ़ कर पकड़ा तुलसी चरनन में मन जकड़ा ॥ और कहुं मोहिं बोध न आवै जो कोइ कोटि कोटि समुझावै ॥ समुझि परा सब बात विधाना तुलसी बिन सूझै नहिं आना ॥ दोहा—फूलदास विनती करैं पुनि पुनि सरन तुम्हार। मैं अचेत चेतन कियो तुलसि उतार्यो पार ॥ वचन तुलसी साहेब—फूलदास सज्जन बड़े तुम चित मति बुधि सार। संत चरन अब मन बस्यो पहुँचो संत संग पार ॥ चौ०—फूलदास तुम साधु सुजाना। तुमरी बुधि निरमल परमाना ॥ दिन दोपहर भयो मध्याना। अब परसादी करो समाना आटा चून घना कर होइ। करौ प्रसाद भाजी संग सोई ॥ घीव न पास न पैसा होई। नोन मिरच चटनी संग सोई ॥ किरपा कर परसाद बनाई। पुनि बाको सब भोग लगाई ॥ फूलदास उवाचः—हम नहिं अपने हाथ बनें हैं। सीत उचिष्ट चरना मृत पैं हैं ॥ तुलसी उठि परसाद बनाया। भया प्रसाद साध सब आया ॥ सब साधू मिलि भोग लगाई। भोजन करि आसन पर आई ॥ फूलदास बंदगी सिर नाई। सीस टेक कर परसे पांई ॥ हाथ जोड़ कर विनती लाई। स्वामी मोहिं भव पार लगाई ॥ हमहूं दीन दंडवत कीन्हा। शीश नवाय चरन पुनि लीन्हा ॥ इति श्री घट रामायण तुलसी साहेब कृत सपूर्ण लिखत मयादास मठ कुटी जलेसर सवत् १९११ वि० ॥

विषय—ग्रन्थ में तुलसी साहब हाथरस वाले का जीवन चरित्र और संतों के जीवन लीला एवं नाना प्रकार के जीव, पिंड आदि का भेद भाव वर्णन है।

संख्या ३२६ बी. घटरामायण उत्तरार्द्ध, रचयिता—तुलसी साहब (हाथरस, अलीगढ़), पत्र—१९६, आकार—१२×८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०००, पद्य गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९११=१८५४, प्राप्तिस्थान—पं० गोकुल शास्त्री—राजनगर, डाकघर—सहावार, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सतगुरु नमः ॥ अथ घटरामायण उत्तरार्द्ध सतगुरु तुलसी साहेब कृत लिख्यते ॥ रेवतीदास चरित्र ॥ वचन तुलसी साहेब ॥ चौ०—फूलदास संग रही एक साधा। मन सुख और मान मद साता ॥ रेवतीदास ताहि कर नामा। फूलदास देखि घबराना ॥ पुनि बोला मन में रिसियाना। स्वामी अब चलिये अस्थाना ॥ फूलदास कहै आज न आवौं। तुम सब मिलि अस्थाने जावौ ॥ हमहूं भोर भिहाने अइहैं।

राति यही चरनन में रहि हैं ॥ तिन पुनि तरक कीन्ह एक वाता। हमहूं रहिहों इनके साथा ॥ हमको सूझि परा अस लेखा। तुम्हरी मति बुधि अचरज देखा ॥ फूलदास - गुसा खाइ बोले अस वानी। लै उतार दीनी सोइ सेली ॥ फूलदास दीनी तेहि हाथा। रेवती सीस नवायो माथा ॥ गल विच डारि महंती दीन्हा। सुख पालै वकसीसी कीन्हा ॥ तुमतो करौ महंती जाई। अव हम नहिं अस्थाने आई ॥

अंत—अली आत्मरूपं अकासं सरूपं, रवी भास भूपं अनंतं अनूपं ॥ निराकार कारं मई जोति जारं। लई विश्व भारं सो सारं समारं ॥ सरगुन श्यामन्नारं सो सृष्टी सवांरं। रची खांनि चारं सो भूमी अपारं। अली आस अंडा जमा जीव पिंडा। सो तुलसी अखंडा वैराटं ब्रह्मंडं ॥ गुना गोह तीतं बनावास कीतं। पके पांचपीतं सो चीतं अनीतं ॥ वैराट धारं सो वेदौन पारं। जो नेतौ पुकारं सो वारं न पारं ॥ निरवानवानं जगाजोग ध्यानं। पगा प्रेम पालं सो कालं करालं ॥ तुलसी तत्त धोयं गठे गांठि गोयं परे पांच मोयं जो सोयं सो खोयं ॥ सोरठा—श्रोतक तरक विचार समझि संघ साधू लखै। तकै सुरति धरि ध्यान सो समान पद को चखै ॥ घट रामायण अंत समझि सूर संतहि लखै। झखै भेष औ पंथ थकै जगत भौ मिल रहा ॥ दोहा—पंडित ज्ञानी भेप जो नहिं पावै काइ अंत। ये अनंत रस अगम हैं। लखै सूर कोइ संत ॥ सो०—तुलसी मैं मति हीन संत चीन्ह मोको दई। भई निरत पद लीन होइ अधीन अंदर मई ॥ इति श्री वटरामायण उत्तरार्द्ध संपूर्ण समाप्तः लिखतं मायादास ब्रह्मकुटी जलेसर सं० १९११ वि० राम राम राम।

विषय—रेवतीदास चरित्र चरचा के साथ फूलदास अलीमियां का संवाद। भेद रामायन रचने का, संवाद गुसाईं प्रिय लाला भेद राम। तुलसी साहव के पूर्व जन्मा का वृत्तान्त आदि वर्णन।

संख्या ३२६ सी. संवाद फूलदास कवीर पंथी और तुलसी साहव, रचयिता—तुलसीसाहब (हाथरस, अलीगढ़), पत्र—७२, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५१०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९१९ = १८६२ ई०, प्राप्तिस्थान—बाबा शिवगिरि—राजारामपुर, डाकघर—सहावर, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नमः संवाद फूल दास कवीर पंथी और तुलसी साहेब का लिख्यते ॥ फूल दास ॥ चौपाई ॥ फूलदास पंडित से बोलेउ। तुलसीवचन विधी विधि खोलेउ पंडित—माना महंत से कहै बुझाई। फूल दास सुनियो चित लाई ॥ तुलसी गत मत कहौं विचारी। उनसम मता नहीं संसारी ॥ साध संत मत भये अनेका। तुलसी सम हम एक न देखा ॥ मत तुम्हंरा हमहूं पुनि जाना। तुलसी मता अगाध वखाना ॥ सुनि महंत तन तमक समानी। को कवीर सम करत वखानी ॥ खुद कवीर अविगति के आया। पुर इन पात वो भया अकाया ॥ सत्त पुरुष की आपस लाये। जग में जीव नेक मुकताये ॥ उनसम मता न जानौं भाई। इइहै यह कोई साध गुसाईं ॥ हम पूछैं सौई भेद वतावै। फूलदास के मन जव आवै ॥ जो कवीर मुख अपने भापा। सो विधि देखों अपनी आंखा ॥ सत्त लोक की करै बखाना। पूरा साधु ताहि हम जाना ॥

अन्त—चौ०—तब तुलसी चेले इहि भांता। हिरदे भेद सुनाऊं बाता॥ हम सत संगति बहु विधि कीन्हा। संत चरन में रहे अधीना॥ दीन विधी औ गुरु मत लीन्हा। संत चरन घट अंतर चीन्हा॥ सूरत लीन अधर रस माती। का पूंछौ हिरदे की बाती॥ सत संगत विधि सिगरी जाना। सूरति सैलि फोरि असमाना॥ दस दिस पार सार सब जाना। नौलख कंवल पार पहिचाना॥ मान सरोवर बेनी तीरा। जल प्रयाग बहे निरमल नीरा॥ तामें नहाइ चढ़े असमाना। सत गुरु चौथे पार ठिकाना॥ निसि दिन सैल सुरति से खेला। सुरतिनाम करै निस दिन मेला॥ अष्ट कंवल दल गगन समाई। सहस केवल पर तिहि कीराही॥ ताके परे चार दल लीना। दुइ दल जाइ दोइ में कीन्हा। एहि विधि रहे दिवस अरु राती। जानें कोइ न इनकी बाती॥ कोउ न भेद जान घर माई। यह रहे सूरति अधर लगाई॥ ऐसे कई दिवस गये बीती। ता पीछे भई ऐसी रीती॥ चलि हिरदे पुनि घर को जाई। घर में तिरिया पुत्र रहाई॥ राति वास घर अपने कीना। भोजन करि पुनि कीने सैना॥ पुनि पुनि निसा गई अधराती। चढ़ि गई सुरति सैल रस माती। तासमय तिरिया कीन उपाया। रोग सोग अपना दुख गाया॥ जब हिरदे मन कीन विचारा। ये सब साल जाल है न्यारा॥ अस मन में कछु भई उदासी। पुनि तबसे रहे हमरे पासी॥ गुरुवा वाच—तुलसी स्वामी विधी बताई। हिरदे को कछु अगम सुनाई॥ हिरदे पार सार गति पाई। तुलसी स्वामी अगम लखाई॥ इति श्री फूल दास कबीर पंथी और सतगुरु तुलसी साहेब का संवाद संपूर्ण समाप्तः लिखा रामबली स्व पठनार्थ॥ संवत् १९१९ वि०॥

विषय—फूलदास कबीर पंथी और तुलसी साहेब का संवाद। इसमें कबीर पंथी मत का खंडन करना और फूलदास का तुलसी साहब का मत ग्रहण करना आदि वर्णन है।

संख्या ३२६ डी. संवाद पलटूराम नानकपंथी और तुलसी साहब, रचयिता—तुलसी साहब (हाथरस, अलीगढ़), पत्र—३५, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२५ खंडित, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—बाबा शिवगिरि-राजारामपुर, डाकघर—सहावर, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री सतगुरु नमः अथ पलक राम नानक पंथी और सतगुरु तुलसी साहेब का संम्वाद लिख्यते॥ पलक राम एक नानक पंथी। रहे कासी में वहां महंती॥ कहते बाह गुरू मुख आये। मन अति लीन दीन अति गाये॥ पैर परन हमहुं पुनि कीना। उठि कर पकरि चरन को लीना। चाल विधी जप साधन राही। जस जस देखी उनके माहीं॥ अंतर दया भाव दिल दीना। महिमा संत अंत नहिं चीन्हा॥ संत प्रीति मन पूरा भावै। सुनै कोऊ संत आप उठि धावै॥ तन मन रहत संत सरनाई। मन उमगे मुख संत बड़ाई॥ सील सुभाव नीच मनमाहीं। मिले संत चरनन लिपटाई॥ निर्मल बुद्धि ज्ञान रस राता। मन सब चरन प्रीति हित बाता॥ हमें देखि हिय हरष समानी। चरन परे दुरे नैनन पानी॥ जस कछु रीति साध मत माहीं। तस तस तुलसी उनमें पाई॥ करता पुरुष नाम सत माने। निरंकार जोती सोइ जानै॥

अन्त—वचन तुलसी साहेब॥ चौपाई॥ कहे तुलसी सुन हिरदे बाता। कासी नगर काल मत राता॥ कासी कर्म जीव अज्ञाना। जुग चारौं जग जीव भुलाना॥ कासी जगत

धाम बतलावै । मरे जीव पुनि भूत कहावै ॥ सिव की पुरी नाम जग भाषा । उनके भूत प्रेत की साखा ॥ सिव भये भूत प्रेत के राजा । मरै जीव होइ भूत समाजा ॥ ये काशी मिलि भूत वड़ाई । सिव कैलास भूत मैं भाई ॥ तासे जड़मत जीवन लीना । जड़ संग जिव को भया अधीना ॥ घट रामायन सुनि भौ सोरा । कासी नगर भया वन घोरा ॥ पंथ भेप जग लड़न खखारा । घट रामायन परी पुकारा ॥ अस सुनि सोर भयो जग मांहीं । सहर मुलक सव गवईं गाईं ॥ भेप पंथ में अचरज भइया । दरसन भेप लपन को अइया ॥ दोहा—जगत सोर सव भेप में नगर गांव सव ठौर । भेप फकीरी पंथ के लख जांचत सत मोर ॥ इति श्री पलक राम नानक पंथी और तुलसी साहेव का संवाद संपूर्ण समाप्तः ॥ राम राम सदासहाई राम राम ॥

विपय—पलक राम नानक पंथी और तुलसी साहव का संवाद ॥

संख्या ३२७ ए. वावा वाजिद की अरल, रचयिता—वावा वाजिद, कागज—स्यालकोटी, पत्र—७, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६४, रूप - प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री रामचन्द्र सैनी—बेलनगंज, जिला—आगरा ।

आदि—सत साहिव सत सुकृत कवीर ॥ अथ वावा जी की अरल लिख्यते ॥ विरह अंग ॥ सूरक वल वाजोद कहौ क्यो मेल है ॥ जरै दिवस अरू रैंन कराही तेल है ॥ अपनीं ही सव खेट दोस कहा राम को । हरि हानीच ऊँच सो वंधै कहौ किहि काम को ॥ वाजीद विहद विपन्य कहौ कहा उनको ॥ सरक माण की प्रति करी पीय मुक्त को ॥ पहिले अपणी वोर तीर को ताँह गई ॥ हरि हांपी वै मारै दूरि जगत सव जाँर गई ॥ २ ॥

अन्त—दर गर वढ़ी दिवांनन आवै टेह जी ॥ जो सिर कर वस देइ तो कीजे नेरजी॥ दरते दूरिन होइ दरद को हरि के । हरि हो वाण राइ जगदीस निवाजौ केरिके ॥ १३३ ॥ इति श्री वावा जीदजी की अरल संपूरण ॥

विपय—निम्नलिखित अंगों में भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन—१) विरह को अंग, २) सुमरण को अंग । ३) करल को अंग । ४) उपदेश को अंग । ५ कृपन को अंग । ६) चाणक को अंग । ७) विश्वास को अंग । ८) साध को अंग । ९) पतिव्रता को अंग ।

संख्या ३२७ बी. वाजिद की साखी, रचयिता—वाजिद (दादू पंथी), पत्र—२८, आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६, खंडित, रूप—नवीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० शिवनन्दन गोसाईंगंज, डाकघर—जयगंज, जिला—अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश) ।

आदि—अथ सुमिरण को अंग लिख्यतेः—हाथी साथी कौन के काको गढ़ अरु गांव । वाकी विरिया आइहै जव आड़ो हरि नांव ॥ तिल पल पहर घरी घरी गुनि गोविन्द के गाइ । काल जाल ते निकसि है सुमिरन सेरी पाइ ॥ राम नाम इक छांड़ि कै कहे न दूजे वैन । लोह तिरत सग काठके प्रपत देखहु नैन ॥ पांइ पसारिन सोइ है चित कीजै कछु चेत । वाजीद पतित पावन भये राम नाम के लेत ॥ सति गहे ते गति है यामें मीन न-

सेप। नाव ह्वै जब लगि जगि निस्तरै जोगी जुग में सीप ॥ भव सागर डूबे नहीं तुरत लगावे तीर। वाजीद राम को नाम यहु जग जहाज है चीर ॥ सुर नर मुनि जोगी जती सिव विरंचि कह सेप। वाजीद उपासी ब्रह्मा के मुक्ति भये सब देपि ॥ वाजीद राम के नाव को विसरि जाइ जिन सूर। छाया रापै हस्त की पाप ताप है दूर ॥

अन्त—सिप की थोरी बात थी गुरुहि दिवाई गालि। स्वांग सांस को काछि करि चल्यो भेड़ की लार ॥ निकसि न जाईं प्राण ये पिये बिन रहे सुक्रित। तन रबाव मम मोरना विरह बजावत नित ॥ लोही मांस सरीर में रती न छाड़यो राद। अब सो विरहा स्यान है चावत सूके हाठ ॥ देह गेह गुन वीसरी नेह लात के लागि। लोही पानी ह्वै गया जरत विरह की आगि ॥ विधना मेरी बुधि हरी धरी सीस तर वांहि ॥ नारि गवांरि न समझाई भये कौन के मांह ॥ वाजीद वाम आपनो रह्यो विरानो हांइ। याही दरद जरद भयो विथा न बूझत कोइ ॥ भरने को ललच्या बहुत बालम बिछुरत तोहि। विरह अगिन तन पर जरै जमहु छुवत नहिं मोहिं ॥ काहे न वरप बुझावई महा तपत है देह। वरपा चूक न चाहिये इक बालम अरु मेह ॥ देहु मौज दीदार की लेहु न याको अंत। चात्रग बोले चहुं दिसा निसा अंधेरी कंत ॥ क्रिपा करौ वाजीद सों धरहु सीस पर पाऊं। पलक पाट दोऊ खोलि कै नैनों भीतर आव ॥

विषय—उपदेश वर्णन।

संख्या २२८ ए. महाभारत कथा, रचयिता—विष्णुदास, पत्र—५३, आकार—११¾ × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१४६, रूप—प्राचीन लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री चौबे श्रीकृष्ण जी, डाकघर—पिनाहट, जिला—आगरा।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ श्री महाभारत कथा लिख्यते विनसै धर्म किये पापंडू, विनसै नारि गेह पर चंडू। विनसै रांड़ पढ़ाये पांड़े, विनसै खेलै ज्वारी डांड़े ॥ १ ॥ विनसै नीच तनैं उपजारू विनसै सूत पुराने हारू। विनसै माँगनौं जरै जु लाजे, विनसै जूझ होय विन साजे ॥ २ ॥ विनसै रोगी कुपथ जो करई, विनसै घर होतैं इन धरमी। विनसै राजा मंत्र जू हीनू, विनसै नरकु कहा विनु हीनू ॥ ३ ॥ विनसै मंदिर रावर पासा, विनसै काज पराई आसा ॥ विनसै विद्या कुसिपि पढ़ाई, विनसै सुन्दरि पर घर जाई ॥४॥ विनसै अति गति कीनै ब्याहू, विनसै अति लोभी नर नाहू। विनसै घृत हीनें जु अंगारू, विनसै मन्दी चरै जटारू ॥ ५ ॥ विनसै सोनूं लोह चढ़ायें, विनसै सेव करै अनभायें। विनसै तिरिया पुरिष उदासी, विनसै मनहि हँसै विन हांसी ॥ ६ ॥ विनसै रूप जो नदी किनारे, विनसै घर जु चलै अनुसारे। विनसै पेती आरसु कीजे, विनसै पुस्तक पानी भींजे ॥ ७ ॥ विनसै करनु कहि जे कामूं, विनसै लोभ ब्योहेरै दामूं। विनसै देह जो राचै वेस्या, विनसै नेह मित्र परदेसा ॥ ८ ॥ विनसै पोपर जामें काई, विनसै बूढ़ो ब्याहै नई विनसै कन्या हर हर हसयी। विनसै सुन्दरि पर घर वसयी। ९ विनसै विप्र विन पट कर्मा, विनसै चोर प्रजा सै मर्मा ॥ विनसै पुत्र जो वाप लड़ायें, विनसै सेवक करि मन भा ॥ १० ॥ विनसै यज्ञ कोध जिहिं कीजे, विनसै दान सेव करि दीजे। इतो कपटु काहे कों

कीजैं, जौ पंडो वन वास न दीजै ॥ ११ ॥ अहंकार तैं होई अकाजू, ऐसैं जाय तुम्हारो राजू। हीनि कीनिहूँ है दिन मारी, जम दीसै नर वदन पसारी ॥ १२ ॥

अन्त—किरपा कान्ह भयो आनंद, जो पोपन समर्थ गो व्यंद ॥ हरि हर करत पाप सव गयो, अमर पुरी पाप सव गयो ॥ २९४ ॥ अविचल चौक जु उत्तिम थाम, न, निश्चल वास पाँडवन जान यकादशी सहस जो करै, अस्त्रमेध यज्ञ उचरै ॥ २९५ ॥ तीरथ सकल करै अस्नाना, पंडौ चरित सुनै दै काना। वरिप दिवस हरिवंस पुरान, गऊ कोटि विप्रन कहँ दान ॥ २९६ ॥ जो फल मकर माघ स्नाना, जो फल पांडव सुनत पुराना। गया क्षेत्र पिंड जो भरै, सूर्य पर्व गंगा जी करै ॥२९७॥ पंडौ चरित जो मन दै सुनै। नासै पाप विष्णु कवि भनै। एक चित्त सुनै दै कान। ते पावैं अमरापुर थान ॥ २९८ ॥ पंडौ कथा सुनै दै दानु, तिनकौं होय प्रयागै थानु। स्वर्गा रोहण मन दै सुनै, नासैं पाप विष्णु कवि भनै ॥ २९९ ॥ राम कृष्ण लेपक को लिपी, वाँचै सुणै सो होसी सुपी। श्री वल्लभ राम नाम गुण गाई। तिनकें भक्ति सुदृढ़ ठहराई ॥ ३०० ॥ इति श्री महा भारते विष्णुदास कवि विरचिते स्वर्गारोहण सम्पूर्णम् ॥ श्री मस्तु। श्री रस्तु शुभं भूयात् श्री रामजी

विषय—

संख्या २२८ वी. रुक्मिणी मंगल, रचयिता गोसाईं विष्णुदास जी (वृन्दावन) कागज–देसी, पत्र–४८, आकार—८×७ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, रूप - कुछ पुराना, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—अद्वैतचरण जी गोस्वामी घेरा राधारमण जी वृन्दावन।

आदि—श्री राधा रमणे जयति। श्री गणेशाय नमः। अथ रुक्मणी मंगल लिख्यते। दोहा। रिधि सिधि सरवु सकल विधि नव निधि दे गुरू ज्ञान। गति मति सति पति पाईयत गनपति को धर ध्यान। जाके चरण प्रणाम ते दुख-मुख परत न डिठ। ता गज मुख करन की सरन आवरे डिठ। २। राग गौरी। प्रथमहि गुरू के चरन वंदन गौरी पुत्र मनाइये। आदि हे विष्णु जुगादि हे वृह्मा संकर ध्यान लगाईये। देवी पूजत कर वर मांगत वुधि

और ज्ञान दिवाइये। ताते अति सुप होत हैं अवे आनंद मंगल गाईये । ३ । गौरी लक्ष्मी सुरसती तिनको सिस निवाइये। चंद सुरज दोऊ पद रज से मस्तक तिलक चढ़ाइये। विष्मू दास प्रभु प्रिया प्रीतम को रुक्मिन मंगल गाइये।

अन्त—विलपद—एसे में भीसम के मन्दिर नारद मुनि गुरु आये नर नारी सपताल अकास। पर समरन करत तिहोरी रोस निपूरन परगास। घट घट व्यापक अंतर जामी सव सप रासी विष्मू। दारुक मन अपनाई जनम जनम की दास ॥ इति ॥ श्री रुक्मिण मंगल संपूरण।

विषय—गणेश वंदना तथा रुक्मिणी की कथा।

संख्या ३२८ सी. स्वर्गारोहण पर्व, रचयिता कवि विष्णु दास, पत्र—१८, आकार—१० × ६३ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४८, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९११ = १८५४ ई०, प्राप्तिस्थान—मिट्ठूलालजी अध्यापक, ग्राम—गढ़वार, डाकघर—पारना, जिला—आगरा।

आदि—श्रीगणेशायन्मः। श्रीसरसुती पर्म गुरुभ्यांनमः। अथ सुर्गा रोहिणी लेपते। असलोका। नारायणं नमस्कृत्यं, नरं चैव नरोत्तमं। देवीं सरसती व्यासं, ततो जय मुदीरयेत्। सौपादास रथोराम, सौपा राज जुधिष्ठिर। सौष्य कर्नं महात्यागी सौष्य भीम महावलं। दोहा। श्री गणपति भंदन करो, बुधि अगास करि जोई, विघन हरन सब सिधि करि सादर प्रनवो सोई। चौपाई। गवरी नंदन सुमति है तारा सुमिरत सिधि होई गुरु प्यारा। भारथ भाष्यो तोहि पसाई। और सारद के लागों पांई। ओर सहज नाथ जोगी वर रूप्उ, श्रुगा रोहिणी विस्ता कहेउँ। विष्णु नाथ कवि विने कराई। देहु बुधि जो कथा कहाई। राति घोस जो भारथ सुने, नसै पापु विरग कवि भनें, ज्यौं पांडव गरि गएहि वारें कही कथा गुरु वचन विचारें।

अंत—वर्ष दिवस हरिवंस सुनाई, देहि कादि विप्रन को जाई। जो फलु पांडव सुनत पुराना, गया मधि पंडाजु भरांना। और अचमन पौहो करजु कराई। सुर्ज पर्व कुर षेत अन्हाई। ताको पापु सैल सम जाई, सुर्गा रोहनि मनु देसु नई। नसै पापु कृष्ण कवि भने, वित उनमान दांन जुवने। ताकौ फलु गंगा अस्नाना, पांडव चरित सुनत दे काना। अन धन पुत्र वहुत फल पावै, सुर्गा रोहनि सुनैं सुनावै। इति श्री महा भारथे पुरांण भापा कवि विष्णुदास कृति स्वर्गा रोहनि संपूर्ण। शुभं। भवेत्। श्री संवतु १९११ मासोतमेमासे वैसाप मासे कृष्ण पक्षे पुनि तिथि ५ चंद्रवासरे। लिपी लाला हर्दवदास रैहेत कसवा मलापुर। मोकाम मोदिप तौली। जैसी प्रति देवी तैसी प्रति लिपी। मम दोपा न दीजे मोहि। जथा लोक घटी वढ़ी होइ तथा लीजो सम्हारि। स्वर्गा रोहनि श्री प्रति श्री गंगा जी सहाइ श्री जगन्नाथ।

विषय—पांडवों के स्वर्गारोहण का वर्णन।

संख्या ३२८ डी. स्वर्गारोहण, रचयिता—विष्णुदास, पत्र—२७, आकार—१२ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, खंडित, रूप—प्राचीन,

लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८०६ = १७४९ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर शिवदानसिंह हिरदैपुर, डाकघर—बधारी कलाँ, जिला—एटा (उत्तर प्रदेश)।

आदि—श्रीगणेशाय नमः अथ स्वर्गारोहण विष्णुदासकृत लिख्यते ॥ दोहा—गौरी नंदन सुमति दै गन नायक वरदान। स्वर्गारोहणि ग्रन्थ को वरणों तत्व वखान ॥ चौ०—गनपति सुमति देहु आचारा। सुमिरत सिद्धि सौं होइ अपारा ॥ भारथ भाषौं तोहि पसाई। अरु शारद के लागौ पाई ॥ अरु जो सहज नाथ वरु लहऊ। स्वर्गा रोहणि विस्तार कहिहूं ॥ विष्णुदास कवि विनय कराई। देहु बुद्धि जो कथा कहाई ॥ रात दिवस जो भारत सुनई। नाशै पाप विशुन कवि भनई ॥ यों पांडव गरि गये वारे। कही कथा गुरु वचन विचारे ॥ दल कुरु पेतहिं भारत कियो। कौरव मारि राज सव लियो ॥ जदुकुल में भये धर्म नरेशा। गयो द्वापर कलि भयो प्रवेशा ॥ सुनहु भीम कहे धर्म नरेशा। वार बार सुनि ले उपदेशा ॥ अव यह राज तात तुम लेहू। कै भइया अर्जुन को देऊ ॥ राज सकल अरु यह संसारा। मैं छाड़यो गह कहै भुवारा ॥ वन्धु चारते लये बुलाई। तिनसों कही वात यह राई ॥

अंत—कंचनपुरी सुउत्तम ठाऊँ। तहाँ वसै पांडव की राऊ ॥ एक दसि वृत यों मन धरई। अरु जो अश्वमेध मुनि करई ॥ तीरथ सकल करैं असनाना। सो फल पंडव सुनत पुराना ॥ वर्ष द्योस हरि वंस सुनाई। देइ कोटि विप्रन कौ गाई ॥ गया मध्य जो पिंड भराई। अरु पुहकर आचमन कराई ॥ सूर्य पर्व कुरु पेत अन्हाई। ताको पाप सैल सम जाई ॥ स्वर्गा रोहन मनदै सुनई। नासै पाप विष्णु कवि भनई ॥ वित उनमान देइ जो दाना। ताको फल गंगा असनाना ॥ यह स्वर्गारोहण की कथा। पढ़त सुनत फल पावै जथा ॥ पांडव चरित जो सुनै सुनावै। अन्य धन्य पुत्रहि फल पावै ॥ दोहा—स्वर्गा रोहणि की कथा। पढ़ै सुनै जो कोइ। अष्टा दशौ पुराण की। ताहि महा फल होइ ॥ इति श्री महाभारते स्वर्गा रोहणि पर्व संपूर्ण समाप्तः लिखा मंसाराम पंडित सारस्वत ब्राह्मण आगरा मध्ये गुड़ की मंडी मिती भादौं वदी चौथ संवत १८०६ वि० शिवशंकर की जै राम राम सीताराम की जे श्री गुरूजी महाराज की जे वोलो ॥

विषय—पांडवों के स्वर्गा रोहण का वर्णन।

संख्या ३२८ ई. स्वर्गारोहण, रचयिता—विष्णुदास जी, पत्र—२४, आकार—७ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८३६, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८९१ = १८३४ ई०, प्राप्तिस्थान—लाला शंकरलाल पटवारी-मझोला, डाकघर—दरियावगंज, जिला—एटा।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः अथ स्वर्गा रोहण लिख्यते ॥ दोहरा—गवरी नंदन सुमति दै गन नायक बरदान। स्वर्गारोहण ग्रन्थ की बरणौं तत्व बषान ॥ चौ०—गणपति सुमति देह आचारा। सुमिरत सिद्धि सो होइ अपारा ॥ भारत भाषौ तोहि पसाई। अरु शारद के लागौ पाई ॥ अरु जो सहज नाथ वर लहहूं। स्वर्गा रोहण विस्तार कहहूं ॥ विष्णुदास कवि विनय कराई। देहु बुद्धि जो कथा कहाई ॥ रात

दिवस जो भारथ सुनई। नाशै पाप विष्णु कवि भनई ॥ यों पांडव गरि गये हेयारे। कही कथा गुरुवचन विचारै ॥ दल कुरु खेतहि भारत कियो। कौरव मारि राज सब लियो ॥ जदुकुल में भये धर्म नरेशा। गयो द्वापर कलि भयो प्रवेशा ॥ सुनहु भीम कह धर्म नरेशा। बार बार सुनि लै उपदेशा ॥ अब यह राज बात तुम लेहू। कै भैया अर्जुन कह देऊ ॥ राज सकल अरु यह संसारा। मैं छाड़ो यह कहै भुआरा ॥ बन्धु चारते रुये बुलाई। तिनसों कही बात यह राई ॥ से लै भूमि भुगतु बरबीरा। काहे दुर्लभ होउ सरीरा ॥ ठाढ़े भये ते चारों भाई। भीमसेन बोले शिरनाई ॥ कर जुग जोरे विनई सेवा। गयो द्वापर कलि आयो देवा ॥ सात दिवस मोहिं जूझत गयऊ। टूटी गदा पंड़ द्वै भयऊ ॥ हारो जुद्ध न जीतो जाई। कलि जुग देव रह्यो ठहराई ॥ इतने वचन सुने नर नाथा। पांचौं बंधु चले इक साथा ॥ नगर लोग राखें समुझाई। मानत कह्यो न काहु की राई ॥

अन्त—कंचन पुरी सु उत्तम ठाऊं। तहां बसै पांडव को राऊ ॥ एकादशि व्रत यो मन धरई। अरु जो अश्वमेध पुनि करिई ॥ तीरथ सकल करै अस्नाना। सो फल पांडव सुनत पुराना ॥ वर्ष द्वैस हरवंश सुनाई। देइ कोटि विप्रन कौं गाई ॥ गया मध्य जो पिन्ड भराई। अरु फट कर आचमन कराई ॥ सूर्य पर्व कुरु खेत नहाई। ताको पाप सैल सम जाई ॥ स्वर्गा रोहण मन दै सुनई। नासै पाप विष्णु कवि भनई ॥ वित उनमान देहि जो दाना। ताको फल गंगा अस्नाना ॥ यह स्वर्गा रोहण की कथा। पढ़त सुनत फल पावै जथा ॥ पांडव चरित जो सुनै सुनावै। अन्न धन्न पुत्रहिं फल पावै ॥ दोहा—स्वर्गा रोहण की कथा। पढ़ै सुनै जो कोइ। अष्टादशौ पुराण को। ताहि महा फल होइ ॥ इति श्री महाभारते स्वर्गा रोहण ग्रन्थ संपूर्ण समाप्तम असाढ़ शुक्ल पक्षे चतुर्थ याम गुरुवासरे संवत् १८९१ वि० लिपते छोटेलाल कायस्थ कुल श्रेष्ठ श्रीनई मध्ये ग्राम नगरा धीर मैनपुरी ॥

विषय—पांडवों का हिमालय में गलने का वृत्तान्त ॥

संख्या ३२८ एफ. स्वर्गारोहण पर्व, रचयिता—विष्णु दास, पत्र—१६, आकार—१०½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—६००, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० अजीराम—अतमादपुर, जिला—आगरा।

आदि—······सो कंत्र ॥ और जो सब गुन विस्तार कहै। कहत कथा कछु अछल है ॥ वाही समै हँसि बोले जगदीशा। पाँचो वीरहि वरु धीसा ॥ × × × × तुम जिन हथिनापुर ठहराहू। पाँचौं वीरहि बारै जाहूँ ॥ तुम जिन वीर धरौ संदेहू। पूरब जन्म लहौ फल ऐहू ॥ सुनि कौंता बिलखानी बैना। जल हल रुप भये ते नैना ॥ जाधरती लगि भारथ कीना। द्रोवान गंगे वैपी लीना ॥ कमल फूल सेई रमझारी। सो भैया घाले सिंघारी ॥ मारे कर्न सक्ति संजुक्त। से घर छाड़ि चले अवधूता ॥ धरिती छाड़ि सर्ग मन धरिया। इतनी सुनि कौंता लरखरिया ॥ विलपि परीछित राषि समझाई। बैठे राजप्रजा पात पाली। राज सहदेव नकुल कौं देहू। हमको संग अपने लेहू ॥ तुमै छाँड़ि मोपै रह्यो न जाई। साथ तुम्हारे चलिहौं राई ॥ इतनी सुनि बोले नरनाथा। जुगति नहीं चलौं तुम साथा ॥

अंत—कायापलट भई उन देहा। पिछलौ उनकों नाहिं सनेहा ।। उनकौं नाहिन सुरति तुम्हारी। अब तुमहित्रौ घरी द्वै चारी ॥ कलि खोटी सुरपति जहाँ कहिया। ताको पाप छाड़िते रहीया ।। देव दृष्टि उन भये सरीरा। तुम्हैं नाहि पहचानत बीरा ॥ कलिजुग देव पापकी रासी। साध लोग छाँड़ेगे जासी ।। कलि में ऐसी चलिहै राई। जाति वड़ी विस्वा घर जाई ।। और कहौं सब कलिके भेवा। कहत सुनत जग वीतो देवा ॥ ब्रह्म कुंड तुम करौ अस्नाना। औरु अचवौ तुम अमिरत पाना ॥ देव गननिके वंदौं पाईं। मुनि नारदकौ जाहुँ लिवाई ।। अब तुमकों पहचानिहै राई ॥ देखत चरन रहे लपटाई ।। तुव चररन मैं माथो लावै। ऐसो इंद्र जू कहि समुझावै ।।

विषय—महाभारथ के पश्चात् पाँडवों के स्वर्गारोहण का वर्णन।

संख्या ३२९ ए. औतारसिद्धी ग्रंथ, रचयिता—यमुनाशङ्कर नागर (कोलाख्यनगर), कागज—विदेशी, पत्र—५६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७४०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३२ = १८७५ ई०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर परशु सिंह—रामनगर, डाकघर—बारा, जिला—सीतापुर।

आदि—श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ औतार सिद्धि ग्रन्थ लिख्यते ॥ शिष्य उवाचः—हे गुरु इस भारतवर्ष की सनातनीय आम्नाय पूर्वक कर्म उपासना ज्ञान कांड त्रयी रूप रिगादि वेद अरु मुनु याज्ञ वालक्यादि स्मृति अरु भारतादि इतिहास ब्रह्मवैवर्तादि पुराण इन करके प्रति पाद्य जे धर्म रूप से कर्तव्यता से सब अपने अपने अधिकारानुसार प्रमाण ही हैं। अरु इन विषे जो धर्म रूप से कर्तव्यता प्रतिपादन किया है तिस तिस विषे जो किंचित परस्पर विरुद्ध प्रतीत होय है सो सर्व अधिकारी के भेद से है ॥ अप्रमाण कुछ नहीं ताते जो पूर्व आम्नाय प्रमाण इस भारत वर्षीय आर्य प्रजा को प्रमाण्य है। क्यों जो सबसे मुख्य पुराण सनातनीय आम्नाय है जो कदापि आम्नाय त्याग देवे तो ईश्वर वेदादिकों को प्रमाण मंतव्य शेष रहे नहीं ॥

अंत—ताते हे सौम्य जो धूर्त पुरुष अपने के वेद मतावलम्वी मान आर्य विदित करते हैं अरु वेद के ही सिद्धान्त वाक्य में तर्क कर अप्रमाण करते हैं तिनको वेद मतावलम्वी अनार्य पुरुष जानना अरु तिनके वाक्य न मान कर उनका संग परित्याग करना अरु जे सनातनीय आम्नाय से वेदोक्त धर्म सर्व प्रकार आस्तिक रीत्या मानके ब्रह्म आत्मा का एकत्व अनुभव कर्त्ता आत्मवेत्तों का संग कर तिनके वाक्यों में अतर्क विश्वास से धर्म चरण करना अरु ब्रह्म आत्मा की तत्वमस्यादि महावाक्य द्वारा निः संसय एकता श्रवन मनन अनुभव अध्यास कर तत्सित पाय जन्म मरण से रहित परम निर्माण पद को प्राप्त होना यही कर्तव्यता अरु यही परम पुरुषार्थ है। आगे जो इच्छा। यथेच्छसि तथा कुरु इच्छा हो सो करौ इति श्री जमुनाशंकर नागर ब्राह्मण कृत औरत सिद्धि नामा ग्रन्थः समाप्तः शुभ मस्तु ॥ हरिः ओं ॥

विषय—भगवान के अवतारों की सिद्धी का वर्णन।

संख्या ३२९ वी. रामगीता की टीका, रचयिता—यमुनाशंकर (बनारस), पत्र—८६, आकार—१० × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६०, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९२९ = १८७२ ई०, लिपिकाल—सं० १९२९ = १८७२ ई०, प्राप्तिस्थान—बनवारीदास पुजारी-मन्दिर बम्हनटोला, ग्राम—समाई डाकघर—अतमादपुर, जिला—आगरा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः विविक्त आसीन उपारतेंद्रियो विनिर्जितात्मा विमलांत राशयः विभाव ये देक मनन्य साधनो विज्ञान छक्के वल मात्म स्थितिः । १ । अर्थ । हे लक्ष्मण जी जिस जिज्ञासु को आत्म साक्षात्कार नहीं भया जिसको जो आत्म प्राप्ति का मार्ग है सो सुनो हे लक्ष्मण जी हे मुमुक्षी जिसको आत्म प्राप्त की इच्छा होवे जो जिज्ञासी पुरुष इस प्रकार करै प्रथम इस जगत कौं परमात्मा का रुप जाणे पीछे इसको आत्मा विषैं लै करै । अर्थ । यह जो आपनें समेत संपूर्ण जगत कों एक परमात्मा स्वरूप देखै सो कैसा आत्मा है सो सर्व कारणों का कारज है और अपंड सच्चिदानंद है सो मैं हो ऐसे जब अभ्यास करता है तब पूर्ण सच्चिदानंद विषैं स्थित होता है तब बाहर के जे संकल्प विकल्प काम क्रोध आदि हैं तिनकों नहीं जाणता किसते जो सर्व को एक परमात्मा परब्रह्म रुप जाणता है । ४६ । हे सोम अब जिस प्रकार संपूर्ण जगत एक ॐकार रूप जाणकर जिज्ञासी को आत्म प्राप्ति वास्ते उपासना कर्त्तव्य है सो कहते हैं सावधान होकर सुनौ ४६

अन्त—आत्मा सर्व पदार्थों से श्रेष्ठ सत्य रुप भासता है । सो भी आपके अनुग्रह कर हुआ है सो भी आपके अर्थ निवेदन करना जोग्य नहीं जो इसकी प्राप्ति मुझको आपके प्रशाद कर हुई है । अर्थ । यह जो आत्मा पर्यंत कोई अर्थ ऐसा नहीं है जो आपके किए हुए उपकार के अर्थ आपु के अर्पण किया जावे तातें आपके चरणों की वारंवार साष्टांग प्रणाम हैं हे गुरो अब मुझको इच्छा कोई नहीं है आपके अनुगृह कर आप परमानंद प्रत्यक्ष आत्मा को पाप कर आप्त का भया है और शांत कृतार्थ भया हो तातें आपको मेरा वारंवार प्रणाम है । इति श्री मन्महाराजधिराज पारमहंस्य धूर्य परायण श्री वाराणसीस्थ गुर्जर वंशा व तंसा व टंक पचौंड़ी इति ख्यात श्री यमुना शंकरा अनेक पुराण शास्त्रे वेदानु मतेन श्रीराम गीतायां टीका समाप्ता संवत् १९२९ वैसाख शुक्ला ४ नाम्नो इति व्यासस्य पुरुषोत्तमा स्यार्थे-लिखित मिदं पुस्तकम् ।

विषय—राम गीता का गद्य में टीका ।

संख्या ३२६ सी. मांडूक्योपनिषद् भाषाटीका, रचयिता—यमुनाशंकर नागर, पत्र—५००, आकार—१० × ७½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२५०, खंडित, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० वासुदेव—सिकन्दरपुर, डाकघर—बथरा, जिला—लखनऊ ।

आदि—ॐ ॥ श्री परमात्मने नमः अथ अथर्व वेदीय माँडूक्योपनिषद् श्री गौंड़ पादीय कारिका सहित प्रारभ्यते श्रीमद् भाष्यकार स्वामी श्री संकराचार्य्य कृत ॥ मंगला चरणम् ॥ प्रज्ञा नांशु प्रतानैः स्थिर चरनिकर व्यापिभिर्व्याप्य लोकान् भुक्ता भोगान्स्थ

विष्ठान पुनरपि धिखणेद्भासितान् काम जन्यान् ॥ पीत्वा सर्वान् विशेषान् स्वपिति मधुर भुङ्माय या भोजयन् नो माया संख्या तुरीयं परम मृतमजं ब्रह्म मतन्नतोऽस्मि ॥ १ ॥ हे सौम्य भाष्यकार स्वामी शंकराचार्य्य कहते हैं कि परम मृत मजं ब्रह्म यतन्नतोस्मि ॥ अमृत अज जो पर ब्रह्म है तिसको मैं नमता हौं अर्थात् गौंड़ पादाचार्य को श्री नारायण के वाशुका चार्य के प्रसाद से प्राप्त हुए अरु माँडूक्य उपनिषद् के अर्थ को प्रगट करने के परायण जो श्री गौंड़ पादाचार्य कृत कारिका संज्ञक श्लोक तिन सहित मांडूक्योपनिषद के व्याख्यान करने को इच्छा करते हुये भगवान भाष्यकार श्री शंकराचार्य आप करके करने को इच्छित जे भाष्य तिसकी निर्विघ्न समाप्ति के हेत पर देवता के सरुप के स्मरण पूर्वक शिष्ठा चार रुप प्रमाण करके सिद्ध तिस पर देवता के अर्थ नमस्कार रुप मंगला चरण को करते हुऐ अर्थ सों इस ग्रन्थ के आरंभ विषैं वांछित विषयादिक अर्थात् ग्रन्थ के प्रयोजन विषय सम्बन्ध अरु अधिकारी चार प्रकार के अनुवन्ध को भी सूचित करते हैं। तिन विधि मुष से वस्तु का प्रतिपादन है इस प्रकृपा कों दिखावते हैं ॥ अरु यहां ब्रह्म यत्तन्नतोऽस्मि जो पर ब्रह्म है तिसको मैं नमता हौं ॥ इस कहने करके मैं इस अहं शब्द के विष यत्त्वं पद के लक्ष्य अर्थ की तिस तत् शब्द के लक्ष्यार्थ से एकता के स्मरण रुप नमन को सूचित करने वाले आचार्य ने तत्पद के लक्ष्यार्थ रुप ब्रह्म का प्रत्यगात्मपना सूचन करके तत्पद अरु त्वं पद के अर्थ की एकता रुप ग्रन्थ का विषय सूचित किया ॥ × × ×

अंत—अलात अनाभाप और अजन्मा है ॥ अर्थात् निस्यंद मान अलात अर्थात् भ्रमण से रहित वनेठी ॥ सरलादिक आकार से जन्म रहित हुआ अनाभास अरु अजन्मा है ॥ अर्थात् अलात के वा काष्ट के मुख पर लगा जो अग्नि विन्दु सो अलात के भ्रमणे से भ्रमण रुप से उत्पन्न होय। भ्रमते वत भापता है अरु उस अलात के स्थित हुए वो अग्नि विन्दु जैसा उत्पत्ति और भ्रमणसे रहित है तैसा ही अनाभास अरु अजन्मा होता है ॥अर्थात् वो अलात पर का अग्नि विन्दु जैसे अलात के भ्रमण से पूर्व है तैसे ही अलात के भ्रमण के शान्त हुए है अरु मध्य विषे जो भ्रमण रूपसे उत्पन्न हुये अरु भ्रमते वत् भासता है सो अलात के भ्रमण रूप उपाधि करके भासता है परन्तु तिस अलात के भ्रमण काल में भी वो अग्नि विन्दु अपने स्वरुप से अलात के भ्रमणादिकों करके रहित सदा एक रस है ॥ अस्यन्द मानं विज्ञान मनाभासमजे तथा ॥ तैसे निस्यन्द हुआ विज्ञान अनाभास अरु अजन्मा है अर्थात् जैसे अलात का अग्नि विन्दु जैसा अज अचल है तैसा अलात के स्थिर हुऐ भासता है तैसे ही अविद्या करके चलायमान अरु अविद्या की निवृत्ति के हुए चलने से रहित अर्थात् उत्प त्यादि आकार से आभास मान हुआ जो विज्ञान सो अनाभास कहिये अचल अरु अजन्मा ही है ॥ × × ×

विषय—(१) १ से ६४ तक—मंगला चरण । अनु वन्ध चतुष्टय । वस्तु प्रतिज्ञा टीका कार स्वामी आनन्द गिरि कृत मंगलाचरण । (२) पृ० ६५ से ९२ तक—प्रथम प्रकरण । गौंड़पादाचार्य कृत कारिका यां प्रथम आगमाख्य प्रकरण भाषा भाष्य ॥ पुरुष के तीन भेद । आत्मा का एकत्व । एक देव का सर्वभूतों में गूढ़ होना । जाग्रति में सुपुप्ति का वर्णन । विश्व और विराट की एकता । तेजस और हिरण्यगर्भ तीन प्रकार की देह । तीन

प्रकार के भोग। तीन प्रकार की तृप्ति भोक्ता एवम भोग्य के ज्ञान के मध्य का फल। संसार की उत्पत्ति सृष्टि का स्वरुप॥ (३) पृ० ९२ से १५० तक—ऊंकार के चतुर्थ पाद की व्याख्या। आत्मा का स्वरुप। द्वैत का अभाव। प्रभु के अव्ययादि होने का वर्णन। तुर्या के यथार्थ आत्मपने का निश्चय। तत्व ज्ञान का समय और अधिकारी। तत्व के ग्रहण में असमर्थ कनिष्ठ अधिकारी। पादों और मात्राओं का एकत्व तथा उसके जानने का फल। (मूल मंत्र समाप्त) (४) पृ० १५१ से १७० तक—ऊंकार और परब्रह्म की एकता। ओंकार का महत्व और मुनि की परिभाषा॥ (५) पृ० १७१ से २६४ तक—द्वितीय प्रकरण। अद्वैत के विरोधी द्वैत का मिथ्यापना। दृष्टान्त एवम प्रमाण के द्वारा (सब प्रपच का मिथ्या पना विविध युक्तियों द्वारा)॥ आत्मा विषैं द्वैत का अध्य स्तपना नाना रुप द्वैत क्या आत्मा के तादात्म्य से सिद्ध होता है या स्पतंत्र सिद्ध होता है? इसकी विवेचना। (६) पृ० २६५ से ४०० तक—परमार्थ तत्व रुप अद्वैत का निश्चय उपास्य उपासक भाव की निन्दा। सम्पत्ति, अद्वैत प्रतिपादन जीव का स्वरुप। उद्वैत रुप आत्मा की सिद्धता के लिये श्रुतियों के प्रमाण। विविध शास्त्रों पर शंका समाधान ज्ञान के अभ्यास वैराग्य अर्थात् आत्मा के श्रवण मनन रूप ज्ञान का अभ्यास से लाभ। मन निरोध। (अद्वैताख्यं तृतीय प्रकरण समाप्त)। (७) पृ० ४०० से ५०० तक—अलात शान्त नामक चतुर्थ प्रकरण मंगला चरण। अन्य मतावलंबियों के विचारों का खंडन। द्वैत वादियों के परस्पर विरोध का वर्णन। पूर्व पक्षी एवम् विज्ञान वादियों आदि के मतों का खंडन (८) पृ० ५०० से पृ०—तक—खंडित।

तृतीय परिशिष्ट

अज्ञात रचनाकारों के ग्रंथों की सूची

तृतीय परिशिष्ट

अज्ञात रचनाकारों के ग्रंथों की सूची

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	विषय	रचनाकाल ईसवी सन् में	लिपिकाल ईसवी सन् में	विशेष
३३०	अबजदी केवली	शकुन	...	१८१६	
३३१	आबाल चिकित्सा	बालचिकित्सा	...	...	
३३२	अघोरमंत्र	अघोर मंत्रों की प्रयोग विधि	...	...	
३३३	अलंकारभ्रमभंजन	अलंकार	...	...	
३३४	आल्हा	आल्हा और पृथ्वीराज की लड़ाई	...	...	
३३५	अमृतराल	तंत्र मंत्र	...	...	
३३६	अमृतसागर की प्रकृति तथा वैद्यक वचनिका	वैद्यक	...	...	यह ग्रंथ जयपुर नरेश महाराजा प्रतापसिंह कृत अमृत सागर ग्रंथ से मिलता है।
३३७	अनुभव हुलास	दर्शन	...		
३३८	अनुपान वंग को	औषधि-अनुपान	...		
३३९	औषधियाँ	औषधियों के नुसखे	...		
३४०	औषधियों की पुस्तक	वैद्यक	...		
३४१	औषधि संग्रह	औषधियों और मंत्रों का संग्रह	...		
३४२	बाजनामा रूमी	आखेट पक्षियों का	...		महत्व की पुस्तक
३४३	बंदागुण (बंदावली)	वृक्षों के बाँदाओं पर विचार	...		
३४४	भागवतदशमस्कंध पूर्वार्द्ध	पुराण	...		
३४५	भागवत दशमस्कंध	"	...		
३४६	भागवत दशमस्कंध	"	...		
३४७	भागवत महात्म्य	भागवत की महिमा	...		

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	विषय	रचनाकाल ईसवी सन् में	लिपिकाल ईसवी सन् में	विशेष
३४८	भजन	ज्ञानोपदेश	...		
३४९	भजन गोपीचंद संवादी	गोपीचंद राजा की कथा	...		
३५०	भक्ति चिंतामणि	भक्ति	...	१८७७	
३५१	भाषामंत्र सावरी हनुमान जी को	तंत्र मंत्र	...	१८३१	
३५२	भूगोल पुराण	प्राचीन भूगोल	...	...	
३५३	भूगोल पुराण	"	...	...	
३५४	बुद्धसिंह वंश भाष्कर	वंशावली	...	१८४३	
३५५	चाणक्य नीति दर्पण	नीति	...	...	
३५६	चतुश्लोकी भागवत	चार श्लोकों में भागवत का सार	...	...	
३५७	छबीली भठियारी	कथा कहानी	१८५७	१८६३	
३५८	चिंतामणि प्रसंग	व्यावहारिक और पारमार्थिक अनेक विषयों का वर्णन	...	...	महत्वपूर्ण कृति जिसमें लगभग चार सहस्र दोहे हैं।
३५९	चीतानामा	शेर व्याघ्र को जीवित पकड़ने और पालने का विषय वर्णन।	...	...	महत्व का ग्रंथ
३६०	दमजरी को गुन	दमजरी नामक जड़ी का गुण वर्णन	...	...	
३६१	देवपूजा विधि	पूजा विधान	१६४५	१६४५	
३६२	धन्वंतरी	वैद्यक	...	१८६४	
३६३	धर्म संवाद	धर्म और युधिष्ठिर संवाद	...	१८५९	
३६४	धातुमारन विधि	आयुर्वेद	...	...	
३६५	ध्रुव चरित्र	पौराणिक कथा	...	...	
३६६	दिलबहलाव	संगीत	...	१८८३	
३६७	दोहावली	स्तुति	...	...	
३६८	द्रोपदी जी की बारहमासी	"	...	...	
३६९	एकादशी कथा	माहात्म्य	...	१८५४	
३७०	एकादशी महात्म	"	...	...	
३७१	एकादशी व्रत	"	...	...	
३७२	गणित पहाड़ो	गणित तथा ज्योतिष और बारहमासी आदि फुटकर विषयों का वर्णन	...	...	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	विषय	रचनाकाल ईसवी सन् में	लिपिकाल ईसवी सन् में	विशेष
३७३	गर्गप्रश्न	शकुन	...	..	
३७४	गरुड़पुराण भाषा टीका	पुराण	...	...	
३७५	गरुड़पुराण भाषा टीका	,,	१६१८	१९१८	
३७६	गरुड़ पुराण	,,	...	...	
३७७	गरुड़ पुराण	,,	...	१८५०	
३७८	गया महात्म्य	माहात्म्य	...	...	
३७९	गोवर्द्धन पूजा	कृष्णलीला	..	...	
३८०	ग्रहों के फलाफल	ज्योतिष	...	...	
३८१	गूढ़ार्थ कोष	कोश	...	...	
३८२	गुर्रा मुहर्रम का	शकुन (मुसलमानी)	...	...	
३८३	गुरू महात्म्य	माहात्म्य	...	...	
३८४	हनुमान जी का कवच	तंत्र मन्त्र	...	...	
३८५	हरीत वाक्यादि निघंट	निघंटु	...	१८५३	
३८६	हस्तरेखादि लक्षण	सामुद्रिक	...	...	
३८७	हिकमत यूनानी	यूनानी वैद्यक	...	...	
३८८	हिय हुलास	संगीत	...	...	
३८९	होली संग्रह	होली-गीत	...	...	
३९०	इंद्रजाल	इंद्रजाल	..	...	
३९१	इंद्रजाल	,,	...	...	
३९२	जरीरा	वैद्यक	...	...	
३९३	जन्त्र	जन्त्र मंत्र	...	...	
३९४	जन्त्र मन्त्र	,, ,,	...	...	
३९५	जन्त्रावली	,, ,,	...	...	
३९६	जंत्र विद्या	,, ,,	...	...	
३९७	जोग कृष्णायण	कृष्णलीला	...	...	
३९८	ज्योतिष	ज्योतिष	...	...	
३९९	ज्योतिष	,,	...	...	
४००	ज्योतिष अष्टमभेद	,,	...	१८६७	
४०१	ज्योति जन्म विचार	,,	...	...	
४०२	ज्योतिष विचार	,,	...	...	
४०३	कान्यकुब्ज दर्पण	वंशावली	...	१८९१	
४०४	कपाली स्तोत्र	स्तोत्र	...	१८३४	
४०५	कार्तिक महात्म	माहात्म्य	...	...	
४०६	कार्तिक महात्म	माहात्म्य	...	१८४५	
४०७	कार्तिक महात्म्य	,,	...	१८७१	
४०८	कवित्त	शृंगार	...	...	
४०९	कवित्त	ज्ञानोपदेश	...	...	
४१०	कवित्त	विविध	...	...	
४११	कवित्त संग्रह	विविध	...	...	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	विषय	रचनाकाल ईसवी सन् में	लिपिकाल ईसवी सन् में	विषय
४१२	कवित्त तथा भजन संग्रह	विविध	...	...	
४१३	कायस्थोत्पत्ति कथा	कायस्थों की उत्पत्ति का वर्णन	१८५२	१८५२	
४१४	किस्सा डला	कथाकहानी	...	१८७६	
४१५	कृष्ण चरित्र	कृष्णलीला	...	...	
४१६	कृष्ण होली	,, ,,	...	...	
४१७	कृष्णलीला	,, ,,	...	...	
४१८	लीलासहित ब्रह्मांड खंड	संसार की उत्पत्ति वर्णन	...	...	
४१९	लीलावती	गणित	१८५५	१८५६	संस्कृत में अनुवाद
४२०	लोलंबराज	वैद्यक	...	...	
४२१	महाभारत (विराटपर्व)	इतिहास	...	१८४५	
४२२	महाभारत (,,)	,,	...	१८००	
४२३	,, (,,)	,,	...	१८०८	
४२४	महाभारत (,,)	,,	...	...	
४२५	महाभारत (सभापर्व)	,,	...	१८५८	
४२६	मनोहर कहानी	कथा कहानी	...	१८३६	
४२७	मंत्र	तंत्र मंत्र	...	...	
४२८	मंत्र सग्रह	,, ,,	...	...	
४२९	मंत्र जंत्र	मंत्र जंत्र	...	...	
४३०	मंत्रावली भाषा	,, ,,	...	...	
४३१	मंत्रों का ग्रंथ	,, ,,	...	१८१८	
४३२	मथुरा प्रवेश	श्री कृष्ण का मथुरा गमन	...	...	
४३३	मुहूर्त प्रश्नावली	ज्योतिष	...	...	
४३४	मुकुंदमहिमा स्तोत्र व्याख्या भक्त तोषिनी	स्तोत्र	...	...	
४३५	नागलीला	कृष्ण लीला	...	...	
४३६	नैनागढ़ की लड़ाई	आल्हा का विवाह	...	...	
४३७	नंदोत्सव	कृष्ण जन्मोत्सव	...	...	
४३८	नासकेतोपाख्यान	पौराणिक कथा	...	...	
४३९	नवग्रह सगुनावली	शकुन	१८४५	१८४५	
४४०	निघंटु	निघंटु	...	...	
४४१	निषभोजन की कथा	धर्म	...	...	
४४२	नितपद	कृष्णभक्ति	...	१६१७	
४४३	नुसखा संग्रह	औषधि	...	...	
४४४	नुसखे	,,	...	...	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	विषय	रचनाकाल ईसवी सन् में	लिपिकाल ईसवी सन् में	विशेष
४४५	पद संग्रह	कृष्णभक्ति	...	...	
४४६	पाँडवगीता	ज्ञानोपदेश	...	...	
४४७	पासा केवली	शकुन	१७५४	१७५४	
४४८	पासा केवली	„	...	१८६०	
४४९	पासा केवली	„	...	१८१८	
४५०	पासा केवली	„	१८१३	...	
४५१	फूलचिंतनी	शृंगार	...	१८६२	
४५२	फुटकर कवित्त	विविध	...	...	
४५३	पोथी चित्रमुकुट की	प्रेम कथा	...	१७६३	
४५४	पोथी हिकमत	यूनानी वैद्यक	...	...	
४५५	पोथी लेखिन	शिक्षा	...	...	
४५६	प्रश्नमाला भाषा	कर्मविनायक (जैनी)	...	१८६३	
४५७	प्रश्नरमल	रमल	...	...	
४५८	प्रश्नरमल	„	...	१८१५	
४५९	प्रश्नावली	शकुन	...	...	
४६०	पुरातन कथा	कृष्णकथा	...	...	
४६१	राम जन्म बधाई	रामजन्मोत्सव	...	...	
४६२	रामजन्मोत्सव	„ „	...	...	
४६३	रमल प्रकाश	रमल	...	...	
४६४	रमलसार प्रश्नावली	„	...	१८७१	
४६५	रमलसार प्रश्नावली	„	...	१८७६	
४६६	रामसवारी रहस्य	रामकथा	...	१८८६	
४६७	सगुन सुभाषित	शकुन	१८११	१८११	
४६८	सगुनौती	शकुन	...	...	
४६९	सगुनौती परीक्षा	„	...	१७७५	
४७०	सगुनौती और शिवासकुन	„	...	...	
४७१	शकुनावली	„	...	...	
४७२	शालिहोत्र	शालिहोत्र	...	...	
४७३	शालिहोत्र	„	...	...	
४७४	समय परीक्षा	शकुन	...	...	
४७५	सामुद्रिक	सामुद्रिक	...	१८०४	
४७६	सामुद्रिक	„	...	१८३३	
४७७	शनिपुराण	पौराणिक कथा	...	१८४६	
४७८	संकटास्वरी स्तोत्र	स्तोत्र	...	...	
४७९	संन्निपात कलिका	वैद्यक	...	...	
४८०	संग्रह	विविध	...	...	
४८१	संग्राम दर्पण	ज्योतिष	...	...	
४८२	सप्तश्लोकी गीता	सात श्लोकों में गीता का वर्णन	...	...	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	विषय	रचनाकाल ईसवी सन् में	लिपिकाल ईसवी सन् में	विषय
४८३	सारंगधर	वैद्यक	...	१७४७	
४८४	सारस्वतीय प्रक्रिया	संस्कृत व्याकरण	...	...	
४८५	सार्गंधर संहिता प्र० खंड	वैद्यक	...	...	
४८६	सरोधा	स्वरोदय	...	...	
४८७	साठक	सा०संवत्सरों का फलाफल	१७४६	१७४६	
४८८	साठिक	,, ,, ,, ,,	...	...	
४८९	साठिक मत	,, ,, ,, ,,	...	१८४१	
४९०	सत्यनारायण कथा भाषा टीका	पौराणिक कथा	...	...	
४९१	सत्यनारायण कथा भाषा	,, ,,	...	१८६७	
४९२	सत्यनारायण की कथा	,, ,,	...	...	
४९३	सत्यनाराथण की कथा भाषा टीका	,, ,,	...	१८६०	
४९४	सत्यनारायण की कथा	,, ,,	...	...	
४९५	सत्यनारायण व्रत कथा	,, ,,	...	१८८०	
४९६	सावर मंत्र	मंत्र तंत्र	...	...	
४९७	शीघ्रबोध	ज्योतिष	...	...	
४९८	शीघ्रबोध भाषाटीका	,,	...	१८४५	
४९९	शिक्षाशतार्थ	ज्ञानोपदेश	...	१८६८	
५००	सिंहासन बत्तीसी	कथाकहानी	...	१८४८	
५०१	सिरसागढ़ की लड़ाई	आल्हा का कथांक	...	...	
५०२	शिवजी अष्टक	स्तोत्र	...	१८७०	
५०३	शिवस्वरोदय	स्वरोदय	...	१८६३	
५०४	सोना लोहा झगड़ा	कथाकहानी	...	१८४६	
५०५	सोने लोहे की झगरो	,, ,,	...	...	
५०६	स्तोत्र विधि	स्तोत्र	...	१७२७	
५०७	शुक बहत्तरी	कथा कहानी	...	१७६६	
५०८	शुकदेव चरित	पौराणिक कथा	...	...	
५०९	सुखदेव की उत्पत्ति कथा	,, ,,	...	...	
५१०	शुकप्रभावती संवाद	कथाकहानी	...	१८१३	
५११	शुकप्रभावती संवाद	,, ,,	...	१८१५	
५१२	सुपच की लीला	पौराणिक कथा	...	...	
५१३	स्वरोदय शास्त्र	स्वरोदय	...	...	
५१४	स्यमंत को पाख्यान	स्यमंतकमणि की कथा	...	...	
५१५	तीर्थंकर राजमाल	जैन धर्म	...	...	
५१६	तुलसी सिद्धार्थ	ज्योतिष तथा शकुन	...	...	
५१७	वैद्य जीवन	वैद्यक	...	१८७३	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	विषय	रचनाकाल ईसवी सन् में	लिपिकाल ईसवी सन् में	विशेष
५१८	वैद्यक	,,	...	...	
५१९	वैद्यक	,,	...	...	
५२०	वैद्यक	,,	...	१७८८	
५२१	वैद्यक कल्पतरु	,,	...	१८१०	
५२२	वैद्यक रसविधि	,,	...	...	
५२३	वैद्यकसार संग्रह	,,	...	...	
५२४	वैद्यक सर्वसार संग्रह	,,	...	...	
५२५	वैद्यक सर्वस्व	,,	...	...	
५२६	वंदी मोचन	माहात्म्य	...	१८८८	
५२७	वर्ष चिकित्सा	तंत्र मंत्र	...	...	
५२८	वर्ष कर्तव्य	ज्योतिष	...	...	
५२९	वर्ष फल	,,	१७७८	१७८८	
५३०	वेदांत	दर्शन	...	...	
५३१	विष्णु पुराण	पुराण	...	...	
५३२	विवाह	कथा कहानी	...	...	
५३३	विवाह पद्धति	धार्मिक	...	...	
५३४	विवाह पद्धति	,,	१७९१	१७९१	
५३५	बृहत् काल ज्ञान	आयुर्वेद	...	...	
५३६	यज्ञोपवीत पद्धति	धार्मिक	...	१८९९	
५३७	योगशत	वैद्यक	...	...	
५३८	योगसत	वैद्यक	...	...	
५३९	रसायन	रसायन	...	...	

चतुर्थ परिशिष्ट

उन ग्रंथकारों की सूची जिनके सन् १८८० ई० के पश्चात् के रचे गये ग्रंथ प्राप्त हुए हैं।

चतुर्थ परिशिष्ट (अ)

उन ग्रंथकारों की सूची जिनके सन् १८८० ई० के पश्चात् रचे गये ग्रंथ प्राप्त हुए हैं।

क्रमसंख्या	ग्रंथकार	ग्रंथ	विषय	पद्य या गद्य	रचना-काल	लिपि-काल	विशेष
१	ईश्वरी कवि	रामायण	वाल्मीकि रामायण का अनुवाद	पद्य	१८६४		
२	नकछेदी तिवारी 'अजान'	विचित्र उपदेश का भड़ौवा	भड़ौवा	"	१८८७		
३	प्रयाग शरण	शब्दावली	उपदेश	"	१९१३	१९१६	
		सर्व विलास	पूर्व जन्म का वृतांत तथा ज्ञानोपदेश	"	१९१३	"	
		सुख विलास	हठयोग और भक्ति	"	१९१२	"	
४	बलदेव द्विज	प्रेम तरंग	श्रृंगार काव्य	"	१९०३		
		वीर तरंग	वीर काव्य	"			
५	मथुरादास	सत्यनाम	भक्ति और वैराग्य	"	१९२६	१९२७	
६	यमुना भारती	औषधि सार	वैद्यक	गद्य	१८८१	१८८१	
७	रामबदल	पालागर्दी काव्य	सन् १९०४ के पाले का वर्णन	पद्य	१९०४	१९२६	
८	लालजी	कीर्ति सागर	स्वामी जगजीवन दास (सतनामी) का जीवन वृत्त	"			
९	शंकर दीक्षित	बुढ़वा मंगल	बुढ़वा मंगल के मेले का वर्णन	"	१८८८		
		हितोपदेशावली	ज्ञानोपदेश	"	१८८४		
		काशी कीर्ति मंजरी	स्वामी दयानंदजी और स्वामी विशुद्धानंदजी का शास्त्रार्थ	"	१८८६		
		माधुरी विलास	दर्शन	"			
		विज्ञान बोध	द्वैतवाद	"	१८८८		
१०	सूर्यबख्श	रामायण	रामचरित्र	"	१८९५	१८९५	
		विनय संहिता	स्तुति	"	१९१३	१९१३	
११	हकीम सिंह	पद्य संग्रह	विविध	"	१९३०		

चतुर्थ परिशिष्ट (आ)

आश्रयदाता और आश्रित ग्रंथकारों की सूची

क्रम संख्या	परिशिष्ट १-२ में रचयिता और उसके ग्रंथों का क्रम संख्या	रचयिता	आश्रयदाता	विशेष
१	५	अजीतसिंह मेहता	रावल रणजीत सिंह, जैसलनेर	
२	३	अरुभद्र	बादशाह जहाँगीर	
३	२	आधार मिश्र	चेत सिंह भदौरिया	
४	१८५	करणीदान	राजा अभय सिंह, जोधपुर	जागीर और कविराज की उपाधि मिली।
५	१६२	केशवदास मिश्र	महाराजा मधुकर शाह, ओड़छा	
६	१६१	केशवराय कायस्थ	महाराजा छत्रसाल ओड़छा, बुंदेलखंड	
७	१६६	खेत सिंह	महाराजा परीक्षित, दतिया	
८	११०	गंगाप्रसाद माथुर	महेंद्र महेंद्र सिंह, भदावर नरेश	
९	११८	गिरधारीलाल	बादशाह औरंगजेब	
१०	१२६	गोपीनाथ	बादशाह अकबर	
११	१३५	ग्वाल कवि	जसवंत सिंह और स्व० लहना सिंह	
१२	१११	घनानंद या आनंदघन	महम्मद शाह	
१३	६४	चंद्रमणि	१–महाराज उदोत सिंह, ओड़छा (१६८९-१७३५ ई०) २–महाराजा पृथ्वी सिंह- ओड़छा (१७३५-५२ ई०)	
१४	६८	छत्र कवि	महाराज कल्याण सिंह, भदावर	
१५	१७३	जय जयराम	राजा राजकुमार जसवंत सिंह, हरियाना	
१६	८०	देवदत्त	कुशल सिंह (इटावा नरेश मधुकरी शाह के पुत्र)	
१७	२४१	नागरीदास	छज्जू रामराव (दीवान श्रीराव राजा प्रताप सिंह के	
१८	२५७	पद्माकर भट्ट	महाराजा प्रताप सिंह सवाई और महाराजा जगत सिंह सवाई, जयपुर।	
१९	२२	बलवीर	हिम्मत खान	
२०	५३	बिहारीलाल	महाराज जय सिंह, जयपुर	
२१	५०	भुल्लन सेख	महाराज रामधीर सिंह, भरतपुर	
२२	२२५	मलिक मुहम्मद जायसी	बादशाह शेरशाह सूर	
२३	२१७	माधवदास कथ्थक	महाराज विश्वनाथ सिंह, रीवाँ	

क्रम संख्या	परिशिष्ट १-२ में रचयिता और उसके ग्रंथों की क्रम संख्या	रचयिता	आश्रयदाता	विशेष
२४	२३८	मुन्नूलाल	नासीरुद्दीन नवाब, अवध	
२५	२३०	मेघराज प्रधान	महाराजा सुजान सिंह, ओड़छा	
२६	२८०	रामचंद्र	बहादुर सिंह दीवान, मारवाड़	
२७	२६१	रामप्रसाद निरंजनी	महाराजा, पटियाला	
२८	२१०	ललितलाल	महाराजा भगवंत सिंह, धौलपुर	
२९	३२८	विष्णुदास	राजा डोंगर सिंह, गोपाचल (ग्वालियर)	
३०	३११	शिवनाथ	जसवंत सिंह, बुंदेला	
३१	३०५	शीतलप्रसाद	सूबा सिंह, रहीमाबाद (संडीला)	
३२	३१७	श्रीपति भट्ट	नवाब सैय्यद हिम्मत खान (औरंगजेब के समय में) इलाहाबाद	
३३	१४४	हरिराम	महेंद्र महेंद्र सिंह, भदावर नरेश	

ग्रंथकारों की अनुक्रमणिका

ग्रंथकारों के सामने की संख्याएँ परिशिष्ट १ और २ में दी गई क्रमसंख्याएँ हैं।

ग्रंथों की अनुक्रमणिका

ग्रंथों के सामने की संख्याएँ परिशिष्ट १, २ और ३ में दी गई क्रमसंख्याएँ हैं।

---

* इति *